रिसाले-ए-नूर संग्रह:

भाग 1

शब्द

इस्लामी विशवासों और विचारों का पुनर्निर्माण

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रह:
भाग 1

शब्द

इस्लामी विश्वासों और विचारों का
पुनर्निर्माण

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

The Light

न्यु जर्सी

हार्डकवर सं करण पहली बार 2005 में प्रकाशित हुआ

13 12 11 10 2 3 4 5

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.

345 क्लिफ्टन एवे यू क्लिफ्टन, एनजे 07011,

यूएसए

www.tughrabooks.com

लाइब्रेरी ऑफ कां ेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नूरसी, सईद, 1877-1960.

[सोज़्लर. अं ेज़ी]

शब्द: इस्लामी विश्वास और विचार का पुनर्निर्माण / बे दउज़्ज़मान सईद नर्सी; [हुसैन अकारसु द्वारा अनुवादित]।

पी. सेमी.

बिबलियोग्राफिकल संदर्भ और अनु मणिका शामिल है।

आईएसबीएन 1-932099-16-6

1. नूरकुलुक--सिद्धांत। 2. इस्लाम--सार, प्रतिभा, प्रकृति। 3. इस्लाम--प्रशंसा।
I. शीर्षक.

बीपी252.एन8613 2005

297.8'3--डीसी21

2002012564

Çaðlayan A.Þ.,

इज़मिर - तुर्की द्वारा मु द्रत

विषयसूची

चौदहवाँ शब्द

पंद्रहवाँ शब्द

सोलहवाँ शब्द

सत्रहवाँ शब्द

अठारहवाँ शब्द

उन्नीसवाँ शब्द

बीसवाँ वचन

इक्कीसवाँ शब्द

बाईसवाँ शब्द

तेईसवाँ शब्द

चौबीसवाँ शब्द

पच्चीसवाँ शब्द

छब्बीसवाँ वचन

सत्ताईसवाँ वचन

अट्ठाईसवाँ शब्द

उनतीसवाँ शब्द

तीसवाँ वचन

इकतीसवाँ शब्द

बत्तीसवाँ शब्द

सृष्टि परमेश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने से इंकार करती है

तैंतीसवाँ शब्द

ईश्वर के अस्तित्व और अस्तित्व पर खुलने वाली तैंतीस खिड़कियाँ

सत्य की झलक

बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी
और रिसाले-ए-नूर

Bएडिउज़्ज़मान सईद नूरसी (1877-1960) की उपलब्धियाँ, व्यक्तित्व,
चरित्र और निरंतर प्रभाव ने उन्हें बीसवीं सदी का एक महत्वपूर्ण मुस्लिम व्यक्तित्व बना दिया। इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का सबसे प्रभावी और गहरा प्रतिनिधि, वह

उन्होंने अपना अधिकांश जीवन इस्लाम के प्रति प्रेम और उत्साह से भरा हुआ, एक बुद्धिमान धर्म का अनुसरण करते हुए बिताया।
और ठोस तर्क के आधार पर सक्रियता को मापा, और कुरान और
भविष्यसूचक उदाहरण। इस महान आदर्श के बारे में बहुत कुछ कहा और लिखा गया है
उन्होंने दुनिया और अपने समय के साथ अपनी गहरी परिचितता का पीछा किया, साथ ही साथ उनके
सादगी, तपस्या, कोमलता, निष्ठा, शुद्धता, विनम्रता और संतोष।

यद्यपि बाह्य रूप से वे सरल थे, फिर भी उनके अनेक विचार और गतिविधियाँ पूर्णतः सरल थीं।
उन्होंने मानवता को अपनाया, अविश्वास, अन्याय और [धार्मिक] कुरीतियों का विरोध किया।
विचलन; और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष किया - यहां तक कि अपने जीवन की कीमत पर भी।
विश्वास और भावना, जब उनके बुद्धिमान और तर्कसंगत विचारों और समस्या-समाधान विधियों के साथ संयुक्त होते हैं, तो प्रेम, उत्साह और भावना का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उनके संतुलित विचार, कार्य और कार्य करने के तरीकों ने उन्हें एक दूरदर्शी व्यक्ति बनाया जो
आस-पास की परिस्थितियों का आकलन और आकलन किया तथा समस्याओं का समाधान किया।

कई समकालीनों ने स्पष्ट रूप से या मौन रूप से उन्हें सबसे महान व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया।
बीसवीं सदी के तुर्की या यहां तक कि मुस्लिम राष्ट्र के महत्वपूर्ण विचारक और लेखक
दुनिया। इसके बावजूद और एक नए इस्लामी बौद्धिक, सामाजिक और
राजनीतिक पुनरुत्थान के बावजूद, वे ईश्वर के एक विनम्र सेवक बने रहे। उनका जीवन उनके आदर्शों का उदाहरण है

विनम्रता की समझ: प्रसिद्धि की इच्छा दिखावा और आडंबर के समान है,
एक “ज़हरीला शहद” जो हृदय की आध्यात्मिक जीवंतता को बुझा देता है।

पूर्वी अनातोलिया के एक छोटे से पहाड़ी गांव में जन्मे सईद नूरसी ने अपनी आवाज दी। सम्पूर्ण मुस्लिम जगत की आहें और विलाप, साथ ही साथ उसका विश्वास, आशाएं, और आकांक्षाएँ। उन्होंने कहा:

> मैं अपने दुखों को तो सह सकता हूँ, लेकिन विपत्तियों से उत्पन्न दुखों को नहीं सह सकता। इस्लाम और मुसलमानों के दौरे ने मुझे कुचल दिया है। मुझे हर झटका महसूस होता है मुस्लिम दुनिया के लिए सबसे पहले मेरे दिल में यही भावना आई। इसीलिए मैं मैं इतना हिल गया हूँ... अपने 80 साल से अधिक के जीवन में, मैंने कभी भी ऐसा स्वाद नहीं चखा है सांसारिक सुख। मैंने अपना जीवन युद्ध के मैदानों, जेलों या अन्य स्थानों पर बिताया है पीड़ा के स्थान। उन्होंने मेरे साथ अपराधी जैसा व्यवहार किया है, मुझे निर्वासित कर दिया है एक शहर से दूसरे शहर जाते हुए, मुझ पर लगातार निगरानी रखते हुए। ऐसा कोई उत्पीड़न नहीं है जिसका मैंने स्वाद न चखा हो, ऐसा कोई दमन नहीं है जिसका मैंने स्वाद न चखा हो मुझे न तो जन्नत की परवाह है और न ही नर्क का डर है। अगर मैं अपने देश के लोगों को देखूं विश्वास सुरक्षित है, तो मुझे नरक में जलने की भी परवाह नहीं होगी, क्योंकि जब तक मेरा शरीर जल रहा है मेरा दिल मानो गुलाब के बगीचे में होगा। (तारीहचे-ए हयात [जीवनी], नेसिल, इस्तांबुल: 1996, खंड 2, पृष्ठ 2206)

सईद नूरसी एक वैश्विक संकट के दौर में जी रहे थे: भौतिकवाद विजयी था, साम्यवाद लोकप्रिय था, और मुसलमानों से इस्लाम को अस्वीकार करने का आग्रह किया जा रहा था। पश्चिम की वैज्ञानिक और सैन्य जीत और आधुनिक से प्रभावित कई लोगों का मानना है कि मुसलमान अपनी जड़ों और कभी-कभी अपने विश्वास को त्याग रहे हैं। बुद्धिजीवियों ने सीधे मार्ग को छोड़ दिया और पश्चिमी विचारों का अनुसरण किया। हालाँकि, नूरसी ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें एक मजबूत विश्वास पैदा किया समग्र पुनरुत्थान की आशा। उनके लेखन ने इस्लाम की सच्चाई को दिखाया और इस्लाम के खिलाफ़ आवाज़ उठाई बढ़ते हुए विचलन। ईश्वर और इस्लाम की सच्चाई में उनके दृढ़ विश्वास पर भरोसा करते हुए, और मुस्लिम दुनिया के उज्ज्वल भविष्य में अपने विश्वास से प्रेरित होकर, उन्होंने इस्लाम का बचाव किया और एक नई पीढ़ी को तैयार करने का प्रयास किया जो उनकी आशाओं को साकार कर सके।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का उपयोग युवा नास्तिकों को पैदा करने के लिए किया जाता था और शून्यवाद लोकप्रिय था; जब ऐसी चीजें सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर की जाती थीं; और जब प्रतिरोधियों को सताए जाने के बावजूद, सैद नूरसी ने लोगों के पुनरुत्थान के लिए काम किया, उन्हें आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रशिक्षण भी दिया।

सईद नूरसी ने मुस्लिम दुनिया की लंबे समय से चली आ रही "बीमारियों" का निदान किया और सबसे प्रभावी इलाज की पेशकश की। कुरान और सुन्नाह पर अपनी गतिविधि आधारित (पैगंबर की परंपराओं), साथ ही इस्लामी परंपरा और प्राकृतिक घटनाओं (ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के संकेत माने जाते हैं) पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उन्होंने क्रमशः इस्लाम के स्तंभों को प्रमाणित करने, विश्वास, पूजा, नैतिकता और अच्छे आचरण की आवश्यकता और समकालीन मुसलमानों के सामने सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

नूरसी के समय और निर्धारित इलाज कहा

सईद नूरसी संक्रमण के दौर में रहते थे - ओटोमन राज्य के अंतिम वर्ष और तुर्की गणराज्य के प्रारंभिक वर्षों में। उन्होंने व्यापक रूप से यात्रा की, और अनातोलिया और तुर्की में व्याप्त अज्ञानता, गरीबी और आंतरिक संघर्ष को प्रत्यक्ष रूप से देखा।
1911 में, उमय्यद मस्जिद (दमिश्क) में
उन्होंने लगभग 10,000 लोगों का विश्लेषण किया, जिनमें सौ उच्च श्रेणी के विद्वान भी शामिल थे
मुस्लिम दुनिया "मध्य युग" में क्यों फंसी हुई थी: बढ़ती निराशा,
सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सच्चाई की हानि, युद्धप्रियता और
विश्वासियों के बीच उचित बंधनों की अज्ञानता; व्यापक निरंकुशता; और अहंकार-केंद्रितता। उन्होंने अपना इलाज पेश किया- आशा, सच्चाई और भरोसेमंदता, आपसी प्रेम, परामर्श, एकजुटता और इस्लाम के अनुसार स्वतंत्रता- और
निम्नलिखित पर बल दिया:

> इतिहास हमें बताता है कि मुसलमानों ने इस हद तक प्रगति की है कि
> इस्लाम की सच्चाइयों पर उनके अडिग रहने से उन्हें अपनी शक्ति प्राप्त हुई है
> इन सच्चाइयों की ताकत से, जबकि वे कम हो गए हैं
> उनका अनुसरण करने में उनकी कमजोरी की सीमा। इस वास्तविकता का उल्टा अन्य धर्मों के लिए सच है। उनके अनुयायी आगे बढ़कर सबसे आगे निकल गए हैं
> अपने धर्म के पालन में उनकी कमजोरी की सीमा और कष्ट
> क्रांतियाँ और गिरावट उनके लगाव के अनुपात में होती हैं।
> हम मुसलमान, जो कुरान के छात्र हैं, प्रमाण का पालन करते हैं
> और विश्वास की सच्चाईयों को अपने तर्क, बुद्धि और हृदय से स्वीकार करें।
> अन्य धर्मों के कुछ सदस्यों के विपरीत, हम प्रमाण को नहीं छोड़ते
> और धार्मिक नेताओं की अंधी नकल करते हैं। इसलिए, भविष्य में, जब
> तर्क, विज्ञान और ज्ञान हावी होंगे, वह कुरान होगा,
> जिसके सभी आदेश और प्रस्ताव तर्क द्वारा पुष्ट होते हैं,
> जो निश्चित रूप से शासन करेगा। (दमिश्क के उपदेश से, चमकता हुआ)
> सत्य: स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नुस्खे, (अनुवाद), तुघरा बुक्स,
> न्यू जर्सी, पृ. 124, 125)

यदि हमारे कार्य इस्लामी नैतिक गुणों की पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं और विश्वास की सच्चाई के अनुसार, अन्य धर्मों के अनुयायी पूरे समुदाय के रूप में इस्लाम में प्रवेश करेंगे। यहाँ तक कि कुछ पूरे क्षेत्र और राज्य भी इस्लाम में शरण लेंगे।

उनके समय में और हमारे समय में, ईश्वर और पैगम्बर के बारे में उनकी अज्ञानता शांति और आशीर्वाद, धार्मिक आदेशों की असावधानी, ईश्वर के प्रति उदासीनता दोनों दुनियाओं में समृद्धि की इस्लामी गतिशीलता और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान की अज्ञानता मुस्लिम पिछड़ेपन के प्रमुख कारण थे। उन्होंने कहा कि
मुसलमान इस पिछड़ेपन से केवल आधुनिक वैज्ञानिक और वैज्ञानिक तरीकों से ही बच सकते हैं।

धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवस्थित विचार भी प्राप्त कर सकते थे, और स्वयं की रक्षा कर सकते थे केवल सच्चा ज्ञान प्राप्त करके ही भटकाव से बचा जा सकता है।

अज्ञानता मुस्लिम गरीबी, आंतरिक संघर्ष और अन्य समस्याओं का स्रोत थी। इस्लाम की सच्चाई के बारे में अज्ञानता, विज्ञान और इस्लाम की सच्चाई के बारे में अज्ञानता के साथ मिलकर प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप विशाल बंजर मैदान और मुसलमानों की प्राकृतिक संपदा विदेशियों के पास बहता हुआ। हालाँकि कुरान एकता की माँग करता है, मुसलमान बने रहे उनकी भूमि पर आक्रमण किया जा रहा था और उनके लोगों को अपमानित किया जा रहा था, फिर भी वे विभाजित थे।

साथ ही, वे मुस्लिम बुद्धिजीवी जिनकी ओर जनता देखती थी नेतृत्व और मुक्ति के लिए यूरोप से आने वाले इनकार के हिंसक तूफान ने उन्हें आकर्षित किया। पिछली सदी में मानव-केंद्रित समाज से उभरकर वैज्ञानिकता, बुद्धिवाद और प्रत्यक्षवाद में निहित विश्वदृष्टि, साथ ही साथ आधुनिक विज्ञान और विज्ञान विरोधी चर्च के बीच विरोधाभास, यह तूफान धीरे-धीरे यूरोप से ईसाई धर्म में उसकी आस्था खत्म हो गई। नतीजतन, रहस्योद्घाटन को मानवीय तर्क के आगे झुकना पड़ा।

इतिहास में अभूतपूर्व इस प्रक्रिया ने एक ऐसे इस्लाम की "इमारत" को हिलाकर रख दिया जो यह इमारत पहले से ही कई दिलों और दिमागों (व्यक्तिगत और सामुदायिक) में पुरानी और सड़ चुकी थी। सईद नूरसी का मानना था कि इस "इमारत" को पेश करके संरक्षित किया जा सकता है इस्लाम के मूल तत्व और उनकी शाखाएँ आधुनिक लोगों की क्षमताओं और तर्क तक पहुँचती हैं। उनके अनुसार, मुस्लिम दुनिया, स्पष्ट रूप से समुद्र के किनारे बसी हुई है आधुनिकता, इस्लाम के सभी क्षेत्रों में सफल, व्यापक नवीनीकरण से ही पुनः स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ सकेगी।

मुसलमानों पर कैसे हावी हुआ शासन

सईद नूरसी ने ओटोमन पतन और उसके बाद पश्चिमी प्रभुत्व की व्याख्या की मुस्लिम दुनिया के बारे में अपनी पुस्तक सुनुहत (घटनाएँ) में निम्नलिखित शब्दों में कहा गया है हेरात) और लेमीत (सत्य की झलक):

> यह आपदा समस्त मानव जाति की आपदा थी।
> इसका कारण, समस्त मानव जाति को शामिल करते हुए, यह गलत सोच थी कि
> भौतिकवाद से उत्पन्न - पाशविक स्वतंत्रता, शारीरिक निरंकुशता
> इच्छाएँ और कल्पनाएँ। इसमें हमारा हिस्सा हमारी उपेक्षा और
> इस्लाम के स्तंभों का परित्याग। सर्वोच्च निर्माता के लिए
> चौबीस घंटे में से एक घंटा चाहिए था।
>
> उन्होंने हमें आदेश दिया, इच्छा व्यक्त की कि हम अपनी भलाई के लिए एक घंटे का समय निर्धारित करें
> पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ। लेकिन आलस्य के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया, उपेक्षा की
> हमने उन्हें लापरवाही में डाल दिया। अतः हमें यह दण्ड मिला:
> पिछले पाँच वर्षों के दौरान हमें एक प्रकार की प्रार्थनाएँ करने के लिए प्रेरित किया
> एक निरंतर, चौबीस घंटे की कवायद और कठिनाई, जो हमें निरंतर बनाए रखती है-

हम हमेशा आगे बढ़ते और प्रयास करते रहे। उसने हमसे साल में एक महीना उपवास करने की भी माँग की, लेकिन हमें अपनी सांसारिक आत्माओं पर दया आई, इसलिए प्रायश्चित के तौर पर उसने हमें पाँच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया। वह चाहता था कि हम उसकी दी हुई संपत्ति का चालीसवाँ या दसवाँ हिस्सा ज़कात के तौर पर दें, लेकिन कंजूसी के कारण हमने गलत किया: हमने अपनी संपत्ति में हराम को मिला दिया, और स्वेच्छा से ज़कात नहीं दी । इसलिए उसने हमारी जमा की हुई ज़कात हमसे ले ली, और हमें हमारी संपत्ति में से हराम से बचा लिया। कर्म अपनी तरह की सज़ा का कारण बनता है। सज़ा कर्म के समान ही होती है। हज और उसकी हिकमत की उपेक्षा से कोई विपत्ति नहीं आई, बल्कि ईश्वरीय प्रकोप आया, और जो सज़ा मिली वह हमारे पापों का प्रायश्चित नहीं था बल्कि हमारे पापों में वृद्धि थी। यह हज में मौजूद उच्च इस्लामी नीति की उपेक्षा थी, जो आपसी परिचय के माध्यम से विचारों की एकता और आपसी सहायता के माध्यम से सहयोग लाती है, और यह हज में निहित विशाल सामाजिक लाभों की उपेक्षा थी जिसने दुश्मन के लिए इस्लाम के खिलाफ लाखों मुसलमानों को काम पर रखने के लिए जमीन तैयार की है... हज के लिए उत्सुकता से जल्दी जाने के बजाय, जो शुद्ध अच्छा है, लाखों मुसलमानों को दुश्मन के झंडे के नीचे लंबी यात्राएं करने के लिए मजबूर किया गया है, जो शुद्ध बुराई है। इस पर विचार करें और सावधान रहें! (सत्य की झलक, पृष्ठ 47, 48)

सईद नूरसी यह भी लिखते हैं:

मित्र! एक बार एक प्रश्नकर्ता ने पूछा था: "जब 'सत्य की जीत होती है' तो फिर अविश्वासियों ने मुसलमानों पर विजय क्यों प्राप्त की है और बल या ताकत ने सत्य पर विजय क्यों प्राप्त की है?"

मैंने उत्तर दिया: इन चार बिंदुओं पर विचार करें और आपकी कठिनाई हल हो जाएगी: पहली बात यह है। हर सत्य और अधिकार

तक पहुँचने का हर साधन हर समय सत्य और उचित नहीं हो सकता। इसी तरह, हर झूठ का हर साधन झूठा नहीं होना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि एक साधन जो (झूठ का उपयोग करता है) सत्य होता है, वह एक झूठे साधन (जिसका उपयोग सत्य या अधिकार करता है) पर हावी हो जाता है। ऐसी स्थिति में, एक सत्य पर झूठ हावी हो जाता है। लेकिन यह अस्थायी और अप्रत्यक्ष रूप से हुआ है, अनिवार्य रूप से या स्थायी रूप से नहीं। हालाँकि, अंतिम जीत हमेशा सत्य की होती है। (यह भी नहीं भूलना चाहिए कि) बल के पास एक सत्य होता है, और उसके निर्माण में एक उद्देश्य और अर्थ होता है।

दूसरा बिन्दु यह है: हालांकि यह अनिवार्य है कि सभी मुसलमानों की सभी विशेषताएं मुस्लिम हों, परन्तु वास्तव में ऐसा हमेशा नहीं हो सकता।
इसी तरह, सभी अविश्वासियों के सभी गुण अविश्वास से जुड़े होने या उनके अविश्वास से उत्पन्न होने की आवश्यकता नहीं है। उसी तरह, सभी पापी अपराधियों के सभी गुण पापी नहीं हो सकते हैं, न ही उन्हें हमेशा पाप से उत्पन्न होने की आवश्यकता है।

इसका मतलब यह है कि एक नास्तिक का मुस्लिम गुण एक मुसलमान के अधार्मिक गुण पर हावी हो जाता है। अप्रत्यक्ष रूप से और साधनों के कारण,

अविश्वासी आस्तिक पर हावी हो सकता है। इसके अलावा, इस दुनिया में
जीवन का अधिकार सर्वव्यापी है। जीवन - सार्वभौमिक दया की सार्थक अभिव्यक्ति - में ज्ञान का एक उदाहरण है, जो

अविश्वास बाधा नहीं डाल सकता.

तीसरा बिन्दु यह है: सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दो गुण
पूर्णता के सिद्धांत दो प्रकार के कानूनों को जन्म देते हैं। एक है जीवन का शरीयत या
ब्रह्माण्ड के निर्माण और संचालन की प्रक्रिया, जो
इच्छा का गुण; और दूसरा, प्रसिद्ध शरिया, जो वाणी के गुण से निकलता है। जिस प्रकार से पवित्र आत्मा के आदेश या कानून हैं।
सुप्रसिद्ध शरीयत का पालन किया जाए या न किया जाए, लोग इसका पालन भी करते हैं
या जीवन के शरीयत का उल्लंघन करें। पूर्व के लिए पुरस्कार और दंड ज्यादातर परलोक में प्राप्त होता है, जबकि दंड और
उत्तरार्द्ध का फल अधिकतर इसी संसार में भोगना पड़ता है। उदाहरण के लिए,
धैर्य का पुरस्कार सफलता है, जबकि आलस्य का दंड अभाव है;
और परिश्रम का पुरस्कार धन है। दृढ़ता का पुरस्कार त्रि-
उम्फ. ज़हर की सज़ा बीमारी है और इसके मारक का इनाम सेहत है. कभी-कभी दोनों शरिया के हुक्म लागू होते हैं

एक ही चीज़ में; इसमें प्रत्येक से संबंधित पहलू हैं। इसका मतलब है, जीवन के नियमों का पालन करना एक सत्य है,
और आज्ञाकारिता प्रबल होती है, जबकि इसका पालन न करना एक गलत रवैया है। यदि कोई सत्य किसी चीज़ का साधन रहा है
झूठ, जब प्रबल होगा तो वह झूठ का सच्चा साधन होगा।
यह सत्य को असत्य के हाथों पराजित होने का उदाहरण है।
इसका मतलब है। यह झूठ द्वारा सत्य की पराजय नहीं है। परिणामस्वरूप, "सत्य की जीत होती है" का अर्थ है: "सत्य अनिवार्य रूप से या अपने आप में विजयी होता है।" साथ ही, अंत या परिणाम का इरादा होता है।

चौथा बिन्दु यह है: एक सत्य संभावित रूप से बना हुआ है या यह
शक्तिहीन, या मिलावटी या दूषित। इसे विकसित करने की आवश्यकता है
या नई ताकत दी गई है। इसे बेहतर बनाने और उज्ज्वल करने के लिए, झूठ को अस्थायी रूप से इस पर हमला करने की अनुमति दी जाती है, ताकि चाहे कितना भी शुद्ध हो
सत्य का सोना शुद्ध निकलेगा। भले ही
इस संसार में आरंभिक असत्य विजयी है, वह अंत को नहीं जीत सकता।
युद्ध। "अंतिम (सुखद) परिणाम ईश्वर-भक्तों के पक्ष में है,
धर्मपरायण," उस पर प्रहार करेगा! इस प्रकार असत्य पराजित हो जाता है। सत्य की जीत होती है।
"सत्य की जीत होती है" का अर्थ है उस पर दंड लगाना। देखें: सत्य विजयी होता है। (सत्य की झलक, पृष्ठ 69-70)

विश्वास, ईश्वर का ज्ञान और उपासना

सईद नूरसी ने चौदह वर्ष की उम्र में सामान्य मदरसा (पारंपरिक धार्मिक विद्यालय) की शिक्षा पूरी की। लंबे समय तक मौजूदा शिक्षा प्रणाली से असंतुष्ट रहने के बाद, उन्होंने जल्द ही शिक्षा प्रणाली में शामिल होने के आधार पर सुधार के लिए व्यापक प्रस्ताव तैयार किए।
पारंपरिक धार्मिक को आधुनिक धर्मनिरपेक्ष विज्ञान के साथ जोड़ना और विश्वविद्यालयों की स्थापना करना

प्रमुख अनातोलियन शहरों में। हालाँकि उन्हें अपने विश्वविद्यालय के लिए दो बार धन प्राप्त हुआ
इसकी नींव 1913 में रखी गई थी, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों और उस समय की उथल-पुथल के कारण इसका निर्माण पूरा नहीं हो सका।

पारंपरिक धार्मिक विद्वानों के विपरीत, सईद नूरसी ने प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान, गणित और दर्शन का अध्ययन किया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, उन्हें पकड़ लिया गया और जेल में डाल दिया गया।
रूसियों के साथ 2 साल तक रहे। भागने और इस्तांबुल लौटने के बाद, उन्होंने अपनी व्याख्या शुरू की
इस्लाम के स्तंभ। लेकिन अनातोलिया में नई और अपरिवर्तनीय घटनाओं ने एक धर्मनिरपेक्ष शासन को जन्म दिया,
और बुद्धिजीवियों और युवाओं के बीच इस्लाम विरोधी रुझान और दृष्टिकोण (
जानबूझकर प्रत्यक्षवादी - यहाँ तक कि भौतिकवादी - शिक्षा प्रणाली) बढ़ रही थी।
इन कारकों ने उन्हें विश्वास और पूजा के मूल तत्वों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया और
कुरान के मुख्य उद्देश्य: ईश्वरीय अस्तित्व और एकता को समझाना और साबित करना,
पैगम्बरत्व, पुनरुत्थान, तथा उपासना और न्याय की आवश्यकता। उन्होंने इसमें समझाया है
उनके द वर्ड्स, द लेटर्स, एंड लाहिकालर (परिशिष्ट) के विभिन्न स्थान :

> सृष्टि का सर्वोच्च लक्ष्य और सबसे उत्कृष्ट परिणाम ईश्वर में विश्वास है।
> मानवता का सबसे श्रेष्ठ पद ईश्वर का ज्ञान है। जिन्न और मानवता के लिए सबसे उज्ज्वल खुशी और सबसे मधुर उपहार ईश्वर से प्रेम है।
> परमेश्वर का ज्ञान आत्मा के शुद्धतम आनन्द और
> हृदय का शुद्धतम आनन्द प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है
> भगवान। सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार, और निर्मल
> आनन्द ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित है।
>
> विश्वास अनुकरण पर आधारित संक्षिप्त पुष्टि तक सीमित नहीं है;
> बल्कि, इसके विकास की डिग्री और चरण हैं। यह एक बीज की तरह है
> एक पूर्ण विकसित, फल देने वाले वृक्ष के रूप में विकसित होना; सूर्य की छवि की तरह
> एक दर्पण या पानी की एक बूंद में समुद्र की सतह पर अपनी छवियाँ बनाना और
> सूर्य के प्रति आस्था में ईश्वर से संबंधित बहुत सी सच्चाईयाँ समाहित हैं
> ब्रह्माण्ड में निहित नाम और वास्तविकताएं यह हैं कि सबसे उत्तम विज्ञान, ज्ञान और गुण ईश्वर पर विश्वास और ज्ञान है
> तर्क और जांच पर आधारित विश्वास से उत्पन्न।
> नकल पर आधारित विश्वास को संदेह और प्रश्नों के माध्यम से खंडित किया जा सकता है
> आधुनिक विचार द्वारा उठाया गया, तर्क और जांच के आधार पर विश्वास की अभिव्यक्ति की संख्या जितनी ही डिग्री और ग्रेड हैं
> दिव्य नामों का। जो लोग ईश्वर से आने वाले विश्वास की निश्चितता प्राप्त करते हैं
> उन सत्यों का प्रत्यक्ष अवलोकन जिन पर विश्वास आधारित है उनका अध्ययन करें
> उन्होंने कहा कि ब्रह्माण्ड में कुरान एक प्रकार का है।
>
> कुरान, ब्रह्मांड और मानवता एक ही सत्य की तीन तरह की अभिव्यक्तियाँ हैं। कुरान, ईश्वरीय गुण से जारी है
> वाणी को लिखित या रचित ब्रह्मांड माना जा सकता है। शक्ति और इच्छा के दिव्य गुणों से उत्पन्न
> ब्रह्मांड को लिखित या रचित ब्रह्मांड कहा जा सकता है।
> इसे सृजित कुरान माना जाता है। चूँकि ब्रह्माण्ड कुरान का है
> समकक्ष और, एक सम्मान में, सृजन के दिव्य कानूनों का संग्रह

ब्रह्मांड का अध्ययन करने वाले विज्ञान को इस्लाम के अनुकूल होना चाहिए।
इसलिए अब (जब विज्ञान प्रबल है) और भविष्य में (विज्ञान के युग में)
ज्ञान), सच्चा विश्वास तर्क और जांच पर आधारित होना चाहिए;
ब्रह्मांड में ईश्वर के "संकेतों" पर निरंतर चिंतन पर; और प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक
घटनाओं पर। विश्वास कोई ऐसी चीज नहीं है जो अंधी नकल पर आधारित हो; बल्कि, इसे बुद्धि या तर्क और
हृदय दोनों को आकर्षित करना चाहिए, क्योंकि इसमें तर्क की स्वीकृति और

हृदय के अनुभव और समर्पण के साथ प्रतिज्ञान।
विश्वास का एक और स्तर है: प्रत्यक्ष से आने वाली निश्चितता
इसकी सच्चाई का अनुभव। यह नियमित पूजा और चिंतन पर निर्भर करता है। ऐसे विश्वास वाले लोग दुनिया
को चुनौती दे सकते हैं। इसलिए, हमारा पहला
और सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि इस तरह का ईमान हासिल किया जाए और पूरी ईमानदारी और विशुद्ध
रूप से अल्लाह के लिए इसे दूसरों तक फैलाया जाए। एक हदीस में कहा गया है कि
तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि कोई तुम्हारे माध्यम से ईमान अपनाए, बजाय इसके कि तुम
दुनिया पर अधिकार करो.

संक्षेप में, सईद नूरसी का तर्क है कि विश्वास में इस्लाम को उसके मूल रूप में ग्रहण करना शामिल है।
सम्पूर्णता.

1925 के बाद सैद नूरसी के जीवन की रूपरेखा

1925 में जब दक्षिण-पूर्वी तुर्की में विद्रोह हुआ, तो सईद नूरसी और कई अन्य लोगों ने विद्रोह कर दिया।
अन्य लोगों को आंतरिक निर्वासन में भेज दिया गया, हालांकि उन्होंने कभी भी इसमें भाग नहीं लिया
विद्रोह। पहले तो उन्होंने तुर्की के दक्षिण-पश्चिमी इलाके के एक पहाड़ी गांव बारला में एक दयनीय, अलग-थलग जीवन जिया।
हालाँकि, उन्हें सच्चा सुकून वहाँ मिला जहाँ वे रहते थे।
ईश्वर की सर्वव्यापकता और उनके प्रति पूर्ण समर्पण।

रिसाले-ए-नूर संग्रह (प्रकाश के पत्र) की मूल कृतियाँ , शब्द
और पत्र, बारला में लिखे गए थे और हाथ से लिखकर गुणा किए गए थे। हाथ से बनाई गई प्रतियां जल्द ही पूरे तुर्की में
प्रसारित हुईं और व्यापक रूप से पढ़ी गईं। 1935 में, सईद
नूरसी पर एस्कीशेहर क्रिमिनल कोर्ट में मुकदमा चलाया गया। हालाँकि उन्होंने हमेशा विद्रोह का विरोध किया
और सार्वजनिक शांति और व्यवस्था का उल्लंघन, और इस बात पर जोर दिया कि एक व्यक्ति के अधिकार
समाज के हित के लिए भी उसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता था, उन पर विनाश के लिए काम करने का आरोप लगाया गया था
सार्वजनिक व्यवस्था। जब उनसे गणतंत्र के बारे में उनकी राय पूछी गई, तो उन्होंने जवाब दिया: "मेरी जीवनी, जो आपके
हाथों में है, साबित करती है कि मैं एक धार्मिक गणतंत्रवादी था
इससे पहले कि तुममें से कोई भी पैदा होता।" उसे ग्यारह महीने तक जेल में रखा गया था
बरी.

रिहाई के बाद उन्हें कस्तमोनू में रहना पड़ा। वे शिखर पर ही रहे।
पुलिस स्टेशन की मंजिल पर रहते थे, और बाद में उसके ठीक सामने एक घर में रहने लगे। वे सात साल तक कस्तमोनू में रहे,
और उन्होंने इस उपन्यास का एक बड़ा हिस्सा लिखा।
रिसाले-ए-नूर में अध्ययन किया। इस अवधि के दौरान, वह और उनके छात्र [से

कस्तमोनू और अन्य जगहों पर] अधिकारियों से लगातार दबाव का सामना करना पड़ा। यह धीरे-धीरे बढ़ता गया, और व्यापक गिरफ्तारियों, डेनिज़ली परीक्षणों और 1943-44 में कारावास में परिणत हुआ। सईद नूरसी पर एक सूफी संप्रदाय बनाने और एक राजनीतिक समाज का आयोजन करने का आरोप लगाया गया था। हालाँकि उन्हें बरी कर दिया गया था, लेकिन उन्होंने सबसे भयावह परिस्थितियों में एक छोटी, अंधेरी, नम कोठरी में नौ महीने एकांत कारावास में बिताए।

संस्करण.

रिहाई के बाद, सईद नूरसी को एमिरदाद (अफ्योन प्रांत में) भेजा गया। 1948 में अफ्योन क्रिमिनल कोर्ट में उनके खिलाफ एक नया मामला खोला गया। अपील कोर्ट ने इस कोर्ट के मनमाने फैसले को खारिज कर दिया और सईद नूरसी और उनके छात्रों को बरी कर दिया गया। इसके बाद, वह कुछ समय के लिए एमिरदाद, इस्पार्टा, अफ्योन, इस्तांबुल और अन्य जगहों पर रहे। 1952 में एक बार फिर उन पर मुकदमा चला, इस बार उनके द्वारा गाइड फॉर यूथ के प्रकाशन के लिए। उन्हें बरी कर दिया गया।

23 मार्च, 1960 को उरफा में उनकी मृत्यु पर, जो संभवतः रमज़ान की शक्ति की रात थी, कोरोनर ने उनकी संपत्ति में एक पगड़ी, एक गाउन और 20 लीरा तय किया। इस्लाम के इस नायक की असली विरासत 6,000 पन्नों का रिसाले-ए-नूर संग्रह था, जिसका कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया है और दुनिया भर में इसका व्यापक प्रसार हुआ है।

रिसाले-ए नूर

इस कार्य की गुणवत्ता और मुख्य विशेषता को समझने के लिए, यू.के. के डरहम विश्वविद्यालय के डॉ. कॉलिन टर्नर का निम्नलिखित अनुभव विस्तार से उद्धृत करने योग्य है। वे लिखते हैं:

> ब्रिटेन में जन्मे और पले-बढ़े व्यक्ति के रूप में, मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि हम मुसलमान पश्चिम को क्या दे सकते हैं। लेकिन जवाब देने से पहले, मैं खुद से एक सवाल पूछना चाहता हूँ: क्या हम मुसलमान इसलिए हैं क्योंकि हम सर्वशक्तिमान ईश्वर में विश्वास करते हैं, या हम ईश्वर में इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि हम मुसलमान हैं?
>
> यह सवाल मेरे मन में एक दशक से भी पहले लंदन की सड़कों पर रूस द्वारा अफगानिस्तान पर कब्जे के विरोध में निकाले गए मार्च के दौरान आया था। मैंने इससे कई साल पहले औपचारिक रूप से इस्लाम धर्म अपना लिया था और यह मेरा पहला प्रदर्शन नहीं था। वहां बैनर और तख्तियां थीं और खूब नारेबाजी और नारे लग रहे थे। प्रदर्शन के अंत में एक युवक मेरे पास आया जिसने खुद को इस्लाम में रुचि रखने वाला व्यक्ति बताया। उसने कहा, "माफ कीजिए, लेकिन ला इलाहा इल्ला अल्लाह का क्या मतलब है?"
>
> बिना एक क्षण की हिचकिचाहट के मैंने उत्तर दिया, “अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।”

"मैं आपसे इसका अनुवाद करने के लिए नहीं कह रहा हूँ," उन्होंने कहा, "मैं आपसे यह पूछ रहा हूँ कि आप मुझे बताएँ कि इसका वास्तव में क्या अर्थ है।" एक लंबी अजीब सी खामोशी छा गई क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि मैं उन्हें जवाब देने में असमर्थ हूँ।

आप निःसंदेह सोच रहे होंगे कि, यह कैसा मुसलमान है जो ला इलाहा इल्ला अल्लाह का वास्तविक अर्थ नहीं जानता? इस पर मैं कहना चाहूँगा: एक विशिष्ट मुसलमान। उस शाम मैंने अपनी अज्ञानता पर विचार किया। बहुमत में होने से कोई मदद नहीं मिली; इससे मैं और अधिक उदास हो गया।

इस्लाम में बस एक अर्थ था, जिस तरह से किसी और चीज़ में कभी नहीं था। इसमें शासन के नियम थे; इसमें एक आर्थिक व्यवस्था थी; इसमें रोज़मर्रा के जीवन के हर पहलू से जुड़े नियम थे। यह समतावादी था और सभी जातियों को संबोधित था, और इसे समझना आसान और स्पष्ट था। ओह, और इसमें एक ईश्वर है, एक ईश्वर, जिस पर मैं हमेशा अस्पष्ट रूप से विश्वास करता था। बस यही था। मैंने कहा ला इलाहा इल्लल्लाह और मैं समुदाय का हिस्सा बन गया। अपने जीवन में पहली बार मैं इसमें शामिल था।

नए धर्मांतरित लोग हमेशा अपने धर्म के बारे में कम से कम समय में जितना संभव हो सके उतना जानने के लिए उत्साहित रहते हैं। उसके बाद के कुछ सालों में मेरी लाइब्रेरी तेज़ी से बढ़ी। सीखने के लिए बहुत कुछ था, और पढ़ाने के लिए बहुत सारी किताबें तैयार थीं। इस्लाम के इतिहास, इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था, इस्लाम में सरकार की अवधारणा पर किताबें; इस्लामी न्यायशास्त्र के अनगिनत मैनुअल, और सबसे बढ़कर, इस्लाम और क्रांति पर किताबें, कि कैसे मुसलमानों को उठ खड़ा होना चाहिए और इस्लामी सरकारें, इस्लामी गणराज्य स्थापित करने चाहिए। जब मैं 1979 की शुरुआत में ला इलाहा इल्लल्लाह का मतलब जानने के लिए मध्य पूर्व की अपनी यात्रा से ब्रिटेन लौटा, तो मैं पश्चिम को इस्लाम से परिचित कराने के लिए तैयार था।

इन्हीं किताबों की ओर मैंने इस सवाल का जवाब मांगा: ला इलाहा इल्लल्लाह का मतलब क्या है? एक बार फिर मुझे निराशा हाथ लगी।
किताबें इस्लाम के बारे में थीं, अल्लाह के बारे में नहीं। उनमें हर विषय पर चर्चा की गई थी, जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं, सिवाय उस विषय के जो वास्तव में महत्वपूर्ण था। मैंने विश्वविद्यालय की मस्जिद के इमाम से सवाल पूछा।
उसने बहाना बनाया और चला गया। फिर एक भाई जिसने इमाम से मेरा अशिष्ट सवाल सुन लिया था, आया और बोला: "मेरे पास ला इलाहा इल्ला अल्लाह की एक तफ़सीर है। अगर आप चाहें तो हम इसे साथ में पढ़ सकते हैं।" मैंने सोचा कि यह ज़्यादा से ज़्यादा दस या बीस पेज की होगी। यह कई किताबों में 5,000 से ज़्यादा पेज की निकली। यह सैद नूरसी की रिसाले-ए नूर थी।*

सईद नूरसी ने देखा कि आधुनिक अविश्वास अज्ञानता से नहीं, बल्कि विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है। विडंबना यह है कि मुसलमानों द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपेक्षा के कारण वे आर्थिक और सैन्य रूप से पश्चिम से पीछे रह गए। लेकिन वही विज्ञान और प्रौद्योगिकी जिसने पश्चिम को सफलता प्राप्त करने में सक्षम बनाया

* 1991 में सईद नूरसी पर आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत डॉ. टर्नर के पेपर से उद्धृत इस्तांबुल.

वैश्विक सैन्य और आर्थिक श्रेष्ठता के कारण पश्चिमी लोगों को अपनी ताकत खोनी पड़ी
विश्वास और पारंपरिक नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को नकार देते हैं, और निराशावाद में पड़ जाते हैं,
दु:ख और आध्यात्मिक संकट। यह स्वाभाविक था, क्योंकि यद्यपि दैवीय
प्रकृति के नियम (विज्ञान का विषय) ईश्वरीय सत्ता के प्रतिरूप हैं
धर्मग्रंथ हो या धर्म, पश्चिम में इन्हें एक दूसरे से अलग कर दिया गया।
नैतिकता और आर्थिक स्वार्थ ने धार्मिक और अन्य पारंपरिक मूल्यों की जगह ले ली। सईद नूरसी ने प्रकृति को ईश्वरीय संकेतों के संग्रह के रूप में देखा। इस प्रकार विज्ञान और धर्म में टकराव नहीं हो सकता, क्योंकि वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रबुद्ध होना चाहिए,

और हृदय को धर्म से प्रकाशित करने की आवश्यकता है।

प्रारंभ में, सईद नूरसी ने धार्मिक सत्यों की रक्षा तर्कों पर आधारित की
आधुनिक पश्चिमी दर्शन से व्युत्पन्न।** बाद में, उन्होंने देखा कि इस तरह से इस्लाम का पतन हो गया और मानव
सिद्धांतों के द्वारा इसके मूल तत्वों तक नहीं पहुंचा जा सका।
दर्शनशास्त्र। फिर वह लगभग पूरी तरह से कुरान की ओर लौट आया। वह लिखता है:

> विचारक मानव दर्शन और पश्चिमी दर्शन के सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं।
> मैं यूरोप के साथ अपने संघर्ष में उन पर निर्भर हूँ और सोचने का तरीका अपनाता हूँ।
> मेरे मस्तिष्क को दार्शनिक और इस्लामी विज्ञान से भी भर दिया,
> यह सोचकर कि दार्शनिक विज्ञान आध्यात्मिकता की ओर ले जाएगा
> प्रगति और ज्ञानोदय, और यह विश्वास कि यूरोपीय विचार और
> दर्शनशास्त्र इस्लाम की सच्चाई को पुष्ट और मजबूत कर सकता है।
> दर्शनशास्त्र की कोंपलें, जिनके बारे में हम मानते थे कि वे गहरी जड़ें जमा चुकी हैं,
> इस्लाम के मूल को नष्ट करके हमने सोचा कि इस्लाम को मजबूत किया जा सकता है।
> मैंने इस रास्ते को छोड़ दिया, क्योंकि यह इस्लाम विरोधी प्रवृत्तियों पर काबू पाने का एक बहुत ही
> कठिन, असंभव तरीका है, और कुछ हद तक इस्लाम को नीचा दिखाता है।
> दर्शन के सिद्धांतों तक पहुंचने के लिए आवश्यक तत्व इतने गहरे हैं।

इस्लाम के विरोधियों के साथ बहस करने, आधुनिकता का विरोध करने और उस पर विजय पाने में (भौतिकवादी) विचारधाराओं के विरुद्ध, कुरान ही पर्याप्त था:

> जबकि कुरान जैसा एक स्थायी चमत्कार है, मेरा मन इसे और सबूत खोजने की ज़रूरत नहीं समझता।
> कुरान जैसी सच्चाई का सबूत, क्या यह मेरे दिल के लिए भारी होगा
> इनकार करने वालों को चुप कराओ? (पच्चीसवाँ वचन)

यद्यपि सकारात्मक तर्कसंगत तर्क, अविश्वास और नास्तिकता का अभाव है
विज्ञान और दर्शन से प्राप्त विचारों से निपटना और उन्हें हटाना अधिक कठिन है

** धार्मिक सत्य को ईश्वरीय अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगम्बरत्व के रूप में परिभाषित किया गया है।
कुरान की दिव्य उत्पत्ति, अदृश्य दुनिया और उसके निवासी या अमूर्त आयाम
अस्तित्व की, पूजा और नैतिकता की आवश्यकता, मानवता का ऑन्टोलॉजिकल चरित्र, इत्यादि
पर. (ट्र.)

अज्ञानता से उत्पन्न अविश्वास। ब्रह्मांड का निर्माण और इसके भागों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए स्पष्ट रूप से एक पूर्ण, सर्वव्यापी ज्ञान, इच्छा और शक्ति की आवश्यकता होती है। प्रकृति स्वयं अपनी निर्माता नहीं हो सकती: यह एक डिज़ाइन है, डिज़ाइनर नहीं; जो छपा है, प्रिंटर नहीं; एक निष्क्रिय वस्तु, सक्रिय एजेंट नहीं; ईश्वरीय नियमों का एक संग्रह, कानून बनाने वाला नहीं। इसी तरह कारण या कार्य-कारण का नियम - ज्ञान, इच्छा और शक्ति के बिना केवल नाममात्र का अस्तित्व - कुछ भी नहीं बना सकता। अगर हम उन लोगों से पूछें जो सृजन को कार्य-कारण या कारणों से जोड़ते हैं, तो उन्हें पहले हमें यह बताना चाहिए कि पानी, मिट्टी और सूरज की रोशनी कैसे जानती है कि क्या करना है, वे इसे कैसे करते हैं, और वे कैसे एक फूल को विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।

रिसाले -ए-नूर भौतिकवादी विज्ञान द्वारा सृष्टि पर डाले गए “जादू-टोने” के आवरण को हटाता है। डॉ. टर्नर के शब्दों में:

> रिसाले -ए-नूर में कहा गया है कि जो कोई भी व्यक्ति ईमानदारी से सृजित दुनिया को वैसा ही देखना चाहता है जैसा वह है, न कि जैसा वह चाहता है या कल्पना करता है, उसे अनिवार्य रूप से ला इलाहा इल्ला अल्लाह के निष्कर्ष पर पहुंचना होगा, क्योंकि वह व्यवस्था और सामंजस्य, सुंदरता और संतुलन, न्याय और दया, आधिपत्य, जीविका और उदारता देखेगा। और साथ ही उसे एहसास होगा कि वे गुण सृजित प्राणियों की ओर नहीं बल्कि एक वास्तविकता की ओर इशारा कर रहे हैं जिसमें ये सभी गुण पूर्णता और निरपेक्षता में मौजूद हैं। वह देखेगा कि सृजित दुनिया इस प्रकार नामों की एक पुस्तक है, एक सूचकांक है, जो अपने मालिक के बारे में बताना चाहता है।

रिसाले -ए-नूर ला इलाहा इल्ला अल्लाह की व्याख्या को और भी आगे ले जाता है। यह जिस धारणा की जांच करता है वह कार्य-कारण की है, जो भौतिकवाद की आधारशिला है और वह स्तंभ है जिस पर आधुनिक विज्ञान का निर्माण हुआ है। कार्य-कारण में विश्वास इस तरह के कथनों को जन्म देता है: यह स्वाभाविक है; प्रकृति ने इसे बनाया है; यह संयोग से हुआ; इत्यादि।

तर्कसंगत तर्कों के साथ, रिसाले-ए-नूर कार्य- कारण के मिथक को ध्वस्त करता है और प्रदर्शित करता है कि जो लोग इस विश्वास को मानते हैं, वे ब्रह्माण्ड को उस रूप में नहीं देखते हैं जैसा वह वास्तव में है या जैसा वह प्रतीत होता है, बल्कि उस रूप में देखते हैं जैसा वे सोचते हैं।

रिसाले -ए-नूर दर्शाता है कि सभी स्तरों पर सभी प्राणी एक दूसरे से जुड़े हुए, एक दूसरे से जुड़े हुए और एक दूसरे पर निर्भर हैं, जैसे संकेंद्रित या एक दूसरे को काटते हुए वृत्त। यह दर्शाता है कि प्राणी कहीं से भी अस्तित्व में आते हैं, और अपने संक्षिप्त जीवन के दौरान, प्रत्येक का अपना विशेष उद्देश्य, लक्ष्य और मिशन होता है, जो दर्पण के रूप में कार्य करता है जिसमें विभिन्न दिव्य गुण और दिव्य नामों की अनगिनत संरचनाएँ प्रदर्शित होती हैं। इस पर विचार करें: जब आप किसी नदी के किनारे खड़े होते हैं, तो आप उस पर तैरते बुलबुलों में सूर्य की अनगिनत छवियाँ देखते हैं।

जब वे बुलबुले सुरंग में प्रवेश करते हैं, तो छवियाँ दिखाई नहीं देतीं। हालाँकि, जिस बिंदु पर आप खड़े हैं, वहाँ आने वाले अन्य बुलबुले भी वही प्रतिबिंब दिखाएँगे, और जब वे भी सुरंग में प्रवेश करेंगे, तो वे भी वही प्रतिबिंब दिखाएँगे।

सुरंग में, प्रतिबिंब गायब हो जाएंगे। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे छवियां स्वयं बुलबुलों की नहीं हैं: बुलबुले उनका स्वामित्व नहीं ले सकते। बल्कि, इसकी छवियों को प्रतिबिंबित करके, बुलबुले सूर्य के अस्तित्व को दर्शाते हैं, और सुरंग में अपने गायब होने के माध्यम से वे सूर्य की स्थायित्व के मुकाबले अपनी क्षणभंगुरता को प्रदर्शित करते हैं। यह ठीक इसी तरह है कि उनके जीवन में आने, नपुंसकता और आकस्मिकता के माध्यम से, स्वयं के अलावा अन्य कारकों पर उनकी पूरी निर्भरता, प्राणी बिना किसी संदेह के प्रदर्शित करते हैं कि वे अपने अस्तित्व के लिए उस एक के ऋणी हैं जो अनिवार्य रूप से मौजूद है, बनाता है, और सभी चीजों पर शक्ति रखता है, और यह कि उनकी क्षणभंगुरता और मृत्यु के माध्यम से वे उस एक की स्थायित्व को दर्शाते हैं।

भौतिकवादी, हालांकि, चीजों को अलग तरह से देखते हैं - वे अलग चीजें नहीं देखते हैं। वे हमें यह मानने के लिए कहते हैं कि यह ब्रह्मांड, जिसकी सहज व्यवस्था और सामंजस्य से वे इनकार नहीं करते, आखिरकार संयोग का काम है। अराजकता और अव्यवस्था का, विशुद्ध संयोग का। फिर वे हमें यह मानने के लिए कहते हैं कि यह ब्रह्मांड कारणों के यांत्रिक अंतर-खेल से टिका हुआ है - चाहे वे कुछ भी हों, और भौतिकवादी भी निश्चित रूप से नहीं जानते - वे कारण जो स्वयं निर्मित हैं, नपुंसक, अज्ञानी, क्षणभंगुर और उद्देश्यहीन हैं, लेकिन जो किसी तरह कहीं से भी प्रकट हुए नियमों के माध्यम से, सामंजस्य और संतुलन की सिम्फनी की व्यवस्थित कला कृतियों का निर्माण करते हैं जिन्हें हम अपने चारों ओर देखते और सुनते हैं।

रिसाले -ए-नूर इन मिथकों और अंधविश्वासों को नष्ट करता है। यह देखते हुए कि सभी चीजें आपस में जुड़ी हुई हैं, यह दोहराता है, जो कुछ भी फूल के बीज को अस्तित्व में लाता है, वह फूल के लिए भी जिम्मेदार होना चाहिए, साथ ही फूल के अस्तित्व के स्पष्ट कारणों जैसे हवा, पानी, सूरज की रोशनी और पृथ्वी के लिए भी जिम्मेदार होना चाहिए; और उनकी परस्पर निर्भरता को देखते हुए, जो कुछ भी फूल को अस्तित्व में लाता है, वह पेड़ के लिए भी जिम्मेदार होना चाहिए; और इस तथ्य को देखते हुए कि वे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, जो कुछ भी पेड़ को अस्तित्व में लाता है, वह जंगल के लिए भी जिम्मेदार होना चाहिए, इत्यादि। इस प्रकार एक एकल परमाणु बनाने में सक्षम होने के लिए, किसी को पूरे ब्रह्मांड को बनाने में भी सक्षम होना चाहिए। यह निश्चित रूप से एक कठिन काम है, एक ऐसे कारण के लिए जो अंधा, नपुंसक, क्षणभंगुर, आश्रित और हमारे उद्देश्य के ज्ञान से रहित है।

प्रकृति या प्राकृतिक नियमों को सृजनात्मक शक्ति का श्रेय देना एक व्यक्तिगत राय से अधिक कुछ नहीं है, जो किसी वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक जांच के परिणामस्वरूप नहीं है। इसी तरह, ब्रह्मांड के निर्माता को नकारना, जिसने अपनी शक्ति के हाथ को ढकने के लिए स्पष्ट कारणों को पर्दे के रूप में रखा है, तर्क का कार्य नहीं बल्कि इच्छा का कार्य है। संक्षेप में, कार्य-कारण एक अपरिष्कृत और चालाक उपकरण है जिसके द्वारा मनुष्य निर्माता की संपत्ति को सृजित प्राणियों में वितरित करता है ताकि वह खुद को अपने पास मौजूद सभी चीज़ों और अपने होने का पूर्ण स्वामी और शासक बना सके।

ला इलाहा इल्लल्लाह आयत से प्रेरित होकर , रिसाले -ए-नूर दिखाता है कि ईश्वर के संकेत, उनके नामों और गुणों के ये दर्पण, हमें लगातार नए और हमेशा बदलते रूपों और स्वरूपों में प्रकट होते हैं, जो स्वीकृति, स्वीकृति, समर्पण, प्रेम और पूजा को प्रेरित करते हैं। रिसाले-ए-नूर दिखाता है कि शब्द के सही अर्थ में मुसलमान बनने में एक अलग प्रक्रिया शामिल है: चिंतन से ज्ञान, ज्ञान से पुष्टि, पुष्टि से विश्वास या दृढ़ विश्वास और विश्वास से समर्पण। और चूंकि प्रत्येक नया क्षण, प्रत्येक नया दिन, ईश्वरीय सत्य के नए पहलुओं को प्रकट करता है, इसलिए यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इस्लाम के बाहरी अभ्यास, पूजा के औपचारिक कार्य भी इस प्रक्रिया में योगदान करते हैं।

इसलिए, आस्था में वृद्धि या कमी, या मजबूती या कमजोरी, प्रक्रिया की निरंतरता पर निर्भर करती है। इसलिए आस्था की वास्तविकता ही है जिस पर हमें सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है; यहीं से इस्लाम की वास्तविकताएं अनिवार्य रूप से आगे बढ़ेंगी।

रिसाले -ए-नूर मनुष्य के अस्तित्ववादी चरित्र पर भी ध्यान केंद्रित करता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण अज्ञानता में जन्म लेता है; स्वयं को और अपनी दुनिया को जानने की इच्छा एक जन्मजात इच्छा है। इस प्रकार "मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? यह कौन सी जगह है जहाँ मैं खुद को पाता हूँ? यहाँ मेरा कर्तव्य क्या है? मुझे अस्तित्व में लाने के लिए कौन जिम्मेदार है? वह क्या है जो जीवन और मृत्यु हमसे पूछते हैं?" - ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर हममें से प्रत्येक अपने तरीके से देता है, या तो प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से या दूसरों द्वारा सुझाए गए उत्तरों को आँख मूंदकर स्वीकार करके। और कोई अपना जीवन कैसे जीता है, इस दुनिया में वह किस मानदंड से कार्य करता है, यह पूरी तरह से उन उत्तरों की प्रकृति पर निर्भर करता है। रिसाले-ए-नूर के अनुसार, इन प्रश्नों के सभी उत्तर, जिनके द्वारा हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन जीने के तरीके और विश्वदृष्टि को निर्धारित करता है, या तो दिव्य धर्मों के रूप में प्रकट दिव्य रहस्योद्घाटन या सभी के अहंकार द्वारा दिए जाते हैं। इतिहास मानव जीवन के इन दो प्रवाहों या मानवता के वृक्ष की इन दो मुख्य शाखाओं, अर्थात् धर्म और मानव अहंकार के बीच संघर्षों को दर्ज करता है। ईश्वरीय रहस्योद्घाटन का पालन करने से इनकार करते हुए, अहंकार अहंकार में स्वयं के स्वामित्व का दावा करता है, जो कुछ भी उसे निर्माता द्वारा दिया जाता है उसे अपने लिए हड़प लेता है, और सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा उसे दी गई सभी उपलब्धियों को खुद को जिम्मेदार ठहराता है। हालाँकि, इसका परिणाम मनुष्य की दीनता, दयनीयता और दुःख है। मानवता की इस शाखा ने अब तक फिरौन, निम्रोद, नीरो और अन्य अत्याचारियों और उन लोगों के फल पैदा किए हैं, जो अपनी शारीरिक इच्छाओं के आगे झुक गए, खुद भटक गए और दूसरों को गुमराह किया। इस शाखा के विपरीत वह शाखा है जिस पर पैगंबर, संत और पुण्य के अन्य उदाहरण विकसित हुए हैं।

यह शाखा व्यक्ति के अपने सेवकत्व के प्रति सचेत रहने में निहित है, जिसकी शक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूर्ण शक्ति के समक्ष अपनी अंतर्निहित कमजोरी को स्वीकार करने में निहित है, और जिसका धन इस बात में निहित है कि वह अपने सेवकत्व के प्रति सचेत रहे ...

परमेश्वर के धन के सामने अपनी अंतर्निहित गरीबी को स्वीकार करना। यह भी
इसके लिए पूर्ण कृतज्ञता के साथ गहन भक्ति और आराधना की आवश्यकता है, साथ ही ब्रह्मांड में उसके
संकेतों पर निरंतर चिंतन और
अपने धर्म का प्रचार करने में कभी न ख़त्म होने वाला उत्साह। रिसाले-ए-नूर
यह ब्रह्मांड के साथ-साथ मनुष्य के आंतरिक जीवन की भी एक निर्देशित यात्रा से कम नहीं है।
दुनिया में यात्री वह है जो सवालों के जवाब खोज रहा है
ऊपर, और वास्तव में उन्हें पाता है

डॉ. टर्नर आगे कहते हैं:

पश्चिम का धर्मनिरपेक्ष, आत्म-निरंकुश समाज सभी स्तरों पर डिज़ाइन किया गया है
अंधा और मूर्ख बनाना। इस तथ्य को छुपाना कि स्वयं का धर्म है
अपने वादों पर खरा उतरने में विफल रहा; कि "असीमित" की धर्मनिरपेक्ष त्रिमूर्ति
प्रगति, पूर्ण स्वतंत्रता और अप्रतिबंधित खुशी” सदियों पहले त्यागे गए [एक और पवित्र] त्रिदेव की तरह ही
निरर्थक है।
इस तथ्य को आगे बढ़ाएं कि आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति, जो धर्मनिरपेक्ष है
मानवतावाद को अपने मूल सिद्धांत के रूप में अपनाने के कारण पश्चिम आध्यात्मिक रूप से बंजर हो गया
है और पीढ़ी दर पीढ़ी बर्बाद होता रहा है। फिर भी, वहाँ बहुत कुछ है
वे लोग हैं जो जागने लगे हैं, और अपने अंदर छिपे भ्रम को समझने लगे हैं
जो वे जी रहे हैं। अहंकार की बीमारी इन्हीं को होती है
इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि कैंसर से पीड़ित व्यक्ति को ठीक नहीं किया जा सकता है।
उसे नया कोट देना। लेकिन यह केवल आधुनिक पश्चिमी आदमी ही नहीं है जो इस बीमारी से पीड़ित है; यह
दुनिया के लगभग सभी लोगों में आम है।
दुनिया में जो ज़रूरी है वो है सही निदान, कट्टरपंथी सर्जरी, और
निरंतर बैक-अप उपचार। रिसाले-ए-नूर ये सभी सुविधाएँ प्रदान करता है।
रिसाले -ए-नूर एक क्रांति की परिकल्पना करता है, एक क्रांति
मन, हृदय, आत्मा और भावना का। इसे नेतृत्व करने के लिए डिज़ाइन किया गया है
मुसलमानों को अनुकरण द्वारा विश्वास से लेकर जांच के माध्यम से विश्वास तक,
प्रकृति और मनुष्य की आंतरिक आत्मा का अध्ययन और उन पर चिंतन, और
पूजा, और आगे बौद्धिक ज्ञान के माध्यम से। यह भी
इसका उद्देश्य अविश्वासियों को आत्म-पूजा से ईश्वर की पूजा की ओर ले जाना है
सर्वशक्तिमान।

डॉ. टर्नर के अनुसार, रिसाले-ए-नूर एकमात्र आत्मनिर्भर, व्यापक इस्लामी रचना है जो ब्रह्मांड को वैसा ही देखती है जैसा वह वास्तव में है, विश्वास की वास्तविकता को वैसा ही प्रस्तुत करती है जैसा वह वास्तव में है, कुरान की व्याख्या पैगम्बर के इरादे के अनुसार करती है, आधुनिक पुरुषों और महिलाओं को प्रभावित करने वाली वास्तविक और बहुत खतरनाक बीमारियों का निदान करती है,
और इलाज की पेशकश करता है। रिसाले-ए नूर में भी बीमारी से जुड़ी लगभग हर बात शामिल है
विश्वास, उपासना और नैतिकता के मूल तत्व, और आवश्यक मानदंड प्रदान करता है
इस दुनिया में इस्लाम और कुरान को समझने के लिए एक ऐसा काम, जो
कुरान की रोशनी को प्रतिबिंबित करता है और ब्रह्मांड और मानवता को प्रकाशित करता है
आंतरिक दुनिया को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

प्रस्तावना

T ये शब्द सईद नूरसी द्वारा 10 साल के प्रयास को दर्शाते हैं
इस्लाम के आवश्यक सत्यों को, विशेष रूप से इस्लामी विचार और विश्वास से संबंधित, कठोर निगरानी और कभी-कभी अप्रमाणित आरोपों के आधार पर कारावास सहते हुए। कठिनाई के इस समय के दौरान, सईद नूरसी, उनके शिष्य और धार्मिक जीवन जीने की कोशिश कर रहे तुर्की मुसलमान एक कठिन समय से गुज़र रहे थे। ओटोमन राज्य के खंडहरों पर तुर्की गणराज्य के निर्माण का सामना करने के साथ-साथ कानूनी, आधिकारिक, शिक्षा और व्यक्तिगत क्षेत्रों में सदियों पुरानी इस्लामी परंपराओं को यूरोपीय आयातों से बदलने के साथ, सईद नूरसी ने अपनी सभी बौद्धिक और साहित्यिक प्रतिभाओं को यह सुनिश्चित करने के लिए लगाया कि तुर्की के लोग और समाज इस्लाम के दायरे से पूरी तरह से बाहर न निकल जाएँ।

सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भागीदार, सईद नूरसी ने धीरे-धीरे इस तरह की सक्रियता से परहेज किया क्योंकि उनका मानना था कि राजनीति मुसलमानों को एक-दूसरे के खिलाफ़ विभाजित करती है और पहले से ही शत्रुतापूर्ण माहौल में उन्हें कमज़ोर बनाती है। अपने लेखन में खुद को "नए सईद" के रूप में संदर्भित करके इस विकल्प को चिह्नित करते हुए, उन्होंने अपना शेष जीवन आधुनिक और वैज्ञानिक शब्दावली में इस्लाम की सच्चाई को समझाने में बिताया ताकि नए उभरते धर्म-विरोधी रुझानों का मुकाबला किया जा सके।

सैद नूरसी ने द वर्ड्स क्यों लिखा?

हमेशा की तरह, उनकी पहली और सबसे बड़ी चिंता ईश्वर के अस्तित्व को साबित करना है और
एकता, शारीरिक पुनरुत्थान, न्याय का दिन, और न्याय की वैधता
कुरान और मुहम्मद की पैगम्बरियत को जीवन, प्रकृति और धर्म के समग्र दृष्टिकोण से समझने तथा भौतिक सत्य को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने में सक्षम होने के कारण

लोगों के आध्यात्मिक जीवन से संबंधित और उनसे संबंधित। वह पश्चिम द्वारा "तर्कसंगत" विचार माने जाने वाले विचारों पर भी आधारित है, जिसका अर्थ है विज्ञान, अवलोकन और तर्क। उन्होंने इस मार्ग को तब चुना जब उन्हें एहसास हुआ कि नई पीढ़ियों से संपर्क करना निरर्थक है, जिन्हें पश्चिमी प्रतिमान के अनुसार शिक्षित किया जा रहा था, जो धर्म को तर्कहीन और वास्तविक ज्ञान, प्रगति और विकास के लिए प्रतिकूल मानते हैं। इस प्रकार, कई धार्मिक नेताओं के विपरीत, उन्होंने सीखा कि ऐसे लोगों के साथ वैज्ञानिक संदर्भ में कैसे चर्चा की जाए, जिसने उनके विश्वदृष्टिकोण को आकार दिया।

उनकी अगली बड़ी चिंता यह दिखाना है कि धार्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान विरोधाभासी और परस्पर अनन्य नहीं हैं। उनके सभी लेखन में हम एक ही दृष्टिकोण देखते हैं: प्रकृति में घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन और इस तरह के अध्ययन से क्या अनुमान लगाया जा सकता है या कहा जा सकता है, एक परिकल्पना से शुरू करना और इसका विरोध करने वालों के तर्कों का मुकाबला करने के लिए वैज्ञानिक तर्क और तर्क का उपयोग करके इसका समर्थन करने की कोशिश करना, और यह देखने के लिए वास्तविक दुनिया में परिकल्पना का परीक्षण करना कि क्या यह सटीक है या इसे परिष्कृत करने की आवश्यकता है। हालाँकि, ऐसा करते समय, वह कभी भी मानव विवेक और हृदय में प्रकृति में जो कुछ भी पाता है, उसके प्रतिरूप को दिखाने में लापरवाही नहीं करता। उनके लिए मानवता, प्रकृति या ब्रह्मांड और कुरान तीन पुस्तकें हैं जिनका एक ही अर्थ है, जो एक ही प्रमुख सत्य - ईश्वर का अस्तित्व और एकता - की ओर इशारा करती हैं, लेकिन तीन अलग-अलग सामग्रियों से बनी हैं। क्या यह वही सटीक दृष्टिकोण नहीं है जिसका उपयोग वैज्ञानिकों द्वारा सृष्टि के बहुआयामी पहलुओं को समझने के लिए किया जाता है?

मुख्य विचारों का सारांश

इस पुस्तक में सैद नूरसी द्वारा लिखे गए 33 शब्द हैं, जो उन लोगों को निर्देश देने के लिए हैं जो ईश्वर के करीब आना चाहते हैं, ताकि वे इस बात की समझ प्राप्त कर सकें कि किस प्रकार ईश्वर ने स्वयं को ब्रह्मांड, मानवता, कुरान और पैगम्बर मुहम्मद के माध्यम से प्रकट किया है।

बस-माला का अर्थ - ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, दयालु है - पाँच दैनिक प्रार्थनाओं का अर्थ और महत्व, जहाँ मानव सुख निहित है, विश्वास और पूजा का महत्व, आदि जैसे विभिन्न मामलों का संक्षेप में उल्लेख करने के बाद, जिन पर बाद में विस्तार से चर्चा की गई है, दसवें वचन में सैद नूरसी हमें एक ऐसे मुद्दे से रूबरू कराते हैं जिसका सामना हम सभी को अपने आप करना होगा और अपने सभी भ्रमों से मुक्त होना होगा: न्याय के दिन मानवता का पुनरुत्थान। यह अन्यथा कैसे हो सकता है, जब कुरान और पैगंबर हमें बार-बार बताते हैं कि यह जीवन एक परीक्षण क्षेत्र से अधिक कुछ नहीं है जिसमें हमें अपनी पूरी क्षमता को महसूस करने का प्रयास करना है: उस दिव्य नाम या गुण को प्रतिबिंबित करना जिसे प्रतिबिंबित करने के लिए हमें बनाया गया था। लेकिन उनका दृष्टिकोण पूरी तरह से मौलिक है।

इसमें अंधविश्वास और अतार्किक स्वीकृति की बात नहीं कही गई है; बल्कि, वह अपनी बात रखने के लिए प्रकृति के उन्हीं नियमों का इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें वैज्ञानिक बहुत पसंद करते हैं। उदाहरण के लिए:

> क़यामत के दिन मानव शरीर के पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान के लिए हज़ारों उपयुक्त उपमाएँ हैं। उदाहरण के लिए, इस बात पर विचार करें कि किस तरह पेड़, जो लोगों की तुलना में कहीं ज़्यादा संख्या में हैं, हर वसंत की शुरुआत के कुछ दिनों के भीतर अपने सभी पत्तों के साथ पिछले साल के पत्तों के समान ही बहाल हो जाते हैं।
>
> इस बात पर विचार करें कि किस तरह पेड़ों के पत्ते, फूल और फल पिछले वसंत की तरह ही अत्यधिक तेज़ी से फिर से बनते हैं। अनगिनत बीजों, गुठलियों और जड़ों के अचानक जागने, खुलने और जीवन में आने पर विचार करें, जो वसंत विकास का मूल हैं।
>
> गौर कीजिए कि कैसे खड़े कंकालों जैसे दिखने वाले पेड़, एक ही आदेश पर अचानक "मृत्यु के बाद पुनरुत्थान" के संकेत दिखाने लगते हैं।
> अनगिनत छोटे जीवों के आश्चर्यजनक पुनर्जीवन पर विचार करें, विशेष रूप से मक्खियों की विभिन्न प्रजातियों के पुनर्जीवन पर - विशेष रूप से उन मक्खियों के पुनर्जीवन पर - जो निरंतर अपने चेहरे, आंखों और पंखों को साफ करते हुए हमें हमारे अनुष्ठानिक स्नान और स्वच्छता की याद दिलाती हैं, और हमारे चेहरों को सहलाती हैं - कुछ ही दिनों में, जबकि उनकी संख्या सभी मनुष्यों से कहीं अधिक होती है। (पृष्ठ 125-126)

द ट्वेल्थ वर्ड और अन्य जगहों पर, वे एक ऐसे विषय का विश्लेषण करते हैं जो सभी धर्म-आधारित सभ्यताओं और संस्कृतियों को परेशान करता रहता है: आधुनिक युग के आधार पर आधुनिक धर्मनिरपेक्ष और/या नास्तिक दार्शनिक मान्यताओं को कैसे समझा जाए? वे अपने सभी लेखन में इस विषय पर बार-बार लौटते हैं।

उनका विश्लेषण, इतिहास और उस समय के उनके अवलोकन पर आधारित है जिसमें वे रह रहे थे, सामाजिक वास्तविकता से इतना मेल खाता है कि हम केवल यही कह सकते हैं: "लेकिन निश्चित रूप से!
यह कितना स्पष्ट है।" वह लिखते हैं:

> दर्शनशास्त्र बल या शक्ति को सामाजिक जीवन में आधार मानता है, तथा स्वार्थ की प्राप्ति इसका लक्ष्य है। यह मानता है कि जीवन का सिद्धांत संघर्ष है। समुदाय के सदस्यों और समुदायों के बीच एकजुटता का बंधन जाति और आक्रामक राष्ट्रवाद है; तथा दर्शनशास्त्र द्वारा प्रस्तुत फल शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि और मानवीय आवश्यकताओं की निरंतर वृद्धि है। हालाँकि, बल आक्रामकता को बुलाता है, स्वार्थ की तलाश भौतिक संसाधनों पर लड़ाई का कारण बनती है, तथा संघर्ष कलह लाता है। नस्लवाद दूसरों को निगलकर पोषण करता है, जिससे आक्रामकता का मार्ग प्रशस्त होता है। यही कारण है कि मानवता ने खुशी खो दी है।
>
> जहाँ तक कुरान की बुद्धि का सवाल है, यह सामाजिक जीवन में शक्ति को नहीं, बल्कि अधिकार को आधार मानता है। इसका लक्ष्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है, न कि स्वार्थ की पूर्ति। इसका जीवन सिद्धांत आपसी सहयोग है, संघर्ष नहीं। यह केवल धर्म, पेशे और देश के सामुदायिक बंधनों को स्वीकार करता है। इसका अंतिम लक्ष्य शारीरिक इच्छाओं को नियंत्रित करना और

> आत्मा को उत्कृष्ट विषयों की ओर प्रेरित करना, हमारी उत्कृष्ट भावनाओं को संतुष्ट करना ताकि
> हम मानवीय पूर्णता और सच्ची मानवता के लिए प्रयास करेंगे।
> एकता, सद्गुण एकजुटता लाते हैं, और पारस्परिक सहायता का अर्थ है तेज़ी लाना
> एक दूसरे की मदद करना। धर्म भाईचारा, बहनचारा और भाईचारा सुनिश्चित करता है
> सामंजस्य। हमारी शारीरिक आत्मा और इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को प्रेरित करना
> पूर्णता इस संसार और अगले संसार में खुशी लाती है। (पृ. 147-148)

उनके श्रोताओं के लिए ईश्वर, कुरान,
और पैगंबर मुहम्मद। ईश्वर को "कहीं बाहर" एक अस्पष्ट उपस्थिति के रूप में नहीं दर्शाया गया है, एक क्रूर व्यक्ति जो हमें दंडित करने के लिए इंतजार कर रहा है, एक अविवेकी व्यक्ति जो हमारे ठोस प्रयासों के बजाय हमारे मीठे शब्दों के आधार पर अपने निर्णय लेता है, या जिसने अपनी रचना में रुचि खो दी है और कहीं और चला गया है,

हमें अपनी मर्जी से काम करना होगा।

सईद नूरसी ने ईश्वर को हमारे जीवन में एक जीवित उपस्थिति के रूप में दर्शाया है। और क्यों, वह
बार-बार पूछा जाता है कि क्या कुरान इस तरह से अवतरित हुआ है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे उसकी शिक्षा, परिष्कार या युग कुछ भी हो, उसमें वह सब कुछ पा सकता है जिसकी उसे आवश्यकता है?
इससे भी बढ़कर, परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी इच्छा को परमेश्वर के अनुरूप बनाना आसान बना दिया है भविष्यद्वक्ताओं और संदेशवाहकों को भेजकर, जिनमें से कोई भी ईश्वरीय या अर्ध-ईश्वरीय नहीं था, हमें यह दिखाने के लिए कि हमें किस तरह से जीवन जीना चाहिए जिससे उसकी प्रसन्नता प्राप्त हो। और,
चूँकि वे सभी पूर्णतः मानव थे, इसलिए हम और भी अधिक परिपूर्णता की आकांक्षा कर सकते हैं
उनका अनुकरण करना और उनकी शिक्षाओं को समझना। ये सभी बिंदु महत्वपूर्ण हैं
ग्यारहवें शब्द में एक सरल कहानी में खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है:

> एक राजा के पास बहुमूल्य पत्थरों और गड़े हुए खजानों का विशाल खजाना था
> वह सभी उद्योगों में पारंगत थे, और उनके पास एक विशाल ज्ञान था
> सभी कलात्मक और वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान और अनगिनत बेहतरीन
> कला। जैसा कि पूर्ण सौंदर्य और पूर्णता वाला कोई भी व्यक्ति देखता है और
> खुद को दिखाने के लिए, वह गौरवशाली राजा एक प्रदर्शनी खोलना चाहता था
> और अपने राज्य की भव्यता, अपने धन की महिमा और
> विस्तार, और उनकी कलात्मकता और कौशल के अद्भुत उत्पाद। वह इतना
> उसकी सुन्दरता और सम्पूर्णता को अपनी विवेकशील आँखों से तथा दूसरों की आँखों से देखना चाहता था।
>
> और इसलिए उसने एक बहुत बड़ा, भव्य महल बनवाना शुरू किया।
> इसे कई अपार्टमेंट और कमरों में विभाजित करके, उन्होंने इसे अपने हाथों से सजाया।
> उन्होंने कला के सबसे बेहतरीन और सबसे खूबसूरत कामों को बनाया और इसे अपने कीमती पत्थरों से सजाया। अपने कलात्मक और वैज्ञानिक सिद्धांतों और अनुशासनों के अनुसार इसे डिजाइन करते हुए,
> उन्होंने इसे चमत्कारी उत्पादों से सुसज्जित किया
> अपने ज्ञान का उपयोग करते हुए, उन्होंने वहां पर सबसे स्वादिष्ट विशिष्ट खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ रखने वाली टेबल स्थापित की, और खाने के लिए एक उपयुक्त टेबल निर्दिष्ट की।
> अपने विषयों के प्रत्येक जनजाति। उन्होंने उन्हें इतनी विस्तृत, उदार प्रदान की-

कलात्मक रूप से ऐसा लग रहा था मानो प्रत्येक टेबल अंदर आ गई हो
कम से कम सौ अलग-अलग कौशलों के माध्यम से अस्तित्व बनाए रखना।

फिर, राजा ने अपने राज्य की सारी प्रजा को दावत पर आमंत्रित किया और तमाशा देखो। एक सर्वोच्च कमांडर को पढ़ाने के बाद उन्होंने नियुक्त किया कि उसने ऐसा महल क्यों बनाया था और उपयोग और अर्थ इसकी सामग्री के बारे में, उन्होंने उसे मेहमानों को इसके निर्माता के बारे में सूचित करने के लिए भेजा महल-राजा-और बताएं कि उन्होंने इसे क्यों बनाया था, उनके नियम क्या थे महल की वास्तुकला, सजावट, फर्नीचर और आभूषणों के बारे में भी सर्वोच्च कमांडर का कर्तव्य था।

यह वर्णन करते हुए कि किस प्रकार महल की सामग्री, राजा की कुशलता और निपुणता, तथा अतिथि उसे कैसे प्रसन्न कर सकते थे।

इस सर्वोच्च शिक्षक के कई सहायक थे, जिनमें से प्रत्येक एक निश्चित विभाग के लिए प्रतिनियुक्त किया गया, जबकि वह स्वयं अपने बीच खड़ा था सबसे बड़े विभाग के छात्रों को सभी अतिथियों या दर्शकों को संबोधित करते हुए निम्नलिखित नुसार:

"हे लोगो! हमारा स्वामी जो इस महल का स्वामी है, इसे बनवाकर तुम्हारे सामने अपना परिचय देना चाहता है। बदले में तुम उसे जानो और पहचानो।" वह भी अपने आप को आपके लिए प्यारा बनाना चाहता है इन आभूषणों को खरीदो। बदले में उसकी कला और कामों की सराहना करो, जिससे तुम उसके प्रिय बनो। वह तुम्हारे लिए अपना प्यार प्रदर्शित करता है उसके इन उपकारों के द्वारा, उसकी आज्ञा मानकर उससे प्रेम करो। उसकी भेंटें तुम्हारे प्रति उसकी देखभाल और करुणा को प्रदर्शित करती हैं, इसलिए उसके प्रति अपना सम्मान दिखाकर उसका धन्यवाद करो। अपनी पूर्णता के इन कार्यों के द्वारा, वह अपनी खूबसूरती और शालीनता दिखाना चाहता है। बदले में, एक बड़ी इच्छा प्रदर्शित करें उसे देखने और उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए। अपनी विशेष, अद्वितीय आप जो कुछ भी देखते हैं उस पर अपनी मुहर लगाकर वह प्रदर्शित करता है कि वह अद्वितीय है, पूर्णतः स्वतंत्र और बिना किसी भागीदार के, यह महल और इसका सामग्री उसका काम है और विशेष रूप से उसका है। इसलिए, उसकी विशिष्टता, पूर्ण स्वतंत्रता और साथी की कमी को स्वीकार करें।”

सर्वोच्च कमांडर या शिक्षक ने अपना संबोधन जारी रखा। फिर दर्शक दो समूहों में बंट गए।

पहला समूह: चूँकि वे समझदार थे और अपने बारे में जानते थे, इसलिए महल के आश्चर्यों को देखकर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कुछ भी नहीं उद्देश्यहीन हो सकता है। उन्होंने सर्वोच्च शिक्षक से इस बारे में पूछा राजा के उद्देश्यों और उनसे की जाने वाली माँगों को ध्यानपूर्वक सुना। शिक्षक के उत्तर को स्वीकार किया, उनके निर्देशों को स्वीकार किया, और उसी के अनुसार कार्य किया राजा को प्रसन्न करने का यह एक शानदार तरीका था। बदले में, राजा उनके आचरण और शिष्टाचार से प्रसन्न होकर उन्हें एक बहुत बड़े और अवर्णनीय समारोह में आमंत्रित करता था। अधिक सुन्दर महल में, जहां वह उनका स्थायी रूप से मनोरंजन करने लगा, एक उदार राजा के योग्य तथा आज्ञाकारी, शिष्ट प्रजा के लिए उपयुक्त ढंग से।

दूसरा समूह: वे नैतिक रूप से भ्रष्ट थे, और उनमें नैतिकता का अभाव था। ठोस तर्क। अपनी सांसारिक आत्माओं से पराजित होकर, उन्होंने इस पर ध्यान दिया

> स्वादिष्ट भोजन के अलावा कुछ नहीं। उन्होंने सभी सद्गुणों के प्रति अपनी आँखें बंद कर लीं और सर्वोच्च शिक्षक के निर्देशों और उनके शिष्यों की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने केवल खाने और सोने पर ध्यान केंद्रित किया। निषिद्ध पेय पदार्थों को पीते हुए, जो कुछ अन्य उद्देश्यों के लिए तैयार किए गए थे, वे नशे में धुत हो गए और अन्य सभी मेहमानों को परेशान किया। उन्होंने गौरवशाली राजा के नियमों का उल्लंघन किया। इसलिए, उसके सैनिकों ने उन्हें ऐसे बुरे व्यवहार वाले लोगों के लिए उपयुक्त जेल में डाल दिया। (पृष्ठ 133-135)

देखिए कि सैद नूरसी कितनी आसानी से ऐसे कठिन विषयों से निपटते हैं जैसे कि ईश्वर और मानवता एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं, सृष्टि का कारण, पैगंबरों और संदेशवाहकों की भूमिका, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन, मानवता के प्रकार, ईश्वर हमसे क्या अपेक्षा करता है, और मृत्यु और परलोक - हर किसी के लिए समझने योग्य कई पैराग्राफ, बजाय मोटी किताबों के जो केवल अभिजात वर्ग के लिए सुलभ हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि उनके लेखन को हर दिन न केवल तुर्की में बल्कि दुनिया भर में कई भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से नए पाठक मिलते हैं।

सईद नूरसी "अच्छा जीवन" जीने की सलाह देते हैं, जो हर धर्म के दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों के लिए बहुत रुचि का विषय है, और यहाँ तक कि किसी भी धर्म के नहीं। उनकी सलाह सरल और व्यावहारिक है, ताकि अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके: सब कुछ ईश्वर के नाम पर करें, क्योंकि यह आपको ऊर्जा और आशीर्वाद का एक अटूट स्रोत प्रदान करेगा; ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करें और संतुष्टि पाएँ; यह समझें कि यह जीवन क्षणभंगुर है और परलोक के शाश्वत जीवन के लिए प्रयास करें; प्रत्येक पाँच निर्धारित दैनिक प्रार्थना व्यक्ति के जीवन में एक चरण से मेल खाती है और ईश्वर की सहायता प्राप्त करने का वाहन है; और यह कि विश्वास का मार्ग ही एकमात्र तार्किक विकल्प है।

सत्रहवें वचन में, सैद नूरसी बताते हैं कि किस प्रकार हमारी बाहरी अवस्थाएं उन आंतरिक अवस्थाओं से संबंधित हैं, जिनसे होकर हम ईश्वर की ओर वापस जाते समय गुजरते हैं।
उदाहरण के लिए, क्या बुढ़ापे की शुरुआत उसके कोमल अनुस्मारक से अधिक कुछ है कि युवापन, स्वास्थ्य, सौंदर्य, इत्यादि केवल अस्थायी हैं और अब यह सोचने का समय है कि मृत्यु का क्या अर्थ है? क्या हम जो दुर्भाग्य झेलते हैं, वे धैर्य और विश्वास के साथ उसकी परीक्षा को स्वीकार करने के अवसरों के अलावा कुछ और हैं, जिससे उसके साथ हमारा रिश्ता गहरा होता है? दूसरे शब्दों में:

> अफसोस! हम धोखा खा गए। हमने सोचा कि यह सांसारिक जीवन निरंतर है, और इस तरह हमने इसे पूरी तरह खो दिया। वास्तव में, यह गुज़रता हुआ जीवन एक नींद की तरह है जो एक सपने की तरह गुज़र गया। इस जीवन का कोई आधार नहीं है, यह हवा की तरह उड़ता है। जो लोग खुद पर भरोसा करते हैं और सोचते हैं कि वे हमेशा जीवित रहेंगे, वे निश्चित रूप से मर जाएंगे। वे मृत्यु की ओर दौड़ते हैं, और यह दुनिया, मानवता का घर, विनाश के अंधेरे में गिर जाता है। महत्वाकांक्षाएँ समय-सीमित होती हैं, लेकिन आत्मा में दर्द बना रहता है। (पृष्ठ 228)

ऐसी सलाह सभी प्रकट धर्मों के लोगों के साथ प्रतिध्वनित होती है, क्योंकि प्रत्येक सच्चा और अदूषित संदेश एक ही समाचार लाता है: आपका जीवन यहाँ केवल गति है-

यह दुर्लभ है, इसलिए इसका उपयोग अपने मरने के बाद अपने लिए सर्वोत्तम संभव जीवन तैयार करने में करें और आपको उस स्रोत पर वापस लाया जाता है जहां से आप मूल रूप से आए थे।

बीसवें वचन में कुरान की आयतों का गहन विश्लेषण है।
चमत्कारी वाक्पटुता और यह आधुनिक वैज्ञानिक खोजों को कैसे संदर्भित करता है।
बार-बार यह बात दोहराते हुए कि कुरान कोई वैज्ञानिक पाठ्यपुस्तक नहीं है, सईद ने कहा
नूरसी बताते हैं कि कुरान पैगम्बरों और पैगंबरों के चमत्कारों का वर्णन करता है।
संदेशवाहक, कई अन्य कारणों के अलावा, भविष्य की वैज्ञानिक खोजों का संकेत भी देते हैं।
उदाहरण के लिए, कुरान में रेलगाड़ियों (85:4-8, 36:41-42), बिजली और अन्य का उल्लेख किया गया है।
(24:35), विमान (34:12), भूमिगत जल का दोहन करने के उपकरण (2:60), और अन्य मामले। यह भविष्य की खोजों की ओर भी इशारा करता है, जिनमें से एक है, बीमारी का इलाज खोजना।
प्रत्येक बीमारी (3:49), टेलीपोर्टेशन (27:40), और भाषाओं को समझना
जानवरों (27:16, 38:19)। यह निर्धारित करके कि कौन सा दिव्य नाम वैज्ञानिक जांच के किसी विशेष क्षेत्र पर हावी है, महान खोज की जा सकती है और परिणामी ज्ञान का उपयोग मानवता के लाभ के लिए किया जा सकता है।

तेईसवें वचन में, सैद नूरसी विश्वास, अविश्वास और विश्वास के बारे में बात करते हैं।
प्रार्थना की जीवन में क्या भूमिका है? उनका मानना है कि किसी व्यक्ति का भाग्य केवल प्रार्थना से ही पूरा हो सकता है।
ईमान, क्योंकि: हमने बेहतरीन कद वाले इंसानों को एक आदर्श नमूना बनाया है
फिर हमने उसे सबसे नीची श्रेणी में पहुँचा दिया, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और
अच्छे, नेक काम करो (95:4-5) में कहा गया है कि हमें अपने जीवन को सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में जीने का प्रयास करना चाहिए। ईश्वर में हमारे विश्वास की अनुपस्थिति में, जो कि
हमारे मानवीय स्वरूप (फ़ित्र) का एक मूलभूत हिस्सा, ऐसी प्राप्ति असंभव है और हमें व्यर्थता और अविश्वास का जीवन जीने के लिए मजबूर करती है।

विश्वास कई लाभकारी उद्देश्यों की पूर्ति करता है। उदाहरण के लिए, यह हमारी वास्तविक पहचान (पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि) और उद्देश्य (विश्वास के लिए) के बारे में हमारी अज्ञानता को दूर करता है।
दिव्य नामों और गुणों को प्रतिबिंबित करते हैं), हमें इस में हमारी वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हैं
दुनिया (हमारे शाश्वत के रास्ते पर इस गेस्ट हाउस में बहुत कम समय बिताना
और परलोक में वास्तविक जीवन), और हमें दिखाता है कि हमारा अहंकार न तो स्वयं उत्पन्न है और न ही स्वयं अस्तित्व में है, बल्कि यह हमारे निर्माता द्वारा हमें उपयोग करने के लिए दिया गया एक उपाय है
उसे बेहतर ढंग से समझने के प्रयास में।

जैसा कि सईद नूरसी लिखते हैं:

> इस प्रकार हमारे अस्तित्व का अनिवार्य और अंतर्निहित कर्तव्य है कि हम शिक्षा के माध्यम से पूर्णता की खोज करें और प्रार्थना और विनती के माध्यम से ईश्वर की आराधना और सेवकाई की घोषणा करें। इसका अर्थ है उत्तर की खोज करना
> ऐसे आवश्यक प्रश्नों के लिए जैसे: "किसकी करुणा से मेरा
> जीवन को इतनी समझदारी से संचालित करना? किसकी उदारता से मैं इतना बुद्धिमान बन रहा हूँ
> स्नेहपूर्वक प्रशिक्षित? किसके अनुग्रह और परोपकार से मैं हूँ
> इतनी तत्परता से पोषित किया जा रहा है? यह प्रार्थना और याचिका करना है
> हमारी आवश्यकताओं के प्रति विनम्र जागरूकता में, भले ही एक हज़ार-

> जिसकी पूर्ति हम स्वयं नहीं कर सकते। संक्षेप में, यह हमारी जन्मजात नपुंसकता और दरिद्रता की चेतना के पंखों पर सवार होकर ईश्वर के पूजनीय सेवक होने के सर्वोच्च पद की ओर उड़ना है। (पृष्ठ 332)

विश्वास हमें इस लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करने के लिए सबसे अच्छा साधन भी प्रदान करता है: प्रार्थना, इसके सभी मौखिक और क्रिया-संबंधी पहलुओं में।

मानवीय सुख और दुख का कारण बताते हुए, सैद नूरसी हमें सलाह देते हैं कि हम अपनी इंद्रियों को परलोक की बजाय इस संसार की चीजों में लिप्त करने की प्रवृत्ति पर काबू पाएं:

> हमारा सार शक्ति द्वारा महान क्षमता से सुसज्जित है और नियति द्वारा महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ अंकित है। यदि हम सांसारिक जीवन की मिट्टी के नीचे इस संकीर्ण दुनिया में अपनी क्षमता और योग्यताओं का उपयोग अपनी शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा की कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए करते हैं, तो हम एक सड़े हुए बीज की तरह, कठिनाइयों और परेशानियों के बीच एक छोटे से जीवन में एक तुच्छ सुख के लिए सड़ जाएंगे और सड़ जाएंगे। इस प्रकार हम अपनी दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं पर एक भारी आध्यात्मिक बोझ लेकर इस दुनिया से चले जाएंगे।
>
> लेकिन अगर हम अपनी क्षमता के बीज को "इबादत की मिट्टी" के नीचे "इस्लाम के पानी" और कुरान के आदेशों के अनुसार "विश्वास की रोशनी" के साथ अंकुरित करते हैं, और अपनी क्षमताओं का उनके सच्चे उद्देश्यों के लिए उपयोग करते हैं, तो हम अनन्त, राजसी वृक्ष बन जाएंगे जिनकी शाखाएँ मध्यवर्ती दुनिया और प्रतिनिधित्व या अमूर्त रूपों की दुनिया तक फैली होंगी, और जिन्हें अनगिनत उपहारों से नवाजा जाएगा और जो अगली दुनिया और स्वर्ग में पूर्णता के असंख्य फल देंगे। हम, वास्तव में, सृष्टि के वृक्ष के धन्य, चमकदार फल बन जाएंगे। (पृष्ठ 338)

जब हम समझते हैं कि हमारी पीड़ा सभी चीज़ों की अस्थायी प्रकृति से उत्पन्न होती है, यहाँ तक कि स्वयं हमारी भी, तो हम यह देखना शुरू कर देते हैं कि वे केवल इस बात के संकेत हैं कि परलोक में हमारा क्या इंतज़ार है। हमारा यह एहसास कि यहाँ की हर चीज़ जल्द ही "बिना अलविदा कहे" गायब हो जाएगी, उनसे हमारा लगाव तोड़ देती है और इस तरह हमारे द्वारा खुद पर लगाए गए दुख का एक बड़ा स्रोत बंद हो जाता है। यह एक और और भी बड़ी अनुभूति का द्वार खोलता है: कि स्वर्ग के आशीर्वाद शाश्वत हैं और इसलिए हमें केवल अंतहीन आनंद ही देंगे।

चौबीसवें वचन में, सैद नूरसी ने चर्चा की है कि मानवता के लिए अलग-अलग पैगंबर और संदेशवाहक क्यों भेजे गए, और क्यों संत और उच्च आध्यात्मिक उपलब्धि वाले अन्य लोग धर्म के कुछ पहलुओं पर अन्य पहलुओं की कीमत पर ज़ोर देते थे। उनके अनुसार, ऐसी विसंगतियाँ इस बात के कारण होती हैं कि वे किस नाम और गुण को दर्शाते हैं और साथ ही उनके श्रोताओं की समझ का स्तर क्या है। उदाहरण के लिए, पैगंबर मुहम्मद को एक बहुदेववादी लोगों के पास भेजा गया था जो वाक्पटुता का सम्मान करते थे। सैद नूरसी इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि भविष्य के कारण में,

तर्क, विज्ञान और वाक्पटुता मानव जीवन में अधिक प्रभावशाली होगी। इस प्रकार, कुरान, ईश्वर द्वारा समय के अंत तक सभी मानवता को गले लगाने के लिए भेजी गई अंतिम पुस्तक के रूप में, ईश्वर की एकता और एकता पर जोर देती है और इसे अरबी वाक्पटुता का एक अनूठा मास्टरपीस माना जाता है जिसकी कभी बराबरी या उससे आगे नहीं बढ़ा जा सकता है, जैसा कि सैद नूरसी ने अपने सभी लेखन में दर्शाया है।

मूसा को ऐसे लोगों के पास भेजा गया जो इतने लंबे समय से गुलाम थे कि वे अपनी पहचान खो चुके थे, वे अपने लोगों को एक बार फिर से धार्मिकता के मार्ग पर लाने के लिए एक दिव्य कानून लेकर आए। और यीशु को ऐसे लोगों के पास भेजा गया जो कानून के आध्यात्मिक पहलू और अर्थ और अधिक महत्वपूर्ण नियमों की कीमत पर कानून के गौण मामलों में खोए हुए थे, और चिकित्सा के प्रति बहुत सम्मान रखते थे, उन्होंने अपना समय कानून के शाब्दिक अर्थ के विपरीत, इसके वास्तविक अर्थ को समझाने में बिताया, और लोगों को भगवान के प्रेम, करुणा और दया को प्रतिबिंबित करने के लिए ठीक किया। संतों और महान आध्यात्मिक उपलब्धि वाले लोगों के साथ भी ऐसा ही है, क्योंकि उनमें से प्रत्येक अपने व्यक्तित्व और झुकाव के अनुसार दिव्य नामों और गुणों को दर्शाता है ताकि अपने लोगों को भगवान के करीब ले जा सके। इस प्रकार भगवान तक ले जाने वाले कई रास्तों का दिखना अनिवार्य रूप से एक ही रास्ता है, क्योंकि अंतर केवल गौण महत्व के मामलों में दिखाई देते हैं।

पच्चीसवें वचन में कुरान की अपनी परिभाषा देने के बाद, सईद नूरसी ने वाक्पटुता जैसे क्षेत्रों में कुरान की चमत्कारिकता के कई उदाहरण दिए हैं, जिसे पैगंबर के समकालीनों द्वारा अत्यधिक महत्व दिया गया था। उदाहरण के लिए, उन्होंने सूरतुल-इखलास को बनाने वाले पाँच छोटे वाक्यों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं:

> इस छोटे सूरा में छह वाक्य हैं, तीन सकारात्मक और तीन नकारात्मक, जो ईश्वरीय एकता के छह पहलुओं को साबित और स्थापित करते हैं और ईश्वर के साथ छह तरह के सहयोगी भागीदारों को अस्वीकार और नकारते हैं। प्रत्येक वाक्य के दो अर्थ हैं: एक पूर्वोक्त (कारण या प्रमाण के रूप में कार्य करना) और दूसरा पश्चातोक्त (प्रभाव या परिणाम के रूप में कार्य करना)। इसका मतलब है कि सूरा में छत्तीस सूरा हैं, जिनमें से प्रत्येक छह वाक्यों से बना है। एक या तो आधार है या प्रस्ताव है, और अन्य इसके लिए तर्क हैं। (पृष्ठ 393)

सईद नूरसी लिखते हैं कि इसकी चमत्कारिकता इसकी व्यापकता में भी देखी जा सकती है (उदाहरण के लिए, 78:7, 21:30, 36:38, 2:5), जो सभी लोगों को उनकी समझ के स्तर के आधार पर उनके निर्माता के करीब आने की अनुमति देता है; कुछ शब्दों या वाक्यांशों के माध्यम से सबसे ऊंचे और जटिल सत्यों के साथ-साथ सार्वभौमिक सिद्धांतों को व्यक्त करने का इसका संक्षिप्त और सर्व-समावेशी तरीका (उदाहरण के लिए, 30:22, 12:45-46, 40:36); अतीत और भविष्य की घटनाओं, जैसे आध्यात्मिक घटनाओं, आदि के बारे में यह जो जानकारी देता है।

अदृश्य ईश्वरीय सत्य और परलोक की वास्तविकताओं के रूप में आध्यात्मिक वास्तविकताएँ; और इसके ताज़गी, जो सभी पीढ़ियों को अपने सवालों के जवाब खोजने की अनुमति देती है।

यह अंतिम विशेषता अंतर्निहित सिद्धांतों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है सामाजिक जीवन के नियम कभी नहीं बदलते। सईद नूरसी के अनुसार:

> जहाँ तक कुरान की बुद्धि का प्रश्न है, वह शक्ति को नहीं, बल्कि अधिकार को मुख्य मानता है। सामाजिक जीवन में सहयोग। इसका लक्ष्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है, न कि स्वार्थ की पूर्ति। इसके जीवन का सिद्धांत आपसी सहायता है, संघर्ष नहीं। यह केवल धर्म, पेशे और देश के सामुदायिक बंधनों को स्वीकार करता है। इसका अंतिम लक्ष्य शारीरिक इच्छाओं को नियंत्रित करना और
>
> आत्मा को उत्कृष्ट विषयों की ओर प्रेरित करना, हमारी उत्कृष्ट भावनाओं को संतुष्ट करना ताकि हम मानवीय पूर्णता और सच्ची मानवता के लिए प्रयास करेंगे। एकता, सद्गुण एकजुटता लाते हैं, और पारस्परिक सहायता का अर्थ है तेज़ी लाना एक दूसरे की मदद करना। धर्म भाईचारा, बहनचारा और भाईचारा सुनिश्चित करता है सामंजस्य। हमारी शारीरिक आत्मा और इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को प्रेरित करना पूर्णता इस संसार और अगले संसार में खुशी लाती है.. (पृ. 426-427)

आधुनिक सभ्यता इन सबके ठीक विपरीत शिक्षा देती है और महत्व देती है, जो बताता है कि दुनिया में इतना संघर्ष, घृणा और अन्याय क्यों है आज। यह उनके सभी लेखन में एक प्रमुख विषय है, जिस दुनिया में वे रहते हैं जीवन को उसके धार्मिक आधार से दूर ले जाया जा रहा था ताकि उसे विदेशी और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और समझ पर पुनर्निर्मित।

वह कुरान की चमत्कारिकता के अन्य संकेत भी प्रदान करता है, जैसे कि इसका समग्र स्वरूप सामंजस्य, भले ही यह 23 वर्षों में विभिन्न परिस्थितियों में प्रकट हुआ हो; यह छंदों के अंत में कुछ बिंदुओं पर जोर देता है और उनका सारांश प्रस्तुत करता है कुछ दिव्य नामों या विशेषताओं के साथ; किसी विशेष घटना का सारांश प्रस्तुत करने के लिए उसका उपयोग करना एक सार्वभौमिक सिद्धांत; और यह कैसे लोगों को कुछ कार्यों या विचारों के खिलाफ चेतावनी देता है अंत में केवल प्रोत्साहन के शब्द हैं कि वे अपने तरीके छोड़ दें और आगे बढ़ें ईश्वर की क्षमा, जो सच्चे पश्चाताप के मामले में हमेशा मिलती है, और मार्गदर्शन के विशिष्ट शब्द उन्हें अंधकार, पाप, अज्ञानता और इनकार के दलदल से निकालकर ईश्वर के शानदार प्रकाश और स्पष्टता की ओर ले जाते हैं।

उपस्थिति। परिशिष्टों में, सईद नूरसी ने दिखाया है कि कुरान की कथित शैलीगत कमजोरियाँ (जैसे, दोहराव, कुछ बिंदुओं पर अत्यधिक जोर, अचानक इस्लाम के गौण सिद्धांतों और सामाजिक कानूनों से लेकर उच्च और सार्वभौमिक सत्यों तक की छलांग) वास्तव में इसकी चमत्कारिकता के पहलू हैं।

छब्बीसवाँ वचन, ईश्वरीय नियति और आदेश तथा मानव स्वतंत्रता पर यह उन सभी लोगों का ध्यान आकर्षित करेगा जो कहते हैं कि इस्लाम भाग्यवाद सिखाता है और पूर्वनियति और इस प्रकार व्यक्ति को चुनाव, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, जवाबदेही और कार्य करने की स्वतंत्रता से वंचित करता है। सईद नूरसी ऐसी सभी बातों का खंडन करते हैं तर्क:

> हालाँकि हमारी स्वतंत्र इच्छा किसी चीज़ को होने का कारण नहीं बन सकती, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो पूर्ण रूप से बुद्धिमान है, अपनी इच्छा को प्रभावी बनाने के लिए इसका उपयोग करता है और हमें जिस दिशा में हम चाहते हैं, उस दिशा में मार्गदर्शन करता है। वह वास्तव में कहता है: "मेरे सेवक!
> तुम अपनी इच्छा से जिस मार्ग से जाना चाहो, मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा।
> इसलिए, जिम्मेदारी आपकी है!" उदाहरण के लिए, यदि आपके कंधे पर सवार कोई बच्चा आपसे उसे ऊंचे पहाड़ पर ले जाने के लिए कहता है, और आप ऐसा करते हैं, तो उसे सर्दी लग सकती है। वह आपको उस सर्दी के लिए कैसे दोषी ठहरा सकता है, क्योंकि वह खुद ही वहां जाने के लिए कह रहा था? वास्तव में, आप उसकी पसंद के कारण उसे दंडित भी कर सकते हैं। इसी तरह, सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो न्यायियों में सबसे न्यायप्रिय है, कभी भी अपने सेवकों को कुछ करने के लिए मजबूर नहीं करता है, और इसलिए उसकी इच्छा हमारे कार्यों में हमारी स्वतंत्र इच्छा पर विचार करती है। (पृष्ठ 487)

परिशिष्ट में, उन्होंने कुरान से प्राप्त मार्ग (53:32, 59:19, 4:79, और 28:88 पर आधारित) का वर्णन किया है, जिससे ईश्वर की ओर वापस जाने का मार्ग मिलता है, जो कि "ईश्वर की शक्ति और संपदा के समक्ष असहायता और गरीबी की हमारी धारणा और स्वीकारोक्ति, तथा स्नेह और आत्मचिंतन पर निर्भर करता है" (पृष्ठ 494) और यह अन्य सभी मार्गों से किस प्रकार भिन्न है।

सैद नूरसी ने तीसवाँ वचन अहंकार और परमाणुओं की गति को समर्पित किया है। पहले भाग में, वह बताते हैं कि अहंकार वह भरोसा है जिससे सृष्टि के अन्य सदस्य दूर भागते हैं और जिसे मानवता सहन करने के लिए सहमत हो जाती है (33:72)। वह लिखते हैं:

> सर्वज्ञ निर्माता ने प्रत्येक मनुष्य को आत्म-स्वरूप सौंपा है, जिसमें संकेत और नमूने हैं जो उसे अपने प्रभुत्व के गुणों और आवश्यक विशेषताओं के बारे में सच्चाई को पहचानने के लिए प्रेरित और सक्षम करते हैं।
> आत्मत्व वह माप या तुलना का साधन है जो प्रभुता के गुणों और देवत्व की विशेषताओं को ज्ञात कराता है। किसी माप या तुलना के साधन का वास्तविक अस्तित्व होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि उसका कल्पित या अनुमानित अस्तित्व एक माप के रूप में काम कर सकता है, ठीक वैसे ही जैसे ज्यामिति में काल्पनिक रेखाएँ। (पृष्ठ 554)

मानवता को यह मापदंड इसलिए दिया गया था ताकि वह प्रकाश और अंधकार, अच्छाई और बुराई, विश्वास और अविश्वास, इत्यादि के बीच अंतर कर सके, जो हमें ईश्वर के नामों और गुणों का बस एक छोटा सा संकेत देता है। यह एक भरोसा है, क्योंकि अहंकार को एक स्व-अस्तित्व और स्व-उत्पत्ति इकाई के रूप में लेना बहुत आसान है, बजाय इसके कि यह महसूस किया जाए कि इसका केवल नाममात्र अस्तित्व है और इसका उद्देश्य हमें ईश्वर के नामों और गुणों की बेहतर समझ देना है। जो लोग इसके मोहक जादू में पड़ जाते हैं (जैसे, भौतिकवादी दार्शनिक, धर्मनिरपेक्षतावादी, नास्तिक, बहुदेववादी, प्रकृति पूजक, और वे सभी जो ईश्वर की एकता और अस्तित्व को नकारते हैं) धीरे-धीरे इसे देवता बना देते हैं और सबसे बड़े पापों में से एक करते हैं: ईश्वर के साथ भागीदार बनाना (31:13)।

परमाणुओं के लिए, वे निर्माता द्वारा अपने अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों से अधिक कुछ नहीं हैं। सैद नूरसी पूछते हैं, यह अन्यथा कैसे हो सकता है, यह देखते हुए कि कोई भी परमाणु यह तय नहीं कर सकता है कि कब चलना है, कहाँ जाना है, किस दूसरे परमाणु से जुड़ना है या किससे अलग होना है, या एक सजीव या निर्जीव वस्तु में प्रवेश करने के बाद वह क्या करेगा। इस तरह के ज्ञान के लिए परमाणु को यह जानना होगा कि दूसरे परमाणुओं के बीच अपने इच्छित गंतव्य तक कैसे जाना है, उस शरीर में कैसे प्रवेश करना है, ठीक-ठीक कहाँ जाना है और क्या करना है - स्पष्ट रूप से बेतुकी मान्यताओं की एक पूरी श्रृंखला। यह देखते हुए, एकमात्र अन्य विकल्प यह है कि ईश्वर प्रत्येक परमाणु को अपने हिसाब से और विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित करता है।

बत्तीसवें वचन में, सैद नूरसी सृष्टि में प्रेम की भूमिका पर चर्चा करते हैं:

> अपनी सुंदरता के प्रति अपने प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उस सुंदरता को प्रतिबिम्बित करता है। अपने स्वयं के नामों के प्रति अपने प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उन नामों को सबसे व्यापक तरीके से प्रकट करता है, साथ ही अन्य सभी पैगम्बरों से भी। अपनी कला के प्रति अपने प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उस कला को प्रदर्शित करता है, और जो उसके जैसे हैं (अन्य पैगम्बर)। अपने प्राणियों के प्रति अपने प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उन प्राणियों का उचित प्रशंसा और तालियों के साथ स्वागत करते हुए कहता है: "ईश्वर ने क्या चमत्कार किया है! ईश्वर उनका भला करे! उन्हें कितनी खूबसूरती से बनाया गया है!" और जो उसका अनुसरण करते हैं। अपने प्राणियों की सुंदरता के प्रति अपने प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उन सभी सुंदरताओं और उनके द्वारा साझा किए गए सभी नैतिक गुणों का सबसे व्यापक अवतार है, और अपने अनुयायियों से। (पृष्ठ 636)

ईश्वर ने अपने पवित्र प्रेम से मानवता की रचना की ताकि वह स्वयं को ज्ञात कर सके, प्रेम से ही पैगम्बरों और संदेशवाहकों को भेजा ताकि हम उसके बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकें, प्रेम से ही ब्रह्माण्ड की रचना की ताकि हम जीवित रह सकें और वास्तव में समृद्ध हो सकें, और प्रेम से ही स्वर्ग में अनन्त जीवन की रचना की ताकि हम अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुंच सकें और उन लोगों के साथ आनन्द की स्थिति में सदा-सदा के लिए रह सकें जिन्हें हम पृथ्वी पर रहते हुए प्रेम करते थे।

हम ईश्वर के पवित्र प्रेम के कारण अस्तित्व में हैं, हम उनके पास वापस जाने का मार्ग जानते हैं, क्योंकि मानवता के लिए भेजे गए सभी पैगम्बरों और संदेशवाहकों ने उनके प्रति अपने सच्चे प्रेम के कारण अपने कर्तव्यों का पालन किया, तथा उसी एक, शाश्वत और एक ईश्वर द्वारा सृजित साथी प्राणियों के रूप में हम सभी लोगों और सृष्टि के साथ अपने प्रेम के आधार पर व्यवहार करते हैं।

और इस तरह महान "पुण्य चक्र", जिसमें हम एक केंद्रीय स्थान रखते हैं, का निर्माण होता है और न्याय के दिन की ओर समय के माध्यम से यात्रा करना जारी रखता है। संक्षेप में: "ब्रह्मांड का सार प्रेम है। सभी प्राणी उद्देश्य के साथ चलते हैं

प्रेम का। आकर्षण, परमानंद और गुरुत्वाकर्षण के सभी नियम प्रेम में उत्पन्न होते हैं" (पृष्ठ 637)।

निष्कर्ष

धर्म पर लिखने वाले कई लोग अपना जीवन अकादमिक ग्रन्थों या धर्मशास्त्र संबंधी लेखों को लिखने में बिता देते हैं, जो पाठकों के जीवन से बहुत ही अमूर्त या कटे हुए होते हैं।
अन्य लोग सरल और "अच्छा महसूस कराने वाली" व्याख्याएं देते हैं कि वे बेकार से भी बदतर हैं और वास्तव में बहुत नुकसान पहुंचा सकते हैं।

हालांकि, सईद नूरसी ने सरल दृष्टांतों और रूपकों के माध्यम से समान बिंदुओं को उतनी ही वाक्पटुता से प्रस्तुत किया है, जिससे हर कोई लाभान्वित हो सकता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके समाधान और स्पष्टीकरण वास्तविक जीवन में बिल्कुल फिट बैठते हैं, चाहे हमारा मानसिक, आध्यात्मिक या सांस्कृतिक विकास का स्तर कुछ भी हो। इस संबंध में, वे कुरान की शैली का अनुसरण करते हैं, जो हर व्यक्ति को संबोधित अंतिम ईश्वरीय रहस्योद्घाटन है, चाहे उसका विशेष युग, संस्कृति, भाषा, आयु या बुद्धि का स्तर कुछ भी हो। वे धर्मशास्त्र के सबसे जटिल मामलों की व्याख्या भी करते हैं, आधुनिक लोगों के मन में उठने वाले कई सवालों के जवाब देते हैं, और इस्लाम को उसके मूल सिद्धांतों के साथ समझने, सही ढंग से सोचने और ईश्वर को प्रसन्न करने और सभी प्राणियों की सेवा करने के लिए एक अच्छा जीवन जीने के लिए कई मूल्यवान मानदंड निकालते हैं।

यद्यपि बीसवीं सदी की दूसरी तिमाही के दौरान लिखा गया था, इस खंड में व्यक्त विचार अप्रचलित नहीं हुए हैं। चूँकि मानव स्वभाव नहीं बदलता है, इसलिए हम सभी को अभी भी उन बुनियादी सवालों का जवाब देना है जो हमें मानव बनाते हैं: मैं यहाँ क्यों हूँ? मुझे किसने बनाया? मुझे जीवन में किस मार्ग पर चलना चाहिए? मेरे मरने के बाद क्या होगा? मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है? सईद नूरसी इन और अन्य सवालों के जवाब पश्चिमी तर्क और बुद्धिवाद के सिद्धांतों के अनुसार देते हैं। इसमें अंधविश्वास, धार्मिक परंपरा और अधिकार, या पहले के धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों की अटकलों और सिद्धांतों का कोई सहारा नहीं है।

सब कुछ पूरी तरह से कुरान और प्रकृति और मानव जीवन के बारे में उनके अपने अवलोकन पर आधारित है।

अंतिम टिप्पणी: इस पुस्तक में इस गलत धारणा को दूर करने का हर संभव प्रयास किया गया है कि इस्लाम एक पुरुष-प्रधान धर्म है और केवल पुरुषों के लिए है। इस दृष्टिकोण को मीडिया और शिक्षा जगत में लोकप्रिय बनाया गया है। हम यह बताना चाहेंगे कि किसी भी धर्म को उसके अनुयायियों की गलतफहमियों के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इस्लाम सिखाता है कि आदम और हव्वा को समान रूप से बनाया गया, उन्होंने पाप किया और उन्हें समान रूप से क्षमा किया गया; कि ईश्वर की दृष्टि में पुरुष और महिला समान हैं; और कि वे ईश्वर और दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों के संबंध में समान हैं। जैसा कि ईश्वर कुरान में कहते हैं: मैं तुममें से किसी भी कर्ता के कर्म को व्यर्थ नहीं जाने दूँगा, चाहे वह पुरुष हो या महिला। तुम एक दूसरे से अलग हो (3:195)। हालाँकि, पाठ की निष्ठा के हित में, अधिकांश समय केवल पुरुषों का ही उल्लेख किया जाता है।

— संपादक

पहला शब्द

पहला शब्द

भाई! तुमने सलाह मांगी है, इसलिए आगे के नौ शब्दों में दिए गए दृष्टांतों में निहित कुछ सत्यों को सुनो। चूँकि तुम सैनिक हो, इसलिए मैं उन्हें सैन्य शब्दों में व्यक्त करूँगा।

बिस्मिल्लाह का महत्व

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और उसी से हम सहायता चाहते हैं। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है, और हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और साथियों पर कृपा और शांति हो।

Bइस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम पर) सभी अच्छी चीजों की शुरुआत है , इसलिए हम इससे शुरुआत करेंगे। यह धन्य वाक्यांश इस्लाम का प्रतीक है, जिसे सभी प्राणी अपनी स्वभावगत जीभों के माध्यम से निरंतर दोहराते हैं। यदि आप इसकी अटूटता को समझना चाहते हैं

शक्ति और आशीर्वाद के स्रोत के लिए, निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें:

अरब के रेगिस्तान में यात्रियों को एक आदिवासी सरदार के नाम और संरक्षण में यात्रा करनी चाहिए, अन्यथा वे डाकुओं से परेशान हो जाएंगे और यात्रा के लिए ज़रूरी सामान नहीं जुटा पाएंगे। दो लोग, एक विनम्र और दूसरा

1 पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। इन लोगों को अहलू-बैत, यानी घराने का परिवार (या लोग) के नाम से जाना जाता है। (ट्र.)

2 साथी: वे लोग जो पैगम्बर के आस-पास शिक्षा प्राप्त करने और उनके उदाहरण का यथासंभव अनुसरण करने के लिए एकत्रित होते थे। उन्हें मुस्लिम राष्ट्र का कुलीन और अग्रणी माना जाता है और पैगम्बरों के बाद उन्हें सबसे अधिक सम्मान और प्रशंसा दी जाती है। (अनुवाद)

दूसरा अभिमानी, यात्रा पर निकल पड़ा। विनम्र व्यक्ति को एक आदिवासी सरदार का नाम मिला; अभिमानी को नहीं। पहला हर जगह सुरक्षित यात्रा करता रहा। जब भी उसे कोई डाकू मिलता, तो वह कहता: "मैं फलां आदिवासी सरदार के नाम पर यात्रा कर रहा हूँ," और इस तरह उसे अकेला छोड़ दिया गया। वह जिस भी तंबू में जाता, वहाँ उसका सम्मान किया जाता। इसके विपरीत, अभिमानी व्यक्ति को विपत्ति और निरंतर भय का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसे हर ज़रूरत के लिए संघर्ष करना पड़ा और भीख माँगनी पड़ी। वह नीच और नीच बन गया।

हे अभिमानी आत्मा! तुम ही वह यात्री हो और यह संसार रेगिस्तान है। तुम्हारी दुर्बलता और दरिद्रता अनंत है और तुम्हारे शत्रु और अभाव अनगिनत हैं। इसे देखते हुए, इस संसार के शाश्वत स्वामी और शाश्वत शासक का नाम पुकारो, क्योंकि केवल वही तुम्हें इस भीख और भय से मुक्ति दिला सकता है।

बिस्मिल्लाह एक धन्य खजाना है। यह आपकी असीम कमजोरी और गरीबी को सर्वशक्तिमान और दयालु की असीम शक्ति और दया से बांधकर, उसके सर्वोच्च दरबार में सबसे अधिक ध्यान दिए जाने वाले मध्यस्थ में बदल देता है। जब आप बिस्मिल्लाह कहते हैं, तो आप उसके नाम पर काम करते हैं। आप राज्य के नाम पर काम करने वाले एक सैनिक की तरह हैं, किसी से नहीं डरते, कानून और राज्य के नाम पर सभी काम करते हैं, और सभी बाधाओं के बावजूद डटे रहते हैं।

हर चीज़ अपने अस्तित्व के तरीके से बिस्मिल्लाह का ज़िक्र कैसे करती है ? उदाहरण के लिए: एक अजनबी शहर में आकर अपने लोगों को एक निश्चित जगह पर इकट्ठा होने का आदेश दे सकता है ताकि वे किसी निश्चित काम पर काम कर सकें। अगर इस आदेश का पालन किया जाता है, तो ज़ाहिर है कि अजनबी शासक की शक्ति और अधिकार के नाम पर काम कर रहा है, न कि अपने लिए। इसी तरह, हर चीज़ ईश्वर, सर्वशक्तिमान के नाम पर काम करती है। छोटे-छोटे बीज और दाने अपने सिर पर बड़े-बड़े पेड़ उठाते हैं और पहाड़ों जितना भारी वजन उठाते हैं। हर पेड़ बिस्मिल्लाह कहता है और रहमत के खजाने से अपने हाथों में फल भरकर उन्हें एक थाल में रखकर हमें देता है।

प्रत्येक उद्यान, दिव्य शक्ति की रसोई से एक खाना पकाने का बर्तन है जहां स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों की अनगिनत किस्में तैयार की जाती हैं, बिस्मिल्लाह कहते हैं।

सभी धन्य जानवर (जैसे गाय, ऊँट, भेड़ और बकरियाँ) बिस्मिल्लाह कहते हैं और दया की प्रचुरता से दूध के झरने बन जाते हैं। वे हमें, सर्व-प्रदाता के नाम पर, जीवन के जल की तरह सबसे नाजुक और शुद्ध भोजन प्रदान करते हैं। हर पौधा और घास का पत्ता, हर जड़ और तना, बिस्मिल्लाह कहता है। सभी पौधे, पेड़ और घास की जड़ें और रेशे, रेशम की तरह नरम, बिस्मिल्लाह कहते हैं और कठोर पत्थरों और मिट्टी को भेदते हैं। उसका नाम, दयालु का नाम, सब कुछ उनके अधीन कर देता है।

एक पेड़ की शाखाएँ आसमान में फैलती हैं, और इसकी जड़ें पत्थरों और मिट्टी के बीच बेरोकटोक फैलती हैं। यह भूमिगत रूप से स्वतः उत्पन्न होता है, और इसका विकास होता है।

हरे पत्ते तीव्र गर्मी के बावजूद नमी बनाए रखते हैं। ये सच्चाईयाँ प्रकृतिवादी को परेशान करती हैं। यह प्रकृतिवादी की अदृश्य आँखों में उँगली घुसाता है और कहता है: "आप कठोरता और गर्मी की शक्ति पर इतना भरोसा करते हैं, फिर भी वे ईश्वरीय आदेश का पालन करते हैं। यही कारण है कि पौधे की जड़ों का प्रत्येक कोमल रेशा, मूसा की छड़ी की तरह, आज्ञा का पालन करता है: और हमने कहा: 'हे मूसा, अपनी छड़ी से चट्टान पर मारो!' (2:60) और चट्टान में घुस जाता है। हर नाजुक, कागज़ की तरह पतली पत्ती, अब्राहम के अंगों में से एक की तरह, तीव्र गर्मी की अवहेलना करते हुए कहती है: हे अग्नि, शीतलता और शांति हो! (21:69)।

सभी चीज़ें अपने अंदर बिस्मिल्लाह कहती हैं और अल्लाह के नाम से उसकी नेमतें हम तक पहुँचाती हैं। इसी तरह हमें भी बिस्मिल्लाह कहना चाहिए, उसके नाम पर देना और लेना चाहिए, और उनसे कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहिए जो अल्लाह के नाम पर नहीं देते।

प्रश्न: हम लोगों को उनके द्वारा लाए गए हर सामान के लिए भुगतान करते हैं, भले ही वे केवल “ट्रे-लेयर” हों। उनका सच्चा स्वामी, परमेश्वर हमसे क्या भुगतान चाहता है?

उत्तर: सभी बहुमूल्य उपहारों और वस्तुओं का जो हम आनंद लेते हैं, उसका सच्चा दाता होने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है: स्मरण, धन्यवाद, और मनन।

शुरुआत में बिस्मिल्लाह कहना याद रखने का तरीका है, और अंत में अल-हम दु लिल्लाह (सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है) कहना धन्यवाद देने का तरीका है। चिंतन का अर्थ है हमेशा ध्यान रखना और उन अनमोल और शानदार उपहारों के बारे में सोचना जो हमें हमेशा से मांगे गए ईश्वर की शक्ति के चमत्कार और उनकी दया से उपहार के रूप में प्राप्त होते हैं।

अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति का हाथ चूमते हैं जो आपके लिए कोई कीमती उपहार लेकर आया है, लेकिन असली भेजने वाले (राजा) को नहीं पहचानते, तो आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। असली दानदाता को भूलकर, दिखावटी दानदाता की प्रशंसा करना और उससे प्यार करना, इससे भी बदतर है। हे आत्मा! अगर तुम ऐसी मूर्खता से बचना चाहते हो, तो भगवान के नाम पर दो और लो। शुरू करो और अंत तक उसी के नाम पर काम करो। यही बात है।

चौदहवीं चमक का दूसरा स्टेशन

असंख्य रहस्यों में से छः के बारे में: ईश्वर के नाम से, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है।

नोट: ईश्वरीय दया के बारे में बसमाला से एक उज्ज्वल प्रकाश ने दूर से मेरे मंद मन को छुआ। मैं इसे "रहस्यों" के 20 से 30 खंडों में नोट के रूप में कैद और रिकॉर्ड करना चाहता था। अफसोस, मैं अभी तक ऐसा नहीं कर पाया हूं, और मेरे 20 से 30 को घटाकर 6 कर दिया गया है। भले ही यह विशेष रूप से मेरे लिए संबोधित है, मैं इसे अपने सख्त भाइयों के अनुमोदन के लिए इस उम्मीद के साथ संदर्भित करता हूं कि यह उन लोगों को लाभान्वित कर सकता है जिनके साथ मैं हूं।

मैं आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ हूं और जिनकी आत्माएं मुझसे ज्यादा बुद्धिमान हैं।
यह तर्क दिमाग की बजाय दिल को संबोधित करता है, और
ये तर्कपूर्ण प्रमाण होने के बजाय आन्तरिक अनुभव और आनन्द पर आधारित हैं।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

[रानी] ने कहा: "सरदारों, यहाँ मुझे एक सम्माननीय पत्र दिया गया है। यह सुलैमान की ओर से है,
और यह है: ईश्वर के नाम पर,
वह अत्यन्त दयावान, अत्यन्त दयावान है। (27:29-30)

पहला रहस्य: प्रभुता के तीन चिह्न, एक व्यक्ति के चेहरे पर अंकित हैं।
ब्रह्मांड, पृथ्वी और मानवता। वे एक दूसरे के भीतर एक हैं, और प्रत्येक दूसरे का एक पैटर्न रखता है:

देवत्व: हम इसे इस बात में देखते हैं कि किस प्रकार ब्रह्माण्ड में सभी सत्ताएं एक दूसरे की सहायता और सहयोग करती हैं, तथा उनके सामान्य अंतर्संबंध और पारस्परिकता में भी।
इसका सन्दर्भ है ईश्वर के नाम पर।

ईश्वरीय दयालुता: हम इसे समानता, अनुपात में देखते हैं,
पौधों और जानवरों के निपटान, पालन-पोषण और प्रशासन में व्यवस्था, सामंजस्य, अनुग्रह और दया। संदर्भ सर्व-दयालु है, इन द नेम ऑफ़ में
हे अत्यन्त दयालु ईश्वर!

ईश्वरीय करुणा: हम इसे दयालुता की सूक्ष्मताओं में देखते हैं, ठीक है
मानवीय व्यापक प्रकृति के चेहरे पर स्नेह के बिंदु और करुणा की किरणें। संदर्भ सर्व-दयालु है, इन द नेम ऑफ द नेम में
हे ईश्वर, अत्यन्त दयालु, अत्यन्त दयावान।

इस प्रकार, बसमाला दिव्य निरपेक्ष एकता के तीन रूपों का पवित्र शीर्षक है
टिकटें। वे ब्रह्मांड के पृष्ठ पर एक चमकदार रेखा बनाते हैं, एक मजबूत आधार, और
एक सुनहरा धागा। हमारे ऊपर से प्रकट हुआ, इसकी नोक मानवता पर टिकी हुई है, ब्रह्मांड और उसके फल का एक लघु रूप।
बासमाला दुनिया को ईश्वर से जोड़ती है
सिंहासन, और यह हमारे लिए सच्ची मानवता के सिंहासन तक पहुंचने की सीढ़ी है।

दूसरा रहस्य: ईश्वरीय एकता असीम बहुलता में स्पष्ट है
व्यक्तिगत प्राणियों का। हमारे दिमाग पर एक साथ हावी न होने के लिए,
कुरान, व्याख्या का एक चमत्कार होने के नाते, लगातार प्रकटीकरण को दोहराता है
एकता के भीतर दिव्य पूर्ण एकता3 - एक दिव्य की अभिव्यक्ति
सभी प्राणियों पर नाम।

इस सादृश्य पर विचार करें: सूर्य अपने दायरे में असंख्य चीजों को समाहित करता है।
प्रकाश। लेकिन इसके प्रकाश की संपूर्णता को अपने मन में रखने के लिए, हमें एक विशाल प्रकाश की आवश्यकता होगी।

---

[3] दिव्य एकता: ईश्वर की एकता, जो एक इकाई पर उनके नामों के संकेन्द्रण से प्रकट होती है (अनुवाद)

वैचारिक और बोधगम्य शक्ति। ताकि सूरज को भुलाया न जाए, जो पूरी तरह चमक रहा है
वस्तुएं इसके गुणों (प्रकाश और ऊष्मा) को यथासंभव सर्वोत्तम रूप से परावर्तित करती हैं और इस प्रकार सूर्य होने का आभास देती हैं, और वे गुण (ऊष्मा, प्रकाश और रंग स्पेक्ट्रम) उन वस्तुओं को भी शामिल कर लेते हैं, जिनका सामना सूर्य करता है।

इसी प्रकार - ईश्वर के लिए सबसे उत्कृष्ट गुण लागू होता है - जैसे ईश्वर का
एकता, उसका शाश्वत रूप से प्रयत्न, तथा उसके दिव्य नाम सभी चीजों में प्रकट होते हैं, विशेष रूप से जीवित चीजों में और विशेष रूप से हमारे दर्पण जैसे स्वभाव में, प्राणियों से संबंधित प्रत्येक दिव्य नाम सभी को समाहित करता है।

ईश्वरीय एकता के माध्यम से प्राणियों को एकता में बांधें। इस प्रकार कुरान लगातार हमें ईश्वरीय एकता की ओर आकर्षित करता है।
दिव्य एकता के भीतर दिव्य एकता की छाप पर ध्यान दें, ऐसा न हो कि हमारा
हमारे मन एकता से अभिभूत हो जाएं और हमारे दिल इसके प्रति लापरवाह हो जाएं
शुद्ध और पवित्र सार। तो, यह बासमाला है जो तीनों को इंगित करता है
ईश्वरीय पूर्ण एकता या विशिष्टता की मुहर के महत्वपूर्ण पहलू।

तीसरा रहस्य: ईश्वरीय दया से ब्रह्माण्ड आनन्दित होता है।
अंधेरे प्राणियों के लिए प्रकाश और जीवन की चिंगारी, और अपनी अंतहीन ज़रूरतों से जूझ रहे प्राणियों का पोषण और उत्थान करता है। यह ब्रह्मांड को मानवता की ओर निर्देशित करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक पेड़ अपने फल की ओर निर्देशित होता है, और तेज़ी से आगे बढ़ता है
हमारी सहायता के लिए। यह असीम स्थान को भरता है और उसे प्रकाशित करता है, अन्यथा खाली
और खाली दुनिया को खुशियों से भर देते हैं। क्षणभंगुर मानवता के लिए, ईश्वरीय दया
यह अनंत काल और संबोधित और प्रिय प्राणी के पद को भी नियुक्त करता है
अनंत काल से पहले और बाद में एक, शाश्वत। चूँकि ईश्वरीय दया इतनी है
एक शक्तिशाली सत्य, इतना आकर्षक, सौम्य, सहायक और प्रेम के योग्य, कहो :
उस अत्यन्त दयालु, दयावान ईश्वर का नाम लो और उससे लिपटे रहो।
सत्य को अपनाओ और अंतहीन उजाड़ और ज़रूरत से बचो। परमेश्वर के निकट आओ
अनंत काल का राजा बनो, और वह बनो जिससे वह बात करता है, दोस्ती करता है, और प्यार करता है
उस दया की किरणों और मध्यस्थता के माध्यम से।

सभी संस्थाएं उद्देश्य और दूरदर्शिता के साथ मानवता के चारों ओर क्यों एकत्रित होती हैं,
और हमारी ज़रूरतों को पूरी तरह व्यवस्थित और शालीनता से पूरा करने के लिए जल्दी करते हैं? क्या वे हमें पहचानते हैं और इसलिए हमारी मदद करने के लिए दौड़ पड़ते हैं - भले ही यह तर्कहीन हो, लेकिन कई मामलों में असंभव है क्योंकि इसके लिए ज़रूरी है कि हम, जिनके पास कोई शक्ति नहीं है, उनके पास मदद करने की शक्ति होनी चाहिए।
सबसे शक्तिशाली, पूर्ण संप्रभु? या क्या यह सहायता दृश्यमान ब्रह्मांड के पर्दे के पीछे एक परम शक्तिशाली की पहचान के माध्यम से हम तक पहुँचती है?
दूसरे शब्दों में, वह एक, सर्वज्ञ और दयालु, जानता है और उसके पास है
हम पर दया करें, तथा विश्व की सभी सत्ताओं को हमारी सेवा से बाहर कर दें।

इस पर विचार करें: वह सर्वशक्तिमान, जो सभी प्राणियों को जन्म देता है, वह कैसे इस संसार में प्रवेश कर सकता है?
आपकी मदद करने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाएंगे, न जाने और न देखेंगे
वह आपको जानता है और अपनी दया से आपको सिखाता है कि वह आपको जानता है। इसलिए

उसे जानो, और श्रद्धापूर्वक दिखाओ कि तुम उसे जानते हो। दृढ़ विश्वास के साथ समझो कि
दिव्य दया, बुद्धि, ज्ञान, अनुग्रह और शक्ति के साथ विद्यमान,
ब्रह्माण्ड को आपकी सेवा में समर्पित कर देता है, भले ही आप एक तुच्छ, क्षणभंगुर,
पूरी तरह से कमजोर, शक्तिहीन और जरूरतमंद प्राणी। निश्चित रूप से, ऐसी दया
इसके लिए पूर्ण और सच्ची कृतज्ञता के साथ-साथ ईमानदार और उत्कट श्रद्धा की भी आवश्यकता होती है।
कह दो: अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान, दयावान है, जो ऐसी भावनाओं को व्यक्त करता है और
उनकी व्याख्या करता है। इसे उसकी दया में प्रवेश का साधन बनाओ,
और दयालु के दरबार में एक सिफ़ारिशकर्ता।

ईश्वरीय दया की उपस्थिति और वास्तविकता सूर्य की तरह स्पष्ट है।
एक केंद्र-पैटर्न वाली टेपेस्ट्री को स्थिति और अनुक्रम द्वारा बुना जाता है
ताने और बाने को एक साथ जोड़कर केंद्र में लाया जाता है, और फिर चमकीले धागे भी एक साथ लाए जाते हैं
ब्रह्माण्ड भर में दिव्य नामों की अभिव्यक्ति से लेकर ऐसी करुणा की एक मुहर, ऐसी दयालुता की एक ताना-बाना, दया की मुहर के भीतर ऐसी कृपा का एक नमूना बुनें, कि यह छाप पर अंकित हो जाए

मन सूर्य से भी अधिक चमकता है।

वह दयालु, जो हर चीज़ को जीवन की सेवा में लगाता है;
जो आत्म-बलिदान, असाधारण बलिदान में अपनी करुणा प्रदर्शित करता है
करुणा की मिठास, पौधों और जानवरों में मातृत्व की मिठास; जो मानवता को सजीव जीवन प्रदान करता है और इस तरह हमारी महत्ता और स्थिति को दिव्य प्रभुत्व के साथ-साथ उनकी सबसे अच्छी और प्यारी बुनाई के रूप में प्रदर्शित करता है।
दया की चमक - जिसने अपनी आवश्यकता की पूर्ण कमी के कारण,
उसकी दयालुता उसकी सजीव प्राणियों और मानवता के लिए स्वीकार्य सिफ़ारिश है। अतः यदि तुम सचमुच मनुष्य हो तो कहो: ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु है,
अत्यंत दयालु, और उस मध्यस्थ को खोजो।

ईश्वरीय दया के अलावा और कुछ भी नहीं है जो जीवन लाता है, पोषण करता है, और सब कुछ संचालित करता है
पौधे और पशु प्रजातियाँ। यह न तो किसी को अनदेखा करता है और न ही भ्रमित करता है
एक दूसरे को, लेकिन प्रत्येक को सही समय पर और सही क्रम, बुद्धि,
और अनुग्रह। यह पृथ्वी की सतह पर दिव्य एकता की मुहर लगाता है।
जिस प्रकार इस दया का अस्तित्व पृथ्वी के अस्तित्व की तरह निश्चित है,
प्रत्येक प्राणी अपने वास्तविक प्रकटीकरण या अस्तित्व का प्रमाण भी है
एक वास्तविकता.

दया और ईश्वरीय एकता की मुहर पृथ्वी पर अंकित है
और मानवता की प्रकृति पर। हम पर जो दया की मुहर लगी है, वह किसी से कम नहीं है
करुणा और दया ब्रह्मांड पर छाई हुई है। हमारा स्वभाव व्यापक है, क्योंकि हम बुनाई का केंद्र हैं और दिव्य नाम का केंद्र हैं
बिंदु।

वह जो तुम्हें यह चेहरा देता है, जो इस पर छाप छोड़ता है, वह कैसे हो सकता है
क्या दया की छाप और एकता की मुहर आपको अपने हाल पर छोड़ देगी?

वह तुम्हें कैसे महत्वहीन मान सकता है, तुम्हारे कार्यों के प्रति कोई सम्मान नहीं रख सकता है, और इस प्रकार तुम्हारी ओर निर्देशित समस्त सृष्टि को व्यर्थ और बरबाद कैसे कर सकता है?
वह सृष्टि के वृक्ष को बेकार और सड़े हुए फलों से सड़ा कैसे बना सकता है? क्या वह अपनी परिपूर्ण, निर्विवाद दया को अस्वीकार कर देगा, जबकि वह सूर्य की तरह स्पष्ट है, और उसकी बुद्धि, जो प्रकाश की तरह स्पष्ट है?

आप उस दया के सिंहासन पर चढ़ सकते हैं, ईश्वर के नाम से, जो दयालु और दयावान है। प्रत्येक कुरानिक सूरा (अध्याय) की शुरुआत , सभी सार्थक पुस्तकों और अच्छे कार्यों को देखकर इसके महत्व को समझें। इस वाक्यांश के महत्व के लिए सबसे निर्णायक तर्क इमाम अश-शफी'ई4 जैसे प्रमुख इस्लामी विद्वानों की टिप्पणी है : "हालांकि बस-माला एक ही आयत है, लेकिन इसे कुरान में 114 बार उतारा गया है।"

चौथा रहस्य: व्यक्तिगत जीवों की असीम बहुलता के भीतर प्रकट दिव्य एकता के सामने, यह घोषणा करना कि, हम केवल आपकी ही पूजा करते हैं (1:5) सभी के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि हमारे मन वास्तविकता से भटक जाते हैं। हमें व्यक्तिगत संस्थाओं की समग्रता के भीतर एकता के पीछे उसकी एकता में एक को देखने के लिए पृथ्वी के समान व्यापक हृदय का होना चाहिए, ताकि हम कह सकें: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं (1:5)। इस प्रकार, दिव्य एकता की मुहर प्रत्येक व्यक्तिगत संस्था और प्रजाति पर स्पष्ट होनी चाहिए, और दिव्य एकता की मुहर दिव्य दयालुता की मुहर के भीतर मौजूद होनी चाहिए, ताकि हर स्तर पर हर कोई शुद्ध और पवित्र एक की ओर मुड़ सके और यह कहकर: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं (1:5), सीधे उनसे संपर्क करें।

इसी महान सत्य के कारण ही बुद्धिमानी से भरा कुरान व्यक्तिगत विवरण को समग्रता के साथ, छोटे को बड़े के साथ, विशेष को सामान्य के साथ जोड़ता है। मन को भटकने से रोकने और दिल को डूबने से बचाने के लिए, आत्मा को सीधे अपनी सच्ची उपासना की वस्तु को खोजने की अनुमति देने के लिए, यह हमारी रचना और बोलने का उल्लेख करता है, और हमारे व्यक्तित्व में अनुग्रह और ज्ञान के बारीक विवरण, साथ ही आकाश और पृथ्वी के निर्माण का उल्लेख करता है। यह सत्य चमत्कारिक रूप से दिखाया गया है और उसकी निशानियों में से आकाश और पृथ्वी का निर्माण और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों में विविधता है (30:22)।

ब्रह्मांड में विभिन्न प्रकार और डिग्री के टिकट हैं जो दर्शाते हैं कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर है जिसने इसे बनाया है, बनाए रखता है और निर्देशित करता है। हालाँकि

---

4 इमाम अश-शफीई (मृत्यु 820): मुस्लिम कानूनी विद्वान, शफीई कानूनी स्कूल के संस्थापक। उन्होंने इस्लामी कानूनी विचारों का एक नया संश्लेषण विकसित किया। अधिकांश विचार पहले से ही परिचित थे, लेकिन उन्होंने उन्हें एक नए तरीके से संरचित किया। उन्होंने मुख्य रूप से इस बात पर चर्चा की कि इस्लामी कानून के स्रोत क्या थे और उन्हें समकालीन घटनाओं पर कानून द्वारा कैसे लागू किया जा सकता है। उनके अर-रिसाला ने उन्हें "मुस्लिम न्यायशास्त्र का जनक" कहा। (संपादक)

यद्यपि विभिन्न आकार के संकेन्द्रित वृत्तों में विद्यमान ये टिकटें असंख्य प्राणियों की बहुलता के पीछे एकता को प्रदर्शित करती हैं, फिर भी यह बहुलता के भीतर एकता ही है, और इसलिए ये भक्तों को ईश्वर को सीधे संबोधित करने में सक्षम नहीं बना सकती हैं।
इस प्रकार ईश्वरीय एकता की छाप प्रत्येक वस्तु पर होनी चाहिए, अर्थात् ईश्वर के नामों के संकेन्द्रित प्रकटीकरण के माध्यम से प्रत्येक वस्तु और प्रजाति को यह प्रदर्शित करना चाहिए कि यह ईश्वर ही है जिसने इसे बनाया है, इसका पालन-पोषण करता है और इसका निर्देशन करता है, ताकि बहुलता मन को ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु में शुद्ध और पवित्र एक को देखने से विचलित न कर सके, तथा हृदयों के लिए एक मार्ग खुल जाए जिससे वे सीधे ईश्वर की ओर मुड़ सकें और उनसे बात कर सकें।

साथ ही, दिव्य एकता की मुहर पर एक अत्यंत आकर्षक डिजाइन, चमकदार प्रकाश, मनभावन मिठास, मनभावन सौंदर्य और शक्तिशाली सत्य रखा गया है ताकि हमारा ध्यान और हृदय उसकी ओर आकर्षित हो सके। दया की शक्ति और शक्ति संवेदनशील प्राणियों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करती है, और उन्हें एकता की मुहर प्राप्त करने, पूर्ण एकता के एक पर ध्यान केंद्रित करने और इस प्रकार सीधे उससे संबोधित करने में सक्षम बनाती है, यह घोषणा करते हुए: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं (1:5)।

इस प्रकार , दयालु, दयालु ईश्वर के नाम पर, जो कि सूरातुल-फातिहा की सूची है और कुरान का सार है, इस महान सत्य का संकेत और व्याख्याकार है। जो कोई भी अपने आप को इससे सुसज्जित करता है, वह ईश्वरीय दया के स्तरों से होकर यात्रा कर सकता है; जो कोई भी इसे बोलने के लिए प्रेरित करता है, वह ईश्वरीय दया के रहस्यों को जान सकता है और ईश्वरीय करुणा और दया की रोशनी देख सकता है।

पाँचवाँ रहस्य: एक हदीस (पैगंबरी परंपरा)5 है जिसके अनुसार ईश्वर ने मानवता को दयालु के रूप में बनाया है। कुछ सूफियों द्वारा इसकी अतिशयोक्तिपूर्ण व्याख्या विश्वास के मूल सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।6 कुछ परमानंदी सूफी कहते हैं कि हमारा आध्यात्मिक स्वभाव "दयालु के रूप में है।" अपने चिंतन और आध्यात्मिक समाधि में डूबे हुए, वे गलत विचार व्यक्त करने के लिए क्षमा किए जा सकते हैं। यदि अन्य लोग ऐसे विचारों को स्वीकार्य मानते हैं, तो वे गलत हैं।

शुद्ध और पवित्र ईश्वर, जो ब्रह्मांड को इतनी आसानी से आदेश और प्रशासन देता है जैसे कि वह एक महल या घर हो, जो आकाशगंगाओं को ऐसे घुमाता है जैसे कि वे कण हों और उन्हें ज्ञान और अनुग्रह के साथ अंतरिक्ष में यात्रा कराता है,
जो सूक्ष्मतम कणों को ऐसे भेजता है मानो वे आज्ञाकारी अधिकारी हों,

---

5 हदीस, एक शब्द के रूप में, "पैगंबर के अधिकार, उनके कार्यों, कथनों और मौन स्वीकृति पर प्रसारित की गई चीज़ों" को दर्शाता है। (ट्र.)

6 सूफीवाद एक आध्यात्मिक इस्लामी विश्वास और अभ्यास है जिसमें मुसलमान ईश्वरीय प्रेम और ज्ञान को विशेष तरीकों से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसके अनुयायी पश्चिम में सूफी के नाम से जाने जाते हैं। (संपादक)

कोई बराबर या मेल नहीं, कोई साथी या विपरीत नहीं। इसके अनुसार: उसके जैसा कुछ भी नहीं है, और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है (42:11), उसका कोई रूप, समानता या समकक्ष नहीं है। कुछ भी उससे मिलता-जुलता या उसके जैसा नहीं है। दूसरी ओर, इसके अनुसार: और उसके लिए आकाश और पृथ्वी में सबसे उदात्त गुण लागू होता है, और वह पराक्रमी, सर्वज्ञ है (30:27), मानवता रूपक और तुलना के माध्यम से उसके कार्यों, गुणों और नामों की कल्पना कर सकती है। इस प्रकार परंपरा का इच्छित अर्थ है: "मानवता का रूप, अपनी संपूर्णता में, ईश्वरीय नाम सर्व-दयालु को दर्शाता है।"

यह दिव्य नाम ब्रह्माण्ड में प्रकट सभी नामों के प्रकाशों के माध्यम से तथा पृथ्वी पर ईश्वर की पूर्ण प्रभुता के असंख्य प्रमाणों के माध्यम से स्पष्ट है। उसी प्रकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर भी हमारे व्यापक रूप में, जो ब्रह्माण्ड का एक लघु रूप है, पूर्ण रूप से प्रकट है।

निम्नलिखित सादृश्य से एक और संकेत प्राप्त किया जा सकता है: चेतन सृष्टि और मानवता अनिवार्यतः विद्यमान उस एक के साक्ष्य के स्थान हैं, जो सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय के प्रमाण और दर्पण हैं।

ये प्रमाण इतने निश्चित, स्पष्ट और प्रत्यक्ष हैं कि जैसे हम कह सकते हैं कि सूर्य को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण "सूर्य का रूप है (या सूर्य जैसा है)" (सूर्य के प्रकाश के शानदार प्रमाण पर जोर देते हुए), हम यह भी कह सकते हैं: "मानवता में सर्व-दयालु का रूप है," जो हमारे सर्व-दयालु के स्पष्ट प्रमाण और उनके साथ पूर्ण संबंध होने पर जोर देता है। इसलिए, अस्तित्व की एकता में अधिक उदार और संतुलित विश्वासियों ने कहा: "उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है," जो प्रमाण की स्पष्टता और संबंध की पूर्णता को व्यक्त करता है।

> हे ईश्वर, हे सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय । ईश्वर के नाम पर सत्य के माध्यम से , सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय, हम पर दया करें जैसा कि आपके सर्व-करुणामय होने के कारण है। इस वाक्यांश के रहस्यों को हमारी समझ के लिए खोलें, जैसा कि आपके सर्व-दयालु होने के कारण है। आमीन।

छठा रहस्य: हे असीम शक्तिहीनता और अंतहीन ज़रूरतों के बोझ तले दबी दुखी मानवता! दया के महत्व को एक साधन और मध्यस्थ के रूप में समझें। यह एक ऐसे महान प्रभु के लिए साधन है जिसकी सेना में विशाल आकाशगंगाएँ और सूक्ष्म कण पूर्ण आज्ञाकारिता और सामंजस्य के साथ मिलकर सेवा करते हैं। अनंत काल का वह महान प्रभु परम धनी और आत्मनिर्भर है, उसे किसी चीज़ या किसी की ज़रूरत नहीं है। सब कुछ उसके अधिकार और निर्देशन के अधीन है, उसकी महिमा और भव्यता के आगे आज्ञाकारी, उसकी महिमा के आगे भयभीत और नतमस्तक। हे मानव, दया तुम्हें उस परम धनी, स्वतंत्र और शाश्वत प्रभु की उपस्थिति में ऊपर उठाती है जो तुमसे मित्रता करता है और तुम्हें अपना प्रिय सेवक कहकर संबोधित करता है।

फिर भी, जैसे इसकी रोशनी आपके दर्पण के माध्यम से आपको सूर्य का प्रतिबिंब देती है यद्यपि आप उसके करीब नहीं जा सकते, फिर भी उसकी दया का प्रकाश आपको उसके करीब ले आता है वह शुद्ध और पवित्र, अनंत काल का सूर्य, हमारे करीब है, यद्यपि हम उससे अनंत रूप से दूर हैं। इसलिए, हे मानव! जो कोई भी इस दया को पाता है, वह अमोघ प्रकाश का शाश्वत खजाना पाता है। इस दया तक भगवान के द्वारा पहुँचा जा सकता है।

सबसे महान पैगंबर की सुन्नत,7 इसके सबसे शानदार उदाहरण और प्रतिनिधि, इसकी सबसे वाक्पटु आवाज़ और संदेशवाहक, जिसे कुरान ने "सारे संसारों के लिए दया" के रूप में सम्मानित किया है। ईश्वर की कृपा को पुकार कर उन तक पहुंचा जा सकता है

उस पर दया करो, क्योंकि इस प्रार्थना का उद्देश्य दया है। दया की प्रार्थना के रूप में

ईश्वरीय दया का जीवंत अवतार, यह "सभी पर दया" तक पहुँचता है

इसलिए उस तक पहुँचने के लिए इस प्रार्थना का उपयोग करें, और उसे वह साधन बनाएँ जिसके द्वारा

तुम दयालु अल्लाह की दया तक पहुँच सकते हो। सभी मुसलमान बार-बार कहते हैं

यह प्रार्थना "सभी संसारों पर दया" के लिए है, जो कि पर्यायवाची है

दया। ऐसा करना इस बात का एक शानदार प्रदर्शन है कि दया कितना कीमती उपहार है

क्या है, और इसका क्षेत्र कितना व्यापक है।

अंत में, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो),

वह दया के खजाने का सबसे कीमती रत्न और उसका द्वारपाल दोनों है।

इसकी पहली और सबसे महत्वपूर्ण कुंजी ईश्वर के नाम पर है, जो अत्यंत दयालु और दयावान है, और इसका उपयोग करने की सबसे आसान कुंजी ईश्वर से प्रार्थना करना या उसे पुकारना है।

पैगम्बर पर आशीर्वाद और शांति हो।

> हे ईश्वर! ईश्वर के नाम पर, दयालु, दयावान, सभी पर कृपा और शांति प्रदान करें।
>
> एक जिसे आपने अपनी दया और कृपा के अनुरूप सभी संसारों के लिए दया के रूप में भेजा
> उन्हें और उनके परिवार तथा साथियों को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह हमें प्रदान करें
> दया करो ताकि हम तुम्हारे बीच किसी की दया की जरूरत से मुक्त हो जाएं
> तेरे सिवा कोई और प्राणी नहीं है। आमीन।
>
> तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

---

7 सुन्नत दूसरे रसूल के रूप में रसूल के हर कार्य, शब्द और पुष्टि का अभिलेख है ।
इस्लामी कानून और जीवन का स्रोत (कुरान पहला है)। नए सिद्धांतों और नियमों को स्थापित करने के अलावा, सुन्ना कुरान में जो कुछ भी संक्षेप में उल्लेख किया गया है, उसका विस्तार करके उसमें मौजूद ज्ञान को स्पष्ट करता है, निर्दिष्ट करता है कि क्या बिना शर्त है, और सक्षम बनाता है
जो विशेष रूप से कहा गया है उससे सामान्यीकरण और जो सामान्य रूप से कहा गया है उससे विशिष्टीकरण। (सं.)

दूसरा शब्द

दूसरा शब्द

संतोष का मार्ग

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जो लोग ग़ैब पर ईमान लाते हैं (2:2)

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि विश्वास के माध्यम से महान संतुष्टि और आशीर्वाद का आनंद कैसे लिया जाए, और पूर्णता और सहजता का अनुभव कैसे किया जाए, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: दो लोग आनंद और व्यवसाय दोनों के लिए यात्रा करते हैं। पहला व्यक्ति अभिमानी और निराशावादी है, और इसलिए वह उस देश में पहुँच जाता है जिसे वह सबसे दुष्ट देश मानता है। वह खुद को गरीब और निराश लोगों से घिरा हुआ देखता है जो गुंडों से पीड़ित हैं और बर्बाद जीवन जी रहे हैं। वह जहाँ भी जाता है, उसे वही दुखद, दर्दनाक स्थिति दिखाई देती है, जैसे कि पूरा देश शोक का घर हो। इस दर्दनाक स्थिति को महसूस न करने के लिए, उसे नशे में धुत होने के अलावा कोई और रास्ता नहीं सूझता।

उसे हर कोई दुश्मन और विदेशी लगता है। उसे लाशों और अनाथों के भयानक दृश्य दिखाई देते हैं, और उसकी आत्मा पीड़ा में डूब जाती है।

दूसरा व्यक्ति, ईश्वर-भक्त, सभ्य और न्यायप्रिय व्यक्ति, एक ऐसे देश में जाता है जिसे वह बहुत अच्छा मानता है। एक सार्वभौमिक त्यौहार को देखकर, वह हर कोने में खुशी और आनंद पाता है, और ईश्वर को याद करने के लिए एक घर उल्लास से भरा हुआ है। हर कोई उसके लिए एक प्यारा दोस्त है, यहाँ तक कि एक रिश्तेदार भी। वह कर्तव्यों से सामान्य निर्वहन के उत्सव को शुभकामनाओं और धन्यवाद के नारे के साथ देखता है। ढोल की आवाज़ सुनकर

और "ईश्वर सर्व महान है" और "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है" की खुशी भरी पुकार के साथ सैनिकों की भर्ती के लिए एक बैंड, वह अपनी खुशी में खुश हो जाता है
वह एक आरामदायक व्यापार का आनंद लेता है और भगवान का शुक्रिया अदा करता है।

जब वह कुछ देर बाद वापस आता है तो उसकी मुलाकात दूसरे आदमी से होती है, जो - अपनी स्थिति पर खड़ा होकर कहता है: "तुम पागल हो गए हो। बुरी और बदसूरत चीजें आप जो देखते हैं वह आपकी आंतरिक दुनिया से आता है और उसे दर्शाता है। आप कल्पना करते हैं कि हँसी रोना, और अपने कर्तव्यों से मुक्त होकर लूटपाट और लूटपाट करना। अपने पास आओ अपनी इंद्रियों को शुद्ध करो और अपने हृदय को शुद्ध करो, ताकि यह अशुभ पर्दा उठ जाए अपनी आँखें खोलो और तुम सच देख सकते हो। यह एक व्यवस्थित, समृद्ध और सभ्य देश है, जिसका शासक शक्तिशाली, दयालु और न्यायप्रिय है। इसलिए चीजें वैसी नहीं हो सकतीं जैसी तुम देखते या सोचते हो।" आदमी को होश आता है और वह पछतावे से भर जाता है:
"हाँ, मैं उन सभी नशीले पदार्थों के कारण वास्तव में पागल हो गया हूँ। धन्यवाद। मई मुझे ऐसी नारकीय स्थिति से बचाने के लिए भगवान आपसे प्रसन्न हों।"

हे मेरे प्राण! पहला व्यक्ति अविश्वासी या असावधान पापी को दर्शाता है जो इस संसार को सामान्य शोक का स्थान मानता है, सभी जीवित चीजें पापी हैं।
वियोग और क्षय के दर्द के कारण रोते हुए अनाथ, मृत्यु द्वारा काटे गए अकेले और असभ्य प्राणी के रूप में मनुष्य और पशु, तथा आत्माविहीन भयानक लाशों के रूप में विशाल जनसमूह (पहाड़ और महासागर)। उनका अविश्वास

और गुमराही बड़ी चिंताएं पैदा करती है जो उसे यातना देती हैं।

दूसरा व्यक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर पर विश्वास करता है और उसकी पुष्टि करता है।
संसार को एक ऐसा स्थान मानें जहाँ लोग उसकी महिमा करें, उसकी स्तुति करें और उसका गुणगान करें, एक अभ्यास क्षेत्र मनुष्यों और पशुओं के लिए एक परीक्षा कक्ष तथा मनुष्यों और जिन्नों के लिए एक परीक्षा कक्ष।
पशुओं और मानवता को निष्क्रिय कर दिया जाता है ताकि मृत्यु के बाद विश्वासी आध्यात्मिक आनंद में दूसरी दुनिया की यात्रा करें - क्योंकि इस दुनिया को एक नए की जरूरत है पीढ़ी को इसमें रहने और काम करने के लिए प्रेरित किया।

सभी जानवर और लोग किसी न किसी कारण से इस दुनिया में आते हैं। सभी जीवित चीजें सैनिक या अधिकारी के रूप में, अपने नियुक्त कार्य से खुश हैं।
सुनना उनकी प्रशंसा और महिमा है जब वे शुरू करते हैं, या उनका आनंद है जब काम करते समय, या काम खत्म होने पर उनका धन्यवाद। विश्वासी सभी चीजों को आज्ञाकारी सेवक, मित्रवत अधिकारी, अपने सर्वशक्तिमान की एक प्यारी किताब के रूप में देखते हैं
स्वामी एवं सर्व-दयालु स्वामी।

ऐसे और भी कई सुन्दर, उत्कृष्ट और आनन्ददायक सत्य सामने आते हैं
विश्वास। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास में ही एक ऐसा बीज होता है जो वास्तव में एक टुबा वृक्ष है जबकि कुफ़्र में जहन्नम के ज़क़्क़ुम वृक्ष का बीज निहित है।
सुरक्षा और खुशहाली केवल इस्लाम (ईश्वर के प्रति समर्पण) में ही मिलती है और इसलिए हमेशा ईश्वर का शुक्रिया अदा करते हुए कहें: "इस्लाम और इस्लाम के लिए ईश्वर की स्तुति हो पूर्ण विश्वास।"

तीसरा शब्द

तीसरा शब्द

सही रास्ता चुनना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐ लोगो! इबादत करो... (2:21)

यदि आप उससे मिलने वाले आनंद और लाभ को समझना चाहते हैं पूजा के साथ-साथ बुराई, अपव्यय और परमेश्वर की आज्ञाओं की अनदेखी के साथ आने वाले नुकसान और विनाश को समझने के लिए, निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: दो सैनिकों को एक दूर शहर में जाने के लिए कहा जाता है। साथ-साथ यात्रा करते हुए, वे एक चौराहे पर आते हैं और एक बुद्धिमान व्यक्ति से मिलते हैं जो उन्हें बताता है: "दाहिनी ओर की सड़क जोखिम मुक्त है, और दस में से नौ यात्रियों को बहुत फायदा होता है लेकिन कोई कठिनाई नहीं होती है। बाईं ओर की सड़क कोई लाभ नहीं देती है, और दस में से नौ यात्रियों को बहुत नुकसान होता है। दोनों सड़कें समान लंबाई की हैं। लेकिन एक अंतर है: जो लोग बाईं ओर की सड़क लेते हैं, जिसमें कोई नियम या कोई प्रभारी नहीं है, बिना उपकरण या हथियारों के यात्रा करते हैं, और इसलिए आरामदायक और सहज दिखाई देते हैं। जो लोग दाईं ओर की सड़क लेते हैं, जो सैन्य आदेश के अधीन है, वे अपना भोजन, और हमले के मामले में एक भारी हथियार रखते हैं।"

एक सैनिक दायाँ रास्ता लेता है। अपने भारी बोझ को कंधे पर उठाते हुए, उसका दिल और आत्मा एक साथ किसी भी बोझिल कर्ज और डर से मुक्त हो जाते हैं।
शांति से यात्रा करते हुए, वह अपने गंतव्य पर पहुँचता है, जहाँ उसे एक ईमानदार सैनिक के योग्य इनाम मिलता है जो अपने कर्तव्यों का पूरी तरह से पालन करता है। दूसरा सैनिक बाईं ओर का रास्ता लेता है। कुछ भी भारी न उठाते हुए, उसका दिल और आत्मा फिर भी असंख्य खतरों और चिंताओं से पीड़ित है। वह लगातार भयभीत और जरूरतमंद रहता है। जब वह नियत शहर में पहुँचता है, तो उसके साथ एक विद्रोही और भगोड़ा जैसा व्यवहार किया जाता है।

अब, मेरी अनुशासनहीन और शारीरिक आत्मा, ध्यान दो। पहला सैनिक ईश्वर के आज्ञाकारी सेवक का प्रतिनिधित्व करता है; दूसरा सैनिक विद्रोहियों और अपनी इच्छा का पालन करने वालों का प्रतिनिधित्व करता है। सड़क आत्माओं की दुनिया से आने वाली जीवन रेखा है, जो इस दुनिया और कब्र से गुज़रती है, और परलोक की ओर बढ़ती है।

भारी बोझ और हथियार इबादत और तक़्वा हैं। इबादत एक कठोर माँग लगती है, लेकिन वास्तव में यह अवर्णनीय शांति और आराम देती है। नमाज़ पढ़ने वाले अशहादु अन ला इलाहा इल्लल्लाह (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं) पढ़ते हैं, जो पैदा करने वाला और सब कुछ देने वाला है। वही नुकसान और फ़ायदा दे सकता है। वह अत्यन्त बुद्धिमान है जो कोई बेकार काम नहीं करता, वह अत्यन्त दयावान है जिसकी दया और फ़ज़्ल बहुत है। ईमान रखने वाला, आस्तिक सिपाही हर घटना में ख़ुदा की रहमत की दौलत का दरवाज़ा देखता है और दुआ और मिन्नत के ज़रिए उस पर दस्तक देता है। यह महसूस करते हुए कि उसका रब और पालनहार सब कुछ नियंत्रित करता है, वह उसकी शरण में जाता है। अल्लाह पर भरोसा रखते हुए और पूरी तरह से उसके अधीन होकर, वह बुराई का विरोध करता है। उसका ईमान उसे पूरा आत्मविश्वास देता है।

हर अच्छे काम की तरह, साहस ईश्वर में विश्वास और उसके प्रति निष्ठावान भक्ति से उत्पन्न होता है। हर बुरे काम की तरह, कायरता गलत दिशा में जाने से उत्पन्न होती है। यदि पृथ्वी फट जाए, तो वास्तव में प्रबुद्ध हृदय वाले ईश्वर के सेवक भयभीत नहीं होंगे - वे इसे अनंत काल से प्रार्थना करने वाले की शक्ति का चमत्कार भी मान सकते हैं। एक तर्कवादी लेकिन अविश्वासी दार्शनिक धूमकेतु को देखकर कांप सकता है, कहीं वह पृथ्वी से न टकरा जाए। (हाल ही में हैली के धूमकेतु को देखे जाने पर कुछ अमेरिकियों ने इसी तरह प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।)

हमारी अंतहीन मांगों को पूरा करने की क्षमता नगण्य है। हम उन कष्टों से घिरे हुए हैं जिनका सामना हमारी अपनी शक्ति नहीं कर सकती। हमारी शक्ति सीमित है जहाँ तक हम पहुँच सकते हैं, फिर भी हमारी इच्छाएँ और माँगें, दुख और पीड़ा, हमारी कल्पना जितनी ही व्यापक हैं।

जो व्यक्ति सत्य के प्रति पूरी तरह से अंधा नहीं है, वह समझता है कि हमारा सबसे अच्छा विकल्प ईश्वर के प्रति समर्पित होना, उसकी आराधना करना, उस पर विश्वास करना और उस पर भरोसा रखना है। एक सुरक्षित मार्ग एक खतरनाक मार्ग से बेहतर है, भले ही सुरक्षित मार्ग की संभावना बहुत कम हो। विश्वास का मार्ग व्यक्ति को लगभग निश्चितता के साथ अनंत आनंद की ओर सुरक्षित रूप से ले जाता है; वहीं, अविश्वास और अपराध का मार्ग लाभदायक नहीं है

8 इस्लामी आस्था का पेशा। जो कोई भी ऐसा कहता है उसे मुसलमान माना जाता है, और वह इसका हकदार है इस्लाम के सभी अधिकार और लाभ, साथ ही नियम और कर्तव्य। (सं.)

और इसमें अंतहीन हानि की लगभग निश्चितता है।9 यहां तक कि इसके यात्री भी इस सत्य से सहमत हैं, साथ ही अनगिनत विशेषज्ञ और अंतर्दृष्टि और अवलोकन वाले लोग भी इस पर सहमत हैं।

अंत में, दूसरी दुनिया के आनंद की तरह, इस दुनिया में भी खुशी ईश्वर के प्रति समर्पण और उनके समर्पित सेवक होने पर निर्भर करती है। इसलिए हमेशा उनकी प्रशंसा करें और कहें: "उनके मार्ग में आज्ञाकारिता और सफलता के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो," और उनका शुक्रिया अदा करें कि हम मुसलमान हैं।

---

9 लेखक ने ईश्वर की पूर्ण स्वतंत्र इच्छा के सम्मान में , पूर्ण निश्चितता के विपरीत , निकट निश्चितता शब्द का प्रयोग किया है। ईश्वर को विश्वासियों को स्वर्ग और अविश्वासियों को नरक में भेजने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता या ऐसा नहीं माना जा सकता, क्योंकि वह जो चाहता है, करता है। लेकिन जैसा कि उसने वादा किया था कि वह उन लोगों को पुरस्कृत करेगा जो विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, स्वर्ग में अनंत आनंद के साथ, और जो विश्वास नहीं करते हैं उन्हें नरक में दंडित करेगा, वह अपना वादा पूरा करेगा। (अनुवाद)

चौथा शब्द

चौथा शब्द

निर्धारित प्रार्थनाओं का मूल्य

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निर्धारित प्रार्थनाएँ धर्म का आधार हैं।

यदि आप महत्व और मूल्य को पूरी तरह से समझना चाहते हैं निर्धारित प्रार्थनाओं के बारे में, और कितने कम खर्च में वे प्राप्त की जाती हैं, और जो व्यक्ति उनकी उपेक्षा करता है, वह कितना पागल और कितना बड़ा नुकसान उठाता है, इस बारे में निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक शासक अपने दो सेवकों में से प्रत्येक को चौबीस सोने के सिक्के देता है और उन्हें अपने एक खूबसूरत खेत में बसने के लिए भेजता है जो दो महीने की यात्रा दूर है। वह उनसे कहता है: "इस पैसे का उपयोग अपना टिकट, अपनी आपूर्ति और पहुँचने के बाद अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदने के लिए करें। एक दिन की यात्रा के बाद, आप एक पारगमन स्टेशन पर पहुँचेंगे।

आप वहां से कार, ट्रेन, जहाज या हवाई जहाज से जा सकते हैं।
आप अपनी पूंजी के अनुसार किसी एक का चयन कर सकते हैं।"

नौकर चले जाते हैं। एक स्टेशन पहुँचने से पहले बहुत कम पैसे खर्च करता है। वह अपने पैसे का इतनी समझदारी से इस्तेमाल करता है कि उसका मालिक उसे हज़ार गुना बढ़ा देता है। दूसरा नौकर स्टेशन पहुँचने से पहले चौबीस में से तेईस सिक्के जुए में हार जाता है। पहला नौकर दूसरे को सलाह देता है: "इस सिक्के से अपना टिकट खरीद लो, वरना तुम्हें पैदल चलना पड़ेगा और भूखा रहना पड़ेगा। हमारा मालिक बड़ा उदार है। शायद वह तुम्हें माफ़ कर दे। शायद तुम हवाई जहाज़ ले लो, ताकि हम एक दिन में खेत पहुँच सकें। अगर नहीं, तो तुम्हें पैदल जाना पड़ेगा और रेगिस्तान पार करते हुए दो महीने की भूख और अकेलेपन को सहना पड़ेगा।" अगर वह अपने दोस्त की सलाह को नज़रअंदाज़ करता है, तो टिकट खरीदने के बजाय विज्ञापन दें,

खजाने की चाबी के समान यदि कोई अपनी बची हुई एक भी मुद्रा क्षणिक भोग विलास में खर्च कर दे, तो कोई भी समझ सकता है कि वह कितना मूर्ख और विवेकहीन है।

अब, तुममें से जो लोग प्रार्थना नहीं करते, तुम्हारे समान ही मेरी आत्मा भी जो प्रार्थना नहीं करती, प्रार्थना की ओर झुकाव। शासक हमारा भगवान, हमारा निर्माता है। एक सेवक धार्मिक लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो उत्साह के साथ प्रार्थना करते हैं; दूसरा उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो
जो प्रार्थना करना पसंद नहीं करते। चौबीस सिक्के चौबीस घंटे हैं
एक दिन का। खेत स्वर्ग है, पारगमन स्टेशन कब्र है, और यात्रा मानव जीवन है जन्म से कब्र तक, और वहाँ से अनन्त जीवन तक।
लोग कब्र से यात्रा का हिस्सा अलग-अलग समय पर तय करते हैं
उनके कर्मों और परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और आज्ञाकारिता के अनुसार।
सच्चे भक्त एक दिन में बिजली की तरह हजार वर्ष जीते हैं, जबकि अन्य
पचास हज़ार साल तो कल्पना की तरह ही बीत जाते हैं। क़ुरआन इस सच्चाई की ओर संकेत करता है
22:47 और 70:4.10 में

टिकट में निर्धारित प्रार्थनाएँ हैं, जो सभी एक ही क्रम में पढ़ी जा सकती हैं।
एक घंटे में 23 घंटे बिताने वाले व्यक्ति को कितना बड़ा नुकसान होता है
सांसारिक जीवन और निर्धारित समय के लिए शेष समय आरक्षित नहीं करता
प्रार्थनाएँ, और किस हद तक वह अपने आप को नुकसान पहुँचाता है; वह कितनी अनुचित रूप से
जो कोई भी अपने आप को समझदार समझता है, क्या वह यह नहीं समझ सकता कि यह तर्क और बुद्धि के कितने विपरीत है और समझदारी से कितनी दूर है?
यदि कोई व्यक्ति इसे उचित मानते हुए अपने पैसे का आधा हिस्सा लॉटरी में खर्च करता है, तो यह होगा
एक हज़ार लोगों द्वारा खेला जाने वाला और जिसमें जीतने की संभावना
एक हजार में एक है, लेकिन वह इसका 24वां हिस्सा भी शाश्वत पर खर्च नहीं करता ,
अक्षय खजाना जहाँ जीतने की संभावना की पुष्टि हो चुकी है
सौ में से निन्यानबे पर होना?

प्रार्थना आत्मा, हृदय और मन को सुकून देती है, और शरीर के लिए बोझिल और कष्टकारी नहीं होती। इसके अलावा, अगर हम नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं, तो सही, पाप-निष्ठ इरादे हमारे दैनिक कर्मों और आचरण को आराधना में बदल देते हैं। इस प्रकार हमारा
हमारा छोटा सा जीवनकाल दूसरी दुनिया में अनंत जीवन के लिए व्यतीत होता है, और हमारा
क्षणभंगुर जीवन एक प्रकार का स्थायित्व प्राप्त कर लेता है।

---

[10] ... तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन तुम्हारे हिसाब में एक हजार साल के बराबर है (32:5), और ... फ़रिश्ते और आत्मा एक दिन में उसके पास चढ़ जाती है, जिसका माप क्रमशः 50,000 वर्ष (आपके सामान्य सांसारिक वर्षों में से) है (70:4) । (ट्र.)

पांचवां शब्द

पांचवां शब्द

विश्वासियों के लिए सही प्रशिक्षण

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो भय के साथ उसकी अवज्ञा करने से बचते हैं
और जो अच्छे कर्म करते हैं (मानो उन्होंने उसे देखा हो) (16:128)

यदि आप देखना चाहते हैं कि वास्तव में मानव कर्तव्य क्या है और
मानवता के निर्माण का स्वाभाविक, उचित परिणाम यह है कि
निर्धारित प्रार्थनाओं का पालन करने और प्रमुख पापों से बचने के लिए, निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक युद्ध के दौरान, दो निजी खुद को एक रेजिमेंट में पाते हैं, एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और कर्तव्यनिष्ठ, और दूसरा एक भर्ती और एक सिपाही।
अपनी शारीरिक स्वार्थ का गुलाम। अच्छी तरह से प्रशिक्षित, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति प्रशिक्षण में भाग लेता है
दुश्मन के खिलाफ अभ्यास और संघर्ष, बिना किसी चिंता के -
वह जानता है कि सैन्य बलों को आवश्यक उपकरण, भोजन और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना सरकार का कर्तव्य है, क्योंकि वह जानता है कि सैन्य बलों को आवश्यक उपकरण, भोजन और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना सरकार का कर्तव्य है।
उसे बस युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेना है और देश के लिए लड़ना है।
हालाँकि, वह भोजन उपलब्ध कराकर और रसोई में काम करके भी मदद करता है।
जब उनसे पूछा गया कि वह क्या कर रहे हैं, तो उन्होंने जवाब दिया: "राज्य के कुछ काम।"
वह यह नहीं कहता कि वह अपनी जीविका के लिए काम कर रहा है। लेकिन दूसरा सैनिक प्रशिक्षण नहीं लेता
या लड़ाई, क्योंकि: “इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। यह सरकार का मामला है।” उसे परवाह है
वह केवल अपनी आजीविका के बारे में सोचता है, और इसलिए अपनी रेजिमेंट को छोड़ देता है और खरीदारी करने के लिए बाजार चला जाता है।

उसका सुप्रशिक्षित मित्र उसे सलाह देता है: "भाई, तुम्हें ऐसा करना चाहिए
देश के लिए लड़ने की ट्रेनिंग ले रहे हैं। इसीलिए आप यहाँ हैं। सरकार

आपकी ज़रूरतें पूरी करेगा, क्योंकि यही उसका कर्तव्य है। आप अपनी सभी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकते
समय या स्थान की परवाह किए बिना। चूंकि हम युद्ध की स्थिति में हैं, इसलिए आप पर आरोप लगाया जा सकता है
विद्रोह या दलबदल का दोषी पाए जाने पर दण्डित किया जाएगा। दो कर्तव्य हैं, एक है
सरकार की है, और बाकी हमारी है। सरकार हमारी ज़रूरतों को पूरा करती है,
जिस पर हम कुछ हद तक काम भी करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम लड़ाई के लिए तैयार रहें
और जब आवश्यक हो तो लड़ने के लिए, जिसमें सरकार हमारी बहुत मदद करती है।"
कल्पना कीजिए कि दूसरा सैनिक कितनी मुसीबत में पड़ जाएगा यदि वह अपने दोस्त की बात को नजरअंदाज कर दे।
शब्द।

हे मेरे आलसी आत्मा! अशांत युद्ध क्षेत्र हमारे अशांत सांसारिक जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। रेजिमेंटों में विभाजित सेना मानवता का प्रतिनिधित्व करती है
राष्ट्रों में विभाजित। वह विशेष रेजिमेंट इस सदी में मुस्लिम समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है। एक सैनिक एक धर्मनिष्ठ और धार्मिक मुसलमान है जो
वह जानता है कि उसे क्या करने के लिए कहा गया है और वह अनिवार्य धार्मिक कर्तव्यों को भी जानता है।
बड़े पापों से बचता है, और अपने आप और शैतान के खिलाफ संघर्ष करता है ताकि वह पाप न करे
अन्य पाप करो। दूसरा सैनिक एक पापी हारा हुआ व्यक्ति है जो इतना जुनूनी है
अपनी जीविका के लिए ऐसा काम करना कि वह सच्चे प्रदाता पर आरोप लगा दे, और
इसलिए वह अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन नहीं करता और कई पाप करता है
अपनी जिंदगी कमाने के लिए बेपरवाही से काम करना। प्रशिक्षण कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व करता है
पूजा, जिसमें विशेष रूप से निर्धारित प्रार्थनाएँ शामिल हैं। युद्ध का मतलब है
शारीरिक, बुराई को आदेश देने वाली आत्मा और उसकी वासनाओं के विरुद्ध संघर्ष करना, और
जिन्न और मानवता के बीच शैतान के खिलाफ, सक्षम होने के लिए
पापों और घृणित नैतिकता से दूर रहें, और हृदय और आत्मा को अनंत विनाश से बचाएं। कर्तव्यों के लिए: पहला है जीवन देना और उसे बनाए रखना; जबकि दूसरा है उस ईश्वर की पूजा करना और उससे प्रार्थना करना जिसने हमें जीवन दिया है।
जीवन देता है और बनाए रखता है, और उस पर भरोसा करता है।

केवल वही जो जीवन देता है, जो शाश्वत ईश्वर का सबसे शानदार चमत्कार है
अपनी कला और प्रभु की बुद्धि के चमत्कार से जीवन कायम रहता है
प्रावधान। क्या आपको समझाने की ज़रूरत है? सबसे कमज़ोर और सरल जानवर हैं
सबसे अच्छा भोजन; जैसे मछली और फलों में कीड़े। सबसे कम सक्षम और सबसे कमजोर जीव, जैसे कि बच्चे या नवजात जानवर, सबसे अच्छा भोजन पाते हैं। यह
मछली की तुलना लोमड़ियों से, नवजात की तुलना जंगली जानवरों से करने के लिए पर्याप्त है, और
पेड़ों को जानवरों के साथ जोड़ना चाहिए, ताकि यह समझा जा सके कि मौलिक, वैध भोजन की प्राप्ति शक्ति और इच्छा पर नहीं, बल्कि आवश्यकता और नपुंसकता पर निर्भर करती है।

अतः जो लोग अपनी आजीविका के लिए निर्धारित नमाज़ों को अनदेखा करते हैं
वे उस सैनिक के समान हैं जो अपने अभ्यास की उपेक्षा करता है, भय के कारण मोर्चे को छोड़ देता है
भूख से व्याकुल होकर वह बाज़ार में इधर-उधर भटकता रहता है। हालाँकि, अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वह

सर्व-उदार प्रदाता की दया के बाद रसोई से राशन
प्रार्थना करना और दूसरों पर बोझ न डालना ठीक और उचित है। यह भी एक तरह का
पूजा करना।

इसके अलावा, हमारी प्रकृति और आध्यात्मिक अस्तित्व यह प्रदर्शित करता है कि हम
भगवान की पूजा करने के लिए बनाया गया है। क्योंकि हमारे सांसारिक जीवन के लिए आवश्यक शारीरिक
शक्ति और क्षमता के मामले में, हम गौरेयों से भी मुकाबला नहीं कर सकते।
लेकिन हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान के संबंध में
इसके बाद, अपनी आवश्यकता, प्रार्थना और पूजा को समझकर, हम सभी चेतन प्राणियों के राजा और सेनापति
हैं।

हे मेरे आत्मा! यदि तू इस संसार को अपना मुख्य लक्ष्य मानता है और इसके लिए काम करता है,
आप केवल एक सैनिक बने रहेंगे, जिसका अपने मामलों पर कोई नियंत्रण नहीं होगा
एक गौरैया। लेकिन अगर आप यहाँ के जीवन को अपना लक्ष्य बनाते हैं, और इसे अपना लक्ष्य बनाते हैं
संसार के जीवन को उसके साधन और उसके लिए बोने योग्य खेत की व्यवस्था करो, और उसके अनुसार
आचरण करो, तो तुम पशु जगत के शासक, सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रिय, याचक सेवक और इस संसार में उनके
कृपापात्र और सम्मानित अतिथि बन जाओगे।
दुनिया। आप कोई भी विकल्प चुन सकते हैं। इसलिए मार्गदर्शन और सफलता के लिए पूछें
उसका मार्ग अत्यंत दयालु अत्यन्त दयालु से है।

छठा शब्द

छठा शब्द

सर्वोच्च लेन-देन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जान और उनके माल दोनों को जन्नत के बदले में खरीद लिया है। (9:111)

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि अपनी आत्मा और संपत्ति को ईश्वर को बेचना और उसका दास और सैनिक बनना कितना लाभदायक सौदा है, कितना सम्मानजनक पद है, तो निम्नलिखित दृष्टांत सुनें: एक बार एक राजा ने दो सेवकों को एक-एक जागीर सौंपी, जिसमें सभी आवश्यक कार्यशालाएँ, मशीनें, घोड़े, हथियार और अन्य उपकरण शामिल थे। लेकिन चूंकि यह युद्ध का समय था, जब सब कुछ अस्थिर था, इस दयालु और करुणामय राजा ने अपने सबसे महान अधिकारी को निम्नलिखित संदेश के साथ उनके पास भेजा।

संदेश:

> मुझे सौंपी गई संपत्ति बेच दो ताकि मैं इसे तुम्हारे लिए रख सकूँ। इसे व्यर्थ में नष्ट मत होने दो। युद्ध समाप्त होने के बाद, मैं इसे पहले से बेहतर स्थिति में तुम्हें लौटा दूँगा। इसके अलावा, मैं इसके लिए बहुत अधिक कीमत चुकाऊँगा जैसे कि यह तुम्हारी अपनी संपत्ति हो। मशीनरी और औजार मेरे नाम पर मेरे कार्यक्षेत्र में उपयोग किए जाएँगे। उनके उपयोग के लिए कीमत और शुल्क दोनों में वृद्धि की जाएगी, शायद एक हजार गुना। मैं सारा लाभ तुम्हें दे दूँगा। तुम कमजोर और गरीब हो, और इन महान कार्यों के लिए भुगतान नहीं कर सकते। मुझे खर्च और उपकरणों का ध्यान रखने दो, और तुम्हें आय और लाभ दो। तुम इसे सेना से विमुख होने तक उपयोग कर सकते हो।

इस लेन-देन के इन पांच लाभों पर विचार करें।

अगर आप मुझे प्रॉपर्टी नहीं बेचते हैं, तो इस पर विचार करें। जैसा कि आप देख रहे हैं, कोई भी व्यक्ति अपनी संपत्ति को सुरक्षित नहीं रख सकता है। आप भी अपनी संपत्ति खो देंगे। यह बेकार हो जाएगा, और आप उच्च कीमत से चूक जाएंगे।

मैं तुम्हें भेंट करता हूँ। सभी नाजुक, कीमती उपकरण और बढ़िया तराजू जो
उपयोग के लिए तैयार धातुएँ अपना मूल्य खो देंगी, क्योंकि उनके उपयोग के योग्य कोई धातु नहीं है। आपको
उन्हें प्रशासित करने और उन्हें पहले से परोसने का कोई तरीका ढूँढ़ना होगा। इसके अलावा, आपको अपने
विश्वास को धोखा देने के लिए दंडित किया जाएगा। इसलिए
उन पांच तरीकों पर विचार करें जिनसे आप हार जाएंगे।

अपनी संपत्ति मुझे बेचकर तुम मेरे सैनिक बन जाओगे और
मेरे नाम पर काम करो। एक मात्र भर्ती या अनियमित होने से कहीं दूर, तुम
एक उच्च सम्राट का सम्मानित और स्वतंत्र अधिकारी होना।

जब दोनों व्यक्तियों ने यह अनुग्रहपूर्ण आदेश सुना तो उनमें से एक ने कहा: "मैं
बेचकर बहुत खुश हूँ और सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।" दूसरा भी उतना ही गर्वित था,
फिरौन की तरह घमंडी, स्वार्थी और भ्रष्ट। मानो वह उस पर ही रहेगा
हमेशा के लिए संपत्ति, उन्होंने भूकंप और कोलाहल को नजरअंदाज कर दिया और कहा: "नहीं! कौन
क्या यह राजा है? मैं अपनी संपत्ति नहीं बेचूंगा या अपना आराम कम नहीं करूंगा।
जबकि, पहला आदमी इतने ऊंचे पद पर पहुंच गया कि हर कोई उसके पद से ईर्ष्या करने लगा। उसे राजा
का अनुग्रह प्राप्त था और वह राजा के महल में खुशी से रहता था।
दूसरा इतना नीचे गिर गया कि सभी को उस पर दया आ गई लेकिन एहसास हुआ कि वह इसके लायक था
अपनी गलती के परिणामस्वरूप, उसने अपनी खुशी और संपत्ति खो दी, और सजा और पीड़ा झेली।

अब, हे मनमौजी आत्मा, यहाँ प्रदर्शित सत्य पर विचार करो।
राजा सम्राट है, अनंत काल से पहले और बाद में शाश्वत, आपका भगवान और
सृष्टिकर्ता। उसने जो तुम्हें सौंपा है वह तुम्हारे शरीर, आत्मा,
और हृदय, इत्यादि, साथ ही आपकी बाहरी और आंतरिक इंद्रियाँ जैसे दृष्टि,
स्वाद, बुद्धि, कल्पना। सबसे महानतम है संदेशवाहक;
दयालु आदेश कुरान है, जो कहता है: भगवान ने खरीदा है
ईमान वालों को अपनी जान और अपनी संपत्ति जन्नत के बदले में देनी होगी (9:111)।
उभरता हुआ युद्धक्षेत्र दुनिया की उथल-पुथल भरी सतह है, और हर किसी को यह सोचने पर मजबूर करता है: "सब कुछ हमारे हाथ से

निकल जाएगा, नष्ट हो जाएगा, और खो जाएगा। क्या कोई रास्ता नहीं है
इसे शाश्वत बनाने के लिए, इसे संरक्षित करने के लिए? ऐसे विचारों में लगे हुए,
कुरान की स्वर्गीय आवाज़ सुनाई देती है:

"एक सुंदर और आसान तरीका है जो पाँच लाभ या मुनाफा प्रदान करता है।"

ये कौन सा रास्ता है?

ट्रस्ट को उसके असली मालिक को बेचना। इसके परिणामस्वरूप पाँच लाभ होंगे:

पहला लाभ: क्षणिक संपत्ति चिरस्थायी हो जाती है।
जीवन, जब महिमा के शाश्वत और आत्मनिर्भर अस्तित्व को दिया जाता है और
उसके लिए खर्च किया गया, स्थायित्व में परिवर्तित हो जाता है और चिरस्थायी देता है
फल। किसी के वर्तमान जीवन के क्षण स्पष्ट रूप से गायब हो जाते हैं और सड़ जाते हैं, जैसे कि

गुठली और बीज। लेकिन फिर खुशी के फूल खिलते हैं और अनंत काल के दायरे में खिलते हैं, और प्रत्येक कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र में एक चमकदार, प्यारा दृश्य प्रस्तुत करता है।

दूसरा लाभ: इसकी कीमत स्वर्ग है।

तीसरा लाभ: प्रत्येक शारीरिक अंग और इन्द्रिय का मूल्य हज़ार गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग अपनी शारीरिक आत्मा के लिए करते हैं, तो यह एक ऐसा अशुभ, विनाशकारी और दुर्बल करने वाला साधन बन जाता है जो आपको अतीत के दुःखों और भविष्य के भयावह भय से भर देता है। यही कारण है कि पापी लोग अक्सर नशे या अन्य तुच्छ सुखों का सहारा लेते हैं। लेकिन यदि आप अपनी बुद्धि को उसके सच्चे स्वामी को बेच देते हैं और उसका उपयोग उसके लिए करते हैं, तो यह एक रहस्यमय कुंजी की तरह बन जाती है जो करुणा और ज्ञान से भरे अनंत खजाने को खोलती है और आपको एक पवित्र और धर्मी मार्गदर्शक के पद पर पहुंचा देती है जो शाश्वत सुख का हकदार है।

आँख एक खिड़की है जिसके माध्यम से आत्मा इस दुनिया को देखती है। यदि आप इसे अपनी शारीरिक आत्मा की ओर से इस्तेमाल करते हैं, इसे सर्वशक्तिमान ईश्वर को बेचे बिना, क्षणभंगुर, अस्थाई सुंदरता और तमाशे को देखकर, यह वासना और अन्य शारीरिक इच्छाओं को बढ़ावा देती है। लेकिन अगर आप इसे इसके सर्वज्ञ निर्माता को बेचते हैं और इसे उसकी ओर से और उसकी सीमाओं के भीतर इस्तेमाल करते हैं, तो यह ब्रह्मांड की महान पुस्तक के पाठक के पद तक पहुँच जाता है, उसकी रचना के चमत्कारों का साक्षी बन जाता है, इस दुनिया के बगीचे में दया के फूलों को चूसने वाली धन्य मधुमक्खी बन जाता है।

स्वाद भी इंद्रियों में से एक है। यदि आप इसे अपने सर्वज्ञ सृजक को नहीं बेचते, बल्कि इसे अपनी शारीरिक आत्मा की खातिर और अपनी जीभ या पेट की खातिर इस्तेमाल करते हैं, तो यह डूब जाता है और पेट के अस्तबल के द्वारपाल और उसके कारखाने के चौकीदार के स्तर तक गिर जाता है। लेकिन यदि आप इसे सर्व-उदार प्रदाता को बेचते हैं, तो स्वाद की इंद्रिय दिव्य करुणा के भण्डारों में एक कुशल पर्यवेक्षक, शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले व्यक्ति की शक्ति के रसोईघरों में एक आभारी निरीक्षक के स्तर तक बढ़ जाती है।

हे बुद्धि! सावधान हो जाओ! सोचो कि विनाश का साधन क्या है और सभी अस्तित्व की कुंजी क्या है। हे आँख! एक घृणित दलाल और दिव्य पुस्तकालय के विद्वान पर्यवेक्षक के बीच अंतर देखो! हे

11 ब्रह्मांड, मनुष्य और कुरान तीन पुस्तकें हैं जो हमें सृष्टिकर्ता से परिचित कराती हैं। ब्रह्मांड और मनुष्य सृजित पुस्तकें हैं जो ईश्वर की शक्ति और इच्छा के गुणों से उत्पन्न हुई हैं और ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियों का संग्रह हैं, जबकि कुरान उनका प्रकट प्रतिरूप है। ये तीनों पुस्तकें एक दूसरे की व्याख्या करती हैं। कुरान की तरह, ब्रह्मांड और मनुष्य या स्वयं का अध्ययन करके, मनुष्य ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करता है और उसके करीब आता है। (अनुवाद)

जीभ! एक स्थिर द्वारपाल और एक कारखाने के बीच अंतर को अच्छी तरह से चखें
परमेश्वर की दया के ख़ज़ाने का पहरेदार और ट्रस्टी!

जब आप अन्य सभी उपकरणों, क्षमताओं और अंगों की तुलना इनसे करते हैं,
आप समझते हैं कि ईमान वाले लोग जन्नत के लायक स्वभाव हासिल करते हैं और
अविश्वासियों का स्वभाव नरक के अनुरूप है। प्रत्येक को अपना-अपना मूल्य प्राप्त होता है।
अपने विश्वास के कारण, विश्वासी वही करते हैं जो सृष्टिकर्ता ने उन्हें सौंपा है।
उसकी ओर से और उसकी सीमाओं के भीतर। अविश्वासी लोग विश्वासघात करते हैं और इसका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं।
शारीरिक आत्मा की खातिर.

चौथा लाभ: मनुष्य असहाय है, परन्तु दुर्भाग्य से घिरा हुआ है; वह दरिद्र है, परन्तु उसकी आवश्यकताएं अनगिनत हैं; और वह नपुंसक है, परन्तु जीवन का बोझ है।
बहुत भारी है। अगर वह सर्वशक्तिमान महामहिम पर भरोसा नहीं करता, तो भरोसा करें
और पूर्ण विश्वास के साथ उसके प्रति समर्पित हो, उसका विवेक हमेशा शांत रहेगा
वह खुद को व्यर्थ की पीड़ा, दर्द और पछतावे में फंसा हुआ पाता है,
जिससे उसका दम घुट जाता है। वे या तो उसे नशे में डाल देते हैं या फिर उसे जानवर बना देते हैं।

पाँचवाँ लाभ: जो लोग चीज़ों की सच्ची प्रकृति को उजागर करते हैं और सच्चाई का अनुभव करते हैं, वे इस बात से सहमत हैं कि परमेश्वर की आराधना और महिमा करने का इनाम
आपके अंगों, इंद्रियों और संकायों द्वारा किया गया प्रदर्शन उस समय दिया जाएगा
सबसे बड़ी ज़रूरत, स्वर्ग के फलों के रूप में।

यदि आप इस लेन-देन को इसके पांच गुना लाभ के साथ अस्वीकार करते हैं, इसके अतिरिक्त
इसके लाभ से वंचित होने पर, आपको निम्नलिखित पाँच गुना हानि होती है:

पहला नुकसान: आपकी प्रिय संपत्ति और संतान, आपकी प्रिय शारीरिक संपत्ति
आत्मा और उसकी इच्छाएँ, और तुम्हारा मूर्खतापूर्ण प्रेम किया हुआ यौवन और जीवन सब लुप्त हो जाएँगे,
वे अपने पापों और पीड़ाओं का बोझ आप पर डाल रहे हैं।

दूसरा नुकसान: विश्वासघात के लिए आपको सजा मिलेगी, क्योंकि आप
सबसे मूल्यवान उपकरणों का उपयोग सबसे बेकार वस्तुओं पर करके आपने अपने साथ अन्याय किया है।

तीसरी हानि: अपनी बहुमूल्य क्षमताओं को पशुओं से भी निम्न स्तर तक गिराकर, आपने ईश्वर की बुद्धि का अपमान और उल्लंघन किया है।

चौथा नुकसान: अपनी लाचारी और गरीबी में, आप अपने कंधों पर बोझ डालेंगे
जीवन के भारी बोझ से दबे रहना और क्षणभंगुरता के प्रहारों से निरंतर कराहना
और अलगाव.

पाँचवी हानि: तू दयालु की सुन्दर देन को, जैसे बुद्धि, हृदय, आँख, जीभ, जो परलोक में अनन्त जीवन और सुख की नींव रखने के लिए प्रयोग की जानी थी, कुरूप रूप में परिवर्तित कर देता है।

तुम्हारे सामने नरक के द्वार खोलने के लिए उपयुक्त है।

हमें यह सौदा करना चाहिए। बहुत से लोग ऐसा क्यों नहीं करना चाहते? क्या यह इतना मुश्किल है? बिलकुल नहीं! इसके परिणामस्वरूप होने वाले बोझ कठिन नहीं हैं। धार्मिक रूप से स्वीकार्य आनंद की सीमाएँ व्यापक और पर्याप्त हैं आपकी इच्छा पूरी हो जाएगी, और इसलिए आपको निषिद्ध चीज़ों में शामिल होने की ज़रूरत नहीं है। भगवान द्वारा लगाए गए कर्तव्य हल्के और कम हैं। उनका सेवक और सैनिक बनना एक ऐसा सम्मान जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

आपका कर्तव्य है कि आप एक सैनिक की तरह परमेश्वर के नाम पर सभी कार्य करें और परमेश्वर की ओर से प्राप्त करें और दें, तथा उसकी अनुमति और आज्ञा का पालन करें। कानून। यदि आप पाप करते हैं, तो यह कहकर क्षमा मांगें: "हे प्रभु, हमारे पापों को क्षमा करें और हमें अपने सेवकों के रूप में स्वीकार करें। हमें तब तक आपके भरोसे पर कायम रहने में सक्षम बनाएं जब तक "बदले का समय आ गया है। आमीन।" और उससे विनती करो।

सातवां शब्द

सातवाँ शब्द

मानवीय खुशी का द्वार

I यदि आप यह समझना चाहते हैं कि सच्चाई को उजागर करने की कुंजी कितनी मूल्यवान है, तो कृपया हमें यह बताएं कि क्या आप इसे जानना चाहते हैं?

ब्रह्मांड की रहस्यमय पहेली को सुलझाने और मानव आत्मा के लिए खुशी का द्वार खोलने के लिए ईश्वर और परलोक में विश्वास करना है; और यह समझना है कि सभी बीमारियों के लिए वे कितनी अमूल्य दवा हैं, अपने निर्माता पर धैर्यपूर्वक भरोसा करना और अपने प्रदाता से कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करना और उसकी शरण लेना; और यह भी समझना है कि अनंत काल की यात्रा के लिए वे कितने महत्वपूर्ण, मूल्यवान और शानदार टिकट हैं, कब्र के लिए एक रोशनी और अगले जीवन के लिए प्रावधान हैं, कुरान पर ध्यान देना, इसके कानूनों का पालन करना, निर्धारित प्रार्थनाएं करना और प्रमुख पापों से बचना[12] - यदि आप यह सब समझना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक बार एक सैनिक युद्ध के मैदान और परीक्षण के बीच, लाभ या हानि के क्षेत्र में, खुद को भयावह परिस्थितियों में पाया। वह अपने दाहिने और बाएं हिस्से में घायल हो गया था।

उसके पीछे एक शेर उसे चीरने के लिए तैयार खड़ा था, और उसके आगे एक फांसी का तख्ता खड़ा था जिस पर उसके दोस्तों और साथियों को फाँसी दी जा रही थी; वह भी उसका इंतज़ार कर रहा था। उसके सामने एक लंबा रास्ता था, जिस पर उसे यात्रा करनी थी। जब वह बदकिस्मत सिपाही निराशा में सोच रहा था, तो एक बुद्धिमान, धर्मपरायण व्यक्ति उसके सामने प्रकट हुआ।

---

12 मुख्य पापों में शामिल हैं ईश्वर के साथ साझी बनाना; माता-पिता का अनादर करना; दूसरों की संपत्ति, विशेषकर अनाथों की संपत्ति हड़पना; सूदखोरी में लिप्त होना; सेना के आगे बढ़ने पर पीछे हट जाना; पतिव्रता स्त्रियों की निन्दा करना; निर्धारित दण्ड वाले अपराध करना (जैसे, चोरी, व्यभिचार, परस्त्रीगमन, हत्या); कुरान या परम्पराओं में अगले जन्म में ऐसा करने पर कठोर दण्ड की धमकी के बावजूद निषिद्ध कार्य करना; तथा पैगम्बर द्वारा शापित कार्य करना। (ट्र.)

उन्होंने कहा: "निराश मत हो। मैं तुम्हें दो ताबीज दूंगा और तुम्हें उन्हें सिखाऊंगा।"
अगर तुम इनका सही इस्तेमाल करोगे तो शेर तुम्हारे लिए आज्ञाकारी घोड़ा बन जाएगा और फांसी का फंदा तुम्हारे लिए झूला बन जाएगा। मैं तुम्हें दो दवाइयाँ भी दूँगा जो तुम्हारे घावों को भर देंगी और उन्हें गुलाब की तरह महका देंगी।

इसके अलावा, मैं तुम्हें एक टिकट दूंगा जिससे तुम एक दिन में कई सालों की दूरी तय कर सकोगे। इन्हें आज़माओ और देखो कि क्या मेरी बातें सच हैं।" सिपाही ने ऐसा ही किया और पाया कि उसकी बातें सच हैं। मैं, यह बदकिस्मत सैद, भी इसकी पुष्टि करता हूँ। क्योंकि मैंने भी उन्हें थोड़ा आज़माया और पाया कि वे बिल्कुल सच थे।

अचानक, एक शैतानी, चालाक आदमी उसके बाईं ओर अलंकृत गहने, तस्वीरें, कल्पनाएँ और नशीले पदार्थ लेकर प्रकट हुआ, और बोला: “अरे, आओ दोस्त! चलो मौज-मस्ती करते हैं, संगीत सुनते हैं, सुंदर महिलाओं की ये तस्वीरें देखते हैं, और ये स्वादिष्ट चीजें खाते-पीते हैं।” उसने सिपाही से पूछा कि वह क्या बुदबुदा रहा था। सिपाही ने उत्तर दिया: “एक पवित्र आह्वान,” जिस पर आदमी ने कहा: “इन जटिल मुद्दों को छोड़ो। चलो अपना आराम खराब न करें। तुम्हारे हाथ में वह क्या है?” सिपाही ने उत्तर दिया: “दवा।” आदमी ने नाक भौं सिकोड़ी: “इसे फेंक दो। तुम्हें कुछ भी गड़बड़ नहीं है। वह कागज जिस पर पाँच मुहरें हैं, वह क्या है?” जब सिपाही ने कहा कि यह एक टिकट और राशन कार्ड है, तो आदमी ने कहा: “इन्हें फाड़ दो! तुम ऐसे खूबसूरत वसंत के दिन कहीं जाने के बारे में कैसे सोच सकते हो?”

अंततः सैनिक भी थोड़ा प्रलोभन में आ जाता है कि वह भी उनका अनुसरण करे, क्योंकि वह मनुष्य है और इसलिए धोखे का शिकार हो सकता है।

अपने दाहिनी ओर, सिपाही को अचानक एक गरजने जैसी आवाज़ सुनाई देती है: "उठो! धोखा मत खाओ। उस शैतान से कहो: 'अगर तुम शेर को मार सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम फाँसी हटा सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम मेरे घावों को भर सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम ऐसा कर सकते हो कि मैं इस सड़क पर मुझसे पहले न चलूँ, तो ऐसा करो। ये काम करो, और फिर हम मौज-मस्ती कर सकते हैं। अगर तुम नहीं कर सकते, तो चुप रहो!'"

इस प्रकार, हे मेरी आत्मा, जो अपनी युवावस्था में हँसी थी और अब अपनी हँसी पर रोती है! सैनिक तुम्हारा और हर दूसरे इंसान का प्रतिनिधित्व करता है। शेर हमारी मृत्यु की नियत घड़ी है, जबकि फाँसी हमारे मित्रों से निरंतर अलगाव का प्रतीक है। दो घाव हमारी असीम और कष्टकारी नपुंसकता और हमारी घोर और असीम गरीबी हैं। यह यात्रा आत्माओं की दुनिया, भ्रूण के रूप में हमारे जीवन, हमारी युवावस्था, बुढ़ापे, कब्र, पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम के स्थान और सीरत (वह “पुल” जो नरक या स्वर्ग की ओर ले जाता है) से होकर गुजरने वाली लंबी परीक्षा यात्रा है। दो ताबीज ईश्वर और परलोक में विश्वास हैं।

समझें: ईश्वर और परलोक में विश्वास। इस पवित्र ताबीज़-पुरुष के माध्यम से मृत्यु (सिंह) एक आज्ञाकारी घोड़े की तरह आती है, जो विश्वासियों को स्वर्ग से ले जाती है।

दुनिया की काल कोठरी से स्वर्ग के बगीचों तक, दयालु ईश्वर की उपस्थिति तक। यही कारण है कि पवित्र और विद्वान, जिन्हें मृत्यु की सच्ची समझ है, वे मरने से नहीं डरते और वास्तव में अपने नियत समय से पहले ही मरना चाहते हैं। समय बीतने के साथ-साथ दोस्तों से अलग होना (मृत्यु के कारण, जिसे फांसी के तख्ते से दर्शाया जाता है), विश्वास के द्वारा ईश्वर के अद्भुत कार्यों, उनकी शक्ति के चमत्कारों और उनकी करुणा के प्रकटीकरणों की निरंतर नवीनीकृत और हमेशा रंगीन कढ़ाई को पूर्ण आनंद के साथ देखने का एक साधन बन जाता है। यह कुछ इस तरह है: चूँकि सूर्य के प्रकाश में रंगों को प्रतिबिंबित करने वाले "दर्पण" और एक फिल्म के दृश्य अलग-अलग होते हैं और बदले जाते हैं, इसलिए परिणामी दृश्य और भी सुंदर होते हैं।

जहाँ तक दवाइयों का सवाल है: एक है सब्र और खुदा पर भरोसा, उसकी ताकत पर भरोसा और उसकी हिकमत पर भरोसा। जब हम अपनी बेबसी को महसूस करते हुए हुक्म देने वाले मालिक पर भरोसा करते हैं, तो डरने की क्या बात है, हो जा और वह हो जाता है (36:82)13? यहाँ तक कि जब किसी बहुत ही भयावह स्थिति और बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता है, तो वह कहता है: बेशक, हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी की तरफ लौटना है (2:156), और अपने दयालु रब पर पूरी शांति के साथ भरोसा रखता है। जो लोग अल्लाह के सच्चे ज्ञान वाले हैं, वे अल्लाह के सामने अपनी बेबसी को महसूस करने और उसके फैसले पर अपनी उम्मीद रखने से संतुष्ट हैं। अल्लाह के डर में खुशी है। अगर एक साल के बच्चे से पूछा जाए कि उसे सबसे अच्छी चीज़ क्या पता है, तो जवाब होगा: "अपनी कमज़ोरी और बेबसी के एहसास के साथ अपनी माँ की गर्म बाँहों में शरण लेना - उसकी सबसे प्यारी थपकी से।" जैसे माँ की करुणा ईश्वर की करुणा की एक छोटी सी चिंगारी होती है, वैसे ही पूर्णता के लोग अपनी असहायता और ईश्वर के भय में बहुत आनंद लेते हैं। अपनी शक्ति में जो कुछ भी है उसे त्यागकर, वे ईश्वर की शरण लेते हैं और अपने भय और असहायता को उनके समक्ष मध्यस्थता का माध्यम बनाते हैं।

दूसरी दवा है ईश्वर को धन्यवाद और संतोष के साथ निवेदन करना और उस उदार सर्वदाता की दया पर भरोसा करना। एक सर्वदाता के मेहमान, जिसने धरती की सतह को एक मेज़ और उस मेज़ पर फूलों की बहार बनाने के लिए बनाया है, ईश्वर के सामने अपनी गरीबी और लाचारी को असहनीय कैसे मान सकते हैं? उनकी गरीबी और ज़रूरत उनकी भूख बन जाती है, और इसलिए वे अपनी गरीबी को बढ़ाने की कोशिश करते हैं। यही कारण है कि आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण लोग अपनी गरीबी पर गर्व करते हैं। हालाँकि, इसे गलत न समझें! इसका मतलब है ईश्वर के सामने अपनी गरीबी के बारे में जागरूक होना और उससे विनती करना, लोगों के सामने गरीबी का दिखावा करना और भिखारी का रूप धारण करना नहीं।

---

13 जब वह किसी चीज़ को होना चाहता है तो बस उससे कहता है, "हो जा!" तो वह तुरंत हो जाती है। (36:82) (ट्र.)

अनंत काल के लिए टिकट में निर्धारित प्रार्थनाएँ, अन्य दायित्वों का पालन करना और बड़े पापों से बचना शामिल है। सभी समझदार और विद्वान लोग इस बात पर सहमत हैं कि अनंत काल की लंबी यात्रा के लिए प्रकाश, कुछ प्रावधान और वाहन पाने का एकमात्र तरीका कुरान के आदेशों और निषेधों का पालन करना है। अकेले विज्ञान, दर्शन और शिल्प कौशल बहुत मूल्यवान नहीं हैं, क्योंकि वे केवल कब्र तक का रास्ता रोशन करते हैं।

हे मेरे आलसी आत्मा! पाँचों नमाज़ें अदा करना और सात बड़े पापों का त्याग करना कितना आसान और हल्का है, और उनके परिणाम कितने महत्वपूर्ण और महान हैं। यदि आप यहाँ सत्य को समझते हैं, तो आप उस शैतान से, जो आपको दुर्गुणों और अपव्यय में बहकाने की कोशिश करता है, कहेंगे: "यदि आपके पास मृत्यु, नपुंसकता और गरीबी को खत्म करने और कब्र का दरवाजा बंद करने का साधन है, तो हमें बताएं और हम उस पर ध्यान दें। अन्यथा, चुप रहें! ब्रह्मांड की सबसे बड़ी मस्जिद में, कुरान ब्रह्मांड को पढ़ता है, इसलिए आइए इसे सुनें। आइए इसके प्रकाश से भर जाएं और इसके मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करें। आइए इसे नियमित रूप से पढ़ें! बोलना इसका अधिकार है और जो यह कहता है वह सच है। कुरान सत्य है, जो परम सत्य से आता है। यह सत्य का मार्गदर्शन करता है, अपना प्रकाश हर जगह फैलाता है।"

हे ईश्वर, हमारे दिलों को ईमान और कुरान की रौशनी से रोशन कर।
हमें अपनी दरिद्रता की अनुभूति और अपने सामने अर्पण से समृद्ध कर। अपने प्रति उदासीनता से हमें दरिद्र न बना। हमने तेरे लिए अपनी शक्ति और ताकत त्याग दी है और तेरी शक्ति और ताकत में शरण ली है, इसलिए हमें उन लोगों में शामिल कर जो तुझ पर भरोसा करते हैं। हमें अपने हाल पर न छोड़। अपनी सेवा से हमें सुरक्षित रख। हम पर और सभी ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं पर दया कर।

हमारे स्वामी मुहम्मद, आपके सेवक और पैगंबर, आपके चुने हुए और अंतरंग मित्र - आपके राज्य की सुंदरता, आपकी रचना में सबसे प्रमुख, आपके स्नेह का केंद्र और आपके मार्गदर्शन का सूर्य; आपकी गवाही की जीभ, आपकी दया का मूर्त रूप, आपकी रचना का प्रकाश और आपकी रचनाओं की महिमा; आपकी रचनाओं की बहुलता के बीच आपकी एकता का दीपक; आपकी रचना के रहस्य को प्रकट करने वाला; आपके प्रभुत्व के राज्य का संदेशवाहक; जो आपको प्रसन्न करता है उसका उपदेशक; आपके नामों के खजाने का उद्घोषक; आपके सेवकों का शिक्षक; आपकी निशानियों का व्याख्याता; आपके प्रभुत्व की सुंदरता का दर्पण; आपको देखने और आपकी गवाही देने का माध्यम; आपका प्रिय और रसूल जिसे आपने संसारों के लिए दया बनाकर भेजा - और उनके परिवार और साथियों, उनके साथी नबियों और रसूलों पर,

आठवां शब्द

आठवाँ शब्द

धर्म की आवश्यकता

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हे ईश्वर, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वव्यापक, स्वतन्त्र है। (2:255)

अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम है। (3:19)

I यदि आप दुनिया की वास्तविक प्रकृति को समझना चाहते हैं और इसके भीतर मानवीय भावना, और धर्म की प्रकृति और मानवता के लिए इसका मूल्य; यदि आप यह समझना चाहते हैं कि कैसे सच्चे धर्म का अभाव इस दुनिया को सबसे अंधकारमय कालकोठरी और अविश्वासी को सबसे अभागा प्राणी बना देता है, और क्यों ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास, साथ ही उस पर भरोसा, ब्रह्मांड के गुप्त संकेत को खोलता है और हमारी आत्माओं को अंधकार से बचाता है - यदि आप यह सब समझना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: दो भाई एक साथ यात्रा करते हैं। सड़क के एक दोराहे पर आकर, वे एक बुद्धिमान बूढ़े व्यक्ति को देखते हैं और उससे पूछते हैं कि किस

रास्ते पर जाना है। वह उनसे कहता है: "दाईं ओर का रास्ता कुछ कानूनों के पालन की मांग करता है लेकिन यह पालन एक निश्चित सुरक्षा और खुशी लाता है, जबकि बाईं ओर का रास्ता एक निश्चित प्रकार की स्वतंत्रता का वादा करता

अनुशासित, शिष्ट भाई, परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए, सही मार्ग अपनाता है और कानून और व्यवस्था पर निर्भरता स्वीकार करता है।

दूसरा भाई, जो अनैतिक और आवारा है, स्वतंत्रता के लिए बायीं ओर जाता है। वह सहज लगता है, लेकिन वास्तव में कोई आंतरिक शांति महसूस नहीं करता। एक रेगिस्तान में पहुँचकर, वह अचानक एक जानवर की भयानक आवाज़ सुनता है जो उस पर हमला करने वाला है। वह भागता है और 60 मीटर गहरे एक जलहीन कुएँ को देखकर उसमें कूद जाता है। आधे रास्ते में, वह अपनी गिरावट को रोकने के लिए दीवार से उगे एक पेड़ को पकड़ लेता है। पेड़ की दो जड़ें हैं, जिनमें से दोनों को दो चूहे कुतर रहे हैं, एक सफेद और दूसरा काला। ऊपर देखता है, तो वह जानवर को अपना इंतज़ार करते हुए देखता है। नीचे देखता है, तो वह अपने पैरों के पास एक भयानक अजगर को देखता है, जिसका बड़ा मुँह उसे प्राप्त करने के लिए खुला है। दीवार को देखते हुए, वह देखता है कि यह संप्रदायों के काम करने वालों से ढकी हुई है। पेड़ को फिर से देखते हुए, वह देखता है कि हालाँकि यह केवल एक अंजीर का पेड़ है, लेकिन चमत्कारिक रूप से इस पर अखरोट और अनार जैसे कई अलग-अलग फल उग रहे हैं।

कुएं में लटके हुए उसे समझ में नहीं आ रहा कि क्या हुआ है।
तर्क करने में असमर्थ होने के कारण वह यह कल्पना नहीं कर पाता कि ये सारी चीज़ें संयोग से नहीं हुई हैं, और इनका कोई महत्वपूर्ण अर्थ अवश्य होगा। वह यह नहीं समझ पाता कि कोई तो होगा जो इन सारी चीज़ों को इस तरह से घटित होने का कारण बनता है।

हालाँकि अंदर से परेशान है, और उसकी आत्मा और दिल की शिकायतों के बावजूद, उसकी शारीरिक, दुष्ट आत्मा दिखावा करती है कि सब कुछ ठीक है और इसलिए उनके रोने को अनदेखा करती है। यह दिखावा करते हुए कि वह बगीचे में मौज-मस्ती कर रहा है, वह सभी तरह के फल खाने लगता है - मुफ़्त में। लेकिन उनमें से कुछ ज़हरीले हैं और उसे नुकसान पहुँचाएँगे।

हदीस कुदसी में कहा गया है, [14] परमेश्वर कहता है: "मैं अपने सेवकों के साथ वैसा ही व्यवहार करूँगा जैसा वे मेरे बारे में सोचते हैं।"15 यह व्यक्ति अपने साथ होने वाली हर चीज़ को बिना किसी अर्थ के देखता है, और इसलिए उसके लिए यह वैसा ही है। इसलिए उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाएगा जैसा वह सोचता और देखता है। वह न तो अच्छी तरह से मरता है और न ही जीता है, बल्कि केवल सस्पेंस की पीड़ा में रहता है।

दूसरे, अनुशासित, बुद्धिमान भाई को याद करते हुए, आइए उसकी स्थिति देखें। चूँकि वह अच्छे व्यवहार वाला और अच्छा चरित्र वाला है, इसलिए वह हमेशा अच्छाई के बारे में सोचता है, कानून का पालन करता है और उसे मानता है, और खुद को सुरक्षित और स्वतंत्र महसूस करता है। बगीचे में सुंदर फूल और फल के साथ-साथ कुछ बर्बाद और बदसूरत चीजें देखकर, वह अच्छाई और सुंदरता पर ध्यान केंद्रित करता है। उसका भाई ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि वह बर्बाद और बदसूरत चीजों से खुद को चिंतित करता है और ऐसे बगीचे में उसे कोई आराम नहीं मिलता। बुद्धिमान भाई इस हिसाब से जीता है: "हर चीज के अच्छे पक्ष को देखो," और इसलिए आम तौर पर हर चीज से खुश रहता है।

---

14 हदीस कुदसी: यह पैगम्बर की कही गई बातों की एक खास श्रेणी है। शब्द पैगम्बर के हैं, लेकिन अर्थ सीधे ईश्वर से संबंधित है। (अनुवाद)

15 अल-बुखारी, "तौहीद" 15, 35; मुस्लिम, "धिक्र" 2, 19, एट-तिर्मिज़ी, "ज़ुहद" 51।

रास्ते में वह भी अपने भाई की तरह रेगिस्तान में पहुँचता है और वहाँ एक जानवर दिखाई देता है। वह भी डरता है लेकिन अपने भाई जितना नहीं, क्योंकि वह सोचता है कि रेगिस्तान का कोई मालिक और शासक होना चाहिए और जानवर उसकी सेवा में और उसके आदेश के अधीन होना चाहिए। वह भी एक कुएँ में कूद जाता है और आधे रास्ते में पेड़ की कुछ शाखाएँ पकड़ लेता है। पेड़ की दो जड़ों को कुतरते हुए दो चूहों को देखता है, साथ ही नीचे ड्रैगन और ऊपर जानवर को देखता है, वह खुद को एक अजीब स्थिति में पाता है। लेकिन अपने भाई के विपरीत, चूँकि उसका चरित्र अच्छा है, जो उसे सकारात्मक रूप से सोचने और हर चीज़ के अच्छे पक्ष को देखने के लिए प्रेरित करता है, वह अनुमान लगाता है कि हर चीज़ को किसी ने व्यवस्थित किया होगा और एक संकेत का गठन किया होगा। यह सोचकर कि उसे देखा और परखा जा रहा है, वह समझता है कि उसे एक परीक्षण और एक उद्देश्य के रूप में निर्देशित और निर्देशित किया जा रहा है। उसकी जिज्ञासा जागृत हुई, वह पूछता है: "कौन मुझे उससे परिचित कराना चाहता है और मुझे इस तरह के अजीब रास्ते पर एक निश्चित बिंदु तक ले जाना चाहता है?" यह जिज्ञासा उसके मन में चिन्ह के स्वामी के प्रति प्रेम जागृत करती है, जिससे वह चिन्ह को समझना चाहता है, घटनाओं का अर्थ जानना चाहता है, तथा उसके स्वामी को प्रसन्न करने के लिए अच्छे गुण प्राप्त करना चाहता है।

उसे एहसास होता है कि यह पेड़ एक अंजीर का पेड़ है, हालाँकि इस पर कई तरह के फल लगते हैं। अब उसे डर नहीं लगता, क्योंकि उसे एहसास होता है कि यह अदृश्य मालिक के फलों की एक नमूना सूची है जिसे उसने अपने मेहमानों के लिए अपने बगीचे में तैयार किया है।
अन्यथा, एक पेड़ इतने सारे अलग-अलग फल नहीं देगा। वह ईमानदारी से प्रार्थना करना शुरू कर देता है और परिणामस्वरूप, रहस्य की कुंजी उसके अंदर जागृत हो जाती है। वह घोषणा करता है: "हे इस दृश्य और घटनाओं के स्वामी, मैं आपके हाथों में हूँ। मैं आपकी शरण लेता हूँ और आपकी सेवा में हूँ। मैं आपकी स्वीकृति और आपके बारे में ज्ञान चाहता हूँ।" दीवार खुलती है, एक दरवाजा (ड्रैगन का मुंह) प्रकट होता है जो एक अद्भुत, सुखद बगीचे की ओर जाता है। ड्रैगन और जानवर दोनों ही उसे आमंत्रित करने वाले दो सेवक बन जाते हैं। जानवर एक घोड़े में बदल जाता है जिस पर वह सवारी करता है।

और इसलिए, मेरी आलसी आत्मा और काल्पनिक मित्र! आइए उनकी स्थिति की तुलना करें और देखें कि कैसे अच्छाई अच्छाई लाती है और बुराई बुराई लाती है। वह भाई जिसने आत्म-विश्वास और स्वेच्छाचारी स्वतंत्रता का बायाँ रास्ता अपनाया, वह डर से काँपता हुआ अजगर के मुँह में गिरने वाला है। वह हमेशा चिंतित, अकेला और निराश रहता है, और खुद को जंगली जानवरों के हमलों का सामना करने वाला कैदी मानता है। वह दिखने में स्वादिष्ट लेकिन वास्तव में ज़हरीले फल खाकर अपने दुख को और बढ़ाता है जो केवल नमूने हैं; उन्हें अपने लिए नहीं खाया जाना चाहिए, बल्कि लोगों को असली फल खोजने और उनके ग्राहक बनने के लिए राजी करना चाहिए। वह अपने दिन को अंधकार में बदल देता है। वह खुद को गलत ठहराता है, अपनी स्थिति को नरक जैसी स्थिति में बदल देता है, ताकि वह न तो दया का पात्र हो और न ही उसे शिकायत करने का अधिकार हो।

इसके विपरीत, जो भाई सही रास्ते पर चलता है, वह एक फलदार बगीचे में है और नौकरों से घिरा हुआ है। वह हर अलग और सुंदर घटना का अध्ययन विस्मय, सुखद भय और ज्ञान की प्यारी खोज के साथ करता है। आशा और तड़प के साथ-

वह खुद को एक सम्मानित अतिथि के रूप में देखता है जो अपने उदार मेजबान के साथ आनंद ले रहा है
अजीब और सुंदर नौकर। वह अंजीर के पेड़ के फल नहीं खाता है; बल्कि, वह
उनका नमूना लेता है और वास्तविकता को समझते हुए, अपना आनंद स्थगित कर देता है और आनंद लेता है
प्रत्याशा।

पहला भाई उस भाई के समान है जो भोज में अपने पसंदीदा स्थान को अस्वीकार करता है
गर्मियों के बगीचे में दोस्तों से घिरा हुआ, और इसके बजाय, नशे में धुत होकर,
वह स्वयं को सर्दियों में जंगली जानवरों के बीच कल्पना करता है और इसकी शिकायत करता है।
अपने साथ अन्याय करने और अपने दोस्तों का अपमान करने के कारण वह किसी दया का पात्र नहीं है।
भाई, जो दिया गया है उसे भरोसे के साथ स्वीकार करता है और व्यवस्था का पालन करता है, देखता है और
वास्तविकता को स्वीकार करता है, जो उसके लिए सुंदर है।
वास्तविकता, वह वास्तविकता के मालिक की पूर्णता का सम्मान करता है, और इसलिए
उसकी दया का पात्र है। इस प्रकार हम आंशिक समझ प्राप्त कर सकते हैं: जो कुछ भी
जो भलाई तुम पर पड़ती है वह अल्लाह की ओर से है और जो बुराई तुम पर पड़ती है वह तुम्हारी ओर से है (4:79)

भाइयों पर विचार करते हुए, हम देखते हैं कि एक की सांसारिक, बुरी आज्ञा देने वाली आत्मा ने उसके लिए नरक जैसी स्थिति तैयार की, जो वास्तविकता के प्रति उसके अपने दृष्टिकोण के अनुरूप थी, जबकि दूसरे की संभावित अच्छाई, सकारात्मक इरादे,
और अच्छे स्वभाव ने उसे बहुत ही अनुकूल और खुशहाल स्थिति में पहुंचा दिया। अब, मैं कहता हूँ
मेरी अपनी आत्मा के साथ-साथ जो इस कहानी को मेरे साथ सुन रहा है,
हे मेरे प्राण! यदि तुम दृष्टांत में बताए गए भाग्यशाली भाई बनना चाहते हो, न कि दुर्भाग्यशाली, तो कुरान को सुनो, उसके आदेशों का पालन करो, उसके मार्गदर्शन का पालन करो।

दृष्टान्त का सार इस प्रकार है: एक भाई तो विश्वास करनेवाला आत्मा है,
एक धर्मी हृदय; दूसरा अविश्वासी आत्मा, बुराई, अपराध
दिल का रास्ता सही है कुरान और ईमान का, बायाँ रास्ता सही है
अविश्वास और विद्रोह। बगीचा क्षणभंगुर मानवीय सामाजिक जीवन है, जो
इसमें अच्छाई और बुराई, स्वच्छ और प्रदूषित दोनों पहलू हैं। एक समझदार व्यक्ति "
जो स्पष्ट और सुखद है, वह मैला और कष्टदायक छोड़ देता है," और शांत हृदय से आगे बढ़ता है। रेगिस्तान धरती है, जानवर मौत है,
60 मीटर हमारी जिंदगी है और 60 मीटर हमारी औसत जिंदगी है जो 60 साल है।

कुएँ का पेड़ जीवन है, उसकी जड़ों को कुतर रहे दो चूहे दिन और रात हैं।
रात, और अजगर कब्र का द्वार है। एक आस्तिक के लिए, यह इससे अधिक कुछ नहीं है
बगीचे की ओर खुलने वाला एक दरवाज़ा। कीड़े वे परेशानियाँ हैं जिनका हम सामना करते हैं, और
वास्तविकता ईश्वर की कोमल चेतावनियाँ हैं जो विश्वासियों को असावधान होने से रोकती हैं। फल इस दुनिया के उपहार हैं जो ईश्वर के नमूने के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं
परलोक की बरकतें, तथा ग्राहकों को स्वर्ग के फलों की ओर आमंत्रित करना।
विभिन्न फलों से युक्त यह वृक्ष ईश्वरीय शक्ति की अनूठी छाप दर्शाता है।
दिव्य आधिपत्य की अनोखी मुहर, और दिव्य का अद्वितीय हस्ताक्षर
संप्रभुता, जिसका अद्वितीय गुण है “एक चीज़ से सब कुछ बनाना”

और "सब कुछ एक चीज़ में बदल देना"; एक ही मिट्टी से कई पौधे और फल बनाना; पानी की एक बूँद से सभी जीवित चीज़ों को बनाना; और सभी जीवित चीज़ों को एक ही तरीके से लेकिन अलग-अलग खाद्य पदार्थों के ज़रिए पोषित और बनाए रखना। एक चीज़ से सब कुछ बनाना और सब कुछ एक चीज़ में बदलना एक संकेत है, एक निशान है, जो हर चीज़ के रचयिता के लिए ख़ास है, जिसके पास हर चीज़ पर शक्ति है। यह संकेत बनाने में ईश्वर की गुप्त इच्छा को दर्शाता है। इसे विश्वास के साथ खोला जाता है, और इसकी कुंजी है: "हे ईश्वर, ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है; ईश्वर, उसके अलावा कोई देवता नहीं है, वह सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर है।"

एक भाई के लिए, कुरान और ईमान वालों के लिए, अजगर का मुंह (कब्र) दुनिया की काल कोठरी और परीक्षा के मैदान से स्वर्ग में अनंत काल के बागों की ओर खुलने वाले दरवाजे में बदल जाता है, सांसारिक जीवन की परेशानियों से दयालु की दया की ओर। दूसरे के लिए, सभी गुमराह और विद्रोही लोगों के लिए, यह यातना की एक संकीर्ण, दम घुटने वाली जगह का दरवाजा है। जानवर एक आज्ञाकारी सेवक, एक अनुशासित और प्रशिक्षित घोड़े में बदल जाता है, जिसका अर्थ है कि अविश्वासियों के लिए मृत्यु प्रियजनों से एक दर्दनाक अलगाव है, उनके धोखे भरे, सांसारिक स्वर्ग को छोड़ने के बाद एक कैद है। विश्वासियों के लिए, यह मृत मित्रों और साथियों के साथ पुनर्मिलन का एक साधन है। यह उनके सुख के शाश्वत घर में जाने के समान है, शाश्वत उद्यानों में जाने के लिए एक औपचारिक निमंत्रण है, सर्व-दयालु और कृपालु भगवान के प्रति की गई सेवाओं के लिए उनकी उदारता द्वारा प्रदान किए जाने वाले पारिश्रमिक को प्राप्त करने का एक अवसर है, तथा जीवन के बोझ से एक प्रकार की निवृत्ति है।

संक्षेप में, जो लोग इस क्षणभंगुर जीवन का पीछा करते हैं, वे स्वयं को नरक में डालते हैं, भले ही वे उस स्थान पर रहते हैं जो उन्हें पृथ्वी पर स्वर्ग जैसा प्रतीत होता है।
जो लोग अनन्त जीवन की खोज करते हैं, उन्हें दोनों लोकों में शांति और खुशी मिलती है।
संसार में उन्हें चाहे कितनी भी परेशानियाँ क्यों न झेलनी पड़ें, वे धैर्य रखते हैं और परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं, क्योंकि वे संसार को स्वर्ग के प्रतीक्षा कक्ष के रूप में देखते हैं।

> हे ईश्वर, हमें खुशी, मोक्ष, कुरान और ईमान वाले लोगों में शामिल कर! आमीन। हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें, कुरान में निहित सभी अक्षरों की संख्या के अनुसार, जो कि कुरान के पाठकों द्वारा इसके पहले अवतरण से लेकर अंत समय तक पढ़े गए प्रत्येक शब्द की ध्वनि तरंगों में दयालु की अनुमति से परिलक्षित होते हैं। हम पर और हमारे माता-पिता पर और सभी ईमान वालों पर उन शब्दों की संख्या के अनुसार दया करें, हे दयालुओं में सबसे दयालु। आमीन। सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सभी दुनियाओं का पालनहार है।

नौवां शब्द

नौवां शब्द

विभिन्न प्रार्थना समय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

इसलिए जब तुम शाम में प्रवेश करो और जब तुम रात में प्रवेश करो तो परमेश्वर की महिमा करो।
सुबह-और (घोषणा करो कि) आकाश और धरती में सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी के लिए है-और
दोपहर में, और जब
तुम दोपहर के समय में प्रवेश करते हो। (30:17-18)

Y हे भाई, आप मुझसे पूछते हैं कि प्रतिदिन प्रार्थना क्यों करनी चाहिए?
मैं पाँच बार विशिष्ट कारणों में से सिर्फ़ एक कारण बताऊँगा।
इसके लिए। प्रत्येक प्रार्थना समय एक महत्वपूर्ण मोड़ की शुरुआत को चिह्नित करता है
यह ईश्वरीय शक्ति के साथ-साथ उसमें निहित सार्वभौमिक ईश्वरीय वरदानों का दर्पण है। इसलिए हमें उन विशेष समयों पर प्रार्थना करने का आदेश दिया जाता है ताकि सर्वशक्तिमान ईश्वर को अधिक से अधिक आराधना और महिमा दी जा सके।
महामहिम, और किसी भी के बीच संचित इनाम के लिए और अधिक धन्यवाद देने के लिए
दो अवधियाँ। इस सूक्ष्म और गहन अर्थ को थोड़ा बेहतर समझने के लिए, मेरी अपनी आत्मा के साथ इन पाँच बिंदुओं पर विचार करें: पहला बिंदु: प्रार्थना का अर्थ है ईश्वर की स्तुति, महिमा और

धन्यवाद करना

सर्वशक्तिमान। हम सुभानअल्लाह (सर्व-महिमावान ईश्वर है) कहकर उसकी महिमा करते हैं।
वचन और कर्म से उसकी महिमा का बोध होता है। हम उसका गुणगान करते हैं और उसकी महिमा करते हैं
अपने वचन और कर्म से अल्लाहु अकबर (ईश्वर महान है) कहकर
उसकी पूर्णता के बारे में जागरूकता। हम अपने दिल, जीभ और शरीर से अल-हम्दु लिल-लाह (सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं) कहकर उसका धन्यवाद करते हैं,

उनकी कृपा के प्रति जागरूकता में। यानी, प्रार्थना का हृदय महिमा, उल्लास, स्तुति और धन्यवाद से युक्त है। इस प्रकार, ये तीन बीज हैं
प्रार्थना को बनाने वाले सभी शब्दों और कार्यों में मौजूद है। इसके अलावा, निम्नलिखित
प्रत्येक प्रार्थना में, उन्हें पुष्टि और पूर्णता के लिए 33 बार दोहराया जाता है
प्रार्थना के उद्देश्य। प्रार्थना का अर्थ क्रमिक रूप से उच्चारित किया जाता है
इन संक्षिप्त कथनों के साथ.

दूसरा बिंदु: उपासना का अर्थ यह है: हम ईश्वर के सेवक हैं। ईश्वरीय दरबार में अपने दोषों, कमज़ोरियों और दरिद्रता के प्रति जागरूक होकर, हम ईश्वरीय दरबार में अपने दोषों, कमज़ोरियों और दरिद्रता के प्रति जागरूक होते हैं।
उनके प्रभुत्व की पूर्णता, उनकी दिव्यता के समक्ष प्रेम और विस्मय में नतमस्तक
वह शक्ति जिस पर हर प्राणी निर्भर है, और उसकी दिव्य दया। जिस तरह उसकी
प्रभुता की संप्रभुता भक्ति और आज्ञाकारिता की मांग करती है, परम पावन
हमें अपने दोषों को देखने और उनसे क्षमा मांगने की आवश्यकता है, और यह कहकर कि “परमेश्वर सर्व-महिमावान है,” यह घोषणा करनी है कि उनमें कोई दोष नहीं है और वे पूर्णतः स्वतंत्र हैं
गुमराह लोगों के झूठे विचारों और आरोपों से, और यह कि
वह अपने प्राणियों की सभी असफलताओं से परे है।

साथ ही, भगवान के रूप में उनकी संपूर्ण शक्ति की मांग है कि हम अपनी कमजोरी और सभी प्राणियों की असहायता को समझते हुए, परमेश्वर के कार्यों की महिमा के समक्ष प्रशंसा और विस्मय में घोषणा करें: "परमेश्वर सर्व-महान है।"
सदा शक्ति की याचना की जाती है। नम्रतापूर्वक झुककर, हमें शरण लेनी है
हम उस पर भरोसा करते हैं और उस पर भरोसा करते हैं। साथ ही, उसकी दया का असीम खजाना
मांग करता है कि हम प्रार्थना करके अपनी और सभी प्राणियों की ज़रूरतों को घोषित करें
उसकी मदद मांगना, और यह कि हम स्तुति और प्रार्थना के माध्यम से उसके आशीर्वाद की घोषणा करें
“सभी प्रशंसा और कृतज्ञता भगवान के लिए है” कहकर कृतज्ञता व्यक्त करें। संक्षेप में,
प्रार्थना के शब्दों और कार्यों में ये सभी अर्थ समाहित होते हैं, और इसलिए
परमेश्वर द्वारा आदेशित और व्यवस्थित।

तीसरा बिन्दु: प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्माण्ड का एक छोटा सा हिस्सा है।
वैसे, कुरान का पहला सूरा (अध्याय), सूरतुल-फातिहा, एक प्रकाशित आयत है।
यह पूरी किताब का संक्षिप्त रूप है, और प्रार्थना सभी को शामिल करने वाला एक उज्ज्वल सूचकांक है
पूजा के विभिन्न तरीके, एक पवित्र मानचित्र जो सभी जीवित प्राणियों द्वारा की जाने वाली पूजा के विभिन्न प्रकारों का संकेत देता है।

चौथा बिन्दु: जैसे सेकण्ड की सुई, मिनट की सुई, घण्टे की सुई,
और एक घड़ी का दिन-हाथ जो सप्ताह, दिन के परिवर्तन और
रात, जो इस दुनिया के सेकंड की तरह हैं - भगवान की एक विशाल घड़ी
सर्वशक्तिमान - और वर्ष जो इसके मिनट बताते हैं, और मानव जाति के चरण
जीवन-काल जो घंटों को बताता है, और दुनिया के जीवन-काल के युगों को बताता है
दिन एक दूसरे को देखो बताओ, एक दूसरे के उदाहरण हैं, सदृश हैं
एक दूसरे को याद करें और एक दूसरे को याद करें। उदाहरण के लिए:

फज्र (सूर्योदय से पहले) का समय वसंत ऋतु के जन्म से मेल खाता है,
वह क्षण जब शुक्राणु माँ के गर्भ में शरण लेता है, और
लगातार छह दिन जिनमें आकाश और पृथ्वी का निर्माण हुआ।
यह स्मरण दिलाता है कि किस प्रकार परमेश्वर अपनी शक्ति का प्रयोग करता है तथा ऐसे समयों और घटनाओं में कार्य करता है।

जुहर (दोपहर के ठीक बाद) का समय इससे मेल खाता है या इससे मेल खाता है
गर्मियों के मध्य, किशोरावस्था के समापन, और की अवधि तक
यह उन घटनाओं और समयों में परमेश्वर की दया और आशीर्वाद की प्रचुरता की अभिव्यक्ति की ओर भी इशारा करता है।

अस्र (दोपहर) का समय शरद ऋतु, बुढ़ापे और वसंत ऋतु से मिलता जुलता है।
आखिरी पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुभ समय। यह आह्वान करता है
ईश्वरीय कार्यों और उनमें दयालु ईश्वर की कृपाओं का ध्यान रखो।

मगरिब (सूर्यास्त) का समय हमें कई जीवों के पतन की याद दिलाता है।
शरद ऋतु का अंत और हमारी अपनी मृत्यु भी। इस प्रकार यह हमें इस बात की पूर्व चेतावनी देता है
पुनरुत्थान की शुरुआत में दुनिया का विनाश, हमें सिखाता है कि कैसे
ईश्वर की महिमा के प्रकटीकरण को समझें, और हमें एक गहरे अंधकार से जगाएं
उपेक्षा की नींद.

'ईशा (रात) का समय अंधकार की दुनिया की याद दिलाता है जो दिन की सभी वस्तुओं को अपने काले कफन से ढक लेती है, और सर्दी मृतकों को ढक लेती है
पृथ्वी की सतह पर सफेद आवरण। यह शेष बची हुई पृथ्वी की सतह को भी ध्यान में लाता है।
मृतकों के कार्यों को भुला दिया जाना, और इस परीक्षण क्षेत्र की ओर इशारा करता है
अपरिहार्य, पूर्ण पतन। इस प्रकार 'इशा' ईश्वर के भयानक कृत्यों की घोषणा करता है
सर्वव्यापी, महिमावान में से एक।

रात हमें सर्दी, कब्र, मध्यवर्ती दुनिया और कैसे की याद दिलाती है
हमारी आत्मा को सर्वशक्तिमान की दया की बहुत आवश्यकता है। देर रात की तहज्जुद प्रार्थना
हमें याद दिलाता है और चेतावनी देता है कि कब्र में इस प्रार्थना का प्रकाश कितना आवश्यक होगा
अंधकार। सच्चे दाता द्वारा दिए गए अनंत उपहारों को याद करके
इन क्रांतियों के माध्यम से यह घोषणा की जाती है कि वह कितने प्रशंसा और धन्यवाद के पात्र हैं।

अगली सुबह पुनरुत्थान के बाद की सुबह की ओर इशारा करती है।
जिस प्रकार रात्रि के बाद सुबह आती है और शीत ऋतु के बाद वसंत आता है, उसी प्रकार पुनरुत्थान या "वसंत" की सुबह मध्यवर्ती जीवन के बाद आती है।

प्रत्येक नियत प्रार्थना समय एक महत्वपूर्ण मोड़ की शुरुआत है
और ब्रह्मांड में अधिक क्रांतियों या महत्वपूर्ण मोड़ों की याद दिलाता है
जीवन। अनंत काल से प्रतीक्षित व्यक्ति के भयानक दैनिक निपटान के माध्यम से
शक्ति, प्रार्थना का समय हमें दिव्य शक्ति के चमत्कारों और की याद दिलाता है
ईश्वरीय दया के उपहार समय या स्थान की परवाह किए बिना मिलते हैं। इसलिए निर्धारित प्रार्थनाएँ,
जो एक सहज कर्तव्य है, पूजा का आधार है, और एक निर्विवाद दायित्व है, इन समयों के लिए सबसे उपयुक्त और उपयुक्त है।

पांचवां बिन्दु: स्वभाव से हम कमजोर हैं, फिर भी हर चीज हमें प्रभावित करती है, प्रभावित करती है, और हमें दुखी करता है। हमारे पास कोई शक्ति नहीं है, फिर भी हम विपत्तियों और शत्रुओं से पीड़ित हैं। हम अत्यंत गरीब हैं, फिर भी हमारी बहुत सी ज़रूरतें हैं। हम आलसी और असमर्थ, फिर भी जीवन का बोझ बहुत भारी है। मनुष्य होने के नाते, हम बाकी दुनिया से जुड़े हुए हैं, फिर भी हम जिससे प्यार करते हैं और जिससे परिचित हैं गायब हो जाता है, और परिणामस्वरूप होने वाला दुःख हमें पीड़ा पहुँचाता है। हमारी मानसिकता और इंद्रियाँ हमें गौरवशाली उद्देश्यों और शाश्वत लाभ की ओर प्रेरित करते हैं, लेकिन हम असमर्थ हैं, अधीर, शक्तिहीन, और केवल छोटा जीवनकाल।

यह सब देखते हुए, यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि एक व्यक्ति के लिए यह कितना आवश्यक है। मानव आत्मा के लिए समर्थन का अर्थ है फज्र के समय सर्वशक्तिमान, दयालु और कृपालु ईश्वर के दरबार में प्रार्थना और प्रार्थना के माध्यम से याचिका प्रस्तुत करना और उनसे सहायता और सफलता की मांग करना। दिन के समय हमारे लिए प्रतीक्षा कर रहे कष्टों और बोझों को सहन करने और सहने के लिए इस तरह का समर्थन अत्यंत आवश्यक है।

ज़ुहर (दोपहर) वह समय है जब दिन अपने चरम पर होता है, और दोपहर से शुरू होता है। अपने मार्ग को पूरा करने के लिए आगे बढ़ना। लोग अपनी गतिविधियों से विराम लेते हैं। आत्मा को असावधानी और असंवेदनशीलता से विराम की आवश्यकता है कड़ी मेहनत से, और ईश्वरीय कृपा पूरी तरह से प्रकट होती है। इसलिए, इस प्रार्थना में समय अच्छा है, आवश्यक है, अनुकूल है, और उचित है। यह प्रार्थना राहत देती है दैनिक जीवन के दबाव और लापरवाही। हम विनम्रतापूर्वक उपस्थिति में खड़े हैं सच्चे आशीर्वाददाता का आभार व्यक्त करें और उनकी सहायता के लिए प्रार्थना करें। हम उसकी महिमा और शक्ति के समक्ष अपनी असहायता प्रदर्शित करने के लिए झुकते हैं, और उनके अनन्त परमेश्वर के समक्ष अपने आश्चर्य, प्रेम और विनम्रता की घोषणा करने के लिए साष्टांग दंडवत करें पूर्णता और अतुलनीय अनुग्रह.

अस्र (दोपहर) शरद ऋतु के दुखद मौसम से मिलता जुलता है और उसकी याद दिलाता है। बुढ़ापे की शोकाकुल अवस्था, तथा समय के अंत का कष्टदायक काल। दिन भर के कार्य पूरे होते हैं और ईश्वरीय कृपा मिलती है उस दिन प्राप्त (जैसे, स्वास्थ्य, सुरक्षा, और उसके मार्ग में अच्छी सेवा) एक महान कुल बनाने के लिए एकत्रित। यह वह समय भी है जब सूरज ढल जाता है दूर, यह साबित करते हुए कि सब कुछ अस्थायी है। हम, जो अनंत काल की लालसा रखते हैं, इसके लिए बनाए गए हैं और प्राप्त एहसानों के लिए श्रद्धा दिखाते हैं, साथ ही दुखी भी होते हैं अतः हम खड़े होकर वुज़ू करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। इस प्रकार हम खड़े होकर वुज़ू करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। अस्र की नमाज़ पढ़ना एक महान कर्तव्य, एक उचित सेवा, एक उचित तरीका है कृतज्ञता का ऋण चुकाना, और सुखद आनंद। हम शांति प्राप्त करते हैं मन को शांत करें और प्रार्थना करके सच्ची सांत्वना और आत्मा की शांति पाएं सनातन का सनातन न्यायालय, जो सनातन रूप से आत्मनिर्भर है, और उसकी असीम दया की शरण मांगते हुए, उसके अंतिम कार्य के लिए धन्यवाद और स्तुति अर्पित करते हुए।

कम उपहार, उनकी शक्ति और महिमा के आगे विनम्रतापूर्वक झुकना, और
उनकी शाश्वत दिव्यता के समक्ष विनम्रतापूर्वक नतमस्तक होकर।

शाम हमें सर्दियों की शुरुआत की याद दिलाती है, सुरुचिपूर्ण ढंग से अलविदा कहने की उदासी
ग्रीष्म और शरद ऋतु के जीव, और प्रियजनों से हमारा दुःखद वियोग
मृत्यु के द्वारा लोगों को बचाओ। यह उस समय को भी याद दिलाता है जब पृथ्वी का दीपक—
सूर्य बुझ जाएगा, और पृथ्वी के निवासी पलायन कर जाएंगे
इस दुनिया के विनाश के बाद दूसरी दुनिया के लिए यह एक गंभीर चेतावनी है
जो क्षणभंगुर, क्षणभंगुर प्रेमियों की पूजा करते हैं, जिनमें से प्रत्येक की मृत्यु हो जाएगी।

अपने स्वभाव से ही, मानव आत्मा शाश्वत सौंदर्य की चाह रखती है।
शाम की प्रार्थना, यह शाश्वत सत्ता की ओर मुड़ती है, जो ये सभी शक्तिशाली कार्य करता है
विशाल खगोलीय पिंडों पर काम करता है और उनकी कमान संभालता है। यह किसी भी चीज़ पर निर्भर होने से इनकार करता है
परिमित और, शाश्वत की उपस्थिति में खड़ा होकर, अल्लाहु अकबर चिल्लाता है
(अल्लाह महान है) फिर हम अल-हम्दु लिल्लाह कहकर उसकी प्रशंसा करते हैं।
उनकी दोषरहित पूर्णता, अतुलनीय सौंदर्य और कृपा, और अनंत का बोध
दया। इसके बाद यह घोषणा करते हुए कि: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही
हम सहायता चाहते हैं (1:5), हम उसकी बिना सहायता वाली प्रभुता, बिना भागीदारी वाली दिव्यता और बिना साझा
की संप्रभुता की पूजा करते हैं और उससे सहायता चाहते हैं।
उसकी असीम महानता, असीम शक्ति और पूर्ण सम्मान और महिमा के समक्ष,
हम बाकी सृष्टि के साथ अपनी कमज़ोरी और लाचारी का प्रदर्शन करते हैं,
विनम्रता और गरीबी को यह कहकर दूर करें: “मेरा प्रभु, सर्वशक्तिमान, महिमावान है।”
उनके सार की अमर सुंदरता और कृपा के प्रति जागरूकता में नतमस्तक होकर,
अपरिवर्तनीय पवित्र गुण, और उनकी निरंतर अनन्त पूर्णता, हम
उसके अलावा अन्य सभी से विरक्ति के माध्यम से, आश्चर्य और आत्म-हीनता में हमारे प्रेम और दासत्व की घोषणा
करें। एक सर्व-सुंदर स्थायी को पाना, एक
वह परम दयालु शाश्वत परमेश्वर है, जिससे हम कहते हैं: "मेरा प्रभु सर्व-महिमावान है,
सर्वशक्तिमान ईश्वर को पुकारते हुए, हम अपने सर्वशक्तिमान ईश्वर को किसी भी प्रकार की गिरावट या दोष से मुक्त घोषित करते हैं।

फिर हम श्रद्धापूर्वक बैठते हैं और सभी प्राणियों की स्तुति और महिमा अर्पित करते हैं
अनन्त, सर्वशक्तिमान और महाप्रतापी परमेश्वर के लिए। हम परमेश्वर से यह भी प्रार्थना करते हैं कि
हमारे जीवन को नवीनीकृत करने के लिए अपने पवित्र दूत पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें
उसके प्रति निष्ठा रखें, उसकी आज्ञाओं के प्रति अपनी आज्ञाकारिता की घोषणा करें, और नवीनीकृत करें
और हमारे विश्वास को मजबूत करें। ब्रह्मांड के बुद्धिमान क्रम को देखकर, हम गवाही देते हैं
सृष्टिकर्ता की एकता और मुहम्मद के संदेशवाहक होने का संदेशवाहक
ईश्वर के प्रभुत्व की संप्रभुता, उसे प्रसन्न करने वाली बातों का उद्घोषक, तथा ब्रह्माण्ड की पुस्तक के संकेतों या आयतों
का व्याख्याकार।

इसे देखते हुए, हम सच्चे मानव कैसे हो सकते हैं यदि हमें यह एहसास ही न हो कि मानव क्या है?
सुखद कर्तव्य, एक मूल्यवान और आनंददायक सेवा, एक अच्छी और सुंदर पूजा, एक गंभीर मामला, निर्माता के साथ
एक महत्वपूर्ण बातचीत, और एक

इस क्षणभंगुर अतिथिगृह में स्थायी सुख का स्रोत क्या है - संध्या की प्रार्थना करना?

'ईशा (रात का समय), जब रात पृथ्वी को ढक लेती है, हमें रात और दिन को बदलने वाले के रूप में सर्वशक्तिमान शक्तिशाली व्यक्ति के प्रभुत्व के शक्तिशाली निपटान की याद दिलाती है। यह हमारे मन में सूर्य और चंद्रमा को वश में करने वाले सर्वज्ञ पूर्णता के दिव्य क्रियाकलापों को याद दिलाता है, जो दिन के सफेद पृष्ठ को रात के काले पृष्ठ में बदलने और गर्मियों की सुंदर रंगीन लिपि को सर्दियों के ठंडे सफेद पृष्ठ में बदलने में देखा जाता है। यह मृत इकाई के बचे हुए कार्यों को दूसरी दुनिया में भेजने में जीवन और मृत्यु के निर्माता के रूप में उनके कार्यों को याद दिलाता है। यह हमें इस संकीर्ण, नश्वर और नीच दुनिया के पूर्ण विनाश और परलोक की व्यापक, शाश्वत और राजसी दुनिया के प्रकटीकरण में स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता के राजसी नियंत्रण और सुंदर अभिव्यक्तियों की याद दिलाता है। इसमें यह चेतावनी भी दी गई है कि केवल वही जो इतनी आसानी से दिन को रात में, सर्दी को गर्मी में तथा इस संसार को परलोक में बदल देता है, वही ब्रह्माण्ड का स्वामी तथा सच्चा स्वामी हो सकता है तथा केवल वही पूजा तथा सच्चा प्रेम पाने के योग्य है।

रात के समय हमारी आत्माएँ, असीम रूप से असहाय और कमज़ोर, असीम रूप से गरीब और ज़रूरतमंद, परिस्थितियों से घिरी हुई और एक अंधेरे और अज्ञात भविष्य की ओर आगे बढ़ती हुई, 'इशा की प्रार्थना करती हैं। अब्राहम की घोषणा को याद करते हुए, मैं उन लोगों से प्यार नहीं करता जो डूबते हैं (6:76), हम सभी जीवित, सदा पूज्य, शाश्वत प्रियतम के दरबार में शरण मांगते हैं। इस अंधेरे, क्षणभंगुर दुनिया और अंधेरे भविष्य में अपने क्षणभंगुर जीवन से, हम स्थायी, सर्व-स्थायी एक से प्रार्थना करते हैं। अनंत वार्तालाप के एक पल के लिए, अमर जीवन के कुछ सेकंड के लिए, हम सर्व-दयालु और दयालु के अनुग्रह की कामना करते हैं। हम उनके मार्गदर्शन के प्रकाश के लिए प्रार्थना करते हैं जो हमारी दुनिया और हमारे भविष्य को रोशन करेगा, और सभी प्राणियों और दोस्तों के पतन से होने वाले दर्द को कम करेगा।

हम उस दुनिया को भूल जाते हैं, जो हमें रात के लिए छोड़ गई है, और दया के दरबार में अपने दिल का दुख प्रकट करते हैं। मृत्यु-जैसी नींद आने से पहले, जिसके बाद कुछ भी हो सकता है, हम अपनी पूजा का “अंतिम” कर्तव्य पूरा करते हैं। अपने दिन के कामों को एक अनुकूल नोट पर समाप्त करने के लिए, हम प्रार्थना करते हैं और उन नश्वर प्राणियों की बजाय शाश्वत प्रिय और पूज्य की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं, जिनसे हम पूरे दिन प्यार करते रहे हैं; उन नपुंसक प्राणियों की बजाय सर्वशक्तिमान और उदार की उपस्थिति में, जिनसे हम पूरे दिन भीख मांगते रहे हैं; उन हानिकारक प्राणियों की बुराई से बचने की आशा में सर्व-दयालु रक्षक की उपस्थिति, जिनके सामने हम पूरे दिन कांपते रहे।

हम नमाज़ की शुरुआत सूरतुल-फातिहा से करते हैं, इस प्रकार सारे संसार के पालनहार, पूर्ण, आत्मनिर्भर, दयालु और सर्वज्ञ की स्तुति और प्रशंसा करते हैं।

हे दयालु, दोषपूर्ण, ज़रूरतमंद प्राणियों की चापलूसी करने और उनके प्रति ऋणी महसूस करने के बजाय। हम सिर्फ़ आपकी ही पूजा करते हैं (1:5)। यानी, हमारे बावजूद
तुच्छता और अकेलेपन से मुक्ति, ईश्वर के स्वामी के साथ हमारे संबंध के माध्यम से
न्याय के दिन, शाश्वत संप्रभु, हम एक की स्थिति प्राप्त करते हैं
ब्रह्माण्ड में सबसे प्रिय अतिथि और महत्वपूर्ण अधिकारी। यह कहकर कि केवल आप ही करते हैं
हम उसी की उपासना करते हैं और तुझसे ही सहायता चाहते हैं (1:5), हम समस्त प्राणियों के विशाल समुदाय की उपासना उसी को अर्पित करते हैं और उसी से सहायता चाहते हैं।
हमें सीधे मार्ग पर ले चलो (1: 6) कहकर , हम मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं
उज्ज्वल, सीधा मार्ग जो शाश्वत सुख की ओर ले जाता है।

यह कहते हुए कि ईश्वर सर्व महान है, हम झुकते हैं और उनकी महानता का चिंतन करते हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की। पौधों और जानवरों की तरह, जो अब लुप्त हो चुके हैं
सोते समय गुप्त सूर्य और जाग्रत तारे उसकी आज्ञा के अधीन सैनिकों के समान हैं, और संसार रूपी इस अतिथिगृह में उसके दीपक और सेवक भी उसके समान हैं।

हम सभी प्राणियों की सार्वभौमिक साष्टांग प्रणाम के बारे में सोचते हैं। यानी, उन प्राणियों की तरह जो रात में सोते हैं, जब किसी निश्चित वर्ष या युग में रहने वाले सभी प्राणी सो जाते हैं।
"हो जाओ" की आज्ञा से पूजा के कर्तव्य से मुक्त कर दिया गया और यह ऐसा है
आज्ञाकारी सैनिकों की एक सुव्यवस्थित सेना, और दुनिया के लिए भेजा जाता है
अदृश्य रूप से, यह पूर्ण व्यवस्थितता के साथ मृत्यु के गलीचे पर दंडवत होकर कहता है, "ईश्वर
वे वसंत में एक उत्तेजक, जीवन देने वाली तुरही की ध्वनि से पुनर्जीवित होते हैं, जो कि ' हो!' की आज्ञा से होती है, और वे सेवा करने के लिए उठ खड़े होते हैं ।
उनके स्वामी। तुच्छ मानवता भी यही घोषणा करती है
सर्व दयालु, सर्वसिद्ध, सर्वकरुणामय की उपस्थिति
अनुग्रह की, विस्मय-विह्वल प्रेम, अनंत-रंग की विनम्रता, और गरिमापूर्ण आत्म-विनाश में। फिर हम दंडवत करते हैं और एक प्रकार का आरोहण प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक निर्धारित प्रार्थना समय एक शक्तिशाली क्रांति की ओर इशारा करता है,
भगवान की जबरदस्त गतिविधि का संकेत, और सार्वभौमिक दिव्यता का प्रतीक
और इसलिए यह मामला पूर्ण बुद्धि का परिणाम है।

> तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

> हे ईश्वर! जिस पर आप कृपा करें, उस पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें।
> अपने सेवकों को ज्ञान देने के लिए एक शिक्षक के रूप में भेजा
> आप और आपकी पूजा और आपके खजाने को ज्ञात करने के लिए
> नाम; आपकी पुस्तक के संकेतों या छंदों के व्याख्याकार के रूप में
> ब्रह्माण्ड की कृपा के लिए, उनकी पूजा के माध्यम से, एक दर्पण के रूप में सेवा करना
> महामहिम, और उनके परिवार और साथियों पर दया करें।
> हम पर और सभी ईमान वालों पर। आमीन। आपकी दया के लिए, हे सर्वशक्तिमान!
> दयालुओं में दयालु।

दसवाँ शब्द

दसवाँ शब्द

पुनरुत्थान और परलोक

[नोट: मैं समझ को आसान बनाने के लिए रूपकों और दृष्टांतों का उपयोग करता हूं और
दिखाएँ कि सत्य कितने तर्कसंगत, उचित, सुसंगत और सुसंगत हैं
इस्लाम। आंतरिक अर्थ सत्य में निहित हैं जो निष्कर्ष निकालते हैं
हर कहानी इन सच्चाइयों की ओर इशारा करती हुई एक संकेत की तरह है। इसलिए,
इस अर्थ में, वे काल्पनिक नहीं, बल्कि निस्संदेह सत्य हैं।]

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परमेश्वर की दया के निशानों को देखो, वह कैसे पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है
उसके मरने के पश्चात्, वही है जो मुर्दों को जिलाएगा।
उसके पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है। (30:50)

यदि आप पुनरुत्थान और पुनरुत्थान के बारे में सुनना चाहते हैं
इसके बाद सरल रोजमर्रा की भाषा और शैली में, इस पर विचार करें
मेरी आत्मा के साथ निम्नलिखित दृष्टांत: दो लोग एक जगह गए
स्वर्ग जैसी भूमि (यह दुनिया)। उन्होंने सभी दरवाजे खुले देखे और
दुकानें खुली हुई थीं, मानो लोगों को अपनी संपत्ति की सुरक्षा की कोई परवाह ही नहीं थी। पहले वाले ने जो चाहा, ले लिया और अपनी इच्छा के अनुसार,
हर तरह का अन्याय और अभद्रता की। लोगों ने लगभग
उसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं है.

उसके दोस्त ने उससे कहा: "तुम क्या कर रहे हो? तुम्हें सज़ा मिलेगी, और
तुम मुझे भी मुसीबत में डालोगे! यह संपत्ति सामूहिक रूप से स्वामित्व में है, इनके लिए
लोग सैनिक या सरकारी कर्मचारी हैं। वे नागरिक के रूप में काम कर रहे हैं
अब, और इसलिए आप के काम में इतना हस्तक्षेप नहीं कर रहे हैं। लेकिन आदेश सख्त है।

राजा ने फ़ोन लगा रखे हैं और उसके अधिकारी हर जगह हैं। जाओ और माफ़ी मांगो!" मूर्ख, जिद्दी आदमी ने जवाब दिया: "नहीं, यह संपत्ति राजा की है
कोई दान या अन्य चीज़ जिसका कोई मालिक नहीं है। हर कोई इसे अपनी इच्छानुसार इस्तेमाल कर सकता है
मुझे ये बढ़िया चीजें क्यों नहीं इस्तेमाल करनी चाहिए? जब तक मैं देख नहीं लूँगा, मुझे यकीन नहीं होगा
अपनी आँखों से देखा।" उन्होंने एक दार्शनिक की तरह बहुत सारे कुतर्क भी बोले।

इस पर बहस शुरू हो गई। जब जिद्दी ने पूछा: "राजा कौन है? मैं
मैं उसे नहीं जानता," उसके दोस्त ने कहा: "हर गाँव में एक मुखिया होना चाहिए,
हर सुई एक निर्माता और शिल्पकार है, और हर अक्षर एक लेखक है।
इतनी सुव्यवस्थित भूमि पर कोई शासक कैसे नहीं हो सकता?
ऐसी सम्पत्ति का कोई मालिक नहीं है, जब कीमती और कलात्मक वस्तुओं से भरी रेलगाड़ी
क्या उपहार हर घंटे आते हैं, मानो अदृश्य के दायरे से आ रहे हों?16 क्या यह
यहाँ से सामान उतारकर आगे बढ़ जाता है। वे सभी घोषणाएँ और उद्घोषणाएँ, सभी
उन वस्तुओं पर लगी मुहरें और टिकटें, सभी सिक्के और लहराते झंडे
पूरे राज्य में - उनका कोई मालिक कैसे नहीं हो सकता? ऐसा लगता है कि आपको
विदेशी संस्कृति में कुछ प्रशिक्षण प्राप्त किया है, क्योंकि आप विदेशी लिपि तो पढ़ सकते हैं, लेकिन इस्लामी लिपि नहीं। आप उन लोगों से भी पूछने से इनकार करते हैं जो पढ़ सकते हैं
आओ, अब मैं तुम्हें सर्वोच्च आदेश पढ़कर सुनाता हूँ।"

जिद्दी ने पलटकर जवाब दिया: "भले ही कोई राजा हो, मैं बहुत कम उपयोग कर रहा हूँ
उसकी संपत्ति का इतना बड़ा हिस्सा कि उसे इससे कोई नुकसान नहीं हो सकता। इससे क्या नुकसान होगा
उसका खजाना? मुझे यहाँ कोई जेल नहीं दिख रही है, तो मुझे सज़ा मिलने की चिंता क्यों करनी चाहिए?" उसके दोस्त ने जवाब दिया: "गंभीरता से बोलो! यह ज़मीन युद्धाभ्यास की ज़मीन है,
राजा की अद्भुत शाही कलाओं की एक प्रदर्शनी, एक अस्थायी धर्मशाला।
क्या आप देखते हैं कि प्रतिदिन एक कारवां आता है और दूसरा कारवां चला जाता है और लुप्त हो जाता है?
यह भूमि लगातार भरती और खाली होती रहती है। जल्द ही इसमें बदलाव आ जाएगा। इसके लोगों को दूसरी और शाश्वत भूमि पर ले जाया जाएगा, जहाँ वे रहेंगे
उनकी सेवा के लिए उन्हें पुरस्कृत या दंडित किया जाएगा।"

मूर्ख, जिद्दी व्यक्ति ने कहा: "मुझे विश्वास नहीं होता। यह कैसे हो सकता है
भूमि नष्ट हो जाए और दूसरी जगह चले जाएं?" उसके वफादार दोस्त ने जवाब दिया: "चलो
हे हठीले और विद्रोही, मैं तुझे असंख्यों में से कुछ दिखाता हूँ
यह प्रमाण है कि मैंने जो तुमसे कहा है वह सत्य है।"

बारह चित्र

पहली तस्वीर: क्या इतने शानदार राज्य में ऐसी व्यवस्था नहीं हो सकती थी
आज्ञा माननेवालों के लिए इनाम और विद्रोह करनेवालों के लिए सज़ा का क्या मतलब है?

---

16 यह रेलगाड़ी एक वर्ष को दर्शाती है, क्योंकि प्रत्येक बसंत अदृश्य से आने वाली रसद से भरी गाड़ी है।

यहाँ पुरस्कार और दण्ड वस्तुतः अस्तित्वहीन हैं, यहाँ अवश्य ही कोई
सर्वोच्च न्यायाधिकरण कहीं और होगा।

दूसरा चित्र: इस संगठन और प्रशासन को देखिये।
सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों सहित सभी को सबसे उचित और उत्तम पोषण मिलता है। बीमार लोग
जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है
सबसे अच्छी देखभाल प्राप्त करें। शाही और स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन, आभूषणों पर ध्यान दें
सजावट, कढ़ाई वाले कपड़े, शानदार दावतें। हर कोई अपना लेता है
अपने कर्तव्यों को गंभीरता से लें, सिवाय तुम्हारे जैसे विद्रोहियों के, और उनका उल्लंघन न करें
महानतम लोग विनम्र और सबसे आज्ञाकारी सेवा में लगे रहते हैं, और भय और भय की भावना के साथ काम करते हैं।

इसे देखते हुए, शासक में बहुत उदारता और सर्वव्यापीता होनी चाहिए
करुणा, महान गरिमा, और सबसे ऊंचा सम्मान और उच्च स्थिति।
उदारता के लिए उदारता की आवश्यकता होती है, करुणा इसके बिना नहीं रह सकती
परोपकार, गरिमा, सम्मान और उच्च पद की मांग है कि अशिष्ट लोगों को दंडित किया जाए। लेकिन उस करुणा और करुणा का एक छोटा सा हिस्सा भी नहीं
यहाँ उच्च राज्य की आवश्यकता दिखाई देती है। उत्पीड़क शक्तिशाली बना रहता है और
उत्पीड़ित अपमानित। जैसे ही वे दोनों इस क्षेत्र से प्रस्थान करते हैं और पलायन करते हैं,
उनके मामलों को सर्वोच्च न्यायाधिकरण पर छोड़ दिया जाना चाहिए।

तीसरा चित्र: सभी मामलों को उच्च बुद्धि और व्यवस्था के साथ प्रबंधित किया जाता है;
लेन-देन सच्चे न्याय और संतुलन के साथ किया जाता है। एक बुद्धिमान राजनीति
राज्य की सुरक्षा शाखा के चाहने वालों को अनुग्रह प्राप्त होना चाहिए। न्याय
मांग है कि प्रजा के अधिकारों की रक्षा की जाए ताकि सरकार की गरिमा और राज्य का अधिकार और वैभव बना रहे। लेकिन सिर्फ़ एक मिनट
इसका एक हिस्सा यहाँ (मानव साम्राज्य में) पूरा हुआ है। अवज्ञाकारी लोग जैसे
आप अक्सर इस क्षेत्र को बिना दण्डित किये छोड़ देते हैं। उनके मामलों को एक के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए
सर्वोच्च न्यायाधिकरण।

चौथा चित्र: असंख्य और अद्वितीय रत्नों को देखिए जो
यहाँ इन अतुलनीय व्यंजनों को एक भोज की तरह सजाया गया है।
शासक के पास अक्षय खजाना और असीम उदारता होनी चाहिए, दोनों ही
जो सभी वस्तुओं के भरपूर और शाश्वत प्रदर्शन के हकदार हैं और इसकी आवश्यकता है
भोज का आनंद लेने वालों की इच्छा और शाश्वत प्रकृति, ताकि वे
अनंत काल तक मृत्यु या वियोग के कारण पीड़ा नहीं होगी।
दर्द का अंत सुख लाता है, सुख का अंत दुख लाता है।

इन प्रदर्शनों को देखें और घोषणाओं को सुनें। हेराल्ड चमत्कार करने वाले सम्राट की बेहतरीन और नाजुक कलाओं का प्रचार करते हैं। वे उसकी खूबसूरती दिखाते हैं
पूर्णताएँ, उसकी अतुलनीय और अदृश्य सुंदरता की घोषणा, और उसकी छिपी हुई सुंदरता की सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ बताना। यह देखते हुए, उसके पास एक अद्भुत होना चाहिए

सुंदरता और पूर्णता। इस छिपी हुई पूर्णता के लिए उन लोगों की आवश्यकता है जो इसकी सराहना और प्रशंसा करें, जो इसे देखेंगे और कहेंगे: "क्या आश्चर्य है भगवान ने चाहा है!" इस प्रकार इसे प्रदर्शित करना और ज्ञात करना। जहाँ तक छिपाए जाने की बात है और अतुलनीय सौंदर्य, यह देखना और देखा जाना चाहता है, स्वयं पर चिंतन करना चाहता है अनेक दर्पणों के माध्यम से और आनंदित एवं आश्चर्यचकित दर्शकों के चिंतन के माध्यम से यह अपने आप को हमेशा देखना और चिंतन करना चाहता है, और बिना रुके चिंतन करना चाहता है। यह उन लोगों के लिए स्थायी अस्तित्व चाहता है जो इसे देखते हैं इसे विस्मय और आनंद से भर दें, क्योंकि शाश्वत सौंदर्य क्षणभंगुरता से संतुष्ट नहीं हो सकता प्रशंसक। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रशंसकों को वापसी की उम्मीद के बिना नष्ट होना तय है जब भी वे कल्पना करेंगे कि उनका प्यार दुश्मनी में बदल गया है मृत्यु। ऐसी प्रशंसा और सम्मान अवमानना की ओर झुकेगा, क्योंकि हम हैं हम जो नहीं जानते और जिस तक हम नहीं पहुँच सकते, उसके दुश्मन। हालाँकि, हम इसे छोड़ देते हैं गेस्ट हाउस में जल्दी से घुस जाओ और कुछ देर के लिए एक आदमी को देखने के बाद गायब हो जाओ। उस पूर्णता और सुंदरता की धुंधली रोशनी या छाया। चूंकि यह दृश्य नहीं है हमें संतुष्ट करने के लिए, हम जानते हैं कि हम देखने के शाश्वत क्षेत्र की ओर बढ़ रहे हैं।

पांचवी तस्वीर: उपरोक्त को देखते हुए, उस अद्वितीय सत्ता में भी अनंत शक्तियाँ हैं दया और स्नेह। वह हर पीड़ित या दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को तुरंत सहायता भेजता है एक. वह हर अनुरोध और प्रार्थना का स्नेहपूर्वक उत्तर देता है, यहाँ तक कि सबसे तुच्छ व्यक्ति की सबसे तुच्छ ज़रूरत का भी। उदाहरण के लिए, अगर चरवाहे की भेड़ का पैर यदि उसे कोई चोट लग जाए तो वह दवा उपलब्ध कराता है या पशुचिकित्सक को भेजता है।

चलो, उस प्रायद्वीप में आयोजित एक महान बैठक में चलें। देश के महानुभाव वहां एकत्र हुए हैं। एक बहुत महान सेनापति, एक एक ऊंचा अलंकरण धारण किए हुए, दयालु राजा से याचिका कर रहा है कुछ चीजें। उसके बाद हर कोई कह रहा है: "हाँ, हाँ, हम भी यही माँगते हैं।" वे उसके वचनों से सहमत हैं और उसकी पुष्टि करते हैं। अब सुनिए, वह महान सेनापति, जो राजा का सबसे प्रिय है, क्या कह रहा है:

> हे हमारे राजा, आप जो हमें अपनी उदारता से पालते हैं, हमें इसकी उत्पत्ति दिखाइए।
> और इन उदाहरणों और छायाओं का वास्तविक रूप जो आपने हमें दिखाया है।
> हमें अपनी हुकूमत की गद्दी के करीब ले आओ। हमें इन रेगिस्तानों में बर्बाद मत होने दो,
> बल्कि हमें अपने पास आने दो। हम पर दया करो। हमें खिलाओ
> वहाँ पर आपके द्वारा किए गए उत्तम उपहार का वास्तविक रूप है
> हमें यहाँ स्वाद चखने दो। हमें निराशा और निर्वासन से पीड़ित मत करो, या
> अपनी तड़पती, आभारी और आज्ञाकारी प्रजा को उनके हाल पर छोड़ दो
> हमें नष्ट मत करो।

क्या ऐसा दयालु और शक्तिशाली राजा उसकी बातें सुनकर, जो अपनी सबसे नीच प्रजा की सबसे नीच इच्छा पूरी करता है, उसकी सबसे नीच प्रजा की विनती को अस्वीकार करता है प्रिय और महान कमांडर का सबसे अच्छा और उच्चतम लक्ष्य क्या है? इसके अलावा, क्या

सेनापति जो मांगता है वह समस्त मानवता की मांग है; यह वही है जो राजा मांगता है वह उससे प्रसन्न होता है, और उसकी पूर्ति उसकी करुणा और न्याय द्वारा अपेक्षित होती है।

सेनापति जो मांगे उसे देना राजा के लिए उतना ही आसान है जितना कि सृजन करना। आनंद के ये क्षणभंगुर स्थान। अपने खजाने, सिद्धियों और कौशल के नमूने दिखाने के लिए इस क्षणभंगुर स्थान पर, जो केवल पाँच या छह दिनों तक रहता है, इतना खर्च करने के बाद, वह निश्चित रूप से अपने आसन पर उनके मूल को प्रदर्शित करेगा इस तरह से शासन करो, और हमारे सामने ऐसे तमाशे खोल दो, कि हमारी बुद्धि इसका मतलब यह है कि इस परीक्षण के क्षेत्र में भेजे गए लोगों को नहीं छोड़ा जाएगा उनके अपने उपकरण; बल्कि, आनंद के महल या सजा के कालकोठरी इंतजार कर रहे हैं उन्हें।

छठी तस्वीर: अब आइए, देखिए! ये सभी भव्य रेलगाड़ियाँ, विमान, मशीनें, गोदाम और प्रदर्शनियाँ दिखाती हैं कि एक राजसी राजा मौजूद है और परदे के पीछे शासन करता है।17 ऐसे शासक को अपने योग्य प्रजा की आवश्यकता होती है। लेकिन उसकी प्रजा एक अतिथिगृह में एकत्रित होती है जो भर जाता है और खाली हो जाता है इसके अलावा, अब उनके विषय परीक्षण के लिए एक परीक्षण मैदान पर एकत्र हुए हैं युद्धाभ्यास, एक ऐसा मैदान जो हर घंटे बदला जाता है। फिर से, उसके विषय एक में रहते हैं उनकी परोपकारिता के उदाहरण देखने के लिए कुछ मिनट के लिए प्रदर्शनी हॉल में रुकें, उनकी चमत्कारी कला के अमूल्य उत्पाद। लेकिन प्रदर्शनी प्रत्येक को बदल देती है जो चला जाता है वह वापस नहीं आता और जो आता है वह किस्मत में लिखा होता है जाने के लिए। यह सब साबित करता है कि स्थायी महल और स्थायी हैं निवास, साथ ही उद्यान और खजाने नमूनों के शुद्ध और उत्कृष्ट मूल से भरे हुए हैं, जो हम यहाँ देखते हैं उससे परे हैं। यही कारण है कि हम अपना प्रयास करते हैं-

---

17 जब सेना से कहा जाता है कि “अपने हथियार उठाओ और संगीनें ठीक करो,” युद्ध के नियमों के अनुसार युद्धाभ्यास करते समय, यह ओक के जंगल जैसा दिखता है। जब एक गैरीसन के सैनिक होते हैं किसी त्यौहार के दिन परेड की वर्दी और पदक पहनने का आदेश मिलने पर, सेना एक प्रकार की सेना होती है। हर रंग के फूलों से भरा एक सुंदर बगीचा। धरती की सभी प्रजातियों के साथ ऐसा ही है उन निर्दयी पौधों और पेड़ों की, जो स्वर्गदूतों, जिन्न, मानवता और जानवरों की तरह, केवल एक हैं अनन्त राजा की असीम रूप से विविध सेनाएँ, जब उन्हें आदेश मिलता है कि बनो! और यह है जीवन को बनाए रखने के संघर्ष में, और आदेश "अपने बचाव के लिए और अपने जीवन को बनाए रखने के लिए अपने हथियार और उपकरण उठाओ!" उस समय, वे सभी पौधे और पेड़ वे काँटों वाले वृक्षों और पौधों के रूप में अपनी संगीनें लगाते हैं, और एक शानदार सेना के समान दिखते हैं परेड या युद्ध भूमि पर खड़े होकर।

प्रत्येक वसंत का दिन और सप्ताह प्रत्येक वनस्पति प्रजाति के लिए उत्सव के दिन की तरह होता है। प्रत्येक प्रजाति खुद को शाश्वत राजा की निगरानी और साक्षी दृष्टि के सामने प्रस्तुत करती है, जिसमें आभूषणों की सजावट होती है उसने उन्हें ऐसे उपहार दिए हैं, मानो वह उन्हें परेड में दिखा रहा हो कि उसने उन्हें क्या अनमोल उपहार दिए हैं। ऐसा लगता है जैसे वे उसकी आज्ञा का पालन कर रहे थे कि "दिव्य कलात्मकता से निर्मित वस्त्र पहनो" और उसकी रचनात्मकता द्वारा बनाई गई सजावट (फूल और फल) पहनें। ” ऐसे समय में, पृथ्वी का चेहरा एक शानदार उत्सव के दिन एक शानदार परेड पर एक गैरीसन का प्रतिनिधित्व करता है सैनिकों की वर्दी और रत्न जड़ित सजावट शानदार है। इस तरह के उद्देश्यपूर्ण और सुव्यवस्थित उपकरण और सजावट उन सभी को दर्शाती है जो अंधे नहीं हैं, कि वे होते हैं केवल असीम शक्ति और असीमित बुद्धि वाले राजा की आज्ञा के कारण।

उनके लिए यहाँ खुद को समर्पित कर दिया है। हम यहाँ काम करते हैं, और वह हमें वहाँ पुरस्कृत करेगा हमारी क्षमता के अनुकूल खुशी का एक रूप और स्तर।

सातवीं तस्वीर: चलिए चलते हैं और देखते हैं कि क्या हो रहा है। कैमरे को तस्वीरें लेते और लेखकों को सब कुछ रिकॉर्ड करते देखें, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो महत्वहीन या साधारण। अब ऊंचे पहाड़ की ओर देखें; वहां आपको एक सर्वोच्च कैमरा स्थापित किया गया, जो राजा की सेवा के लिए समर्पित था।१८ राजा उसने आदेश दिया होगा कि उसके राज्य में किए जाने वाले सभी लेन-देन और कार्य एक दिन, वह इन अभिलेखों का उपयोग अपने लोगों से जवाब मांगने के लिए करेगा।

क्या ऐसा बुद्धिमान और संरक्षक प्राणी अपनी महानतम प्रजा के कार्यों को, जो उसके राज्य के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से हैं, दर्ज नहीं करेगा? क्या वह क्या हर किसी को जवाबदेह ठहराकर उन्हें पुरस्कृत या दंडित नहीं किया जाना चाहिए? वे लोग ऐसे काम करते हैं जो उसकी महिमा को ठेस पहुंचाते हैं, उसके गौरव के विपरीत हैं, और वे उसकी करुणा के लिए अस्वीकार्य हैं। वे इस दुनिया में दण्डित नहीं होते, और इसलिए उसे सर्वोच्च न्यायाधिकरण (कहीं और) के समक्ष बुलाया जाना चाहिए।

आठवीं तस्वीर: मैं आपको राजा के आदेश पढ़कर सुनाता हूँ। कई बार दिए गए वादों और धमकियों के बाद: "मैं तुम्हें तुम्हारे वर्तमान निवास से ले जाऊंगा और तुम्हें अपने पूर्ण शासन के दायरे में लाऊंगा ताकि मैं तुम्हें मैं आज्ञाकारी लोगों को खुशियाँ दूँगा और अवज्ञाकारी लोगों को कैद करूँगा। मैं उस व्यवस्था को नष्ट कर दूँगा अस्थायी निवास और शाश्वत महलों से युक्त एक अलग क्षेत्र की स्थापना और कालकोठरी।" वह जो वादा करता है उसे बड़ी आसानी से पूरा करता है, और ये वादे उसकी प्रजा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उसकी गरिमा और शक्ति उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं देती अपना वादा तोड़ने के लिए.

हे भ्रमित व्यक्ति, इस पर विचार करो। जबकि तुम अपनी झूठी कल्पना, व्यथित बुद्धि और धोखेबाज आत्मा को स्वीकार करते हो, तुम एक के शब्दों को अस्वीकार करते हो जिसे कभी भी अपना वादा तोड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती, जिसका उच्च कद किसी धोखे की इजाज़त नहीं देता, और जिसकी विश्वसनीयता के लिए सभी प्रत्यक्ष कर्म गवाही देते हैं। तुम निश्चित रूप से एक बड़ी सज़ा के हकदार हो, क्योंकि तुम एक यात्री की तरह हो जो अपना रास्ता बंद कर लेता है वह अपनी आँखें सूरज की रोशनी की ओर लगाता है और इसके बजाय, प्रकाश के लिए अपनी कल्पना की ओर मुड़ता है। अपने मस्तिष्क के प्रकाश से अपने भयानक अंधेरे रास्ते को रोशन करना चाहते हैं,

---

[18] यहाँ दर्शाए गए कुछ अर्थ सातवें सत्य में प्रस्तुत किए जाएंगे: सर्वोच्च सत्य राजा की सेवा के लिए समर्पित कैमरा सर्वोच्च संरक्षित टैब्लेट को इंगित करता है। इस टैब्लेट का वास्तविकता और अस्तित्व को छब्बीसवें वचन में इस प्रकार सिद्ध किया गया है: एक छोटा सा पोर्टफोलियो एक महान बहीखाते के अस्तित्व का सुझाव देता है; एक छोटा सा दस्तावेज़ एक महान रजिस्टर के अस्तित्व की ओर इशारा करता है; और छोटी बूंदें या रिसाव एक महान जल स्रोत के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं। इस प्रकार हमारा यादें, एक पेड़ के फल, एक फल के बीज और गिरी एक छोटे पोर्टफोलियो या लघुचित्र की तरह हैं संरक्षित पट्टिका, या प्रत्येक उस कलम से निकली बूंद की तरह है जो सर्वोच्च को अंकित करती है संरक्षित पट्टिका। वे सभी एक सर्वोच्च के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं, संकेत देते हैं और साबित करते हैं स्मृति, एक महान रजिस्टर, एक सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका।

हालाँकि यह एक जुगनू से ज़्यादा कुछ नहीं है। राजा अपने सारे वादे पूरे करता है, एक ऐसा कार्य जो उसके लिए आसान है और सृष्टि के साथ-साथ उसके लिए भी आवश्यक है और उसका राज्य। इस प्रकार, एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण और एक उच्च सुख है।

नौवीं तस्वीर: इन कार्यालयों के कुछ प्रबंधकों को देखिए और समूह के नेताओं के साथ व्यक्तिगत रूप से संवाद करने के लिए प्रत्येक के पास एक निजी फोन है। राजा। कभी-कभी वे सीधे उसके सामने जाते हैं। वे सभी कहते हैं कि राजा उसने पुरस्कार और दण्ड के लिए एक शानदार और भयानक स्थान तैयार किया है। उसके वादे जोरदार हैं और उसकी धमकियाँ सख्त हैं। उसका गौरव और गरिमा उसे वादा तोड़ने से होने वाले अपमान को सहन न करने दें।

इस रिपोर्ट के वाहक, जो सभी एक दूसरे की पुष्टि करते हैं, सर्वसम्मति से रिपोर्ट करते हैं कि उदात्त राज्य की सीट और मुख्यालय, कुछ जिनके निशान यहां दिखाई दे रहे हैं, वे यहां से बहुत दूर किसी दूसरे लोक में स्थित हैं। यहां की इमारतें अस्थायी हैं और जल्द ही उन्हें स्थायी इमारतों से बदल दिया जाएगा यह दुनिया बदल जाएगी, क्योंकि वह शानदार और अमर राज्य, जिसका वैभव उसके कार्यों से स्पष्ट है, स्थापित नहीं किया जा सकता है या किसी क्षणिक, अस्थायी, अस्थिर, महत्वहीन चीज़ पर आधारित, परिवर्तनशील, दोषपूर्ण और अपूर्ण। यह केवल योग्य मामलों पर आधारित हो सकता है जो शाश्वत, स्थिर, स्थायी और गौरवशाली हैं। इस प्रकार वहाँ है एक और क्षेत्र जिसकी ओर हम बढ़ रहे हैं।

दसवीं तस्वीर: आज वसंत विषुव है।20 कुछ परिवर्तन होंगे घटित होगा, और अद्भुत चीजें घटित होंगी। इस सुंदर वसंत के दिन, आइए हम सुंदर फूलों से सजे हरे मैदान पर टहलने जाएं। अन्य लोग भी उसी ओर जा रहे हैं। कोई जादू जरूर काम कर रहा होगा, क्योंकि अचानक खंडहर बन गए अब फिर से इमारतें बन गई हैं और यह खाली मैदान अब एक आबादी वाले शहर जैसा दिखता है। यह हर घंटे एक अलग दृश्य दिखाता है, बिल्कुल किसी फिल्म के पर्दे की तरह, और एक अलग आकार ग्रहण करता है। इन जटिल, जटिल आकृतियों के बीच सही क्रम पर ध्यान दें। तेजी से बदलते और असंख्य दृश्य, और प्रत्येक वस्तु को उसके उचित स्थान पर रखा गया है। काल्पनिक फिल्म के दृश्य इस तरह से सुव्यवस्थित नहीं हो सकते, और

---

19 संकेतित अर्थ आठ सत्य में पाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम कार्यालय प्रबंधकों और समूह नेताओं का उपयोग पैगंबरों और संतों के लिए करते हैं, और फोन का उपयोग ईश्वर के साथ संबंध और संपर्क के लिए करते हैं जो हृदय से निकलता है, और रहस्योद्घाटन का दर्पण और प्रेरणा का पात्र है। हृदय टेलीफोन के इयरपीस की तरह है।

20 इन पहलुओं को नौवें सत्य में समझाया गया है। विषुव, जीवन की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है। वसंत ऋतु, जबकि फूलों से भरे हरे खेत वसंत ऋतु में पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करते हैं। दृश्य प्राणियों, प्राणियों और चीजों तथा मानवता और जानवरों के प्रावधानों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें एक सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान निर्माता, एक सर्व-बुद्धिमान, सर्व-दयालु निर्माता ने बनाया है। अत्यंत क्रम में परिवर्तन करता है, अत्यंत करुणा के साथ नवीकृत करता है, और एक के बाद एक भेजता है, वसंत ऋतु के आरंभ से लेकर ग्रीष्म ऋतु के अंत तक।

लाखों कुशल जादूगरों के पास ऐसी कलात्मकता नहीं हो सकती। इसे देखते हुए, अदृश्य राजा ने और भी बड़े चमत्कार किये होंगे।

हे हठी! तुम पूछते हो कि इस विशाल साम्राज्य को कैसे नष्ट किया जा सकता है और कहीं और फिर से स्थापित हो जाओ। क्या आप असंख्य परिवर्तनों के प्रति अंधे हैं और हर घंटे होने वाली क्रांतियाँ, ठीक वैसे ही जैसे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण होता है, जिसे आप नकारते हैं? यह इकट्ठा होना और बिखरना यह दर्शाता है कि इन दृश्यमान और तेज़ जुड़ने और अलग होने, इन संयोजनों और विलीन होने के भीतर एक निश्चित उद्देश्य छिपा हुआ है। ऐसा लगता है जैसे दस साल का प्रयास सफल हो गया है

एक साथ जुड़ने के लिए समर्पित एक घंटे से अधिक समय तक नहीं टिकने के लिए। कैसे क्या ऐसी परिस्थितियाँ अपने आप में अंत हो सकती हैं? वे अपने से परे किसी चीज़ का संकेत देने या उसका अनुकरण करने वाले दृष्टांतों से अधिक कुछ नहीं हैं। वह महान अस्तित्व उन्हें चमत्कारिक ढंग से लाता है, ताकि उनकी नकल की जा सके और उनके परिणाम रिकॉर्ड किए जाते हैं और संरक्षित किए जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे परीक्षण के दौरान होता है युद्धाभ्यास के लिए मैदान दर्ज किया गया है (छठी तस्वीर)। इसका मतलब है कि एक असीम रूप से विशाल सभा स्थल बनाया जाएगा, और उसमें कार्यवाही की जाएगी

यहाँ जो कुछ घटित होता है उसके आधार पर। इसके अलावा, यहाँ जो कुछ घटित होता है उसके परिणाम भी किसी सर्वोच्च प्रदर्शनी में स्थायी रूप से दिखाया जाएगा। यहाँ देखी गई सभी क्षणभंगुर और अस्थिर घटनाएँ शाश्वत और अपरिवर्तनीय रूप का फल देंगी।

इस प्रकार इस संसार में होने वाले सभी परिवर्तन एक परम सुख, एक महान न्यायाधिकरण तथा उच्च उद्देश्यों के लिए हैं, जो अभी तक हमारे लिए अज्ञात हैं।

ग्यारहवीं तस्वीर: तो, मेरे जिद्दी दोस्त, चलो यात्रा करते हैं समय का ध्यान रखें और देखें कि इस राजा ने अन्य स्थानों पर क्या-क्या चमत्कारिक कार्य किए हैं। हम जहाँ भी जाएँ, हम समान चमत्कार देख सकते हैं, हालाँकि वे कला और रूप के संबंध में मतभेद हैं। लेकिन व्यवस्था और सामंजस्य का संकेत प्रकट बुद्धि, स्पष्ट पक्षपात के संकेत, उच्च न्याय के संकेत, और इन क्षणिक अवस्थाओं में भी व्यापक दया के फल दिखाई देते हैं, अस्थायी क्षेत्र, और गुज़रते हुए दृश्य। सीमित अंतर्दृष्टि वाले लोग भी समझें कि इससे अधिक परिपूर्ण कोई ज्ञान नहीं हो सकता, या इसकी कल्पना नहीं की जा सकती, उससे अधिक सुन्दर कोई विधान नहीं, उससे अधिक व्यापक कोई करुणा नहीं, और उससे अधिक महिमामय कोई न्याय नहीं।

यदि, असंभव मान लें और जैसा कि आप इनकार करते हैं, कोई स्थायी नहीं था निवास, ऊंचे स्थान, निश्चित पद, तथा स्थायी रूप से निवासी और संतुष्ट उसके राज्य में जनसंख्या - विशेष रूप से जब तक यह अस्थायी क्षेत्र नहीं है उसकी बुद्धि, कृपा, दया और न्याय की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए उचित है— तो हमें बुद्धि, प्रावधान, दया और न्याय से इनकार करना होगा, जिसे हम (विशेष रूप से अचेतन प्राणियों के जीवन में) देखते हैं। यह सूर्य को नकारने के समान ही मूर्खतापूर्ण होगा, जिसका प्रकाश हम दोपहर में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

हमें इन बुद्धिमानी भरे उपायों के स्रोत, उदारता, और उदारता पर भी ध्यान देना होगा। कार्य, और दयालु उपहार - जो सभी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं - एक चालबाज या तानाशाह। इसका मतलब होगा सत्य का अपने विपरीत में बदलना, जो सभी तर्कसंगत लोग कहते हैं कि यह असंभव है। इस नियम का एकमात्र अपवाद ये हैं सोफिस्ट, क्योंकि वे हर चीज से इनकार करते हैं। इस प्रकार एक और क्षेत्र है जिसमें शामिल है एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण, न्याय का एक ऊंचा स्थान, और पुरस्कार का एक ऊंचा स्थान। वहाँ, यह सब अनुग्रह, बुद्धि, दया और न्याय पूर्ण रूप से प्रकट होगा।

बारहवीं तस्वीर: आइए इन समूहों के प्रमुखों और अधिकारियों से मिलें, उनके उपकरणों की जांच करें और देखें कि क्या उन्हें यह इसलिए दिया गया है ताकि वे यहां कुछ समय तक जीवित रह सकें या स्थायी जीवन प्राप्त करने के साधन के रूप में इसका उपयोग कर सकें। दूसरे क्षेत्र में आनंद। चूंकि हम हर किसी के साथ ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए आइए देखें उस अधिकारी का पहचान पत्र और रजिस्टर।

हम देखते हैं कि उसका पद, वेतन, कर्तव्य, आपूर्ति और निर्देश रिकॉर्ड किए गए हैं। उसका पद सिर्फ़ कुछ दिनों के लिए नहीं है। वास्तव में, उसे यह पद दिया गया होगा लंबे समय तक। उनके कार्ड पर लिखा है: "आपको इतनी सैलरी मिलेगी अमुक दिन शाही खजाने से।" लेकिन प्रश्नगत तारीख है भविष्य में, इस क्षेत्र के खाली हो जाने के बाद। इसी तरह, उनके कार्ड पर उल्लिखित कर्तव्य केवल इस अस्थायी क्षेत्र के लिए नहीं है, बल्कि राजा के सान्निध्य में स्थायी सुख प्राप्त करने के लिए। आपूर्ति का उद्देश्य यहाँ कुछ दिनों तक उसका जीवित रहना सुनिश्चित करना नहीं है; उनका उपयोग केवल एक लंबे और खुशहाल जीवन के लिए। निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि वह वह एक अलग स्थान के लिए नियत है और वह एक अन्य क्षेत्र के लिए काम कर रहा है।

इन रजिस्टरों को देखिए। वे बताते हैं कि कचरे का उपयोग और निपटान कैसे करना है। उपकरण। यदि कोई उच्च और शाश्वत क्षेत्र नहीं होता, तो इस तरह के श्रेणीबद्ध निर्देशों का रजिस्टर और स्पष्ट जानकारी वाला पहचान पत्र अर्थहीन। वह सम्मानित अधिकारी, महान कमांडर, और सम्मानित प्रमुख वह किसी भी अन्य व्यक्ति से कमतर होगा, क्योंकि वह सबसे अधिक दुखी, बदकिस्मत, अपमानित, पीड़ित, दरिद्र और कमज़ोर व्यक्ति होगा। यही सिद्धांत हर चीज़ पर लागू करें। आप जो कुछ भी देखते हैं वह दूसरी और शाश्वत दुनिया की गवाही देता है।

यह अस्थायी दुनिया एक मैदान, एक प्रशिक्षण मैदान, एक बाज़ार की तरह है उसकी जगह एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण और परम सुख ले लेगा। यदि आप इनकार करते हैं इसके लिए, आपको सभी अधिकारियों के पहचान पत्र, उपकरण और निर्देश देने से इनकार करना होगा, देश की व्यवस्था, उसकी सरकार और सरकार जो कुछ भी करती है, उसके प्रति आपका रवैया नकारात्मक है। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आप सच्चे इंसान कैसे माने जा सकते हैं या यहां तक कि एक सचेत प्राणी भी?

सृष्टि के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण का प्रमाण नहीं है इन बारह चित्रों तक सीमित। अनगिनत अन्य संकेत और प्रमाण

दिखाएँ कि यह अस्थायी, परिवर्तनशील राज्य एक को हस्तांतरित किया जाएगा स्थायी, अपरिवर्तनीय क्षेत्र। असंख्य संकेत और प्रमाण बताते हैं कि हम इस अस्थायी धर्मशाला को छोड़ देंगे और परमेश्वर के शाश्वत आसन पर भेज दिए जाएंगे सारी सृष्टि का नियम। मैं एक ऐसे प्रमाण पर चर्चा करूँगा जो सभी बारहों से अधिक शक्तिशाली है एक साथ ली गई तस्वीरें.

दूर से दिखाई दे रही महान सभा के बीच में वही महानुभाव कमांडर जिसे हमने पहले देखा था, वह घोषणा कर रहा है। चलो चलें और सुनें। वह एक शाही फरमान जारी कर रहा है, जो वहाँ ऊपर लटका हुआ है। वह कहता है: "तैयार हो जाओ तुम दूसरे और स्थायी क्षेत्र में जाओगे, एक ऐसा क्षेत्र जो इसे कालकोठरी जैसा बना दो। तुम हमारे राजा के शासन की सीट पर जाओगे, और उसकी दया और उदारता प्राप्त करो, यदि तुम इस आदेश पर ध्यान दो और उसका पालन करो। विद्रोह करो और इसकी अवज्ञा करो, तुम्हें भयानक काल कोठरी में डाल दिया जाएगा।"

यही संदेश वह दे रहा है। इस आदेश पर एक चमत्कारी मुहर लगी हुई है जिसकी नकल नहीं की जा सकती। केवल आप जैसे जिद्दी, विद्रोही लोग ही इसकी नकल नहीं कर सकते समझ लो कि यह राजा की ओर से है। इसके अलावा, महान सेनापति इस पर ऐसी चमकदार सजावट है कि अंधे लोगों को छोड़कर हर कोई समझ जाता है कि वह राजा के आदेशों का सच्चा वाहक है। तो क्या इस क्षणिक क्षेत्र को स्थायी में बदलने पर आपत्ति करना संभव है?

एक, जिसका दावा महान सेनापति अपनी पूरी ताकत के साथ करता है सर्वोच्च आदेश, जब तक कि आप उन सभी बातों से इनकार न करें जो हमने देखी हैं। तो, मेरे दोस्त, क्या क्या तुम्हें अपने बारे में कुछ कहना है?

मेरे मित्र ने उत्तर दिया: "मैं क्या कह सकता हूँ? इस सबका खंडन कौन कर सकता है?" दोपहर के समय सूर्य के अस्तित्व पर कौन संदेह कर सकता है? मैं तो बस इतना ही कह सकता हूँ: 'प्रशंसा भगवान का शुक्र है! एक लाख शुक्रिया कि मैं बच गया

व्यर्थ कल्पना का प्रभुत्व मेरी शारीरिक आत्मा, और एक शाश्वत से मुक्ति मिली जेल। मेरा मानना है कि जेल के समीप सुख का वास है। राजा, जो इस भ्रमित और अस्थायी धर्मशाला से अलग है। हम वहाँ जाना तो बनता ही है।"

हमारा दृष्टांत पुनरुत्थान और परलोक की सच्चाई को दर्शाता है अब, भगवान की कृपा से, हम सबसे ऊंचे स्थान पर पहुंचेंगे सत्य। हम बारह परस्पर संबंधित सत्य प्रस्तुत करेंगे जो कि सत्य से संबंधित हैं। ऊपर चर्चा की गई बारह तस्वीरें।

चार संकेत और बारह सत्य

पहला संकेत: ऊपर बताए गए दो लोग एक दूसरे से मेल खाते हैं तीन अन्य जोड़े: मेरी सहज

प्रवृत्ति से प्रेरित आत्मा और हृदय [आध्यात्मिक बुद्धि का स्थान]।

दर्शनशास्त्र के छात्र और ज्ञानपूर्ण कुरान के छात्र।

अविश्वासियों और विश्वासियों का समुदाय [मुसलमान]।

कठोर आत्मा से प्रेरित छात्रों की सबसे बुरी गलती और गुमराही
दर्शनशास्त्र और अविश्वासियों का मुख्य दोष ईश्वर को न पहचानना है।
हमारे दृष्टांत में विश्वास करने वाले ने कहा: "लेखक के बिना कोई पत्र नहीं हो सकता,
बिना विधायक के कानून।" हम इस प्रकार कहते हैं: एक पुस्तक, विशेष रूप से
जिसके हर शब्द में एक छोटी सी कलम से दूसरी किताब लिखी जाती है, और
जिसके प्रत्येक अक्षर में एक शानदार स्तोत्र एक अच्छी कलम से रचा गया है,
एक लेखक? इस ब्रह्मांड का भी अपना लेखक होना चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसी किताब है
इसके प्रत्येक पृष्ठ में कई अन्य पुस्तकें समाहित हैं, इसके प्रत्येक शब्द में अनेक अन्य पुस्तकें समाहित हैं
एक किताब और हर अक्षर एक स्तुति है। पृथ्वी की सतह इसका एक पन्ना है, जो
इसमें अनगिनत अन्य पुस्तकें शामिल हैं। हर पेड़ एक शब्द है, हर फल एक अक्षर है,
और हर बीज में एक बिंदु होता है जिसमें एक विस्तृत वृक्ष की अनुक्रमणिका होती है। ऐसी किताब हो सकती है
केवल एक महाप्रतापी की शक्तिशाली कलम द्वारा अंकित किया गया है, जो महिमा और अनुग्रह के गुणों से योग्य है, और जिसके पास असीम शक्ति है
और बुद्धि। तो, दृष्टांत में आस्तिक के कथन की पुष्टि करते हुए बहता है
इस संसार को देखने से कोई नहीं रोक सकता, जब तक कि कोई भ्रम में न डूबा हो।

इसके अलावा, घर में एक वास्तुकार होना चाहिए, विशेष रूप से ऐसा जो इस तरह का प्रदर्शन करता हो
अद्भुत कलाकारी, डिजाइन और सूक्ष्म अलंकरण। एक में एक से बढ़कर एक कलाएँ हैं
इसके पत्थरों की संख्या पूरे महल से भी ज़्यादा है। इसका कोई वास्तुकार क्यों नहीं हो सकता?
कमरों को हर घंटे नया आकार दिया जाता है और बदला जाता है, उतनी ही आसानी से और व्यवस्थित तरीके से जितना कि बदलना
कपड़ों पर या फिर फिल्म स्क्रीन पर एक दृश्य को दूसरे दृश्य में बदलना। इसके अलावा,
प्रत्येक दृश्य में कई छोटे कमरे लगातार बनाए जाते हैं।

इसी तरह, ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के लिए भी अनंत शक्ति की आवश्यकता होती है।
बुद्धिमान, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान निर्माता, क्योंकि यह एक ऐसा महल है जिसके दीपक
सूर्य और चंद्रमा, जिनकी मोमबत्तियाँ तारे हैं। समय एक लटकी हुई रस्सी की तरह है जिस पर सर्व-महान निर्माता हर साल एक नई दुनिया पिरोता है।
वह प्रतिदिन संसार के स्वरूप या स्वरूप को पूर्ण व्यवस्थितता के साथ नवीनीकृत करता है
और बुद्धि। वह पृथ्वी की सतह को भरपूर फैलाता है, जो सुशोभित है
प्रत्येक वसंत ऋतु में अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियाँ होती हैं, जो कि असंख्य प्रकार के उदार उपहारों से भरी होती हैं। उनकी विशाल प्रचुरता और महत्व के बावजूद
आपस में घुलमिलकर, प्रत्येक प्राणी अलग-अलग रूप से वैयक्तिकृत होता है। तो क्या यह संभव है
ऐसे महल के निर्माता के अस्तित्व को नज़रअंदाज़ करना?

आप दोपहर के समय बादल रहित दिन में सूर्य के अस्तित्व को कैसे नकार सकते हैं?
इसकी उपस्थिति समुद्र की सतह पर हर बुलबुले में और सभी में परिलक्षित होती है
पृथ्वी पर पारदर्शी वस्तुएँ? ऐसा करने का मतलब है कि आप मानते हैं कि प्रत्येक बुलबुले और पारदर्शी वस्तु में एक छोटा, वास्तविक और अस्तित्वमान सूर्य है; कि

प्रत्येक सूक्ष्म कण में एक विशाल सूर्य समाया हुआ है, यद्यपि उस कण में जगह है
केवल अपने लिए ही पर्याप्त है। इसी तरह, यह और भी बड़ी मूर्खता होगी कि इसकी पुष्टि न की जाए
सर्व-महान सृष्टिकर्ता का अस्तित्व उसकी पूर्णता के गुणों के साथ
इस व्यवस्थित ब्रह्मांड को देखना, जो लगातार व्यवस्थित रूप से बदलता रहता है,
उद्देश्यपूर्ण तरीकों से और व्यवस्थित तरीके से निरंतर नवीनीकृत किया जाता है।
इसका अर्थ यह विश्वास करना है कि प्रत्येक विद्यमान वस्तु में पूर्ण दिव्यता है।

उदाहरण के लिए, हवा का एक परमाणु आसानी से एक फूल, एक फल, एक पौधे आदि में प्रवेश कर जाता है और काम करता है।
या एक पत्ता। इस परमाणु का किसी और द्वारा उपयोग किए जाने से इनकार करना
इसका अर्थ है कि यह उन सभी वस्तुओं की संरचना और रूप को जानता है जिनमें यह प्रवेश करता है और
प्रभावित करता है। इसमें सर्वव्यापी शक्ति और ज्ञान होना चाहिए। या, एक मिट्टी
परमाणु असंख्य विभिन्न बीजों को विकसित करने में सक्षम बनाता है। यदि यह आदेश के तहत कार्य नहीं कर रहा है,
तो इसके पास सभी पेड़ों और पौधों के लिए उपयुक्त साधन और उपकरण होने चाहिए।
पौधों के बारे में ज्ञान होना चाहिए या फिर उसमें ऐसा ज्ञान और शक्ति होनी चाहिए कि वह प्रत्येक पौधे की संरचना
और सभी रूपों को जानता हो और उन रूपों को गढ़ता हो? यह भी सच है
सृष्टि के अन्य सभी स्तरों और क्षेत्रों के लिए। इससे आप समझ सकते हैं
सभी चीज़ों में ईश्वर की एकता के अनेक स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं।
एक चीज़ से सब कुछ बनाना, और सब कुछ को एक चीज़ में बदलना,
यह केवल सभी के निर्माता के लिए विशिष्ट है। ध्यान दें: कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो उसकी प्रशंसा के साथ महिमा करे
(17:44)। यदि आप ईश्वर को अस्वीकार करते हैं, जो एक और अद्वितीय है, तो आप
जितने प्राणी हैं, उतने ही देवताओं को स्वीकार करना चाहिए।

दूसरा संकेत: हमारे दृष्टांत में एक बहुत ही महान सेनापति का उल्लेख किया गया था। हमने बताया कि जो
लोग उसके अलंकरण और पदक देखते हैं, उन्हें अवश्य ही पता होना चाहिए कि
वह राजा का पसंदीदा सेवक है जो राजा के आदेशों के अनुसार कार्य करता है। यह सेनापति ईश्वर का सबसे महान
दूत है। सर्व-पवित्र,
इतने सुन्दर ब्रह्माण्ड के रचयिता को एक महान् सन्देशवाहक अवश्य भेजना चाहिए, जैसा कि
सूर्य को प्रकाश उत्सर्जित करना चाहिए। सूर्य प्रकाश उत्सर्जित किए बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता, और
ईश्वरत्व पैगम्बरों को भेजकर स्वयं को प्रकट किए बिना संभव नहीं है।

क्या एक पूर्ण, परिपूर्ण सौंदर्य स्वयं को किसी के माध्यम से प्रस्तुत नहीं करना चाहेगा?
कौन इसका प्रदर्शन और प्रदर्शन करेगा? क्या एक पूरी तरह से सुंदर कलाकृति नहीं हो सकती
क्या यह इच्छा किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम से स्वयं को प्रकट करना चाहेगी जो हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा?
क्या एक सर्वव्यापी प्रभुत्व का सार्वभौमिक प्रभुत्व नहीं होगा
अपने दोहरे अधिकार से सम्मानित दूत के माध्यम से बहुलता और विशिष्टता के सभी स्तरों पर अपने एक और शाश्वत
रूप से प्रार्थित होने को प्रकट करें? अर्थात्, उसकी पूजा की सार्वभौमिकता उसे राज्य बनाती है

दिव्य न्यायालय में बहुलता का दूत, और ईश्वर और उसके प्रति उसकी निकटता
उनका संदेश सौंपे जाने से वह दिव्य न्यायालय के दूत बन गए
उस दायरे.

क्या अनंत सारगर्भित सौन्दर्य वाला वह व्यक्ति अनेक दर्पणों में अपने सौन्दर्य के पहलुओं और अपनी कृपा के आयामों को देखना और दूसरों को दिखाना नहीं चाहेगा? क्या वह ऐसा किसी प्रिय संदेशवाहक के माध्यम से नहीं कर सकता, जो न केवल उसकी आराधना के माध्यम से स्वयं को उसका प्रिय बनाता है, बल्कि उसे दर्पण दिखाता है, जिससे उसके प्राणियों को उसका प्रिय बनता है और उसके नामों की सुन्दरता का प्रदर्शन होता है।

क्या असाधारण चमत्कारों और अमूल्य वस्तुओं से भरे खज़ानों का स्वामी एक कुशल मास्टर "जौहरी", एक वाक्पटु वर्णनकर्ता के माध्यम से एक प्रशंसनीय मानवता को अपनी छिपी हुई पूर्णताएँ दिखाने की इच्छा नहीं कर सकता? क्या वह जिसने अपने कलाकृतियों से ब्रह्मांड को सजाया है जो उसके नाम की पूर्णताएँ प्रदर्शित करते हैं और इस तरह इसे हर तरह की सूक्ष्म, चमत्कारी कलात्मकता से सजाए गए महल जैसा बना दिया है, वह एक शिक्षक और मार्गदर्शक नियुक्त नहीं कर सकता जो उन पूर्णताओं को जाने और लोगों को ऐसे महल में रहने का तरीका सिखाए?

क्या ब्रह्माण्ड का स्वामी एक संदेशवाहक के माध्यम से, ब्रह्माण्ड में निरंतर परिवर्तन क्यों हो रहा है, इस बारे में हमारी उलझन को हल नहीं कर सकता था, और हर किसी के मन में उठने वाले सवालों का जवाब नहीं दे सकता था: हमारा उद्गम क्या है? हम कहाँ जा रहे हैं? हमारा उद्देश्य [यहाँ] क्या है? क्या सर्व-महान निर्माता, जो अपनी सुंदर रचना के माध्यम से खुद को सचेत प्राणियों को ज्ञात करता है और अपने बहुमूल्य उपहारों के माध्यम से प्यार करता है, उन्हें यह बताने के लिए एक संदेशवाहक नहीं भेज सकता था कि बदले में उसकी इच्छा उनसे क्या चाहती है? क्या वह हमें बहुलता (इस दुनिया और इसके आकर्षण) से पीड़ित होने की प्रवृत्ति के साथ-साथ सार्वभौमिक पूजा में संलग्न होने की क्षमता के साथ बनाया है, बिना यह चाहे कि हम एक शिक्षक और मार्गदर्शक के माध्यम से बहुलता से दूर होकर एकता की ओर मुड़ें?

पैगम्बर होने के कई अन्य कार्य हैं, जिनमें से प्रत्येक इस बात का निर्णायक तर्क है कि ईश्वरत्व का तात्पर्य अनिवार्य रूप से पैगम्बर होना है। क्या पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से अधिक योग्य और इन कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक योग्य, पैगम्बर के पद के लिए अधिक उपयुक्त, ईश्वर के संदेश को पहुंचाने के कार्य के लिए अधिक उपयुक्त व्यक्ति कभी हुआ है? नहीं। वह पैगम्बरों के गुरु हैं, पैगम्बरों में सबसे आगे हैं, शुद्ध विद्वानों के नेता हैं, ईश्वर के सबसे निकट हैं, जो उसके निकट आए हैं, प्राणियों में सबसे उत्तम हैं, और उन लोगों के गुरु हैं जो धर्म की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

उनकी नबी होने के अनगिनत संकेतों के अलावा, जिसमें उनके लगभग एक हजार चमत्कार शामिल हैं जैसे कि उनकी उंगली के इशारे से चाँद को चीर देना और उनके हाथों से पानी का बहना, जिसकी सभी विद्वानों ने सर्वसम्मति से पुष्टि की है, शानदार कुरान का सर्वोच्च चमत्कार - सत्य का एक सागर और चालीस विभिन्न पहलुओं में एक चमत्कारी पुस्तक - अकेले उनकी नबी होने की पुष्टि करता है। चूँकि हमने इन पर चर्चा की है

कुछ अन्य ग्रंथों में, विशेष रूप से 25वें शब्द में, हम अन्य पहलुओं पर भी विचार करते हैं।
हम अपनी चर्चा यहीं तक सीमित रखेंगे।

तीसरा संकेत: यह नहीं सोचना चाहिए कि हम इतने महत्वहीन हैं कि इस विशाल दुनिया के स्थान पर हमें एक नई दुनिया नहीं दी जा सकती।
हमारे कर्मों का हिसाब देना होगा। क्योंकि इसकी व्यापक प्रकृति के कारण,
मानवता सभी प्राणियों की स्वामी है और उसे सर्वोच्च शक्ति प्रदान की गई है।
ईश्वर के प्रभुत्व की घोषणा करने और उसे सार्वभौमिक पूजा अर्पित करने की क्षमता।
इस प्रकार, हम सृष्टि में सबसे महत्वपूर्ण प्राणी हैं।

न ही यह पूछा जाना चाहिए कि ऐसा क्षणभंगुर प्राणी शाश्वतता का हकदार कैसे हो सकता है?
सज़ा। क्योंकि अविश्वास पूरे अस्तित्व का अपमान है क्योंकि यह चाहता है
सृष्टि को, जो ईश्वर के एक पत्र के रूप में अमूल्य और महान है, अर्थहीन और निरर्थक बना देना। इसका अर्थ अभिव्यक्तियों, छापों,
और भगवान के पवित्र नामों के शिलालेख, जो हर जगह स्पष्ट हैं, और
ईश्वर की सच्चाई को दर्शाने वाले अनंत प्रमाणों का खंडन। संक्षेप में, अविश्वास
यह अनंत अनुपात का अपराध है जो अनंत दण्ड का पात्र है।

चौथा संकेत: बारह चित्रों में दृष्टांत यह तर्क देता है कि
जिस राजा में चर्चित गुण थे, उसका राज्य इस प्रकार था और वह इस पर नियंत्रण रखता था
क्षणभंगुर दुनिया में अनिवार्य रूप से एक और शाश्वत क्षेत्र होना चाहिए जहां
राजा होने के नाते उनकी महिमा और उदात्तता उचित रूप से प्रदर्शित होती है। इसलिए, यह
यह अकल्पनीय है कि इस क्षणभंगुर संसार का शाश्वत रचयिता ऐसा नहीं करेगा
एक शाश्वत क्षेत्र बनाएं; कि इस सुंदर लेकिन शाश्वत निर्माता
परिवर्तनशील ब्रह्मांड एक और स्थायी और शाश्वत ब्रह्मांड का निर्माण नहीं करेगा;
कि इस संसार के सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, दयालु निर्माता,
जो परीक्षण और प्रदर्शन का क्षेत्र है, वह परलोक का निर्माण नहीं करेगा,
जिससे सृष्टि के लिए उसके उद्देश्य पूर्णतः प्रकट हो जायेंगे।

इस सत्य तक पहुंचने का मार्ग बारह द्वारों से बना है जिन्हें खोला जा सकता है
बारह सत्यों के माध्यम से। हम सबसे छोटे और सरल सत्य से शुरू करते हैं।

पहला सत्य: प्रभुत्व और संप्रभुता का द्वार, प्रभुता और प्रभुता की अभिव्यक्ति
उसका नाम प्रभु है। क्या परमेश्वर के प्रभु और दिव्य होने की महिमा होगी
प्रभु ने अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करने के लिए इस अस्थायी ब्रह्मांड का निर्माण किया,
ऐसे महान उद्देश्य और प्रयोजन, विश्वासियों के लिए कोई पुरस्कार स्थापित किए बिना, जो विश्वास और पूजा के द्वारा उन्हें संतुष्ट करना चाहते हैं? क्या उसे दण्ड नहीं देना चाहिए
वे गुमराह लोग जो उसके उद्देश्यों को तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार करते हैं?

दूसरा सत्य: उदारता और दया का द्वार, अभिव्यक्तियाँ
उनके नामों में से वह सर्व-उदारवादी और सर्व-करुणामय है। क्या प्रभु
इस दुनिया में, जो असीम उदारता, दया, गरिमा और

अपने कार्यों के माध्यम से महिमा, अपनी उदारता और दया के अनुसार प्रतिफल और अपनी प्रतिष्ठा और महिमा के अनुसार दंड?

निम्नलिखित पर विचार करें: सभी सजीव प्राणियों को किसी न किसी रूप में उपयुक्त पोषण दिया जाता है।21 वास्तव में, सबसे कमजोर और सबसे शक्तिहीन को सर्वोत्तम पोषण मिलता है; प्रत्येक परेशान व्यक्ति को उसका उपचार लगभग हाथ में ही मिल जाता है।

इस तरह की उदारता और उदारता से दिया गया यह दान अनंत उदारता के दान का प्रतीक है। उदाहरण के लिए, वसंत के दौरान, सभी पेड़ रेशमी वस्त्रों से सजे होते हैं, फूलों और फलों से लदे होते हैं जैसे कि वे आभूषणों से सजे हों, और अपनी शाखाओं पर कई तरह के बेहतरीन फलों को चढ़ाने के लिए बनाए जाते हैं, जो किसी सेवक की भुजाओं की तरह आगे की ओर फैले होते हैं। हम डंक मारने वाली मधुमक्खी से मीठा और पौष्टिक शहद प्राप्त करते हैं, बिना हाथ वाले रेशम के कीड़े द्वारा बुने गए बेहतरीन और सबसे मुलायम कपड़े पहनते हैं, और छोटे-छोटे बीजों में हमारे लिए दया का एक बड़ा खजाना पाते हैं। सबसे उत्तम उदारता, बेहतरीन और सबसे सूक्ष्म दया रखने वाले के अलावा और कौन ऐसा कर सकता है?

मनुष्य और जिन्न तथा कुछ जंगली जानवरों को छोड़कर, सभी प्राणी - सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी से लेकर छोटे से छोटे प्राणी तक - अपने काम को पूरी सटीकता से करते हैं, अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं करते हैं, और गंभीर भय के वातावरण में पूरी तरह से आज्ञाकारी रहते हैं। इससे पता चलता है कि वे सर्वोच्च महिमा और अधिकार वाले एक के आदेश से काम करते हैं। इसी तरह, वनस्पति, पशु और मानव लोकों में सभी माताएँ जिस तरह से अपने असहाय शिशुओं को कोमलता और करुणा के साथ दूध पिलाकर बड़ा करती हैं, वह सर्वव्यापी दया को दर्शाता है।

चूँकि इस दुनिया के स्वामी और शासक के पास इतनी असीम उदारता और दया है, और इतनी असीम महिमा और गरिमा है, इसलिए निश्चित रूप से, उनकी उदारता के लिए असीमित दान की आवश्यकता है, उनकी दया के लिए अपने योग्य लोगों का पक्ष लेना आवश्यक है, और उनकी महिमा और गरिमा के लिए उन लोगों को दंडित करना आवश्यक है जो उनका अनादर करते हैं। चूँकि ऐसे गुणों का केवल एक छोटा सा अंश ही स्थापित है और

---

21 सभी स्वीकृत पोषण ज़रूरत के ज़रिए प्राप्त किए जाते हैं। इसके लिए निर्णायक तर्क यह है कि कैसे शक्तिहीन शिशु सबसे अच्छी आजीविका का आनंद लेते हैं, जबकि मजबूत, जंगली जानवर सभी प्रकार की कमी से पीड़ित होते हैं; कैसे मूर्ख मछलियाँ मोटी हो जाती हैं, जबकि चालाक लोमड़ी और बंदर अपनी आजीविका की तलाश में पतले हो जाते हैं। एक ओर प्राप्त पोषण और दूसरी ओर बल और इच्छा के बीच एक विपरीत संबंध प्रतीत होता है। जितना अधिक कोई बल और इच्छा पर निर्भर करता है, उसे पोषण प्राप्त करने में उतनी ही अधिक कठिनाई होगी।

22 भूखा शेर अपने बच्चों को खुद से ज़्यादा पसंद कर सकता है और उसे वह मांस खाने दे सकता है जो वह आम तौर पर खाता है। एक डरपोक मुर्गी अपने चूज़ों की रक्षा करने के लिए कुत्ते को चुनौती दे सकती है। एक अंजीर का पेड़ मिट्टी से खुद को संतुष्ट करता है जबकि अपने बच्चों (अपने फलों) को शुद्ध "दूध" खिलाता है। इस प्रकार वे असीम दया, उदारता और चिंता करने वाले एक की आज्ञा का पालन करते हैं। इसी तरह, यह तथ्य कि अचेतन पौधे और जानवर सबसे उद्देश्यपूर्ण और सचेत तरीके से कार्य करते हैं, यह निर्विवाद रूप से दर्शाता है कि एक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ ने उन्हें उनके कार्यों के लिए निर्धारित किया है, और वे उसके नाम पर कार्य करते हैं।

इस नश्वर संसार और जीवन में जो प्रकट होता है, वह अवश्य ही होना चाहिए
धन्य क्षेत्र जो इन कर्तव्यों को पूरा कर सकता है। ऐसे क्षेत्र को अस्वीकार करने का मतलब है
हमारे लिए स्पष्ट दया को अस्वीकार करना, जो सूर्य को अस्वीकार करने जैसा होगा
जिसका अस्तित्व हर दिन रोशन होता है। बिना पुनरुत्थान के मृत्यु बदल जाएगी
करुणा को पीड़ा में, प्रेम को वियोग के दुःख में, आशीर्वाद को
प्रतिशोधी अभिशाप में, तर्क को दुख का साधन बना दिया, और सुख को पीड़ा में बदल दिया। ऐसी घटनाओं का
अर्थ होगा ईश्वरीय दया का लोप,
जो कि पूर्णतया असंभव एवं अकल्पनीय है।

सर्वशक्तिमान के लिए भी दंड का एक क्षेत्र होना चाहिए
महिमा और गरिमा। इस दुनिया के अत्याचारी आम तौर पर अपने साथ मरते हैं
दमनकारी शक्ति बरकरार रहती है, जबकि उत्पीड़ित अभी भी अपमान के अधीन मरते हैं। ऐसे गलत कामों को
अनिवार्य रूप से सर्वोच्च न्यायाधिकरण के समक्ष स्थगित कर दिया जाता है; वे
कभी भी अनदेखा नहीं किया जाता। वास्तव में, कभी-कभी इस मामले में भी सज़ा दी जाती है
दुनिया में पहले के अवज्ञाकारी और विद्रोही लोगों द्वारा सहन की गई यातनाएँ
दिखाएँ कि हम किसी भी सुधार से बच नहीं सकते सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महिमा
और मैजेस्टी ने आवेदन करने का निर्णय लिया।

मानवता को उसे पहचानने और उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने से क्यों इंकार करना चाहिए?
विश्वास, क्योंकि सृष्टि में हमारा सर्वोच्च कर्तव्य है और इसलिए हमें सर्वोच्च शक्ति प्राप्त है।
सबसे महत्वपूर्ण क्षमताएँ? इसके अलावा, हमारे प्रभु और पालनहार ने प्रकट किया
अपने व्यवस्थित कार्यों के माध्यम से स्वयं को प्रकट करें। मानवता को इसका उत्तर क्यों नहीं देना चाहिए
आराधना के द्वारा स्वयं को परमेश्वर का प्रिय बनाकर, क्योंकि वह हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।
क्या वह स्वयं हमसे अपनी दया के असंख्य, सुशोभित उपहारों के लिए प्रेम करता है? क्यों
क्या मानवता को उसके प्रति श्रद्धापूर्ण धन्यवाद और प्रशंसा के साथ प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए, क्योंकि
वह अपने अनुग्रह के उपहारों के माध्यम से हम पर अपना प्रेम और दया दिखाता है?

क्या यह समझ में आता है कि हम बिना किसी प्रतिफल और उत्तरदायित्व के बने रहें, कि महान और गौरवशाली सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारे लिए प्रतिफल का क्षेत्र तैयार न करे? क्या यह समझ में आता है कि सर्वशक्तिमान दयालु परमेश्वर हमारे लिए प्रतिफल का क्षेत्र तैयार न करे?
और सर्व-दयालु एक स्थायी क्षेत्र तैयार नहीं करेगा
उन विश्वासियों के लिए पुरस्कार और आनंद जो स्वयं को ज्ञात करने के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं

---

[23] इस और अन्य तर्कों में, ऐसे प्रश्नवाचक शब्द और वाक्यांश जैसे कि हो सकता है, होगा, क्या यह बोधगम्य है, और क्या इसका कोई अर्थ है, एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य की ओर संकेत करने के लिए दोहराए गए हैं: गुमराह करना
और अविश्वास अक्सर चीजों को असंभव या समझ से परे मानने की आदत से उत्पन्न होता है
और फिर उन्हें नकारना। पुनरुत्थान पर हमारी चर्चा में, हमने ज़ोर देकर तर्क दिया कि
वास्तविक असंभवता, बेतुकापन और तर्कहीनता अविश्वास और गलत मार्गदर्शन के मार्ग पर आती है, जबकि वास्तविक संभावना, सुविधा और तर्कसंगतता व्यापक की विशेषताएं हैं
विश्वास का राजमार्ग (इस्लाम)। संक्षेप में, भौतिकवादी और प्रकृतिवादी दार्शनिक अविश्वास की ओर बढ़ते हैं
संभावनाओं को असंभव मानकर, जबकि दसवां शब्द, ऐसे शब्दों का उपयोग करके
ऊपर उल्लेखित बात, उस ओर संकेत करती है जहां वास्तव में असंभवता है।

विश्वास में उसे पहचान कर, आराधना में उससे प्रेम करके स्वयं को उसका प्रिय बना कर, तथा आदरपूर्वक धन्यवाद और स्तुति अर्पित करके उसकी दया को प्राप्त कर?

तीसरा सत्य: बुद्धि और न्याय का द्वार, उसके नामों की अभिव्यक्तियाँ, जो सर्वज्ञ और सर्व-न्यायप्रिय हैं। क्या वह महान व्यक्ति, जो ब्रह्मांड की व्यवस्था, उद्देश्य, न्याय और संतुलन में अपने प्रभु होने की संप्रभुता को प्रकट करता है, उन विश्वासियों पर अपना अनुग्रह नहीं दिखाएगा जो उसके अपने प्रभु और संप्रभु होने की सुरक्षा चाहते हैं, जो उसकी बुद्धि और न्याय में विश्वास करते हैं, और पूजा के माध्यम से उनके अनुरूप कार्य करते हैं? क्या वह उन लोगों को दंडित नहीं करेगा जो उसकी बुद्धि और न्याय को अस्वीकार करते हुए उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं? चूँकि मानवता के संबंध में उसकी बुद्धि और न्याय की केवल एक छोटी मात्रा ही इस नश्वर दुनिया में स्थापित है, इसलिए उन्हें स्थगित कर दिया जाना चाहिए। अधिकांश गुमराह लोग बिना दंड के मर जाते हैं, और अधिकांश निर्देशित लोग बिना पुरस्कार के मर जाते हैं। ऐसे मामलों को निश्चित रूप से एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण, एक परम संतोष के लिए स्थगित कर दिया जाता है।

जो इस संसार का प्रशासन करता है, वह एक निश्चित नियम के अनुसार ऐसा करता है।

अनंत ज्ञान। हम इसे इस बात में देख सकते हैं कि सभी चीजें कैसे उपयोग की जाती हैं और दूसरों को लाभ पहुँचाती हैं। क्या आपने नहीं देखा कि प्रत्येक मानव अंग, हड्डी और नस, साथ ही साथ आपके शरीर में प्रत्येक मस्तिष्क कोशिका और प्रत्येक कोशिका परमाणु कितने बुद्धिमान उद्देश्यों को पूरा करते हैं? वास्तव में, एक पेड़ की प्रत्येक शाखा जितने उद्देश्य पूरा करती है, उतने ही उसके फल भी हैं। यह सब इस बात की पुष्टि करता है कि सब कुछ अनंत ज्ञान के अनुसार व्यवस्थित है। एक और सबूत वह पूर्ण व्यवस्थितता है जिसमें सब कुछ बनाया गया है।

एक छोटे से बीज में फूल के विकास के पूरे, सटीक कार्यक्रम का लघुकरण, साथ ही नियति की कलम द्वारा एक बड़े पेड़ के बीज को उसके जीवन-इतिहास और उसके सभी भागों का सूचकांक बनाना, यह दर्शाता है कि एक परम ज्ञान उस कलम को चलाता है। सभी चीजों में सूक्ष्म कलात्मकता की पूर्णता एक असीम रूप से बुद्धिमान कलाकार की छाप को साबित करती है। एक छोटे से मानव शरीर के भीतर पूरे ब्रह्मांड का सूचकांक, साथ ही दया के खजाने की चाबियाँ और सभी दिव्य नामों को प्रतिबिंबित करने के लिए दर्पण, उस असीम रूप से सूक्ष्म कलात्मकता के भीतर ज्ञान को और अधिक दर्शाता है। क्या यह ज्ञान, जो प्रभुत्व के कामकाज में इतना व्याप्त है, उन लोगों का पक्ष नहीं लेना चाहेगा जो हमेशा उस प्रभुत्व की सुरक्षा में शरण चाहते हैं और जो विश्वास में आज्ञाकारिता प्रदान करते हैं?

क्या आपको यह यकीन दिलाने की ज़रूरत है कि सब कुछ न्याय और संतुलन के साथ किया जाता है? यह तथ्य कि सभी चीज़ों को अस्तित्व और रूप दिया गया है, और फिर एक सटीक संतुलन और माप के अनुसार रखा गया है, आपके लिए पर्याप्त सबूत है।

यह तथ्य कि हर चीज को उसकी क्षमता के अनुसार उसका हक दिया जाता है, यानी हर चीज को उसके अस्तित्व और रखरखाव के लिए जो कुछ भी चाहिए वह सबसे उपयुक्त रूप में मिलता है, यह अनंत न्याय का हाथ दर्शाता है। साथ ही, हर छोटी-बड़ी चीज को उसकी क्षमता के अनुसार उसका हक दिया जाता है।

स्वभाव की भाषा में, प्राकृतिक आवश्यकता के अनुसार, या
परम आवश्यकता होने के साथ-साथ यह अनंत न्याय और बुद्धिमत्ता को भी प्रदर्शित करता है।

तो क्या यह कल्पना की जा सकती है कि न्याय और बुद्धि जो जल्दी से
सबसे छोटी सृष्टि की सबसे छोटी जरूरत को पूरा करना प्रदान नहीं करेगा
सृष्टि के सबसे महत्वपूर्ण सदस्य (मानवता) की सबसे बड़ी ज़रूरत (अमरता) क्या है? क्या यह कल्पना की जा सकती है कि वे हमारी सबसे बड़ी विनती का जवाब देने में विफल रहेंगे
और मदद के लिए पुकारें, और कहें कि वे परमेश्वर की गरिमा को बनाए रखेंगे
प्रभु अपने सेवकों को पुरस्कृत करके क्या करते हैं? हालाँकि, हम सच्चे अनुभव नहीं कर सकते
इस क्षणभंगुर संसार में न्याय का सार एक छोटे से जीवन में। इस प्रकार यह मामला
सर्वोच्च न्यायाधिकरण को सौंप दिया गया है।

सच्चा न्याय यह मांग करता है कि हमें हमारी तुच्छता के अनुसार नहीं, बल्कि हमारी महानता के अनुसार पुरस्कृत और दंडित किया जाए।
गलत, हमारी सच्ची प्रकृति का महत्व, और हमारे कार्य का महत्व। चूँकि यह क्षणभंगुर दुनिया इतनी मात्रा में ज्ञान प्रकट नहीं कर सकती
और मानवता के संबंध में न्याय, जो अनंत काल के लिए बनाया गया है, अवश्य होना चाहिए
उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का शाश्वत नर्क और शाश्वत स्वर्ग हो
कृपालु और सर्व-कृपालु, जो अपनी न्यायप्रियता और बुद्धि के अनुरूप महिमावान है।

चौथा सत्य: उदारता और सौंदर्य का द्वार,
नाम सर्व उदार और सर्व सुन्दर। असीमित उदारता और उदारता, अक्षय धन और खजाने, अद्वितीय शाश्वत

सौन्दर्य और लावण्य, साथ ही शाश्वत पूर्णता, कृतज्ञ याचकों तथा चकित और उत्सुक दर्शकों के अस्तित्व की मांग नहीं करती,
आनंदमय विश्राम के निवास में स्थायी रूप से निवास करने के लिए नियत?
इतनी सारी खूबसूरत वस्तुओं से भरी दुनिया, सूर्य और चंद्रमा को अपना दीपक बनाना,
ग्रह की सतह को बेहतरीन किस्म के खाद्यान्नों से भरकर उसे भरपूर भोजन में बदल देना, तथा फलदार वृक्षों को उगाना
व्यंजनों में बदलाव करना और हर मौसम में उन्हें कई बार नवीनीकृत करना - यह सब दिखाता है
असीमित उदारता और उदारता का अस्तित्व।

दया के ऐसे अक्षय खजाने के लिए एक शाश्वत निवास की आवश्यकता है
आनंदमय विश्राम जिसमें सभी वांछित वस्तुएं समाहित हों। उन्हें यह भी चाहिए कि वे
जो लोग इसका आनंद लेते हैं, उन्हें समाप्ति और अलगाव के दर्द को सहन किए बिना, अनंत काल तक वहां रहना चाहिए। क्योंकि दर्द का अंत एक प्रकार का आनंद है, और अंत का अंत एक प्रकार का आनंद है।
सुख एक तरह का दुख है। चूंकि असीमित उदारता ऐसी चीज की अनुमति नहीं दे सकती,
इसके लिए शाश्वत स्वर्ग और याचकों के अस्तित्व की आवश्यकता है
अनंत उदारता और उदारता अनंत उदारता और दयालुता प्रदान करने की इच्छा रखती है, जिसके लिए अनंत कृतज्ञता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, जो लोग
इस उपहार को प्राप्त करने और निरंतर धन्यवाद देने के लिए उन्हें हमेशा के लिए जीना होगा-

थोड़ा सा संतोष, जो अपनी संक्षिप्तता या समाप्ति से खराब हो जाता है, असंगत है
असीमित उदारता और उदारता के साथ.

इसके अलावा, दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों पर विचार करें, कि प्रत्येक क्षेत्र किस प्रकार ईश्वर की कृपा को प्रदर्शित करता है।
सभी पौधों और जानवरों की विविधता में उनके प्रभु होने की घोषणा करता है।24 उन पैगम्बरों और संतों की बात सुनो जो उनके प्रभुत्व की सुंदरता की घोषणा करते हैं। देखें कि वे किस तरह से सर्व-महान निर्माता की दोषहीन पूर्णता और महिमा की ओर इशारा करते हैं।
अपनी चमत्कारिक कलाओं का प्रदर्शन करते हैं, जिससे हमारी प्रशंसा होती है।

इस संसार के रचयिता के पास बहुत ही महत्वपूर्ण, अद्भुत और छुपी हुई सिद्धियाँ हैं, जिन्हें वह अपनी चमत्कारी कलाओं के माध्यम से प्रदर्शित करना चाहता है। छुपी हुई सिद्धियाँ
उन लोगों द्वारा जाना जाना चाहता हूँ जो इसे प्रशंसा और सराहना के साथ देखेंगे। शाश्वत पूर्णता के लिए शाश्वत अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है, जिसके लिए बदले में
उन लोगों का शाश्वत अस्तित्व जो इसकी सराहना और प्रशंसा करेंगे।
पूर्णता अपने प्रशंसक की दृष्टि में कम हो जाती है यदि वह शाश्वत नहीं है।25

वे शानदार, सुंदर, कलात्मक और सुशोभित प्राणी जो
ब्रह्माण्ड के चेहरे पर दिखने वाले सभी प्रकाश एक अद्वितीय दिव्य कृपा के आयाम को दर्शाते हैं और एक छिपे हुए सौंदर्य के सूक्ष्म पहलुओं की ओर संकेत करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य का प्रकाश सूर्य के अस्तित्व को प्रमाणित करता है।26 उस दिव्य सौंदर्य, उस पवित्र कृपा की प्रत्येक अभिव्यक्ति असंख्य अदृश्य शक्तियों के अस्तित्व की ओर संकेत करती है।
भगवान के हर नाम में खजाना है। इतना ऊंचा, बेजोड़ और छिपा हुआ सौंदर्य
खुद को दर्पण में देखना चाहता है, अपनी डिग्री और माप को दर्पण में प्रतिबिंबित देखना चाहता है
सजीव प्राणियों को प्रकट करना, ताकि वह स्वयं को देख सके
दूसरों की आँखों से। संक्षेप में, सौंदर्य खुद को दर्पणों में देखना चाहता है
विभिन्न रंगों और अपने तड़पते प्रेमियों की आँखों के माध्यम से और चकाचौंध
प्रशंसक। इसलिए, चूंकि दिव्य सौंदर्य और कृपा शाश्वत और चिरस्थायी हैं, इसलिए वे
अपने प्रेमियों और प्रशंसकों के शाश्वत अस्तित्व की अपेक्षा रखते हैं, क्योंकि शाश्वत
सुंदरता क्षणिक प्रशंसकों से कभी संतुष्ट नहीं हो सकती। प्रशंसक का प्यार-

---

२४ एक शानदार आकार और चमकदार ढंग से सजा हुआ फूल, और एक अत्यंत कलात्मक ढंग से गढ़ा गया रत्न जैसा फल
तार की तरह पतली टहनी पर और हड्डी की तरह कठोर पेड़ से जुड़ी हुई - ऐसी चीजें अच्छी घोषणा करती हैं
सभी सजीव प्राणियों के लिए एक अत्यंत कुशल, बुद्धिमान और चमत्कारी निर्माता की कलात्मकता। यही बात सत्य है
पशु और वनस्पति जगत के.

[25] एक प्रसिद्ध सुंदरी ने एक बार एक आम आदमी को अस्वीकार कर दिया जो उस पर मोहित हो गया था।
खुद को सांत्वना देते हुए, आदमी ने कहा: "वह कितनी बदसूरत है!" और इस तरह उसकी सुंदरता को नकार दिया। एक बार एक भालू खड़ा था
एक बेल की जाली के नीचे बैठा हुआ था और उस पर लगे अंगूरों को खाने के लिए तरस रहा था। अंगूरों तक पहुँचने या उन्हें खाने में असमर्थ
उसने अपने आप से सांत्वना के तौर पर कहा, "अंगूर खट्टे होंगे," और आगे बढ़ गया
अपने रास्ते गुर्राना.

२६ जबकि सभी प्राणी जो दिव्य सौंदर्य के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, निरंतर प्रस्थान करते हैं और गायब हो जाते हैं, अन्य
उनके बाद आने वाले लोग अपने रूप और विशेषताओं में एक ही सौंदर्य को अभिव्यक्त करते हैं। इससे पता चलता है कि ऐसे
सौन्दर्य उनका नहीं है; बल्कि सौन्दर्य के दृश्य उदाहरण एक पारलौकिक, पवित्र सौन्दर्य के चिह्न और संकेत हैं।

स्थायी अलगाव की निंदा की जाएगी, यह विचार एक बार घृणा में बदल जाएगा
अलगाव की भावना हावी हो जाती है। प्रशंसा से बुरी राय पैदा होती है, और सम्मान से
स्वार्थी लोग उन चीज़ों के दुश्मन हो सकते हैं जो उनके पास नहीं हैं
जानते हैं, जो उनकी पहुँच से परे है, उसका विरोध करते हैं। एक सीमित प्रेम प्रतिक्रिया करता है
एक ऐसी सुंदरता के लिए जो मौन शत्रुता, घृणा और
अस्वीकृति। यह एक बहुत बड़ा कारण है कि अविश्वासी लोग परमेश्वर से नफरत क्यों करते हैं।

तो असीमित उदारता और उदारता, अप्रतिम सौंदर्य और निरपेक्षता
पूर्णता के लिए शाश्वत याचकों और प्रशंसकों का अस्तित्व आवश्यक है
लालसा और कृतज्ञता। लेकिन इस अस्थायी दुनिया के निवासी उस उदारता का स्वाद केवल अपनी भूख बढ़ाने के लिए ही चख पाते हैं।
वे सुंदरता और पूर्णता के प्रकाश की केवल एक धुंधली छाया हैं, वे पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हैं। इस प्रकार हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हम शाश्वत आनंद के स्थान की यात्रा कर रहे हैं
जहाँ हम पूर्ण रूप से संतुष्ट होंगे। संक्षेप में, जिस प्रकार यह संसार और इसके प्राणी
सर्व-महान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व, उसके पवित्र गुणों और नामों को सिद्ध करें
परलोक के अस्तित्व की ओर संकेत करते हैं और उसे आवश्यक बताते हैं।

पाँचवाँ सत्य: करुणा का द्वार और पैगम्बर की उपासना और दासता, नामों का प्रकटीकरण, प्रार्थना का उत्तर देने वाला और सर्व-करुणामय। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि असीम करुणा और दया का स्वामी

दया, जो सबसे दयालुता से अपने सबसे दीन व्यक्ति की छोटी से छोटी ज़रूरत को पूरा करता है
सबसे अप्रत्याशित तरीके से प्राणियों को, जो उनकी सबसे कमजोर पुकार का जवाब देते हैं
उसकी सबसे अस्पष्ट प्राणी की सहायता, और जो सभी याचिकाओं का जवाब देता है,

अपने सबसे बड़े सेवक, अपने सबसे प्रिय प्राणी की सबसे बड़ी प्रार्थना को अनदेखा करके, उसकी सबसे उत्तम प्रार्थना को स्वीकार न करके? कमज़ोर, युवा जानवरों के पालन-पोषण में प्रकट की गई कोमल चिंता दर्शाती है

कि प्रभु परमेश्वर अपने सबसे प्रिय प्राणी की सबसे बड़ी प्रार्थना को अनदेखा करके, उसकी सबसे उत्तम प्रार्थना को स्वीकार न करके, उसकी सबसे महान प्रार्थना को अनदेखा कर सकता है? कमज़ोर, युवा जानवरों के पालन-

पोषण में प्रकट की गई कोमल चिंता दर्शाती है कि प्रभु परमेश्वर अपने सबसे प्रिय प्राणी की सबसे बड़ी प्रार्थना को स्वीकार नहीं करता है।

ब्रह्माण्ड अपने प्रभु होने का प्रयोग असीम दया के साथ करता है। क्या यह कल्पना की जा सकती है
कि प्रभुत्व के प्रयोग में ऐसी करुणा और दया अस्वीकार कर देगी
समस्त सृष्टि में सबसे अधिक पुण्यवान और सुन्दर की प्रार्थना क्या है?27 यह सत्य है
जैसा कि द नाइनटीन्थ वर्ड में बताया गया है, लेकिन हम यहां इस तर्क को दोहरा रहे हैं।

हमने दृष्टांत में एक निश्चित देश में आयोजित एक सभा का उल्लेख किया, जिसमें
एक बहुत ही महान सेनापति ने कहा। इस दृष्टांत की सच्चाई जानने के लिए, कल्पना कीजिए

---

27 अर्थात् वह पैगम्बर, जिसने चौदह शताब्दियों तक अरबों प्रजा पर शासन किया है, जो प्रतिदिन
उनके प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करें, लगातार उनकी पूर्णता की गवाही दें और उनकी आज्ञाओं का पालन करें। उनके आध्यात्मिक स्वभाव ने पृथ्वी के आधे हिस्से और मानवता के एक चौथाई हिस्से को आकार दिया है। वह उनके दिलों का प्रिय, उनकी आत्माओं का मार्गदर्शक और भगवान का सबसे बड़ा सेवक है।
संसार के स्वामी। चूँकि सृजित प्राणियों के अधिकांश क्षेत्र कर्तव्य और भूमिका की सराहना करते हैं
प्रत्येक को उसके चमत्कारों का फल देने के माध्यम से उसे सौंपा गया है, वह सबसे प्रिय प्राणी है
सभी के निर्माता की। इसके अलावा, स्थायित्व और निरंतरता की इच्छा हमारे अंदर निहित है
प्रकृति, जो हमें निम्नतम से उच्चतम स्तर तक उठाती है, वह सबसे बड़ी इच्छा और प्रार्थना है,
और यह उसके महानतम सेवक द्वारा सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले को प्रस्तुत किया जाता है।

कि हम पैगम्बर के पवित्र युग के दौरान अरब प्रायद्वीप में वापस जाएँ, और उनसे मिलें और उन्हें अपने कर्तव्यों और इबादत का पालन करते हुए देखें। जिस तरह से वह अपने संदेशवाहक और मार्गदर्शन के माध्यम से शाश्वत सुख की प्राप्ति का साधन हैं, उसी तरह वह अपनी इबादत और प्रार्थना के माध्यम से उस सुख की रचना - स्वर्ग की रचना - का कारण भी हैं।

देखो, वह किस तरह से ऐसी उत्तम प्रार्थना और उत्कृष्ट उपासना के साथ शाश्वत सुख के लिए प्रार्थना कर रहा है। ऐसा लगता है मानो प्रायद्वीप, बल्कि सारा संसार, उसके साथ प्रार्थना और याचना कर रहा है, क्योंकि उसकी उपासना में उसके समुदाय की उपासना के साथ-साथ अन्य सभी पैगम्बरों की उपासना के आवश्यक तत्त्व भी शामिल हैं, क्योंकि वे सभी एक ही प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं। वह अपनी सर्वोच्च प्रार्थना और याचना इतने सारे प्राणियों के बीच करता है कि ऐसा लगता है मानो आदम के समय से लेकर वर्तमान तक के सभी प्रतिष्ठित और पूर्ण लोग प्रार्थना में उसका अनुसरण कर रहे हैं और उसकी याचना पर "आमीन" कह रहे हैं।28 वह इतनी सार्वभौमिक आवश्यकता-अमरता-के लिए याचना कर रहा है कि सृष्टि के सभी निवासी उसमें भागीदार हैं और मन ही मन यह कहते हैं: "हे प्रभु, उसकी प्रार्थना स्वीकार कर, क्योंकि हम भी इसकी इच्छा करते हैं।" वह इतने विलापपूर्ण ढंग से, इतनी तड़प और अभिलाषा के साथ शाश्वत सुख के लिए याचना करता है, कि सृष्टि आंसुओं से भर जाती है और उसकी याचना में भागीदार हो जाती है।

देखो, वह ऐसे लक्ष्य और उद्देश्य के लिए प्रार्थना करता है जो सभी प्राणियों को पूर्ण विनाश, बेकार और लक्ष्यहीन व्यर्थता के रसातल से ऊपर उठाकर, मूल्य, उच्च उद्देश्य, शाश्वत स्थायित्व और शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले परमेश्वर का संदेश बनने के शिखर पर ले जाता है। उसकी प्रार्थना इतनी महान है, दया की इतनी मधुर माँग है कि ऐसा लगता है मानो उसने सभी प्राणियों, स्वर्ग और दिव्य सिंहासन को "आमीन, हे प्रभु, आमीन!" की आनंदपूर्ण पुकार के साथ अपने शब्दों को सुनने और प्रतिध्वनित करने के लिए प्रेरित किया हो।29

---

[28] पैगंबर की पहली याचिका से लेकर अब तक, उन पर शांति और आशीर्वाद के लिए की गई सभी दुआएँ उनकी प्रार्थना के बाद एक निरंतर "आमीन" की तरह हैं, एक सार्वभौमिक भागीदारी। साथ ही, किसी की प्रार्थना के दौरान की गई ऐसी प्रत्येक दुआ, और निर्धारित प्रार्थनाओं के दौरान पूजा के लिए दूसरे आह्वान के बाद शाफी स्कूल के अनुयायियों की उनके लिए की गई प्रार्थना, शाश्वत सुख के लिए उनकी याचिका के लिए एक शक्तिशाली और सार्वभौमिक "आमीन" है। मानवता द्वारा इतनी दृढ़ता से वांछित अनंत काल और शाश्वत सुख, इसकी आवश्यक प्रकृति के अनुरूप, पैगंबर द्वारा उनके लिए वांछित है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और मानवता का प्रतिष्ठित वर्ग उनके बाद कहता है: "आमीन!" क्या ऐसी सार्वभौमिक याचिका को स्वीकार नहीं किया जा सकता था?

29 क्या इस दुनिया का मालिक, जिसके सभी कार्य स्वयंसिद्ध रूप से उसकी पूर्ण जागरूकता, ज्ञान और बुद्धि पर आधारित हैं, अपने सबसे बड़े प्राणी के कर्मों और प्रार्थनाओं से अनभिज्ञ और अनभिज्ञ हो सकता है, उनके प्रति उदासीन रह सकता है, या उन्हें महत्वहीन मान सकता है? जागरूक और उदासीन न होते हुए भी, क्या दुनिया का सर्वशक्तिमान और दयालु शासक उसकी प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं कर सकता? मुहम्मद के प्रकाश ने, जिन पर शांति और आशीर्वाद हो, दुनिया के रूप को बदल दिया है। मानवता और ब्रह्मांड में सभी प्राणियों का सच्चा सार उस प्रकाश के माध्यम से स्पष्ट हो गया; अर्थात्, प्रत्येक अनंत काल से मांगे जाने वाले एक का संदेश है

वह ऐसे सर्वश्रुत, सर्वदयालु से शाश्वत सुख की कामना करता है।
वह सर्वशक्तिमान, ऐसा सर्वदर्शी, सर्वकरुणामय जानने वाला,
वह सबसे छिपी हुई इच्छा और सबसे छोटी इच्छा को प्रत्यक्ष रूप से देखता है, सुनता है, स्वीकार करता है और उस पर दया करता है
वह अपनी सबसे अस्पष्ट प्राणी की इच्छा पूरी करता है। वह सभी अनुरोधों का उत्तर देता है और अपना आशीर्वाद देता है
इतने बुद्धिमानीपूर्ण, अंतर्दृष्टिपूर्ण और दयालु तरीके से उपकार करता है कि कोई भी संदेह नहीं कर सकता
जो इन सबका पालन करता है, वही सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला, दयावान और दयावान है।

सभी को याचना करने में क्या गर्व है? वह मानवता के सम्मान का स्रोत है, वह अद्वितीय व्यक्ति है जो इस धरती पर सभी के साथ खड़ा है
उसके पीछे मानवता थी और उसके हाथ परमेश्वर के सिंहासन की ओर खुले थे और
प्रार्थना करता है। वास्तव में, परमेश्वर के प्रति उसकी आराधना और सेवकाई में आराधना भी शामिल है
वह समस्त मानवजाति का सार है। वह अनंत सुख की कामना करता है
खुद को और सभी विश्वासियों को, अनंत काल और स्वर्ग के लिए। वह प्रार्थना करता है
और सभी पवित्र दिव्य नामों के साथ, जिनकी सुंदरता सभी निर्मित में परिलक्षित होती है
तुम देख रहे हो कि वह उन नामों से सिफ़ारिश चाह रहा है।
भले ही इसके लिए अन्य असंख्य कारण और वजहें न हों, फिर भी एक
उसकी प्रार्थना स्वर्ग बनाने के लिए पर्याप्त होगी, जो कि दयालु की शक्ति के लिए वसंत बनाने जितना आसान कार्य है।

उस सर्वशक्तिमान के लिए स्वर्ग का निर्माण करना कैसे कठिन हो सकता है, जो
प्रत्येक वसंत पृथ्वी की सतह को पुनर्जीवन का एक विशाल क्षेत्र बनाता है और जन्म देता है
अनगिनत पुनरुत्थान? जिस तरह पैगम्बर का संदेशवाहक होना सबसे बड़ा पुनरुत्थान था
इस परीक्षा के लोक की स्थापना का कारण - परन्तु तुम्हारे बिना मैं इन लोकों की रचना न करता - इसका संकेत है - उनकी उपासना ही शाश्वत सुख के धाम की स्थापना का कारण थी।

क्या परमेश्वर के प्रभु होने की उत्तम कलात्मकता और अद्वितीय सुन्दरता,
सृष्टि की अद्भुत सुव्यवस्था और व्यापक दया में प्रकट, मना
पैगंबर की प्रार्थना और इस तरह अत्यधिक कुरूपता, निर्दयता और कलह की अनुमति देना? क्या सर्व-पालक प्रभु
सबसे तुच्छ को भी सुनेंगे और उसे अनुमति देंगे
इच्छा तो करते हैं लेकिन सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण इच्छा को बेकार समझकर अस्वीकार कर देते हैं? नहीं, वह
ऐसा सौंदर्य कभी भी ऐसी कुरूपता का सामना नहीं कर सकता और इस प्रकार

दिव्य नामों का उद्घोष करना; ईश्वर प्रदत्त कार्यों वाला एक मूल्यवान, सार्थक प्राणी और
अनंत काल के लिए नियत। यदि वह प्रकाश न होता, तो प्राणियों को पूर्ण विनाश की सजा दी जाती; मूल्यहीन, अर्थहीन, या उपयोगहीन; अंधे संयोग के भ्रमित प्रभाव और खोये हुए
भ्रम का कालापन। यही कारण है कि जैसे मानवता पैगंबर की प्रार्थना पर "आमीन" कहती है, वैसे ही सभी
पृथ्वी की सतह से लेकर दिव्य सिंहासन तक, भूमिगत से लेकर ऊपर तक अन्य प्राणी
सितारों की तरह, उसकी रोशनी पर गर्व करते हैं और उसके साथ अपने संबंध की घोषणा करते हैं।
पैगम्बर की उपासना और दासता प्रार्थना है। ब्रह्माण्ड की सारी गतियाँ और कार्य प्रार्थना हैं।
संक्षेप में प्रार्थना, जैसे कि, उदाहरण के लिए, एक बीज का पेड़ बनने तक बढ़ना, प्रार्थना का एक रूप है।
अपने निर्माता से प्रार्थना करें।

खुद को बदसूरत बनाओ। जैसे पैगंबर ने भगवान का रूप धारण करके इस दुनिया के द्वार खोले
वह अल्लाह के रसूल की इबादत करके आख़िरत के दरवाज़े खोल देता है।

> उस पर अल्लाह तआला की कृपा हो, यहाँ तक कि
> जो इस संसार को और उद्यानों के निवास-स्वर्ग को भरता है। हे
> हे ईश्वर, अपने सेवक और रसूल पर कृपा और शांति प्रदान कर।
> वह प्रियतम जो दोनों लोकों का स्वामी है, सबका गौरव है
> दोनों लोकों में जीवन का स्रोत, यहाँ और परलोक में सुख प्राप्त करने का साधन, जो नबीत्व को जोड़ता है
>
> और अपने आप में संदेशवाहक, जिन्होंने सिद्धांतों का प्रचार किया
> इस दुनिया और अगली दुनिया में खुशहाल जीवन के लिए कौन भेजा गया है रसूल
> मानवता और जिन्न दोनों - उस पर, उसके परिवार पर, उसके सभी साथियों पर,
> साथ ही उनके साथी पैगम्बरों और रसूलों को भी। आमीन।

छठा सत्य: महिमा और अनंत काल का द्वार, परमेश्वर की अभिव्यक्ति
सर्व-प्रतापी और सर्व-स्थायी का नाम। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि
वह प्रभु है, जिसकी आज्ञा से सूर्य से लेकर सभी प्राणी प्रसन्न होते हैं।
पेड़ों से लेकर परमाणुओं तक को आज्ञाकारी सैनिकों की तरह वश में किया जाता है, उन्हें पूरी तरह से इस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
इस अस्थायी दुनिया में क्षणभंगुर प्राणी, और एक स्थायी नहीं बनाते
राजसी क्षेत्र और प्रभुता का एक ऊंचा निवास? ऋतुओं के परिवर्तन, विशालकाय प्राणियों की भयानक, तीव्र गति जैसी राजसी गतिविधियां
ग्रहों, पृथ्वी को अपना बनाने जैसे अधीनता के अद्भुत उदाहरण
पालना और सूर्य हमारा दीपक, और पुनर्जीवित करने जैसे विशाल परिवर्तन
सूखी, मृत धरती को सजाना—ये सब दिखाते हैं कि एक उदात्त प्रभुत्व शासन करता है
जो कुछ दिखाई देता है उसके पर्दे के पीछे एक शानदार संप्रभुता है।

उस असीम, गौरवशाली प्रभुता के लिए योग्य प्रजा की आवश्यकता होती है
अपने आप में, साथ ही साथ इसकी अभिव्यक्ति के लिए एक उपयुक्त वाहन भी। लेकिन मानवता, दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण निवासी और सबसे व्यापक कार्यों से संपन्न, यहाँ केवल सीमित समय के लिए रहने के लिए एकत्र हुए हैं और दयनीय स्थिति में हैं।
दुनिया प्रतिदिन भरती और खाली होती है, साथ ही हर घंटे बदलती भी है, और हम वहीं रहते हैं।
केवल अस्थायी रूप से सेवा में परीक्षण किया जाना है। संप्रभु के सभी विषय समान हैं
संभावित खरीदार जो कीमती उपहारों के नमूने देखने के लिए कुछ समय के लिए आते हैं
सर्वशक्तिमान निर्माता द्वारा प्रदान की गई, उनकी चमत्कारी कलाकृतियाँ इस दुनिया के शोकेस में हैं। वे जल्द ही चले जाते हैं, जबकि तमाशा हर मिनट बदलता रहता है।
जो चला जाता है वह कभी वापस नहीं आता और जो आता है वह अंततः चला जाता है।
एक वास्तविकता यह तर्क देती है कि इस दुनिया और इसकी गतिविधियों के पीछे और परे एक स्थायी, शाश्वत निवास है जो पूरी तरह से ईश्वर की शाश्वत संप्रभुता को प्रकट करता है - शाश्वत महल और हवेली, और बगीचे और खजाने के घर जो भगवान की कृपा से भरे हुए हैं।
यहाँ हम जो रूप और प्रतियाँ देखते हैं, उनके शुद्ध और परिपूर्ण मूल। हम यहाँ प्रयास करते हैं
वहाँ हमें क्या मिलेगा। हम यहाँ मेहनत करते हैं और वहाँ हमें उसका फल मिलता है। आनंद सभी का इंतजार कर रहा है,

बशर्ते कि वे घाटे में न हों, और प्रत्येक को उसके अनुसार लाभ मिले
व्यक्ति की क्षमता। वास्तव में, एक शाश्वत संप्रभुता विशेष रूप से ध्यान केंद्रित नहीं कर सकती
एक ऐसे राज्य पर जिसकी क्षणभंगुरता उसे दयनीय बना देती है।

इस सादृश्य पर विचार करें: यात्रा करते समय, आप एक कारवां सराय देखते हैं जिसे
उनसे मिलने आने वालों के लिए एक महान व्यक्ति। सबसे बढ़िया तरीके से सजाया गया
यह मेहमानों को रात भर ठहरने के दौरान प्रसन्नता और शिक्षा प्रदान करता है।
वे उन सजावटों को बहुत कम समय के लिए ही देख पाते हैं।
जो कुछ उन्हें दिया जाता है, उसका आनंद लेने के बाद वे अपनी यात्रा पर आगे बढ़ जाते हैं।
यात्रा असंतुष्ट है। हालाँकि, प्रत्येक अतिथि वस्तुओं की तस्वीरें लेता है
कारवां सराय, जबकि महान व्यक्ति के सेवक हर अतिथि के आचरण को रिकॉर्ड करते हैं
और रिकॉर्ड को सुरक्षित रखें। मेहमान देखते हैं कि ज़्यादातर शानदार सजावट की चीज़ों को नए आने वाले मेहमानों
के लिए रोज़ाना नए सामानों से बदल दिया जाता है।

यह सब देखने के बाद, क्या आपको संदेह होगा कि जिस व्यक्ति ने इस कारा-वनसेराय का निर्माण किया है,
उसके पास स्थायी, अक्षय और बहुमूल्य आवास अवश्य होंगे?
खजाने, और असीमित उदारता का एक निर्बाध प्रवाह? वह अपने मेहमानों की भूख को जगाने के लिए कारवां सराय
में अपनी उदारता दिखाता है जो उसके पास है
तत्काल उपस्थिति, और उनके लिए तैयार किए गए उपहारों के प्रति उनकी इच्छा जागृत करना।

यदि आप इस संसार पर निर्मल एकाग्रता से चिंतन करते हैं, तो आप
नीचे बताए गए नौ सिद्धांतों को समझेंगे: पहला सिद्धांत: यह दुनिया (कारवां सराय)

न तो मौजूद है और न ही
यह आकार अपने आप ही बन गया। बल्कि, यह एक अच्छी तरह से निर्मित छात्रावास है,
लगातार आने वाले प्राणियों के कारवां को प्राप्त करने के लिए बुद्धिमानी से डिज़ाइन किया गया,
कुछ देर रुकें और फिर चले जाएं।

दूसरा सिद्धांत: हम यहाँ अतिथि हैं, हमें शांति के निवास में आमंत्रित किया गया है।
हमारे सर्व उदार प्रभु.

तीसरा सिद्धांत: आप समझ जायेंगे कि इस दुनिया के श्रृंगार
केवल आनंद के लिए नहीं। क्योंकि वे अस्थायी हैं, जैसे
तुम्हारा जीवन छोटा है, वे अलग होने पर दर्द देते हैं; वे तुम्हें एक
स्वाद चखते हैं, आपकी भूख जगाते हैं, लेकिन कभी आपको संतुष्ट नहीं करते। इसलिए, वे यहाँ हैं
केवल ज्ञान की शिक्षा देने के लिए,30 कृतज्ञता जगाने के लिए, और हमें प्रोत्साहित करने के लिए
उन स्थायी मूल प्रतियों की तलाश करना जिनकी वे प्रतियां हैं। संक्षेप में,
वे स्वयं से कहीं परे उच्च लक्ष्यों के लिए हैं।

---

३० सभी सांसारिक चीजों का जीवनकाल छोटा है, जबकि उनका मूल्य और उनकी सूक्ष्मताएँ
फैशन सबसे शानदार और सुंदर है। इसका मतलब यह है कि हर चीज सिर्फ एक नमूना है
दर्शकों की नज़र को उसके प्रामाणिक मूल की ओर आकर्षित करें। इसे देखते हुए, हम कह सकते हैं कि इस दुनिया का
विविध श्रृंगार स्वर्ग की नेमतों के नमूने हैं, जिन्हें दयालु और दयालु अल्लाह ने तैयार किया है।
वह अपने प्रिय सेवकों के प्रति अत्यंत दयालु है।

चौथा सिद्धांत: दुनिया के श्रृंगार नमूने और रूप की तरह हैं
सर्वशक्तिमान अल्लाह की दया से स्वर्ग में संग्रहित आशीर्वादों में से
आस्था रखने वाले लोग.31

पाँचवाँ सिद्धांत: सभी क्षणभंगुर वस्तुओं का सृजन क्षण भर में प्रकट होने के बाद नष्ट होने के लिए नहीं, बल्कि अपनी अपेक्षित शक्ति प्राप्त करने के लिए कुछ समय तक अस्तित्व में रहने के लिए किया गया है।
रूपों को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि उन्हें रिकॉर्ड किया जा सके, उनकी तस्वीरें ली जा सकें, उनके अर्थ निकाले जा सकें
समझा जा सके, और उनके परिणामों को संरक्षित किया जा सके। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि, उदाहरण के लिए, लोगों के लिए उनसे हमेशा के लिए तमाशा बनाया जा सके
अनंत काल के लिए, और स्थायित्व के क्षेत्र में कई अन्य उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

---

31 हर चीज़ कई उद्देश्यों के लिए अस्तित्व में है, और इसके कई परिणाम होते हैं। ये उद्देश्य और परिणाम
जैसा कि गुमराह लोग मानते हैं, प्रभाव केवल इस दुनिया और उनके स्वयं से संबंधित नहीं हैं;
बल्कि, वे इन तीन श्रेणियों से संबंधित हैं:

पहला और सबसे श्रेष्ठ कार्य सृष्टिकर्ता से संबंधित है, अर्थात् पूर्व-शाश्वत को प्रस्तुत करना
गवाहों के नज़रिए से देखें कि उसने हर चीज़ को शानदार ढंग से सजाया है, मानो किसी सैन्य परेड के लिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सबसे क्षणभंगुर अस्तित्व भी पर्याप्त है। वास्तव में,
अस्तित्व के लिए मात्र संभावना ही पर्याप्त है। यह उद्देश्य पूरी तरह से साकार होता है, उदाहरण के लिए, नाजुक द्वारा
ऐसे जीव जो तेजी से नष्ट हो जाते हैं, और बीज और गुठली से, प्रत्येक एक उत्कृष्ट कृति, जो कभी फूल या
फल देते हैं। उनका अस्तित्व कभी भी व्यर्थता और निरर्थकता से कलंकित नहीं होता। इसका मतलब है, सभी चीजों का प्राथमिक उद्देश्य, उनके अस्तित्व से, उनके निर्माता की शक्ति और चमत्कारों को प्रदर्शित करना है।
उनकी कला के कार्यों को, उनके दृष्टिकोण में प्रस्तुत करना।

दूसरी श्रेणी चेतन प्राणियों से सम्बन्धित है। प्रत्येक वस्तु सत्य-प्रदत्त पैग़म्बर या कलात्मक कविता या फ़रिश्तों और जिन्नों को अर्पित सर्वशक्तिमान रचयिता का ज्ञानपूर्ण वचन है।
मानवता और जानवरों को आमंत्रित करते हुए, उन्हें "पढ़ने" के लिए आमंत्रित करते हैं। हर चीज़ हर सचेत प्राणी के चिंतन और निर्देश के लिए एक वस्तु है जो इसे देखता है।

तीसरी श्रेणी स्वयं वस्तुओं से संबंधित है, और इसमें ऐसे छोटे प्रभाव शामिल हैं
आनंद और खुशी के अनुभव के रूप में, कुछ हद तक स्थायित्व और आराम के साथ रहने का। अगर हम एक शाही नौका पर कार्यरत एक स्टीयरमैन के कार्यों पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि केवल
इनमें से 1% कार्य वास्तव में स्टीयरमैन से संबंधित हैं (जैसे, उसका वेतन); शेष 99% संबंधित हैं
उस राजा के लिए जो उस नौका का मालिक है। चीज़ों के अपने और सांसारिक अस्तित्व से संबंधित उद्देश्यों और उसके निर्माता से संबंधित उद्देश्यों के बीच एक समान अनुपात प्राप्त होता है।

उद्देश्यों की इस बहुलता को देखते हुए, हम इनके बीच अंतिम सहसंबंध की व्याख्या कर सकते हैं
दिव्य बुद्धि और मितव्ययिता, साथ ही दिव्य उदारता और दानशीलता (जो वास्तव में असीमित हैं), भले ही वे एक दूसरे के विरोधाभासी प्रतीत होते हों। एक दृष्टि से, उदारता और दानशीलता एक दूसरे के पूरक हैं।
उदारता प्रबल होती है और सर्व-उदार नाम प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, फल
और अनाज गणना से परे हैं और इस नाम को प्रकट करते हैं। लेकिन सार्वभौमिक उद्देश्यों में चीजें
सेवा करने के लिए बनाये जाते हैं, सर्वज्ञ नाम प्रकट होता है। यह कहा जा सकता है कि एक पेड़ का फल
फलों की संख्या जितनी है, उतने ही उद्देश्य हैं। इन उद्देश्यों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है
अभी उल्लेखित श्रेणियाँ।

ये सार्वभौमिक उद्देश्य अनंत ज्ञान और मितव्ययिता को प्रदर्शित करते हैं। अनंत ज्ञान और मितव्ययिता
इस प्रकार अनंत उदारता परस्पर संबंधित हैं, भले ही उनका स्पष्ट विरोध हो। उदाहरण के लिए, सेना को बढ़ाने का एक उद्देश्य व्यवस्था बनाए रखना है। पहले से उपलब्ध सैनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं
इसे हासिल करें। हालाँकि, पूरी सेना राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा करने और दुश्मनों को खदेड़ने जैसे अन्य उद्देश्यों के लिए मुश्किल से पर्याप्त हो सकती है। इस प्रकार बुद्धि और बहुलता परस्पर संबंधित हैं, बस
क्योंकि सरकार के अस्तित्व का उद्देश्य कभी भी उसकी महिमा के विपरीत नहीं होता।

चीजें अनंत काल के लिए बनाई गई हैं, पूर्ण विनाश के लिए नहीं। प्रत्यक्ष विनाश कर्तव्य की समाप्ति और सेवा से मुक्ति का प्रतीक है, क्योंकि हर क्षणभंगुर चीज एक पहलू में विनाश की ओर बढ़ती है, लेकिन वह कई अन्य पहलुओं में हमेशा के लिए बनी रहती है। एक फूल पर विचार करें, जो ईश्वर की शक्ति का एक शब्द है। यह कुछ समय के लिए हम पर मुस्कुराता है और फिर विनाश के पर्दे के पीछे छिप जाता है। एक बोले गए शब्द की तरह जो चला जाता है लेकिन अपने हजारों प्रतियों को कानों को सौंप देता है, और जिसका अर्थ उन लोगों के दिमाग में रहता है जिन्होंने इसे सुना है, फूल गायब हो जाता है, लेकिन यह उन लोगों की स्मृति में अपना दृश्य रूप छोड़ देता है जिन्होंने इसे देखा और इसके बीजों में इसका आंतरिक सार। यह ऐसा है जैसे प्रत्येक स्मृति और बीज फूल की सजावट को रिकॉर्ड करने या इसे बनाए रखने का एक साधन था।

चूँकि यह एक साधारण जीव के लिए सत्य है, इसलिए हम देख सकते हैं कि हम अनंत काल से कितने अधिक निकट हैं, क्योंकि हम जीवन का सर्वोच्च रूप हैं और हमारी आत्मा अविनाशी है। फिर, इस तथ्य से कि नियम, जो एक तरह से आत्मा से मिलते-जुलते हैं और जिनके अनुसार फूल और फल देने वाले पौधे बनते हैं,32 और उनके रूपों के प्रतिरूप सभी तूफानी परिवर्तनों [मौसम, ऋतुओं और इसी तरह के] के माध्यम से छोटे बीजों में सबसे व्यवस्थित तरीके से संरक्षित और कायम रहते हैं, हम आसानी से समझ सकते हैं कि मानव आत्मा अनंत काल से कितनी निकटता से जुड़ी और संबंधित है। आत्मा, जो प्रत्येक व्यक्ति को सबसे अधिक उत्कृष्ट और व्यापक प्रकृति प्रदान करती है, ईश्वरीय आदेश से निकलने वाले एक सचेत और प्रकाशमान कानून की तरह है और बाहरी, संवेदनशील अस्तित्व में लिपटी हुई है।

छठा सिद्धांत: हमें अपनी मर्जी से भटकने के लिए नहीं छोड़ा गया है, जैसे कोई जानवर अपनी मर्जी से चरने के लिए खुला रहता है। हमारे कर्मों की “तस्वीरें” खींची जाती हैं और उन्हें दर्ज किया जाता है, और उनके परिणामों को उस दिन के लिए सुरक्षित रखा जाता है जब हमें उनका हिसाब देना होगा।

सातवां सिद्धांत: शरद ऋतु के दौरान वसंत और गर्मियों के जीवों की सामूहिक मृत्यु विनाश नहीं है, बल्कि कर्तव्य पूरा होने के बाद बर्खास्तगी है, एक खालीपन जो अगले वसंत में आने वाले नए जीवों के लिए रास्ता बनाता है और उनके कार्यों को संभालता है।33 यह ईश्वरीय चेतावनी है

---

32 इन नियमों का पौधों के जीवन और अस्तित्व के लिए वही अर्थ है जो आत्मा का पौधों के जीवन और अस्तित्व के लिए है।
व्यक्तिगत मानव (ट्र.)

[33] यह उचित ही है कि पेड़ के पत्ते, फूल और फल, जो दया के जीविका के खजाने हैं, बूढ़े होने पर और अपने कर्तव्यों के समाप्त होने पर विदा हो जाएं। अन्यथा आने वालों के लिए खुला द्वार बंद हो जाएगा और दया का विस्तार तथा नए लोगों द्वारा की जाने वाली सेवा अवरुद्ध हो जाएगी। इसके अलावा, वे स्वयं भी अपनी वृद्धावस्था के कारण दुखी हो जाएंगे।

इसी तरह, वसंत एक फलदार वृक्ष की तरह है जो पुनरुत्थान के विशाल मैदान का संकेत देता है। हर युग में मानवता की दुनिया सबक से भरे पेड़ की तरह है; पृथ्वी चमत्कारों से भरी शक्ति का पेड़ है; दुनिया एक और अद्भुत पेड़ है जिसके फल परलोक के बाजार में भेजे जाते हैं।

सचेत प्राणियों को उनकी विस्मृति से जगाना, उन्हें झकझोर कर बाहर निकालना
वह सुस्ती जो उन्हें धन्यवाद देने के अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करती है।
आठवां सिद्धांत: इस क्षणभंगुर दुनिया के शाश्वत निर्माता में एक शाश्वत
वह संसार जिसकी ओर वह अपने सेवकों को प्रेरित और प्रेरित करता है।
नौवां सिद्धांत: उस दुनिया में, वह दयालु अपने चुने हुए को देगा
सेवकों के उपहार जो हमारे ज्ञान से इतने परे हैं कि हम उनका मूल्यांकन नहीं कर सकते
उनकी कल्पना करो। इस पर हमें विश्वास है।

सातवां सत्य: अभिलेखन और संरक्षण का द्वार, प्रकटीकरण उन नामों में से जो सर्वरक्षक और सर्वजागरूक हैं। क्या यह संभव है कि संरक्षण की विशेषता, जो पूर्ण व्यवस्थितता के भीतर संरक्षित रखती है और संतुलन सब कुछ है कि मौजूद है, और उनके परिणामों को कॉल करने के लिए sivels खाते में, उनके महान उपाध्यक्ष के कृत्यों की अनुमति होगी, जो वहन करती है सुप्रीम ट्रस्ट, बिना रिकॉर्ड किए, बिना छाने और बिना हिसाब के, बिना तौले जाने के लिए न्याय का संतुलन, बिना दण्डित या बिना पुरस्कृत किए, भले ही उसका क्या ये कार्य परमेश्वर के विश्वव्यापी प्रभुत्व से इतनी निकटता से संबंधित हैं?34 नहीं, ऐसा नहीं है।

जो इस ब्रह्माण्ड का प्रशासन करता है, वह सभी चीजों को एक क्रम में संरक्षित करता है और संतुलन, जो उसके ज्ञान और बुद्धि, इच्छा और शक्ति को प्रकट करते हैं। क्योंकि हम देखते हैं कि हर चीज़ सही अनुपात में बनाई गई है, और उसके बाद के सभी अलग-अलग रूप सही, मनभावन, सममित क्रम में बनाए गए हैं। इसके अलावा, महामहिम की सर्व-संरक्षण शक्ति कई रूपों को सुरक्षित रखती है
जो चीज़ें अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद लोगों की यादों में नष्ट हो जाती हैं, एक सर्वोच्च संरक्षित टैबलेट की तरह, और दायरे से संबंधित दर्पण में आदर्श रूप.३५ वह एक बीज में एक संक्षिप्त जीवन-इतिहास अंकित करता है (वह जीवन का परिणाम है) और परिणाम)। इस प्रकार वह सभी चीजों को बाहरी और आंतरिक दुनिया के अनुरूप दर्पणों में संरक्षित करता है। मानवीय यादें, एक पेड़ का फल, एक फल का गिरी, एक फूल का बीज - सभी संरक्षण के कानून की सार्वभौमिकता को प्रकट करते हैं और समावेशिता.

क्या तुमने नहीं देखा कि सभी वसंत के फूलों और फूलों के कर्मों का रिकॉर्ड कैसे रखा जाता है? फल, उनके निर्माण के नियम और उनके रूपों की छवियां सभी अंकित हैं कुछ ही मिनटों में बीज और वहाँ संरक्षित? अगले वसंत, उन रिकॉर्ड खोले जाते हैं - उनके लिए उचित जवाबदेही तय की जाती है - और वसंत की एक और विशाल दुनिया पूर्ण व्यवस्थितता और बुद्धिमत्ता के साथ उभरती है। यह ईश्वरीय शक्ति के शक्तिशाली और व्यापक अभ्यास को दर्शाता है

---

34 परमेश्वर की प्रतिनिधि होने का अर्थ है कि मानवता वह “साधन” है जिसका उपयोग परमेश्वर अपने आदेशों को निष्पादित करने के लिए करता है पृथ्वी पर और हम उसके नियमों के अनुसार इस पर शासन करते हैं। सर्वोच्च भरोसा हमारा आत्म-सम्मान या आवश्यक प्रकृति, जो कि, सापेक्ष रूप से, दिव्य नामों की सभी अभिव्यक्तियों से सुसज्जित है और विशेषताएँ, खास तौर पर इच्छा-शक्ति के साथ। इसके अलावा, तीसवाँ शब्द देखें। (ट्र.)

[35] फ़ुटनोट 18 देखें. (ट्र.)

संरक्षण का गुण। यह देखते हुए कि ऐसी क्षणभंगुर, सामान्य और महत्वहीन चीजों का मुद्दा संरक्षित है, हमारे कर्म, जो
सार्वभौमिक प्रभुत्व के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण फल प्राप्त होते हैं
अदृश्य दुनिया, परलोक और आत्माओं की दुनिया को संरक्षित नहीं किया जा सकता और
क्या इसे अत्यधिक महत्व का मामला माना गया है?

यह व्यापक संरक्षण हमें दिखाता है कि मास्टर ऑफ द होली सी ने कितनी सावधानी से इसका संरक्षण किया है।
सृष्टि उसके अधीन घटित होने वाली हर चीज़ की क्रमबद्धता के प्रति समर्पित है
शासन करें। वह अपनी संप्रभुता और अपने शासन के कार्य के प्रति भी पूरी तरह चौकस है।
प्रभुता का अधिकार। इसलिए वह रिकॉर्ड करता है, या रिकॉर्ड करने का कारण बनता है,
सबसे छोटी घटना और सबसे छोटी सेवा और हर चीज के स्वरूप को असंख्य अभिलेखों में सुरक्षित रखता है। संरक्षण का यह गुण दर्शाता है कि हमारे अभिलेख

कार्यों को सार्वजनिक किया जाएगा और सृष्टि के सबसे महान, सर्वाधिक सम्मानित और महत्वपूर्ण लोगों के कार्यों की तरह उनकी बारीकी से जांच की जाएगी और उनका मूल्यांकन किया जाएगा।

ईश्वर की अधीनता और विश्वास से सम्मानित होकर, हम इसके साक्षी हैं
उनके प्रभु होने की सार्वभौमिकता को स्वीकार करें और इस जगत में उनकी एकता की घोषणा करें
बहुलता। इस प्रकार हम पूजा के नियंत्रक और साक्षी के रूप में कार्य करते हैं
अधिकांश प्राणी। फिर हम कब्र में अंतहीन नींद में कैसे सो सकते हैं,
हमें कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमने क्या किया? बिना किसी संदेह के, हम
पुनरुत्थान के मैदान या सर्वोच्च सभा की यात्रा करेंगे और उन पर मुकदमा चलाया जाएगा
सर्वोच्च न्यायाधिकरण में।

हम कैसे भाग सकते हैं और धरती के नीचे शून्य में छिप सकते हैं?
सर्वशक्तिमान महात्म्य वाले, जिनकी शक्ति के चमत्कार अतीत में हुए थे—
सभी भूतकाल की घटनाएँ—इस तथ्य की निर्णायक गवाही देती हैं कि वह जो कुछ भी कर सकता है
वह भविष्य में इच्छा करता है और जो हर वर्ष वसंत और सर्दियों का निर्माण करता है, जो
क्या यह पुनरुत्थान जैसा है?36 चूँकि हमसे कोई हिसाब नहीं लिया जाता और

---

36 अतीत घटनाओं से मिलकर बना है। हर दिन, साल और सदी जो अस्तित्व में आई, एक रेखा है, एक रेखा है, एक रेखा है।
पृष्ठ, और नियति की कलम द्वारा लिखी गई एक पुस्तक। दिव्य शक्ति अपने चमत्कारी कार्यों को लिखती है
इसमें पूर्ण बुद्धि और व्यवस्था है। जबकि भविष्य, अब से लेकर पुनरुत्थान तक,
स्वर्ग और अनंत काल, पूरी तरह से आकस्मिकताओं से मिलकर बने हैं। इन दोनों की तुलना करने पर, हम समझते हैं
इस निश्चय के साथ कि जिस सत्ता ने कल को बनाया और उसके प्राणी कल को भी बना सकते हैं और
इसके जीव। जैसे कि पिछले चमत्कार एक शक्तिशाली और राजसी व्यक्ति के चमत्कारी कार्य हैं, वे
इस बात की पुष्टि करें कि वह भविष्य और उसकी आकस्मिकताओं का सृजन कर सकता है और अपने चमत्कार दिखा सकता है।

जो एक सेब बनाने वाला है, वह निश्चित रूप से सभी सेब बनाने में सक्षम होगा।
और वसंत को अस्तित्व में लाओ। जो वसंत नहीं बना सकता, वह एक सेब भी नहीं बना सकता, क्योंकि
वे एक ही कार्य-स्थल पर बनाए जाते हैं। प्रत्येक सेब एक पेड़, एक बगीचे या एक ब्रह्मांड का एक लघु उदाहरण है। इसका बीज अपने भीतर पेड़ के जीवन-इतिहास को समेटे हुए है, और ऐसी परिपूर्ण कलात्मकता प्रदर्शित करता है कि यह उस एक के द्वारा बनाया गया चमत्कार है जो कुछ भी कर सकता है। इसी तरह, एक
जो आज सृजन करता है वही पुनरुत्थान के दिन का सृजन कर सकता है, और केवल वही सृजन करने में समर्थ है
पुनरुत्थान वसंत का निर्माण कर सकता है। वह जो सभी पिछली घटनाओं को थ्रेड करता है और प्रदर्शित करता है
समय का रिबन पूर्ण बुद्धि और व्यवस्था के साथ एक अन्य ब्रह्मांड को रिबन से जोड़ सकता है

इस संसार में उस शक्ति के अनुकूल निर्णय लेते हुए, हमें सर्वोच्च की ओर बढ़ना चाहिए
न्यायाधिकरण और खुशी एक दूसरे में।

आठवाँ सत्य: प्रतिज्ञा और धमकी का द्वार, नामों की अभिव्यक्ति
सुंदर और राजसी। क्या इस दुनिया के निर्माता, जिनके पास पूर्ण
ज्ञान और परम शक्ति, बार-बार किए गए वादे और धमकी को पूरा नहीं करना
सभी पैगम्बरों, सत्य के चाहने वालों और संतों द्वारा पुष्टि की गई है? ऐसा न करने से यह प्रदर्शित होगा
नपुंसकता या अज्ञानता। उसकी शक्ति उसके वादे और खतरे को उतनी ही आसानी से पूरा कर सकती है जितनी आसानी से
वह वसंत ऋतु में पिछले वसंत के असंख्य प्राणियों को वापस लाता है, कुछ समान (पेड़ों और घास की जड़ें) और कुछ
समान (पत्ते और फल)।
हर चीज़ के लिए, और उसके संप्रभु और प्रभु होने की आवश्यकता का अर्थ है कि
वह अपना वादा पूरा करेगा। ऐसा न करना उसकी शक्ति की गरिमा और सम्मान के विरुद्ध होगा।
अधिकार के साथ-साथ उनके ज्ञान की व्यापकता भी।

यदि आप ऐसे तथ्यों से इनकार करते हैं, तो वास्तव में आप अपनी झूठी सनक का अनुसरण कर रहे हैं,
मनमौजी बुद्धि और धोखेबाज आत्मा। तुम उसे झूठा कहते हो, हालाँकि उसने कभी नहीं
अपना वादा तोड़ता है, क्योंकि उसकी महिमा और गरिमा उसके लिए ऐसा करना असंभव बना देती है।
इसके अलावा, उसकी सच्चाई हर उस चीज़ से प्रमाणित होती है जो आप देखते हैं।
तुच्छता, आपकी त्रुटि अनंत है और इस प्रकार एक महान और शाश्वत के योग्य है
सज़ा। तथ्य यह है कि कुछ परंपराओं के अनुसार, कुछ लोगों का दांत
नरक के लोग पहाड़ जितने बड़े होंगे, यह इस सत्य की ओर संकेत करता है।37 जो लोग नरक के लोग पहाड़ जितने बड़े होंगे, यह इस सत्य की ओर संकेत करता है।
उन यात्रियों से मिलते जुलते नहीं हैं जो सूर्य के प्रकाश के प्रति अपनी आँखें बंद कर लेते हैं और आकाश के प्रकाश की ओर मुड़ जाते हैं।
अपनी स्वयं की कल्पनाएँ, हालाँकि यह जुगनू की रोशनी से अधिक शक्तिशाली नहीं है
आगे भयानक रास्ता है। सर्वशक्तिमान निश्चित रूप से वही करेगा जो उसने वादा किया है; सभी
सभी प्राणी उसके सत्य वचन हैं, और ब्रह्माण्ड की सभी घटनाएँ उसकी वाक्पटुता हैं।
इसलिए वह एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण स्थापित करेगा और सर्वोच्च खुशी प्रदान करेगा।

नौवां सत्य: पुनर्जीवित करने और मृत्यु का द्वार, ईश्वर की अभिव्यक्ति
नाम हैं सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर, और सर्व-पुनर्जीवित और
जो मरने का कारण बनता है। परमेश्वर इस विशाल पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है जब यह मृत और सूखी होती है,
जिससे सृष्टि की असंख्य प्रजातियों को पुनर्जीवित करके अपनी शक्ति प्रदर्शित की जा सके,
प्रत्येक मानवता के वादा किए गए पुनरुत्थान की तरह ही असाधारण है। वह दिखाता है
इन प्राणियों के अनंत भेदों और उनके जटिल अंतर्संबंधों में भिन्नताओं में उनका सर्वव्यापी ज्ञान। इसके अलावा, वह
अपनी सेवा को बदल देता है-

भविष्य की जानकारी और उन्हें वहां प्रदर्शित करें। द वर्ड्स के कई ग्रंथों में, हमने साबित किया है कि
जो एक चीज़ बना सकता है, वह सब कुछ बना सकता है। और अगर हर चीज़ की रचना एक ही है, तो
यदि किसी एक सत्ता को जिम्मेदार ठहराया जाए, तो उनका निर्माण एक चीज़ बनाने जितना आसान हो जाता है। लेकिन यदि सृजन को कई कारकों या कारणों से जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक चीज़ का निर्माण सब कुछ बनाने जितना ही कठिन है और इसलिए यह असंभव के करीब है।

37 मुस्लिम, "जन्नाह" 44; अत-तिर्मिधि, "सिफ़तु जहन्नम" 3.

अपने स्वर्गीय आदेशों में उनके पुनरुत्थान का वादा करके अनंत सुख की ओर उनका ध्यान आकर्षित करता है, और अपने सभी प्राणियों को एक दूसरे की सहायता करने और सहयोग करने तथा उन्हें अपने आदेश और इच्छा के दायरे में निर्देशित करने के द्वारा अपने प्रभुत्व की महिमा प्रदर्शित करता है। इसके अलावा, वह हमें सृष्टि के वृक्ष के सबसे व्यापक, सूक्ष्म, सबसे योग्य और सबसे मूल्यवान फल के रूप में बनाकर, हमें सीधे संबोधित करके, और सभी चीजों को हमारे अधीन करके हमें जो मूल्य देता है, उसे दर्शाता है। तो, क्या एक सर्वशक्तिमान और दयालु, सर्वज्ञ और बुद्धिमान, जो ये सब करता है, पुनरुत्थान नहीं ला सकता (या करने में असमर्थ हो सकता है)? क्या वह अपना सर्वोच्च न्यायालय स्थापित नहीं कर सकता और स्वर्ग और नर्क नहीं बना सकता? ऐसे विचार अकल्पनीय हैं।

वास्तव में, इस दुनिया के मामलों का सर्वशक्तिमान निपटानकर्ता लगातार इस सीमित, क्षणभंगुर पृथ्वी पर सर्वोच्च सभा और पुनरुत्थान के मैदान के असंख्य संकेत, उदाहरण और संकेत बनाता है। प्रत्येक वसंत में हम कुछ दिनों में अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों को पुनर्जीवित होते देखते हैं। सभी पेड़ और पौधों की जड़ें, साथ ही कुछ जानवर, पुनर्जीवित हो जाते हैं और ठीक वैसे ही बहाल हो जाते हैं जैसे वे थे। अन्य जानवरों को लगभग समान रूपों में फिर से बनाया जाता है। बीज जो इतने समान दिखते हैं, असाधारण तेज़ी और आसानी से, पूर्ण क्रम और सामंजस्य के साथ पूर्ण शक्ति में लाए जाने के बाद जल्दी से अलग और विभेदित संस्थाओं में विकसित होते हैं। जो ऐसा करता है उसके लिए कुछ भी मुश्किल कैसे हो सकता है? वह 6 दिनों में स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण कैसे कर सकता है और फिर भी एक ही विस्फोट से मानवता को पुनर्जीवित करने में असमर्थ है?

मान लीजिए कि एक प्रतिभाशाली लेखक एक घंटे में अनगिनत पुस्तकों को फिर से लिख सकता है जिनके अक्षर बिना किसी त्रुटि या चूक के कागज़ के एक पन्ने पर उलझे हुए या मिट गए हैं, पूरी तरह से और बेहतरीन शैली में। अगर कोई आपसे कहे कि वह एक मिनट में याददाश्त से एक किताब को फिर से लिख सकता है जो उसने लिखी थी और पानी में गिर गई थी, तो आप कैसे कह सकते हैं कि वह ऐसा नहीं कर सकता? या एक राजा के बारे में सोचें जो अपनी शक्ति दिखाने या चेतावनी देने या मनोरंजन के लिए, एक आदेश से पहाड़ों को हटा देता है, अपने राज्य को बदल देता है, और समुद्र को सूखी ज़मीन में बदल देता है। फिर आप देखते हैं कि एक बड़ा पत्थर उसके रिसेप्शन में जाने वाले मेहमानों का रास्ता रोक देता है।

अगर कोई कहे कि राजा आदेश देकर पत्थर हटा देगा, तो क्या आप कहेंगे कि वह ऐसा नहीं कर सकता? या कल्पना करें कि कोई व्यक्ति एक दिन में एक बड़ी सेना इकट्ठी कर लेता है, और आपसे कहा जाता है कि वह सेना को आराम करने के लिए विदा करने के बाद तुरही बजाकर उसे फिर से टुकड़ियों में इकट्ठा कर लेगा, तो क्या आप अविश्वास से जवाब देंगे?

यदि आपने ऐसा किया तो आपकी गलती बहुत बड़ी होगी।

अब देखिए कि कैसे शाश्वत डिज़ाइनर सर्दियों के सफ़ेद पन्नों को बंद करता है और हमारी आँखों के सामने वसंत और गर्मियों के हरे पन्नों को खोलता है। शक्ति और नियति की कलम से, वह पृथ्वी के पन्नों पर अनंत प्रजातियों को सबसे सुंदर शैली में अंकित करता है। वे सभी आपस में मिले हुए हैं लेकिन वह उन्हें अंकित करता है

बिना किसी भ्रम और त्रुटि के, प्रत्येक को अपना विशिष्ट रूप देते हुए।
किसी दूसरे के लेखन में बाधा नहीं डालता। क्या उस सर्वज्ञ और सर्वरक्षक के विषय में पूछना उचित है, जो एक बड़े वृक्ष के अस्तित्व को संकुचित करता है
एक बिंदु के आकार के बीज में, वह कैसे मरने वालों की आत्माओं को सुरक्षित रखता है; कैसे
सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो पृथ्वी को गोफन में रखे कंकड़ की तरह घुमाता है, उसे हटा देगा
क्या वह धरती को अपने मेहमानों के परलोक जाने के मार्ग से रोकेगा?

क्या उस सर्वशक्तिमान के विषय में पूछना उचित है, जो
वह अपने-अपने शरीर में सभी जीवित प्राणियों के परमाणुओं को पूर्ण क्रमबद्धता के साथ ' हो!' की आज्ञा से एकत्रित करता है, और इस प्रकार अनुशासित, सुव्यवस्थित सेनाओं का निर्माण करता है - क्या यह पूछना उचित है कि वह इन सभी को पुनः कैसे एकत्रित कर सकता है?
परमाणु और शारीरिक सदस्य, जो पहले से ही शरीर की पूर्णतः संगठित टुकड़ियों में एक दूसरे को जानते हैं, बिखर जाने के बाद?

आप अपनी आँखों से भगवान द्वारा बनाई गई असंख्य रचनाएँ देखते हैं।
पुनरुत्थान के संकेत, समानताएं और सादृश्य। वह उन्हें प्रदर्शित करता है
हर युग में, दिन और रात का परिवर्तन, यहाँ तक कि आने और जाने में भी
बादलों का। अगर आप खुद को हज़ार साल पहले की कल्पना करें और फिर
अतीत और भविष्य की तुलना करें, तो आपको अतीत के कई उदाहरण और समानताएं दिखेंगी।
पुनरुत्थान सदियों और दिनों की तरह है। अगर इसके बाद भी आप शारीरिक पुनरुत्थान को असंभव और तर्क के लिए अस्वीकार्य मानते हैं, तो यह संभव है।
आपकी तर्क शक्ति में कुछ गंभीर गड़बड़ी है।

इस सत्य के विषय में सर्वोच्च आदेश कहता है: छापों को देखो
ईश्वर की दया का प्रमाण, कि वह किस प्रकार पृथ्वी को उसके मरने के बाद पुनर्जीवित करता है। वही है जो पुनर्जीवित करेगा
मरे हुओं पर भी उसी तरह से शासन करता है। उसके पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है (30:50)। संक्षेप में,
ऐसा कुछ भी नहीं है जो पुनरुत्थान को असंभव बनाता है, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो पुनरुत्थान को असंभव बनाता है, यह बहुत जरूरी है.

महिमामय और शाश्वत प्रभुत्व, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी
प्रभुता, उस एक की जो इस विस्तृत और अद्भुत पृथ्वी को जीवन और मृत्यु देता है मानो यह एक ही जीव हो; जिसने इसे मानवता और पशुओं के लिए एक सुखद पालना और सुंदर शिल्प बनाया है; जिसने सूर्य को बनाया है

एक दीपक जो इसे प्रकाश और गर्मी दोनों देता है; ग्रहों को किसने बनाया है
अपने स्वर्गदूतों के लिए परिवहन - इस तरह के प्रभुत्व और संप्रभुता को एक परिवर्तनशील, क्षणभंगुर, अस्थिर, तुच्छ और अपूर्ण दुनिया तक सीमित नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार
एक और क्षेत्र है, जो उसके योग्य है, अपरिवर्तनीय, स्थायी, स्थिर,
महान और परिपूर्ण। वह हमें इस क्षेत्र के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है और हमें बुलाता है
जो लोग बाह्य दिखावे से सत्य तक पहुँच गए हैं, जो
दिव्य उपस्थिति के सामीप्य से श्रेष्ठतर हो गए हैं, सभी आध्यात्मिक
प्रकाश से भरे हृदय वाले “ध्रुव” और प्रबुद्ध मन वाले,
गवाही देते हैं कि वह हमें उस दूसरे राज्य में स्थानांतरित करेगा। वे हमें सिखाते हैं कि

उसने हमारे लिए वहाँ एक इनाम और प्रतिफल तैयार कर रखा है, और वह हमें देता है
उनके दृढ़ वादे और कड़ी चेतावनियाँ।

वादा तोड़ना घोर अपमान है और इसलिए इसे सुधारा नहीं जा सकता
उसकी पवित्रता की महिमा के साथ। धमकी को अंजाम देने में विफलता या तो किसी कारण से हो सकती है
क्षमा या नपुंसकता (अज्ञानता)। अविश्वास एक अक्षम्य अपराध है।38
सर्वशक्तिमान ईश्वर सभी प्रकार की नपुंसकता से मुक्त है तथा उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।
यह सिखाने वाले और इसकी गवाही देने वाले सभी लोग इस मूलभूत बात पर सहमत हैं, यहाँ तक कि
हालाँकि वे अलग-अलग विचारों और दृष्टिकोणों का अनुसरण करते हैं। उनकी गवाही में विद्वानों की सर्वसम्मति
का अधिकार है। उनमें से प्रत्येक एक मार्गदर्शक प्रकाश है
मानवता, लोगों का प्रिय व्यक्ति और उनकी श्रद्धा की वस्तु।
महत्व की दृष्टि से, प्रत्येक व्यक्ति इस मामले का विशेषज्ञ और अधिकारी है। किसी भी कला या
विज्ञान में, दो विशेषज्ञों को हज़ारों गैर-विशेषज्ञों के मुक़ाबले प्राथमिकता दी जाती है, और रिपोर्ट के प्रसारण में
दो सकारात्मक पुष्टिकर्ताओं को हज़ारों नकारात्मक लोगों के मुक़ाबले प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के
लिए, दो सक्षम व्यक्तियों की गवाही कि उन्होंने
रमजान की शुरुआत का प्रतीक अर्धचंद्राकार चांद दिखने से रमजान का महीना रद्द हो जाता है।
हजारों इनकार करने वालों का खंडन।

संक्षेप में, इस दुनिया में इससे ज़्यादा सच्ची रिपोर्ट, मज़बूत दावा या ज़्यादा स्पष्ट सत्य नहीं है। दुनिया एक खेत है, और पुनरुत्थान एक खलिहान है, अनाज की कटाई का मैदान जिसे स्वर्ग या नर्क में संग्रहीत किया जाएगा।

दसवाँ सत्य: बुद्धि, कृपा, दया और न्याय का द्वार, सर्वज्ञ, सर्व-उदार, सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-दयालु नामों का प्रकटीकरण। समस्त अस्तित्व का महाप्रतापी स्वामी ऐसी स्पष्ट बुद्धि प्रदर्शित करता है,

इसमें स्पष्ट अनुग्रह, अत्यधिक न्याय और व्यापक दया है
अस्थायी दुनिया, क्षणभंगुर परीक्षण भूमि, और अस्थिर प्रदर्शन हॉल
पृथ्वी। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि उसके पास स्थायी निवास नहीं होगा
अमर निवासी उसके दृश्यमान और अदृश्य, भौतिक और निराकार क्षेत्रों में अनन्त स्थानों पर निवास करते हैं,
इसलिए वह इन सभी को अनुमति देता है
क्या बुद्धि, अनुग्रह, दया और न्याय की वास्तविकताएं शून्य में बदल जाएंगी?

क्या सर्वज्ञ हमें अपना प्रत्यक्ष और सार्वभौमिक आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए चुनेंगे?
संबोधित करें; हमें अपना एक व्यापक दर्पण बनाएं; हमें स्वाद लेने दें, मापने दें, और

---

38 अविश्वास पूरी सृष्टि का अपमान है क्योंकि यह उसे नीचा दिखाता है और यह आरोप लगाता है कि उसका कोई अर्थ नहीं है
और मूल्य। यह दिव्य नामों का भी अनादर है क्योंकि यह उनकी अभिव्यक्तियों को नकारता है
प्राणियों के दर्पणों में। यह सभी प्राणियों द्वारा ईश्वर की एकता के लिए दी गई गवाही को भी अस्वीकार करता है,
और इसलिए उन्हें झूठ देता है। इसलिए, अविश्वास हमारी क्षमताओं को इतना भ्रष्ट कर देता है कि हम नहीं कर सकते
सुधार करें और अच्छाई के प्रति उदासीन हो जाएं। यह भी पूर्ण अन्याय का कार्य है, एक अपराध है
ईश्वर के नाम और सृष्टि के अधिकारों के विरुद्ध। उन अधिकारों की रक्षा, और अविश्वासी की अपूरणीय स्थिति के लिए, यह आवश्यक है कि अविश्वास अक्षम्य हो। ईश्वरीय घोषणा,
परमेश्वर के साथ साझेदार जोड़ना सचमुच बहुत बड़ी गलती है (31:13), ऐसा अभिव्यक्त होता है।

उसकी दया के भण्डार की सामग्री को जानें; स्वयं को ज्ञात कराएं
हमें अपने सभी नामों से पुकारे; हमसे प्रेम करें और स्वयं को हमारा प्रिय बनाएं—और फिर
हमें एक शाश्वत क्षेत्र, स्थायी आनंद के निवास में न भेजें, और हमें
क्या वह हर प्राणी पर, यहाँ तक कि एक बीज पर भी, इतना भारी बोझ डालेगा
एक वृक्ष की तरह, उसे फूलों के समान अनेक कर्तव्य सौंपो, और उसे फलों के समान अनेक लाभकारी परिणाम सौंपो, जबकि उन्हें उद्देश्य सौंपो
जो केवल यहाँ प्रासंगिक हैं? वह अपने उद्देश्य को यहीं तक सीमित क्यों रखेगा
सांसारिक जीवन, राई के दाने से भी कम मूल्यवान है?
उसके लिए इस संसार में प्राणियों को बीज के रूप में बनाना अधिक उचित नहीं होगा
अर्थों और सार तत्वों की अमूर्त दुनिया, जहाँ सच्चे अर्थ
यहाँ सब कुछ प्रकट होगा, और परलोक के लिए खेती के रूप में, जहाँ
क्या वे अपनी सच्ची और योग्य उपज देंगे? क्या परमेश्वर वास्तव में ऐसा होने देगा?
महत्वपूर्ण परेड और प्रदर्शन (जैसा कि हम देखते हैं) उद्देश्यहीन, निरर्थक होते हैं,
और व्यर्थ? वह अनंत काल के लिए उन्हें क्यों नहीं नियोजित करेगा
अर्थों और सारों की शाश्वत, अमूर्त दुनिया, ताकि वे
क्या वे अपने सच्चे उद्देश्यों और उचित परिणामों को प्रकट कर सकते हैं?

क्या यह कल्पना की जा सकती है कि चीजों को उनकी अपनी प्रकृति के विपरीत खड़ा करके शाश्वत क्षेत्र का निर्माण न करके, वह स्वयं को ज्ञान, उदारता, न्याय और दया के विपरीत गुणों से युक्त दिखाएगा - जो कि सत्य हैं।
वह अपने सभी गुणों के सच्चे सार को कैसे नकार सकता है?
वे प्राणी जो उसकी बुद्धिमता, उदारता, न्याय और दया को दर्शाते हैं, और
क्या वह सभी चीज़ों की गवाही को झुठला सकता है? क्या तर्क इस बात से सहमत हो सकता है कि वह आरोप लगाएगा
हमारे सिर और उसमें स्थित सभी इंद्रियाँ और क्षमताएँ असंख्य कर्तव्यों के साथ, और
फिर हमें केवल एक बाल से भी कम मूल्य का सांसारिक पुरस्कार दें, और इस तरह बेतुके ढंग से कार्य करें, जो उनके सच्चे न्याय और सच्ची बुद्धि का खंडन करता है?

ईश्वर प्रत्येक जीव, उसके प्रत्येक अंग, प्रत्येक प्राणी को अनंत उद्देश्य और लाभ प्रदान करके स्वयं को सर्वज्ञ सिद्ध करता है। इसे देखते हुए, क्या यह कल्पना की जा सकती है कि हमें ईश्वर से मिलने के बिना हम ईश्वर से मिल सकें?
वह और शाश्वत क्षेत्र में शाश्वत सुख - जो सबसे महान हैं
उद्देश्यों, और सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक लाभकारी परिणामों, और
जो ज्ञान, आशीर्वाद और दया को वह बनाते हैं जो वे हैं, और हैं
सभी उद्देश्यों, आशीर्वाद, दया और लाभकारी उदाहरणों का मूल और लक्ष्य
परिणामस्वरूप, क्या वह अपने सभी कार्यों को व्यर्थता से चिह्नित होने देगा?
वह स्वयं को एक ऐसे निर्माता जैसा बना देगा जिसने एक महल बनाया है जिसमें
हजारों डिजाइन वाले पत्थर, हजारों अलंकरण वाले कोने, और हजारों मूल्यवान उपकरण और यंत्र प्रदान करने वाले हिस्से - लेकिन
इसे छत से ढकना भूल गए, जिससे इसमें सब कुछ सड़ गया और बेकार हो गया-

कम। भगवान ऐसा विचार न आने दें! पूर्ण अच्छाई से केवल अच्छाई ही निकलती है, और पूर्ण रूप से सुंदर से केवल सुंदरता निकलती है, पूर्ण रूप से बुद्धिमान से व्यर्थ या उद्देश्यहीन कुछ भी नहीं निकलता है।

जो भी व्यक्ति अपने मन में इतिहास की यात्रा करता है, वह मंचों, स्थानों, प्रदर्शनियों को देखता है,
और दुनियाएँ, जितने वर्ष बीत गए हैं और प्रत्येक इस वर्तमान की तरह है
दुनिया। हालांकि रूप और गुणवत्ता में एक दूसरे से अलग हैं, वे अपनी परिपूर्ण व्यवस्था, उत्कृष्टता और निर्माता की शक्ति और बुद्धि को प्रदर्शित करने के तरीके में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। उन अस्थायी ठहराव स्थलों में,
क्षणिक क्षेत्रों और प्रदर्शन के क्षणभंगुर स्थानों में, हम अच्छी तरह से व्यवस्थित देखते हैं
स्पष्ट बुद्धि के कार्य, स्पष्ट अनुग्रह के संकेत, अत्यधिक न्याय के संकेत, और व्यापक दया के फल। जो लोग किसी भी प्रकार की समझ रखते हैं, वे समझते हैं कि इससे अधिक परिपूर्ण बुद्धि, कृपालुता नहीं हो सकती

अनुग्रह, महिमामय न्याय और व्यापक दया।

यदि कोई स्थायी निवास, ऊंचे स्थान, शाश्वत निवास न होते,
अनन्त निवास, अनन्त निवासी, अनन्त प्रभु के आनन्दित सेवक
क्षेत्र, कौन उन सभी चीजों को करता है और लगातार उन छात्रावासों को बदलता है
और उनके मेहमानों के लिए, हमें बुद्धि, न्याय,
अनुग्रह और दया - जो सार्वभौमिक, सारगर्भित और सत्य के समान ही प्रकट हैं।
चार सार्वभौमिक तत्व, अर्थात् प्रकाश, वायु, जल और मिट्टी। इस क्षणभंगुर के लिए
दुनिया और इसकी सामग्री अपने असली सार को पूरी तरह से प्रकट नहीं कर सकती। इसलिए, अगर
यदि कोई अन्य स्थान न होता जहाँ वे पूर्णतः प्रकट हो पाते, तो हम
हमें जो कुछ हम देखते हैं उसमें स्पष्ट बुद्धिमत्ता को नकारना होगा, जो पक्षपात हम देखते हैं
हम पर और सभी अन्य चीजों पर प्रकट न्याय39 अपने संकेतों से संकेत देता है कि
इतने प्रभावशाली ढंग से प्रकट होते हैं, और दया जो हम हर जगह देखते हैं। हम भी चाहेंगे
हमें उस एक को मूर्ख चालबाज समझना होगा जो ब्रह्माण्ड में देखी जाने वाली सभी बुद्धिमान प्रक्रियाओं, उदार कार्यों और दयालु उपहारों का अद्वितीय स्रोत है।
और एक निर्दयी तानाशाह। भगवान न करे कि ऐसा हो; यह पूरी तरह से अकल्पनीय है-

---

39 न्याय के दो रूप हैं, एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक। सकारात्मक न्याय में शामिल है जो इसका हकदार है उसे उसका अधिकार देने में। [हमारे राज्य में किए गए अन्याय को छोड़कर जहां हमारी स्वतंत्र इच्छा की भूमिका होती है], न्याय का यह रूप पूरी दुनिया में स्पष्ट रूप से देखा जाता है। क्योंकि, जैसा कि तृतीय सत्य में चर्चा की गई है, सर्वशक्तिमान सृजक निश्चित मात्रा में देता है और निश्चित मानदंडों के अनुसार प्राकृतिक आवश्यकता और भाषा में जो कुछ भी मांगा जाता है परम आवश्यकता। दूसरे शब्दों में, वह हर चीज़ के जीवन और अस्तित्व की सभी ज़रूरतों को पूरा करता है। इसलिए, न्याय का यह रूप अस्तित्व और जीवन जितना ही निश्चित है।

न्याय के नकारात्मक रूप में अन्यायी को दण्डित करना, तथा इस प्रकार गलत काम करने वालों को दंड और दंड के माध्यम से उनका हक देना शामिल है। यद्यपि यह रूप पूरी तरह से प्रकट नहीं होता है यहाँ, अनगिनत संकेत इसके अस्तित्व का संकेत देते हैं। उदाहरण के लिए, सज़ा के प्रहार अतीत के आद और समूद से लेकर वर्तमान युग के विद्रोही लोगों तक कि एक बहुत ही ऊंचा न्याय दुनिया पर हावी है।

सत्य को उलटने में सक्षम। यहां तक कि सोफिस्ट जो हर चीज के अस्तित्व को नकारते हैं, स्वयं सहित, कोई भी व्यक्ति इस तरह के प्रस्ताव पर आसानी से विचार नहीं करेगा।

संक्षेप में, दुनिया में जीवन का सार्वभौमिक विलय और जीवन का तीव्र पृथक्करण मृत्यु, भव्य सभाएँ और तेजी से बिखराव, शानदार परेड, प्रदर्शन और शक्तिशाली प्रदर्शन उनकी नगण्यता के साथ असंगत हैं इस क्षणभंगुर दुनिया में परिणाम और महत्वहीन, अस्थायी उद्देश्य। [यदि कोई हो यदि कोई परलोक न होता], तो इसका अर्थ होता एक बड़े पर्वत को एक उद्देश्य देना एक छोटे से पत्थर के समान महत्वहीन। यह पूरी तरह से अनुचित और व्यर्थ है।

एक ओर प्राणियों और उन मामलों के बीच इतनी बड़ी असमानता, और दूसरी ओर इस दुनिया में वे जो उद्देश्य पूरा करते हैं, वह इस बात की गवाही देता है कि वे मूलतः अर्थों की अमूर्त दुनिया की ओर से काम करते हैं, जहाँ उनका वास्तविक अस्तित्व है। अर्थ और परिणाम पूर्ण रूप से प्रकट होंगे। वे पवित्र दिव्य से संबंधित हैं नाम। इस दुनिया की मिट्टी में रोपे गए, वे आदर्श रूपों की दुनिया में पनपते हैं या प्रतिनिधित्व। अपनी क्षमता के अनुसार, हम बोते हैं और यहाँ बोए जाते हैं परलोक में फसल। यदि आप परलोक से संबंधित चीजों के पहलुओं को देखें तो दिव्य नाम और परलोक, आप देखेंगे कि प्रत्येक बीज (एक चमत्कार) शक्ति) के लक्ष्य वृक्ष जितने विशाल हैं, कि प्रत्येक फूल (ईश्वरीय वचन) बुद्धि) के उतने ही अर्थ हैं जितने एक पेड़ के फूल। प्रत्येक फल, एक चमत्कार है दिव्य कला और दिव्य दया की रचना के उतने ही उद्देश्य हैं जितने एक पेड़ के फल। भोजन के रूप में हमारी सेवा करना इसके अनगिनत उद्देश्यों में से सिर्फ़ एक है। वह सेवा और उसका अर्थ व्यक्त करता है, वह मर जाता है और हमारे पेट में "दफन" हो जाता है।

यह देखकर कि ये क्षणभंगुर वस्तुएं दूसरे में अनन्त फल उत्पन्न करती हैं वह स्थान, जहाँ वे स्वयं के स्थायी रूप छोड़ते हैं, शाश्वत अभिव्यक्ति करते हैं विभिन्न पहलुओं के अर्थों को समझें और निरंतर परमेश्वर की महिमा करें, तो हम सत्य को प्राप्त कर सकते हैं इन पहलुओं से चीजों को देखने और इस तरह एक रास्ता खोजने से मानवता इस क्षणभंगुर दुनिया के माध्यम से अनंत काल तक। चूंकि यह सच है, ये सभी जीव जो जीवन और मृत्यु के बीच घूमते हैं, जो पहले एकीकृत और एकत्रित होते हैं एक साथ रखे जाने और फिर बिखर जाने तथा विघटित हो जाने पर, कुछ अन्य प्रयोजनों की पूर्ति अवश्य करनी चाहिए।

यह स्थिति नकल और प्रतिनिधित्व के लिए की गई व्यवस्थाओं जैसी है। बहुत अधिक खर्च करके संक्षिप्त बैठकें और फैलाव आयोजित किए जाते हैं, ताकि चित्र लिए जा सकते हैं और बाद में स्क्रीन पर लगातार दिखाए जा सकते हैं। हमारे संक्षिप्त व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का कारण यह है कि तस्वीरें ली जा सकती हैं और हमारे कर्मों के परिणाम दर्ज और संरक्षित किए जाएंगे। फिर उनका न्याय किया जाएगा

---

40 मैं मुख्य रूप से बीज, फूल और फलों के उदाहरण चुनता हूँ क्योंकि वे ईश्वरीय शक्ति के सबसे अद्भुत और नाजुक चमत्कार हैं। इसके बावजूद, चूँकि गुमराह प्रकृतिवादी और वैज्ञानिक ईश्वरीय नियति की कलम द्वारा उनमें अंकित सूक्ष्म डिजाइनों को "पढ़" नहीं सकते हैं

और शक्ति, वे उनमें डूब गए हैं और प्रकृतिवाद के दलदल में गिर गए हैं।

एक विशाल सभा स्थल में तथा एक महान प्रदर्शनी स्थल में प्रदर्शित किया गया, ताकि
सभी यह समझ सकें कि उनमें परम सुख प्राप्त करने की क्षमता है।
पैगम्बर ने कहा था: “यह दुनिया परलोक के लिए खेती है।”

चूँकि संसार विद्यमान है, और चूँकि बुद्धि, अनुग्रह, दया और न्याय विद्यमान हैं
उसमें अपनी छापों के साथ प्रबल होते हैं, परलोक भी विद्यमान है। चूँकि सभी सांसारिक चीज़ें मुख्य रूप से उस दुनिया की ओर मुड़ी हुई हैं, वे उसी की ओर जा रही हैं।
परलोक का अर्थ इस संसार और इसकी सामग्री को अस्वीकार करना है।
नियत समय और कब्र हमारा इंतजार कर रहे हैं, वैसे ही स्वर्ग और नरक भी उत्सुकता से हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं
हमारे आगमन की प्रतीक्षा करें.

ग्यारहवाँ सत्य: मानवता का द्वार, नाम की अभिव्यक्ति
परम सत्य। क्या सर्वशक्तिमान सत्य, जो पूजा के योग्य एकमात्र है, हमें अपने परम, सार्वभौमिक के लिए सबसे महत्वपूर्ण सेवक बना सकता है?
प्रभुता, और फिर हमें उस शाश्वत निवास से वंचित करना जिसके लिए हम उपयुक्त हैं और
क्या वह हमें एक ऐसा व्यापक दर्पण बना सकता है जिसमें वह अपने नामों को व्यक्त कर सके, हमें संबोधित करने के लिए सबसे विचारशील व्यक्ति के रूप में चुन सके, और फिर
हमें शाश्वत निवास से वंचित करोगे?

क्या वह हमें अपनी शक्ति के सबसे सुंदर चमत्कार के रूप में बना सकता है और
सबसे सुन्दर रूप, ताकि हम उसके महानतम नाम की अभिव्यक्ति प्राप्त कर सकें
साथ ही उनके सभी नामों की महानतम अभिव्यक्तियाँ, और फिर हमें इनकार करते हैं
शाश्वत निवास? क्या वह हमें किसी भी अन्य से अधिक सुसज्जित अन्वेषक के रूप में बना सकता है?
अन्य प्राणी, दिव्य दया के खजाने की सामग्री का आकलन और अनुभव करने के लिए मापने के उपकरणों और प्रणालियों के साथ, और फिर हमें इनकार करते हैं
अनन्त निवास? क्या वह हमें अपनी असीम कृपाओं के लिए इससे अधिक जरूरतमंद बना सकता है?
अन्य सभी प्राणी, जो नश्वरता से अधिक पीड़ित हैं और अनंत काल के सर्वाधिक इच्छुक हैं,
और फिर हमें शाश्वत निवास से वंचित कर दोगे?

क्या उसने हमें सबसे नाजुक और बेसहारा सजीव प्राणी के रूप में बनाया है,
सांसारिक जीवन में सबसे अधिक दुखी और दर्द के प्रति अतिसंवेदनशील लेकिन सबसे अधिक
क्या आप हमें अपनी क्षमता और संरचना में इतना विकसित कर देते हैं, और फिर हमें शाश्वत निवास से वंचित कर देते हैं?
सर्वशक्तिमान सत्य ने हमें ऐसे सभी गुणों के साथ कैसे बनाया और फिर?
क्या आप हमें उस शाश्वत धाम में नहीं भेजेंगे, जिसके लिए हम तरस रहे हैं और जिसकी हमें तलाश है?
क्या वह हमारे सार को इतना शून्य कर सकता है, अपने अस्तित्व के इतने विपरीत कार्य कर सकता है?
क्या आप परम सत्य का अनुसरण कर रहे हैं और ऐसा अन्याय कर रहे हैं जिसकी सत्य को कुरूपता मानकर निंदा करनी चाहिए?

क्या वह सर्व-न्यायी शासक, वह परम दयालु, हमें वह दे सकता है जो
सर्वोच्च ट्रस्ट को वहन करने की क्षमता, जिससे आकाश और पर्वत
सिकुड़ गया, और फिर हमें अनंत खुशी से वंचित कर दिया? क्या वह हमें मापने में सक्षम कर सकता है
और जानते हैं, हमारे मामूली और आंशिक उपायों और उपलब्धियों के साथ, हमारा
सृष्टिकर्ता के सर्वव्यापी गुण, सार्वभौमिक कार्य और अनंत अभिव्यक्तियाँ-

क्या वह हमें सबसे नाजुक, कमजोर, नपुंसक और सबसे कमजोर प्राणी के रूप में बना सकता है, और हमें आदेश देने का काम दे सकता है कि हम अनंत सुख से वंचित रहें?
क्या हम पृथ्वी के वनस्पति और पशु जीवन को नष्ट कर देंगे और उनकी पूजा और परमेश्वर की महिमा के तरीकों में हस्तक्षेप करेंगे, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर देंगे?

क्या वह हमें अपने सार्वभौमिक कार्यों को लघु रूप में प्रस्तुत करने का कारण बन सकता है?
पैमाने पर, जिससे हमारे माध्यम से पूरे ब्रह्मांड में वचन और कर्म में उनकी महिमामय प्रभुता की घोषणा हो, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर दे? क्या वह हमें अपने स्वर्गदूतों पर वरीयता दे सकता है और हमें प्रतिनिधि का पद दे सकता है,41 और फिर हमें अस्वीकार कर सकता है
शाश्वत सुख, जो इन सभी कर्तव्यों का उद्देश्य, परिणाम और फल है?
क्या वह हमें सबसे अधिक दुखी, बदकिस्मत, पीड़ित और दुखी बना सकता है?
अपमानित प्राणी को, और कारण या बुद्धि को, अपनी बुद्धि और
खुशी पाने का सबसे धन्य और प्रकाश फैलाने वाला साधन, हमारे लिए पीड़ा का एक साधन? परिणामस्वरूप, क्या वह अपने परम सिद्धांत के बिल्कुल विपरीत कार्य कर सकता है
बुद्धि और दया? नहीं, कभी नहीं!

याद रखें कि दृष्टांत में हमने एक अधिकारी के पहचान पत्र को देखा था और
हमने देखा कि उसका पद, कर्तव्य, वेतन, निर्देश और आपूर्ति का मतलब था
एक स्थायी क्षेत्र के लिए और वह अपने आप को इसके लिए प्रयासरत। इस तरह, के रूप में सभी
सटीक विद्वान और शुद्ध लोग जो छिपे हुए सत्य को उजागर करने में सक्षम हैं, सभी सहमत हैं
हमारे हृदय के रजिस्टरों में क्षमताएँ, और हमारे मस्तिष्क में इन्द्रियाँ और क्षमताएँ
हमारी बुद्धि की नोटबुक हमें शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए दी गई है।
उदाहरण के लिए, यदि कल्पना की क्षमता (बुद्धि का एक सेवक)
धारणाओं) को बताया गया था कि यह शाही लोगों के बीच दस लाख साल तक जीवित रहेगा
धूमधाम और आनंद और फिर शाश्वत विनाश से गुजरना, यह एक भारी होगा
दुःख की गहरी आह, जब तक कि व्यर्थ कल्पना और शारीरिक आत्मा द्वारा धोखा न दिया जाए।

इसका मतलब यह है कि सबसे बड़ा अस्थायी सांसारिक सुख हमारी छोटी सी क्षमता को संतुष्ट नहीं कर सकता। इसलिए, जैसे-जैसे हमारा चरित्र और स्वभाव-महत्वाकांक्षाएँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे हमारी इच्छाएँ भी बढ़ती जाती हैं।
अनंत काल तक फैले विचार, समस्त सृष्टि को अपने में समाहित करने वाली इच्छाएं, और
अनंत सुख की सभी किस्में - दिखाएँ, हम अनंत काल के लिए बनाए गए थे और अनंत काल तक रहेंगे। यह दुनिया परलोक के लिए एक प्रतीक्षा कक्ष की तरह है।

बारहवां सत्य: संदेशवाहकत्व और रहस्योद्घाटन का द्वार, प्रकटीकरण
ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और दयावान है। क्या निराधार कल्पनाएँ, भटकते हुए संदेह और भ्रम, सभी मच्छर के पंख से भी कमज़ोर हैं,

---

41 सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें ज्ञान, वाणी और स्वतंत्र इच्छा से प्रतिष्ठित किया है। हालाँकि वह
हमें अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार कार्य करने की अनुमति देता है, वह चाहता है कि हम यहाँ अपनी इच्छा के अनुसार शासन करें
उनकी आज्ञाएँ ताकि दुनिया ब्रह्मांड के अन्य भागों के साथ एकीकृत हो सके
शांति, सद्भाव और शांति, और ताकि हम दोनों दुनिया में खुशी पा सकें
जिसकी हम कामना करते हैं। उप-शासक होने का अर्थ है पृथ्वी पर उसके नाम पर शासन करने का अधिकार होना,
लेकिन उसके पैगम्बरों के माध्यम से भेजी गई उसकी आज्ञाओं का पालन करने की जिम्मेदारी भी उसके पास है। (ट्र.)

आख़िरत का रास्ता और जन्नत का दरवाज़ा बंद कर दिया है?
हज़ारों निर्णायक कुरान की आयतों से खुला, चालीस तरीकों से चमत्कारी, और
ईश्वर के महान दूत, अपनी लगभग एक हजार शक्तियों की शक्ति पर भरोसा करते हुए
स्थापित चमत्कार। यह वही रसूल है जिसके शब्दों की पुष्टि की जाती है
सभी पैगम्बरों के चमत्कारों के आधार पर; जिनके दावे की पुष्टि संतों द्वारा की जाती है
उनके दर्शन, आध्यात्मिक अनुभव और खोजों पर आधारित है; और उनकी सत्यता की पुष्टि सभी शुद्ध, सटीक विद्वानों द्वारा उनकी जांच पर भरोसा करके की जाती है।

ये बारह सत्य दर्शाते हैं कि पुनरुत्थान एक दृढ़ सत्य है
जिसे हिलाया नहीं जा सकता। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इसे अपनी आवश्यकता के रूप में स्थापित किया है
नाम और गुण; उसका रसूल अपने चमत्कारों और अपनी नबूवत के प्रमाणों की शक्ति से इसकी पुष्टि करता है;
कुरान अपनी सच्चाइयों से इसे साबित करता है
और आयतें; और ब्रह्मांड अपनी सभी घटनाओं और उसमें घटित होने वाली उद्देश्यपूर्ण घटनाओं के साथ इसकी गवाही देता है। पुनरुत्थान,
जो अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता और सृष्टि है (अविश्वासियों को छोड़कर)
क्या मैं सहमत हूँ, और क्या मेरा सत्य इतना शक्तिशाली और पहाड़ों की तरह दृढ़ है कि वह बाल से भी कमज़ोर संदेह और शैतानी कानाफूसी से हिल सकता है?

कुरान के अनुसार पुनरुत्थान के पक्ष में ये एकमात्र तर्क नहीं हैं।
अकेले ही, जो हमें इन बारह सत्यों में शिक्षा देता है, हजारों की ओर इशारा करता है
इस मुद्दे के अन्य पहलू। और प्रत्येक पहलू एक स्पष्ट संकेत है कि हमारे निर्माता
हमें इस क्षणभंगुर निवास से शाश्वत निवास में स्थानांतरित कर देगा।
पुनरुत्थान की आवश्यकता वाले दिव्य नाम केवल उल्लेखित नामों तक ही सीमित नहीं हैं: सर्वज्ञ, सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-न्यायप्रिय, तथा सर्व-रिकॉर्डिंग और संरक्षण करने वाले। वास्तव में, सभी दिव्य नाम भगवान के द्वारा प्रकट किए गए हैं।
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था और प्रशासन के लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता है।

पुनरुत्थान की ओर इशारा करने वाली “प्राकृतिक” घटनाएँ नहीं हैं
केवल उन्हीं तक सीमित है जिन पर हमने चर्चा की है। ब्रह्मांड में अधिकांश चीजें ऐसी ही हैं
दाएं और बाएं खुलने वाले पर्दे जैसे पहलू और गुण।
एक पहलू निर्माता की गवाही देता है, और दूसरा पुनरुत्थान का संकेत देता है।
उदाहरण के लिए, जबकि हमारी रचना सबसे सुंदर रूप में प्रदर्शित करती है
निर्माता, उस सबसे निष्पक्ष में निहित व्यापक क्षमताओं के साथ
हमारा तीव्र पतन पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है।

यदि हम एक ही पहलू को दो तरीकों से देखें तो कभी-कभी हम पाते हैं कि यह
निर्माता और पुनरुत्थान दोनों को इंगित करता है। उदाहरण के लिए, बुद्धिमानी से क्रम-व्यवस्था और व्यवस्था, अनुग्रहपूर्ण सजावट, न्यायपूर्ण संतुलन और माप,
और अधिकांश चीजों में देखी गई दयालु पक्षपात से पता चलता है कि वे आगे बढ़ते हैं
एक सर्वज्ञ, सर्वदानी, सर्वन्यायी और सर्वेश्वर की शक्ति का हाथ

दयालु निर्माता। लेकिन इन नामों और उनकी अभिव्यक्तियों की शक्ति और अनंतता के बावजूद, अगर हम उन क्षणभंगुर प्राणियों के संक्षिप्त और महत्वहीन जीवन को देखें जो अपनी अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करते हैं, तो परलोक प्रकट होता है। इस प्रकार, अपने अस्तित्व और जीवन की भाषा में, सभी चीज़ें यह कहती हैं और दूसरों को भी यह कहने के लिए प्रेरित करती हैं: "मैं ईश्वर और अंतिम दिन में विश्वास करता हूँ।"

निष्कर्ष

पिछले बारह सत्य एक दूसरे की पुष्टि, पूरक और समर्थन करते हैं। सभी एक साथ एक ही सत्य की तरह, वांछित परिणाम प्रदर्शित करते हैं। क्या कोई संदेह उन बारह दृढ़ दीवारों को भेद सकता है, जिनमें से प्रत्येक स्टील या हीरे की तरह है, और उनके भीतर रखे पुनरुत्थान में विश्वास को हिला सकता है?

आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (३१:२८) इसका अर्थ है कि मानवता या एक व्यक्ति का सृजन और पुनरुत्थान ईश्वरीय शक्ति के लिए समान रूप से आसान है। नुक्ता (बिंदु) में मैंने इस सत्य को विस्तार से बताया है। यहां मैं इसका सारांश दूंगा और विभिन्न तुलनाएं प्रस्तुत करूंगा।42 उदाहरण के लिए, यदि सूर्य के पास स्वतंत्र इच्छा होती और वह स्वयं को अपनी इच्छानुसार प्रकट कर सकता, तो एक प्रकाश देने वाली वस्तु के रूप में वह असंख्य पारदर्शी वस्तुओं या एक कण में समान आसानी से ऐसा कर सकता था। पारदर्शी होने के कारण, सबसे छोटी पारदर्शी वस्तु सूर्य की छवि को समाहित करने में महासागर की सतह के बराबर है। व्यवस्था और उसके परस्पर संबंधित भागों के आधार पर, एक बच्चा एक युद्धपोत को खिलौने की नाव की तरह आसानी से चला सकता है। आज्ञाकारिता के आधार पर, एक कमांडर एक सेना को एक सैनिक को जारी किए गए समान "मार्च!" के साथ आगे बढ़ने का आदेश दे सकता है। यदि समान भार के दो अखरोट या सूर्य को इन पलड़ों में रखा जाए, तो संतुलन या साम्यावस्था के कारण, जो शक्ति एक अखरोट को आकाश की ओर उठाती है और दूसरे को जमीन पर गिराती है, वही शक्ति सूर्यों को भी उतनी ही आसानी से चला देगी।

इस तुच्छ, अपूर्ण और क्षणभंगुर दुनिया में, चमक, पारदर्शिता, सुव्यवस्था और अंतर्संबंध, आज्ञाकारिता और संतुलन (या साम्य) जैसे गुणों के कारण, सभी चीजें समान हो जाती हैं और असंख्य चीजें एक चीज के बराबर दिखाई देती हैं। इसे देखते हुए, और परम शक्तिशाली की आवश्यक, अनंत और पूरी तरह से परिपूर्ण शक्ति की चमकदार अभिव्यक्तियों के कारण; चीजों के आंतरिक आयाम की पारदर्शिता; दिव्य बुद्धि और नियति द्वारा निर्धारित सटीक सार्वभौमिक क्रम; सृष्टि के उनके आदेशों के लिए चीजों का पूर्ण आज्ञाकारिता; और क्योंकि सभी चीजों का अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव है, बहुत कम और असंभव चीजें समान रूप से संभव हैं।

---

42 यह अल-मथनावी अन-नूरी (प्रकाश का बीजारोपण), प्रकाश, 2007 में शामिल है। (ट्र.)

उसकी शक्ति के संबंध में बड़े, छोटे और बड़े सभी समान हैं। और इसलिए वह एक तुरही ध्वनि के साथ हमें पुनर्जीवित करें, जैसे कि हम एक व्यक्ति थे।

इसके अलावा, किसी चीज़ की ताकत और कमजोरी की डिग्री निर्धारित होती है इसके विपरीत के हस्तक्षेप से। गर्मी की डिग्री ठंड से निर्धारित होती है हस्तक्षेप, कुरूपता के हस्तक्षेप से सुंदरता की डिग्री, और अंधकार के हस्तक्षेप से रोशनी की डिग्री। लेकिन अगर कोई गुण या गुण आवश्यक है किसी चीज़ के लिए, यानी अगर वह सीधे खुद से उत्पन्न होती है और खुद के साथ लगभग एकरूप है, तो उसका विपरीत उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। अगर उसका विपरीत उसमें हस्तक्षेप कर सकता है हस्तक्षेप करने का मतलब यह होगा कि समान गुणों के विपरीत गुण होंगे किसी एक चीज़ में एकजुट होना - जो स्पष्ट रूप से असंभव है।

परम शक्तिशाली की शक्ति उसके दिव्य सार के लिए आवश्यक है, सीधे उसी से उत्पन्न होता है, और लगभग उसी के समान है। यह देखते हुए, और यह भी पूर्णतया परिपूर्ण है, इसमें हस्तक्षेप करने के लिए कोई विपरीत नहीं हो सकता इसलिए भगवान् वसंत को उतनी ही आसानी से बनाते हैं जितनी आसानी से वे फूल बनाते हैं, और उसी आसानी से मानवता को पुनर्जीवित और एकत्रित करेगा जैसे वह पुनर्जीवित करता है एक व्यक्ति। यदि भौतिक कारणों को सिर्फ़ एक फूल बनाना होता, तो दूसरी ओर दूसरी ओर, उनके लिए यह एक सम्पूर्ण स्प्रिंग बनाने जितना ही कठिन होगा।

अब तक हमने जो कुछ भी समझाया है वह सब विकिरण से लिया गया है कुरान बहुत ही बुद्धिमानी से लिखा गया है। तो, आइए हम सुनें कि इसमें क्या कहा गया है:

> क्योंकि अन्तिम और निर्णायक तर्क तो अल्लाह ही है। (6:149)

> परमेश्वर की दया के निशानों को देखो, वह कैसे पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है
> उसके मरने के पश्चात्, वही है जो मुर्दों को जिलाएगा।
> उसके पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है। (30:50)

> उसने हमारे लिए एक उपमा गढ़ी है, वह अपनी उत्पत्ति को भूल गया है
> और सृष्टि, कह रही है: "इन हड्डियों को पुनर्जीवित कौन करेगा जब वे मर जाएंगी
> सड़ गए?" कह दो, "जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया, वही
> उन्हें जिलाए, वह सारी सृष्टि का ज्ञान रखता है। (36:78)

> ऐ इंसानों! अपने रब की नाफ़रमानी से बचो। आख़िरत की भयानक तबाही बहुत भयानक है। जिस दिन तुम देखोगे
> हर दूध पिलाने वाली महिला अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी, और हर गर्भवती महिला अपना बोझ गिरा देगी। आप मनुष्यों को नशे में देखेंगे, फिर भी वे
> नशे में नहीं हैं। परमेश्वर का दण्ड भयानक होगा। (22:1-2)

> ऐ अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, बेशक वह तुम सबको एक दिन इकट्ठा करेगा
> उस निर्णय के बारे में जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है। उससे अधिक सच्चा कौन है
> अल्लाह ही है जो अपनी बातों और समाचारों में है? (4:87)

> पवित्र और शुद्ध लोग आनंद और आशीर्वाद में रहेंगे। दुष्ट लोग दुखी और दुखी रहेंगे।
> धधकती आग में (82:13-14)

जब धरती एक भयंकर भूचाल के साथ कांपेगी और
अपना बोझ फेंकता है, और मनुष्य चिल्लाता है: "क्या बात है
उस दिन वह अपनी ख़बरें सुनाएगा, क्योंकि तुम्हारे रब ने उसे अपने पास रख लिया है।
उस दिन मनुष्य बिखरे हुए समूहों में आगे आएंगे
जो कोई भी अच्छा काम करेगा, उसे उसके कर्मों का फल मिलेगा।
देखो, जो कोई कण भर भी बुराई करेगा, वह उसे देखेगा। (99:1-8)

अचानक, शक्तिशाली हमला! अचानक, शक्तिशाली हमला क्या है?
कि तुम्हें पता था कि अचानक, शक्तिशाली हमला क्या होता है! जिस दिन
मनुष्य पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे, और पहाड़ बिखरे हुए होंगे
वह ऊन की तरह मोटा है। फिर जिसका पलड़ा भारी है [ईमान और
अच्छे कर्म करनेवाला सुखी जीवन व्यतीत करेगा। परन्तु जिसका तराजू अच्छा है,
प्रकाश का ठिकाना एक अथाह गड्ढे में होगा। तुम्हें कौन सी चीज़ समझ में आती है कि वह क्या है? वह तो
एक भड़की हुई आग है! (101:1-11)

आकाश और पृथ्वी का अदृश्य सब कुछ ईश्वर ही का है।
क़यामत की घड़ी पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी ज़्यादा तेज़। भगवान ने
हर चीज़ पर पूर्ण अधिकार। (16:77)

इन और ऐसी ही अन्य आयतों को सुनकर हमें कहना चाहिए: “हम ऐसा विश्वास करते हैं
और पुष्टि करें।”

मैं ईश्वर, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके पैग़म्बरों, अंतिम ईश्वर पर विश्वास करता हूँ।
दिन और नियति इसमें है कि जो कुछ अच्छा या बुरा आता है, वह उसके ज्ञान में दर्ज है और उसी के द्वारा
पैदा किया गया है। पुनरुत्थान सच्चा है,
जन्नत सच्ची है, आग सच्ची है, सिफ़ारिश सच्ची है,
और मुनकर और नकीर सच्चे हैं।43 अल्लाह उनको फिर से ज़िंदा करेगा जो अल्लाह के सामने हैं।
मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं।

हे ईश्वर, सबसे सुंदर, महान और प्रतिष्ठित पर आशीर्वाद प्रदान करें,
आपकी दया का उत्तम और सुन्दर फल, जो खिल गया है
पूरे ब्रह्माण्ड में एक धन्य वृक्ष की तरह; उस पर जिसे तूने भेजा
सभी लोकों के लिए दया, तथा हमारे लिए सर्वोच्च प्राप्ति का साधन
उस "वृक्ष" का सबसे सुशोभित, सबसे सुंदर, सबसे चमकीला और सबसे उत्तम फल जो परलोक
तक, यानी जन्नत तक फैला हुआ है। हे ईश्वर, हमें और हमारे पूर्वजों को बचाओ।
माता-पिता को आग से बचाओ, और हमें और हमारे माता-पिता को स्वर्ग में ले जाओ
तेरे चुने हुए नबी की खातिर, पवित्र और नेक लोगों के लिए। आमीन।

हे भाई (या बहन) जो इस ग्रंथ का खुले मन से अध्ययन कर रहे हैं,
यह मत पूछिए: “मैं इस दसवें शब्द को उसके सभी अर्थों में तुरंत क्यों नहीं समझ पा रहा हूँ?”
अगर आप इसे तुरंत नहीं समझ पाते हैं तो बोर मत होइए।
इब्न सिना (एविसेना) जैसे दर्शनशास्त्र के गुरु ने यह निर्णय लिया था कि

---

43 मुनकर और नकीर वे दो फ़रिश्ते हैं जो मध्यवर्ती क्षेत्र में मृतकों से पूछताछ करते हैं
(इस और अगले के बीच) इस दुनिया में उनके विश्वासों और कार्यों के बारे में। (संपादक)

पुनरुत्थान को तर्कसंगत मानदंडों के माध्यम से नहीं समझा जा सकता; हमें इस पर विश्वास करना चाहिए। साथ ही, विद्वान इसे उन प्रकट सत्यों में से एक मानते हैं, जिन पर विश्वास की आवश्यकता होती है और जिन्हें तर्क के माध्यम से स्थापित नहीं किया जा सकता। इसलिए, मानवीय तर्क के लिए एक प्रयास में इस तरह के गहन और उच्च मुद्दे को समझना मुश्किल है। सर्व-दयालु निर्माता की दया और बुद्धिमान कुरान के विकिरण के लिए धन्यवाद, मुझे आशा है कि यह दसवां वचन, यदि ध्यान से और बार-बार अध्ययन किया जाए, तो पुनरुत्थान की सच्चाई के बारे में आपके तर्क को आश्वस्त करेगा और इसमें विश्वास को सुरक्षित करने में मदद करेगा।

यहाँ मानवीय तर्क के सामने एक कठिनाई यह है कि चूँकि पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम परमेश्वर के महानतम नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से घटित होगा, इसलिए इस घटना को तर्कसंगत रूप से केवल उसके महानतम नाम के प्रकटीकरण और अन्य नामों की सार्वभौमिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से उसके कार्यों को प्रदर्शित करके ही स्थापित किया जा सकता है, जैसे कि अगले वसंत के आगमन को प्रमाणित करना। हमने इस वचन में इसी दृष्टिकोण का पालन करने का प्रयास किया है।

परिशिष्ट

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अतः जब तुम शाम में प्रवेश करो और जब तुम सुबह में प्रवेश करो - और (घोषणा करो कि) आकाश और धरती में सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी के लिए है - और दोपहर में, और जब तुम दोपहर में प्रवेश करो। वह जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवितों में से निकालता है और धरती को उसके मर जाने के पश्चात जीवित करता है। इसी प्रकार तुम मुर्दों में से निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया। फिर तुम एक मनुष्य बन गए जो दूर-दूर तक फैले हुए थे। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही आत्माओं में से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनकी ओर झुको और उनमें आराम पाओ। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और कोमलता पैदा की। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें। और उसकी निशानियों में से आकाश और धरती को पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभिन्नता प्रदान करना भी है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ज्ञान रखते हैं। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और उसके अनुग्रह से जीविका प्राप्त करना भी है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ध्यान रखते हैं। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हारे सामने बिजली चमकाए जिससे भय और आशा दोनों उत्पन्न हों। और यह कि वह आकाश से पानी बरसाता है और उसके द्वारा धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश पर स्थिर हैं। अन्त में जब वह तुम्हें धरती से बुलाएगा तो तुम तुरन्त निकल आओगे। आकाश और धरती में जो कुछ है, वह सब उसी का है। सभी लोग उसी की आज्ञा का पालन करते हैं। वही सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे पुनः उत्पन्न करता है, और उसे वापस भी लाता है।

और यही उसके लिए सबसे आसान है।
आकाशों और धरती में सर्वोच्च स्तर पर उसका ही अधिकार है, और वह सर्वथा पवित्र है।
वह अत्यन्त महिमावान, प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (30:17-27)

इन उत्कृष्ट स्वर्गीय श्लोकों में शामिल एक सबसे महत्वपूर्ण तर्क यह है, जो विश्वास के एक ध्रुव की ओर इशारा करते हैं, इन उत्कृष्ट पवित्र प्रमाणों में जो स्थापित करते हैं पुनरुत्थान की वास्तविकता यहाँ प्रस्तुत की गई है। यह ईश्वरीय कृपा का एक सूक्ष्म उदाहरण है कि, मुहाक़मत ("तर्क") के अंत में , जिसे मैंने लगभग ३० में लिखा था कई वर्ष पहले कुरान की व्याख्या के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए ये शब्द आये थे: "दो अन्य सामान्य प्रमाणों में से दूसरा: यह दो प्रमाणों की व्याख्या करता है क़ुरान में जिस पुनरुत्थान की बात कही गई है, उस ईश्वर के नाम से, जो अत्यंत दयालु, दयावान है।" और यहीं पर यह रुक गया।

जितने प्रमाण और संकेत हैं, उनकी प्रशंसा और धन्यवाद मेरे सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता के प्रति पुनरुत्थान कि 30 साल बाद, मेरे पास है उस कार्य को फिर से शुरू करने में सक्षम बनाया गया है। लगभग 9 या 10 साल पहले, भगवान ने मुझे यह अधिकार दिया दसवां और उनतीसवां शब्द, दो रचनाएँ जिनमें अनेक मजबूत प्रमाण हैं और ईश्वरीय आदेश की व्याख्याएँ— ईश्वर की दया के निशानों को देखो, और वह मिट्टी को उसके मरने के बाद जिलाता है, और वह मुर्दों को भी जिलाएगा। और हर चीज़ पर उसका पूरा अधिकार है। दसवाँ और उनतीसवाँ वचन पुनरुत्थान को नकारने वालों को चुप करा दिया। अब, लगभग एक दशक बाद, उसने मुझे ऊपर उद्धृत सर्वोच्च श्लोकों की व्याख्या प्रदान की, जो कि अप्रतिम है पुनरुत्थान में विश्वास के किले। उस व्याख्या में कुछ भाग शामिल हैं।

भाग एक: परिचय

[इस परिचय में दो बिंदु हैं जो संक्षेप में एक को स्पष्ट करते हैं पुनरुत्थान में विश्वास के अनेक आध्यात्मिक लाभ और उनमें से एक महत्वपूर्ण व्यापक परिणाम। वे यह भी दिखाते हैं कि यह विश्वास मानव जीवन, विशेष रूप से सामाजिक जीवन के लिए कितना आवश्यक है, और इसके एक सारांश को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं कई व्यापक प्रमाण। इसमें यह भी बताया गया है कि कैसे स्पष्ट और निर्विवाद बात पुनरुत्थान में विश्वास है।]

पहला बिंदु: हम विश्वास के अनेक तर्कों में से केवल चार का ही उल्लेख करेंगे परलोक में ईश्वर को मानव के सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का आधार और आधार माना जाता है, तथा समस्त सुख और उपलब्धियों का आधार माना जाता है।

पहला तर्क: बच्चे मानवता का एक तिहाई हिस्सा हैं। मृत्यु को सहना, जो उन्हें एक भयंकर त्रासदी लगती होगी, सिवाय इसके कि स्वर्ग का विचार, जो आध्यात्मिक रूप से उनके कमज़ोर, नाज़ुक स्वभाव को मज़बूत बनाता है। यह उन्हें अपनी कमज़ोरियों के बावजूद खुशी से जीने की उम्मीद देता है

प्रकृति, जो इतनी आसानी से आँसू बहा सकती है। स्वर्ग को ध्यान में रखते हुए, वे कह सकते हैं: “मेरी छोटी बहन या दोस्त मर गई है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गई है। वह वहाँ खेल रही है और बेहतर जीवन का आनंद ले रही है।” अगर वे ऐसा नहीं कर सकते, तो उनके आस-पास के लोगों की मृत्यु के बारे में उनकी जागरूकता उन्हें अभिभूत कर देगी; उनकी प्रतिरोध करने की शक्ति और आंतरिक शक्ति को कुचल देगी; उनकी आँखों और सभी आंतरिक क्षमताओं, हृदय, मन और आत्मा को रोने के लिए मजबूर कर देगी; और उन्हें नष्ट कर देगी या उन्हें व्याकुल और पागल जानवरों में बदल देगी।

दूसरा तर्क: बुज़ुर्गों की संख्या मानवता का एक तिहाई है। वे मृत्यु को केवल परलोक में विश्वास करके ही सहन कर सकते हैं, जो उन्हें इस जीवन के आसन्न विलुप्त होने के लिए कुछ हद तक सांत्वना देता है जिससे वे इतने जुड़े हुए हैं, अपनी प्यारी दुनिया से अलग होने के लिए। केवल अनंत जीवन की आशा ही उन्हें उस दर्द और निराशा का सामना करने की अनुमति देती है जो मृत्यु और अलगाव की आशंका उनके बच्चे जैसे, नाजुक स्वभाव और आत्मा में पैदा करती है। ऐसी आशा के बिना, हमारे आदरणीय बुजुर्ग जो इतने करुणा के पात्र हैं, हमारे वृद्ध माता-पिता जिन्हें एक शांत और स्थिर हृदय की आवश्यकता है, वे आत्मा में इतने व्याकुल और दिल से इतने व्यथित हो जाएंगे कि उनकी दुनिया एक अंधेरी जेल और उनका जीवन पीड़ा का भारी बोझ लगने लगेगा।

तीसरा तर्क: युवा लोग सामाजिक जीवन का मुख्य स्रोत और आधार हैं। केवल नर्क का विचार ही उन्हें भावनाओं और जुनून की तूफानी ऊर्जा, उनकी उग्र, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्माओं को विनाशकारीता और उत्पीड़न से नियंत्रित करने और उन्हें सामूहिक हित की सेवा में मोड़ने में सक्षम बनाता है। इस डर के बिना, और युवावस्था की ऊर्जा के नशे में, वे "शक्ति ही सही है" के सिद्धांत का पालन करेंगे और अपने जुनून को मुक्त कर देंगे। यह दुनिया को कमजोर और शक्तिहीन लोगों के लिए नरक में बदल देगा, और मानव जीवन को जानवरों के स्तर तक गिरा देगा।

चौथा तर्क: परिवार हमारे सांसारिक जीवन का समावेशी केंद्र है, हमारा सबसे बुनियादी संसाधन है, और हमारी सांसारिक खुशियों का स्वर्ग, घर और किला है। प्रत्येक व्यक्ति का घर उसकी अपनी छोटी दुनिया है।

हमारे घरों और परिवारों की जीवंतता और खुशी सच्चे और समर्पित सम्मान, सच्ची दयालुता और आत्म-त्याग करने वाली करुणा पर निर्भर करती है। यह सब, बदले में, शाश्वत मित्रता और संगति, एक अमर बंधन, साथ ही इस विश्वास पर निर्भर करता है कि माता-पिता और बच्चों, भाइयों और बहनों, और पति और पत्नियों के बीच भावनाएँ और संबंध हमेशा के लिए रहेंगे।

उदाहरण के लिए, एक आदमी कह सकता है: "मेरी पत्नी अनंत दुनिया में मेरी अनंत साथी होगी। भले ही वह अब बूढ़ी हो गई हो और पहले जैसी सुंदर न हो, लेकिन उसकी अनंत सुंदरता परलोक में खुद को दिखाएगी। अनंत काल में उस साथ की खातिर, मैं इस दुनिया में उसके लिए त्याग करता हूँ और करुणा दिखाता हूँ।

इस प्रकार वह अपनी वृद्ध पत्नी को प्रेम, देखभाल और करुणा से देख सकता है, मानो वह एक खूबसूरत हूरी हो। एक ऐसा साथ जो हमेशा के लिए खत्म हो जाता है शारीरिक रूप से साथ रहने के कुछ घंटों बाद अलगाव केवल हल्का, क्षणिक और असुरक्षित हो सकता है। यह केवल सतही प्रेम और सम्मान ही पैदा करेगा शारीरिक आकर्षण और यौन प्रवृत्ति पर आधारित। अन्य रुचियां और शक्तिशाली अंततः भावनाएँ उत्पन्न होंगी और उस सम्मान और चिंता को पराजित करते हुए, सांसारिक स्वर्ग को सांसारिक नरक में बदल दें।

इस प्रकार, पुनरुत्थान में विश्वास के अनेक लाभों में से एक लाभ यह है हमारे सामाजिक जीवन में। यदि संबंधित पहलुओं और लाभों को सादृश्य के माध्यम से निकाला जाए इन चारों से यह स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरुत्थान की वास्तविकता और सत्य वैसा ही है जैसा कि यह हमारे अपने अस्तित्व और सार्वभौमिक आवश्यकता के रूप में निश्चित है। यह और भी अधिक स्पष्ट होगा इस तर्क से बेहतर है कि भोजन का अस्तित्व होना चाहिए क्योंकि हमारे पेट को इसकी आवश्यकता होती है। पुनरुत्थान की वास्तविकता और सच्चाई, और उसके सभी परिणाम, मानवीय अवस्था से घटा दिए गए हैं, मानव होने का अर्थ - इतना ऊंचा, महत्वपूर्ण, और सृष्टि के भीतर महत्वपूर्ण है - एक शव के बराबर गिरा दिया गया है जिसे खाया जाता है सूक्ष्मजीव। मानवता के व्यवस्थित जीवन, नैतिकता और समाज से जुड़े लोगों को इस मामले पर ध्यान देना चाहिए। यदि पुनरुत्थान को नकार दिया जाता है, तो वे किससे भरेंगे परिणामस्वरूप उत्पन्न शून्यता को दूर करना तथा गहरे घावों को ठीक करना?

दूसरा बिंदु: सत्य के असंख्य प्रमाणों में से पुनरुत्थान, हम एक संक्षिप्त और संक्षिप्त रूप में, समर्थन निर्धारित करते हैं विश्वास के अन्य स्तंभों द्वारा प्रस्तुत सभी चमत्कार मुहम्मद को सत्य सिद्ध करते हैं। रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो), उनकी नबी होने के सभी प्रमाण, और उसकी सच्चाई के सभी सबूत इसकी गवाही देते हैं और इसकी स्थापना करते हैं पुनरुत्थान की वास्तविकता और सच्चाई। क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर की एकता के बाद, सभी दावा है कि उस महान व्यक्ति ने अपने जीवन के दौरान पुनरुत्थान पर ध्यान केंद्रित किया। निस्संदेह, सभी पैगम्बरों की गवाही देने वाले चमत्कार और प्रमाण, तथा मानवता को उनकी गवाही देने के लिए प्रेरित करने वाले, एक ही सत्य की गवाही देते हैं। इसी प्रकार, आवश्यकता मुसलमानों के लिए ईश्वर की किताबों पर ईमान लाना, जो उसके रसूलों की गवाही को पूरी तरह स्पष्ट कर देती है, इस सच्चाई की गवाही देती है। यह इस प्रकार है:

क़ुरान की सच्चाई को स्थापित करने वाले चमत्कार, प्रमाण और सत्य इसी तरह पुनरुत्थान की वास्तविकता और सच्चाई को स्थापित और प्रमाणित करते हैं।

कुरान परलोक के बारे में बात करता है, इसके अधिकांश छोटे सूरे परलोक के बारे में शक्तिशाली आयतों से शुरू होते हैं, और यह इस सत्य को स्पष्ट रूप से या परोक्ष रूप से घोषित करता है।

सैकड़ों श्लोकों से यह बात सिद्ध होती है। उदाहरण के लिए:

> जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा। (81:1)
>
> ऐ लोगो! अपने रब की अवज्ञा से बचो, क्योंकि वह अल्लाह की अवज्ञा करता है।
> अन्तिम घड़ी का भयंकर प्रकोप बड़ी भयानक बात है। (22:1)

जब धरती बहुत ज़ोर से काँप उठेगी (99:1)

जब आकाश खुल जायेगा (82:1)

जब आकाश फट जायेगा (84:1)

वे एक दूसरे से क्या पूछ रहे हैं? (78:1)

क्या उस भयानक घटना का विवरण तुम्हारे पास पहुँचा है? (88:1)

ठीक वैसे ही जैसे लगभग 20 सूरों की प्रारंभिक आयतों में कहा गया है कि पुनरुत्थान सत्य सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक वास्तविकता है, कई अन्य श्लोक उसी सत्य की पुष्टि करें और अन्य सबूत पेश करें। आप पुनरुत्थान पर विश्वास न करने के बारे में कैसे सोच सकते हैं? क्या यह उतना ही असंभव और बेतुका होगा सूर्य के अस्तित्व को नकारना और ब्रह्मांड के अस्तित्व न होने का दावा करना कि कोई पुनरुत्थान में विश्वास को झूठा मान लेगा, जो इस प्रकार उभर कर आता है एक किताब की असंख्य दलीलों और गवाहियों से सूरज, यहाँ तक कि एक आयत से भी जिससे इस्लामी और ब्रह्मांडीय विज्ञान में अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं?

एक सम्राट कभी-कभी अपनी सेना को युद्ध में केवल यह साबित करने के लिए भेजता है कि वह स्वतंत्र है। उनके एक बयान की सच्चाई क्या है? तो क्या इसका खंडन करना भी संभव है? उस सबसे गंभीर और प्रतिष्ठित सम्राट के असंख्य शब्दों की सच्चाई, वादे और धमकियाँ? क्या यह संभव है कि वे झूठे हों? यह शानदार संप्रभु (कुरान) ने अनगिनत लोगों पर शासन किया, प्रशासन किया और शिक्षा दी है आत्मा, बुद्धि, हृदय और आत्मा को पूर्ण धार्मिकता और 13 शताब्दियों से भी अधिक समय से सत्य है। जबकि इसका एक संकेत ही पर्याप्त है पुनरुत्थान की सच्चाई को साबित करने के लिए, यह हजारों स्पष्ट सबूतों के साथ इसे साबित और प्रदर्शित करता है। तो, हम इसके अलावा और क्या कह सकते हैं कि जो लोग इस सच्चाई से इनकार करना जारी रखते हैं वे नरक की सजा के योग्य और हकदार हैं?

इसके अलावा, सभी दिव्य पृष्ठ या स्क्रॉल और पवित्र पुस्तकें कुरान, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट युग और समय को संबोधित किया गया था, स्वीकार करते हैं क़यामत की सच्चाई, जिसे क़ुरआन ने हर समय संबोधित करते हुए कहा है, विस्तार से और स्पष्ट तर्कों के साथ समझाता और स्थापित करता है। यहां तक कि उनके संक्षिप्त और कभी-कभी संकेतात्मक व्याख्याएं इतनी शक्तिशाली ढंग से इसकी पुष्टि करती हैं कि वे कुरान जो सिखाता है, उसके हज़ार गुना हस्ताक्षर हैं।

हमने प्रार्थना पर ग्रंथ से लिया गया एक तर्क शामिल किया है । संक्षिप्त तर्क, जिसमें अंतिम दिन में विश्वास की गवाही भी शामिल है विश्वास के अन्य स्तंभ, मुख्य रूप से ईश्वर के दूतों और पुस्तकों में विश्वास, यह प्रार्थना शक्तिशाली है और सभी संदेहों को समाप्त करने के लिए पर्याप्त है। इस प्रार्थना में हम कहते हैं:

हे दयालु प्रभु! आपके उपदेश से मैंने समझ लिया है कि
आपके सबसे महान् रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और
बुद्धिमान कुरान की शिक्षा है कि सभी दिव्य पुस्तकें और पैगंबर, प्रि-

पवित्र क़ुरआन और आपके सबसे महान रसूल पर विश्वास करो, सर्वसम्मति से दावा करो और
आपके सभी महिमा और अनुग्रह के नामों की अभिव्यक्ति की गवाही देता हूँ,
जिनकी अनुकरणीय अभिव्यक्तियाँ पूरे ब्रह्मांड में देखी जाती हैं,
अनंत काल में और अधिक शानदार तरीके से खुद को प्रकट करना जारी रखेंगे;
कि आपके उपहार, दयालु अभिव्यक्तियाँ और नमूने
जो इस क्षणभंगुर संसार में अनुभव किए जाते हैं, वे शाश्वत आनंद के धाम में अधिक उज्ज्वल रूप से टिके रहेंगे;
और जो लोग प्रेम करते हैं
उनमें से और जो उन्हें इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में खुशी के साथ समझते हैं और
प्रेम से उन्हें खोजो, वह अनंत काल तक उनका साथ देगा।

इसके अलावा, उनकी नबी होने के अनगिनत सबूतों के आधार पर, जिसमें उनके सैकड़ों स्पष्ट चमत्कार शामिल हैं, और वादों और भविष्यवाणियों पर भी आधारित है।
धमकियाँ जो आपने सभी स्वर्गीय पन्नों या स्क्रॉल में दोहराई हैं और
पवित्र पुस्तकों का पालन करें; और महामहिम और आपके सम्मान पर भरोसा करें
आपके आधिपत्य का प्रभुत्व, और आपके पवित्र गुणों और आवश्यक गुणों जैसे शक्ति, दया, परोपकार, बुद्धि,

महिमा और अनुग्रह, जो परलोक की मांग करते हैं; और उनके माध्यम से
आध्यात्मिक अनावरण और अवलोकन, साथ में उनकी मान्यताएँ
ज्ञान की निश्चितता और दृष्टि की निश्चितता की डिग्री पर या
अवलोकन, चमकदार आत्माओं वाले सभी पैगंबर, जिनमें पहले भी शामिल हैं
और सबसे पहले ईश्वर के सबसे महान दूत, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, प्रबुद्ध हृदय वाले संत और शुद्ध, संत विद्वान
प्रबुद्ध बुद्धि के साथ - ये सभी जिन्न और मानव जाति को देते हैं
मार्गदर्शन करनेवालों के लिए सदैव सुख की शुभ सूचना और सावधान करनेवाला।
कि गुमराह लोगों के लिए नरक है, जबकि इस पर विश्वास करने वाले वे पहले व्यक्ति हैं
आने वाले पुरस्कार और दंड.

हे सर्वशक्तिमान, हे सर्वज्ञ! हे दयालु और दयावान; हे सर्व-दानी जो पूर्णतया सत्यनिष्ठ हैं।

हे सर्वशक्तिमान, हे महिमावान,
भव्यता और महिमा! पुनरुत्थान लाने में विफलता
अपने इतने सारे सच्चे दोस्तों का खंडन करना इसका मतलब होगा
आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों को तोड़ना, नकारना
आपके पवित्र गुण और आवश्यक गुणों का उल्लंघन करना, तथा आपके प्रभुत्व के प्रभुत्व की निश्चित आवश्यकताओं को नकारना; इसका अर्थ होगा
अपने उन असंख्य बन्दों की परलोक की प्रार्थनाओं और बिनती को अस्वीकार करना, जिनसे तू प्रेम करता है और जो तेरा प्रिय पात्र बनते हैं।
तेरी पुष्टि और आज्ञापालन करके। निस्संदेह तू बहुत महान है।
ऐसी असफलता से ऊपर!

तू तो इनकार करनेवालों को पुष्ट करने से भी कहीं अधिक महान है।
और पुनरुत्थान को अस्वीकार करने में गुमराह करने वाले, जिन्होंने
अविश्वास और अवज्ञा, और आपके वादों का खंडन करके, आपकी महानता का अपमान, आपकी महिमा की गरिमा पर हमला, अपमान
आपकी दिव्यता का सम्मान और आपके आधिपत्य की करुणा का अनादर।
मैं आपके असीम न्याय, अनुग्रह और दया को पूर्णतः मुक्त घोषित करता हूँ

ऐसी असीम कुरूपता और बुराई की। हम अपनी पूरी शक्ति से मानते हैं कि
आपके ये असंख्य सत्यवादी सन्देशवाहक और सैकड़ों हज़ारों पैगम्बर, शुद्ध, संत विद्वान और संत, जो धर्म के संदेशवाहक हैं
आपके प्रभुत्व, आपकी शाश्वतता के प्रति उनकी गवाही में बिल्कुल सत्य हैं
दया और परोपकार के खजाने, और असाधारण रूप से उत्तम
ज्ञान पर आधारित निश्चितता के साथ, और ज्ञान पर आधारित निश्चितता के साथ, आपके सभी सुंदर नामों की दुनिया में अभिव्यक्तियाँ
दृष्टि, और अनुभव पर आधारित निश्चितता। वे विश्वास भी करते हैं और सिखाते भी हैं
आपकी आज्ञा से अन्य लोग आपके नाम की सबसे बड़ी किरण,
परम सत्य, जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य और संरक्षक है, वह है।
पुनरुत्थान का यह सबसे बड़ा सत्य है।

हे प्रभु, उनकी शिक्षा और उपदेश के लिए हमें अनुदान दीजिए
और हमारे भाइयों और बहनों ने विश्वास को सिद्ध किया और हमारी मृत्यु का उचित अंत हुआ
जीवन, और ताकि हम उनके मध्यस्थता का कुछ हिस्सा हो सकता है। आमीन।

कुरान और हदीस की सच्चाई को स्थापित करने वाले सभी तर्क और सबूत अन्य सभी दिव्य पुस्तकें, साथ ही चमत्कार और प्रमाण जो स्थापित करते हैं ईश्वर के प्रिय पैगंबर मुहम्मद और अन्य सभी पैगंबरों की नबीत्व, परलोक की वास्तविकता की ओर संकेत करता है, जिसका सबसे बड़ा स्थान है-
ईश्वर के अस्तित्व और एकता के बाद दूसरे स्थान पर - उनके दावे या कारण में।

इसी प्रकार, अनिवार्यतः विद्यमान के पक्ष में अधिकांश तर्क और प्रमाण अस्तित्व और एकता, अस्तित्व और खुलने की स्पष्ट पुष्टि करते हैं खुशी के निवास की, अनंत काल के क्षेत्र की जहाँ भगवान का आधिपत्य और दिव्यता पूर्ण रूप से प्रकट होगी। दोनों के अस्तित्व के लिए आवश्यक है विद्यमान सत्ता और उसके अधिकांश नाम और उसकी सभी विशेषताएँ और आवश्यक प्रभुत्व, दिव्यता, अनुग्रह, बुद्धि और न्याय जैसे गुण आवश्यक हैं अत्यंत निश्चितता के साथ एक शाश्वत क्षेत्र और पुनरुत्थान की मांग करें और पूर्णतया न्यायोचित दण्ड और पुरस्कार देने के लिए अंतिम निर्णय।

चूँकि ईश्वर शाश्वत है, इसलिए उसका एक शाश्वत निवास अवश्य होना चाहिए जहाँ उसका निवास हो। ईश्वरीय संप्रभुता हमेशा हावी रहेगी। चूँकि हम देखते हैं कि एक सबसे शानदार, उद्देश्यपूर्ण बुद्धिमान और देखभाल करने वाला पूर्ण प्रभुत्व हर जगह मौजूद है
ब्रह्माण्ड और चेतन सृष्टि के बीच, निश्चित रूप से एक शाश्वत क्षेत्र होना चाहिए उस खुशी की जिसमें प्रवेश दिया गया है, ताकि उस की महिमा प्रभुत्व समाप्त नहीं होता, उसकी बुद्धि व्यर्थता में नहीं बदलती, और विश्वासघात से इसकी देखभाल नष्ट नहीं होती।

चूँकि ये दृश्यमान और अनंत उपहार, आशीर्वाद, दयालुता और उदारता और दया के उदाहरण सतर्क मन और हृदय को दिखाते हैं कि एक सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय सत्ता अदृश्य के पर्दे से परे विद्यमान है, शाश्वत संसार में शाश्वत जीवन अवश्य होना चाहिए, क्योंकि केवल वही होगा जो दिखाओ कि उसकी उदारता मज़ाक नहीं उड़ाती, उसकी दयालुता धोखा नहीं देती,

कृपा करने से शत्रुता उत्पन्न नहीं होती, उसकी दया पीड़ा नहीं देती, और उसकी उदारता विश्वासघात नहीं करती। इसके अलावा, यह केवल एक शाश्वत क्षेत्र में अनंत काल ही है जो सभी वरदानों और आशीर्वादों को उनके सच्चे और पूर्ण रूप में ग्रहण कराता है।

चूँकि हर वसंत में हम देखते हैं कि एक शक्तिशाली कलम पृथ्वी के संकीर्ण पृष्ठ पर बिना किसी गलती के अथक रूप से अनगिनत परस्पर जुड़ी हुई किताबें लिखती है, और उस कलम के मालिक ने अपने सभी आदेशों में बार-बार वादा किया है: "मैं इस जगह से कहीं ज़्यादा विस्तृत जगह पर एक सुंदर, अविनाशी किताब लिखूँगा और तुम्हें पढ़वाऊँगा, और इस तरह से कि वसंत की यह तंग और परस्पर जुड़ी हुई किताब इतने संकीर्ण पृष्ठ पर लिखी गई है," निश्चित रूप से इसकी उत्पत्ति पहले ही लिखी जा चुकी है, और इसे पुनरुत्थान के दिन इसके सभी हाशिये के साथ लिखा जाएगा। सभी लोगों के कर्मों का रिकॉर्ड भी उस किताब में शामिल किया जाएगा।

चूँकि पृथ्वी पर रहने वाले लोगों की बहुलता है और यह असंख्य निरंतर परिवर्तित होने वाले रूपों का निवास, उद्गम, कार्यशाला, प्रदर्शन और पुनरुत्थान का स्थान है, इसलिए पृथ्वी को ब्रह्माण्ड के हृदय, केन्द्र, विकल्प, मूल, अंतिम लक्ष्य और इसकी रचना के मूल कारण के रूप में बहुत महत्व दिया गया है, और इसके छोटे आकार के बावजूद, स्वर्गीय आदेश इसे विशाल स्वर्ग के बराबर मानते हुए कहते हैं, हे स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी...

और चूँकि मानवता है - हम पूरी पृथ्वी पर प्रभुत्व रखते हैं।
हम इसके अधिकांश प्राणियों पर प्रभुत्व रखते हैं, लगभग सभी सजीव प्राणियों को अपने अधीन रखते हैं और अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा करते हैं, तथा अपनी आवश्यकता और इच्छा के अनुसार सृजित वस्तुओं को व्यवस्थित करते हैं, प्रदर्शित करते हैं और सजाते हैं। हम हर वस्तु को उसकी अद्भुत विविधता के अनुसार, प्रत्येक प्रजाति को उसके अपने स्थान पर, और इस तरह से सूचीबद्ध और वर्गीकृत करते हैं कि सभी लोग और जिन्न उसे देखते हैं, आकाश और ब्रह्मांड के सभी निवासी उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं, और यहां तक कि ब्रह्मांड का स्वामी भी उस पर अपनी प्रशंसा भरी दृष्टि डालता है। इस प्रकार हम बहुत महत्व और मूल्य प्राप्त करते हैं और अपनी कला और विज्ञान के माध्यम से यह प्रदर्शित करते हैं कि हम ब्रह्मांड के अस्तित्व का कारण हैं, सृष्टि का सर्वोच्च फल हैं और पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। चूंकि हम यहां निर्माता के चमत्कारी कार्यों का प्रदर्शन और व्यवस्था करते हैं, इसलिए हमें हमारे विद्रोह, कृतघ्नता और अविश्वास के बावजूद राहत और सफलता प्रदान की जाती है और हमारी सजा स्थगित कर दी जाती है।

चूँकि इन गुणों से संपन्न होने के बावजूद, हम अत्यंत कमज़ोर और शक्तिहीन हैं और हमारी असंख्य ज़रूरतें हैं और हम असंख्य पीड़ाओं से गुज़रते हैं। हालाँकि, एक सबसे शक्तिशाली, बुद्धिमान और देखभाल करने वाला शासक है जिसने इस ग्रह को हर तरह के खनिज और भोजन से भरा एक भंडार बना दिया है जिसकी हमें ज़रूरत है और वह सभी सामान जो हम चाहते हैं, और जो हमारी शक्ति और इच्छा से परे तरीके से हमारी ज़रूरतें पूरी करता है।

चूँकि भगवान जिसके पास ये गुण हैं, वह हमसे प्यार करता है और खुद को हमारा प्रिय बनाता है। वह शाश्वत है और उसके पास शाश्वत संसार हैं। वह सभी काम न्याय और बुद्धि से करता है। लेकिन इस शाश्वत शासक के प्रभुत्व की महिमा और संप्रभुता की शाश्वतता इस क्षणभंगुर, अस्थायी दुनिया के क्षणभंगुर जीवन में समाहित नहीं हो सकती। इसके अलावा, मानवीय अन्याय और विद्रोह की भयावहता और साथ ही इसके सदस्यों का अपने उपकारकर्ता और प्रदाता के प्रति विश्वासघात, इनकार और अविश्वास, जो ब्रह्मांड के न्यायपूर्ण संतुलन और सामंजस्यपूर्ण सुंदरता के प्रति शत्रुतापूर्ण और विरोधाभासी हैं, आमतौर पर इस दुनिया में दंडित नहीं होते हैं। क्रूर और विश्वासघाती लोग आसानी से जीते हैं, जबकि उत्पीड़ित और निराश लोग दयनीय स्थिति में जीते हैं। लेकिन परम न्याय की संपूर्ण प्रकृति और अस्तित्व, जिसके संकेत पूरे ब्रह्मांड में देखे जाते हैं, इस विचार के साथ पूरी तरह से असंगत और असंगत हैं कि क्रूर और विश्वासघाती - जो उत्पीड़ित और हताश लोगों की तरह ही मरते हैं - को कभी भी पुनर्जीवित नहीं किया जाना चाहिए [सर्वोच्च न्यायाधिकरण में उनकी क्रूरता का हिसाब देने के लिए]।

चूँकि ब्रह्माण्ड के स्वामी ने ब्रह्माण्ड में से धरती को और धरती में से मानवता को चुना है, इसलिए दोनों को उच्च पद और महत्व दिया है। मानवता में से उसने पैगम्बरों, संतों और पवित्र, संत विद्वानों, सच्चे मनुष्यों को चुना है जो सृष्टि के स्वामी के रूप में उसके उद्देश्यों के अनुरूप हैं और विश्वास और समर्पण के माध्यम से खुद को उसका प्रिय बनाते हैं। उसने उन्हें अपना मित्र और अपने संबोधन का पात्र बनाया है, और उन्हें चमत्कारों और ईश्वरीय सहायता से महान बनाया है और उनके विरोधियों को स्वर्गीय प्रहारों से दंडित किया है। इन लोगों में से उसने उनका नेता और आधार चुना है: मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। लंबी शताब्दियों से उसने अपनी रोशनी से पृथ्वी के आधे हिस्से और मानवता के पांचवें हिस्से को रोशन किया है। मानो सृष्टि उसके लिए बनाई गई थी, इसके सभी उच्च उद्देश्य उसके, उसके धर्म और उसके द्वारा लाए गए कुरान के माध्यम से प्रकट होते हैं। यद्यपि वह अपने द्वारा की गई सेवाओं के अनंत मूल्य के लिए अनंत पुरस्कार पाने के हकदार और पात्र थे - ऐसी सेवाएं जिन्हें करने में आमतौर पर हजारों साल लगते हैं - फिर भी उन्हें कठिनाई और संघर्ष में बिताए गए तिरसठ वर्षों का संक्षिप्त जीवन प्रदान किया गया।

हम कैसे मान सकते हैं कि वह अपने साथियों - अन्य पैगम्बरों - और साथियों के साथ पुनर्जीवित नहीं होगा? या कि वह अभी भी आत्मा में जीवित नहीं है? या कि वे मर जाएँ और अनंत काल के लिए विलुप्त हो जाएँ? संपूर्ण ब्रह्मांड और वह सत्य जिस पर यह आधारित है, उसके फिर से अस्तित्व की मांग करता है, सभी के स्वामी से उसके जीवन की मांग करता है।

चूँकि यह सातवीं किरण, सर्वोच्च संकेत में तैंतीस निर्णायक प्रमाणों के साथ स्थापित किया गया है कि ब्रह्माण्ड एक ही सत्ता की कृति है।
उस सत्ता की एकता और एकता उसकी सभी परिपूर्णताओं को जन्म देती है और सृष्टि को उसकी पूर्ण आज्ञा मानने के लिए प्रेरित करती है। एक नए जीवन के माध्यम से, जो कि परलोक का जीवन है,

वे सिद्धियाँ दोषरहित रहती हैं;44 उनका परम न्याय परम विश्वासघात में नहीं बदल जाता, उनकी सर्वव्यापक बुद्धि मूर्खतापूर्ण व्यर्थता में नहीं बदल जाती, उनकी सर्वसमावेशी दया तुच्छ यातना में नहीं बदल जाती, तथा उनकी महान शक्ति नपुंसकता में नहीं बदल जाती।

ईश्वर में विश्वास से उत्पन्न होने वाली सैकड़ों वास्तविकताओं में से, "चूंकि" से शुरू होने वाले पैराग्राफ में वर्णित ये आठ वास्तविकताएँ दर्शाती हैं कि पुनरुत्थान होगा। पुरस्कार और दंड के निवास अपने द्वार खोलने के बाद ही पृथ्वी का महत्व और केंद्रीयता, और हमारा सच्चा महत्व और मूल्य, वास्तव में पूरा होगा; और सर्वज्ञ शासक का न्याय, बुद्धि, दया और संप्रभुता, जो हमारे ग्रह और हमारे निर्माता और भगवान हैं, उनकी सभी पूर्णता के साथ शाश्वत रूप से प्रकट होंगे। शाश्वत भगवान के सभी सच्चे दोस्त और उत्साही प्रेमी शाश्वत विनाश से बच जाएंगे, और उनमें से सबसे करीबी और प्यारे को उन पवित्र सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाएगा, जिनसे पूरे ब्रह्मांड को प्रसन्न और ऋणी बनाया गया है। और शाश्वत संप्रभु की पूर्णताएं खुद को दोष रहित, उनकी शक्ति को अक्षमता से रहित और उनके न्याय को उत्पीड़न से रहित होने की पुष्टि करेंगी। संक्षेप में, परलोक मौजूद है क्योंकि भगवान मौजूद हैं।

जिस तरह से ईमान के ऊपर बताए गए तीन स्तंभ- ईश्वर पर ईमान, पैगम्बरियत पर ईमान और ईश्वरीय किताबों पर ईमान- पुनरुत्थान की गवाही देते हैं, साथ ही उनके सत्य होने के सभी प्रमाण भी, उसी तरह से ईमान के बाकी दो स्तंभ- ईश्वर के फ़रिश्तों और नियति पर ईमान, जो भी अच्छा या बुरा हमारे साथ होता है, वह मानवीय स्वतंत्र इच्छा को छोड़कर और सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा बनाए गए- पुनरुत्थान की आवश्यकता रखते हैं और अनंत काल की दुनिया की गवाही देते हैं। यह इस प्रकार है: उनके साथ किए गए सभी तर्क, गवाहियाँ और बातचीत, जो साबित करती हैं कि फ़रिश्ते मौजूद हैं और ईश्वर की सेवा करते हैं, अप्रत्यक्ष रूप से रूहों की दुनिया, अदृश्य, आख़िरत और आनंद के घर (स्वर्ग) और नर्क के अस्तित्व की भी पुष्टि करते हैं, जो भविष्य में मानवता और जिन्न से आबाद होंगे। क्योंकि फ़रिश्ते ईश्वर की अनुमति से उन दुनियाओं को देख सकते

हैं और उनमें प्रवेश कर सकते हैं। ईश्वरीय सिंहासन के सबसे निकट और मानवता के साथ संवाद करने वाले सभी देवदूत, जैसे कि गेब्रियल, अपने अस्तित्व की रिपोर्ट करते हैं और उसमें यात्रा करते हैं। जिस तरह हम वापस लौटने वाले यात्रियों की रिपोर्ट से अमेरिका के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं (जिसे हमने वास्तव में कभी नहीं देखा है), उसी तरह हम स्वर्गदूतों की रिपोर्ट से अनंत काल, परलोक, स्वर्ग और नर्क के अस्तित्व में विश्वास करते हैं, जिनके पास कई निर्विवाद कथनों का अधिकार है।

---

44 दिव्य पूर्णताएँ परलोक में बिना किसी आवरण के प्रकट होंगी।

अन्याय, कठिनाई, क्रूरता और सभी असमानताओं का उल्लेख किया गया है, जिनसे मानवता, स्वतंत्र इच्छा होने के बावजूद, पीड़ित होती है और दूसरों को भी पीड़ित करती है। (संपादक)

छब्बीसवें वचन (ईश्वरीय कृपा के बारे में) में निहित सभी तर्क
डिक्री और डेस्टिनी), जो डेस्टिनी में विश्वास स्थापित करते हैं, अप्रत्यक्ष रूप से इसकी पुष्टि करते हैं
पुनरुत्थान, हमारे दर्ज किए गए कर्मों का एक अन्य दुनिया में प्रकाशन (
इस दुनिया में होने वाली घटनाओं के लिए, और सर्वोच्च तराजू में उनका वजन।
सभी चीजों का अस्तित्व हमारी आंखों के सामने अंकित और दर्ज किया जाता है, और जीवन
प्रत्येक सजीव प्राणी का इतिहास उसकी स्मृति, उसके बीज और अन्य प्राणियों में अंकित होता है।
टेबलेट जैसे रूप; आत्मा से संपन्न हर प्राणी के कर्म, विशेष रूप से
मानवता, संरक्षित गोलियों पर पंजीकृत हैं। तो, इस तरह के एक सर्वव्यापी
दृढ़ निश्चय, बुद्धिमानी और उद्देश्यपूर्ण आदेश, विस्तृत और बारीकी से सटीक
रिकॉर्डिंग और अंकन केवल स्थायी देने में सक्षम करने के लिए मौजूद हो सकते हैं
सार्वभौमिक न्यायाधिकरण के बाद सर्वोच्च न्यायाधिकरण में पुरस्कार या दंड।
अन्यथा, इतनी व्यापक, सावधानीपूर्वक रिकॉर्डिंग और पंजीकरण
इसका कोई उद्देश्य या अर्थ नहीं होगा, और यह भावना और वास्तविकता के विपरीत होगा। इसके अलावा, यदि
पुनरुत्थान नहीं होता, तो सभी निश्चित अर्थ
ब्रह्माण्ड की पुस्तक में दिव्य भाग्य की कलम द्वारा अंकित किया जाएगा
यह ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने के समान होगा।

संक्षेप में, विश्वास के पांच स्तंभ और उनके प्रमाण इस ओर संकेत करते हैं और इसकी आवश्यकता बताते हैं,
पुनरुत्थान और उस दायरे की गवाही दें और आवश्यकता बताएं
इसके बाद खोला जाएगा। इस प्रकार, पुनरुत्थान का सत्य इतना विशाल और
इसकी महानता के योग्य अडिग समर्थन और प्रमाण, और लगभग एक तिहाई
कुरान इसी को समर्पित है। कुरान इसे ईश्वर में विश्वास के बाद सबसे महत्वपूर्ण स्थान देता है।
यह अपने सभी सत्यों का आधार है, और इसी आधार पर सब कुछ निर्मित करता है।

भाग दो

> ईश्वर की दया के निशानों पर गौर करें, कि वह किस प्रकार पृथ्वी को उसके विनाश के पश्चात पुनर्जीवित करता है।
> निश्चय ही वही है जो मुर्दों को जिलाएगा, और
> उसके पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है। (30:50)

इस आयत में पुनरुत्थान के पक्ष में नौ ठोस तर्क दिए गए हैं। पहला,
जीवन के विषय में जो कुछ कहा गया है और जिसका नीचे विस्तार से वर्णन किया जाएगा, वह बहुत स्पष्ट है और इस ओर संकेत किया गया है:

> अल्लाह की स्तुति हो, जब तुम शाम को प्रवेश करो और जब तुम सुबह में प्रवेश करो। सारी प्रशंसा उसी
> के लिए है, आकाश में और धरती पर और धरती पर।
> रात हो और जब तुम दोपहर में प्रवेश करो। वह जीवितों को बाहर लाता है
> मरे हुओं को जीवितों से निकालता है, और पृथ्वी को उसके बाद पुनर्जीवित करता है
> मृत्यु। वैसे ही तुम भी उत्पन्न किये जाओगे। (30:17–19)

जीवन के गुणों में यह भी कहा गया है कि जीवन छह गुणों से संबंधित है
यह विश्वास के स्तम्भ हैं और यह उनके लिए प्रमाण भी प्रस्तुत करता है।

वास्तव में, चूँकि ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम और फल तथा इसके निर्माण का उद्देश्य जीवन है, इसलिए निश्चित रूप से उस उच्च वास्तविकता को इस क्षणभंगुर, संक्षिप्त, अपूर्ण, पीड़ादायक सांसारिक जीवन तक सीमित नहीं किया जा सकता। जीवन के वृक्ष का उद्देश्य और परिणाम, तथा इसका फल जो इसकी महानता के योग्य है, शाश्वत जीवन या परलोक का जीवन है; यह शाश्वत, पूर्ण सुख के क्षेत्र में जीवन है, जिसके पत्थर, वृक्ष और धरती जीवित हैं। अन्यथा, जीवन का वृक्ष, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण अंग हैं, चेतन प्राणियों, विशेषकर मानवता के लिए फल, लाभ, उद्देश्य या किसी भी वास्तविकता के बिना होगा। मानवता, जो अपनी पूंजी और क्षमताओं के संबंध में, मान लीजिए, गौरेया से बीस गुना अधिक है, और जो ब्रह्माण्ड में सबसे श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण प्राणी है, जीवन के सुख के संबंध में गौरेया से बीस गुना नीचे गिर जाएगी, और सबसे दुखी, सबसे पतित बन जाएगी। इसके अलावा, अतीत के दुखों और भविष्य के भय से घिरे रहने के कारण, सबसे कीमती उपहार, तर्क, लगातार मानव हृदय को घायल कर देगा; क्योंकि यह एक ही सुख को नौ दुखों में मिला देता है, यह सबसे भयंकर पीड़ा बन जाएगा। इसलिए, यह दावा कि कोई शाश्वत जीवन नहीं है, एक बहुविध झूठ है। नतीजतन, इस दुनिया का जीवन, जो हर वसंत में हमारी आँखों के सामने पुनरुत्थान के सैकड़ों-हजारों उदाहरण दिखाता है, निर्णायक रूप से परलोक में विश्वास का आधार साबित होता है।

क्या यह संभव है कि सर्वशक्तिमान कार्य-प्रबन्धक, जो बुद्धि, अनुग्रह और दया के साथ आपके शरीर, बगीचे और देश में आपके जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों और अंगों को तैयार करता है, और उन्हें ठीक समय पर आपके पास पहुंचाता है, जो आपके पेट द्वारा पोषण की इच्छा के माध्यम से किए गए भोजन के लिए विशेष प्रार्थना को भी जानता और सुनता है, और जो दिखाता है कि वह असंख्य स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के साथ इसे तृप्त करके इसकी प्रार्थना स्वीकार करता है - क्या यह संभव है कि वह आपको देखता या जानता नहीं है, या वह मानवता के सबसे महान लक्ष्य, शाश्वत जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों को तैयार नहीं करता है, या वह परलोक का निर्माण और स्वर्ग का निर्माण न करके अनंत काल के लिए मानवता की सबसे जरूरी, महत्वपूर्ण, सामान्य और सबसे आवश्यक और उचित प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करता है, या वह मानवता, पृथ्वी के शासक और परिणाम को पेट के समान महत्वपूर्ण नहीं मानता है, वह इसकी सबसे शक्तिशाली, सामान्य प्रार्थना को अनदेखा करता है, जो जमीन से लेकर दिव्य सिंहासन तक गूंजती है, जिससे उसकी पूर्ण बुद्धि और अंतहीन दया को अस्वीकार कर दिया जाता है? भगवान न करे, एक लाख बार, भगवान न करे!

और क्या यह संभव है कि वह सबसे छोटे जीवित प्राणी की सबसे गुप्त आवाज को सुन ले, उसकी विनती पर ध्यान दे, उसकी ज़रूरतों को पूरा करे, उसे पूर्ण देखभाल और चिंता के साथ पोषण दे, और अपने बड़े प्राणियों को भी उसकी सेवा करने के लिए कहे, लेकिन क्या उसे ऐसा करना चाहिए?

महानतम, सबसे मूल्यवान, अमर और सबसे नाजुक "जीवन" की गड़गड़ाहट भरी आवाज़ को न सुन पाना? क्या यह संभव है कि वह अनंत काल के लिए इसकी अत्यंत महत्वपूर्ण दलील और प्रार्थना पर विचार न करे? क्या यह संभव है कि वह एक शानदार, आज्ञाकारी सेना की अनदेखी करते हुए एक साधारण सैनिक को अत्यंत सावधानी से सुसज्जित और बनाए रखे? क्या यह संभव है कि वह एक अणु को देखे और सूर्य को न देखे? क्या यह संभव है कि वह मच्छर की भिनभिनाहट सुने और गड़गड़ाहट की गर्जना न सुने? भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे!

और क्या तर्क किसी भी तरह से यह स्वीकार कर सकता है कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी जो असीम दयालु, प्रेममय और स्नेही है, और जो अपनी कला से बहुत प्रेम करता है और स्वयं को बहुत प्रेम करता है और जो उससे प्रेम करते हैं उनसे बहुत प्रेम करता है, वह उस जीवन को, जो उससे किसी भी चीज़ से अधिक प्रेम करता है और प्रेम करने योग्य है और स्वभाव से अपने निर्माता की पूजा करता है, और आत्मा, जीवन का सार और पदार्थ, दोनों को अनंत काल तक अस्तित्वहीन कर देगा; इस प्रकार अपने उस प्रिय मित्र को स्वयं से अनंत काल तक क्रोधित कर देगा, और उसे इस भयानक तरीके से घायल कर देगा कि वह अपनी दया और अपने प्रेम के प्रकाश के सार और अर्थ को नकारता भी है और नकारने का कारण भी बनता है? एक लाख बार, भगवान न करे! वह परम कृपा और सौंदर्य जो अपने प्रकटीकरण से ब्रह्मांड को सुशोभित करता

निष्कर्ष: चूँकि इस दुनिया में जीवन है, इसलिए जो लोग जीवन के रहस्य को समझते हैं और अपने जीवन का दुरुपयोग नहीं करते हैं, उन्हें अनंत स्थायित्व और अनंत स्वर्ग के निवास में अनंत जीवन मिलेगा। इस पर हमारा विश्वास है!

पृथ्वी पर पारदर्शी वस्तुएँ सूर्य के प्रतिबिंबों से चमकती हैं, और समुद्र और नदियों की सतह पर बुलबुले सूर्य के प्रकाश की चमक से चमकते और बुझते हैं, जबकि उनके बाद आने वाले बुलबुले फिर से दर्पण के रूप में कार्य करते हैं जो छोटे सूर्य को प्रतिबिंबित करते हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे चमक, पारदर्शी वस्तुओं और बुलबुलों में परावर्तित सूर्य ऊपर एक ही सूर्य की परावर्तित छवियाँ हैं। वे असंख्य आवाज़ों के साथ सूर्य के अस्तित्व का गुणगान करते हैं, और अपनी प्रकाश की उंगलियों से उसकी ओर इशारा करते हैं।

ठीक उसी प्रकार, जीवनदाता के सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर नाम की सर्व-व्यापक अभिव्यक्ति के माध्यम से, जीवित प्राणी दिव्य शक्ति के माध्यम से पृथ्वी और समुद्र में चमकते हैं, और फिर उनका अनुसरण करने वालों के लिए रास्ता बनाने के लिए, "हे जीवित!" कहकर, अदृश्य के पर्दे के नीचे गायब हो जाते हैं, इस प्रकार शाश्वत जीवन और शाश्वत सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर के आवश्यक अस्तित्व का संकेत और साक्ष्य देते हैं।

अस्तित्ववान। इसी तरह, सभी प्रमाण जो ईश्वरीय ज्ञान की गवाही देते हैं जो ब्रह्मांड की व्यवस्था को प्रकट करता है, और सभी प्रमाण जो ईश्वरीय शक्ति को प्रदर्शित करते हैं जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है, सभी वास्तविकताएँ जो ईश्वरीय इच्छा को स्थापित करती हैं जो ब्रह्मांड को निर्देशित करती है, सभी संकेत और चमत्कार जो ईश्वरीय वाणी और रहस्योद्घाटन के माध्यम के रूप में पैगंबरी मिशनों को साबित करते हैं, और सभी प्रमाण जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के सात गुणों की गवाही देते हैं45 - ये सभी एकमत से सर्व-जीवित, स्वयं-अस्तित्ववान के जीवन को इंगित करते हैं और गवाही देते हैं। क्योंकि जिस चीज में दृष्टि है, उसमें जीवन अवश्य है; सुनना जीवन का संकेत है; बोलना जीवन के अस्तित्व को इंगित करता है; और इच्छा या स्वतंत्र चुनाव जीवन को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार, पूर्ण शक्ति, सर्वव्यापी इच्छा और सर्वव्यापी ज्ञान जैसे सर्वव्यापी गुण, जिनका अस्तित्व ब्रह्मांड में उनके कार्य द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, उनके अस्तित्व को स्थापित करने वाले सभी साक्ष्यों के साथ, सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देते हैं और उसके शाश्वत जीवन को प्रमाणित करते हैं, जो अपनी एक छाया से ही पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है, और अपनी एक अभिव्यक्ति से ही परलोक के पूरे क्षेत्र को उसके सभी कणों सहित जीवन प्रदान करता है।

जीवन स्वर्गदूतों में विश्वास से भी संबंधित है, और यह विश्वास अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध होता है।

चूँकि ब्रह्माण्ड में सबसे महत्वपूर्ण परिणाम जीवन है; चूँकि जीवित प्राणी अपने मूल्य के कारण सबसे अधिक फैले हुए और सबसे अधिक मात्रा में सृजित प्राणी हैं, और वे कारवाँ में आते-जाते हुए पृथ्वी के अतिथिगृह को सजीव बनाते हैं; चूँकि पृथ्वी इतने सारे प्रकार के जीवित प्राणियों से भरी हुई है और उनके निरंतर नवीकरण और गुणन के लिए दिव्य प्रयोजनों के कारण लगातार खाली और भरी जा रही है; चूँकि सड़ते और भ्रष्ट पदार्थ भी असंख्य प्रकार के प्राणियों के निर्माण का माध्यम बन जाते हैं, जिससे पृथ्वी एक ऐसा स्थान बन जाती है जहाँ असंख्य सूक्ष्मजीव पनपते हैं; और चूँकि चेतना और बुद्धि,

45 ईश्वर के तीन प्रकार के गुण हैं: "सार" के आवश्यक गुण, सकारात्मक गुण और नकारात्मक गुण। उसके सकारात्मक गुण उसकी पूर्ण एकता और ईश्वर क्या है, के दावे को संदर्भित करते हैं; उसके नकारात्मक गुण ईश्वर के नकार या ईश्वर क्या नहीं है, को संदर्भित करते हैं। सार के आवश्यक गुण हैं अस्तित्व, कोई आरंभ न होना, स्थायित्व, निर्मित से असमानता, एकता और आत्मनिर्भरता। सकारात्मक गुण हैं जीवन, ज्ञान, शक्ति, इच्छा, वाणी, देखना, सुनना और, कुछ धर्मशास्त्रियों के अनुसार, सृष्टि। नकारात्मक गुणों को इस प्रकार समझाया जा सकता है: ईश्वर को किसी भी भौतिक या मानवरूपी शब्दों से वर्णित नहीं किया जा सकता है। वह शरीर, रंग और आकार से बना नहीं है। कोई भी व्यक्ति या वस्तु उसे देख नहीं सकती, उसकी कल्पना नहीं कर सकती या उसे समझ नहीं सकती। उसे पदार्थ या पदार्थ या रूप की आकस्मिकता के संदर्भ में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, उसे अंतरिक्ष के किसी भी हिस्से में स्थानीयकृत नहीं किया जा सकता, उसे समय के किसी भी हिस्से तक सीमित नहीं किया जा सकता, या किसी भी प्राणी के साथ संरेखित और गिना नहीं जा सकता। उसके साथ कुछ भी सह-अस्तित्व या सह-व्यापक नहीं हो सकता। वह कभी पैदा नहीं होता और न ही पैदा होता है। इत्यादि। (अनुवाद)

जो जीवन से आसवित जीवन के शुद्धतम अर्क हैं, और आत्मा, इसका सबसे सूक्ष्म और स्थिर सार, पृथ्वी पर बड़ी मात्रा में बनाया गया है,
परिणाम यह होता है कि पृथ्वी जीवन, बुद्धि, चेतना और आत्मा के साथ पुनर्जीवित हो जाती है - इन सबके कारण यह संभव नहीं है कि स्वर्ग, जो इससे अधिक शक्तिशाली है, वह पृथ्वी पर फिर से आ जाए।
पृथ्वी से अधिक परिष्कृत और विशाल, जीवन और चेतना के बिना छोड़ दिया जाना चाहिए। यह जीवन के अर्थ और उद्देश्य के कारण है कि जीवित, सचेत प्राणी होने चाहिए जो स्वर्ग, सूर्य और सितारों में निवास करते हैं।

प्रत्येक को, और इस प्रकार उन्हें जीवित दिखाते हैं, और जो सृजन का परिणाम प्रदर्शित करते हैं
स्वर्ग के प्राणी, और दिव्य संबोधन प्राप्त करते हैं। ये प्राणी स्वर्गदूत हैं।

जीवन की आवश्यक प्रकृति भी ईश्वर में विश्वास के स्तंभ से संबंधित है।
भविष्यद्वक्ताओं ने इसे अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध किया है। वास्तव में, चूँकि ब्रह्माण्ड को जीवन प्रदान करने के लिए बनाया गया है; और चूँकि जीवन शाश्वत की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है
सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर, साथ ही सबसे उत्तम कढ़ाई
उनकी और उनकी कला के सबसे सुंदर काम की; और अनन्त जीवन के बाद से
स्वयं को प्रदर्शित करता है और संदेशवाहकों को भेजने के माध्यम से जाना जाता है
दिव्य शास्त्रों का रहस्योद्घाटन; और चूंकि भाषण से पता चलता है कि एक
जो बोलता है वह जीवित है - ये सभी बातें दर्शाती हैं कि यह पैगंबर और
ईश्वरीय शास्त्र जो उन पर अवतरित हुए या उनके माध्यम से भेजे गए
जो बोलता है, आदेश देता है, और मना करता है, उसके भाषणों को ज्ञात किया
भौतिक ब्रह्मांड द्वारा छिपे अदृश्य क्षेत्र से परे।
क्योंकि ब्रह्माण्ड में जीवन निश्चित रूप से आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है
अनंत काल तक जीवित रहने वाले की, इसलिए यह पैगंबरों के भेजने और शास्त्रों के रहस्योद्घाटन के स्तंभों से भी संबंधित है, जो कि किरणें हैं,
उस शाश्वत जीवन की अभिव्यक्तियाँ और संचार, और ऐसा ही होता है
उन्हें सांकेतिक रूप से साबित करें। विशेष रूप से, मुहम्मद की पैगम्बरियत,
शांति और आशीर्वाद उस पर हो, और कुरान का अवतरण हो - क्योंकि वे
जीवन की "आत्मा" और बुद्धि की तरह हैं - निश्चित रूप से कहा जा सकता है
जीवन का अस्तित्व सत्य है।

वास्तव में, जिस प्रकार जीवन ब्रह्माण्ड से निकाला गया एक शुद्ध सार है, जिस प्रकार चेतना और इन्द्रिय बोध जीवन से निकाला गया सार है, और बुद्धि चेतना और इन्द्रिय बोध से निकाला गया सार है, और आत्मा जीवन का शुद्ध सार है - वास्तव में, यह स्वयं स्थिर और स्वायत्त जीवन है -

इसी प्रकार मुहम्मद साहब का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन भी है, उन पर शांति और सत्कार हो।
आशीर्वाद, ब्रह्मांड के जीवन और आत्मा से आसुत सबसे परिष्कृत अर्क। मुहम्मद की पैगम्बरी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो,
इंद्रिय बोध, चेतना और से आसुत शुद्धतम अर्क
ब्रह्मांड की बुद्धिमत्ता। वास्तव में, जैसा कि उनके कार्यों से प्रमाणित होता है, पूरा करना-

मुहम्मद का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ब्रह्मांड के जीवन का जीवन है, और उनका संदेशवाहक होना ब्रह्मांड की चेतना का प्रकाश और चेतना है। और कुरान का अवतरण, जैसा कि इसके सदा जीवित सत्यों द्वारा प्रमाणित है, ब्रह्मांड के जीवन की आत्मा और उसकी चेतना की बुद्धि है।

यदि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैगम्बरी का प्रकाश - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - एक दिन ब्रह्माण्ड से चला गया तो ब्रह्माण्ड नष्ट हो जाएगा; और यदि कुरान (पवित्र कुरान) चला गया तो ब्रह्माण्ड पागल हो जाएगा और पृथ्वी अपनी विवेक शक्ति खो देगी तथा अपना अचेत सिर किसी ग्रह पर मार देगी, जिससे विश्व का विनाश हो जाएगा।

जीवन ईश्वरीय नियति में विश्वास के स्तंभ से भी संबंधित है और इसे सांकेतिक रूप से साबित करता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जीवन भौतिक, दृश्यमान दुनिया का प्रकाश है, जिसमें यह व्याप्त है, और चूंकि यह अस्तित्व के उद्देश्य का परिणाम है, और चूंकि यह ब्रह्मांड के निर्माता के लिए सबसे व्यापक दर्पण है और ईश्वरीय प्रभुत्व के कार्यों का सबसे सही सार और सूचकांक है, और - अगर हम ऐसा कह सकते हैं - इन कार्यों के लिए किसी तरह के कार्यक्रम की तरह है, तो निश्चित रूप से, जीवन के लिए यह आवश्यक है कि दृश्य और अदृश्य की दुनिया में, यानी अतीत और भविष्य में, जीव एक क्रम में मौजूद हों और पहचाने जाएं, ज्ञात हों, और ब्रह्मांड में सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना और संचालन के नियमों का पालन करने के लिए पूर्वनिर्धारित हों।

वृक्ष का मूल बीज और उसकी जड़ें, साथ ही उसके फल के बीज, सभी जीवित हैं, ठीक वैसे ही जैसे वृक्ष स्वयं एक संपूर्ण इकाई है; वास्तव में, वे वृक्ष की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म जीवन के नियमों का पालन करते हैं। इसी प्रकार, पिछली शरद ऋतु द्वारा छोड़े गए बीज और जड़ें, साथ ही इस वसंत के समाप्त होने के पश्चात भविष्य के वसंत में छोड़े जाने वाले बीज और जड़ें - वे सभी वसंत की तरह ही जीवन रखते हैं, और जीवन के नियमों के अधीन हैं। ठीक उसी प्रकार, ब्रह्मांड के वृक्ष की सभी शाखाओं और टहनियों में से प्रत्येक का एक अतीत और एक भविष्य है। उनके अस्तित्व की एक श्रृंखला है जिसमें उनकी पिछली और भविष्य की अवस्थाएँ और चरण शामिल हैं। प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक प्रजाति के प्रत्येक सदस्य के विभिन्न, अनेक अस्तित्व और अवस्थाएँ, जो दिव्य ज्ञान में निहित हैं, उस ज्ञान से संबंधित या उसमें दर्ज अस्तित्व की एक श्रृंखला बनाती हैं। उनके बाह्य अस्तित्व की तरह, दिव्य ज्ञान में उनका अस्तित्व सार्वभौमिक, सर्वव्यापी जीवन से अमूर्त जीवन की एक किरण को वहन करता है। उनके भौतिक जीवन की सभी अवस्थाएँ और चरण, दिव्य भाग्य की इन पट्टिकाओं के अनुसार घटित होते हैं, जो सभी जीवित हैं।

तथ्य यह है कि आत्माओं की दुनिया, भगवान की दुनिया का एक रूप है
अदृश्य, आत्माओं से भरा है, जो स्वयं जीवन या जीवन का सार या पदार्थ हैं, निश्चित रूप से अतीत और भविष्य की आवश्यकता है - जो जीवन का दूसरा रूप हैं

और अदृश्य दुनिया का दूसरा भाग46 — को भी तरजीह दी जानी चाहिए
किसी तरह के जीवन के साथ। इसके अलावा, सही व्यवस्था और सार्थक
व्यवस्था चीजें प्रदर्शित और उनके जीवन के चरणों और फलों का प्रदर्शन
कि उनके पास दिव्य ज्ञान में किसी प्रकार का अमूर्त जीवन है। तो, जीवन,
जो अनन्त जीवन के सूर्य से एक प्रकाश है, उसे सीमित नहीं किया जा सकता
दृश्यमान या भौतिक जगत, यह वर्तमान समय, या देखा गया, बाह्य अस्तित्व। बल्कि, प्रत्येक जगत अपनी क्षमता के अनुसार उस प्रकाश से अभिव्यक्ति प्राप्त करता है, और ब्रह्मांड उसके माध्यम से जीवित और प्रकाशित होता है
यह अपने सभी संसारों के साथ। अन्यथा, जैसा कि गुमराह लोग कल्पना करते हैं, इस स्पष्ट, अस्थायी (भौतिक) जीवन को छोड़कर, प्रत्येक दुनिया में
एक विशाल और भयानक लाश, एक अंधेरा खंडहर।

इस प्रकार, "ईश्वरीय नियति और निर्णय में विश्वास" का आधार समझा जाता है
व्यापक अर्थ में जीवन के माध्यम से और उसके द्वारा स्थापित होता है। अर्थात, दृश्यमान दुनिया की व्यवस्थितता, उसमें जो कुछ भी है और उसके द्वारा उत्पन्न परिणाम
अपने जीवन और जीवन शक्ति को प्रकट करें। इसी तरह, दुनिया से संबंधित
अदृश्य, भूत और भविष्य दोनों के प्राणी (जो स्पष्ट रूप से उनके संसार में आने और संसार से प्रस्थान करने में व्यवस्थितता का संकेत देते हैं)
अपने सांसारिक जीवन के माध्यम से) एक अमूर्त जीवित अस्तित्व और
सर्वशक्तिमान ईश्वर के ज्ञान में अमूर्त उपस्थिति। इस जीवन का निशान
और उपस्थिति भाग्य की पटिया के माध्यम से प्रकट और देखी जाती है
और डिक्री और उनके सांसारिक जीवन के सभी चरणों के माध्यम से।

भाग तीन

प्रश्न: कुरान की बार-बार की गई घोषणाएं, यह एक ही धमाका है
(36:53) और क़ियामत का मामला तो बस पलक झपकने के बराबर है,
जल्दी (16:77) दिखाते हैं कि सर्वोच्च पुनरुत्थान एक में होगा
तत्काल। हमारी सीमित समझ को समझने के लिए एक ठोस सादृश्य की आवश्यकता है
ऐसी अनोखी, चमत्कारी घटना से सहमत हों और उसे स्वीकार करें।

---

४६ मूल शब्द जिसका हम अनुवाद “अदृश्य” या “परमेश्वर की दुनिया” के रूप में करते हैं, उससे मेल खाता है।
अदृश्य" ग़ैब है: वह जिसे हम पूरी तरह या अपेक्षाकृत अपनी पाँच इंद्रियों से नहीं समझ सकते, या जो हमारे लिए पूरी तरह या अपेक्षाकृत अदृश्य और अज्ञात है। जो बिल्कुल है, वह ग़ैब है।
हमारे लिए अज्ञात है "पूर्ण अदृश्य", जबकि हम कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं
के बारे में है "सापेक्ष अदृश्य।" आत्माओं की दुनिया की तरह जिसे हम नहीं देख सकते, और प्रकृति
जिसे हम अपनी इन्द्रियों के माध्यम से नहीं जान सकते, भूत और भविष्य भी हमारे लिए अज्ञात हैं जब तक कि
हम किसी न किसी तरह से उनका ज्ञान प्राप्त करते हैं। भूत और भविष्य, समय की दो शाखाएँ हैं,
वह “क्षेत्र” जहाँ पूर्णतया अदृश्य की दुनिया दृश्यमान दुनिया में प्रकट होती है,
और इसे इसका दूसरा रूप माना जा सकता है। (ट्र.)

उत्तर: पुनरुत्थान से संबंधित तीन बातें हैं: आत्माएं अपने शरीर में वापस लौट जाएंगी; शरीर पुनर्जीवित हो जाएंगे; और शरीरों का पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान किया जाएगा।

पहला मामला: आत्माओं के अपने शरीर में वापस लौटने का एक उदाहरण: एक बेहद अनुशासित सेना के सैनिकों की कल्पना करें। आराम करने के लिए सभी दिशाओं में बिखरने के बाद, उन्हें एक ज़ोरदार बिगुल ध्वनि के साथ वापस बुलाया जा सकता है। महादूत इसराफिल की तुरही निश्चित रूप से बिगुल से कम शक्तिशाली नहीं है। इसके अलावा, हमारी आत्माएँ - जिनमें से प्रत्येक ने "हाँ, तुम हो!" के साथ जवाब दिया, "क्या मैं तुम्हारा भगवान नहीं हूँ?" जो कि अनंत काल की दिशा से आया था जब वे परमाणुओं की दुनिया में थे - किसी भी सैनिक की तुलना में अधिक आज्ञाकारी, अनुशासित और विनम्र हैं। तीसवें वचन ने दृढ़ता से प्रदर्शित किया है कि न केवल आत्माएँ बल्कि सभी परमाणु सर्व-महिमावान की सेनाएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक है।

दूसरा मामला: शरीरों के पुनर्जीवित होने का एक उदाहरण: किसी बड़े शहर में उत्सव के लिए, शहर के बिजलीघर में एक स्विच दबाकर अनगिनत दीपों को तुरंत जलाया जा सकता है। अगर एक भी बिजलीघर होता, तो उससे पूरी दुनिया में अनगिनत दीप जलाना भी संभव होता। अगर इस क्षणभंगुर क्षेत्र में बिजली जैसी ईश्वर की रचना, एक सेवक और एक मोमबत्ती-धारक, अपने निर्माता के प्रशिक्षण और अनुशासन के कारण इस गुण को प्रकट कर सकते हैं, तो पुनरुत्थान निश्चित रूप से पलक झपकते ही और दिव्य बुद्धि के व्यवस्थित नियमों के ढांचे के भीतर हो सकता है, जिसका प्रतिनिधित्व और प्रदर्शन बिजली जैसे उनके हज़ारों प्रकाश देने वाले सेवकों द्वारा किया जाता है।

तीसरा मामला: क़यामत के दिन मानव शरीरों के पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान के लिए हज़ारों उपयुक्त उपमाएँ हैं। उदाहरण के लिए, विचार करें कि किस तरह पेड़, जो लोगों की तुलना में कहीं ज़्यादा संख्या में हैं, हर वसंत की शुरुआत के कुछ दिनों के भीतर अपने सभी पत्तों के साथ पिछले साल के पत्तों की तरह पूरी तरह से और लगभग एक जैसे हो जाते हैं। विचार करें कि किस तरह पेड़ों के पत्ते, फूल और फल पिछले वसंत की तरह ही अत्यधिक तेज़ी से फिर से बन जाते हैं। विचार करें कि अनगिनत बीजों, गुठलियों और जड़ों का अचानक जागना, खुलना और जीवित हो जाना, जो वसंत के विकास का मूल हैं। विचार करें कि किस तरह पेड़, खड़े कंकालों की तरह, एक ही आदेश पर अचानक "मृत्यु के बाद पुनरुत्थान" के संकेत दिखाने लगते हैं। विचार करें कि अनगिनत छोटे जीवों का आश्चर्यजनक रूप से फिर से जीवित होना, खास तौर पर मक्खियों की विभिन्न प्रजातियों का फिर से जीवित होना -

---

47 इसराफिल वह प्रधान दूत है जो विनाश से ठीक पहले सुर (तुरही) बजाएगा।
ब्रह्मांड और पुनरुत्थान, जिसका कुरान 39:68 में उल्लेख करता है। (ट्र.)

मुख्यतः वे जो निरंतर अपने चेहरे, आंखों और पंखों को साफ करते हुए हमें हमारे अनुष्ठानिक स्नान और स्वच्छता की याद दिलाते हैं, और हमारे चेहरों को सहलाते हैं - कुछ दिनों के लिए, हालांकि वे सभी मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक संख्या में होते हैं।

यह संसार बुद्धि का क्षेत्र है, परलोक शक्ति का निवास है। अतः, सर्वज्ञ, सर्व-व्यवस्थापक, सर्व-नियंत्रक, सर्व-पालक आदि दिव्य नामों की आवश्यकताओं के अनुसार, संसार में सृष्टि क्रमिक है और एक निश्चित समयावधि तक चलती है।

यह प्रभु के रूप में उनकी बुद्धि द्वारा अपेक्षित है। लेकिन यह देखते हुए कि शक्ति और दया परलोक में बुद्धि से अधिक स्पष्ट हैं, उस क्षेत्र में सृजन तात्कालिक है और पदार्थ, स्थान, समय और अवधि से संबंधित किसी भी चीज़ से मुक्त है। यह दिखाने के लिए कि यहाँ जो करने में एक दिन या एक साल लगता है, परलोक में वह एक पल में पूरा हो जाएगा, कुरान का आदेश है: प्रलय का मामला बस पलक झपकने जैसा है, बल्कि उससे भी तेज़ (16:77)। यदि आप इस बात की पुख्ता पुष्टि चाहते हैं कि पुनरुत्थान अगले वसंत की तरह ही निश्चित रूप से आएगा, तो दसवें और उनतीसवें शब्दों का अध्ययन करें।

चौथा विषय: इस संसार के विनाश के विषय में: यदि कोई उल्का-

यदि ईश्वर की आज्ञा से कोई ग्रह या क्षुद्रग्रह इस ग्रह से टकरा जाए तो हमारा निवास स्थान तुरन्त नष्ट हो जाएगा, जैसे कि दस वर्ष में बनने वाला महल एक मिनट में नष्ट हो जाता है।

चौथा भाग उसने

> कहा: "इन हड्डियों को, जब ये सड़ चुकी होंगी, कौन जीवित करेगा?" कह दो: "जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया था, वही इन्हें जीवित करेगा।" वह सारी सृष्टि का पूरा ज्ञान रखता है। (36:78)

दसवें वचन के नौवें सत्य में तीसरी तुलना में इस्तेमाल की गई उपमा को याद करें। संक्षेप में: कोई व्यक्ति आपकी आंखों के सामने एक दिन में एक विशाल सेना इकट्ठा कर लेता है। अगर आपसे कहा जाए कि वह व्यक्ति बिगुल बजाकर उस बटालियन को फिर से इकट्ठा कर सकता है जिसके सदस्य आराम करने के लिए बिखर गए हैं, और आप जवाब दें कि वह ऐसा नहीं कर सकता, तो आपको पागल समझा जाएगा।

इसी तरह, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ने अपनी आज्ञा से सभी सजीव प्राणियों के परमाणुओं और सूक्ष्म शारीरिक घटकों को शून्य से बनाया । फिर उन्होंने उन्हें रिकॉर्ड किया और उन्हें उनके स्थानों पर नियुक्त किया, जैसे कि वे एक सेना हों, पूर्ण क्रमबद्धता और संतुलन के साथ। हर वसंत के दौरान, वह असंख्य विभिन्न प्रजातियों और सजीव प्राणियों के समूहों का निर्माण करता है-

---

48 यह दुनिया बुद्धि का क्षेत्र है, जहाँ चीज़ें कुछ उद्देश्यों और विचार-विमर्श के अनुसार, कुछ नियमों के अनुरूप होती हैं, और जिसमें ईश्वर आमतौर पर कारण और प्रभाव के पर्दे के पीछे से कार्य करता है। परलोक शक्ति का निवास है, जहाँ ईश्वर बिना किसी पर्दे के कार्य करेगा। (ट्र.)

प्रत्येक चरित्र एक सेना जैसा है। निश्चित रूप से वह इसराफिल की तुरही की ध्वनि के साथ, सभी मौलिक परमाणुओं और मूल घटकों को फिर से इकट्ठा कर सकता है, जो शरीर के आदेश के प्रति अपनी सामूहिक अधीनता के माध्यम से परस्पर परिचित थे - एक ऐसा आदेश जो किसी भी बटालियन से बढ़कर है। यदि आप इसे असंभव मानते हैं, तो क्या आप तर्कहीन नहीं हैं?

कुरान अपनी कुछ आयतों में हमें बताता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमारे दिलों को यह यकीन दिलाने के लिए कि वह परलोक में क्या-क्या अद्भुत कार्य करेगा, और हमारे मन को उनकी पुष्टि करने के लिए तैयार करने के लिए यहाँ क्या-क्या चमत्कार किए हैं। या यह उन अद्भुत कार्यों का वर्णन करता है जो वह भविष्य और परलोक में करेगा, जो हम यहाँ देख रहे हैं, उसके साथ समानताओं के द्वारा। एक उदाहरण है: क्या मनुष्य ने यह नहीं सोचा कि हमने उसे (वीर्य की एक बूंद जितनी छोटी शुरुआत) से बनाया है? फिर भी, वह एक खुला, भयंकर विरोधी बन जाता है (36:77), और सूरा के अंत तक की अगली आयतें।

बुद्धिमान कुरान पुनरुत्थान को सात या आठ अलग-अलग तरीकों से स्थापित करता है। यह सबसे पहले हमारा ध्यान हमारी अपनी उत्पत्ति की ओर आकर्षित करता है: "आप देखते हैं कि आपने कैसे प्रगति की है - एक शुक्राणु की बूंद से गर्भ की दीवार पर लटके हुए रक्त के थक्के तक, एक लटके हुए रक्त के थक्के से एक आकारहीन मांस के लोथड़े तक, और एक आकारहीन मांस के लोथड़े से कई अन्य चरणों से गुज़रते हुए एक मानव रूप तक। फिर आप अपनी दूसरी रचना को कैसे नकार सकते हैं? यह पहले की तरह ही है, या उससे भी आसान है [भगवान के लिए पूरा करना]।"

इसके अलावा, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें दी गई कुछ महान नेमतों का उल्लेख किया है: जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग बनाई (36:80)। उसका मतलब है: "क्या वह जिसने तुम्हें ऐसी नेमतें दी हैं, वह तुम्हें अपनी मर्जी से काम करने की आज़ादी देता है और फिर कब्र में जाकर हमेशा के लिए सो जाता है और फिर से नहीं उठता?" उसका यह भी मतलब है: "तुम देखते हो कि कैसे मरे हुए या सूखे पेड़ फिर से ज़िंदा हो जाते हैं और हरे हो जाते हैं। फिर भी तुम यह असंभव समझते हो कि लकड़ी जैसी हड्डियाँ फिर से ज़िंदा हो जाएँगी? इसके अलावा, क्या वह जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है, वह मनुष्य को, जो आकाश और पृथ्वी का फल है, बनाने और फिर से बनाने में असमर्थ है? क्या वह जो एक विशाल वृक्ष पर शासन करता है, उसके फल को महत्व नहीं देता और उसे दूसरों के लिए छोड़ देता है? क्या तुम सोचते हो कि वह सृष्टि के वृक्ष के परिणाम, मानवता को, उसके अपने या दूसरों के भरोसे छोड़ देगा, और इस तरह उस सृष्टि के वृक्ष को, जिसके सभी भाग बुद्धि से गूँथे गए हैं, बर्बाद होने देगा?"

भगवान यह भी कहते हैं: "जो पुनरुत्थान के समय तुम्हें जीवन देगा, वही है जिसके सामने पूरा ब्रह्मांड एक आज्ञाकारी सैनिक की तरह है। यह 'हो जाओ!' की आज्ञा के आगे अपना सिर झुकाता है और वह हो जाता है। उसके लिए वसंत का निर्माण करना उतना ही आसान है जितना एक फूल का निर्माण करना। यह वही है जिसकी शक्ति के लिए सृजन होता है-

सभी जानवरों को मारना उतना ही आसान है जितना एक मक्खी को पैदा करना। किसी को भी यह पूछकर उसकी शक्ति का विरोध या चुनौती नहीं देनी चाहिए: “इन हड्डियों में जीवन कौन देगा?”

अतः महिमावान है वह जिसके हाथ में समस्त जगत का सम्पूर्ण प्रभुत्व है।
और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे (36:83), क़ुरआन कहता है:
सर्वशक्तिमान सब कुछ नियंत्रित करता है और उसके पास सब कुछ की चाबियाँ हैं। वह बारी-बारी से सब कुछ नियंत्रित करता है।
रात और दिन, सर्दी और गर्मी, उतनी ही आसानी से जैसे किताब के पन्ने पलटना
पुस्तक। वह इतना सर्वशक्तिमान है कि एक घर बंद करने जैसा है
और दूसरा खोलकर, वह इस दुनिया को बंद कर देता है और अगली दुनिया को खोल देता है।
उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे (36:83) वह तुम्हें जिलाएगा, और स्वर्ग की ओर ले जाएगा।
पुनरुत्थान के मैदान में, और अपनी राजसी उपस्थिति में तुम्हारा न्याय करेगा।

ऐसी आयतें हमारे मन और हृदय को पुनरुत्थान को स्वीकार करने के लिए तैयार करती हैं,
क्योंकि वे दिखाते हैं कि यह हमारे जीवन की कई सामान्य चीजों से कैसे मिलता जुलता है।
इसके अलावा, कुरान कभी-कभी परलोक में ईश्वर के कार्यों का उल्लेख इस प्रकार करता है
उनकी सांसारिक समानताओं की ओर ध्यान आकर्षित करना, ताकि संदेह के लिए कोई जगह न बचे
और इनकार। उदाहरण सूरा में मिलते हैं जो इस प्रकार से शुरू होते हैं: जब सूर्य
तह कर दिया जाता है (81:1); जब आकाश खुल जाता है (82:1); और जब आकाश फट जाता है (84:1)। इन सूरों में सर्वशक्तिमान ने दुनिया के हालात का वर्णन किया है।
विनाश और विशाल क्रांतियों और प्रभु के कार्यों के दौरान
पुनरुत्थान इस तरह से हो कि हम दुनिया में वैसी ही घटनाएँ देखें, अर्थात्,
वसंत और शरद ऋतु के दौरान, और इसलिए वर्णित भयानक घटनाओं की कुछ समझ हो सकती है। इन तीन सूरों का संक्षिप्त विश्लेषण भी
यह बहुत लंबा होगा, मैं उदाहरण के तौर पर केवल एक श्लोक का हवाला दूंगा: जब
(प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोल दी गयीं (81:10)।

इस आयत में कहा गया है कि पुनरुत्थान के समय प्रत्येक व्यक्ति के कर्म
लिखित पृष्ठ पर प्रकट किया जाएगा। पहली नज़र में, यह बल्कि प्रतीत होता है
अजीब और समझ से परे। लेकिन जैसा कि सूरा इंगित करता है, इसके अलावा
वसंत ऋतु में पुनरुत्थान के दौरान होने वाली घटनाओं के सामान्य नवीनीकरण में कई अन्य उदाहरण हैं, "स्क्रॉल को खोलना" भी बहुत स्पष्ट है
समानांतर। हर फलदार पेड़ और फूल वाले पौधे के अपने गुण होते हैं,
कार्य और कर्म। यह अपने दिव्य नामों को प्रकट करने के तरीके के अनुसार अपने लिए विशेष प्रकार की पूजा करता है। इस प्रकार, इसके सभी कर्म (इसका जीवन-चक्र)
अंकुरण से लेकर पुष्पन और फलन तक) को रिकॉर्ड किया जाता है या
इसके प्रत्येक बीज में अंकित है जो अगले वसंत में किसी अन्य भूखंड में उभरेगा
मिट्टी। आकार और रूप की जीभ की तरह, पेड़ या फूल वाले पौधे
[पिछली शरद ऋतु में दफनाए गए बीजों से उगना] वाक्पटुता से इंगित करता है
मूल वृक्ष या फूल वाले पौधे के जीवन और कर्मों के अलावा, वे फैलते भी हैं या बिछाते भी हैं
उनकी शाखाओं, टहनियों, पत्तियों, फूलों और फलों के माध्यम से उनके कर्मों के पन्ने खोलते हैं। इस प्रकार वह जो मनुष्य के रूप में हमारी आँखों के सामने यह कार्य करता है-

वह अत्यन्त तत्वदर्शी, रक्षक, व्यवस्था करनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला, सूक्ष्मदर्शी है, वही है जो कहता है, जब पुस्तकें खोल दी जाएँगी।

आप इस सादृश्य के माध्यम से पुनरुत्थान के अन्य मुद्दों को भी समझ सकते हैं।
मैं आपकी मदद के लिए एक और उदाहरण का उल्लेख करूँगा: जब सूर्य को मोड़ा जाता है (81:1)। मोड़े जाने (जिसका अर्थ है “लुढ़का हुआ” या “लपेटा हुआ”) के शानदार रूपक के अलावा, यह श्लोक कई संबंधित घटनाओं का संकेत देता है: सबसे पहले: सर्वशक्तिमान ने अपनी दया के

खजाने से एक रत्न जैसा दीपक - सूर्य - निकालकर दुनिया को दिखाया, ताकि वह दुनिया को रोशन कर सके। दुनिया को बंद करने के बाद, वह उस रत्न को फिर से उसके आवरणों में लपेटेगा और उसे हटा देगा।

दूसरा: सूर्य को एक अधिकारी माना जा सकता है जिसे प्रकाश को फैलाने तथा पृथ्वी के सिर के चारों ओर बारी-बारी से प्रकाश और अंधकार को लपेटने का कार्य सौंपा गया है।
हर शाम को उसे आदेश दिया जाता है कि वह अपनी वस्तु (प्रकाश) को समेटे और छिप जाए। कभी-कभी सूरज बहुत कम काम करता है, क्योंकि बादल उसे ढक लेते हैं या चाँद ऐसा पर्दा बना लेता है जो उसे अपना काम पूरी तरह से करने से रोकता है। जिस तरह वह ऐसे कारणों से थोड़े समय के लिए अपने खाते को बंद कर देता है, उसी तरह किसी समय यह अधिकारी अपने पद से इस्तीफा दे देगा। भले ही ऐसी बर्खास्तगी का कोई कारण न हो, लेकिन उसके चेहरे पर दो धब्बे - जो अभी छोटे हैं और बढ़ने वाले हैं - इस हद तक बढ़ सकते हैं कि सूरज अपने रब के आदेश से उस प्रकाश को वापस ले लेगा जिसे वह धरती के सिर के चारों ओर लपेटता है। भगवान उस प्रकाश को सूरज के सिर के चारों ओर लपेट देगा और कहेगा: "आओ, धरती के प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है। अब जाओ जहन्नम में और उन लोगों को जला दो जिन्होंने तुम्हारी पूजा की और इस तरह तुम्हारे जैसे आज्ञाकारी अधिकारी का विश्वासघात करके मजाक उड़ाया।" अपने काले, दागदार चेहरे से सूरज यह हुक्म सुनाता है: जब सूरज मुड़ा हुआ होगा (81: 1)।

भाग पाँच एक

हदीस में कहा गया है कि एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बर भेजे गए हैं,49 जो मानवता में सबसे प्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित हैं। इन सभी पैगम्बरों ने ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और अपने स्वयं के आध्यात्मिक अवलोकन के आधार पर सर्वसम्मति से और पूर्ण सहमति से यह समाचार दिया कि आख़िरत मौजूद है, कि मनुष्य वहाँ भेजे जाएँगे, और यह कि सृष्टिकर्ता उसे अपने वादे के अनुसार लाएगा। इसके अलावा, एक सौ चौबीस मिलियन संतों ने आध्यात्मिक प्रकाश, खोज और अवलोकन के साथ पैगम्बरों की रिपोर्टों की पुष्टि की है, जिस हद तक निश्चितता उत्पन्न होती है-

---

49 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 5:265; इब्न हिब्बन, अस-सहीह, 2:77. (ट्र.)

ज्ञान से प्रेरित होकर, और परलोक के अस्तित्व की गवाही दी। साथ ही, सर्वज्ञ निर्माता के सभी नाम, इस दुनिया में अपनी अभिव्यक्तियों के माध्यम से, एक शाश्वत क्षेत्र के बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व को दर्शाते हैं और इसकी आवश्यकता बताते हैं। उदाहरण के लिए, शाश्वत शक्ति, जो हर वसंत में धरती पर मृत पेड़ों की असंख्य लाशों को "हो जाओ! और यह हो गया" की आज्ञा के साथ जीवन देती है, और जो मृतकों के पुनरुत्थान के नमूने के रूप में पौधों और जानवरों की सैकड़ों हज़ारों प्रजातियों को पुनर्जीवित करती है, सबसे स्पष्ट रूप से परलोक के अस्तित्व को आवश्यक बनाती है। इसी तरह, अनंत, शाश्वत ज्ञान, जो किसी भी चीज़ को व्यर्थ या उद्देश्यहीन नहीं होने देता है, और शाश्वत दया और सतत अनुग्रह, जो पूर्ण करुणा और अत्यंत अद्भुत तरीके से, सभी जीवित प्राणियों को पोषण प्रदान करता है जिन्हें इसकी आवश्यकता है, और वसंत में थोड़े समय के लिए उन्हें अपने अलंकरण और सजावट की कई तरह की किस्मों को प्रदर्शित करने की अनुमति देता है, परलोक की आवश्यकता है।

इसके अलावा, मनुष्य ब्रह्मांड का सबसे उत्तम फल है और इसके निर्माता का सबसे प्रिय प्राणी है, और सभी प्राणियों में मनुष्य ब्रह्मांड में अन्य प्राणियों के साथ सबसे अधिक निकटता से और गहराई से जुड़ा हुआ और चिंतित है। अनंत काल के प्रति तीव्र, अडिग और निरंतर प्रेम तथा स्थायित्व की आकांक्षा जो मानव स्वभाव में जन्मजात है, एक स्थायी क्षेत्र, सुख का एक शाश्वत निवास के अस्तित्व को साबित करती है जो इस क्षणभंगुर दुनिया का अनुसरण करेगा, इतना निर्णायक रूप से कि वे परलोक को उसी निश्चितता के साथ स्वीकार करने की आवश्यकता रखते हैं जिस तरह से हम इस दुनिया के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।50

चूंकि सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक जो बुद्धिमान कुरान हमें सिखाता है वह है परलोक में विश्वास, और चूंकि यह विश्वास इतना शक्तिशाली है और यह ऐसी आशा और सांत्वना प्रदान करता है कि यदि एक व्यक्ति एक लाख बार बुढ़ापे से ग्रसित हो जाए, तो इस विश्वास से उत्पन्न सांत्वना उसका सामना करने के लिए पर्याप्त होगी, तो निश्चित रूप से हम बुजुर्गों को कहना चाहिए, "पूर्ण विश्वास के लिए सभी प्रशंसा भगवान को है," और अपने बुढ़ापे से प्यार करना चाहिए।

---

[50] नीचे दी गई तुलना से यह समझा जा सकता है कि पहले से मौजूद किसी चीज़ या स्पष्ट तथ्य की रिपोर्ट करना कितना आसान है और उसे नकारना कितना मुश्किल है। अगर कोई कहता है: “इस धरती पर कहीं एक अद्भुत बगीचा है जो फलों के रूप में “डिब्बाबंद” दूध देता है, और दूसरे लोग इस पर विवाद करते हैं, तो पहले व्यक्ति को केवल बगीचा या उसकी कुछ उपज दिखानी होगी। हालाँकि, इनकार करने वालों को अपने इनकार को सही ठहराने के लिए पूरी दुनिया का निरीक्षण और प्रदर्शन करना चाहिए। इसी तरह, दो सच्चे गवाहों (जैसे कि पैगंबर या संत) की गवाही जन्नत के अस्तित्व को स्थापित करती है, भले ही हम दूसरों द्वारा दिखाए गए कई संकेतों और संकेतों को अनदेखा कर दें जो इसके अस्तित्व का दावा करते हैं।

इनकार करने वालों को अनंत ब्रह्मांड की जांच, खोज और छानबीन करनी चाहिए और अनंत और शाश्वत समय में यात्रा करनी चाहिए, तभी वे स्वर्ग के अस्तित्व को साबित कर सकते हैं। इसलिए, मेरे बुजुर्ग भाइयों और बहनों, समझिए कि परलोक में विश्वास करना कितना सुरक्षित और सही है।

ग्यारहवाँ शब्द

ग्यारहवाँ शब्द

मानवता और विश्व के सृजन के लिए ईश्वरीय उद्देश्य और निर्धारित प्रार्थनाओं की सच्चाई

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> सूर्य और उसकी चमक की शपथ, और चन्द्रमा जो उसके पीछे चलता है, और दिन जो उसे प्रकट करता है, और रात जो उसे ढाँपती है, और आकाश और उसको बनानेवाले की शपथ, और पृथ्वी और उसको फैलानेवाले की शपथ, और आत्मा और उसको जिसने उसको पूर्णता तक रचा।
> (91:1-7)

हे भाई (बहन), यदि आप मानवता और ब्रह्मांड के निर्माण के दिव्य उद्देश्यों के बारे में कुछ समझना चाहते हैं, और यह जानना चाहते हैं कि प्रतिदिन पाँच प्रार्थनाएँ अनिवार्य क्यों हैं, तो मेरी आत्मा के साथ इस दृष्टांत पर विचार करें: एक राजा के पास बहुमूल्य पत्थरों का एक विशाल खजाना था और गड़े हुए खजाने थे जो केवल उसे ही पता थे। वह सभी उद्योगों में पारंगत था, और उसे सभी कलात्मक और वैज्ञानिक विषयों और अनगिनत ललित कलाओं का व्यापक ज्ञान था। जैसा कि पूर्ण सुंदरता और पूर्णता वाला कोई भी व्यक्ति खुद को देखता और दिखाता है, वह गौरवशाली राजा एक प्रदर्शनी खोलना चाहता था और अपने राज्य की भव्यता, अपने धन की भव्यता और विस्तार, और अपनी कलात्मकता और कौशल के अद्भुत उत्पादों को प्रदर्शित करना चाहता था। वह अपनी सुंदरता और पूर्णता को अपनी विवेकी नज़र से और दूसरों की आँखों के माध्यम से देखना चाहता था।

और इसलिए उसने एक बहुत बड़ा, शानदार महल बनवाना शुरू किया। इसे कई कमरों और कमरों में विभाजित करके, उसने इसे अपनी बेहतरीन और सबसे बेहतरीन चीज़ों से सजाया।

कला के खूबसूरत कामों को सजाया और उसे कीमती पत्थरों से सजाया।
उन्होंने इसे अपने कलात्मक और वैज्ञानिक सिद्धांतों और अनुशासनों के अनुसार बनाया, इसे अपने ज्ञान के चमत्कारी उत्पादों से सुसज्जित किया। अंततः उन्होंने इसे स्थापित किया
उसमें सबसे स्वादिष्ट विशिष्ट खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ वाली तालिकाएँ थीं, और उसने अपने विषयों के प्रत्येक जनजाति के लिए एक उपयुक्त तालिका निर्दिष्ट की थी। उसने उन्हें इस प्रकार से व्यवस्था की
विस्तृत, उदारतापूर्वक और कलात्मक ढंग से ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रत्येक मेज पर
कम से कम सौ अलग-अलग कौशलों के माध्यम से अस्तित्व में आते हैं।

फिर, राजा ने अपने राज्य की सारी प्रजा को दावत पर आमंत्रित किया और
तमाशा देखिए। अपने द्वारा नियुक्त सर्वोच्च सेनापति को यह सिखाकर कि उन्होंने ऐसा महल क्यों बनवाया है और इसकी सामग्री का क्या उपयोग और अर्थ है,
उसने उसे मेहमानों को महल के निर्माता - राजा - के बारे में सूचित करने के लिए भेजा था।
और बताएं कि उन्होंने इसे क्यों बनाया था, उन्हें किन नियमों का पालन करना था, और
महल की वास्तुकला, सजावट, फर्नीचर और आभूषण। सर्वोच्च
कमांडर का यह भी कर्तव्य था कि वह उन सामग्रियों का वर्णन किस प्रकार करे
महल में राजा के कौशल और निपुणता का प्रदर्शन किया गया और यह भी कि कैसे अतिथियों को राजा के कौशल और निपुणता का प्रदर्शन किया गया।
उसे खुश कर सकता था.

इस सर्वोच्च शिक्षक के कई सहायक थे, जिनमें से प्रत्येक को एक शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था।
एक निश्चित विभाग के लिए, जबकि वह स्वयं अपने छात्रों के बीच खड़ा था
सबसे बड़े विभाग में, सभी अतिथियों या दर्शकों को निम्न प्रकार से संबोधित करते हुए:

> हे लोगो! हमारा स्वामी, जो इस महल का मालिक है, अपने आप को इस महल में बनाना चाहता है।
> उसे बनाने से तुम उसे जान पाओगे। बदले में उसे जानो और पहचानो
> वह भी अपने आप को आपके लिए प्यारा बनाना चाहता है
> इन आभूषणों को खरीदो। बदले में उसकी कला और कामों की सराहना करो, जिससे तुम उसके प्रिय बनो। वह तुम्हारे लिए अपना प्यार प्रदर्शित करता है
> उसके इन उपकारों के द्वारा, उसकी आज्ञा मानकर उससे प्रेम करो। उसकी भेंटें तुम्हारे प्रति उसकी देखभाल और करुणा को प्रदर्शित करती हैं, इसलिए उसके प्रति अपना सम्मान दिखाकर उसका धन्यवाद करो। अपनी पूर्णता के इन कार्यों के द्वारा, वह
> अपनी खूबसूरती और शालीनता दिखाना चाहता है। बदले में, एक बड़ी इच्छा प्रदर्शित करें
> उसे देखने और उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए। अपनी विशेष, अद्वितीय
> आप जो कुछ भी देखते हैं उस पर अपनी मुहर लगाकर वह प्रदर्शित करता है कि वह अद्वितीय है,
> पूर्णतः स्वतंत्र और बिना किसी भागीदार के, यह महल और इसका
> सामग्री उसका काम है और विशेष रूप से उसका है। इसलिए, उसकी विशिष्टता, पूर्ण स्वतंत्रता और साथी की कमी को स्वीकार करें।

सर्वोच्च कमांडर या शिक्षक ने अपना संबोधन जारी रखा।
दर्शकों को दो समूहों में विभाजित किया गया।

पहला समूह: चूँकि वे समझदार थे और अपने बारे में जागरूक थे,
महल के अद्भुत दृश्य देखकर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कुछ भी उद्देश्यहीन नहीं हो सकता। उन्होंने सर्वोच्च शिक्षक से राजा के उद्देश्यों के बारे में पूछा और कहा कि,
उनसे माँग की गई। उन्होंने शिक्षक के उत्तर को ध्यानपूर्वक सुना,

राजा ने उनके निर्देशों को स्वीकार किया और राजा को खुश करने के लिए काम किया। बदले में, राजा ने उनके आचरण और शिष्टाचार से प्रसन्न होकर उन्हें एक बहुत बड़े और अवर्णनीय रूप से अधिक सुंदर महल में आमंत्रित किया, जहाँ उन्होंने उन्हें एक उदार राजा के योग्य और ऐसे आज्ञाकारी, अच्छे व्यवहार वाले विषयों के लिए उपयुक्त तरीके से स्थायी रूप से आतिथ्य प्रदान करने का निर्णय लिया।

दूसरा समूह: वे नैतिक रूप से भ्रष्ट थे, और उनमें तर्क-वितर्क की कमी थी। अपनी सांसारिक आत्मा से पराजित होकर, उन्होंने स्वादिष्ट भोजन के अलावा किसी और चीज़ पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सभी सद्गुणों के प्रति अपनी आँखें बंद कर लीं और सर्वोच्च शिक्षक के निर्देशों और उनके शिष्यों की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया।

वे केवल खाने और सोने पर ध्यान देते थे। निषिद्ध पेय पदार्थ पीते हुए, जो किसी अन्य उद्देश्य के लिए तैयार किए गए थे, वे नशे में धुत हो गए और सभी अन्य मेहमानों को परेशान करने लगे। उन्होंने गौरवशाली राजा के नियमों का उल्लंघन किया। इसलिए, उसके सैनिकों ने उन्हें ऐसे बुरे व्यवहार वाले लोगों के लिए उपयुक्त जेल में डाल दिया।

हे मित्र! मेरे साथ इस कथा को सुनने वाले! तुम निश्चय ही समझ गए होगे कि उस प्रतापी राजा ने किस उद्देश्य से यह महल बनवाया था। इन उद्देश्यों की पूर्ति निम्नलिखित दो बातों पर निर्भर करती है:

पहला है सर्वोच्च शिक्षक का अस्तित्व, क्योंकि यदि वह न हो तो ये उद्देश्य निरर्थक हो जाएंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे शिक्षक के बिना कोई समझ से परे पुस्तक केवल पन्नों का एक पैकेट मात्र है।

दूसरा यह कि लोगों को गुरु के निर्देशों का पालन करना चाहिए। इसका मतलब है कि महल के अस्तित्व के लिए गुरु की नितांत आवश्यकता है और लोगों की आज्ञाकारिता ही महल को बनाए रखने का कारण है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि गुरु के बिना, गौरवशाली राजा महल का निर्माण नहीं कर सकता था और जब लोग शिक्षक के निर्देशों की पूरी तरह से अनदेखी करते हैं, तो महल नष्ट हो जाएगा और बदल जाएगा।

हे मित्र! अब, आइए हम उस वास्तविकता को समझें जो दृष्टांत में बताई गई है। महल यह संसार है, जिसकी छत मुस्कुराते हुए सितारों से जगमगाता हुआ आकाश है, जिसका फर्श कई तरह के फूलों से सजी धरती है। राजा सर्व-पवित्र है, अनंत काल का राजा, जिसकी महिमा सातों आकाश और पृथ्वी, अपनी सभी सामग्री के साथ, प्रत्येक के लिए विशेष भाषाओं में करते हैं। वह इतना शक्तिशाली राजा है कि उसने छह दिनों में आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया।51 अपने प्रभुत्व के सिंहासन पर "बैठे"52, वह दिन और दिन बदलता रहता है

---

51 बाइबल की तरह, कुरान में भी उल्लेख है कि ईश्वर ने ब्रह्मांड को छह दिनों में बनाया। हालाँकि, कुरान में कभी भी सुबह और शाम का उल्लेख नहीं किया गया है, और "दिन" को एक सापेक्ष अवधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसका माप परिवर्तनशील है। 22:47, 32:5, और 70:4 देखें: (ट्र.)

52 "प्रभु" के रूप में अनुवादित मूल शब्द रब्ब है। यह ईश्वर को दर्शाता है जो अपने प्राणियों का पालन-पोषण, प्रशिक्षण, शिक्षा, पोषण और प्रशासन करता है। नोट: इसे "प्रभु" अर्थात यीशु मसीह की ईसाई समझ के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। (ट्र.)

रात एक सफेद और काले धागे की तरह, अपने संकेतों को विशाल चादर पर अंकित करती है
ब्रह्मांड का। वह एक है, सर्व-महान और शक्तिशाली, जिसके लिए सूर्य,
चाँद और तारे सब वश में हैं।

महल के विभाग या कमरे हज़ारों दुनियाएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक
एक विशिष्ट तरीके से डिजाइन, सुसज्जित और सजाया गया। सबसे बेहतरीन और सबसे
कला के सुन्दर कार्य ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार हैं, जिन्हें हम देखते हैं
दुनिया भर में; खाद्य पदार्थ ईश्वरीय दया के अद्भुत फल हैं जो
हम यहाँ देखते हैं, विशेष रूप से गर्मियों में; और रसोईघर पृथ्वी की सतह है,
इसकी अग्नि सूर्य की ऊष्मा है और पृथ्वी के केंद्र में अग्नि है।
पत्थर दिव्य पवित्र नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं, और अलंकरण सुव्यवस्थित, सूक्ष्मता से निर्मित प्राणी हैं और पूरी तरह से आनुपातिक हैं
उस शक्ति की कलम के शिलालेख जो इस दुनिया को सुशोभित करते हैं और उस ओर इशारा करते हैं
सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम।

सर्वोच्च कमांडर या शिक्षक हमारे गुरु पैगंबर मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। उनके सहायक अन्य सभी पैगंबर हैं,
उन पर शांति हो, और उसके शिष्य सभी पवित्र और पवित्र विद्वान हैं। सेवक फ़रिश्ते हैं, और आमंत्रित अतिथि जिन्न और इंसान हैं,
और जानवर मानवता की सेवा के लिए बनाए गए हैं। पहले समूह के लोग हैं
विश्वासियों, कुरान के छात्र जो किताब की आयतों की व्याख्या करते हैं
दूसरा समूह अविश्वास और विद्रोही लोगों का है,
"बहरे और गूंगे" गुमराह लोग जो अपनी शारीरिक आत्माओं का पालन करते हैं और
शैतान केवल सांसारिक जीवन को स्वीकार करते हैं और इस प्रकार स्वयं को पशुओं से भी नीचे रखते हैं।

पहला समूह, जिसमें खुश, ईश्वरीय लोग शामिल थे, ने उनकी बात सुनी।
बौद्धिक ज्ञान और आध्यात्मिक कल्याण का शिक्षक का संदेश,
दोनों दुनिया में समृद्धि का मार्ग। वह शिक्षक दोनों की पूजा करने वाला है
सेवक जो दासता के संबंध में अपने स्वामी का वर्णन करता है और उसे
लोगों के बीच जाना जाता है, और अदालत में अपने समुदाय का दूत है
सर्वशक्तिमान ईश्वर; तथा एक रसूल जो पैगम्बरी के सम्बन्ध में अपने स्वामी के आदेशों को कुरान के माध्यम से मानवता और जिन्न तक पहुंचाता है।

खुश लोगों ने रसूल और कुरान पर ध्यान दिया और पाया
स्वयं को ऊंचे पदों पर आसीन तथा अनेक सूक्ष्म एवं मनभावन गुणों से युक्त
निर्धारित प्रार्थना के कर्तव्य, सभी प्रकार की पूजा का सूचकांक:

> प्रथम: उन्होंने ईश्वरीय कार्यों को देखा और स्वयं को ईश्वरीय प्रभुत्व के चमत्कारों के राज्य के वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षकों की स्थिति में देखकर कहा, "ईश्वर सर्व-महान है", इस प्रकार उन्होंने उसकी महिमा और गुणगान किया।
>
> दूसरा: स्वयं को ईश्वरीय संदेश की घोषणा करने की स्थिति में देखना
> पवित्र नामों की अनमोल अभिव्यक्तियाँ, उन्होंने उन्हें सम्मान दिया

सर्व-पवित्र और उसकी स्तुति करते हुए घोषणा की: "सर्व-महिमावान है परमेश्वर। सर्व-महिमावान
स्तुति और आभार परमेश्वर के लिए है।”
तीसरा: अपने बाहरी स्वरूप से स्वाद लेने और अनुभव करने की स्थिति में
और ईश्वरीय दया के खजाने में संग्रहीत उपहारों की आंतरिक अनुभूति,
वे उसका धन्यवाद करने और उसकी स्तुति करने का कर्तव्य पूरा करने लगे।
चौथा: अपने मानसिक तराजू से दिव्य नामों के भण्डार में छिपे रत्नों को तौलने और जानने की स्थिति में

और आध्यात्मिक क्षमताओं के साथ, वे प्रशंसा करने का कर्तव्य पूरा करने के लिए निकल पड़े
और उसे सभी दोषों और दोषों से मुक्त घोषित किया।
पांचवां: गुरु के संदेशों का अध्ययन करने के स्थान पर
अपनी शक्ति की कलम से भाग्य की रेखाओं पर, उन्होंने चिंतन किया
और उसकी सराहना की।

छठा: वस्तुओं के निर्माण में सूक्ष्म सौंदर्य और सूक्ष्मता को देखने की स्थिति में, साथ ही सृजन और कला में भी।
परमेश्वर को सभी दोषों और दोषों से मुक्त घोषित करते हुए, वे अपने महिमामय सर्व-उत्पत्तिकारी और दयालु निर्माता के प्रति प्रेम और लालसा के अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए निकल पड़े।

इसलिए, उल्लिखित स्थानों में पूजा के सभी कर्तव्यों को पूरा करने के बाद
ब्रह्मांड और उसकी सामग्री को ईश्वर की कलाकृति के रूप में देखकर
इस प्रकार ईश्वर को अप्रत्यक्ष रूप से संबोधित करते हुए, वे ईश्वर के चिंतन के स्तर तक पहुँच गए।
सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के कार्यों और उसके कार्य करने के तरीके को देखकर, वे इस बात से आश्चर्यचकित थे कि कैसे सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता स्वयं को चेतन लोगों को ज्ञात कराता है।
अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से प्राणियों को प्रसन्न करना। प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया में, उन्होंने घोषणा की
उनकी उपस्थिति में: "आप सर्व-महिमावान हैं। हम आपको सर्व-महिमावान के रूप में जानने में असमर्थ हैं
आपको जानने का कर्तव्य अपेक्षित है। आपको जानने वाले आपके चमत्कार हैं
आपके प्राणियों में प्रदर्शित है।”

फिर, दयालु भगवान द्वारा स्वयं को प्रेम किये जाने के प्रत्युत्तर में
उसकी दया के प्यारे फल, उन्होंने प्रेम और परमानंद में घोषणा की: केवल आप
हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद मांगते हैं (1:5) इसके बाद,
सच्चे दानदाता की देखभाल और करुणा के प्रति प्रतिक्रिया
उसके शानदार उपहारों के माध्यम से, उन्होंने उसे धन्यवाद दिया और उसकी प्रशंसा की, और कहा: “आप सर्व-महिमावान हैं, और सभी प्रशंसा और कृतज्ञता आपके लिए है।” दूसरे शब्दों में:
"आप धन्यवाद के पात्र हैं, तो हम आपका धन्यवाद कैसे कर सकते हैं? आप इसके बहुत योग्य हैं
धन्यवाद और प्रशंसा कि ब्रह्मांड में आपके सभी उपकार जीभ में आपकी प्रशंसा करते हैं
उनके स्वभाव का। आपकी सभी कृपाएँ दुनिया में व्यवस्थित और प्रदर्शित हैं
बाजार में घूमो और धरती पर तेरी स्तुति और प्रशंसा का बखान करो।
आपकी दया और कृपा के सुन्दर, सुसंगठित फल और उपज

हे कृपालु, आपकी उदारता और उदारता की गवाही दें और धन्यवाद दें
आप सभी प्राणियों की आँखों के सामने हैं।”

फिर, उनकी कृपा, महिमा, पूर्णता और प्रदर्शन के जवाब में
लगातार भर्ती और नवीकृत प्राणियों के “दर्पण” में भव्यता,
उन्होंने घोषणा की: "ईश्वर सर्व-महान है," और धारणा में उसके सामने झुके
उनकी महानता और अपनी स्वयं की नपुंसकता के बारे में। इसके बाद, वे सजदा करके झुक गए
विनम्रता और आश्चर्य और प्रेम के साथ। सर्वशक्तिमान के प्रदर्शन से पहले
उन्होंने उसकी सम्पत्ति की प्रचुरता और उसकी दया की व्यापकता दिखाई
अपनी गरीबी और ज़रूरतों को प्रार्थना के द्वारा दूर करें: केवल आप ही से हम सहायता मांगते हैं (1:5)।

फिर, सर्वशक्तिमान निर्माता की अपनी कला की प्रदर्शनी के जवाब में
सजीव प्राणियों के माध्यम से सूक्ष्मताएँ और चमत्कार, उन्होंने यह कहकर अपनी प्रशंसा दिखाई: "भगवान ने क्या (चमत्कार) चाहा है," और उनकी प्रशंसा
यह कहते हुए: “वे कितने सुंदर ढंग से बनाए गए हैं।” निरीक्षण जारी रखते हुए,
उन्होंने कहा: "ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दे। वे कितने शानदार ढंग से बनाए गए हैं," और अपने विश्वास की घोषणा करके ईश्वर की गवाही दी। पूरी प्रशंसा में, उन्होंने हर किसी को इसे देखने के लिए बुलाया: "आओ और देखो! समृद्धि (के रास्ते) की ओर जल्दी करो!"

अनन्त राजा द्वारा अपने प्रभुत्व के राज्य की घोषणा के प्रत्युत्तर में
और पूरे ब्रह्मांड में उनकी एकता की अभिव्यक्ति, वे इस बात में विश्वास करते थे
और अपनी एकता की पुष्टि की, और यह कहकर अपनी आज्ञाकारिता और समर्पण दिखाया: "हमने सुना और पालन किया।"
विश्व की दिव्यता, उन्होंने अपनी नपुंसकता की घोषणा करके पूजा के साथ जवाब दिया
उनकी निर्धनता उनकी आवश्यकता में अंतर्निहित है, और उनकी गरीबी उनकी आवश्यकता में अंतर्निहित है, और
निर्धारित प्रार्थना, जो उपासना का सार है।

दुनिया की उस विशाल मस्जिद में रहते हुए, उन्होंने खुद को समर्पित कर दिया
ये और इसी तरह के पूजा के कर्तव्य और इस तरह सृष्टि का सबसे अच्छा नमूना बन गए। अन्य सभी प्राणियों से ऊपर, वे भगवान के भरोसेमंद बन गए
विश्वास और विश्वसनीयता के आशीर्वाद से सुसज्जित, उप-प्रतिनिधि।53
इस परीक्षण और परीक्षा के बाद, उनके उदार भगवान ने उन्हें आमंत्रित किया
उनके विश्वास के बदले में शाश्वत खुशी और शांति के निवास की प्राप्ति
इस्लाम के प्रति उनकी भक्ति को पुरस्कृत करें। वहाँ, अपनी दया से, उसने उन्हें प्रदान किया
वर्णन और कल्पना से परे उनकी चमकदार सौगातें, और अनंत काल
और अनंत जीवन। एक शाश्वत जीवन के अवलोकन और चिंतन करने वाले प्रेमियों के लिए,
स्थायी सौंदर्य निश्चित रूप से अनंत काल तक रहेगा। ऐसा ही अंत और अंतिम पड़ाव है
कुरान के छात्रों में से एक। सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें भी उनमें शामिल करें।
अमीन!

---

53 ईश्वर की उप-प्रधानता को इस प्रकार परिभाषित किया गया है कि मानवता ईश्वर द्वारा अपने पापों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला “साधन” है।
पृथ्वी पर आज्ञाएँ देता है और अपने नियमों के अनुसार उस पर शासन करता है। (ट्र.)

जहाँ तक दूसरे समूह के सदस्यों का प्रश्न है, वे पापी और दुष्ट लोग हैं,
जब वे विवेक की आयु में इस संसार के महल में आये,
ईश्वरीय एकता के सभी प्रमाणों को अस्वीकार कर दिया और सभी उपहारों के प्रति कृतघ्न थे। इसलिए, उन्होंने सभी प्राणियों को बेकार होने का आरोप लगाकर उनका अपमान किया, और
ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण को अस्वीकार और अस्वीकार किया। संक्षेप में, उन्होंने थोड़े समय में अनंत अपराध किया और अनन्त दण्ड के पात्र थे।

हमें जीवन की पूंजी और मानवीय क्षमताएं खर्च करने के लिए दी गई हैं
ऊपर बताए गए कर्तव्यों का पालन करना। इसे देखते हुए, हमारा कर्तव्य जीवन जीने तक ही सीमित नहीं है
एक आसान जीवन (आधुनिक भ्रष्ट सभ्यता की आवश्यकताओं के अनुसार) और
हमारी शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करना। न ही हमारी नाजुक इंद्रियाँ और क्षमताएँ, संवेदनशील संकाय और अंग, सुव्यवस्थित अंग और प्रणालियाँ, और जिज्ञासु
हमारे जीवन की "मशीन" (हमारे शरीर) में शामिल इंद्रियाँ और भावनाएँ आधार, शारीरिक आत्मा की निम्न इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए हैं। बल्कि, वे इसमें शामिल थे और
दो कारणों से इसे हमारे स्वभाव का हिस्सा बनाया गया है: पहला, हमें सभी प्रकार की विविधता का एहसास कराना
सच्चे वरदान दाता द्वारा प्रदान किए गए वरदानों के बारे में, और हमें आग्रह करने के लिए कि हम
आभारी रहें। इसलिए, उन्हें महसूस करें और उनके प्रति आभारी रहें। दूसरा, ज्ञात करना और
हमें प्रत्येक दिव्य पवित्र नाम की सभी अभिव्यक्तियों का अनुभव करने का आग्रह करें
ब्रह्मांड। इसलिए उन्हें अनुभव करें और जानें, और विश्वास करें। अगर हम महसूस कर सकते हैं
इन लक्ष्यों को प्राप्त करके, हम मानवीय पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं और सच्चे मनुष्य बन सकते हैं।

जैसा कि निम्नलिखित दृष्टांत में दिखाया गया है, हमें अपनी मानवीय क्षमताएं केवल सांसारिक जीविका कमाने के लिए नहीं दी गई हैं: एक स्वामी ने एक नौकर को 20 स्वर्ण सिक्के दिए
नौकर ने सिक्के दिए और उसे एक खास कपड़े का सूट खरीदने को कहा।
और फिर सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले कपड़े से बना एक बढ़िया सूट पहना।
दूसरे नौकर को 1,000 सोने के सिक्के दिए, उसकी जेब में एक लिखित सूची रखी और
उसे कुछ व्यापार करने के लिए भेजा गया। जाहिर है 1,000 सोने के सिक्कों का इस्तेमाल नहीं किया जाना था
कपड़ों के लिए। इसलिए यदि दूसरा नौकर सूची नहीं पढ़ता है, बल्कि दूसरे नौकर की नकल करके दिए गए पैसे से सूट खरीदता है
उसे, और, इसके अलावा, सबसे खराब संभव गुणवत्ता का एक सूट प्राप्त करता है, क्या उसका
क्या स्वामी उसे उसकी मूर्खता के लिए डांटकर कठोर दंड नहीं देंगे?

हे मेरे सांसारिक आत्मा और मेरे मित्र! तुम्हें यहाँ अपना सारा समय बिताने के लिए नहीं भेजा गया है।
आपके जीवन की पूंजी और भौतिक सुखों पर आपकी महत्वपूर्ण क्षमताएं और यह
क्षणभंगुर जीवन। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप सबसे निचले पायदान पर आ जाएंगे, हालाँकि आप
सबसे विकसित जानवर की तुलना में "पूंजी" के संबंध में कहीं अधिक श्रेष्ठ।

हे मेरे लापरवाह आत्मा! यदि तुम अपने जीवन के बारे में कुछ समझना चाहते हो
अपने जीवन के उद्देश्य और प्रकृति, अपने स्वरूप और अपने कर्तव्य के पालन के तरीके तथा अपने जीवन में पूर्ण सुख को पहचानें , फिर देखें! आपके जीवन के उद्देश्यों को संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:
निम्नलिखित नौ मामले:

पहला: यह आपके शरीर की इंद्रियों के तराजू पर आपके द्वारा प्राप्त उपहारों को तौल रहा है।
ईश्वरीय दया के खजाने में संग्रहित और सार्वभौमिक धन्यवाद अर्पित करना।

दूसरा: यह आपके द्वारा रखे गए सभी उपकरणों की कुंजियों के साथ खुल रहा है
प्रकृति में छिपे दिव्य पवित्र नामों के खजाने को पहचानना और
उन नामों के माध्यम से सर्व-पवित्र को स्मरण करें।

तीसरा है अपने जीवन के माध्यम से समस्त सृष्टि के समक्ष सचेतन रूप से प्रदर्शन करना - इस प्रदर्शनी स्थल में दिव्य नामों की अद्भुत कलाओं को प्रदर्शित करना।
आपसे जुड़े हुए हैं और आपके अस्तित्व में उनकी सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ हैं।

चौथा है परमेश्वर के दरबार में अपनी पूजा और दासता की घोषणा करना।
अपने सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व को मौखिक रूप से और अपने स्वभाव की वाणी के माध्यम से प्रकट करें।

पांचवां: एक सैनिक की तरह, जो राजा से प्राप्त अलंकरणों के साथ औपचारिक अवसरों पर उसके समक्ष उपस्थित होकर, चिह्नों का प्रदर्शन करता है
राजा की कृपा पाने के लिए, तुम्हें अपने आप को राजा के "आभूषणों" से सचेत रूप से सजाना होगा
दिव्य शक्ति के माध्यम से आपके अस्तित्व में अंतर्निहित सूक्ष्म मानवीय इंद्रियाँ और क्षमताएँ
नामों की अभिव्यक्तियों का अनुभव करो और स्वयं को शाश्वत साक्षी के समक्ष प्रस्तुत करो।

छठा: अन्य जीव अपने सृष्टिकर्ता की पूजा और महिमा करते हैं, सचेतन रूप से या अनजाने में उनके जीवन के लिए स्थापित नियमों का पालन करके।
यही उनकी सृष्टि और जीवन का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए तुम्हें सचेत रूप से उनके प्रति उनकी आज्ञाकारिता, उनकी पूजा और महिमा का निरीक्षण करना चाहिए।
उसे स्मरण करें, तथा उनकी आराधना और महिमा पर चिंतन करें और उसकी गवाही दें।

सातवां: अपनी दोषपूर्ण विशेषताओं का उपयोग करना (जैसे, आंशिक ज्ञान,
शक्ति और इच्छा) को माप की इकाइयों के रूप में पहचानें, राजसी निर्माता की
पूर्ण गुण और पवित्र गुण। उदाहरण के लिए, आपने अपने आंशिक ज्ञान, इच्छा और शक्ति का उपयोग करके इस सुंदर और सुव्यवस्थित घर का निर्माण किया है।
तो, आपको यह जानना चाहिए कि इस ब्रह्मांड के महल का निर्माता शक्तिशाली है,
ज्ञानवान, बुद्धिमान और सक्षम, इस हद तक कि वह आपके घर से भी बड़ा हो।

आठवां: तुम्हें यह समझना चाहिए कि प्रत्येक प्राणी अपने-अपने ढंग से कैसे घोषणा करता है।
सृष्टिकर्ता की एकता और निर्माता की प्रभुता की भाषा।

नौवां: अपनी नपुंसकता और कमजोरी, गरीबी और जरूरत से आप
ईश्वरीय शक्ति और समृद्धि की अभिव्यक्ति की डिग्री का अनुमान लगाने की कोशिश करनी चाहिए। जिस तरह भोजन के आनंद और विविधता को आपकी भूख और ज़रूरत के हिसाब से समझा या पहचाना जाता है, उसी तरह आपको भोजन की गुणवत्ता को भी समझना चाहिए।
अनंत दिव्य शक्ति और समृद्धि की अभिव्यक्तियों की डिग्री
अपनी असीम नपुंसकता और गरीबी के माध्यम से।

संक्षेप में, ये आपके जीवन के लक्ष्य हैं, जिनकी प्रकृति को इस प्रकार संक्षेपित किया जा सकता है: यह ईश्वरीय शक्तियों से उत्पन्न होने वाले चमत्कारों की सूची है।
नाम, दिव्य गुणों पर विचार करने का एक उपाय, ईश्वरीय गुणों को जानने की एक इकाई

ब्रह्मांड में दुनियाएँ, स्थूल जगत की सूची, ब्रह्मांड का मानचित्र
और इसका फल या संपीड़ित रूप, कुंजियों का एक सेट जिसके साथ दिव्य को खोला जाता है
शक्ति के गुप्त खजाने, तथा प्राणियों में प्रतिबिम्बित तथा काल के माध्यम से अभिव्यक्त दिव्य पूर्णता का एक उत्कृष्ट नमूना।

जहाँ तक आपके जीवन के स्वरूप और उसके कर्तव्य पालन का प्रश्न है: आपका जीवन एक
अंकित शब्द, शक्ति की कलम द्वारा लिखा गया एक ज्ञान-प्रदर्शन शब्द।
अवलोकन और अनुभूति से यह दिव्य सुन्दर नामों की ओर संकेत करता है।
आपके जीवन का अर्थ और कार्य यह है कि यह ईश्वरीय एकता और ईश्वर के शाश्वत रूप से प्रतीक्षित होने का दर्पण है।

सभी दिव्य नामों के प्रकट होने के केंद्र बिंदु के रूप में इसकी व्यापकता
संसार में, यह एक दर्पण के रूप में कार्य करता है जो ईश्वर के शाश्वत अस्तित्व को प्रतिबिंबित करता है
एक प्रार्थना। जहाँ तक आपके जीवन की पूर्णता की बात है, तो वह है अपने जीवन के दर्पण में चित्रित अनन्त सूर्य की रोशनी को देखना और उससे प्रेम करना।
जीवन, एक सचेतन प्राणी के रूप में उसके प्रति उत्साह प्रदर्शित करना, उससे मंत्रमुग्ध होना
उसके प्रति प्रेम, और उसके प्रकाश का प्रतिबिम्ब अपने हृदय के केन्द्र में स्थापित करना
दिल। इन सब के परिणामस्वरूप, एक हदीस कुदसी54 आपके उच्चतम रैंक को व्यक्त करती है
सृष्टि की रचना करते हुए कहा: “(परमेश्वर ने कहा): मैं आकाश और पृथ्वी में नहीं हूं
मैं पृथ्वी पर नहीं हूँ, परन्तु मैं विश्वासी के हृदय में रहता हूँ।”

तो, मेरा आत्म-स्वरूप! जबकि तुम्हारा जीवन तुम्हें ऐसे महान लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिला है, और
इसमें ऐसे अमूल्य खजाने हैं, तुम यह कैसे सोच सकते हो कि तुम ऐसा कर सकते हो?
क्षणभंगुर शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि और क्षणिक खोज में इसे बर्बाद करने से
सांसारिक सुखों के लिए क्या करना चाहिए? इसे बर्बाद न करने के लिए, शपथों और सत्यों पर विचार करें
नीचे दिए गए श्लोकों को ध्यान से पढ़ें, जिनका उल्लेख उपरोक्त दृष्टांत में किया गया है, और उसके अनुसार कार्य करें:

> सूर्य और उसकी चमक से, और उसके पीछे आने वाले चंद्रमा से, और
> दिन जैसा वह उसे प्रकट करता है, और रात जैसा वह उसे ढक लेती है, और आकाश
> और जिसने इसे बनाया, और धरती और जिसने इसे फैलाया, और
> आत्मा और वह जिसने इसे पूर्णता तक बनाया और प्रेरित किया
> (विवेक से) यह समझ लेना कि उसके लिए क्या गलत है और क्या सही है।
> वास्तव में वह समृद्ध है जिसने इसे शुद्धता से उगाया है, और वह वास्तव में समृद्ध है
> जो इसे भ्रष्ट करता है वह विफल है। (91: 1-10)

हे ईश्वर! आकाश के सूर्य पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें।
पैगम्बरत्व के नक्षत्र के चंद्रमा पर,
और उसके परिवार और साथियों पर, जो मार्गदर्शन के सितारे हैं।
हम पर और सभी ईमान वालों पर दया कर। आमीन! आमीन! आमीन!

---

54 हदीस कुदसी एक पैगम्बरी कथन है जिसका अर्थ सीधे पैगम्बर के दिल में प्रेरित होता है या ईश्वर द्वारा उस पर प्रकट किया गया। (ट्र.)

बारहवाँ शब्द

बारहवाँ वचन

कुरान की बुद्धिमत्ता के बीच एक संक्षिप्त तुलना
और मानव दर्शन और वैज्ञानिकता

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जिसे बुद्धि दी गई है, उसे निश्चय ही बहुत कुछ दिया गया है।
अच्छा. (2:269)

[नोट: यह शब्द कुरान और कुरान के बीच एक संक्षिप्त तुलना प्रस्तुत करता है]
पवित्र ज्ञान और मानव दर्शन, का संक्षिप्त सारांश
मानवता के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए कुरान की शिक्षा और प्रशिक्षण
यह जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, तथा यह कुरान की अन्य सभी ईश्वरीय शिक्षाओं से श्रेष्ठता का संकेत है।
शब्द और सभी मानवीय भाषण।]

चार बुनियादी बातें

FIRST मूलभूत: के बीच कुछ अंतरों को देखें
निम्नलिखित दृष्टांत के माध्यम से कुरान की बुद्धि और मानव दर्शन को समझना: एक धार्मिक, कुशल और प्रसिद्ध
शासक कुरान की एक ऐसी प्रतिलिपि बनाना चाहता था जो उतनी ही सुन्दर हो जितनी कि
इसके पवित्र अर्थों और चमत्कारी शब्दों की आवश्यकता है ताकि इसे सुशोभित किया जा सके
इसके अद्भुत शब्दों को एक योग्य शैली में लिखा गया है। इसलिए, उन्होंने इसे सभी प्रकार के कीमती रत्नों के साथ
वास्तव में अद्भुत शैली में लिखा है। इसकी विविधता को इंगित करने के लिए
सत्य, उन्होंने इसके कुछ अक्षर हीरे और पन्ने से लिखे, अन्य को
मोती और सुलेमानी पत्थर, चमकीला रत्न और मूंगा, और सोना और चांदी। उसने अपने आप को सजाया और
इसे इस तरह से सजाया गया था कि हर कोई, चाहे वह पढ़ा हो या न पढ़ा हो, पूरी तरह से इसमें डूबा हुआ था।

क़ुरान की वह प्रति सत्य के लोगों के लिए सबसे कीमती कलाकृति बन गई, क्योंकि इसकी बाहरी सुंदरता इसकी शानदार आंतरिक सुंदरता और अद्भुत अलंकरण का संकेत देती थी।

शासक ने यह कुरान एक विदेशी [गैर-मुस्लिम] दार्शनिक को दिखाई
और एक मुस्लिम विद्वान। उन्हें परखने और पुरस्कृत करने के लिए, उसने प्रत्येक को बताया
इसके बारे में लिखने के लिए। दोनों व्यक्तियों ने सहमति व्यक्त की। दार्शनिक ने चर्चा की
अक्षरों के आकार, सजावट और अंतर्संबंधों, और गहनों की विशेषताओं और उपयोग के तरीकों के बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि उन्होंने इसे केवल
एक अलंकृत वस्तु के रूप में और इस बात से अनभिज्ञ कि यह एक अमूल्य पुस्तक थी
अर्थ की गहराई के साथ। चूँकि उन्हें इंजीनियरिंग और
रसायन शास्त्र में पारंगत, चीजों का वर्णन कर सकने वाला, तथा आभूषणों के बारे में बहुत कुछ जानने वाला था, लेकिन
अरबी के बारे में कुछ नहीं, उसने अपनी किताब उसी के अनुसार लिखी। लेकिन सत्य-प्रेमी
मुस्लिम विद्वान, यह समझते हुए कि यह बुद्धिमान कुरान था, स्पष्ट पुस्तक
अपने आप में और स्पष्ट रूप से सभी सत्य को दिखाते हुए, इसके बाहरी अलंकरण को नजरअंदाज कर दिया
और अक्षरों की सजावट और, इसके बजाय, पवित्र सत्य का वर्णन किया और
सजावट के पर्दे के पीछे छिपी गुप्त रोशनी, क्योंकि वे कहीं अधिक मूल्यवान हैं
और अधिक सम्मान के योग्य, अधिक उपयोगी और व्यापक।

दोनों व्यक्तियों ने अपनी पुस्तकें गौरवशाली शासक को भेंट की, जिन्होंने इस प्रकार शुरुआत की
दार्शनिक की पुस्तक। यह देखते हुए कि उसने बहुत मेहनत की थी, शासक ने फिर भी उसकी पुस्तक लेने से इनकार कर दिया और उसे अपने सामने से निकाल दिया। क्यों?
क्योंकि उन्होंने रत्नजटित कुरान की सच्ची बुद्धिमत्ता के बारे में कुछ भी नहीं लिखा था,
इसका कोई भी अर्थ नहीं समझा, और यह सोचकर इसके प्रति अपना अनादर प्रदर्शित किया कि सत्य का यह स्रोत अर्थहीन सजावट से बना है।
दूसरी पुस्तक के माध्यम से, और यह देखकर कि सत्य-प्रेमी विद्वान ने लिखा था
बहुत सुन्दर और उपयोगी व्याख्या, बुद्धिमानी और ज्ञानवर्धक रचना, उन्होंने उसे बधाई दी। यह शुद्ध ज्ञान था, और इसका लेखक एक सच्चा लेखक था।
विद्वान, एक वास्तविक ऋषि। पुरस्कार के रूप में, विद्वान को 10 सोने के सिक्के दिए गए
शासक के अक्षय खजाने से उसकी पुस्तक के प्रत्येक अक्षर के लिए।

इसका अर्थ इस प्रकार है: अलंकृत कुरान इस प्रकार कलात्मक है
निर्मित ब्रह्मांड; शासक शाश्वत प्रभु है। पहला आदमी दर्शन और दार्शनिकों की पंक्ति का प्रतिनिधित्व करता है; दूसरा आदमी दर्शन और दार्शनिकों की पंक्ति का प्रतिनिधित्व करता है
कुरान और उसके छात्रों का मार्ग। वास्तव में, बुद्धिमान कुरान सबसे अधिक बुद्धिमान है
इस ब्रह्मांड के महान व्याख्याता और सबसे वाक्पटु अनुवादक (एक
मैक्रो-कुरान) यह वह मानदंड है जो जिन्न और मानवता को निर्देश देता है
सृष्टि के सत्य - सृष्टि और ब्रह्माण्ड के संचालन के बारे में दिव्य नियम - शक्ति की कलम द्वारा ब्रह्माण्ड और पृथ्वी की चादरों पर अंकित
समय के पन्ने। यह प्राणियों को देखता है, जिनमें से प्रत्येक एक सार्थक अक्षर है,

दूसरे का अर्थ (उनके निर्माता के कारण) और कहता है: "वे कितनी खूबसूरती से बनाए गए हैं, वे निर्माता की ओर कितने सार्थक रूप से इशारा करते हैं
सौंदर्य और अनुग्रह। ” इस प्रकार यह ब्रह्मांड की वास्तविक सुंदरता को दर्शाता है।

सृष्टि के "अक्षरों" की डिजाइन और सजावट पर केंद्रित दर्शनशास्त्र ने अपना रास्ता खो दिया है। जबकि उसे इस मैक्रो-बुक के अक्षरों पर गौर करना चाहिए
दूसरे के अर्थ को धारण करने के रूप में (ईश्वर के कारण), यह उन पर नज़र रखता है
खुद को (खुद के कारण) दर्शाते हुए और कहते हैं: “वे कितने सुंदर हैं,” न कि “वे कितने सुंदर तरीके से बनाए गए हैं।” इस प्रकार दार्शनिक सृष्टि का अपमान करते हैं और उसे खुद से शिकायत करने के लिए मजबूर करते हैं। सच में,
भौतिकवादी दर्शन मिथ्या है, सृष्टि का अपमान है।

दूसरा मूलभूत सिद्धांत: कुरान के नैतिक सिद्धांतों और शिक्षाओं के बीच तुलना
व्यक्तिगत जीवन और दर्शनशास्त्र का प्रशिक्षण: एक ईमानदार छात्र
दर्शनशास्त्र फिरौन जैसा अत्याचारी है;55 वह एक घृणित अत्याचारी है जो झुकता है
वह किसी भी तुच्छ वस्तु के सामने श्रद्धा रखता है, यदि वह समझता है कि वह उसके हित में है।
वह अधार्मिक छात्र जिद्दी और विद्रोही है; लेकिन वह इतना अभागा है कि
वह एक सुख के लिए अंतहीन अपमान को स्वीकार करता है। वह अडिग है लेकिन बहुत मतलबी है
वह नीच लाभ के लिए शैतानी लोगों के पैर चूमने जैसा है। वह अहंकारी और दबंग भी है, लेकिन अपने दिल में किसी सहारे का बिंदु न पाकर वह
वह एक नितांत नपुंसक और घमंडी तानाशाह है। वह छात्र एक आत्म-केंद्रित है
अहंकारी जो केवल अपनी भौतिक और शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करने का प्रयास करता है; एक धूर्त अहंकारी जो कुछ राष्ट्रीय हितों में अपने व्यक्तिगत हितों की प्राप्ति का प्रयास करता है
हितों.

हालाँकि, कुरान का एक ईमानदार छात्र एक पूजा करने वाला सेवक है
भगवान के सामने झुककर भी वह खुद को नीचा नहीं करता है, बल्कि भगवान के सामने झुककर भी खुद को नीचा नहीं करता है।
सृष्टि में सबसे महान। वह एक प्रतिष्ठित सेवक है जो एक भी पैसा नहीं लेता
वह अपनी उपासना का उद्देश्य स्वर्ग जैसे परम लाभ को मानते हैं। वह विनम्र, सौम्य और
सौम्य, फिर भी वह स्वेच्छा से किसी और के सामने खुद को नीचा नहीं करता
उसका जन्मदाता, जब तक कि वह उसे ऐसा करने की अनुमति न दे। वह अपनी जन्मजात प्रकृति के बारे में भी जानता है
कमजोरी और जरूरत है, लेकिन वह अन्य सांसारिक धन के कारण स्वतंत्र है
जो उसके उदार स्वामी ने उसमें संग्रहित किया है; और वह शक्तिशाली है क्योंकि
वह अपने गुरु की असीम शक्ति पर निर्भर रहता है। वह पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा के लिए कार्य करता है और प्रयास करता है
अच्छे सुख और आनंद के लिए तथा सद्गुणों से सुसज्जित होना।
कुरान और दर्शनशास्त्र के बीच के संबंध को उपरोक्त तुलना के माध्यम से समझा जा सकता है।

तीसरा मूलभूत सिद्धांत: कुरान का नैतिक प्रशिक्षण और मानव सामाजिक जीवन में दर्शन: दर्शनशास्त्र बल या शक्ति को मुख्य मानता है
सामाजिक जीवन में सहयोग की भावना, तथा स्वार्थ की प्राप्ति ही इसका लक्ष्य है।

---

55 फिरौन प्राचीन मिस्र के राजाओं को दी जाने वाली उपाधि है, और इसका अर्थ है कोई भी अत्याचारी। (ट्र.)

जीवन का सिद्धांत संघर्ष है। सदस्यों के बीच एकजुटता का बंधन
एक समुदाय और समुदायों की जाति और आक्रामक राष्ट्रवाद है; और
दर्शनशास्त्र के अनुसार, शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति और मानवीय आवश्यकताओं की निरंतर वृद्धि ही फल है। हालाँकि,
बल प्रयोग से आक्रामकता की आवश्यकता होती है, स्वार्थ की तलाश से भौतिक संसाधनों के लिए लड़ाई होती है और
संघर्ष से कलह पैदा होती है।
नस्लवाद दूसरों को निगलकर अपना पोषण करता है, जिससे आक्रामकता का मार्ग प्रशस्त होता है।
यही कारण है कि मानवता ने खुशी खो दी है।

जहाँ तक कुरान की बुद्धि का प्रश्न है, वह शक्ति को नहीं, बल्कि अधिकार को मुख्य मानता है।
सामाजिक जीवन में सहयोग। इसका लक्ष्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है, न कि ईश्वर की प्राप्ति
स्वार्थों का। इसके जीवन का सिद्धांत संघर्ष नहीं, बल्कि पारस्परिक सहायता है।
यह जिन सामुदायिक बंधनों को स्वीकार करता है वे हैं धर्म, पेशा और देश।
अंतिम लक्ष्य शारीरिक इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को उत्कृष्ट विषयों की ओर प्रेरित करना है, हमारी
उत्कृष्ट भावनाओं को संतुष्ट करना है ताकि हम मानवीय पूर्णता के लिए प्रयास करें
और सच्ची मानवता। सही एकता की मांग करता है, सद्गुण एकजुटता लाते हैं, और आपसी
सहायता का अर्थ है एक दूसरे की मदद करने में जल्दबाजी करना। धर्म भाईचारा, बहनचारा और सामंजस्य को सुरक्षित
करता है। अपनी शारीरिक आत्मा और इच्छाओं पर नियंत्रण रखना और
आत्मा को पूर्णता की ओर प्रेरित करने से इस संसार और परलोक में खुशी मिलती है।

चौथा मूल सिद्धांत: यदि आप यह समझना चाहते हैं कि कुरान क्यों पवित्र है?
अन्य सभी दिव्य शब्दों और सभी मानवीय वाणी से श्रेष्ठ होने के लिए, निम्नलिखित दो तुलनाओं पर विचार करें:

पहला: राजा के पास बोलने और संबोधित करने के दो तरीके होते हैं। वह या तो बोलता है
अपने निजी फोन को किसी छोटी सी बात या निजी विषय से संबंधित किसी सामान्य विषय पर
जरूरत है, या, सर्वोच्च संप्रभु, सर्वोच्च प्रमुख के रूप में उनकी क्षमता या स्थिति में
धार्मिक कार्यालय, और सर्वोच्च शासक, अपने आदेशों को एक के रूप में व्यक्त करता है
किसी दूत या उच्च अधिकारी के माध्यम से उसकी महिमा प्रकट करने वाला उच्चादेश।

दूसरा: एक व्यक्ति सूर्य की ओर दर्पण रखता है।
दर्पण की क्षमता का उपयोग करते हुए, वह सूर्य के सात रंगों वाले प्रकाश को ग्रहण करता है और इस प्रकार उसके
साथ एक संबंध स्थापित करता है। जब वह इस प्रकाश से भरे दर्पण को अपनी ओर निर्देशित करता है
अपने अंधेरे घर या छत से ढके बगीचे में, वह सूरज से केवल दर्पण की परावर्तित करने की क्षमता के अनुसार ही लाभ
उठाता है। दूसरा व्यक्ति चौड़ी खिड़कियाँ खोलता है
अपने घर या छत से ढके बगीचे में, इस प्रकार उन्हें इसके लाभों से अवगत कराया जाता है
प्रत्यक्ष और निरंतर सूर्यप्रकाश। कृतज्ञता में, वह कहता है: "हे अच्छे सूरज, सुंदरता
दुनिया और आसमान, जो आपके प्रकाश से पृथ्वी को सुनहरा बनाता है और फूल बनाता है
मुस्कुराओ। तुमने मेरे घर और बगीचे को अपनी गर्मी और रोशनी से सुसज्जित किया है, बस
जैसा तुमने आकाश, पृथ्वी और फूलों के लिए किया है।" पहला व्यक्ति ऐसी बातें नहीं कह सकता, क्योंकि उसे दर्पण
में अपनी आँखों के प्रतिबिंबों से ही संतुष्ट रहना पड़ता है।
सूर्य का प्रकाश और गर्मी.

इन दो तुलनाओं के प्रकाश में क़ुरआन पर विचार करें। इसकी चमत्कारिकता को देखें और इसकी पवित्रता को समझें। क़ुरआन घोषणा करता है: यदि पृथ्वी के सभी वृक्ष कलम बन जाएँ और सभी समुद्र (स्याही) बन जाएँ, और उनमें सात और समुद्र जुड़ जाएँ, तो भी ईश्वर के वचन लेखन में समाप्त नहीं होंगे (31:27)।

कुरान को ईश्वर के अनंत शब्दों में सबसे बड़ा स्थान प्राप्त है, इसका कारण यह है: ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से आकर, उनकी उत्पत्ति हुई।

सबसे बड़ा नाम, और प्रत्येक नाम के सबसे व्यापक पद से जारी, कुरान ईश्वर का वचन है क्योंकि ईश्वर संसार का स्वामी है, और [56] उसका आदेश है क्योंकि उसे सभी प्राणियों का देवता होने का खिताब प्राप्त है। यह आकाश और पृथ्वी के निर्माता के नाम पर एक प्रवचन है; उसकी पूर्ण प्रभुता के संबंध में एक भाषण और वार्तालाप; सर्व-महिमावान की सार्वभौमिक संप्रभुता की ओर से एक शाश्वत उपदेश।

यह सर्व-दयालु की कृपाओं का रजिस्टर भी है, जो उनकी सर्वव्यापी दया के दृष्टिकोण से है; यह संदेशों या संचारों का संग्रह है, जो कभी-कभी उनकी दिव्यता की उत्कृष्ट महिमा के संबंध में अंकों से शुरू होता है; और यह ज्ञान से भरपूर पवित्र शास्त्र है, जो दिव्य महान नाम के सर्वव्यापी क्षेत्र से उतरकर, उनके सर्वोच्च सिंहासन से घिरे हुए घेरे पर नज़र डालता है और उसका सर्वेक्षण करता है।

यही कारण है कि कुरान को हमेशा "ईश्वर का वचन" की उपाधि दी गई है और दी जाएगी। अन्य ईश्वरीय वचनों के लिए, उनमें से कुछ वाणीयाँ हैं जो ईश्वरीय दया, संप्रभुता और आधिपत्य के एक विशेष पहलू की विशेष अभिव्यक्तियों के रूप में एक विशेष शीर्षक के तहत और एक विशेष सम्मान के साथ आती हैं। वे विशिष्टता और सार्वभौमिकता के संबंध में डिग्री में भिन्न होते हैं। अधिकांश प्रेरणा इसी प्रकार की होती है और डिग्री में असीम रूप से भिन्न होती है। उदाहरण के लिए, बढ़ते क्रम में, ईश्वर जानवरों को सबसे विशेष और सरल प्रेरणा भेजता है। यह महत्व में बढ़ जाता है क्योंकि यह क्रमशः सामान्य लोगों, सामान्य स्वर्गदूतों, संतों और महान स्वर्गदूतों को भेजा जाता है। यही कारण है कि एक संत जो बिना किसी मध्यस्थता के सीधे अपने दिल के टेलीफोन के माध्यम से "ईश्वर से जुड़ा हुआ" प्रार्थना करता है, कहता है: "मेरा दिल मेरे भगवान से मुझे रिपोर्ट करता है।" वह यह नहीं कहता: "यह मुझे दुनिया के भगवान से रिपोर्ट करता है।" वे कह सकते हैं: "मेरा हृदय मेरे प्रभु का दर्पण, एक सिंहासन है", परन्तु यह नहीं कह सकते: "मेरा हृदय संसार के प्रभु का सिंहासन है", क्योंकि संत केवल अपनी क्षमता के अनुसार ही ईश्वरीय संबोधन प्राप्त करते हैं तथा मानवता और ईश्वर को अलग करने वाले "70,000" पर्दों में से कितने को उन्होंने हटाया है।

---

[56] उदाहरण के लिए, वसंत में सर्वरंग और सर्वसज्जन की अभिव्यक्तियाँ सर्दियों के समान स्तर पर नहीं होती हैं। (ट्र.)

सर्वोच्च संप्रभु के रूप में राजा द्वारा जारी किया गया आदेश, एक आम आदमी के साथ उसकी बातचीत से कहीं अधिक उच्च और श्रेष्ठ होता है।

सूर्य के प्रकाश से सीधे संपर्क में आने से हमें कहीं अधिक लाभ मिलता है। कुरान सभी अन्य भाषणों और पुस्तकों से श्रेष्ठ है।

इसके बाद अन्य दिव्य पुस्तकें और स्क्रॉल आते हैं, जो श्रेष्ठ हैं
अन्य सभी भाषणों और पुस्तकों से भिन्न डिग्री, क्योंकि वे पर आधारित हैं
रहस्योद्घाटन। यदि सभी गैर-कुरान लेकिन फिर भी अच्छे शब्द, सूक्तियाँ, और
मानवता और जिन्न से जारी किए गए ज्ञानपूर्ण कथन एकत्र किए गए थे, वे
कुरान की बराबरी नहीं कर सकता।

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि कुरान किस प्रकार ईश्वर के महानतम नाम और प्रत्येक नाम के महानतम स्तर पर उत्पन्न हुआ है, तो आयतु-उल-कुरसी (2: 255) और निम्नलिखित आयतों के सार्वभौमिक, उदात्त कथनों पर विचार करें:

ईश्वर, उसके अलावा कोई पूज्य नहीं; वह सर्वव्यापी, स्वयंभू है।
जिससे सब कुछ चलता है। उसे न तो नींद आती है, न नींद। सब कुछ उसी का है।
जो आकाश में है और जो पृथ्वी पर है। कौन है जो
क्या कोई उसकी अनुमति के बिना उससे सिफ़ारिश करेगा? वह जानता है कि आगे क्या है
उन्हें और उनके बाद क्या है (उनके भविष्य में और उनके जीवन में क्या है)
अतीत, उन्हें क्या ज्ञात है और उनसे क्या छिपा है); और वे
उसके ज्ञान में से कुछ भी न समझो, परन्तु जो कुछ वह चाहे।
उसका सिंहासन (प्रभुत्व का) आकाश और पृथ्वी को घेरे हुए है, और
उनकी रक्षा करने से वह थका नहीं, वह सर्वोच्च, सर्वोच्च है।
सर्वोच्च. (2:255)

ग़ैब की कुंजियाँ उसी के पास हैं। (6:59)

हे परमेश्वर, सारे प्रभुत्व के स्वामी! (3:26)

वह दिन को रात से ढक देता है, प्रत्येक एक दूसरे का तत्परता से पीछा करता है,
सूर्य, चन्द्रमा और तारे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। (7:54)

"ऐ धरती, अपना पानी पी जा, ऐ आसमान, (अपनी बारिश) बंद कर दे!" (11:44)

सातों आकाश और पृथ्वी, और उनमें जो कुछ है, सब उसकी महिमा करते हैं।
(17:44)

तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है। (31:28)

हमने अमानत को आकाशों और धरती और पर्वतों के समक्ष प्रस्तुत किया।
(33:72)

जिस दिन हम आकाश को लपेट देंगे जैसे लिखी हुई पुस्तकें लपेटी जाती हैं।
पुस्तकों के लिए लुढ़का. (21:104)

> उनके पास ईश्वर का कोई सच्चा माप नहीं है, जैसा कि उसके ईश्वर होने की अपेक्षा है,
> और क़ियामत के दिन सारी धरती उसके कब्ज़े में होगी।
> (39:67)
>
> यदि हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम उसे अवश्य ही झुके हुए, भय के कारण टुकड़े-टुकड़े होते हुए देखते। (सूरा 59:21)

इसके अलावा, अल-हम्दु लि-ल्लाह (सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं) या सब्बाहा या युसब्बिहु से शुरू होने वाली उन सूराओं की प्रारंभिक आयतों पर ध्यान लगाएं। (उसकी महिमा करता है), ताकि आप इस महान तथ्य की कुछ किरणें देख सकें। उन सूरों की शुरुआत अलिफ़ लाम मीम, अलिफ़ लाम रा और से होती है हा मीम, ताकि तुम सर्वशक्तिमान ईश्वर के निकट कुरान की महत्ता को समझ सको।

यदि आप इस चौथे मूल तत्व के महत्वपूर्ण सार को समझ लें, आप समझ सकते हैं कि रहस्योद्घाटन ज्यादातर स्वर्गदूतों के माध्यम से भविष्यद्वक्ताओं के पास आया था, जबकि प्रेरणा ज़्यादातर मध्यस्थता के बिना होती है। आप यह भी समझ सकते हैं क्यों महानतम संत भी किसी पैगम्बर के स्तर तक नहीं पहुंच पाते। पुनः, आपको कुरान की भव्यता, पवित्र महिमा की कुछ झलक मिल सकती है, और इसकी चमत्कारिकता की उत्कृष्टता का रहस्य। आप यह भी समझ सकते हैं पैगम्बर मुहम्मद के स्वर्गारोहण की आवश्यकता, अर्थात् वह कैसे और क्यों हुए स्वर्ग तक चढ़ गया, सबसे दूर की सीमा के लोटे-वृक्ष तक पहुंच गया और दो धनुष तारों के बीच की दूरी, या उससे कम, [57] और वहाँ प्रार्थना की वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली है, वह हमारी रग से भी अधिक निकट है (50:16), और पलक झपकते ही लौट आया। जिस प्रकार चाँद को चीरना पैगम्बरत्व का चमत्कार था, जो जिन्नों को उनकी पैगम्बरी होने का प्रमाण था। मानवता के लिए, स्वर्गारोहण उनकी पूजा और सेवा का एक चमत्कार था परमेश्वर आत्माओं और स्वर्गदूतों को यह प्रदर्शित करता है कि वह परमेश्वर का प्रिय है।

> हे ईश्वर, उन्हें और उनके परिवार को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें
> आपकी दया और उसका मूल्य और गरिमा अमीन!.

---

५७ सुदूर सीमा का कमल-वृक्ष उस सुदूर सीमा को दर्शाता है, जहां तक एक नश्वर, चाहे कितना भी महान हो, पहुँच सकते हैं। दो धनुष तारों के बीच की दूरी, या उससे कम पैगम्बर की निकटता को दर्शाता है मुहम्मद ने सर्वशक्तिमान तक स्वर्गारोहण प्राप्त किया, जो किसी अन्य द्वारा अप्राप्य है नश्वर (ट्र.)

तेरहवाँ शब्द

तेरहवाँ वचन

कुरान की बुद्धिमत्ता और आधुनिक वैज्ञानिक विचार और दर्शन के फल

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हम क़ुरआन में से ऐसी चीज़ें उतारते हैं जो ईमानवालों के लिए शिफ़ा और रहमत है। (17:82)

हमने उसे कविता नहीं सिखाई, क्योंकि वह उसके लिए उचित नहीं है। (36:69)

यदि आप कुरान की बुद्धिमत्ता के फलों की तुलना करना चाहते हैं
और आधुनिक वैज्ञानिक विचार और दर्शन, साथ ही साथ उनके
निर्देश, शिक्षण, और ज्ञान की डिग्री, इस पर विचार करें:
अपनी गहन व्याख्याओं के साथ, चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान सभी प्राणियों और घटनाओं पर से परिचितता और आदत के पर्दे को हटा देता है,
जिन्हें साधारण माना जाता है लेकिन वे ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार हैं।
[ईश्वरीय सृष्टि के] इन आश्चर्यजनक आश्चर्यों को चेतन प्राणियों और
उनकी दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करने से ज्ञान का अक्षय भण्डार खुल जाता है।

दर्शन शक्ति के असाधारण चमत्कारों को पर्दे के भीतर छिपा देता है
परिचितता और अज्ञानता और उदासीनता में उन्हें अनदेखा करता है। यह उन विचलनों की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जो सृष्टि के क्रम से बाहर हैं और इस प्रकार उससे विचलित हैं
उनके संपूर्ण सच्चे स्वभाव, अब असाधारण नहीं हैं। यह ऐसी चीजें प्रदान करता है
चेतन प्राणियों को बुद्धिमानीपूर्ण शिक्षा की वस्तु के रूप में। उदाहरण के लिए, दर्शन
हमारी रचना को सामान्य मानता है, यद्यपि हम ईश्वरीय शक्ति का सबसे व्यापक चमत्कार हैं, और हमें उदासीनता से देखता है। लेकिन वह आश्चर्यचकित है
तीन पैरों वाले या दो सिर वाले व्यक्ति द्वारा, जो अब सृष्टि के दायरे में नहीं है

पूर्णता, और इसे अद्भुत शिक्षा का विषय मानता है। यह अदृश्य के खजाने से सभी शिशुओं और बच्चों के नियमित पोषण को सबसे अधिक देखता है

दया का सूक्ष्म और सार्वभौमिक चमत्कार, साधारण की तरह, उस पर कृतघ्नता का पर्दा डाल देता है। लेकिन जब वह किसी कीट को पानी के नीचे अकेला और अलग-थलग पड़ा हुआ देखता है

अपने साथियों से दूर, फिर भी एक हरे पत्ते पर भोजन करते हुए, यह मछुआरों को लुभाने की कोशिश करता है
उसमें प्रकट अनुग्रह और कृपा के कारण उसके लिए रोओ।

पवित्र कुरान की संपदा और उसकी बुद्धिमत्ता पर विचार करें
और ईश्वर के ज्ञान पर, और दर्शनशास्त्र की गरीबी और दिवालियापन पर
सृष्टिकर्ता की शिक्षा, निर्देश और ज्ञान के प्रति सम्मान दर्शाइए और सबक लीजिए।

ऐसा इसलिए है, क्योंकि बुद्धिमानी से लिखी गई कुरान में अनंत उज्ज्वल और उच्च सत्य समाहित हैं, इसलिए यह कविता की कल्पनाओं से मुक्त और उनसे ऊपर है। एक और कारण है कि कुरान में चमत्कारिक व्याख्या सख्त नियमों के अंतर्गत नहीं है।
कविता अपने उत्तम क्रम और व्यवस्था तथा सत्य की व्याख्या के बावजूद
ब्रह्मांड की पुस्तक की कलात्मक सुंदरता और सुव्यवस्थित शैलियाँ
वह यह कि कविता की सीमाओं से मुक्त होकर, वह अपनी प्रत्येक कविता को
यह अपने अनेक छंदों का एक प्रकार का केंद्र है और इस प्रकार इनके बीच एक संबंध है
सभी छंद एक व्यापक संदर्भ में हैं। ऐसा लगता है जैसे हर छंद में एक आँख है
अन्य अधिकांश छंदों की ओर देखते हुए और एक चेहरा उनकी ओर मुड़ा हुआ था।

इस प्रकार कुरान के भीतर हजारों कुरान हैं, जिनमें से प्रत्येक
इस्लाम में एक अलग मार्ग या स्कूल द्वारा अपनाया गया। उदाहरण के लिए, और जैसा कि वर्णित है
पच्चीसवें शब्द में सूरतुल इखलास में ज्ञान का खजाना है
छत्तीस सूरतुल इखलासों द्वारा प्रदान की गई दिव्य एकता, जिनमें से प्रत्येक का निर्माण
छह वाक्यों का संयोजन और प्रत्येक के कई पहलू हैं। यह उस तरह से तुलनीय है जिस तरह से प्रत्येक तारा, जाहिरा तौर पर यादृच्छिक रूप से, एक केंद्र से आस-पास के क्षेत्र में हर दूसरे तारे से जुड़ने की एक रेखा की तरह फैलता है। ऐसा
नेटवर्क सभी प्राणियों के बीच छिपे हुए संबंध को भी इंगित करता है। यह ऐसा है मानो,
कुरान की आयतों के तारों की तरह, प्रत्येक तारे की एक आँख है जो एक ओर देखती है और एक चेहरा है
सभी सितारों की ओर मुड़ें। स्पष्ट अव्यवस्था में पूर्ण व्यवस्था पर विचार करें, और
सबक लें। इसका एक अर्थ समझें: हमने उसे कविता नहीं सिखाई है; यह
उसके लिए यह उचित नहीं है (36:69)।

इसका अर्थ यह भी समझिए कि उसे कविता करना शोभा नहीं देता
महत्वहीन और नीरस तथ्यों को भव्य, चमकदार छवियों से सजाने की प्रवृत्ति रखता है और
उन्हें आकर्षक बनाने की कल्पना की जाती है। लेकिन कुरान की सच्चाईयाँ इतनी महान और उत्कृष्ट, इतनी शानदार और भव्य हैं कि सबसे महान और सबसे प्रतिभाशाली भी
काव्यात्मक कल्पनाएँ नीरस और महत्वहीन लगती हैं। उदाहरण के लिए, असंख्य
जैसे सत्य: जिस दिन हम आकाश को लपेट देंगे जैसे लिखी हुई पुस्तकें लपेटी जाती हैं
क्योंकि वह दिन को रात से ढक देता है, और दिन एक दूसरे को अत्यन्त शीघ्रता से आगे बढ़ाता है (21:104)।

(7:54) और वह तो बस एक ही धमाका है, फिर देखो, वे सब हमारे सामने खड़े किये गये हैं।

(36:53) इस बात की गवाही दो।

यदि आप देखना और सराहना चाहते हैं कि किस प्रकार प्रत्येक तारे जैसी कुरान की आयत चमत्कार और प्रकाश का प्रसार करके अविश्वास के अंधकार को दूर करती है, तो आप इस बात को समझ सकते हैं कि यह कितना सत्य है।
मार्गदर्शन के लिए, अपने आप को इस्लाम-पूर्व अरब में कल्पना करें। उस समय की हर चीज़
अज्ञानता और बर्बरता का रेगिस्तान निर्जीव प्रकृति के आवरण में लिपटा हुआ था
अज्ञानता और असावधानी के अंधकार के बीच। अचानक, आप सुनते हैं
कुरान की उत्कृष्ट भाषा में ऐसी आयतें हैं: जो कुछ आकाश में है और जो कुछ धरती पर है
पृथ्वी परमेश्वर की महिमा करती है, जो पूर्ण प्रभुता सम्पन्न, सर्व-पवित्र, सर्व-शुद्ध, सर्व-महिमावान, पराक्रमी, सर्व-बुद्धिमान है (62:1)। देखिए कि वे प्राणी, कैसे विचारशील हैं
बेजान और भावशून्य, महिमा-ध्वनि की ध्वनि पर श्रोताओं के मन में जीवित हो उठते हैं , कैसे वे जागते हैं, उछलते हैं,
और परमेश्वर की स्तुति करके उसका गुणगान करना शुरू करते हैं
नाम! की ध्वनि से, सातों आकाश और पृथ्वी उसकी महिमा करते हैं (17:44),
अंधकारमय आकाश उन लोगों को मुख के समान प्रतीत होता है, जिनका ध्यान आकाश की ओर है, तथा प्रत्येक तारा ज्ञान-प्रदर्शक शब्द तथा सत्य-विकिरण करने वाला प्रकाश है; तथा पृथ्वी एक सिर के समान प्रतीत होती है, जिसका ध्यान आकाश की ओर है।
धरती और समुद्र की एक-एक भाषा, और सभी जानवरों और पौधों की महिमा के शब्द।

यदि आप इन आयतों पर आधुनिक दृष्टिकोण से विचार करें,
अज्ञानता के अंधकार के बाद, परिचय के सतही आवरण से
इस्लाम से पहले के युग की अवधि को बहुत पहले ही "पहले से ज्ञात" में बदल दिया गया है
कुरान का "सूर्य" और इस्लाम का प्रकाश, आप नहीं देख सकते कि किस प्रकार का अंधकार है
प्रत्येक छंद चमत्कार की एक मधुर धुन में निकालता है, और इसलिए नहीं कर सकता
इसके चमत्कारिकपन के इस पहलू की सराहना करें।

यदि आप कुरान की चमत्कारिकता के सर्वोच्च स्तर को देखना चाहते हैं, तो कृपया यहां क्लिक करें।
निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक अत्यंत विशाल और फैले हुए वृक्ष की कल्पना करें
अदृश्य के पर्दे के पीछे छिपा हुआ है। आप जानते हैं कि जिस तरह मानव शरीर के अंगों के बीच सामंजस्य और संतुलन होना चाहिए और है भी
एक पेड़ के विभिन्न भाग - उसकी शाखाओं, पत्तियों, फूलों और फलों के बीच - और
पेड़ की प्रकृति के अनुसार प्रत्येक भाग का अपना उचित रूप और आकार होता है। यदि कोई उस छिपे हुए पेड़ की सटीक प्रतिकृति बनाता है, जिसमें उसके सभी भाग सही-सही दिखाए गए हों,
रिश्तों और अनुपातों को देखे बिना, कोई भी इस बात पर संदेह नहीं कर सकता है
कलाकार अदृश्य को भेदने वाली आंख से छिपे हुए वृक्ष को देखता है और उसका चित्रण करता है।

इसी तरह, कुरान में चीजों की वास्तविकता के बारे में स्पष्टीकरण दिया गया है,
अर्थात्, सृष्टि के वृक्ष की वास्तविकता जो शुरू से ही फैली हुई है
सृष्टि से अनंत काल तक, पृथ्वी से दिव्य सिंहासन तक,58 भाग-

---

58 ईश्वरीय सिंहासन (अरबी: अर्श) की प्रकृति हमारे लिए अज्ञात है। अन्यत्र, नूरसी ने कहा
लिखते हैं कि दिव्य सिंहासन दिव्य नामों प्रथम, अंतिम, प्रथम, तृतीय, तृतीय, तृतीय, तृतीय, तृतीय, तृतीय, चतुर्थ ...
सब कुछ बाहर की ओर, और सब कुछ भीतर की ओर। वह यह भी लिखता है कि पृथ्वी जीवन का सिंहासन है
('अर्शुल-हया'), और पानी दया का सिंहासन है ('अर्शुर-रमा')। (ट्र.)

सूर्य के प्रति आज्ञाकारी बनें, सभी भागों के बीच इस हद तक अनुपात बनाए रखें, और प्रत्येक भाग और फल को ऐसा उपयुक्त रूप दें कि सभी सटीक और सत्य-खोजी विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है: "भगवान ने क्या चमत्कार किया है। भगवान इसे आशीर्वाद दें। केवल आप, हे बुद्धिमान कुरान, सृष्टि के रहस्य को सुलझाते हैं।"

सबसे बड़ी तुलना ईश्वर के लिए है (और की जानी चाहिए) - आइए हम उनके नामों और गुणों के साथ-साथ उनके प्रभुत्व के कार्यों और गुणों को प्रकाश के एक वृक्ष के रूप में प्रस्तुत करें जो इतना विशाल और महान है कि यह अनंत काल तक फैला हुआ है। यह पूरे ब्रह्मांड को घेरता है और एक असीम रूप से विशाल क्षेत्र में दिव्य कार्यों को शामिल करता है: वह एक व्यक्ति और उसके दिल के बीच हस्तक्षेप करता है (8:24), निस्संदेह ईश्वर बीज-अनाज और खजूर-गुठली को अलग करने वाला है (6:95), और: वही है जो तुम्हें गर्भ में अपनी इच्छानुसार गढ़ता है (3:6) से लेकर: और आकाशों को अपने दाहिने हाथ में लपेट लिया (39:67), और उसने आकाशों और धरती को छह दिनों में बनाया (7:54), और: उसने सूर्य और चंद्रमा को अपने आदेश के अधीन किया (13:2)। बुद्धिमानी से लिखी गई कुरान इस उज्ज्वल वास्तविकता, उन नामों, गुणों, गुणों और कार्यों की सच्चाई को उनके सभी शाखाओं और परिणामों में इतने सामंजस्यपूर्ण, उचित और उचित तरीके से वर्णित करती है कि जिन लोगों ने चीजों की वास्तविकता को समझा है और छिपे हुए सत्यों की खोज की है, साथ ही अस्तित्व के आंतरिक आयाम के क्षेत्र में यात्रा करने वाले सभी ऋषियों ने घोषणा की है: "ईश्वर सर्व-महिमावान है। कितना सही, वास्तविकता के साथ कितना सुसंगत, कितना सुंदर और कितना उपयुक्त।"

आस्था के छह स्तंभों59 को लें, जो आकस्मिकता के क्षेत्र (सृजन का क्षेत्र) और आवश्यकता के क्षेत्र (ईश्वरीय अस्तित्व का क्षेत्र) दोनों से संबंधित हैं, और इन्हें इन दो शक्तिशाली "वृक्षों" की एक शाखा माना जा सकता है। कुरान आस्था के इन छह स्तंभों का उनके सभी तत्वों और दूरगामी फलों और फूलों के साथ इतने आनुपातिक रूप से वर्णन करता है, उनके सामंजस्य को इस हद तक देखता है, और उन्हें इतने संतुलित और सुनियोजित तरीके से प्रस्तुत करता है कि हम चकित रह जाते हैं और इसकी सुंदरता को समझ नहीं पाते। यह इस्लाम के पाँच स्तंभों के बीच पूर्ण संबंध, पूर्ण संतुलन और अद्भुत सामंजस्य को भी देखता है, जो आस्था की शाखा की एक शाखा बनाते हैं, जिसमें सबसे बारीक विवरण, आचरण के सबसे महत्वहीन बिंदु, सबसे दूरगामी लक्ष्य, सबसे गहन ज्ञान और सबसे खास फल शामिल हैं। अपनी उत्तम व्यवस्था और संतुलन के साथ-साथ अपने उचित अनुपात और सुदृढ़ता के साथ, सर्वोच्च शरीयत, जो व्यापक कुरान के निर्णायक कथनों, शब्दों और अर्थों, संकेतों और संकेतों के विभिन्न पहलुओं या आयामों से उत्पन्न हुई है, एक ऐसी सर्वोच्च शरीयत है जो अपने संपूर्ण स्वरूप और संतुलन के साथ-साथ अपने उचित अनुपात और सुदृढ़ता के साथ, अपने संपूर्ण स्वरूप ...

59 विश्वास के छह स्तंभ हैं: ईश्वर में विश्वास, फ़रिश्तों में विश्वास, ईश्वर की किताबों में विश्वास, ईश्वर के दूतों में विश्वास, परलोक में विश्वास, तथा ईश्वरीय नियति और आदेश में विश्वास। इस्लाम के पाँच स्तंभ हैं: विश्वास के स्तंभों का स्वीकारोक्ति, निर्धारित नमाज़ अदा करना, निर्धारित दान देना, रमज़ान के दौरान उपवास रखना, मक्का की तीर्थयात्रा। (ट्र.)

यह एक अकाट्य और निर्णायक सबूत है, तथा न्यायसंगत और निर्विवाद गवाह है यह।

इसे देखते हुए, कुरान की व्याख्या किसी भी माध्यम से जारी नहीं की जा सकती थी मनुष्य का ज्ञान, विशेष रूप से एक अशिक्षित व्यक्ति के ज्ञान से। बल्कि, इसकी व्याख्याएं एक सर्व-व्यापक ज्ञान पर आधारित हैं और यह वह जो सभी चीज़ों को एक साथ एक ही चीज़ की तरह देखता है, जो दो अनंत काल के बीच सभी सत्यों को एक साथ देखता है। पद्य: सभी प्रशंसा और शुक्रगुज़ारी अल्लाह के लिए है, जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी, और उसमें कोई कुटिलता नहीं रहने दी (18:1) इस वास्तविकता को व्यक्त करता है।

> ऐ खुदा! ऐ वो जिसने क़ुरआन उतारा, उसके लिए और उसके लिए जिस पर तूने इसे उतारा है, उसके कारण हमारे दिलों को प्रकाशित कर ईमान की रौशनी और क़ुरआन की रौशनी। आमीन, ऐ वह जिसकी तरफ से मदद मिलती है ढूँढा गया।

दूसरा स्टेशन

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> [नोट: प्रलोभन से घिरे युवा लोगों के साथ की गई बातचीत, लेकिन फिर भी यह समझने में सक्षम कि उनके आसपास क्या हो रहा है।]

कुछ युवा लोग आधुनिक मनोरंजन और कल्पनाओं का मुकाबला करना चाहते हैं और इस प्रकार अपने आपको परलोक में दण्ड से बचा लेते हैं, और सहायता मांगते हैं रिसाले -ए-नूर। इसके नाम पर मैंने उन्हें बताया:

कब्र तो है ही, कोई इनकार नहीं कर सकता। चाहे या न चाहे, हर कोई इसमें प्रवेश करेगा। इसे तीन तरीकों से दर्शाया गया है, चौथा नहीं है:

विश्वासियों के लिए, यह एक अधिक सुंदर दुनिया का द्वार है। अगले जन्म में वे एक गुमराह, अपव्ययी जीवन जीते हैं, यह एकांत कारावास का द्वार है जो उन्हें उनके प्रियजनों से अलग कर देगा। चूँकि वे विश्वास करते हैं और पुष्टि करें लेकिन अपने विश्वास के अनुसार न जियें, ठीक वैसा ही वे करेंगे दण्डित किया जाना चाहिए। अविश्वासियों और गुमराह लोगों के लिए जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते इसके बाद, यह अनन्त मृत्यु का द्वार है। चूँकि वे मृत्यु को मृत्यु मानते हैं बिना पुनरुत्थान के मृत्युदंड, उन्हें अनंत काल तक दंडित किया जाएगा।

युवा और वृद्ध में भेद किए बिना मृत्यु कभी भी आ सकती है। पुराना; इसका नियत समय अज्ञात है। ऐसी भयानक रूप से ख़तरनाक वास्तविकता हमारे लिए सबसे बड़ी, सबसे ज़रूरी बात है कि हम इससे बचने का कोई रास्ता खोजें कब्र को अनंत दण्ड और कारावास में बदलने का एक तरीका प्रकाश और शाश्वत खुशी की एक स्थायी दुनिया की ओर खुलने वाला एक द्वार।

जैसा कि बताया गया है, मृत्यु का अनुभव इन तीन तरीकों से होगा
124,000 सच्चे पत्रकार - वे नबी हैं, जिनके हाथों में सच्चाई की निशानियाँ हैं
सत्यता (चमत्कार)। उनकी रिपोर्ट की पुष्टि लाखों लोगों द्वारा की गई है
संतों ने अपनी विवेकशीलता, दूरदर्शिता और अंतर्ज्ञान पर भरोसा किया है। साथ ही, असंख्य सत्य-खोजी
विद्वानों ने अपने निर्णायक तर्कों से इसे तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया है
"ज्ञान पर आधारित निश्चितता" के स्तर पर प्रमाण। सभी समूह इस बात पर सहमत हैं कि
केवल ईश्वर पर विश्वास और उसकी आज्ञाकारिता ही व्यक्ति को अनन्त दण्ड से बचा सकती है
और क़ैद को ख़त्म करो, और क़ब्र को अनंत ख़ुशी का रास्ता बनाओ।

यदि केवल एक विश्वसनीय रिपोर्टर ही चेतावनी दे कि एक विशेष मार्ग से एक व्यक्ति को खतरा है, तो
मृत्यु का 100 प्रतिशत जोखिम होने पर लोग इतना डर जाएँगे कि वे इससे बचना चाहेंगे। लेकिन
अनगिनत सत्यनिष्ठ, आधिकारिक पत्रकारों - भविष्यद्वक्ताओं, संतों और सत्य की खोज करने वाले विद्वानों -
ने अपनी सच्चाई का सबूत दिया है और हमें चेतावनी दी है कि गलत मार्गदर्शन और भटकाव में मृत्यु का सौ
प्रतिशत जोखिम है, जिसके बाद मृत्यु हो सकती है।
अनन्त दण्ड। इसके विपरीत, विश्वास और पूजा कब्र को अनन्त दण्ड में बदल देते हैं
एक ऐसा दरवाज़ा जो अनंत ख़ज़ाने की ओर खुलता है, एक स्थायी ख़ुशी का महल। अगर हम,
विशेषकर हममें से वे लोग जो मुसलमान होने का दावा करते हैं, वास्तव में ईमान नहीं लाते और ऐसी कड़ी
चेतावनी के सामने उपासना नहीं करते, हम मरने की प्रतीक्षा करते हुए अपनी चिंताओं पर कैसे काबू पाएँगे,
भले ही हमें संपूर्ण शासन दे दिया जाए।
क्या आपने दुनिया की सारी खुशियाँ भोगी हैं?

बुढ़ापा, बीमारी, दुर्भाग्य और मृत्यु के अनेक उदाहरण देखना
हर जगह हमारा दर्द फिर से उभर आता है और हमें मौत की याद दिलाता है। भले ही गुमराह और बदचलन
लोग हर तरह की खुशी और आनंद का आनंद लेते दिखें, लेकिन वे
वे निश्चित रूप से आध्यात्मिक यातना की नारकीय स्थिति में हैं। हालाँकि, असावधानी की गहरी जड़ता उन्हें
अस्थायी रूप से इसके प्रति असंवेदनशील बना देती है।

आज्ञाकारी विश्वासी कब्र को अनन्त जीवन के द्वार के रूप में अनुभव करते हैं
खजाना और अंतहीन खुशी। "विश्वास कूपन" के बाद से उनके पास कारण हैं
उन्हें अनन्त दिव्य के आवंटन से एक अमूल्य टिकट प्राप्त करने के लिए
नियति, वे गहनता के साथ "आओ और अपना टिकट ले लो" कॉल की उम्मीद करते हैं
आनंद और आध्यात्मिक आनंद। यदि यह आनंद भौतिक आनंद को ग्रहण कर सकता है
बीज के रूप में, यह एक निजी स्वर्ग में विकसित होगा। लेकिन जो लोग युवावस्था की इच्छाओं को पूरा करने
के लिए इस महान आनंद और खुशी को त्याग देते हैं, जो
अस्थायी और अवैध सुखों को चुनें, जो जहरीले शहद के समान हैं
असीम पीड़ा पहुँचाने वाले, पशुओं से भी नीचे दर्जे के हैं।

वे पश्चिमी अविश्वासियों की तरह नहीं हैं, जो दूसरे को पहचान सकते हैं
पैगम्बर भले ही वे अपने को नकार दें; जो फिर भी ईश्वर को पहचान सकते हैं भले ही
वे सभी नबियों को झुठलाते हैं; या जिनमें कुछ अच्छे गुण होते हैं, जो
मुसलमान कुछ पूर्णता की ओर अग्रसर हैं, भले ही वे ईश्वर को न पहचानते हों।
हालाँकि, पैगंबर, भगवान और पैगंबर के कारण सभी परिपूर्णता को जानें

मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) और इसलिए वे मुसलमान जो
पैगंबर की शिक्षा को त्यागना और उनकी परंपरा से अलग होना उन्हें पहचान नहीं सकता
किसी भी अन्य पैगम्बर की तरह नहीं, या किसी भी मानवीय पूर्णता को बनाए रखने के लिए अपनी आत्मा में सहारा नहीं पाते। क्योंकि पैगम्बर मुहम्मद अंतिम और महानतम पैगम्बर हैं; श्रेष्ठतम पैगम्बर
अपने मिशन, चमत्कारों और उपलब्धियों के संबंध में सभी को बताया; और आया
सभी समय और लोगों के लिए एक सार्वभौमिक धर्म और संदेश के साथ। मुसलमान
जो मानव जाति के प्रशिक्षण के सिद्धांतों और नियमों का इस गौरव को त्याग देते हैं
उसका धर्म निश्चित रूप से कोई प्रकाश पाने या कोई उपलब्धि हासिल करने में असमर्थ होगा
वे पूर्णतः हानि और पतन की ओर अग्रसर होंगे।

तो, तुममें से जो लोग सांसारिक सुखों में आसक्त हैं, और चिंता में हैं
भविष्य में, यदि आप आनंद चाहते हैं तो इसे और अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए संघर्ष करें
इस दुनिया में आनंद, खुशी और आराम पाने के लिए, धार्मिक रूप से वैध चीज़ों से संतुष्ट रहें। यह आपके आनंद के लिए पर्याप्त है। आप समझ गए होंगे
अब जबकि हर वर्जित सुख में कई पीड़ाएँ निहित हैं।
उन्हें अपना भविष्य दिखाया - अब से पचास साल बाद उनकी स्थिति - अतीत के रास्ते में
सिनेमा में जब कोई घटना दिखाई जाती है, तो वे भयभीत हो जाते हैं और खुद से घृणा करने लगते हैं। जो लोग दोनों दुनिया में हमेशा खुश रहना चाहते हैं
हमें विश्वास के दृढ़ आधार पर पैगम्बर के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

नाखुश युवा लोगों के एक समूह के लिए चेतावनी और सबक

एक दिन कई होनहार युवा मेरे पास आये। वे एक अच्छी नौकरी की तलाश में थे।
आधुनिक सांसारिक जीवन से उत्पन्न खतरों के लिए प्रभावी निवारक, युवा,
और पशुवत इच्छाएँ। मैंने उनसे वैसे ही बात की जैसे मैंने युवा लोगों के एक समूह से बात की थी जिन्होंने पहले रिसाले-ए-नूर से मदद मांगी थी:

तुम्हारी जवानी जरूर चली जाएगी। अगर तुम अपने अंदर नहीं रहोगे
धार्मिक रूप से वैधानिक चीज़ों की सीमाएँ समाप्त हो जाएँगी, और आनंद की जगह,
यह तुम्हारे लिए यहाँ, कब्र में और स्वर्ग में दुख और विपत्तियाँ लाएगा।
लेकिन अगर तुम इस्लामी अनुशासन पर कायम रहो और उसे पवित्रता से खर्च करो,
ईमानदारी से और युवावस्था के आशीर्वाद के प्रति कृतज्ञता में पूजा करते हुए, वास्तव में, आपका
युवावस्था सदैव बनी रहेगी और चिरयुवाता प्राप्त करने का कारण बनेगी।

विश्वास के बिना जीवन, या विद्रोहीपन के कारण अप्रभावी हो चुके विश्वास के साथ जीवन, केवल दर्द, दुख और पीड़ा ही उत्पन्न करता है जो सतही, भावनात्मक और भावनात्मक स्तर से कहीं अधिक होता है।
क्षणिक आनंद और परिणामस्वरूप खुशी। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानवता में बुद्धिमत्ता है और जानवरों के विपरीत, यह अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ा हुआ है, और
उनसे दुख और आनंद दोनों मिलते हैं। जबकि जानवरों के पास कोई बुद्धि नहीं होती और इसलिए न तो अतीत से दुख उत्पन्न होते हैं और न ही भविष्य के बारे में भय और चिंताएं उनके वर्तमान आनंद को खराब करती हैं। लेकिन ऐसे दुख और

चिंताएँ गुमराह और असावधान लोगों को परेशान करती हैं, उनके आनंद को नष्ट कर देती हैं और उसे पीड़ा से भर देती हैं। अगर यह आनंद अवैध है, तो यह ज़हरीले शहद की तरह हो जाता है।

इस प्रकार, जीवन के आनंद के मामले में हम जानवरों से भी कहीं नीचे हैं। वास्तव में, गुमराह, लापरवाह लोगों का जीवन केवल दिन भर का होता है।
जिसमें वे स्वयं को पाते हैं, जैसा कि उनके सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ होता है और
दुनिया। उनके भ्रामक विश्वास के अनुसार, जो बीत गया वह अब नहीं रहा
लेकिन उनकी बुद्धि, जो उन्हें अतीत और भविष्य से जोड़ती है,
केवल अंधकार ही उत्पन्न होता है, और अनन्त जीवन में उनके विश्वास की कमी उन्हें अंधकारमय बना देती है।
उनके लिए भविष्य अस्तित्वहीन है। यह अस्तित्वहीनता ही अलगाव का कारण बनती है
शाश्वत और निरंतर उनके जीवन को अंधकारमय बनाता है। इसके विपरीत, विश्वास पर आधारित जीवन
परिणाम स्वरूप अतीत और भविष्य प्रकाशित होते हैं और अस्तित्व प्राप्त करते हैं
विश्वास के प्रकाश के माध्यम से। ऐसा जीवन उच्च आध्यात्मिक सुख भी प्रदान करता है
और उनकी आत्माओं और दिलों के लिए अस्तित्व की रोशनी।

यही जीवन की सच्चाई है। अगर आप जीवन का आनंद लेना चाहते हैं, तो इसे जीवंत बनाइए।
विश्वास को धार्मिक दायित्वों से सुशोभित करें, तथा पापों से बचकर इसे बनाए रखें।

जहाँ तक मृत्यु की भयावह वास्तविकता का प्रश्न है, जो मौतों से स्पष्ट होती है
हर जगह और हमेशा, निम्नलिखित दृष्टांत पर्याप्त होगा: कल्पना कीजिए कि हम
फांसी का सामना कर रहे हैं। इसके बगल में एक लॉटरी कार्यालय है जो वास्तव में उच्च मूल्य पर टिकट बेच रहा है
पुरस्कार। हम में से हर एक को, चाहे स्वेच्छा से या नहीं, वहाँ आमंत्रित किया जाएगा। चूँकि हमारा नियत समय अज्ञात है, वे हमें किसी भी समय बुलाएँगे, और कहेंगे: “फाँसी के लिए फाँसी के लिए आओ!” या “तुमने एक बहुत बड़ा पुरस्कार जीता है! आओ और इसे ले लो!”

जब हम इंतज़ार कर रहे थे, एक महिला और एक पुरुष हमारे पास आए।
वह कम कपड़ों में है, सुंदर है और आकर्षक है। वह अपने हाथ में कुछ बहुत स्वादिष्ट, लेकिन वास्तव में जहरीली मिठाइयाँ रखती है और उन्हें हमें देती है।
एक ईमानदार और गंभीर आदमी उसके पीछे आता है और कहता है: "मैंने
तुम्हारे लिए एक ताबीज, एक सबक लाया है। अगर तुम इसका अध्ययन करो और मिठाई मत खाओ,
तुम फाँसी से बच जाओगे, और इस ताबीज़ से तुम्हें जीत का टिकट मिलेगा। तुम देखते हो कि जो लोग मिठाई खाते हैं, वे अनिवार्य रूप से
फांसी पर चढ़ जाते हैं और इसके अलावा, उन्हें पेट में भयानक दर्द होता है
मिठाई में ज़हर तब तक डाला जाता है जब तक वे उस पर चढ़ न जाएं। टिकट पाने वाले
फांसी पर भी चढ़ जाते हैं, लेकिन लाखों गवाह गवाही देते हैं कि इसके बजाय
फाँसी पर लटकाए जाने पर वे पुरस्कार क्षेत्र में आसानी से प्रवेश करने के लिए फाँसी के तख्ते का उपयोग एक सीढ़ी के रूप में करते हैं।
तो, खिड़कियों से देखो! सर्वोच्च अधिकारी, उच्च पदस्थ व्यक्ति
इस व्यवसाय से जुड़े लोगों को घोषित करें: "जैसे आप स्पष्ट रूप से उन लोगों को फांसी पर चढ़ते हुए देखते हैं, वैसे ही निश्चित रहें कि जिनके पास ताबीज है
पुरस्कार के लिए टिकट प्राप्त होगा।”

इस प्रकार, युवावस्था के अनैतिक, धार्मिक रूप से निषिद्ध सुख जहरीली मिठाइयों की तरह हैं। चूँकि वे लोगों को अपना विश्वास खोने का कारण बनते हैं, इसलिए उनके लिए एक टिकट है अनन्त खजाना और अनन्त खुशी के लिए एक दस्तावेज, जो लोग इसका पालन करते हैं उन्हें फांसी पर लटकाया जाना चाहिए और कष्ट सहना चाहिए कब्र, जो उनके लिए अनंत अंधकार का द्वार है।
मृत्यु अज्ञात है, जल्लाद कभी भी आ सकता है, युवा और वृद्ध में कोई अंतर नहीं है। लेकिन यदि आप धार्मिक रूप से निषिद्ध सुखों को त्याग देते हैं और कुरान के ताबीज (विश्वास और धार्मिक दायित्वों का पालन) को प्राप्त करते हैं, तो 124,000 पैगंबर और असंख्य संत एकमत होकर हमें सूचित करते हैं

कि आपको अनंत खुशी के खजाने के लिए टिकट मिलेगा भाग्य की असाधारण लॉटरी। वे इसके संकेत और प्रमाण भी दिखाते हैं।

संक्षेप में कहें तो युवावस्था बीत जाती है। इसे बर्बाद करने से अनंत दुर्भाग्य और पीड़ा होती है दोनों दुनिया में। यदि आप यह समझना चाहते हैं कि ऐसे कितने युवा अंत में पहुँचते हैं मानसिक और शारीरिक बीमारियों से पीड़ित लोगों को अस्पतालों में भर्ती कराया जाता है, मुख्यतः उनके साथ दुर्व्यवहार के कारण। अपनी ज्यादतियों के कारण निराश्रितों के लिए जेलों या छात्रावासों में, और अपनी आध्यात्मिक बेचैनी से उत्पन्न संकट से बचने के लिए, उन स्थानों पर जाकर पूछें। आप अस्पतालों की मूक वाक्पटुता से कराहते हुए सुनेंगे और युवावस्था की इच्छाओं के पीछे भागने वालों की कराहें, वैसे ही तुम जेलों से भी सुनोगे मुख्य रूप से अवैध कार्यों के कारण जेल में बंद दुखी लोगों की खेदजनक आहें उनकी "युवावस्था की ज्यादतियाँ।" आप यह भी समझेंगे कि अधिकांश पीड़ाएँ कब्रें गलत तरीके से बिताई गई जवानी के कारण होती हैं, जैसा कि संतों द्वारा बताया गया है जो जीवन को समझ सकते हैं कब्र (मध्यवर्ती क्षेत्र) का, और सत्य के सभी विद्वानों द्वारा पुष्टि की गई।

इसके अलावा, बुज़ुर्गों और बीमार लोगों से सलाह लें। उनमें से ज़्यादातर आपको जवाब देंगे दुःख और खेद के साथ: "हाय! हमने अपनी जवानी बेकार की बातों में बर्बाद कर दी। सावधान रहो, ऐसा न हो जैसा हमने किया वैसा ही करना! जो लोग पाँच से दस लोगों की अवैध वासनाओं पर नियंत्रण नहीं रखते वर्षों के युवा इस दुनिया में अपने लिए दुःख और पीड़ा, पीड़ा और मध्यवर्ती क्षेत्र में हानि, और निचले क्षेत्र में नरक की कठोर सजा इसके बाद। हालाँकि वे सबसे दयनीय स्थिति में हो सकते हैं, क्योंकि वे जो लोग स्वतंत्र रूप से इस मार्ग पर चलने का चुनाव करते हैं, वे दया के पात्र नहीं हैं। नुकसान के लिए स्वतंत्र रूप से तैयार रहना दया के योग्य नहीं है। सर्वशक्तिमान ईश्वर हम सभी को बचाए इस युग के मोहक प्रलोभनों से हमें बचा और उनसे हमारी रक्षा कर। आमीन।

एक फुटनोट

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

कैदियों को रिसाले-ए-नूर की सांत्वना की बहुत जरूरत है ; खासकर उन लोगों को जिन्होंने युवावस्था में आघात सहा और अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय जेल में बिताया उन्हें रिसाले-ए-नूर की उतनी ही जरूरत है जितनी उन्हें रोटी की। युवाओं को प्रेरित किया जाता है

भावनाएँ तर्क के बजाय। भावनाएँ और इच्छाएँ अंधी होती हैं; वे परिणाम नहीं देख सकतीं और भविष्य के ढेरों सुखों के बजाय तत्काल सुख की एक औंस को प्राथमिकता देती हैं। वे बदला लेने की एक मिनट की संतुष्टि के लिए हत्या करते हैं, और फिर अनगिनत घंटों तक दर्दनाक कारावास में रहते हैं। एक महिला के साथ बलात्कार करके बिताए गए एक घंटे के अनैतिक सुख से जेल और दुश्मनों के डर से जीवन भर की संतुष्टि नष्ट हो सकती है।

युवा लोग कई तरह की मुसीबतों का सामना करते हैं, जिसकी वजह से वे जीवन की मिठास को सबसे कड़वे और पश्चाताप से भरे जीवन में बदल देते हैं। खास तौर पर, उत्तर में एक विशाल और शक्तिशाली राज्य अपने युवाओं के जुनून का दुरुपयोग कर रहा है और इस सदी को अपने तूफानों से हिला रहा है। क्योंकि इसने अपने अंधे-भावना से प्रेरित युवाओं के लिए ईमानदार, मासूम लोगों की खूबसूरत बेटियों और पत्नियों को वैध बना दिया है। पुरुषों और महिलाओं को सार्वजनिक स्नानघरों में एक साथ जाने की अनुमति देकर, यह अनैतिकता को बढ़ावा देता है। यह आवारा और गरीबों को अमीरों की संपत्ति का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने, यहां तक कि लूटने की भी अनुमति देता है। इस आपदा के सामने हर कोई कांपता है।

इस उम्र में, सभी मुस्लिम युवाओं को वीरतापूर्वक कार्य करना चाहिए और इस दोतरफा हमले का जवाब रिसाले-ए-नूर के "फल (विश्वास के)" और "युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका" जैसी "तेज तलवारों" से देना चाहिए। अन्यथा, वे बदकिस्मत युवा अपना भविष्य, दोनों दुनिया में अपनी खुशियाँ, अपने अनंत जीवन को नष्ट कर देंगे और दोनों को पीड़ा और कष्ट में बदल देंगे। वे अपनी ऊर्जा के दुरुपयोग और अपव्यय के कारण अस्पतालों में पहुँच जाएँगे, अपनी ज्यादतियों के कारण जेलों में चले जाएँगे और बुढ़ापे में पछतावे से भरे रहेंगे। लेकिन अगर वे कुरान की शिक्षा और इस्लामी सच्चाइयों से खुद को सुरक्षित रखते हैं, जिनमें से कुछ को रिसाले-ए-नूर में समझाया गया है, तो वे वास्तव में वीर युवा, परिपूर्ण मनुष्य, समृद्ध मुसलमान और कुछ मायनों में बाकी सभी सजीव प्राणियों पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

अगर जेल में बंद युवा लोग पाँच निर्धारित नमाज़ों पर प्रतिदिन सिर्फ़ एक घंटा बिताएँ, और कारावास में रहते हुए कई पापों को करने से बचें, दूसरे दर्दनाक पापों से बचें और उस अपराध के लिए ईश्वर से क्षमा माँगें जिसके कारण वे इस स्थिति में पहुँचे हैं, तो उनका अपना भविष्य और उनके रिश्तेदार, राष्ट्र और देश दोनों ही लाभान्वित होंगे। इसके अलावा, चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान और सभी अन्य प्रकट शास्त्र यह निश्चित, खुशखबरी देते हैं कि उनकी युवावस्था के दस से पंद्रह वर्ष उन्हें एक शाश्वत, शानदार युवावस्था प्रदान करेंगे। अगर युवा लोग ईश्वर की आज्ञाकारिता में सीधे मार्ग का अनुसरण करके युवावस्था के सुखद आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता से कार्य करते हैं, तो आशीर्वाद बढ़ता है और शाश्वत और और भी अधिक सुखद हो जाता है। अगर वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे विपत्ति, दर्द और दुःख से घिरे रहते हैं। उनका जीवन दुःस्वप्न बन जाता है और फिर गायब हो जाता है-

वे लक्ष्यहीन जीवन जीते हैं, और इस तरह अपने रिश्तेदारों और अपने राष्ट्र और देश दोनों को नुकसान पहुँचाते हैं।

यदि वे लोग, जिन्हें अन्यायपूर्वक कैद किया गया है, निर्धारित नमाज़ अदा करें, तो वे पाएंगे कि सलाखों के पीछे बिताया गया प्रत्येक घंटा, इबादत के एक दिन के बराबर है।
उनकी कोठरियाँ उनके लिए एकांतवास की जगह बन जाएँगी, और वे खुद भी पुराने समय के उन धार्मिक लोगों में गिने जा सकते हैं जो पूजा-अर्चना करने के लिए गुफाओं में चले जाते थे। अगर वे गरीब या बूढ़े या बीमार हैं और आस्था के सत्य को सीखना चाहते हैं, तो वे पाएँगे कि जेल में बिताया गया हर घंटा पूजा के बीस घंटों के बराबर होगा, बशर्ते वे अपने किए गए अपराध के लिए ईश्वर से क्षमा माँगें और धार्मिक दायित्वों का पालन करें। जेल एक विश्राम गृह, एक ऐसा स्थान होगा जहाँ उन लोगों के लिए मित्रता होगी जो उनकी दया से देखभाल करते हैं, और प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान होगा। जेल में रहना उन्हें बाहर की तुलना में अधिक खुशी भी दे सकता है, क्योंकि वहाँ वे पाप से परेशान और पीड़ित होंगे। अगर उन्हें जेल में रहते हुए उचित शिक्षा मिलती है, तो पूर्व हत्यारे या बदला लेने वाले लोग पश्चातापी, परिपक्व और अच्छे व्यवहार वाले लोगों के रूप में रिहा होंगे जो अपने देश को लाभ पहुँचा सकते हैं। जिन लोगों ने डेनिज़ली कैदियों को रिसाले-ए-नूर की नैतिक शिक्षा के माध्यम से शीघ्रता से यह पद प्राप्त करते देखा , उन्होंने टिप्पणी की: यदि पंद्रह वर्ष के कारावास के स्थान पर, उन्हें रिसाले-ए-नूर से पंद्रह सप्ताह का निर्देश मिले , तो इससे उनका सुधार बहुत बेहतर होगा।

चूंकि मृत्यु कभी नहीं मरती और उसका नियत समय अज्ञात है, इसलिए वह कभी भी आ सकती है; चूंकि कब्र को बंद नहीं किया जा सकता, और लोग क्रमिक काफिलों में उसमें प्रवेश करते हैं; और चूंकि कुरान घोषित करता है कि विश्वासियों को मृत्यु का अनुभव सांसारिक कर्तव्यों से मुक्ति के रूप में होता है और विश्वास उन्हें अनन्त दंड से बचाता है, जबकि अविश्वासियों को मृत्यु का अनुभव एक ऐसी फांसी के रूप में होता है जो उन्हें अनन्त यातना और अपने प्रियजनों तथा अन्य सभी प्राणियों से कभी न समाप्त होने वाली जुदाई की ओर ले जाती है, इसलिए निस्संदेह, सबसे अधिक सुखी लोग वे हैं जो धैर्य के साथ ईश्वर का धन्यवाद करते हैं और कारावास में बिताए गए समय का लाभ उठाते हुए, कुरान की सेवा करने तथा सीधे मार्ग पर विश्वास करने के लिए आवश्यक नैतिक और धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।

हे भोग विलास के व्यसनियों! मैं अब पचहत्तर वर्ष का हो गया हूँ।
हजारों अनुभवों और प्रमाणों से मैंने यह निश्चित रूप से जाना है कि सच्चा आनंद, शुद्ध सुख, दुःख-रहित आनंद और खुशी केवल विश्वास और उसके सत्य के दायरे में ही मिलती है। एक सांसारिक सुख अनेक दुखों को जन्म देता है, जैसे एक अंगूर के लिए दस थपकी देना, और इस तरह जीवन के आनंद को नष्ट कर देता है।

हे कारावास भोग रहे अभागे लोगों! चूँकि तुम यहाँ शोक मना रहे हो और तुम्हारा जीवन कष्टमय है, इसलिए अपने कारावास के समय का सदुपयोग करो।

ताकि तुम परलोक में शोक न करो और तुम्हारा अनन्त जीवन सुरक्षित रहे
मधुर बनो। जैसे कभी-कभी भयंकर युद्ध की स्थिति में एक घंटे की निगरानी
पूजा के एक वर्ष के बराबर है, पूजा में बिताए गए प्रत्येक घंटे की कठिनाई
जेल बढ़ती जाती है और कठिनाई को दया में बदल देती है।

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

आप पर शांति और ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!

मेरे प्यारे, सत्यनिष्ठ भाइयो और बहनो!

मैं कैदियों और उनकी मदद करने वालों के लिए एक प्रभावी सांत्वना प्रदान करूंगा
उन्हें भोजन उपलब्ध कराएं और उनके भोजन की निगरानी करें, जो बाहर से आता है।

पहला बिंदु: जेल में बिताया गया प्रत्येक दिन उतना ही पुरस्कार प्राप्त कर सकता है जितना कि
दस दिनों की पूजा, और उनके फलों के संबंध में, इनमें परिवर्तन हो सकता है
क्षणिक घंटों को स्थायी घंटों में बदला जा सकता है, तथा कुछ वर्षों की सज़ा भी हो सकती है
लाखों वर्षों के अनन्त कारावास से बचने का साधन।
कैद में बंद विश्वासी इस सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान लाभ को प्राप्त कर सकते हैं
दिन में पाँच बार प्रार्थना करके, परमेश्वर से उन पापों के लिए क्षमा माँगना जिनके कारण
अपने कारावास के बारे में सोचकर, और धैर्यपूर्वक परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए। जेल, जीवन में बाधा उत्पन्न करती है
कुछ पापों से बचाता है; यह उनसे बचाता है।

दूसरा बिंदु: जैसे सुख का गायब होना दुख का कारण बनता है, वैसे ही दुख का गायब होना सुख का कारण बनता है। जब अतीत के सुखद और आनंददायक पलों के बारे में सोचें
दिन भर हर कोई अफसोस और लालसा महसूस करता है और दु:ख की आह भरता है।
अतीत के कष्टपूर्ण और कष्टपूर्ण दिनों को याद करके हर किसी को खुशी होती है क्योंकि
वे चले गए हैं, भगवान का शुक्र है कि ऐसे दिन बीत गए हैं और चले गए हैं
इनाम पाकर राहत की सांस लेता है। इसका मतलब है कि एक घंटे का अस्थायी दर्द दूर हो जाता है
आत्मा में यह एक अमूर्त सुख है, जबकि एक घंटे का सुख पीड़ा छोड़ जाता है।

यह वास्तविकता है। दुर्भाग्य की बीती घड़ियाँ और उनका दर्द गायब हो गया है,
और भविष्य की कल्पना की गई परेशानी अभी तक नहीं आई है। चूँकि दर्द नहीं होता
किसी अस्तित्वहीन चीज़ से आते हुए, अब अतीत और भविष्य के बारे में सोचना मूर्खता है
दर्द - ऐसे दर्द जो अस्तित्व में नहीं हैं - और अधीर होना, अपने दोषपूर्ण आत्म को अनदेखा करना,
और ऐसा व्यवहार करना मानो ईश्वर के बारे में शिकायत कर रहे हों। यह ऐसा होगा जैसे आप आज लगातार खाते-पीते रहें क्योंकि आपको कल भूख या प्यास का डर है। तो,
अतीत और भविष्य पर अपना धैर्य बर्बाद मत करो। बल्कि, इसका इस्तेमाल भविष्य से निपटने के लिए करो।
वर्तमान दर्द को कम करें, क्योंकि इससे मौजूदा दर्द दस गुना कम हो जाएगा।

यह कोई शिकायत नहीं है: मेरे कारावास की इस तीसरी अवधि के दौरान
"पैगंबर जोसेफ के स्कूल" में, कुछ दिनों तक भौतिक और आध्यात्मिक
ऐसी व्यथा और बीमारी जिसका मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था, विशेष रूप से कुरान की सेवा करने में
असमर्थ होने की मेरी निराशा और परेशानी, कुचली हुई

हालाँकि, जब ईश्वरीय कृपा ने मुझे यह सत्य दिखाया, तो मैंने इसे स्वीकार कर लिया।
कष्टदायक बीमारी और कारावास। चूँकि यह एक गरीब आदमी के लिए बहुत बड़ा लाभ है
मेरी तरह, जो कब्र के दरवाजे पर प्रतीक्षा करता है, संभव समय के एक घंटे को बदलने के लिए
मैंने अपनी लापरवाही को दस घंटे की पूजा में बदल दिया और भगवान का शुक्रिया अदा किया।

तीसरा मुद्दा: कैदियों की दयापूर्वक देखभाल करने, उनके लिए भोजन की व्यवस्था करने और उनके आध्यात्मिक घावों पर मरहम लगाने से बहुत बड़ा प्रतिफल मिलता है।
बाहर से आने वाला भोजन उन तक पहुँचता है, जिससे उन्हें आध्यात्मिक पुरस्कार मिलता है, जो उस भोजन को भिक्षा के रूप में देने के बराबर होता है, जिसे सहायकों के अच्छे कार्यों के रिकॉर्ड में जोड़ा जाता है।
कर्म, यहाँ तक कि पहरेदारों के भी। अगर कैदी बूढ़े, बीमार, गरीब या बिना सहारे या सुरक्षा के हैं, तो ऐसे दान का इनाम कई गुना बढ़ जाता है।
हालाँकि, इस बहुमूल्य लाभ के लिए, व्यक्ति को निर्धारित प्रार्थनाएँ अवश्य करनी चाहिए
उनकी मदद पूरी तरह से ईश्वर के लिए होनी चाहिए। इसके अलावा, कैदियों की मदद ईमानदारी, करुणा और प्रसन्नता के साथ करनी चाहिए, और
इस तरह से कि वे स्वयं को आपके प्रति बाध्य महसूस न करें।

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

आप पर शांति और उसकी दया और आशीर्वाद सदा बना रहे!

जेल में मेरे मित्र और धर्म में मेरे भाईयों और बहनों!

मैं एक सत्य समझाऊंगा जो तुम्हें यहां और दुनिया में यातना से बचाएगा।
इसके बाद। कल्पना कीजिए कि किसी ने आपके भाई-बहन या रिश्तेदार को मार दिया। एक मिनट
बदला लेने से मिलने वाली संतुष्टि के कारण अनगिनत मिनटों का तनाव और कारावास होगा, और प्रतिशोध का डर और हमेशा की चिंता
जीवन से सारा आनंद और आनन्द गायब हो जाएगा। इस प्रकार आप
भय और झुंझलाहट दोनों से पीड़ित हैं। एकमात्र समाधान सुलह है जो
कुरान और सच्चाई, मानवता और मुस्लिमत्व को प्रोत्साहित करते हैं।

अधिकार, सत्य और पारस्परिक लाभ के लिए सामंजस्य की आवश्यकता होती है।
यदि किसी की मृत्यु निश्चित समय पर हो जाए तो पीड़ित अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाता।
वैसे भी अब और नहीं। भगवान का फैसला हत्यारे के माध्यम से निष्पादित किया गया था। जब तक कि वे
अगर सुलह हो जाती है, तो दोनों पक्ष भय और प्रतिशोध की भावना से पीड़ित रहेंगे। यही कारण है कि इस्लाम कहता है कि एक आस्तिक को गुस्सा नहीं करना चाहिए और न ही किसी के प्रति कोई द्वेष रखना चाहिए।
किसी अन्य विश्वासी के विरुद्ध तीन दिन से अधिक समय तक द्वेष रखना।

यदि हत्या किसी रंजिश या दुश्मनी का नतीजा नहीं थी, बल्कि किसी पाखंडी व्यक्ति ने उसे उकसाया था, तो दोनों पक्षों को बिना देरी किए शांति स्थापित कर लेनी चाहिए ताकि यह मामला सुलझ न पाए।
छोटी-मोटी आपदाएँ बढ़ेंगी और बनी रहेंगी नहीं। अगर वे ऐसा करते हैं, और हत्यारा
पश्चाताप करता है और पीड़ित के लिए लगातार प्रार्थना करता है, दोनों पक्ष लाभान्वित होते हैं और बनते हैं

भाई-बहन की तरह। खोए हुए परिवार के सदस्य की भरपाई के लिए, उन्हें कई नए सदस्य मिलते हैं। ईश्वरीय नियति और आदेश के आगे झुककर, वे दुश्मनी छोड़ देते हैं।
विशेषकर यदि उन्होंने रिसाले-ए-नूर की शिक्षाओं में भाग लिया है , तो रिसाले-ए-नूर के समूह में व्यक्तिगत और सामूहिक शांति और भाईचारे के लिए यह आवश्यक है कि वे सभी प्रकार की शिकायतें दूर रखें।

डेनिज़ली जेल में, सभी कैदी जो दुश्मन थे, रिसाले-ए-नूर के ज़रिए भाई बन गए। यह हमारे बरी होने का एक कारण था। यहाँ तक कि अधार्मिक अपराधियों ने भी हमारे बारे में कहा: "कितना बढ़िया! वे कितने धन्य हैं!"

सभी कैदी ताजी हवा के लिए बाहर जाने लगे। हालाँकि, मैंने यहाँ देखा है कि एक आदमी की वजह से सौ आदमी तकलीफ़ में हैं, और एक साथ ताजी हवा का आनंद लेने के लिए बाहर नहीं जाते। स्वस्थ विवेक वाले विश्वासी किसी तुच्छ और छोटी सी गलती या लाभ के कारण दूसरे विश्वासियों को नुकसान नहीं पहुँचाते। अगर वे कोई गलती करते हैं और नुकसान पहुँचाते हैं, तो उन्हें तुरंत पश्चाताप करना चाहिए।

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

आप पर शांति और ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो।

मेरे प्यारे नये भाइयों और पुराने कैदियों!

मुझे पूरा यकीन है कि ईश्वर ने हमें तुम्हारे बीच एक खास मकसद से भेजा है: रिसाले-ए-नूर, अपनी सांत्वना और ईमान की सच्चाइयों के साथ, तुम्हें कैद की तकलीफ़ और उससे होने वाली बहुत सी सांसारिक परेशानियों से बचाने के लिए है। यह तुम्हारी जान बचाने के लिए भी है, जो अन्यथा दुख और पीड़ा में बर्बाद हो जाती, ताकि तुम दोनों दुनिया में कराहने से बच सको।

अगर ऐसा है, तो जाहिर है कि आपको डेनिज़ली कैदियों और रिसाले-ए-नूर के छात्रों के उदाहरण के अनुसार एक दूसरे का भाई होना चाहिए। आप देखते हैं कि अभिभावक हर उस चीज़ की तलाशी लेते हैं - भोजन, रोटी, इत्यादि - जो बाहर से आपके पास आती है, ताकि आप एक दूसरे पर हमला करने के लिए फिसले हुए चाकू का इस्तेमाल न कर सकें। इसके अलावा, जो पहरेदार आपकी ईमानदारी से सेवा करते हैं, उन्हें बहुत परेशानी होती है। आपको ताज़ी हवा के लिए एक साथ बाहर जाने की अनुमति नहीं है क्योंकि उन्हें लगता है कि आप जंगली जानवरों की तरह एक दूसरे पर हमला कर सकते हैं।

अब, आप नए मित्र जो स्वभाव से वीर और साहसी हैं, आपको आध्यात्मिक वीरता का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए और जेल के प्रशासनिक बोर्ड से कहना चाहिए: "भले ही हमें चाकू के बजाय बंदूकें और रिवॉल्वर दिए जाएं और उन्हें इस्तेमाल करने का आदेश दिया जाए, हम अपने दुर्भाग्यपूर्ण मित्रों को चोट नहीं पहुँचाएँगे जो हमारे जैसे कष्ट सहते हैं। हम उन्हें माफ करने और उन्हें अपमानित न करने के लिए दृढ़ हैं, सम्मान-

शत्रुता के हमारे पूर्व कारणों में से कम, क्योंकि ये विश्वास की आवश्यकताएं हैं और इस्लामी भाईचारा हमारे हित में है, और कुरान द्वारा इसका आदेश दिया गया है।

इस तरीके और रवैये से, आप इस जेल को एक में बदल सकते हैं अध्ययन का धन्य स्थान.

एक महत्वपूर्ण मामला

मैं संक्षेप में एक व्यापक सत्य बताऊंगा जो मेरे दिल में आया लैलातुल-क़द्र (शक्ति और भाग्य की रात).60 द्वितीय विश्व युद्ध यह चरम अत्याचार और अन्याय का प्रदर्शन था, जिसमें निर्मम विनाश शामिल था। एक अपराधी के कारण अनगिनत निर्दोष लोग बर्बाद हो गए।
पराजित लोग घोर निराशा में डूब गए, जबकि विजेता अपनी सर्वोच्चता को बनाए रखने के बारे में चिंतित थे। कई लोग अंतरात्मा की भयानक पीड़ा से पीड़ित हैं क्योंकि वे
वे जो विनाश कर रहे थे, उसकी भरपाई नहीं कर सकते थे। युद्ध ने दिखाया कि सांसारिक जीवन कितना क्षणभंगुर है, आधुनिक सभ्यता की तुच्छताएँ कितनी धोखेबाज़ हैं।
युद्ध ने मानव स्वभाव के सार को गंभीर और व्यापक रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया संभावित। कुछ स्थानों पर असावधानी, गुमराही और घोर स्वाभाविकता कुरान की हीरे की तलवार से चकनाचूर कर दिया गया है, जबकि इसने विश्व राजनीति के वास्तविक चेहरे की चरम कुरूपता और क्रूरता, असावधानी और गुमराही का सबसे व्यापक, दमघोंटू और धोखा देने वाला प्रतिबिंब।

यह सब सिद्ध करता है कि चूँकि सांसारिक जीवन, जिस पर मानवता मोहित है, कुरूप और क्षणभंगुर है, इसलिए मानव की सच्ची, चेतन प्रकृति पूरी ताकत से इसकी खोज करेगी।
अनंत जीवन के लिए इसकी ताकत, जिसके लिए यह वास्तव में तरसता है और प्यार करता है। संकेत हैं उत्तर, पश्चिम और संयुक्त राज्य अमेरिका में पहले से ही प्रकट हो चुका है।
चमत्कारी प्रदर्शन, जिसके तेरह वर्षों से अनगिनत छात्र हैं सदियों से चली आ रही है, जिसके प्रत्येक सत्य की पुष्टि असंख्य सत्य साक्ष्यों से हुई है।
विद्वानों के लिए एक पवित्र पुस्तक है, और जो अपनी पवित्रता के साथ लाखों स्मरणकर्ताओं के मन में जीवित है, स्पष्ट रूप से या स्पष्ट रूप से शाश्वत जीवन की शिक्षा देती है और घोषणा करती है।
यह स्पष्ट रूप से, इसके कई शक्तिशाली, प्रभावशाली और दोहराए गए छंदों में निहित है। यह निर्देश देता है अपनी विशेष भाषाओं में लोगों को आकर्षित करना, और एक तरह से जो किसी अन्य पुस्तक से मेल नहीं खाता, अनन्त जीवन और अनन्त खुशी का शुभ समाचार देता है, हमारे सभी दुखों को ठीक करता है घावों को सहना। यह देखते हुए, और बशर्ते कि मानवता अपनी क्षमता न खोए पूर्ण शारीरिक या आध्यात्मिक विनाश का कारण बनें या पीड़ित हों, विशाल जनसमूह और

---

60 लैलातुल-क़द्र, जिसका उल्लेख क़ुरान 97:1-5 में किया गया है, वर्ष की सबसे पवित्र रात है।
ज़्यादातर विद्वानों के अनुसार यह रमज़ान की 27वीं रात है। इसके बारे में क़ुरआन में कहा गया है: लैलातुल-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फ़रिश्ते और रूह इसी रात में उतरते हैं।
यह उनके रब की अनुमति से है, प्रत्येक मामले के लिए उसके आदेशों के साथ, जो शुद्ध दया और सुरक्षा है, जो सूर्योदय तक बनी रहेगी। (97:3-5)

महान राष्ट्र चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरान की खोज करेंगे। इसकी सच्चाई को समझकर वे इसके प्रति हृदय और आत्मा से समर्पित हो जाएंगे, जैसे कुछ राष्ट्रों के प्रति।
स्वीडन, नॉर्वे, फिनलैंड और इंग्लैंड में प्रसिद्ध प्रचारक, और एक महत्वपूर्ण
सच्चे धर्म की खोज में संयुक्त राज्य अमेरिका में समुदाय ने एक मजबूत दृष्टिकोण दिखाया है।
इसे स्वीकार करने की प्रवृत्ति। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि कुरान की कोई बराबरी नहीं है,
और इस महानतम चमत्कार का स्थान कोई नहीं ले सकता।

हम यह भी कह सकते हैं कि कई अन्य उपयोगी पुस्तकों और संकलनों के अलावा,
रिसाले -ए-नूर ने हीरे की तलवार के समान सेवा की है
यह सबसे बड़ा चमत्कार है, और यह अपने सबसे जिद्दी दुश्मनों को भी चुप करा देता है।
कुरान से उत्पन्न, रिसाले-ए-नूर व्याख्या करता है और प्रस्तुत करता है
कुरान की सच्चाइयों को इस तरह से समझना कि यह मन, आत्मा और भावनाओं को प्रकाशित कर दे। यह चंगा करता है
आधुनिक प्रवृत्तियों से आहत लोगों को, तथा विधर्मियों और उनके कुरान-विरोधियों को परास्त करना
प्रचार। इसके कई ग्रंथ, जैसे "प्रकृति का ग्रंथ", "
मूसा का स्टाफ़, और विश्वास के फल, ने प्रकृतिवाद और वैज्ञानिक भौतिकवाद को ध्वस्त कर दिया है, जो गुमराही का सबसे दुर्जेय किला है।
असावधानी को उसके सबसे सघन, दमघोंटू और व्यापक रूप से निर्वासित कर दिया है
आयाम, जो सभी वैज्ञानिकता के व्यापक आवरण के नीचे विकसित हुए,
दिव्य एकता के प्रकाश को अत्यंत उज्ज्वल ढंग से प्रदर्शित करना।

प्रत्येक विज्ञान अपनी भाषा में ईश्वर के बारे में बात करता है

[नोट: निम्नलिखित हजारों में से एक का संक्षिप्त संकेत है
ईश्वर में विश्वास के स्तम्भ के सार्वभौमिक प्रमाण, जिनमें से अनेक,
स्पष्टीकरण सहित, रिसाले-ए-नूर में हैं।]

कस्तमोनू में कुछ हाईस्कूल के छात्र मेरे पास आए और पूछा: "हमें बताओ
हमारे सृष्टिकर्ता के बारे में नहीं बोलते, क्योंकि हमारे शिक्षक उनके बारे में नहीं बोलते।" मैंने इस प्रकार उत्तर दिया:

प्रत्येक विज्ञान जिसका आप निरंतर अध्ययन करते हैं, ईश्वर, सृष्टिकर्ता और ईश्वर के बारे में बोलता है।
अपनी भाषा में ही परमेश्वर को प्रकट करता है। इसलिए, उनकी सुनो, अपने शिक्षकों की नहीं।

उदाहरण के लिए, एक अच्छी तरह से सुसज्जित, अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई फार्मेसी जिसमें कई
अलग-अलग सटीक मापे गए घटकों से बनी दवाइयाँ और गोलियाँ
निश्चित रूप से एक अत्यंत कुशल और विद्वान फार्मासिस्ट को इंगित करता है।
इस हद तक कि यह इस फार्मेसी से बड़ा और अधिक परिपूर्ण है,
पृथ्वी की फार्मेसी, जिसमें सभी पौधों और जानवरों की प्रजातियों में निहित अनगिनत जीवनदायी इलाज और औषधियाँ हैं, दिखाती है और बनाती है
चिकित्सा विज्ञान के माध्यम से, अंधों को भी ज्ञात है, सर्वज्ञ
महामहिम में से एक, जो पृथ्वी पर सबसे बड़ी फार्मेसी का फार्मासिस्ट है।

एक और उदाहरण: एक अद्भुत कारखाना जो एक साधारण सामग्री से हजारों अलग-अलग कपड़े बुनता है, निस्संदेह एक निर्माता और कुशल यांत्रिक इंजीनियर को पहचान देता है। इसी तरह, जिस हद तक यह बड़ा है-

इस कारखाने से भी अधिक परिष्कृत और बेहतर, जिसमें अनगिनत हिस्से हैं, जिनमें से प्रत्येक में
सैकड़ों हजारों मशीनों, इस यात्रा मशीनरी या कारखाने
प्रभु जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, वह अपने निर्माता को दिखाता और ज्ञात करता है
और इंजीनियरिंग विज्ञान के माध्यम से मालिक।

एक स्टोर या दुकान जो सभी तरफ से लाए गए कई प्रकार के प्रावधानों के लिए एक सुव्यवस्थित भंडारण स्थान के रूप में कार्य करती है, यह दर्शाता है कि उसके पास प्रावधानों और खाद्य पदार्थों का एक अद्भुत मालिक, तैयारकर्ता और वितरक है।
उसी प्रकार इस दयालु भगवान का अन्न-भंडार, जिसे पृथ्वी कहते हैं, यह पात्र है।
सर्व-महिमावान, जो प्रतिवर्ष एक विस्तृत कक्षा में घूमता है और गुजरते समय
ऋतुओं के माध्यम से, वसंत एक विशाल वैगन की तरह, अनगिनत विभिन्न प्रकार के फूलों से भर जाता है।
भोजन उपलब्ध कराता है और उसे असंख्य जीवित प्राणियों तक पहुंचाता है जिनमें यह निवास करता है
और जिनकी जीविका सर्दियों के दौरान समाप्त हो गई थी, यह डिपो या दुकान
भगवान, जिसमें विभिन्न प्रकार की वस्तुएं, उपकरण और संरक्षित खाद्य पदार्थ हैं -
चाहे वह बताई गई दुकान से कितनी भी बड़ी और बेहतर क्यों न हो,
अर्थशास्त्र के विज्ञान के माप के माध्यम से ज्ञात होता है, जिसे आप
अध्ययन, उसका स्वामी, प्रबंधक, और आयोजक, और उसे प्रिय बनाता है।

एक और उदाहरण लेते हैं: जनजातियों और राष्ट्रों की एक सेना की कल्पना करें, जिनमें से प्रत्येक
एक ऐसा देश जिसके लिए विशेष प्रावधान, हथियार, वर्दी, अभ्यास और सेना से मुक्ति की आवश्यकता होती है।
अगर इसका चमत्कारी कमांडर अपनी सारी ज़रूरतें खुद ही पूरी कर लेता है,
उनमें से किसी को भी भूले या भ्रमित किए बिना, निश्चित रूप से सेना और शिविर
उसकी ओर इशारा करें और उसे प्यार और सराहना दें। उसी तरह, हर कोई
वसंत में एक एकल कमांडर-इन-चीफ एक नव भर्ती सेना प्रदान करता है
अनगिनत पशु और वनस्पति प्रजातियाँ वर्दी, राशन, हथियार, प्रशिक्षण के साथ,
और सेना की वापसी एकदम सही और नियमित तरीके से होती है। वह कुछ भी नहीं भूलता और
भ्रमित नहीं होता। इस हद तक कि वे मानव सेना और उसके शिविर से अधिक विशाल और परिपूर्ण हैं, वसंत की यह दिव्य सेना और उसका शिविर
सैन्य विज्ञान के माध्यम से, चौकस और समझदार लोगों को ज्ञात करें,
पृथ्वी के शासक, उसके प्रभु, प्रशासक और परम-पवित्र सेनापति, प्रशंसा और यश उत्पन्न करते हैं, तथा उसे प्रेम, प्रशंसा और महिमा प्रदान करते हैं।

लाखों मोबाइल और फिक्स्ड सिग्नल से जगमगाते एक शानदार शहर की कल्पना कीजिए।
बिजली के लैंप जिनका ईंधन और ऊर्जा का स्रोत कभी खत्म नहीं होता।
एक अद्भुत कारीगर और असाधारण प्रतिभाशाली इलेक्ट्रीशियन के रूप में जाना जाता है
जो बिजली का प्रबंधन करता है, लैंप बनाता है, बिजली स्रोत स्थापित करता है,
और ईंधन लाता है। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है, बधाई दी जाती है और प्यार किया जाता है
ठीक उसी तरह, इस महल में कुछ दीपक (तारे और ग्रह)
ब्रह्मांड के इस शहर में दुनिया की छतें पृथ्वी से कहीं ज़्यादा बड़ी हैं और
अद्भुत गति से चलते हैं। फिर भी वे बिना किसी परेशानी के बहुत ही नाजुक क्रम में चलते हैं
एक दूसरे से टकराने पर भी वे बुझते नहीं हैं, या उनका ईंधन समाप्त नहीं होता।

खगोल विज्ञान का विज्ञान, जिसका आप अध्ययन करते हैं, कहते हैं कि हमारा सूर्य, एक दीपक और स्टोव
सर्वशक्तिमान ईश्वर का अतिथिगृह कई अरब वर्ष पुराना है और दस लाख वर्ष पुराना है।
पृथ्वी से कई गुना बड़ा है। जलते रहने के लिए, हर दिन इसे उतना ही तेल चाहिए
पृथ्वी के समुद्रों जितना कोयला, उसके पहाड़ों जितना कोयला, या जितने लट्ठे और
लकड़ी दस पृथ्वी के बराबर है।

तो, ऐसे दीपक अपनी प्रकाश की उंगली से एक अनंत शक्ति की ओर इशारा करते हैं और
संप्रभुता जो बदले में, बिना तेल के सूर्य और अन्य समान तारों को प्रकाशित करती है,
लकड़ी या कोयला। यह उन्हें बुझने नहीं देता और उन्हें एक दूसरे से टकराए बिना बहुत तेज गति से यात्रा करने देता है। हालाँकि बहुत अधिक
आकार में और उदाहरण में लैंप से प्रबंधन में अधिक परिपूर्ण हैं
ब्रह्मांड के भव्य शहर में दुनिया के महल के ये दीपक,
बिजली के विज्ञान के माध्यम से और उन उज्ज्वल लोगों की गवाही के माध्यम से
सितारों के माध्यम से वे संसार के प्रभु, प्रकाशक, निर्देशक और निर्माता को ज्ञात कराते हैं
ब्रह्मांड की सबसे बड़ी प्रदर्शनी बनाएं, और उसे प्यार, महिमा और पूज्य बनाएं।

एक अद्भुत किताब की कल्पना करें। एक अलग किताब खूबसूरती से लिखी गई है
प्रत्येक पंक्ति में एक सूरा है, तथा प्रत्येक शब्द में एक सुन्दर कलम से एक सूरा अंकित है। यह पुस्तक
सबसे अधिक सार्थक और अभिव्यंजक है, और इसके सभी विषय एक दूसरे की पुष्टि करते हैं
अन्य। ऐसी किताब बिना किसी संदेह के और दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से दिखाती है कि यह है
किसी विशेष कलाकार या लेखक की कृति जिसमें असाधारण निपुणता, कला और कौशल हो। यह उसे ऐसे वाक्यांशों के साथ सराहना देता है:
“ईश्वर ने क्या आश्चर्य चाहा है!” और “ईश्वर उसे आशीर्वाद दे!”

ब्रह्मांड की "मैक्रो-बुक" के बारे में भी यही सच है। हम एक पेन को देखते हैं
पृथ्वी के चेहरे पर, इसकी एक शीट पर, अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियों को अंकित किया गया है, जो सैकड़ों-हज़ारों खंडों के समान हैं। वे हैं
सभी को एक साथ, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि या भ्रम के अंकित किया गया है और
इतनी पूर्णता और सूक्ष्मता से कि एक कविता एक शब्द में संकुचित हो जाती है जैसे पेड़, और एक
पुस्तक की सम्पूर्ण सूची एक बीज-आकार के बिंदु में। इस हद तक कि ब्रह्मांड का यह अनंत-अर्थपूर्ण संग्रह, ब्रह्मांड का यह वृहद-कुरान,
जिसके प्रत्येक शब्द में ज्ञान के अनेक उदाहरण हैं, वह महानतम है
उदाहरण में पुस्तक की तुलना में अधिक परिपूर्ण और सार्थक, व्यापक के माध्यम से
प्रकृति के विज्ञान का माप और दूरबीन दृष्टि जिसका आप अध्ययन करते हैं, और
पढ़ने और लिखने का विज्ञान जिसका आप स्कूल में अभ्यास करते हैं, यह ज्ञात कराता है
इसके रचयिता और लेखक अपनी अनंत परिपूर्णताओं के साथ।
"ईश्वर सर्व-महान है," यह उसे ज्ञात कराता है। "सर्व-महिमावान ईश्वर है" की महिमा में, यह उसका वर्णन करता है।
"सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है" जैसी स्तुति के माध्यम से, यह उसे प्रिय बनाता है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, अपने व्यापक माप, विशेष दर्पण के माध्यम से,
दूरगामी दृष्टि, तथा खोजपूर्ण एवं निर्देशात्मक दृष्टिकोणों के साथ, प्रत्येक विज्ञान ब्रह्माण्ड के महान् रचयिता को उसके नामों से जाना जाता है, तथा
अपने गुणों और सिद्धियों को ज्ञात करता है। यह इस निर्णायक प्रमाण को समझाने के लिए है, जो ईश्वरीय शक्ति का एक शानदार और शानदार प्रमाण है
एकता, कि चमत्कारी व्याख्या की कुरान अक्सर हमारे वर्णन करता है
सृष्टिकर्ता को "आकाश और पृथ्वी का स्वामी" और
"उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है।"

मैंने विद्यार्थियों से यही कहा, जिसे उन्होंने स्वीकार किया और इसकी पुष्टि करते हुए कहा:
"ईश्वर का अनंत धन्यवाद; हमें एक सच्चा, पवित्र सबक मिला है। ईश्वर हमें आशीर्वाद दे।"
मैं आपसे प्रसन्न हूँ।" मैंने आगे कहा:

हममें से प्रत्येक एक जीवित मशीन है जो अनेक दुखों से ग्रस्त है और
अनेक सुखों को जानना। यद्यपि हम पूरी तरह से नपुंसक हैं, फिर भी हमारे पास अनंत सुख हैं
शारीरिक और आध्यात्मिक शत्रु। यद्यपि हम पूरी तरह से दरिद्र हैं, फिर भी हमारे पास अनंत हैं
वे बाह्य और आंतरिक आवश्यकताओं के प्रति उदासीन रहते हैं तथा क्षय और अलगाव के निरंतर आघातों से पीड़ित रहते हैं।
फिर भी, यदि विश्वास और पूजा के माध्यम से हम ईश्वर से संबंध स्थापित कर सकें,
महामहिम, हमें अपने सभी शत्रुओं के विरुद्ध समर्थन का एक बिन्दु मिल गया है
और हमारी सभी ज़रूरतों के लिए मदद का स्रोत है। हर कोई इस सम्मान पर गर्व करता है
और अपने स्वामी का पद जिससे वह जुड़ा हुआ है। इसलिए, यदि कोई असीम शक्तिशाली और दयालु संप्रभु के साथ संबंध स्थापित करता है
विश्वास, पूजा के माध्यम से उसकी सेवा में प्रवेश करता है, और (ऐसा करने में) बदल देता है
मृत्यु के नियत समय पर उनके निष्पादन की घोषणा स्वागत योग्य डिस्चार्ज पेपर्स में की जाती है - आप तुलना करके समझ सकते हैं कि उनकी मृत्यु की डिग्री कितनी गंभीर थी।
वे जो संतोष, कृतज्ञता और गर्व महसूस करेंगे।

मैं विपत्तिग्रस्त कैदियों से वही बात दोहराता हूँ जो मैंने स्कूली बच्चों से कही थी: जो लोग उसे पहचानते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वे समृद्ध होते हैं, भले ही वे मुसीबत में हों।
जेल में, जबकि जो लोग उसे भूल जाते हैं वे दुखी हैं और कैद में हैं, भले ही
वे महलों में रहते हैं। एक बार अन्याय हुआ लेकिन भाग्यशाली [अपने विश्वास और
शहीद होने पर] आदमी ने उन दुष्ट अपराधियों से कहा जो उसे मार रहे थे
उससे कहा: "मुझे मृत्युदंड नहीं दिया जा रहा है; बल्कि, मुझे मेरे पद से मुक्त किया जा रहा है
कर्तव्यों का पालन करना और शाश्वत सुख की ओर जाना। इसके अलावा, जैसा कि मैं अब भी आपको देख सकता हूँ
अनन्त दण्ड की निंदा करते हुए, मैं तुमसे पूरा बदला ले रहा हूँ।"
फिर उसने कहा: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," और खुशी से मर गया।

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

वह: दिव्य एकता का एक बिंदु

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

मेरे प्रिय एवं विश्वासयोग्य भाइयो एवं बहनो!

मानसिक यात्रा के दौरान वायु पर चिंतन करते समय, इससे संबंधित एक सूक्ष्म बिंदु
ईश्वरीय एकता मेरे लिए अचानक " वह" शब्द से स्पष्ट हो गई, जिसमें "कोई नहीं है"
ईश्वर नहीं बल्कि वह" और "कहो: वह ईश्वर है।" मैंने देखा कि विश्वास का मार्ग इतना आसान है
आवश्यक है, और यह कि गुमराह करने और भागीदारों को जोड़ने का तरीका
भगवान के साथ इतना कठिन है कि अकल्पनीय है। मैं इसे व्यापक रूप से समझाऊंगा
संक्षेप में बात करें.

मुट्ठी भर मिट्टी सैकड़ों फूलों के लिए फूलों की क्यारी का काम करती है।

प्रक्रिया को प्रकृति या कारणता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, प्रत्येक मुट्ठी में सैकड़ों मिनट की मशीनें या
कारखाने [फूलों का उत्पादन करने के लिए] और एक होना चाहिए
अमूर्त कारखाना [ईश्वरीय के स्थान पर उनके जीवन को निर्धारित और नियंत्रित करने के लिए
ज्ञान और भाग्य] या, धूल के प्रत्येक परमाणु को पता होना चाहिए कि कैसे बनाना है
प्रत्येक फूल की अलग-अलग विशेषताएं और जीवित तत्व। इस प्रकार प्रत्येक परमाणु
उसके पास असीम ज्ञान और शक्ति होगी, जो केवल परमेश्वर के लिए है।

इसी प्रकार, प्रत्येक वायु अणु (ईश्वरीय इच्छा और इच्छा का संवाहक)
कमांड), ध्वनि 'ही' बनाने वाली हवा की प्रत्येक शिफ्ट में सूक्ष्म केंद्र होने चाहिए,
संचार के सभी मानवीय साधनों के एक्सचेंज, रिसीवर और ट्रांसमीटर
ताकि प्रत्येक वायु अणु एक ही समय में उन अनगिनत कार्यों को कर सके।
या, प्रत्येक परमाणु या अणु में सभी प्रासंगिक क्षमताएं और क्षमताएं होनी चाहिए
जो लोग बोलते हैं या संचार के माध्यम से संवाद करते हैं, वे जानते हैं
अपनी भाषाएँ बोलते हैं, और उसी समय अपने शब्दों को अन्य परमाणुओं तक प्रेषित करते हैं।
इस प्रकार, इस मार्ग में अनेक असंभवताएं और अकल्पनीयताएं हैं
प्रकृतिवादियों और भौतिकवादियों को हवा के परमाणुओं के रूप में देखते हैं।

हालाँकि, यदि इसका श्रेय राजसी निर्माता को दिया जाए, तो सभी वायु परमाणु सैनिक बन जाते हैं
उनके निर्माता की अनुमति और शक्ति के तहत, और उचित
वे उनसे जुड़े हुए हैं और उन पर भरोसा करते हैं, इसलिए वे असंख्य सार्वभौमिक कर्तव्यों को इतनी आसानी से पूरा
करते हैं जैसे कि वे एक परमाणु का एक ही कर्तव्य पूरा कर रहे हों। वे उन्हें तुरन्त और उसी सहजता से पूरा करते हैं
जैसे कि वे ' उसके ' उच्चारण और हवा की गति को पूरा करते हैं।
हवा शक्ति की कलम के अंतहीन, अद्भुत, व्यवस्थित शिलालेखों के लिए एक "पृष्ठ" बन जाती है। इसके परमाणु कलम
की पसलियाँ बन जाते हैं, और उनके कर्तव्य, कलम द्वारा अंकित बिंदु बन जाते हैं।
कलम, जो एक परमाणु की गति के समान आसानी से काम करती है।

हवा की दुनिया का अवलोकन और अध्ययन करते समय मैं
"उसके सिवा कोई पूज्य नहीं" और "कहो: वह ईश्वर है," मैंने इस सत्य को स्पष्ट रूप से देखा और

विस्तार से। मुझे ज्ञान के आधार पर एक निश्चितता के साथ एहसास हुआ कि जिस तरह शब्द "उसके पास" सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड द्वारा प्रकट की गई दिव्य एकता का शानदार प्रमाण है, अतः इसके अर्थ और संकेत में ईश्वरीय प्रकाश की एक उज्ज्वल अभिव्यक्ति है प्रत्येक व्यक्तिगत वस्तु द्वारा प्रदर्शित एकता। चूँकि उस प्रमाण में उस एक की पहचान के लिए एक शक्तिशाली संकेत निहित है, जिसे अनिश्चित, तृतीय-व्यक्ति, एकवचन सर्वनाम वह संदर्भित करता है, मुझे यह भी पता चला कि कुरान और कुरान दोनों ही एक दूसरे से भिन्न हैं।
चमत्कारिक व्याख्या और जो लोग नियमित रूप से परमेश्वर का नाम लेते हैं ईश्वरीय एकता को व्यक्त करने के लिए इस पवित्र शब्द को बार-बार दोहराएँ।

यदि कागज के एक टुकड़े पर कई बिंदुओं को एक के चारों ओर मिला दिया जाए, तो यह लगभग उस बिंदु को पहचानना असंभव है। यदि आप एक साथ कई काम करते हैं, तो आप भ्रमित हो जाएगा। यदि किसी जीवित प्राणी पर एक साथ कई बोझ लादे जाएं, तो वह कुचल दिया जाएगा। यदि आप एक साथ कई शब्द सुनते या बोलते हैं, तो वे कुचल दिए जाएंगे। उलझन और उलझन में। हालाँकि, हज़ारों बिंदुओं, अक्षरों और हवा के हर अणु में शब्द जमा होते हैं - यहाँ तक कि हर परमाणु में भी - वे बिना किसी भ्रम या अनियमितता के संप्रेषित होते हैं। साथ ही, हवा अपने सभी कर्तव्यों का पालन करती है एक साथ और बिना किसी भ्रम के। प्रत्येक वायु अणु या परमाणु भारी भार वहन करता है बिना किसी कमी या कमजोरी के बोझ को उठाना। साथ ही, अनगिनत शब्द कानों में प्रवेश करते हैं और पूर्ण क्रम से मुँह तक आते हैं। सभी कार्य करते समय अपने असाधारण कर्तव्यों के बारे में, प्रत्येक परमाणु और वायु अणु अपनी भाषा में कहता है अस्तित्व और कार्य, परमानंद और पूर्ण स्वतंत्रता में, और इसकी गवाही के माध्यम से: "कोई देवता नहीं है लेकिन वह है" और "कहो: वह ईश्वर है, एकमात्र।" उन सभी बिजली और गरज के साथ हवा में टकराने वाली तरंगों के बीच यात्रा करें व्यवस्था और सामंजस्य, बिना किसी एक कार्य के दूसरे कार्य में बाधा उत्पन्न किए।

यह देखते हुए, प्रत्येक परमाणु या वायु अणु में अनिवार्य रूप से अनंत होते हैं बुद्धि, ज्ञान, इच्छा, शक्ति, और सभी गुणों की आवश्यकता है जो सभी पर हावी होने के लिए आवश्यक हैं अन्य परमाणुओं को ताकि यह उन कार्यों को कर सके - जो कि बहुत बेतुका है और यह अकल्पनीय है कि शैतान भी इसकी कल्पना कर सकता है - या, ज्ञान, स्पष्ट अवलोकन और व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर निश्चितता की स्थिति से, हवा शक्ति और भाग्य की कलम के लिए एक बदलते "पृष्ठ" के रूप में कार्य करता है, जिसका उपयोग सर्व-प्रतापी, अनंत ज्ञान और बुद्धि के साथ, और एक साइनबोर्ड के रूप में (एक प्रकार की मिटाने और पुष्टि की गोली) एक परिवर्तनशील को दर्शाती है सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका पर संरक्षित दिव्य आदेशों की प्रतिलिपि।

दिव्य एकता और की अभिव्यक्ति दिखाने के अलावा ध्वनि संचारण के अपने कर्तव्य में गुमराह करने वाले दावों की असंभवता, वायु तत्व एक साथ अन्य कर्तव्यों का पालन करता है (जैसे, इस तरह का संचारण करना) सूक्ष्म शक्तियां जैसे बिजली और प्रकाश, आकर्षण और प्रतिकर्षण), और वहन करती है सभी पौधों और जानवरों को उनके जीवन के लिए आवश्यक पदार्थ (जैसे, श्वसन और परागण के लिए) पूर्ण क्रम में उपलब्ध कराए जाते हैं। इस प्रकार, यह निर्णायक रूप से साबित करता है कि

यह ईश्वरीय इच्छा के आदेशों को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है, तथा यादृच्छिक संयोग, अंधी शक्ति, बहरी प्रकृति, भ्रमित और लक्ष्यहीन कारणता, या
शक्तिहीन, निर्जीव और अज्ञानी पदार्थ की पूर्ति में कोई भूमिका नहीं है
अपने कर्तव्यों का पालन करें। मैंने समझा कि प्रत्येक परमाणु और वायु अणु अपने कर्तव्य का पालन करते हैं।
अपनी अस्तित्व और कार्यशैली की भाषा: “अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं” और “कहो:
वह ईश्वर है, एकमात्र।" जिस तरह मैंने भौतिक पहलू में इन चमत्कारों को देखा
'वह' की कुंजी के साथ हवा की , इसलिए हवा स्वयं एक कुंजी बन गई, ' वह' की तरह, दुनिया के लिए
आदर्श रूप या प्रतिनिधित्व और अर्थ की दुनिया।

चौदहवाँ शब्द

चौदहवाँ शब्द

कुरान और पैगंबरी परंपराओं की सच्चाई को समझने के लिए महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अलिफ़ लाम रा. एक किताब जिसकी आयतों में अवतरण हुआ है
दृढ़, और क्रम में व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से विस्तृत। यह एक से है
वह अत्यन्त तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है। (11:1)

[नोट: उन दिलों की मदद करने के लिए जो समर्पण की कमी से पीड़ित हैं
और आज्ञाकारिता ताकि कुछ उच्च सत्यों तक पहुंच सकें
कुरान और हदीस के सच्चे व्याख्याता, मैं उन सच्चाइयों की कई तुलनाओं को इंगित करूंगा और ईश्वरीय कृपा के एक सबक और रहस्य के साथ समाप्त करूंगा। चूंकि प्रलय और मृत्यु की तुलना

पुनरुत्थान, जो उन सत्यों में से एक है, दसवें अध्याय में पाया जाता है
वर्ड (विशेष रूप से नौवें सत्य में), मैं उन्हें यहां नहीं दोहराऊंगा।
यहाँ अन्य सत्यों के उदाहरण के रूप में मैं केवल पाँच बातों का उल्लेख करूँगा।]

पाँच मामले

पहली बात: कुरान कहता है: (ईश्वर ने)
छः दिन में आकाश और पृथ्वी का चक्कर लगाओ (7:54)। कुरान का एक दिन एक लंबी अवधि के बराबर होता है, जैसे कि 1,000 या 50,000 मानव वर्ष।61
इसका तात्पर्य यह है कि मानव और पशु साम्राज्य "छह" वर्षों तक रहेंगे।
इस कुरानिक सच्चाई पर आश्वस्त होने के लिए, इस पर विचार करें और चिंतन करें
यात्रा करना, उन दुनियाओं से गुजरना जिन्हें सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता हर दिन बनाता है,

---

61 तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन तुम्हारे हिसाब में एक हज़ार वर्ष के बराबर है (22:47)। वह दिन जिसकी माप एक हज़ार वर्ष की होगी। पचास हज़ार वर्ष हैं (तुम्हारे सामान्य सांसारिक वर्षों के)। (70:4) (ट्र.)

वर्ष, और शताब्दी। ऐसा लगता है मानो ये सभी दुनियाएँ इंसानों की तरह मेहमान हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आदेशानुसार, वे प्रत्येक ऋतु में भरे और खाली किये जाते हैं।

दूसरा विषय: निम्नलिखित श्लोकों पर विचार करें:

> कोई भी वस्तु, ताजा या मुरझाई हुई, गीली या सूखी नहीं है, बल्कि यह प्रकट रूप में है पुस्तक. (6:59)
>
> हमने हर चीज़ लिख ली है और उसे खुले तौर पर दर्ज कर लिया है। (36:12)
>
> इतना भी नहीं जितना आकाश और पृथ्वी में एक परमाणु का भार बच जाता है उससे न तो कुछ छोटा है, न ही कुछ बड़ा, बल्कि वह एक प्रकट पुस्तक. (34:3)

इन श्लोकों में कहा गया है कि सभी चीजें, साथ ही उनके जीवन चक्र भी, उनके सांसारिक अस्तित्व से पहले दर्ज किए गए; कि वे उनके दौरान दर्ज किए गए हैं सांसारिक अस्तित्व; और यह कि उनके सांसारिक अस्तित्व के ये दर्ज उदाहरण उनकी मृत्यु के बाद पीछे रह जाते हैं। इस महान् सत्य के प्रति दृढ़ विश्वास रखना सत्य, देखिए कि महाप्रतापी लेखक किस प्रकार उसे समेटता और संरक्षित करता है असंख्य सुव्यवस्थित प्राणियों के अस्तित्व के सूचकांक वह प्रत्येक मौसम में, विशेष रूप से वसंत में, अपने बीजों और जड़ों में भर्ती होते हैं, उनके जीवन-इतिहास और उनके द्वारा कार्य किये जाने वाले सिद्धांतों के अनुसार।

विचार करें कि वह किस प्रकार सभी चीजों को उनके मरने के बाद भी रिकॉर्ड करता है और सुरक्षित रखता है। फल और बीज जो लकड़ी और हड्डियों के टुकड़ों जैसे दिखते हैं, बिल्कुल सही क्रम में उसकी नियति की कलम। ऐसा लगता है मानो हर वसंत फूल की तरह जुड़ा हुआ है पृथ्वी के चेहरे को अत्यंत सुव्यवस्थित और संतुलित तरीके से उस परम सुन्दर, कृपालु और महाप्रतापी के हाथ से, और फिर तोड़ लिया गया। यह वास्तविकता सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका, एक पृष्ठ का प्रतिबिंब प्रकट करती है जिस पर दिव्य नियति की कलम ने सब कुछ पूर्व-लिखित कर दिया था, साथ ही गुरु की कला का सूचकांक। और फिर भी गुमराह लोग सृजन के इस शिलालेख को, कला के इस डिजाइन को, ज्ञान के इस निष्क्रिय साँचे को "प्रकृति" कहते हैं और इसे "प्रकृति" मानते हैं स्वयं का सर्जक या निर्माता। उनकी गलती की सीमा अनंत है।

तीसरी बात: स्वर्गदूतों के समूह हैं। कुछ परमेश्वर का सिंहासन उठाते हैं, जबकि अन्य लोग आकाशीय पिंडों की गतिविधियों का पर्यवेक्षण करते हैं, साथ ही पृथ्वी के निवासियों के जीवन और कर्मों को ईश्वरीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना ये निवासी भाषा में जो प्रशंसा और महिमा करते हैं उनके अस्तित्व और स्वभाव के बारे में। अन्य समूह व्यापक रूप से परमेश्वर की महिमा और आराधना करते हैं।

इनमें से कुछ समूहों के बारे में पैगम्बर के वर्णन को समझने के लिए - कि वे प्रत्येक अपने चालीस हज़ार सिरों में चालीस हज़ार जीभों के साथ परमेश्वर की महिमा करता है, और ऐसा चालीस हज़ार विभिन्न तरीकों से करता है - निम्नलिखित पर विचार करें-

सातों आकाश और पृथ्वी और उनमें जो कुछ है, सब उसकी महिमा करते हैं
(17:44) हमने पहाड़ों को वश में कर लिया ताकि वे उसके साथ उसकी तसबीह करें ।
(38:18) और हमने अमानत को आकाशों और धरती और पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया (33:72)

सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहते हैं कि सबसे महान और सबसे सार्वभौमिक जीव अपनी सार्वभौमिकता और महानता के अनुसार उसकी महिमा करते हैं। स्वर्ग की महिमा के शब्द सूर्य, चंद्रमा और तारे हैं, इसलिए जानवर, पौधे और पेड़ पृथ्वी की प्रशंसा के शब्द हैं, एक उड़ने वाली वस्तु महिमा और स्तुति करना। अर्थात, प्रत्येक वृक्ष और तारा एक विशिष्ट प्रकार की स्तुति करता है, जबकि पृथ्वी और उसका प्रत्येक भाग, प्रत्येक पर्वत और घाटी, भूमि और समुद्र, आकाशमण्डल और आकाश के नक्षत्र सभी एक-दूसरे के साथ मिल कर कार्य करते हैं। महिमा का सार्वभौमिक रूप। पृथ्वी, जिसके हजारों सिर हैं जिनमें से प्रत्येक में अनगिनत भाषाएँ हैं, उसके लिए एक देवदूत नियुक्त किया गया है जो अनुवाद करता है और उसकी महिमा के फूलों और प्रशंसा के फलों को दुनिया में प्रदर्शित करता है आदर्श रूप, तथा आत्माओं की दुनिया में उनका प्रतिनिधित्व और घोषणा कौन करता है।

यदि बहुत सी चीजें मिलकर एक सामूहिकता बनाती हैं, तो एक सामूहिक व्यक्तित्व अस्तित्व में आता है। यदि ऐसा सामूहिक एक मजबूत संघ बनाता है, तो यह इसका प्रतिनिधित्व करने के लिए एक प्रकार की सामूहिक भावना है, साथ ही एक नियुक्त देवदूत भी है महिमामंडन का अपना कर्तव्य निभाने के लिए। उदाहरण के लिए, प्लेन ट्री पर विचार करें मेरे कमरे के सामने। यह बरला के मुँह में उस पहाड़ की जीभ का एक व्यापक शब्द है। देखो, तीन सिरों पर कितनी टहनियाँ हैं इसके तने की तीन मुख्य शाखाएँ हैं। अध्ययन करें कि इसमें कितने सैकड़ों शब्द (सुव्यवस्थित और सुसंतुलित फल) हैं और प्रत्येक फल में कितने अक्षर (सुव्यवस्थित पंख वाले बीज) हैं। सुनें और देखें कि यह पेड़ कितनी वाक्पटुता से अपने राजसी निर्माता, " हो!" के आदेश के स्वामी की प्रशंसा और महिमा करता है और यह है। बुद्धि को इसके लिए नियुक्त किए गए देवदूत की आवश्यकता होती है जो आध्यात्मिक दुनिया में कई भाषाओं के साथ इसकी महिमा का प्रतिनिधित्व करता है।

चौथा विषय: इन श्लोकों द्वारा व्यक्त किए गए महान सत्य पर विचार करें:

> जब वह किसी चीज़ को होना चाहता है तो बस उससे कहता है, "हो जा!" तो वह हो जाती है। (36:82)
>
> क़ियामत का मामला तो बस पलक झपकने के बराबर है। (16:77)
>
> हम उससे उसकी गरदन की नस से भी अधिक निकट हैं। (50:16)
>
> फ़रिश्ते और रूह एक दिन में उसके पास चढ़ जाते हैं
> जो पचास हज़ार वर्ष है। (70:4)

वह परम शक्तिशाली परमेश्वर इतनी आसानी, गति और शक्ति से चीजों का निर्माण करता है। शारीरिक संपर्क का अभाव, ऐसा प्रतीत होता है मानो वह मात्र आदेश देकर सृष्टि करता है। यद्यपि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता प्राणियों के असीम निकट है, फिर भी वे

उससे अनंत रूप से दूर। अपनी अनंत भव्यता के बावजूद, वह यहां तक कि उसे भी शामिल करता है
वह सृजन की रचना और स्वरूपण के साथ-साथ कलात्मक सौंदर्य को भी महत्व देते हैं। उत्तम व्यवस्था और पूर्ण सहजता
दुनिया में अस्तित्व में आने वाली चीज़ों और रचनाओं में देखी गई बातें गवाही देती हैं
इन कुरानिक सच्चाइयों के लिए नीचे दी गई तुलना भी उन्हें दर्शाती है।

सबसे ऊंची तुलना ईश्वर के लिए है (और इसे सामने रखा जाना चाहिए) - सूर्य, अपने रूप में
प्रकाश के दिव्य नाम के लिए एक घने, ठोस दर्पण के रूप में क्षमता, असीम रूप से निकट है
सभी पारदर्शी और चमकदार चीजों के लिए; यह उनकी अपनी चीज़ों से भी ज़्यादा उनके करीब है
स्वयं को और उन्हें कई तरीकों से प्रभावित करता है, जैसे अपने प्रकाश, गर्मी, छवि के माध्यम से,
और प्रतिबिंब। इसके विपरीत, वे पारदर्शी चीजें लाखों मील दूर हैं
सूर्य से कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तथा सूर्य से निकटता का दावा नहीं कर सकता। साथ ही, प्रत्येक पारभासी वस्तु जो अपनी क्षमता के अनुसार सूर्य की छवि को प्रतिबिंबित करती है,
आकार और रंग से पता चलता है कि यह ऐसा है जैसे कि सूर्य इसमें मौजूद है। इसके अलावा, सूर्य की चमक की सीमा इसकी पैठ की क्षमता और व्यापकता को बढ़ाती है। इसकी चमक की महानता के कारण, कुछ भी इसे नहीं भेद सकता
इससे छिपना या भागना। दूसरे शब्दों में, एक चमकदार वस्तु होने के नाते, सूर्य का
विशालता और भव्यता के कारण यह क्षेत्र से चीजों को बाहर नहीं करती
इसकी समझ का स्तर बहुत बड़ा है; बल्कि, इसमें छोटी से छोटी बात तक सब कुछ शामिल है।

सूर्य ऐसी सभी चीजों में इतनी आसानी और गति से खुद को प्रकट करता है, और
इतने व्यापक क्षेत्र में, कि अगर इसकी स्वतंत्र इच्छा होती, तो हमें यह मानना पड़ता कि यह ये सभी काम महज एक आदेश के जरिए करता। एक परमाणु और एक
ग्रह अपने प्रकट होने से पहले बराबर होते हैं, और यह एक को गर्मी और प्रकाश देता है
महासागर की सतह और सूक्ष्मतम कण पूर्ण क्रम और अनुरूपता के साथ
प्रत्येक वस्तु की क्षमता के अनुसार। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर्य, जो इससे अधिक कुछ नहीं है
स्वर्ग के "महासागर" में प्रकाश देने वाला "बुलबुला", एक छोटा ठोस दर्पण
परम शक्तिशाली के नाम की अभिव्यक्ति को दर्शाता है
प्रकाश, ऊपर दिए गए श्लोकों में व्यक्त सत्य के उदाहरण प्रदर्शित करता है। इसलिए, हम
पूर्ण निश्चय के साथ मानो मानो साक्षी होकर कह रहे हों कि सर्वशक्तिमान, ज्योतियों का प्रकाश, प्रकाश का प्रकाशक, निर्धारक
प्रकाश का, और जिसके ज्ञान और शक्ति की तुलना में सूर्य का प्रकाश
और गर्मी मिट्टी की तरह अभेद्य हैं, सर्वव्यापी हैं, सर्वव्यापी हैं, और असीम हैं
वह अपने ज्ञान और शक्ति के द्वारा सभी चीज़ों के निकट है। साथ ही, सभी चीज़ें उसके निकट हैं
उससे असीम रूप से दूर है, और सृजन करना उसके लिए इतना आसान है कि ऐसा लगता है कि वह
इसे केवल एक आदेश के साथ। इसके अलावा, सब कुछ क्षेत्र में शामिल है
वह अपनी शक्ति से परिपूर्ण है, और वह अपनी महानता में सभी चीजों को समाहित करता है।

पाँचवाँ विषय: शाश्वत सम्राट की प्रभुता की महानता और उनका
दिव्यता की भव्यता निपटान के एक असीम क्षेत्र को घेरती है, जो निम्न स्थानों तक फैला हुआ है:

उनके पास परमेश्वर के विषय में कोई सच्चा निर्णय नहीं है जैसा कि परमेश्वर होने के नाते अपेक्षित है, और क़यामत के दिन सारी धरती उसके कब्ज़े में होगी और आसमान भी उसके कब्ज़े में होगा उसके "दाहिने हाथ" में लपेटा जाएगा (39:67), ताकि: जान लें कि निश्चित रूप से ईश्वर आता है एक व्यक्ति और उसके दिल के बीच (8:24); से: परमेश्वर सभी चीजों का निर्माता है, और वह हर चीज़ का रक्षक है (39:62) अल्लाह जानता है जो कुछ वे रखते हैं (2:77) उसी ने आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया। धरती (7:54), को: वह तुम्हें और जो कुछ तुम करते हो उसे पैदा करता है (37:96); और उससे: यह है भगवान जैसा चाहता है; जो कुछ वह चाहता है वही होता है, और भगवान के बिना कोई शक्ति नहीं है (18:39), to: तुम चाह नहीं सकते जब तक कि अल्लाह न चाहे (76:30).

यह देखते हुए, कुरान में मानवता के प्रति गंभीर आलोचनाएं और भयानक धमकियां क्यों हैं, जो असीम रूप से कमजोर और शक्तिहीन, निराश्रित और जरूरतमंद है, और जिसके पास केवल आंशिक स्वतंत्र इच्छा है और कोई अधिकार नहीं है?
सृजन करने की शक्ति? इस गहन और उदात्त का विश्वास प्राप्त करना सत्य जानने के लिए, नीचे दी गई दो तुलनाओं पर विचार करें: पहली

तुलना: एक शानदार बगीचे की कल्पना करें जिसमें असंख्य फलदार पेड़ और फूलदार पौधे हों। कई नौकरों को काम सौंपा गया है
इसमें भाग लेने के लिए, लेकिन केवल एक को पानी नहर खोलने का काम सौंपा गया है वाल्व ताकि पानी पूरे बगीचे में फैल सके और लाभ उठा सके उसमें सब कुछ है। अगर वह आलसी है और वाल्व नहीं खोलता है, तो बगीचा नहीं बढ़ सकता है, और यह भी मुरझाना शुरू हो सकता है। इस प्रकार, बगीचे के अलावा निर्माता की कला, सम्राट का शाही पर्यवेक्षण, और राजा की विनम्र सेवा प्रकाश, हवा और मिट्टी के अलावा अन्य सभी सेवकों को उसके विरुद्ध शिकायत करने का अधिकार है, क्योंकि उसका आलस्य उनके कर्तव्यों को बेकार कर देता है या उन्हें नुकसान पहुंचाता है।

दूसरी तुलना: एक साधारण व्यक्ति द्वारा अपने कर्तव्य की उपेक्षा करना
शक्तिशाली शाही जहाज चालक दल के काम को नुकसान पहुंचाता है और यहां तक कि उनके कुछ लोगों को भी परेशान करता है काम बेकार है। इसलिए, जहाज का मालिक उसके बारे में कड़वी शिकायत करेगा दूसरों का नाम। वह यह कहकर खुद को माफ़ नहीं कर सकता: "मैं तो बस एक हूँ मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ। मैं अपनी तुच्छता के कारण इतनी कठोरता का पात्र नहीं हूँ उपेक्षा। क्योंकि अस्तित्वहीनता की एक भी घटना कई परिणामों को जन्म दे सकती है। गैर-अस्तित्व के उदाहरण, जबकि किसी चीज़ का अस्तित्व सीमित है दूसरे शब्दों में, किसी चीज़ का अस्तित्व उस पर निर्भर करता है इसकी सभी आवश्यक स्थितियों, कारणों और आवश्यक भागों के अस्तित्व के बावजूद, इसका अस्तित्व न होना एक स्थिति या घटक के अस्तित्व न होने से संभव है। इसीलिए "ठीक करने की तुलना में नष्ट करना बहुत आसान है" एक सार्वभौमिक कथन है।
स्वीकृत सिद्धांत.

अविश्वास और गुमराही, साथ ही विद्रोह और अवज्ञा का अर्थ है इनकार और अस्वीकृति, परित्याग और अस्वीकृति। हालाँकि वे सतही तौर पर वे सकारात्मक अस्तित्व के चिह्नों से युक्त प्रतीत होते हैं, वास्तव में वे

विलुप्ति और अस्तित्वहीनता है। इसलिए उनके नकारात्मक प्रभाव संक्रामक हैं। जिस तरह वे अन्य प्राणियों के कार्यों के परिणामों को नुकसान पहुंचाते हैं, उसी तरह वे दूसरों पर भी नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
दिव्य नामों की सुन्दरता की अभिव्यक्ति पर पर्दा डाल दिया गया है।

प्राणियों का सम्राट नाम में विद्रोही मानवता की आलोचना करता है
उन सभी लोगों का जिन्हें असंख्य शिकायतें दर्ज करने का अधिकार है
मानवता। उसका ऐसा करना पूर्ण बुद्धिमत्ता है, और विद्रोही मानवता इसके लायक है
उनकी गंभीर और भयानक धमकियाँ.

निष्कर्ष

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सांसारिक जीवन तो बस भ्रम का क्षणिक आनंद है। (3:185)

[नोट: मेरी असावधान आत्मा के लिए एक गंभीर, चेतावनीपूर्ण सबक।]

हे मेरी अभागी आत्मा, जो असावधानी में डूबी हुई है, जो इस जीवन को मधुर और आनंदमय समझती है, परलोक से बेखबर, केवल उसी की तलाश में है। तुम एक शुतुरमुर्ग की तरह हो जो शिकारी को देखकर भाग नहीं सकता और अपना सिर पानी में डाल लेता है।
रेत में दबा दिया गया है ताकि शिकारी उसे न देख सके। हालाँकि, उसका विशाल शरीर रेत में ही रहता है खुला है, इसलिए निश्चित रूप से शिकारी इसे देख सकता है। केवल शुतुरमुर्ग की आँखें ही इसे देख सकती हैं रेत में बंद होने के कारण वह शिकारी को नहीं देख सकता।

हे मेरे मन! निम्नलिखित तुलना पर विचार करो और समझो कि कैसे
केवल इस संसार पर ध्यान केन्द्रित करने से महान सुख भयंकर पीड़ा में बदल जाता है:

कल्पना कीजिए कि इस गांव (बरला) में दो लोग हैं।
मेरे सौ में से एक दोस्त इस्तांबुल चले गए हैं, जहां वे रहते हैं।
खुशी से रह रहे हैं। वह जल्द ही उनके साथ जुड़ जाएगा, और इसलिए वह चाहता है और सोचता है इस्तांबुल। जब उसे बताया जाएगा कि वह वहाँ जा सकता है, तो वह बहुत खुश होगा और खुशी-खुशी वहाँ जाएगा। दूसरा व्यक्ति, जो उसी स्थिति का सामना कर रहा है, सोचता है कि उसके कुछ
दोस्त मर गए हैं और बाकी लोग वहाँ चले गए हैं जहाँ वे नहीं देख सकते
और उन्हें देखा नहीं जा सकता। यह कल्पना करते हुए कि वे घोर दुःख में चले गए हैं, उसने
वह अपने एकमात्र बचे हुए दोस्त से सांत्वना चाहता है, जो तैयार होने वाला है।
वह अलगाव की भारी पीड़ा की भरपाई करना चाहता है
दोस्त।

हे मेरी आत्मा! ईश्वर के प्रियतम सर्वोपरि, पैगम्बर मुहम्मद, उन पर हो
शांति और आशीर्वाद हो, और आपके सभी दोस्त दुनिया के दूसरी तरफ हों
एक या दो लोग यहीं रह जाएंगे, लेकिन वे भी वहां चले जाएंगे। इसलिए डरो मत
मृत्यु या कब्र, या मृत्यु से अपना ध्यान हटाओ। इसे साहसपूर्वक देखो
और सुनो कि वह क्या चाहता है। उसके चेहरे पर हँसो और देखो कि वह क्या चाहता है। और बनो
सुनिश्चित करें कि आप दूसरे व्यक्ति की तरह नहीं हैं।

हे मेरे प्राण! मत कहो: "समय बदल गया है। यह युग भिन्न है, क्योंकि
हर कोई इस दुनिया में डूबा हुआ है और इस जीवन को प्यार करता है। हर कोई आजीविका के संघर्ष के लिए खुले तौर पर प्रतिबद्ध है। क्योंकि मृत्यु बदलती नहीं है।
अलगाव कभी ख़त्म नहीं होता और शाश्वत मिलन या साथ नहीं बन जाता।
आंतरिक नपुंसकता और गरीबी बदलती नहीं है; बल्कि बढ़ती है।
इस संसार की यात्रा में रुकावट नहीं आती; बल्कि यह और तेज हो जाती है।

यह मत कहो: "मैं बाकी सभी लोगों जैसा हूँ।" हर कोई आपसे सिर्फ़ इसलिए दोस्ती करता है क्योंकि वह आपको पसंद करता है।
कब्र तक। हर उस व्यक्ति की सांत्वना जो एक ही दुर्भाग्य से पीड़ित है
दूसरी तरफ़ से आपकी मदद नहीं की जा सकती। न ही कल्पना करें कि आप स्वतंत्र हैं और
स्वतंत्र। इस अस्थायी दुनिया को ज्ञान की नज़र से देखो। देखो
कि हर चीज़ का एक क्रम और उद्देश्य होता है। आप खुद पर कैसे छोड़े जा सकते हैं,
क्योंकि यह आपको व्यवस्था से बाहर कर देगा और आपको उद्देश्यहीन बना देगा। भूकंप जैसी सभी घटनाएँ संयोग की चीज़ें नहीं हैं।

आप पृथ्वी की अत्यंत अच्छी तरह से डिजाइन और बारीकी से कढ़ाई देख सकते हैं
कपड़े, जो एक के ऊपर एक और दूसरे के भीतर पहने जाते हैं, और सभी पौधे
और पशु प्रजातियों को ऊपर से नीचे तक सजाया और अलंकृत किया गया है
महत्वपूर्ण उद्देश्यों और ज्ञान के उदाहरण। यह एक परमानंद की तरह बदल जाता है
मेवलेवी दरवेश को उत्तम क्रम में तथा उच्च उद्देश्यों के लिए। तो आप कैसे मान सकते हैं कि यह महत्वपूर्ण, मृत्यु लाने वाली घटनाएँ हैं, जैसे कि हाल ही में आया भूकंप,62 जो
इसे पृथ्वी द्वारा कुछ निश्चित प्रकार के तूफानों के भार से मुक्त होने के रूप में समझा जा सकता है।
मानवीय लापरवाही जिसे वह स्वीकार नहीं करता है - विशेष रूप से विश्वासियों में - उद्देश्यहीन और संयोग का परिणाम है? आप ऐसा कैसे कर सकते हैं,
क्या ऐसी घटनाओं से प्रभावित लोगों की भारी क्षति को बिना किसी प्रतिपूर्ति और व्यर्थ के रूप में दर्शाकर उन्हें भयंकर निराशा में डाल दिया जाना चाहिए?
जो लोग ऐसा करते हैं वे बहुत बड़ी भूल और बहुत बड़ा अन्याय कर रहे हैं।

ऐसी घटनाएँ एक अत्यन्त बुद्धिमान और दयावान के आदेश पर होती हैं, ताकि ऐसी घटनाओं के कारण ईमान वालों को जो कुछ खोना पड़े, उसकी भरपाई हो सके।
दान के समान ही पुरस्कार के पात्र बनो और इस प्रकार स्थायित्व प्राप्त करो।
हानि ईश्वर के प्रति कृतघ्नता से उत्पन्न पापों का प्रायश्चित भी है
इनाम.

एक दिन आएगा जब यह पराधीन पृथ्वी हमारे कार्यों को देखेगी,
उसके चेहरे की शोभा है, जो ईश्वर और उसके अनुयायियों को साझी ठहराने से कलंकित हो गई है।
बिना आवश्यक आभार के। यह उन्हें अस्वीकार कर देगा और, जब
सृष्टिकर्ता आज्ञा देता है, वह उन्हें अपने चेहरे से मिटा देगा और उसे शुद्ध करेगा। परमेश्वर के यहाँ
यह आदेश उन लोगों को नरक में डाल देगा जो ईश्वर के साथ साझीदार हैं और
शुक्रगुज़ार लोगों से कहो: "आओ और जन्नत में दाखिल हो जाओ।"

---

[62] यह तुर्की के इज़मिर में 1935 में आए भूकंप को संदर्भित करता है।

परिशिष्ट

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जब धरती में भयंकर भूचाल आएगा, और
पृथ्वी अपना बोझ छोड़ देती है, और मानवता चिल्लाती है, "क्या है
उस दिन वह तुम्हारी तरह ही सारी बातें कहेगी।
प्रभु ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया है। (99:1-5)

इस सूरा में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि धरती एक आदेश पर हिलती और कांपती है,
प्रेरणा प्राप्त करने पर कभी-कभी यह कांप उठता है।

[नोट: निम्नलिखित में हाल ही में आए भूकंप के संबंध में पूछे गए सात प्रश्नों के मेरे संक्षिप्त उत्तर शामिल हैं।]

पहला प्रश्न: हाल ही में आए भूकंप की भौतिक आपदा से भी अधिक तनावपूर्ण बात यह है कि इसके दोबारा होने का भय और उसके परिणामस्वरूप होने वाली निराशा, हमारे अंदर के सभी नकारात्मक पहलुओं को नष्ट कर देती है।
अधिकांश क्षेत्रों में अधिकांश लोगों का रात्रि विश्राम। इसका क्या कारण है?
भयानक पीड़ा?

उत्तर: वे अश्लील गाने प्रसारित कर रहे थे (कुछ लड़कियों द्वारा गाए गए)
तरावीह की नमाज़ के दौरान रेडियो पर नशे की हालत में
इस्लाम के इस धन्य केंद्र में.63

दूसरा प्रश्न: अविश्वासियों के बजाय मुसलमानों को ऐसे स्वर्गीय प्रहारों से क्यों पीड़ित किया जाता है?

उत्तर: बड़े मामलों और अपराधों की सुनवाई और निर्णय बड़े केंद्रों में किया जाता है,
जबकि छोटे-मोटे मामलों का फैसला छोटे-छोटे केंद्रों में किया जाता है। परमेश्वर की बुद्धि यह मांग करती है कि
अविश्वासियों के लिए नियत अधिकांश दण्ड अन्तिम समय तक स्थगित कर दिया जाए,
सर्वोच्च न्याय, और यह कि विश्वासियों को इस दुनिया में आंशिक रूप से दंडित किया जाए।64

तीसरा प्रश्न: यह आपदा, जो कि 1960 के दशक में आई थी, क्यों हुई?
क्या किसी विशेष व्यक्ति के गलत कामों में उस क्षेत्र के लगभग सभी लोग शामिल हैं?

उत्तर: चूँकि आम आपदा बहुसंख्यकों के गलत कामों का परिणाम है, इसलिए अधिकांश लोगों ने अल्पसंख्यकों के पापपूर्ण कार्यों में भाग लिया होगा।
उन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता देकर, या किसी अन्य तरीके से।

चौथा प्रश्न: चूँकि यह आपदा गलत कामों का परिणाम है
पापों के प्रायश्चित के लिए, निर्दोष और दोषरहित लोगों को क्यों कष्ट सहना पड़ा?
क्या ईश्वरीय न्याय इसकी अनुमति देता है?

---

63 तरावीह: रमज़ान के दौरान रात की नमाज़ के बाद की जाने वाली अतिरिक्त नमाज़। (ट्र.)

64 वे लोग (जैसे साम्यवादी रूसियों ने) जिन्होंने एक भ्रष्ट और निरस्त धर्म को त्याग दिया
ईश्वरीय प्रकोप (दुनिया में) उन लोगों के समान न हो जो एक सच्चे और शाश्वत धर्म के साथ विश्वासघात करते हैं जो कभी निरस्त नहीं किया जाएगा। इस प्रकार पृथ्वी ईमान वालों के प्रति अपना क्रोध दिखाती है
और बाकी लोगों को फिलहाल अकेला छोड़ देता है।

उत्तर: चूँकि यह मामला ईश्वरीय नियति से संबंधित है, इसलिए मैं आपको यह सन्दर्भ देता हूँ: "भाग्य और मानव स्वतंत्र इच्छा पर ग्रंथ।" यहाँ, मैं केवल इतना कहता हूँ: सावधान रहें एक ऐसे परीक्षण की जो निश्चित रूप से केवल आप में से उन लोगों को नहीं मारेगा जो इसमें लगे हुए हैं गलत कामों में (8:25)। इसका मतलब है कि यह दुनिया परीक्षण और परीक्षा का क्षेत्र है, जिम्मेदारी और संघर्ष की जगह है। परीक्षण और जिम्मेदारी के लिए ज़रूरी है कुछ मामलों में सच्चाई पर पर्दा डाला जाता है ताकि प्रतिस्पर्धा और संघर्ष में कुछ लोग सर्वोच्च पद तक पहुंच जाते हैं, जबकि अन्य निम्नतम स्तर पर गिर जाते हैं। यदि निर्दोष लोगों को ऐसी विपत्तियों का सामना न करना पड़े, तो हर कोई आत्मसमर्पण कर देगा इसी तरह से। इससे आध्यात्मिक प्रगति का द्वार बंद हो जाएगा संघर्ष, और हमारी जिम्मेदारी और परीक्षण को निरर्थक बनाना।

यदि ईश्वरीय बुद्धि चाहती है कि अन्याय करने वाला और अन्याय करने वाला कष्ट सहे उसी विपत्ति से गुज़रने वाले का ईश्वरीय दया में क्या हिस्सा है और न्याय? अन्याय सहने वाले व्यक्ति के लिए, न्याय के पीछे एक प्रकार की दया छिपी होती है आपदा में क्रोध और गुस्सा दिखाया गया। जैसे एक निर्दोष व्यक्ति खो गया हो संपत्ति गरीबों को दिए गए दान के समान हो जाती है और इस प्रकार स्थायित्व प्राप्त करती है, आपदा में उसकी मृत्यु को एक प्रकार की शहादत माना जा सकता है जिसके माध्यम से वह अनंत सुखमय जीवन अर्जित करता है। इस प्रकार, ऐसे लोग लाभ प्राप्त करते हैं अपेक्षाकृत छोटी और अस्थायी कठिनाई से बड़ा और स्थायी लाभ और पीड़ा, और भूकंप दिव्य दया का एक उदाहरण बन जाता है उनके प्रति क्रोध के भीतर।

पाँचवाँ प्रश्न: सर्वशक्तिमान, दयालु, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर विशिष्ट गलतियों के लिए विशिष्ट दण्ड क्यों नहीं देता?
और दंड के लिए एक शक्तिशाली तत्व (जैसे पृथ्वी) का उपयोग करता है? क्या इसे उसकी दया की कृपा और उसकी शक्ति की समग्रता के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है?

उत्तर: सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रत्येक को अनेक कर्तव्य सौंपता है। सृष्टि में एक महत्वपूर्ण तत्व है, तथा प्रत्येक कर्तव्य से अनेक प्रभाव उत्पन्न होते हैं। यद्यपि किसी तत्व के कर्तव्यों का एक प्रभाव कुरूप, बुरा या विनाशकारी हो सकता है, अन्य प्रभाव अच्छे या सुंदर हो सकते हैं। यदि वह एक बदसूरत या बुरा प्रभाव तत्व को उसके अन्य कर्तव्यों को पूरा करने से रोकता है, तो इसके कई उदाहरण हैं अच्छाई को भी रोका जा सकेगा। चूँकि ज़रूरी अच्छाई न करना बुराई है, अच्छे प्रभावों की संख्या के बराबर ही बुरे कृत्य भी किए जाएंगे। एक बुराई से बचने के लिए कई अच्छे कामों को छोड़ देना बहुत ही बुरा है। बुद्धि और वास्तविकता के विपरीत, और एक दोष। हालाँकि, ईश्वरीय शक्ति, बुद्धि और सत्य दोष रहित हैं। क्योंकि कुछ दोष विद्रोह का कारण बनते हैं पृथ्वी और अन्य तत्वों को क्रोधित करने के लिए पर्याप्त व्यापक, और असंख्य प्राणियों के अधिकारों का अपमानजनक उल्लंघन है, कभी-कभी एक शक्तिशाली तत्व को विद्रोही को फटकारने का आदेश दिया जाता है, जैसे

यह उसके सार्वभौमिक कर्तव्य का हिस्सा है, ताकि घटना की असाधारण कुरूपता को उजागर किया जा सके
सभी को दिखाई देना चाहिए। ऐसे मामलों में, यह पूर्ण बुद्धि और न्याय है, और
अन्याय किया गया है, यह पूर्ण दया है।

छठा प्रश्न: असावधान लोग कहते हैं कि भूकंप का परिणाम
चट्टानी परतों में भूमिगत दोष को प्राकृतिक और उद्देश्यहीन संयोग की घटना मानते हैं। वे गैर-भौतिक कारणों को नहीं पहचानते और
वे परिणामों से अनभिज्ञ हैं और इस घटना से कुछ भी नहीं सीखते।
क्या उनके आरोप में कोई सच्चाई है?

जवाब: नहीं। इसमें सिर्फ़ गुमराही है। हर साल धरती
वह असंख्य कढ़ाईदार, अच्छी तरह से डिजाइन किए गए कपड़े पहनती और बदलती है।
मक्खियाँ पृथ्वी पर मौजूद लाखों प्रजातियों में से सिर्फ़ एक हैं।
अपने शरीर के अनेक अंगों या भागों में से किसी एक का पंख उड़ाना।
यह जो इच्छा, उद्देश्य और बुद्धि प्रकट करता है, उससे पता चलता है कि विशाल पृथ्वी के कार्यों, गति और अवस्थाओं की तो बात ही छोड़िए, जो असंख्य चेतन प्राणियों का पालना, आधार और रक्षक है, इस पर और इससे संबंधित कुछ भी नहीं है,
चाहे विशेष हो या सार्वभौमिक, ईश्वरीय इच्छा और बुद्धि द्वारा अनदेखा कर दिया जाता है और
उसे अपने हाल पर छोड़ दिया गया है। हालाँकि, जैसा कि उसकी बुद्धि की आवश्यकता है, बिल्कुल
शक्तिशाली अपने कार्यों को स्पष्ट कारणों से छिपाता है। जब वह भूकम्प चाहता है, तो वह चट्टानों को हिलाने का आदेश दे सकता है। भले ही भूकंप का स्पष्ट कारण हो
भूकंप यह गति है, यह गति और इसके परिणामस्वरूप होने वाला भूकंप दोनों ही ईश्वरीय आदेश और उनके नियमों के अनुसार होते हैं।
बुद्धि।

इस पर विचार करें: कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को गोली मारकर हत्या कर देता है। यदि केवल गोली चलाने वाले की चाल पर विचार किया जाए और हत्यारे को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए, तो पीड़ित की हत्या की संभावना बढ़ जाएगी।
अधिकारों का उल्लंघन होता है और परिणाम घोर मूर्खता और अन्याय होता है।
इसी प्रकार, प्रभु की आज्ञा, इच्छा और बुद्धि की अवहेलना करना
पृथ्वी से जुड़ी कोई भी गतिविधि या घटना, एक विनम्र अधिकारी
सर्वशक्तिमान महामहिम, उनका एक जहाज या विमान, और इसका श्रेय
इसे प्रकृति या कारण और प्रभाव के आधार पर न मानना एक गंभीर त्रुटि और नितांत मूर्खता है।

एक अतिरिक्त बात: गुमराह लोग और भौतिकवादी लोग
अपने तरीके से और इस तरह से विश्वासियों की जागृति का मुकाबला करने या दिखाने के लिए
इस हद तक अड़ियलपन कि लोगों को अपनी इंसानियत पर पछतावा होने लगे।
हाल ही में और एक निश्चित सीमा तक, भयानक और गलत विद्रोह हुआ है
एक सामान्य रूप ग्रहण किया, और यह ब्रह्मांड और कुछ सार्वभौमिक को जगाता है
क्रोध के तत्व। इसलिए, लोगों को अपनी भयानकता छोड़ने की चेतावनी देने के लिए,
गलत विद्रोह और ब्रह्मांड में उनके कर्तव्य के बारे में
ईश्वर को सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी मानकर उन्हें जागृत करने के लिए

ब्रह्माण्ड के अधिपति को, जिसे वे पहचान नहीं पाते, आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता, हमारे मार्ग में विभिन्न विपत्तियाँ भेजता है।
अपने प्रभुत्व की किसी विशेष अभिव्यक्ति के कारण नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी के रूप में सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के कारण, वे हमें भूकंप, तूफान, बाढ़ और विश्व युद्ध जैसी व्यापक और भयानक आपदाओं को सहन करने देते हैं, और इस प्रकार अपनी बुद्धि, शक्ति, न्याय, आत्मनिर्भरता, इच्छा और संप्रभुता को सबसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं।

हालाँकि यह सच है, कुछ गुमराह लोग ईश्वरीय प्रभुत्व और ईश्वरीय फटकार के ऐसे सार्वभौमिक संकेतों पर यह कहकर प्रतिक्रिया देते हैं: "प्रकृति ऐसा करती है। यह चट्टान की परतों में दोष के कारण होता है, और यह सिर्फ़ संयोग का परिणाम है। यह सूर्य की गर्मी और बिजली के टकराव के कारण है जिसने अमेरिका में पाँच घंटे तक सभी मशीनरी को बंद कर दिया। इससे कस्तमोनू का वातावरण भी लाल हो गया और आग की लपटों जैसा दिखने लगा।"

अपने गलत मार्गदर्शन और हठी नास्तिकता और भौतिकवाद के कारण, वे नहीं जानते कि प्राकृतिक कारण केवल कुछ अवसर और आवरण हैं। यदि उनकी समझ सही होती, तो एक विशाल देवदार के पेड़ को एक बीज से बढ़ने के लिए कारखानों और करघों से भरे एक गाँव की आवश्यकता होती। हालाँकि, पेड़ को उसके बीज और कुछ स्पष्ट कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराकर, भौतिकवादी अविश्वासी उस पेड़ में प्रदर्शित निर्माता के कई चमत्कारों को नकारते हैं और इच्छा और बुद्धि के माध्यम से किए गए निर्माता के प्रभुत्व के एक व्यापक कार्य को नकार देते हैं। कभी-कभी वे एक सबसे गहन, अज्ञात और महत्वपूर्ण वास्तविकता को एक "वैज्ञानिक" नाम देते हैं जिसके प्रत्येक असंख्य पहलुओं में अनगिनत उद्देश्य होते हैं। उन्हें लगता है कि ऐसा करने का मतलब है कि इसकी पूरी प्रकृति को समझा और समझाया गया है। लेकिन वास्तव में, उन्होंने इसे केवल सामान्य बना दिया है और इसके सभी उद्देश्य, ज्ञान और अर्थ को छीन लिया है।

वे गुरु के किसी विशेष और उद्देश्यपूर्ण कार्य को प्रकृति के नियम के रूप में मानते हैं, हालाँकि ऐसे नियम सार्वभौमिक इच्छा, व्यापक विकल्प और सार्वभौमिक संप्रभुता के केवल एक पहलू की अभिव्यक्ति हैं। इस तरह के आरोपण से वे गुरु (घटना) के कार्य और ईश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के बीच के संबंध को तोड़ देते हैं, और इस तरह वे इसे संयोग और प्रकृति तक सीमित कर देते हैं। यह सरासर अज्ञानता युद्ध के मैदान में जीत का श्रेय सैन्य नियमों और अनुशासन को देने के समान है, जबकि सैनिकों, कमांडर, राजा और शासकों के उद्देश्यपूर्ण, जानबूझकर किए गए कार्यों और प्रथाओं को अनदेखा किया जाता है।

उल्लेख.

या, यह इस तरह है: एक चमत्कारी व्यक्ति एक नाखून के आकार की लकड़ी के टुकड़े से सौ पाउंड विभिन्न खाद्य पदार्थ और सौ गज विविध कपड़े बनाता है। कोई आता है और लकड़ी की ओर इशारा करते हुए कहता है

चिप का कहना है कि ये सभी चीजें प्राकृतिक रूप से अस्तित्व में आई हैं और इस प्रकार निर्माता की अद्भुत कला और कौशल शून्य हो जाते हैं।

सातवां प्रश्न: हमें कैसे पता कि यह भूकंप तीव्र था?

तुर्की में मुसलमानों को निशाना बनाकर क्या किया गया? एर्ज़िनकन और इज़मिर के इलाकों को क्यों निशाना बनाया गया? सबसे अधिक प्रभावित कौन है?

उत्तर: यह घटना कठोर एवं अत्यंत ठंडी सर्दियों के दौरान रात में घटी थी। और रमज़ान का अपमान करने वाले क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया था। चूँकि लोगों ने ऐसा नहीं किया है आवश्यक सबक लेते हुए, यह धीरे-धीरे उपेक्षा करने वालों को जागृत करना जारी रखता है। ये संकेत, कुछ अन्य के साथ, यह दर्शाते हैं कि भूकंप का लक्ष्य ईमानवालों पर नज़र डालता है और उन्हें नमाज़ और इबादत के दूसरे काम करने से डराता है, और धरती काँप उठती है।

इसके दो कारण हैं कि इसने एर्ज़िनकन जैसी जगहों को और अधिक हिला दिया अन्य: सबसे पहले, चूँकि उनकी गलतियाँ कम और मामूली थीं, उन्हें बिना किसी कारण के माफ़ कर दिया गया परलोक में सर्वोच्च न्यायाधिकरण पर छोड़ दिया जाना। दूसरा, इस बात पर विचार करना उन स्थानों पर ईमान और इस्लाम के मजबूत और सच्चे रक्षक कम थे या पूरी तरह से पराजित हो गए थे, इस्लाम के दुश्मनों ने एक प्रभावी शासन स्थापित कर लिया था।
गतिविधि का केंद्र। इस प्रकार, सज़ा पहले उन पर ही दी गई होगी।

अल्लाह के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता।

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

पंद्रहवाँ शब्द

पंद्रहवाँ शब्द

स्वर्ग में स्वर्गदूतों और शैतानों के बीच संघर्ष

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह हमने सबसे निचले आकाश को भी दीपों से सजाया है, और
हमने उन्हें शैतानों को भगाने के लिए मिसाइल बना लिया है। (67:5)

आइये इस श्लोक को समझने के लिए सात चरणों वाली सीढ़ी चढ़ें।

सात कदम

पहला कदम: जैसे पृथ्वी के अपने निवासी हैं,
वास्तविकता और बुद्धिमत्ता की मांग है कि स्वर्ग को भी उनका साथ मिले।
इस्लाम में ऐसे प्राणियों को देवदूत और आत्मिक प्राणी कहा गया है।
वास्तविकता यह है कि ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि इसके छोटे आकार और सापेक्षता के बावजूद
महत्वहीनता, पृथ्वी जीवित प्राणियों से भर जाती है, खाली हो जाती है, और पुनः भर जाती है
और सचेत प्राणी। इस प्रकार अच्छी तरह से सजाए गए महल जैसे स्वर्ग
भव्य टावरों में सचेतन एवं ज्ञानवान प्राणी होने चाहिए।

मानवता और जिन्न की तरह, वे प्राणी दुनिया का निरीक्षण करते हैं, किताब का अध्ययन करते हैं
ब्रह्मांड की सुंदरता, और दिव्य प्रभुता की संप्रभुता का संदेश। क्योंकि ब्रह्मांड के स्वामी ने इसे अनंत अलंकरणों, सुंदरताओं और शिलालेखों से अलंकृत और अलंकृत किया है, जिनमें से सभी को देखने और आनंदित होने के लिए चिंतनशील और प्रशंसात्मक आँखों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है। सुंदरता

इस असीम कर्तव्य, शानदार दर्शन और ईश्वरीय कृपा के लिए प्रेमी की आवश्यकता होती है, और भोजन भूखे को दिया जाता है। मानवता और जिन्न इस असीम कर्तव्य, शानदार दर्शन और ईश्वरीय कृपा के केवल एक छोटे से हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।
व्यापक पूजा। इसलिए, ये अनंत और विविध कर्तव्य और
उपासना के कार्यों के लिए अनगिनत स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है।

भविष्यवाणी संबंधी परंपराएं सुझाव देती हैं, और ब्रह्मांड के क्रम में ज्ञान
संकेत मिलता है कि कुछ प्रकार के देवदूत ग्रहों से लेकर गतिशील पिंडों का उपयोग करते हैं

बारिश की बूँदें, दृश्यमान भौतिक दुनिया का भ्रमण और अवलोकन करने के लिए।65 इसके अलावा, कुछ प्रकार के पशु शरीर, स्वर्ग के “हरे पक्षियों”66 से लेकर मक्खियों तक,
एक प्रकार की आत्माओं के लिए "विमान" के रूप में काम करते हैं। आत्माएं जो ऐसे शरीरों में प्रवेश करती हैं
परमेश्वर का आदेश है कि सृष्टि के भौतिक चमत्कारों को उन चीज़ों के माध्यम से देखें
प्राणियों की इंद्रियाँ। सृष्टिकर्ता, जो निरंतर सूक्ष्म जीवन और
घनी मिट्टी और गंदे पानी से निकले प्रबुद्ध, समझदार प्राणियों के पास अवश्य ही होगा
प्रकाश से, यहाँ तक कि अंधकार से भी असंख्य चेतन प्राणियों की रचना की,
जो जीवन और आत्मा के अधिक योग्य हैं।

दूसरा कदम: पृथ्वी और आकाश दो देशों के समान हैं,
एक सरकार, जो महत्वपूर्ण संबंध और लेनदेन संचालित करती है।
उदाहरण के लिए, पृथ्वी के लिए आवश्यक चीजें जैसे प्रकाश, गर्मी, आशीर्वाद और रूप
दया की वर्षा स्वर्ग से भेजी जाती है। साथ ही, जैसा कि सभी प्रकट धर्म पुष्टि करते हैं और सभी संत विद्वान जो सृष्टि के गुप्त सत्यों का अनावरण करते हैं
उन्होंने जो देखा है उसके आधार पर वे सहमत हैं कि स्वर्गदूत और आत्मिक प्राणी अवतरित होते हैं
स्वर्ग से पृथ्वी तक। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वहाँ एक रास्ता है
पृथ्वी के निवासियों को स्वर्ग तक ले जाने के लिए।

जिस प्रकार लोग अपने मन, दृष्टि, बुद्धि, बुद्धि, बुद्धि, और बुद्धि के माध्यम से स्वर्ग की यात्रा कर सकते हैं,
और कल्पना, इस प्रकार, अपनी शारीरिक और भौतिक इच्छाओं से मुक्त या शुद्ध हो जाती है
प्राणी के भारीपन के कारण, पैगम्बरों और संतों की आत्माएं ऐसे ही स्थानों पर भ्रमण करती हैं
भगवान की अनुमति से लोकों में प्रवेश करते हैं; साधारण आस्थावान लोगों की आत्माएँ ऐसा उसके बाद करती हैं
मृत्यु। चूँकि जो लोग "हल्के" हो गए हैं और जिन्होंने "सूक्ष्मता" हासिल कर ली है और
आध्यात्मिक शोधन वहाँ यात्रा करते हैं, पृथ्वी के कुछ निवासी और
हवा स्वर्ग तक जा सकती है अगर वे एक "आदर्श" शरीर, ऊर्जावान कपड़े पहने हों
वे एक अमूर्त आवरण, या अमूर्त शरीर या रूप हैं, और आत्माओं की तरह हल्के और सूक्ष्म हैं।

तीसरा कदम: स्वर्ग की शांति और मौन, व्यवस्था और निर्मलता
नियमितता, विशालता और चमक से पता चलता है कि उनके निवासी भिन्न हैं
पृथ्वी के लोगों से: वे परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं और झगड़ा या विवाद नहीं करते
आपस में, क्योंकि वे निर्दोष हैं, उनका क्षेत्र विशाल है, उनका स्वभाव है
शुद्ध, और उनके पद निश्चित हैं। यह पृथ्वी से अलग है, जहाँ विपरीत एक दूसरे के साथ-साथ मौजूद हैं, बुराई अच्छाई के साथ मिश्रित है, और विवाद उत्पन्न होते हैं, और
परिणाम संघर्ष और पीड़ा है। सचेत प्राणियों का परीक्षण किया जाता है और उन्हें प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रगति या प्रतिगमन होता है। ऐसा निम्नलिखित कारण से है: मानवता सृष्टि के वृक्ष

का फल है। किसी चीज़ का फल है
इसका सबसे दूर का, सबसे नाजुक और महत्वपूर्ण हिस्सा। इस प्रकार हम इसके फल हैं
ब्रह्माण्ड; एक अत्यंत व्यापक, अद्भुत, नपुंसक, कमजोर और सूक्ष्म दर्पण

---

65 एट-तिर्मिधि, "ज़ुहद" 9; इब्न माजा, "ज़ुहद" 19. (ट्र.)

66 मुस्लिम, "'इमारा" 121; अबू दाऊद, "जिहाद" 25. (ट्र.)

शक्ति का केंद्र। इसे देखते हुए, पृथ्वी, अपने छोटे आकार और स्वर्ग की तुलना में महत्वहीन होने के बावजूद, इसमें निहित अर्थ और कला के संबंध में ब्रह्मांड का हृदय और केंद्र है, क्योंकि यह हमारा पालना और निवास स्थान है। इसके अलावा, यह वह स्थान है जहाँ भगवान की कला के चमत्कार प्रदर्शित होते हैं और दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ केंद्रित होती हैं। यह सभी प्राणियों के स्वामी (स्वामी, पालनकर्ता, प्रशिक्षक और शासक) के रूप में भगवान की अनंत गतिविधि को दर्शाता है। यह अनंत उदारता में प्रदर्शित अनंत दिव्य रचनात्मकता का केंद्र और धुरी भी है, विशेष रूप से असंख्य छोटे पौधे और पशु प्रजातियों में, साथ ही वह स्थान जहाँ परलोक की व्यापक दुनिया के जीवों के नमूने छोटे पैमाने पर दिखाए जाते हैं। यह शाश्वत वस्त्रों के लिए तेजी से चलने वाली कार्यशाला है, शाश्वत दृश्यों की प्रतियों का तेजी से बदलता स्थान है, और संकीर्ण, अस्थायी क्षेत्र और खेती है जो स्थायी बगीचों (परलोक में) के लिए तेजी से बीज पैदा करती है।

पृथ्वी की इस महानता और कला के संदर्भ में इसके महत्व के कारण ही, बुद्धिमान कुरान ने इसे आकाश के बराबर रखा है, हालाँकि आकाश की तुलना में यह एक विशाल वृक्ष के छोटे से फल के समान है। यह तराजू के एक पलड़े में पृथ्वी को और दूसरे में आकाश को रखता है, और बार-बार उनका एक साथ उल्लेख करते हुए कहता है, "आकाशों और पृथ्वी का रब।"67

पृथ्वी पर होने वाले तेज़ और निरंतर परिवर्तन और रूपांतरणों के लिए इसके निवासियों को भी उसी के अनुरूप परिवर्तन से गुजरना पड़ता है। चूँकि यह सीमित पृथ्वी ईश्वरीय शक्ति के अनगिनत चमत्कारों का विषय है, इसलिए मानवता और जिन्न की क्षमताएँ अनिवार्य रूप से अप्रतिबंधित हैं, जिससे अनंत प्रगति और प्रतिगमन की अनुमति मिलती है। पैगम्बरों और संतों से लेकर निम्रोदों और शैतानों तक, हर किसी के लिए परीक्षण और परीक्षा का एक बड़ा क्षेत्र खुल गया है। इस प्रकार फिरौन जैसे शैतानों की अंतहीन बुराई उन्हें स्वर्ग और उसके निवासियों पर हमला करने के लिए मजबूर करेगी।

---

67 पृथ्वी को स्वर्ग के बराबर माना जा सकता है, क्योंकि यह तर्क दिया जा सकता है कि "एक निरंतर झरना बिना किसी प्रवेश द्वार वाली झील से बड़ा है।" इसी तरह, अनाज को मापने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक बुशल, एक पहाड़ी के आकार के अनाज के साथ संतुलन में देखा जा सकता है जिसे इसके साथ मापा गया है और कहीं ढेर कर दिया गया है। पृथ्वी के साथ भी ऐसा ही है: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इसे अपनी कला के कार्यों को प्रदर्शित करने और अपनी शक्ति को प्रकट करने के लिए बनाया है, एक बगीचे के रूप में जहाँ उसकी दया खिलती है और एक खेत के रूप में जहाँ स्वर्ग के बीज उगाए जाते हैं। यह सृष्टि के अनगिनत संसारों के ब्रह्मांड को भरने और खाली करने के लिए एक उपाय के रूप में कार्य करता है, और अतीत के "समुद्रों" और अदृश्य दुनिया में बहने वाले झरने जैसा दिखता है। अनगिनत रूपों में जीवों से बुने गए "शर्ट" पर विचार करें जो पृथ्वी हर साल बदलती है, और हमेशा नवीनीकृत दुनियाएँ जिनसे पृथ्वी हर बार भर जाती है और फिर अतीत में अदृश्य दुनिया में बह जाती है। इन सभी को अपनी आंखों के सामने मौजूद मानकर पृथ्वी की तुलना कुछ नीरस और सादे आकाश से करें।

तुम देखोगे कि चाहे धरती का वज़न आसमान से ज़्यादा न हो, लेकिन उसका वज़न आसमान से कम भी नहीं है। इससे तुम आसमान और धरती के रब का मतलब समझ सकते हो।

चौथा कदम: सर्वशक्तिमान, सभी दुनियाओं का स्वामी, प्रशासक और निर्माता, के पास कई उपाधियाँ और सुंदर नाम हैं जो विभिन्न आदेश जारी करते हैं और विभिन्न कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, जिस उपाधि या नाम के लिए स्वर्गदूतों को साथियों की मदद करने की आवश्यकता होती है, वह अविश्वासियों से लड़ने के लिए स्वर्गदूतों और शैतानों के बीच लड़ाई और स्वर्ग के अच्छे और पृथ्वी के बुरे निवासियों के बीच संघर्ष की भी आवश्यकता होती है। निश्चित रूप से महामहिम सर्वशक्तिमान, जो अविश्वासियों की आत्माओं को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, उन्हें किसी आदेश या तुरही की आवाज़ से नहीं मिटाता। पूरी सृष्टि के स्वामी की उपाधि होने और अपने नामों की आवश्यकताओं के अनुसार, वह सर्वज्ञ और प्रशासक है, वह परीक्षण और प्रतियोगिता का एक क्षेत्र खोलता है।

इस पर विचार करें: एक राजा के पास उसके शासन के विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में कई नाम और उपाधियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, न्याय विभाग में उसे न्यायप्रिय शासक के रूप में जाना जाता है, सशस्त्र बलों में सर्वोच्च कमांडर के रूप में, धार्मिक मामलों के कार्यालय में खलीफा (या चर्च का सर्वोच्च प्रमुख) के रूप में, और सिविल सेवा में शासक के रूप में। उसके आज्ञाकारी लोग उसे दयालु संप्रभु कहते हैं, जबकि विद्रोही लोग उसे अत्यधिक शासक कहते हैं।

वह महान राजा, जो पूर्ण संप्रभुता का आनंद लेता है, विद्रोहियों को मृत्युदंड देने का आदेश नहीं देता; बल्कि, अपने न्यायप्रिय शासक की उपाधि की आवश्यकता के अनुसार, उन्हें न्यायालय में भेजा जाता है। इसी तरह, वह ईमानदार, योग्य अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से स्वीकार करके या सीधे फोन करके पुरस्कृत नहीं करता। इसके बजाय, संप्रभुता की महिमा और सरकार के उपायों से संबंधित अपनी उपाधियों के तहत, वह यह दिखाने के लिए प्रतियोगिता का मैदान खोलता है कि अधिकारी पुरस्कार के कितने हकदार हैं, और अपने मंत्रियों को लोगों को देखने के लिए आमंत्रित करने का आदेश देता है। वह एक स्वागत समारोह आयोजित करता है और एक शानदार शाही परीक्षण के बाद, विजेताओं की योग्यता को सार्वजनिक रूप से पुरस्कृत और घोषित करता है।

इस प्रकार - ईश्वर के लिए सर्वोच्च तुलना (और प्रस्तुत की जानी चाहिए) है - शाश्वत राजा के पास अनेक सुंदर नाम हैं। उनकी महिमा और उनकी कृपा की अभिव्यक्तियों के माध्यम से, उनके पास उनके दिव्य अस्तित्व के लिए आवश्यक कई उपाधियाँ और गुण हैं। जिस भी उपाधि और नाम के लिए प्रकाश और अंधकार, गर्मी और सर्दी, और स्वर्ग और नर्क के अस्तित्व की आवश्यकता होती है, उसके लिए यह भी आवश्यक है कि प्रतियोगिता का नियम सार्वभौमिक हो, जैसे कि पीढ़ी और पारस्परिक सहायता के नियम। स्वर्गदूतों की प्रेरणाओं और दिल के इर्द-गिर्द शैतानी फुसफुसाहटों की प्रतियोगिता से लेकर स्वर्ग के विशाल क्षेत्र में स्वर्गदूतों और शैतानों के बीच प्रतियोगिता तक, उन्हें उस नियम को सर्वव्यापी होने की आवश्यकता है।

पाँचवाँ कदम: जीव पृथ्वी और स्वर्ग के बीच यात्रा करते हैं, और स्वर्ग के लिए ज़रूरी सामान स्वर्ग से भेजे जाते हैं। चूँकि शुद्ध आत्माएँ स्वर्ग की यात्रा करती हैं, इसलिए दुष्ट आत्माएँ भी ऐसा ही करने की कोशिश करती हैं, क्योंकि वे स्वर्ग में नहीं जाती हैं।

शारीरिक रूप से हल्के और सूक्ष्म। लेकिन उन्हें भगा दिया जाता है, क्योंकि वे स्वभाव से ही दुष्ट हैं
और अशुद्ध। दृश्यमान, भौतिक दुनिया में निश्चित रूप से इसका कोई संकेत होना चाहिए
इस महत्वपूर्ण बातचीत और प्रतियोगिता। दिव्य आधिपत्य के ज्ञान के लिए
संप्रभुता की आवश्यकता है कि वह अपने महत्वपूर्ण निपटान पर एक संकेत रखे
सचेत प्राणियों के लिए अदृश्य क्षेत्र, विशेष रूप से मानवता के लिए, जिसका
सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य उन निपटानों का निरीक्षण करना, उनका साक्ष्य देना, उनकी देखरेख करना और उनके लिए एक
संदेशवाहक के रूप में कार्य करना है; उसी तरह जैसे उसने बारिश को हमारे लिए एक संकेत बनाया है
वसंत ऋतु में उनके अनगिनत चमत्कारों को भौतिक शब्दों में समझाइए।
स्पष्ट (प्राकृतिक) कारण उसकी कला के चमत्कारों की ओर इशारा करते हैं, ताकि वह आकर्षित कर सके
स्वर्ग और पृथ्वी के निवासियों की चौकस निगाहें
वह अद्भुत प्रदर्शनी। वह विशाल आकाश को एक महल, एक शहर के रूप में प्रदर्शित करता है
टावरों से सुसज्जित जिन पर प्रहरी तैनात हैं, ताकि वहां के निवासी
आकाश और पृथ्वी उसके प्रभुत्व की महिमा पर विचार करें।

चूँकि बुद्धिमता इस उच्च प्रतियोगिता की घोषणा की मांग करती है,
इसके लिए एक संकेत होगा। तदनुसार, शूटिंग स्टार्स फेरिक या "स्वर्गीय" घटना के अलावा इस , कोई माहौल नहीं-
घोषणा के लिए उपयुक्त लगता है। ये
तारकीय घटनाएँ शैतानों को खदेड़ने के लिए पूरी तरह से उपयुक्त हैं; वे ऊंचे महलों के दुर्जेय गढ़ों से दागे गए
मिसाइलों और संकेत रॉकेटों के समान हैं,
और, अन्य "स्वर्गीय" घटनाओं के विपरीत, इस तरह के किसी अन्य कार्य के बारे में पता नहीं है
घटनाएँ। इसके अलावा, यह फ़ंक्शन व्यापक रूप से समय के बाद से जाना जाता है
आदम ने इसे बनाया है और उन लोगों ने इसे देखा है जो चीजों और घटनाओं की वास्तविकता को जानते हैं।

छठा कदम: चूँकि मानवता और जिन्न संभावित रूप से एक दूसरे के प्रति झुकाव रखते हैं
अंतहीन बुराई और विवाद करने में सक्षम, वे विरोध की कोई सीमा नहीं पहचानते,
विद्रोह और अपराध। इस प्रकार बुद्धिमान कुरान उन्हें इस तरह से रोकता है
चमत्कारिक वाक्पटुता, उत्कृष्ट और स्पष्ट शैली, और उत्कृष्ट और स्पष्ट
तुलनाएँ और दृष्टांत जो ब्रह्मांड को हिला देते हैं। उदाहरण के लिए, सुनिए
भयानक चेतावनी, भयावह धमकी, और कठोर प्रतिबंध:

> ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! अगर तुम अंदर घुसने में सक्षम हो और
> आकाश और पृथ्वी के दायरे से आगे निकल जाना, फिर प्रवेश करना
> और (उनके) पार निकल जाओगे। तुम प्रवेश नहीं कर पाओगे और (उनके) पार निकल नहीं पाओगे
> उन्हें अधिकार के साथ बचाओ। फिर आपके आशीर्वादों में से कौन सा
> हे प्रभु, क्या तू इनकार करता है? तुझ पर आग की एक चमक उतारी जाएगी, और
> धूम्रपान करो, और तुम्हें कोई सहायता न मिलेगी। (55:33-36)

इसका मतलब है: "यदि तुम, मनुष्य और जिन्न, मेरे आदेशों की अवहेलना कर सको,
यदि तुम समर्थ हो तो मेरे राज्य की सीमाओं से आगे बढ़ जाओ।" ऐसी चमत्कारी वाक्पटुता से यह उनके दंभपूर्ण
विरोध को तोड़ता है, तथा दिखाता है कि प्रभु की अपार भव्यता के संबंध में वे कितने असहाय और दयनीय हैं।

अल्लाह के प्रभुत्व की सर्वोच्चता। ऐसी आयतें, साथ ही: हमने उन्हें शैतानों के लिए मार्ग बना दिया है (67:5), वास्तव में कहती हैं:

> ऐ इंसानों और जिन्नों! तुम अपनी नीचता के बावजूद घमंडी और विद्रोही हो!
> और अपनी दरिद्रता और दुर्बलता के बावजूद अवज्ञाकारी और हठीले हो।
> तुमने इतने गौरवशाली राजा के आदेशों के विरुद्ध विद्रोह करने का साहस कैसे किया?
> तारे, चाँद और सूरज उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं जैसे सेवा में अर्दली
> एक अधिकारी का। आप ऐसे राजसी शासक का विरोध करते हैं जो सैनिकों को इतना भयानक और
> आज्ञाकारी आदेश देता है कि आपके शैतान भी उसके खिलाफ खड़े हो जाएं
> वे उन्हें पहाड़ के आकार की तोप से पत्थर मारकर मार डालेंगे
> गेंदों। आपकी कृतघ्नता आपको ऐसे क्षेत्र में विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती है
> हे प्रभु! उसके पास ऐसे सेवक और सेना है कि, यह नहीं है
> तुम जैसे तुच्छ नपुंसक प्राणी, लेकिन यदि तुम्हारे प्रत्येक काफिर शत्रु पर्वत या पृथ्वी के आकार के होते,
> तो वे तुम पर पर्वत के आकार के या पृथ्वी के आकार के तारे, धधकते हुए प्रक्षेपास्त्र और आग की
> लपटें फेंक सकते थे।
> आग और धुआँ, और तुम्हें भगा देंगे। यदि आवश्यक हो, तो वे धरती को भी फेंक सकते हैं
> आपके चेहरे पर पृथ्वी के आकार के तारे तोप के गोलों की तरह बरसाएंगे।

कुरान कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि इसलिए कि दुश्मनों की ताकत को कम करने के लिए नहीं बल्कि ईश्वरीय महिमा को प्रदर्शित करने और दुश्मनों की दुष्टता को प्रदर्शित करने के लिए। कभी-कभी यह सबसे महान और सबसे शक्तिशाली को संगठित करता है सबसे कम और सबसे कमजोर चीज के खिलाफ कारण या साधन, पूर्णता दिखाने के लिए व्यवस्था, अनंत न्याय, असीम ज्ञान और बुद्धि की शक्ति [इसमें, ब्रह्मांड में और इसके द्वारा निर्मित मानव सामाजिक व्यवस्था में प्रदर्शित]।

इसलिए, कुरान अन्याय और आक्रामकता को रोकने का भी प्रयास करता है। उदाहरण के लिए:

> यदि तुम उसके [पैगंबर] खिलाफ एक दूसरे का समर्थन करते हो, तो वास्तव में भगवान उसका है
> और जिब्रील और ईमानवालों में से नेक लोगों को, और
> इसके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी उसके समर्थक हैं। (66:4)

यह पैगम्बर के प्रति कितना सम्मान प्रकट करता है, तथा कितना विचारशील है यह उनकी पत्नियों के अधिकारों के लिए है। यह जोर केवल महान सम्मान व्यक्त करने के लिए है पैगंबर के लिए, दो कमजोर प्राणियों (महिलाओं) की शिकायतों का महत्व, और दूसरों को उनके अधिकारों का पालन करने के लिए याद दिलाना ताकि उनके प्रति करुणा जागृत हो।

सातवां कदम: तारे कई तरह के होते हैं। हर वो चीज़ जो चमकती है आकाश में जो भी है उसे तारा कहा जा सकता है। वह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता, दयालु है। निर्माता ने उन्हें आकाश में रत्नों, विशाल वृक्ष के चमकते फलों या अनंत सागर में तैरती मछलियों के रूप में बनाया। उसने उन्हें भ्रमण के स्थान, पहाड़ या स्वर्गदूतों के रहने के स्थान। एक प्रकार के छोटे तारों को दूर भगाने के लिए बनाया गया था शैतानों को मार डालो। इस प्रकार, शैतानों को भगाने के लिए शूटिंग स्टार फायर करने का मतलब हो सकता है:

यह इस बात का संकेत है कि प्रतियोगिता का नियम स्वर्ग में भी मौजूद है।

स्वर्ग में सतर्क रक्षक और आज्ञाकारी निवासी हैं,
दैवीय शक्तियां, जो सांसारिक दुष्टों का आपस में घुलना-मिलना पसंद नहीं करतीं
उनकी बातें सुनना।
जासूसी शैतान, गंदगी और दुष्टता के प्रतिनिधि
पृथ्वी पर, पवित्र प्राणियों से भरे स्वर्ग के स्वच्छ और शुद्ध क्षेत्र को गंदा करने की कोशिश करते हैं, और बुरी आत्माओं के नाम पर उनकी बातों पर जासूसी करते हैं।68 टूटते हुए तारे उन्हें स्वर्ग के दरवाज़ों से भगा देते हैं।

तो तुममें से जो लोग कुरान के सूरज से अपनी आँखें बंद कर लेते हैं और उस पर भरोसा करते हैं अपने मन की मंद रोशनी से बाहर निकलिए, अपनी आँखें खोलिए और इन सात सीढ़ियों पर चढ़िए। कुरान की चमत्कारिकता का प्रकाश, दिन के उजाले जितना उज्ज्वल, अर्थ देखें शुरुआत में उद्धृत श्लोक का। स्वर्ग से सत्य के तारे लेना उस आयत के अनुसार, उन्हें अपने मन में मौजूद शैतानों पर फेंको और उन्हें मार डालो। हम भी उसे भी ऐसा ही करना चाहिए और कहना चाहिए: "मेरे पालनहार, मैं बुरी आत्माओं से तेरी शरण चाहता हूँ। शैतान के सुझाव।”

परमेश्वर का ज्ञान पूर्ण प्रमाण और निर्णायक बुद्धि है।

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

परिशिष्ट

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यदि शैतान की ओर से कोई उकसावा तुम्हें उत्तेजित करे, तो परमेश्वर की शरण में जाओ।
निस्संदेह वही है जो सब कुछ सुनता, जानता है। (7:200)

शैतान और उसके साथियों के खिलाफ कुरान का तर्क

इस विषय में शैतान के साथ तर्कसंगत, वस्तुपरक चर्चा शामिल है, जिसका उद्देश्य उनके भ्रामक तर्कों में से एक। चर्चा में, वह और अपराधी अंततः उन्हें चुप करा दिया जाता है और पराजित कर दिया जाता है।

ग्यारह साल पहले रमज़ान के दौरान एक दिन मैं एक गीत सुन रहा था। इस्तांबुल की बायजीद मस्जिद में कुरान की तिलावत। अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे कोई अदृश्य व्यक्ति मुझसे कह रहे थे: "आप कुरान को बहुत महान मानते हैं और उज्ज्वल। इसका निष्पक्ष अध्ययन करें - मान लें कि यह एक आदमी का शब्द है, और देखें कि क्या यह वास्तव में बहुत ऊंचा और उज्ज्वल है।” मैं थोड़ी देर के लिए मंत्रमुग्ध हो गया, और

---

68 अविश्वासी जिन्न और उनके मानव साथी लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं, खासकर इस्लाम के माध्यम से। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र और भविष्य कथन। (सं.)

उन्होंने सोचा कि कुरान एक मानवीय रचना है।
वक्ता शैतान था, जो मुझे बिना रोशनी के कुरान दिखाना चाहता था
और मुझे गुमराह कर दिया, मैंने कुरान से मदद मांगी और तुरंत महसूस किया
मेरे दिल में रोशनी आ गई। इससे मुझे यह तर्क देने के लिए प्रोत्साहन मिला:

> हे शैतान! वस्तुनिष्ठ तर्क का अर्थ है निष्पक्ष निर्णय, लेकिन
> आपके और आपके शिष्यों द्वारा इस्तेमाल किए गए "निष्पक्ष" निर्णय का अर्थ है
> कुरान के विरोधियों और अस्थायी अविश्वास का अनुसरण करना। कुरान को एक मानवीय रचना मानना और इस तरह तर्क करना
> कि यह एक मानवीय रचना है, यह सोचना कि यह एक मानवीय रचना है, यह सोचना है कि यह एक मानवीय रचना है।
> विरोधी पक्ष का पक्ष लेना; इसका अर्थ है अविश्वास या झूठ का पक्ष लेना।

जब उन्होंने जवाब दिया: "तो फिर इसे न तो परमेश्वर का वचन मानो और न ही परमेश्वर का वचन मानो।"
"यह एक इंसान का काम है," मैंने जवाब दिया:

> मैं ऐसी स्थिति को उचित नहीं ठहरा सकता। क्योंकि अगर दो लोग किसी बात पर बहस करते हैं
> आइटम को किसी तीसरे व्यक्ति के पास जमा किया जाता है, बशर्ते कि दोनों पक्ष एक दूसरे के उचित निकटता में हों। यदि वे नहीं हैं, तो
> विवाद सुलझने तक संपत्ति उस व्यक्ति के पास छोड़ दी जाती है जिसके पास वह पहले से ही है
> यह उनके बीच कहीं नहीं छोड़ा गया है।
>
> कुरान एक अमूल्य वस्तु है; इसमें अनंत दूरी है
> इसके मालिक (ईश्वर) और इसके दावेदार (मानवता) के बीच। इसे नहीं समझा जा सकता
> इन दोनों पक्षों के बीच कोई स्थान नहीं छोड़ा जा सकता, न ही यह मिलन बिंदु हो सकता है, क्योंकि वे
> अस्तित्व और गैर-अस्तित्व जैसे विपरीत। इसलिए, इसे छोड़ दिया जाना चाहिए
> परमेश्वर के "हाथ"। {इसके अलावा, इसके प्रकट होने के बाद से, अरबों लोगों ने
> इसे परमेश्वर का वचन मान लिया।] इसलिए, यदि विरोधी पक्ष इसका खंडन कर सके
> सभी तर्क यह साबित करते हैं कि यह परमेश्वर का वचन है और यह साबित करते हैं कि यह परमेश्वर का वचन है
> किसी इंसान के काम को देखकर, वह उस पर मालिकाना हक जता सकता है। कौन हिम्मत करेगा
> उस शानदार कुरान को ईश्वर के महानतम सिंहासन से हटाने के लिए,
> जिस पर इसे निर्णायक प्रमाणों की हजारों "कीलों" के साथ तय किया गया है?
>
> हे शैतान, तेरे बावजूद सत्य और न्याय के लोग दुष्टों से निपटते हैं।
> उचित तर्क के द्वारा मुद्दे को सुलझाएं और कुरान में अपने विश्वास को मजबूत करें
> यहां तक कि सबसे छोटे निर्णायक सबूत के माध्यम से भी। जो लोग धोखा खा जाते हैं
> आप और आपके शिष्यों को अविश्वास से बाहर निकलना बहुत कठिन लगता है
> अंधकार को विश्वास के प्रकाश में बदलना, क्योंकि इसके लिए इन सभी के समान मजबूत प्रमाण की आवश्यकता होती है
> "कीलें", एक बार इसे यह मानकर जमीन पर गिरा दिया गया है कि यह
> मनुष्य का कार्य। इस प्रकार बहुत से लोग उस झूठे काम में धोखा खा जाते हैं
> "वस्तुनिष्ठ" तर्क का दिखावा करते हैं और अंततः अपना विश्वास खो देते हैं।

लेकिन शैतान ने जोर देकर कहा: "कुरान मानवीय भाषा से मिलता-जुलता है, क्योंकि यह मानवीय शैली या बातचीत का अनुसरण करता है। अगर यह ईश्वर का वचन होता, तो इसे
सभी पहलुओं में असाधारण हो। क्योंकि उनकी कलात्मकता की तुलना किसी और चीज़ से नहीं की जा सकती
मनुष्य के समान, उसका वचन भी मनुष्य की भाषा जैसा नहीं होना चाहिए।" मैंने उत्तर दिया:

> हमारे पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, एक इंसान थे।
> उसके सभी कार्य और व्यवहार, उसके चमत्कारों और अवस्थाओं को छोड़कर

पैगम्बरत्व, उनकी मानवता में उत्पन्न हुआ। अन्य सभी मानवों की तरह
वह ईश्वर के जीवन के नियमों के अधीन और उन पर निर्भर था।
सर्दी से पीड़ित, दर्द महसूस करना, इत्यादि। वह असाधारण नहीं था
अपने सभी कार्यों और व्यवहारों में असाधारणता लाकर वह अपने आचरण के माध्यम से मानवता के लिए
एक उदाहरण प्रस्तुत कर सके। यदि वह अपने सभी कार्यों में असाधारण होता
और शिष्टाचार, वह हर पहलू में एक पूर्ण मार्गदर्शक नहीं हो सकता था
वह अपने सभी राज्यों में सभी के लिए जीवन या दया का स्रोत है ।

इसी प्रकार, बुद्धिमान कुरान सचेत प्राणियों का मार्गदर्शन करता है, निर्देश देता है
मानवता और जिन्न के अनुसार, पूर्णता के लोगों का मार्गदर्शन करता है, और सत्य की खोज करने वाले लोगों
को निर्देश देता है। इस प्रकार इसे मानव भाषण की शैली का पालन करना चाहिए और
बातचीत। मानवता और जिन्न अपनी प्रार्थनाएँ लेते हैं और
इससे प्रार्थना करें, इसके अनुसार अपने मामलों के बारे में बात करें, और अपने विचार व्यक्त करें
इससे अच्छे आचरण के सिद्धांत सीखे जाएँगे। संक्षेप में, हर आस्तिक इसे अपनाता है
उनके सभी मामलों के लिए अधिकृत संदर्भ के रूप में। इसके विपरीत, यदि यह होता
सिनाई पर्वत पर मूसा द्वारा सुने गए परमेश्वर के वचन के समान कोई नहीं
इसे सहन कर सकते थे या इसे संदर्भ के रूप में इस्तेमाल कर सकते थे। मूसा, पाँच में से एक
ईश्वर के महानतम संदेशवाहक, केवल कुछ अंश ही सुन पाते थे
उस वचन के बारे में पूछा: “क्या यह आपकी वाणी है?” परमेश्वर ने उत्तर दिया: “मैं
सभी भाषाओं और बोलियों पर अधिकार रखो।”

शैतान ने आगे कहा: "जैसा कि बहुत से लोग धर्म के नाम पर चर्चा करते हैं, लगभग
कुरान में जो विषय हैं, उन्हें कोई मनुष्य भी लिख सकता था," और मैंने कुरान की रोशनी में उत्तर दिया:

पहला: धार्मिक लोग धर्म के प्रति प्रेम के कारण सत्य बोलते हैं और
ईश्वर की आज्ञाओं के नाम पर। वे ईश्वर के विरुद्ध झूठ नहीं बोलते या उसकी नकल नहीं करते और कुरान के
डर से उसकी ओर से कुछ नहीं बोलते।
धमकी: जो व्यक्ति अल्लाह के विरुद्ध झूठ बोलता है, उससे बड़ा अन्यायी कौन होगा? (39:32)

दूसरा: कोई भी परमेश्वर की नकल करके उसकी तरफ़ से बात नहीं कर सकता।
लोग केवल लगभग समान स्तर के लोगों की ही नकल कर सकते हैं।
एक ही प्रजाति के प्राणी एक दूसरे का रूप ले सकते हैं। केवल वे ही जो लगभग एक जैसे होते हैं
एक ही स्तर के लोग एक दूसरे के स्तर का दिखावा कर सकते हैं। हालाँकि यह बहुत ही
उस स्थिति में भी, उनके लिए लोगों को लंबे समय तक धोखा देना कठिन है, क्योंकि
उनके दिखावे और झूठे प्रदर्शन अंततः उन्हें समझदार लोगों के सामने बेनकाब कर देते हैं। दूसरी ओर, अगर
जालसाज़ उन लोगों से बहुत कमतर हैं जिनकी वे नकल करने की कोशिश करते हैं (उदाहरण के लिए, एक
साधारण व्यक्ति जो दावा करता है
इब्न सिना (एविसेना) का ज्ञान, या एक चरवाहा जो एक चरवाहा होने का दिखावा करता है
राजा), वे स्वयं को उपहास का पात्र बना लेते थे।

क्या कोई जुगनू 1000 साल तक खुद को तारा जैसा दिखा सकता है, या कोई मक्खी
क्या कोई निजी व्यक्ति एक साल तक खुद को मोर के रूप में पेश कर सकता है?
एक प्रसिद्ध मार्शल बनना और बिना किसी कारण के लंबे समय तक अपनी कुर्सी पर बने रहना
खुद को दे देना? क्या एक धोखेबाज अविश्वासी जीवन भर, समझदार लोगों के सामने, एक सबसे पवित्र व्यक्ति
के झूठे प्रदर्शन को कायम रख सकता है
वफ़ादारी, सच्चाई और दृढ़ विश्वास? अगर ये “अगर” अकल्पनीय हैं

कुरान को पवित्र ग्रंथ मानते हुए किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति को यह स्वीकार्य नहीं है। मानव कार्य का अर्थ होगा उस प्रकट पुस्तक को देखना, जो सत्य के एक सितारे या पूर्णता के एक सूरज की तरह रोशनी बिखेरते हुए सदियों से मुस्लिम दुनिया के आकाश में मौजूद सत्यों का संग्रह जालसाज द्वारा गढ़ी गई झूठी बातें। इसका मतलब होगा कि उसका तैंतीस वर्षों के साथी, तथा साथ ही वे सभी जो मेरे अनुयायी रहे हैं अगली चौदह शताब्दियों के दौरान, लोग उसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ थे पहचान। यह विश्वास से परे है।

हे शैतान, तू समझदार लोगों को इस तरह धोखा नहीं दे सकता, चाहे वह यदि आप अपने शैतानी शिल्प में कहीं अधिक उन्नत होते। आप केवल लोगों को कुरान और पैगम्बर को गलत नजरिए से देखने के लिए गुमराह करना बहुत अधिक दूरी पर जाकर उन तारों जैसे पिंडों को जुगनू के रूप में देखना।

तीसरा: कुरान को मानवीय कार्य कहना इसका अर्थ है कि सबसे अधिक मानव जगत का उज्ज्वल, सच्चा और व्यापक मानदंड, चमत्कारिक रूप से प्रकट होने वाला तथा विश्व का कल्याण करने वाला है। एक अनपढ़ आदमी के दिमाग की उपज। इसके अलावा, उसका दिखावा और जालसाजी ईमानदारी, निष्ठा और शुद्धता के रूप में प्रकट हुई है चौदह शताब्दियों तक महान बुद्धिजीवियों और महान लोगों के लिए भी इरादा यह एक अकल्पनीय आरोप है।

इसके अलावा, इसे स्वीकार करने का अर्थ होगा कि एक सबसे शानदार और गुणी व्यक्ति जिसने अपना पूरा जीवन दृढ़ विश्वास, सच्चाई, विश्वसनीयता, ईमानदारी, गंभीरता और प्रचार करने में बिताया।
अपने सभी राज्यों, शब्दों और कार्यों में ईमानदारी, साथ ही साथ उठाना कई सत्यवादी व्यक्ति, एक मतलबी और बदनाम बदमाश था, पूरी तरह से निष्ठाहीन, और अविश्वास में सबसे आगे। यहाँ तक कि शैतान भी होगा इतने बड़े झूठ की कल्पना करने में शर्म आती है।

तीसरा कोई विकल्प नहीं है। अगर कुरान एक मानवीय रचना होती, यह इतना निकृष्ट होगा कि यह केवल अंधविश्वास का स्रोत बन जाएगा। जो इसे लाएगा उसका पद भी अपमानित हो जाएगा सबसे बड़े धोखेबाज के लिए पूर्णता का स्रोत। इस प्रकार, वह नहीं हो सकता था अल्लाह के रसूल, क्योंकि जो व्यक्ति अल्लाह के नाम पर झूठ बोलता है, वह सबसे बुरा इंसान है। ऐसा अनुमान लगाना उतना ही अकल्पनीय है जितना कि लगातार एक व्यक्ति को झूठ बोलते देखना। मोर बनकर उड़ना और मक्खी में मोर के गुण देखना। सामान्य व्यक्ति ऐसी धारणाओं को संभव मान सकता है।

चौथा: मुहम्मद का समुदाय, मुस्लिम समुदाय, दुनिया का सबसे महान और सबसे शानदार समुदाय साबित हुआ है।
कुरान ने उन्हें इस दुनिया और इतिहास पर विजय पाने में सक्षम बनाया है। इसके बाद; उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सुसज्जित किया है; और उन्हें सभी तर्कसंगत, नैतिक और आध्यात्मिक मामलों में निर्देश और शिक्षा दी है प्रत्येक के विशेष स्तर के अनुसार। इसने उन्हें शुद्ध किया है और प्रत्येक शारीरिक अंग, इन्द्रिय और क्षमता का उसके सबसे उचित स्थान पर उपयोग किया।

पैगम्बर, जो ईश्वर से कुरान लेकर आये, ने अपने जीवन का उपयोग इस कार्य के लिए किया। अपने सभी व्यवहारों और कार्यों में उनके नियमों का उदाहरण प्रस्तुत करें। उन्होंने हमें इसके माध्यम से निर्देश दिया

जब तक वह अपने कार्यों और सत्य के सिद्धांतों का ईमानदारी से अभ्यास करता है
उन्होंने अपने ईमानदार और तर्कसंगत कथनों के माध्यम से सच्चे मार्गदर्शन और कल्याण के मार्ग
दिखाए और स्थापित किए। इसके अलावा, उनके जीवन और
अच्छा आचरण गवाही देता है, वह परमेश्वर और परमेश्वर का सबसे अधिक ज्ञानी है
उसकी सज़ा से सबसे ज़्यादा डरते हैं। उसने अपना शानदार शासन स्थापित किया है
आधी दुनिया और मानवता के पांचवें हिस्से पर पूर्णता। वह वास्तव में
एक पैगम्बर के रूप में अपने सुप्रसिद्ध आचरण और कार्यों के माध्यम से,
राजनेता, सेनापति, आध्यात्मिक और बौद्धिक मार्गदर्शक, पिता, पति, मित्र, इत्यादि, मानवता और सृष्टि का गौरव।

इसलिए, यदि आप कुरान को एक मानवीय कृति मानते हैं, तो यह कोई गलत बात नहीं होगी।
एक झूठे व्यक्ति की बेकार की मनगढ़ंत कहानी से कहीं अधिक, जिसने पहचाना नहीं या
परमेश्वर से डरो। क्योंकि इन दोनों के बीच कोई मध्य बिंदु या मिलन बिंदु नहीं है
हे शैतान, कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति धोखा नहीं खा सकता
यह एक अकल्पनीय अनुमान है, भले ही आप इससे कहीं अधिक हों
अपनी शैतानी चालों में शक्तिशाली।

शैतान ने जवाब दिया: "मैं धोखा देने से कैसे चूक सकता हूँ? मैंने पहले ही धोखा दे दिया है
अधिकांश लोगों को, जिनमें तर्कसंगत विचार में अग्रणी लोग भी शामिल हैं, और उन्हें इस ओर ले गया
कुरान और मुहम्मद दोनों को नकारो।" मैंने कहा:

प्रथम: जब बहुत दूरी से देखा जाए तो सबसे बड़ी चीज़ भी
एक छोटे कण की तरह दिखते हैं; एक तारे को मोमबत्ती माना जा सकता है।

दूसरा: जब सतही तौर पर और एक तरह से कमजोर माना जाता है
व्याकुलता और भ्रम के कारण, एक अकल्पनीय चीज़ भी कल्पनीय लग सकती है। एक बार एक बूढ़े
व्यक्ति ने क्षितिज को स्कैन किया ताकि वह उस चीज़ को देख सके जो कल्पना से परे है।
रमज़ान के महीने का नया चाँद। उसकी भौंह से एक सफ़ेद बाल
उसकी आँख के ऊपर से मुड़ा और उसकी नज़र में आ गया। उससे धोखा खा गया
भ्रम में, उसने कहा: "मैंने चाँद देखा है।" क्योंकि उसने ध्यान केंद्रित किया
चाँद पर और उसके बाल उसकी इच्छा के बिना उसे दिखाई दिए और
इरादा, वह चाँद के लिए बाल ले लिया।

तीसरा: इनकार, गैर-पुष्टि से भिन्न है, जो एक प्रकार का इनकार है।
उदासीनता और निर्णय की कमी। इस प्रकार, कई अकल्पनीय चीजें
गैर-पुष्टि में अनजाने में मौजूद हो सकता है। इनकार एक निर्णय है
और इसका मतलब है गैर-अस्तित्व की पुष्टि करना जो आमतौर पर इसके माध्यम से पहुंचा जाता है
तर्क। आप जैसा शैतान लोगों को सही निर्णय लेने और सोचने से वंचित करता है
उन्हें इनकार की ओर ले जाता है। आप असावधानी, विचलन, कुतर्क का उपयोग करते हैं,
हठ, जनोन्माद, अहंकारी श्रेष्ठता, दंभ, प्रलोभन, और
लोगों को झूठ को सच और अकल्पनीय को बोधगम्य समझने के लिए प्रेरित करने की प्रथा। इस प्रकार
आपने कई लोगों (मानव जाति) को प्रेरित किया है
दिखावे में लेकिन शायद सार रूप में नहीं) अविश्वास में, जिसके लिए आवश्यकता होती है
कई अकल्पनीय चीजों को स्वीकार करना।

चौथा: कुरान शुद्ध सत्य और अद्वितीय पुस्तक है
मूल्य, जो संतों और विद्वानों को सत्य और पवित्रता का मार्गदर्शन करता है, जो
मानवता के आकाश में सितारों की तरह चमकें। यह सत्य की शिक्षा देता है और उसे आमंत्रित करता है

और सत्य से प्रेम, सच्चाई और निष्ठा, विश्वसनीयता और
विश्वसनीयता। यह इस्लाम के स्तंभों के माध्यम से दोनों दुनिया में खुशी सुनिश्चित करता है
विश्वासों और मौलिक सिद्धांतों का। पैगम्बर सबसे भरोसेमंद व्यक्ति हैं, विश्वास और दृढ़ विश्वास में सबसे आगे और सबसे दृढ़ हैं।
इसकी पुष्टि इस्लाम और उसके कानून से होती है, जिसका उन्होंने प्रचार किया और
उनकी स्वीकृत धर्मनिष्ठा और ईमानदार पूजा से पता चला
अपने पूरे जीवन में, जैसा कि उनके प्रशंसनीय गुणों की आवश्यकता है, और सत्य और पूर्णता के सभी लोगों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।

इसे देखते हुए, कुरान को एक मानवीय कृति मानने का अर्थ यह होगा कि
यह भ्रांतियों और झूठों का संग्रह है, और यह कि पैगम्बर एक अविश्वसनीय, अविश्वासी झूठा है जिसे ईश्वर का कोई डर नहीं है। यह अनुमान सबसे अधिक गलत है
खतरनाक किस्म का अविश्वास, भटकाव और गलत काम। यहाँ तक कि शैतान भी
और सोफिस्टों को ऐसी चीजों की कल्पना करने में शर्म आएगी।

संक्षेप में: 19वें अक्षर के 18वें चिह्न में उल्लेख किया गया था कि
जिनकी सुनने की शक्ति उन्हें कुरान की चमत्कारिकता की सराहना करने की अनुमति देती है, वे स्वीकार करते हैं कि यह अन्य सभी की तरह एक ही तरह और डिग्री का नहीं है
उन्होंने जो किताबें सुनी हैं, वे सभी किताबों से कमतर या श्रेष्ठ हैं।
किताबें। चूँकि शैतान भी पूर्व की बात नहीं कहेगा, इसलिए हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह
श्रेष्ठ है और इसलिए एक चमत्कार है। ऐसा होने पर, दो बातों के आधार पर
द्वैतवाद और निरर्थकता के निर्णायक प्रमाणों के साथ , हम खुले तौर पर घोषणा करते हैं:

ऐ शैतान और तेरे शागिर्दो! क़ुरआन या तो ईश्वर का वचन है जो उसके सर्वोच्च सिंहासन और सर्वोच्च या महानतम नाम के माध्यम से प्रकट हुआ है,
या, भगवान इस तरह के विचार को मना करें, एक अविश्वासी का निर्माण जो
परमेश्वर को न पहचानता है, न डरता है। हे शैतान, तू भी कभी नहीं कह सकता
कि यह दूसरा विकल्प सत्य है। इस प्रकार कुरान अनिवार्य रूप से
और निस्संदेह, ब्रह्मांड के निर्माता का वचन, दिया गया
जैसा कि ऊपर बताया गया है, कोई तीसरा विकल्प नहीं है।

इसी तरह मुहम्मद या तो ईश्वर के दूत हैं या फिर ईश्वर के सच्चे सन्देशवाहक।
सबसे उत्तम संदेशवाहक और सभी प्राणियों से श्रेष्ठ, या, ईश्वर
ऐसी धारणा को मना करो, अविश्वासी और निम्नतम स्वभाव वाले व्यक्ति को,
क्योंकि उसने ईश्वर के विरुद्ध झूठ बोला और न तो उसे पहचाना और न ही उसके दण्ड को।[69] यहाँ तक कि यूरोपीय दार्शनिक या अन्य धर्मों के पाखंडी भी उसे स्वीकार नहीं करते।
भूमि, जिन पर आप बहुत भरोसा करते हैं, ने आरोप लगाया है - और न ही करने में सक्षम होंगे
हे शैतान, ऐसी बात का आरोप लगाओ, क्योंकि कोई भी इस पर ध्यान नहीं देगा और इसे स्वीकार नहीं करेगा
ऐसा आरोप है। इसलिए, सबसे भ्रष्ट दार्शनिक और
बेईमान पाखंडी जिन पर तुम भरोसा करते हो, कह दो: "मुहम्मद एक थे
बहुत बुद्धिमान व्यक्ति और आदर्श अच्छे आचरण वाला।”

---

[69] चूँकि कुरान में अविश्वासियों के अविश्वास और बुरे कर्मों का खंडन करने के लिए ऐसी धारणा का उल्लेख है भाषा, मुझे इसका उल्लेख करना उचित लगा, यद्यपि भय और घृणा के साथ, केवल सबसे अधिक के रूप में यह दर्शाना असंभव है कि ऐसे दावे कितने निराधार और झूठे हैं।

अंत में, केवल दो विकल्प हैं। दूसरे विकल्प के रूप में
कुरान और पैगम्बर मुहम्मद दोनों के प्रति सम्मान पूर्णतः अकल्पनीय और अस्वीकार्य है, कुरान स्वयंसिद्ध और अनिवार्यतः ईश्वर की इच्छा है।
शब्द और मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उनके दूत; वह हैं
वह सबसे उत्तम संदेशवाहक है, तथा अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है। यह सत्य है
चाहे आपको या आपके अनुयायियों को यह पसंद हो या न हो। उस पर आशीर्वाद और शांति हो
फ़रिश्तों, मनुष्यों और जिन्नों की संख्या के अनुसार।

शैतान की दूसरी, महत्वहीन आपत्ति

जब मैं यह पाठ कर रहा था:

> वह एक शब्द भी नहीं बोलता, लेकिन उसके पास एक पर्यवेक्षक तैयार रहता है। और स्तब्धता
> मौत का सच सामने आता है; यही वह चीज़ है जिससे आप बचने की कोशिश कर रहे थे। और
> तुरही बजाई जाएगी; वह खतरे का दिन है। और हर आत्मा
> उसके साथ एक ड्राइवर और एक गवाह भी आता है। “तुम इस बात से बेखबर थे।
> अब हमने तुमसे तुम्हारा पर्दा हटा दिया है और तुम्हारी निगाह भी
> आज का दिन चुभने वाला है।” और उसका साथी (गवाह) कहता है: “यह (उसका)
> (यह वाक्य इस प्रकार है): "तुम दोनों, हर विद्रोही कृतघ्न को नरक में डाल दो।" (50:18-24)

शैतान ने कहा: "तुम कुरान की वाक्पटुता मुख्यतः उसके धाराप्रवाह उच्चारण में पाते हो।"
शैली और बोधगम्य अभिव्यक्ति। फिर भी, प्रवाह और सुसंगतता कहाँ है
ये छंद? बहुत बड़े अंतराल हैं, क्योंकि वे मृत्यु की पीड़ा से कूदते हैं
दुनिया के विनाश के लिए, तुरही बजने से लेकर अंत तक
हिसाब-किताब और उसके बाद पापियों को नरक में डालना।
कुरान में इसके कई अन्य उदाहरण हैं।”

मैंने जवाब में निम्नलिखित बातें कहीं:

> कुरान की चमत्कारिकता का सबसे मौलिक तत्व है इसका
> वाकपटुता और सटीकता। इसमें इसके इतने सारे उदाहरण हैं कि
> पर्यवेक्षक आलोचक आश्चर्य और प्रशंसा से भर गए हैं।
>
> उदाहरण के लिए, इससे पहले भी बहुत से विद्वान लोग सजदा कर चुके हैं: और कहा गया: "हे
> हे पृथ्वी, अपना जल निगल जा, हे आकाश, (अपनी वर्षा) बंद कर दे!” और जल
> और आज्ञा पूरी हुई, और सन्दूक
> अल-जुदी में बस गए, और कहा गया: "बुराइयों के लोगों को दूर करो"
> (11:44), जो कुछ ही वाक्यों में जल प्रलय की शक्ति के बारे में इतनी सटीकता और चमत्कारिक ढंग से बताता है।
>
> समूद ने अपने अहंकारी विद्रोह में इनकार किया, जब सबसे दयनीय
> उनमें से कुछ आगे बढ़े, तो ईश्वर के दूत ने उनसे कहा: "
> वह परमेश्वर की ऊँटनी है; पानी पीने के लिए उसकी बारी पर ध्यान दो।” परन्तु उन्होंने इन्कार किया।
> और उसकी नसें तोड़ दीं, तो उनके रब ने उनके पाप के कारण उन्हें दण्डित कर दिया, और उन्हें नीचा कर दिया
> वह इसके परिणाम से नहीं डरता (91:11-15), कुरान बताता है

समूद के लोगों की कहानी और भाग्य को ठीक-ठीक और स्पष्ट रूप से सबसे अधिक
समझने योग्य तरीके से.

और धुअन-नून, जब वह क्रोध में चला गया और आश्वस्त हो गया
कि हम उसे कभी तंग न करेंगे, फिर उसने अँधेरे में पुकारा, "तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं। तू पवित्र है।
निश्चय ही मैं तेरे नाम पर विश्वास करता हूँ।"
अन्याय करने वालों में से एक रहा हूँ" (21:87), बहुत कुछ अनकहा रह गया है
हम उसे कभी तंग नहीं करेंगे और वह अंधेरे की परतों में पुकारेगा।
ये कुछ शब्द पैगम्बर यूनुस (योना) के मुख्य बिन्दुओं को पुनः बताते हैं।
कहानी को इस तरह से प्रस्तुत करें कि न तो समझ कम हो और न ही कोई नुकसान हो
वाक्पटुता। जो बात सीधे तौर पर नहीं कही जाती, उसे व्यक्ति की समझ पर छोड़ दिया जाता है।

सूरा यूसुफ़ में भी सात या आठ वाक्य छोड़ दिए गए हैं।
अतः मुझे भेज दे (आयत 45 का अंत) और यूसुफ़ को, ऐ सच्चे लोगो!
एक (श्लोक 46 की शुरुआत)। इससे न तो समझ पर असर पड़ता है
न ही कुरान की वाक्पटुता को ख़राब करता है।

कुरान में चमत्कारी सटीकता के कई और उदाहरण हैं। प्रश्नगत आयतों में दिया गया सटीक विवरण

सूरा कफ़ उन्हें और भी खूबसूरत और चमत्कारी बनाता है।
अविश्वासियों के भविष्य के लिए, जो इतना लंबा है कि उसका एक दिन बराबर है
५०,००० सांसारिक वर्षों में, वे उन भयावह घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जो
वे हमारे दिमाग में उस समय की पूरी अवधि को ले आते हैं जब
वे उथल-पुथल बिजली की चमक की तरह होती हैं, जिससे वह संकुचित हो जाती है
बहुत लंबे समय को एक पृष्ठ या एक ही चित्र में समेटना ताकि हम
इस पर विचार कर सकते हैं। कल्पना के लिए अवर्णित घटनाओं का संदर्भ देना
श्रोता या पाठक की क्षमता को ध्यान में रखते हुए, वे एक उत्कृष्ट प्रवाह प्राप्त करते हैं।
जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगाकर सुनो और उस पर ध्यान दो, ताकि तुम सावधान रहो।
दया दिखायी (7:204)।

मैंने शैतान से पूछा कि क्या उसे और भी आपत्तियाँ हैं। उसने जवाब दिया: "मैं विरोध नहीं करता
वे सत्य हैं। लेकिन बहुत से मूर्ख लोग मेरा अनुसरण करते हैं। मनुष्य में बहुत से शैतान हैं
फॉर्म मेरी सहायता करें। कई दार्शनिक फिरौन की तरह ही अभिमानी हैं। मैं सिखाता हूँ
वे चीजें जो उनके गर्व और स्वार्थ को बढ़ाती हैं। वे आपके शब्दों के प्रकाशन को रोकेंगे, और इसलिए मैं कभी भी आपके
सामने झुकूंगा नहीं।"

तेरे लिए महिमा है, हमें तो बस वही ज्ञान है जो तूने दिया है।
हमें शिक्षा दी है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

सोलहवाँ शब्द

सोलहवाँ शब्द

दिव्य सार, एकता और कार्य

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जब वह किसी चीज़ को होने की इच्छा करता है, तो वह बस उससे कहता है: "हो जाओ," और वह हो जाती है।
इसलिए वह सर्व-महिमावान है जिसके हाथ में सभी का पूर्ण प्रभुत्व है
और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (36:82-3)

[नोट: यह वचन मेरी अंधी आत्मा को ऊपर दिए गए श्लोकों के प्रकाश से चार किरणें बताकर प्रकाशित करने के लिए लिखा गया था। किरणें दूर करती हैं अंधकार को दूर भगाओ और विश्वास और निश्चितता दो।]

चार किरणें

प्रथम रे: हे मेरी अज्ञानी आत्मा! तुम निम्नलिखित का उल्लेख करते हो कुरान की सच्चाईयाँ: ईश्वरीय सत्ता एक है, उसके कार्य सार्वभौमिक होने के बावजूद; ईश्वरीय व्यक्ति एक है, फिर भी उसके प्रभुत्व के कार्य (जैसे, बनाए रखना, पालन-पोषण करना और प्रशासन करना) सार्वभौमिक हैं और वह एक है, फिर भी उसका नियंत्रण सर्वव्यापी और अविभाजित है; वह है वह अंतरिक्ष में समाहित नहीं है, फिर भी सर्वव्यापी है; वह सभी प्राणियों के निकट है, फिर भी उसकी असीम उत्कृष्टता; और वह एक है, फिर भी वह एक साथ सब पर शासन करता है। कुरान बुद्धिमान है, इसलिए यह तर्क पर अविवेकीपन नहीं थोपता।
तर्क इन “सत्यों” के बीच एक स्पष्ट विरोधाभास देखता है। मैं चाहता हूँ कि स्पष्टीकरण जो प्रस्तुत करने का कारण बनेगा।

उत्तर: कुरान की शिक्षा पर भरोसा करते हुए, मैं कहता हूँ कि दिव्य प्रकाश के नाम ने मेरी कई कठिनाइयों को हल कर दिया है और यह भी हल कर देगा

एक. तुलना की विधि चुनना, जो मन और बुद्धि को स्पष्ट करती है
दिल को रोशनी देता है, मैं इमाम रब्बानी की तरह कहता हूं:

> मैं न तो रात्रि का हूँ, न रात्रि का उपासक हूँ; मैं सूर्य का सेवक हूँ, अतः मैं सूर्य की ख़बर देता हूँ।

चूँकि तुलना कुरान की चमत्कारिकता का सबसे शानदार दर्पण है, इसलिए मैं इस सत्य को समझाने के लिए इसका उपयोग करूँगा। कोई भी प्राणी सार्वभौमिकता प्राप्त कर सकता है
दर्पण। केवल एक व्यक्ति होने के बावजूद, यह एक सार्वभौमिक जैसा बन सकता है
सामान्य कार्यों वाली चीज़। उदाहरण के लिए, सूर्य एक ही प्राणी है, लेकिन बना हुआ है
सभी पारदर्शी वस्तुओं में यह इतना सर्वव्यापी है कि यह पृथ्वी को अपने प्रतिबिंबों और छवियों से भर देता है। हालाँकि इसकी गर्मी, प्रकाश और इसके प्रकाश में सात रंग
वे जिस किसी भी चीज का सामना करते हैं, उसे घेर लेते हैं, प्रत्येक पारदर्शी चीज में वह निहित होता है
सूर्य की गर्मी, प्रकाश, सात रंग और छवि, उसके शुद्ध हृदय को सिंहासन बनाती है
सूर्य। सूर्य सभी वस्तुओं में अपनी सभी विशेषताओं (एकता) के साथ प्रकट होता है,
और इस प्रकार यह अपने सामने आने वाली सभी चीजों को अपने में समाहित कर लेता है; फिर भी यह एक में ही प्रकट होता है
वस्तु अपनी सभी या अनेक विशेषताओं के साथ एक साथ (एकता), और इसलिए
प्रत्येक वस्तु में इसकी अनेक विशेषताएं विद्यमान हैं।

हम तुलना से आगे बढ़कर किसी चीज़ के प्रतिबिंब की चर्चा तक पहुँच गए हैं
या किसी प्रकार की अभिव्यक्ति के माध्यम से कहीं उपस्थिति।
संभावित प्रतिबिंब के कई प्रकारों में से, मैं तीन पर चर्चा करूंगा:

प्रथम: सघन, भौतिक वस्तुओं का प्रतिबिंब: ऐसे प्रतिबिंब प्रतिबिंबित वस्तु से भिन्न होते हैं, और इसलिए उनकी एक अलग पहचान होती है।
वे बेजान भी हैं, उनकी बेजान उपस्थिति के अलावा उनमें कोई और गुण नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि आप दर्पणों से भरी एक दुकान में प्रवेश करते हैं, तो एक सैड दर्पण बन जाएगा।
हज़ारों सैद हैं, लेकिन केवल एक जीवित सैद ही सैद है - बाकी सब सैद हैं
मृत।

दूसरा: भौतिक, प्रकाश देने वाली वस्तुओं का प्रतिबिंब: जैसे
प्रतिबिंब न तो मूल के समान हैं और न ही उससे भिन्न हैं।
मूल के समान प्रकृति के, उनमें इसकी अधिकांश विशेषताएं हैं और हो सकता है
उदाहरण के लिए, सूर्य की रोशनी अनगिनत वस्तुओं में दिखाई देती है।
प्रत्येक प्रतिबिम्ब में या तो उसकी ऊष्मा होती है या प्रकाश, साथ में उसका प्रकाश भी।
सात रंग। यदि सूर्य सचेत होता, तो उसकी ऊष्मा उसकी शक्ति होती, उसका प्रकाश उसकी
अपने ज्ञान और सात गुणों के रूप में सात रंगों के कारण, यह हर चीज में एक साथ मौजूद होगा, और शासन करने या संपर्क बनाने में सक्षम होगा
प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र रूप से और एक दूसरे को बाधा पहुंचाए बिना। यह भी सक्षम होगा
हम सभी से हमारे दर्पणों के माध्यम से मिलना। जब हम उससे दूर होते हैं, तो वह हमें अपने दर्पणों के माध्यम से मिलने में मदद करता है।
हमसे भी अधिक हमारे निकट हो।

तीसरा: प्रकाश और ऊर्जा से निर्मित शुद्ध आत्माओं का प्रतिबिंब
अपनी मूल शुद्धता रखना: ऐसे प्रतिबिंब जीवित और पहचाने जाने योग्य होते हैं
मूल के साथ। हालाँकि, चूँकि वे खुद को प्रतिबिंबित या प्रकट करते हैं
ग्रहणशील वस्तु या दर्पण की क्षमता के अनुसार, प्रतिबिंब होते हैं
मूल के समान प्रकृति का नहीं। उदाहरण के लिए, गेब्रियल
पैगंबर के साथ दिह्या (एक साथी) के रूप में रहें, सजदा करें
ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन के समक्ष दिव्य उपस्थिति में उपस्थित रहना, तथा असंख्य अन्य स्थानों पर एक साथ दिव्य आदेशों का संप्रेषण करना।
एक कर्तव्य का पालन करने से दूसरे कर्तव्य में बाधा नहीं आती। इसी प्रकार पैगम्बर
मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिनका सार प्रकाश है और
जिसकी पहचान प्रकाश की है, वह अपने समुदाय के प्रत्येक सदस्य को इसमें सुनता है
दुनिया के सभी लोग एक साथ उस पर दुआएँ माँगते हैं। क़यामत के दिन, वह
सभी शुद्ध लोगों से एक ही समय पर मिलेंगे। वास्तव में, कुछ संत जो
उच्च स्तर की शुद्धता और परिष्कार प्राप्त कर लिया है (अब्दल: विकल्प)
कई जगहों पर एक साथ कई काम करते हुए देखे जा सकते हैं। जैसे कांच
और पानी भौतिक वस्तुओं को प्रतिबिंबित करते हैं, वैसे ही हवा, आकाश और पृथ्वी के कुछ प्राणी भी करते हैं
विचारों या अमूर्त रूपों की दुनिया ऐसे प्राणियों को प्रतिबिंबित करती है और परिवहन करती है
प्रकाश की गति और कल्पना। यह उन्हें हज़ारों की संख्या में यात्रा करने की अनुमति देता है
एक ही समय में शुद्ध लोकों और परिष्कृत निवासों की।

असहाय और पराधीन वस्तुएं जैसे सूर्य, तथा पदार्थ-प्रतिबंधित आत्माएं जैसे प्राणी एक ही समय में कई स्थानों पर उपस्थित हो सकते हैं, क्योंकि वे
या तो प्रकाश देने वाले प्राणी हैं या प्रकाश से निर्मित हैं। कुछ शर्तों से बंधे हुए विशेष होने के बावजूद, वे पूर्ण सार्वभौमिक बन जाते हैं।
अपनी सीमित पसंद के कारण वे एक साथ कई काम कर सकते हैं।

सर्व-पवित्र, सर्व-शुद्ध सत्ता पूर्णतः पारलौकिक और पदार्थ से मुक्त है,
बहुत ऊपर और किसी भी प्रतिबंध और घनत्व के अंधेरे से मुक्त
सभी प्रकाश और प्रकाशमान प्राणी, चाहे वे प्रकाश देने वाले हों या प्रकाश से निर्मित हों, उनके नाम की पवित्र ज्योतियों की सघन छाया हैं। सभी अस्तित्व और
जीवन के साथ-साथ आत्माओं की दुनिया और विचारों या अमूर्त दुनिया
रूप, उसकी सुंदरता के अर्ध-पारदर्शी दर्पण हैं। उसके गुण सर्वव्यापी हैं, और उसके आवश्यक गुण सार्वभौमिक हैं। क्या बच सकता है या नहीं
क्या हम उसकी सभी विशेषताओं, विशेषकर उसकी सार्वभौमिक इच्छा, पूर्ण शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान के साथ उसकी अभिव्यक्ति से छिप सकते हैं?
उसके लिए क्या मुश्किल है? कौन उससे दूर रह सकता है? कौन उसके करीब आ सकता है
सार्वभौमिकता प्राप्त किये बिना?

सूर्य का अप्रतिबंधित प्रकाश और अमूर्त प्रतिबिंब इसे पृथ्वी के करीब लाता है।
आप अपनी आंख की पुतली से भी अधिक शक्तिशाली हैं, जबकि आपका अस्तित्व कुछ शर्तों से बंधा हुआ है

आपको उससे दूर रखता है। उसके करीब आने के लिए, आपको कई प्रतिबंधों को पार करना होगा और
अनेक सार्वभौमिक स्तरों से ऊपर उठना। सरल शब्दों में, आध्यात्मिक उत्कृष्टता के संदर्भ में,
तुम्हें धरती जितना बड़ा बनना है और चाँद जितना ऊपर उठना है। केवल
तब तुम एक हद तक सीधे सूर्य के पास उसकी मूल पहचान के साथ पहुँच सकते हो और बिना किसी आवरण के उससे
मिल सकते हो। उसी तरह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी
कृपालु, सर्वसिद्धिवान, तुम्हारे अत्यंत निकट है, जबकि
आप उससे असीम रूप से दूर हैं। यदि आपके पास हृदय की पर्याप्त शक्ति और मन की सूक्ष्म सीमा है, तो ईश्वर के अन्य
पहलुओं में कुछ अन्य वास्तविकताओं को देखने का प्रयास करें।
तुलना।

दूसरी किरण: हे मेरी मूर्ख आत्मा! तुम कहते हो कि ऐसी आयतें जैसे: जब
वह किसी चीज़ को चाहता है कि हो जाए, तो उससे कहता है, "हो जा" तो वह हो जाती है (36:82); और: वह तो बस है।
एक ही धमाके से, फिर देखो, वे सब हमारे सामने पेश किये जायेंगे (36:53);
चीजें तुरंत और एक आदेश के माध्यम से होती हैं। हालाँकि, ऐसे
अन्य श्लोक इस प्रकार हैं: यह परमेश्वर का नमूना है, जिसने सब कुछ सिद्ध किया है
(27:88) तथा : जो अपनी हर चीज़ को उत्तम बनाता है (32:7) कह दो
किसी वस्तु का अस्तित्व क्रमिक है, वह ज्ञान के आधार पर एक विशाल शक्ति के माध्यम से आता है, और यह ज्ञान पर
निर्भर एक उत्कृष्ट कला है।
इनका सामंजस्य कैसे किया जा सकता है?

उत्तर: कुरान की शिक्षा पर भरोसा करते हुए मैं कहता हूँ:

प्रथम: यहाँ कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि कुछ चीजें तुरन्त घटित होती हैं जैसे मूल को दोहराना, तथा अन्य
चीजें मूल की तरह क्रमिक होती हैं।
निर्माण।

दूसरा: असीम रूप से परिपूर्ण व्यवस्था और दृढ़ता और ठोसपन, और
अत्यंत नाजुक और बेहतरीन कलाकारी और सहजता के साथ उत्तम सृजन,
ब्रह्मांड में देखी गई गति, बहुलता और उदारता, सत्य की गवाही देती है
ऐसी आयतों में निहित है। इसलिए, ऐसी चर्चा अनावश्यक है।
हमें उनमें निहित बुद्धिमत्ता पर चर्चा करनी चाहिए। इसलिए, निम्नलिखित तुलना पर विचार करें:

एक दर्जी बहुत कठिनाई के साथ-साथ बड़ी मेहनत से भी कोई चीज़ बनाता है।
कलात्मकता और कौशल का प्रदर्शन करके, फिर एक मॉडल तैयार किया जाता है। उसके बाद, एक प्रतिलिपि बनाई जा सकती है
जल्दी और आसानी से। कभी-कभी यह इतना आसान हो जाता है कि ऐसा लगता है कि इसका नतीजा
एक आदेश से, और ऐसा पूर्ण क्रम प्राप्त करता है कि ऐसा लगता है
एक स्पर्श का परिणाम.

उसी प्रकार, मूलतः इस संसार और इसकी समस्त सामग्री को बनाने के बाद,
सर्वज्ञ निर्माता, सर्वज्ञ डिजाइनर ने हर चीज के लिए एक माप और अनुपात (एक मॉडल की तरह) निर्धारित किया है।
प्रत्येक शताब्दी को एक मॉडल बनाते हुए,
शाश्वत डिजाइनर इसे अपनी शक्ति से सुसज्जित एक नई दुनिया के साथ तैयार करता है
चमत्कार। प्रत्येक वर्ष को एक माप बनाते हुए, वह कलात्मक रूप से तेजी से एक नई प्रणाली बुनता है-

उसकी दया के चमत्कारों से परिपूर्ण। प्रत्येक दिन को एक रेखा बनाकर, वह उस पर अंकित करता है
इसने उसकी बुद्धि की सूक्ष्मताओं से सुशोभित प्राणियों को भर्ती किया और उनका नवीनीकरण किया।

वह परम शक्तिशाली परमेश्वर पृथ्वी और प्रत्येक पर्वत को भी बनाता है।
और मैदान, हर बगीचा और बाग, और हर पेड़ एक मॉडल। वह लगातार धरती पर नई व्यवस्थाएँ स्थापित करता है और नई दुनियाएँ बनाता है।
दुनिया में, वह इसे एक नए, परिपूर्ण से बदल देता है। मौसम दर मौसम, वह सभी बगीचों और बगीचों में अपनी शक्ति के चमत्कार और अपनी दया के उपहार प्रदर्शित करता है,
जिसमें वह एक नई ज्ञान-प्रदर्शन पुस्तक लिखता है और एक नया स्थापित करता है
उनकी दया की रसोई। वह प्रत्येक को हमेशा नवीनीकृत वस्त्र पहनाता है जो कि
कला। वह हर वसंत में सभी पेड़ों को ब्रोकेड के कपड़े पहनाता है, उन्हें सजाता है
उन्हें नये रत्नों से सुसज्जित करता है, और उनके हाथों को अपनी दया के उपहारों से भर देता है।

इस प्रकार, वह जो इन चीजों को असीम रूप से उत्कृष्ट कला के साथ करता है और
पूर्ण व्यवस्था, जो एक दूसरे के साथ चलती दुनियाओं को बदलता है
समय की श्रृंखला में ज्ञान और अनुग्रह के अनगिनत उदाहरण हैं, और
शक्ति और कला की पूर्णता के साथ, असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान, सर्वज्ञ और सर्वज्ञ है। संयोग हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यह घोषणा करके: जब वह
जब कोई चीज़ चाहता है कि हो जाए तो उससे कहता है, "हो जाए" और वह हो जाती है (36:82); और: चीज़
क़यामत की घड़ी तो पलक झपकते ही आ जाती है, या उससे भी पहले (16:77), सर्वशक्तिमान अपनी शक्ति की पूर्णता और उस सहजता की घोषणा कर देता है, जिसके द्वारा वह अपनी शक्ति को प्रकट करता है।
उसकी शक्ति ब्रह्माण्ड को नष्ट कर सकती है और मृतकों को जीवित कर सकती है।
अपनी सृष्टि में, वह कुरान में घोषित करता है कि वह सब कुछ एक के माध्यम से करता है
मात्र आदेश, क्योंकि सृष्टि का उसका आदेश शक्ति और इच्छा में निहित है,
सभी चीज़ें उसके आदेश के अधीन और आज्ञाकारी हैं, और वह सृजन करता है
बिना किसी शारीरिक संपर्क या क्रमिकता के।

अंत में, कुछ छंद अत्यंत उत्कृष्ट कलात्मकता की घोषणा करते हैं और
प्राणियों में बुद्धि की अनंत पूर्णता, विशेष रूप से उनके सृजन के प्रारंभ में; अन्य लोग अत्यधिक सहजता, गति और अनंत आज्ञाकारिता का वर्णन करते हैं, विशेष रूप से सृजित प्राणियों को दोहराने और नवीनीकृत करने में।

तीसरी किरण: हे मेरी पापी आत्मा, संदेह से भरी हुई और बुराई के अधीन!
सुझाव। आप कहते हैं कि ऐसी आयतें जैसे: उसके हाथ में पूर्ण प्रभुत्व है
(36:83) कोई भी चलती हुई चीज़ ऐसी नहीं है जिसे वह अपनी चोटी से थामे न रखे।
(11:56) तथा : हम उसके निकट उसकी गरदन की नस से भी अधिक हैं (50:16)
ईश्वर हमारे बहुत निकट है। दूसरी ओर, ऐसी आयतें जैसे: उसके लिए तुम
वापस लाए जा रहे हैं (36:83) और: फ़रिश्ते और रूह उसके पास चढ़ते हैं
एक दिन जिसकी माप पचास हज़ार वर्ष है (70:4), साथ ही हदीस:
"सर्वशक्तिमान ईश्वर सत्तर हज़ार पर्दों से परे है" और इस तरह के सत्य
पैगंबर के स्वर्गारोहण में निहित, दिखाते हैं कि हम असीम रूप से दूर हैं

मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूँ जिससे यह गहन रहस्य समझ में आ सके।

उत्तर: हे मेरी आत्मा, इस बात पर विचार करो:
"पहली किरण," मैंने कहा कि इसके अप्रतिबंधित प्रकाश और अमूर्त प्रतिबिंब के कारण,
सूर्य आपकी आँखों की पुतली, आपकी आत्मा की खिड़की और दर्पण से भी ज़्यादा नज़दीक है। हालाँकि, चूँकि आप कुछ शर्तों से बंधे हुए हैं और पदार्थ की दीवारों में कैद हैं, इसलिए आप उससे बहुत दूर हैं। आप उससे संपर्क कर सकते हैं
इसके कुछ प्रतिबिंबों और छायाओं के माध्यम से ही इससे मिलिए,
इसकी विशेष अभिव्यक्तियों के माध्यम से, और इसके रंगों (विशेषताओं) और किरणों और छवियों (इसके नामों का एक समूह) के करीब पहुंचें।

यदि आप सीधा संपर्क चाहते हैं, तो आपको कई प्रतिबंधों को पार करना होगा
और कई सार्वभौमिक स्तरों से ऊपर उठें। सरल शब्दों में, आध्यात्मिक उत्कर्ष के संदर्भ में, पृथ्वी जितना बड़ा बनने के बाद ही, आत्मा में विस्तार करते हुए
हवा में उड़ते हुए, चंद्रमा तक बढ़ते हुए, और पूर्ण सूर्य के रूप में सीधे सूर्य का सामना करते हुए
यदि चंद्रमा ऐसा करता है, तो क्या आप सूर्य से व्यक्तिगत रूप से और बिना किसी सहायता के मिलने का दावा कर सकते हैं?
पर्दा हटाओ और कुछ हद तक उसके करीब आओ। उसी तरह, सर्वशक्तिमान ईश्वर भी
पूर्णता में से एक, अद्वितीय सुन्दर, अनिवार्यतः विद्यमान
एक, सभी चीजों का निर्माता, शाश्वत सूर्य, बिना किसी शक्ति के सम्राट
वह तुम्हारे लिए तुमसे भी अधिक निकट है, यद्यपि तुम उससे अनंत-दूर हो। यदि तुम्हारे पास पर्याप्त शक्ति (हृदय की और मन की उदात्तता) है,
तुलना के अन्य पहलुओं में कुछ अन्य वास्तविकताओं को देखने का प्रयास करें।

दूसरा: राजा के कई नाम या पद होते हैं, जिनमें से एक है कमांडर-इन-चीफ। इस पद के साथ, उसे सभी सैन्य कार्यालयों में पूर्ण अधिकार प्राप्त होते हैं और
फील्ड मार्शल से लेकर कॉर्पोरल तक के पद पर नियुक्त किया जाता है। एक निजी
एक कॉरपोरल को अपना वरिष्ठ मानता है, और उसके माध्यम से संपर्क में रहता है
कमांडर-इन-चीफ से जुड़ा हुआ व्यक्ति। यदि वह सीधे संपर्क करना चाहता है
कमांडर-इन-चीफ बनने के बाद, उन्हें रैंक में ऊपर उठना होगा। इसका मतलब है कि
राजा कई अलग-अलग तरीकों से सैनिक के बेहद करीब है (जैसे,
अपने नाम, नियम, कानून, ज्ञान, इत्यादि के माध्यम से) यदि वह आध्यात्मिक रूप से शुद्ध हो जाए, तो वह बिना किसी की नजर में आए एक साथ प्रत्येक सैनिक की देखरेख कर सकता है।
कुछ भी उसे रोक नहीं सकता। लेकिन कई रैंक और पर्दे निजी को रोकने से रोकते हैं
राजा की उपस्थिति। कभी-कभी, हालांकि, राजा अपनी करुणा से किसी निजी व्यक्ति को अपनी उपस्थिति में आने की अनुमति देता है, और उसे अपनी कृपा से अनुग्रहित करता है।

लगभग उसी तरह से - सबसे ऊंची तुलना है (और इसे रखा जाना चाहिए
आगे) क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान है, वह आदेश का स्वामी है! और वह
जिसके लिए सूर्य और तारे आज्ञाकारी सैनिकों की तरह हैं, वह सभी के करीब है
सभी चीज़ें उनसे बहुत दूर हैं, जबकि सभी चीज़ें उनसे बहुत दूर हैं।

यदि आप सीधे उनकी महानता की उपस्थिति में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आपको गुजरना होगा
अंधकार और प्रकाश (अर्थात भौतिक और
भौतिक आवरणों के साथ-साथ दिव्य नामों और गुणों के आवरणों को भी पार करते हुए, प्रत्येक नाम के प्रकटीकरण की हजारों विशिष्ट और सार्वभौमिक डिग्री को पार करते हैं, उनके गुणों के सबसे ऊंचे स्तरों से ऊपर उठते हैं, और ऊपर उठते हैं
उसके महानतम सिंहासन जितना ऊँचा, जो उसके महानतम नाम से सुशोभित है
अभिव्यक्ति। यदि परमेश्वर आपको अपनी ओर आकर्षित करके अनुग्रह नहीं करता, तो आप
हजारों वर्षों तक आध्यात्मिक रूप से प्रयास और यात्रा करनी होगी।

उदाहरण के लिए, यदि आप उसके नाम के माध्यम से उसके निकट आना चाहते हैं
हे सृष्टिकर्ता, आपको सबसे पहले उसके साथ जुड़ना होगा क्योंकि वह आपका सृष्टिकर्ता है, और फिर उसके सभी मनुष्यों का सृष्टिकर्ता होने के कारण,
फिर वह सभी जीवित प्राणियों का निर्माता है, और फिर सभी प्राणियों का निर्माता है
सभी प्राणी। अन्यथा, आप छाया में ही रहेंगे और केवल एक विशेष चीज़ ही पाएंगे
अभिव्यक्ति.

नोट : चूँकि उपरोक्त उदाहरण में राजा अपेक्षाकृत नपुंसक है, इसलिए वह
अपने आदेशों को निष्पादित करने के लिए फील्ड मार्शल और जनरलों जैसे मध्यस्थों का उपयोग करता है।
लेकिन वह परम शक्तिशाली है, जिसके हाथ में परम शक्ति है
सभी चीजों पर प्रभुत्व रखने के लिए किसी मध्यस्थ की जरूरत नहीं है। मध्यस्थ [जैसे
स्वर्गदूत और प्राकृतिक कारण] केवल दिखावा हैं, उनकी गरिमा और
भव्यता, तथा उपासना, विस्मय, असहायता और अभाव में प्रभु की प्रभुता के अग्रदूत और पर्यवेक्षक। वे उनके सहायक नहीं हैं, और
महामहिम की संप्रभुता में भागीदार नहीं हो सकते।

चौथी किरण: तो, हे मेरी आलसी आत्मा। प्रार्थना की वास्तविकता (एक प्रकार की प्रार्थना)
स्वर्गारोहण) एक सैनिक की तरह है जिसे शुद्ध रूप में शाही उपस्थिति में स्वीकार किया जाता है
अनुग्रह; यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया जा रहा है
कृपा, सर्व-कृपालु महिमामय, पूजा का सच्चा उद्देश्य,
शुद्ध दया का एक उदाहरण.

“परमेश्वर सर्व महान है” यह घोषणा करते हुए, यह संसार और परलोक बचा रह जाता है
आत्मा और कल्पना में, या इरादे से पीछे। पदार्थ के पार
प्रतिबंध के बावजूद, आप पूजा के एक सार्वभौमिक स्तर या उसकी एक छाया या रूप तक पहुंच जाते हैं।
ईश्वरीय उपस्थिति में प्रवेश पाकर आप धन्य हो गए हैं
(अपनी क्षमता के अनुसार) सीधे ईश्वर को संबोधित करने की सबसे उत्कृष्ट उपलब्धि के साथ: केवल आपकी ही हम आराधना करते हैं (1:5)। "ईश्वर ही है" को दोहराने से
अपने कार्यों में "सर्व-महान" के रूप में, प्रार्थना उच्च आध्यात्मिक प्राप्ति का संकेत है
एक तुच्छ, विशेष प्राणी से सार्वभौमिक प्राणी बनने की प्रक्रिया
एक. यह ईश्वर की महानता की पूर्णता का संक्षिप्त शीर्षक है, जो कि
हमारे ज्ञान से परे। ऐसा लगता है जैसे हर “ईश्वर सर्व-महान है” यह दर्शाता है

आरोहण के मार्ग पर एक नई डिग्री की प्राप्ति।
आत्मा, इरादे या कल्पना में प्रार्थना की वास्तविकता की छाया या किरण है
एक महान ख़ुशी.

यही कारण है कि "ईश्वर सर्व-महान है" को अक्सर दोहराया जाता है
हज (मक्का की तीर्थयात्रा), क्योंकि हज हर तीर्थयात्री के लिए सबसे व्यापक स्तर पर की जाने वाली पूजा है। उदाहरण के लिए, एक सामान्य व्यक्ति की तरह, एक निजी व्यक्ति भी हज कर सकता है।
किसी विशेष अवसर जैसे किसी उत्सव या उत्सव दिवस में भाग लें
राजा बन सकता है और उसका अनुग्रह प्राप्त कर सकता है। इसी तरह, एक संत की तरह जो पीछे छोड़ गया है
अनेक श्रेणियों में, एक तीर्थयात्री, चाहे वह कितना भी साधारण व्यक्ति क्यों न हो, अपनी ओर मुड़ता है
भगवान को पूरी धरती का शक्तिशाली भगवान माना जाता है। उन्हें सार्वभौमिक सम्मान से सम्मानित किया जाता है
पूजा करना।

हज वह कुंजी है जो ईश्वरीय विश्वव्यापी प्रभुता की अभिव्यक्ति के कई स्तरों को खोलती है, और वह दूरबीन है जिसके माध्यम से ईश्वरीय भव्यता के कई क्षितिज देखे जाते हैं। इसके कार्य या अनुष्ठान दोनों ही ईश्वरीय महिमा के कई पहलुओं को दर्शाते हैं।

मानवता की ओर से सेवा और पूजा के क्षेत्र और स्तर
दिव्य महिमा का तीर्थयात्रियों के हृदय में अधिकाधिक विस्तार हो,
कल्पना। सामने खड़े होकर विस्मय, विस्मय और भव्यता की भावनाएँ
इन सभी अनुभवों से उत्पन्न होने वाली दिव्य प्रभुता को शांत किया जा सकता है
केवल दोहराकर: "ईश्वर सर्व-महान है," यह केवल इस घोषणा के साथ है
कि मानवता के लिए अभिव्यक्तियों की ऐसी डिग्री की घोषणा की जा सकती है।

हज के बाद, यह उत्कृष्ट, सार्वभौमिक अर्थ विभिन्न रूपों में पाया जाता है।
धार्मिक त्यौहार (ईद) की नमाज़, बारिश के लिए की जाने वाली नमाज़, सूर्य और चंद्र ग्रहण के दौरान और सामूहिक नमाज़ों में डिग्री। यही कारण है कि इस्लाम के
सार्वजनिक प्रतीक और रीति-रिवाज, जिनमें सुन्ना भी शामिल हैं, बहुत महत्वपूर्ण हैं।

> पवित्र है वह जिसने अपने ख़ज़ाने कफ़ और अफ़ज़ल के बीच रखे
> नून.[70] महिमावान है वह जिसके हाथ में सम्पूर्ण प्रभुत्व है
> और तुम सब कुछ उसी की ओर लौटाए जा रहे हो।
>
> तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
>
> हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना।
>
> हे हमारे पालनहार, हमारे हृदयों को विचलित न होने दे, इसके पश्चात कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है।
> और हम पर अपनी कृपा बरसा, निस्संदेह तू ही सर्वशक्तिमान है।
> सर्व-प्रदानकारी।

---

70 कफ और नून मिलकर कुन बनाते हैं , जिसका अर्थ है 'हो!', जो ईश्वर की सृष्टि का प्रतीक है। चीज़ें. (ट्र.)

अपने सबसे महान रसूल पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें,
आपके महानतम नाम के प्रकटीकरण के साथ, और उसके ऊपर
परिवार, उसके साथी, सभी धर्म भाई-बहन और अनुयायी। आमीन, हे दयालुओं के सबसे दयालु!

परिशिष्ट

सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ, सर्वज्ञ निर्माता, दिखाता है
उनके आचरणों द्वारा प्रदर्शित प्रणाली और क्रम के माध्यम से, जिन्होंने नियमों का रूप ले लिया है, उनकी शक्ति और बुद्धि और उसमें संयोग का कोई भाग नहीं है
अपने कामों में। उन नियमों में कभी-कभी अपवाद बनाकर (अद्भुत काम)
उनके कार्यों में), बाहरी रूपों में परिवर्तन, व्यक्तिगत विशेषताओं में अंतर, और उनके अनुग्रह भेजने में परिवर्तन (वर्षा का आना,
उदाहरण के लिए), वह अपनी इच्छा और स्वतंत्र विकल्प का प्रदर्शन करता है, और दिखाता है कि वह
वह जो चाहे करता है और उस पर कोई प्रतिबंध नहीं है। इस प्रकार वह अपने परदे को फाड़ देता है।
एकरसता और यह दिखाना कि हर चीज निरंतर उसकी प्रभुता की आवश्यकता में है और उसके आज्ञाकारी है, वह असावधानी को दूर करता है और मानवता और जिन्न को ईश्वर की ओर मोड़ता है।
(प्राकृतिक) कारणों से लेकर कारणों के निर्माता के रूप में स्वयं को स्थापित करना। यह मूल सिद्धांत कुरान की व्याख्याओं में स्पष्ट है।

उदाहरण के लिए, अधिकांश स्थानों पर कुछ पेड़ एक वर्ष में फल देते हैं, अर्थात वे एक वर्ष में फल देते हैं।
उन्हें दया के खजाने से दिया जाता है, और वे उन्हें हमें प्रदान करते हैं। फिर
अगले वर्ष भले ही सभी स्पष्ट कारण मौजूद हों, लेकिन वे नहीं लेते हैं
उन्हें अर्पित करें। इसके अलावा, बारिश का आना इतना परिवर्तनशील है कि यह
जीवन और मृत्यु के लिए "केवल परमेश्वर को ज्ञात अदृश्य की पाँच चीज़ें" में शामिल
दया का अस्तित्व में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन के स्रोत के रूप में
और शुद्ध दया, और जीवन और दया का जल होने के कारण, बारिश निर्भर नहीं हो सकती
कानून-प्रेरित एकरसता पर, क्योंकि यह असावधानी की ओर ले जाता है और पर्दा डाल देता है
ईश्वरीय हाथ। बल्कि, सर्वशक्तिमान, महामहिम, सच्चे दाता
वह दयालु और जीवनदाता है, वह दयालु और दयावान है, वह सीधे वर्षा को नियंत्रित करता है और उसे प्राकृतिक कारणों से बचाता है। इस प्रकार वह हर समय प्रार्थना और धन्यवाद के द्वार खुले रखता है।

पुनः, उदाहरण के लिए, जीविका देना और प्रत्येक शरीर को एक साथ बनाना
विशेष मुखाकृति विशेष अनुग्रह के कार्य हैं, और उनका घटित होना
अप्रत्याशित तरीके भगवान की इच्छा और स्वतंत्रता को दर्शाते हैं। आप अन्य दिव्य कृत्यों (जैसे, हवा का मुक्त निपटान और अधीनता) की तुलना कर सकते हैं
बादलों) को इन उदाहरणों के साथ समझें।

सत्रहवाँ शब्द

सत्रहवाँ वचन

सांसारिक जीवन का अर्थ और सांसारिक दुर्भाग्य से बचने के उपाय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने धरती पर जो कुछ भी है उसे उसके लिए आभूषण बनाया है।

हम उन्हें परखेंगे कि उनमें से कौन सबसे अच्छा आचरण करता है।
उस पर जो कुछ है उसे बंजर धूल का ढेर बना दो। (18:7-8)

वर्तमान सांसारिक जीवन तो एक खेल और मनोरंजन मात्र है। (6:32)

[नोट: इस वचन में दो उच्च पद और एक परिशिष्ट शामिल है
महत्वपूर्ण है।]

दो स्टेशन

प्रथम स्थान: सर्व -दयालु सृष्टिकर्ता, सर्व- उदार प्रदाता, सर्व-बुद्धिमान निर्माता इस दुनिया को एक त्यौहार, आत्माओं और आत्मिक प्राणियों के लिए उत्सव के स्थान के रूप में आकार देता है।

इसे उनके नाम के सबसे अद्भुत शिलालेखों से सजाया गया, और
प्रत्येक आत्मा को उपयुक्त एवं उचित इन्द्रियों से सुसज्जित शरीर में वस्त्र पहनाएं ताकि
ताकि वह उसमें मौजूद अनगिनत अच्छी चीज़ों और नेमतों से लाभ उठा सके।
वह प्रत्येक आत्मा को एक भौतिक शरीर देता है और उसे एक बार इस तमाशे में भेजता है।

वह इस त्यौहार को, जो समय और स्थान की दृष्टि से बहुत विस्तृत है, शताब्दियों, वर्षों, ऋतुओं और दिनों में तथा कुछ निश्चित भागों में विभाजित करता है।
यह एक महान त्यौहार है जिसके दौरान सभी सजीव प्राणी और पौधे परेड करते हैं।

विशेषकर वसंत और ग्रीष्म ऋतु में, पृथ्वी की सतह पर त्यौहारों की एक विशाल श्रृंखला होती है छोटे जीवों के लिए, एक ऐसा चमकदार और आकर्षक क्षेत्र जो नज़रें खींच लेता है स्वर्गदूतों और स्वर्ग के अन्य निवासियों, और उच्चतर में आत्मिक प्राणियों का जो लोग सोचते हैं और चिंतन करते हैं, उनके लिए यह चिंतन का इतना अद्भुत क्षेत्र है कि हम इसका उचित वर्णन नहीं कर सकते।

हालाँकि, दिव्य नामों का प्रदर्शन दयालु और दयालु है इस दिव्य उत्सव में जीवनदाता को नामों से संतुलित किया जाता है सर्वव्यापी और सर्व-कुचलने वाला, और वह जो मृत्यु का कारण बनता है मृत्यु और अलगाव। यह सर्वव्यापी दया के अनुरूप नहीं लगता है जिसे इस प्रकार व्यक्त किया गया है: मेरी दया सभी चीजों को शामिल करती है (7:156)। फिर भी यह कई मायनों में ऐसा है, जिनमें से एक इस प्रकार है:

प्रत्येक समूह द्वारा परेड की अपनी बारी पूरी करने और वांछित परिणाम प्राप्त करने के बाद प्राप्त कर लिया गया है, वह सर्व-उदार निर्माता, सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता अपनी करुणा से उनमें से अधिकांश को थकावट और संसार से अरुचि का अनुभव कराता है। वह उन्हें विश्राम की इच्छा और प्रवास की लालसा प्रदान करता है। दूसरे संसार में। इस प्रकार, जब उन्हें जीवन के कर्तव्यों से मुक्त होना होता है, तो वह उनमें अपने मूल घर लौटने की उत्साही प्रवृत्ति जागृत होती है।

सर्वशक्तिमान दयालु परमेश्वर उन सैनिकों को शहादत प्रदान करता है जो युद्ध में मारे जाते हैं। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए (अपने पवित्र मूल्यों की रक्षा करते हुए), तथा अपने लिए बलिदान किए गए पशुओं को परलोक में शाश्वत भौतिक अस्तित्व प्रदान करते हैं, तथा पुल71 पर अपने मालिक के लिए सवार होने के पद के साथ - बुराक की तरह.72 इसलिए, यह उनकी असीम दया से दूर नहीं है कि अन्य चेतन प्राणी जो ईश्वर प्रदत्त अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए मरते हैं और कष्ट सहते हैं, उनके स्वभाव और ईश्वरीय आदेशों के प्रति आज्ञाकारिता को उनकी क्षमता के अनुसार उनकी दया के अक्षय भण्डार से आध्यात्मिक पुरस्कार और पारिश्रमिक मिलना चाहिए। इसलिए, उन्हें अपने प्रस्थान पर नाराज नहीं होना चाहिए

बल्कि उन्हें तो इस संसार से प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ही अदृश्य को जानने वाला है।

मानवता सजीव प्राणियों में सबसे अधिक सम्मानित होने के कारण सबसे महान है। इन त्यौहारों के लाभार्थी और इनमें सबसे अधिक आसक्त और डूबे हुए दुनिया। इसलिए, जब मृत्यु निकट आती है, तो भगवान अपनी दया से प्रत्येक को देता है व्यक्ति को एक ऐसी मनोदशा होती है जिसके कारण वह इस संसार से अरुचि महसूस करता है और चाहता है कि वह अनन्त संसार में जाओ। जो गुमराही में नहीं खोया है, उसे लाभ होता है इस मनोदशा को अपनाकर शांत मन से मरना। मैं इस मनोदशा के कई कारणों में से पाँच कारण बताऊँगा:

---

[71] विज्ञापन-दयालमी, अल-मुस्नद, 1:85 देखें। (ट्र.)

72 स्वर्गीय पर्वत जिस पर सवार होकर पैगम्बर अपने स्वर्गारोहण के दौरान स्वर्ग गए थे। (ट्र.)

एक: दयालु भगवान वृद्धावस्था के कारण इस संसार में जो कुछ सुन्दर और आकर्षक है, उस पर भी क्षणभंगुरता और पतन की छाप दिखा देते हैं, जैसे कि
साथ ही उनके कड़वे अर्थ भी। हमें असंतुष्ट करके
संसार के साथ रहते हुए भी, वह हमें एक स्थायी प्रियतम की खोज करने के लिए प्रेरित करता है।

दो: हमारे 99 प्रतिशत मित्र मर चुके हैं और दुनिया में चले गए हैं।
दूसरी दुनिया। हमारे भीतर उसी जगह की चाहत पैदा करके
उस हृदय-अनुभूत लगाव के द्वारा, वह हमें मृत्यु का सामना आनन्द के साथ करने में सक्षम बनाता है।

तीन: हमें अपनी अंतर्निहित असीम कमजोरी और नपुंसकता का एहसास कराकर और इस प्रकार हमारे जीवन के बोझ और बोझ के महान भार को समझाकर
ज़िम्मेदारियों के बावजूद, वह हमारे भीतर आराम की एक बड़ी इच्छा और एक ईमानदार भावना का बीजारोपण करता है
किसी दूसरी दुनिया में जाने की लालसा.

चार: वह विश्वासियों को विश्वास के प्रकाश के माध्यम से दिखाता है कि मृत्यु एक है
निवास का परिवर्तन, शाश्वत मृत्युदंड नहीं; कि कब्र प्रकाशित संसारों का द्वार है, अंधेरे कुएं का मुंह नहीं; और यह कि अपनी सारी चमक के बावजूद यह
परलोक की तुलना में संसार एक कालकोठरी के समान है। इसलिए, परलोक से निकल जाना
इस कालकोठरी में स्वर्ग के उद्यानों को खोजें, तथा शारीरिक जीवन की कष्टदायक उथल-पुथल से निकलकर
विश्राम की दुनिया और उस क्षेत्र में जाएं जहां आत्माएं उड़ान भरती हैं, और
प्राणियों के कष्टदायक शोर से मुक्त होकर दयालु परमेश्वर के पास जाना
उपस्थिति एक यात्रा है और एक खुशी है जिसकी बहुत अधिक इच्छा की जानी चाहिए।

पाँचवाँ: कुरान को कान लगाकर सुनने वालों पर ज्ञान का प्रकाश करना।
इसमें निहित सत्य के साथ-साथ ईश्वर के प्रकाश के माध्यम से दुनिया की वास्तविक प्रकृति भी निहित है।
सत्य, वे बताते हैं कि इस संसार के प्रति प्रेम और आसक्ति निरर्थक है, क्योंकि: संसार शाश्वत रूप से चाहने वाले की एक

पुस्तक है। इसके अक्षर और
शब्द दूसरे के सार, नाम और विशेषताओं की ओर इशारा करते हैं। इसलिए
इसके अर्थ को सीखो और अपनाओ, इसकी सजावट को त्याग दो, और जाओ।
संसार एक खेती है; इसे बोओ, अपनी फसल काटो और इसे सुरक्षित रखो।
भूसी को फेंक दो और उसे कोई महत्व मत दो।
दुनिया दर्पणों का एक संग्रह है जो लगातार आगे बढ़ते रहते हैं,
एक के बाद एक। उनमें जो प्रकट है, उसे जानो, देखो
उनके प्रकाशों को समझो, उनमें प्रकट होने वाले नामों की अभिव्यक्तियों को समझो, और उनसे प्रेम करो। अपनी आसक्ति समाप्त करो
कांच के उन टुकड़ों के लिए, जो टूटने के लिए अभिशप्त हैं और
नाश हो जाना।
दुनिया व्यापार की चलती हुई जगह है। अपना काम करो और चले जाओ।
उन कारवां का बेकार में पीछा करके खुद को मत थकाइए जो आपको छोड़ देते हैं
पीछे।

दुनिया मनोरंजन का एक अस्थायी स्थान है। जो आपको जानना चाहिए उसे जानने के लिए इसका अध्ययन करें। इसके स्पष्ट, बदसूरत चेहरे को अनदेखा करें, लेकिन इसके छिपे हुए, सुंदर चेहरे पर ध्यान दें, जो शाश्वत सर्व-दयालु की ओर देखता है। एक सुखद और लाभकारी यात्रा के लिए जाएं और फिर वापस आएं। जब उन सुंदर दृश्यों और सुंदर चीजों को दिखाने वाले दृश्य गायब हो जाते हैं, तो एक बच्चे की तरह रोना मत, और चिंतित मत हो।

दुनिया एक मेहमानखाना है। उस मेहरबान मेज़बान की हदों में खाओ-पीओ जिसने इसे बनाया है और शुक्र अदा करो। उसके हुक्म के मुताबिक काम करो और उसके मुताबिक बर्ताव करो। फिर बिना पीछे देखे चले जाओ। उसमें दखल न दो और न ही उन कामों में उलझो जो तुमसे दूर हैं और जिनसे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है।

वह ऐसी स्पष्ट सच्चाइयों के माध्यम से दुनिया के वास्तविक चरित्र को दिखाता है, और मृत्यु को कम दर्दनाक बनाता है। वास्तव में, वह सत्य के प्रति जागरूक लोगों के लिए मृत्यु को वांछनीय बनाता है, और दिखाता है कि वह जो कुछ भी करता है उसमें उसकी दया का एक निशान होता है। कुरान की आयतें अन्य विशेष कारणों की ओर भी इशारा करती हैं।

धिक्कार है उस पर जिसे इन पाँच कारणों या वास्तविकताओं में से कोई हिस्सा नहीं मिलता!

दूसरा स्टेशन

हे असहाय, दुर्भाग्य पर रोना बंद करो और भगवान पर भरोसा रखो, क्योंकि जान लो कि
यह रोना एक त्रुटि है जो मुसीबत पर मुसीबत लाती है; यदि तुमने उसे पा लिया है जो तुम्हें पीड़ित
करता है, तो जान लो कि यह पीड़ा शांति और खुशी लाने वाला एक उपहार है।

इसलिए, विलाप करना बंद करो और भगवान को धन्यवाद दो, बुलबुल की तरह: गुलाबों पर उनके
मार्मिक गीत वास्तव में सभी फूलों के लिए हार्दिक धन्यवाद हैं।
लेकिन यदि आप उसे नहीं पाते तो जान लें कि यह सारा संसार दुख, दुर्भाग्य और
हानि का स्थान है।

जब आप पर विश्वव्यापी जिम्मेदारी है तो एक
छोटे से दुर्भाग्य पर क्यों रोना? आइए, ईश्वर पर भरोसा रखें
और दुर्भाग्य के चेहरे पर मुस्कुराएं ताकि वह भी मुस्कुराए, क्योंकि जब वह मुस्कुराता है तो वह
कम हो जाता है और बदल जाता है।

हे स्वार्थी, जान ले कि इस संसार में सुख इसका त्याग करने में है।
यदि आप ईश्वर को जानते हैं और उसकी खोज करते हैं, तो यह पर्याप्त है, क्योंकि तब
सभी चीजें आपके लिए होंगी, भले ही आप उन्हें त्याग दें।

यदि आप स्वार्थी हैं, तो यह कुल नुकसान है, क्योंकि आप
जो भी करेंगे, सभी चीजें आपके खिलाफ होंगी।
अतः किसी भी स्थिति में संसार को त्याग दो।

संसार को त्यागने का अर्थ है इसे परमेश्वर की संपत्ति समझना और उसकी अनुमति से, उसके
नाम पर, उससे व्यवहार करना...
यहां एकमात्र लाभदायक व्यवसाय आपके नश्वर जीवन को शाश्वत बनाना है।

यदि आप अपना आत्म-स्वरूप चाहते हैं, तो वह सड़ा हुआ और आधारहीन है।
यदि आप बाहरी दुनिया की तलाश करते हैं, तो यह आपके लिए है
पतन और क्षणभंगुरता की छाप।
सड़े-गले सामानों के इस बाजार में कुछ भी खरीदने लायक नहीं है।
तो आगे बढ़ो... इसके आगे, ध्वनि सामान सभी पंक्तिबद्ध हैं...

काली शहतूत का एक फल

(नोट: धन्य शहतूत के पेड़ में, पुराने सईद ने नए सईद की जीभ से निम्नलिखित बातें कही।)

मैं जिया पाशा को नहीं, बल्कि यूरोप से प्रेम करने वालों को संबोधित कर रहा हूं।
यह मेरा व्यक्तित्व नहीं बोल रहा है, बल्कि मेरा हृदय बोल रहा है
कुरान के छात्रों की ओर से।

पिछले वचनों में जो कहा गया है, वह सत्य है।
सावधान रहें। भटकें नहीं; सीमा का उल्लंघन न करें।
पश्चिमी लोगों के विचारों की ओर झुकाव न रखें, क्योंकि वे गुमराह हैं।
इन्हें अपनाएं नहीं, वरना आपको पछताना पड़ेगा।

आप उनके सबसे प्रबुद्ध और बुद्धिमान लोगों को देखते हैं
आश्चर्य से चिल्लाते हुए कहते हैं: "हाय, मैं उलझन में हूँ।
मैं किससे और किससे शिकायत करूँ?"

कुरान मुझे बोलने के लिए प्रेरित करता है, और मैं बोलता हूँ - मैं पीछे नहीं हटूंगा।
जो कुछ भी उसकी अनुमति से मुझ पर घटित होता है, मैं उसकी कृपा से उसकी शिकायत
करता हूँ; मैं तुम्हारी तरह भ्रमित नहीं हूँ।

मैं सत्य को पुकारता हूँ - हे ईश्वर; मैं आपकी तरह सीमाओं का उल्लंघन नहीं करता।
पृथ्वी पर रहते हुए, मैं अपना पक्ष स्वर्ग तक उठाता हूँ।
मैं आपकी तरह भागता नहीं हूं।

क़ुरआन का मार्ग प्रकाश पर प्रकाश है; मैं इसे नहीं छोड़ता, जैसा कि आप करते हैं।
कुरान शुद्ध सत्य और ज्ञान है, मैं इसे साबित करूँगा।
मैं इसका विरोध करने वाले दर्शन को कुछ भी नहीं मानता।

कसौटी में - कुरान में - हीरे जैसे सत्य हैं।
मैं उन्हें पूरे दिल से स्वीकार करता हूं; मैं उन्हें बेचता नहीं हूं, जैसा कि आप करते हैं।
मैं सृष्टि से सृष्टिकर्ता तक यात्रा करता हूँ; मैं आपकी तरह भटकता नहीं हूँ।

मैं कंटीले रास्तों पर उड़ता हूँ; मैं उन पर तुम्हारी तरह नहीं चलता।
मैं पृथ्वी से लेकर दिव्य सिंहासन तक धन्यवाद अर्पित करता हूँ।
मैं ऐसा करने में आपकी तरह लापरवाही नहीं बरतता।

मैं मृत्यु को मित्र मानता हूं; मैं आपकी तरह भयभीत नहीं हूं।
मैं कब्र में मुस्कुराते हुए प्रवेश करूंगा; मैं आपकी तरह भयभीत नहीं हूं।

मैं इसे किसी राक्षस का मुंह, किसी जानवर की मांद या शून्यता का मार्ग नहीं मानता, जैसा
कि आप समझते हैं।
यह मुझे मेरे दोस्तों से फिर से मिलाता है। मैं कब्र से परेशान नहीं हूँ, जैसा कि आप हैं।

यह दया का द्वार है, प्रकाश और सत्य का द्वार है।
मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है; मैं पीछे नहीं हटूंगा।
यह कहते हुए: “ईश्वर के नाम पर,” मैं दरवाज़ा खटखटाऊँगा।
मैं पीछे मुड़कर नहीं देखूंगा और न ही भयभीत होऊंगा।

यह कहते हुए: “सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है,”
मैं लेट जाऊंगा और आराम पाऊंगा।
मैं कष्ट नहीं उठाऊँगा, न ही एकांत में रहूँगा।

पुनरुत्थान का आह्वान सुनकर मैं यह कहते हुए उठ खड़ा होऊंगा: "ईश्वर
सर्व-महान है।"73 मैं सर्वोच्च सभा या उस विशालतम सजदा स्थान से पीछे
नहीं हटूंगा।

ईश्वरीय कृपा, कुरान की रोशनी और विश्वास की चमक के कारण मुझे कोई
परेशानी महसूस नहीं होगी।
मैं बिना रुके, शीघ्रता से उड़कर सर्व-दयालु के सिंहासन की
छाया में चला जाऊंगा।
ईश्वर की इच्छा से, मैं आपकी तरह भ्रमित नहीं होऊंगा।

एक प्रार्थना

हे प्रभु। आप पर भरोसा न करके, बल्कि अपनी शक्ति और इच्छाशक्ति पर भरोसा करके, मैंने अपने दर्द के इलाज के लिए सभी छह दिशाओं में देखा। मुझे कोई नहीं मिला। हालाँकि, मेरे मन में यह विचार आया: "क्या यह आपके लिए पर्याप्त नहीं है कि आपके पास इलाज के रूप में दर्द है?"

मैं बेखबर होकर अपने दाहिनी ओर अतीत की ओर देखने लगा ताकि मुझे सांत्वना मिल सके। लेकिन कल मेरे पिता की कब्र के रूप में और अतीत मेरे पूर्वजों की विशाल कब्र के रूप में सामने आया। सांत्वना के बजाय, इसने मुझे भय से भर दिया।*

*विश्वास से पता चलता है कि विशाल, भयानक मकबरा एक परिचित और प्रबुद्ध बैठक है-
दोस्तों के एकत्र होने का स्थान।

मैंने भविष्य की ओर बाईं ओर देखा, लेकिन कोई इलाज नहीं मिला। इसके बजाय, कल मेरी कब्र के रूप में दिखाई दिया, और भविष्य मेरे समकालीनों और आने वाली पीढ़ियों की बड़ी कब्र के रूप में। मुझे राहत देने के बजाय, इसने मुझे डरा दिया। * *विश्वास और इससे मिलने वाली शांति उस भयावह बड़ी कब्र को परमानंद के रमणीय महलों में दयालु की दावत के रूप में दिखाती है।

73 मैं पुनरुत्थान की सुबह महादूत इसराफिल की पुकार सुनूंगा, और यह घोषणा करते हुए उठूंगा कि "ईश्वर सर्व-महान है," मैं "सबसे व्यापक प्रार्थना" और सर्वोच्च सभा से पीछे नहीं हटूंगा।

जब बाईं ओर से भी कोई अच्छाई नहीं दिखी, तो मैंने वर्तमान की ओर देखा। मैंने देखा यह एक ताबूत की तरह है जिसमें मेरी हताश संघर्षरत लाश ले जाई जा रही है।* *विश्वास उस ताबूत को

व्यापार का स्थान और एक चमचमाता अतिथिगृह दिखाता है।

उस दिशा में भी कोई इलाज न पाकर, मैंने अपना सिर उठाया और देखा मैं अपने जीवन के वृक्ष के शीर्ष पर था। मैंने देखा कि उसका एकमात्र फल मेरी लाश थी, मेरी ओर नीचे देख रहा है.*

*विश्वास से पता चलता है कि यह फल कोई लाश नहीं है। असल में, यह आत्मा है, जिसे अनन्त जीवन में अनन्त सुख प्राप्त होना है, उसने अपना घिसा-पिटा स्वरूप त्याग दिया है सितारों के बीच यात्रा करने का घर।

उस दिशा से भी निराश होकर मैंने अपना सिर नीचे किया और देखा कि मेरी हड्डियों की धूल मेरी पहली रचना की धूल में मिल गई थी। मेरी पीड़ा बढ़ गयी.*

*विश्वास बताता है कि धूल दया का द्वार है और जीत पर पर्दा है। स्वर्ग के हॉल के डॉव.

मुड़कर मैंने पीछे देखा और एक अस्थायी दुनिया देखी जिसमें कुछ भी नहीं था। शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में घूमती नींव। कोई इलाज न देकर, इसने मेरे दर्द में और अधिक उदासी और आतंक जोड़ दिया।*

*विश्वास से पता चलता है कि यह संसार उस शाश्वत चाहने वाले का संदेश है और दिव्य शिलालेखों की चादरें। अपने कर्तव्यों को पूरा करने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के बाद अर्थ, वे एक नए अस्तित्व के लिए अपने परिणाम पीछे छोड़ जाते हैं।

चूँकि मुझे उस दिशा से भी कोई अच्छाई नज़र नहीं आई, इसलिए मैंने सामने देखा और मैंने देखा कि मेरी कब्र का दरवाज़ा अंत में खुला हुआ था। उसके पीछे अनंत काल की ओर जाने वाला राजमार्ग था, जिसने दूर से ही मेरी आँखों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया।*

*विश्वास कब्र को प्रकाश की दुनिया का द्वार बताता है। क्योंकि वह रास्ता हमें प्रकाश की दुनिया की ओर ले जाता है। अनन्त खुशी के लिए, यह मेरे दर्द को ठीक करता है।

इन छह दिशाओं में देखते हुए मुझे केवल भय और निराशा का ही अनुभव हुआ। एक तुच्छ स्वतंत्र इच्छा के अलावा, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके द्वारा मैं विरोध कर सकूं या उनका विरोध करें.*

*विश्वास हमें एक अनंत शक्ति पर भरोसा करने का दस्तावेज देता है। इच्छाशक्ति, जो पदार्थ के सबसे छोटे अविभाज्य भाग की तरह है। वास्तव में, विश्वास ही ऐसा है एक दस्तावेज़।

मानव की स्वतंत्र इच्छा में शक्ति का अभाव है, और इसकी सीमा छोटी है और यह स्वयं भी गलत है। मानवीय कर्मों [जिसे ईश्वर बनाता है] को प्राप्त करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम करने के अलावा, यह कुछ भी नहीं कर सकता या बना नहीं सकता।*

*विश्वास इच्छाशक्ति को ईश्वर के नाम पर प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है और उसे पर्याप्त बनाता है वह किसी भी चीज़ का सामना करने के लिए तैयार है। यह एक सैनिक की तरह है जो अपनी तुच्छ शक्ति का उपयोग किसी भी चीज़ पर करता है। राज्य की ओर से वह स्वयं की तुलना में कहीं अधिक बड़े कार्य करने में सक्षम है।

यह न तो अतीत को भेद सकता है, न ही भविष्य को समझ सकता है, और न ही इसका कोई लाभ है-
मैं अपनी महत्वाकांक्षाओं के संबंध में अच्छा महसूस करता हूँ और उनके संबंध में कष्ट उठाता हूँ।*

*चूँकि विश्वास पशु शरीर के हाथ से इसकी लगाम लेकर उसे दूसरों को सौंप देता है।
हृदय और आत्मा के लिए, यह अतीत और भविष्य में प्रवेश कर सकता है, ...
आत्मा का जीवन क्षेत्र व्यापक है।

मनुष्य की इच्छाशक्ति केवल संक्षिप्त वर्तमान समय और गुज़रते हुए वर्तमान क्षण में ही सक्रिय होती है। मेरी ज़रूरतें अनंत हैं और एक जन्मजात कमज़ोरी है। मैं बेसहारा और असहाय हूँ। मैं आतंक और अकेलेपन के कारण दयनीय स्थिति में हूँ
छह दिशाओं से आ रही है। और फिर भी अनंत इच्छा और महत्वाकांक्षा,
शक्ति की कलम द्वारा मेरे अस्तित्व के पृष्ठ पर अंकित, मेरे भीतर समाया हुआ है
प्रकृति। वास्तव में, ब्रह्मांड में हर चीज के नमूने मेरे अंदर समाहित हैं
मैं उन सभी से जुड़ा हुआ हूं और उनके लिए काम करता हूं।

आवश्यकता का क्षेत्र दृष्टि जितना ही व्यापक है, तथा इसका विस्तार दृष्टि तक है।
कल्पना। मुझे वह चाहिए जो मेरे पास नहीं है, और इसलिए मेरी ज़रूरतें असीमित हैं। फिर भी
मेरी शक्ति केवल वहीं तक फैली है जहाँ तक मैं पहुँच सकता हूँ। इस प्रकार मेरी इच्छाएँ और ज़रूरतें हैं
अनंत, जबकि मेरी पूंजी नगण्य और महत्वहीन है। तो, इसका क्या मतलब है
जब ऐसी ज़रूरत का सामना करना पड़ता है तो तुच्छ इच्छाशक्ति का क्या मतलब है? मुझे
किसी अन्य समाधान की खोज करें.

इसका समाधान अपनी इच्छाशक्ति पर निर्भर रहना नहीं है, बल्कि इसके लिए समर्पण करना है।
ईश्वरीय इच्छा पर भरोसा रखें और उसकी शक्ति में शरण लें। "हे प्रभु!
चूँकि यह मोक्ष का मार्ग है, इसलिए मैं अपनी स्वतंत्र इच्छा को आपके मार्ग पर छोड़ देता हूँ और
अपना अहंकार त्याग दो.

मैं ऐसा इसलिए करता हूँ कि आपकी कृपा मेरी शक्तिहीनता और कमजोरी पर दया करके मेरी सहायता करे और मुझे सहारा दे, और आपकी दया मुझ पर दया करे।
मेरी चाहत और ज़रूरत के कारण, और यह मेरे लिए एक सहारा और खुला हो सकता है
इसका दरवाज़ा मेरे लिए खोल दो।"

जो दया का असीम सागर पा लेता है, वह अपने पर निर्भर नहीं रहता।
स्वतंत्र इच्छा, जो मृगतृष्णा में देखी गई पानी की एक बूंद से अधिक कुछ नहीं है। वह करता है
दया को न छोड़ें और उसकी इच्छा का सहारा न लें।

अफ़सोस! हम धोखा खा गए। हमने सोचा कि यह सांसारिक जीवन निरन्तर है और इस तरह हम इसे पूरी तरह से खो बैठे। वास्तव में यह क्षणिक जीवन एक नींद के समान है।
एक सपने की तरह गुज़र गया। यह जीवन, जिसका कोई आधार नहीं है, हवा की तरह उड़ता है।
जो लोग खुद पर भरोसा करते हैं और सोचते हैं कि वे हमेशा जीवित रहेंगे, वे निश्चित रूप से मरेंगे।
मौत की ओर दौड़, और यह दुनिया, मानवता का घर, अंधकार में गिर जाता है
महत्वाकांक्षाएँ समय-सीमित होती हैं, लेकिन आत्मा में पीड़ा बनी रहती है।

चूंकि यह वास्तविकता है, आओ, मेरी दुखी आत्मा जो जीने की शौकीन है
और एक लंबी जिंदगी चाहता है, जो दुनिया से प्यार करता है और जिसकी असीम महत्वाकांक्षा है और

दर्द। जागो और अपने होश में आओ। विचार करें कि जुगनू
जिस प्रकार मधुमक्खी अपने ही मंद प्रकाश पर निर्भर रहती है और हमेशा रात के असीम अंधकार में रहती है, उसी प्रकार मधुमक्खी दिन के सूर्य को खोजती है और अपने मित्रों (फूलों) को सूर्य के प्रकाश से सराबोर देखती है, क्योंकि वह स्वयं पर निर्भर नहीं रहती। उसी प्रकार,
यदि आप अपने आप पर, अपने अस्तित्व और आत्मविश्वास पर भरोसा करते हैं, तो आप जैसे होंगे
जुगनू। लेकिन अगर आप अपने आप को, अपने क्षणभंगुर अस्तित्व और शरीर को समर्पित करते हैं
सृष्टिकर्ता का मार्ग जिसने तुम्हें दिया है, तुम पाओगे, मधु-मक्खी की तरह, अस्तित्व का अनंत जीवन। इसे समर्पित करो, क्योंकि तुम्हारा अस्तित्व और तुम्हारा शरीर अब कोई नहीं है
यह आपके लिए एक ईश्वरीय विश्वास से भी अधिक है।

और यह तो पैदा करने वाले की सम्पत्ति है, उसी ने इसे तुम्हें दिया है। अतः इसका उपयोग करो।
उसके लिए बिना किसी हिचकिचाहट के और उसे किसी दायित्व में डाले बिना ऐसा करना
कि यह स्थायित्व प्राप्त करेगा। क्योंकि निषेध का निषेध एक पुष्टि है। इस प्रकार यदि
हमारा न होना अस्वीकार कर दिया जाता है (अस्तित्व के पक्ष में), हमारा होना सच्चा अस्तित्व पाता है।
सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता तुमसे अपनी सम्पत्ति खरीदता है। बदले में वह तुम्हें अपनी सम्पत्ति देता है।
तुम्हें जन्नत जैसी ऊँची कीमत देता है, तुम्हारे लिए उसकी देखभाल करता है, और उसका मूल्य बढ़ाता है। वह उसे तुम्हें एक परिपूर्ण और स्थायी रूप में लौटाएगा। तो हे मेरे आत्मा,
इंतज़ार मत करो। यह व्यवसाय करो, जो पाँच तरह से लाभदायक है। साथ ही
पाँच हानियों से बचकर, एक लेन-देन में पाँच गुना लाभ कमाएँ।[74]

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा, "मैं डूबनेवालों से प्रेम नहीं करता।" (6:76)

ब्रह्मांड के क्षय पर यह आयत पैगम्बर अब्राहम द्वारा कही गई थी।
उसे शांति मिले, मुझे रुलाया।

मेरे दिल की आँखें उसके लिए कड़वे आँसू रोईं। हर आँसू इतना कड़वा था
दुख की बात है कि इसने दूसरों को भी गिरा दिया, मानो आँसू खुद रो रहे हों। उन आँसुओं से ही आगे की पंक्तियाँ बनती हैं। वे एक टिप्पणी की तरह हैं
परमेश्वर के वचन - कुरान में निहित एक बुद्धिमान पैगम्बर के शब्दों पर।

जो प्रेमी गायब हो जाता है, वह सुंदर नहीं होता, क्योंकि जो पतन के लिए अभिशप्त है, वह वास्तव में सुंदर नहीं हो सकता। यह दिल से प्यार नहीं है, और ऐसा होना भी नहीं चाहिए, क्योंकि
हृदय शाश्वत प्रेम के लिए बनाया गया है और वह शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले का दर्पण है।

एक वांछित व्यक्ति गायब होने के लिए अभिशप्त है, वह हृदय के योग्य नहीं है
आसक्ति या मन की व्याकुलता। यह इच्छा की वस्तु नहीं हो सकती,
और दु:ख के साथ याद किए जाने के योग्य नहीं है। तो दिल क्यों पूजा करे
और उससे जुड़े रहें?

---

74 पाँच लाभ या फायदों और पाँच नुकसानों के लिए छठे शब्द का संदर्भ लें। (ट्र.)

जो क्षय और मृत्यु में खोया हुआ है, उसे मैं नहीं चाहता।
क्योंकि मैं नश्वर हूँ और इसलिए नश्वर वस्तु की चाहत या इच्छा नहीं करता।

जो व्यक्ति मृत्यु में दफना दिया गया है, उसकी पूजा की जाती है - मैं ऐसे व्यक्ति को नहीं बुलाता या उसकी शरण नहीं लेता। क्योंकि मैं असीम रूप से जरूरतमंद और शक्तिहीन हूं। जो शक्तिहीन है, वह मेरे अंतहीन दर्द को ठीक नहीं कर सकता या मेरे असीम गहरे घावों को ठीक नहीं कर सकता। क्षय के अधीन कोई भी वस्तु पूजा की वस्तु कैसे हो सकती है?

दिखावे से ग्रस्त मन, संसार में जिसे वह चाहता है, उसे क्षय होते और मरते देखकर विलाप करता है, जबकि आत्मा, जो शाश्वत प्रियतम की खोज करती है, भी विलाप करती है, कहती है: "मैं उनसे प्रेम नहीं करती, जो अस्त हो जाते हैं।"

मैं अलगाव नहीं चाहता या चाहता हूं, क्योंकि मैं इसे सहन नहीं कर सकता।

मिलन के तुरंत बाद कटु वियोग होना विचार या लालसा के योग्य नहीं है। क्योंकि जिस तरह सुख का लुप्त होना दुख है, उसी तरह उसकी कल्पना करना भी दुख है। प्रेमियों की रचनाएँ, यानी रूपक प्रेम (विपरीत लिंग के प्रति प्रेम) पर कविताएँ, इस लुप्त होने की कल्पना से उत्पन्न होने वाले दर्द के कारण विलाप हैं। यदि आप उनकी भावना को संक्षेप में प्रस्तुत करें, तो यह विलाप प्रत्येक से बहेगा।

इस प्रकार, ऐसी मुलाकातों और दर्दनाक रूपक प्रेम से आने वाले दर्द के कारण ही मेरा हृदय अब्राहम की तरह चिल्लाता है: “मैं उनसे प्रेम नहीं करता जो अस्त हो जाते हैं।”

यदि आप इस क्षणभंगुर संसार में स्थायित्व चाहते हैं, तो स्थायित्व का जन्म क्षणभंगुरता और विनाश से होता है। अपनी दुष्ट आत्मा का विनाश करें ताकि आप स्थायित्व प्राप्त कर सकें।

सांसारिक आराधना के आधार, बुरे नैतिक मूल्यों से खुद को मुक्त करें और आत्म-विनाश का एहसास करें। सच्चे प्रियतम के लिए अपने अधिकार और नियंत्रण के क्षेत्र में बलिदान करें। प्राणियों का अंत देखें, जो विलुप्ति का प्रतीक है। क्योंकि इस दुनिया से स्थायित्व की ओर जाने वाला मार्ग आत्म-विनाश से होकर गुजरता है।

कारणता में लीन मानव मन, संसार के क्षय के कारण होने वाली उथल-पुथल पर विलाप करता है। सच्चे अस्तित्व की चाहत रखने वाला विवेक, अब्राहम की तरह विलाप करता है: "मैं उन लोगों से प्रेम नहीं करता जो अस्त हो जाते हैं।" यह रूपकात्मक प्रियजनों और क्षय होने वाले प्राणियों से अपना संबंध तोड़ देता है, और खुद को वास्तव में विद्यमान, शाश्वत प्रियतम से जोड़ लेता है।

हे मेरे अधम आत्मा। यह संसार और सभी प्राणी नश्वर हैं। हालाँकि, तुम प्रत्येक नश्वर वस्तु में सर्व-स्थायी सत्ता तक पहुँचने के दो रास्ते खोज सकते हो, और अमर प्रियतम की कृपा की अभिव्यक्तियों के दो रहस्य या झलकियाँ पहचान सकते हो - यदि तुम अपने नश्वर अस्तित्व का त्याग कर दो।

प्रदान करने का कार्य पहचाना जाता है और प्रत्येक अनुग्रह में दयालु की कृपा देखी जाती है। यदि तुम प्रदान की गई वस्तु के माध्यम से इस कार्य को पहचानो, तो तुम

सर्व-प्रदानकारी को पाओगे। सनातन रूप से मांगे जाने वाले का प्रत्येक कार्य
सर्वशक्तिमान निर्माता के नामों को एक संदेश की तरह इंगित करता है। यदि आप शिलालेख के माध्यम से अर्थ समझते हैं, तो नाम आपको सही मार्ग पर ले जाएंगे।
उन नामों से पुकारा जाता है.75 चूँकि कर्नेल को ढूँढना संभव है,
इन क्षणभंगुर चीजों का सार, उसे प्राप्त करो। इनके अर्थहीन को त्याग दो
मृत्यु की बाढ़ में गोले।

हर वस्तु जो अस्तित्व में है, एक शब्द है जिसका अर्थ निहित है और वह अनेक अर्थों को प्रदर्शित करती है।
सर्व-महान निर्माता के नाम। चूँकि प्राणी ईश्वरीय शक्ति के शब्द हैं,
उनके अर्थों को समझें और उन्हें अपने हृदय में स्थान दें। निर्भयतापूर्वक उनका प्रयोग करें
अर्थहीन अक्षरों को क्षणभंगुरता की हवा में छोड़ दें और उन्हें भूल जाएं।

सांसारिक मन, जो दिखावे में उलझा रहता है और जिसकी पूंजी केवल भौतिक जगत का ज्ञान है, वह घबराहट में चिल्लाता है और
निराशा, क्योंकि इसके विचारों की श्रृंखला शून्यता और अस्तित्वहीनता में समाप्त होती है।
सत्य की ओर ले जाने वाला सच्चा मार्ग खोजता है। चूँकि आत्मा उस चीज़ से हट गई है जो
और नश्वर है और हृदय ने धोखेबाज प्रेमियों को त्याग दिया है, और
चूँकि विवेक क्षणभंगुर प्राणियों से दूर हो गया है, आप, मेरे
दयनीय आत्मा को सहायता मांगनी चाहिए: "मैं उनसे प्रेम नहीं करता जो बैठते हैं," और बचा लिया जाएगा।

देखिये मौलाना जामी, जो शराब के नशे में थे, कितने अच्छे थे
प्रेम मानो प्रेम से ही निर्मित हुआ है, तथा इसे बहुलता से एकता की ओर मोड़ने के लिए अभिव्यक्त किया गया है - कोष्ठकीय जोड़ मेरे हैं:

केवल एक ही चाहो (बाकी चाहने लायक नहीं हैं)।
एक को बुलाओ (अन्य आपकी सहायता के लिए नहीं आएंगे)।
एक को खोजो (अन्य खोजने लायक नहीं हैं)
एक को देखो और उसका अनुसरण करो (अन्य सभी हर समय दिखाई नहीं देते; वे
नश्वरता के पर्दे के पीछे अदृश्य हो जाते हैं)
एक को जानो (उस ज्ञान के अलावा जो कुछ न बढ़ाए)
तुम्हारा उसके विषय में ज्ञान व्यर्थ है)
एक का उल्लेख करें (उससे संबंधित नहीं शब्द बेकार माने जा सकते हैं)।

हे जामी, मैं मानता हूँ कि तुमने सच कहा। सच्चा प्रिय, सच्चा
वह एकमात्र सच्चा चाहने योग्य, सच्चा चाहने योग्य और सच्ची पूजा का पात्र है।
भगवान के नामों के स्मरण और उच्चारण के महाचक्र में यह ब्रह्माण्ड और इसके निवासी विभिन्न भाषाओं और स्वरों में घोषणा करते हैं: "कोई भी ईश्वर नहीं है,
ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," और ईश्वरीय एकता की गवाही देते हैं। यह उस घाव को भर देता है जो
जो अस्त होते हैं, उनके द्वारा, और अमर प्रियतम की ओर संकेत करता है।

---

[75] उदाहरण के लिए, अपने अस्तित्व में आने, सुंदरता, आकार, अनुपात, रंग और अपने कार्य के माध्यम से एक फूल ईश्वरीय नामों को प्रदर्शित करता है - निर्माता, सर्व-सुंदर, सर्व-आकार देने वाला,
क्रमशः सर्व-न्यायी, सर्व-रंगीन और सर्व-ज्ञानी; और नाम इंगित करते हैं
वह जिसके पास वे हैं। (ट्र.)

(नोट: लगभग 25 साल पहले इस्तांबुल के बेकोज़ में युथा टेपेसी पर, जब
मैंने संसार त्यागने का निर्णय कर लिया था, कई महत्वपूर्ण मित्र मेरे पास आये।
मुझे वापस दुनिया में बुलाओ और मेरी पुरानी स्थिति में ले आओ। मैंने उनसे कहा कि चले जाओ
मुझे अगली सुबह तक का समय दिया गया ताकि मैं ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त कर सकूँ।
सुबह मुझे निम्नलिखित दो "टेबल्स" याद आए। वे मिलते-जुलते हैं
कविता, लेकिन वे नहीं हैं। मैंने उन्हें उस खातिर नहीं बदला है
धन्य स्मृति। उन्हें यहाँ शामिल किया गया है क्योंकि वे उपयुक्त हैं।)

पहली तालिका

(लापरवाह लोगों की दुनिया की सच्ची भावना का चित्रण।)

मुझे दुनिया में मत बुलाओ,
मैं आया और पाया कि यह दुष्ट और नश्वर है।

असावधानी एक परदा थी;
मैंने सत्य का प्रकाश छिपा हुआ देखा।

सारी चीज़ें, सारी सृष्टि—
मैंने देखा कि वे नश्वर और हानि से भरे हुए थे।

अस्तित्व, वास्तव में मैंने इसे धारण किया है।
अफ़सोस! यह अस्तित्वहीनता थी; मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा।

जहाँ तक जीवन की बात है, मैंने इसका अनुभव किया है;
मैंने देखा कि यह पीड़ा के भीतर पीड़ा थी।

बुद्धि शुद्ध प्रतिशोध बन गई;
मैंने स्थायित्व को क्लेश के रूप में देखा।

ज़िन्दगी हवा सी थी, सनक में गुज़र जाती थी;
मैंने पूर्णता को शुद्ध हानि के रूप में देखा।

कार्य केवल दिखावे के लिए थे;
मैंने महत्वाकांक्षा को शुद्ध पीड़ा के रूप में देखा।

मिलन वस्तुतः अलगाव था;
मैंने देखा कि इलाज ही बीमारी है।

ये रोशनियाँ अंधकार बन गईं;
मैंने देखा कि ये दोस्त अनाथ हो गये हैं।

ये आवाजें मौत की घोषणाएं थीं;
मैंने जीवितों को मृत देखा।

ज्ञान सनक में बदल गया;
मैंने विज्ञान में हजारों बीमारियाँ देखीं।

सुख अमिश्रित दुःख बन गया;
मैंने अस्तित्व को अनस्तित्व का मिश्रित रूप देखा।

मुझे सच्चा प्रियतम मिल गया है;
आह, मुझे वियोग के कारण बहुत पीड़ा हुई।

दूसरी तालिका

(यह तालिका विश्व के लोगों की सच्ची भावना का वर्णन करती है)
मार्गदर्शन और शांति.)

असावधानी लुप्त हो गई है;
मैंने सत्य के प्रकाश को प्रकट होते देखा है।

अस्तित्व ईश्वरीय सत्ता का प्रमाण है।
देखो, जीवन सत्य को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है।

बुद्धि खजाने की कुंजी बन गई है।
देखो, नश्वरता ही शाश्वतता का द्वार है।

आत्म-प्राप्ति की चिंगारी मर चुकी है।
लेकिन देखो, वहाँ अनुग्रह और सौंदर्य का सूर्य है।

वियोग सच्चा मिलन बन गया है;
देखो, दर्द शुद्ध सुख है।

जीवन शुद्ध कर्म बन गया है।
देखो, अनंत काल शुद्ध जीवन है।

अंधकार प्रकाश को घेरने वाली एक पतली झिल्ली है।
देखो, मृत्यु में ही सच्चा जीवन है।

सभी चीजें परिचित हो गई हैं।
देखो, सभी ध्वनियाँ ईश्वर का स्मरण हैं।

सृष्टि के सभी कण:
देखो, हर कोई परमेश्वर की महिमा करता है और उसे उसके नाम से पुकारता है।

मैंने गरीबी को धन का खजाना पाया है।
देखो, नपुंसकता में ही सम्पूर्ण शक्ति छिपी है।

यदि तुम्हें ईश्वर मिल गया है,
देखो, सब कुछ तुम्हारा है।

यदि तुम सब वस्तुओं के स्वामी के दास हो,
देखो, उसकी सम्पत्ति तुम्हारी है।

यदि आप अहंकारी हैं और स्वयं पर स्वामित्व का दावा करते हैं,
देखिये, यह अंतहीन परीक्षण और क्लेश है।

यह अनंत पीड़ा है, इसका स्वाद लो,
देखिये, यह एक असहनीय आपदा है।

यदि आप सचमुच परमेश्वर के दास हैं, उसके प्रति समर्पित हैं,
देखो, यह असीम आनन्द है।

इसके अनगिनत पुरस्कारों का स्वाद चखो,
असीम आनन्द को देखो, उसका अनुभव करो।

(नोट: 25 साल पहले रमज़ान के दौरान दोपहर की प्रार्थना के बाद, मैं
अब्दुल-कादिर अल-जिलानी की दिव्य नामों की रचना का पाठ किया
मैं ईश्वरीय नामों का उपयोग करते हुए एक प्रार्थना लिखना चाहता था, लेकिन
मैं केवल निम्नलिखित लिख सकता हूँ। मैं अपने धन्य गुरु की प्रार्थना के समान ही प्रार्थना लिखना
चाहता था। लेकिन अफसोस, मेरे पास लिखने की क्षमता नहीं है
पद्य में और इसलिए इसे पूरा नहीं कर सका। इसे यहाँ शामिल किया गया है, क्योंकि यह
उपयुक्त।)

वह, सर्व-स्थायी

वह अपने आदेशों में पूर्ण तत्वदर्शी है, हम उसके आदेशों के अधीन हैं। वह अत्यन्त तत्वदर्शी, न्याय करने वाला है। धरती और आकाश उसी के हैं।

वह अपने राज्य के रहस्यों और गुप्त सब बातों को जानने वाला है; वह सर्वशक्तिमान है, स्वयंभू है; सब कुछ उसी का है।

सिंहासन भूमि पर।

वह अपनी रचना और कलात्मकता में कौशल और शिलालेखों में अत्यंत सूक्ष्म है; वह सर्व-उत्पत्तिकर्ता, सर्व-प्रेमी है; उसकी सुंदरता और

वैभव।

वह अपनी रचनाओं में सर्वशक्तिमान है, वह सर्वशक्तिमान, पवित्र और शुद्ध है, उसकी शक्ति और शक्ति भी उसी की है।

महिमा और भव्यता.

प्राणियों के उत्पत्तिकर्ता; हम उनकी कला के शिलालेखों में से हैं; वह सर्वव्यापी, सर्वस्थायी है; उसका प्रभुत्व है

और स्थायित्व.

वह बड़ा दयालु है, वह सबका उपकार करनेवाला है, हम उसके अतिथियों के दल में से हैं, वह

बड़ा दान देनेवाला, बड़ा

कष्ट सहनेवाला है, उसी की प्रशंसा और महिमा है।

सर्व-सुन्दर उपहार देने वाले; हम बुनाई के बीच में हैं

उसी का ज्ञान है, वही

पैदा करनेवाला, अत्यन्त विश्वासयोग्य है, उसी का अधिकार है दानशीलता और अनुग्रहशीलता।

वह अपने प्राणियों की शिकायतों और प्रार्थनाओं को सुनने वाला है, वह अत्यन्त दयावान, शिफा देने वाला है, धन्यवाद और प्रशंसा उसी के अधिकार में है।

वह अपने बन्दों के पापों और गलतियों को क्षमा करने वाला है, वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है, क्षमा और प्रसन्नता उसी के अधिकार में है।

हे मेरी आत्मा! मेरे हृदय की तरह रो, चिल्ला और कह:

मैं नश्वर हूं, इसलिए मुझे नश्वरता नहीं चाहिए।

मैं नपुंसक हूं, इसलिए मैं नपुंसक की इच्छा नहीं करता।

मैंने अपनी आत्मा को दयालु भगवान को सौंप दिया है, अतः अब मुझे किसी अन्य की इच्छा नहीं है।

मैं केवल उसी को चाहता हूं जो सदैव मेरा मित्र बना रहे।

मैं तो एक तुच्छ कण हूँ, परन्तु मैं एक चिरस्थायी सूर्य की कामना करता हूँ।

मैं सारतः कुछ भी नहीं हूं, लेकिन मैं संपूर्ण सृष्टि की कामना करता हूं।

बारला के ऊपरी इलाकों में चीड़, देवदार, जूनिपर और जंगली चिनार के पेड़ों का एक फल

अपने निर्वासन के दौरान, एक पहाड़ की चोटी से विस्मयकारी दृश्य देखते हुए
चीड़, देवदारु और जूनिपर वृक्षों के आकार और उनका अद्भुत नजारा
हल्की हवा चली। दृश्य एक शानदार दृश्य में बदल गया,
नृत्य का आनंददायक और शोरगुल वाला प्रदर्शन, प्रशंसा का उत्साहपूर्ण प्रदर्शन
और परमेश्वर की महिमा करना। मेरा आनंद शिक्षा के लिए देखने में बदल गया
और ज्ञान के लिए सुनना। मुझे अहमद-ए-जिजरी की ये कुर्दिश पंक्तियाँ याद आईं:

हर कोई आपकी सुंदरता को देखने के लिए दौड़ा है;

वे आपकी सुन्दरता के कारण दिखावा कर रहे हैं।

दृश्य से प्राप्त निर्देश के अर्थ को व्यक्त करने के लिए,
मेरा हृदय इस प्रकार रोया:

हे प्रभु, सभी जीवित प्राणी हर जगह से देखने के लिए दौड़े चले आते हैं
आप, आपकी सुन्दरता पर.

हर कोने से वे उभर कर धरती की ओर देखते हैं,
जो आपकी कला का एक काम है.

ऊपर और नीचे से निकलकर वे संदेशवाहकों की तरह चिल्लाते हैं।

वे घोष-जैसे वृक्ष आपके शिलालेखों की सुन्दरता देखकर प्रसन्न होकर नृत्य कर रहे हैं।

आपकी कला की पूर्णता से प्रसन्न होकर वे हर्षित और प्रसन्न हैं।
मधुर धुनें गाओ.

ऐसा लगता है मानो उनकी धुनों की मिठास उनमें नई ऊर्जा भर देती है
खुशी और उन्हें शर्मीली ढंग से बहता है।

अंततः वे नाचने लगे हैं और परमानंद की खोज में हैं।

ईश्वरीय दया के कारण ही सभी जीवित प्राणियों को सुख मिलता है।
प्रत्येक के लिए विशेष महिमा और प्रार्थना का निर्देश।

निर्देश प्राप्त करने के बाद, प्रत्येक वृक्ष एक ऊंची चट्टान पर खड़ा हो जाता है और अपना सिर दिव्य सिंहासन की ओर उठाता है।

शाहबाज-ए-कलेन्दर76 की तरह प्रत्येक व्यक्ति ईश्वरीय दरबार की ओर सैकड़ों हाथ फैलाए हुए है और पूजा की एक भव्य मुद्रा में खड़ा है।

वे अपनी टहनियों को नाचती हुई प्रेम-लटों की तरह घुमाते हैं, और देखने वालों में उत्तम उत्साह और उच्च आनंद जगाते हैं।

मानो सबसे संवेदनशील तारों को छू लिया गया हो, वे ऊंचे स्वर में प्रेम गीत गाते हैं, और मृतकों को भी स्पर्श से उत्पन्न मधुर दुःख से उत्पन्न अपनी शाश्वत धुन सुनाते हैं।

एक अर्थ मन में आता है: वे रूपकात्मक प्रेम के दर्दनाक लुप्त होने और गहरी मर्मस्पर्शी आहों के कारण उत्पन्न रुदन को याद करते हैं।

वे उन उदासी भरे गीतों को सुनाते हैं जो प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं की कब्र पर गाते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि वे शाश्वत धुनें और दुःखभरी आवाजें बनाते हैं, जिन्हें मृतक सुनते हैं, और जो अब सांसारिक आवाजें और शब्द नहीं सुनते।

आत्मा इससे समझती है कि वस्तुएं, उस महान् निर्माता के नामों के प्रकटीकरण के प्रति महिमामय प्रतिक्रिया व्यक्त करती हैं; वे एक मनोहर कीर्तन करती हैं।

हृदय इन वृक्षों से उत्पन्न इस उच्च, चमत्कारी दृश्य में ईश्वरीय एकता का अर्थ पढ़ता है, जिनमें से प्रत्येक वृक्ष एक मूर्त कुरान की आयत के समान है।

दूसरे शब्दों में, उनकी रचना में इतना अद्भुत क्रम, कला और बुद्धिमत्ता है कि यदि सभी "प्राकृतिक कारण" सचेतन एजेंट होते जो अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने में सक्षम होते, तो वे अपनी सारी शक्तियों को एक साथ मिलाने पर भी उनकी नकल नहीं कर सकते थे।

यह देखकर आत्मा समझती है कि पृथ्वी विरह के कोलाहल में घूम रही है और वह स्थायी सुख की खोज करती है। उसे यह अर्थ मिला है: "तुम संसार की भक्ति छोड़कर उसे पाओगे।"

पशुओं, पौधों, वृक्षों और हवा के ऐसे मंत्रोच्चार से मन सृष्टि के सबसे सार्थक क्रम, ज्ञान के शिलालेखों और गुप्त सत्यों के खजाने को समझ पाता है। यह निष्कर्ष निकालता है कि हर चीज सर्व-महान निर्माता की महिमा करती है।

---

76 शाहबाज़-ए कलेंदर: एक प्रसिद्ध नायक जिसने अब्दुल-कादिर अल-जिलानी के मार्गदर्शन में ईश्वरीय दरबार में शरण ली और संत का पद प्राप्त किया।

कामनाशील जीवात्मा को गुनगुनाती हवा और फुसफुसाते पत्तों से इतना आनंद मिलता है कि वह अपने जीवन के आधार सांसारिक सुखों को भूल जाता है और इस सत्य के आनंद में आत्म-विनाश की प्राप्ति करना चाहता है।

कल्पना इस दृश्य को ऐसे देखती है मानो वृक्षों के लिए नियुक्त देवदूत प्रत्येक वृक्ष में समाहित हो गए हों, जिनकी शाखाओं से अनेक बांसुरियां लटक रही हों।

ऐसा लगता है मानो शाश्वत सम्राट ने इन देवदूतों को पेड़ों में सजाकर एक शानदार परेड निकाली हो, जिसमें अनगिनत बांसुरियों की ध्वनि भी शामिल हो। इस तरह पेड़ खुद को सचेत और सार्थक दिखाते हैं।

बांसुरियों की धुनें शुद्ध और मार्मिक हैं, मानो किसी दिव्य ऑर्केस्ट्रा से निकल रही हों।

मन वियोग का वह दु:खद विलाप नहीं सुनता जो सभी प्रेमी, जिनमें मुख्य रूप से मौलाना जलालुद्दीन अर-रूमी भी शामिल हैं, सुनते हैं;

बल्कि, वह तो उस सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर परमेश्वर की दया के लिए की गई कृतज्ञता को सुनता है, तथा उसके पालन के लिए उसकी स्तुति को सुनता है।

चूँकि पेड़ शरीर हैं और उनके पत्ते जीभ हैं, इसलिए हवा का झोंका प्रत्येक पेड़ को अपनी हज़ारों जीभों से यह गान करने के लिए मजबूर करता है: "वह, वह (अर्थात ईश्वर)।" अपने जीवन की महिमा और प्रशंसा के रूप में, वे अपने निर्माता को सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर घोषित करते हैं।

सभी चीजें ईश्वर की एकता की घोषणा करने के लिए एक सार्वभौमिक चक्र बनाती हैं: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," और अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं।

स्वभाव की भाषा में, वे अक्सर "हे परम सत्य" की घोषणा करते हैं, और उनकी दया के खजाने से अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की मांग करते हैं।
जीवन से अनुग्रहित जीभ के माध्यम से, वे निरंतर उसका नाम जपते हैं: "हे सर्व-जीवित।"

हे सर्वजीव, हे स्वयंभू! अपने नामों के लिए, हे सर्वजीव और स्वयंभू, इस दुखी हृदय को जीवन प्रदान करो और इस भ्रमित मन को सही दिशा दिखाओ। आमीन।

(नोट: एक बार रात में, बारला के पास चामदाडी के एक ऊंचे स्थान पर, मैं आकाश की ओर देख रहा था, जब निम्नलिखित पंक्तियाँ अचानक मेरे दिमाग में आईं। मैंने कल्पना की कि मैंने सितारों को उनकी स्वभावगत भाषा में बोलते हुए सुना है। चूँकि मैं छंद के नियमों को नहीं जानता, इसलिए मैंने उन्हें वैसे ही लिख दिया जैसे वे मेरे दिमाग में आए।)

सितारों का प्रवचन

सितारों की बातें सुनें और उनके सुंदर उपदेशों पर ध्यान दें।
देखिये, बुद्धि ने इन प्रकाशमान पत्रों में क्या लिखा है।

वे सभी सत्य की भाषा में यह प्रवचन दे रहे हैं: "हम में से प्रत्येक एक सर्वशक्तिमान महिमावान की राजसी संप्रभुता का एक उज्ज्वल प्रमाण है।

हम सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के, तथा उसकी एकता और शक्ति के भी प्रकाश फैलाने वाले साक्षी हैं।

हम उसके सूक्ष्म चमत्कार हैं जो आकाश को स्वर्णिम रूप प्रदान करते हैं, जिस पर
स्वर्गदूत भ्रमण करते हैं।

हम स्वर्ग की असंख्य विवेकशील आंखें हैं
स्वर्ग की ओर निर्देशित, और पृथ्वी की देखरेख।77

हम परमेश्वर की स्वर्गीय शाखा से जुड़े उत्तम फल हैं
सृष्टि के वृक्ष को; और आकाशगंगा की टहनियों को,
सर्वशक्तिमान दयालु परमेश्वर के ज्ञान के हाथ से जुड़ा हुआ।

हम आसमान वालों के लिए चलती-फिरती मस्जिदें हैं,
घूमते हुए घर और ऊंचे घर,
प्रकाश फैलाने वाले लैंप, शक्तिशाली जहाज़ और विमान।

हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति के चमत्कार हैं
पूर्णता, सर्वज्ञ, महिमावान।
हममें से प्रत्येक उसकी रचनात्मक कला का एक आश्चर्य है, उसकी दुर्लभता है
बुद्धि, उसकी सृष्टि का एक चमत्कार, प्रकाश का एक संसार।

जो लोग वास्तव में मानव हैं, उनके लिए हम अनगिनत उपहार प्रस्तुत करते हैं
अनगिनत भाषाओं में प्रमाण;
भौतिकवादियों की आंखें, चाहे वे अंधी ही क्यों न हों, कभी हमारा चेहरा नहीं देखतीं,
और न वे हमारी बातें सुनते हैं; हम तो सत्य बोलने वाले चिन्ह हैं।

हम पर भी वही मुहर और मोहर है। हम अपने प्रभु की आज्ञा मानते हैं और उनकी महिमा करते हैं,
और उपासना में उसका उल्लेख करो।
हम आकाशगंगा के सबसे विस्तृत घेरे में आनंदित प्रेमी हैं, वह घेरा जो हमारे प्रभु के नामों का
जाप कर रहा है।

---

[77] ऐसा लगता है जैसे तारे, जिन्हें आकाशीय पिंडों की आंखें माना जा सकता है, हमें देख रहे हों। पृथ्वी पर सृष्टि के जटिल कार्यों को देखना और फिर स्वर्ग की ओर मुड़कर उसका अवलोकन करना उन कार्यों के स्थायी रूप, जैसे स्वर्गदूत ईश्वरीय शक्ति के चमत्कारों को देखते हैं पृथ्वी पर प्रदर्शित, स्वर्ग के फूलों के बीज से बोई गई भूमि।

अठारहवाँ श.द

अठारहवाँ शब्द

शारीरिक आत्म को उसके स्थान पर रखना

भगवान जो भी बनाता है वह अच्छा है

परमेश्वर के प्रति प्रेम के लिए पैग़म्बर का अनुसरण करना ज़रूरी है

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जो लोग अपनी बनाई हुई चीज़ों पर खुश होते हैं, उन्हें खुश मत समझो
और जो उन्होंने हासिल नहीं किया उसके लिए प्रशंसा पाना पसंद करते हैं—नहीं
उन्हें यातना से सुरक्षित समझो, बल्कि उनके लिए दुखद यातना है (3:188)

तीन अंक

पहला बिंदु: मेरी दुष्टतापूर्ण आज्ञा के लिए एक दंडात्मक थप्पड़

हे मूर्ख आत्मा, जो आत्म-अभिमान से प्रसन्न है,
प्रसिद्धि, प्रशंसा के शौकीन, और अहंकार में अद्वितीय। यदि यह एक उचित दावा है
कि एक छोटा सा बीज अंजीर के पेड़ पर सभी फलों का कारक है, या यह है
बेल की एक सूखी शाखा जिस पर अंगूर के गुच्छे लगते हैं, और जो
जो लोग इनसे लाभ उठाते हैं, उन्हें शाखा और इसकी प्रशंसा करनी चाहिए।
बीज, आपको उपहारों के बारे में गर्व और अभिमानी होने का अधिकार हो सकता है
लेकिन वास्तव में, आप केवल लगातार डांट खाने के ही पात्र हैं
क्योंकि तुम बीज और शाखा के समान नहीं हो। चूँकि तुम्हारे पास स्वतंत्र
आप अपने अभिमान के माध्यम से इन उपहारों का मूल्य कम कर देंगे, उन्हें नुकसान पहुंचाएंगे
अपने दंभ को अपनी कृतघ्नता से नष्ट कर दो, और उन्हें हड़प लो
उन्हें अपने लिए उपयुक्त बनाना। आपका कर्तव्य ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करना है, इसके बजाय
अपने आप पर गर्व करने का। आपके लिए जो उपयुक्त है वह प्रसिद्धि नहीं है, बल्कि विनम्रता और
(अपनी कमियों के लिए) शर्म महसूस करना। तुम्हारा अधिकार प्रशंसा नहीं, बल्कि पश्चाताप है-

क्षमा मांगो, और तुम्हारी पूर्णता आत्म-केंद्रित होने में नहीं, बल्कि हर अच्छे काम का श्रेय परमेश्वर को देने में है।

हे मेरी आत्मा, तुम मेरे शरीर में संसार की प्रकृति के सदृश हो। तुम दोनों
अच्छाई को ग्रहण करने और बुराई को संदर्भित करने वाली चीज़ बनने के लिए बनाए गए थे।
एजेंट और मूल नहीं हैं, बल्कि प्राप्तकर्ता और साधन हैं,
जमीन या दृश्य। आप तभी प्रभावी होते हैं जब आप परम अच्छाई से आने वाली अच्छाई को स्वीकार करने से
इनकार करके बुराई करते हैं। आप और प्राकृतिक
कारणों को पर्दे के रूप में बनाया गया था, ताकि स्पष्ट रूप से बदसूरत चीजें,
जो दिखाई नहीं देता, उसे आपके ऊपर आरोपित किया जाना चाहिए, और ताकि आपको
सर्व-पवित्र दिव्य सार को मुक्त रूप में स्वीकार किए जाने का साधन
लेकिन आपने अपने कर्तव्य के बिल्कुल विपरीत रवैया अपनाया है
सृष्टि। यद्यपि आप अच्छाई को बुराई में बदलने में असमर्थ हैं, फिर भी आप
ऐसे व्यवहार करो मानो तुम अपने रचयिता के भागीदार हो। इसका मतलब है कि जो लोग ऐसा करते हैं
जो लोग स्वयं को और प्रकृति को बहुत अधिक पूजते हैं, वे अत्यंत मूर्ख और गंभीर अपराधी हैं।

ऐसा मत कहो: "मैं अभिव्यक्ति की वस्तु हूँ। जो ग्रहण करता है और
सुंदरता प्रकट होती है तो सुंदर बन जाती है।" क्योंकि उस सुंदरता ने आप में कोई स्थायी रूप धारण नहीं किया है,
और इसलिए आप इसे केवल थोड़े समय के लिए ही प्रतिबिंबित कर सकते हैं।
कहो: "लोगों के बीच, मुझे चुना गया। ये सभी परिणाम, मेरे द्वारा किए गए सभी कार्य
जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, वह मेरे द्वारा दिखाया गया है। इसका मतलब है कि मुझमें कुछ गुण है। नहीं!
बल्कि, वे आपको पहले दिए गए क्योंकि आप अधिक दिवालिया हैं और
मैं उनकी ज़रूरतमंद हूँ, और किसी और की तुलना में अधिक कमियों से ग्रस्त हूँ।

दूसरा बिंदु: यह बिंदु इसका एक अर्थ समझाता है: (वह) जो बनाता है
उसने जो कुछ रचा है, वह उत्तम है (32:7)। यहाँ तक कि जो चीज़ें देखने में उत्तम लगती हैं, वे भी उत्तम हैं।
सबसे बदसूरत भी शामिल है, हर चीज में सच्ची सुंदरता का एक पहलू होता है, और वह या तो सुंदर होती है
अपने आप में (अपने आप में सुंदर) या अपने परिणामों के कारण सुंदर (सुंदर
कुछ घटनाएँ स्पष्ट रूप से बदसूरत और भ्रमित करने वाली होती हैं लेकिन,
उस स्पष्ट आवरण के नीचे, सौंदर्य और व्यवस्था के सबसे उज्ज्वल उदाहरण हैं।

उदाहरण के लिए, वसंत की तूफानी बारिश और कीचड़ भरी मिट्टी के पर्दे के नीचे
असंख्य सुंदर फूलों और सुव्यवस्थित पौधों की मुस्कुराहटें हैं।
शरद ऋतु के कठोर विनाश और शोकाकुल वियोग के आवरण, कोमल छोटे जानवर (नाजुक, शर्मीले फूलों के मित्र)
हैं, जिन्हें उनके शरीर से मुक्त किया जा रहा है।
अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सर्दियों के प्रहारों और पीड़ाओं से सुरक्षित रहते हैं, जो ईश्वरीय महिमा के
उदाहरण हैं। सर्दियों के पर्दे के नीचे, एक नए और सुंदर वसंत के लिए रास्ता तैयार किया जाता है। तूफानों, भूकंपों,
महामारियों और इसी तरह की घटनाओं के पर्दे के नीचे कई छिपे हुए "अमूर्त फूल" हैं

जो उभर कर सामने आते हैं। कई संभावनाओं के बीज जो अभी तक विकसित नहीं हुए हैं
ऐसी भयावह घटनाओं के कारण ही पौधे उगते और फलते-फूलते हैं। यह ऐसा है मानो उथल-पुथल,
क्रांतियाँ और सामान्य परिवर्तन "अमूर्त" वर्षा के रूप में कार्य करते हैं।

हालाँकि, सतही और आत्म-केंद्रित पर्यवेक्षक न्याय करने के लिए इच्छुक होते हैं
बाह्य दिखावे से हमारा तात्पर्य केवल बाह्य चीजों से है और हम केवल बाह्य चीजों पर ही विचार करते हैं।
घटनाएँ भयावह होती हैं, इसलिए हम जो परिणाम चाहते हैं उसके अनुसार तर्क करते हैं और उन पर विचार करते हैं
बुराई। लेकिन वास्तव में, अगर चीजों और घटनाओं में से एक उद्देश्य हमसे संबंधित है, तो कई
अन्य सीधे उनके निर्माता के नाम से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, हम
कांटेदार पौधों और पेड़ों को हानिकारक और निरर्थक मानते हैं, भले ही ये
सृष्टिकर्ता की शक्ति के महान चमत्कारों के "सुसज्जित, वीर रक्षक" हैं
पौधे और पेड़। भगवान द्वारा बाजों को गौरैया को परेशान करने के लिए प्रेरित करना स्पष्ट रूप से दया के साथ असंगत है। लेकिन ऐसी चीजें गौरैया को उनकी क्षमताएं विकसित करने का कारण बनती हैं। हम बर्फ को ठंडा और अप्रिय मान सकते हैं, लेकिन उन लोगों के तहत
परदे इतने गर्म उद्देश्य और मधुर परिणाम हैं कि वे अवर्णनीय हैं।

चूंकि हमारे निर्णय बाहरी दिखावे और हमारे अपने हित पर आधारित होते हैं, इसलिए हम मान लेते हैं कि कई चीजें जो पूरी तरह से विनम्र और संगत हैं, वे हमारे लिए उपयुक्त नहीं हैं।
अच्छे आचरण वाले लोग अच्छे शिष्टाचार के विपरीत हैं। उदाहरण के लिए,
हमारे विचार में, हमारे निजी अंगों की चर्चा शर्मनाक है। लेकिन यह पर्दा
शर्म सिर्फ़ हमसे ही जुड़ी है। जबकि सृजन, कला,
और उनके लक्ष्य और प्रयोजन, और जब ज्ञान की दृष्टि से विचार किया जाता है,
वे बिल्कुल सही हैं। कुरान के कुछ भाव, जो कि पवित्र आत्मा का स्रोत है,
अच्छे शिष्टाचार और सही आचरण को इन दृष्टिकोणों से देखा जाना चाहिए।
इसी तरह, स्पष्ट रूप से बदसूरत और बेकार प्राणियों के चेहरों के नीचे और
घटनाएँ कला के कई सुंदर और उद्देश्यपूर्ण उदाहरण हैं, साथ ही पहलू भी हैं
वे अपनी सृष्टि के सौन्दर्य से सम्बन्धित हैं। वे अपने निर्माता से जुड़े हुए हैं।
कई सुन्दर आवरण जो ज्ञान के उदाहरणों को छिपाते हैं, तथा अव्यवस्था और भ्रम के कई स्पष्ट उदाहरण, वास्तव में, पवित्र ईश्वरीय रचना के सबसे सुव्यवस्थित उदाहरण हैं।

तीसरा मुद्दा: "यदि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो, तो मेरे पीछे आओ ताकि परमेश्वर तुमसे प्रेम करे (3:31)।" चूँकि ब्रह्माण्ड में कला की एक अवलोकनीय सुन्दरता समाहित है, इसलिए यह निश्चित रूप से
मुहम्मद के संदेशवाहक होने की आवश्यकता है, क्योंकि ऐसी सुंदरता दर्शाती है कि
फ़ैशन करनेवाला सुंदर बनाना और सजाना चाहता है। इससे पता चलता है कि निर्माता ने
उनकी कला की पूर्णता के प्रति एक उदात्त प्रेम और पवित्र झुकाव
अपने प्राणियों में प्रदर्शित करता है। यह प्रेम और झुकाव मुख्य रूप से निर्देशित होना चाहिए
मानवता की ओर और उस पर केंद्रित, सबसे प्रबुद्ध और परिपूर्ण
सृष्टि के वृक्ष का सचेतन फल। वृक्ष का फल उसका सबसे व्यापक और सबसे दूर का भाग होता है। सबसे व्यापक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति
और सार्वभौमिक चेतना एक सबसे ऊंचा और प्रतिभाशाली व्यक्ति हो सकता है।
ऐसा व्यक्ति सर्व-सुन्दर निर्माता से मिलेगा और उससे सम्बोधित होगा,
और अपनी सार्वभौमिक चेतना और व्यापक दृष्टिकोण का उपयोग पूजा करने के लिए करेंगे
अपने निर्माता की प्रशंसा करें, उसकी कला की सराहना करें, और उसकी उदारता के लिए धन्यवाद दें।

यहाँ दो क्षेत्र दिखाई देते हैं। एक प्रभुत्व का सबसे भव्य क्षेत्र है और एक बहुत ही सुन्दर ढंग से बना हुआ, जड़ा हुआ कला का टैबलेट। दूसरा सबसे अधिक है पूजा-अर्चना का प्रबुद्ध और "फूलों से सुसज्जित" क्षेत्र, और चिंतन, प्रशंसा, आभार और विश्वास की सबसे व्यापक और व्यापक पट्टिका। यह दूसरा क्षेत्र नाम में अपनी पूरी ताकत के साथ कार्य करता है पहले क्षेत्र का। देखिए कि दूसरे क्षेत्र का नेता-पैगंबर कितनी बारीकी से मुहम्मद - निर्माता के साथ जुड़ा हुआ है, वह कैसे उद्देश्यों की पूर्ति करता है निर्माता की कलात्मकता, और उसकी नज़रों में वह कितना प्रिय और आदरणीय है।

क्या इन सुंदर प्राणियों का उदार निर्माता, जो अपने प्रेम से इन्हें प्रेम करता है, कला और यहां तक कि उनके मुंह के सभी स्वाद पर विचार करता है, उदासीन रहते हैं उसका सबसे सुंदर प्राणी? यह सबसे सुंदर प्राणी, जो अपने प्रशंसा और आदर के साथ की गई पूजा ईश्वरीय कृपा का कारण बनती है सिंहासन और पृथ्वी को गुंजायमान करने के लिए, तथा धन्यवाद और उल्लास के एक मंत्र में भूमि और समुद्र को परमानंद में लाने के लिए, निरंतर उसकी ओर मुड़ा हुआ है। क्या वह उससे बात नहीं करेगा और उसे अपना रसूल नहीं बनाएगा, क्या दूसरों ने भी उसके प्रशंसनीय आचरण का अनुकरण किया है? यह असंभव है कि वह उससे बात न की और न उसे अपना रसूल बनाया।

> निस्संदेह, ईश्वर के निकट धर्म इस्लाम है। (3:19)
>
> मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं। जो लोग उनके साथ हैं...
> (48:29)

घर से दूर भोर में रोती हुई आत्मा के आंसू

भोर होते ही दिव्य प्रकटीकरण की हवा बहती है; हे मेरी आँखों, भोर
होते ही जाग जाओ।
ईश्वर के दरबार से सहायता मांगो।
भोर वह समय है जब पापी क्षमा मांगते हैं।
हे मेरे हृदय, भोर होते ही जाग जा, पश्चाताप
कर और ईश्वर के दरबार से क्षमा मांग।

भोर एक तरह का पुनरुत्थान है। हर प्राणी जाग रहा है और परमेश्वर की महिमा कर रहा है। हे मेरे मूर्ख आत्मा, तू असावधानी की नींद से कब जागेगा? आप अपने जीवन के अंतिम चरण में हैं और कब्र की ओर बढ़ रहे हैं। निर्धारित प्रार्थना का पालन करें और एक करुण बांसुरी की तरह उससे प्रार्थना करें, कह रहा है: "हे प्रभु। मैं पश्चाताप करता हूँ और अपने असंख्य पापों पर शर्मिंदा हूँ। मैं दुखी और अपमानित, जीवन से अश्रुपूर्ण और बेचैन। मैं निर्वासित और अकेला हूँ, मैं कमज़ोर और नपुंसक हूँ, बूढ़ा और बीमार हूँ, और मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। मैं आपसे विनती करता हूँ हे परमेश्वर, दया और क्षमा, और तेरे दरबार से सहायता की दुहाई।”

उन्नीसवाँ शब्द

उन्नीसवाँ शब्द

मुहम्मद का संदेशवाहक होना और उनका अद्वितीय चरित्र

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

मैंने अपने शब्दों से मुहम्मद की प्रशंसा नहीं की है;
बल्कि, मेरे शब्द उसके कारण प्रशंसा के योग्य हैं।

इस शब्द में 14 बूंदें हैं। यह पैगंबर की विशेषताएं हैं
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) जिन्होंने इस शब्द को बनाया है
सुंदर।

चौदह बूंदें

पहली बूंद: तीन महान और सार्वभौमिक चीजें हमें बनाती हैं

हमारे लिए ज्ञात प्रभु: ब्रह्मांड की पुस्तक (अन्यत्र व्याख्या की गई है); पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो,

नबियों की मुहर, जो किताब में सर्वोच्च चिन्ह है

ब्रह्मांड का; और शानदार कुरान। अब हमें पैगम्बरों की मुहर को पहचानना और सुनना चाहिए, जो दूसरा और स्पष्ट प्रमाण है और

ईश्वर के सभी नामों और गुणों, उसके अस्तित्व और स्वरूप का उद्घोषक

एकता.

उस प्रमाण के सार्वभौमिक व्यक्तित्व को देखिए: पृथ्वी का चेहरा उसका है
मस्जिद, मक्का उनका मिहराब (वह स्थान जहां वे अपने समुदाय का नेतृत्व करते हैं)
प्रार्थना), और मदीना उनका उपदेशक है। हमारे पैगंबर, यह शानदार सबूत, सभी को मार्गदर्शन करता है
वह सभी लोगों को विश्वास दिलाता है और उन्हें उपदेश देता है। वह पैगम्बरों का प्रमुख, सभी का स्वामी है

संत, और ईश्वर की याद में एक ऐसे समूह का नेता जिसमें सभी शामिल हैं
पैगम्बर और संत। सभी पैगम्बरों को अपनी जड़ और संतों को अपने सदा ताजे फलों के रूप में रखते हुए, वह एक उज्ज्वल वृक्ष है। सभी पैगम्बर अपने चमत्कारों के सहारे और सभी संत अपने चमत्कारों के सहारे इसकी पुष्टि और पुष्टि करते हैं।
उसके दावे। क्योंकि वह घोषणा करता है: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है"; और वे सभी शानदार लोग ईश्वर की याद के सार्वभौमिक घेरे का निर्माण करते हैं और पंक्तिबद्ध होते हैं
अतीत और भविष्य में एक ही शब्द को एक स्वर में दोहराते हैं, मानो कह रहे हों: "तुम सच बोलो।" कौन सा भ्रम इस तर्क को झुठला सकता है जिसकी पुष्टि
इतने सारे समर्थन?

दूसरी बूंद: जिस प्रकार ईश्वरीय एकता का यह उज्ज्वल प्रमाण है
सभी नबियों और संतों की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई है, उन्हें प्रकट शास्त्रों में सैकड़ों भविष्यवाणियों द्वारा पुष्टि की गई है (उदाहरण के लिए, टोरा
और सुसमाचार), उनके पैगम्बर होने के हजारों संकेत
उनके मिशन के समक्ष प्रकट हुए, अदृश्य से आवाज़ों की प्रसिद्ध रिपोर्टें,
भविष्यवक्ताओं की सर्वसम्मत गवाही, उनके सैकड़ों चमत्कार (जैसे, विभाजन
चाँद), और उसके शरिया (कानून) की सच्चाई। इसी तरह, उसकी प्रशंसनीय
सद्गुण जो पूर्णता की चरम सीमा तक पहुँच गए थे; उनका पूर्ण विश्वास
उसका मिशन और उसकी पूर्ति के संबंध में सबसे उत्कृष्ट गुण; और उसका
ईश्वर के प्रति असाधारण भय और चेतना, तथा उनकी अतुलनीय पूजा,
शांति और दृढ़ता, ये सभी उसके विश्वास की ताकत और उसकी समग्रता को दर्शाते हैं
निश्चितता और पूर्ण दृढ़ता। ये सभी बातें दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं
उनके दावे की सच्चाई और उनके उद्देश्य में उनकी सर्वोच्च सत्यनिष्ठा।

तीसरी बूंद: आइए कल्पना करें कि हम अरब सागर में उससे मिलने जाते हैं।
प्रायद्वीप पर जब वह परमानंद युग के दौरान अपने मिशन का प्रदर्शन कर रहा था।
किसी ऐसे व्यक्ति को देखना जो अपने चरित्र की उत्कृष्टता और सुंदरता से प्रतिष्ठित हो
उसका रूप। उसके हाथ में एक चमत्कारी किताब है, और उसकी ज़बान पर एक सच्चा प्रवचन है। वह मानवता, जिन्न और फ़रिश्तों को एक शाश्वत उपदेश दे रहा है-
वास्तव में, सभी प्राणियों के लिए। वह दुनिया के रहस्य को सुलझाता है और समझाता है
सृजन; रहस्य का जटिल ताबीज खोजता है और सुलझाता है
ब्रह्मांड; और जीवन की महान समस्याओं के लिए ठोस और संतोषजनक उत्तर प्रदान करता है
और महत्वपूर्ण प्रश्न: आप कौन हैं? आपका उद्देश्य क्या है? आप कहाँ हैं?
आप कहाँ से आये हैं? आप कहाँ जा रहे हैं? आपका अंतिम गंतव्य क्या है?

चौथी बूंद: देखो! वह सत्य का ऐसा प्रकाश फैलाता है कि, यदि तुम
उसके मार्गदर्शन के प्रकाश के बिना ब्रह्मांड को देखो, आप इसे एक स्थान के रूप में देखते हैं
सामान्य शोक, और एक दूसरे के प्रति अजनबी या यहां तक कि शत्रुतापूर्ण प्राणी, और
निर्जीव प्राणियों को भयानक लाशों के रूप में, और जीवित प्राणियों को अनाथों के रूप में, जो मृत्यु और वियोग के आघातों के नीचे रो रहे हैं। अब देखिए कि कैसे

प्रकाश फैलाते हुए, सार्वभौमिक शोक का यह स्थान एक प्रार्थना स्थल में बदल गया है जहाँ भगवान के नाम और स्तुति खुशी और उल्लास में पढ़ी जाती है। विदेशी और शत्रुतापूर्ण प्राणी मित्र बन गए हैं, साथ ही भाई-बहन भी, और मूक, निर्जीव प्राणी परिचित, आज्ञाकारी अधिकारी और विनम्र सेवक बन गए हैं। रोते-बिलखते, शिकायत करते अनाथ बच्चे भगवान के नाम और स्तुति का पाठ करते या अपने कर्तव्यों से मुक्त होने के लिए धन्यवाद देते हुए देखे जाते हैं।

पाँचवी बूँद: इस प्रकाश के माध्यम से, ब्रह्मांड में सभी गतियाँ, विविधताएँ, परिवर्तन और रूपांतरण अब अर्थहीन और व्यर्थ संयोग के खिलौने नहीं माने जाते; बल्कि, वे अपने वास्तविक रूप और कार्य में प्रकट होते हैं। प्रत्येक ब्रह्मांड के स्वामी का एक संदेश है, सृष्टि के संकेतों से अंकित एक पृष्ठ है, ईश्वर के नामों को प्रतिबिंबित करने वाला एक दर्पण है। दुनिया स्वयं शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले व्यक्ति की बुद्धि की एक पुस्तक है।

इस प्रकाश के बिना, मानवता की असीम कमजोरी और लाचारी, गरीबी और अभाव सभी को जानवरों से भी नीचे गिरा देते हैं। उनकी बुद्धि, दुख, पीड़ा और चिंता व्यक्त करके उन्हें और भी दुखी बनाती है। लेकिन जब वे इस प्रकाश से प्रकाशित होते हैं, तो वे सभी जानवरों और प्राणियों से ऊपर उठ जाते हैं। एक बार जब उनकी बुद्धि प्रकाशित हो जाती है, तो उनकी गरीबी और लाचारी ईश्वर पर निर्भरता के माध्यम से अनंत धन और शक्ति का साधन बन जाती है। विनती के माध्यम से, वे प्रिय "राजा और रानी" बन जाते हैं और शिकायतों और याचिकाओं के माध्यम से, ईश्वर के पसंदीदा सेवक बन जाते हैं जिन्हें पृथ्वी को बेहतर बनाने और उसके नाम पर शासन करने का सम्मानजनक कर्तव्य सौंपा जाता है। यदि यह प्रकाश मौजूद नहीं होता, तो ब्रह्मांड, मानवता और सभी चीजें शून्य हो जातीं। वास्तव में, यदि ऐसा व्यक्ति ऐसे अद्भुत ब्रह्मांड में मौजूद नहीं होता, तो ब्रह्मांड का अस्तित्व आवश्यक नहीं होता।

छठी बूंद: वह महान व्यक्ति अनंत सुख की घोषणा करता है और संदेश लाता है, भगवान की असीम दया को प्रकट करता है और उसका प्रचार करता है, भगवान की संप्रभुता के राज्य की सुंदरता को देखता है और उसका पूर्वाभास करता है, और दिव्य नामों के खजाने को प्रकट करता है और दिखाता है। यदि आप उसे ईश्वर के समर्पित उपासक के रूप में देखते हैं, तो आप उसे प्रेम का आदर्श, दया का अवतार, मानवता का गौरव और सृष्टि के वृक्ष का सबसे शानदार फल पाएंगे।

अगर आप उन्हें एक रसूल के तौर पर देखें तो आप पाएंगे कि वे ईश्वर के प्रमाण, सत्य के दीपक, मार्गदर्शन के सूर्य और सुख के साधन हैं। देखिए कि कैसे उनकी रोशनी पूर्व से पश्चिम तक चमकती हुई बिजली की तरह चमक रही है और आधी दुनिया और मानवता के पांचवें हिस्से ने उनके मार्गदर्शन के उपहार को स्वीकार किया है और इसे अपने जीवन की तरह सुरक्षित रखा है। तो फिर हमारी दुष्ट आत्माएं और शैतान, उनके मिशन के सार को, उसकी सभी डिग्री के साथ, क्यों नहीं स्वीकार करते: ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है?

सातवीं बूंद: विचार करें कि कैसे उसने अपने लोगों की दुष्टता और बर्बर रीति-रिवाजों और अनैतिक गुणों के प्रति कट्टर लगाव को जल्दी से मिटा दिया, और कैसे उसने प्रायद्वीप के उन अलग-अलग, जंगली और अडिग लोगों को सभी प्रशंसनीय गुणों से सुसज्जित और सुसज्जित किया, उन्हें दुनिया के शिक्षक और स्वामी बनाया, खासकर सभ्य देशों के लिए। देखिए, यह कोई बाहरी वर्चस्व नहीं था; बल्कि, उसने मन, आत्मा, दिल और आत्माओं को जीत लिया और उन्हें अपने अधीन कर लिया। वह दिलों का प्रिय, दिमाग का शिक्षक, आत्माओं का प्रशिक्षक और आत्माओं का शासक बन गया।

आठवीं बूंद: आप जानते हैं कि एक छोटे से समुदाय में धूम्रपान जैसी छोटी सी आदत को केवल एक शक्तिशाली सरकार और बहुत प्रयास से ही हमेशा के लिए खत्म किया जा सकता है। लेकिन देखिए! इस व्यक्ति ने बहुत कम बाहरी शक्ति और प्रयास से बड़े जुनूनी समुदायों से कई तरह की आदतों को जल्दी से दूर कर दिया। उनकी जगह उसने ऐसे महान गुणों को रोप दिया और उन्हें विकसित किया जो उनके स्वभाव में ही निहित हो गए। ऐसी और भी कई चमत्कारी उपलब्धियाँ उसके नाम हैं। जो लोग इस धन्य युग की गवाही को देखने से इनकार करते हैं, उन्हें सैकड़ों दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों के साथ वर्तमान "सभ्य" अरब प्रायद्वीप में जाना चाहिए और सौ साल तक प्रयास करना चाहिए। क्या वे उस अवधि में उसका सौवां हिस्सा भी हासिल कर पाएंगे जो उसने एक साल में हासिल किया?

नौवीं बूंद: एक छोटे समूह में एक महत्वहीन व्यक्ति, एक महत्वहीन विवादित मामले में एक छोटा लेकिन शर्मनाक झूठ नहीं बोल सकता है, क्योंकि वह अपने दुश्मनों को इस बारे में अनभिज्ञ रखने के लिए पर्याप्त चिंता और बेचैनी प्रदर्शित नहीं कर सकता है।
अब इस व्यक्ति पर विचार करें। एक सर्वोच्च मिशन और एक महान कार्य के तहत, वह पूरी मानवता और इतिहास को संबोधित कर रहा था। हर तरफ से धमकी मिलने के कारण, उसे सुरक्षा की सख्त जरूरत थी। फिर, क्या वह जो निर्भयता से, बड़ी सहजता और स्वतंत्रता के साथ, बिना किसी हिचकिचाहट या चिंता के, शुद्ध ईमानदारी, बड़ी गंभीरता के साथ और अपने दुश्मनों को परेशान करने वाले तीव्र, ऊंचे तरीके से बोलता है, उसमें कोई विरोधाभास पाया जा सकता है? क्या यहाँ कोई धोखा हो सकता है? वह जो बोलता है वह कुछ और नहीं बल्कि उस पर प्रकट किया गया रहस्योद्घाटन है (53:4)। सत्य भ्रामक नहीं हो सकता है, और जो इसे देखता है वह धोखा नहीं खा सकता है। उसका मार्ग, जो शुद्ध सत्य है, धोखे से मुक्त है। जो सत्य को सत्य के रूप में देखता है, उसे कोई कल्पना कैसे धोखा दे सकती है?

दसवीं बूंद: देखिए वह कौन सी जिज्ञासा जगाने वाली, आकर्षक, ज़रूरी और विस्मयकारी सच्चाईयाँ दिखाता है और कौन सी बातें साबित करता है। आप जानते हैं कि लोगों को सबसे ज़्यादा जो चीज़ उत्तेजित करती है, वह है जिज्ञासा। मान लीजिए किसी ने आपसे कहा: "अगर आप अपनी आधी ज़िंदगी और संपत्ति दे दें, तो कोई मंगल या बृहस्पति से आकर आपको उनके बारे में, आपके भविष्य के बारे में और आपके साथ क्या होगा, इसके बारे में बताएगा।" अगर आपमें थोड़ी भी जिज्ञासा है, तो आप उन्हें दे देंगे। लेकिन यह व्यक्ति एक सम्राट की बात करता है।

जिसका राज्य चंद्रमा पतंगे की तरह उड़ता है, पतंगा (पृथ्वी)
दीपक के चारों ओर घूमता है, और दीपक (सूर्य) हजारों में से केवल एक है
उस सम्राट के हजारों अतिथिगृहों में से एक में दीपक जलाए।
यह भी सच में एक अद्भुत दुनिया की बात करता है और एक ऐसी क्रांति की भविष्यवाणी करता है कि
यदि पृथ्वी एक बम होती और फट जाती, तो यह कोई अजीब बात नहीं होती।

उनके द्वारा पढ़े गए सूरों को सुनिए , जो इस प्रकार शुरू होते हैं: जब सूर्य मुड़ा हुआ होता है
ऊपर (81:1), जब आकाश खुल जाता है (82:1), और अचानक, शक्तिशाली प्रहार
(101:1)। इसके अलावा, वह सच में ऐसे भविष्य की बात करता है कि इस भविष्य में
संसार, उसके सम्बन्ध में, एक तुच्छ मृगतृष्णा के समान है। वह हमें अत्यंत गम्भीरतापूर्वक ऐसे सुख की सूचना देता
है कि सभी सांसारिक सुख, आकाश में बिजली की चमक के समान हैं।
एक शाश्वत सूर्य से तुलना.

ग्यारहवीं बूंद: असाधारण चमत्कार हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं
इस अद्भुत और हैरान करने वाले ब्रह्मांड का पर्दा। इसलिए हमें एक अद्भुत और
चमत्कार करने वाला प्राणी हमें इन चमत्कारों के बारे में बताता है और समझाता है।
इस व्यक्ति के आचरण से स्पष्ट है कि उसने उन्हें देखा है और देखता है, और बताता है
वह हमें वह दिखाता है जो वह देखता है, और हमें सटीक रूप से सिखाता है कि उन स्वर्गों और पृथ्वी का एकमात्र
ईश्वर, जो हमें अपनी कृपाओं से पोषित करता है, हमसे क्या चाहता है और क्या नहीं।
उसे प्रसन्न करता है। इसलिए हमें बाकी सब कुछ एक तरफ रख कर भागना चाहिए
यह व्यक्ति जो हमें ऐसे मामलों में निर्देश देता है, अधिकांश लोगों को यही परेशानी होती है कि वे
क्या वे इतने बहरे, अंधे और पागल हैं कि वे इस सत्य को देख, सुन या समझ नहीं सकते?

बारहवीं बूंद: यह सभी प्राणियों के रचयिता की एकता का स्पष्ट प्रमाण तथा सच्चा प्रमाण होने के साथ-साथ
उनकी एकता की सच्चाई भी है,
यह व्यक्ति मृतकों के पुनरुत्थान का निर्णायक और स्पष्ट प्रमाण है और
शाश्वत खुशी। जैसे उनके मार्गदर्शन के माध्यम से वह शाश्वत का कारण है
खुशी आने और उसे पाने के साधन, इसलिए उसकी प्रार्थनाओं के माध्यम से
और प्रार्थनाएँ कि वह उसके अस्तित्व का कारण और उसके सृजन का साधन है।

देखो! वह इतने सर्वोच्च, व्यापक समय में अपनी याचिका प्रस्तुत कर रहा है
प्रार्थना (सलाह) कि ऐसा हो जैसे कि पूरा अरब प्रायद्वीप, यहाँ तक कि पूरा अरब सागर भी।
पृथ्वी, सेवा में शामिल होती है और अपनी उदात्त प्रार्थना के माध्यम से अपनी याचिकाएँ प्रस्तुत करती है। वह
इतनी विशाल सभा के बीच प्रार्थना कर रहा है कि ऐसा लग रहा है मानो सभी प्रतिष्ठित लोग
पूर्णता के प्रतीक, समय की परवाह किए बिना, उसका अनुसरण कर रहे हैं और उसे "आमीन" कह रहे हैं
प्रार्थनाएँ। वह इतनी सार्वभौमिक आवश्यकता की ओर से विनती कर रहा है कि न केवल
पृथ्वी के निवासी, बल्कि स्वर्ग और सभी प्राणी भी उसके साथ जुड़ते हैं
प्रार्थना करते हैं और घोषणा करते हैं: "हाँ, हे स्वामी, यह प्रदान करें, क्योंकि हम भी इसकी इच्छा रखते हैं।" वह इतनी ज़रूरत
और इतनी मार्मिकता से, इतने प्रेम, लालसा और विनती भरे अंदाज़ में प्रार्थना करते हैं, कि वे पूरे ब्रह्मांड को आँसू में डुबो देते
हैं और उसे अपने साथ शामिल होने के लिए मजबूर कर देते हैं।
उसकी प्रार्थना.

वह ऐसे लक्ष्य और उद्देश्य के लिए भी प्रार्थना करते हैं जो मानवता को ऊपर उठाए और
संसार, यहाँ तक कि समस्त सृष्टि, निम्नतम गहराई, अपमान, मूल्यहीनता और बेकारपन से लेकर मूल्य, स्थायित्व के उच्चतम स्तर तक,
और उत्कृष्ट कर्तव्य। एक ऐसे तरीके से जो इतना ऊंचा और मदद मांगने वाला, इतना मीठा और
दया की याचना करते हुए, क्या वह अपनी प्रार्थना और निवेदन करता है कि यह ऐसा है मानो
सभी प्राणी, स्वर्ग और दिव्य सर्वोच्च सिंहासन सुनते हैं, और परमानंद की स्थिति में प्रवेश करते हुए, उद्घोष करते हैं: "आमीन, हे ईश्वर, आमीन!"

देखो! वह अपनी ज़रूरतें उस शक्तिशाली, सर्वश्रुत और सर्वउदार, उस सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और सर्वदयालु से माँगता है, कि
वह सबसे छिपे हुए जीवित प्राणी की सबसे गुप्त आवश्यकता को देखता है, सुनता है और
उसकी विनती स्वीकार करता है, और उस प्राणी पर दया करता है। वह उसकी ज़रूरतें भी पूरी करता है,
यद्यपि यह प्राणी अपनी विशेष प्रवृत्ति की जीभ के माध्यम से इसकी मांग करता है, और
वह इसे इतने बुद्धिमत्तापूर्ण, दृष्टिपूर्ण और करुणामय रूप में प्रस्तुत करता है कि इसमें कोई दोष नहीं रह जाता
संदेह है कि यह प्रावधान और व्यवस्था केवल सर्व-सुनवाई से संबंधित है
और वह सब कुछ देखने वाला, अत्यन्त उदार और दयावान है।

तेरहवीं बूँद: क्या चाहता है वह, मानवता का यह अभिमान,
यह अद्वितीय अस्तित्व और सभी प्राणियों की महिमा, जो सभी के साथ पृथ्वी पर खड़ा है
क्या वह अपने पीछे खड़े होकर और हाथ ऊपर उठाकर इतने ध्यान से प्रार्थना कर रहा है?
सुनो। वह अनंत खुशी और अनंत जीवन की तलाश में है, ताकि वह परमेश्वर से मिल सके
और स्वर्ग में प्रवेश करें। वह यह सब सभी पवित्र दिव्य नामों के माध्यम से चाहता है,
जो सभी प्राणियों के दर्पणों में अपनी सुन्दरता और क्रियाशीलता प्रदर्शित करते हैं।

यहां तक कि, दया, कृपा जैसे असंख्य कारण न होते तो भी,
बुद्धि और न्याय उस अनुरोध की पूर्ति के लिए, उनकी प्रार्थनाओं में से एक
स्वर्ग के निर्माण के लिए पर्याप्त होता, जो कि ईश्वरीय शक्ति के लिए उतना ही आसान है
वसंत का सृजन करने के रूप में। जिस तरह उनका संदेशवाहक होना इस वसंत को खोलने का कारण था
परीक्षण का स्थान है, इसलिए उसकी पूजा और ईश्वर की सेवा भी परीक्षण का कारण है
अगली दुनिया खोल रहा हूँ.

क्या ब्रह्माण्ड की उत्तम व्यवस्था, जो बुद्धिमान और चिंतनशील बनाती है
[ब्रह्मांड की पूर्णता और सुंदरता को व्यक्त करने के लिए] कहना: "ब्रह्मांड का उससे अधिक मौलिक और अद्भुत होना संभव नहीं है," साथ ही साथ
उनकी दया में निहित कला की निर्दोष सुंदरता और अतुलनीय सौंदर्य
उनके आधिपत्य की, —क्या ये इस कुरूपता, निर्दयता और अव्यवस्था को अनुमति देंगे कि इस व्यवस्था, सौंदर्य और दया के स्वामी, जो सुनते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं
सबसे कम महत्वपूर्ण, सबसे कम महत्वपूर्ण इच्छाओं और आवाज़ों को अस्वीकार कर देता है
सबसे महत्वपूर्ण और सबसे ज़रूरी इच्छाएँ? भगवान न करे! ऐसी सुंदरता और
दया ऐसी कुरूपता की अनुमति नहीं देगी और खुद को कुरूप नहीं बनने देगी।

तो, मेरे दोस्त, अभी के लिए इतना ही काफी है। अगर हम वहाँ सौ साल भी रहें, तो भी हम इस व्यक्ति के अद्भुत और उल्लेखनीय कार्यों का सौवाँ हिस्सा भी पूरी तरह से नहीं समझ पाएँगे, और उसे देखते-देखते कभी नहीं थकेंगे। तो, चलिए

हमारी वापसी के दौरान प्रत्येक शताब्दी को देखें। देखें कि प्रत्येक शताब्दी किस तरह से पूरी तरह से खिली है मार्गदर्शन के उस सूर्य से प्राप्त प्रकाश का प्रवाह। प्रत्येक ने अबू हनीफा, अश-शफीई, बयाजिद अल-बिस्तामी, अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, शाह नक्शबंद, इमाम ग़ज़ाली और इमाम जैसे हजारों शानदार फल पैदा किए हैं।

रब्बानी। अपने अवलोकनों के विवरण को स्थगित करते हुए, हमें चमत्कार करने वाले और मार्गदर्शन लाने वाले पर आशीर्वाद मांगना चाहिए, जो कुछ का उल्लेख करता है
उसके कुछ चमत्कारों के बारे में:

उस पर जो सत्य का विवेकपूर्ण कसौटी (क़ुरआन) अवतरित हुआ
परम दयालु और दयावान परमेश्वर की ओर से
सिंहासन - हमारे स्वामी मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो
अच्छे कर्मों की संख्या के अनुसार, हजारों-हजारों गुना
अपने समुदाय का.

उस पर जिसकी नबी होने की भविष्यवाणी तौरात में की गई थी,
सुसमाचार और भजन संहिता; जिनकी नबी होने की भविष्यवाणी उनकी नबी होने से पहले ही प्रकट हुए अद्भुत संकेतों से की गई थी,
जिन्न, संत और भविष्यवक्ता; और जिनके इशारे पर चाँद फट गया -
हमारे स्वामी मुहम्मद - शांति और आशीर्वाद हजारों और हजारों बार, उनकी समुदाय की सांसों की संख्या के अनुसार।

जिसके बुलाने पर वृक्ष आये; जिसकी प्रार्थना से वृक्ष आये;
बारिश तेजी से हुई; जिसे बादल ने गर्मी से बचाया; एक थाली के साथ
जिसके भोजन से सैकड़ों लोग तृप्त होते थे; जिसकी उंगलियों से
कवथर के सोते की तरह तीन बार पानी बह निकला; और
जिन्हें परमेश्वर ने बोलने के लिए बनाया है वे हैं छिपकली, चिकारा, भेड़िया, ऊँट, पहाड़,
चट्टान, खंभा और मिट्टी का ढेला; जिसने स्वर्गारोहण किया
(मिराज) और "जिसकी आँख नहीं डगमगाई" - हमारे स्वामी और मध्यस्थ
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को हजारों बार सलाम किया जाए, जितने अक्षर (कुरान के) बने हैं
दयालु की अनुमति से प्रस्तुत शब्दों में
कुरान के सभी शब्दों को सभी द्वारा पढ़े जाने पर वायु तरंगों के दर्पण
प्रकाशितवाक्य के आरंभ से लेकर समय के अंत तक के वाचक।
हे परमेश्वर, हम में से प्रत्येक के कारण हमें क्षमा कर और हम पर दया कर।
उन आशीर्वादों के लिए धन्यवाद। आमीन।

चौदहवीं बूंद: बुद्धिमान कुरान, चमत्कारों का खजाना
और अपने आप में एक सर्वोच्च चमत्कार, उसकी पैगम्बरी और ईश्वर की एकता को सिद्ध करता है
इस बात का निश्चयपूर्वक अनुमान लगाया जा सकता है कि अब किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। अब हम इसकी परिभाषा देंगे और इसकी चमत्कारिकता के एक या दो उदाहरण प्रस्तुत करेंगे जो पहले भी बताए जा चुके हैं।
आलोचना की गई.

बुद्धिमानी भरा कुरान, जो हमें हमारे मालिक से परिचित कराता है, शाश्वत है
ब्रह्मांड की महान पुस्तक का अनुवादक; खजाने का खुलासा करने वाला
धरती और आकाश के पन्नों में छिपे दिव्य नामों की;
घटनाओं के पीछे छिपी सच्चाई की कुंजी; दयालु ईश्वर का खजाना
अनुग्रह और शाश्वत संबोधन अदृश्य से पर्दे के पार से आ रहे हैं
यह दृश्यमान दुनिया; इस्लाम की आध्यात्मिक और बौद्धिक दुनिया का सूर्य, साथ ही
इसकी नींव और योजना के रूप में, और परलोक की दुनियाओं का मानचित्र;
विशिष्ट व्याख्याता, सुस्पष्ट व्याख्याकार, स्पष्ट प्रमाण, और स्पष्ट अनुवादक
दिव्य सार, गुण और आवश्यक गुण; शिक्षक, सच्चा ज्ञान, मार्गदर्शक, और मानवता की दुनिया का नेता; यह ज्ञान की एक पुस्तक है
और व्यवस्था, और प्रार्थना और आराधना की पुस्तक, और आज्ञा और बुलाहट की पुस्तक
ईश्वर के लिए प्रार्थना और ईश्वर के ज्ञान की पुस्तक। इसमें ईश्वर के लिए प्रार्थना और ईश्वर के ज्ञान की पुस्तकें हैं।
यह मानवता की समस्त आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए है, तथा यह एक पवित्र पुस्तकालय के समान है, जिसमें पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनसे सभी संतों, अत्यंत सत्यनिष्ठ लोगों, तथा सभी शुद्ध एवं विवेकशील विद्वानों ने अपने-अपने विशिष्ट मार्ग निकाले हैं।

इसके पुनरावृत्तियों में चमत्कारिकता के प्रकाश पर विचार करें, जो कि हैं
इसे एक गलती माना जाता है। चूँकि कुरान प्रार्थना और दुआ की किताब है,
आह्वान या निमंत्रण की एक पुस्तक [इसके शाश्वत सत्य को स्वीकार करने और शाश्वत लाभ प्राप्त करने के लिए]
खुशी], पुनरावृत्ति एक वांछनीय और सबसे आवश्यक और सुंदर है
वाक्पटुता का उदाहरण। ईश्वर का आह्वान करने के लिए बार-बार दोहराने की आवश्यकता होती है
दिलों को प्रभावित और प्रबुद्ध करें। दोहराव के माध्यम से, प्रार्थना प्राप्त करती है और देती है
दिलों को ताकत देती है, और उसमें समा जाती है। आदेश और आह्वान
इसकी पुष्टि और प्रवर्तन के लिए पुनः कथन की आवश्यकता है।

हर कोई जब चाहे तब पूरा कुरान नहीं पढ़ सकता; आम तौर पर वे सिर्फ़ एक सूरा (अध्याय) ही पढ़ पाते हैं। यही कारण है कि इसका सबसे ज़्यादा महत्व है
अधिकांश लंबे अध्यायों में उद्देश्यों को दोहराया गया है, जिनमें से प्रत्येक एक छोटे कुरान के रूप में काम कर सकता है। कुछ उद्देश्य और विषय जैसे ईश्वरीय
एकता, पुनरुत्थान और मूसा की कहानी दोहराई जाती है ताकि कोई भी दोषी न हो।
उनके लाभों से वंचित। साथ ही, आध्यात्मिक स्वाद और ज़रूरतें शारीरिक की तरह अलग-अलग होती हैं
हमें हर सांस में इनमें से कुछ की जरूरत होती है। जिस तरह शरीर को हवा की जरूरत होती है, उसी तरह शरीर को भी हवा की जरूरत होती है।
आत्मा को हू-हुवा (वह-ईश्वर) की जरूरत है। हमें हर घंटे कुछ और की जरूरत होती है, जैसे
बिस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम पर)। इत्यादि। इसलिए आयतों का दोहराव आवश्यकताओं की पुनरावृत्ति से उत्पन्न होता है। कुरान यह इंगित करने के लिए दोहराता है
उन जरूरतों को गहराई से महसूस करना, तथा उन्हें संतुष्ट करने की हमारी इच्छा को जगाना।

इसके अलावा, एक संस्थापक के रूप में अपनी भूमिका में, कुरान एक प्रकट धर्म का आधार है और इस्लामी दुनिया की नींव है। यह परिवर्तन करने के लिए आया था
मानव सामाजिक जीवन और विभिन्न लोगों के आवर्ती प्रश्नों और आवश्यकताओं का उत्तर देना

मानव समाज के वर्ग। एक संस्थापक पुष्टि करने के लिए पुनरावृत्ति का उपयोग करता है, और पुनरावृत्ति ज़ोर देना। एक नई स्थापना को पुष्टि और मजबूती की आवश्यकता होती है,
और इसलिए पुनरावृत्ति.

कुरान में ऐसे महत्वपूर्ण विषयों और सूक्ष्म सत्यों का वर्णन है कि
विभिन्न संदर्भों में पुनरावृत्ति उनके विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करने के लिए आवश्यक है
लोगों के मन और दिल पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, ऐसी पुनरावृत्तियाँ केवल दिखावा मात्र हैं, क्योंकि वास्तव में प्रत्येक श्लोक के अनेक अर्थ, अनेक लाभ और
कई पहलू और स्तर। प्रत्येक स्थान पर, शब्द या छंद एक अलग तरीके और संदर्भ में, एक अलग अर्थ, उद्देश्य और लाभ के लिए होते हैं।

इसके अलावा, कुरान में कुछ ब्रह्माण्ड संबंधी मामलों का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है,
इस पद्धति की आलोचना नहीं की जा सकती, क्योंकि यह इसका दूसरा उदाहरण है।
मानवता के मार्गदर्शक के रूप में इसकी भूमिका चमत्कारिक है।

प्रश्न: कुरान प्राणियों के बारे में इसी प्रकार क्यों नहीं कहता?
विज्ञान और भौतिकवादी या प्रकृतिवादी दर्शन के रूप में? इसमें कुछ का उल्लेख है
कुछ मामलों को संक्षेप में प्रस्तुत करें, तथा अन्य को स्पष्टतः सरल और सतही तरीके से प्रस्तुत करें
हर कोई उन्हें आसानी से समझ सकता है.

उत्तर: वैज्ञानिकता और भौतिकवादी दर्शन अपने मूल सिद्धांत से भटक गए हैं।
सत्य का मार्ग। चूंकि कुरान कोई विज्ञान की किताब नहीं है, तो इसमें विस्तार से क्यों लिखा जाना चाहिए
ब्रह्माण्ड संबंधी मामलों पर? इसमें सृष्टि के कुछ तथ्यों का उल्लेख किया गया है
दिव्य सार, गुण और नाम ज्ञात हैं। यह अर्थ समझाता है
ब्रह्मांड की पुस्तक का उद्देश्य अपने निर्माता को ज्ञात करना है। इसलिए यह सृष्टि को अपने लिए नहीं बल्कि अपने निर्माता के ज्ञान के लिए मानता है।
विज्ञान, जो सृजन को केवल अपने हित के लिए मानता है, आमतौर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करता है।
हालाँकि, कुरान पूरी मानवता को संबोधित करता है। चूँकि यह सृजन का उपयोग करता है
मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए साक्ष्य और प्रमाण के रूप में, जिनमें से अधिकांश आम लोग हैं,
इसके प्रमाण आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए। मार्गदर्शन के लिए ज़रूरी है कि महत्वहीन चीज़ों को ही छुआ जाए और सूक्ष्म बिंदुओं को दृष्टांतों के ज़रिए समझने योग्य बनाया जाए। लोगों को गुमराह न करने के लिए, इसमें बदलाव नहीं किया जाना चाहिए
वे इसे स्पष्ट मानते हैं, जिससे ऐसी जानकारी बेकार या हानिकारक हो जाती है।

उदाहरण के लिए, कुरान में सूर्य को "चलता हुआ दीपक" कहा गया है।
सूर्य का उल्लेख केवल अपने लिए नहीं बल्कि इसलिए किया जाता है क्योंकि यह पृथ्वी का "मुख्य आधार" है।
व्यवस्था और ब्रह्माण्ड की व्यवस्था का केंद्र, और व्यवस्था और व्यवस्था दो हैं
सृष्टिकर्ता के बारे में जानने के तरीके। यह कहकर: और सूर्य अपना मार्ग तय करता है
(36:38), यह दिन और रात, ऋतुओं के परिवर्तन में ईश्वरीय शक्ति की सुव्यवस्थित व्यवस्था का सुझाव देता है, और इस प्रकार निर्माता की महिमा को दर्शाता है।
इस दौड़ की वास्तविकता जो भी हो, इससे इच्छित अर्थ को कोई हानि नहीं पहुँचती, जो कि ब्रह्माण्ड की संरचना में बुना गया प्रेक्षित क्रम है।

कुरान में भी कहा गया है: और उसने सूर्य को दीपक बनाया (71:16)। सूर्य को दीपक के रूप में चित्रित करते हुए, कुरान लोगों को याद दिलाता है कि दुनिया दीपक की तरह है। एक महल जिसकी सामग्री सजावट, प्रावधान और मानवता और अन्य जीवित प्राणियों के लिए तैयार की गई अन्य आवश्यकताएं हैं, जिसमें सूर्य एक है इसे रोशन करने के लिए दीपक। इस प्रकार, यह सृष्टिकर्ता की दया और उदारता को दर्शाता है।

अब विचार करें कि विज्ञान और भौतिकवादी दर्शन किस प्रकार व्यवहार करते हैं सूर्य: "सूर्य जलती हुई गैसों का एक विशाल पिंड है। यह ग्रहों का निर्माण करता है, जो इससे दूर फेंक दिए गए हैं, इसके चारों ओर घूमने के लिए। यह ऐसा है और ऐसा आकार और ऐसे-ऐसे गुणों वाला है..." ऐसा वर्णन कोई तथ्य नहीं देता आत्मा को ज्ञान की पूर्णता तो मिलती है, लेकिन केवल एक भयानक भय और घबराहट। यह मामले को एक अलग तरीके से भी देखता है कुरान.

इस तुलना से आप महज वैज्ञानिक और दार्शनिक सोच के मूल्य का अंदाजा लगा सकते हैं, जो बाहरी तौर पर शानदार है लेकिन अंदर से खोखला। इसलिए वैज्ञानिक के बाहरी मूल्य से प्रभावित न हों कुरान की सबसे चमत्कारी शैली का अनादर और वर्णन करना।

हे ईश्वर! हमारे लिए और उन सभी के लिए जो इसकी नकल करते हैं, कुरान को एक इलाज बना दीजिए। हमारी सारी बीमारियों में, जीवन में और उसके बाद भी हमारा और उनका साथी मौत, दुनिया में एक दोस्त, कब्र में एक अंतरंग, न्याय के दिन एक मध्यस्थ, सीरत पर एक प्रकाश , एक पर्दा और नर्क की आग से एक स्क्रीन, स्वर्ग में एक दोस्त, और एक गाइड और आपकी कृपा, उदारता, उदारता से, सभी अच्छे कार्यों का नेतृत्व करता हूँ, और दया करो, हे सबसे अधिक उदार और दयालु अत्यन्त दयालु अल्लाह का। आमीन।

हे ईश्वर! जिस पर तूने कृपा की है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर बुद्धिमान कुरान, सत्य और झूठ का मानदंड, और उसके सभी परिवार और साथी. अमीन.

बीसवाँ शब्द

बीसवाँ वचन

कुरान की चमत्कारी वाक्पटुता और आधुनिक वैज्ञानिक विकास के संदर्भ

दो स्टेशन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

पहला स्टेशन: निम्नलिखित आयतों पर विचार करें:

जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो उन्होंने
गिर पड़ा, लेकिन इबलीस नहीं गिरा (हालाँकि उसे भी वही दंड मिला)
आदेश). (2:34)

अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम एक गाय की क़ुर्बानी दो। (2:67)

फिर भी इतना सब होने के बाद भी तुम्हारे हृदय कठोर हो गए और चट्टान या पत्थर के समान हो गए।
और भी कठिन. (2:74)

एक बार शैतान ने इन आयतों के बारे में तीन बातें सुझायीं:

आप कहते हैं कि कुरान अनंत वाक्पटुता और मार्गदर्शन का चमत्कार है, जो हमेशा के लिए सभी के लिए है। तो फिर यह लगातार क्यों दोहराया जाता है, एक तरह से?
ऐतिहासिक ढंग से, कुछ महत्वहीन घटनाएँ जैसे कि हत्या
गाय और यहां तक कि सबसे लंबे सूरा का नामकरण (अल-बक़रा का अर्थ है “गाय”)
उस घटना के बाद? इसके अलावा, आदम के सामने फ़रिश्तों का सजदा करना भी एक मामला है
अदृश्य का और तर्क इसे समझ नहीं सकता। इसे स्वीकार किया जा सकता है
और इसकी पुष्टि तभी की जाती है जब कोई व्यक्ति दृढ़ विश्वास प्राप्त कर लेता है, और फिर भी
कुरान उन सभी लोगों को संबोधित करता है जिनके पास तर्क या बुद्धि है और बार-बार चेतावनी देता है: ‘क्या वे तर्क नहीं करेंगे और समझ नहीं पाएंगे?’ इसके अतिरिक्त, क्या यह सच है कि कुरान में तर्क और बुद्धि दोनों ही मौजूद हैं?
क्या चट्टानों की कुछ प्राकृतिक स्थितियों का इतना जोरदार वर्णन करके, जो केवल संयोग का परिणाम हैं, किस प्रकार के मार्गदर्शन का इरादा है?

मेरे मन में निम्नलिखित बातें विचार आईं।

पहला बिन्दु: बुद्धिमानी से लिखे गए कुरान में कई विशेष घटनाएं हैं, जिनमें से प्रत्येक जिसमें एक सार्वभौमिक सिद्धांत छिपा है और एक सामान्य कानून का सिरा प्रस्तुत है। उदाहरण के लिए: (उसने) आदम को उन सभी के नाम सिखाए (2:31) कहता है कि आदम को "नाम" एक चमत्कार के रूप में सिखाए गए थे ताकि वह अपनी श्रेष्ठता दिखा सके स्वर्गदूतों को परमेश्वर के नाम पर पृथ्वी पर शासन करने का अनुग्रह प्राप्त हुआ। हालाँकि यह यद्यपि यह एक छोटी और विशेष घटना लगती है, फिर भी यह निम्नलिखित सार्वभौमिक सिद्धांत का एक संकेत है: अपनी व्यापक प्रकृति के कारण, मानवता को सिखाया गया (या बहुत सारी जानकारी, अनेक विज्ञान प्राप्त करने की क्षमता दी गई है ब्रह्मांड के सभी पहलुओं से संबंधित, और इसके बारे में विशाल ज्ञान सृष्टिकर्ता के आवश्यक गुण, विशेषताएँ और कार्य। इन सबने मनुष्य को स्वर्गदूतों, स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों से श्रेष्ठ बना दिया, क्योंकि केवल मानवता ही सर्वोच्च ट्रस्ट को सहन कर सकती है। इसने मानवता को सर्वोच्च ट्रस्ट भी बनाया। भगवान के नाम पर पृथ्वी के शासक.

इसी प्रकार, आदम के सामने स्वर्गदूतों का सजदा, शैतान के सजदे के विपरीत है। अस्वीकृति, अदृश्य में एक छोटी, विशेष घटना है। हालाँकि, यह टिप है एक सबसे व्यापक और सार्वभौमिक रूप से मनाया सिद्धांत और सुझाव है सबसे व्यापक सत्य: उनकी आज्ञाकारिता और समर्पण का उल्लेख करके और शैतान के अहंकारपूर्ण इनकार के बावजूद, कुरान दर्शाता है कि संसार में अधिकांश भौतिक प्राणी ब्रह्मांड और उनके आध्यात्मिक प्रतिनिधि हमारे अधीन हैं और हमारी ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। इसके अलावा, यह हमें चेतावनी देता है कि पूर्णता की ओर बढ़ने के हमारे मार्ग में कितने भयानक दुश्मन और बड़ी बाधाएँ हैं दुष्ट प्राणी और उनके अमूर्त प्रतिनिधि, साथ ही पृथ्वी के शैतानी निवासी जो हमारी पूर्णता की क्षमता को भ्रष्ट करते हैं और हमें बहकाते हैं गलत रास्तों पर ले जाना। इस प्रकार, किसी विशेष घटना का वर्णन करते समय एक व्यक्ति (आदम) के बारे में कुरान में चमत्कारिक व्याख्या दी गई है। समस्त सृष्टि और मानवता के साथ उच्चस्तरीय वार्तालाप।

दूसरा बिंदु: यद्यपि यह सहारा रेगिस्तान का हिस्सा है, लेकिन यहाँ के प्रचुर उपहार नील नदी के पवित्र जल ने मिस्र को उपजाऊ, कृषि योग्य भूमि बना दिया है। स्वर्ग जैसी भूमि नारकीय सहारा के निकट होने के कारण खेती और कृषि मिस्रवासियों के स्वभाव में इस प्रकार समाहित थी कि कृषि गाय और बैल पवित्र माने गए और गाय और बैल पूजा की वस्तु बन गए। पैगम्बर मूसा के समय के मिस्रवासी वास्तव में गायों और बैलों की पूजा करते थे, जैसा कि हम जानते हैं। यहूदियों ने पलायन के कई साल बाद पूजा के लिए बछड़ा बनाते हुए देखा होगा। कुरान में एक गाय के वध के वृत्तांत के माध्यम से बताया गया है कि पैगम्बर मूसा (उन पर शांति हो) ने इस बुराई को मिटा दिया। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से महत्वहीन घटना एक अविभाज्य अवधारणा की ओर इशारा करती है।

एक उन्नत चमत्कारिकता के साथ सार्वभौमिक सिद्धांत, और इसे एक के रूप में व्याख्या करता है
यह हर समय हर किसी के लिए ज्ञान का सबसे आवश्यक सबक है।

सादृश्य से, कुरान में ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में वर्णित कुछ छोटी घटनाएं सार्वभौमिक सिद्धांतों की युक्तियाँ हैं। लेमात में, शीर्षक के तहत
“पैगंबर मूसा की कहानी के दोहराव में चमत्कार की झलक
कुरान में" मैंने उदाहरण के तौर पर मूसा की कहानी के सात वाक्यों का इस्तेमाल किया।
समझाइए कि उन विशेष वाक्यों के प्रत्येक भाग में किस प्रकार महत्वपूर्ण बातें निहित हैं
सार्वभौमिक सिद्धांत.

तीसरा बिन्दु: निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें:

> परन्तु इस सब के बाद भी तुम्हारे हृदय कठोर होकर चट्टान के समान हो गये।
> या इससे भी कठिन: क्योंकि वहाँ चट्टानें हैं जिनसे नदियाँ फूटती हैं, और कुछ
> जब वे फट जाते हैं, तो उनमें से पानी निकलता है; और कुछ गिर जाते हैं
> अल्लाह के डर से डरो, अल्लाह उससे अनजान नहीं जो कुछ तुम करते हो (2:74)

इस आयत को पढ़ते हुए धोखेबाज शैतान ने पूछा: "कुछ लोग क्यों
चट्टानों की प्राकृतिक स्थिति, जो सभी को ज्ञात है, का उल्लेख इस प्रकार किया गया है मानो
क्या वे सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से थे? जवाब में, निम्नलिखित
कुरान की शिक्षा से निकला यह बिंदु: ऐसा करना उचित है
इसलिए, इसकी आवश्यकता है। क्योंकि इसमें एक गहन सत्य छिपा है, जो
कुरान की चमत्कारिक संक्षिप्तता और मार्गदर्शन एवं ज्ञान की प्रचुरता के माध्यम से इसे सरल और संक्षेपित किया गया है।

संक्षिप्तता कुरान की चमत्कारिकता का आधार है, तथा प्रचुर ज्ञान और व्याख्या की सुन्दरता इसके मार्गदर्शन के अंग हैं।
इन गुणों के लिए यह आवश्यक है कि सार्वभौमिक सत्य और गहन किन्तु सामान्य सिद्धांतों को सरल शब्दों में व्यापक जनसमूह के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।
कुरान के अधिकांश पाठक। चूँकि अधिकांश लोग गहरे विचारक नहीं हैं, इसलिए यह
यह आवश्यक है कि केवल उनके सुझाव और सरल रूप ही दिखाए जाएं। साथ ही सभी
घटनाएँ, प्रत्येक एक दिव्य क्रिया जिसका असाधारण चरित्र पर्दा पड़ा है
परिचितता, संक्षेप में इंगित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार, इस सूक्ष्म वास्तविकता के कारण, कुरान इस आयत में कहता है:

> ऐ बनी इसराइल और बनी आदम! क्या हुआ है इनको?
> तुम्हारे हृदय पहले से अधिक कठोर और निर्जीव हो गए हैं
> चट्टानें? उन बहुत कठोर, बेजान, बड़ी चट्टानों को देखिए जो विशाल रूप से बनी हैं
> भूमिगत स्तर। देखें कि वे कितने आज्ञाकारी और विनम्र हैं
> ईश्वरीय आदेश, वे उसके लिए कितने पारगम्य और खुले हैं
> प्रभु के कार्य। यह इतना स्पष्ट है कि जिस सहजता से दिव्य
> पेड़ों से होने वाले कार्यों को उसी सहजता, क्रम और पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ भूमिगत रूप से देखा जा सकता है। अच्छी तरह से व्यवस्थित जल प्रवाह में पानी बहता है-

उन कठोर, बहरे चट्टानों के माध्यम से बिना किसी प्रतिरोध के, बस
जैसे नसों में बहता खून।78 जैसे पेड़ और पौधों की शाखाएँ
हवा में आसानी से फैलती हैं, जड़ों की नाजुक नसें जमीन के नीचे तक फैलती हैं
उसी आसानी से और चट्टानों से प्रतिरोध की कमी के साथ।

कुरान इस ओर संकेत करता है और एक व्यापक सत्य सिखाता है
वह श्लोक, और इस प्रकार संकेत द्वारा कठोर हृदय वालों से कहता है:

ऐ इसराइल की सन्तान और आदम की सन्तान! तुम कमज़ोर और शक्तिहीन हो, फिर भी तुम अपने दिलों को इतना
कठोर बना सकते हो कि वे परमेश्वर के विरोध में खड़े हो सकें।
ईश्वरीय सत्ता के आदेश। जबकि कठोर चट्टानों की विशाल परतें कार्य करती हैं
अपने सूक्ष्म कार्यों को पूर्णतः अंधकार में तथा परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ करना
वे सभी के लिए पानी और जीवन के अन्य साधनों के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं
जीवित प्राणियों को इस तरह से, और उनके विभाजन और वितरण के साधन के रूप में ऐसी बुद्धिमत्ता और न्याय
के साथ, कि वे उतने ही लचीले हों
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति के हाथ में मोम या हवा भी नहीं हो सकती।
बिना किसी प्रतिरोध के, वे उसकी शक्ति की विशालता के आगे नतमस्तक हो जाते हैं, क्योंकि
लगभग एक जैसी सुव्यवस्थित घटनाएँ और बुद्धिमानीपूर्ण और अनुग्रहपूर्ण
जो दैवीय क्रियाएं हम जमीन के ऊपर देखते हैं, वे भूमिगत भी होती हैं।
इसके अलावा, ईश्वरीय ज्ञान और कृपा वहाँ प्रकट होती है
वे ऊपर की तुलना में अधिक अद्भुत और अधिक चमत्कारिक तरीके से
जमीन। सोचिए कि सबसे नरम और सबसे कठोर विशाल जमीन कितनी कोमल है
चट्टानें परमेश्वर के आदेशों और सृष्टि और प्रशासन के नियमों के प्रति कितनी संवेदनशील हैं, और वे सुखद चीजों के प्रति
कितनी अप्रतिरोध्य और लचीली हैं।
जल, नाजुक जड़ें, और रेशम जैसी नसें जो उसके अनुसार कार्य करती हैं
आदेश। एक प्रेमी की तरह, चट्टान उसके स्पर्श पर अपना दिल तोड़ देती है
उन नाजुक, सुंदर चीजों को छूता है और उनके रास्ते में नरम मिट्टी बन जाता है।

इसके अलावा, कविता में वाक्य के माध्यम से और कुछ ऐसे हैं जो गिरते हैं
ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति के लिए, कुरान एक बहुत बड़ी सच्चाई का संकेत देता है:
जब पैगम्बर मूसा (उन पर शांति हो) ने ईश्वर के दर्शन के लिए प्रार्थना की,
पहाड़ की तलहटी में खड़े होकर, पहाड़ ईश्वर के सामने टूट गया
प्रकटीकरण और उसकी चट्टानें बिखर गईं। इस तरह, दिव्य के माध्यम से
महामहिम की भयानक अभिव्यक्तियाँ जैसे भूकंप और इसी तरह की भूवैज्ञानिक घटनाएँ

---

[78] यह उचित ही है कि कुरान उन तीन महत्वपूर्ण कार्यों को स्पष्ट करे जो सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने चट्टानी परतों को सौंपे थे, जो कि शानदार, गतिशील महल की नींव हैं।
जिसे हम धरती कहते हैं। पहला काम: जैसे धरती भगवान की शक्ति से पौधों की "माँ" बनकर उन्हें बड़ा करती है, वैसे ही दैवीय शक्ति से चट्टानें धरती की "नर्स" बनकर काम करती हैं
और इसे "बढ़ाते" हैं। दूसरा कार्य: वे पृथ्वी के शरीर में पानी के व्यवस्थित परिसंचरण की सेवा करते हैं,
जैसे कि [हमारे शरीर में] रक्त का संचार होता है। तीसरा कार्य: वे "कोषाध्यक्ष" के रूप में कार्य करते हैं
झरनों और नदियों, स्रोतों और का सुव्यवस्थित संतुलन के साथ उद्भव और निरंतरता
धाराएँ। चट्टानें पृथ्वी के चेहरे पर दिव्य एकता के "सबूत" लिखती और बिखेरती हैं कि वे
अपनी पूरी ताकत से पानी के रूप में "मुँह भरकर" बहने देते हैं, जो जीवन देता है।

घटनाओं में, शिखरों से चट्टानें गिरती हैं, जो आमतौर पर विशाल मोनोलिथ की तरह होती हैं
गाढ़े तरल पदार्थ से बने होते हैं, और बिखर जाते हैं। इनमें से कुछ टूट कर बिखर जाते हैं
कुछ मिट्टी पौधों के विकास के लिए मिट्टी बन जाती है; कुछ चट्टान के रूप में रह जाती हैं और घाटियों और मैदानों में बिखर जाती हैं।

वे पृथ्वी के निवासियों के लिए कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, जैसे कि उनके घरों में। ईश्वरीय शक्ति और बुद्धि के प्रति पूर्ण समर्पण में, और कुछ छिपे हुए उद्देश्यों और लाभों के लिए, वे नियमों के अनुसार उपयोग किए जाने के लिए तैयार रहते हैं।
ईश्वरीय ज्ञान के सिद्धांत। व्यर्थ नहीं, या दुर्घटना या
संयोगवश, क्या वे भय के कारण शिखर पर अपना स्थान छोड़ देते हैं?
परमेश्वर की आराधना करो और नम्रता से निचले स्थानों को चुनो, और उन लोगों के लिए माध्यम बनो
महत्वपूर्ण लाभ। बल्कि, ऐसी घटनाएँ एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान व्यक्ति के बुद्धिमान संचालन से होती हैं, और
ऐसी प्रतीत होने वाली घटनाओं में एक बुद्धिमान क्रम होता है
सतही आँखों से अदृश्य अराजक घटनाएँ। यह इस प्रकार प्रदर्शित होता है
जिन उद्देश्यों और लाभों के लिए ये चट्टानें बनाई गई हैं, साथ ही
सजे और उभरे हुए "वस्त्रों" में उत्तम क्रम और उत्कृष्ट कलात्मकता
फलों और फूलों के आभूषणों से, जिनसे उन पहाड़ों का "शरीर" सुसज्जित है, जिनसे वे नीचे लुढ़कते हैं।

इस प्रकार, आपने ज्ञान की दृष्टि से आयत के तीन भागों का महत्व देखा है। कुरान की अभिव्यक्ति का उत्तम ढंग और चमत्कारिक ढंग देखिए।
वाक्पटुता, कैसे एक ही श्लोक के तीन भागों में वर्णित उन तीन प्रसिद्ध और देखी गई घटनाओं के माध्यम से, यह ऊपर चर्चा की गई व्यापक और महत्वपूर्ण सत्यों की युक्तियों को दर्शाता है। साथ ही, उसी में याद दिलाकर

तीन अन्य घटनाओं के तीन भाग, जिनमें से प्रत्येक एक सबक लेने का साधन है, यह एक अच्छा मार्गदर्शन प्रदान करता है और इस तरह से संयमित करता है जिसका विरोध नहीं किया जा सकता।

उदाहरण के लिए, आयत का दूसरा भाग कहता है: और कुछ ऐसे भी हैं जिनमें से,
जब वे फटे होते हैं, तो पानी की समस्या होती है। चट्टान के फटने को "पूर्ण" कहकर संदर्भित करना
उत्सुकता" जब पैगंबर मूसा ने अपने कर्मचारियों के साथ इसे मारा, और उसके बाद
बारह स्रोतों से बारह धाराओं का निकलना, इसका अर्थ है:

> ऐ इसराइल की सन्तान! बड़े-बड़े पत्थर नरम होकर टूट जाते हैं और एक दूसरे के सामने गिर जाते हैं।
> मूसा का एकमात्र चमत्कार। जबकि वे भय या खुशी से आँसू बहाते हैं,
> आप इतने अन्यायी और निर्दयी कैसे हो सकते हैं कि जिद्दी और
> मूसा के चमत्कारों को देखकर क्या आपकी आँखें नम हो जाती हैं?
> क्या तुम्हारा हृदय इतना सूखा और इतना कठोर है?

तीसरे भाग में कहा गया है: और कुछ ऐसे भी हैं जो ईश्वर के भय के कारण गिर पड़ते हैं।
पहाड़ टूटने और चट्टानों के टूटने की प्रसिद्ध घटना को याद करके
दिव्य महिमा के प्रकटीकरण पर विस्मय से लुढ़कते हुए, जो हुआ

माउंट सिनाई पर जब मूसा (उन पर शांति हो) ने ईश्वर के दर्शन के लिए प्रार्थना की थी, तो उससे निम्नलिखित शिक्षा मिलती है:

> ऐ मूसा के लोगों! तुम ईश्वर से नहीं डरते, फिर भी चट्टानों से बने पहाड़ उसके खौफ में टूटकर बिखर जाते हैं। तुम गवाह हो कि उसने तुम्हारे ऊपर सिनाई पर्वत को उठाया था ताकि तुम उसके प्रति वफ़ादारी का पवित्र वादा स्वीकार कर सको, और जब मूसा ने ईश्वरीय दर्शन के लिए प्रार्थना की तो वह पर्वत टूटकर बिखर गया।
>
> फिर भी तुम इतने साहसी कैसे हो कि परमेश्वर के भय से नहीं कांपते, और अपने हृदय को इतना कठोर और निर्दयी कैसे रखते हो?

पहले भाग में, यह कहता है: क्योंकि ऐसी चट्टानें हैं जिनसे नदियाँ फूटती हैं। नील, टिगरिस और यूफ्रेट्स जैसी नदियों को याद करके, जो पहाड़ों से निकलती हैं, यह बताता है कि चट्टानें कितनी अद्भुत और चमत्कारी रूप से सृष्टि के दिव्य आदेशों के प्रति संवेदनशील और अधीन हैं। जागृत, चौकस दिलों के लिए, इसका मतलब है:

> पहाड़ ऐसी शक्तिशाली नदियों का वास्तविक स्रोत नहीं हो सकते, क्योंकि अगर वे पूरी तरह से पानी से बने होते, तो भी वे ऐसी नदी को केवल कुछ महीनों तक ही पानी दे सकते थे। साथ ही, बारिश, जो केवल एक मीटर भूमिगत तक पहुँचती है, उस उच्च व्यय के लिए पर्याप्त आय नहीं हो सकती। कोई भी साधारण कारण, प्राकृतिक कारण या संयोग इन नदियों के स्रोतों और प्रवाह की व्याख्या नहीं कर सकता। सर्व-महान निर्माता उन्हें एक अदृश्य "खजाने" से वास्तव में अद्भुत तरीके से प्रवाहित करता है।

एक परंपरा में इसका उल्लेख है: "हर मिनट स्वर्ग से एक बूंद उन तीनों नदियों में गिरती है। इसलिए वे प्रचुर मात्रा में बहती हैं।" एक अन्य परंपरा में कहा गया है: "इन तीनों नदियों का स्रोत स्वर्ग में है।"79 अर्थात्, चूँकि भौतिक कारण उनके प्रचुर प्रवाह को उत्पन्न नहीं कर सकते, इसलिए उनके स्रोत अदृश्य दुनिया में होने चाहिए, दया का एक छिपा हुआ खजाना, ताकि आने वाले और बाहर जाने वाले पानी के बीच संतुलन बना रहे। इस अर्थ की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, कुरान निम्नलिखित निर्देश देता है:

> ऐ बनी इसराइल और बनी आदम! तुम्हारे हृदय की कठोरता और भावना की कमी के कारण तुम ऐसे महान् प्रभु के आदेशों की अवज्ञा करते हो, और तुम्हारी असावधानी के कारण तुम ऐसे सनातन सूर्य के ज्ञान के प्रकाश से अपनी आँखें बंद कर लेते हो, जो साधारण, ठोस चट्टानों के मुँह से नील जैसी विशाल नदियाँ बहाकर मिस्र को स्वर्ग में बदल देता है, और ब्रह्माण्ड के हृदय और पृथ्वी के मन में अपनी शक्ति और अपनी एकता के साक्ष्यों के चमत्कार प्रस्तुत करता है, जो उन विशाल नदियों के प्रवाह और प्रवाह के समान प्रबल और प्रचुर हैं, और उन्हें मनुष्यों के हृदय और मन में प्रवाहित करता है।

---

79 अल-बुखारी, "अशरिबा" 12; मुस्लिम, "ईमान" 264; अल-बगदादी, तारिखु'ल-बगदाद, 1:55. (ट्र.)

जिन्न और मानवता। इसके अलावा, यह सर्व-महान निर्माता को भगवान के रूप में दिखाता है।
सूरज की रोशनी सूरज को दिखाती है कि वह कुछ कठोर, बेरहम चट्टानों को बनाता है
उसकी शक्ति के चमत्कारों की वस्तुएँ ऐसे अद्भुत ढंग से।80
फिर ऐसा कैसे है कि आप उसके ज्ञान के प्रकाश के प्रति इतने अंधे हैं?
और सत्य को नहीं देखते?

देखिए कुरान ने इन सच्चाइयों को कितनी खूबसूरती से व्यक्त किया है। उस वाक्पटुता के मार्गदर्शन पर ध्यान दें। दिल की कठोरता और भावना की कमी क्या नहीं कर सकती
क्या तुम इसकी "गर्मी" से पिघल जाओगे? अगर तुम मेरे शब्दों को समझ गए हो, तो एक मार्गदर्शक देखिए
कुरान की चमत्कारिकता की झलक देखें और ईश्वर को धन्यवाद दें।

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, हमें कुरान के रहस्यों को समझने में समर्थ बना, जैसा कि आप हमें समझाते हैं।
इसे पसंद करें और इसका अनुमोदन करें, और हमें इसकी सेवा में सफलता प्रदान करें। आमीन,
हे दयालुओं में सबसे दयालु, आपकी दया से।

हे ईश्वर, उस व्यक्ति को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें जिस पर यह कृपा है।
उस पर और उसके परिवार और साथियों पर पूर्ण रूप से ज्ञानपूर्ण क़ुरआन अवतरित किया गया।

दूसरा स्टेशन: (कुरान की चमत्कारिकता की एक झलक, जो
(पैगंबरों के चमत्कारों के माध्यम से चमकता है।) दो प्रश्नों और उनके उत्तरों पर ध्यान दें।
अंत में उत्तर दीजिए।

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कोई भी वस्तु, ताजा या मुरझाई हुई, गीली या सूखी नहीं है, बल्कि यह प्रकट रूप में है
पुस्तक. (6:59)

कई साल पहले अपने इशारतुल-एजाज़ (चमत्कार के संकेत) में मैंने अरबी में इस आयत के एक अर्थ पर चर्चा की थी। अब मेरे दो मज़हब के भाई, जिनकी इच्छाएँ मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं, ने तुर्की में स्पष्टीकरण माँगा है-

---

[80] नील नदी की एक मुख्य शाखा मध्य अफ्रीका के पहाड़ों से निकलती है, टिगरिस की मुख्य शाखा इसकी शाखा तुर्की की एक गुफा से निकलती है, तथा फ़रात नदी की एक मुख्य धारा इसकी तलहटी से निकलती है दियादीन में एक पहाड़ का। यह वैज्ञानिक रूप से स्थापित है कि पहाड़ ठोस चट्टानें हैं तरल पदार्थ। पैगंबर की महिमा में से एक - वह महान है जिसने मिट्टी को फैलाया ठोस तरल - यह प्रमाणित करता है कि पृथ्वी का मूल गठन इस प्रकार है: कुछ तरल पदार्थ ईश्वरीय आदेश पर ठोस होकर चट्टान बन गई, और फिर चट्टान मिट्टी बन गई। दूसरे शब्दों में, तरल पदार्थ इतना नरम था कि उस पर बैठना संभव नहीं था, और चट्टान इतनी कठोर थी कि उससे लाभ नहीं मिल सकता था। इसलिए, सर्वशक्तिमान और दयालु भगवान ने चट्टान पर मिट्टी बिछा दी और उसे जीवित प्राणियों के लिए निवास स्थान बना दिया।

81 इशरातुल-एजाज़ सुरतु'एल-फ़ातिहा और सुरतु'एल-बकरा के शुरुआती 32 छंदों पर एक टिप्पणी है ।

उस चर्चा का उद्देश्य। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सहायता पर भरोसा करते हुए, और कुरान के ज्ञानोदय से प्रेरित होकर, मैं आगे लिख रहा हूँ।

एक व्याख्या के अनुसार, प्रकट पुस्तक कुरान है।
श्लोक में कहा गया है कि इसमें सब कुछ पाया जाता है। यह सच है। हालाँकि, हमें अवश्य ही यह समझें कि चीज़ें अलग-अलग स्तरों पर पाई जाती हैं। उन्हें बीज के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, नाभिक, सारांश, सिद्धांत या संकेत, साथ ही स्पष्ट रूप से या निहित रूप से, संकेतात्मक रूप से, अस्पष्ट रूप से या संकेतात्मक रूप से। अवसर के आधार पर, कुरान के उद्देश्यों को सबसे अच्छी तरह से व्यक्त करने और संदर्भ की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक रूप को प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए, विज्ञान और उद्योग में प्रगति के परिणामस्वरूप हवाई जहाज, बिजली, मोटर चालित परिवहन, और रेडियो और दूरसंचार आदि आए हैं। ऐसी चीजें हमारे दैनिक जीवन में प्रमुख स्थान रखती हैं।

चूँकि कुरान मानवता को [हर समय] संबोधित करता है, यह इन बातों को नज़रअंदाज़ नहीं करता विकास; बल्कि, यह या तो पैगम्बरों के चमत्कारों के माध्यम से या कुछ ऐतिहासिक घटनाओं के संबंध में उनकी ओर इशारा करता है। उदाहरण के लिए:

> ईंधन से चलने वाली आग की खाई बनाने वालों का नाश हो। जब वे उसके पास बैठे थे, और जो कुछ उन्होंने किया उसके वे स्वयं गवाह थे। विश्वासियों। उन्होंने उनके साथ किसी और कारण से बुरा व्यवहार नहीं किया, सिवाय इसके कि वे उस सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान और सर्वप्रशंसित परमेश्वर पर विश्वास किया।
> (85:4-8)82
>
> ... और हमने उनके लिए उसी के समान पैदा किया है, जिसपर वे सवार होते हैं। (36:41-42)

ऐसी आयतें रेलगाड़ियों की ओर संकेत करती हैं, जबकि अगली आयत, अपनी कई अन्य आयतों के अलावा, रेलगाड़ियों की ओर संकेत करती है।
अन्य अर्थ और संकेतार्थ, बिजली की ओर संकेत करता है:

> परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। उसका दृष्टान्त प्रकाश एक आले के समान है जिसमें एक दीपक रखा है। दीपक एक शीशे में है, और दूसरा शीशे में। कांच मानो एक धन्य जैतून के पेड़ से निकला हुआ चमकता सितारा है, न तो पूर्व का और न ही पश्चिम का, जिसका तेल लगभग चमक उठेगा (स्वयं) यद्यपि उसे किसी अग्नि ने नहीं छुआ: प्रकाश पर प्रकाश।83 ईश्वर मार्गदर्शन करता है उसकी ज्योति की ओर जिसे चाहे भेज दे। (24:35)

चूँकि कई लोगों ने दूसरे प्रकार की आयतों का विश्लेषण किया है, ऐतिहासिक घटनाओं के संबंध में आधुनिक प्रौद्योगिकी का उल्लेख करना, और क्योंकि उन्हें बहुत देखभाल और विस्तृत स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है, साथ ही साथ वे बहुत

---

82 ये आयतें रेलगाड़ियों की ओर संकेत करती हैं, जो अविश्वासियों को लोगों को लाने-ले जाने में बहुत लाभ पहुँचाती थीं। मुस्लिम दुनिया उनके नियंत्रण में है।

83 वाक्यांश: जिसका तेल लगभग अपने आप चमक उठेगा, यद्यपि उसे कोई आग छूती नहीं: प्रकाश पर प्रकाश इससे संकेत अधिक स्पष्ट हो जाता है।

बहुत सारे, मैं ट्रेनों का जिक्र करने वाली दो आयतों से ही संतुष्ट हो जाऊंगा और
बिजली। इसके बजाय, मैं कुछ आयतों पर चर्चा करूँगा जो भविष्यवक्ताओं के चमत्कारों के माध्यम से आधुनिक
वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी चमत्कारों की ओर इशारा करती हैं।

परिचय

जैसा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पैगम्बरों को मानव समुदायों के नेताओं के रूप में भेजा था
आध्यात्मिक और नैतिक प्रगति के लिए, उसने उन्हें कुछ चमत्कारों और चमत्कारों से भी संपन्न किया है और उन्हें
मानवता के स्वामी और अग्रदूत बनाया है
भौतिक प्रगति। वह लोगों को उनका पूरी तरह से पालन करने का आदेश देता है।

पैगम्बरों की आध्यात्मिक और नैतिक परिपूर्णताओं का वर्णन करके, कुरान
लोगों को उनसे लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है। अपने चमत्कारों को प्रस्तुत करके, यह
लोगों से विज्ञान के माध्यम से कुछ ऐसा ही हासिल करने का आग्रह करता है।
कहा कि आध्यात्मिक और नैतिक उपलब्धियों की तरह भौतिक उपलब्धियां भी
चमत्कारों को पहली बार मानवता को भविष्यवक्ताओं के चमत्कारों के माध्यम से उपहार के रूप में दिया गया था।
उदाहरण के लिए, पैगम्बर नूह ने सबसे पहले जहाज़ बनाए थे, और पैगम्बर जोसेफ़ ने सबसे पहले जहाज़ बनाए थे।
घड़ियाँ बनाने वाला पहला व्यक्ति था। इस प्रकार जहाज और घड़ी को सबसे पहले दिया गया
भविष्यसूचक चमत्कार। यह इस वास्तविकता का एक सार्थक संकेत है कि इतने सारे
शिल्प संघ एक पैगम्बर को अपने शिल्प का “संरक्षक” या प्रवर्तक मानते हैं।
उदाहरण के लिए, नाविक नूह को लेते हैं, घड़ीसाज़ यूसुफ को लेते हैं, और दर्जी
हे हनोक, उन पर शांति हो।

चूँकि सत्य की खोज करने वाले विद्वान और वाकपटुता का विज्ञान इस बात पर सहमत हैं कि
प्रत्येक कुरान की आयत में मार्गदर्शन और निर्देश के कई पहलू हैं, यह इस प्रकार है कि पैगंबर के चमत्कारों से संबंधित
शानदार आयतें
इन्हें महज ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं माना जाना चाहिए। बल्कि, इनमें
मार्गदर्शन के अनेक संकेत। इन चमत्कारों का वर्णन करके, कुरान
वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के अंतिम लक्ष्य को दर्शाता है, और
उनके अंतिम लक्ष्य को निर्दिष्ट करता है, जिसके लिए यह मानवता को प्रेरित करता है। जैसे अतीत
यह भविष्य के बीजों का क्षेत्र है और इसकी संभावित तस्वीर का दर्पण है, इसलिए यह भविष्य के बीजों का क्षेत्र है और इसकी संभावित तस्वीर का दर्पण है।
भविष्य, पिछले जीवन की फसल काटने का समय और वास्तविक स्थिति का दर्पण। कई उदाहरणों में से, मैं केवल कुछ
ही उदाहरण दूंगा।

आयत: और सुलैमान के अधीन हमने हवा को कर दिया: उसकी सुबह की चाल
एक महीने की यात्रा थी और शाम का एक डग भी एक महीने की यात्रा थी (34:12),
यह पैगम्बर सुलैमान (उन पर शांति हो) के प्रति वायु की अधीनता को व्यक्त करता है:
पैगंबर सुलैमान ने दो महीने की पैदल यात्रा दो कदमों में पूरी की
हवा में उड़कर। इससे पता चलता है कि मानवता प्रयास कर सकती है और उसे ऐसा करना चाहिए
हवा में यात्रा करने के लिए। सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी कह रहा है: "मेरे सेवकों में से एक
उसने अपनी कामुक इच्छाओं का पालन नहीं किया, और मैंने उसे हवा में चढ़ा दिया। यदि आप देते हैं

आलस्य को त्याग दो और प्रकृति में मेरे कुछ नियमों से उचित लाभ उठाओ, जो
ये मेरी साधना के शीर्षक हैं, तुम भी इसे धारण कर सकते हो।”

आयत: जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा: "पानी पर वार करो" अपनी लाठी से हिलाओ।" फिर उसमें से बारह सोते फूट निकले (इस प्रकार) प्रत्येक जनजाति को अपने पीने का स्थान पता था” (2:60), यह दर्शाता है कि सरल उपकरण अनलॉक कर सकते हैं मर्सी के भूमिगत खजाने। चट्टान की तरह कठोर स्थानों में, जीवन के लिए पानी हो सकता है एक छड़ी जैसी सरल डिवाइस से खींचा जा सकता है। इस अर्थ के माध्यम से, कविता हमें इन खजानों की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है। इस श्लोक के माध्यम से, सर्वशक्तिमान परमेश्वर सुझाव देते हैं: "मेरे सेवकों में से एक ने मुझ पर भरोसा किया, और इसलिए मैंने उसे एक छड़ी दी जो वह जहाँ चाहे वहाँ से जीवन के लिए पानी ला सकता है। यदि तुम मेरी दया के नियमों पर भरोसा करते हो, तो तुम आधुनिक वैज्ञानिकों ने कई उपकरणों का आविष्कार किया है भूमिगत जल को ऊपर लाना। यह श्लोक आगे के लक्ष्यों की ओर इशारा करता है, ठीक वैसे ही जैसे पिछली कविता में आज के हवाई जहाजों से कहीं आगे की उपलब्धियों का उल्लेख किया गया था।

श्लोक: मैं जन्म से अंधे को और कोढ़ी को चंगा करता हूँ और मरे हुओं को जिलाता हूँ भगवान की अनुमति से (3:49), यीशु के चमत्कार से संबंधित है, उस पर शांति हो। कुरान स्पष्ट रूप से मानव जाति को यीशु की उच्च नैतिकता का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है, इसलिए इस चमत्कार के माध्यम से यह उच्चतम स्तर का संकेत देता है और प्रोत्साहित करता है भगवान ने उसे जो उपचार दिया है, वह यह है कि सबसे पुरानी बीमारियों का भी इलाज किया जा सकता है। इसलिए, हमें इसकी खोज करनी चाहिए। यह संभव है मृत्यु को अस्थायी रूप से जीवन का रंग दे दो। इस आयत से सर्वशक्तिमान ईश्वर का मतलब है:

> मैंने अपने एक सेवक को, जिसने संसार का त्याग कर दिया था, दो उपहार दिये। मेरी खातिर: आध्यात्मिक बीमारियों के लिए उपाय, और शारीरिक के लिए इलाज बीमारियों से मुक्ति। मार्गदर्शन के प्रकाश से मृत हृदय पुनर्जीवित हो गए, और बीमार लोग जो मृत समान थे, उनके द्वारा स्वास्थ्य प्राप्त किया गया सांस और इलाज। आप प्रकृति में मेरी "ज्ञान की फार्मेसी" में सभी बीमारियों का इलाज पा सकते हैं, जहाँ मैंने प्रत्येक चीज़ से कई महत्वपूर्ण उद्देश्य जोड़े हैं। काम करो और इसे पाओ।

इस प्रकार, यह श्लोक चिकित्सा जगत में अब तक के विकास का अंतिम बिन्दु है। वर्तमान स्तर से आगे है और हमें उस ओर प्रेरित करता है।

आयतें: हमने उसके लिए लोहे को लचीला बनाया [दाऊद] (34:10); हमने उसे लोहे से बनाया [दाऊद] हमें बोलने और निर्णय करने में बुद्धि और विवेक दिया है (38:20); और हम उसके साथ ताँबे का फव्वारा फूट पड़ा [सुलैमान] (34:12), संकेत करता है लोहे को नरम करना ईश्वर की सबसे बड़ी नेमतों में से एक है, जिसके माध्यम से वह एक महान पैगम्बर के गुणों को दर्शाता है। लोहे को नरम करना, तांबे को गलाना और खनिजों को निकालना सभी भौतिक उद्योगों की उत्पत्ति, स्रोत और आधार है। आयतों में कहा गया है कि लोहे को नरम करना, उसे धागे की तरह महीन बनाना और तांबे को गलाना दो महान पैगम्बरों को दी गई महान कृपाएं हैं, जिन्होंने उनके अनुसार शासन किया। परमेश्वर की आज्ञाएँ, और अधिकांश सामान्य उद्योगों के साधन हैं।

चूँकि परमेश्वर ने दो भविष्यद्वक्ताओं को, जो आध्यात्मिक और राजनीतिक दोनों ही प्रकार के नेता थे, बुद्धिमानी भरी वाणी, शिल्प कौशल और उद्यमशीलता से संपन्न किया था, इसलिए वह लोगों से आग्रह करता है बुद्धिमानी से बात करना और उन्हें शिल्प कौशल और उद्योग की ओर प्रोत्साहित करना।

इन आयतों के आधार पर, सर्वशक्तिमान ईश्वर सुझाव देते हैं:

> ऐ आदम की संतान! मैंने एक आदमी की ज़बान और दिल को ऐसी बुद्धि दी है
> वह सेवक जिसने सभी चीजों के बीच पूर्ण स्पष्टता से न्याय करने और अंतर करने तथा सत्य को समझने के लिए
> मेरी धार्मिक आज्ञाओं का पालन किया।
> मैंने उसे ऐसी कुशलता प्रदान की है कि वह लोहे को किसी भी सांचे में ढाल सकता है
> और फिर इसे अपने शासन के लिए ताकत के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में उपयोग करें।
> यह संभव है और चूंकि लोहे का आपके सामाजिक जीवन में बहुत महत्व है,
> जिसके लिए इसकी आवश्यकता है, ऐसा ज्ञान और कौशल आपको प्रदान किया जाएगा यदि आप
> सृष्टि के मेरे आदेशों का पालन करो, प्रकृति के मेरे नियमों का पालन करो। अंततः तुम
> इसे प्राप्त करेंगे.

लोहे को नरम करके और तांबे को गलाकर, मानवता ने महान उपलब्धियां हासिल की हैं औद्योगिक प्रगति और भौतिक शक्ति। ये श्लोक हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं इस सत्य की ओर। जिस तरह उन्होंने पहले के लोगों को चेतावनी दी थी जो इसके महत्व की सराहना नहीं करते थे, उसी तरह वे आज के आलसी लोगों को चेतावनी देते हैं।

आयत: जिस व्यक्ति के पास किताब का ज्ञान था उसने कहा: "मैं लाऊंगा इससे पहले कि तुम्हारी नज़र तुम्हारी ओर लौटे (पलक झपकते ही) मैं इसे तुम्हें दे दूँगा।" जब सुलैमान ने इसे अपनी उपस्थिति में स्थापित देखा... (27:40), अद्भुत घटना का वर्णन करता है शीबा की रानी के सिंहासन को सुलैमान के दरबार में लाना। इससे पता चलता है कि चीजों को लंबी दूरी तक ले जाया जा सकता है, चाहे शारीरिक रूप से या अपने शरीर के साथ। छवियाँ। वास्तव में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पैगंबर को यह एक चमत्कार के रूप में प्रदान किया सुलैमान, शांति उस पर हो, जिसे राजा के पद के साथ-साथ सम्मानित भी किया गया था। ईश्वरीय संदेशवाहक, ताकि वह अपनी पापहीनता और न्याय को बनाए रख सके अपने व्यापक क्षेत्र में सभी क्षेत्रों की व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करके, देखें प्रजा की स्थिति को जाना और उनकी परेशानियों के बारे में सुना।

इसका मतलब यह है कि अगर हम सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं हमारी क्षमताओं की भाषा, जैसा कि सुलैमान ने अपनी पापहीनता की भाषा में किया था, और यदि हमारे कार्य ब्रह्मांड में उसके नियमों के अनुरूप हैं और जो आकर्षित करता है उसके साथ उनकी कृपा से, दुनिया हमारे लिए एक शहर की तरह बन सकती है। रानी का सिंहासन यमन में था, फिर भी इसे दमिश्क के क्षेत्र में या तो शारीरिक रूप में या फिर अंदर देखा गया छवि, उसके आस-पास के लोगों के रूप थे, जिन्हें देखा और सुना जा सकता था।

यह श्लोक रूपों के परिवहन और ध्वनियों के संचरण की ओर इशारा करता है लंबी दूरी तक। असल में, यह कहता है: "हे शासकों! यदि आप पूर्ण न्याय का एहसास करना चाहते हैं, तो अपने राज्य को उसके सभी विवरणों में देखने और जानने का प्रयास करें, जैसा कि सुलैमान ने किया था। केवल ऐसे स्तर तक उठकर ही एक न्यायप्रिय शासक, जो अपनी प्रजा का पालन-पोषण करता है, सफल हो सकता है।

जवाबदेह ठहराए जाने से बचा लिया गया। केवल इसी तरीके से वह पूर्ण न्याय को महसूस कर सकता है।" सर्वशक्तिमान ईश्वर का अर्थ है:

> हे मनुष्यों! मैंने अपने एक बन्दे को बहुत बड़ा राज्य प्रदान किया।
> वह इसमें पूर्ण न्याय का एहसास कर सके, मैंने उसे यह जानने की अनुमति दी
> जो कुछ भी वहाँ हो रहा था। चूँकि मैंने हर व्यक्ति को बनाया है
> पृथ्वी पर एक प्रतिनिधि होने की क्षमता के साथ - के अनुसार शासन करने के लिए
> मेरी आज्ञाएँ और मेरा न्याय वहाँ प्रतिनिधित्व करते हैं - मैंने भी दिया है
> उसे, मेरी बुद्धि की आवश्यकता के रूप में, स्कैन करने की क्षमता
> पृथ्वी के चेहरे को देखना और उसमें जो कुछ भी है उसे समझना। यदि हर व्यक्ति इस बिंदु तक नहीं पहुंच सकता है, तो एक प्रजाति के रूप में मानवता इसे महसूस कर सकती है। यदि वे ऐसा करते हैं
> वे इसे भौतिक रूप से प्राप्त नहीं कर सकते, वे इसे आध्यात्मिक रूप से प्राप्त कर सकते हैं, जैसे कुछ संत।
> इसलिए, आप इस महान आशीर्वाद से लाभ उठा सकते हैं। आइए, मैं आपको बताता हूँ
> देखिये आप ऐसा करते हैं। अपने पूजा के कर्तव्यों को कभी नज़रअंदाज़ किए बिना, प्रयास करें
> इस तरह से कि आप पृथ्वी के चेहरे को एक बगीचे में बदल सकें, हर
> जिसका एक हिस्सा आप देख सकते हैं, और जिसके हर कोने से आवाज़ें आती हैं
> सुनो, दया का आदेश मानो, उसने धरती को तुम्हारे अधीन कर दिया है। अतः तुम उसके मार्गों पर चलो और उसकी रोज़ी खाओ।
> उसी के लिए पुनरुत्थान है (67:15)।

इस प्रकार, ऊपर वर्णित श्लोक इस बात का अंतिम बिन्दु है कि छवियों और ध्वनियों का प्रसारण, जो नवीनतम और में से एक है विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण विकास को प्रोत्साहित करता है, और मानवता को उस सुदूरतम बिन्दु की ओर ले जाना।

आयतें: दूसरे लोग जंजीरों में बंधे हुए हैं (38:38), और: बुरे लोगों के बारे में कुछ लोग तो उनके लिए गोते लगाते थे और अन्य काम भी करते थे (21:82), कहते हैं कि पैगम्बर सुलैमान (शांति उस पर हो) ने जिन्न, शैतानों और बुरी आत्माओं को आज्ञाकारी बनाया उसने उनकी बुराई को रोका और उन्हें लाभकारी कार्य के लिए इस्तेमाल किया। शब्द: जिन्न, जो सचेत प्राणी हैं और पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण प्राणी हैं मानवता के बाद के निवासी हमारी सेवा कर सकते हैं और उनसे संपर्क किया जा सकता है। शैतान भी चाहे स्वेच्छा से या अनिच्छा से सेवा करने के लिए बनाया जा सकता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने बनाया उन्हें एक ऐसे सेवक की आज्ञा माननी चाहिए जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर का अर्थ है:

> ऐ लोगो! मैंने जिन्नों और शैतानों को बनाया, जिनमें उनके सबसे बुरे लोग भी शामिल हैं,
> उस बन्दे की आज्ञा मानो जिसने मेरी आज्ञा मानी। अगर तुम मेरी आज्ञाओं के अधीन हो जाओ तो जिन्न और
> शैतान समेत ज़्यादातर जीव वश में हो जाएँगे
> आपको।

ये छंद अलौकिक घटनाओं से निपटने वाले गुप्त या अलौकिक विज्ञान में उच्चतम बिंदु को चिह्नित करते हैं, जो कला और विज्ञान के मिश्रण के रूप में प्रकट होते हैं।
विज्ञान और हमारी असाधारण भौतिक और आध्यात्मिक संवेदनशीलता से बाहर। वे हमसे आग्रह न करें, जैसा कि आजकल होता है, कि हम जिन्न, शैतानों और के अधीन हो जाएं बुरी आत्माएँ, जो कभी-कभी खुद को मृतकों की आत्माओं के रूप में पेश करती हैं,

और उनका खिलौना और हंसी का पात्र बन जाना, बल्कि उन्हें वश में करना और क़ुरआन के माध्यम से उनसे काम लो और उनकी बुराई से बचो।

ये आयतें और ऐसी ही अन्य आयतें: फिर हमने उसकी ओर अपनी रूह भेजी और वह उसके लिए एक पूर्ण पुरुष का रूप धारण किया (19:17), संकेत देता है कि आत्मिक प्राणी हो सकते हैं दृश्य रूप धारण कर सकते हैं और हम आत्माओं और आत्माओं के साथ संपर्क कर सकते हैं मृत। लेकिन कुरान आधुनिक भूत-विद्या की ओर संकेत नहीं कर रहा है, जिसे कुछ लोग "सभ्य" लोग अभ्यास करते हैं, क्योंकि वास्तव में ये दुष्ट आत्माएं मृत व्यक्ति के वेश में रहती हैं। बल्कि, यह कुछ संतों जैसे कि कुछ संतों को ज्ञात रूप में होता है।
मुहीद-दीन इब्न-अल-अरबी, जो अच्छी आत्माओं के साथ संवाद कर सकते थे उनसे संपर्क स्थापित करेंगे और उनके साथ संबंध बनाएंगे, तथा उनके पास जाकर निवासों और उनके वातावरण के निकट आकर, उनकी आध्यात्मिकता से लाभ उठाते हैं। श्लोक इसी ओर संकेत करते हैं और गुप्त विज्ञान के अंतिम बिंदु को चिह्नित करते हैं।

आयतें: हमने पहाड़ों को अपने वश में कर लिया ताकि वे अपने रब की स्तुति गाएँ। उसे रात में और सूर्योदय के बाद (38:18); हे पहाड़ों! उसके भजनों को प्रतिध्वनित करो और तुम पक्षी प्रशंसा करो और हमने उसके लिए लोहा लचीला बनाया (34:10)
पक्षियों की भाषा (२६:१७) सिखाई गई है, जो दाऊद के चमत्कारों के बारे में है, यह बताता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने दाऊद की महिमा को ऐसे दिया
ताकत और ऐसी गूंजती और मनभावन ध्वनि कि वे लाए
पहाड़ों को परमानंद की ओर ले जाना। एक विशाल ध्वनि प्रणाली की तरह, प्रत्येक पर्वत एक विशाल ध्वनि प्रणाली का निर्माण करता है।
मुख्य वाचक—डेविड—के चारों ओर घेरा बनाकर उसकी महिमा दोहराई।
यह एक वास्तविकता है, क्योंकि गुफाओं वाला हर पहाड़ तोते की तरह "बोल" सकता है।
आप एक पहाड़ के सामने घोषणा करते हैं: "सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए हैं," पहाड़ से इसकी प्रतिध्वनि आएगी। चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने यह क्षमता प्रदान की है पहाड़ों पर, इसे विकसित किया जा सकता है।

ईश्वर ने पैगम्बर दाऊद (उन पर शांति हो) को असाधारण रूप में पैगम्बरी और खिलाफत दोनों प्रदान की। इस प्रकार उन्होंने योग्यता का यह बीज बनाया
उस व्यापक संदेशवाहक और भव्य संप्रभुता के साथ एक ऐसे चमत्कार के रूप में फला-फूला कि बड़े-बड़े पहाड़ सैनिकों, छात्रों या शिष्यों की तरह उसके पीछे चले। उसके निर्देशन में और उसकी भाषा में, उन्होंने परमेश्वर की महिमा की
सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की स्तुति की और जो कुछ उसने कहा उसे दोहराया।

वर्तमान में, संचार में प्रगति के कारण, एक महान कमांडर अपनी लड़ाई को दोहराने के लिए एक बड़ी सेना को पहाड़ों के माध्यम से फैला सकता है।
एक ही समय में "ईश्वर महान है" की घोषणा करें और पहाड़ों को बोलने और इन शब्दों से गूंजने दें। यदि कोई साधारण सेनापति ऐसा कर सकता है,
सर्वशक्तिमान ईश्वर का एक शानदार कमांडर उन्हें वास्तव में बोलने के लिए मजबूर कर सकता है और भगवान की महिमा का पाठ करें। इसके अलावा, प्रत्येक पर्वत की एक सामूहिक व्यक्तित्व और कॉर्पोरेट पहचान होती है, और वह महिमा और पूजा प्रदान करता है

अपने आप में अद्वितीय। जिस तरह से प्रत्येक व्यक्ति प्रतिध्वनि के माध्यम से मानवता की भाषा में महिमा करता है, उसी तरह यह अपनी विशेष भाषा में सर्व-महान निर्माता की भी महिमा करता है।

आयतें: हमें पक्षियों की भाषाएँ सिखाई गई हैं (27:16); और पक्षी इकट्ठे हुए (38:19), बताते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने डेविड और सुलैमान को पक्षियों की भाषाओं और क्षमताओं की भाषाओं का ज्ञान दिया (वे कैसे लाभकारी हो सकते हैं)। यह देखते हुए, और यह कि पृथ्वी हमारे सम्मान में स्थापित सर्वशक्तिमान की एक भरी हुई मेज है, इस मेज से लाभ उठाने वाले अधिकांश जानवर और पक्षी हमारी सेवा कर सकते हैं। ईश्वर अपनी विशेष प्रेरणा के मार्गदर्शन के माध्यम से मानवता को लाभ पहुँचाने के लिए मधुमक्खियों और रेशम के कीड़ों जैसे छोटे जानवरों का उपयोग करता है। हमें कबूतरों का उपयोग करने और तोते जैसे कुछ पक्षियों को बोलने में सक्षम बनाकर, उसने मानव सभ्यता की सुंदरता में इजाफा किया है।

अगर हम यह पता लगा सकें कि दूसरे पक्षियों और जानवरों का इस्तेमाल कैसे किया जाए, तो कई प्रजातियों को महत्वपूर्ण कार्यों के लिए नियोजित किया जा सकता है, जैसे कि पालतू जानवरों को किया जाता है। उदाहरण के लिए, अगर टिड्डियों को नष्ट करने वाले स्टारलिंग की भाषाएँ जानी जातीं और उनकी गतिविधियों को नियंत्रित किया जा सकता, तो उन्हें टिड्डियों के प्रकोप के खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता था। यह कितनी मूल्यवान मुफ़्त सेवा होगी! इस प्रकार, उल्लिखित आयतें पक्षियों को वश में करने और उनसे लाभ उठाने, और ऐसे बेजान प्राणियों को टेलीफ़ोन या फ़ोनोग्राफ़ (या रिकॉर्ड प्लेयर) की तरह बोलने में अंतिम बिंदु दिखाती हैं। इस क्षेत्र में सबसे दूर के लक्ष्य को निर्दिष्ट करके, आयतें मानवता को इसके लिए प्रेरित करती हैं। उन्हीं आयतों के ज़रिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर संकेत देते हैं:

> हे मानवजाति! ताकि एक पैगम्बर के रूप में उसकी पापहीनता और एक सम्राट के रूप में उसकी न्यायप्रियता को क्षति न पहुंचे, मैंने तुम्हारे एक साथी को, जो पूरी तरह से मेरे अधीन था, अपने राज्य के विशाल प्राणियों को वश में कर लिया और उन्हें बोलने लायक बना दिया। मैंने अपनी सेना और जानवरों में से अधिकांश को उसकी सेवा में लगा दिया। उसी तरह, जब मैंने तुममें से प्रत्येक को सर्वोच्च भरोसा सौंपा है, जिसे उठाने से आकाश, पृथ्वी और पहाड़ भी कतराते हैं, और तुम्हें मेरी आज्ञाओं के अनुसार पृथ्वी पर शासन करने की क्षमता प्रदान की है,84 तो तुम्हें मेरे अधीन हो जाना चाहिए।
>
> जिसके हाथ में सभी प्राणियों की लगाम है। यह उसके राज्य में प्राणियों को आपके अधीन कर देगा, ताकि आप उनका उपयोग उस परमेश्वर के नाम पर कर सकें जो उनकी लगाम थामे हुए है और अपनी क्षमता के योग्य स्थिति तक पहुँच सकें।

इसे देखते हुए, रिकार्ड प्लेयर, संगीत वाद्ययंत्र, कबूतरों के साथ खेलना, तोते से बातें करवाना आदि में अपना समय बर्बाद करने के बजाय, सबसे सुखद, उच्च और पवित्र मनोरंजन का प्रयास करें - जिससे पहाड़ भी आनंदित हो सकें।

---

84 सर्वोच्च विश्वास हमारा आत्म-स्वरूप या मानवीय पहचान है, जिसमें स्वतंत्र इच्छा, ज्ञान, बुद्धि और वाणी शामिल है। इस विषय पर विस्तार से जानने के लिए, तीसवाँ वचन देखें। (ट्र.)

आपके लिए एक विशाल ध्वनि प्रणाली के रूप में जैसा उन्होंने डेविड के लिए किया था, कि एक हवा आपको मिल सकती है
पेड़ों से आपके कानों तक ईश्वरीय स्तुति और महिमा की धुनें पहुँचें
और पौधे, ताकि पहाड़ खुद को अद्भुत प्राणियों के रूप में प्रकट कर सकें
हज़ारों भाषाओं में ईश्वरीय महिमा का पाठ करना, और अधिकांश पक्षी
सुलैमान के समान वे एक घनिष्ठ मित्र या आज्ञाकारी सेवक हो सकते हैं
वे आपका मनोरंजन कर सकते हैं और आपको पूर्णता और उपलब्धियों की ओर उत्साह के साथ प्रेरित कर सकते हैं, जिसके आप सक्षम हैं, बजाय इसके कि वे आपको परेशान करें
अपनी मानवता के लिए अपेक्षित स्थिति से गिर जाना, जैसा कि व्यर्थ मनोरंजन करते हैं।

आयत: हमने कहा: "ऐ आग! इब्राहीम के लिए ठंडक और शांति हो!" (21:69), जो अब्राहम के एक चमत्कार के बारे में है, में तीन सूक्ष्म बातें हैं संकेत:

प्रथम: प्रकृति के हर तत्व की तरह अग्नि भी एक आदेश के तहत अपना कर्तव्य निभाती है; यह अपने आप और बिना सोचे-समझे काम नहीं करती। इसने पैगम्बर मुहम्मद को नहीं जलाया।
हे अब्राहम, उस पर शांति हो, क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा न करने की आज्ञा दी थी।

दूसरा: एक प्रकार की ऊष्मा ठंडक को जला देती है। यानी, इसका एक प्रकार है जलने जैसा प्रभाव। शांति हो! वाक्यांश के माध्यम से , सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आदेश दिया ठंड: "गर्मी की तरह, उसे जलाओ मत।"85 यह एक साथ आग और ठंड है।
विज्ञान ने "श्वेत ऊष्मा" नामक एक अग्नि की खोज की है, जो अपनी ऊष्मा विकीर्ण नहीं करती है।
गर्मी। इसके बजाय, आसपास की गर्मी को आकर्षित करके, यह आसपास के वातावरण को गर्म कर देता है।
क्षेत्र इतना ठंडा हो जाता है कि तरल पदार्थ जम जाते हैं और परिणामस्वरूप वे जल जाते हैं इसकी ठंड के माध्यम से। सर्दियों में सबसे भयंकर ठंड आग की एक श्रेणी है जो अपनी ठंड से जलता है। नरक, जिसमें सभी प्रकार की आग और स्तर मौजूद हैं, यहां भी भयंकर सर्दी पड़ रही होगी।

तीसरा: जिस प्रकार विश्वास और अभौतिक तत्व होते हैं, इस्लाम जैसा कवच, जो इसके प्रभावों को दूर करेगा और सुरक्षा करेगा नरक की आग से सुरक्षा के लिए कोई भौतिक पदार्थ अवश्य होना चाहिए।
संसार में आग के प्रभाव को रोकें। जैसा कि उनके नाम सर्वज्ञ द्वारा अपेक्षित है, और चूंकि यह संसार बुद्धि का निवास है, [जहाँ सब कुछ
एक निश्चित उद्देश्य के लिए और आमतौर पर कारण और प्रभाव के अनुसार होता है], भगवान सर्वशक्तिमान कारण और प्रभाव के पर्दे के पीछे कार्य करता है। इसलिए, जैसा कि अग्नि ने किया अब्राहम का शरीर नहीं जला, न ही उसके कपड़े जले। उसके कपड़े आग का विरोध किया। इस प्रकार यह श्लोक सुझाता है:

> हे इब्राहीम के लोगों! इब्राहीम के समान बनो, ताकि तुम्हारे वस्त्र भी सुन्दर दिखें।
> इस समय में, अपने सबसे बड़े शत्रु अग्नि से तुम्हारा बचाव करो।
> दुनिया और अगली दुनिया। अपनी आत्मा को विश्वास से भर लें, और यह आपकी होगी

---

[85] कुरान के एक व्याख्याकार ने टिप्पणी की: "यदि उसने यह न कहा होता: शांति हो!, तो यह जल गया होता उसे अपनी ठंडक से।”

> जहन्नम की आग से बचने के लिए कवच। इसी तरह धरती में भी ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए जमा कर रखा है और जो तुम्हें आग की बुराई से बचाएँगी। उन्हें खोजो, निकालो और उनसे अपने आपको ढक लो।

अपनी प्रगति में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, मानवता ने अग्नि-रोधी पदार्थ की खोज की। लेकिन देखिए कि यह श्लोक कितने ऊंचे, बढ़िया और सुंदर वस्त्र की ओर इशारा करता है, जो ईश्वर में विश्वास और समर्पण की पवित्रता के करघे पर बुना जाएगा, और जो अनंत काल तक फटा नहीं रहेगा।

आयत: उसने आदम को सभी नाम सिखाए (2:31), बताती है कि सर्वोच्च उप-शासन के कारण उनके सबसे बड़े चमत्कार के रूप में, पैगंबर आदम, उन पर शांति हो, को नाम सिखाए गए थे। जबकि अन्य पैगंबरों के चमत्कार वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के दौरान एक विशेष चमत्कार की ओर इशारा करते हैं, आदम का चमत्कार, सभी पैगंबरों का पिता और पैगंबर के पद का उद्घाटन, मानव उपलब्धि और प्रगति के अंतिम बिंदुओं और अंतिम लक्ष्यों की ओर लगभग स्पष्ट रूप से संकेत करता है। इस आयत के द्वारा, सर्वशक्तिमान ईश्वर सुझाव देते हैं:

> हे आदम की सन्तानों! मैंने आदम को उसके फरिश्तों पर उसकी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए उसके सारे नाम सिखाए। 86 उसकी सन्तान और उसकी योग्यताओं के उत्तराधिकारी होने के नाते, सारे नाम सीखो और दिखाओ कि तुम सभी प्राणियों पर इस श्रेष्ठता के योग्य हो। क्योंकि तुम्हारे लिए सभी प्राणियों में सर्वोच्च पद पर पहुँचने का मार्ग खुला है, और पृथ्वी जैसे विशाल प्राणियों को तुम्हारे अधीन किया जा सकता है। आओ, आगे बढ़ो, मेरे नामों को थामो और उठो। लेकिन सावधान रहो! आदम को शैतान ने हमेशा के लिए धोखा दिया था, और वह बगीचे जैसे निवास से अस्थायी रूप से धरती पर गिर गया था। इसलिए अपनी प्रगति में शैतान का अनुसरण मत करो, जिससे वह ईश्वरीय ज्ञान के स्वर्ग से प्रकृति को रचनात्मकता का श्रेय देने, या प्रकृति के निर्माण और संचालन में कारण और प्रभाव को वास्तविक प्रभाव का श्रेय देने के गलत मार्गदर्शन में गिरने का साधन बन जाए। अपना सिर उठाओ और मेरे सुंदर नामों का अध्ययन करते हुए विज्ञान और अपनी प्रगति को ऐसे कदम बनाओ जिनसे स्वर्ग तक चढ़ा जा सके। फिर तुम मेरे प्रभु नामों की ओर उठ सकते हो, जो तुम्हारे विज्ञानों और उपलब्धियों के सार और स्रोत हैं, और उनके माध्यम से अपने हृदय से अपने प्रभु की ओर देखो।

एक महत्वपूर्ण बिंदु और महत्वपूर्ण रहस्य

शिक्षा की सभी उपलब्धियों, वैज्ञानिक प्रगति और प्रौद्योगिकी के चमत्कारों का वर्णन करते हुए, जो हमें अपनी विशाल क्षमता के कारण "नामों की शिक्षा" के शीर्षक के तहत प्रदान किए गए हैं, उपरोक्त श्लोक एक की ओर संकेत करता है

86 पैगम्बर आदम (उन पर शांति हो) को सिखाए गए नाम, मानवीय ज्ञान की कुंजी के रूप में चीजों के नाम हैं। वे दिव्य नामों से उत्पन्न होते हैं, जिनमें से प्रत्येक विज्ञान की एक शाखा का स्रोत है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा का स्रोत सर्व-चिकित्सा नाम में है, और इंजीनियरिंग का स्रोत सर्व-न्याय और सर्व-निर्धारक नाम में है। (अनुवाद)

बारीक बात: प्रत्येक उपलब्धि, पूर्णता, शिक्षा, प्रगति और विज्ञान का अपना महत्व है।
एक दिव्य नाम पर आधारित एक उन्नत वास्तविकता। एक नाम पर आधारित होने से,
जिसमें अनेक प्रकार के आवरण हों और जो विभिन्न तरीकों और स्तरों पर स्वयं को अभिव्यक्त करता हो, विज्ञान या कला की वह विशेष शाखा अपनी पूर्णता को प्राप्त कर लेती है और सर्वव्यापक बन जाती है।
अन्यथा यह अपूर्ण, अपूर्ण और अस्पष्ट बनी रहती है।

उदाहरण के लिए, इंजीनियरिंग की वास्तविकता ईश्वरीय नामों में निहित है, जो सर्व-न्यायपूर्ण हैं।
(वह जो हर चीज़ को एक निश्चित माप और उचित अनुपात देता है और हर चीज़ को उसके सही स्थान पर बनाता है) और वह सर्व-निर्धारक है। इसका अंतिम उद्देश्य है
उन नामों को खोजें और उनके बुद्धिमान और राजसी अभिव्यक्तियों का अवलोकन करें और उन पर विचार करें।
चिकित्सा एक कला और विज्ञान है। इसकी वास्तविकता और अंतिम स्थान इसमें निहित है
सर्वज्ञ का नाम सर्व-चिकित्सा है, और यह पता लगाने से अपनी पूर्णता तक पहुँचता है
उस ईश्वर की दयालु अभिव्यक्तियों की खोज करके हर बीमारी का इलाज संभव है
पृथ्वी पर उसका नाम, उसकी विशाल “फार्मेसी”।

जो विज्ञान सत्ताओं की वास्तविकता पर चर्चा करता है, वही सच्चा विज्ञान हो सकता है
केवल विनियमन, निर्देशन, प्रशासन को समझकर ही ज्ञान से भरा जा सकता है,
सभी चीज़ों में, उनके लाभों और फायदों में, और सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों को बनाए रखना, और उन पर आधारित होना
वह नाम। अन्यथा यह या तो अंधविश्वास और बकवास बन जाएगा या, जैसे
प्रकृतिवादी दर्शन, गुमराही का कारण बनता है। आप इन तीन उदाहरणों के साथ अन्य विज्ञानों और उपलब्धियों की तुलना कर सकते हैं।

इस प्रकार, इस आयत की चर्चा के साथ, बुद्धिमान कुरान इस ओर इशारा करता है
प्रगति की सबसे दूर की सीमाएँ और अंतिम डिग्री - जिनसे हम अभी भी बहुत दूर हैं
हटा दिया गया है - और हमें उनकी ओर प्रेरित करता है। यह श्लोक अर्थ में अत्यंत समृद्ध और विस्तृत है, लेकिन अभी मैं आगे नहीं जाऊंगा।

कुरान पैगम्बर मुहम्मद का सर्वोच्च चमत्कार है, ईश्वर की मुहर है।
पैगम्बरी का पद, पैगम्बरों का नेता, और सभी के लिए गर्व का कारण
प्राणियों, उस पर शांति और आशीर्वाद हो। जब उसकी वजह से तुलना की जाती है
संदेशवाहक, अन्य सभी पैगम्बरों के चमत्कार केवल एक चमत्कार की तरह हैं। उन्हें सिखाए गए सभी नामों के सभी स्तरों से पूर्ण रूप से संपन्न किया गया था,
संक्षेप में, आदम को। राजसी भाव से अपनी उंगली उठाकर, पैगंबर ने विभाजित किया
चंद्रमा; कृपा प्रकट करने के लिए अपना हाथ नीचे करके, उसने पानी बनाया
उसकी दसों अंगुलियों से प्रचुर मात्रा में प्रवाह हुआ; और उसकी पुष्टि हुई और पुष्टि हुई
सैकड़ों चमत्कारों से। कई आयतें जैसे: कहो: "यदि मनुष्य और जिन्न
यदि वे एक साथ मिलकर इस कुरान के समान कुछ बनाने के लिए एकजुट होते, तो वे कभी भी ऐसा कुछ नहीं बना पाते जैसे, यद्यपि वे एक दूसरे का समर्थन करते थे” (17:88), कुरान की ओर इशारा करते हैं—
उनका सर्वोच्च चमत्कार - व्याख्या की शुद्धता, अभिव्यक्ति की वाक्पटुता, व्यापक अर्थ और उत्कृष्ट एवं मधुर शैली, जो मिलकर उनकी रचना करते हैं-

चमत्कारिकता या अद्वितीयता के सबसे शानदार पहलुओं में से एक को ट्यूट करें
उस शाश्वत चमत्कार का। इस प्रकार, ऐसी आयतें मनुष्यों और जिन्नों को इस ओर आकर्षित करती हैं
पहलू को देखकर उन्हें उकसाता है। अपने मित्रों के उत्साह और शत्रुओं की हठधर्मिता को भड़काकर, वे उन्हें ऐसा कुछ बनाने के लिए प्रोत्साहित और उत्तेजित करते हैं जो उसके जैसा हो। वे उस चमत्कार को प्राणियों की आँखों के सामने रखते हैं, जैसे कि
यदि यह याद दिलाना कि मानवता का एकमात्र उद्देश्य इसे अपना लक्ष्य और मार्गदर्शक मानना है
जीवन में इस सिद्धांत को अपनाएं और इसका अध्ययन करें ताकि हम सचेतन और ज्ञानपूर्वक अपने सृजन के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकें।

संक्षेप में, इसलिए, जबकि अन्य पैगम्बरों के चमत्कार मानव कला या शिल्प और प्रौद्योगिकी के चमत्कार की ओर संकेत करते हैं, पैगम्बर आदम का चमत्कार उन शिल्पों के आधार का संक्षिप्त, सारांशित रूप इंगित करता है, साथ ही साथ
विज्ञानों, ज्ञान की शाखाओं, तथा चमत्कारों और सिद्धियों की अनुक्रमणिकाएँ,
और हमें उनकी ओर प्रेरित करता है। जहाँ तक चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरान का प्रश्न है,
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का सर्वोच्च चमत्कार यह है
सभी दिव्य नामों की अभिव्यक्ति का उद्देश्य उनकी पूर्णता में, विज्ञान और ज्ञान की सभी शाखाओं के सच्चे लक्ष्य को पूरी तरह से दर्शाता है, साथ ही दोनों दुनियाओं की पूर्णता, उपलब्धियों और खुशी को भी दर्शाता है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम ईश्वर के मार्ग पर चलें।
उन्हें शक्तिशाली रूप से और इस तरह से कहें कि इसका अर्थ है: "हे लोगों, उदात्त
इस ब्रह्मांड के निर्माण में आपका उद्देश्य ईश्वरीय प्रभुत्व के प्रति आपकी प्रतिक्रिया है
सार्वभौमिक पूजा के साथ अभिव्यक्ति (प्रशासित करना, निर्देशन करना, प्रशिक्षण देना और बनाए रखना)। आपका अंतिम लक्ष्य विज्ञान के माध्यम से उस पूजा को साकार करना है,
प्राप्ति और पूर्णता।"

कुरान भी इस ओर संकेत करता है: "समय के अंत में, मानवता बह जाएगी
विज्ञान और शिक्षा में लोगों को शामिल किया जाएगा। लोग विज्ञान से सारी शक्ति प्राप्त करेंगे।
सत्ता और शासन विज्ञान और ज्ञान के हाथों में चला जाएगा।" अपनी वाक्पटु और सुंदर शैली पर बार-बार जोर देते हुए, कुरान सुझाव देता है:
"समय के अंत में, वाक्पटुता और अभिव्यक्ति की सुंदरता, सबसे शानदार
विज्ञान और ज्ञान की शाखाओं की सभी क्षेत्रों में सबसे अधिक मांग होगी
विविधताएँ। जब एक-दूसरे को स्वीकार करने की बात आती है तो लोग पाएंगे कि
अपनी राय रखने और अपने शासन का प्रयोग करने के लिए, उनका सबसे प्रभावी हथियार होगा
उनकी सबसे बड़ी ताकत होगी वाकपटुता; उनकी सबसे बड़ी ताकत होगी उत्कृष्ट वक्तृता।

संक्षेप में, अधिकांश कुरान की आयतें पूर्णता और ज्ञान के खजाने की कुंजी हैं।
ज्ञान का भंडार। यदि आप कुरान के आकाश तक चढ़ना चाहते हैं और पहुंचना चाहते हैं
इसके छंदों के सितारे, इन 20 शब्दों को 20-कदम की सीढ़ी बनाओ[87] और चढ़ो
आप देखेंगे कि कुरान कितना चमकीला, चमकता हुआ सूरज है। ध्यान दें कि कैसे

---

87 बल्कि, 33 शब्द (शब्दों से मिलकर), 33 अक्षर (अक्षरों से मिलकर), 31 झलकियाँ (जिसमें द ग्लेम्स शामिल है) और 13 रेज़ (जिसमें द रेज़ शामिल है) 110-सीढ़ियाँ हैं।

यह दिव्य सत्यों और आकस्मिक (सृजित) क्षेत्र के सत्यों पर एक शुद्ध प्रकाश बिखेरता है। देखिए यह कितना शानदार प्रकाश फैलाता है।

निष्कर्ष रूप में, चूँकि पैगम्बरों से संबंधित आयतें समकालीन प्रौद्योगिकी के चमत्कारों की ओर संकेत करती हैं और उनकी अभिव्यक्ति का तरीका उनकी सबसे दूर की सीमाओं का संकेत देता है, चूँकि प्रत्येक आयत के कई अर्थ हैं, और चूँकि
पैगम्बरों की आयतों का अनुसरण करने और उनका पालन करने के स्पष्ट आदेश हैं
ऊपर वर्णित बातें, उनके शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त, मानव कलाओं और विज्ञानों के महत्व की ओर संकेत कर रही होंगी, तथा हमें उनकी ओर प्रेरित कर रही होंगी।

दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के दो महत्वपूर्ण उत्तर

प्रश्न: चूँकि कुरान मानवता के लिए भेजा गया था, तो इसमें सभ्यता के उन चमत्कारों का स्पष्ट उल्लेख क्यों नहीं है जिन्हें हम महत्वपूर्ण मानते हैं?
क्या यह संकेत, संकेत या संदर्भों से ही संतुष्ट हो जाता है?

उत्तर: कुरान ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह प्रत्येक विषय पर उसके अनुसार चर्चा करता है।
कुरान की नज़र में इसका महत्व है। इसका मूल कर्तव्य ईश्वरीय प्रभुत्व की शिक्षा देना है
पूर्णता, आवश्यक गुण और कार्य, साथ ही नौकर के कर्तव्य, स्थिति और मामले। इसे देखते हुए, मानव सभ्यता के चमत्कार केवल एक ही बात के पात्र हैं
हल्का संकेत या अंतर्निहित संदर्भ या संकेत।

उदाहरण के लिए, यदि एक हवाई जहाज88 कुरान से अपील करता है: "मुझे दे दो
बोलने का अधिकार और आपकी आयतों में जगह," आधिपत्य के क्षेत्र के विमान
(जैसे, ग्रह, पृथ्वी, चंद्रमा) कुरान की ओर से उत्तर देंगे:
"आपको अपने आकार के अनुपात में जगह मिल सकती है।" अगर कोई पनडुब्बी मांगे
एक जगह, उस क्षेत्र से संबंधित पनडुब्बियां (उदाहरण के लिए, वायुमंडल और ईथर के विशाल "महासागर" में "तैरते" स्वर्गीय पिंड) कहेंगी: "आपका
हमारे बगल की जगह इतनी छोटी है कि दिखाई नहीं देती।" अगर एक चमकती हुई, तारे जैसी बिजली की रोशनी
उस क्षेत्र की विद्युत रोशनी (जैसे, बिजली,
उल्कापिंड, और आकाश को सुशोभित करने वाले तारे) कहेंगे: "आपको अधिकार है
केवल आपके प्रकाश के अनुपात में ही उल्लेख और बात की जानी चाहिए।"

यदि मानव सभ्यता के आश्चर्यों को सम्मानपूर्वक स्थान मिले
उनकी कला की उत्कृष्टता को देखकर एक मक्खी जवाब देगी: "चुप रहो, क्योंकि मेरा एक भी
पंखों का अधिकार आपसे ज़्यादा है। अगर आपकी सारी ललित कलाएँ और नाज़ुक
यदि वाद्य यंत्रों को एक साथ जोड़ दिया जाए, तो वे उतने अद्भुत और उतने प्रभावशाली नहीं हो सकते थे।
मेरे छोटे से शरीर में केंद्रित ललित कला और नाजुक अंगों की तरह उत्तम
आयत: निश्चय ही वे लोग जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पूज्य ठहराते हो और पुकारते हो

88 इस गंभीर विषय पर चर्चा करते समय मेरी कलम अनायास ही इस हल्के-फुल्के अंदाज में चल पड़ी।
लिखना छोड़ दिया। मुझे उम्मीद है कि इससे विषय की गंभीरता कम नहीं होगी।

वे कभी भी एक मक्खी भी पैदा नहीं कर पाएंगे, यद्यपि उन्होंने ऐसा करने के लिए एक साथ समूह बनाया है और यदि कोई मक्खी उनसे कुछ छीन लेती है, तो वे उसे कभी वापस नहीं पा सकते।

निस्संदेह खोजनेवाला शक्तिहीन है और खोजा जानेवाला भी शक्तिहीन है (22:73), वह तुम्हें चुप करा देगा।

यदि वे चमत्कार सेवकाई के क्षेत्र को आकर्षित करते, तो वे निम्नलिखित जैसा उत्तर प्राप्त करें:

> तुम्हारा हमसे बहुत कम सम्बन्ध है, इसलिए तुम हमारे क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकते। क्योंकि हमारा कार्यक्रम यह है: संसार एक अतिथिगृह है।
>
> मानवता अनेक कर्तव्यों वाली अतिथि है। प्रत्येक व्यक्ति वहाँ थोड़े समय के लिए रहेगा। अनन्त जीवन के लिए स्वयं को तैयार करने के लिए नियुक्त होने के कारण, वे अनन्त जीवन से संबंधित अपने सबसे जरूरी और महत्वपूर्ण कर्तव्यों को प्राथमिकता देंगे। चूँकि आप अधिकांशतः असावधानी और सांसारिकता में रचे-बसे हुए प्रतीत होते हैं, मानो संसार अनन्त हो, इसलिए ईश्वर की सेवा और उपासना में आपका बहुत कम हिस्सा है, जो सत्य और परलोक प्रेम पर आधारित है। हालाँकि, यदि आप में से कोई सम्मानित शिल्पकार, वैज्ञानिक और प्रेरित आविष्कारक हैं, जो केवल ईश्वर के सेवकों के लाभ के लिए, सामान्य हित और सार्वजनिक सुविधा और सामाजिक जीवन की प्राप्ति की सेवा करते हैं, जो एक मूल्यवान प्रकार की उपासना है, तो कुरान के संकेत और संकेत ऐसे संवेदनशील लोगों के लिए, जो अपने सहयोगियों के बीच अल्पसंख्यक हैं, उन्हें प्रोत्साहित करने और उनकी उपलब्धियों का सम्मान करने के लिए पर्याप्त हैं-

टिप्पणियाँ.

प्रश्न: आप पूछ सकते हैं: "इन चर्चाओं के बाद, मैं समझता हूँ कि कुरान में, अन्य सभी सत्यों के साथ-साथ, आधुनिक सभ्यता के सबसे उन्नत चमत्कारों के संकेत और संकेत भी हैं। दोनों दुनियाओं में मानवीय खुशी के लिए आवश्यक हर चीज़ इसमें पाई जाती है, उसके मूल्य के अनुपात में। लेकिन कुरान में उनका स्पष्ट रूप से उल्लेख क्यों नहीं किया गया है, ताकि सबसे जिद्दी अविश्वासियों को भी विश्वास करना पड़े और हमारा मन शांत हो जाए?"

उत्तर: धर्म परीक्षण के लिए है, ईश्वर द्वारा उच्च और निम्न आत्माओं को एक दूसरे से अलग करने के लिए दिया गया एक परीक्षण और परीक्षा। जिस तरह कच्चे माल को कोयले से हीरे और मिट्टी से सोने को अलग करने के लिए जलाया जाता है, उसी तरह ईश्वरीय दायित्व सचेत प्राणियों का परीक्षण करते हैं ताकि मानव क्षमता की "खान" में कीमती "अयस्क" को मलबे से अलग किया जा सके। चूँकि कुरान मानवता को परीक्षण के माध्यम से परिपूर्ण करने के लिए भेजा गया था, इसलिए यह केवल दुनिया से संबंधित भविष्य की घटनाओं का संकेत देता है, जिसे हर कोई समय के साथ देखेगा। यह केवल अपने तर्क को साबित करने के लिए जितना आवश्यक हो उतना तर्क करने का द्वार खोलता है। अगर इसमें ऐसी चीजों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया होता, तो परीक्षण अर्थहीन होता। वे इतने स्पष्ट होते, जैसे कि सितारों वाले आकाश पर लिखा हो कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है , कि हर कोई विश्वास करने के लिए मजबूर हो जाता। कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होगी, और

परीक्षण और परीक्षण का कोई मतलब नहीं होगा। कोयले जैसी आत्मा साथ रहेगी और हीरे जैसी आत्मा के बराबर प्रतीत होते हैं।89

संक्षेप में, कुरान बुद्धिमान है और हर चीज को उसके मूल्य के अनुपात में स्थान देता है। इस प्रकार, 1,300 साल पहले इसने मानव प्रगति की सीमा देखी थी
और उसके फल, जो अदृश्य के अन्धकार में छिपे हुए थे।
भविष्य), और उन्हें बेहतर रूप में दिखाया। इससे पता चलता है कि कुरान वह वचन जो एक ही क्षण में सारे समय को और उसमें विद्यमान सब को देखता है।

अब तक हमने जो कुछ भी समझाया है वह कुरान की एक झलक मात्र है। चमत्कारिकता, जो भविष्यद्वक्ताओं के चमत्कारों के "चेहरे" पर चमकती है।

हे ईश्वर! हमें कुरान के रहस्यों को समझने में सक्षम बना और हमें ईश्वरीय कृपा प्रदान कर। हर क्षण और हर समय इसकी सेवा करने में सफल।

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर! हमारे जीवन में सुख, शांति, आशीर्वाद और सम्मान प्रदान करें। मालिक और प्रभु, मुहम्मद, आपके सेवक और पैगंबर और रसूल, अनपढ़ पैगम्बर, अपने परिवार और साथियों के बारे में और पत्नियों और वंशजों पर; अन्य सभी नबियों और रसूलों पर; तेरे निकट स्थित स्वर्गदूतों पर, और पवित्र लोगों और धर्मी। उन्हें सबसे उत्तम आशीर्वाद, सबसे शुद्ध आशीर्वाद प्रदान करें शांति, और सबसे प्रचुर आशीर्वाद, की संख्या के लिए कुरआन के सूरा, आयतें, शब्द, अक्षर, अर्थ, संकेत, संकेत और संदर्भ। हमें क्षमा कर, हम पर दया कर और कृपालु हो हमको, हमारे परमेश्वर को, हमारे सृष्टिकर्ता को, उन प्रत्येक आशीर्वाद के लिए, हे दयालुओं में सबसे दयालु, आपकी दया से। सभी प्रशंसा और आभार अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का पालनहार है। आमीन।

89 अबू जहल शापित और अबू बकर सत्यवादी समान प्रतीत होंगे, और लोगों का परीक्षण करने और उनके स्वतंत्र कार्यों के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराने का उद्देश्य बन जाएगा।
अर्थहीन.

इक्कीसवाँ शब्द

इक्कीसवाँ शब्द

अनैच्छिक विचारों और संदेहों के कारण दिल के घावों के लिए पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ और उपचार

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह नमाज़ ईमानवालों के लिए एक समयबद्ध नुस्खा है। (4:103)

दो स्टेशन

पहला स्टेशन: कभी प्रसिद्ध और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण

एक बूढ़े आदमी ने मुझसे कहा: "प्रार्थना करना ठीक है, लेकिन दिन में पाँच बार करना बहुत ज़्यादा है बहुत; यह बोर करता है और थका देता है।” इसके लंबे समय बाद, मेरी शारीरिक आत्मा ने भी मुझसे यही कहा। मुझे एहसास हुआ कि उसका आलस्य इस शैतानी विचार को सुनने के लिए प्रेरित किया। यह समझते हुए कि उन शब्दों का सभी शारीरिक, बुरी आज्ञा देने वाली आत्माओं के नाम पर कहा गया है, मैंने कहा मैं स्वयं से कहता हूँ: “चूँकि मेरी आत्मा बुराई का आदेश देती है, और जो अपना सुधार नहीं करता आत्मा दूसरों को सुधार नहीं सकती, मैं अपनी आत्मा से ही शुरुआत करूंगा।'' मैंने कहा: ''हे आत्मा! आलस्य की शय्या और आलस्य की सुस्ती में कहे गए ऐसे अज्ञानपूर्ण शब्दों के जवाब में, मुझसे निम्नलिखित पाँच चेतावनियाँ सुनो।”

पहली चेतावनी: हे अभागे आत्मा! क्या तुम्हारा जीवन स्थायी है? एक दस्तावेज जो यह बताता है कि आप अगले साल या कल तक जीवित रहेंगे? आपकी थकान इस बात से आती है कि आप हमेशा जीवित रहेंगे। आप शिकायत करते हैं यद्यपि तुम यहाँ अनंत आनंद में हमेशा के लिए रहोगे। यदि तुम समझ गए कि तुम्हारा जीवन छोटा है और व्यर्थ बीत जाता है, तो तुम समझ जाओगे कि, बहुत दूर बोरियत या थकान पैदा करने से बचने के लिए, इसका एक चौथाई हिस्सा खर्च करें सेवा का उत्तम, सुखद, सहज और अनुग्रहपूर्ण कार्य जो वास्तविक, शाश्वत जीवन में सुख का साधन है, वास्तव में शक्ति उत्पन्न करता है और आनंद देता है।

दूसरी चेतावनी: हे लोलुप आत्मा! हर दिन तुम खाते-पीते हो और साँस लें; क्या ये आपको बोरियत का कारण बनते हैं? नहीं, क्योंकि ये ज़रूरतें बार-बार आती हैं और संतुष्ट होने पर खुशी देती हैं। इसलिए पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ आपको बोर नहीं करेंगे, क्योंकि वे आपके साथियों की जरूरतों को आकर्षित करते हैं और उनका मार्गदर्शन करते हैं मेरे शरीर का घर—मेरे हृदय का पोषण, मेरे हृदय का जीवन का जल मेरी आत्मा और आध्यात्मिक बुद्धि की हवा।

अंतहीन दुःख और पीड़ा से गुजर रहे हृदय का भोजन और शक्ति, और अनंत सुख और महत्वाकांक्षा की ओर झुकाव, दरवाजे पर दस्तक देकर प्राप्त किया जा सकता है एक दयालु और उदार के द्वार प्रार्थना के माध्यम से। इसके अलावा, एक आत्मा जो अधिकांश प्राणियों से जुड़ी हुई है और तेजी से दूसरी दुनिया में जा रही है वियोग की चीखों के बीच, जीवन के जल को मुड़कर, पीया जा सकता है पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ, उस चिरस्थायी प्रियतम, सर्व-स्थायी पूज्य, जो सब कुछ के लिए पर्याप्त है और सबका स्थान लेता है, के स्रोत की ओर।

इसके अलावा, एक सचेत आंतरिक इंद्रिय, एक चमकदार और असीम रूप से नाजुक क्षमता, और शाश्वत सत्ता का एक सूक्ष्म दर्पण, जो स्वभाव से उस अनंत काल की इच्छा करता है जिसके लिए इसे बनाया गया था, उसे "हवा", राहत और विश्राम की सबसे अधिक आवश्यकता है, इसलिए कि यह सांसारिक जीवन की कष्टदायक, कुचलने वाली और दम घोंटने वाली परिस्थितियों से सफलतापूर्वक निपट सकता है। यह केवल प्रार्थना की "खिड़की" के माध्यम से "साँस" ले सकता है।

तीसरी चेतावनी: हे अधीर आत्मा! क्या आज यह सोचना समझदारी है कि पिछली उपासना की कठिनाई या कठिनाइयाँ और पिछली आपदाओं की परेशानियाँ, और इसलिए व्यथित हो जाओ, और भविष्य की पूजा या सेवा की कठिनाइयों की कल्पना करो प्रार्थना, और भविष्य के दुर्भाग्य का दर्द, और इसलिए अधीरता प्रदर्शित करते हैं? इस प्रकार अधीरता से आप एक मूर्ख सेनापति के समान हैं, जो यद्यपि शत्रु का दायाँ किनारा उसके दाएँ किनारे से जुड़ गया है और इस तरह उसे मज़बूती दी है, दाएँ किनारे पर एक महत्वपूर्ण बल भेजता है, केवल केंद्र को कमज़ोर करने के लिए। इसके अलावा, हालांकि कोई भी नहीं दुश्मन सेनाएं बाईं ओर से हमला कर रही हैं, वह वहां एक बड़ी सैन्य टुकड़ी भेजता है और उसे फायर करने के लिए कहता है, जिससे उसका केंद्र और भी कमजोर हो जाता है। यह दुश्मन को केंद्र पर हमला करने और सैनिकों को भगाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इस प्रकार, आप इस सेनापति से मिलते जुलते हैं। क्योंकि पिछली परेशानियाँ अब दया की पात्र हैं। उनका दर्द चला गया है, जबकि उनका आनंद बना हुआ है। कठिनाइयाँ खत्म हो गई हैं। आशीर्वाद में बदल गया, और परीक्षण और परिश्रम पुरस्कार में बदल गए। तो आपको क्यों करना चाहिए थके हुए हो? बल्कि, एक नई उत्सुकता और एक नया जोश महसूस करो, और एक गंभीर निर्णय लो प्रार्थना जारी रखने का प्रयास करें। साथ ही, भविष्य अभी तक नहीं आया है, इसलिए क्यों प्रार्थना करनी चाहिए क्या आप इसके बारे में चिंता करते हैं? यह उतना ही हास्यास्पद है जितना कि भविष्य के बारे में अभी शिकायत करना भूख और प्यास, अब उनके बारे में सोचना और ऊब और थकान महसूस करना। चूंकि यह वास्तविकता है, इसलिए आज ही इस पर विचार करें जब भी कोई मामला आए। इबादत करो। कहो: "मैं चौबीस घंटों में से एक घंटा सुखद और

सेवा के श्रेष्ठ कार्य, जिनका पुरस्कार महान है और जिनका कष्ट महान है
आपकी कटु निराशा एक सुखद प्रयास में बदल जाएगी।

हे अधीर आत्मा! तुममें तीन प्रकार की दृढ़ता है:
पूजा-पाठ, पाप से दूर रहने और दुर्भाग्य का सामना करने में। अगर आप समझदार हैं
अब इतना काफी है, इस तीसरी चेतावनी में तुलना करके वास्तविकता पर विचार करें और उसका अनुसरण करें।
हे सर्व-धीरज! पुकारने से इन तीन प्रकार की शक्तियों से शक्ति प्राप्त होती है।
दृढ़ता। अपनी ईश्वर प्रदत्त दृढ़ता की शक्ति का उचित तरीके से उपयोग करना
हर कठिनाई और दुर्भाग्य के लिए शक्ति पर्याप्त होगी, इसलिए उस शक्ति को थामे रहो।

चौथी चेतावनी: हे मूर्ख आत्मा! क्या यह पूजा-उपासना का कर्तव्य इतना निष्फल और व्यर्थ है?
क्या इसका इनाम इतना कम है कि आप थके हुए महसूस करते हैं? जबकि अगर कोई आपको पैसे देता है
या तुम्हें धमकाता है, वह तुमसे शाम तक काम करवाएगा, और तुम काम करोगे
बिना किसी राहत के। तो, क्या पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ व्यर्थ हैं जब तक वे आपकी कमज़ोर हैं
दुनिया के इस अतिथिगृह में हृदय का "भोजन", अपने में जीविका और प्रकाश
कब्र (अनन्त जीवन का एक स्टेशन), एक दस्तावेज़ और दिन का वारंट
न्याय, और पुल पर एक प्रकाश और एक पर्वत, जिसे हर किसी को पार करना है?

क्या प्रार्थना का प्रतिफल इतना कम है? अगर किसी ने आपसे वादा किया है कि आप उसे एक उपहार देंगे, तो आप उसे एक उपहार के रूप में दे देंगे।
सौ डॉलर के बदले में वह आपसे कई दिनों तक काम करवा सकता है।
उसकी बात से मुकर जाओ, तुम उस पर भरोसा करोगे और बिना रुके काम करोगे। इसलिए अगर कोई
जो अपना वादा कभी नहीं तोड़ता वह कहता है कि वह तुम्हें कुछ इनाम देगा
स्वर्ग जैसा और अनंत खुशी जैसा उपहार, और आपको बहुत ही कम समय के लिए रोजगार देता है
यदि आप उस सेवा को पूरा नहीं करते या अनिच्छा से काम करते हैं जैसे कि आपको मजबूर किया जा रहा हो और इस तरह से कि आप परमेश्वर के वादे पर दोष लगा रहे हों या उसके उपहार को कम आंक रहे हों, तो क्या आप कड़ी फटकार और भयंकर सज़ा के पात्र नहीं होंगे? जबकि आप इस दुनिया के सबसे कठिन कामों में बिना किसी ढिलाई के काम करते हैं
क्या तुम्हारे कारावास के भय से, अनन्त कारावास का भय उत्पन्न होता है?
क्या वह तुम्हें प्रार्थना जैसी हल्की और सुखद सेवा के लिए उत्साह नहीं देगा?

पाँचवी चेतावनी: हे सांसारिक मन वाले आत्मा! क्या तुम्हारी उपासना में सुस्ती है?
क्या आप अपनी सांसारिक व्यस्तताओं के कारण निर्धारित प्रार्थनाओं में कमी महसूस करते हैं? क्या आप आजीविका के संघर्ष के कारण समय की कमी से जूझ रहे हैं?
क्या आपने इसे केवल इस दुनिया के लिए बनाया है कि आप अपना सारा समय इस पर खर्च करें?

आप जानते हैं कि आप अपनी क्षमता के संबंध में सभी जानवरों से श्रेष्ठ हैं,
लेकिन जब संतुष्टि की बात आती है तो एक गौरैया भी आपसे बेहतर काम कर सकती है
अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करें। आप इससे यह क्यों नहीं समझते कि एक नागरिक के रूप में आपका कर्तव्य क्या है?
मनुष्य को पशुओं की तरह केवल सांसारिक उद्देश्यों के लिए ही श्रम नहीं करना है, बल्कि
वास्तविक, अनंत जीवन। इसके अलावा, ज़्यादातर सांसारिक चिंताएँ तुच्छ और बेकार हैं
ऐसी बातें जिनसे आपको कोई लाभ नहीं मिलता। फिर भी, सबसे ज़रूरी चीज़ों को छोड़कर, आप अपना समय
बेकार की जानकारी हासिल करने में बिताते हैं, जैसे कि आप

हज़ारों साल तक जीने वाले हैं। उदाहरण के लिए, आप अपना कीमती समय बेकार की चीज़ों पर बर्बाद करते हैं जैसे कि शनि के चारों ओर के छल्ले कैसे हैं या संयुक्त राज्य अमेरिका में कितने मुर्गियाँ हैं। क्या आप खगोल विज्ञान या पशुधन सांख्यिकी में डॉक्टरेट की तैयारी कर रहे हैं?

यदि आप कहते हैं: “जीविका कमाने की अनिवार्य आवश्यकताएँ मुझे प्रार्थना से दूर रखती हैं और मुझे थका देती हैं,” तो मेरा उत्तर इस प्रकार होगा: मान लीजिए कि आप दस डॉलर की दैनिक मजदूरी पर काम करते हैं, और कोई व्यक्ति आकर आपसे कहता है: “यहाँ दस मिनट तक खुदाई करो, और आपको 100 डॉलर का एक शानदार पन्ना मिलेगा।” यदि आप उत्तर देते हैं: “नहीं, मैं नहीं आऊँगा, क्योंकि मालिक मेरे वेतन में 20 सेंट की कटौती करेगा, और इसलिए मैं कम कमाऊँगा,” तो आप देख सकते हैं कि यह तर्क कितना मूर्खतापूर्ण है।

ठीक उसी तरह, तुम अपनी आजीविका के लिए अपने बगीचे में काम करते हो। अगर तुम निर्धारित नमाज़ों को छोड़ दोगे, तो तुम्हारे काम के सारे फल सांसारिक, तुच्छ और अनुत्पादक आजीविका तक ही सीमित रह जाएँगे। लेकिन अगर तुम अपने आराम के समय को प्रार्थना में बिताते हो, जो तुम्हारी आत्मा को जीवंत बनाने और तुम्हारे दिल को सुकून का अनुभव कराने का ज़रिया है, तो तुम दो खानों की खोज करोगे जो उत्पादक सांसारिक आजीविका और तुम्हारे परलोक के लिए ज़रूरी स्रोत हैं: पहला, एक नेक इरादे के साथ, तुम अपने बगीचे के पौधों और पेड़ों द्वारा दी जाने वाली महिमा में हिस्सा पाओगे। दूसरा, जो भी उपज लोग या जानवर खाएँगे, वह तुम्हारे पास दान की तरह लौटेगी। लेकिन यह तभी होगा जब तुम सच्चे प्रदाता के नाम पर और उसकी अनुमति के दायरे में काम करोगे, और खुद को एक वितरण अधिकारी समझोगे जो उसकी संपत्ति को उसके प्राणियों में बांटता है।

देखो, जो व्यक्ति प्रार्थना नहीं करता, उसे कितना बड़ा नुकसान होता है, वह कितनी बड़ी दौलत खो देता है, और वह उन दो खानों से वंचित हो जाता है जो उच्च इरादों और मजबूत मनोबल के साथ काम करने वाले व्यक्ति के प्रयासों का समर्थन करती हैं। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती है, वह बागवानी से थक जाता है और कहता है: "मुझे इन सब से क्या मतलब? मैं वैसे ही दुनिया छोड़ रहा हूँ, तो परेशान क्यों हो रहा हूँ?" आलस्य में चला जाता है। लेकिन जो व्यक्ति प्रार्थना करता है और अपनी आजीविका के लिए काम करता है, वह कहता है: "मैं अनिवार्य पूजा करने और वैध और ईमानदारी से कमाई करने की अधिक कोशिश करूँगा ताकि मैं अपनी कब्र में और अधिक रोशनी भेज सकूँ और परलोक में अपने जीवन के लिए और अधिक प्रावधान जुटा सकूँ।"

संक्षेप में: हे आत्मा, कल तुम्हें छोड़ गया है और तुम्हें इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि तुम कल जीवित रहोगे। तुम्हारा जीवन आज से बना है। मस्जिद या प्रार्थना की चटाई, बचत बॉक्स और परलोक के लिए आरक्षित निधि के लिए कम से कम एक घंटा अलग रखें। इस घंटे को अपने वास्तविक भविष्य के लिए अलग रखें। यह भी जान लें कि प्रत्येक नया दिन एक नई दुनिया का द्वार है। यदि आप प्रार्थना नहीं करते हैं, तो उस दिन की आपकी दुनिया अंधकारमय और दयनीय हो जाएगी और अमूर्त रूपों या प्रतिनिधित्वों की दुनिया में आपके खिलाफ गवाही देगी। प्रत्येक दिन, हर किसी की एक निजी दुनिया होती है, प्रकृति

जो इस संसार में निहित व्यक्ति के हृदय और कर्मों पर निर्भर करता है।
दर्पण में प्रतिबिंबित भव्य महल दर्पण के रंग और गुणवत्ता को ग्रहण कर लेता है, जैसे असमान दर्पण बेहतरीन चीजों को भी मोटा दिखाता है, वैसे ही आप भी
अपने दिल, दिमाग, कर्मों और भावनाओं के माध्यम से अपनी दुनिया का स्वरूप बदलें।
आप इसे अपने पक्ष में या खिलाफ गवाही देने का कारण बन सकते हैं।

यदि आप प्रार्थना करते हैं और सर्वशक्तिमान निर्माता की ओर मुड़ते हैं, तो आपका निजी दुनिया अचानक से रोशन हो जाएगी। प्रार्थना एक शक्तिशाली बिजली की तरह है प्रार्थना करने के आपके इरादे से प्रकाश चालू होता है। यह आपकी दुनिया के अंधकार को दूर करता है और दिखाता है कि इस भ्रमित, अशांत दुनिया में परिवर्तन और हलचलें दिव्य शक्ति के एक बुद्धिमान आदेश और एक सार्थक व्यवस्था से उत्पन्न होती हैं। यह आपके दिल पर एक प्रकाश फैलाता है

प्रकाश से भरी आयत: ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है (24:35)।
और, उस दिन अपने प्रतिबिंब, उस प्रकाश के माध्यम से आपकी दुनिया को रोशन करना
आपकी दुनिया अपनी चमक के माध्यम से आपके लिए गवाही देगी।

कभी मत कहो: “मेरी प्रार्थनाओं का अर्थ दूसरों की प्रार्थनाओं से तुलना करने पर लगभग कुछ भी नहीं है।” प्रार्थना क्या होनी चाहिए इसकी वास्तविकता।" क्योंकि जैसे खजूर का पत्थर और इसमें वृक्ष स्वयं शामिल है (अंतर केवल सारांश और के बीच है पूर्ण विकसित या विस्तृत रूप), एक महान संत की प्रार्थना पूर्ण विकसित होती है जबकि हम जैसे आम लोगों (भले ही हमें इसका पता न हो) का भी इसमें हिस्सा है उस दिव्य प्रकाश में, और उसके सत्य में एक रहस्य। हालाँकि, हमारी धारणा और उस सत्य द्वारा प्रकाश हमारी डिग्री के अनुसार भिन्न होता है।

जैसे खजूर के गुठली के बीच कई चरण और डिग्री होती हैं और पूरी तरह से विकसित पेड़, प्रार्थना करना और हमारी प्रार्थनाओं से लाभ उठाना संभवतः और भी अधिक डिग्री और चरणों द्वारा चिह्नित हैं। हालाँकि,
उस प्रकाशमान सत्य का आधार प्रत्येक डिग्री या स्तर में मौजूद है।

हे ईश्वर! उस पर कृपा और शांति प्रदान कर जिसने कहा: "निर्धारित
प्रार्थनाएँ धर्म का आधार हैं,” और अपने परिवार और साथियों पर।

दूसरा स्टेशन: इसमें पाँच घावों के लिए पाँच उपचार शामिल हैं दिल।

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हे प्रभु, मैं शैतानों के बुरे सुझावों से आपकी शरण लेता हूँ,
और मैं तेरी शरण में आता हूँ, ऐ मेरे रब! कि वे मेरी ओर न आएं। (23:97-98)

हे तुम अनैच्छिक बुरे विचारों और कल्पनाओं से ग्रस्त हो, ऐसी बातें
दुर्भाग्य जैसा लगता है। जितना अधिक आप उन पर ध्यान देंगे, उतना ही वे बढ़ते जाएंगे।
यदि आप उनकी उपेक्षा करते हैं, तो वे कम हो जाते हैं; यदि आप उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, तो वे बढ़ जाते हैं;

अगर आप उन्हें छोटा समझते हैं, तो वे मर जाते हैं। अगर आप उनसे डरते हैं, तो वे गंभीर हो जाते हैं और तुम्हें बीमार कर देते हैं; यदि तुम उनसे नहीं डरते, तो वे क्षीण हो जाते हैं और छिपे रहते हैं। यदि तुम उनके वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते, तो वे बने रहते हैं और स्थापित हो जाते हैं; यदि तुम उनके स्वरूप को पहचान लेते हो, तो वे लुप्त हो जाते हैं।

मैं ऐसे अक्सर होने वाले बुरे विचारों के कई प्रकारों या पहलुओं में से केवल पाँच की व्याख्या करूँगा। मुझे उम्मीद है कि यह व्याख्या हम दोनों के लिए लाभकारी होगी,
क्योंकि ऐसे विचार अज्ञानता से आकर्षित होते हैं और ज्ञान से दूर हो जाते हैं।
तुम उन्हें नहीं पहचानते, वे तुम्हें पुकारते हैं; यदि तुम उन्हें पहचानते हो, वे तुम्हें पुकारते हैं।
पाँच पहलू इस प्रकार हैं:

पहला पहलू—पहला घाव: शैतान सबसे पहले दिल में शक डालता है।

यदि हृदय इसे स्वीकार नहीं करता, तो वह ईशनिंदा करता है और मन को ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। कुछ गंदी यादें और तस्वीरें याद आती हैं, कुछ बदसूरत दृश्य जो मिलते जुलते हैं ईशनिंदा। इससे दिल में निराशा पैदा होती है। ऐसे अनुभव करने वाले लोग विचार सोचते हैं कि वे अपने प्रभु के प्रति गलत कार्य कर रहे हैं और इसलिए महसूस करते हैं बहुत बेचैनी और बेचैनी। खुद को मुक्त करने के लिए, वे ईश्वर से दूर भागते हैं उपस्थिति और असावधानी और विस्मृति में डूब जाना चाहते हैं।

हे ऐसे अनैच्छिक विचारों से ग्रस्त साथी! घबराओ मत,
क्योंकि ऐसे विचार काल्पनिक हैं और ईशनिंदा नहीं हैं।
अविश्वास की कल्पना अविश्वास नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे ईशनिंदा की अनैच्छिक कल्पना यह ईशनिंदा नहीं है। तर्क यह बताता है कि कल्पना करना निर्णय का कार्य नहीं है, जबकि ईशनिंदा (जानबूझकर किया गया कार्य) है। ऐसे शब्द आपके मुंह से नहीं आते क्योंकि तुम्हारा हृदय उनसे अप्रसन्न है और पछताता है। बल्कि, वे आते हैं "शैतान की नली" से, हृदय के पास स्थित एक आंतरिक क्षमता जो शैतान उसे फुसफुसाता है। अनैच्छिक बुरी कल्पनाओं का नुकसान होता है उन्हें हानिकारक मानने से बचें, क्योंकि लोग सोचते हैं कि एक कल्पना जो न्याय के अधीन नहीं है, वास्तविकता है। वे शैतान के काम को अपने दिलों पर आरोपित करते हैं, यह मानकर कि शैतान की फुसफुसाहट उनके दिलों की है, और इस तरह सोचते हैं कि यह
यह हानिकारक है और नुकसान उठाना पड़ता है। शैतान यही चाहता है।

दूसरा पहलू: हृदय में उठने वाले अर्थ तब तक निराकार होते हैं जब तक वे प्रकट नहीं हो जाते। कल्पना में प्रवेश करें। कल्पना हमेशा किसी प्रेरणा के तहत, रूपों को बुनता है और उन रूपों को छोड़ देता है जिनको वह महत्व देता है जो भी अर्थ हृदय में आता है, उसे ग्रहण कर लिया जाता है, उसे छू लिया जाता है, या कल्पना द्वारा इन रूपों के माध्यम से छिपाया गया है। यदि अर्थ शुद्ध हैं और साफ है, और रूप गंदे और आधार हैं, उनके बीच बहुत कम संपर्क है शुद्ध अर्थ मूल रूप को अपने वस्त्र के रूप में स्वीकार नहीं करेगा। हालाँकि, अनैच्छिक बुरे विचारों से पीड़ित लोग उस छोटे से संपर्क को लेकर भ्रमित हो जाते हैं कपड़े पहने हुए, और चिल्लाते हुए: "मेरा दिल कितना भ्रष्ट हो गया है! यह नीचता

और दुष्टता मुझे धर्म से दूर कर देगी।" शैतान इस भावना का फ़ायदा उठाता है। इस घाव का इलाज इस प्रकार है:

जिस तरह आपकी बाहरी स्वच्छता, जो प्रार्थना की शुद्धता के लिए एक शर्त है, आपकी आंतों की गंदगी से प्रभावित या खराब नहीं होती, उसी तरह पवित्र अर्थ या धारणाएं अशुद्ध रूपों के करीब होने से नुकसान नहीं पहुंचातीं। मान लीजिए कि आप ब्रह्मांड में ईश्वर के संकेतों या कुरान की आयतों पर विचार कर रहे हैं और अचानक बीमार महसूस करते हैं, या खाने या पेशाब करने की इच्छा होती है। आपकी कल्पना प्रतिक्रिया के लिए जो भी आवश्यक होगा, उसे बनाएगी और उचित "नीच" रूपों को बुनेगी। आपके (बाधित) प्रतिबिंबों से उत्पन्न अर्थ इन रूपों से गुज़र जाएंगे। लेकिन इस अंश से कोई नुकसान, गंदगी, त्रुटि या चोट नहीं है। यदि कोई दोष है, तो वह तथ्य पर ध्यान देने और इसे हानिकारक मानने की कल्पना में है।

तीसरा पहलू: चीज़ों के बीच छिपे हुए संबंध होते हैं, और ऐसे संबंधों के "धागे" भी उन चीज़ों के बीच मौजूद होते हैं जिनके आपस में जुड़े होने की आप कभी उम्मीद नहीं करते। वे या तो वास्तव में होते हैं, या आपकी कल्पना उन्हें अपने मन के अनुसार बनाती है और चीज़ों को उनके साथ जोड़ती है। इसी संबंध के कारण कभी-कभी किसी पवित्र चीज़ को देखने पर मन में कोई गंदी चीज़ आ जाती है। जैसा कि बयानबाज़ी का विज्ञान कहता है: "विरोध, जो बाहरी दुनिया में दूरी का कारण है, कल्पना में निकटता का कारण है।" दूसरे शब्दों में, एक कल्पित संबंध दो विपरीत रूपों को एक साथ लाता है। ऐसे संबंध के ज़रिए होने वाली याद को विचारों का जुड़ाव कहा जाता है।

उदाहरण के लिए, ईश्वर की उपस्थिति में काबा के सामने प्रार्थना या दुआ पढ़ते समय, हालाँकि आप कुछ दिव्य सत्यों के संकेतों पर विचार कर रहे हैं, विचारों का जुड़ाव आपको सबसे दूर, सबसे नीच तुच्छ चीजों तक ले जा सकता है। अगर आपके साथ विचारों का ऐसा अनैच्छिक जुड़ाव बार-बार होता है, तो घबराएँ नहीं। बल्कि, जब यह बीत जाए, तो वापस लौट जाएँ। खुद की निंदा न करें या इसकी प्रकृति को जानने के लिए इस पर ध्यान न दें, क्योंकि इससे यह और भी मजबूत हो सकता है।

जब आप खेद प्रकट करते हैं और गंभीरता से इस पर विचार करते हैं, तो आपकी कमज़ोर याददाश्त एक जुनून बन जाती है और कल्पना की बीमारी में बदल जाती है। बहुत ज़्यादा परेशान न हों - यह दिल की बीमारी नहीं है। ऐसी याददाश्त ज़्यादातर अनैच्छिक होती है और संवेदनशील, घबराए हुए लोगों में ख़ास तौर पर आम होती है।

शैतान को यह गतिविधि का एक बड़ा क्षेत्र लगता है। इस घाव का इलाज इस प्रकार है: विचारों का जुड़ाव ज़्यादातर अनैच्छिक होता है,

जिसका अर्थ है कि कोई इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं है। साथ ही, जुड़ाव में निकटता शामिल है, संपर्क और संयोजन नहीं। इस कारण से, विचारों की प्रकृति एक दूसरे को दूषित और नुकसान नहीं पहुँचाती है। उदाहरण के लिए, शैतान और प्रेरणा का दूत करीब हैं

एक दूसरे के हृदय के चारों ओर बंधन हैं, और पापी और धर्मात्मा एक साथ रहते हैं।
ऐसी निकटता हानिरहित है। जब अशुद्ध कल्पनाएँ आपके शुद्ध मन के बीच प्रवेश करती हैं
विचारों के जुड़ाव के कारण विचार तभी हानिकारक होते हैं जब जानबूझकर या जब कोई उन्हें हानिकारक समझ लेता है और उनके प्रति अत्यधिक चौकस हो जाता है।
कभी-कभी दिल थक जाता है या मन खुद को बहला लेता है
शैतान इन चीज़ों का इस्तेमाल अशुद्ध चीज़ें परोसने के लिए करता है।

चौथा पहलू: धार्मिक कर्म के सर्वोत्तम स्वरूप की तलाश से एक प्रकार की अनैच्छिक कल्पना उत्पन्न होती है। इसे बेहतर ढंग से एक संकोच कहा जा सकता है। अगर लोग मानते हैं कि
यह एक सच्ची या शुद्ध धर्मनिष्ठा है, यह अधिक प्रबल हो जाती है और परिणामी स्थिति को और अधिक गंभीर बना देती है। यह इस हद तक पहुँच सकती है कि, खोज करते समय
कर्म के और भी बेहतर रूपों के लिए, ऐसे लोग निषिद्ध कर्म में पड़ जाते हैं।
कभी-कभी उपासना में जो प्रशंसनीय है उसकी खोज करने से लोग
उसमें जो अनिवार्य है, उसकी उपेक्षा करें।
चाहे वह धर्मविधान के अनुसार स्वीकार्य हो या नहीं, वे इसे दोहराते हैं। यह स्थिति जारी रहती है, और
वे जल्द ही निराशा में डूब जाते हैं। शैतान इस स्थिति का फ़ायदा उठाकर उन्हें घायल कर देता है
इन लोगों के लिए इस घाव के दो इलाज हैं।

पहला उपाय: ऐसा संदेह मुताज़िलियों के लिए सही हो सकता है, जो तर्क देते हैं:
“वे कार्य और चीजें जिनके लिए धर्म मानवता को जिम्मेदार ठहराता है, वे हैं,
अपने और परलोक के संबंध में, चीजें अच्छी हैं और इसलिए आदेशित हैं, या बुरी हैं और इसलिए निषिद्ध हैं।" इस प्रकार, वास्तविकता और परलोक के दृष्टिकोण से, चीजें अपने सार में अच्छी या बुरी होती हैं, और

ईश्वरीय आदेश और निषेध इसी पर निर्भर हैं।
विचारधारा के अनुसार, पूजा के प्रत्येक कार्य में एक शंका उत्पन्न होती है: "क्या मैं सक्षम हूं
इस कार्य को उस अच्छे तरीके से करना जो इसका सार है?”

हालाँकि, अहलू-सुन्ना वल-जमाआ (महान लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग)
(अधिकांश मुसलमान, जिनके बारे में माना जाता है कि वे सही रास्ते पर हैं) तर्क देते हैं:
"सर्वशक्तिमान ईश्वर किसी चीज़ का आदेश देता है और वह अच्छी हो जाती है। वह किसी चीज़ को रोकता है और वह उसे अच्छी बना देती है।
यह बुरा हो जाता है।'' इसलिए, कोई चीज़ अच्छी है या बुरी, यह ईश्वर पर निर्भर करता है
आदेश और निषेध। इसलिए, कोई चीज़ लोगों के लिए अच्छी या बुरी होती है, इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने आदेशित या निषिद्ध कोई काम किया है या नहीं
उन्होंने यह काम शरीयत द्वारा स्थापित नियमों के अनुसार किया है।
इसके अतिरिक्त, कोई चीज़ धार्मिक दृष्टि से अच्छी या बुरी उसकी प्रत्यक्ष शुद्धता और प्रत्यक्ष विशेषताओं के आधार पर नहीं, बल्कि परलोक के संबंध में होती है।

उदाहरण के लिए, आपने प्रत्येक के नियमों के अनुसार वुज़ू (अनुष्ठान स्नान) या नमाज़ अदा की।
लेकिन एक कारण था जो अपने आप में उसे अमान्य कर देता था।
हालाँकि, आप इस बात से पूरी तरह अनजान थे। आपका स्नान और
इसलिए प्रार्थनाएँ अच्छी और पवित्र हैं। लेकिन मुताज़िलियों का तर्क है: "सारतः

वे बुरे और अस्वस्थ थे। लेकिन वे आपकी अज्ञानता के कारण स्वीकार किए जा सकते हैं, जो एक बहाना है। अहलू-सुन्ना वल-जमा के अनुसार, आप
आपको उस कार्य के बारे में शंकालु नहीं होना चाहिए जो आपने नियम के अनुरूप किया है।
शरीयत के नियमों का पालन करें; इसकी चिंता न करें कि यह सही है या नहीं। बल्कि
इसकी चिंता करो कि क्या इसे स्वीकार किया गया; घमंडी और अहंकारी मत बनो।

दूसरा उपाय: धर्म में कोई कठिनाई नहीं है। चूँकि चारों विधि-संप्रदाय सही मार्ग पर हैं, तथा चूँकि गलती का एहसास होने पर क्षमा माँगना बेहतर है (विशेषकर उन लोगों के लिए जो विवेकहीन हैं)

कर्मों को अच्छा समझना, क्योंकि इससे अहंकार उत्पन्न होता है, ऐसे लोगों के लिए बेहतर है कि वे अपने कर्मों को दोषपूर्ण समझें और ईश्वर से क्षमा मांगें, बजाय इसके कि वे उन्हें बुरा समझें।
उन्हें अच्छा समझो और घमंडी बनो। अपनी शंकाएँ त्याग दो और शैतान से कहो:

> यह महज एक कठिनाई है, क्योंकि सटीक जानकारी प्राप्त करना कठिन है।
> चीजों में सच्चाई और अच्छाई। अत्यधिक चिंता धर्म में कोई कठिनाई नहीं है और धर्म में आसानी है के सिद्धांतों के विपरीत है। जैसा कि मेरा कर्म
> यह एक स्थापित विधि विद्यालय की आवश्यकताओं के अनुरूप है,
> पर्याप्त। उसके बाद, अपनी अपर्याप्तता को स्वीकार करते हुए, मैं शरण लेता हूँ
> ईश्वरीय दया के साथ। मैं विनम्रतापूर्वक पूजा के कर्तव्य के लिए क्षमा मांगता हूं, जिसे मैं इसके योग्य तरीके से नहीं कर सकता, और विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूं कि मेरे दोषपूर्ण कर्मों को स्वीकार किया जाए।

पांचवां पहलू: कुछ लोग इस रूप में संकोच से ग्रस्त हैं [वे क्या सोचते हैं]
विश्वास के मामलों में संदेह। कभी-कभी वे एक क्षणिक सनक को एक क्षणिक सनक से भ्रमित कर देते हैं
अवधारणागत विचार, गलती से इस संदेह को खुद से उत्पन्न मानते हुए और इसलिए संभवतः उनके विश्वास के लिए हानिकारक। वे सोच सकते हैं कि ऐसा
संदेह उनके तर्कसंगत, सचेत पुष्टि को बाधित करता है
विश्वास, या कि अविश्वास से संबंधित किसी चीज़ के बारे में सोचना उन्हें अविश्वासी बनाता है। यानी, वे अविश्वास के कारणों पर चिंतन, अध्ययन और वस्तुनिष्ठ तर्क के उपयोग को विश्वास के विपरीत होने के साथ भ्रमित करते हैं। इनसे भयभीत
शैतान की कानाफूसी से उत्पन्न धारणाओं के आधार पर, वे मानते हैं कि उनका
दिल भ्रष्ट हो गए हैं और उनका विश्वास कमज़ोर हो गया है।
अपनी स्वतंत्र इच्छा से ही अधिकांशतः अनैच्छिक अवस्थाओं में वे निराशा को जन्म देते हैं।

इसका इलाज इस प्रकार है: अविश्वास की कल्पना करना या उस पर चिंतन करना अविश्वास नहीं है, और गुमराही की कल्पना करना या उस पर चिंतन करना गुमराही नहीं है।
कल्पना, अवधारणा, चित्रण और प्रतिबिंब एक दूसरे से अलग हैं
तर्क द्वारा पुष्टि और हृदय द्वारा स्वीकृति; वे कुछ हद तक स्वैच्छिक हैं। स्वतंत्र इच्छा के लिए उन्हें नियंत्रित करना कठिन है ताकि हम
उनके लिए जवाबदेह.

पुष्टि और स्वीकृति जानबूझकर की जाती है, क्योंकि वे कुछ मानदंडों और जानबूझकर तर्क पर निर्भर करते हैं। इसके अलावा, जैसे कि पूर्व
पुष्टि और स्वीकृति के समान मानसिक गतिविधियाँ नहीं हैं, न ही
वे संदेह और हिचकिचाहट के समान हैं। हालाँकि, वे रास्ता साफ कर सकते हैं
अगर वे अनावश्यक रूप से दोहराए जाते हैं और स्थापित हो जाते हैं तो संदेह होता है।
वस्तुनिष्ठ तर्क के बहाने लगातार विरोधी पक्ष का समर्थन करना
या निष्पक्षता, वे अनजाने में इसका समर्थन कर सकते हैं और इस तरह खतरे में पड़ सकते हैं।
धीरे-धीरे उनकी मनःस्थिति स्थिर हो जाती है और वे शैतान या शत्रु के मुखर समर्थक बन जाते हैं।

यहाँ सबसे खास बात यह है कि व्यक्ति सैद्धांतिक रूप से संभव को उचित रूप से संभावित के साथ भ्रमित करता है। यह धर्मशास्त्र में तर्क के सिद्धांत का उल्लंघन करता है: एक सैद्धांतिक संभावना वर्तमान वास्तविकता के कुछ ज्ञान को नकारती नहीं है या तर्क की माँगों का खंडन नहीं करती है। उदाहरण के लिए,

सैद्धांतिक रूप से यह संभव है कि काला सागर ज़मीन में डूब जाए
अभी। हालाँकि, हम जानते हैं और निश्चित रूप से निर्णय लेते हैं कि यह अभी तक नहीं हुआ है
ऐसा किया गया। इसके अन्यथा होने की सैद्धांतिक संभावना कोई वास्तविक कारण नहीं बनती
संदेह नहीं होता और वर्तमान वास्तविकता के बारे में हमारी निश्चितता में कोई कमी नहीं आती।

सैद्धांतिक रूप से, हो सकता है कि सूर्य आज अस्त न हो और कल उदय न हो। लेकिन यह सच है। संभावना हमारी निश्चितता को कम नहीं करती या कोई वास्तविक संदेह पैदा नहीं करती।
सैद्धांतिक संभावनाओं से उत्पन्न निराधार संदेह - उदाहरण के लिए,
इस संसार की मृत्यु और परलोक में मृतकों का पुनरुत्थान, जो
विश्वास की सच्चाइयों में से हैं - विश्वास की निश्चितता को ख़राब नहीं करते।
इसके अलावा, इस्लामी कानून की पद्धति-विज्ञान और धर्म की नींव के विज्ञान के स्थापित सिद्धांतों में से एक यह बताता है कि एक संभावना है
बिना किसी साक्ष्य के आधार पर विचार करने योग्य नहीं है।

प्रश्न: अनैच्छिक बुराई को होने देने के पीछे ईश्वरीय उद्देश्य क्या है?
क्या विचार और संकोच हमें परेशान करते हैं, क्योंकि वे विश्वासियों को हानि पहुँचाते हैं और उन्हें पीड़ित करते हैं?

उत्तर: यदि उन्हें अत्यधिक न बढ़ाया जाए और उन्हें हावी न होने दिया जाए
व्यक्ति, अनिवार्य रूप से वे सतर्कता और जागरूकता का कारण हैं
जो लोगों को सत्य और बेहतर की खोज करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे भी हैं
गंभीरता लाने, उदासीनता दूर करने और लापरवाही और असावधानी को दूर भगाने का साधन। इस कारण परम बुद्धिमान ने उन्हें अपने हाथ में सौंप दिया।
शैतान इस परीक्षा के क्षेत्र में हमारे लिए प्रोत्साहन का एक कोड़ा है, और शैतान
हमारे सिर पर चोट लगती है। अगर वे हमें बहुत ज़्यादा चोट पहुँचाते हैं, तो हमें शिकायत करनी चाहिए
सर्वशक्तिमान और दयालु परमेश्वर से कहो: "मैं उसकी शरण में आता हूँ
परमेश्वर को शापित शैतान से बचाओ।"

बाईसवाँ शब्द

बाईसवाँ शब्द

ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के पक्ष में तर्क तथा ईश्वरीय एकता का दृढ़ विश्वास कैसे प्राप्त करें

(इस शब्द में दो स्टेशन हैं)

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परमेश्वर ने मानवता के लिए दृष्टान्त स्थापित किये हैं ताकि वे समझ सकें (उनको) ध्यान में रखो और उनसे शिक्षा ग्रहण करो। (14:25)

हम ऐसी ही मिसालें लोगों के लिए पेश करते हैं, ताकि वे चिंतन करें। (59:21)

पहला स्टेशन

एक बार दो लोगों ने पूल में स्नान किया और खुद को डूबा हुआ महसूस किया एक ट्रान्स जैसी अवस्था। जागने पर, उन्होंने खुद को ऐसी अवस्था में पाया एक अद्भुत भूमि। अपने संपूर्ण क्रम और सामंजस्य के साथ, यह ऐसा था जैसे एक देश, या बल्कि एक शहर, या एक महल। उन्होंने चारों ओर देखा अत्यंत आश्चर्य की बात है: एक दृष्टिकोण से, यह एक विशाल दुनिया थी; दूसरे से, एक सुव्यवस्थित देश; और फिर एक और से, एक शानदार शहर। अगर इसे देखा जाए एक अन्य दृष्टिकोण से, यह एक महल था, हालांकि यह अपने आप में एक था एक शानदार दुनिया। उन्होंने यात्रा की और देखा कि इसके जीव एक ऐसी भाषा बोल रहे हैं जो वे नहीं जानते थे। हालाँकि, उनके हाव-भाव से पता चलता था कि वे महत्वपूर्ण कार्य करना और महत्वपूर्ण कर्तव्यों का निर्वहन करना।

उनमें से एक ने कहा: "इस दुनिया को एक प्रशासक चाहिए, इस सुव्यवस्थित देश को एक स्वामी, इस शानदार शहर को एक मालिक, और इस कुशलता से बनाया गया महल एक मास्टर बिल्डर है। हमें उसे जानने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि यह वही है जो हमें यहाँ तक लाया है। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी मदद कौन करेगा? हम उनसे क्या उम्मीद कर सकते हैं?

नपुंसक प्राणी जिनकी भाषा हम नहीं जानते और जो हमें अनदेखा करते हैं? इसके अलावा, जिसने राज्य, शहर या शहर के रूप में एक विशाल दुनिया बनाई है महल को सुंदर चीजों से भर दिया, हर तरह की सजावट से उसे सुसज्जित कर दिया, और इसे शिक्षाप्रद चमत्कारों से सजाया है, कुछ ऐसा होना चाहिए जो वह हमसे चाहता है और जो लोग यहाँ आते हैं, वे क्या करने आते हैं। हमें उसे जानना चाहिए और सीखना चाहिए कि वह क्या चाहता है।"

दूसरे आदमी ने आपत्ति की: "मैं इस पर विश्वास नहीं करता, कि ऐसा कोई प्राणी है और वह इस संसार पर स्वयं शासन करता है।" उसके मित्र ने उत्तर दिया: "यदि हम नहीं पहचानते

यदि हम उसे अनदेखा कर दें और उदासीन रहें, तो हमें कुछ भी हासिल नहीं होगा और हमें बहुत नुकसान उठाना पड़ सकता है। लेकिन यदि हम उसे अनदेखा कर दें, तो हमें बहुत नुकसान हो सकता है।

हम उसे पहचानने की कोशिश करते हैं, इसमें कोई कठिनाई नहीं है और बहुत लाभ होने की संभावना है। इसलिए, उदासीन रहना किसी भी तरह से उचित नहीं है?" दूसरे आदमी ने जोर देकर कहा: "मुझे उसके बारे में न सोचने में ही सारी सहजता और आनंद मिलता है। इसके अलावा, मैं उसके बारे में नहीं सोच रहा हूँ। मैं खुद को उन चीज़ों से परेशान करता हूँ जिनका मेरे लिए कोई मतलब नहीं है। ये सब उलझन भरी बातें हैं जो चीजें संयोग से या अपने आप घटित हो रही हैं, वे मेरी नहीं हैं चिंता।" उसके चतुर मित्र ने उत्तर दिया: "ऐसी हठधर्मिता हमें और कई अन्य लोगों को मुसीबत में डाल देगी। कभी-कभी एक बुरे व्यवहार वाले व्यक्ति के कारण पूरी भूमि बर्बाद हो जाती है।"

दूसरे व्यक्ति ने पलटकर कहा: "या तो यह साबित करो कि तुम जो कह रहे हो वह सच है सच बोलो या मुझे अकेला छोड़ दो।" इस पर, उसके दोस्त ने कहा: "चूंकि आपकी हठ पागलपन की सीमा तक है और इससे हमें बहुत बड़ी विपत्ति झेलनी पड़ेगी, इसलिए मैं आपको दिखाऊंगा बारह प्रमाण हैं कि इस महल जैसी दुनिया, इस शहर जैसी स्थिति, का एक मास्टर बिल्डर है जो इसे खुद ही संचालित करता है और उसमें कोई कमी नहीं है। वह हमारे लिए अदृश्य है, लेकिन उसे हमें और सब कुछ देखना चाहिए और सभी आवाज़ें भी सुननी चाहिए। उसके सभी उसके काम चमत्कारी लगते हैं। ये सभी प्राणी जिन्हें हम देखते हैं, लेकिन जिनकी भाषा हम नहीं समझते, वे अवश्य ही उसके अधिकारी हैं [उसके नाम पर काम करने वाले]।

बारह प्रमाण

पहला सबूत: चारों ओर देखो! हर जगह एक छिपा हुआ हाथ काम कर रहा है, क्योंकि एक बीज की तरह कुछ छोटी और बिना ताकत वाली चीज़ हज़ारों वज़न का बोझ उठा रही है 90 पाउंड की चेतना के बिना कुछ बहुत बुद्धिमान और कर रहा है उद्देश्यपूर्ण कार्य.91 चूँकि वे स्वयं काम नहीं कर सकते, इसलिए एक शक्तिशाली, छिपी हुई शक्ति उन्हें काम करने के लिए प्रेरित कर रही है। अगर सब कुछ अपने आप हो रहा होता मेरा मानना है कि इस स्थान पर किया जा रहा सारा काम अपने आप में एक चमत्कार होगा और हर चीज़ चमत्कार करने वाली होगी।

दूसरा प्रमाण: इन मैदानों, खेतों और आवासों की सजावट को देखो! हर एक उस छिपे हुए की ओर इशारा करता हुआ निशान है। किसी मुहर या मोहर की तरह,

---

90 यह उन बीजों को संदर्भित करता है, जिनके सिर पर पेड़ लगते हैं।

91 यह अंगूर जैसे नाजुक पौधों को संदर्भित करता है, जो स्वयं नहीं बढ़ सकते हैं या फल नहीं दे सकते हैं फलों का वजन, और इसलिए अपनी नाजुक बाहों को अन्य पौधों या पेड़ों के चारों ओर फेंकते हैं और हवा वे अपने चारों ओर घूमते हैं और उन पर अपना बोझ लाद लेते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति उसके बारे में समाचार देता है। देखो, वह कुछ ग्राम कपास से क्या बनाता है।92 देखो, उसमें से कितने सारे कपड़े, लिनन और फूलदार कपड़े निकले हैं; कितना मीठा भोजन और अन्य स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जा रहे हैं। यदि हज़ारों लोग इनसे कपड़े पहनें या खाएँ, तो भी काफी होगा। फिर से, देखो। उसने मुट्ठी भर लोहा, मिट्टी, पानी, कोयला, तांबा, चांदी और सोना लिया और कुछ जीवित प्राणी बनाए।93 देखो और देखो।

इस प्रकार के कार्य विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिए होते हैं जो इस भूमि को उसके सभी भागों के साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति के अधीन रखता है तथा अपनी इच्छा के प्रति पूर्णतः समर्पित रहता है।

तीसरा सबूत: इन अमूल्य, चलती-फिरती कलाकृतियों को देखिए!94 प्रत्येक को इस विशाल महल के एक छोटे नमूने के रूप में बनाया गया है। महल में जो कुछ भी है, वह इन छोटी-छोटी चलती मशीनों में समाहित है। इस अद्भुत महल के निर्माता के अलावा और कौन यह सब एक छोटी सी मशीन में समाहित कर सकता है? क्या संयोग या किसी उद्देश्यहीन चीज ने इस बॉक्स के आकार की मशीन में हस्तक्षेप किया हो, जिसमें पूरी दुनिया समाहित है? आप चाहे जितनी भी कलात्मक रूप से बनाई गई मशीनें देखें, उनमें से प्रत्येक उस छिपे हुए की मुहर की तरह है, एक संदेशवाहक या उद्घोषणा की तरह। अपने अस्तित्व की भाषा में, वे घोषणा करते हैं: "हम उस व्यक्ति की कलाकृतियाँ हैं जो इस पूरी दुनिया को उतनी ही आसानी से बना सकता है, जितनी आसानी से उसने हमें बनाया है।"

चौथा प्रमाण: मैं तुम्हें कुछ और भी अजीब दिखाऊंगा। देखो। इस देश में सभी चीजें बदल रही हैं। हर बेजान शरीर और बेजान "हड्डी" ने कुछ खास उद्देश्यों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है, मानो हर कोई दूसरे पर शासन कर रहा हो। हमारे बगल में इस मशीन को देखो।95 ऐसा लगता है जैसे यह आदेश दे रही हो और इसकी सजावट और संचालन के लिए ज़रूरी सभी सामग्रियाँ दूर-दूर से इसकी ओर दौड़ रही हों। वहाँ देखो। यह बेजान शरीर मानो बुला रहा हो, क्योंकि यह सबसे बड़े शरीरों को अपनी सेवा और काम करने के लिए मजबूर करता है।96 आप बाकी की तुलना इनसे कर सकते हैं।

---

[92] उदाहरण के लिए, एक अणु आकार का खसखस, एक खुबानी की गुठली जिसका वजन कुछ ग्राम होता है, या एक खरबूजे का बीज - इनमें से प्रत्येक दया के खजाने से कपड़े से भी अधिक सुंदर बुने हुए पत्ते, लिनेन से भी अधिक सफेद या पीले फूल, चीनी से भी अधिक मीठे फल, तथा जैम से भी अधिक उत्तम और स्वादिष्ट उत्पन्न करता है, और उन्हें हमें प्रदान करता है।

93 इसका तात्पर्य तत्वों से पशु शरीरों और शुक्राणुओं से जीवित प्राणियों के निर्माण से है।

94 यह जानवरों और मनुष्यों को संदर्भित करता है। चूँकि एक जानवर दुनिया का एक छोटा सा सूचकांक है, और मानवता ब्रह्मांड का एक छोटा सा हिस्सा है, इसलिए ब्रह्मांड में जो कुछ भी है उसका एक नमूना प्रत्येक मनुष्य के भीतर समाहित है।

95 यह फल देने वाले पेड़ों को संदर्भित करता है। मानो वे अपनी पतली शाखाओं पर सैकड़ों करघे और कारखाने लेकर चलते हैं, वे अद्भुत, समृद्ध रूप से सजे हुए पत्ते, फूल और फल बुनते हैं, और फिर इन फलों को पकाकर हमें देते हैं। चीड़ और देवदार जैसे राजसी पेड़ों ने काम करने के लिए कठोर, सूखी चट्टान पर अपने काम करने की बेंचें स्थापित की हैं।

96 यह "शरीर" अनाज, बीज और मक्खियों के अंडों को दर्शाता है। एक मक्खी अपने अंडे एल्म के पेड़ की पत्तियों पर छोड़ती है। अचानक, विशाल पेड़ अपनी पत्तियों को एक माँ के गर्भ, एक पालने, शहद जैसे भोजन से भरे भंडार में बदल देता है, जैसे कि यह, हालांकि फल देने वाला नहीं है, लेकिन सजीव फल पैदा करता है।

ऐसा लगता है मानो संसार के सभी प्राणियों को उसने अपने अधीन कर लिया है।

यदि आप छिपे हुए व्यक्ति के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आपको उसके सभी गुणों को उसके ऊपर आरोपित करना होगा।
पत्थरों, मिट्टी, जानवरों और प्राणियों में कौशल, कला और पूर्णताएँ हैं जो लोगों को चीज़ों से मिलती जुलती हैं। एक चमत्कार करने वाले प्राणी के स्थान पर,
उसके जैसे लाखों चमत्कार करने वाले लोग मौजूद हैं, जो एक दूसरे के विरोधी और समान दोनों हैं, और एक दूसरे के भीतर हैं, बिना किसी भ्रम और व्यवस्था को बिगाड़े। लेकिन हम जानते हैं कि जब दो शासक होते हैं

किसी मामले में हस्तक्षेप करने से भ्रम की स्थिति पैदा होती है। जब किसी गांव में दो मुखिया, किसी शहर में दो राज्यपाल या किसी देश में दो राजा होते हैं, तो अराजकता पैदा होती है। इसे देखते हुए,
क्या होगा यदि पृथ्वी पर अनंत संख्या में निरंकुश शासक हों?
एक ही स्थान पर और एक ही समय पर?

पाँचवाँ प्रमाण: महल के आभूषणों और शहर के शाही महलों को ध्यान से देखिए।
इस भूमि की व्यवस्था को देखो और इस दुनिया की कलात्मकता पर विचार करो। अगर
अनंत चमत्कारों और कौशलों वाले किसी छुपे हुए व्यक्ति की कलम काम नहीं कर रही है, या फिर
इन सभी आभूषणों को अचेतन कारणों, अंधे मौके और
बहरी प्रकृति, तो यहां हर पत्थर और घास का हर तिनका भी
एक चमत्कारिक सज्जाकार और एक अद्भुत लेखक बनने के लिए जो एक अद्भुत लेखन कर सके
एक पत्र में हज़ारों किताबें लिखना, तथा कला के अनंत भिन्न रूपों को प्रदर्शित करना
एक ही आभूषण में.

इन पत्थरों पर खुदे शिलालेखों को देखिए।97 प्रत्येक में पूरे महल के शिलालेख, शहर की व्यवस्था के लिए कानून और शासन के कार्यक्रम अंकित हैं।
राज्य का आयोजन। यह देखते हुए, शिलालेखों को एक पत्थर बनाना शामिल है
राज्य बनाने जितना ही अद्भुत। इसलिए प्रत्येक शिलालेख और कला का उदाहरण
उस छिपे हुए की घोषणा और उसकी एक मुहर। जैसा कि एक पत्र से पता चलता है
इसका लेखक, और एक कलात्मक शिलालेख अपने लिखने वाले को ज्ञात कराता है, तो फिर कैसे
फिर एक उत्कीर्णक, एक डिजाइनर, या एक सज्जाकार, जो एक विशाल पुस्तक को उत्कीर्ण करता है
एक अक्षर और एक ही में एक हजार अलंकरण प्रदर्शित करता है, नहीं
अपने शिलालेखों और अलंकरणों के माध्यम से जाना जाता है?

छठा प्रमाण: इस विशाल मैदान पर आओ!98 हम शिखर पर चढ़ेंगे
उस विशाल पर्वत के आस-पास के क्षेत्र को देखने के लिए हम इन दूरबीनों का उपयोग करते हैं-

---

97 यह मानवता को संदर्भित करता है, जो सृष्टि के वृक्ष का फल है, और वह फल जो इसके वृक्ष के कार्यक्रम और उसके सूचकांक को वहन करता है। ईश्वरीय शक्ति की कलम ने जो कुछ भी लिखा है, वह सब कुछ है।
ब्रह्मांड की महान पुस्तक हमारी रचना में संकुचित हो गई है।
दिव्य भाग्य में लिखा है कि एक विशाल वृक्ष में नाखून के आकार का फल भी शामिल किया गया है।

98 यह वसंत और गर्मियों में पृथ्वी के चेहरे को दर्शाता है, जब अनगिनत प्रजातियों के असंख्य व्यक्ति अस्तित्व में आते हैं; वे पृथ्वी पर "लिखे" जाते हैं। उन्हें भर्ती किया जाता है
और बिना किसी दोष के और पूर्ण क्रमबद्धता के साथ परिवर्तन से गुजर सकते हैं।
दयालु पेड़ों को बिछाया जाता है और फिर हटाकर उनकी जगह नए पेड़ लगा दिए जाते हैं।
थाल उठाने वालों के समान हैं, और सारे बगीचे कड़ाहों के समान हैं।

लार्स, इस देश में अजीबोगरीब चीजें घटित हो रही हैं। हर घंटे ऐसी चीजें घटित हो रही हैं जिनकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

देखो! ये पहाड़, मैदान और शहर अचानक बदल रहे हैं ताकि लाखों नई चीजें उनकी जगह ले सकें, एक के बाद एक, एकदम व्यवस्थित ढंग से। सबसे अजीबोगरीब बदलाव हो रहे हैं, जैसे कि अंदर और बीच में अनगिनत तरह के कपड़े बुने जा रहे हों। देखो, जानी-पहचानी फूलों वाली चीजों को व्यवस्थित ढंग से उसी तरह की लेकिन अलग रूप वाली दूसरी चीजों से बदल दिया गया है। सब कुछ ऐसे हो रहा है जैसे कि हर मैदान और पहाड़ एक पन्ना है जिस पर बिना किसी दोष या कमी के अनगिनत किताबें लिखी जा रही हैं। यह बिलकुल अकल्पनीय है कि ये चीजें, जो अनंत कला, कौशल और सटीकता को प्रदर्शित करती हैं, अपने आप बन जाती हैं। बल्कि, वे उस कलाकार को दिखाती हैं जो उन्हें बनाता है। जो ये सब करता है, वह ऐसे चमत्कार दिखाता है, क्योंकि उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। उसके लिए एक किताब लिखने जितना ही एक हजार किताबें लिखना आसान है।

अपने चारों ओर देखो! वह हर चीज़ को इतनी समझदारी से उसके उचित स्थान पर रखता है, ज़रूरतमंदों और योग्य लोगों पर इतनी उदारता से अपनी कृपा बरसाता है, सार्वभौमिक पर्दे और दरवाज़े इतनी उदारता से खींचता और खोलता है कि सभी संतुष्ट हो जाते हैं, और इतनी उदारता से मेज़ें सजाता है कि इस देश के हर एक सजीव प्राणी को एक ख़ास दावत दी जाती है। दरअसल, हर समूह और यहाँ तक कि हर एक व्यक्ति को उसके लिए ख़ास और उपयुक्त मेज़ें परोसी जाती हैं। क्या इससे ज़्यादा अकल्पनीय कुछ और हो सकता है कि इनमें से कोई भी मामला संयोग से हो, उद्देश्यहीन या व्यर्थ हो, या इसके पीछे कई हाथ हों, और इनका निर्माता हर चीज़ पर शक्तिशाली हो, और हर चीज़ उसके अधीन हो? तो, मेरे दोस्त, अपने इनकार पर अड़े रहने के लिए तुम कौन सा बहाना ढूँढ़ सकते हो?

सातवाँ प्रमाण: आओ मित्र! इस अद्भुत महलनुमा दुनिया के भागों के आपसी संबंधों पर नज़र डालें। देखो! सार्वभौमिक कार्य हो रहे हैं और सामान्य क्रांतियाँ इतनी सही व्यवस्था के साथ हो रही हैं कि मानो इस महल में सभी चट्टानें, मिट्टी और पेड़ इस दुनिया के सामान्य नियमों का पालन कर रहे हों और जो चाहें करने के लिए स्वतंत्र हों। सबसे दूर की चीज़ें एक-दूसरे की मदद के लिए आती हैं। पेड़- पौधों और पहाड़ों जैसे पहाड़ों पर अदृश्य से आते उस विचित्र कारवां को देखो। हर सदस्य अपने सिर पर भोजन की थालियाँ लेकर इस तरफ़ इंतज़ार कर रहे जानवरों के पास ला रहा है। उस गुंबद में शक्तिशाली बिजली के लैंप को देखो।100 यह न केवल प्रकाश प्रदान करता है, बल्कि उनके भोजन को भी शानदार ढंग से पकाता है; पकाया जाने वाला भोजन एक तार से बंधा होता है101

[99] यह उन पौधों और वृक्षों के “कारवां” को संदर्भित करता है जो सभी जानवरों का पोषण करते हैं।

[100] सूर्य की ओर संकेत.

101 डोरी और उससे जुड़ा भोजन पेड़ की पतली शाखाओं और स्वादिष्ट फलों को दर्शाता है
उस पर.

किसी अदृश्य हाथ से पकड़कर उसके सामने खड़ा कर दिया गया है। इन नपुंसक, कमज़ोर, निहत्थे छोटे जानवर। उनके सिर के ऊपर छोटे, स्प्रिंग जैसे "पंप" भरे हुए हैं नाज़ुक जीविका का.102 उन्हें केवल इनके खिलाफ अपना मुंह दबाना है पंपों को खिलाया जाना है।

संक्षेप में, इस संसार की सभी चीज़ें मानो आमने-सामने स्थित हों, मदद करती हैं एक दूसरे को देखते हुए, वे एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। एक-दूसरे के काम को बेहतर बनाने के लिए वे एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और मिलकर काम करते हैं। इस दुनिया में अजूबों की गिनती नहीं की जा सकती। आप उन्हें इस तरह से देख सकते हैं उद्धृत उदाहरणों के प्रकाश में। यह सब निर्णायक रूप से साबित करता है कि सब कुछ उस अद्भुत महल के निर्माता, इस महल के असली मालिक के अधीन है दुनिया में हर चीज़ उसकी तरफ़ से काम करती है, जैसे कोई आज्ञाकारी सैनिक अपने काम को अंजाम दे रहा हो उसकी आज्ञाओं के अनुसार सब कुछ होता है, उसकी आज्ञा के अनुसार चलता है, और उसकी बुद्धि के द्वारा व्यवस्थित होता है। सब कुछ दूसरों की मदद करके होता है उसकी उदारता, और हर चीज दूसरों की सहायता के लिए जल्दबाजी में बनाई जाती है हे मेरे मित्र, क्या तुम इस पर आपत्ति कर सकते हो?

आठवाँ प्रमाण: हे मेरे मित्र, जो अपने आपको बुद्धिमान समझता है, जैसा कि मैं स्वयं हूँ! तुम इस भव्य महल के स्वामी को पहचानना नहीं चाहते, जबकि सब कुछ उसी की ओर संकेत करता है, उसे दर्शाता है, तथा उसकी गवाही देता है। तुम ऐसी गवाही को कैसे नकार सकते हो? यह देखते हुए, तुम्हें यह करना ही होगा।

महल को भी नकार दो और कहो: "कोई संसार नहीं है, कोई अवस्था नहीं है।" अपने स्वयं के महल को भी नकार दो या तो अपने अस्तित्व को भी भूल जाओ और गायब हो जाओ, या फिर होश में आओ और मेरी बात सुनो।

महल में एकसमान तत्व और खनिज हैं जो इसे घेरे हुए हैं पूरी ज़मीन.103 ऐसा लगता है कि सब कुछ उन्हीं से बना है. इसका मतलब है जो उनका मालिक है, वह उनसे बनी हर चीज़ का मालिक है, क्योंकि जो कोई भी जो खेत का मालिक है, वह उसकी फसलों का भी मालिक है, और जो समुद्र का मालिक है, वह उसकी सामग्री का भी मालिक है। ये वस्त्र और सजे हुए बुने हुए कपड़े एक ही, समान सामग्री से बनाए जाते हैं बुनियादी चीज़। जाहिर है, जो इस चीज़ को बनाता है वह इसे तैयार भी करता है और इसे सूत में बदलता है, क्योंकि इस काम में दूसरों की भागीदारी की अनुमति नहीं होती है। इसलिए, इसमें कुशलता से बुनी गई सभी चीजें उसके लिए विशिष्ट हैं।

इस तरह की सभी प्रकार की बुनी हुई चीजें पूरे देश में पाई जाती हैं। सभी को एक साथ, एक के अंदर या दूसरों के बीच, एक ही तरह से और एक साथ बनाया जाना उसी क्षण। इसलिए, वे केवल एक ही व्यक्ति का काम हो सकते हैं जो

---

102 माताओं के स्तन.

103 तत्व और खनिज वायु, जल, प्रकाश और मिट्टी के तत्वों को दर्शाते हैं, जो कार्य करते हैं अनेक व्यवस्थित कर्तव्य: ईश्वरीय अनुमति से, वे सभी जरूरतमंद प्राणियों की मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं, ईश्वरीय आदेश से हर जगह प्रवेश करें और सहायता प्रदान करें, जीवन की आवश्यकताएं पहुंचाएं, और जीवित प्राणियों को दूध पिलाना। वे दिव्य कलाकृतियों की बुनाई और सजावट के लिए स्रोत, मूल और पालने के रूप में भी कार्य करते हैं।

एक आदेश से सब कुछ करता है। अन्यथा समय, फैशन और गुणवत्ता के संबंध में ऐसा पत्राचार और अनुरूपता असंभव होगी। इसलिए, प्रत्येक कुशलता से बनाई गई चीज उस छिपे हुए को घोषित करती है और उसकी ओर इशारा करती है। यह ऐसा है जैसे कि प्रत्येक प्रकार का फूलदार कपड़ा, कुशलता से बनाई गई मशीन और स्वादिष्ट निवाला एक मोहर, एक मुहर, उस चमत्कार करने वाले का संकेत है, और अपने अस्तित्व की भाषा में घोषणा करता है: "जो कोई भी मुझे कला के काम के रूप में अपनाता है, वह उन बक्सों और दुकानों का भी मालिक है जिनमें मैं पाया जाता हूँ।" प्रत्येक सजावट कहती है: "जिसने मुझे कढ़ाई की है, उसने कपड़े का वह रोल भी बुना है जिसमें मैं स्थित हूँ।" प्रत्येक डिली-

हर एक मशीन कहती है: "जिसने मुझे पकाया है, उसी के पास वह बर्तन भी है जिसमें मैं स्थित हूँ।" हर एक मशीन कहती है: "जिसने मुझे बनाया है, उसी ने पूरे देश में मेरे जैसे सभी लोगों को बनाया है। जो हमें हर जगह पालता है, वही है। जिस तरह से यह वही व्यक्ति है जो इस भूमि और इस महल का मालिक है, उसी तरह से हम भी उसके मालिक होने चाहिए।" यह ठीक उसी तरह है जैसे कि राज्य के स्वामित्व वाली कारतूस-बेल्ट या बटन के असली मालिक को उन कारखानों का मालिक होना चाहिए जिनमें वे बनाए जाते हैं। अगर कोई अनजाने में उस पर स्वामित्व का दावा करता है, तो उसे छीन लिया जाएगा।

ऐसे लोगों को राज्य की संपत्ति का मालिक होने का दिखावा करने के लिए दंडित किया जाएगा।

संक्षेप में, जिस प्रकार इस भूमि में प्रत्येक तत्व सर्वत्र व्याप्त है, उसी प्रकार उनका स्वामी भी वही हो सकता है जो सारी भूमि का स्वामी है। चूँकि इस भूमि में कला एक ही प्रकृति की है और कलाकृतियाँ एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, एक ही छाप प्रदर्शित करती हैं, इसलिए जो कुछ भी इस भूमि में फैला है, वह स्पष्ट रूप से एक ही प्राणी की कला का कार्य है। और, वह एक ही सब पर शासन करता है। इस प्रकार इस भव्य महल-जैसी भूमि में एकता का चिह्न, एकता की छाप है। कुछ वस्तुएँ एकरूप, अद्वितीय और एक ही प्रकृति की हैं, फिर भी सर्वव्यापी हैं। अन्य वस्तुएँ, यद्यपि विविध और प्रचुर हैं, समूह की एकता प्रदर्शित करती हैं क्योंकि वे एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं और हर जगह पाई जाती हैं। ऐसी एकता एकता को प्रदर्शित करती है। इसका अर्थ है कि इस भूमि का निर्माता, मेजबान और स्वामी एक ही होना चाहिए।

ध्यान से देखो! देखो कैसे अदृश्य के पर्दे के पीछे से एक मोटी डोरी प्रकट हुई है।104 देखो कैसे हज़ारों डोरियाँ उससे लटकी हुई हैं। उनकी नोकों को देखो, जिन पर हीरे, सजावट, उपकार और उपहार लगे हुए हैं। हर किसी के लिए एक ख़ास उपहार होता है। क्या तुम इतने मूर्ख हो सकते हो कि उस व्यक्ति को न पहचानो और उसका धन्यवाद न करो जो अदृश्य के पर्दे के पीछे से ऐसे अद्भुत उपकार और उपहार प्रदान करता है? क्योंकि अगर तुम उसे नहीं पहचानते, तो तुम्हें तर्क करना चाहिए: “डोरियाँ खुद ही इन हीरों और दूसरे उपहारों को बनाती और पेश करती हैं।” उस स्थिति में, तुम्हें हर डोरी को उसकी स्थिति और कार्य का श्रेय देना चाहिए

104 “मोटी डोरी” एक फल देने वाला पेड़ है, डोरियाँ उसकी शाखाएँ हैं, और हीरा धारी-
भाषण, अनुग्रह और उपहार के प्रतीक हैं विभिन्न फूल और फल जो उस पर लटकाए जाते हैं।

एक राजा [जिसके पास कुछ भी करने की चमत्कारिक शक्ति और ज्ञान है
जबकि, हमारी आँखों के सामने एक अदृश्य हाथ तार बना रहा है
और उन्हें उपहार देना! इसे देखते हुए, इस महल में सब कुछ इशारा करता है
उस चमत्कार करने वाले को पहचानो, न कि खुद को। अगर तुम उसे नहीं पहचानते,
महल में जो कुछ हो रहा है, उसे नकार कर आप एक प्रकार की दृढ़ अज्ञानता प्रदर्शित कर रहे हैं, जिसमें एक सच्चे मनुष्य को नहीं डूबना चाहिए।

नौवां प्रमाण: आओ, हे मित्र! तुम न तो पहचानते हो, न ही जानना चाहते हो।
महल के मालिक को पहचानें क्योंकि आप उसका अस्तित्व असंभव मानते हैं।
आप इनकार इसलिए करते हैं क्योंकि आप उनकी अद्भुत कला और अभिनय के तरीके को समझ नहीं पाते।
लेकिन ये सभी उत्कृष्ट चीजें, यह अद्भुत अस्तित्व, कैसे हो सकता है?
उसे पहचाने बिना समझाया? अगर हम उसे पहचान लें, तो यह सारा महल और
इसकी प्रचुर सामग्री को समझना उतना ही आसान है जितना कि इसमें मौजूद एक भी चीज़ को समझना।

यदि हम उसे नहीं पहचानते और यदि वह अस्तित्व में नहीं होता, तो एक बात तो तय है कि
पूरे महल की तरह ही इसे समझाना कठिन है, क्योंकि सब कुछ उतनी ही कुशलता से बनाया गया है
महल में चीज़ें इतनी प्रचुर और किफायती नहीं होतीं। कोई भी नहीं कर सकता
इनमें से कोई भी चीज़ जो हम देखते हैं, उसे देखें। संरक्षित पदार्थ के जार को देखें जो इससे जुड़ा हुआ है
वह डोरी.105 अगर वह उसकी छुपी हुई रसोई में चमत्कारिक ढंग से नहीं बनी होती, तो हम
हम इसे किसी भी कीमत पर नहीं खरीद सकते थे। लेकिन अब हम इसे कुछ सेंट में खरीदते हैं।

हर तरह की लगातार कठिनाई और असंभवता न होने से उत्पन्न होती है
उसे पहचानना। एक पेड़ को एक जड़ से, एक नियम के माध्यम से, और एक ही नियम के द्वारा जीवन दिया जाता है।
एक केंद्र। इसलिए, हज़ारों फल बनाना एक बनाने जितना ही आसान है
फल। यदि यह अलग-अलग, विशेष केंद्रों और जड़ों और अलग-अलग, विशेष कानूनों पर निर्भर करता, तो प्रत्येक फल को बनाना उतना ही कठिन होता जितना कि दूसरे फल को बनाना।
पेड़। यदि एक सेना का उपकरण एक कारखाने में, एक कानून के माध्यम से उत्पादित किया जाता है,
और एक केंद्र में, यह एक सैनिक को लैस करने जितना ही आसान है। लेकिन अगर प्रत्येक
यदि सैनिकों का साज-सामान कई स्थानों से खरीदा जाता है, तो एक सैनिक को सुसज्जित करने के लिए उतनी ही फैक्ट्रियों की आवश्यकता होगी जितनी पूरी सेना के लिए आवश्यक है।

यह बात इस सुव्यवस्थित महल, भव्य शहर, प्रगतिशील राज्य और भव्य दुनिया में भी सत्य है। यदि इन सब चीजों का आविष्कार
एक ही प्राणी को जिम्मेदार ठहराए जाने के कारण, उनकी अनंत प्रचुरता का हिसाब लगाना आसान है,
उपलब्धता और उदारता। अन्यथा सब कुछ इतना महंगा और
यह कहना कठिन है कि पूरी दुनिया भी एक चीज खरीदने के लिए पर्याप्त नहीं होगी।

दसवाँ प्रमाण: मेरे मित्र, हम यहाँ पंद्रह दिन से हैं।106 यदि हम
यदि हम अभी भी इस संसार के शासक और नियमों को नहीं जानते और नहीं पहचानते, तो हम दण्ड के पात्र हैं।

---

105 संरक्षित जार मर्सी के उपहारों (खरबूजे, तरबूज, अनार, और) को दर्शाता है
दूध के डिब्बे जैसे नारियल), जिनमें से प्रत्येक दिव्य शक्ति का संरक्षण है।

106 यह 15 वर्ष की आयु का संकेत है, जो जिम्मेदारी की आयु है।

हमारे पास कोई बहाना नहीं है, क्योंकि पंद्रह दिनों से हमारे साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है, मानो हमें राहत दी गई हो। लेकिन हमें खुद पर भी नहीं छोड़ा गया है। हम इतने नाजुक, संतुलित, सूक्ष्म, कुशलता से बनाए गए और शिक्षाप्रद प्राणियों के बीच भटक कर अव्यवस्था नहीं फैला सकते।

राजसी स्वामी का दण्ड कठोर होना चाहिए।

वह कितना प्रतापी और शक्तिशाली होगा कि उसने इस विशाल संसार को महल की तरह व्यवस्थित किया है और इसे प्रकाश चक्र की तरह घुमाया है। वह इस विशाल देश को एक घर की तरह चलाता है, जिसमें कुछ भी कमी नहीं है। एक बर्तन को भरने और फिर उसे खाली करने की तरह, वह इस महल, इस शहर, इस भूमि को लगातार पूर्ण व्यवस्था से भरता है और फिर पूर्ण बुद्धि से इसे खाली कर देता है। साथ ही, एक मेज को रखने और फिर उसे हटाने की तरह, वह पूरे देश में, मानो किसी अदृश्य हाथ से, एक के बाद एक बहुत से खाद्य पदार्थों के साथ विविध मेजें बिछाता है, और फिर उन्हें हटाकर नए व्यंजन लाता है।107 यह देखकर और अपने तर्क का उपयोग करके, आप समझेंगे कि उस भयानक महिमा में अनंत उदारता निहित है।

जिस तरह ये सारी चीज़ें उस अदृश्य सत्ता की एकता और संप्रभुता की गवाही देती हैं, उसी तरह एक के बाद एक होने वाली ये क्रांतियाँ और परिवर्तन उसकी स्थायीता की गवाही देते हैं। ऐसा कैसे? क्योंकि चीज़ों के कारण उनके साथ ही गायब हो जाते हैं, जबकि जिन चीज़ों को हम कारण मानते हैं, वे उनके बाद दोहराई जाती हैं। इसलिए किसी भी चीज़ को कारण नहीं माना जा सकता; सब कुछ एक अमर सत्ता के काम के रूप में होता है। उदाहरण के लिए, नदी की सतह पर चमकते बुलबुले आते-जाते रहते हैं, लेकिन उनके बाद आने वाले नए बुलबुले भी चमकते रहते हैं। इसलिए, जो चीज़ उन्हें चमकाती है, वह नदी के ऊपर खड़ी कोई स्थिर चीज़ है और उसमें स्थायी प्रकाश है।

इसी प्रकार, इस संसार में होने वाले तीव्र परिवर्तन और लुप्त होने वाली वस्तुओं का स्थान लेने वाली वस्तुएं, वही गुण ग्रहण करके यह दर्शाती हैं कि वे एक स्थायी और अमर सत्ता की अभिव्यक्तियाँ, शिलालेख, दर्पण और कलाकृतियाँ हैं।

ग्यारहवाँ प्रमाण: आओ, हे मित्र! अब मैं तुम्हें एक और निर्णायक प्रमाण दिखाऊँगा जो पिछले दस प्रमाणों के बराबर ही शक्तिशाली है। चलो जहाज़ पर चढ़ें और उस प्रायद्वीप की ओर चलें, क्योंकि इस रहस्यमयी दुनिया की कुंजियाँ वहीं हैं।108 इसके अलावा, हर कोई उस प्रायद्वीप की ओर देख रहा है, उम्मीद से-

---

107 ये मेज़ें गर्मियों में धरती के चेहरे को दर्शाती हैं, जिस दौरान रहमान की सैंकड़ों मेज़ें रहमत की रसोई में ताज़ा और अलग-अलग तरह से तैयार की जाती हैं, और फिर लगातार रखी और हटाई जाती हैं। हर बाग़ एक खाना पकाने का बर्तन है, और हर पेड़ एक थाली है।

108 जहाज़ इतिहास को दर्शाता है, प्रायद्वीप खुशी के युग, पैगंबर के युग के स्थान को दर्शाता है। इस युग के अंधेरे तट पर आधुनिक सभ्यता की पोशाक उतारकर, हम समय के समुद्र पर इतिहास के जहाज़ पर सवार होकर चलते हैं, खुशी के युग में अरब प्रायद्वीप पर उतरते हैं, और सृष्टि के गौरव से मिलते हैं क्योंकि वह अपना मिशन पूरा कर रहा है। हम जानते हैं कि वह ईश्वरीय एकता का इतना शानदार सबूत है कि वह पूरी धरती और समय के दो पहलुओं (अतीत और भविष्य) को रोशन करता है, और अविश्वास और गुमराही के अंधेरे को दूर करता है।

कुछ कर रहा हूँ और वहाँ से आदेश प्राप्त कर रहा हूँ। हम उतर चुके हैं। वहाँ पर बहुत बड़ी सभा को देखो, मानो देश के सभी महत्वपूर्ण लोग इकट्ठे हुए हैं। ध्यान से देखो, क्योंकि इस महान समुदाय का एक नेता है। चलो उसके बारे में जानने के लिए उसके करीब चलते हैं। उसकी शानदार सजावट देखो - एक हजार से भी अधिक।109 वह कितना जोरदार ढंग से बोलता है। उसकी बातचीत कितनी सुखद है। मैंने इन पंद्रह दिनों में जो कुछ भी वह कहता है, उसमें से थोड़ा-बहुत सीखा है, और आप भी मुझसे वही सीख सकते हैं। वह देश के शानदार चमत्कार दिखाने वाले सम्राट के बारे में बोल रहा है, जिसने उसे हमारे पास भेजा है। देखो, वह ऐसे चमत्कार दिखा रहा है कि हमें मानना पड़ता है कि वह सम्राट का विशेष दूत है।

ध्यान से देखिए। न केवल प्रायद्वीप के प्राणी उसकी बात सुन रहे हैं, बल्कि वह अपनी आवाज को पूरे देश में अद्भुत ढंग से पहुंचा रहा है।
दूर-दूर तक हर कोई उनका प्रवचन सुनने की कोशिश कर रहा है, यहाँ तक कि जानवर भी।
पहाड़ भी उसकी आज्ञाओं को सुन रहे हैं, इसलिए वे अपने स्थानों पर हिल रहे हैं। वे पेड़ उस स्थान की ओर बढ़ते हैं, जहाँ वह इशारा करता है। वह जहाँ चाहता है, वहाँ पानी लाता है। वह अपनी उँगलियों को भरपूर झरने की तरह बनाता है और दूसरों को उनसे पानी पीने देता है।

देखो, महल के गुंबद में वह महत्वपूर्ण दीपक उसके इशारे पर दो टुकड़ों में विभाजित हो जाता है।110 इसका मतलब है कि यह पूरी भूमि और इसके निवासी पहचानते हैं कि वह एक दूत है। मानो यह समझते हुए कि वह एक अदृश्य चमत्कार दिखाने वाले का सबसे प्रतिष्ठित और सच्चा अनुवादक है, उसकी संप्रभुता का संदेशवाहक है, उसके ताबीज का खुलासा करने वाला है, और उसकी आज्ञाओं को संप्रेषित करने वाला एक भरोसेमंद दूत है, वे उसकी बात मानते हैं और उसका पालन करते हैं। उसके चारों ओर, जो समझदार हैं वे जो कुछ भी कहते हैं, उसे स्वीकार करते हैं। उसकी आज्ञाओं का पालन करके और उसके इशारे का जवाब देकर, इस भूमि की हर चीज़, यहाँ तक कि पहाड़, पेड़ और हर जगह को रोशन करने वाला विशाल प्रकाश भी उसकी पुष्टि करता है।111

---

109 एक हजार सजावटें पैगंबर के चमत्कारों का प्रतीक हैं, जिनकी संख्या, सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं के अनुसार, लगभग एक हजार है।

110 महत्वपूर्ण चिराग चाँद है, जो उनके इशारे पर दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। जैसा कि मौलाना जामी ने कहा: "वह अनपढ़ व्यक्ति जिसने कभी लिखा नहीं, उसने अपनी उंगली की कलम से आसमान के पन्ने पर एक अलिफ़ [— अरबी वर्णमाला का पहला अक्षर] लिखा, और एक चालीस को दो पचास में बदल दिया।" दूसरे शब्दों में, चाँद को विभाजित करने से पहले, यह अरबी अक्षर मीम () जैसा दिखता था, जिसका गणितीय मूल्य चालीस है। विभाजित होने के बाद, यह दो ननों () जैसे दो अर्धचंद्र बन गए , जिनका मूल्य पचास है।

111 लेखक पैगंबर की पुकार का जवाब देने वाले पहाड़ों और पेड़ों का उल्लेख करता है। सैद नूरसी, द लेटर्स (तुर्की: द लाइट, इंक., 2007) (ट्र.) में उन्नीसवें पत्र के नौवें से बारहवें संकेतों को देखें। विशाल प्रकाश सूर्य है। एक बार पैगंबर अली की बाहों में सो रहे थे, जिन्होंने उनके प्रति गहरे प्रेम और सम्मान के कारण उन्हें नहीं जगाया। जब पैगंबर जागे, तो सूरज ढलने वाला था, और अली ने अभी तक दोपहर की नमाज़ नहीं पढ़ी थी। पैगंबर के आदेश पर, पृथ्वी थोड़ी पीछे की ओर घूम गई और सूरज क्षितिज के ऊपर दिखाई दिया ताकि अली प्रार्थना कर सकें। यह पैगंबर के प्रसिद्ध चमत्कारों में से एक है।

तो हे मित्र, क्या इस परम पुरुष के वचनों में कोई छल हो सकता है?
शानदार, भव्य और गंभीर प्राणियों में से एक, जो राजा के शाही खजाने से एक हजार सजावट के राशन लेकर आता है, चमत्कार दिखाने वाले राजा के बारे में और
उसके गुण, और उसके द्वारा दिए गए आदेशों में? वह बोलता है
पूरे विश्वास के साथ और देश के सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।
आपको लगता है कि उनमें कुछ धोखा है, तो आपको उनके अस्तित्व को नकारना होगा और
इस महल, उन दीपों और इस मण्डली की वास्तविकता। आपकी आपत्तियाँ
प्रमाण की शक्ति से खंडन किया जाएगा।

बारहवाँ प्रमाण: आओ, हे मित्र, अब तुम थोड़ा होश में आ गए हो। मैं तुम्हें एक और प्रमाण दिखाऊँगा जो पिछले प्रमाणों के योग जितना ही मजबूत है।
ग्यारह प्रमाण। इस शानदार फरमान को देखिए,112 जो यहाँ से आया है
ऊपर और जिसे हर कोई आश्चर्य से पूरे ध्यान से देखता है
या श्रद्धा। हज़ारों अलंकरणों वाला वह प्राणी अपनी व्याख्या कर रहा है
अर्थ। डिक्री की शानदार शैली हर किसी की प्रशंसा को आकर्षित करती है, और
इतने महत्वपूर्ण और गंभीर मामलों की बात करता है कि हर कोई बाध्य महसूस करता है
सुनो। यह उस व्यक्ति के सभी कार्यों, विशेषताओं और आदेशों का वर्णन करता है जो
इस भूमि पर शासन करता है, जिसने इस महल को बनाया है, और इन चमत्कारों को प्रदर्शित करता है।
यह आदेश पर एक शक्तिशाली मुहर है, हर पंक्ति और वाक्य पर एक अद्वितीय मुहर है। अर्थ, सत्य, आज्ञाएँ और ज्ञान के उदाहरण यह आदेश देता है
प्रदान करता है एक अद्वितीय शैली में हैं, जो एक स्टाम्प या की तरह भी कार्य करता है
मुहर।

संक्षेप में, यह सर्वोच्च आदेश उस सर्वोच्च सत्ता को उतनी ही स्पष्टता से दर्शाता है, जितनी स्पष्टता से
सूरज, ताकि जो अंधा नहीं है वह उसे "देख" सके। अगर आप यहाँ आए हैं
होश में आओ दोस्त, अभी इतना ही काफी है। और भी कोई आपत्ति है क्या?

जिद्दी आदमी ने जवाब दिया: "इन सभी सबूतों के सामने मैं केवल यही कह सकता हूँ कि
कहो: 'सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है,' क्योंकि मैं इस बात पर विश्वास करने लगा हूँ कि
सूर्य की तरह उज्ज्वल और दिन के उजाले की तरह स्पष्ट, कि इस भूमि में एक ही है
पूर्णता के स्वामी, यह संसार ऐश्वर्य का एकमात्र स्वामी, और यह महल
अनुग्रह के एकल निर्माता। भगवान मुझे बचाने के लिए आप पर प्रसन्न हों
मेरी पिछली जिद और मूर्खता। प्रत्येक प्रमाण सत्य को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त था। लेकिन चूँकि प्रत्येक उत्तरवर्ती प्रमाण, अधिक स्पष्ट और सूक्ष्मतर होता गया,
ज्ञान के अधिक सुखद, स्वीकार्य और उज्ज्वल स्तर, पहचान के दृश्य और प्रेम की खिड़कियाँ खुली और प्रकट हुईं, मैंने प्रतीक्षा की और सुना।"

ईश्वरीय एकता और ईश्वर में विश्वास के महान सत्य को इंगित करने वाला दृष्टान्त
ईश्वर पूर्ण है। दयालु, ज्ञानवान की कृपा से

---

112 यह महान् आदेश कुरान को संदर्भित करता है, और मुहर इसकी चमत्कारिकता को संदर्भित करती है।

कुरान की शिक्षा और विश्वास के प्रकाश के आधार पर, अब मैं एक परिचय के बाद ईश्वरीय एकता के सूर्य से निकलने वाली बारह किरणें दिखाऊंगा, जो ईश्वरीय एकता के सूर्य से निकलने वाली बारह किरणें हैं।
दृष्टांत में बारह प्रमाण हैं। सफलता और मार्गदर्शन केवल परमेश्वर से ही मिलता है।

दूसरा स्टेशन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ईश्वर हर चीज़ का निर्माता है, और वह हर चीज़ का संरक्षक है;
आकाश और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं। (39:62)

अतः वह महिमावान है, जिसके हाथ में सम्पूर्ण राज्य है।
और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (36:83)

कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका ख़ज़ाना हमारे पास न हो और हम उसे भेजते हैं
परन्तु एक उचित और निश्चित मात्रा में। (15:21)

कोई भी चलता फिरता प्राणी ऐसा नहीं है जिसे वह अपनी अगली चोटी से थामे न रखे।
निस्संदेह मेरा रब सीधी राह पर है। (11:56)

परिचय

मेरे "क़तरा" (दिव्य एकता के प्रमाणों के सागर से एक बूंद) में, जो ईश्वर में विश्वास पर चर्चा करता है, जो विश्वास के प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है, मैंने संक्षेप में बताया कि प्रत्येक प्राणी परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है और उसकी गवाही देता है। अस्तित्व और एकता को पचपन तरीकों से समझाता हूँ। मेरे "नुक्ता" में, (एक बिंदु से) ईश्वर के ज्ञान का प्रकाश)113 मैंने सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व और एकता के प्रमाणों में से चार सार्वभौमिकों का उल्लेख किया है। मेरे लगभग बारह वर्षों के अनुभव में, मैंने चार सार्वभौमिकों का उल्लेख किया है। अरबी ग्रंथों में, मैंने सर्वशक्तिमान के लिए सैकड़ों निर्णायक प्रमाणों पर चर्चा की ईश्वर का अस्तित्व और एकता। इसलिए मैं यहाँ इस विषय पर विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा। गहराई, लेकिन केवल भगवान में विश्वास के सूरज से बारह glees संबंधित हैं। एक बार मैं इनके बारे में अरबी में संक्षेप में लिखा है।

बारह झलकियाँ पहली

झलक: ईश्वरीय एकता की पुष्टि दो प्रकार की होती है।
उदाहरण के लिए, यदि किसी महत्वपूर्ण, अमीर आदमी का सामान किसी बाज़ार या कस्बे में आता है, उनके स्वामित्व को दो तरीकों से जाना जा सकता है। एक है संक्षिप्त निर्णय: सामान को देखकर, एक साधारण व्यक्ति यह निष्कर्ष निकालता है कि केवल वह अमीर आदमी ही उस पर स्वामित्व रखता है। इतनी सारी वस्तुओं का मालिक हो सकता है। हालाँकि, अगर कोई इतने संक्षिप्त निष्कर्ष के साथ यदि कोई व्यक्ति उन पर निगरानी रखता है, तो बहुत कुछ चोरी हो सकता है या अन्य लोग आंशिक स्वामित्व का दावा कर सकते हैं। दूसरा तरीका यह है कि प्रत्येक पैकेट पर लगे लेबल को पढ़ें, पहचानें कि क्या वह वास्तव में मौजूद है।

---

113 कतरा और नुक्ता को मथनावी ("अल-मथनावी अल-नूरी: सीडबेड ऑफ द लाइट") में शामिल किया गया है ।
द लाइट, 2007. (ट्र.)

हर रोल पर मुहर लगाओ, और हर बिल पर मुहर को जानो, और इस प्रकार यह निष्कर्ष निकालो कि सब कुछ उसी व्यक्ति का है। असल में सब कुछ उसी की ओर इशारा करता है।

इसी प्रकार, ईश्वरीय एकता की पुष्टि के भी दो प्रकार हैं।
आस्तिक की सतही और सामान्य पुष्टि: "सर्वशक्तिमान ईश्वर एक है,
बिना किसी साथी या समान के। यह ब्रह्मांड उसका है।" दूसरा सच्चा प्रतिज्ञान है। हर चीज़ पर उसकी शक्ति की मुहर, उसके आधिपत्य की मुहर और उसकी कलम की छाप देखकर, व्यक्ति हर चीज़ से सीधे उसके प्रकाश की ओर एक खिड़की खोलता है। तब व्यक्ति लगभग निश्चितता के साथ पुष्टि करता है और विश्वास करता है

प्रत्यक्ष अवलोकन से यह पता चलता है कि प्रत्येक वस्तु अस्तित्व में आती है
उसकी शक्ति का हाथ, कि उसकी दिव्यता में उसका कोई साझेदार या सहायक नहीं है और
आधिपत्य और उसकी पूर्ण संप्रभुता। इसके माध्यम से, व्यक्ति एक डिग्री प्राप्त करता है
दिव्य उपस्थिति के बारे में स्थायी जागरूकता का। अब मैं कुछ का उल्लेख करूँगा
“किरणें” परमेश्वर की एकता की सच्ची, स्थापित पुष्टि को प्रदर्शित करती हैं।

नोट: दैवीय गरिमा और भव्यता के लिए भौतिक या प्राकृतिक की आवश्यकता होती है
सत्ता के संचालन के सामने कारणों को एक पर्दा होना चाहिए।
ब्रह्माण्ड में शाश्वत रूप से प्रार्थित शक्ति है। दिव्य एकता और
महिमा, साथ ही ईश्वर की पूर्ण स्वतंत्रता और उत्कृष्टता, के लिए आवश्यक है
यह। शाश्वत प्रभु के अधिकारी, वे सभी जो उसकी आज्ञाएँ पहुँचाते हैं (जैसे,
हवा, स्वर्गदूत या प्राकृतिक कारण), कार्यकारी अधिकारी नहीं हैं जिनके माध्यम से वह अपनी संप्रभुता का प्रयोग करता है, बल्कि उसकी संप्रभुता के संदेशवाहक हैं और स्वर्गदूतों की तरह,
संसार के पालनहार, प्रशासक, पालनकर्ता और प्रशिक्षक के रूप में उनके कार्यों के पर्यवेक्षक और अधीक्षक। वे इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि वे बनाते हैं
शक्ति की गरिमा और प्रभुत्व की महिमा को जानते हैं, इसलिए आधार और नीच
चीजों को सीधे तौर पर सत्ता से नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

मानव राजा के विपरीत, जो मूलतः कमज़ोर और दरिद्र होता है, परमेश्वर
सर्वशक्तिमान अपने अधिकार का प्रयोग करने के लिए अधिकारियों का उपयोग नहीं करता है। यद्यपि प्रत्येक चीज़ कारण और प्रभाव के सिद्धांत के अनुसार घटित होती है, यह
मन की सतही दृष्टि में शक्ति की गरिमा को सुरक्षित रखना है।

दर्पण की तरह, हर चीज़ के दो चेहरे होते हैं। एक दृश्य, भौतिक दुनिया को देखता है, दर्पण के रंगीन चेहरे जैसा दिखता है, और यह हिसाब लगाने का एक तरीका हो सकता है
विभिन्न "रंगों" और अवस्थाओं के लिए। दूसरा चेहरा दर्पण की चमक की तरह है
चीज़ों के आंतरिक आयाम का सामना करता है और उन्हें देखता है और उनमें समाहित होता है, जहाँ
ईश्वरीय शक्ति प्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है। चीज़ों के प्रत्यक्ष, भौतिक स्वरूप में,
ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जो गरिमा के साथ असंगत प्रतीत होती हैं
शाश्वत रूप से प्रार्थित शक्ति की पूर्णता। इस चेहरे में, दिव्य
शक्ति अपने कार्यों को कारण और प्रभाव के पीछे छिपाती है ताकि वे स्थितियाँ
कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। लेकिन वास्तविकता में और आंतरिक आयाम के संबंध में-

चीजों के आयाम में, सब कुछ सुंदर और पारदर्शी है। यह आयाम है
ईश्वरीय शक्ति के प्रत्यक्ष संचालन के लिए उपयुक्त है और शक्ति को
इससे संबद्ध रहें। इस आयाम में जो कुछ भी घटित होता है, वह इसकी गरिमा के साथ असंगत नहीं है। इस प्रकार
कारणों का कार्य पूरी तरह से स्पष्ट है और वे
इस आयाम के संबंध में कोई प्रभाव नहीं है।

स्पष्ट कारणों का एक और कारण यह है कि लोग सतही तौर पर निर्णय लेते हैं। वे चीज़ों के बारे में अनुचित शिकायतें और निराधार आपत्तियाँ उठाते हैं
या ऐसी घटनाएँ जो उन्हें अप्रिय लगती हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो पूरी तरह से
बस, अस्तित्व के इस भौतिक आयाम में कारणों को एक परदे के रूप में रखा है
ऐसी चीजों या घटनाओं और खुद को ताकि ऐसी टिप्पणियां न हों
जो दोष और गलतियाँ चीज़ों और घटनाओं को अप्रिय बनाती हैं, वे मूलतः लोगों और चीज़ों में ही उत्पन्न होती हैं।

इस सूक्ष्म बिन्दु का एक अर्थपूर्ण उदाहरण यहां दिया गया है: अज़्राईल, देवदूत
मृत्यु के विषय में, एक बार सर्वशक्तिमान ईश्वर से कहा: "आपके सेवक शिकायत करेंगे
और मुझसे नाराज़ हो, क्योंकि मैं उनकी आत्माएँ ले लेता हूँ।" सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उसे अपनी भाषा में बताया
बुद्धि का वचन: "मैं तुम्हारे और मेरे लोगों के बीच विपत्तियों और बीमारियों का पर्दा डालूँगा
नौकरों को इस तरह से रखो कि वे उनकी शिकायत करें और तुमसे नाराज न हों।" इस प्रकार बीमारी एक पर्दा है
जिसके माध्यम से लोग उस बात को जोड़ सकते हैं जो उनके बारे में अप्रिय है।
मृत्यु। दिखने में भले ही यह अप्रिय लगे, लेकिन वास्तव में मृत्यु के कई बुद्धिमानी भरे संकेत हैं।
और सुंदर पहलू, और वे इज़्राईल के कर्तव्य के लिए जिम्मेदार हैं। लेकिन इज़्राईल
एक पर्यवेक्षक भी, दिव्य शक्ति का एक पर्दा, ताकि लोगों को इसका श्रेय मिले
उसे मृत्यु के वे पहलू याद आते हैं जिन्हें उनकी सतही तर्क-वितर्क समझ नहीं पाती
ईश्वरीय दया की पूर्णता के साथ। ईश्वरीय गरिमा और भव्यता की आवश्यकता है कि
कारणों को दिव्य शक्ति के हाथ के सामने एक पर्दा होना चाहिए, जबकि दिव्य एकता और
महामहिम मांग करते हैं कि कारण वास्तविक प्रभाव से अपने हाथ पीछे खींच लें।

दूसरी झलक: ब्रह्माण्ड के इस बगीचे को देखो, इस सृष्टि के बगीचे को देखो।
धरती। सितारों से जगमगाते आसमान के खूबसूरत चेहरे पर गौर करें। आप देखेंगे कि
उनमें बिखरे और फैले हुए प्रत्येक प्राणी पर एक अद्वितीय छाप होती है
निर्माता, सभी चीज़ों का रचयिता। प्रत्येक प्रजाति, रात के पन्नों पर "लिखी" गई है
और दिन, वसंत और गर्मियों, और दिव्य शक्ति की कलम द्वारा प्रकाशित, भालू
शानदार और अद्वितीय मुहरें, जो सभी महाप्रतापी निर्माता की हैं,
सर्व-सुन्दर सृष्टिकर्ता। मैं उदाहरण के तौर पर केवल कुछ का ही उल्लेख करूंगा।

असंख्य टिकटों में से, इस पर विचार करें कि उसने कितने टिकट रखे हैं
जीवन पर: वह एक चीज़ से सब कुछ बनाता है और अनेक चीज़ों से एक चीज़ बनाता है
वह एक जानवर के शरीर के अनगिनत अंगों और प्रणालियों को बनाता है
शुक्राणु-असर तरल पदार्थ और साधारण पीने के पानी से निषेचन के लिए।
एक ही चीज़ से सब कुछ बनाना निश्चित रूप से एक परम सर्वशक्तिमान का काम है।

शक्तिशाली। साथ ही, वह जो असंख्य प्रकार के वनस्पति या पशु भोजन में निहित सभी पदार्थों को पूर्ण क्रमबद्धता के साथ विशिष्ट शरीरों में परिवर्तित करता है, और उनसे प्रत्येक और विभिन्न शारीरिक अंगों के लिए एक अद्वितीय त्वचा बुनता है।
वह निश्चय ही सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है।114

जीवन और मृत्यु का निर्माता इस कार्यशाला में जीवन को नियंत्रित करता है
अपनी बुद्धि के अनुसार संसार को इस प्रकार से और ऐसे चमत्कारी तरीकों से
उनके रचनात्मक आदेशों के दायरे से जारी कानून, कि केवल एक ही जो
संपूर्ण ब्रह्माण्ड को अपनी प्रशासनिक शक्ति की मुट्ठी में रखता है और
पूर्णतया बिना शर्त प्राधिकारी उस कानून को लागू कर सकते हैं तथा उसे लागू कर सकते हैं।
इस प्रकार, यदि आप तर्क कर सकते हैं और आपके पास ऐसा हृदय है जो "देखता है," तो आप समझ जाएँगे
एक ही चीज़ से सब कुछ पूर्ण सहजता और क्रम से उत्पादित करना, तथा
कुशलतापूर्वक कई चीजों को पूर्ण सामंजस्य के साथ एक चीज में बदलना
सुव्यवस्थितता, निर्माता, हर चीज के निर्माता के लिए एक अद्वितीय मुहर है।

यदि आप देखें कि, ब्रॉडक्लोथ के सौ रोल बुनाई के साथ-साथ
एक औंस कपास से रेशम और लिनन जैसी अन्य सामग्री बनाई जा सकती है, एक चमत्कारिक काम करने वाला व्यक्ति इससे हलवा और पेस्ट्री जैसे कई खाद्य पदार्थ भी बना सकता है; और यदि आप
देखो कि वह लोहे और पत्थर से सोना, शहद और मक्खन को कुशलता से बनाता है,
पानी और मिट्टी, जिसे वह अपने हाथ में पकड़ता है, आप निष्कर्ष निकालेंगे कि उसके पास एक है
विशेष कला, काम करने का एक विशेष तरीका, और यह कि सभी सांसारिक तत्व और पदार्थ उसके आदेश और अधिकार के अधीन हैं। सचमुच, जीवन में दिव्य शक्ति और बुद्धि का प्रकटीकरण इस उदाहरण से कहीं अधिक अद्भुत और विस्मयकारी है। यह जीवन पर कई छापों में से केवल एक है।

तीसरी झलक: इस सतत गतिशील ब्रह्मांड में घूमते हुए जीवों को देखिए।
ब्रह्मांड में, इन घूमते हुए पिंडों में। आप देखेंगे कि सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर ने प्रत्येक पर कई मुहरें लगाई हैं। उनमें से एक यह है:
जीवित प्राणी, उदाहरण के लिए, एक मनुष्य, ब्रह्मांड का एक लघु रूप है,
सृष्टि के वृक्ष का फल, तथा इस संसार का बीज, प्रत्येक मनुष्य के लिए
इसमें अधिकांश प्रजातियों के नमूने शामिल हैं। ऐसा लगता है मानो प्रत्येक जीवित प्राणी
ब्रह्मांड से सबसे सूक्ष्म और संवेदनशील संतुलन के साथ आसुत एक बूंद।
अतः किसी जीव को बनाने और उसका स्वामी बनने के लिए उस पर पूर्ण नियंत्रण होना आवश्यक है। जगत।

यदि आप कल्पनाओं और भ्रमों में नहीं खोए हैं, तो आप समझ जायेंगे कि
शक्ति का एक शब्द बनाएं, उदाहरण के लिए, एक शहद-मधुमक्खी, एक प्रकार का छोटा सूचकांक

---

114 अनगिनत प्राणी एक ही प्रकार का भोजन खाते हैं और एक ही तत्वों से बने होते हैं, फिर भी हर किसी का चेहरा, उंगलियों के निशान, चरित्र, महत्वाकांक्षाएं, भावनाएं आदि अलग-अलग होती हैं। एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता का अकाट्य प्रमाण जो उसकी पूर्ण इच्छा है और वह जो चाहे, जिस तरह चाहे कर सकता है। (ट्र.)

अधिकांश चीजें, मानवता पर "लिखना" (एक पृष्ठ) ब्रह्मांड की अधिकांश विशेषताएं, एक छोटे से अंजीर के बीज (एक बिंदु) में पूरे अंजीर के पेड़ का कार्यक्रम शामिल करना,
हमारे हृदय में (एक अक्षर में) सभी दिव्य नामों के कार्य प्रकट होते हैं
पूरे ब्रह्मांड में, मानव स्मृति में रिकॉर्ड करने के लिए, जो स्थित है
दाल के दाने के बराबर जगह, एक पुस्तकालय भरने के लिए पर्याप्त "लेखन", और उसमें शामिल करने के लिए
ब्रह्मांड में सभी घटनाओं की विस्तृत सूची, निश्चित रूप से एक अद्वितीय टिकट है
सभी चीज़ों के निर्माता और ब्रह्मांड के महाप्रभु को।

इस प्रकार यदि जीवित प्राणियों पर प्रभुत्व की एक मुहर अपना प्रकाश प्रदर्शित करती है और
अपने संकेतों को इस तरह से पढ़ता है, अगर आप सभी पर विचार करने में सक्षम थे
उन मुहरों को एक साथ जोड़कर, क्या आप घोषणा नहीं करेंगे: "सर्व-महिमावान है वह जो है
उसकी अभिव्यक्ति की तीव्रता से छिपा हुआ है।”

चौथी झलक: विभिन्न बहुरंगी प्राणियों को ध्यान से देखें
स्वर्ग के "महासागर" में तैरते हुए और पृथ्वी के चेहरे पर बिखरे हुए। प्रत्येक
अनन्त सूर्य के अद्वितीय हस्ताक्षर हैं। ठीक वैसे ही जैसे जीवन और
जीवित प्राणियों के व्यक्तित्व के बारे में तो स्पष्ट जानकारी है ही, साथ ही उनके जीवन देने के कार्य पर उनके हस्ताक्षर भी स्पष्ट हैं।
तुलनाएँ गहरे अर्थों को अधिक आसानी से समझने योग्य बनाती हैं, मैं एक उपयुक्त तुलना प्रस्तुत करता हूँ। सूर्य पर विचार करें: ग्रहों से लेकर पानी की बूंदों तक, कांच के टुकड़ों और चमकते बर्फ के टुकड़ों तक, सूर्य की छवि और

प्रतिबिंब, सूर्य के लिए विशेष रूप से एक उज्ज्वल कार्य (प्रभाव), स्पष्ट है। यदि आप करते हैं
यदि आप इन असंख्य वस्तुओं में दिखने वाले छोटे-छोटे सूर्यों को सूर्य के प्रतिबिम्ब के रूप में स्वीकार नहीं करते, तो आप इतने मूर्ख होंगे कि यह स्वीकार कर लेंगे कि वास्तविक सूर्य भी सूर्य के प्रतिबिम्ब के रूप में ही दिखाई देते हैं।
सूर्य पानी की प्रत्येक बूंद में, तथा सूर्य के सामने रखे प्रत्येक कांच के टुकड़े और पारदर्शी वस्तु में विद्यमान है।

इसी प्रकार, अनन्त सूर्य के देवताओं में से जीवन देने के सम्बन्ध में भी,
प्रत्येक जीव पर उसने ऐसा हस्ताक्षर कर रखा है कि
यदि सभी कारण एक साथ आ जाएं और उनमें से प्रत्येक स्वतंत्र हो जाए और जो चाहे वह कर सके, तो वे उस हस्ताक्षर की नकल नहीं कर सकते।
दिव्य शक्तियाँ) प्रत्येक दिव्य नामों की अभिव्यक्ति के लिए केन्द्र बिन्दु हैं,
जो अनन्त सूर्य की किरणों के समान हैं। इसलिए, यदि वह अद्भुत शिलालेख
कला की, ज्ञान की वह विचित्र रचना, रहस्य की वह अभिव्यक्ति
जीवित प्राणियों द्वारा प्रदर्शित एकता का श्रेय एकल और
हमेशा के लिए प्रार्थना करने वाले के लिए, इसका मतलब है पूरी तरह से गुमराह होना और अंधविश्वास में पड़ जाना।
क्योंकि इसका मतलब होगा प्रत्येक जीवित प्राणी को एक अनंत रचनात्मक शक्ति, एक सर्वव्यापी ज्ञान और एक पूर्ण इच्छा देना जिसके द्वारा वह दुनिया पर शासन कर सके
ब्रह्मांड। संक्षेप में, प्रत्येक में सभी शाश्वत विशेषताएँ होंगी जो अद्वितीय हैं
अनिवार्य रूप से विद्यमान एक। इस प्रकार, किसी भी वस्तु के प्रत्येक परमाणु को
दिव्य हो, क्योंकि प्रत्येक परमाणु, विशेष रूप से बीज, को ऐसा चरित्र या गुण दिया जाता है-

इसका मतलब है कि वे प्रणाली के सटीक अनुसार एक स्थिति लेते हैं
वे जीव जिनके वे अंग हैं। परमाणु और बीज भी उस पूरी प्रजाति से संबंधित स्थिति में होते हैं जिससे उनसे विकसित होने वाला जीव संबंधित होता है, क्योंकि
एक बीज इस तरह से कार्य करता है कि वह अपनी प्रजाति की निरंतरता के लिए और प्रजाति का झंडा गाड़ने के लिए ठीक उसी स्थान पर बोया जाता है।

हम यह भी कह सकते हैं कि बीज एक स्थान ग्रहण कर लेता है ताकि जीवित प्राणी उस स्थान पर पहुँच सके।
प्राणी अन्य सभी प्राणियों के साथ अपने लेन-देन और संबंध जारी रख सकता है
जिससे वह अपनी आवश्यक जीविका प्राप्त करने के लिए जुड़ा हुआ है। यदि, तब, वह
बीज या परमाणु किसी परम शक्तिशाली के आदेश के अधीन कार्य नहीं करता है और
उसका उससे सम्बन्ध टूट गया है, तो उसे एक आँख चाहिए जिससे
सभी चीजों को देखना और सभी चीजों को समाहित करने वाली चेतना।

संक्षेप में, यदि पानी की बूंदों, कांच के टुकड़ों और बहुरंगी फूलों में सूर्य की छवि या प्रतिबिंब को सूर्य के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो हमें यह अवश्य मानना चाहिए कि सूर्य का प्रतिबिंब सूर्य के लिए नहीं है।
असंख्य सूर्यों के अस्तित्व को स्वीकार करें। यह एक अकल्पनीय अंधविश्वास है। इसी तरह, अगर हर उस चीज़ को जो अस्तित्व में है, भगवान के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है
परम सर्वशक्तिमान, हमें अनेकों के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए
ब्रह्मांड में देवताओं को परमाणु के रूप में माना जाता है। ऐसा विचार स्पष्ट रूप से अस्वीकार्य है।

संक्षेप में, प्रत्येक परमाणु में तीन खिड़कियाँ होती हैं जो परमाणु की ओर खुलती हैं।
एकता और अनिवार्य अस्तित्व का शाश्वत सूर्य का प्रकाश।

पहली खिड़की: एक सैनिक के सेना के सभी स्तरों से संबंध होते हैं, कर्तव्य होते हैं
उन संबंधों के अनुसार, और उन कार्यों के अनुसार
कर्तव्य और सेना के नियम। यह आपके शरीर के प्रत्येक परमाणु के साथ भी ऐसा ही है।
उदाहरण के लिए, आपकी आंख की पुतली में स्थित एक परमाणु का आपके साथ समान संबंध और कर्तव्य हैं।
आँखें, सिर, प्रजनन शक्तियाँ, आकर्षण और प्रतिकर्षण; आपकी मोटर के साथ
और संवेदी तंत्रिकाएँ, और नसें और धमनियाँ, जो आपके रक्त और
अपने शरीर के साथ-साथ अपने शरीर के बाकी हिस्सों पर भी काम करें। इससे पता चलता है कि हर शारीरिक परमाणु एक शाश्वत, सर्वशक्तिमान परमेश्वर का कार्य है और उसी के आदेश के अधीन कार्य करता है।

दूसरी खिड़की: एक वायु अणु अंदर आ सकता है, प्रवेश कर सकता है और काम कर सकता है
कोई भी फूल या फल। अगर यह किसी के अधीन नहीं होता और किसी के अधीन काम नहीं करता
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आदेशानुसार, इसे सभी फूलों और फलों की सभी प्रणालियों और संरचनाओं को जानना होगा और यह भी कि वे कैसे बनते हैं, नीचे तक।
उनकी परिधीय रेखाओं तक। तो, वह अणु प्रकाश की किरणों को दर्शाता है
दिव्य एकता सूर्य की तरह है। यही बात प्रकाश, मिट्टी और पानी पर भी लागू होती है।
विज्ञान कहता है कि चीजों का मूल स्रोत हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन और नाइट्रोजन हैं। ये सभी मिट्टी, हवा, पानी और अन्य जीवों के घटक हैं।
रोशनी।

तीसरी खिड़की: जानवरों के वीर्य द्रव की तरह, जिनमें
सभी पुष्पित और फलित पौधों के बीज एक ही संरचना और प्रकृति के होते हैं
कार्बन, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बने पौधों में भी
एक ही रचना और प्रकृति। एकमात्र बुनियादी अंतर कार्यक्रम का है
उनके पूर्वज ईश्वरीय नियति द्वारा उनमें जमा किए गए हैं। अगर हम अलग-अलग
मिट्टी से भरे बर्तन में विभिन्न प्रकार के बीज, जो विशेष या
कुछ तत्वों के प्रभाव से, प्रत्येक पौधा अपने अद्भुत रूप, आकार में दिखाई देगा,
और अद्भुत सदस्य। यदि मिट्टी, हवा और पानी के परमाणुओं को वश में नहीं किया गया होता
वह जो प्रत्येक वस्तु को उसकी सभी विशेषताओं, संरचनाओं, जीवनचक्रों और जीवन की स्थितियों के साथ जानता है; वह जो उसे सब कुछ दे सकता है
हर चीज़ के लिए उपयुक्त अस्तित्व और उसकी ज़रूरत की हर चीज़; और जिसकी शक्ति
सब कुछ कम से कम प्रतिरोध के बिना अधीन है, प्रत्येक मिट्टी का परमाणु होगा
इसमें "अभौतिक कारखानों" को शामिल करना होगा जो सभी संयंत्रों का भविष्य निर्धारित करते हैं
रूपों और जीवन के साथ-साथ सभी फूलों और के बराबर कार्यशालाओं की संख्या
फल देने वाले पौधे, ताकि प्रत्येक इन विभिन्न पौधों का मूल हो सके
जो रूप, स्वाद, रंग और सदस्यों में भिन्न होते हैं। या प्रत्येक पौधे को
एक सर्वव्यापी ज्ञान हो और खुद को बनाने में सक्षम हो। अन्य में
शब्दों में, यदि किसी प्राणी का सर्वशक्तिमान ईश्वर से संबंध टूट गया है, तो आपको अवश्य ही
मिट्टी के परमाणुओं की संख्या जितनी है, उतने ही देवताओं को स्वीकार करना। यह पूरी तरह से अस्वीकार्य है।

हालाँकि, जब आप स्वीकार करते हैं कि परमाणु एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ के आदेश के तहत काम कर रहे हैं, तो सब कुछ बहुत आसान हो जाता है।
एक साधारण सैनिक, एक शक्तिशाली राजा के नाम पर और उस पर भरोसा करके
अपनी शक्ति के बल पर वह पूरे लोगों को पलायन करने पर मजबूर कर सकता है, दो समुद्रों को जोड़ने पर मजबूर कर सकता है [नहर बनवाकर], या किसी दूसरे राजा को बंदी बनाकर। इसी तरह,
शाश्वत राजा की आज्ञा और अनुमति, एक मक्खी एक तानाशाह को मार सकती है, एक चींटी एक तानाशाह को मार सकती है,
दूसरे तानाशाह के महल को नष्ट कर दो,115 और अंजीर का बीज अंजीर के पेड़ का बोझ उठा सकता है।

प्रत्येक परमाणु में निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता के दो और सच्चे गवाह होते हैं। अपनी पूर्ण शक्तिहीनता के बावजूद, प्रत्येक परमाणु
अनेक महत्वपूर्ण कार्य करता है; अपनी निर्जीवता के बावजूद, प्रत्येक परमाणु कार्य करता है
सार्वभौमिक व्यवस्था के अनुरूप, जो सार्वभौमिक चेतना को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार प्रत्येक परमाणु अपनी नपुंसकता के माध्यम से परम सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है और ब्रह्मांड के क्रम के अनुरूप कार्य करके उसकी एकता की गवाही देता है।

प्रत्येक जीव में दो लक्षण भी निहित हैं कि वह अद्वितीय है।
पूर्ण एकता और शाश्वत रूप से प्रार्थित एक। प्रत्येक में ईश्वर की मुहर है

---

[115] एक मक्खी निम्रोद [एक मेसोपोटामिया राजा] की नाक में घुस गई और उसके मस्तिष्क तक पहुंच गई, जिससे उसे मर गए, और चींटियों ने फिरौन [प्राचीन मिस्र के राजा] के महल को नष्ट कर दिया।

एकता और उसके शाश्वत रूप से प्रयत्नशील होने की छाप, क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी अपने दर्पण में अपने भीतर प्रकट सभी दिव्य नामों को प्रतिबिंबित करता है।
ब्रह्मांड के अधिकांश भाग। एक केंद्र बिंदु की तरह, यह सर्वोच्च, सबसे अधिक को दर्शाता है
सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर एक की व्यापक अभिव्यक्ति। चूँकि
यह पर्दे के पीछे दिव्य सार की एकता का प्रदर्शन दर्शाता है
जीवनदाता का नाम, इसमें ईश्वरीय एकता की छाप है।

पुनः, चूँकि जीव ब्रह्माण्ड का एक लघु रूप है और
सृष्टि के वृक्ष का फल, इसकी अंतहीन आवश्यकताओं की सहज संतुष्टि दर्शाती है
वह ईश्वर नित्य ही है। अर्थात्, जीव का ऐसा प्रभु है
वह हमेशा इसके बारे में चिंतित रहता है और इसकी परवाह करता है। ऐसी चिंता और देखभाल
उसके लिए यह ब्रह्माण्ड की हर चीज़ से कहीं अधिक मूल्यवान है।

[ईश्वर की देखभाल] अकेले ही हर चीज़ के बदले एक चीज़ पर्याप्त है,
जबकि सभी चीजें उसके सम्मान के एक भी उदाहरण का स्थान नहीं ले सकतीं।

इससे पता चलता है कि सभी प्राणियों के स्वामी को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, उन्हें संतुष्ट करने वाली
उनकी ज़रूरतों को पूरा करने से उनकी संपत्ति कम नहीं होती, और उनके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है
उसकी शक्ति। यह एक तरह से उसके शाश्वत रूप से प्रार्थित होने की मुहर है।
जीवन की जीभ के माध्यम से, प्रत्येक जीवित प्राणी कहता है: कहो: "वह—(वह है)
ईश्वर, पूर्ण एकता का अद्वितीय ईश्वर, सभी का सदा-प्रार्थना करने वाला ईश्वर
(उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है)" (112: 1-2)।

अन्य महत्वपूर्ण खिड़कियाँ या उद्घाटन हैं। उन पर अन्यत्र चर्चा की गई है। यह देखते हुए कि प्रत्येक परमाणु तीन खिड़कियाँ और दो खोलता है
अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की एकता पर खुलने वाले द्वार और वह जीवन खुलता है
दो दरवाजे, समझें कि कैसे सभी प्राणियों के स्तर प्रकाश विकीर्ण करते हैं
सर्वशक्तिमान को जानना। इससे तुम डिग्री को समझ सकते हो
ईश्वर के ज्ञान में प्रगति और उसकी जागरूकता की डिग्री
इसके माध्यम से सर्वव्यापकता प्राप्त होती है।

पाँचवी झलक: हाथ से किताब लिखने के लिए एक कलम ही काफी है। उसे छापने के लिए,
हालाँकि, जितने अक्षर हैं उतने ही धातु के "पेन" व्यवस्थित किए जाने चाहिए। इसके अलावा, यदि अधिकांश
पुस्तक के मूल पाठ को अत्यंत सुन्दर लिपि में कुछ अक्षरों में अंकित किया जाना है, जैसे कि सूरह या सीन को प्रारम्भिक दो अक्षरों में लिखा जा सकता है (और लिखा भी गया है)।
या और पाप के लिए , पुस्तक के अक्षरों की संख्या के अनुसार छोटे धातु के "पेन" आवश्यक हैं। इसी तरह, यदि आप स्वीकार करते हैं कि ब्रह्मांड की यह पुस्तक
जिसने इसे अपनी शक्ति की कलम से लिखा है, तुम एक ऐसे आसान रास्ते पर चलते हो
पुस्तक का अस्तित्व आवश्यक और अपरिहार्य है। लेकिन यदि आप
इसे कारणता या प्रकृति से जोड़कर, आप एक ऐसे मार्ग का अनुसरण करते हैं जो असंभव लगता है, और इसलिए
यह अंधविश्वास इतना अधिक व्याप्त है कि एक अत्यंत कल्पनाशील मन भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता।

प्रकृति को अस्तित्व में न लाने का अर्थ है कि प्रत्येक मिट्टी के परमाणु, पानी की बूंद और हवा के अणु में लाखों प्रिंटिंग मशीनें और असंख्य अमूर्त कारखाने होते हैं [प्रकृति में सभी चीजों के रूपों और जीवन को निर्धारित करने में नियति के विकल्प के रूप में], ताकि प्रकृति सभी फूल और फल देने वाले पौधों की उत्पत्ति कर सके [और उनके जीवन को नियंत्रित कर सके]। साथ ही, प्रत्येक हवा, पानी और मिट्टी के परमाणु में सब कुछ करने का एक सर्वव्यापी ज्ञान और क्षमता होनी चाहिए।

पृथ्वी का प्रत्येक टुकड़ा, जल और वायु अधिकांश पौधों का स्रोत हो सकते हैं।
हालाँकि, उनका निर्माण और संरचना इतनी व्यवस्थित, संतुलित और सुव्यवस्थित है, और उनके रूप इतने अनोखे हैं, कि प्रत्येक के लिए एक विशिष्ट कारखाना या "प्रिंटिंग मशीन" आवश्यक होगी। इसलिए, अस्तित्व की उत्पत्ति करने में सक्षम होने के लिए, प्रकृति को प्रत्येक टुकड़े में सभी मशीनों को शामिल करना होगा जो हर चीज के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। इसलिए, प्रकृति को अस्तित्व का श्रेय देना एक ऐसा अंधविश्वास है जिसे अधिकांश अंधविश्वासी लोग भी स्वीकार नहीं कर सकते।

संक्षेप में, एक किताब का हर अक्षर सिर्फ़ एक अक्षर होने की सीमा तक और अपने अस्तित्व और अर्थ के सिर्फ़ एक पहलू की ओर इशारा करता है। हालाँकि, यह अपने लेखक का वर्णन करता है और उसे कई तरीकों से दिखाता है—उदाहरण के लिए: “जिसने मुझे लिखा है उसकी लिखावट या कलम बहुत बढ़िया है। उसकी कलम लाल है।” इसी तरह, ब्रह्मांड की इस विशाल किताब का हर अक्षर अपने आकार और रूप की सीमा तक खुद की ओर इशारा करता है, लेकिन शाश्वत डिज़ाइनर के नामों का वर्णन एक स्तोत्र की तरह विस्तृत रूप से करता है, और उसकी गवाही देता है और अपनी “तर्जनी” से उसके नामों की ओर इशारा करता है, जितनी उसकी विशेषताएँ और अवस्थाएँ हैं। इस प्रकार कोई भी, यहाँ तक कि मूर्ख सोफिस्ट भी नहीं जो खुद को और ब्रह्मांड को नकारते हैं, सर्व-महान निर्माता को नकार नहीं सकते।

छठी किरण: [जैसे सूरज की रोशनी और गर्मी समुद्र की सतह पर या कांच के हर टुकड़े पर हर बुलबुले में प्रतिबिंबित होती है,] सर्व-महान् सृष्टिकर्ता अपने कुछ नामों को प्रत्येक प्राणी या प्राणियों की प्रजातियों पर प्रकट करता है और इस तरह उसे अपनी विशिष्ट पहचान देता है। इसलिए, प्रत्येक प्राणी या प्रजाति और प्रत्येक प्राणी का प्रत्येक भाग उसकी पूर्ण एकता (अहदिया) की छाप धारण करता है। इसके अलावा, [जैसे सूरज पूरे समुद्र की सतह पर या पूरी धरती या चाँद पर प्रतिबिंबित होता है,] सृष्टिकर्ता अपने कुछ या सभी नामों को प्राणियों के संपूर्ण या सार्वभौमिक या साम्राज्यों पर प्रकट करता है, और इस तरह उसकी एकता (वहिदिया) की कई दृश्यमान मुहरें होती हैं। उसकी एकता और एकता के कारण, प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक प्रजाति और संपूर्ण या सार्वभौमिक, और पूरी धरती और ब्रह्मांड एकता प्रदर्शित करते हैं, जो सृष्टिकर्ता की पूर्ण एकता (वहदा) को प्रदर्शित करता है। उनकी असंख्य मोहरों या मुहरों में से, आइए हम एक को देखें जो वसंत ऋतु में पृथ्वी के मुख पर लगाई जाती है।

वसंत ऋतु में, शाश्वत डिज़ाइनर अनगिनत पौधों और जानवरों को पुनर्जीवित करता है
पूर्ण विभेदीकरण और विशिष्टता वाली प्रजातियाँ, तथा अनंत अंतर्संयोजन और भ्रम के बीच पूर्ण सुव्यवस्था और पृथक्करण। यह एक है
दिव्य एकता की छाप, जो वसंत की तरह स्पष्ट और चमकदार है।
चेतना यह अनुभव करेगी कि वसंत में मृत मिट्टी को जीवन में उठाना, दिखाना
पुनरुत्थान के अनगिनत नमूने, और पृथ्वी पर लेखन के साथ एकदम सही क्रम
अनगिनत प्रजातियों के व्यक्तिगत सदस्यों को बिना किसी गलती या भूल के पृष्ठ पर रखना,
गलती या कमी, और सबसे अच्छी तरह से संतुलित और अच्छी तरह से आनुपातिक,
सुव्यवस्थित और उत्तम फैशन, एक ऐसी मुहर है जो महिमा में से एक, पूर्णता में एक सर्वशक्तिमान, अनुग्रह और सौंदर्य में एक सर्व-बुद्धिमान व्यक्ति,
जिसके पास असीम शक्ति, सर्वव्यापी ज्ञान और इच्छाशक्ति है
ब्रह्मांड पर शासन करो। बुद्धिमान कुरान घोषणा करता है: के छापों को देखो
ईश्वर की दया, वह किस तरह धरती को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है। वही है जो पुनर्जीवित करेगा
मुर्दों पर भी उसी प्रकार अधिकार रखता है। और हर चीज़ पर उसका पूरा अधिकार है। (30:50)

यह निश्चित रूप से रचनात्मक शक्ति के लिए बहुत आसान होगा, जो प्रदर्शित करता है
पुनरुत्थान के दौरान कुछ ही दिनों में पुनरुत्थान के अनगिनत उदाहरण
वसंत में धरती पर मरे हुओं को पुनर्जीवित करने के लिए। उदाहरण के लिए, क्या चमत्कार करने वाले व्यक्ति से यह पूछना उचित है कि क्या वह एक विशाल पत्थर को हटा सकता है जो एक संकेत पर माउंट अरारत को ऊपर उठाता है?
क्या आपने कभी किसी चट्टान से अपना रास्ता रोका है? इसी तरह, क्या यह कहना उचित है (इस तरह से कि
उस अत्यन्त बुद्धिमान्, अत्यन्त शक्तिशाली, अत्यन्त उदार, दयावान की ओर, जिसने आकाश, पृथ्वी और पर्वतों को उत्पन्न किया है।
“छह दिन” और लगातार उन्हें भरता और खाली करता है: “क्या आप हमारे ऊपर की मिट्टी की इस परत को हटा सकते हैं जो आपके द्वारा तैयार किए गए भोज तक हमारा रास्ता रोक रही है
और अनंत काल में बिछा दिया गया है? क्या आप इसे समतल कर सकते हैं और हमें इसके पार जाने दे सकते हैं?”

निश्चय ही आपने ग्रीष्मकाल में पृथ्वी पर एकता देखी होगी और
इसलिए परमेश्वर की एकता देखी। अब देखो! वसंत के दौरान पृथ्वी के चेहरे पर ये सबसे बुद्धिमान, अंतर्दृष्टिपूर्ण और शक्तिशाली संचालन भी एक मुहर लगाता है
एकता का प्रतीक है और इसलिए ईश्वर की एकता को प्रदर्शित करता है। क्योंकि यह गतिविधि पूर्णतः एकता की प्रतीक है
व्यापक, त्वरित, उदार या उदार, और आसान, और फिर भी पूर्ण रूप से किया गया
सुव्यवस्थितता और दोषरहित विभेदन, तथा सबसे उत्तम सौंदर्य प्रदर्शित करता है
कला और सृजन का सबसे उत्तम रूप। इस प्रकार केवल अनंत ज्ञान और असीम शक्ति वाला ही ऐसी मुहर का स्वामी हो सकता है। वह मुहर एक की है
जो कहीं भी नहीं है, फिर भी वह सर्वव्यापी है और सब कुछ देख रहा है। उससे कुछ भी छिपा नहीं है
या उसके लिए कठिन है। उसकी शक्ति के संबंध में, कण और तारे समान हैं।

एक बार दयालु भगवान की कृपा से भरे बगीचे में, मैंने एक अंगूर की बेल से लटकते हुए अंगूरों के गुच्छों को गिना।
दो अंगुल मोटे। वे उसके गुच्छों के बीच एक छोटे से बीज की तरह थे

चमत्कार। 155 गुच्छे थे, और एक गुच्छे में लगभग 120 थे
अंगूर। मैंने सोचा: अगर यह अंगूर की बेल एक नल होती जिसमें से शहद जैसा पानी निकलता
निरंतर बहता रहे, तभी इस गर्मी में पानी पर्याप्त होगा,
वे गुच्छे जिन पर दया के सैकड़ों छोटे-छोटे "पंप" लटके हुए हैं
शर्बत। लेकिन यह अंगूर की बेल केवल थोड़ी सी नमी के साथ काम चलाती है, जो इसे
कभी-कभी प्राप्त होता है। इसलिए, जो ऐसा करता है वह शक्तिशाली होना चाहिए
वह सब चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है। महिमावान है वह जिसके काम से मन भ्रमित हो जाते हैं।

सातवीं झलक: थोड़ी सी सावधानी और प्रयास से आप देख सकते हैं
पृथ्वी के "पृष्ठ" पर सदा के लिए प्रार्थना की गई किसी की मुहरें। जब आप अपना सिर उठाते हैं
ब्रह्मांड की महान पुस्तक को देखने के लिए आगे बढ़ें, आप उस पर एक मुहर देखेंगे
दिव्य एकता उतनी ही बड़ी और स्पष्ट है जितनी स्वयं। किसी कारखाने के पुर्जों या
महल के निर्माण खंड, या एक सुव्यवस्थित शहर का हिस्सा, सभी प्राणी एक दूसरे की जरूरतों को पूरा करने के लिए पूर्ण व्यवस्थितता में समर्थन, सहायता और एक साथ काम करते हैं।
ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वे एक साथ मिलकर काम करते हैं। वे एक-दूसरे का सहयोग करते हैं और एक-दूसरे की आज्ञा का पालन करते हैं।
एक लक्ष्य की ओर सर्व-बुद्धिमान प्रशासक। वे पारस्परिक सहायता के नियम का पालन करते हैं, जो पूरे ब्रह्मांड में लागू है। उदाहरण के लिए, सूर्य,
चाँद, रात और दिन, सर्दी और गर्मी, और पौधे मदद के लिए आते हैं
जरूरतमंद पशु; पशु जरूरतमंद मनुष्यों की सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं; पौष्टिक पदार्थ नाजुक, असहाय शिशुओं और फलों की सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं; तथा
भोजन के कण शरीर की कोशिकाओं की सहायता के लिए आगे बढ़ते हैं। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि
वे एक एकल, सर्व-उदारवादी पालन-पोषणकर्ता की शक्ति के माध्यम से कार्य करते हैं और
एक एकल, सर्व-बुद्धिमान प्रशासक का आदेश।

इस प्रकार का पारस्परिक समर्थन और सहायता, एक दूसरे की आवश्यकताओं का उत्तर देना, घनिष्ठ सहयोग, आज्ञाकारिता, समर्पण और व्यवस्था इस बात की गवाही देते हैं कि सभी प्राणियों को एक ही प्रशासक संगठन के माध्यम से प्रशासित किया जाता है और
एक ही पालनहार द्वारा निर्देशित। साथ ही, सार्वभौमिक प्रोविडेंस और अनुग्रह
सार्वभौमिक ज्ञान में सम्मिलित है, जो कि वस्तुओं के उद्देश्यपूर्ण निर्माण में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, साथ ही व्यापक दया भी स्पष्ट होती है
ईश्वर की कृपा और उस दया द्वारा सभी को खिलाने के लिए आवश्यक सार्वभौमिक पोषण
जीवित प्राणी, ईश्वरीय एकता की इतनी चमकदार मुहर बनाते हैं कि दृष्टि वाला कोई भी व्यक्ति
और विचार उसे देखेंगे और समझेंगे।

इरादे, चेतना और इच्छाशक्ति को दर्शाने वाला ज्ञान का एक कपड़ा
ब्रह्माण्ड; उसके ऊपर अनुग्रह, अलंकरण, अलंकरण और दया दिखाने वाला ईश्वर और कृपा का एक महीन जालीदार पर्दा रखा गया है; उसके ऊपर एक फैला हुआ है
दया का वस्त्र जो जाने जाने और प्यार करने की इच्छा को विकीर्ण करता है, अनुग्रह करने की
ब्रह्मांड को घेरने वाली कृपा और उपहार; और उसके ऊपर एक मेज रखी गई है
सभी प्राणियों के भरण-पोषण का प्रावधान, जो प्रभु की दया को दर्शाता है,

दान, परोपकार, पूर्ण देखभाल, उचित पोषण, अनुग्रह और कृपा।
यह सब स्पष्ट रूप से एक दयालु परमेश्वर को दर्शाता है जो अत्यन्त बुद्धिमान, अत्यन्त उदार, दयावान तथा सब कुछ प्रदान करने वाला है।

क्या हर चीज़ को पोषण की ज़रूरत है? हाँ, बिलकुल। एक व्यक्ति की तरह सभी प्राणियों को, विशेषकर जीवित प्राणियों को, चाहे वे सार्वभौमिक हों या किसी विशेष या सम्पूर्ण या भाग में अनेक भौतिक और अभौतिक मांगें होती हैं और अगर उन्हें जीवित रहना है तो उनकी ज़रूरतें पूरी होनी ही चाहिए। हालाँकि वे ऐसा नहीं कर सकते छोटी से छोटी ज़रूरत को भी पूरा करने के लिए, हम देखते हैं कि उनकी सभी ज़रूरतें अप्रत्याशित तरीके से और अप्रत्याशित स्रोत से, सही क्रम में, उचित समय पर, उपयुक्त तरीके से और पूर्ण बुद्धि के साथ पूरी होती हैं। क्या यह स्पष्ट रूप से एक सर्व-बुद्धिमान पालनकर्ता, एक सर्व-दयालु प्रदाता को नहीं दर्शाता है

अनुग्रह?

आठवीं झलक: खेत में बोए गए बीज बताते हैं कि खेत और बीज उसी के हैं जो दोनों का स्वामी है। इसी तरह, जीवन के मूल तत्व (जैसे, हवा, पानी और मिट्टी), जिनमें चीजें बोई जाती हैं, समान हैं,
प्रकृति सरल और सार्वभौमिक तथा सर्वव्यापी है। पौधे और जानवर, जो दया के फल, शक्ति के चमत्कार और ज्ञान के शब्द हैं, वे भी हैं समान प्रकृति के हैं और हर जगह पाए जाते हैं। इससे पता चलता है कि वे एक ही जाति के हैं और एक ही चमत्कार दिखाने वाले निर्माता के आदेश के अधीन हैं। हर फूल, फल और पशु उस निर्माता की मुहर, मुहर और हस्ताक्षर हैं।
स्थान की परवाह किए बिना, प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा में घोषणा करता है: "
जिसकी मुहर मुझ पर है, उसने भी यह स्थान बनाया है। जिसकी मुहर मुझ पर है, उसने भी यह स्थान बनाया है। इस जगह को भी एक संदेश के रूप में बनाया है। जिस व्यक्ति के हस्ताक्षर से मैं यह भूमि भी बना रहा हूँ।" केवल वही व्यक्ति जो सभी तत्वों को अपने में समाहित करता है
सत्ता की मुट्ठी सबसे छोटे प्राणी को भी अपने वश में कर सकती है और उसे बचा सकती है।
अंधे देख सकते हैं कि केवल वही है जो सभी पौधों पर प्रभुत्व रखता है और जानवर उनमें से सबसे सरल प्राणी का स्वामित्व, पालन-पोषण और शासन कर सकते हैं।

अन्य व्यक्तियों के प्रति समानता की भाषा में, प्रत्येक व्यक्ति कहता है: "केवल वही व्यक्ति मेरा मालिक हो सकता है जो मेरी प्रजाति का मालिक है।" प्रसार की भाषा में पृथ्वी के चेहरे पर अन्य प्रजातियों के साथ, प्रत्येक प्रजाति कहती है: "केवल वही जो पृथ्वी के चेहरे का मालिक हमारा मालिक हो सकता है।" बंधे होने की जीभ में सूर्य, अन्य ग्रहों के साथ, तथा आकाश, पृथ्वी के साथ उसके पारस्परिक संबंधों के बारे में कहते हैं: “केवल वही जो पूरे ब्रह्मांड का मालिक है, मेरा मालिक हो सकता है।”

मान लीजिए सेब सचेत थे और किसी ने उनमें से एक से कहा, "तुम मेरी कलाकृति हो," सेब चिल्लाता: "चुप रहो! अगर तुम कर सको पृथ्वी पर सभी सेबों पर अधिकार करो; बल्कि, यदि आपके पास सभी फल देने वाले पर अधिकार है

पेड़ों पर नहीं, बल्कि दया के खजाने से जहाज़ों में भरकर आने वाले दयालु परमेश्वर के सभी उपहारों पर अधिकार करोगे, तभी तुम मेरे भगवान होने का दावा कर सकते हो!"

नौवीं झलक: हमने कुछ मुहरों, टिकटों और हस्ताक्षरों को विशेष और भागों, सार्वभौमिक और संपूर्ण, साथ ही दुनिया, जीवन, जीवित प्राणियों और जीवन देने पर इंगित किया है। अब मैं प्रजातियों पर अनगिनत टिकटों में से एक को इंगित करूँगा।

चूँकि एक पेड़ के अनगिनत फल एक केंद्र से विकास के एक नियम पर निर्भर करते हैं, इसलिए उन्हें एक फल उगाना उतना ही आसान और सस्ता है। इसका मतलब है कि कई केंद्रों में एक फल के लिए उतनी ही कठिनाई, खर्च और उपकरण की आवश्यकता होगी जितनी एक पूरे पेड़ के लिए, ठीक वैसे ही जैसे एक सैनिक के लिए आवश्यक सैन्य उपकरण बनाने के लिए पूरी सेना के लिए सभी कारखानों की आवश्यकता होगी। इसलिए, यदि सृष्टि कई केंद्रों पर निर्भर होती, तो व्यक्तियों की संख्या जितनी ही कठिनाइयाँ पैदा होतीं। इसलिए अस्तित्व में आने वाली सभी प्रजातियों में देखी जाने वाली असाधारण आसानी एकता से उत्पन्न होने वाली सुविधा का परिणाम है।

संक्षेप में, एक प्रजाति के सदस्यों और एक वंश के विभाजनों के बीच बुनियादी सदस्यों में पत्राचार और समानता यह साबित करती है कि वे एक ही निर्माता के कार्य हैं; वे एक ही कलम से "अंकित" हैं और एक ही मुहर धारण करते हैं। उनके निर्माण की पूर्ण सहजता, जो उनके अस्तित्व को लगभग अपरिहार्य बनाती है, के लिए आवश्यक है कि वे एक निर्माता का कार्य हों। अन्यथा, आने वाली कठिनाइयाँ उस वंश और उस प्रजाति को अस्तित्वहीन कर देंगी।

इसे देखते हुए, सर्वशक्तिमान ईश्वर को सब कुछ देने से सभी चीजें एक चीज जितनी आसान हो जाती हैं; जब "प्राकृतिक" कारणों को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक चीज सभी चीजों जितनी कठिन हो जाती है। इस प्रकार ब्रह्मांड में देखी जाने वाली असाधारण अर्थव्यवस्था और सहजता, साथ ही अंतहीन प्रचुरता, स्पष्ट रूप से एकता की छाप दिखाती है।
यदि ये प्रचुर और सस्ते फल एकता के परमेश्वर के न होते, तो हम एक अनार भी नहीं खरीद पाते, भले ही हम इसके बदले में पूरी दुनिया दे दें।

दसवीं झलक: जिस प्रकार जीवन, जो ईश्वरीय कृपा को प्रकट करता है, ईश्वरीय एकता (अहादिया) के लिए एक तर्क और प्रमाण है , यहाँ तक कि ईश्वरीय एकता की एक प्रकार की अभिव्यक्ति भी है, उसी प्रकार मृत्यु, जो ईश्वरीय महिमा को प्रकट करती है, ईश्वरीय एकता (वहीदिया) के लिए एक तर्क और प्रमाण है।

इस पर विचार करें— सर्वोच्च तुलना ईश्वर के लिए है (और इसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए): एक विशाल नदी पर बुलबुले सूर्य की छवि और प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं, जैसे कि पृथ्वी के चेहरे पर चमकती पारदर्शी वस्तुएं। दोनों सूर्य के अस्तित्व की गवाही देते हैं।
हालाँकि बुलबुले कभी-कभी गायब हो जाते हैं (जैसे कि पुल के नीचे से गुज़रने पर), बुलबुलों की लगातार टोलियाँ सूर्य का प्रतिबिंब दिखाती रहती हैं और उसका प्रकाश दिखाती रहती हैं। इससे यह साबित होता है कि सूर्य की छोटी-छोटी छवियाँ, जो दिखाई देती हैं, गायब हो जाती हैं और फिर फिर से दिखाई देती हैं, एक स्थायी, शाश्वत, एकल सूर्य की ओर इशारा करती हैं जो

ऊपर से खुद को प्रकट करना जारी रखता है। इस प्रकार, जिस तरह से वे चमकते बुलबुले अपनी उपस्थिति के माध्यम से सूर्य के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं, उसी तरह से
उनके लुप्त होने और विलुप्त होने से वे इसकी निरंतरता और एकता को प्रदर्शित करते हैं।

इसी प्रकार, अपने अस्तित्व और जीवन के माध्यम से, ये प्राणी निरंतर
प्रवाह अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है और
एकता, जबकि अपने क्षय और मृत्यु के माध्यम से वे उसकी अनंतता और स्थायित्व की गवाही देते हैं। सुंदर, नाजुक जीव जो नवीनीकृत होते हैं और
दिन और रात, गर्मी और सर्दी के परिवर्तन के साथ भर्ती किया गया,
और सदियों और युगों के बीतने के साथ, सौंदर्य के निरंतर प्रदर्शन के साथ एक उन्नत, शाश्वत एक के अस्तित्व, एकता और स्थायित्व को दर्शाते हैं।
उनका क्षय और मृत्यु, साथ ही उनके जीवन के स्पष्ट कारण, यह दर्शाते हैं
कि (भौतिक या प्राकृतिक) कारण केवल आवरण हैं। इससे सिद्ध होता है कि ये कलाएँ,
शिलालेख और अभिव्यक्तियाँ निरंतर नवीनीकृत कलाएँ हैं, बदलती रहती हैं
शिलालेख, और महामहिम के सर्व-सुंदर एक के चलते दर्पण, सभी
जिनके नाम पवित्र और सुंदर हैं। साथ ही, वे उनके टिकट हैं जो अनुसरण करते हैं
एक के बाद एक, और उसकी मुहरें जो ज्ञान के माध्यम से बदलती हैं।

ब्रह्मांड की यह पुस्तक हमें ईश्वरीय संकेतों की शिक्षा देती है
ब्रह्माण्ड की रचना और संचालन में अस्तित्व और एकता देखी जाती है, और
सर्वशक्तिमान ईश्वर के सम्पूर्ण गुणों, सुन्दरता, कृपा, आदि का साक्षी,
और महिमा। ये संकेत दिव्य सत्ता की आवश्यक पूर्णता को भी प्रमाणित करते हैं,
दोष और दोष रहित। क्योंकि किसी कार्य की पूर्णता उसकी पूर्णता की ओर संकेत करती है
उस कार्य की उत्पत्ति में निहित कार्य। कार्य की पूर्णता नाम की ओर इशारा करती है
पूर्णता, जो विशेषता की पूर्णता की ओर इशारा करती है, जो विशेषता की पूर्णता की ओर इशारा करती है
आवश्यक क्षमता की पूर्णता, जो अनिवार्य रूप से, सहज रूप से, और स्पष्ट रूप से
यह उस आवश्यक क्षमता वाले व्यक्ति की पूर्णता की ओर इशारा करता है।

उदाहरण के लिए, एक उत्तम महल का उत्तम डिजाइन और अलंकरण उसकी उत्तमता को दर्शाता है। मास्टर बिल्डर के कार्यों की पूर्णता। कार्यों की पूर्णता प्रतिष्ठित बिल्डर की उपाधियों की पूर्णता को दर्शाती है, जो उसके पद को निर्दिष्ट करती है। उपाधियों की पूर्णता बिल्डर के गुणों की पूर्णता को दर्शाती है, जो कि मूल हैं

कला। कला और विशेषताओं की पूर्णता कला की पूर्णता को दर्शाती है
गुरु की योग्यताएँ और आवश्यक क्षमता। उन आवश्यक योग्यताओं की पूर्णता
योग्यताएं और क्षमताएं गुरु की मूल प्रकृति की पूर्णता को दर्शाती हैं।

इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में जो दोषरहित कार्य दिखाई देते हैं, जिनके विषय में
कुरान पूछता है: क्या तुम कोई दोष देख सकते हो? (67:3), ब्रह्मांड के सुव्यवस्थित प्राणियों में कला, एक प्रभावी, शक्तिशाली एजेंट के सही कार्यों की ओर इशारा करती है।
कार्यों की पूर्णता उस सर्वशक्तिमान एजेंट के नामों की पूर्णता की ओर संकेत करती है।
नामों की पूर्णता परमेश्वर की पूर्णता की ओर संकेत और प्रमाण देती है।

नामों से ज्ञात सर्व-प्रतापी के गुण।
गुणों की पूर्णता आवश्यक की पूर्णता को इंगित करती है और प्रमाणित करती है
उन विशेषताओं द्वारा योग्य पूर्ण व्यक्ति का चरित्र और गुण।
आवश्यक चरित्र और गुणों की पूर्णता उस व्यक्ति की पूर्णता की ओर संकेत करती है जिसके पास ऐसे चरित्र और गुण हैं, ऐसी निश्चितता के साथ
ब्रह्माण्ड में देखी जाने वाली सभी प्रकार की परिपूर्णताएं केवल संकेत मात्र हैं
उनकी पूर्णता, उनकी महिमा के संकेत, और उनकी सुंदरता के संकेत
उसकी पूर्णता की तुलना में वे फीके, कमजोर छाया के रूप हैं।

ग्यारहवीं चमक सूर्य की तरह चमकदार: जैसा कि द ग्रेट में दिखाया गया है

उन्नीसवीं बात, हमारे स्वामी मुहम्मद अत्यन्त विश्वसनीय हों।
शांति और आशीर्वाद, ब्रह्मांड की महान पुस्तक का सर्वोच्च संकेत है,
ईश्वर का "सबसे बड़ा नाम" ब्रह्मांड के उस "कुरान" में प्रकट हुआ,
सृष्टि के वृक्ष का बीज और सबसे शानदार फल, महल का सूर्य
दुनिया का, इस्लाम की दुनिया का चमकदार पूर्णिमा,
दिव्य प्रभुत्व की संप्रभुता, और सृष्टि के रहस्य का बुद्धिमान खोजकर्ता।
वह संदेशवाहक के पंखों पर सवार होकर सत्य के स्तरों से होकर उड़ता है, जो
इसमें सभी पिछले पैगम्बरों और इस्लाम को शामिल किया गया है, जो इस्लाम की दुनिया को अपने संरक्षण में लेता है। सभी पैगम्बरों और रसूलों के समर्थन से,
संतों और सत्यनिष्ठ, सत्य की खोज करने वाले विद्वानों और शुद्ध लोगों के बारे में उन्होंने प्रमाणित किया
अपनी पूरी शक्ति से ईश्वरीय एकता का परिचय दिया और ईश्वरीय एकता का मार्ग खोल दिया
एकता का सिंहासन। कौन सी कल्पना या संदेह ईश्वर में विश्वास को विचलित कर सकता है, जो
उन्होंने प्रदर्शित किया, और इस तरह दिव्य एकता के करीब पहुंचे, जिसे उन्होंने सिद्ध किया?

चूँकि मैंने कुछ हद तक, उसके ज्ञान के जीवन के जल की चौदह बूंदों के माध्यम से उस स्पष्ट प्रमाण और चमत्कार-कार्य करने वाले प्राणी का वर्णन किया है
उन्नीसवें वचन में, और उन्नीसवें वचन में उन्नीस संकेतों के माध्यम से
पत्र (उनके चमत्कारों पर) में, मैं यह कहते हुए अपना पत्र समाप्त करता हूँ कि उन पर ईश्वर का आशीर्वाद है।
उसकी सच्चाई का प्रमाण.

हे ईश्वर, उस व्यक्ति को आशीर्वाद प्रदान करें जो आपकी आवश्यकता की ओर ले जाता है
अस्तित्व और आपकी एकता, और आपकी महिमा और अनुग्रह की गवाही देता है
और पूर्णता; सच्चा और पुष्ट गवाह, और सत्यापित,
स्पष्ट प्रमाण; पैगम्बरों और रसूलों का स्वामी, प्रमाण का वाहक
उनकी सहमति, पुष्टि और चमत्कार का अर्थ; नेता
पवित्र और फलवन्त लोग, जिनके पास उनकी सहमति, सत्यापन और आश्चर्यकर्म का अर्थ है; और
जिनके पास स्पष्ट चमत्कार हैं,
स्पष्ट आश्चर्यकर्म, तथा निर्णायक प्रमाण जो उसकी पुष्टि और पुष्टि करते हैं।

हे ईश्वर, उस पर कृपा करो, जिसके हृदय में श्रेष्ठ गुण हैं।
वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने कर्तव्य में उच्च नैतिकता रखता है, तथा अपने शरीयत में उच्च गुण रखता है।
पूर्ण और सभी विरोधाभासों से मुक्त; वह केंद्र जहां दिव्य

रहस्योद्घाटन उतरा, जैसा कि उस व्यक्ति द्वारा सहमति व्यक्त की गई थी जिसने प्रकट किया था, जो प्रकट किया गया था, और जिसने रहस्योद्घाटन को उसके पास लाया था; अदृश्य दुनियाओं और वस्तुओं के आंतरिक आयामों के माध्यम से यात्री; आत्माओं का पर्यवेक्षक, जिसने स्वर्गदूतों के साथ बातचीत की; और व्यक्तियों, प्रजातियों और पीढ़ी (सृष्टि के वृक्ष का सबसे शानदार फल) के संबंध में सृष्टि में सभी पूर्णता का नमूना।

हे ईश्वर, आप पर कृपा करें, जो सत्य का दीपक है, जो वास्तविकता का प्रमाण है, जो दया का प्रतीक है, जो प्रेम का आदर्श है, जो सृष्टि के रहस्य का अन्वेषक है, जो ईश्वरीय प्रभुता का संदेशवाहक है, जिसने अपने आध्यात्मिक व्यक्तित्व की उत्कृष्टता से यह प्रदर्शित किया कि वह ब्रह्मांड की रचना के समय संसार के रचयिता की "नजरों" के सामने था, और जिसने एक ऐसा शरीयत लाया जो अपने सिद्धांतों की व्यापकता और सुदृढ़ता से यह दर्शाता है कि यह संसार के रचयिता का आदेश है और ब्रह्मांड के रचयिता द्वारा स्थापित किया गया है।

जिसने इस संपूर्ण ब्रह्मांड को इस संपूर्ण व्यवस्था के साथ रचा, उसने इस धर्म [इस्लाम] को इसकी बेहतरीन और सबसे सुंदर व्यवस्था के साथ रचा। उसका रसूल हमारा मालिक है, आदम की संतानों के समुदायों का मालिक; हमारे ईमान के मार्गदर्शक, ईमान वालों के समुदायों, मुहम्मद इब्न अब्दुल्लाह इब्न अब्दुल-मुत्तलिब, उन पर सबसे बेहतरीन रहमतें और सबसे मुकम्मल शांति हो जब तक धरती और आसमान कायम हैं। सभी अन्य गवाहों के नेता और सभी मानव पीढ़ियों के प्रशिक्षक के रूप में, इस सच्चे और पुष्ट गवाह ने अपनी पूरी ताकत, अत्यंत गंभीरता, पूर्ण दृढ़ता, निश्चितता की ताकत और विश्वास की पूर्णता के साथ गवाही दी और घोषणा की: "मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह एक है। उसका कोई साझी नहीं है।"

बारहवीं किरण सूरज की तरह चमकती है: यह बारहवीं किरण सच्चाई का ऐसा सागर है कि सभी 22 शब्द इसकी सिर्फ़ 22 बूँदें हैं। यह प्रकाश का ऐसा स्रोत है कि वे इसकी सिर्फ़ 22 किरणें हैं। हर शब्द क़ुरआन के आसमान में चमकने वाली आयतों के सितारों में से एक की किरण मात्र है।

प्रत्येक सत्य और असत्य के बीच भेद करने वाले उस महासागर से बहने वाली कविता की नदी से एक बूंद है, एक कविता से एक मोती है, जिनमें से प्रत्येक सबसे महान खजाने में रत्नों का एक संदूक है: ईश्वर की पुस्तक।

ईश्वर के इस वचन को उन्नीसवें वचन की 14वीं बूंद में थोड़ा परिभाषित किया गया है । ईश्वर के महानतम नाम से उत्पन्न होकर, यह ईश्वरीय प्रभुत्व की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति के रूप में सर्वोच्च दिव्य सिंहासन से उतरा। इतना ऊंचा और व्यापक कि यह समय को भी पार कर जाए और धरती को सर्वोच्च दिव्य सिंहासन से बांध दे, यह अपनी पूरी ताकत और अपने छंदों की पूर्ण निश्चितता के साथ बार-बार घोषणा करता है:

“ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।” ब्रह्माण्ड को इसकी गवाही देते हुए, इसकी सारी सामग्री एक स्वर में गाती है: “ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।”

अगर तुम पवित्र हृदय की आँखों से क़ुरआन को देखो तो पाओगे कि इसके छह पहलू इतने चमकीले और पारदर्शी हैं कि कोई अंधकार और गुमराही, शक और संदेह या धोखा इसमें प्रवेश नहीं कर सकता। न ही कोई दरार है जिसके माध्यम से ऐसी चीजें इसकी पवित्रता के क्षेत्र में प्रवेश कर सकें। इसके ऊपर चमत्कार की मुहर है, इसके नीचे सबूत और प्रमाण है, इसके पीछे इसका आधार बिंदु है - शुद्ध ईश्वरीय रहस्योद्घाटन, इसके सामने इस दुनिया और परलोक में खुशी, इसके दाहिनी ओर इसकी सच्चाई के बारे में मानवीय तर्क से प्रश्न करना और इसकी पुष्टि सुनिश्चित करना, और इसके बाईं ओर मानवीय विवेक को इसकी सच्चाई की गवाही देने और इसके अधीनता को सुनिश्चित करने के लिए बुलाना। इसके भीतर दयालु का शुद्ध मार्गदर्शन है, और इसके बाहर विश्वास का प्रकाश है।

इसके फलस्वरूप, अवलोकन पर निर्भर निश्चितता के साथ, शुद्ध और सत्य-प्रेमी विद्वान और संत होते हैं, जो सभी मानवीय सिद्धियों और उपलब्धियों से सुशोभित होते हैं। यदि आप अदृश्य की उस भाषा - कुरान - को सुनें, तो आप इसकी गहराई से एक बहुत ही परिचित और विश्वसनीय, एक असीम रूप से गंभीर और उच्च, स्वर्गीय आवाज सुनेंगे जो प्रमाणों से सुसज्जित है जो बार-बार घोषणा करती है: "उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है।" यह वास्तविक अनुभव और पूर्ण विश्वास के आधार पर इस तरह की पूर्ण निश्चितता के साथ कहता है कि, इसकी सच्चाई के बारे में, यह आपको प्रत्यक्ष साक्षी और अवलोकन से आने वाली निश्चितता की सीमा तक ज्ञान की निश्चितता देता है।

संक्षेप में, रसूल और सत्य और असत्य के बीच अंतर करने का सबसे पक्का मापदंड (कुरान) दोनों एक-एक "सूर्य" हैं। पहला, दृश्यमान भौतिक दुनिया की ज़बान, एक हज़ार चमत्कारों और सभी नबियों और शुद्ध विद्वानों की पुष्टि के साथ, इस्लाम और रसूलियत की उंगलियों से "अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है" की सच्चाई की ओर इशारा करता है और अपनी पूरी ताकत से उसे दिखाता है। दूसरा, अदृश्य दुनिया की ज़बान, चमत्कारों के चालीस पहलुओं से युक्त और सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के दिव्य संकेतों से पुष्ट, उसी सत्य को न्याय और मार्गदर्शन की उंगलियों से इंगित करता है, और इसे सबसे गंभीर तरीके से दर्शाता है। इस प्रकार वह सत्य सूर्य से अधिक स्पष्ट और दिन के उजाले से अधिक स्पष्ट है।

हे पथभ्रष्टता में डूबे हुए हठी, जो कुरान को झुठलाने और रद्द करने का प्रयास करता है! तुम अपने मन के मंद दीपक से इन सूर्यों का विरोध कैसे कर सकते हो? तुम उदासीन कैसे रह सकते हो? क्या तुम उन्हें फूंक कर बुझाने की कोशिश कर रहे हो? बहुत हो गया तुम्हारा इनकार करने वाला मन! तुम शब्दों को कैसे झुठला सकते हो

और कुरान और पैगंबर द्वारा भगवान के नाम पर बोले गए दावे
हे दुष्ट, संसार के स्वामी और ब्रह्माण्ड के स्वामी?
एक मक्खी से भी अधिक नपुंसक! तुम कौन हो जो इस बात का खंडन करने का प्रयास करते हो
ब्रह्माण्ड का प्रतापी स्वामी?

निष्कर्ष

हे सजग मन और सचेत हृदय वाले मित्र, यदि तुमने समझ लिया है
इस वचन को, इन बारह चिन्ताओ को अपने हाथ में ले लो ताकि तुम प्राप्त कर सको
सत्य का दीपक हजारों बिजली की बत्तियों के समान प्रकाश देने वाला है।
कुरान की आयतें ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से उतरती हुई।
ईश्वरीय सहायता के "पर्वत" पर चढ़ो, सत्य के स्वर्ग पर चढ़ो।
"दिव्य ज्ञान के सिंहासन" पर विराजमान होकर घोषणा करें: "मैं गवाही देता हूँ कि
तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं। तू एक है, तेरा कोई साझी नहीं।"

यह भी घोषणा करो: "कोई पूज्य नहीं सिवाए अल्लाह के, एक, उसका कोई साझी नहीं; उसका कोई साझी नहीं।"
सारे अस्तित्व का प्रभुत्व उसी के लिए है, और सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी के लिए है; वही
वही जीवन देता और मरता है; वही जीवित है और मरता नहीं; उसके हाथ में सब कुछ है
सब कुछ अच्छा है; और हर चीज़ पर उसका पूरा अधिकार है।"

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न ठहराना।
हे प्रभु, हम पर वैसा बोझ मत डालो जैसा तूने उन पर डाला था।
हमारे सामने। हमारे प्रभु, हम पर वह न थोपें जो हम सहन नहीं कर सकते।
हमें क्षमा कर, हमें क्षमा कर, और हम पर दया कर। तू हमारा रक्षक है।
हमें अविश्वासी लोगों पर विजय प्रदान करें।

हे हमारे पालनहार! हमारे हृदयों को विचलित न होने दे, इसके पश्चात कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है।
हम पर अपनी कृपादृष्टि कर। निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ है। हे हमारे पालनहार! तू ही वह है जो मनुष्यों को उस दिन एकत्र करेगा, जिसके विषय में कोई सन्देह नहीं। ईश्वर कभी अपने वादे से नहीं चूकता।

हे ईश्वर, जिसे तूने भेजा है, उस पर आशीर्वाद और शांति प्रदान कर
सारे संसारों, तथा अपने परिवार और साथियों के लिए दया की कामना करता हूँ।
हम पर और उनके समुदाय पर दया करो, अपनी दया के लिए,
हे दयालुओं में सर्वाधिक दयालु! आमीन!

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: "सभी प्रशंसा और आभार
क्योंकि परमेश्वर, जो सारे जगत का स्वामी है।"

तेईसवाँ शब्द

तेईसवाँ वचन

विश्वास के गुण और हमारी खुशी और दुख पर टिप्पणियाँ

(इस श्लोक में दो अध्याय हैं।)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह हमने मनुष्य को उत्तम प्रकार का बनाया है,
सृष्टि का स्वरूप; फिर हमने उसे सबसे निम्नतम बना दिया, सिवाय
जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए (95:4-5)

पहला अध्याय

निम्नलिखित पाँच बिंदुओं में से हम पाँच को स्पष्ट करेंगे
विश्वास के हजारों गुण.

पहला बिंदु: हम पूर्णता के सर्वोच्च स्तर तक पहुँचते हैं
और ईमान की रौशनी से जन्नत के हकदार बनो।
अविश्वास का अंधकार हमें निम्नतम स्तर पर ले जाता है जिससे हम नरक के पात्र बन जाते हैं।

क्योंकि विश्वास हमें हमारे सर्वशक्तिमान निर्माता से जोड़ता है, इसलिए विश्वास एक संबंध है और
इस प्रकार हमारा मूल्य दिव्य कला और दिव्य से प्राप्त होता है

वे नाम जो विश्वास के माध्यम से हमारे भीतर प्रकट होते हैं। अविश्वास इस संबंध को तोड़ता है, जिससे ईश्वरीय कला पर पर्दा पड़ जाता है और हमारा मूल्य मात्र एक मात्र वस्तु तक सीमित हो जाता है।
भौतिक इकाई। चूँकि पदार्थ नाशवान है और भौतिक जीवन इससे अधिक कुछ नहीं है
एक क्षणभंगुर पशु जीवन के रूप में, एक भौतिक इकाई के रूप में हमारा मूल्य वस्तुतः कुछ भी नहीं है।
हम इसे एक दृष्टांत के माध्यम से समझाएंगे।

उस लोहे (या किसी अन्य सामग्री) का मूल्य जिससे कलाकृति बनाई जाती है
जो बनाया जाता है उसका मूल्य उसमें व्यक्त कला के मूल्य से भिन्न होता है। कभी-कभी वे

हो सकता है कि कला का मूल्य समान हो, या कला का मूल्य उसकी सामग्री से कहीं ज़्यादा हो, या इसके विपरीत। एक प्राचीन वस्तु एक मिलियन डॉलर में बिक सकती है, जबकि उसकी सामग्री कुछ सेंट के बराबर भी नहीं है। अगर इसे प्राचीन वस्तुओं के बाज़ार में ले जाया जाए, तो यह
अपनी कला और शानदार कलाकार के नाम की वजह से अपने असली मूल्य पर बेचा गया।
एक लोहार को यह केवल इसके लोहे के मूल्य पर बेचा जाएगा।

इसी प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर की एक अद्वितीय, अमूल्य कृति है।
कला: हम उसकी शक्ति के सबसे नाजुक और सुंदर चमत्कार हैं, जो उसके सभी नामों और शिलालेखों को लघु रूप में प्रकट करने के लिए बनाए गए हैं
ब्रह्मांड का नमूना। अगर हम विश्वास से प्रकाशित हैं, तो ये अर्थपूर्ण शिलालेख दिखाई देने लगते हैं, और विश्वासी उन्हें सचेत रूप से पढ़ते हैं।
इन शिलालेखों को उनके निर्माता के साथ अपने संबंध के माध्यम से प्रकट करते हैं;
अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति में निहित दिव्य कला इस प्रकार से प्रकट होती है
पुष्टि इस प्रकार है: "मैं सर्व-महान निर्माता, प्राणी और का कार्य हूँ
उसकी दया और उदारता का पात्र बनो।" परिणामस्वरूप, और क्योंकि हमें लाभ मिलता है
हम इस कला को कितनी अच्छी तरह से दर्शाते हैं, इस अनुपात में हम तुच्छता (भौतिक दृष्टि से) से सभी प्राणियों से ऊपर की श्रेणी में आते हैं। हम ईश्वर से संवाद करते हैं, पृथ्वी पर उनके मेहमान हैं, और इसके लिए योग्य हैं

स्वर्ग।

हालाँकि, यदि अविश्वास, जिसका अर्थ है इस संबंध का विच्छेद, हमारे अंदर समाहित हो जाए, तो दिव्य नामों की सभी अभिव्यक्तियाँ छिप जाती हैं
अंधकार से और इस प्रकार गैर-अभिव्यक्तिपूर्ण। क्योंकि अगर कलाकार अज्ञात है, तो कैसे
उनकी कला के महत्व को व्यक्त करने वाले पहलुओं की पहचान कैसे की जा सकती है? इस प्रकार उस उत्कृष्ट कला और उच्च शिलालेखों के सबसे सार्थक उदाहरण छिपे हुए हैं। हमारे अस्तित्व के भौतिक पहलुओं के संबंध में, अविश्वासी लोग इसका श्रेय देते हैं
उन्हें भौतिक कारणों, प्रकृति और संयोग के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जिससे वे स्पष्ट हो जाते हैं
चमकते हीरे की जगह कांच। वे किसी भी अन्य चीज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं हैं
अन्य भौतिक इकाई, एक क्षणभंगुर और घुटन भरे जीवन के लिए स्वयं को दोषी मानती है,
और वह सबसे अधिक शक्तिहीन, जरूरतमंद और पीड़ित जानवर से बेहतर नहीं है जो अंततः धूल में मिल जाएगा। इस प्रकार अविश्वास हमारे स्वभाव को बदलकर बिगाड़ देता है
हीरे को कोयला में बदलना।

दूसरा बिंदु: विश्वास एक प्रकाश है। जैसे यह मनुष्य को प्रकाशित करता है
और उनके अस्तित्व में शाश्वत द्वारा अंकित सभी संदेशों को प्रकट करता है
यह ब्रह्माण्ड को प्रकाशित भी करता है और अंधकार को भी दूर करता है।
अतीत और भविष्य भी। हम इस सत्य को इस अर्थ के बारे में जो मैंने अनुभव किया है उसके माध्यम से समझाएँगे:
ईश्वर उन लोगों का संरक्षक है जो विश्वास करते हैं।
वह उन्हें अंधकार की परतों से निकालकर प्रकाश में लाता है (2:257)।

मैंने खुद को दो पहाड़ों के बीच एक गहरी घाटी पर बने एक विस्मयकारी पुल पर खड़ा देखा। दुनिया पूरी तरह से अंधेरी थी। अपनी दाईं ओर देखते हुए, मैंने कल्पना की कि मैंने अंधेरे में एक विशाल मकबरा देखा है। अपनी बाईं ओर देखते हुए, मुझे लगा कि मैं अंधेरे की जबरदस्त लहरों के बीच हिंसक तूफान और आपदाओं को तैयार होते देख रहा हूँ। नीचे देखते हुए, मैंने कल्पना की कि मैंने एक बहुत गहरी खाई देखी है। इस भयानक अंधेरे के सामने मेरे पास एक मशाल थी। मैंने इसका इस्तेमाल किया और इसकी रोशनी से थोड़ा-बहुत देख पाया। इसकी मंद रोशनी में मुझे एक भयानक दृश्य दिखाई दिया। पूरे पुल पर इतने भयानक ड्रेगन, शेर और राक्षस थे कि मैं चाहता था कि मेरे पास कोई मशाल न हो। मैंने इसे जिस भी दिशा में निर्देशित किया, मुझे वही डर लगा। "यह मशाल मुझे केवल परेशानी देती है," मैंने गुस्से में इसे फेंक दिया और इसे तोड़ दिया। अचानक अंधेरे की जगह रोशनी ने ले ली, जैसे कि मैंने अपनी मशाल तोड़कर एक बहुत बड़ी रोशनी जला दी हो। मैंने सब कुछ उसके असली रूप में देखा

प्रकृति।

मैंने पाया कि पुल एक समतल मैदान पर बना राजमार्ग था। विशाल मकबरा एक हरा-भरा, सुंदर बगीचा था जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्ति पूजा, प्रार्थना, महिमा और प्रवचन की सभाओं का नेतृत्व कर रहे थे। मेरी बाईं ओर की अशांत, तूफानी, भयावह चट्टानें एक भोज कक्ष, एक छायादार सैरगाह, सुंदर पहाड़ों के पीछे एक सुंदर विश्राम स्थल के रूप में दिखाई दीं। भयानक राक्षस और ड्रेगन वास्तव में ऊँट, बैल, भेड़ और बकरियाँ थे।

मैंने कहा, "विश्वास की रोशनी के लिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो," और फिर यह कहते हुए जाग उठा: ईश्वर उन लोगों का संरक्षक है जो विश्वास करते हैं। वह उन्हें अंधकार की तहों से निकालकर प्रकाश में लाता है।

इस प्रकार, दो पहाड़ इस जीवन की शुरुआत और अंत हैं, यानी यह दुनिया और कब्र की दुनिया (मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच)। पुल जीवन काल है, अतीत (दाईं ओर) और भविष्य (बाईं ओर) के दो चरणों के बीच। मशाल हमारा अभिमानी अहंकार है, जो अपनी उपलब्धियों पर भरोसा करते हुए, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की उपेक्षा करता है। राक्षस दुनिया की घटनाएँ और जीव थे।

जो लोग अपने अहंकार के कारण गुमराही और असावधानी के अंधकार में गिर गए हैं, वे मेरे जैसे ही हैं, जैसे मशाल की धुंधली रोशनी में। अपने अपर्याप्त और गुमराह ज्ञान के साथ, वे अतीत को विलुप्ति के अंधेरे में एक विशाल कब्र के रूप में देखते हैं और भविष्य को संयोग या संयोग से नियंत्रित आतंक के तूफानी दृश्य के रूप में देखते हैं। मशाल उन्हें घटनाओं और प्राणियों को भी दिखाती है, जो वास्तव में सर्वज्ञ और सर्वदयालु के कर्तव्यनिष्ठ सेवक या अधिकारी हैं जो विशिष्ट कार्यों को पूरा करते हैं और अच्छे उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, हानिकारक राक्षसों के रूप में। ये वे लोग हैं जिनका उल्लेख इस प्रकार है: जो लोग विश्वास नहीं करते, उनके संरक्षक हैं

दुष्ट शक्तियाँ जो ईश्वर के विरुद्ध विश्वास और शासन के प्रतिरूप स्थापित करती हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधकार की परतों में ले जाती हैं (2:257)।

लेकिन अगर लोगों को ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त हो ताकि उनके दिलों में आस्था पैदा हो और उनका फिरौन जैसा अहंकार टूट जाए, जिससे वे ईश्वर की पुस्तक को सुन सकें, तो वे बाद की अवस्था में मेरे जैसे हो जाएँगे। अचानक ब्रह्मांड ईश्वरीय प्रकाश से भर जाएगा, जिसका अर्थ यह होगा: ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है (24:35)।

विश्वासी इस विश्वास या सही मार्गदर्शन के प्रकाश में देखते हैं कि अतीत कोई बहुत बड़ी कब्र नहीं है; बल्कि, प्रत्येक बीती शताब्दी एक पैगम्बर या संतों के अधिकार का क्षेत्र है, जहाँ शुद्ध आत्माएँ अपने जीवन के कर्तव्यों (पूजा) को पूरा करने के बाद: "ईश्वर सर्व-महान है," भविष्य की ओर उच्च निवासों की ओर उड़ जाती हैं। अपनी बाईं ओर और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से देखते हुए, वे मध्यवर्ती दुनिया (कब्र की दुनिया) और अगले जीवन के पहाड़ जैसे क्रांतियों के पीछे, स्वर्ग के बगीचों में आनंद के महलों में सर्व-दयालु द्वारा स्थापित एक भोज स्थल को समझते हैं। वे समझते हैं कि तूफान, भूकंप, महामारी और इसी तरह की घटनाएँ एक विशिष्ट कार्य करती हैं, जैसे कि वसंत की बारिश और हवाएँ, अपनी स्पष्ट हिंसा के बावजूद, कई सुखद उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। वे मृत्यु को भी अनंत जीवन की शुरुआत के रूप में देखते हैं, और कब्र को अनंत सुख के प्रवेश द्वार के रूप में। आप तुलना के प्रकाश में अन्य वास्तविकताओं का अनुमान लगा सकते हैं।

तीसरा बिंदु: विश्वास प्रकाश और शक्ति दोनों है। जो लोग सच्चा विश्वास प्राप्त करते हैं, वे ब्रह्मांड को चुनौती दे सकते हैं और अपने विश्वास की ताकत के अनुपात में, घटनाओं के दबाव से मुक्त हो सकते हैं। ईश्वर पर भरोसा करते हुए, वे जीवन के जहाज में घटनाओं की पहाड़ी लहरों के बीच सुरक्षित रूप से यात्रा करते हैं।

अपने बोझ को परम शक्तिशाली के हाथ में सौंपकर, वे अपने अंतिम दिन तक आराम से संसार की यात्रा करते हैं। कब्र विश्राम स्थल होगी, जिसके बाद वे अनंत आनंद प्राप्त करने के लिए स्वर्ग की ओर उड़ जाएँगे। लेकिन, अगर वे ईश्वर पर भरोसा नहीं करते, तो उनका सांसारिक जीवन उन्हें सबसे निचले स्तर पर धकेल देगा। इसका मतलब है, विश्वास के लिए ईश्वरीय एकता की पुष्टि की आवश्यकता है; ईश्वरीय एकता की पुष्टि के लिए ईश्वर के प्रति समर्पण की आवश्यकता है; ईश्वर के प्रति समर्पण की आवश्यकता है; और ईश्वर पर भरोसा करने से दोनों दुनिया में खुशी मिलती है। लेकिन ईश्वर पर भरोसा करने को गलत न समझें; इसका मतलब कारण और प्रभाव की अनदेखी करना और लक्ष्य प्राप्त करने के साधनों की पूरी तरह उपेक्षा करना नहीं है। बल्कि, इसका मतलब है कि व्यक्ति को कारणों या साधनों को शक्ति के हाथ के सामने एक पर्दा समझना चाहिए। ईश्वरीय इच्छा का पालन करने की कोशिश करके कोई उनका पालन करता है, जो क्रिया में एक तरह की प्रार्थना है। हालाँकि, ऐसी इच्छा और खोज किसी विशेष प्रभाव को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमें यह समझना चाहिए कि,

सही विश्वास के अनुसार, परिणाम की अपेक्षा केवल ईश्वर से ही की जानी चाहिए, सर्वशक्तिमान। चूंकि वह प्रभावों का एकमात्र निर्माता है, इसलिए हमें हमेशा उसके प्रति आभारी हूँ.

जो परमेश्वर पर भरोसा करता है और जो नहीं करता, वे दो व्यक्तियों के समान हैं निम्नलिखित दृष्टांत में:

एक बार दो लोग भारी बोझ लेकर एक शाही जहाज पर चढ़े। विमान में चढ़ने के तुरंत बाद डेक पर एक बोझ रखा और उसे सुरक्षित रखने के लिए उस पर बैठ गया। दूसरे को जब अपना बोझ नीचे रखने को कहा गया तो भी उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया। तो और कहा: "मैं इसे नीचे नहीं रखूँगा, क्योंकि यह खो सकता है। इसके अलावा, मैं उसे उठाने के लिए पर्याप्त मजबूत है।" उसे बताया गया:

> यह विश्वसनीय शाही जहाज, जो हमें ले जा रहा है, अधिक मजबूत है और इसे संभाल सकता है बेहतर है। आप शायद थक जाएंगे, चक्कर महसूस करेंगे, और गिर जाएंगे अपने बोझ के साथ समुद्र में जाओ। तुम्हारी ताकत खत्म हो जाएगी, और फिर तुम कैसे करोगे इस बोझ को उठाना जो हर पल भारी होता जा रहा है? अगर कप्तान देख ले इस अवस्था में, वह कह सकता है कि आप पागल हैं और आपको घर से निकाल सकता है या शायद वह सोचेगा कि आप उन पर भरोसा नहीं करते और मज़ाक उड़ाएँगे उन्हें, और वह तुम्हें कैद करने का आदेश देगा। इसके अलावा, तुम भी पहचाने जाते हैं और मज़ाक का पात्र बन जाते हैं। आपका घमंड आपकी असलियत को उजागर करता है आपकी कमजोरी, आपका अहंकार आपकी नपुंसकता को प्रकट करता है, और आपका दिखावा आपके अपमान को प्रकट करता है। और इसलिए आप हंसी का पात्र बन गए हैं - देखिए कैसे हर कोई आप पर हंस रहा है।

इन शब्दों ने उसे अपने साथी के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। उससे कहा: "भगवान तुमसे प्रसन्न हो। मुझे राहत मिली है और मैं अब नहीं हूँ अब और कारावास या हंसी का पात्र नहीं बनना पड़ेगा।" इसलिए भरोसा रखें परमेश्वर पर भरोसा रखो और अपने होश में आओ, जैसा कि दृष्टांत में बताया गया आदमी करता है। अपना भरोसा रखो परमेश्वर पर भरोसा रखो और सृष्टि से भीख मांगने और भय से कांपने से छुटकारा पाओ हर घटना पर ध्यान दें। ऐसा करने से आप आत्म-दंभ से मुक्त हो जाएंगे, इस जीवन के दबाव और परलोक की यातनाएँ हास्यास्पद हैं।

चौथा बिंदु: विश्वास हमें सच्ची मानवता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, अन्य सभी प्राणियों से ऊपर एक स्थान। इस प्रकार, विश्वास और प्रार्थना हमारे सबसे महत्वपूर्ण हैं मौलिक और महत्वपूर्ण कर्तव्य। इसके विपरीत, अविश्वास हमें निम्न स्तर पर ले जाता है एक क्रूर लेकिन बहुत नपुंसक जानवर की स्थिति।

इस सत्य का निर्णायक प्रमाण यह है कि मनुष्य और मनुष्य के बीच कितना अंतर है। प्राणी और जानवर अस्तित्व में आते हैं। लगभग उसी क्षण से जब जन्म के बाद, ऐसा लगता है कि जानवर को कहीं और प्रशिक्षित किया गया है और उसकी क्षमताएँ परिपूर्ण की गई हैं। कुछ घंटों या दिनों या महीनों के भीतर, वह अपने जीवन को अपने विशेष नियमों और शर्तों के अनुसार जी सकता है। उदाहरण के लिए, एक गौरैया या मधुमक्खी, अपने पर्यावरण में एकीकृत होने की कौशल और क्षमता प्राप्त करता है या उससे प्रेरित होता है-

बीस दिन के भीतर ठीक हो जाना संभव है, जबकि एक व्यक्ति को बीस दिन लगेंगे।
ऐसा करने में कई साल लग जाते हैं। इसका मतलब यह है कि एक जानवर का बुनियादी दायित्व और ज़रूरी काम
भूमिका में सीखने के माध्यम से पूर्णता की तलाश करना, प्रगति करना शामिल नहीं है
वैज्ञानिक ज्ञान, या प्रार्थना और मदद के लिए याचिका करके अपनी
नपुंसकता। बल्कि, उनका एकमात्र उद्देश्य अपनी सीमाओं के भीतर कार्य करना है
जन्मजात क्षमताएं, जो उनके लिए निर्दिष्ट पूजा पद्धति है।

हालाँकि, लोग जीवन और अपने पर्यावरण के बारे में कुछ भी नहीं जानते हुए पैदा होते हैं और इसलिए उन्हें
सब कुछ सीखना पड़ता है। क्योंकि हम अपने भीतर भी ऐसा नहीं कर सकते
बीस साल तक हमें मरते दम तक सीखना जारी रखना चाहिए। हमें यहाँ भेजा गया है
इतनी कमज़ोरी और अक्षमता कि हमें दो साल तक की ज़रूरत पड़ सकती है
चलना सीखना। पंद्रह साल बाद ही हम अच्छे और बुरे में फर्क कर सकते हैं
बुराई। केवल समाज में रहकर ही हम इतने समझदार बन सकते हैं कि हम चुनाव कर सकें
क्या लाभदायक है और क्या हानिकारक है, के बीच का अंतर।

इस प्रकार हमारे अस्तित्व का आवश्यक और अंतर्निहित कर्तव्य है कि हम शिक्षा के माध्यम से पूर्णता की
खोज करें और ईश्वर की आराधना और सेवा की घोषणा करें।
प्रार्थना और विनती के ज़रिए ईश्वर से प्रार्थना करना। यह ऐसे ज़रूरी सवालों के जवाब ढूँढ़ने के लिए है जैसे: "किसकी
करुणा से मेरा जीवन इतनी समझदारी से संचालित हो रहा है? किसकी उदारता से मुझे इतने स्नेह से प्रशिक्षित किया
जा रहा है?
किसके अनुग्रह और कृपा से मैं इतनी तत्परता से पोषित हो रहा हूँ?" यह हमारी आवश्यकताओं के प्रति विनम्र
जागरूकता के साथ आवश्यकताओं के प्रदाता से प्रार्थना और निवेदन करना है, जिनकी एक हजारवीं राशि भी हम
अपने दम पर पूरी नहीं कर सकते हैं।
संक्षेप में, यह अपने स्वामी के पूजनीय सेवक होने के सर्वोच्च पद की ओर उड़ान भर रहा है।
हमारी जन्मजात नपुंसकता और गरीबी की चेतना के पंखों पर भगवान।

और इसलिए हमारा उद्देश्य यहाँ ज्ञान और भक्ति के माध्यम से पूर्णता की खोज करना है।
प्रार्थना। प्रत्येक वस्तु, अपने स्वभाव से, अनिवार्यतः ज्ञान पर निर्भर है।
और सभी सच्चे ज्ञान का आधार, स्रोत, प्रकाश और आत्मा ज्ञान है
ईश्वर का, जिसका आधार विश्वास है। विश्वास के बाद, प्रार्थना हमारी
आवश्यक कर्तव्य और पूजा का आधार, क्योंकि हमारी असीम नपुंसकता के बावजूद,
हम अंतहीन दुर्भाग्य और असंख्य शत्रुओं के संपर्क में हैं, और
हमारी असीम गरीबी के बावजूद, हम असीमित आवश्यकताओं और मांगों से पीड़ित हैं।

बच्चे किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत व्यक्त करते हैं जिसे वे नहीं पा सकते
शब्द या आँसू। दोनों ही एक तरह की दलील या प्रार्थना हैं, शब्द या कर्म में,
कमज़ोरी की भाषा। आख़िरकार उन्हें वो मिल ही जाता है जो वे चाहते हैं। इसी तरह, हम भी
जीवित प्राणियों की दुनिया में एक प्यारे बच्चे की तरह, जिसे या तो
अपनी कमज़ोरी के कारण दयालु और करुणामयी के दरबार में रोएँ
और नपुंसकता, या हमारी गरीबी और जरूरत के माध्यम से प्रार्थना करें, ताकि हमारी जरूरत
संतुष्ट हो सकते हैं। बदले में, हमें कृतज्ञता का अपना कर्तव्य निभाना चाहिए और

इस प्रावधान के लिए धन्यवाद। अन्यथा, उन लोगों की कृतघ्नता जो
वे दावा करते हैं कि उनके पास इतनी बुद्धि है और वे हर चीज़ पर इतनी शक्ति रखते हैं
अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अंततः वे उस बिंदु पर पहुंच जाएंगे जहां वे समान हैं
शरारती, आलसी बच्चे परेशान करने वाली मक्खियों के बारे में कराहते हैं। ऐसी कृतघ्नता
यह हमारे मूल स्वभाव के विरुद्ध है और हमें कठोर दण्ड का पात्र बनाता है।

पांचवां बिंदु: विश्वास के लिए प्राप्ति और पूर्णता के लिए प्रार्थना की आवश्यकता होती है, और
हमारे सार को इसकी आवश्यकता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर कहते हैं: कहो (हे मुहम्मद): "मेरे प्रभु
वह तुम्हारी प्रार्थना के अलावा किसी और बात पर ध्यान नहीं देता” (25:77), और:
मैं तुम्हें उत्तर दूंगा (40:60)।

प्रश्न: यदि आप कहते हैं कि आप इतनी बार प्रार्थना करते हैं लेकिन आपकी प्रार्थनाएँ
उपरोक्त श्लोक में दिए गए आश्वासन के बावजूद, प्रश्न अनुत्तरित हैं, उत्तर
निम्नानुसार होगा:

उत्तर: प्रार्थना का उत्तर मिलने का अर्थ यह नहीं है कि उसे स्वीकार कर लिया गया है। हर प्रार्थना का उत्तर
होता है। हालाँकि, प्रार्थना को स्वीकार करना और स्वीकार करना ज़रूरी नहीं है।
जो मांगा जाता है उसे देना सर्वशक्तिमान की बुद्धि पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, एक बीमार बच्चा डॉक्टर
से एक खास दवा मांगता है। डॉक्टर उसे दवा देगा।
या तो जो मांगा गया है वह मिलेगा या उससे बेहतर कुछ, या फिर वह कुछ भी नहीं देगा।
सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि दवा बच्चे पर कैसा असर करेगी। इसी तरह सर्वशक्तिमान, जो सर्व-न्यायी
और सर्वव्यापी है, अपने सेवकों की प्रार्थना का उत्तर देता है
और उनके अकेलेपन को अपनी संगति के आनंद में बदल देता है। लेकिन उसका
इसका उत्तर व्यक्ति की अपनी कल्पना पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके अनुसार होता है।
बुद्धि, वह जो मांगा जाता है, जो बेहतर है, या कुछ भी नहीं देता है।

इसके अलावा, प्रार्थना पूजा का एक रूप है और पूजा मुख्य रूप से पुरस्कृत होती है
परलोक में। सांसारिक ज़रूरतें और उद्देश्य केवल कारण या अवसर हैं
प्रार्थना के लिए। उदाहरण के लिए, बारिश के लिए प्रार्थना करना एक तरह की पूजा है जो
बारिश की कमी। अगर बारिश ही प्रार्थना का एकमात्र उद्देश्य है, तो प्रार्थना अस्वीकार्य है,
क्योंकि यह न तो ईमानदारी से किया गया है और न ही इसका उद्देश्य परमेश्वर को प्रसन्न करना और उसका अनुमोदन प्राप्त करना है।

सूर्यास्त शाम की प्रार्थना का समय निर्धारित करता है, जबकि सौर और
चंद्र ग्रहण के अवसर पर दो विशेष प्रकार की पूजा की जाती है।
ग्रहण - दिन और रात के दो चमकदार चिह्नों का ढकना - दो हैं
ईश्वरीय महिमा को प्रकट करने के साधन के रूप में, सर्वशक्तिमान अपने सेवकों को बुलाता है
इन अवसरों पर विशेष रूप से पूजा का एक रूप - ग्रहण की प्रार्थना - किया जाता है। इस प्रार्थना का ग्रहण समाप्त
करने से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि यह
खगोलीय गणनाओं के माध्यम से पहले से ही ज्ञात है। इसी तरह, सूखा और
अन्य विपत्तियाँ कुछ विशेष प्रकार की प्रार्थना के अवसर हैं। ऐसे समय में, हम
हम अपनी नपुंसकता को अच्छी तरह समझते हैं और इसलिए उच्च स्तर की शरण लेने की आवश्यकता महसूस करते हैं
प्रार्थना और विनती के माध्यम से परम शक्तिशाली की उपस्थिति।

यदि अनेक प्रार्थनाओं के बावजूद कोई विपत्ति दूर नहीं होती, तो हमें यह नहीं कहना चाहिए कि प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई है। बल्कि, हमें कहना चाहिए कि समय आ गया है प्रार्थना अभी समाप्त नहीं हुई है। यदि ईश्वर अपनी असीम कृपा और उदारता के कारण विपत्ति को दूर कर देता है, तो यह प्रकाश पर प्रकाश, लाभ पर लाभ है, और यह दिन प्रार्थना के विशेष अवसर के अंत का प्रतीक है।

प्रार्थना करना आराधना के माध्यम से ईश्वर की सेवा का रहस्य है। आराधना यह केवल परमेश्वर को प्रसन्न करने और उसके लिए किया जाता है। हमें इसकी पुष्टि करनी चाहिए और इसे प्रदर्शित करना चाहिए हम अपनी गरीबी और कमजोरी को स्वीकार करते हैं और प्रार्थना के माध्यम से उसकी शरण लेते हैं। हमें उसके आधिपत्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, बल्कि परमेश्वर को उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करने देना चाहिए। हमें उसकी बुद्धि पर भरोसा करना चाहिए और उसकी दया पर आरोप नहीं लगाना चाहिए।

प्रत्येक प्राणी ईश्वर को अपनी अनूठी स्तुति और पूजा अर्पित करता है। ब्रह्माण्ड से ईश्वर के दरबार तक पहुँचने वाली एकमात्र चीज़ प्रार्थना है।

एक तरह की प्रार्थना वह होती है जो क्षमता की जीभ के माध्यम से की जाती है। पौधे अपनी क्षमता की जीभ के माध्यम से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं कुछ दिव्य नामों को बनाओ और प्रकट करो।

एक अन्य प्रकार की प्रार्थना प्राकृतिक आवश्यकताओं की भाषा में व्यक्त की जाती है। जीवित प्राणी परम उदार भगवान से अपने जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि वे स्वयं ऐसा नहीं कर सकते, अतः उन्हें अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना होगा।

एक और तरह की प्रार्थना पूरी तरह असहाय होने की भाषा में की जाती है। संकटग्रस्त प्राणी अपनी शरण में जाता है। अदृश्य रक्षक से सच्ची प्रार्थना करके वह अपने दयालु प्रभु की ओर मुड़ता है। ये तीन प्रकार की प्रार्थनाएँ हमेशा स्वीकार करने योग्य होती हैं, जब तक कि किसी तरह से बाधा न आए।

चौथे प्रकार की प्रार्थना वह है जो मानवता द्वारा की जाती है। दो श्रेणियों में विभाजित: सक्रिय और स्वभाव से, और मौखिक और दिल। उदाहरण के लिए, कारणों के अनुसार कार्य करना या इच्छा को पूरा करना सबसे ज़रूरी शर्त है सक्रिय प्रार्थना। हम परमेश्वर की स्वीकृति पाने के लिए प्रार्थना करते हैं कारणों का अनुपालन करना या पूर्वापेक्षाओं को पूरा करना, केवल कारणों के लिए या पूर्वापेक्षाओं की पूर्ति से परिणाम नहीं मिल सकता—केवल भगवान ऐसा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, मिट्टी जोतना एक सक्रिय प्रार्थना है, क्योंकि इसका मतलब है ईश्वर की दया के खजाने के दरवाजे पर दस्तक देना। प्रार्थना आमतौर पर स्वीकार्य होती है, क्योंकि यह ईश्वर से प्रार्थना होती है सर्व उदार का नाम बताइये।

मानवता की दूसरी प्रकार की प्रार्थना, जीभ और हृदय से की जाती है। दिल, साधारण है। इसका मतलब है कि हम दिल से भगवान से माँगते हैं किसी ऐसी चीज़ के लिए जिसे हम प्राप्त नहीं कर सकते। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू और बेहतरीन और सबसे मीठा फल यह है कि हम जानते हैं कि भगवान हमें सुनता है, हमारी भावनाओं से अवगत है

हम अपने हृदय की सारी इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं, कि उनकी शक्ति सर्वत्र फैली हुई है, कि वे हमारी हर इच्छा को पूरा कर सकते हैं, और कि वे हमारे प्रति दया से प्रेरित होकर हमारी सहायता के लिए आते हैं।

कमजोरी और अपर्याप्तता.

और इसलिए, हे असहाय और गरीब व्यक्ति, प्रार्थना कभी मत छोड़ो, क्योंकि यह सबसे बड़ी प्रार्थना है।
दया के खजाने की कुंजी और अनंत तक पहुंच प्राप्त करने का साधन
शक्ति। इसे थामे रहो। मानवता के सर्वोच्च पद पर चढ़ो और सृष्टि के सबसे पसंदीदा और श्रेष्ठ सदस्य के रूप में पूरे ब्रह्मांड को अपने में समाहित करो।
अपनी प्रार्थना में प्रार्थना करो। सभी प्राणियों की ओर से कहो: केवल आप से ही हम प्रार्थना करते हैं
सहायता करें (1:5), और सृष्टि के लिए एक सुन्दर नमूना बनें।

दूसरा अध्याय

(मानव सुख और दुख पर पाँच टिप्पणियाँ)

[मनुष्य को उत्तम स्वरूप में बनाया गया है, क्योंकि वह उत्तम है।
सृजन का पैटर्न, और एक व्यापक क्षमता दी गई है। उनके पास
शक्ति के चमत्कार के रूप में दुनिया को भेजा गया है, परम शिखर
सृजन और कला के चमत्कार। उनके लिए, यह दुनिया परीक्षण का क्षेत्र है,
जहाँ उनके सामने दो रास्ते खुले हैं, जिनमें से एक अनंत की ओर जाता है
एक तो चढ़ाई, दूसरा अनंत अवरोहण। तो, इनमें से किसी एक का अनुसरण करके
वे या तो सबसे ऊंचे स्थान पर पहुंच जाएंगे या सबसे नीचे उतर जाएंगे।
सबसे नीची चीज़। मैं मानवता के उत्थान के रहस्य को उजागर करूँगा
और पांच टिप्पणियों में वंश।]

पहली टिप्पणी: हमारा कुछ संबंध है और हमें सबसे ज्यादा जरूरत है
हमारी ज़रूरतें ब्रह्मांड के सभी हिस्सों में फैली हुई हैं, और हमारी इच्छाएँ भी ब्रह्मांड के सभी हिस्सों में फैली हुई हैं।
जहाँ तक अनंत काल की बात है। हम एक फूल के साथ-साथ एक पूरा वसंत, एक बगीचा और एक शाश्वत स्वर्ग चाहते हैं। हम अपने दोस्त के साथ-साथ अपने दोस्त को भी देखना चाहते हैं।
सर्वसुन्दर, दयालु महामहिम। चूँकि हमें अपने दरवाज़े पर दस्तक देनी है
हम अपने प्रिय मित्र के दरवाजे पर एक मुलाकात के लिए आते हैं, ताकि हम अपने उन 99 प्रतिशत मित्रों से फिर से मिल सकें, जो मध्यवर्ती दुनिया के लिए चले गए हैं।
और अनंत अलगाव से बचने के लिए, हमें भी शरण लेने की आवश्यकता है
उस परम शक्तिशाली का न्यायालय, जो इस विशाल विश्व के द्वार बंद कर देगा
दरवाज़ा खोलो और आख़िरत का दरवाज़ा खोलो, अजूबों की दुनिया, और
इस दुनिया को अगली दुनिया से बदल दो।

इसे देखते हुए, हमारी पूजा का सच्चा उद्देश्य केवल सर्वशक्तिमान ही हो सकता है
महिमा की, अत्यंत दयालु, सौंदर्य और अनुग्रह की, अत्यंत बुद्धिमान
पूर्णता, जिसके हाथ में सभी चीजों की बागडोर है, जिसके अधिकार में है
हर अस्तित्व का प्रावधान, जो सब कुछ देखता है और सर्वव्यापी है,
अंतरिक्ष से असीम, और किसी भी बाधा, दोष, कमी और कमी से मुक्त।

क्योंकि केवल वही, जिसके पास असीम शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान है, हमारी असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है, और इसलिए केवल वही पूजा के योग्य है।

अतः हे मानव! यदि तुम केवल उसी की आराधना करोगे तो तुम्हें एक पद की प्राप्ति होगी। अन्य सभी प्राणियों से ऊपर। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप एक अपमानित गुलाम बन जाएँगे नपुंसक सृजन के लिए। यदि आप अपने आत्मत्व और शक्ति पर भरोसा करते हैं, बजाय इसके कि प्रार्थना और ईश्वर पर भरोसा, और अभिमानी श्रेष्ठता का दावा, आप बन जाएंगे मधुमक्खी या चींटी से कम और मक्खी या मकड़ी से कमज़ोर सकारात्मक कार्य और रचनात्मक आविष्कार। लेकिन आपकी बुराई और विनाश वे पहाड़ से भी भारी होंगे और महामारी से भी अधिक हानिकारक होंगे।

तो हे मानवता! तुम्हारे अस्तित्व के दो पहलू हैं। एक सकारात्मक है और दूसरा सकारात्मक है। सक्रिय है, और इसका संबंध रचनात्मक आविष्कार, अस्तित्व और अच्छाई से है। दूसरा नकारात्मक और निष्क्रिय है, और विनाश, अस्तित्वहीनता से संबंधित है। और बुराई। जहाँ तक आपके अस्तित्व के पहले पहलू की बात है, तो आप किसी भी चीज़ से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते मधुमक्खी या गौरैया, मक्खी या मकड़ी से भी कमजोर हैं, और वह हासिल नहीं कर सकते जो उन्हें करना चाहिए। वे कर सकते हैं। हालाँकि, आपके अस्तित्व के दूसरे पहलू के लिए, आप आगे बढ़ सकते हैं पहाड़, धरती और आकाश, क्योंकि तुम उनका बोझ उठा सकते हो नहीं कर सकते। इसलिए आपके कामों का उनके कामों से ज़्यादा असर पड़ता है। जब आप ऐसा करते हैं कुछ अच्छा करो या कुछ बनाओ, यह केवल आपके हाथ तक ही पहुंचता है और ताकत है। लेकिन आपके बुरे और विनाशकारी कार्य आक्रामक और विस्तारशील हैं।

उदाहरण के लिए, अविश्वास एक बुराई है, विनाश का कार्य है, विश्वास का अभाव है यह एक पाप की तरह लग सकता है, लेकिन यह सृष्टि का अपमान करता है, सभी दिव्य नामों का अपमान, तथा समस्त मानवता का पतन। क्योंकि सृष्टि का एक उत्कृष्ट स्थान और महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि इसका प्रत्येक भाग एक प्रभु का संदेश, उनकी महिमा का दर्पण और उनका कर्तव्यपरायण सेवक देवत्व। अविश्वास उन्हें इस पद से वंचित करता है जो उन्हें ईश्वर के गुणों के कारण दिया गया है। इन कार्यों को वह संयोग की वस्तुएँ, महत्वहीन, बेकार और निरर्थक वस्तुएँ बना देता है, जो क्षय और विघटन के लिए अभिशप्त हैं।

अविश्वास उन दिव्य नामों का भी अपमान है, जिनके सुंदर सभी निर्मित रूपों के दर्पणों में शिलालेख और अभिव्यक्तियाँ देखी जाती हैं पूरे ब्रह्मांड में। इसके अलावा, यह मानवता को एक स्तर तक नीचे गिरा देता है सबसे निकृष्ट पशु से भी अधिक दयनीय, दुर्बल, असहाय और दरिद्र। यह हमें एक साधारण, नाशवान साइन-बोर्ड में बदल देता है, जिसका कोई अर्थ नहीं है, जो भ्रमित है और तेजी से क्षय हो रहा है। और यह तब है जब मानवता, वास्तव में, एक काव्यात्मक है बुद्धि का कार्य जो सभी दिव्य नामों को प्रकट करता है; शक्ति का एक महान चमत्कार जिसमें बीज के समान सृष्टि का वृक्ष समाहित है; तथा ईश्वर द्वारा नियुक्त शासक पृथ्वी का वह परमेश्वर जो स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ और पर्वतों से भी ऊँचा है, पृथ्वी और आकाश को सर्वोच्च विश्वास के आधार पर हमने स्वीकार किया है।

संक्षेप में: बुराई और विनाश के संबंध में, शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा अनगिनत अपराध कर सकती है और असीमित विनाश कर सकती है, जबकि अच्छा करने की उसकी क्षमता बहुत सीमित है। यह एक दिन में एक घर को नष्ट कर सकता है लेकिन सौ दिनों में इसे फिर से नहीं बना सकता। लेकिन अगर यह आत्म-निर्भरता और घमंड को त्याग देता है और अच्छे और रचनात्मक काम करने के लिए ईश्वरीय सहायता पर निर्भर करता है, अगर यह बुराई और विनाश को त्याग देता है और ईश्वरीय क्षमा मांगता है और इस तरह ईश्वर का एक आदर्श सेवक बन जाता है, तो यह इस बात का संदर्भ बन जाता है: ईश्वर उनके बुरे कामों को अच्छे कामों में बदल देगा (25:70)। यानी, बुराई के लिए हमारी अनंत क्षमता अच्छाई के लिए अनंत क्षमता में बदल जाती है। हम "सृजन के आदर्श नमूने" के मूल्य को प्राप्त करते हैं और "सबसे ऊंचे" तक बढ़ते हैं।

तो ऐ ग़ाफ़िल, अल्लाह की रहमत और रहमत पर ग़ौर करो। हक़ीकत में एक गुनाह को हज़ार गुनाहों के तौर पर दर्ज करना और एक नेकी को सिर्फ़ एक गुनाह के तौर पर दर्ज करना ही मुकम्मल इंसाफ़ है। लेकिन अल्लाह इसके उलट करता है: वह एक गुनाह को एक गुनाह के तौर पर दर्ज करता है और नेकी के काम को दस, सत्तर, सात सौ या कभी-कभी सात हज़ार के तौर पर दर्ज करता है। इससे हम समझ सकते हैं कि जहन्नुम में जाना इंसान के कर्मों और शुद्ध इंसाफ़ का नतीजा है, जबकि जन्नत में जाना उसकी मुकम्मल रहमत का नतीजा है।

दूसरी टिप्पणी: मनुष्य के दो चेहरे होते हैं। पहला चेहरा हमारी आत्म-प्रकृति के कारण इस सांसारिक जीवन की ओर देखता है। यहाँ हमारी पूंजी में एक बाल जितनी कमज़ोर स्वतंत्र इच्छा, सकारात्मक, रचनात्मक कार्यों के संबंध में सबसे सीमित प्रतिभा तक सीमित शक्ति, एक प्रकाश की चमक जितनी छोटी ज़िंदगी और एक भौतिक अस्तित्व शामिल है जो तेज़ी से विघटित होने के लिए बाध्य है। इस अवस्था में, हम पूरे ब्रह्मांड में फैली अनगिनत प्रजातियों में से एक प्रजाति के कमज़ोर सदस्य से ज़्यादा कुछ नहीं हैं।

दूसरा चेहरा अनंत जीवन की ओर देखता है क्योंकि हम ईश्वर के सेवकों के रूप में प्रकृति से जुड़े हैं और हमें उनकी आराधना करने की आवश्यकता है। ईश्वर के सेवकों के रूप में असहायता और अपर्याप्तता की हमारी धारणा हमें अत्यंत महत्वपूर्ण और समावेशी प्राणी बनाती है। क्योंकि सर्वज्ञ सृजक ने हमारे स्वभाव में अनंत नपुंसकता और दरिद्रता को स्थापित किया है ताकि हममें से प्रत्येक व्यक्ति एक व्यापक दर्पण बन सके जो अनंत शक्ति वाले सर्व-दयालु, अनंत समृद्धि वाले सर्व-उदार की असीम अभिव्यक्तियों को दर्शाता हो।

हम बीज के समान हैं। बीज को ईश्वरीय शक्ति द्वारा महान क्षमता और ईश्वरीय नियति द्वारा सूक्ष्म कार्यक्रम प्रदान किया जाता है, ताकि वह भूमिगत अंकुरित हो सके, उस संकीर्ण दुनिया से निकलकर हवा की विशाल दुनिया में प्रवेश कर सके। अपने रचयिता से अपनी क्षमता के बारे में पूछते हुए, वह पेड़ बन सकता है, और अपनी विशेष पूर्णता प्राप्त कर सकता है। यदि, अपने घातक स्वभाव के कारण,

यदि बीज हानिकारक पदार्थों को आकर्षित करने की अपनी क्षमता का दुरुपयोग करता है, तो वह शीघ्र ही सड़ जाएगा
अपनी संकीर्ण जगह में दूर। हालाँकि, अगर यह अपनी क्षमता का सही तरीके से उपयोग करता है, और
अनाज और फल-पत्थर को अलग करने वाले (6:95) की सृजनात्मक आज्ञाओं का पालन करते हुए , यह
अपनी संकीर्ण जगह से निकलकर एक विस्मयकारी, फलदार वृक्ष के रूप में विकसित होगा। इसके अलावा,
इसकी छोटी और विशेष प्रकृति सामने आएगी
एक महान एवं सार्वभौमिक सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ठीक उसी तरह, हमारा सार महान शक्ति द्वारा सुसज्जित है
क्षमता और भाग्य द्वारा महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ अंकित है। अगर हम अपने
सांसारिक जीवन की मिट्टी के नीचे इस संकीर्ण दुनिया में क्षमता और क्षमताओं
अपनी शारीरिक, दुष्ट आत्मा की कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए, हम एक सड़े हुए बीज की तरह, एक छोटे
से जीवन में एक तुच्छ सुख के लिए सड़ेंगे और विघटित होंगे।
कठिनाइयों और परेशानियों के बीच। इस प्रकार हम इस दुनिया से विदा हो जाएंगे
हमारी अभागी आत्माओं पर भारी आध्यात्मिक बोझ।

लेकिन अगर हम अपनी क्षमता के बीज को “पूजा की धरती” के नीचे अंकुरित करते हैं
कुरान के अनुसार "इस्लाम के पानी" और "विश्वास के प्रकाश" के साथ
यदि हम अपने आदेशों का पालन करें और अपनी क्षमताओं का सही उपयोग करें, तो हम अनन्तकालीन, भव्य
वृक्षों के रूप में विकसित होंगे, जिनकी शाखाएं मध्यवर्ती विश्व तक फैली होंगी और
प्रतिनिधित्व या अमूर्त रूपों की दुनिया, और जो होगी
अनगिनत वरदानों से संपन्न और पूर्णता के असंख्य फल उत्पन्न करने वाला
अगली दुनिया और स्वर्ग। हम, वास्तव में, धन्य, प्रकाशमान बन जाएंगे
सृष्टि के वृक्ष का फल.

सच्ची प्रगति तभी संभव है जब हम अपनी क्षमताओं (जैसे बुद्धि, हृदय, आत्मा और यहां तक कि
कल्पना) को शाश्वत जीवन की ओर मोड़ें और उन्हें जीवन में उतारें।
अपनी ही तरह की पूजा में व्यस्त। गुमराह लोग क्या समझते हैं
प्रगति - इस दुनिया के जीवन में डूब जाना और हमारे सभी को अधीन करना
सांसारिक सुखों का स्वाद लेने के लिए शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्म-शक्ति की क्षमता को कम करना -
गिरावट और पतन के अलावा कुछ नहीं है। मैं एक बार
इस सत्य को एक दर्शन में देखा, जो इस प्रकार है:

मैं बड़े महलों से भरे एक विशाल शहर में पहुंचा। उनमें से कुछ के बाहर, मैं
मनोरंजन और आनंद के लिए चल रहे तमाशे और शो देखे।
उनमें से एक के पास जाकर मैंने देखा कि उसका मालिक दरवाजे पर एक कुत्ते के साथ खेल रहा था।
औरतें युवा अजनबियों से बातें कर रही थीं और छोटी लड़कियाँ बच्चों के खेल आयोजित कर रही थीं। दरबान
ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे वह उनका मालिक हो। मुझे एहसास हुआ कि महल खाली था, सभी महत्वपूर्ण
काम अधूरे पड़े थे, क्योंकि इसके भ्रष्ट निवासी बेकार के कामों में लगे हुए थे।

तभी मैं एक और महल के सामने पहुंचा। दरवाजे पर एक वफ़ादार कुत्ता लेटा हुआ था,
और उसके बगल में एक दरबान था जिसका चेहरा सख्त, गंभीर और शांत था।

महल इतना शांत लग रहा था कि मैं आश्चर्य और विस्मय में अंदर गया।
महान गतिविधि का एक दृश्य,: एक आटा दूसरे के ऊपर, निवासियों थे
अलग-अलग, महत्वपूर्ण कार्यों में लगे हुए थे। पहली मंजिल पर लोग थे
महल का प्रबंधन कर रहे थे। दूसरी मंजिल पर लड़कियाँ और लड़के पढ़ रहे थे।
तीसरी मंजिल पर महिलाएं सुंदर कलाकृतियां बना रही थीं और
नाजुक कढ़ाई। शीर्ष मंजिल पर, मालिक अपने घर की भलाई को सुरक्षित करने के लिए राजा के साथ लगातार संवाद में था और ताकि वह
अपनी प्रगति और पूर्णता के लिए महान कर्तव्यों का पालन कर सकते थे।
मुझे न देखकर मैं बेरोकटोक घूमता रहा।

फिर मैं बाहर आया और चारों ओर देखा। मैंने देखा कि शहर ऐसे ही महलों से भरा पड़ा था। मैंने पूछा और मुझे बताया गया कि पहले वाले महल जैसे महल यहाँ के हैं।
सबसे बड़े अविश्वासी और गुमराह लोगों के लिए, जबकि दूसरे प्रकार के लोग
यह महल ईमानदार मुस्लिम कुलीन लोगों का था। एक कोने में मुझे एक महल दिखा
जिस पर मेरा नाम लिखा था: "कहा।" जब मैंने इसे ध्यान से देखा, तो मुझे लगा जैसे मैं
मैंने उस पर अपनी छवि देखी। घबराहट में रोते हुए, मैं अपने होश में आया और जाग गया।

शहर हमारा सामाजिक जीवन और मानव सभ्यता का भूभाग है।
महल एक मानव है, और निवासी मानव इंद्रियां और क्षमताएं हैं (जैसे, आंख, कान, बुद्धि, हृदय और आत्मा, और क्रोध और
वासना)। प्रत्येक इंद्रिय और क्षमता का पूजा का एक विशेष कर्तव्य है, साथ ही विशेष सुख और दर्द भी। शारीरिक आत्मा और कल्पनाएँ, साथ ही क्रोध और वासना की शक्तियाँ, कुत्ते और दरबान के अनुरूप हैं। इस प्रकार, उत्कृष्ट इंद्रियों और क्षमताओं को शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं के अधीन करना ताकि

वे अपने मूल कर्तव्यों को भूल जाते हैं, पतन और भ्रष्टाचार। यह निश्चित रूप से है
प्रगति नहीं। आप अन्य विवरणों की व्याख्या स्वयं कर सकते हैं।

तीसरी टिप्पणी: हमारे रचनात्मक कार्यों और शारीरिक के संबंध में
प्रयासों के बावजूद, हम कमज़ोर जानवरों और असहाय प्राणियों की तरह हैं।
हमारा निपटान इतना सीमित है कि हमारी उंगलियां इसकी परिधि को छू सकती हैं।
दुर्बलता, नपुंसकता और आलस्य इतना अधिक है कि पालतू पशु भी
जानवर उनसे प्रभावित होते हैं। अगर एक पालतू जानवर की तुलना
इसके गैर-पालतू समकक्ष में, बड़े अंतर देखे जा सकते हैं।

लेकिन प्रार्थना और निवेदन करने की आवश्यकता के प्रति सचेत प्राप्तकर्ता के रूप में, हम
सम्मानित, योग्य यात्रियों को गेस्ट हाउस में कुछ समय तक रहने की अनुमति दी जाती है
इस दुनिया के हम ऐसे दयालु भगवान के मेहमान हैं जिन्होंने हमें अपना बना लिया है।
दया के अनंत खजाने हमारे निपटान में हैं और उनके अद्वितीय कार्यों को वश में करते हैं
हमारे लिए सृजनात्मक शक्ति और विशेष सेवकों की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा, उसने हमारे लिए भी तैयारी की है
उपयोग, आनंद और मनोरंजन इतना विशाल क्षेत्र है कि इसकी परिधि दृष्टि तक ही सीमित है
या यहां तक कि कल्पना भी नहीं पहुंच सकती।

यदि हम अपनी शारीरिक और जन्मजात क्षमताओं पर भरोसा करते हैं, सांसारिक जीवन को अपनाते हैं अपना लक्ष्य बनाकर और अपनी आजीविका की खोज में इसके सुखों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हम एक बहुत ही संकीर्ण दायरे में घुटन महसूस होती है। इसके अलावा, हमारे शरीर के अंग, इंद्रियाँ, और आख़िरत में हमारे ख़िलाफ़ मुक़दमा और गवाही पेश करेंगे। लेकिन अगर हम जानते हैं कि हम मेहमान हैं और इसलिए अपने उदार मेजबान द्वारा स्थापित और अनुमोदित सीमाओं के भीतर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, हम एक खुशहाल और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे। एक व्यापक क्षेत्र में शांतिपूर्ण जीवन और एक लंबा, शाश्वत जीवन प्राप्त करें। हम उठ सकते हैं सबसे ऊंचे स्थान पर, और हमारे शरीर के सभी अंग और क्षमताएं परलोक में हमारे पक्ष में गवाही देंगी।

हमारी अद्भुत क्षमताएँ इस तुच्छ सांसारिक जीवन के लिए नहीं हैं; बल्कि, वे हमारे अनंत जीवन के लिए बहुत महत्व रखते हैं। क्योंकि जब तुलना की जाती है पशुओं के साथ व्यवहार करते समय हम देखते हैं कि हम उनकी तुलना में इंद्रियों और क्षमताओं के मामले में अधिक समृद्ध हैं, जबकि सांसारिक सुखों और पशु जीवन के मामले में हम उनसे पीछे हैं। सौ गुना कम। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम जो भी सांसारिक सुख चखते हैं, वह हमें प्रभावित करता है। दर्द के कई निशान। अतीत के दर्द, भविष्य के डर और दुख हर सुख की समाप्ति हमारे आनंद को बिगाड़ देती है। हालाँकि, जानवर बिना दर्द के सुख का अनुभव करें, बिना चिंता के आनंद का अनुभव करें, और न तो अतीत के दर्द से आहत हों और न ही भविष्य के भय से व्यथित हों। वे आरामदायक जीवन का आनंद लेते हैं और अपने सृष्टिकर्ता की स्तुति करते हैं।

इसका अर्थ यह है कि यदि मानवता को सर्वोत्तम स्वरूप में पूर्ण परमात्मा के रूप में निर्मित किया गया है, सृष्टि का स्वरूप, इस सांसारिक जीवन पर केन्द्रित है, हम उससे कहीं नीचे हैं गौरैया, यद्यपि हमारी क्षमताएं किसी भी अन्य जानवर से कहीं अधिक विकसित हैं। इस वास्तविकता को समझाने के लिए मैं एक दृष्टांत दोहराऊंगा जो मैंने लिखा था एक अन्य ग्रंथ.

एक आदमी अपने नौकर को दस सोने के सिक्के देता है और उससे कहता है कि वह एक सूट ले ले एक खास कपड़े से बना है। वह दूसरे नौकर को एक हज़ार सोने का कपड़ा देता है सिक्के देता है और उसे खरीदारी की सूची के साथ बाजार भेजता है। बेहतरीन कपड़े का बेहतरीन सूट। बाद वाला मूर्खतापूर्ण कार्य करता है, क्योंकि वह न तो वह यह नहीं देखता कि उसे कितना पैसा दिया गया है और न ही खरीदारी की सूची पढ़ता है। यह सोचते हुए कि उसे अपने दोस्त की नकल करनी चाहिए, वह एक दुकान पर जाता है और एक उपहार मांगता है। बेईमान दुकानदार उसे सबसे घटिया किस्म का सूट देता है कपड़ा। दुर्भाग्यपूर्ण नौकर अपने मालिक के पास लौटता है और उसे गंभीर रूप से पीटा जाता है फटकार और एक भयानक सजा। कोई भी देख सकता है कि हज़ार सोने के सिक्के किसी मुकदमे के लिए नहीं, बल्कि किसी बहुत महत्वपूर्ण लेन-देन के लिए दिए जाते थे।

उसी तरह, हमारी आध्यात्मिक क्षमताएँ, भावनाएँ और इंद्रियाँ भी बहुत अधिक हैं जानवरों की तुलना में अधिक विकसित। उदाहरण के लिए, हम सभी डिग्री देख सकते हैं सुंदरता की, खाद्य पदार्थों के विशेष स्वाद की सभी किस्मों में भेद करने की, कलम-

वास्तविकताओं के कई विवरणों को आत्मसात करें, पूर्णता के सभी स्तरों की लालसा करें, इत्यादि। लेकिन जानवर, एक विशेष क्षमता को छोड़कर जो अपने विशेष कर्तव्य के अनुसार विकास की उच्च अवस्था तक पहुँचती है, केवल थोड़ा सा विकास ही प्राप्त कर सकते हैं, यदि कोई हो।

हम क्षमताओं में समृद्ध हैं क्योंकि हमारे मन और बुद्धि के कारण हमारी इंद्रियाँ और भावनाएँ बहुत विकसित हुई हैं। हमारी कई ज़रूरतों ने हमें अलग-अलग तरह की भावनाएँ विकसित करने और कई चीज़ों के प्रति बहुत संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही, हमारी व्यापक प्रकृति के कारण हमें कई लक्ष्य और उद्देश्य दिए गए हैं। हमारे आवश्यक कर्तव्यों की विविधता के कारण हमारी इंद्रियाँ और क्षमताएँ बहुत विस्तारित हुई हैं। इसके अलावा, चूँकि हम पूजा करने के लिए इच्छुक और सक्षम हैं, इसलिए हमारे पास सभी प्रकार की पूर्णता को महसूस करने की क्षमता है।

ऐसी समृद्ध क्षमताएँ और प्रचुर संभावनाएँ हमें एक तुच्छ, अस्थायी, सांसारिक जीवन के लिए नहीं दी जा सकतीं। वास्तव में, वे हमें इसलिए दी गई हैं क्योंकि हमारा आवश्यक कर्तव्य है कि हम अपने दायित्वों को समझें, जो अनंत लक्ष्यों की ओर निर्देशित हैं; पूजा के रूप में अपनी नपुंसकता, दरिद्रता और अपर्याप्तता की पुष्टि करें; अपनी दूरगामी दृष्टि और तीक्ष्ण समझ से सृष्टि द्वारा ईश्वर की महिमा का अध्ययन करें और उनका साक्ष्य दें; दयालु ईश्वर द्वारा उपहारों के रूप में भेजी गई सहायता को समझें और उसके लिए कृतज्ञ हों; और सृष्टि में प्रकट उनकी शक्ति के चमत्कारों को देखें, उन पर विचार करें और उनसे चेतावनी लें।

हे संसार-प्रेमी, सांसारिक जीवन से मोहित और सृष्टि के आदर्श स्वरूप के रूप में अपने स्वरूप के अर्थ से अनभिज्ञ! एक बार मैंने एक दर्शन में इस सांसारिक जीवन का वास्तविक स्वरूप देखा, इस प्रकार: मैंने खुद को एक यात्री के रूप में एक लंबी यात्रा पर जाते हुए पाया। मेरे स्वामी ने मुझे इस यात्रा पर भेजने के लिए जो साठ स्वर्ण मुद्राएँ मुझे

आवंटित की थीं, उनमें से कुछ मुझे धीरे-धीरे दे दीं। यह कुछ समय तक चलता रहा, और थोड़ी देर बाद मैं एक सराय में पहुँचा, जहाँ कुछ मनोरंजन की व्यवस्था थी। एक रात में मैंने जुआ और मनोरंजन तथा प्रसिद्धि की खोज में दस स्वर्ण मुद्राएँ खर्च कर दीं। अगली सुबह, मेरे पास कोई पैसा नहीं बचा था। न ही मैं व्यापार कर सकता था और न ही अपने गंतव्य पर आवश्यक खाद्य-सामग्री खरीद सकता था। मेरे पास केवल पापों और अवैध सुखों से बचा हुआ दर्द, दुख और पछतावा बचा था। जब मैं इस दयनीय स्थिति में था, तो एक व्यक्ति प्रकट हुआ और मुझसे बोला: "तुमने अपना सब कुछ खो दिया है और दंड के पात्र हो। इसके अलावा, तुम बिना पैसे के अपने गंतव्य पर जाओगे। लेकिन अगर तुम अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हो, तो पश्चाताप का द्वार बंद नहीं होता है। जब तुम्हें धीरे-धीरे शेष पंद्रह स्वर्ण सिक्के प्राप्त हो जाएं, तो उनमें से आधे बचाकर रख लो और इसका उपयोग अपने गंतव्य पर आवश्यक वस्तुएं खरीदने में करो।”

मेरी आत्मा सहमत नहीं थी, इसलिए उस आदमी ने कहा: "तो फिर उनमें से एक तिहाई बचा लो।" फिर भी मेरी आत्मा ने मना कर दिया। उस आदमी ने जोर देकर कहा: "तो एक चौथाई।" मैंने देखा कि मेरी आत्मा अपनी लत को नहीं छोड़ सकती, इसलिए वह आदमी गुस्से से मुंह मोड़कर गायब हो गया। तुरंत, मैंने खुद को एक तेज़ रफ़्तार वाली ट्रेन में पाया जो एक सुरंग से गुज़र रही थी। मैं घबरा गया, लेकिन कोई रास्ता नहीं था। मुझे आश्चर्य हुआ, मैंने सुरंग के किनारे से लटकते हुए ट्रैक के किनारे बहुत ही आकर्षक फूल और स्वादिष्ट दिखने वाले फल देखे। मैंने मूर्खतापूर्वक उनमें से कुछ को तोड़ने की कोशिश की। लेकिन उनके चारों ओर कांटे थे, जो ट्रेन की गति के कारण मेरे हाथों को चीर रहे थे और उनसे खून बह रहा था। वे मुझे बहुत महंगे पड़े। अचानक एक अटेंडेंट आया और बोला: "मुझे पाँच सेंट दो और मैं तुम्हें जितने फूल और फल चाहिए उतने दे दूँगा। तुम्हारे सारे हाथ कटे हुए हैं, तुम पाँच सेंट के बजाय सौ सेंट खो रहे हो। इसके अलावा, बिना अनुमति के उन्हें तोड़ने पर सज़ा भी है।"

इस स्थिति से हताश होकर मैंने खिड़की से बाहर देखा कि सुरंग कब खत्म होगी। लेकिन कोई अंत नज़र नहीं आ रहा था। सुरंग की दीवारों में कई छेद थे, जिनमें यात्रियों को फेंका जा रहा था। अचानक मेरी नज़र मेरे ठीक सामने एक छेद पर पड़ी, जिसके दोनों ओर कब्र के पत्थर थे। जब मैंने बाहर झाँका, तो मैंने देखा कि कब्र के पत्थर पर बड़े अक्षरों में मेरा नाम "सईद" लिखा हुआ था। मैं हैरानी और पश्चाताप की चीख़ के साथ रोया। अप्रत्याशित रूप से, मैंने उस आदमी की आवाज़ सुनी जिसने मुझे सराय में सलाह दी थी, पूछ रहा था: "क्या तुम होश में आए हो?" मैंने जवाब दिया: "हाँ, लेकिन मैं शक्तिहीन हो गया हूँ, और मैं कुछ नहीं कर सकता।" उसने मुझे पश्चाताप करने और ईश्वर पर भरोसा करने के लिए कहा, जिस पर मैंने जवाब दिया कि मैं ज़रूर करूँगा। फिर मैं उठा और मैंने पाया कि मैं नए सईद में बदल गया हूँ; पुराना सईद चला गया था।

अब मैं इस दर्शन के कुछ पहलुओं की व्याख्या करूँगा: यह यात्रा हमारा जीवन है, आत्माओं की दुनिया से अनंत काल तक की यात्रा, माँ के गर्भ, युवावस्था, बुढ़ापे, कब्र, मध्यवर्ती दुनिया, पुनरुत्थान और पुल के चरणों से गुज़रते हुए। साठ सोने के सिक्के एक औसत जीवनकाल के साठ साल हैं। जब मुझे यह दर्शन हुआ तब मैं पैंतालीस साल का था। केवल ईश्वर ही जानता है कि मैं कब मरूँगा। कुरान के एक सच्चे छात्र ने मुझे सच्चा मार्ग दिखाया ताकि मैं बचे हुए पंद्रह वर्षों में से आधे को परलोक के लिए बिता सकूँ। मुझे समझ में आया कि सराय मेरे लिए इस्तांबुल थी। ट्रेन समय थी, और प्रत्येक वैगन एक वर्ष था। सुरंग यह सांसारिक जीवन थी। काँटेदार फूल और फल अवैध सुख और निषिद्ध मनोरंजन थे जो उस क्षण ही दिल को अलग होने के विचार से लहूलुहान कर देते हैं जब आप उन्हें पाने के लिए हाथ बढ़ाते हैं। सुखों का लुप्त होना दु:ख को बढ़ाता है, और इसके अलावा, अवैध होने के कारण, व्यक्ति को दंड भुगतना पड़ता है। परिचारक ने कहा था: "दे दो

मुझे पाँच सेंट दो, और मैं तुम्हें जितने फूल और फल चाहिए उतने दे दूँगा।” इसका मतलब यह है कि वैध तरीकों से प्राप्त अनुमेय स्वाद और सुख, हमें संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं और इसलिए अवैध तरीकों का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

चौथी टिप्पणी: प्राणियों में मनुष्यता एक कोमल बच्चे की तरह है। हमारी शक्ति हमारी कमजोरी में है, और हमारी शक्ति हमारी नपुंसकता में है। शक्ति और शक्ति की इस कमी के कारण सृष्टि हमारे अधीन हो गई है। इसलिए यदि हम अपनी कमजोरी को पहचान लें और मौखिक और सक्रिय प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर के विनम्र सेवक बन जाएं, और यदि हम अपनी नपुंसकता को पहचान लें और ईश्वर से सहायता मांगें, तो हम प्रकृति के हमारे अधीन होने के लिए उनके प्रति अपना आभार प्रकट करेंगे। इसके अलावा, ईश्वर हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम करेगा, जो हमारी अपनी क्षमता से कहीं अधिक है। कभी-कभी हम गलत तरीके से किसी इच्छा की प्राप्ति को अपनी शक्ति और योग्यता से जोड़ देते हैं, जबकि वास्तव में यह हमारे स्वभाव की जीभ द्वारा की गई प्रार्थना के माध्यम से हमारे लिए प्राप्त हुई है। विचार करें कि चूजे की कमजोरी शक्ति का कितना बड़ा स्रोत है, क्योंकि यह माँ मुर्गी को शेर पर भी हमला करने के लिए प्रेरित करती है। शेर के बच्चे की कमजोरी एक बड़ी शेरनी को वश में कर देती है, जो अपने बच्चे को खिलाने के लिए भूखी रह जाती है। दुर्बलता में निहित शक्तिशाली आकर्षण कितना अद्भुत है, तथा आग्रही प्राणियों के लिए करुणा का कितना शानदार प्रकटीकरण है।

कोमल, प्यारे बच्चे रोते हुए, कामना करते हुए या उदास चेहरे बनाकर अपने लक्ष्य प्राप्त करते हैं, ये सभी शक्तिशाली लोगों को उनकी सेवा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यदि बच्चे अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, तो व्यावहारिक रूप से वे कुछ भी हासिल नहीं कर सकते हैं। उनकी कमजोरी और शक्तिहीनता, साथ ही स्नेह और सुरक्षा की भावनाएँ, उनके पक्ष में इतनी हैं कि एक ही इशारे से वे शक्तिशाली व्यक्तियों को अपने अधीन कर सकते हैं। अगर ऐसे बच्चे अहंकार से उन्हें दिखाए गए देखभाल और स्नेह से इनकार करते हैं और यह सब अपने दम पर करने का दावा करते हैं, तो उन्हें एक कड़वा चेहरा और नाराजगी मिलेगी। इसी तरह, अगर कोरह की तरह जिसने कहा: मुझे यह (मेरी संपत्ति) मेरे ज्ञान के कारण दी गई है (28:78), हम अपनी उपलब्धियों को अपनी शक्ति और क्षमता के लिए इस तरह से श्रेय देते हैं जो कृतघ्नता को दर्शाता है और हमारे निर्माता की दया को नकारता है और उनकी बुद्धि पर आरोप लगाता है, तो हम निश्चित रूप से सजा के पात्र होंगे।

इससे पता चलता है कि प्रकृति में हमारा प्रभुत्व, और सभ्यता और प्रौद्योगिकी में हमारी उन्नति और प्रगति, मुख्य रूप से हमारी अनिवार्य कमजोरी और असहायता के कारण है, जो ईश्वरीय सहायता को आकर्षित करती है। हमारी गरीबी ईश्वरीय प्रावधान का स्रोत है, हमारी अज्ञानता की भरपाई ईश्वरीय प्रेरणा से होती है, और हमारी ज़रूरतें ईश्वरीय कृपा को आकर्षित करती हैं। ईश्वरीय दया, स्नेह और बुद्धि ने, न कि हमारी अपनी शक्ति और ज्ञान ने, हमें सृष्टि पर प्रभुत्व के साथ सशक्त बनाया है और चीजों को हमारे नियंत्रण में रखा है। यह ईश्वरीय है

अधिकार और दया जो हमारी कमजोरी के कारण हमें सक्षम बनाती है,
हम इतने कमज़ोर हैं कि एक अंधे बिच्छू और एक पैरहीन साँप से भी हम पराजित हो सकते हैं,
एक कीड़े द्वारा उत्पादित रेशम पहनना और एक डंक मारने वाले कीड़े द्वारा उत्पादित शहद खाना।

हे मानवजाति, चूँकि यही वास्तविकता है, इसलिए अहंकार और आत्म-विश्वास को त्याग दो। बल्कि, परमेश्वर के सामने अपनी शक्तिहीनता और कमज़ोरी को घोषित करो और उसकी पुष्टि करो।
उससे मदद मांगकर, उससे प्रार्थना करके और उससे विनती करके उसे न्याय दिलाएँ। दिखाएँ
कि तुम उसके सच्चे बन्दे हो। फिर कह दो, " हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है। वह कितना अच्छा रक्षक है!" (3:173)
और ऊँचे दर्जे पर चढ़ जाओ।

ऐसा मत कहो कि मैं कुछ भी नहीं हूं। जो सर्वज्ञ है, वह मुझे क्यों बुलाएगा?
क्या मैं सृष्टि को अपने अधीन कर सकता हूँ और सार्वभौमिक आभार की माँग कर सकता हूँ? भौतिक रूप में
शर्तों और अपनी बुरी आज्ञा देने वाली आत्मा के संबंध में आप लगभग कुछ भी नहीं हैं, लेकिन आपका कर्तव्य या पद
आपको इस भव्य ब्रह्मांड का एक चौकस पर्यवेक्षक बनाता है, दिव्य ज्ञान की घोषणा करने वाले प्राणियों की एक
वाक्पटु जीभ,
सृष्टि की इस पुस्तक का एक समझदार छात्र, इसका एक प्रशंसनीय पर्यवेक्षक
ईश्वर की स्तुति करने वाले प्राणी, पूजा करने वाले प्राणियों के एक सम्मानित स्वामी।

हे मानवता, तुम एक तुच्छ अणु हो, एक बेचारे प्राणी हो और कमजोर हो
अपने भौतिक अस्तित्व और आत्मा के संदर्भ में पशु। और इसलिए आप सृष्टि की विशाल तरंगों द्वारा बहाए जा रहे हैं।
लेकिन अगर आप इसके माध्यम से परिपूर्ण हो जाते हैं
इस्लाम की शिक्षा, जो विश्वास के प्रकाश से प्रकाशित होती है,
ईश्वरीय प्रेम की चमक से, आप सेवक होने में राजसीपन पाएंगे,
आपकी विशिष्टता में एक व्यापकता, आपकी छोटी इकाई में एक दुनिया, और
आपकी तुच्छता में एक बहुत ही उच्च रैंक। आपके पर्यवेक्षण का क्षेत्र
बाकी सृष्टि इतनी व्यापक होगी कि आप कह सकेंगे: “हे मेरे दयालु
भगवान ने मेरे लिए दुनिया को घर बना दिया है। उन्होंने मुझे सूरज और रोशनी दी है।
चाँद दीपक की तरह, वसंत गुलाब के गुच्छे की तरह, ग्रीष्म ऋतु उपहारों की दावत की तरह,
और जानवरों को आज्ञाकारी सेवक बनाया है। उसने मेरे घर में पौधे और वनस्पतियाँ रखी हैं
मेरे घर के लिए आभूषण और प्रावधान के रूप में निपटान।

अंत में, यदि आप अपनी दुष्ट आत्मा और शैतान की आज्ञा का पालन करते हैं, तो आप
तुम सबसे नीचे गिर जाओगे; लेकिन अगर तुम सत्य और कुरान का पालन करोगे,
आप सबसे ऊंचे स्थान तक पहुंच जाएंगे और आदर्श आदर्श बन जाएंगे
निर्माण।

पांचवी टिप्पणी: हमें यहां विशेष अतिथि के रूप में भेजा गया है।
जिम्मेदारी। महत्वपूर्ण क्षमताओं से संपन्न, हमें सौंपा गया है
महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करने के लिए दृढ़ता से आग्रह किया जाता है। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम
सज़ा दी जाएगी। “सृष्टि का आदर्श नमूना होने” को और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए, मैं उपासना और कर्तव्यों के आवश्यक तत्वों का सारांश दूँगा।

हमारी पूजा के दो पहलू हैं। पहला पहलू चिंतन और चेतना से संबंधित है, जिसमें सीधे उनसे बात किए बिना ही ध्यान केंद्रित किया जाता है। दूसरा पहलू पूजा और प्रार्थना है, जो सीधे उनसे बात करके उनकी उपस्थिति में की जाती है।

पहला पहलू है: सृष्टि पर उसकी

प्रभुता की आज्ञाकारी पुष्टि करना तथा उसकी सुन्दरता और पूर्णता को विस्मय से देखना; सृष्टि में अद्वितीय कलाओं की ओर ध्यान आकर्षित करना तथा उनका बखान करना, जो पवित्र दिव्य नामों की कढ़ाई से बनी

हैं; प्रभु के नामों के रत्नों को, जिनमें से प्रत्येक एक छिपा हुआ आध्यात्मिक खजाना है, बोध और विवेक के तराजू पर तौलना तथा अपने हृदय की कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा के साथ उनका मूल्यांकन करना; सृष्टि के पृष्ठों तथा आकाश और पृथ्वी के आवरणों का अध्ययन करना, जिनमें से प्रत्येक दिव्य शक्ति का संदेश है, तथा उन पर बड़ी प्रशंसा के साथ विचार करना; तथा सृष्टि में दिखाई देने वाली सूक्ष्म अलंकरण और परिष्कृत कौशलों को विस्मय और प्रशंसा से देखना, तथा उनके सर्व-सुन्दर और दयालु सृजक को जानने की उत्कट इच्छा रखना तथा उनकी

उपस्थिति में प्रवेश करने की लालसा करना, जहां हम उनकी कृपा प्राप्त होने की आशा करते हैं।

हमारी आराधना का दूसरा पहलू उनकी उपस्थिति में संबोधन द्वारा किया जाता है-
हम सीधे उस पर भरोसा करते हैं। हम कार्यों से उनके निर्माता तक जाते हैं और:

हम देखते हैं कि एक सर्व-प्रतापी निर्माता अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से स्वयं को ज्ञात करना चाहता है, और प्रतिक्रिया में हम उस पर विश्वास करते हैं और उसे जानते हैं; हम देखते हैं कि एक सर्व-दयालु भगवान अपनी करुणा के सुंदर फलों के माध्यम से स्वयं को प्रिय बनाना चाहता है, और प्रतिक्रिया में हम उसे प्रेम करते हैं और अपने प्रेम और आराधना को उसके प्रति समर्पित करके स्वयं को उसके द्वारा प्रिय बनाते हैं; हम देखते हैं कि एक सर्व-उदार प्रदाता हमें अपने सर्वोत्तम और प्रियतम भौतिक और आध्यात्मिक उपकारों से पोषित करता है, और हम अपने कार्यों, कर्मों, जीवनशैली और, यदि संभव हो तो, अपनी सभी इंद्रियों

और क्षमताओं के माध्यम से व्यक्त कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ प्रतिक्रिया करते हैं; हम देखते हैं कि एक सर्व-सुंदर और दयालु महामहिम अपनी भव्यता और पूर्णता, महिमा और सौंदर्य को प्राणियों के दर्पणों में प्रकट करता है और उनकी ओर ध्यान आकर्षित करता है, और प्रतिक्रिया में घोषणा करता है, "ईश्वर सर्व-महान है! ईश्वर सर्व-महिमावान है!" हम आश्चर्य और श्रद्धा से उसके सामने झुकते हैं, और उसके सामने अपनी शून्यता की चेतना में

झुकते हैं;

हम देखते हैं कि परम धनवान व्यक्ति अपनी असीम सम्पदा प्रदर्शित करता है और
असीम उदारता से अपने खजाने को दान करते हैं, और अपनी विपत्ति की घोषणा करते हुए, हम प्रशंसा और महिमा में उनके अनुग्रह की माँग करते हैं;
हम देखते हैं कि महिमा के उस निर्माता ने पृथ्वी को एक देवता की तरह व्यवस्थित किया है।
उनके अतुलनीय कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शनी, और जवाब में हम यह कहकर उनकी सराहना करते हैं, "भगवान ने क्या चमत्कार चाहा और बनाया है!"
उनकी सुंदरता की पुष्टि करते हुए कहें, "भगवान उन्हें आशीर्वाद दें!"; अपना आश्चर्य प्रकट करें
यह कहकर: "परमेश्वर सर्व-महिमावान है!" और यह कहकर अपनी प्रशंसा व्यक्त करें, "परमेश्वर सर्व-महान है!"
हम देखते हैं कि वह पूर्णतया अद्वितीय है, जो सर्वत्र अपनी एकता दर्शाता है।
सृष्टि को अपने अद्वितीय चिह्नों और विशिष्ट आदेशों के द्वारा, और अपनी अद्वितीय मुहरों और मुहरों के द्वारा जो उसने प्रत्येक प्राणी पर लगाई हैं; कि वह
हर चीज़ पर एकता के चिन्ह अंकित करता है और पूरे विश्व में एकता का संदेश देता है
उनकी एकता का झंडा, उनके प्रभुत्व की घोषणा करता है। हम इसका जवाब देते हैं
विश्वास, पुष्टि, स्वीकृति और उसकी एकता की गवाही के साथ, और
भक्ति और सच्ची पूजा के साथ।

इस प्रकार की पूजा-अर्चना के माध्यम से हम सच्ची मानवता प्राप्त कर सकते हैं।
हम दिखा सकते हैं कि हम सृष्टि के आदर्श नमूने के रूप में सर्वश्रेष्ठ कद के हैं और विश्वास की कृपा से, दुनिया के भरोसेमंद शासक बन सकते हैं
पृथ्वी सर्वोच्च विश्वास को धारण करने के योग्य है।

अब हे असावधान लोगों, जो नीच से नीचतम की ओर बढ़ते हो।
अपनी इच्छा का दुरुपयोग करते हुए, यद्यपि आपको सर्वोत्तम कद काठी में बनाया गया है
सृष्टि का आदर्श प्रतिरूप, मेरी बात सुनो। तुम्हारी तरह, मैंने भी कभी सोचा था कि
नशे से आई असावधानी में दुनिया अच्छी और सुंदर थी
जवानी का। फिर जब मैं बुढ़ापे की सुबह उठा, तो मैंने देखा कि कैसे
दुनिया का चेहरा बुरा है जो आख़िरत की ओर नहीं मुड़ता, जिसे मैं
पहले से ही सुंदर होने की कल्पना की गई थी। इसे देखने के लिए और इसका दूसरा चेहरा कितना असाधारण रूप से सुंदर है, जो परलोक की ओर मुड़ा हुआ है, आप शायद यह देख सकें
दूसरे स्टेशन में दो "सत्य की तालिकाओं" का संदर्भ लें
सत्रहवाँ शब्द.

पहली तालिका में असावधान लोगों की दुनिया की वास्तविकता को दर्शाया गया है, जबकि
दूसरा, दक्षिणपंथी लोगों की दुनिया की वास्तविकता का वर्णन करता है
मार्गदर्शन।

> तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे मेरे प्रभु, मेरे लिए मेरा सीना चौड़ा कर दे, और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे।
मेरी जीभ की गांठ खोल दो ताकि वे मेरी बात समझ सकें।

हे ईश्वर, अपने पवित्र, पवित्र पैगंबर मुहम्मद साहब पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें।
अद्वितीय सार, जो रहस्यों के स्वर्ग का सूर्य है, ज्योतियों का प्रकटीकरण है, वह बिंदु जिस पर ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ होती हैं
महामहिम केन्द्रित हैं, वह धुरी जिसके चारों ओर उनकी कृपा का संसार घूमता है
और सौंदर्य घूमता है।

हे परमेश्वर, आपके साथ उसके संबंध में उसके रहस्य के लिए, और उसके लिए
आपकी ओर यात्रा करते हुए, मुझे मेरे भय से सुरक्षित रखें, मेरी रक्षा करें
गिरते हुए मेरे दोषों को कम करो, और मेरे दुःख और लालच को दूर करो। मेरे साथ रहो,
मुझे स्वयं से दूर अपने पास ले चलो, और मुझे मिटा देने का अनुग्रह करो
खुद से दूर रहो। मुझे अपने आप से ग्रस्त मत रहने दो, मेरी भावनाओं से घिरे मत रहने दो। मेरे लिए हर रहस्य का पर्दाफाश करो।

हे सर्वजीव और स्वयंभू, हे सर्वजीव और स्वयंभू!
हे सर्वभूत और स्वयंभू! हे सर्वभूत और स्वयंभू!
मुझ पर और मेरे साथियों पर दया करो। सब पर दया करो
ईमान वालों और कुरान के सभी लोगों। आमीन, हे सर्वशक्तिमान
हे दयालुओं में दयालु, हे दयालुओं में भी अत्यंत दयालु!

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: "सभी प्रशंसा और आभार
क्योंकि परमेश्वर, जो सारे जगत का स्वामी है।”

चौबीसवाँ शब्द

चौबीसवाँ वचन

दिव्य नामों की अभिव्यक्ति
सत्य प्राप्ति के उपाय
कुछ हदीसों को समझने के लिए कुछ मानदंड

प्राणी ईश्वर की आराधना कैसे करते हैं?

प्रेम, आराधना और धन्यवाद

(नोट: इस शब्द की पाँच शाखाएँ हैं। चौथी शाखा का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। पाँचवीं शाखा को पकड़ें, उस पर चढ़ें और उसके फल इकट्ठा करें।)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हे अल्लाह, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसी के अच्छे नाम हैं। (20:8)

मैं इसमें निहित अनेक सत्यों में से एक की पांच शाखाएं बताऊंगा इस भव्य श्लोक के शानदार "वृक्ष" में।

पाँच शाखाएँ

पहली शाखा: एक राजा के पास अलग-अलग उपाधियाँ होती हैं जिनके द्वारा उसे सम्मानित किया जाता है उनकी सरकार के विभिन्न विभागों में जाना जाता है और उनका उल्लेख किया जाता है, उनके विषयों के बीच विभिन्न पदनाम और विशेषताएं हैं।
वर्ग, और उसके शासन के स्तरों के लिए अलग-अलग नाम और संकेत।
उदाहरण के लिए, वह न्याय विभाग में सर्वोच्च न्यायाधीश, सिविल सेवा में मुख्य प्रशासक, सेना में कमांडर-इन-चीफ और सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश हैं।
शिक्षा विभाग में अध्यापक। यदि आप उनके बाकी नाम जानते हैं तो
शीर्षकों को ध्यान से देखने पर, आप समझ जाएंगे कि उनके पास उनकी सरकार के विभागों और शासन के स्तरों से संबंधित कई नाम और शीर्षक हो सकते हैं।

ऐसा लगता है मानो अपने सार्वजनिक व्यक्तित्व और संचार प्रणाली के कारण वे
हर विभाग में मौजूद है। अपने कानूनों, नियमों और प्रतिनिधियों के माध्यम से, वह सभी अधिकारियों का पर्यवेक्षण करता है,
सभी विषयों पर नज़र रखता है, और सभी को देखता है।
हर स्तर पर पर्दे के पीछे से वह प्रशासन चलाता है, अपने आदेशों का पालन करता है,
और अपने निर्णय, ज्ञान और शक्ति के कारण जागता रहता है।

इसी प्रकार, संसार के स्वामी, अनंत काल के अधिपति,
उनके आधिपत्य की अभिव्यक्ति, गुण और पदनाम के स्तर जो हैं
सभी अलग-अलग हैं लेकिन एक दूसरे से मेल खाते हैं। अपनी दिव्यता के क्षेत्र में, वह
नाम और चिह्न अलग-अलग हैं लेकिन उनकी अभिव्यक्तियाँ समान हैं
एक दूसरे के साथ संकेन्द्रित। अपने शासन के राजसी निष्पादन में, उसने
प्रतिनिधित्व और पदवी जो सभी अलग-अलग हैं लेकिन एक-दूसरे से मिलती जुलती हैं
अन्य। उनकी शक्ति के संचालन में, उनके पास उपाधियाँ हैं जो सभी अलग-अलग हैं लेकिन
एक दूसरे को दर्शाते हैं। अपने गुणों की अभिव्यक्ति में, उनके पास पवित्र तरीके हैं
खुद को प्रकट करने के तरीके जो भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे की ओर इशारा करते हैं। उनके अभिनय के तरीकों में, उनके पास
बुद्धिमान संचालन हैं जो कई प्रकार के हैं लेकिन एक दूसरे को परिपूर्ण करते हैं। उनकी रंगीन कलात्मकता और कला के
विविध कार्यों में, उनके पास शानदार है
आधिपत्य के पहलू जो भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे के अनुरूप हैं।

प्रत्येक जगत् और प्राणियों के विभाग में, उनके प्रत्येक सर्वसुन्दर नाम
व्यक्तिगत रूप से प्रकट होता है। एक विशेष नाम एक विशेष में प्रमुख है
क्षेत्र, अन्य नाम अधीनस्थ हैं। प्रत्येक स्तर और विभाग में
सभी प्राणियों में, चाहे उनका आकार कुछ भी हो, परमेश्वर का अपना एक विशेष प्रदर्शन है, प्रभुत्व की एक विशेष अभिव्यक्ति
है, तथा नाम की एक विशेष अभिव्यक्ति है।
यद्यपि विचाराधीन नाम की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है, फिर भी यह किसी विशेष चीज़ पर इस तरह से ध्यान केंद्रित करता है
कि आपको लगता है कि यह अनन्य है
वह चीज़.116

इसके अतिरिक्त, यद्यपि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता प्रत्येक वस्तु के अधिक निकट है,
स्वयं से भी अधिक, उसके पास प्रकाश के सत्तर हज़ार आवरण हैं जो उसे सृष्टि से छिपाते हैं। उदाहरण के लिए, विचार करें
कि नाम के बीच कितने आवरण हैं
सृष्टिकर्ता की रचनात्मकता की विशेष डिग्री आप में प्रकट होती है और इसकी सार्वभौमिकता
और ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में सबसे महान अभिव्यक्ति। इससे पता चलता है कि
यदि आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पार जा सकते हैं, तो आप परमेश्वर के द्वार तक पहुँच सकते हैं।
नाम की अभिव्यक्तियों की उच्चतम सीमा तक निर्मित किया जा रहा है
सृजनकर्ता बनें और सृजनात्मकता के गुण के क्षेत्र के करीब आएं।

---

[116] उदाहरण के लिए, ईश्वर अपने लगभग सभी नामों को प्रकट करता है (जैसे, दयालु, निर्माता, भगवान)
हर व्यक्ति पर सर्वज्ञ, सर्व-ज्ञानी, सर्व-रूपक आदि का प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, किसी विशेष नाम की अभिव्यक्ति एक व्यक्ति पर अन्य की तुलना में अधिक स्पष्ट हो सकती है। यदि नाम किसी व्यक्ति पर अधिक स्पष्ट हो, तो वह व्यक्ति सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ आदि हो सकता है।
सर्वशक्तिमान इस प्रकार प्रकट होता है कि वह व्यक्ति बुद्धिमान हो सकता है। इस प्रकार लोगों के अलग-अलग चरित्र होते हैं और हर किसी में किसी विशेष पेशे के प्रति क्षमता और प्रवृत्ति होती है। (ट्र.)

चूँकि पर्दों में एक-दूसरे की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ हैं, इसलिए नाम एक दूसरे के साथ संकेन्द्रित प्रतीत होते हैं, आवश्यक गुण मेल खाते हैं एक दूसरे के लिए, प्रतिनिधित्व एक दूसरे के समान हैं, शीर्षक एक दूसरे को दर्शाते हैं अन्य, आत्म-प्रकाशन के तरीके मिलते-जुलते हैं और एक दूसरे की ओर इशारा करते हैं, संचालन एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं और एक दूसरे को परिपूर्ण करते हैं, तथा आधिपत्य के विभिन्न यदि दोनों स्वभाव एक दूसरे की सहायता करते हैं, तो यह निश्चित रूप से उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर को उसके नामों, उपाधियों या उसके प्रभुत्व के पहलुओं में से किसी एक से पहचानता है उनकी अन्य उपाधियों, कार्यों और प्रभुत्व के पहलुओं को नकारना नहीं चाहिए। अगर हम आगे नहीं बढ़ते एक नाम के प्रकटीकरण से दूसरे नामों तक हम घाटे में हैं।

उदाहरण के लिए, यदि हम उस सर्वज्ञ को नहीं देखते जहाँ हम कार्यों को देखते हैं सर्वशक्तिमान और सृष्टिकर्ता की कृपा से हम प्रकृति को स्वयंभू मानकर असावधानी और गलत मार्ग पर चल सकते हैं। इसलिए हमें हमेशा यही करना चाहिए कि हम प्रकृति को स्वयंभू मानकर असावधानी और गलत मार्ग पर चल सकते हैं। “वह” और “वह ईश्वर है” का जाप करें, और हर किसी से सुनें और सुनें: “वह है ईश्वर, एक ही है।” समस्त सृष्टि के साथ एक स्वर में हमें घोषणा करनी चाहिए: “वहाँ है उसके सिवा कोई पूज्य नहीं।" क़ुरआन अपने आप में स्पष्ट है और सच्चाई को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, इस घोषणा के माध्यम से कि: ईश्वर, उसके अलावा कोई देवता नहीं है। उसके सभी सुन्दर नाम हैं, इन सत्यों की ओर संकेत करता है।

यदि आप उन उच्च सत्यों को करीब से देखना चाहते हैं, तो तूफ़ानी समुद्र से पूछें या कांपती धरती से: “तुम क्या कह रहे हो?” आप उन्हें दोहराते हुए सुनेंगे: “हे परमेश्वर! हे सर्व-प्रधान! हे सर्व-प्रधान! हे सर्व-महिमावान और पराक्रमी! हे सर्व-प्रधान! सर्व-सम्मोहक!” छोटे जीवों और उनके बच्चों से पूछिए जिन्हें पाला जाता है ज़मीन और समुद्र पर देखभाल और करुणा के साथ: “आप क्या कह रहे हैं?” वे भजन गाएँगे: “हे सर्वदयालु! हे सर्वदयालु! हे सर्वदयालु!”[117] फिर सुनो कि आकाश कैसे गाता है: “हे सर्व-महान् कृपालु!” पृथ्वी को सुनो, जो कहती है: “हे सर्वदयालु

महामहिम में से एक!" जानवरों पर ध्यान दें और उन्हें पुकारते हुए सुनें: "हे महामहिम!" हे दयालु! हे सर्व-प्रदाता! जब तुम झरने से पूछोगे, तो तुम सुनोगे

---

[117] एक बार मैंने कुछ बिल्लियों को देखा - वे केवल खाती, खेलती और सोती थीं। मैंने सोचा: बिल्लियाँ, जो सिर्फ़ खेलती हैं, क्यों खेलती हैं? कोई कर्तव्य नहीं है, धन्य माना जाता है? जब मैं बिस्तर पर गया, एक बिल्ली मेरे पास आई और झुक गई मेरे तकिये के पास लेट गया, अपना मुँह मेरे कान के पास लाया और साफ़-साफ़ कहा: "हे सर्व-दयालु! हे सर्वशक्तिमान! ऐसा लग रहा था कि यह मेरी आपत्ति का खंडन कर रहा था, अपनी प्रजाति के लिए बिल्लियों की प्यारी और धन्यता। मैंने खुद से पूछा कि क्या वह पाठ सिर्फ़ उस बिल्ली के लिए था या सभी बिल्लियों के लिए सामान्य था, और क्या सिर्फ़ मैं ही इसे सुन सकता था। अगली सुबह मैंने दूसरी बिल्लियों को सुना। सभी मैंने यह प्रार्थना दोहराई, लेकिन इतनी स्पष्टता से नहीं। सबसे पहले मैंने सुना: “हे सर्व-दयालु!” उनकी अस्पष्ट खर्राटों के बीच। धीरे-धीरे, उनकी खर्राटों और म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ आम हो गई। वही: “हे सर्व-दयालु!” एक मार्मिक, अच्छी तरह से व्यक्त पाठ के रूप में। मैंने इसे इससे जोड़ा कुछ आगंतुकों ने भी ध्यान से सुना और कहा कि उन्होंने कुछ हद तक इसे सुना है। बाद में, मुझे आश्चर्य हुआ कि वे उस नाम का जाप क्यों कर रहे थे और वे इसे किस तरह से पढ़ रहे थे? लोगों की भाषा में नहीं, बल्कि जानवरों की भाषा में। मेरे मन में आया कि चूंकि वे बहुत नाज़ुक, पालतू जानवर होते हैं,

वह इस प्रकार के नामों का जाप करता है: "हे अत्यंत दयालु और चिंता करने वाले! हे अत्यंत दयालु! हे दयालु! ...
हे दयालु! हे सर्व-स्नेही! हे सर्व-निर्माण करने वाले! हे सर्व-प्रकाश करने वाले! हे सर्व-कृपा करने वाले! हे सर्व-शोभित करने वाले!"

उनसे पूछो जो सच्चे इंसान हैं। देखो वे कैसे सब कुछ जपते और प्रकट करते हैं

भगवान के सभी सुन्दर नामों के बारे में जानिए और जानिए कि वे किस तरह उनके माथे पर अंकित हैं। अगर आप ध्यान से देखें तो आप उन्हें एक-एक करके पहचान सकते हैं। ऐसा लगता है मानो भगवान के सभी सुन्दर नामों के बारे में जानिए और जानिए कि वे किस तरह उनके माथे पर अंकित हैं।

ब्रह्मांड में एक विशाल ऑर्केस्ट्रा था जो दिव्य नामों का गायन कर रहा था। गीतों के साथ न्यूनतम स्वरों और स्वरों में गाए गए इस संगीत को उच्चतम स्वरों के साथ मिलाकर, ब्रह्माण्ड एक शानदार सामंजस्य उत्पन्न करता है।

सभी नाम मानवता पर प्रकट होते हैं। हालाँकि, विविधता नामों और उनके विभिन्न तरीकों और डिग्री में प्रकटीकरण के बारे में मनुष्यों के बीच विविधता पैदा हुई है, जैसा कि उन्होंने ब्रह्मांड में और स्वर्गदूतों की पूजा। इसने कानूनों के बीच मतभेद भी पैदा किए हैं पैगम्बर, संतों के मार्ग और शुद्ध विद्वानों के मार्ग। उदाहरण के लिए, सर्वशक्तिमान यीशु में अधिक प्रबल था, उस पर शांति हो,
उनमें प्रकट हुए अन्य नामों की अपेक्षा सर्वप्रेममयी प्रभु प्रबल है।
जो ईश्वर से प्रेम के मार्ग पर चलते हैं, और जो उनका अनुसरण करते हैं, उनमें सर्वज्ञता है।
चिंतन और मनन का मार्ग.

इस प्रकार, यदि कोई व्यक्ति एक साथ शिक्षक, अधिकारी, वकील और सिविल सेवा निरीक्षक है, तो प्रत्येक कार्यालय में उस व्यक्ति के संबंध, कर्तव्य, वेतन, जिम्मेदारियाँ, पदोन्नति, दुश्मन और प्रतिद्वंद्वी। वह राजा से मिलता है
इनमें से किसी भी या सभी उपाधियों के तहत, और कई माध्यमों से उनका सहारा लेना

राजा की उपाधियों के आधार पर, मानवता कई तरीकों से उसकी मदद मांगती है। इसी तरह, मानवता भी राजा की उपाधियों के आधार पर, उसकी मदद मांगती है।

जिसके अनेक दिव्य नाम प्रकट हैं, जिसके अनेक कर्तव्य हैं और
अनेक प्रकार की शत्रुता का शिकार होता है, अनेक प्रकार की प्रार्थनाओं द्वारा भगवान की शरण लेता है।
उनके नामों का उल्लेख नहीं किया जा सकता। वास्तव में, पैगंबर मुहम्मद, मानवता का गौरव और सबसे उत्तम मानव, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, भगवान से प्रार्थना की
अपने अल-जौशनुल-कबीर दुआ में उनके एक हज़ार एक नामों का ज़िक्र किया और नरक से उनसे शरण मांगी। यही कारण है कि भगवान हमें सूरतुन्नस (114) में उनके तीन नामों के ज़रिए उनसे शरण मांगने का आदेश देते हैं।

बच्चों की तरह व्यवहार करने वाले और लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से रहने वाले बच्चों को बहुत देखभाल और सहानुभूति की आवश्यकता होती है।
जब वे इसे प्राप्त करते हैं, तो वे अपने भीतर सर्व-दयालु निर्माता की दया की घोषणा करते हैं
दुनिया उस अनुग्रह के लिए धन्यवाद मानती है। बिल्लियाँ इसे ईश्वर का विशेष उपकार मानती हैं, जबकि कुत्ते इसे
इसे लोगों का उपकार समझें। बिल्लियाँ लोगों को नींद में असावधानी से सावधान करती हैं, और अपने माध्यम से
"हे दयालु!" की पुकार उन लोगों को याद दिलाती है जो हर चीज को स्पष्ट रूप से बताते हैं
"भौतिक" कारण यह निर्धारित करते हैं कि वास्तव में सहायता कौन भेजता है और दया का स्रोत कौन है।

शीर्षक, और ईश्वर के नाम से, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है,
वह हमें अपने तीन नामों के माध्यम से सहायता मांगने की शिक्षा देता है।

दूसरी शाखा: यहाँ मैं दो सूक्ष्म मामलों पर बात करूँगा जिनमें शामिल हैं
अनेक सूक्ष्म सत्यों की कुंजियाँ।

पहला सूक्ष्म विषय: संतों के दर्शन और दर्शन में इतना अंतर क्यों होता है?
छिपे हुए सत्य की खोज, हालांकि वे सभी सिद्धांतों पर सहमत हैं
उनकी खोजें मुख्यतः (प्रत्यक्ष) साक्षी या विश्वास पर आधारित क्यों हैं?
अवलोकन, कभी-कभी वास्तविकता के विपरीत और सत्य के विपरीत होता है? क्यों,
अपनी राय में, जिसे वे सत्य मानते हैं और निर्णायक प्रमाणों पर आधारित मानते हैं,
विचारक और विद्वान खोज करते समय विरोधाभासी निष्कर्ष निकालते हैं
सत्य अलग-अलग रंगों में क्यों दिखाई देता है?

दूसरा सूक्ष्म विषय: आरंभिक पैगम्बरों ने इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया?
क्या आप विश्वास के कुछ स्तंभों को पहचान सकते हैं और उन पर कुरान जितना ही विस्तार से चर्चा कर सकते हैं?
क्या वे संक्षिप्त व्याख्या से संतुष्ट थे, जिससे उनके बाद के कुछ अनुयायियों ने उनका खंडन कर दिया?

क्यों, परमेश्वर के ज्ञान में पारंगत संतों में से कुछ लोग
क्या वे केवल ईश्वरीय एकता की पुष्टि करने में ही आगे बढ़े? उन्होंने पूर्ण निश्चय प्राप्त कर लिया
विश्वास की सच्चाइयों में प्रत्यक्ष अनुभव से आते हुए, फिर भी स्पष्ट रूप से विश्वास के कुछ स्तंभों की उपेक्षा की गई। इस कारण बाद के अनुयायियों को कम भुगतान करना पड़ा
उन स्तंभों पर ध्यान नहीं दिया गया, जिसके कारण कुछ लोग भटक गए।
यद्यपि सच्ची पूर्णता सभी स्तंभों में पूर्ण विकास के माध्यम से प्राप्त की जाती है
विश्वास के लोग, क्यों कुछ समय में सत्य के लोगों ने बहुत प्रगति की है?
दूसरों में पिछड़े रहना? इन सभी मतभेदों का कारण क्या है
जबकि सबसे महान संदेशवाहक, जो सभी दिव्य नामों के महानतम अभिव्यक्तियों से संपन्न थे और पैगंबरों के राजकुमार थे, साथ ही साथ
बुद्धिमान कुरान, सभी पवित्र दिव्य शास्त्रों में सबसे चमकदार प्रमुख,
क्या आपने विश्वास के सभी स्तम्भों का विस्तार से, स्पष्ट रूप से और सबसे सशक्त तरीके से वर्णन किया है?

इसका कारण यह है: मानवता को सक्षम होने की क्षमता के साथ बनाया गया है
सभी दिव्य नामों की अभिव्यक्ति प्राप्त करने और सभी सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए। हालाँकि, हम हज़ारों पर्दों और बाधाओं के बीच सत्य की खोज करते हैं
और आंशिक इच्छा, थोड़ी शक्ति, और परिवर्तनशील इच्छाओं और विभिन्न के साथ
योग्यताओं की डिग्री। इस कारण से, दुर्गम बाधाएं हस्तक्षेप करती हैं
हम वास्तविकता को जानने और सत्य को समझने का प्रयास कर रहे हैं।
योग्यताएँ और समझ के स्तर अलग-अलग होते हैं। कुछ योग्यताएँ विश्वास के कुछ स्तंभों को उनके सभी आयामों के साथ समाहित नहीं कर सकती हैं। इसके अलावा,
नामों की अभिव्यक्तियाँ लोगों के अनुसार अलग-अलग रंग ग्रहण करती हैं
उन्हें प्राप्त करें। कुछ लोग उन्हें उनके सार्वभौमिक और मूल रूप में प्राप्त कर सकते हैं,

जबकि अन्य केवल आंशिक और छायादार रूपों में ही ऐसा कर सकते हैं।
लोगों में केवल एक ही नाम प्रमुख है और दूसरों पर हावी है।

इस गहन, सूक्ष्म पदार्थ और वास्तविकता को व्यापक रूप से समझने के लिए
ज्ञान के लिए, निम्नलिखित व्यापक और सार्थक तुलना पर ध्यान दें:
एक सुन्दर फूल की कल्पना करो, चाँद से प्यार करती पानी की एक जीवित बूँद की,
और एक साधारण ओस की बूंद जो सूरज की ओर देखती है। प्रत्येक सचेत है और कुछ है
पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करना। साथ ही कई अन्य सत्यों की ओर इशारा करते हुए,
वे सत्य के मार्ग पर आत्मा, मन और हृदय की यात्रा का संकेत देते हैं,
और सत्य की खोज करने वाले तीन प्रकार के लोगों के अनुरूप हैं।118

पहले समूह में विचारक शामिल हैं; जो केवल भौतिक इंद्रियों और बौद्धिक क्षमताओं के माध्यम से पूर्णता के अपने विशेष स्तर के लिए प्रयास करते हैं;
और जो लोग अपने अहंकार को बनाए रखते हुए, उसमें व्यस्त रहते हैं और उसका अध्ययन करते हैं
भौतिक अस्तित्व को उसकी विस्तृत बहुलता में देखना और सत्य तक पहुंचने का प्रयास करना
केवल अनुमान और तर्क के माध्यम से। दूसरे समूह में संत शामिल हैं
या संत विद्वान; जो मन का उपयोग करके और शोधन करके प्रयास करते हैं
आत्मा; और जो लोग तर्क, धार्मिक शिक्षा और
ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना। तीसरे समूह में पैगम्बर शामिल हैं; वे जो
जो विश्वास, समर्पण और हृदय की शुद्धि के माध्यम से सत्य का अनुसरण करते हैं;
और जो लोग ईमान और कुरान के ज़रिए तेज़ी से सच्चाई की ओर बढ़ते हैं, और
परमेश्वर के सामने अपनी गरीबी और ज़रूरत को स्वीकार करना और उसकी पूजा करना।

"फूल", "बूंद" और "ओस की बूंद" शीर्षकों के अंतर्गत, मैं तुलना करके दिखाऊंगा कि कैसे और क्यों ये तीन समूह प्रगति करते हैं [सत्य तक पहुंचने के लिए]
अपने-अपने तरीके से। उदाहरण के लिए, सृष्टिकर्ता की अनुमति और आदेश से सूर्य में तीन प्रकार की
अभिव्यक्ति, प्रतिबिंब और चमक है: इसका प्रतिबिंब
फूलों पर इसका प्रतिबिंब, चंद्रमा और ग्रहों पर इसका प्रतिबिंब, और
कांच और पानी जैसी चमकती वस्तुओं में खुद की कल्पना करना।

पहला तीन प्रकार से है: सार्वभौमिक और सामान्य अभिव्यक्ति और
प्रतिबिंब जो सभी फूलों को एक साथ शामिल करता है; एक विशेष अभिव्यक्ति जो फूलों की प्रत्येक प्रजाति को एक विशेष प्रतिबिंब के साथ शामिल करती है; तथा
एक विशेष अभिव्यक्ति, जिसके द्वारा यह अपने व्यक्तिगत चरित्र के अनुसार एक निश्चित फूल में परिलक्षित होती है।११९

सूर्य की दूसरी अभिव्यक्ति या प्रतिबिंब वह प्रकाश है जो वह
सर्वज्ञ सृजक की अनुमति से चन्द्रमा और ग्रहों को देता है।

---

118 प्रत्येक समूह में तीन उपसमूह भी होते हैं। तुलना में तीन समूहों के प्रतिनिधि के रूप में दी गई तीन चीजें, वास्तव में नौ श्रेणियों के अनुरूप हैं।

119 यह इस दावे से मेल खाता है कि फूलों को उनका रंग पृथ्वी के बदलते प्रतिबिंबों से मिलता है।
सूर्य की सात रंगों वाली रोशनी। इसलिए, वे सूर्य के लिए एक तरह का दर्पण हैं।

इस व्यापक, सार्वभौमिक प्रकाश और चमक को प्राप्त करके, चंद्रमा अपनी
सूर्य के प्रकाश की छाया, समुद्र, हवा और धरती पर पड़ती है। एक खास रूप में, यह इसे समुद्र के बुलबुलों, धरती के पारदर्शी भागों और
हवा के अणु.

तीसरा यह कि ईश्वर की आज्ञा के तहत सूर्य में शुद्ध, सार्वभौमिक,
और वायुमंडल और समुद्र की सतह पर प्रत्यक्ष प्रतिबिंब या आत्म-छवि बनाता है, जिसे वह दर्पण में बदल देता है। सूरज प्रत्येक बुलबुले को पानी की बूँद भी देता है
पानी, हवा के अणु, और बर्फ के टुकड़े का एक विशेष प्रतिबिंब और छोटी छवि
स्वयं.

इस प्रकार सूर्य प्रत्येक फूल पर और प्रत्येक फूल में स्वयं को प्रतिबिम्बित या प्रतिबिम्बित करता है।
पानी और ओस की बूँदें तीन प्रकारों में से प्रत्येक में दो तरीकों से
ऊपर: पहला रास्ता सीधा है, बिना किसी बाधा और आवरण के, और प्रतिनिधित्व करता है
पैगम्बर बनने का मार्ग। दूसरा मार्ग, संत बनने का मार्ग, वह है जिसमें
बाधाएं हस्तक्षेप करती हैं। दर्पणों की क्षमता, साथ ही साथ प्राप्त करने वाली वस्तुएं
छवियाँ या प्रतिबिंब, सूर्य की अभिव्यक्तियों में अपने रंग जोड़ते हैं।

इस प्रकार पहले रास्ते पर, प्रत्येक फूल, पानी की बूंद, और ओस की बूंद
कहो: “मैं दुनिया के सूरज का दर्पण हूँ।” लेकिन दूसरे तरीके से वे ऐसा कर सकते हैं
कहते हैं: “मैं केवल अपने सूर्य का दर्पण हूँ, या केवल अपनी प्रजाति में प्रकट सूर्य का दर्पण हूँ,” क्योंकि इसी तरह से वे सूर्य को जानते हैं। वे ऐसा नहीं कर सकते
सूर्य को उसके प्रत्यक्ष, सार्वभौमिक प्रकटीकरण में देखें, क्योंकि यह प्रत्येक को दिखाई देता है
उन्हें या उनकी प्रजातियों को बाधाओं और प्रतिबंधों के पीछे से। और इसलिए यह
उस "विशेष, प्रतिबंधित सूर्य" को अप्रतिबंधित, अप्रतिबंधित, निरपेक्ष सूर्य के कार्यों का श्रेय नहीं दिया जा सकता। यह पूर्ण विश्वास में नहीं दिया जा सकता
ऐसा सूर्य, जिसे वह संकीर्ण सीमाओं और प्रतिबंधों के भीतर देखता है, ऐसा
पृथ्वी को गर्म करने और रोशन करने, पौधों को हिलाने और जैसे राजसी काम
जानवरों को जीवन देना और ग्रहों को इसके चारों ओर चक्कर लगाना।

भले ही ये तीन (संभवतः सचेत) चीजें उन अद्भुत कार्यों का श्रेय सूर्य को देती हैं जिसे वे प्रतिबंधों के तहत देखते हैं, वे ऐसा केवल तभी कर सकते हैं
तर्क और हठधर्मी या निराधार विश्वास या समर्पण के माध्यम से
तथ्य यह है कि वह प्रतिबंधित चीज़ राजसी पूर्ण सूर्य है। इसलिए निर्णय
ये तीन चीजें, जिनके बारे में हम मानते हैं कि उनमें मानव जैसी बुद्धि है,
यह तर्क पर निर्भर करता है या उससे उत्पन्न होता है, न कि सम्पूर्ण ज्ञानोदय पर
प्रत्यक्ष साक्ष्य और अवलोकन से। उनका निष्कर्ष, जो इस पर निर्भर करता है
अप्रमाणित विश्वास, यहां तक कि जो वे देखते हैं या निरीक्षण करते हैं उसके साथ विरोधाभास भी हो सकता है
बाहरी दुनिया। इस प्रकार उन्हें बहुत कठिनाई से आश्वस्त किया जा सकता है।

इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, आइए हम कल्पना करें कि हम फूल हैं, बूंद हैं
जल और ओस की बूँदें, क्योंकि हमें अपने अमूर्त सूर्य से ज्ञान प्राप्त होता है

जिस तरह से वे इसे अपने भौतिक सूर्य से प्राप्त करते हैं। तो, मेरे मित्र जो संसार का त्याग नहीं कर सकते, भौतिक विषयों में व्यस्त हैं, और जिनके
आत्मा सघन है, तुम फूल बनो। फूल एक विशेष तरंगदैर्ध्य वाली सूर्य की किरण द्वारा उत्पादित प्रभाव के रूप में एक रंग ग्रहण करता है, और इसे एक बनाता है
जिस रूप में सजाया जा सके, उसी रूप में आप भी वस्त्र धारण करने की क्षमता रखते हैं।

उस दार्शनिक को, जिसने धर्मनिरपेक्ष विज्ञान का अध्ययन किया है, समझाना चाहिए
कारण और प्रभाव के संदर्भ में सब कुछ, पुरानी कहावत की तरह, पानी की बूंद है
चाँद से प्यार हो गया है। चाँद उसे अपनी छायादार रोशनी भेजता है जो उसे मिलती है
सूर्य से। बूंद उस प्रकाश से चमकती है, जिसके माध्यम से वह देख सकती है
केवल चंद्रमा। सूर्य को न देख पाने के कारण, वह केवल उसके अस्तित्व पर ही विश्वास करता है।

उस बेचारे को जो सब कुछ जानता है, सीधे तौर पर बता दो
सर्वशक्तिमान ईश्वर, और जो कारण और प्रभाव को पर्दा समझते हैं, वे ओस बनें
ओस की बूंद अपने आप में गरीब है और उसे किसी चीज पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।
फूलों की तरह खुद पर निर्भर करता है। इसका कोई रंग नहीं है जिसके माध्यम से यह खुद को प्रदर्शित कर सके,
या कुछ और जिसकी ओर उसे झुकाव महसूस होना चाहिए। उसके पास बस एक विशुद्ध है
हृदय की पवित्रता और सरलता, जिसके द्वारा वह अपने हृदय में सूर्य की छवि को धारण करता है।
"उसकी आँख की पुतली।"

अब जब हमने इन तीन चीजों की जगह ले ली है, तो हमें पूछना चाहिए
हम खुद से पूछते हैं: हमारे पास क्या है? हमें क्या करना चाहिए? हम देखते हैं कि एक सर्व-दयालु, अपनी कृपा से, हमें सुशोभित कर रहा है, प्रबुद्ध कर रहा है, पोषण कर रहा है,
और हमें बड़ा कर रहे हैं। हमारे अंदर जन्मजात प्रवृत्ति होती है कि हम उस व्यक्ति की पूजा करें जो
हम पर कृपा करता है। हम अपने आराध्य के योग्य व्यक्ति के करीब रहना चाहते हैं और
उसे देखने की इच्छा। इसलिए, अपनी क्षमता के अनुसार, हममें से प्रत्येक व्यक्ति उसे देखने जाएगा।
प्रेम के आकर्षण से होकर यात्रा करें।

तुम जो फूल की तरह हो - तुम आगे बढ़ रहे हो, इसलिए फूल की तरह आगे बढ़ो।
आप एक सार्वभौमिक रैंक तक पहुंचने तक आगे बढ़ चुके हैं, जैसे कि एक सार्वभौमिक फूल
सभी फूलों का प्रतिनिधित्व करने के लिए। हालाँकि, एक फूल एक घना दर्पण है जिसमें
प्रकाश अपवर्तित हो जाता है और उसके सात रंग विलीन हो जाते हैं, यह सूर्य के प्रतिबिंब और छवि को ढक देता है।
जैसे आप उस सूर्य का चेहरा नहीं देख सकते जिससे आप प्रेम करते हैं, क्योंकि यह
प्रतिबंधित रंग और गुण एक पर्दा खींच देते हैं और इसे अस्पष्ट कर देते हैं, आप ऐसा नहीं कर सकते
बीच में आने वाली बाधाओं से होने वाले अलगाव से मुक्त हो सकते हैं। लेकिन आप
मुक्त हो जाओ यदि तुम अपना सिर उठाओ (अब अपने आत्मत्व के प्रेम में डूबो), अपनी दृष्टि वापस ले लो (अपने आत्मत्व के गुणों पर स्थिर), और निर्देशित करो
इसे आसमान में सूरज के सामने रखें। आपको भी अपना चेहरा मोड़कर देखना चाहिए
अपनी जीविका को आकर्षित करने के लिए धरती के नीचे, सूर्य के ऊपर, क्योंकि यदि आप एक हैं
तुम्हें भी उसी तरह काम करना चाहिए। चाहे तुम जानो या न जानो, तुम्हारा भरण-पोषण तुम्हें मिट्टी से ही मिलेगा, जो दया के खजाने का द्वार है।

जैसे फूल सूर्य के लिए एक छोटा सा दर्पण है, वैसे ही विशाल सूर्य अनन्त सूर्य के नाम की ज्योति की चमक के लिए एक बूंद के समान दर्पण है। इसलिए, हे मानव हृदय, जान लो कि तुम्हें किस सूर्य का दर्पण बनना है, क्योंकि जब तुम इस बात को समझ जाओगे तभी तुम पूर्णता के उस स्तर को प्राप्त कर पाओगे जो तुम्हें सौंपा गया है।

हालाँकि, आप उस सूर्य को उसकी मूल पहचान में नहीं देख सकते हैं, न ही उसके नग्न रूप में उसके सत्य को समझ सकते हैं; बल्कि, आपके गुण उस सत्य को एक रंग देते हैं, आपकी धुंधली दूरबीन उसे एक रूप देती है, और आपकी सीमित क्षमता उसे प्रतिबंधित करती है।

अब, हे बूँद का प्रतिनिधित्व करने वाले बुद्धिमान दार्शनिक! अपनी बुद्धि के दूरबीन के माध्यम से और विज्ञान और दर्शन की सीढ़ी से, आप चंद्रमा तक आगे बढ़ गए हैं और उस पर उतर गए हैं। अपने आप में, चंद्रमा एक घना, अंधेरा और बेजान वस्तु है। आपका प्रयास व्यर्थ हो गया है, और आपका ज्ञान बेकार साबित हुआ है। आप निराशा के अंधेरे, अकेलेपन की वीरानी, बुरी आत्माओं के सताए जाने और भयावह एकांत के आतंक से केवल तभी बच सकते हैं जब विज्ञानवाद की रात को त्याग दें और सत्य के सूर्य की ओर मुड़ें, यह निश्चित रूप से विश्वास करते हुए कि उस रात की रोशनी "दिन के सूर्य" की रोशनी का छायादार प्रतिबिंब है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप पूर्णता प्राप्त करेंगे और गरीब और प्रकाशहीन चंद्रमा के स्थान पर प्रचंड सूर्य को पाएंगे। लेकिन फूल की तरह, आप सूरज को स्पष्ट रूप से देखने में असमर्थ होंगे, क्योंकि, आप इसे उन पर्दों से परे देखेंगे जिनके साथ आपका तर्क और दर्शन मित्रतापूर्ण है, विज्ञान और शिक्षा द्वारा बुने गए पर्दों के पीछे, और आपकी क्षमता द्वारा उत्पन्न रंग में।

हमारा तीसरा मित्र, ओस की बूंद, दरिद्र भी है और रंगहीन भी। वह सूर्य के ताप से शीघ्र ही वाष्पित हो जाती है और अहंकार से मुक्त होकर हवा में ऊपर उठती है। उसकी संरचना में विद्यमान सघन पदार्थ प्रेम की ज्वाला में जलकर प्रकाश में परिवर्तित हो जाता है। वह सूर्य के प्रकाश की एक किरण को पकड़ लेता है और सूर्य के निकट चला आता है। हे ओस की बूंद जैसे मित्र! चूँकि तुम सूर्य के प्रत्यक्ष दर्पण के समान कार्य करते हो, चाहे तुम किसी भी पद पर क्यों न हो, तुम एक खिड़की खोज सकते हो, जिसके माध्यम से तुम बिना किसी अवरोध के उसे देख सकते हो। सूर्य के अद्भुत कार्यों का श्रेय उसे देने में तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी; तुम तुरंत ही उसके योग्य राजसी गुणों और उसके आवश्यक प्रभुत्व के भयानक कार्यों का श्रेय उसे दे दोगे।

न तो बाधाओं की मोटाई, न ही क्षमताओं की सीमितता, न ही दर्पणों का छोटा होना आपको भ्रमित कर सकेगा या किसी झूठ की ओर ले जा सकेगा।
चूंकि आप शुद्ध हृदय और सच्चे इरादे से सीधे सूर्य की ओर मुड़े हैं, इसलिए आप समझते हैं कि वस्तुओं और दर्पणों में जो दिखाई देता है वह स्वयं सूर्य नहीं है, बल्कि उसकी अभिव्यक्तियाँ या रंगीन प्रतिबिंब हैं।

यद्यपि ये प्रतिबिंब इसका वर्णन करते हैं, लेकिन वे इसकी महिमा के सभी कार्यों को उनके उचित वैभव में प्रदर्शित नहीं कर सकते हैं।

वास्तविकता के साथ मिश्रित यह तुलना, पूर्णता के मार्ग को दर्शाती है। वे पूर्णता की योग्यताओं में भिन्न होते हैं जिसकी ओर वे ले जाते हैं और अंततः प्राप्त निश्चितता के स्तर के विवरण, लेकिन उनके निष्कर्ष और सत्य को प्रस्तुत करने और वास्तविकता की पुष्टि करने में सहमत हैं।
रात जिसने कभी सूरज नहीं देखा, बस आईने में उसकी परछाई देखी है चाँद की। वे सूर्य की अनोखी शानदार रोशनी को नहीं समझ सकते और अद्भुत गुरुत्वाकर्षण, केवल उन लोगों के अधीन रहो जिन्होंने इसे देखा है, और उनका अनुकरण करो।

इसी प्रकार, जो लोग सबसे व्यापक डिग्री प्राप्त नहीं कर सकते हैं नामों की अभिव्यक्तियाँ जैसे कि सर्वशक्तिमान और जीवनदाता, पैगंबर के मिशन के उत्तराधिकार के माध्यम से, पुनरुत्थान को स्वीकार करें और सर्वोच्च सभा अनुकरणात्मक रूप से दावा करती है कि तर्क समझ नहीं सकता यह। क्योंकि पुनरुत्थान और अंतिम न्याय परमेश्वर के महानतम नाम और कुछ अन्य बातों के सबसे व्यापक प्रकटीकरण के कारण होगा।
नाम। जो लोग इसे समझ नहीं पाते, उन्हें इस पर विश्वास करने के लिए मजबूर किया जाता है नकल का तरीका। लेकिन जो लोग इसे पूरी तरह समझते हैं, वे दुनिया के विनाश और पुनरुत्थान को, एक नई दुनिया के निर्माण के साथ, एक तरह से देखते हैं।
रात और दिन, सर्दी और गर्मी का परिवर्तन उतनी ही आसानी से हो रहा है वसंत ऋतु में आएं, और इसे पूरे हृदय से स्वीकार करें।

कुरान इन घटनाओं का सबसे विस्तृत, उच्चतम स्तर पर, तथा सबसे उत्तम, विस्तृत तरीके से वर्णन करता है। हमारे पैगम्बर, जिन पर कृपा की गयी थी,
परमेश्वर के महानतम नाम के साथ, इसे सिखाया। अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने, जैसा कि परमेश्वर के द्वारा अपेक्षित था, इसे सिखाया।
लोगों को ईश्वरीय सत्य की ओर मार्गदर्शन करने के अपने मिशन में, उन्होंने ज्ञान का निर्देश नहीं दिया पुनरुत्थान के समय उनके कुछ सरल और आदिम समुदाय कुरान और हमारे पैगम्बर के समान स्तर और समान विवरण के साथ।
अपनी क्षमताओं के प्रतिबंध और अपने मिशन की सीमित प्रकृति के कारण, कुछ संतों ने कुछ स्तंभों को नहीं देखा या प्रदर्शित नहीं कर पाए हैं
सबसे बड़ी हद तक विश्वास। डिग्री में बहुत अंतर हैं जो लोग परमेश्ंवर का ज्ञान रखते हैं। इनके अलावा, यह तुलना कई अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को समझने के लिए सुराग प्रदान करता है। हालाँकि, चूँकि तुलना में वास्तविकता के केवल कुछ पहलू शामिल हैं, और वास्तविकता काफी है व्यापक और गहन, मैं तुलना से ही संतुष्ट हो जाऊंगा और नहीं अपनी सीमा और क्षमता से परे बातें समझाने की कोशिश करता हूँ।

तीसरी शाखा: चूँकि हदीसों (पैगम्बर परम्पराओं) में पैगंबर के बारे में बताया गया है अंतिम दिन के संकेत, समय के अंत में असामान्य घटनाएँ, और पुरस्कार और कुछ कार्यों के गुण पूरी तरह से समझ में नहीं आए हैं, कुछ विद्वान जो अपनी बुद्धि पर भरोसा करते हैं, उन्होंने कुछ लोगों को कमजोर या झूठा करार दिया है; दूसरों को कमज़ोर विश्वास, प्रबल अहंकार और आत्म-गर्व से उन्हें नकार दिया जाता है।

संदेह है, लेकिन विस्तृत चर्चा में जाने के बिना, मैं बारह की व्याख्या करूंगा सिद्धांतों.

पहला सिद्धांत: मैंने इसे लेख के अंत में विस्तार से समझाया है। बीसवाँ वचन। संक्षेप में: चूँकि धर्म लोगों को परखने का एक साधन है, उच्च आत्माओं को निम्न आत्माओं से अलग करने के लिए, यह उन मामलों की बात करता है भविष्य में हर कोई इस तरह से देखेगा या अनुभव करेगा कि वे न तो पूरी तरह से अज्ञात या इतना स्पष्ट रूप से ज्ञात कि लोग बाध्य हो जाएं उनकी पुष्टि करने के लिए। यह तर्क के लिए एक द्वार खोलता है लेकिन मानव स्वतंत्रता से इनकार नहीं करता है अगर अंतिम दिन का संकेत इतना स्पष्ट हो कि हर किसी को पुष्टि करनी पड़े इसमें श्रेष्ठ और निम्न आत्माएं समान होंगी, और लोगों को जिम्मेदार ठहराया जाएगा उनके विश्वासों और कार्यों के लिए, साथ ही उन्हें परखने के उद्देश्य के लिए, नकारा जा सकता है। यह महदी (मुस्लिम मसीहा) और सुफियान (मुस्लिम मसीहा) जैसे मुद्दों से संबंधित परंपराओं की स्पष्ट अस्पष्टता को स्पष्ट करता है। मुस्लिम जगत में ईसा मसीह विरोधी तत्वों के प्रकट होने की आशंका), तथा उन पर बड़े विवाद।

दूसरा सिद्धांत: सभी इस्लामी मुद्दों का महत्व एक जैसा नहीं होता। महत्व। एक मुद्दे के लिए निश्चित प्रमाण की आवश्यकता होती है, दूसरे के लिए प्रचलित राय पर्याप्त होती है, और तीसरे के लिए केवल स्वीकृति की आवश्यकता होती है। गौण मुद्दे या ऐतिहासिक घटनाएँ विश्वास के सिद्धांतों में शामिल नहीं हैं। इसलिए वे इसमें दृढ़ विश्वास और निर्णायक प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, बल्कि केवल स्वीकृति या अस्वीकृति की आवश्यकता है।

तीसरा सिद्धांत: जब साथी जीवित थे, कई यहूदी और ईसाई विद्वानों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इस प्रकार उनका पूर्व ज्ञान इस्लाम बन गया। "मुस्लिम।" हालाँकि, इसमें से कुछ सच्चाई के विपरीत था और बाद में इसे गलत करार दिया गया। इस्लाम से संबंधित माना जाता है।

चौथा सिद्धांत: परंपराओं का वर्णन करते समय, कुछ कथावाचकों का झुकाव स्पष्टीकरण देने और परम्पराओं से निकाले गए अर्थों को शामिल करने के लिए। बाद में, इस तरह के जोड़ परम्परा के पाठ का हिस्सा माने जाने लगे। चूँकि हम त्रुटि से मुक्त नहीं हैं, इसलिए इनमें से कुछ गलत राय या निष्कर्षों को परम्पराएँ माना गया और उन्हें “कमज़ोर” घोषित किया गया।

पाँचवाँ सिद्धांत: परंपरावादियों (विद्वानों) में कुछ ऐसे लोग थे हदीस) जिनका उल्लेख पैगंबर ने किया था: "किसी भी समुदाय में जो प्रेरित हैं।”१२० इस प्रकार, कुछ संतों द्वारा प्राप्त अर्थ परंपरावादियों ने प्रेरणा के माध्यम से दूसरों को जो संदेश दिया, उसे बाद के समय में परंपरा माना गया। हालांकि, कुछ बाधाओं के कारण, कुछ परंपराएं परंपरा बन गईं। प्रेरणाएँ दोषपूर्ण हो सकती हैं और इस प्रकार सत्य के विपरीत हो सकती हैं।

---

120 अल-बुखारी, "फ़दाइलस-सहाबा" 6; मुस्लिम, "फ़दा'इलु'स-सहाबा" 23; एट-तिर्मिज़ी, "मनक़िब" 17.

छठा सिद्धांत: कुछ व्यापक रूप से प्रसारित कथाएँ इस प्रकार होती हैं
कहावतें समय के साथ बदल रही हैं। उनके शाब्दिक अर्थ और इस्तेमाल किए गए शब्द अब नहीं रहे
महत्वपूर्ण है, क्योंकि केवल अर्थ और इरादे पर विचार किया जाता है। इस प्रकार
रसूल -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - कभी-कभी उल्लेख करते थे
तुलना या रूपक के रूप में इस तरह के आख्यान
मार्गदर्शन। यदि ऐसी कहावतों के मूल, शाब्दिक अर्थों में कोई त्रुटि है, तो यह लोगों की रीति-रिवाजों और परंपराओं और कहावतों के प्रचलन के तरीके के कारण है।

सातवां सिद्धांत: समय और ग़लतफ़हमी के कारण, कई उपमाएँ
और दृष्टांतों ने भौतिक तथ्यों का रूप ले लिया है। उदाहरण के लिए, दो
स्वर्गदूतों को "बैल" और "मछली" कहा जाता है, जिन्हें बैल और मछली के रूप में दर्शाया गया है
प्रतिनिधित्व या अमूर्त रूपों की दुनिया और उन लोगों के बीच जो
भूमि और समुद्री जानवरों की देखरेख करने वाले, एक विशाल बैल और एक भौतिक मछली की कल्पना की गई थी। नतीजतन, उनसे संबंधित परंपरा की आलोचना की गई।

एक बार एक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी। पैगम्बर ने कहा: "यह एक गड़गड़ाहट की आवाज़ है। सत्तर वर्षों से लुढ़कती आ रही चट्टान अब जाकर पहुंची है
नरक की तह।"[121] जो लोग संदर्भ को नहीं जानते वे इसे अस्वीकार कर सकते हैं।
हालाँकि, पैगम्बर के बोलने के लगभग बीस मिनट बाद, कोई आया
और बताया कि बीस मिनट पहले एक प्रसिद्ध पाखंडी की मृत्यु हो गई थी।
पैगम्बर ने बहुत ही सुन्दरता से वर्णन किया है कि कैसे एक पाखंडी का सत्तर वर्ष का जीवन व्यतीत हुआ।
वर्षों से लगातार सबसे निचले स्तर पर पत्थर की तरह उतर रहा था
नरक। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पैगम्बर और साथियों को वह गड़गड़ाहट सुनने दी।

आठवां सिद्धांत: परीक्षण और अनुभव के इस क्षेत्र में,
परम बुद्धिमान व्यक्ति अनेक प्रकार की वस्तुओं के बीच कुछ महत्वपूर्ण बातें छिपा लेता है।
चीजें: रमज़ान के महीने में शक्ति की रात, वह समय जब प्रार्थनाएँ होती हैं
शुक्रवार को अस्वीकार नहीं किया जाता है, लोगों के बीच उनके पसंदीदा दोस्त, किसी व्यक्ति के जीवनकाल के दौरान मृत्यु का नियत समय और प्रलय का समय
दुनिया की सबसे बड़ी ज़िंदगी। अगर हमें पता होता कि हम कब मरने वाले हैं, तो हम अपनी आधी ज़िंदगी दुनिया में गुज़ार देते
हमारा जीवन पूरी तरह से लापरवाही में है और बाकी आधा भाग भय में है, जैसे कि जाने से पहले
कदम दर कदम फाँसी की ओर। इस दुनिया और दुनिया के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए
इसके बाद, लोगों को उम्मीद और डर के बीच जीने देना, जीना और मरना किसी भी पल संभव होना चाहिए।
इस तरह अज्ञात अंत के साथ बीस साल तक जीना
एक हजार साल तक पूर्व-ज्ञात अंत के साथ जीने से बेहतर है।

प्रलय का दिन दुनिया (एक वृहद मानव) के लिए नियत समय है। अगर ऐसा होता
ज्ञात है, प्रारंभिक और मध्य युग के लोग स्वयं को खो देते थे
असावधानी में, और बाद की शताब्दियों के लोग आतंक में होंगे। जैसा कि हम

---

121 मुस्लिम, "जन्ना" 31; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:341।

हम अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने घर और शहर के अस्तित्व के बारे में चिंतित हैं, हम अपने सामाजिक जीवन में और मानवता के सदस्य के रूप में दुनिया और पृथ्वी के निरंतर अस्तित्व के बारे में भी चिंतित हैं।

क़ुरआन घोषणा करता है: क़यामत करीब आ गई है (54:1)। यह चौदह शताब्दियों पहले कहा गया था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि क़यामत करीब नहीं है।
प्रलय का दिन दुनिया की मृत्यु है। इसके जीवन के अनुपात में, एक हजार या दो हजार साल एक वर्ष के अनुपात में एक या दो घंटे के समान हैं। प्रलय का दिन केवल मानवता का नियत समय नहीं है कि यह मानव समय के पैमाने पर कोई अनुपात धारण करे और इसे दूर के रूप में देखा जाए। इस प्रकार परम बुद्धिमान ने अपने ज्ञान में इसके समय को "अनदेखी की पाँच चीज़ों (कुरान, 31:34)" के बीच छिपा दिया है। इस तरह की अनिश्चितता ने हर युग में लोगों को, जिसमें खुशी का युग (पैगंबर का सत्य-दर्शन युग) भी शामिल है, इसके आने से डरने के लिए प्रेरित किया है। कुछ लोगों ने तो यह भी माना है कि इसके संकेत पहले ही प्रकट हो चुके हैं।

प्रश्न: सहाबा ने, जो अपने सजग हृदयों और पैनी दृष्टि के साथ तथा आख़िरत की बारीकियों से अवगत थे, यह क्यों सोचा कि एक बहुत दूर भविष्य की घटना उनके समय के निकट होगी?

उत्तर: पैगंबर की ज्ञानवर्धक संगति से लाभ उठाते हुए, वे किसी और से ज़्यादा आख़िरत के बारे में सोचते थे। दुनिया की नश्वरता से अच्छी तरह वाकिफ़ और क़यामत की अनिश्चितता में ईश्वरीय ज्ञान के प्रति सचेत, वे इसके लिए सतर्क रहे और अपने आख़िरत के लिए गंभीरता से प्रयास किया। पैगंबर की बार-बार चेतावनी: "आख़िरी घड़ी की प्रतीक्षा करो, उसका इंतज़ार करो,"[122] उसी उद्देश्य के लिए थी और मार्गदर्शन के लिए थी; यह किसी निश्चित समय के बारे में रहस्योद्घाटन की घोषणा नहीं थी। किसी चीज़ के होने का कारण उससे जुड़े और उससे अपेक्षित लाभ के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। पैगंबर की ऐसी बातें कुछ चीज़ों को अस्पष्ट छोड़ने की बुद्धि से उत्पन्न होती हैं।

यही कारण है कि सभी पीढ़ियों के लोग, यहाँ तक कि साथियों के उत्तराधिकारियों के लोग भी, महदी और सुफ़यान जैसे अंतिम समय के व्यक्तियों की अपेक्षा करते थे, और उन्हें देखने के लिए लंबे समय तक जीवित रहने की आशा करते थे। कुछ संतों ने तो यह भी मान लिया कि वे गुजर चुके हैं। प्रलय की तरह, ईश्वरीय बुद्धि की आवश्यकता है कि इन व्यक्तियों के समय अज्ञात रहें। हर युग में, लोगों को महदी के अर्थ की आवश्यकता महसूस होती है, जो उनके मनोबल को मजबूत करने और उन्हें निराशा से बचाने के लिए आएगा। ऐसे मामलों का समय अस्पष्ट छोड़ दिया गया था ताकि लोग लापरवाही से बुरे नेताओं का अनुसरण न करें या उदासीनता के कारण अपने शारीरिक स्व की लगाम को मुक्त न होने दें, और ताकि वे उन भयानक व्यक्तियों से डरें और पीछे हटें जो नेतृत्व करने आते हैं

122 अत-तिर्मिधि, "फ़ितन" 39.

अव्यवस्था और पाखंड की ताकतें। अगर उन्हें जाना जाता, तो इसके उद्देश्य
लोगों का मार्गदर्शन करना असंभव हो गया होता।

महदी जैसे अंतिम समय के व्यक्तियों के बारे में वर्णनों में मतभेदों का एक और कारण यह है: कुछ परंपराओं के पाठों को
इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है:
भ्रमित या यहाँ तक कि दुभाषियों की टिप्पणियों के साथ मिश्रित
समझ और निष्कर्ष। उदाहरण के लिए, सत्ता का केंद्र जब ये
परम्पराएँ अपने सबसे व्यापक प्रचलन में मदीना या दमिश्क तक पहुँच गयी थीं।
इस प्रकार उन्होंने सोचा कि महदी और सुफ़यान से जुड़ी घटनाएँ
वहाँ या बसरा और कूफ़ा जैसे पड़ोसी स्थानों में घटित होने वाली घटनाओं को, और उसी के अनुसार उनकी
व्याख्या की। इसके अलावा, अपनी कल्पनाओं में, उन्होंने इसका श्रेय
वे व्यक्ति, सामूहिक रूप से संबंधित महान कार्य और घटनाएँ
पहचान या समुदाय जिसका वे प्रतिनिधित्व करेंगे, और प्रासंगिक व्याख्या की जाएगी
परम्पराएँ इसलिए बनाई गईं ताकि लोग उन्हें पहचान सकें।

लेकिन यह दुनिया परीक्षा का मैदान है। तर्क करने के लिए एक दरवाज़ा खुला है, लेकिन
मानव की स्वतंत्र इच्छा को नकारा नहीं जाता, न ही अनदेखा किया जाता है। इसी कारण से, जब वे
शक्तिशाली व्यक्ति, यहाँ तक कि भयानक दज्जाल (क्राइस्ट विरोधी) भी दिखाई देते हैं, अधिकांश
लोग (यहाँ तक कि वह खुद भी) अपनी असली पहचान नहीं पहचान पाते। ये अंत समय
व्यक्तियों को केवल विश्वास के प्रकाश से ही जाना जा सकता है।

दज्जाल के बारे में एक परंपरा कहती है: "उसका पहला दिन एक वर्ष की तरह है, उसका दूसरा दिन एक महीने की तरह है,
उसका तीसरा दिन एक सप्ताह की तरह है, और उसका चौथा दिन आपके सामान्य दिनों की तरह है।
जब वह प्रकट होगा, तो दुनिया सुनेगी। वह चालीस मिनट में दुनिया की यात्रा करेगा
कुछ लोग कहते हैं कि यह असंभव है, इसलिए वे परंपरा को नकारते हैं। हालाँकि—
ज्ञान ईश्वर के पास है - इस परंपरा का अर्थ यह होना चाहिए कि एक व्यक्ति
उत्तर में दिखाई देते हैं, जहाँ अविश्वास सबसे मजबूत और अपने चरम पर है।
भौतिकवाद से निकलने वाली शक्तिशाली धारा, वह ईश्वर और धर्म को नकार देगा
बिल्कुल।

यहाँ एक सूक्ष्म बात है: उत्तरी ध्रुव के निकट अक्षांशों में,
पूरा वर्ष एक दिन और एक रात है, जिनमें से प्रत्येक छह महीने का होता है। यह कथन कि उनका पहला दिन
एक वर्ष के समान है, उनके सुदूर उत्तर में उन अक्षांशों के निकट प्रकट होने का संकेत देता है। उनका दूसरा
दिन एक महीने के समान है, इसका अर्थ है कि दक्षिण की ओर आते हुए,
ऐसे अक्षांश हैं जहाँ गर्मी का दिन एक महीने तक रहता है। इसका मतलब है कि
दज्जाल सभ्य दुनिया की ओर दक्षिण की ओर आक्रमण करेगा। दक्षिण की ओर आते हुए,
ऐसी जगहें हैं जहाँ एक सप्ताह तक सूरज नहीं डूबता, और फिर भी
दक्षिण में, सूर्य के उदय और अस्त होने के बीच मुश्किल से तीन घंटे का समय होता है - रूस में युद्ध बंदी के
रूप में, मैं ऐसी ही जगह पर था।

---

123 मुस्लिम, "फ़ितन" 110; अबू दाऊद, "मलाहिम" 14; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 59.

दुनिया को समझने में कठिनाई तब सुनाई देगी जब दज्जाल
ऐसा लगता है कि रेडियो और टेलीग्राफ के माध्यम से इस समस्या का समाधान हो गया है। और, अब यह संभव है
चालीस दिनों में दुनिया की यात्रा करना। जो पहले असंभव माना जाता था, वह अब संभव हो गया है
अब आम बात हो गई है।

जहाँ तक गोग, मागोग और बाधा (अन्य अंत समय के संकेतों) का सवाल है, मेरी सलाह लें
यहाँ मैं केवल इतना ही कहूँगा: कुछ रिवायतों में कहा गया है
विभिन्न एशियाई जनजातियों ने चीनियों को महान दीवार बनाने के लिए मजबूर किया
और सभ्य दुनिया को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, प्रलय के दिन के करीब फिर से प्रकट होगा,
दुनिया में अराजकता पैदा करना और सभ्यता को नष्ट करना।

प्रश्न: वे जनजातियाँ कहाँ हैं जो कभी ऐसे असाधारण प्रदर्शन करती थीं?
कोई भी कार्य नहीं करेगा और वह उन्हें एक बार फिर से करेगा?

उत्तर: आपदा पैदा करने वाले टिड्डे एक मौसम में बहुत बड़ी संख्या में दिखाई देते हैं। जब मौसम बदलता है, तो वे
कुछ टिड्डियों में जीवित रहते हैं। जब यह होता है, तो यह बहुत कम होता है।
समय के साथ, ईश्वरीय आदेश से, उन कुछ लोगों से विशाल संख्याएँ बढ़ती हैं और फिर
अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को नष्ट कर देते हैं। ऐसा लगता है मानो उनकी राष्ट्रीय पहचान का सार ही यही है
ठीक हो जाता है, लेकिन टूटता नहीं है, और जब उसका समय आता है तो फिर से उभर आता है।
ठीक उसी तरह, उन्हीं जनजातियों ने एक बार सभ्य दुनिया को नष्ट कर दिया था
ईश्वर की अनुमति से नियत समय पर पुनः प्रकट होंगे और सभ्यता पर आक्रमण करेंगे।
हालाँकि, उन्हें आमंत्रित करने वाले कारक अलग हो सकते हैं। भगवान जानता है कि
अदृश्य.

नौवां सिद्धांत: विश्वास के कुछ मुद्दों के परिणाम चिंतित हैं
इस संकीर्ण और सशर्त दुनिया के साथ, जबकि अन्य इससे संबंधित हैं
परलोक की विस्तृत और बिना शर्त वाली दुनिया। इसलिए, हालांकि कुछ
कुछ धार्मिक कृत्यों के गुणों और पुरस्कारों के बारे में परम्पराएँ प्रचलित थीं।
लोगों को अच्छाई की ओर जाने और बुराई से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए बहुत ही वाक्पटुता से कहा गया है
कुछ लोग इन्हें अतिशयोक्ति मानते हैं। हालाँकि, ये सभी शुद्ध सत्य हैं
और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

उदाहरण के लिए, एक बहुत ही अनुचित रूप से आलोचना की गई परंपरा बताती है: "यदि परमेश्वर इस संसार को
उतना ही महत्व देता जितना वह एक मक्खी के पंख को देता है, तो अविश्वासी इसे स्वीकार नहीं कर सकते थे।
यहाँ तक कि उससे एक घूँट पानी भी नहीं पिया जा सकता।”124 यह संसार की ओर संकेत नहीं करता, बल्कि
हर किसी की निजी दुनिया, जो उनके छोटे जीवन तक सीमित है। यह नहीं हो सकता
अनंत दुनिया से एक मक्खी के पंख की सीमा तक एक शाश्वत दिव्य अनुग्रह के बराबर है। यदि भगवान का मूल्य शाश्वत
दुनिया को संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि
यह शाश्वत है, एक मक्खी के पंख की सीमा तक शाश्वत दुनिया से एक प्रकाश
पृथ्वी को भरने वाले क्षणिक प्रकाश की मात्रा से अधिक है।

---

124 मुस्लिम, "मुनाफिकुन" 18; अल-बुखारी, "तफ़सीर सूरा 18" 6; इब्न माजा, " ज़ुहद" 3.

इसके अलावा, दुनिया के तीन पहलू हैं। पहले पहलू में दर्पण हैं जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों को दर्शाते हैं। दूसरा पहलू परलोक से संबंधित है। यानी, यह दुनिया परलोक के बीजों से बोई गई कृषि योग्य भूमि है, वह क्षेत्र जिसमें हम शाश्वत दुनिया प्राप्त कर सकते हैं।

तीसरा पहलू, जो क्षणभंगुरता और अस्तित्वहीनता की ओर देखता है, गुमराह लोगों की दुनिया है, जिसे ईश्वर स्वीकार नहीं करता। यह परंपरा केवल तीसरे पहलू को संदर्भित करती है - सांसारिक दुनिया, जो परलोक के विपरीत है, सभी गलत कामों का स्रोत है, और आपदाओं का मूल है। इसलिए, जो लोग विश्वासियों को परलोक में पुरस्कृत किया जाएगा, उसमें से एक भी शाश्वत कण इसके लायक नहीं है। इस प्रकार, जो लोग इस परंपरा को अतिशयोक्ति मानते हैं, वे इस सबसे सटीक और गंभीर सत्य को अनदेखा कर रहे हैं।

कुछ लोगों द्वारा अतिशयोक्तिपूर्ण मानी जाने वाली परंपराओं की एक और श्रेणी में कुरान की कुछ सूराओं के धार्मिक कार्यों और गुणों के लिए पुरस्कार शामिल हैं। उदाहरण के लिए, कुछ परंपराएँ बताती हैं कि सूरतुल-फातिहा का पुरस्कार कुरान के बराबर है,125 सूरतुल-इखलास कुरान के एक तिहाई के बराबर है,126 सूरतुल-जिल्ज़ाल कुरान के एक चौथाई के बराबर है,127 सूरतुल-काफिरुन कुरान के एक चौथाई के बराबर है,128 और सूरा या सीन कुरान के दस गुना के बराबर है।129 वे अपनी आलोचना इस दावे पर आधारित करते हैं कि ये अधिक पुण्यदायी सूराएँ कुरान में समाहित हैं।

मामले की सच्चाई यह है। कल्पना करें कि 1,000 मक्के के बीज से एक खेत बोया गया है। अगर हम मान लें कि कुछ बीज 7 अंकुर पैदा करते हैं और प्रत्येक अंकुर 100 दाने देता है, तो एक बीज मूल 1,000 बीजों के दो-तिहाई के बराबर होता है। अगर 1 बीज 10 अंकुर पैदा करता है, और प्रत्येक अंकुर 200 दाने देता है, तो 1 बीज मूल रूप से बोए गए सभी बीजों की संख्या के दोगुने के बराबर होता है। इसी तरह की कई समानताएँ बनाई जा सकती हैं। ठीक उसी तरह, अगर हम बुद्धिमान कुरान को एक पवित्र, चमकदार, स्वर्गीय क्षेत्र मानते हैं, तो इसके 300,620 अक्षरों में से प्रत्येक, अपने मूल इनाम के साथ, एक बीज की तरह है। इन बीजों से पैदा होने वाले अंकुरों पर विचार किए बिना, कुरान की तुलना उन सूराओं और आयतों से की जा सकती है जो इन परंपराओं द्वारा वर्णित कई इनाम लाती हैं।

ईश्वरीय कृपा से कुछ सूराओं के अक्षर अंकुरित होकर 10, 70 या 700 तक हो सकते हैं, जैसे कि आयतु-उल-कुरसी के अक्षर। कभी-कभी वे 1,500 तक हो सकते हैं, जैसे कि सूरतुल-इखलास के अक्षर , या 10,000 तक हो सकते हैं, जैसे कि रात को पढ़ी जाने वाली आयतें।

---

125 अल-बुखारी, "तफ़सीर सुरा 1" 1; एट-तिर्मिधि, "थवाबु'एल-कुरान" 1; अन-नासाई, "इफ्तिता" 26. 126 एट-तिर्मिधि, "थवाबु'एल-कुरान" 10; इब्न माजा, "अदब" 52; अबू दाऊद, "वित्र" 18. 127 एट-तिर्मिधि, "थवाबु'एल-कुरान" 14; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:147. 128 एट-तिर्मिधि, "थवाबु'एल-कुरान" 9; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:147. 128 एट-तिर्मिधि, "थवाबुल-कुरान" 7; विज्ञापन-दारिमी, "फ़दा'इलु'एल-कुरान" 21।

क्षमा (लैलातुल-बराअ) और अन्य धन्य अवसर। कभी-कभी वे
यहाँ तक कि 30,000 आयतें भी मिलती हैं, जैसे कि रात की शक्ति (लैलातुल-क़द्र) पर पढ़ी जाने वाली आयतें। ये खसखस के बीजों की तरह हैं, जिनमें से प्रत्येक से 10 शंकु उत्पन्न हो सकते हैं,
जिनमें से प्रत्येक में हज़ारों बीज होते हैं। जैसा कि कुरान में माना गया है
शक्ति की रात्रि 1,000 महीनों के बराबर (97:3), कुरान का एक अक्षर
उस रात पढ़ी गई नमाज़ से 30,000 सवाब मिलता है।

इसे देखते हुए, कुछ सूरा और छंद कई पुरस्कार ला सकते हैं और हो सकते हैं
कुछ परिस्थितियों में इसकी तुलना सम्पूर्ण कुरान से की जाती है, जब इसके अक्षरों की
उनकी मूल योग्यता के आधार पर विचार किया जाता है और नई फसल पैदा किए बिना
गुण। उदाहरण के लिए, सूरतुल-इखलास और बसमाला (ईश्वर के नाम पर,
अत्यन्त दयालु, दयावान) दोनों में 69 अक्षर हैं। चूँकि यह सूरा
कुरान का एक तिहाई हिस्सा है और कुरान में 300,620 अक्षर हैं, जो कुरान से 3 गुना बड़ा है।
69 = 207. इस प्रकार इस सूरा के प्रत्येक अक्षर में लगभग 1,500 गुण या पुरस्कार हैं।
इसी प्रकार, चूँकि सूरा या सीन कुरान के दस गुना के बराबर है, यदि इसके सभी अक्षर
कुरान को 10 से गुणा किया जाता है और परिणाम को संख्या से विभाजित किया जाता है
सूरा के अक्षरों को देखने पर हमें पता चलता है कि प्रत्येक अक्षर में लगभग 500 गुण हैं।
इसलिए, यदि आप दूसरों को इस पर लागू करते हैं, तो आप समझेंगे कि इन परंपराओं से संबंधित एक सूक्ष्म, सच्ची और अप्रतिष्ठित वास्तविकता क्या है।

दसवां सिद्धांत: अधिकांश अन्य प्रजातियों की तरह, कुछ लोग भी
मानव जाति अपने कार्यों और उपलब्धियों में असाधारण है। यदि वे उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं
अच्छे कर्म मानवता का गौरव बनते हैं, अन्यथा वे विनाश का कारण बनते हैं
अपनी शर्म की वजह से वे एक सामूहिक पहचान हासिल कर लेते हैं और नकल करने वालों के लिए आदर्श बन जाते हैं। चूंकि यह निश्चित नहीं है कि लोगों में से किसमें यह क्षमता है, सैद्धांतिक रूप से, और कभी-कभी यह संभव भी है, हर कोई उनके जैसा हो सकता है। साथ ही,
ऐसे लोग किसी भी स्थान पर उभर सकते हैं, प्रत्येक स्थान पर उनमें से कुछ हो सकते हैं।

इसका अर्थ यह है कि किसी भी कार्य में निम्नलिखित पुरस्कार पाने की क्षमता होती है:
पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने घोषणा की: "दो लोगों का इनाम
अमुक समय पर अदा की गई नमाज़ की रकात हज के बराबर होती है
इसका मतलब यह है कि उस स्थान पर अदा की जाने वाली सभी दो रकात नमाज़ें
समय पर तीर्थ यात्रा करने के बराबर पुरस्कार मिल सकता है। ऐसी कथाओं में वादा किया गया पुरस्कार वास्तविक नहीं है या हर समय सभी के लिए नहीं है। बल्कि, चूंकि कुछ शर्तें पूरी होनी चाहिए, इसलिए यह संभव है कि पुरस्कार अर्जित किया जाएगा।

ऐसे सामान्य वादे संभावना या संभाव्यता से संबंधित होते हैं।
उदाहरण के लिए, एक परंपरा कहती है: “चुगली करना हत्या के समान है।”131 इसका मतलब है कि
एक तरह की चुगली जानलेवा ज़हर से भी ज़्यादा नुकसानदेह है। फिर से,

130 एट-तिर्मिधि, "जुमुआ" 59; अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 77:40।

131 अद-दयलमी, मुस्नादुल-फिरदौस, 3:116।

उदाहरण: "एक अच्छा शब्द एक गुलाम को मुक्ति दिलाने के गुण के बराबर है, जो बहुत पुण्यशाली।"132 किसी अच्छे काम से मिलने वाले सर्वोच्च पुरस्कार को इंगित करके इस कार्य के माध्यम से पैगम्बर ने अच्छाई के प्रति उत्सुकता और बुराई के प्रति घृणा उत्पन्न करने का प्रयास किया। इसके अलावा, परलोक की चीज़ों को इस दुनिया की चीज़ों से नहीं मापा जा सकता। तराजू, क्योंकि इस दुनिया में सबसे बड़ी चीज दुनिया की सबसे छोटी चीज के बराबर नहीं हो सकती परलोक। चूँकि अच्छे कर्मों का पुरस्कार परलोक से संबंधित है, इसलिए हम अपने सांसारिक, संकीर्ण मन से उन्हें पूरी तरह से नहीं समझ सकते।

एक और उदाहरण: ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो), घोषणा करता है कि लोगों को मूसा और हारून का इनाम दिया जाएगा यदि वे ये पढ़ें:

> सारी प्रशंसा और आभार परमेश्वर के लिए है, जो स्वर्ग का स्वामी है,
> पृथ्वी की परतों का स्वामी, संसार का स्वामी। स्वर्ग और पृथ्वी में उसकी महानता है।
> धरती पर वह सर्वशक्तिमान, प्रभुत्वशाली, अत्यन्त बुद्धिमान है।
> स्तुति और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है, स्वर्ग के स्वामी, पृथ्वी के स्वामी
> पृथ्वी की परतों का स्वामी, संसार का स्वामी। स्वर्ग और पृथ्वी पर उसकी महिमा है।
> धरती पर। वह महान और शक्तिशाली, सर्वज्ञ है। उसका राज्य है।
> पूर्ण प्रभुत्व, आकाश का स्वामी, और वह अत्यन्त महिमावान है
> और प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी।133

इस कथन की बहुत आलोचना की गई है। हालाँकि, हम अपने साथ कल्पना करते हैं संकीर्ण मन और सीमित दृष्टिकोण मूसा और हारून को किस तरह का इनाम मिला परलोक में प्राप्त कर सकते हैं। हम भूल जाते हैं कि परम दयालु परमेश्वर वह अपने किसी भी जरूरतमंद सेवक को शाश्वत खुशी दे सकता है। एक प्रार्थना के लिए उन्हें उतना ही पुरस्कार मिलता है जितना हम सोचते हैं कि उन्हें हर चीज़ के लिए मिलता है। उदाहरण के लिए, आदिम और असभ्य लोग जिन्होंने कभी नहीं देखा राजा को अपने राज्य की भव्यता का पता नहीं है। इसलिए वे एक गाँव की कल्पना करते हैं मुखिया और, अपने संकीर्ण अनुभव के साथ, सोचते हैं कि राजा थोड़ा सा है अपने मुखिया से भी बड़े। पूर्वी क्षेत्रों में कुछ अशिक्षित लोग कहा करते थे: "हमारे प्रभु जानते हैं कि सुल्तान क्या करता है, जबकि वह अपना बुलगुर पकाता है आग पर सॉस पैन में सूप पकाना।"134 दूसरे शब्दों में, उन्होंने सुल्तान को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में कल्पना की जो एक साधारण व्यक्ति से बड़ा था जो अभी भी अपना बुल-गुड़ सूप खुद पकाता था। अगर कोई उनसे कहता: "अगर तुम आज मेरे लिए यह करोगे, तो मैं तुम्हें इनाम दूंगा वह उन लोगों को उतनी ही भव्यता देने का वादा कर रहा था जितनी वह कल्पना कर सकता था कि सुल्तान के पास है।

हमारे सांसारिक विचार और संकीर्ण मन वास्तविक पुरस्कारों को नहीं जान सकते परलोक में प्राप्त हुआ। यह परंपरा वास्तविक, अज्ञात की तुलना करती है

---

132 अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 7:230; अल-बहाकी, शुअबु'ल-ईमान, 6:124.

133 अहमद अल-गुमुशानेवी, अल-मजमुअतुल-अहजाब, 263।

134 उबले और पीसे हुए गेहूँ से बना सूप। (ट्र.)

किसी आस्तिक के आह्वान का इनाम पैगम्बर मूसा और हारून (उन पर शांति हो) के वास्तविक (और अज्ञात) इनाम के लिए नहीं, बल्कि उस इनाम के लिए है जो हमें लगता है कि उन्हें मिला। इसके अलावा, समुद्र की [चिकनी] सतह और एक बूंद की "पुतली" सूर्य की छवि को धारण करने में समान हैं। अंतर केवल गुणवत्ता के संबंध में है, जो क्षमता पर निर्भर करता है। मूसा और हारून की समुद्र जैसी आत्माओं के दर्पण में परिलक्षित इनाम की प्रकृति कुरान की आयत से बूंद जैसी आत्मा वाले आस्तिक द्वारा प्राप्त इनाम के समान ही है।

प्रकृति और मात्रा की दृष्टि से वे एक समान हैं, जबकि उनकी गुणवत्ता क्षमता पर निर्भर करती है।

इसके अलावा, कभी-कभी महिमा का एक शब्द या कार्य खुशी का ऐसा खजाना खोल देता है जिसे कोई व्यक्ति जीवन भर ईश्वरीय सेवा के माध्यम से नहीं खोल सकता। कुछ परिस्थितियों में, एक आयत पूरे कुरान के बराबर सवाब कमा सकती है। साथ ही, ईश्वरीय उपहार और ज्ञान जो सबसे महान पैगंबर, जिन्हें ईश्वर के महानतम नाम से संपन्न किया गया था, को एक आयत के माध्यम से प्राप्त हुआ हो सकता है, वह किसी अन्य पैगंबर द्वारा प्राप्त सभी उपहारों और ज्ञान के बराबर हो सकता है। यह कहना सही हो सकता है कि एक आस्तिक, जो मुहम्मद के मिशन के उत्तराधिकार के माध्यम से ईश्वर के महानतम नाम की छाया से संपन्न है, उसे पैगंबर के ज्ञान के बराबर पुरस्कार मिल सकता है, जो गुणवत्ता के संबंध में उसकी अपनी क्षमता के अनुरूप होगा।

इसके अलावा, पुरस्कार और गुण प्रकाश के क्षेत्र से हैं, जिसका एक संसार इस संसार के एक परमाणु में समाहित हो सकता है। जिस तरह स्वर्ग और उसके तारे एक छोटे से कांच के टुकड़े में दिखाई दे सकते हैं, वैसे ही ऐसे पुरस्कार और गुण, जो शुद्ध प्रकाश के हैं और इस तरह स्वर्ग को भर सकते हैं, कुरान की आयत के आह्वान या पाठ में समाहित हो सकते हैं जो ईमानदारी और शुद्ध इरादे के माध्यम से पारदर्शिता प्राप्त करते हैं।

संक्षेप में: हे अन्यायी, विश्वास में कमजोर लेकिन द्वंद्वात्मकता में मजबूत! इन दस सिद्धांतों पर विचार करें, और जिसे आप "संदिग्ध" परंपरा मानते हैं, उसका उपयोग पैगंबर की परंपराओं और रसूल की पवित्रता और अचूकता की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को कम करने के बहाने के रूप में न करें। ये दस सिद्धांत आपके लिए परंपराओं को नकारना असंभव बनाते हैं और आपको चेतावनी देते हैं: "यदि कोई वास्तविक दोष है, तो यह वैसा ही है जैसा हमने समझाया है और इसे परंपराओं के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। यदि कोई वास्तविक दोष नहीं है, तो समस्या आपकी गलतफहमी से उत्पन्न होती है।" इन परंपराओं को नकारने और खारिज करने का मतलब है कि आपको इन दस सिद्धांतों का खंडन और खंडन करना चाहिए। इसलिए, उन पर ध्यान से विचार करें और उन परंपराओं को नकारने की कोशिश न करें जिन्हें आप सच्चाई के विपरीत मानते हैं।

उनकी आलोचना करने के बजाय कहें: “इसे समझाने या व्याख्या करने का कोई तरीका होना चाहिए।”

ग्यारहवां सिद्धांत: जिस प्रकार कुरान में कठिन और रूपकात्मक आयतें हैं, जिनकी व्याख्या की आवश्यकता है या जिनके लिए पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है, उसी प्रकार परम्पराओं में भी ऐसी आयतें हैं, जिन्हें पूर्णतः स्वीकार किया जाना चाहिए।
इसमें भी ऐसी कठिनाइयाँ हैं जिनके लिए कभी-कभी अत्यंत सावधानीपूर्वक व्याख्या की आवश्यकता होती है। उपरोक्त उदाहरण इस सत्य को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं।

जो लोग जागे हुए हैं वे सोये हुए व्यक्ति के स्वप्न की व्याख्या कर सकते हैं, और
कभी-कभी जो लोग सो रहे होते हैं वे उन लोगों की बातचीत सुन सकते हैं जो सो रहे होते हैं
वे जागते हैं और अपनी नींद की दुनिया के अनुसार अपने शब्दों की व्याख्या करते हैं।
उसी प्रकार, हे अन्यायी, जो असावधानी और मिथ्या तर्क की नींद में मूढ़ हो गया है! अपने स्वप्न में इनकार मत करो; बल्कि, उस एक के दर्शन की व्याख्या करो
जो हमेशा और सचमुच जागता था और जिसके बारे में परमेश्वर ने घोषणा की थी: उसकी आँख
कभी नहीं डगमगाया और न ही विचलित हुआ (53:17), और खुद कहा: "मेरी आंख सोती है, लेकिन मेरी
दिल सोता नहीं।”135 अगर मच्छर किसी सो रहे व्यक्ति को काट ले, तो हो सकता है कि वह
सपना देखा कि वह बुरी तरह घायल हो गया है। अगर उससे पूछा जाता तो वह जवाब देता:
"मैं घायल हो गया हूँ। उन्होंने मुझ पर बंदूकें और राइफलें चलाईं।" उसके पास बैठे लोग
नींद में उसकी पीड़ा पर हंसेंगे। इस प्रकार, अपनी “नींद” में असावधानी और दर्शन का दृष्टिकोण पैगंबरी की सच्चाईयों के लिए कसौटी नहीं हो सकता।

बारहवां सिद्धांत: नबूवत और ईमान का रास्ता, साथ ही
ईश्वरीय एकता का सिद्धांत, हर चीज को ईश्वरीय एकता के दृष्टिकोण से देखें
एकता, परलोक और ईश्वर की दिव्यता। इस प्रकार वे सत्य और वास्तविकता को देखते हैं
उसी दृष्टिकोण से। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और दर्शन, हालांकि, प्रकृति, कारणता और चीजों की बहुलता से संबंधित हैं।
ये दोनों दृष्टिकोण एक दूसरे से बहुत दूर हैं। इसलिए, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों का सबसे बड़ा उद्देश्य धार्मिक पद्धति और धर्मशास्त्र के विद्वानों के उद्देश्यों की तुलना में लगभग अगोचर है।

यही कारण है कि वैज्ञानिकों ने प्राणियों की संरचनाओं और प्रकृति के विस्तृत स्पष्टीकरण में बहुत प्रगति की है, लेकिन वे उच्च दिव्य विज्ञान और परलोक विद्या में साधारण विश्वास करने वालों की तुलना में अधिक पिछड़े हैं।

यह बात समझ में नहीं आती कि इस्लाम के सूक्ष्म विद्वान पिछड़े हुए हैं
दार्शनिकों की तुलना में। लेकिन वे लोग कैसे देख सकते हैं जिनका मन कुछ नहीं देखता
उनकी आँखों से भी आगे, जो वस्तुओं की बहुलता में डूबी हुई हैं,
उन लोगों तक पहुँचें जिन्होंने उत्तराधिकार के माध्यम से उत्कृष्ट पवित्र लक्ष्य प्राप्त किए हैं
पैगम्बर के मिशन के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है?

इसके अलावा, जब किसी चीज़ को दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा जाए, तो
दो अलग-अलग सत्य प्रदर्शित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान पृथ्वी को एक के रूप में देखता है
असंख्य तारों के बीच सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाता मध्यम आकार का ग्रह।
अधिकांश तारों की तुलना में यह एक छोटा पिंड है। लेकिन जैसा कि पंद्रहवें अध्याय में बताया गया है

---

135 अल-बुखारी, "तहज्जुद" 16; एट-तिर्मिज़ी, "अदब" 86; अबू दाऊद, "ताहारा" 79.

शब्द, कुरान के लोग इसे कुछ अलग रूप में देखते हैं। आकाश की तुलना में अपने छोटे आकार के बावजूद, पृथ्वी अपने अर्थ और कला के संबंध में ब्रह्मांड का हृदय और केंद्र है। क्योंकि पृथ्वी मानवता का पालना और निवास स्थान है, और मानवता, अपनी नपुंसकता के बावजूद, सृष्टि के वृक्ष का फल है, और ईश्वरीय शक्ति का सबसे व्यापक, जटिल, अद्भुत और सम्माननीय चमत्कार है। पृथ्वी वह स्थान भी है जहाँ ईश्वर की कला के चमत्कार प्रदर्शित होते हैं और ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्तियाँ केंद्रित होती हैं। यह सभी प्राणियों के स्वामी के रूप में ईश्वर की अनंत गतिविधि को दर्शाता है। यह अनंत उदारता में प्रदर्शित अनंत ईश्वरीय रचनात्मकता का केंद्र और धुरी भी है, विशेष रूप से असंख्य छोटे पौधे और पशु प्रजातियों में, साथ ही वह स्थान जहाँ परलोक की सबसे विस्तृत दुनिया के प्राणियों के नमूने छोटे पैमाने पर दिखाए जाते हैं। यह शाश्वत वस्त्रों के लिए तेजी से चलने वाली कार्यशाला है, शाश्वत दृश्यों की प्रतियों का तेजी से बदलता स्थान है, तथा संकीर्ण, अस्थायी क्षेत्र और खेती है जो स्थायी उद्यानों (परलोक में) के लिए तेजी से बीज पैदा करती है।

पृथ्वी की इस महानता और कला के संबंध में इसके महत्व के कारण ही, बुद्धिमान कुरान ने इसे आकाश के बराबर रखा है, हालांकि आकाश की तुलना में यह एक विशाल वृक्ष के छोटे फल के समान है। यह तराजू के एक पलड़े में पृथ्वी को और दूसरे में आकाश को रखता है, और बार-बार उनका एक साथ उल्लेख करते हुए कहता है, "आकाश और पृथ्वी का स्वामी।"

इसलिए, अन्य मुद्दों की तुलना इसी से करें। समझें कि आधुनिक वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण के धुंधले, बेजान सत्य कुरान के शानदार, जीवंत सत्यों का मुकाबला नहीं कर सकते। चूँकि प्रत्येक का दृष्टिकोण अलग है, इसलिए वे अलग-अलग दिखाई देते हैं।

चौथी शाखा: निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें:

> क्या तुम नहीं देखते कि जो कुछ आकाशों और धरती में है, और सूर्य, चंद्रमा, तारे, पहाड़, वृक्ष, पशु और बहुत से मनुष्य, सब अल्लाह के सामने सजदा करते हैं? और बहुत से ऐसे हैं जिनको सज़ा मिलनी चाहिए। और जिसे अल्लाह अपमानित करे, उसका कोई सम्मान करनेवाला नहीं। निश्चय ही अल्लाह जो चाहता है, करता है। (22:18)

इस विस्तृत आयत के खजाने से मैं सिर्फ़ एक रत्न पर चर्चा करूँगा: क़ुरआन कहता है कि सृष्टि में मौजूद हर चीज़ अपनी क्षमता और ईश्वरीय नामों के अनुसार सर्वशक्तिमान ईश्वर की सजदा, पूजा, प्रशंसा और महिमा करती है, जिसके वे पात्र हैं। मैं नीचे इस पूजा के एक प्रकार के बारे में बताता हूँ।

एक शक्तिशाली राजा एक बड़े शहर या एक विशाल इमारत के निर्माण के लिए चार प्रकार के श्रमिकों को नियुक्त करता है। शानदार महल। प्रथम श्रेणी, जिसमें उसके दास शामिल हैं, को कोई वेतन नहीं मिलता या वेतन और आने वाले अवर्णनीय उत्साह और खुशी से संतुष्ट है प्रत्येक कार्य से, जो सभी अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है उसके आदेश। जैसे-जैसे ये दास उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके गुणों को गिनाते हैं, वे प्राप्त करते हैं अधिक आनंद और उत्साह। उन्हें अपने स्वामी के साथ अपने संबंध के अलावा और कोई मांग नहीं है, जिसे वे एक महान सम्मान के रूप में जानते हैं। वे भी अपने प्रभु के नाम पर किए जाने वाले सभी कार्यों की देखरेख करने से आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं उनके प्रभुत्व में और उनके दृष्टिकोण से इसे देखते हुए। उन्हें इसकी कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती वेतन, पद या पदोन्नति।

दूसरे वर्ग में साधारण सेवक शामिल हैं जो इस बात से अनभिज्ञ हैं कि उनके उपयोग के पीछे सार्वभौमिक उद्देश्य क्या हैं और इसके क्या महत्वपूर्ण परिणाम हैं कुछ लोग कल्पना करते हैं कि वे उस छोटी सी मजदूरी पर काम कर रहे हैं जो कि स्वामी उन्हें नियमित रूप से भुगतान करता है। तीसरे वर्ग में कुछ खास कामों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले जानवर शामिल हैं निर्माण-संबंधी कार्य और कर्म। चूँकि उनकी नौकरियाँ उनके क्षमताओं से उन्हें किसी प्रकार का आनंद मिलता है। जब कोई क्षमता एक क्षमता में विकसित होती है वास्तविक क्षमता और कुछ कार्यों का मूल बन जाता है, यह उत्साह देता है। यही कारण है कि सभी गतिविधियों में एक निश्चित आनंद है। इस वर्ग के सदस्य वे अपने भोजन और मजदूरी से मिलने वाले आनंद से संतुष्ट हैं। चौथा वर्ग उन लोगों का है जो जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, क्यों और किसके लिए वे किसके लिए काम कर रहे हैं, दूसरे लोग क्यों काम कर रहे हैं, और प्रभु का क्या उद्देश्य है? समग्र उद्देश्य है। वे अन्य श्रमिकों की देखरेख करते हैं और उनके अनुसार भुगतान किया जाता है उनकी रैंक.

इसी प्रकार - सबसे उच्च तुलना ईश्वर के लिए है (और इसे आगे रखा जाना चाहिए) - सारे संसार के स्वामी, आकाश और पृथ्वी के सर्वशक्तिमान स्वामी, इस संसार और परलोक के सर्व-कृपालु निर्माता, इस ब्रह्माण्ड के महल में स्वर्गदूतों, पशुओं, निर्जीव वस्तुओं, पौधों और मानवता का उपयोग करते हैं, कारणता के दायरे में। वह ऐसा आवश्यकता के कारण नहीं करता है, क्योंकि वह हर चीज़ का निर्माता है, बल्कि उसकी शक्ति और ज्ञान द्वारा मांगे गए कुछ उदाहरणों के लिए करता है सम्मान, भव्यता और प्रभुत्व। उसने इन चार वर्गों को यह दायित्व सौंपा है उपासना के अद्वितीय कर्तव्य.

प्रथम श्रेणी में देवदूत हैं। उन्हें कभी पदोन्नति नहीं मिलती, क्योंकि उनका पद हमेशा बदलता रहता है। निश्चित और दृढ़ निश्चयी। उन्हें काम से ही एक खास खुशी मिलती है और प्रत्येक को उनकी रैंक के अनुसार पूजा से एक चमक मिलती है। संक्षेप में, उनका इनाम है उनकी सेवा में पाया जाता है। जिस तरह मानवता पोषित होती है और आनंद प्राप्त करती है हवा, पानी, प्रकाश और भोजन से, उसी तरह स्वर्गदूतों को स्मरण, महिमा, पूजा, ज्ञान और प्रकाश से पोषण मिलता है और उनसे आनंद मिलता है।

ईश्वर का प्रेम। वे प्रकाश से निर्मित हैं, और इसलिए प्रकाश उनके पोषण के लिए पर्याप्त है। यहां तक कि सुगंधित सुगंध, जो प्रकाश के करीब होती है, एक प्रकार का आनंददायक अनुभव है उनके लिए पोषण, क्योंकि शुद्ध आत्माएं मीठी सुगंधों में आनंद लेती हैं।

जिसकी वे पूजा करते हैं उसके आदेश पर और उसके लिए काम करना उसके नाम से सेवा करना और उसकी दृष्टि से देखरेख करना, सम्मान प्राप्त करना उसके साथ जुड़ने और उसके वचनों का अध्ययन करके "ताज़ा" होने के द्वारा राज्य के भौतिक और अभौतिक आयाम, और उसकी कृपा और महिमा की अभिव्यक्तियों को देखने से संतुष्ट होना उन्हें इतना ऊंचा स्थान देता है वह आनंद जिसे मानव मन समझ नहीं सकता या अनुभव नहीं कर सकता। केवल देवदूत ही पता है।

स्वर्गदूतों का एक वर्ग पूजा करता है और दूसरा वर्ग काम करता है (देवताओं का दूसरा रूप) पूजा) पृथ्वी के लिए नियुक्त किए गए कार्यरत स्वर्गदूतों के पास किसी प्रकार का मानव रूप होता है व्यवसाय। अगर कोई ऐसा कह सकता है, तो कुछ लोग चरवाहों या किसानों की तरह हैं। पृथ्वी एक खेत की तरह है, और एक नियुक्त देवदूत सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की आज्ञा, अनुमति, शक्ति और ताकत से, और उसकी खातिर, इसकी पशु प्रजातियों की देखरेख करता है। प्रत्येक पशु प्रजाति में एक छोटा देवदूत होता है जिसे एक प्रकार का चरवाहा नियुक्त किया जाता है।

इसके अलावा, धरती पौधों को बोने के लिए एक कृषि योग्य क्षेत्र है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम और उसकी शक्ति से उन सभी की देखरेख करने के लिए एक स्वर्गदूत को नियुक्त किया गया है। निचले दर्जे के स्वर्गदूत विशिष्ट पौधों की प्रजातियों की देखरेख करके सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा और महिमा करते हैं। माइकल, ईश्वर के सिंहासन के वाहकों में से एक है जीविका - सर्वोच्च पद का एक अधिकारी जिसे परमेश्वर अपने पापों को छिपाने के लिए नियुक्त करता है अपने सभी प्राणियों के भरण-पोषण से संबंधित कार्यों का पर्यवेक्षण करता है—ये स्वर्गदूत उसकी देखरेख करते हैं।

ये देवदूत चरवाहे और किसान मनुष्य जैसे नहीं हैं, क्योंकि वे केवल परमेश्वर के लिए, उसके नाम पर, और उसकी शक्ति और अनुग्रह से निगरानी करते हैं। वे केवल परमेश्वर के प्रभुत्व की अभिव्यक्ति को ही देखते हैं। उन्हें सौंपी गई प्रजातियाँ, दैवीय शक्ति की अभिव्यक्तियों का अध्ययन करती हैं और उसमें दया है, किसी प्रकार से ईश्वरीय आदेश का संचार करें प्रेरणा प्राप्त करें, और किसी तरह अपनी स्वैच्छिक क्रियाओं को व्यवस्थित करें।

पौधों की उनकी देखरेख में विशेष रूप से प्रतिनिधित्व करना शामिल है, उनकी दिव्य भाषा, उनकी भाषा में पौधों की महिमा वे अपनी दिव्य भाषा में उन प्रशंसाओं और उत्कर्षों की घोषणा करते हैं जो पौधे अपने जीवन के माध्यम से सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को अर्पित करते हैं, विनियमित करते हैं और उपयोग करते हैं पौधों की क्षमताओं को सही ढंग से समझें और उन्हें कुछ निश्चित लक्ष्यों की ओर निर्देशित करें। सेवाएँ उनकी आंशिक इच्छाशक्ति और एक प्रकार की पूजा और आराधना के माध्यम से की जाने वाली क्रियाएँ हैं। देवदूत अपने कार्यों की शुरुआत या निर्माण नहीं करते हैं, क्योंकि हर चीज़ पर सभी चीज़ों के रचयिता की एक विशेष मुहर लगी होती है, जिसका कोई अस्तित्व नहीं होता

सह-निर्माता। संक्षेप में, स्वर्गदूत जो कुछ भी करते हैं वह उनकी पूजा है और इसलिए यह उनसे अलग है साधारण मानवीय कृत्य.

दूसरे वर्ग में जानवर हैं। चूँकि जानवरों में भी भूख की प्रवृत्ति होती है आत्मा और आंशिक इच्छा, उनका कार्य "पूरी तरह से परमेश्वर के लिए" नहीं है उन्हें लगता है कि कुछ हद तक वे अपने लिए भी हिस्सा ले लेते हैं। इसलिए, चूँकि समस्त प्रभुत्व का सर्व-प्रतापी और उदार स्वामी अत्यंत दयालु और वह बड़ा उदार है, और उन्हें उनके हिस्से के अनुसार पारिश्रमिक देता है। उदाहरण के लिए, अत्यन्त बुद्धिमान् अल्लाह मूल निर्माता ने कोकिला को नियुक्त किया,136 जो गुलाब के प्रति अपने प्रेम के लिए प्रसिद्ध है, पाँच उद्देश्य:

> इस पर पशु प्रजातियों के नाम पर यह घोषणा करने का आरोप है कि
> उनके और पौधों की प्रजातियों के बीच गहन संबंध।
> यह पशुओं के बीच प्रभु का वक्ता है, जिन्हें जीविका की आवश्यकता में दयालु भगवान का
> अतिथि माना जा सकता है, और
> सर्व-उदारवादी द्वारा भेजे गए उपहारों की प्रशंसा करने का आरोप
> प्रदाता और उनकी खुशी की घोषणा।
> यह प्रत्येक पौधे पर यह घोषणा करता है कि पौधे जानवरों को जो सहायता प्रदान करते हैं उसके
> बदले में जानवर उनका स्वागत करते हैं।
> यह पौधों के सुंदर चेहरों के माध्यम से, जानवरों की ऊर्जा की तीव्र आवश्यकता को दर्शाता है।
> पौधों के प्रति प्रेम और जुनून की आवश्यकता होती है।
> यह दया के न्यायालय को सबसे सुंदर महिमा प्रदान करता है
> हे सर्वप्रतापी, दयालु, सर्वप्रथम उदार प्रभु,
> एक अत्यंत सुखद लालसा के साथ, और एक अत्यंत नाजुक फूल पर
> गुलाब।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर अन्य उद्देश्यों और अर्थों के लिए कोयल का उपयोग करता है। कोयल उसके लिए इन उद्देश्यों और अर्थों को प्राप्त करने के लिए कार्य करती है। वह अपनी भाषा में बोलता है और हम उसके शब्दों से अर्थ समझते हैं। मार्मिक गीत। यदि, स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के विपरीत, यह ठीक-ठीक नहीं जानता कि उसके गीतों का क्या अर्थ है, तो यह हमारी समझ को नुकसान नहीं पहुँचाता, क्योंकि "वह जो सुनने वाला बोलने वाले से बेहतर समझ सकता है।" एक घड़ी समय बताती है यद्यपि उसे इसकी जानकारी नहीं होती; बुलबुल में विस्तृत ज्ञान का अभाव इन उद्देश्यों के बारे में जानकारी का मतलब यह नहीं है कि इसका इस्तेमाल इन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता है। मुस्कुराते हुए, खूबसूरत गुलाबों को देखने से जो आनंद मिलता है, वह है उनसे बात करने और अपना बोझ हल्का करने से उसे जो खुशी मिलती है दूसरे शब्दों में, इसके मार्मिक गीत शिकायतों से उत्पन्न नहीं होते ये पशुवत दु:ख हैं, बल्कि ये दयालु ईश्वर के उपहारों के लिए धन्यवाद हैं।

---

[136] चूँकि बुलबुल काव्यात्मक ढंग से बोलती है, इसलिए हमारी चर्चा भी किसी तरह काव्यात्मक हो जाती है। लेकिन यह काल्पनिक नहीं है; यह सत्य है।

बुलबुल जैसे अन्य छोटे जानवरों या कीटों की तुलना कीजिए। मधुमक्खी और चींटी, और आप देखेंगे कि प्रत्येक निश्चित उद्देश्यों के लिए काम करता है। एक विशेष आनंद, जो मजदूरी के रूप में उनके कर्तव्यों में शामिल है, वे कुछ निश्चित सेवा करते हैं भगवान की रचना में निहित महत्वपूर्ण उद्देश्य। एक साधारण नाविक की तरह एक शाही जहाज पर खेवनहार के रूप में काम करने के लिए एक छोटी सी मजदूरी प्राप्त करना, ईश्वर द्वारा प्रदत्त कर्तव्य में नियोजित प्रत्येक पशु को एक विशेष मजदूरी मिलती है।

एक पूरक टिप्पणी: परमेश्वर की स्तुति और महिमा का गायन यह तरीका सिर्फ़ बुलबुल तक ही सीमित नहीं है। ज़्यादातर प्रजातियों में एक या उससे ज़्यादा नस्लें होती हैं सदस्य, जो कोकिला की तरह, अपनी प्रजाति की बेहतरीन भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं बेहतरीन कविता में बेहतरीन महिमामंडन। असंख्य और विविध मक्खियों और कीड़ों की "बुलबुलें", विशेष रूप से, उनकी महिमा का गुणगान करती हैं वे अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों को अच्छी कविता सुनाते हैं और उन्हें खुशी देते हैं।

कुछ रात्रिचर होते हैं। सभी छोटे जानवरों के गीत गाने वाले मित्र जब सभी प्राणी रात्रि के शांतिपूर्ण वातावरण में प्रवेश करते हैं, तो वे ईश्वर की स्तुति और महिमा करते हैं मौन। प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ता है और उसके पीछे मौन वाचकों का एक समूह होता है जो गाता है परमेश्वर के नाम का स्मरण करें और अपने हृदय में अपने महान् सृजक की महिमा करें। समूह दिनचर है। वसंत और गर्मियों में दिन के समय, वे घोषणा करते हैं सर्वशक्तिमान दयालु एवं दयावान, सभी जीवों पर दया करने वाले। पेड़ों के "पल्पिट्स" अपनी मधुर आवाज़ों, मधुर धुनों और काव्यात्मक महिमा-गानों के साथ। मानो हर कोई भगवान के नामों के ज़ोरदार उच्चारण करने वालों के एक समूह का नेतृत्व कर रहा हो, वे अपने दर्शकों को आनंद से भर देते हैं। इससे प्रत्येक प्रजाति गाना शुरू कर देती है सर्व-महान सृजक के नाम अपनी विशेष भाषा में और स्वर.

इस प्रकार प्रत्येक प्राणी जाति में, यहाँ तक कि सितारों में भी, एक प्रमुख वाचक और प्रकाश फैलाने वाली कोयल होती है। सबसे उत्कृष्ट, महान, प्रख्यात और गहन, साथ ही सबसे महान और सबसे सम्माननीय कोकिला, जिसकी आवाज़ सबसे शानदार है जिसका गुण सबसे अधिक उज्ज्वल है, जिसका भगवान के नामों का उच्चारण सबसे अधिक परिपूर्ण और व्यापक है, और जिसका सबसे सार्वभौमिक को धन्यवाद; सबसे परिपूर्ण पहचान वाला और सबसे सुंदर रूप, और जो ब्रह्मांड के बगीचे में सभी प्राणियों को लाता है अपनी सबसे लयबद्ध और सबसे सुखद धुनों और सबसे अधिक के माध्यम से परमानंद के लिए सबसे महान महिमामंडन पैगम्बर मुहम्मद का है, जो मानवता के गौरवशाली शूरवीर हैं, कुरान की बुलबुल हैं। उन पर, उनके परिवार पर, और उनके साथियों पर - अन्य पैगम्बरों पर - सबसे अच्छी कृपा और शांति हो।

निष्कर्ष: पशु सर्वशक्तिमान ईश्वर की सेवा करके उनकी पूजा और महिमा करते हैं। ब्रह्मांड के महल में प्रवेश करने या ईश्वर के जीवन के नियमों का पूरी तरह से पालन करते हुए, उनकी शक्ति और उनके द्वारा अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक कर्तव्यों का पालन करने के द्वारा।

उसका नाम। इस प्रकार वे अपने अस्तित्व के लिए दिव्य उद्देश्यों को एक अद्भुत तरीके से प्रदर्शित करते हैं। ये महिमामंडन और पूजा के अन्य कार्य जो वे करते हैं, वे उनके उपहार हैं सर्व-महान उत्पत्तिकर्ता, दाता के दरबार में की गई स्तुति की ज़िंदगी।

श्रमिकों का तीसरा वर्ग पौधे और निर्जीव वस्तुएं हैं। कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं और कोई मजदूरी नहीं मिलती। वे जो कुछ भी करते हैं वह पूरी तरह से भगवान के लिए किया जाता है उसकी इच्छा और शक्ति से, और उसके नाम से। हालाँकि, जैसा कि समझा जाता है अपने जीवन चक्र में, वे अपने कर्तव्य को पूरा करने से किसी प्रकार की खुशी प्राप्त करते हैं परागण और फल उत्पादन का कार्य। लेकिन उन्हें कोई दर्द नहीं होता, जबकि जानवर वे दर्द और खुशी दोनों का अनुभव करते हैं क्योंकि उनके पास कुछ हद तक विकल्प होता है। यह तथ्य कि पौधों और निर्जीव वस्तुओं में इच्छाशक्ति नहीं होती, उनके काम करने की क्षमता को प्रभावित करता है। जानवरों की तुलना में अधिक परिपूर्ण। जानवरों में कुछ गुण होते हैं एक तरह का विकल्प, मधुमक्खी जैसे लोगों का काम, जो एक तरह की सुविधा से लैस हैं प्रेरणा पर आधारित लोग, अपनी इच्छा पर निर्भर रहने वालों से अधिक परिपूर्ण होते हैं।

वनस्पति प्रजातियाँ सर्वज्ञ उत्पत्तिकर्ता से प्रार्थना करती हैं और पूछती हैं, प्रत्येक प्रजाति में उनके अस्तित्व और क्षमता की जीभ: "हे भगवान। हमें शक्ति दो ताकि, पूरी पृथ्वी पर अपनी प्रजाति का झंडा फहराकर, हम घोषणा कर सकते हैं आपकी प्रभुता की प्रभुता। हमें सफलता प्रदान करें ताकि हम आपकी पूजा कर सकें धरती की मस्जिद के हर कोने में। हमें हर उपयुक्त क्षेत्र में बढ़ने में सक्षम करें, ताकि हम आपके सभी सुंदर नामों के कार्यों को प्रदर्शित कर सकें और आपकी अद्भुत, अमूल्य कलाएँ। जवाब में, सर्वज्ञ सृजक कुछ प्रजातियों के बीजों (जैसे, कई कांटेदार पौधे और कुछ पीले-पीले फूल) को छोटे "बालों के पंख" से सुसज्जित करता है ताकि वे उड़ सकें और प्रकट हो सकें अपनी प्रजाति की ओर से दिव्य नाम। वह कुछ प्रजातियों को सुंदर, स्वादिष्ट मांस जो मनुष्य के लिए या तो आवश्यक है या आनंददायक है। वह हमें उनकी सेवा करने और उन्हें हर जगह रोपने के लिए प्रेरित करता है।

दूसरों को कठोर और अपचनीय “हड्डी” जैसा मांस मिलता है ताकि जानवर उन्हें खा सकें और फिर उनके बीजों को एक बड़े क्षेत्र में फैला सकें। कुछ के छोटे-छोटे पंजे होते हैं जो उन्हें छूने वाली किसी भी चीज़ को पकड़ लेते हैं। वे फैल जाते हैं चारों ओर घूमें और अपनी प्रजाति का झंडा फहराएं, सबसे कीमती प्रदर्शन करें राजसी निर्माता की कलात्मकता। अभी भी अन्य प्रजातियों के लिए, जैसे कि कड़वा तरबूज, वह एक "शॉटगन" का बल देता है ताकि जब समय हो, तो छोटा खरबूजे गिरते हैं और अपने बीज कई मीटर की दूरी तक गिराते हैं ताकि वे वे इस प्रकार काम करते हैं कि उनके नाम के उच्चारण के साथ-साथ, सर्वशक्तिमान सृजक की महिमा अनेक भाषाओं में की जा सकती है।

वह सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता है, वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है, उसने हर चीज़ को सुंदर और पूर्ण व्यवस्थित ढंग से बनाया है।

सभी प्राणियों को उनकी ज़रूरतों के अनुसार सुसज्जित करता है, उन्हें अनुकूल लक्ष्यों की ओर निर्देशित करता है, और उन्हें सबसे उचित कर्तव्यों में उपयोग करता है। वह उन्हें सर्वोत्तम तरीके से अपनी आराधना और महिमा करने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए यदि आप वास्तव में मनुष्य हैं, तो ऐसा न करें
इन सुंदर चीजों को यह कहकर विकृत करना कि वे प्रकृति द्वारा बनाई गई थीं,
संयोग या आवश्यकता। बेतुकी बातों, उद्देश्यहीनता और गुमराही के कारण उन्हें दूषित न करें। बदसूरत तरीके से काम न करें और बदसूरत न बनें।

चौथा वर्ग मनुष्य है।
नौकर, वे स्वर्गदूतों और जानवरों दोनों से मिलते जुलते हैं। वे स्वर्गदूतों से मिलते जुलते हैं
उनके व्यापक पर्यवेक्षण और व्यापक ज्ञान में, और होने में
दिव्य प्रभुता के अग्रदूत। वास्तव में, हम अधिक व्यापक हैं
प्रकृति। चूँकि हमारे पास बुराई की ओर प्रवृत्त एक भूखी आत्मा है (स्वर्गदूत ऐसा नहीं करते हैं
नहीं), हमारे पास लगभग असीमित उन्नति या गिरावट की संभावना है।
अपने काम में आनंद और हिस्सा चाहते हुए भी हम पशु के समान हैं।
इसे देखते हुए, हम दो प्रकार की मजदूरी प्राप्त कर सकते हैं: एक नगण्य, पशु,
और तत्काल; दूसरा दिव्य, सार्वभौमिक और स्थगित है। इस तरह के मामलों पर अन्यत्र चर्चा की गई है, विशेष रूप से ग्यारहवें और
तेईसवें शब्द। इसलिए, हम यहाँ चर्चा को संक्षिप्त करते हैं और निवेदन करते हैं
हे सर्वशक्तिमान, कृपालु हमारे लिए दया के द्वार खोल दे ताकि मैं पूर्ण हो सकूँ
इस वचन का पालन करो और मेरी गलतियों और कमियों को क्षमा करो।

पांचवी शाखा: इस पांचवी शाखा में पांच फल होते हैं।

प्रथम फल: हे मेरे स्वार्थी आत्मा! हे सांसारिक मित्र! प्रेम ही सब कुछ का कारण है।
ब्रह्मांड का अस्तित्व, सभी चीज़ों के बीच का बंधन, तथा प्रकाश और जीवन
ब्रह्मांड का। चूँकि हम अस्तित्व का सबसे व्यापक फल हैं, इसलिए
प्रेम इतना उमड़ता है कि वह ब्रह्माण्ड पर आक्रमण कर सकता है, उसे इसमें शामिल किया गया है
फल का हृदय (इसका बीज या कोर)। जो इस तरह के असीम प्रेम का हकदार है, वह
केवल अनंत पूर्णता के साथ एक हो जाओ।

इसलिए, हे आत्मा और मित्र, हमारी प्रकृति में दो क्षमताएं हैं:
भय के साधन और प्रेम के साधन। ऐसा प्रेम और भय या तो एक दूसरे के लिए महसूस किया जाता है
सृजित या रचयिता का भय एक पीड़ादायक पीड़ा है, और प्रेम
सृष्टि की ओर से कष्टदायक पीड़ा है, क्योंकि तुम ऐसी वस्तुओं या व्यक्तियों से डरते हो जो
वे तुम पर दया नहीं दिखाते या तुम्हारी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं करते। यदि ऐसा है, तो सृजित का भय एक दर्दनाक पीड़ा है। जहाँ तक सृजित के प्रेम का प्रश्न है, तो जिन्हें तुम प्रेम करते हो, वे या तो
तुम्हारी परवाह नहीं करते और तुम्हारी जवानी और सम्पत्ति की तरह तुम्हें भी छोड़ देते हैं
विदाई कहते हुए। या वे आपके प्यार के कारण आपका तिरस्कार करते हैं। 99 प्रतिशत प्रेमी अपने प्रियतम से मूर्ति-जैसे प्रेम के लिए शिकायत करते हैं
सांसारिक प्रियतम को अपने हृदय की गहराई से देखना, जो कि ईश्वर का दर्पण है।
'सदा से चाहा हुआ एक', प्रेमी के लिए असहनीय है। और ऐसा ही है

अस्वीकृत, क्योंकि मानव स्वभाव अप्राकृतिक और अनावश्यक चीज़ों को अस्वीकार करता है और उनसे घृणा करता है। (पशु प्रेम का तो यहाँ सवाल ही नहीं उठता।)

संक्षेप में कहें तो, जिनसे आप प्यार करते हैं, वे या तो आपकी परवाह नहीं करते, या वे आपसे घृणा करते हैं, या फिर वे आपके साथ नहीं आते। आपकी इच्छा के विपरीत, वे आपको छोड़ देते हैं। इसलिए अपने भय और प्रेम को ऐसे परमेश्वर की ओर मोड़ो कि तुम्हारा भय सुखद हो जाए नम्रता और आपके प्रेम से अपमान से मुक्त खुशी मिलती है। सर्व-महान सृष्टिकर्ता से डरने का अर्थ है उसकी करुणा का मार्ग खोजना और शरण लेना
वास्तव में, भय एक कोड़ा है; यह हमें परमेश्वर के आलिंगन में ले जाता है।
करुणा। एक माँ अपने बच्चे को किसी चीज़ या व्यक्ति से डराकर दूर कर देती है और उसे अपनी बाहों में खींच लेती है। बच्चों के लिए यह डर बहुत ही सुखद होता है, क्योंकि यह उन्हें देखभाल और करुणा की बाहों में खींचता है। हालाँकि, देखभाल और सभी माताओं की करुणा उनकी करुणा की एक किरण मात्र है। इसका अर्थ है परमेश्वर के भय से बड़ा आनन्द मिलता है। इसे देखते हुए, आप समझ सकते हैं कि उससे प्रेम करने से अनंत आनंद पाया जा सकता है। इसके अलावा, जो लोग उससे डरते हैं परमेश्वर दूसरों की चिंता, कष्टकारी भय से मुक्त हो जाते हैं, और उनका प्रेम भगवान के नाम पर सृजित प्राणियों के बीच कोई दुःख या अलगाव नहीं होता।

हम सबसे पहले अपने आप से प्रेम करते हैं, फिर अपने परिवार और रिश्तेदारों से। फिर हमारा राष्ट्र, फिर जीवित प्राणी, फिर विश्व या ब्रह्माण्ड। इन सभी क्षेत्रों के साथ संबंध रखें, उनकी संतुष्टि में आनंद महसूस करें और खुशी और दर्द दोनों ही हैं। लेकिन चूँकि सब कुछ अस्थायी है इस उथल-पुथल और हमेशा बदलती दुनिया में, हमारा दिल लगातार घायल होता रहता है। हम जिस चीज से चिपके रहते हैं, वह हमारे हाथों से फिसल जाती है, खरोंचती है और काटती है हम दर्द में रहते हैं या खुद को नशे में झोंक देते हैं
असावधानी.

चूँकि ऐसा है, हे आत्मा, यदि तुममें विवेक है, तो जितना प्रेम तुम बाँटते हो, उसे बाँट दो। सभी प्राणियों में से जो इसका सच्चा हकदार है, उसी के पास जाओ और इस प्रकार अपना उद्धार करो सभी दर्द और परेशानियों से। केवल वही जो अनंत पूर्णता और सुंदरता का स्वामी है, अनंत प्रेम का हकदार है। केवल तभी जब आप उस प्रेम को उसके अधिकार को सौंप सकें
क्या आप स्वामी से प्रेम कर सकते हैं, उसके लिए और उनके प्रति दर्पण होने के सम्मान में, सभी चीजें बिना दर्द या परेशानी के। इस तरह के प्यार को सीधे किसी को नहीं सौंपा जाना चाहिए अस्तित्व के लिए ही अस्तित्व को अपनाना। अन्यथा, सबसे सुखद ईश्वरीय कृपा होते हुए भी, प्रेम सबसे दर्दनाक बीमारी बन जाता है।

इस मामले का दूसरा, अधिक महत्वपूर्ण पहलू, मेरी आत्मा, यह है कि तुम अपने आप को अपना प्यार सौंपें। आप अपने आप को आदर्श मानते हैं और इसे पूजा के योग्य मानते हैं। आप अपने लिए सब कुछ त्याग देते हैं और इसे सम्मान देते हैं जैसे कि यह भगवान। हालाँकि, किसी चीज़ को उसकी पूर्णता के लिए प्यार किया जाता है (जो कि अपने आप के कारण प्यार किया जाता है), या इससे मिलने वाले लाभ या आनंद के लिए, इससे मिलने वाली भलाई

लाता है, या किसी अन्य, समान कारण के लिए। अब, हे आत्मा! मैंने कुछ शब्दों में ठोस तर्क प्रस्तुत किए हैं कि आपका स्वभाव "एक साथ गूंथा हुआ" है
दोष और कमी के साथ-साथ अभाव और नपुंसकता से भी। जैसे अंधकार प्रकाश की शक्ति को उसके घनत्व के अनुपात में दिखाता है, वैसे ही इसके विपरीत, आप
आपके स्वभाव के उन आवश्यक तत्वों के माध्यम से आप सर्वशक्तिमान सृजक की पूर्णता, कृपा, सौंदर्य, शक्ति और दया को देख सकते हैं।

अतः हे आत्मा! तू अपने प्रति शत्रुता रख या उस पर दया कर।
या फिर आपको उसके साथ सावधानी और दया से पेश आना चाहिए जब उसे अपराध का पूरा विश्वास हो जाए। विश्वास के सिद्धांतों की सच्चाई और उपासना में संतुष्टि।

यदि आप अपने (शारीरिक) स्व से प्रेम करते हैं, जो सुखों का आदी है और हमेशा
अपने हित की चिंता करता है, तुम सुख और स्वार्थ के मोह में पड़ गए हो। ऐसे तुच्छ सुख और स्वार्थ को अपने हित से अधिक महत्व मत दो
असीम सच्चा सुख और लाभ। जुगनू की तरह मत बनो, जो डूब जाता है
अपने दोस्तों और हर उस चीज़ से दूर, जिसे वह अंधेरे और भय के एकांत में प्यार करता है।
अपनी छोटी सी चमक से ही संतुष्ट हो जाता है। अपने अनंत प्रियतम से प्रेम करो
जिसका अनुग्रह आपके पाशविक सुखों और रुचियों के साथ-साथ उत्पन्न होता है,
उन सभी प्राणियों के हितों की रक्षा करें जिनके साथ आपका संबंध है, जिनसे आपको प्राप्त होता है
लाभ उठाएँ, और जिनकी ख़ुशी से आपको ख़ुशी मिलती है। इससे आप लाभ उठा पाएँगे
उनकी खुशी में आनंद लें और आपके समान ही असीम आनंद प्राप्त करें
पूर्णतया परिपूर्ण परमेश्वर से प्राप्त करें।

आपका तीव्र आत्म-प्रेम वास्तव में आपके प्रति सहज प्रेम के अलावा और कुछ नहीं है।
"सार", जिसे आप अनजाने में अपने अंदर रखते हैं और गलत तरीके से अपने लिए उपयुक्त बना लेते हैं। अपने अंदर के "मैं" को अलग करें और "वह" को दिखाएँ। सभी
जो प्रेम आप अन्य प्राणियों में बांटते हैं, वह और कुछ नहीं, बल्कि दूसरों में निहित प्रेम है।
अपने अस्तित्व को उसके नाम और गुणों के लिए समर्पित कर दो। लेकिन तुम उसका दुरुपयोग करते हो और इसलिए कष्ट उठाते हो
दर्द और परेशानी, उन लोगों के लिए पोषित अवैध प्रेम की वापसी के लिए
इसके अयोग्य हैं यह निर्दयी बीमारी है।

उस शाश्वत, प्रियतम के प्रति प्रेम का एक अणु, जिसने अपने द्वारा
दयालु और दयावान परमेश्वर ने एक स्वर्ग का निर्माण किया है
आपकी सभी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए हूर का , जो अपने अन्य नामों के माध्यम से
वहाँ आपके लिए अनन्त अनुग्रह तैयार किया है ताकि आपकी सभी ज़रूरतें पूरी हो सकें
अमूर्त क्षमताएँ (जैसे, आपकी आत्मा, हृदय, बुद्धि और अंतरतम इंद्रियाँ), और जिनके प्रत्येक नाम में असंख्य अमूर्त खजाने हैं
अनुग्रह और उदारता, ब्रह्मांड की क्षतिपूर्ति कर सकती है। हालाँकि,
ब्रह्माण्ड उनकी एक भी विशेष अभिव्यक्ति की क्षतिपूर्ति नहीं कर सकता
प्रेम। इसे देखते हुए, निम्नलिखित शाश्वत आदेश को सुनें और उसका पालन करें, जो कि

शाश्वत, प्रियतम ने अपने प्रियतम, अपने रसूल से घोषणा करवाई: यदि तुम सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हो, मेरे पीछे आओ ताकि परमेश्वर भी तुमसे प्रेम करे (3:31)।

दूसरा फल: हे आत्मा! ईश्वर की आराधना कोई ऐसा कार्य नहीं है जिसके द्वारा भविष्य में दैवीय पुरस्कार की मांग करें, बल्कि एक आवश्यक परिणाम की मांग करें पिछले ईश्वरीय अनुग्रह। हमें अपना वेतन मिल चुका है और बदले में हमसे शुल्क लिया जाता है उसकी सेवा और पूजा करके। क्योंकि, हे आत्मा, सर्व-महान सृष्टिकर्ता जिसने तुम्हें शुद्ध उत्तम जीवन प्रदान किया, तुम्हें भूखा पेट दिया और अपने सर्वदाता नाम के द्वारा तुम्हारे सामने सब कुछ रख दिया। सभी खाद्य पदार्थ अनुग्रह की मेज के रूप में। इसके अलावा, उसने आपको एक सजी हुई ज़िंदगी दी है इंद्रियों के साथ। यह भी पेट की तरह अपने लिए विशेष पोषण की मांग करता है। तुम्हारी इन्द्रियाँ जैसे आँख और कान, तुम्हारे हाथों के समान हैं, जिनके आगे उसने धरती जितनी बड़ी कृपाओं की एक विशेष मेज़ बिछा दी है। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार उसने तुम्हें बनाया है मनुष्य, जो अनेक अमूर्त उपकार मांगता है, उसने तुम्हारे सामने रख दिया है वह एक ऐसी मेज़ है जो तर्क की पहुँच में है और भौतिक और अभौतिक दुनियाओं की तरह बहुआयामी है। जैसा कि उसने तुम्हें ईमान और इस्लाम भी प्रदान किया है, जो सबसे बड़ी मानवता है और इस प्रकार अनंत उपकार की मांग करती है और अनंत दया के फल से पोषित होती है, उसने आपके लिए एक मेज खोल दी है एहसान, खुशी और सुख जो शामिल हैं, साथ में आकस्मिकताओं का क्षेत्र, उनके सर्वसुंदर नामों और पवित्रता का क्षेत्र गुण। इसके अलावा, उसने तुम्हें प्रेम प्रदान किया है, जो विश्वास का प्रकाश है, तुम्हें अनुग्रह, आनन्द और सुख की एक और मेज प्रदान की है।

शारीरिक दृष्टि से आप छोटे, तुच्छ, नपुंसक, दयनीय हैं, और प्रतिबंधित विशेष प्राणी। लेकिन उसकी कृपा और अनुग्रह के माध्यम से आपके पास है एक सार्वभौमिक, प्रबुद्ध और ज्ञानवर्धक व्यक्ति बनें। आपको जीवनदान दिया और इस प्रकार आपको एक विशेष प्रकार के पद पर पदोन्नत किया सार्वभौमिकता। आपको मानवता प्रदान करके, उसने आपको सर्वोच्च स्थान पर पहुँचाया है सच्ची सार्वभौमिकता का दर्जा देकर, और तुम्हें इस्लाम प्रदान करके, एक सच्चे सार्वभौमिकता का दर्जा देकर, उदात्त और प्रकाशमान सार्वभौमिकता प्रदान करके; और आपको प्रेम और ईश्वर के ज्ञान से उसने तुम्हें सर्वव्यापी प्रकाश की प्राप्ति करा दी है।

हे आत्मा! चूँकि तुम्हें ये वेतन पहले ही मिल चुका है, इसलिए तुम पर आरोप लगाया गया है पूजा के साथ, जो एक आसान, सुखद और पुरस्कृत दिव्य उपहार है। लेकिन आप जब बात किसी काम को करने की आती है तो आप आलसी हो जाते हैं। जब आप किसी काम को दोषपूर्ण तरीके से करते हैं, मानो आप अग्रिम वेतन को अपर्याप्त मानते हैं, आप अहंकार से और अधिक की मांग करें। आप भी दिखावा करते हैं और शिकायत करते हैं कि आपकी प्रार्थनाएँ पूरी नहीं होतीं स्वीकार किया गया। आपका हक शिकायत नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना और प्रार्थना करना है। वह आपको स्वर्ग और अनंत सुख प्रदान करता है उसकी कृपा और दया से। इसलिए, हमेशा उसकी दया की शरण में रहो

और कृपा, उसी पर भरोसा रखो और ईश्वरीय घोषणा पर ध्यान दो: कह दो, "उसकी कृपा और दया से," और इस पर प्रसन्न हो जाओ। यह उससे बेहतर है जो वे इकट्ठा कर रहे हैं (10:58)।

यदि आप पूछें: “मैं अपनी सीमित, विशेष कृतज्ञता के माध्यम से उन सार्वभौमिक, अनंत उपकारों का जवाब कैसे दे सकता हूँ?”, तो उत्तर इस प्रकार होगा: एक सार्वभौमिक इरादे और असीम रूप से गहन विश्वास और भक्ति के माध्यम से। मान लीजिए कि एक गरीब आदमी राजा के सामने एक सस्ता (भौतिकवादी शब्दों में) उपहार लेकर आता है। वहाँ वह राजा के पसंदीदा लोगों द्वारा भेजे गए महंगे उपहार देखता है। वह सोचता है: “मेरे उपहार का कोई मतलब नहीं है, लेकिन यह वही है जो मैं खरीद सकता हूँ।” फिर अचानक वह राजा को संबोधित करते हुए कहता है: “मेरे स्वामी! मैं ये सभी कीमती उपहार अपने नाम पर अर्पित करता हूँ, क्योंकि आप इनके हकदार हैं। अगर मैं कर सकता, तो मैं इनका दोगुना चढ़ाता।”

राजा, जिसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं होती, वह अपनी प्रजा के उपहारों को सम्मान और वफादारी के प्रतीक के रूप में स्वीकार करता है, वह गरीब आदमी की सार्वभौमिक मंशा, इच्छा और भक्ति की गहरी भावनाओं को ऐसे स्वीकार करता है मानो वे सबसे बड़ा उपहार हों।

इसी प्रकार, एक गरीब सेवक अपनी दैनिक प्रार्थना में कहता है: "सारी पूजा और श्रद्धा ईश्वर के लिए है," जिसका अर्थ है: "मेरे नाम पर, मैं आपको पूजा की सभी भेंटें अर्पित करता हूँ जो सभी प्राणी अपने जीवन के माध्यम से आपको प्रदान करते हैं।

आप उन सभी के हकदार हैं, और वास्तव में उनसे कहीं अधिक के भी।" यह विश्वास और इरादा सबसे व्यापक और सार्वभौमिक आभार है।

पौधों के बीज और पत्थर उनके इरादे हैं कि वे बड़े-बड़े पौधे बनें। उदाहरण के लिए, अपने सैकड़ों बीजों के साथ, एक तरबूज इरादा करता है: "हे मेरे निर्माता! मैं पृथ्वी के कई स्थानों पर आपके सुंदर नामों के शिलालेखों को प्रदर्शित करना चाहता हूं।" भविष्य के बारे में पूरी जानकारी होने के कारण, सर्वशक्तिमान ईश्वर इसके इरादों को कर्मों में पूजा के रूप में स्वीकार करता है। पैगंबर का कथन: "एक आस्तिक का इरादा उसके कार्य से बेहतर है,"137 इस वास्तविकता को व्यक्त करता है। यही कारण है कि हम अनंतता को व्यक्त करने वाले वाक्यांशों के साथ उसकी महिमा और प्रशंसा करते हैं, जैसे: "आपकी महिमा हो, और आपकी रचनाओं की संख्या, आपको प्रसन्न करने वाली चीजें, आपके सर्वोच्च सिंहासन की सजावट, आपके शब्दों की स्याही की मात्रा तक आपकी प्रशंसा हो। हम आपके पैगंबरों, संतों और स्वर्गदूतों की सभी महिमाओं के योग के साथ आपकी महिमा करते हैं।"

जिस प्रकार एक सेनापति राजा को, उसके नाम पर, उसके सभी सैनिकों की सेवाएं अर्पित करता है, उसी प्रकार मानवता, जो सभी सांसारिक प्राणियों (पौधों और जानवरों सहित) की सेनापति है और अपने निजी संसार में सभी के नाम पर कार्य करती है, कहती है: केवल आपकी ही हम आराधना करते हैं और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं (1:5), और मानवता के नाम पर सर्व-पूज्य महामहिम को अर्पित करती है।

---

137 अल-मुनावी, फ़यदु'ल-कादिर, 6:291.

सारी सृष्टि की आराधना और मदद के लिए विनती। कह रहे हैं: "महिमा हो तेरी
आप अपने समस्त प्राणियों की महिमा के योग के साथ तथा
आपने जो कुछ बनाया है उसकी सभी भाषाएँ," मानवता सभी प्राणियों को बोलने में सक्षम बनाती है
अपने नाम पर.

साथ ही, मानवता कहती है: "हे भगवान! मुहम्मद पर आशीर्वाद प्रदान करो
ब्रह्मांड में परमाणुओं और यौगिकों की संख्या।'' वह इसे ईश्वर का आशीर्वाद कहते हैं
हर चीज़ के नाम पर पैगम्बर मुहम्मद पर, क्योंकि हर चीज़ मुहम्मद के प्रकाश से जुड़ी हुई है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो,
इन सब बातों से परमेश्वर की महिमा करने और उसे पुकारने में बुद्धिमत्ता को समझें
मुहम्मद पर अनंत आशीर्वाद है।

तीसरा फल: हे आत्मा! यदि तुम अनंत उपलब्धियां चाहते हो,
यदि आप अपने छोटे से जीवन के दौरान अपने परलोक के संबंध में प्रत्येक बात को देखना चाहते हैं, तो यहां क्लिक करें
अपने जीवन का हर मिनट पूरे जीवन जितना फलदायी बनाएं, और यदि आप उसे बदलना चाहते हैं
अपने साधारण कर्मों को उपासना में बदलो और अपनी असावधानी को ईश्वर की उपस्थिति के प्रति निरंतर जागरूकता में बदलो, पैगंबर के महान मार्ग का अनुसरण करो
सुन्ना। शरिया के नियमों का पालन करने से एक प्रकार की जागरूकता मिलती है
ईश्वर की उपस्थिति का एहसास होता है, और यह एक प्रकार की आराधना बन जाती है जो अनेक फल देती है
परलोक के लिए।

उदाहरण के लिए, जब आप उस सिद्धांत का पालन करते हैं जो शरीयत में अपेक्षित है
खरीद-बिक्री के लेन-देन में, यह सामान्य लेन-देन एक कार्य बन जाता है
इबादत करो, क्योंकि शरिया को याद रखना तुम्हें ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की याद दिलाता है,
जो आपको शरीयत के प्रकटकर्ता के बारे में सोचने और अपनी सोच बदलने के लिए प्रेरित करता है
उस पर ध्यान दें। इससे उसकी उपस्थिति का अहसास होता है। इसका मतलब है,
सुन्नाह का पालन करने से व्यक्ति का क्षणभंगुर जीवन अनंत फल उत्पन्न कर सकता है
अनंत जीवन का साधन। इसलिए, निम्नलिखित दिव्य आदेश पर ध्यान दें: इसलिए
ईश्वर और उसके रसूल पर विश्वास करो, वह अनपढ़ पैगंबर जो ईश्वर और उसके रसूल पर विश्वास करता है
उसके वचनों का पालन करो, और उसका अनुसरण करो ताकि तुम मार्ग पाओ (7:158)। शरिया और उच्च सुन्नत के नियमों में
प्रकट प्रत्येक दिव्य सुंदर नाम से प्रबुद्ध होने के लिए एक व्यापक वस्तु बनने का प्रयास करें।

चौथा फल: हे आत्मा! दिखावटी चमक-दमक से भ्रमित मत हो और
सांसारिक लोगों का अवैध सुख, विशेष रूप से उन लोगों का जो एक अनैतिक जीवन जीते हैं
जीवन और, और भी अधिक विशेष रूप से, अविश्वासियों। क्योंकि तुम उनके जैसे नहीं हो पाओगे
उनकी नकल करके आप बहुत नीचे गिर जाएँगे। आप जानवरों की तरह नहीं हो सकते
या तो, क्योंकि आपकी बुद्धि एक अशुभ "उपकरण" होगी जो आपको देगी
अंतहीन परेशानी.

मान लीजिए कि एक महल है जिसके केंद्रीय कमरे में एक बड़ी बिजली की रोशनी है। अन्य सभी कमरों में उससे जुड़ी छोटी-छोटी रोशनी हैं। अगर कोई

उस बड़ी लाइट को बंद कर देने से महल में अँधेरा छा जाता है।

प्रत्येक कमरे में छोटी विद्युत लाइटें जो उसके केंद्रीय प्रकाश से जुड़ी नहीं हैं।

अगर महल का मालिक केंद्रीय प्रकाश बंद कर दे, तो बाकी कमरे रोशन रहेंगे। इससे वहाँ के निवासी अपना काम कर पाएँगे और चोर भी नहीं भाग पाएँगे।

हे आत्मा! पहला महल मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद, मुसलमानों के दिल में बड़ी केंद्रीय रोशनी है। अगर वे उसे भूल जाएं या अपने दिल से निकाल दें, वे उस पर विश्वास करने में असमर्थ होंगे किसी भी अन्य पैगंबर। इसके अलावा, उनकी आत्मा में किसी भी तरह के लिए कोई जगह नहीं होगी वे अपने प्रभु को नहीं पहचान पाएंगे, उनकी सभी आंतरिक इंद्रियाँ और उनकी सारी क्षमताएं अंधकार में रह जाएंगी, और उनके दिल बर्बाद हो जाएंगे और निराशा और उदासी उन पर हावी हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए क्या किया जा सकेगा? शून्य के साथ और में सांत्वना पाते हैं?

ईसाई और यहूदी दूसरे महल की तरह हैं। भले ही वे पैगंबर की रोशनी से रोशन न हों, लेकिन वे उस "रोशनी" से काम चला सकते हैं जो उन्हें लगता है उनके पास है। सृष्टिकर्ता और मूसा या यीशु में उनके विश्वास का रूप, उनमें शांति हो, फिर भी वे किसी प्रकार की नैतिक पूर्णता का साधन हो सकते हैं।

हे दुष्ट आत्मा! तुम कभी भी पशु के समान नहीं हो सकते, क्योंकि आपकी बुद्धि आपको लगातार अतीत के दर्द और चिंताओं से परेशान करती रहती है भविष्य के लिए। यह एक सुख को हज़ार दुखों के साथ मिला देता है। लेकिन एक जानवर बिना दर्द के आनंद लेता है। इसलिए अगर आप जानवर की तरह जीना चाहते हैं, तो पहले त्याग दें और अपनी बुद्धि को बढ़ाओ और फिर पशु बन जाओ। और ईश्वर की इस चेतावनी पर भी ध्यान दो कि वे पशुओं के समान हैं, बल्कि अधिक भटके हुए हैं (और उन्हें मार्ग दिखाने की आवश्यकता है) (7:179)

पाँचवाँ फल: हे आत्मा! चूँकि हम सृष्टि के वृक्ष के फल हैं, हम सबसे व्यापक प्राणी हैं और समस्त सृष्टि से जुड़े हुए हैं। अपने भीतर एक हृदय है जो फल की गुठली के समान वह केंद्र है जिसमें सभी भाग समाप्त होते हैं और एक साथ जुड़ते हैं। हम नश्वर हैं और संसार की ओर झुके हुए हैं बहुलता की। लेकिन ईश्वर की आराधना एकता की रेखा है जो हमें एकता से दूर ले जाती है नश्वरता से स्थायित्व की ओर, सृजित से सृष्टिकर्ता की ओर, तथा बहुलता से एकता की ओर। यह दोनों के बीच एक संधि बिंदु भी है शुरुआत और अंत.

यदि बीज वाला फल पेड़ के नीचे वालों को देखता है और गर्व करता है इसकी सुंदरता पर मोहित हो जाता है, अपने आप को उनके हाथों में सौंप देता है या लापरवाही से छलांग लगा देता है पेड़ जल्दी ही नष्ट हो जाता है। लेकिन अगर वह अपने सहारे के बिंदु के प्रति लापरवाह न हो, तो वह जल्दी ही नष्ट हो जाता है। इसका बीज (जिसमें वृक्ष का सम्पूर्ण जीवन समाया हुआ है) वृक्ष को सक्षम करेगा इसके अर्थ और जीवन को बनाए रखना। यह इसे सतत जीवन में एक व्यापक वास्तविकता प्राप्त करने में भी सक्षम बनाता है।

इसी प्रकार यदि तुम भी वस्तुओं की बहुलता में डूबे हुए हो और संसार के प्रेम के नशे में धुत्त होकर मनुष्यों की मुस्कुराहटों से मोहित हो गए हो, तो संसार को छोड़ दो।
अपने आप को उनकी बाहों में, आप निश्चित रूप से बहुत नुकसान उठाएंगे और खुद को पाएंगे
क्षणभंगुर जीवन के बाद अनंत काल तक मृत्युदंड का अंधकार। यह भी लाएगा
अपनी आध्यात्मिक मृत्यु के बारे में। लेकिन अगर आप विश्वास के सबक सुनते हैं
कुरान को अपने दिल के कान से पढ़ो और होश में आओ, उसकी ओर मुड़ो
एकता से, आप आराधना के माध्यम से पूर्णता के शिखर तक पहुँच सकेंगे
और परमेश्वर की सेवा करो, और अनन्त अस्तित्व प्राप्त करो।

ऐ रूह! चूँकि यही हक़ीकत है और चूँकि तू इब्राहीम की नस्ल से है
राष्ट्र, कहो, जैसे उसने कहा: “मैं उन लोगों से प्यार नहीं करता जो बैठते हैं।” अपना चेहरा उस ओर मोड़ो
उस शाश्वत प्रियतम को स्मरण करो और रोते हुए कहो:

(यहां शामिल की जाने वाली आयतें दूसरे अध्याय में शामिल की गई हैं)
सत्रहवें शब्द का स्टेशन, और यहां दोहराया नहीं गया है।)

पच्चीसवाँ शब्द

पच्चीसवाँ शब्द

कुरान की चमत्कारिकता पर ग्रंथ

जबकि कुरान जैसा एक स्थायी चमत्कार मौजूद है,
मेरा मन अब और सबूत ढूँढने को अनावश्यक मानता है।
जबकि कुरान जैसा सत्य का प्रमाण मौजूद है,
क्या इनकार करने वालों को चुप कराना मेरे दिल के लिए भारी होगा?

नोट: इस ग्रंथ में चर्चित अधिकांश श्लोक वे हैं जो

या तो विधर्मियों द्वारा आलोचना की गई है या विज्ञान के कुछ लोगों द्वारा सवाल उठाए गए हैं या शैतानी लोगों द्वारा संदेह का विषय बनाया गया है और

जिन्न। उनकी सच्चाईयाँ यहाँ इस तरह से समझाई गई हैं कि

जिन बिंदुओं को आलोचना और संदेह का विषय बनाया गया है, वे हैं

वास्तव में, चमत्कार की किरणें और शक्ति के स्रोत सिद्ध हुए।

कुरान की वाक्पटुता.

हालाँकि, चूँकि यह ग्रंथ शीघ्रता से और समयबद्ध तरीके से रचा गया था

मुश्किल हालात में अभिव्यक्ति में कुछ खामियां हो सकती हैं

विचारों की। हालाँकि, यह कई मुद्दों को समझाता है जिनका वैज्ञानिक महत्व बहुत है, और इसलिए यह अपने वर्तमान स्वरूप में भी उपयोगी हो सकता है।

— सईद नूरसी

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कह दो, "यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर ऐसा कुछ उत्पन्न करें जो तुम्हारे समान हो।

इस कुरान के समान वे कभी भी कुछ नहीं लिखेंगे, भले ही वे

एक दूसरे का समर्थन किया। (17:88)

(कुरान की चमत्कारिकता के अनगिनत पहलुओं में से, जो एक है

चमत्कारों का भण्डार और पैगम्बर मुहम्मद का सबसे बड़ा चमत्कार,

उस पर शांति और आशीर्वाद हो, मैंने अब तक लगभग चालीस का उल्लेख किया है

मेरे अरबी ग्रंथ, इशारतुल-इजाज़ (चमत्कार के संकेत, एक) में

कुरान पर प्रारंभिक टिप्पणी) और पिछले 24 शब्दों में। मैं यहाँ केवल पाँच की व्याख्या करूँगा, जो कुरान की प्रारंभिक परिभाषा के बाद संक्षेप में अन्य का उल्लेख करते हैं।)

परिचय

परिचय तीन भागों से मिलकर बना है।

पहला भाग: प्रश्न: कुरान क्या है? इसे कैसे परिभाषित किया जा सकता है?

उत्तर: जैसा कि उन्नीसवीं आयत में बताया गया है और अन्यत्र तर्क दिया गया है, कुरान ब्रह्मांड की महान पुस्तक का शाश्वत अनुवाद है और ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के दिव्य नियमों को सुनाने वाली इसकी विविध भाषाओं का शाश्वत अनुवादक है; दृश्यमान, भौतिक दुनिया और अदृश्य दुनिया की पुस्तकों का व्याख्याकार; धरती और आकाश में छिपे ईश्वरीय नामों के अमूर्त खजानों का प्रकटकर्ता; घटनाओं के पीछे छिपे सत्य की कुंजी; दृश्यमान, भौतिक दुनिया में अदृश्य दुनिया की भाषा; इस दृश्यमान दुनिया के पर्दे के पार अदृश्य दुनिया से आने वाले दयालु अल्लाह के उपकारों और महिमावान अल्लाह के शाश्वत संबोधनों का खजाना; इस्लाम के आध्यात्मिक और बौद्धिक दुनिया का सूर्य, साथ ही इसकी नींव और योजना; परलोक की दुनियाओं का पवित्र मानचित्र; ईश्वरीय तत्व, गुणों, नामों और आवश्यक गुणों का व्याख्याता, स्पष्ट व्याख्याकार, स्पष्ट प्रमाण और स्पष्ट अनुवादक; मानवता की दुनिया का शिक्षक और प्रशिक्षक और इस्लाम का पानी और प्रकाश, जो सच्ची और महान मानवता है; और मानवता का सच्चा मार्गदर्शक जो उन्हें खुशी की ओर ले जाता है।

मानवता के लिए, यह कानून की पुस्तक है, और प्रार्थना की पुस्तक है, और ज्ञान की पुस्तक है, और ईश्वर की आराधना और सेवा की पुस्तक है, और ईश्वर को आदेश और आह्वान की पुस्तक है, और आह्वान की पुस्तक है, और विचार और चिंतन की पुस्तक है। यह एक व्यापक, पवित्र पुस्तक है जिसमें मानवता की सभी आध्यात्मिक-आवश्यकताओं के लिए पुस्तकें हैं; एक स्वर्गीय पुस्तक जो, एक पवित्र पुस्तकालय की तरह, कई पुस्तिकाएँ प्रदान करती है, जिनसे सभी संतों, अत्यंत सत्यनिष्ठ लोगों, सभी विवेकशील और सत्यापन करने वाले विद्वानों और ईश्वर के ज्ञान में पारंगत लोगों ने अपने-अपने विशिष्ट मार्ग निकाले हैं, और जो प्रत्येक मार्ग को प्रकाशित करते हैं और अपने अनुयायियों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

दूसरा भाग: परिभाषा को पूरा करने के लिए: ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से आने के कारण, उनके महानतम नाम से उत्पन्न होने के कारण, और प्रत्येक नाम के सबसे व्यापक पद से जारी होने के कारण, और जैसा कि बारहवें शब्द में समझाया गया है, कुरान ईश्वर का वचन है क्योंकि ईश्वर संसार का स्वामी है, और उसका आदेश है क्योंकि उसे सभी प्राणियों का देवता होने की उपाधि प्राप्त है। यह

आकाश और पृथ्वी के निर्माता के नाम पर एक प्रवचन है;
उनके पूर्ण प्रभुत्व के संबंध में भाषण और वार्तालाप; सर्व-महिमावान की सार्वभौमिक संप्रभुता की ओर से एक शाश्वत उपदेश। यह भी एक है
सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपाओं का रजिस्टर, उनकी सर्वव्यापी दया के दृष्टिकोण से; संदेशों या संचारों का एक संग्रह जो कभी-कभी ईश्वर की उदात्त महिमा के संबंध में सिफर से शुरू होता है; और

ज्ञान से भरपूर पवित्र शास्त्र, जो ईश्वर से अवतरित हुआ है
महानतम नाम का सर्वव्यापक क्षेत्र, चक्र पर नज़र रखता है और सर्वेक्षण करता है
अपने सर्वोच्च सिंहासन से घिरा हुआ।

यही कारण है कि "परमेश्वर का वचन" शीर्षक हमेशा से रहा है और हमेशा रहेगा
कुरान के बाद पवित्रशास्त्र और पन्ने आते हैं।
अन्य पैगम्बरों को भेजे गए ग्रन्थ। अन्य अनगिनत ईश्वरीय वचनों में से कुछ
ईश्वरीय दया, संप्रभुता और प्रभुत्व के एक विशेष पहलू की विशेष अभिव्यक्तियों के रूप में आने वाली प्रेरणाओं के रूप में वार्तालाप हैं
किसी विशेष शीर्षक के अंतर्गत और किसी विशेष सम्मान के साथ। स्वर्गदूतों, मनुष्यों और जानवरों को मिलने वाली प्रेरणाएँ उनके संबंध में बहुत भिन्न होती हैं
सार्वभौमिकता या विशिष्टता.

तीसरा भाग: कुरान में संक्षेप में सभी धर्मग्रंथों का वर्णन है।
पिछले भविष्यद्वक्ताओं, और सभी संतों और शुद्ध, समझदार लोगों के कार्यों
विभिन्न विचारधाराओं और ईश्वर तक पहुंचने के मार्गों का अनुसरण करने वाले विद्वान। इसके छह पक्ष हैं
उज्ज्वल हैं और संदेह और मनमौजी विचार से बिल्कुल मुक्त हैं। इसका बिंदु
इसका आधार निश्चित रूप से ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और ईश्वरीय शाश्वत वाणी है; इसका
इसका उद्देश्य स्वयंसिद्ध शाश्वत सुख है; इसका अन्दर स्पष्टतः शुद्ध मार्गदर्शन है; यह
ऊपर से विश्वास की रोशनी से घिरा हुआ और समर्थित होना आवश्यक है,
नीचे से निर्विवाद रूप से प्रमाण और साक्ष्य द्वारा, दाईं ओर से स्पष्ट रूप से
हृदय की आज्ञाकारिता और विवेक, तथा बाईं ओर से तर्क और अन्य बौद्धिक क्षमताओं का प्रवेश। इसका फल निश्चित रूप से सबसे बड़ा है
दयालु की दया और स्वर्ग। इसे स्वीकार किया गया है और बढ़ावा दिया गया है
सदियों से स्वर्गदूतों और असंख्य लोगों और जिन्नों का अस्तित्व रहा है।

ऊपर बताए गए सभी गुण या तो सिद्ध हो चुके हैं
अन्य स्थानों पर या निर्णायक के आधार पर अगले पृष्ठों में साबित किया जाएगा
प्रमाण.

पहली बार प्रकाश

इस प्रकाश की तीन किरणें हैं।

प्रथम रे: यह कुरान की चमत्कारी वाक्पटुता है, जो इसके शब्दों की सुन्दरता, क्रम और रचना में निहित है; इसकी पाठ्य सुन्दरता और

पूर्णता; इसकी शैलीगत मौलिकता और अद्वितीयता; इसकी व्याख्याओं की श्रेष्ठता, उत्कृष्टता और स्पष्टता; इसके अर्थों की शक्ति और सत्य; और इसकी भाषाई शुद्धता और प्रवाह। इसकी वाक्पटुता इतनी असाधारण है कि मानव जाति के सबसे प्रतिभाशाली साहित्यकारों, उनके सबसे प्रसिद्ध वक्ताओं और उनमें से सबसे प्रखर विद्वानों के लिए इसकी शाश्वत चुनौती, कि वे इसके जैसा कुछ लिखें, भले ही केवल एक अध्याय ही क्यों न हो, अभी तक इसका उत्तर नहीं दिया जा सका है। इसके बजाय, वे

वे प्रतिभाशाली लोग जो अपने आत्म-गौरव और आत्मविश्वास में खुद को श्रेष्ठ मानते हैं
स्वर्ग को छूने वाले महान लोगों को भी इसके सामने विनम्र होना पड़ा है।

अब मैं इसकी चमत्कारी वाक्पटुता को दो तरीकों से इंगित करूँगा: पहला तरीका: उस

समय अरब के लोग अधिकतर अशिक्षित थे,

और इसलिए उन्होंने अपने आदिवासी गौरव, इतिहास और कहावतों को मौखिक कविता में संरक्षित किया। वे वाक्पटुता को बहुत महत्व देते थे, और इसलिए कोई भी सार्थक,
अद्वितीय अभिव्यक्ति को उसके काव्यात्मक रूप और वाक्पटुता के लिए याद किया गया था और
फिर इसे भावी पीढ़ी को सौंप दिया गया। वाक्पटुता और प्रवाह इसलिए लोकप्रिय थे
इतनी बड़ी मांग थी कि एक जनजाति अपने वाक्पटु साहित्यकारों को राष्ट्रीय नायक मानती थी। वे बुद्धिमान लोग, जो इस्लाम के आगमन के बाद दुनिया के एक बड़े हिस्से पर शासन करेंगे, अन्य लोगों की तुलना में अधिक वाक्पटु थे।
वाक्पटुता का इतना सम्मान किया जाता था कि कभी-कभी दो जनजातियाँ आपस में मिल जाती थीं।
किसी साहित्यिक हस्ती की कही गई बात पर युद्ध करना और फिर उसके शब्दों से समझौता कर लेना
एक और। उन्होंने सात कवियों की कविताओं को सोने में भी अंकित किया और उन्हें लटका दिया
काबा की दीवार पर अंकित सात निलंबित कविताएँ कहलाती थीं।

ऐसे समय में जब वाक्पटुता की इतनी मांग थी, चमत्कारी व्याख्या वाली कुरान का अवतरण हुआ। ठीक वैसे ही जैसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मूसा को दिया था
और यीशु ने अपने समय के लिए सबसे उपयुक्त चमत्कार किए -
मूसा को लाठी और चमकीला हाथ, तथा मृतकों को जीवित करने और चंगा करने वाले
यीशु को कुछ बीमारियाँ हुईं—उन्होंने वाकपटुता को जीवन का सबसे उल्लेखनीय पहलू बनाया
कुरान, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति हो) का मुख्य चमत्कार
और आशीर्वाद। जब यह प्रकट हुआ, तो इसने सबसे पहले साहित्यिक हस्तियों को चुनौती दी
अरब प्रायद्वीप के बारे में: यदि तुम्हें उस बात पर संदेह है जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, तो उसके जैसा एक सूरा ले आओ (2:23)। इसने उनके बौद्धिक दावों को परास्त कर दिया
और उन्हें यह कहकर नम्र किया: यदि आप नहीं कर सकते, और आप निश्चित रूप से नहीं कर सकते,
उस आग से डरो जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है (2:24)।

वे अहंकारी लोग कुरान पर विवाद नहीं कर सकते थे।
यह उनके संदेश को बाधित करने और गलत साबित करने का एक आसान और सुरक्षित तरीका था, उन्होंने इसे चुना
तलवारों से लड़ना, जो कि सबसे खतरनाक और कठिन रास्ता है। अगर कूटनीति में कुशल वे बुद्धिमान लोग कुरान पर विवाद कर सकते, तो वे
खतरनाक, कठिन रास्ता नहीं चुना होता और अपनी जान गंवाने का जोखिम नहीं उठाया होता

संपत्ति और जीवन। चूंकि वे मौखिक रूप से इसके साथ बहस नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्हें तलवारों से लड़ो.

ऐसा कुछ बनाने की कोशिश करने के पीछे दो शक्तिशाली कारण थे कुरान: इसके शत्रु इसके दावे का खंडन करने के लिए दृढ़तापूर्वक इस पर विवाद करना चाहते थे। रहस्योद्घाटन और उसके मित्रों ने इसका अनुकरण करने की इच्छा जताई। इसका परिणाम यह हुआ कि अरबी में अनगिनत किताबें लिखी गईं और बनती रहीं। सभी लोग, चाहे वे विद्वान हों या नहीं, जो ऐसी किताबें पढ़ते हैं, उन्हें यह स्वीकार करना पड़ता है कि वे अरबी से मिलती-जुलती नहीं हैं। कुरान। तो, या तो कुरान निम्न है - दोस्त और दुश्मन स्वीकार करते हैं कि यह निम्न है अकल्पनीय - या उन सभी से बेहतर। कोई अन्य विकल्प नहीं है।

प्रश्न: हमें कैसे पता कि लोगों ने कभी विवाद करने का साहस नहीं किया? क्या यह सच है, और क्या उनका सहयोगात्मक प्रयास विफल हो गया?

उत्तर: यदि विवाद संभव होता तो कुछ विवादकर्ता क्योंकि यह सम्मान का प्रश्न था, जीवन-मरण का मामला था। चूँकि बहुत से लोगों ने सत्य का विरोध किया है, इसलिए ऐसा प्रयास सफल नहीं होता। बहुत से समर्थक मिले और बहुत प्रसिद्ध हुए। जब कोई छोटा सा व्यक्ति भी संघर्ष बड़ी जिज्ञासा जगाता है, ऐसा ऐतिहासिक, असामान्य मुकाबला नहीं हो सकता गुप्त रखा गया है। हालांकि सबसे महत्वहीन और घृणित इस्लाम से संबंधित आपत्तियां व्यापक रूप से प्रसारित की गई हैं, इसके अलावा कुछ भी नहीं मुसय्यलमा द लायर की कुछ आयतें ही वर्णित की गई हैं ।138 उनकी वक्तृत्व कला, उनके शब्दों का ऐतिहासिक रिकॉर्ड उन्हें पूर्णतः सत्य के रूप में दर्शाता है कुरान की असीम सुन्दर अभिव्यक्तियों के साथ तुलना करने पर यह बेतुकी बातें लगती हैं। इस प्रकार कुरान की चमत्कारी वाक्पटुता निर्विवाद है।

दूसरा तरीका: अब हम पाँच बिंदुओं में समझाएँगे कि भगवान शिव का आशीर्वाद किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। कुरान की चमत्कारिक वाक्पटुता.

पहला बिन्दु: इसमें असाधारण वाक्पटुता और शैलीगत शुद्धता है। कुरान का शब्द क्रम या रचना। यह मेरे इशारतुल-इजाज में समझाया गया है। जैसे घड़ी की सेकंड, मिनट और घंटे की सुइयां पूरी होती हैं और सटीक क्रम में एक दूसरे के साथ फिट बैठते हैं, इसलिए हर शब्द और वाक्य - वास्तव में संपूर्ण कुरान - एक दूसरे को पूरा और फिट बैठता है।

यह असाधारण वाक्पटुता सभी को देखने को मिलती है। निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

सूरतुल-अंबिया से :

यदि तेरे रब की यातना की एक साँस भी उन्हें छू जाए (21:46)

---

138 झूठा मुसैलिमा ने दावा किया कि उसे सत्ता में पैगम्बर के साथ साझीदार बनाया गया है और कुछ “सूरा” की रचना की। हालाँकि, उनका उपहास किया गया। (ट्र.)

ईश्वर के दंड की गंभीरता को इंगित करने के लिए, उपरोक्त वाक्य इस प्रकार है: इसकी कम से कम मात्रा या सबसे छोटे तत्व तक। चूंकि पूरा खंड इस तुच्छता को व्यक्त करता है, इसलिए इसके सभी भागों को उस अर्थ को पुष्ट करना चाहिए।

शब्द अगर लेकिन (ला-इन) अनिश्चितता को दर्शाते हैं और इसलिए हल्कापन (दंड का) दर्शाते हैं। क्रिया मास्सा का अर्थ है थोड़ा छूना, जो हल्कापन भी दर्शाता है। नफ़हतुन (एक साँस) केवल हवा का झोंका है। व्याकरण की दृष्टि से, यह
यह शब्द का व्युत्पन्न रूप है जिसका उपयोग अकेलेपन को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, जो फिर से मामूलीपन को दर्शाता है। नफ़हतुन के अंत में दोहरा एन (तनविन) इंगित करता है
अनिश्चितता और यह बताता है कि यह मामूली और महत्वहीन है।
मिन का तात्पर्य भाग या टुकड़ा है, इस प्रकार यह कमी को दर्शाता है। नकल (अनुकरणीय) की तुलना में 'अदब (यातना या दंड) शब्द का अर्थ हल्का है
सज़ा) और 'इकाब (भारी दंड), और एक हल्की सजा को दर्शाता है
या पीड़ा। रब्ब (प्रभु, प्रदाता, संधारक) का उपयोग , स्नेह का सुझाव देता है,
(उदाहरण के लिए) सर्व-भारी, सर्व-सम्मोहक, या सदैव-सक्षम के बजाय
'प्रतिदान' भी तुच्छता को व्यक्त करता है।

अंत में, इस खंड का अर्थ है कि यदि इतनी हल्की पीड़ा या दंड की सांस भी इतना प्रभाव डालती है, तो व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि ईश्वरीय दंड कितना गंभीर हो सकता है। हम इस छोटे खंड में देखते हैं कि इसके भाग किस प्रकार से संबंधित हैं
एक दूसरे से जुड़ते हैं और अर्थ को बढ़ाते हैं। यह उदाहरण cho-sen शब्दों और उन्हें चुनने के उद्देश्य से संबंधित है।

सूरतुल-बक़रा से :

हमने जो कुछ उन्हें प्रदान किया है, उसमें से वे जीविका देते हैं। (2:3)

उपरोक्त वाक्य के कुछ भाग पाँच स्थितियों की ओर संकेत करते हैं जो दान-दक्षिणा परमेश्वर को स्वीकार्य है।

पहली शर्त: दान देते समय, विश्वासियों को इतना अधिक नहीं देना चाहिए वे भीख मांगने को मजबूर हो गए हैं ।

दूसरी शर्त: उन्हें अपने पास जो है उसमें से देना चाहिए, दूसरों से नहीं। दूसरों के पास क्या है। हमने उनके लिए जो प्रदान किया है, वह इस बात की ओर इशारा करता है। इसका अर्थ है "हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है, उसमें से दे दो।"

तीसरी शर्त: उन्हें प्राप्तकर्ता को अपनी दयालुता की याद नहीं दिलानी चाहिए। हम इसका संकेत करते हैं, क्योंकि इसका अर्थ है: "मैंने तुम्हें वह चीज़ प्रदान की है जो जिसे आप जरूरतमंदों को जीविका के रूप में देते हैं। जैसा कि आप उसमें से कुछ दे रहे हैं जो मेरा है, उसे पाने वाले पर तुम कोई दायित्व नहीं डाल सकते।"

चौथी शर्त: उन्हें उन लोगों को देना चाहिए जो इसे केवल अपने लिए खर्च करेंगे। वे अपनी आजीविका के लिए कुछ देते हैं, अवैध तरीकों से नहीं। वे जीविका के रूप में कुछ देते हैं, जो इस बात की ओर इशारा करता है।

पांचवी शर्त: उन्हें अल्लाह के लिए यह देना होगा। हमने इसके लिए प्रावधान कर दिया है। उनमें यह कहा गया है। इसका अर्थ है: तुम मेरी संपत्ति में से दे रहे हो, इसलिए तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए मेरे नाम पर दे दो.

उन शर्तों के साथ, शब्द क्या यह दर्शाता है कि जो कुछ भी ईश्वर हमें जीविका या आजीविका का एक हिस्सा प्रदान करता है। इसलिए विश्वासियों को अवश्य ही जो कुछ भी उनके पास है, उसे दे दें। उदाहरण के लिए, एक अच्छा शब्द, थोड़ी मदद, सलाह और शिक्षा सभी रिज़्क (जीविका या भोजन) के अर्थ में शामिल हैं प्रावधान) और सदका (दान)। क्या (मा) का एक सामान्य अर्थ है और यह नहीं है यहाँ सीमित है। इस प्रकार इसमें वह सब कुछ शामिल है जो ईश्वर ने दिया है।

इस छोटे से वाक्य में व्यापक अर्थ निहित है और यह अर्थ सुझाता है दान देता है और इसे हमारी समझ के लिए पेश करता है। कुरान के वाक्यों के शब्द क्रम में कई समान पहलू हैं, और शब्दों का एक दूसरे के साथ कई तरह का संबंध है। यही बात शब्दों के बीच संबंधों के लिए भी सच है।
वाक्य, जैसा कि देखा गया:

सूरतुल-इखलास, जो इस प्रकार है:

> कह दो, "वह अल्लाह है, वह अद्वितीय है। अल्लाह ही सर्वज्ञ है।"
> वह न तो जन्मा है, न ही उसका जन्म हुआ है। और
> उसके तुल्य कोई नहीं (112:1-5)

इस लघु सूरा में छह वाक्य हैं, तीन सकारात्मक और तीन नकारात्मक, जो ईश्वरीय एकता के छह पहलुओं को सिद्ध और स्थापित करते हैं और अस्वीकार और नकारते हैं भगवान के साथ छह तरह के सहयोगी। प्रत्येक वाक्य के दो अर्थ होते हैं: एक पूर्वोक्त (कारण या प्रमाण के रूप में कार्य करना) और दूसरा पश्चोक्त
(प्रभाव या परिणाम के रूप में कार्य करना)। इसका मतलब है कि सूरा में छत्तीस सूरा हैं, जिनमें से प्रत्येक छह वाक्यों से बना है। एक या तो आधार है या एक
प्रस्ताव, और अन्य इसके पक्ष में तर्क हैं। उदाहरण के लिए:

> कह दो, "वह अल्लाह है, क्योंकि वह अद्वितीय है, क्योंकि वह
> वह सनातन प्रार्थनीय है, क्योंकि वह जन्म नहीं देता, क्योंकि
> वह जन्मा नहीं, क्योंकि उसके तुल्य कोई नहीं।

भी:

> कह दो कि उसके जैसा कोई नहीं, क्योंकि वह पैदा नहीं हुआ, क्योंकि वह सदा मांगा जानेवाला है।
>
> एक, क्योंकि वह अद्वितीय है एक, क्योंकि वह—(वह) ईश्वर है।

भी:

> वह—(वह) ईश्वर है, इसलिए वह अद्वितीय है, इसलिए वह है
> वह नित्य प्रार्थित है, इसलिए वह जन्म नहीं देता, इसलिए
> वह जन्मा नहीं, इसलिए उसके तुल्य कोई नहीं।

सूरतुल-बक़रा से :

अलिफ़ लाम मीम - यही वह किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं - यह ईश्वर पर श्रद्धा रखने वाले, धर्मपरायण लोगों के लिए मार्गदर्शन है। (2:1-2)

चारों वाक्यों के दो अर्थ हैं। एक अर्थ प्रमाण है
दूसरों के लिए, और दूसरे के लिए, उनका परिणाम। उनके बीच संबंधों के सोलह धागों से चमत्कार की एक मिश्रित रचना बुनी गई है।
इस डिज़ाइन का प्रदर्शन मेरे इशारतुल-एजाज़ में किया गया था। जैसा कि द इशारतुल-एजाज़ में बताया गया है ।
तेरहवाँ वचन, ऐसा लगता है मानो कुरान की प्रत्येक आयत में एक आँख है जो सबसे अधिक देखती है
आयतों का एक भाग और एक चेहरा जो उनकी ओर देखता है। इसे देखते हुए, यह आगे बढ़ता है
रिश्तों के अमूर्त धागों को जोड़कर चमत्कारी डिजाइन बुनते हैं। रचना की खूबसूरती को इशारतुल-एजाज में विस्तार से बताया गया है।

दूसरा बिंदु: कुरान के अर्थों में अद्भुत वाक्पटुता है। निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

कई सूरों से:

आकाश और धरती में जो कुछ है वह सब परमेश्वर की महिमा करता है, और वह परमेश्वर है।
सर्व-महिमावान, सर्वशक्तिमान, अत्यन्त बुद्धिमान (57:1, 59:1, 61:1)।

अर्थों में वाक्पटुता का आनंद अनुभव करने के लिए, कल्पना कीजिए कि आप
इस्लाम से पहले के अरब के रेगिस्तान में रह रहे हैं। ऐसे समय में जब सब कुछ
अज्ञानता और असावधानी के अंधकार से आच्छादित और
"बेजान" प्रकृति की बुराई के बारे में, आप कुरान की स्वर्गीय भाषा से सुनते हैं: वह सब
आकाश और पृथ्वी में परमेश्वर की महिमा है या सात आकाश और पृथ्वी
और जो उनमें हैं वे उसकी महिमा करते हैं (17:44), या इसी तरह की आयतें।

आप देखेंगे कि कैसे लोगों के मन में वे गतिहीन लाश जैसी सत्ताएं हैं
महिमामंडन की ध्वनि पर एक उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व प्राप्त करें , और इस प्रकार ऊंचा उठें,
भगवान के नामों का जाप करें। महिमा की पुकार और प्रकाश पर , तारे, जो तब तक अंधेरे आकाश में आग के बेजान पिंड थे, उनकी समझ में आकाश के जाप में ज्ञान-प्रकटीकरण शब्दों और सत्य-दिखाने वाली रोशनी के रूप में प्रकट होते हैं, भूमि और
समुद्र को स्तुति की भाषाओं के रूप में, तथा प्रत्येक पौधे और पशु को महिमा के शब्द के रूप में प्रस्तुत करें।

सूरतुर-रहमान से :

ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! अगर तुम अंदर घुसने में सक्षम हो और
आकाश और पृथ्वी के दायरे से आगे निकल जाना, फिर प्रवेश करना
और (उनके) पार निकल जाओगे। तुम प्रवेश नहीं कर पाओगे और (उनके) पार निकल नहीं पाओगे
उन्हें अधिकार के साथ बचाओ। फिर आपके आशीर्वादों में से कौन सा
हे प्रभु, क्या तू इनकार करता है? तुझ पर आग की एक चमक उतारी जाएगी, और
धूम्रपान करो, और तुम्हें कोई मदद नहीं मिलेगी। फिर आशीर्वादों में से कौन सा
क्या तुम अपने रब को झुठलाते हो? (55:33-36)

> निस्संदेह हमने सबसे निचले आकाश को भी दीपों से सजाया है, और
> हमने उन्हें शैतानों को भगाने के लिए मिसाइल बना लिया है। (67:5)

इन आयतों को सुनिए, जिनकी चर्चा पंद्रहवें वचन में की गई है, और उनके अर्थ पर ध्यान दें। वे कहते हैं:

> ऐ इंसानों और जिन्नों! तुम अपनी निर्बलता और दुर्बलता के बावजूद अहंकारी और अड़ियल हो, तुम अपनी दुर्बलता और दरिद्रता के बावजूद विद्रोही और अड़ियल हो! यदि तुम मेरा आदेश नहीं मानोगे तो मेरे पास से चले जाओ।
> अगर तुम मेरे राज्य की सीमाओं से परे जा सकोगे। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई
> उस राजा की अवज्ञा करना जिसके आदेशों का पालन तारे, चंद्रमा और अन्य देवता करते हैं।
> सूर्य मानो प्रशिक्षित सैनिक हों जो अपने कमांडर के आदेशों का पालन करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। तुम एक राजसी शासक के खिलाफ विद्रोह करते हो जिसने
> इतने शक्तिशाली और आज्ञाकारी सैनिक कि, मान लीजिए आपके शैतान थे
> विरोध करने के लिए, वे उन्हें पहाड़ जैसी तोप के गोले से पत्थर मार सकते थे। आपकी कृतघ्नता
> आपको राज्य में विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती है
> वह इतना महान सम्राट है कि उसकी सेनाओं में वे लोग भी हैं जो
> आप पर पहाड़ के आकार के या यहां तक कि पृथ्वी के आकार के तारे बरसाएं या
> यदि आप उस आकार के अविश्वासी हैं, तो वे ज्वलंत मिसाइलों से हमला करेंगे और आपको परास्त कर देंगे।
> इसके अलावा, आप उस कानून का उल्लंघन करते हैं जिससे ऐसे प्राणी बंधे हैं
> यदि आवश्यक हो तो वे आपके चेहरे पर धरती फेंक सकते हैं और बारिश कर सकते हैं
> ईश्वर की अनुमति से तारे आप पर मिसाइलों की तरह गिर रहे हैं।

आप बल और वाक्पटुता की तुलना दूसरे शब्दों में कर सकते हैं। इनके साथ उनकी छंद और उनकी उन्नत शैली।

तीसरा बिन्दु: कुरान की अपनी अनूठी, मौलिक शैलियाँ हैं जो नवीन हैं। और कायल करने वाला। इसकी शैलियाँ, जो हमेशा से संरक्षित रही हैं और अभी भी संरक्षित हैं उनकी मौलिकता, ताज़गी और "युवावस्था का उत्कर्ष" नकल नहीं कर सकता और न ही कर सकता है नकल की जा सकती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

मुक़त्तत :

सिफर जैसा मुक़त्तात, अलग-अलग, व्यक्तिगत अक्षर (जैसे, अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-रा, ता-हा, या-सीन, हा-मीम, और 'ऐन-सीन-काफ़, के साथ)
कुछ सूरों में चमत्कार की पाँच या छह झलकियाँ मिलती हैं।
उदाहरण के लिए, वे प्रसिद्ध श्रेणियों की प्रत्येक श्रेणी का आधा हिस्सा बनाते हैं
अक्षर—जोरदार, फुसफुसाए हुए, बलाघात वाले, मुलायम, लेबियो-लिंगुअल और कल्कला (बा, जिम, दल, ता, कफ)। आधे से ज़्यादा "हल्के" अक्षरों से और आधे से कम "हल्के" अक्षरों से लिया गया है ।
कुरान के "भारी" अक्षरों में से आधे से अधिक अक्षर, जिनमें से कोई भी विभाज्य नहीं है,
हर श्रेणी को आधा कर दिया गया है।

यद्यपि सभी श्रेणियों को आधा करना संभव है, एक दूसरे के भीतर विद्यमान, दो सौ संभावित तरीकों में से एक में, प्रत्येक से आधा लेकर

श्रेणी मानव मस्तिष्क का काम नहीं हो सकती। संयोग इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। कुछ निश्चित शब्दों की शुरुआत में इन अलग-अलग अक्षरों के साथ
दिव्य अंक के रूप में सुरा जो चमत्कार की पांच या छह झलकियां प्रदर्शित करते हैं
इस प्रकार अक्षर-रहस्यों में पारंगत विद्वान्, साथ ही सटीक,
संत विद्वानों ने कई रहस्यमय निष्कर्ष निकाले हैं और ऐसी खोज की है
सच्चाई यह है कि वे इन पत्रों को एक सबसे शानदार चमत्कार मानते हैं। चूँकि मैं
मैं उनके रहस्यों को स्पष्ट रूप से खोजने और प्रदर्शित करने में असमर्थ हूँ, मैं पाठकों को केवल इशारतुल-एजाज़ में बताई गई उनकी चमत्कारिकता की पाँच या छह झलकियाँ बताता हूँ।

अब मैं संक्षेप में कुरान की सूराओं, उद्देश्यों और रीतियों में अपनाई गई शैलियों पर चर्चा करूंगा ।
छंद, वाक्य और वाक्यांश, और शब्द।

सूरतु'न-नबा' पर विचार करें :

सूरतु'न-नबा' अंतिम दिन और पुनरुत्थान का वर्णन करता है, साथ ही साथ
स्वर्ग और नर्क, इतनी मौलिक और अनूठी शैली में कि यह दर्शकों को आश्वस्त कर देता है।
इस संसार में प्रत्येक दिव्य कार्य और दिव्य प्रभुता का कार्य हृदय से
परलोक के आगमन और उसके सभी पहलुओं को प्रमाणित करता है। स्थान के हित में, मैं
केवल कुछ बिंदुओं का उल्लेख करें।

सूरा के आरंभ में , यह इस अर्थ से प्रलय के दिन को सिद्ध करता है:

> मैंने पृथ्वी को तुम्हारे लिए एक सुंदर पालना बनाया है, और
> आपके घरों की पहाड़ियाँ और खजानों से भरी ज़िन्दगी। मेरे पास है
> तुम्हें जोड़े में बनाया है, एक दूसरे से प्रेम करते हुए और एक दूसरे से परिचित होते हुए; मैंने तुम्हें जोड़ा है
> रात तुम्हारे विश्राम के लिए एक चादर है, दिन वह अखाड़ा है जिसमें
> अपनी जीविका कमाओ, और सूर्य को प्रकाश देने वाला और ऊष्मा देने वाला दीपक बनाओ,
> और बादलों से मैं जल बरसाता हूँ मानो वे जीवन का जल उत्पन्न करने वाले झरने हों। मैं एक से
> आसानी से और थोड़े समय में सृजन करता हूँ,
> वही पानी सभी फूल और फल देने वाली चीजें जो सब कुछ देती हैं
> तुम्हारा जीविका। चूँकि यह ऐसा है, इसलिए अंतिम दिन, जो कि
> अंतिम निर्णय तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। हमारे लिए उसे लाना मुश्किल नहीं है
> दिन. (78:6-17—ठीक से अनुवादित नहीं बल्कि व्याख्या की गई [ट्र.])

इसी धारा का अनुसरण करते हुए, सूरा स्पष्ट रूप से यह सिद्ध करता है कि
अन्तिम दिन पहाड़ हिल जायेंगे और मृगतृष्णा के समान हो जायेंगे, आकाश फट जायेगा, जहन्नम तैयार कर दिया जायेगा और जन्नत वालों को बाग़ दिये जायेंगे
और बाग-बगीचे। इसका मतलब है: "चूँकि वह ये सारी चीज़ें तुम्हारी आँखों के सामने करता है
धरती और पहाड़ों को, वह परलोक में उनके जैसा ही करेगा।" अन्य में
शब्दों में, सूरा की शुरुआत में वर्णित पहाड़ों का आख़िरत के पहाड़ों के साथ कुछ संबंध है, और बाग़ों का आख़िरत के पहाड़ों के साथ।
इसके बाद सूरा के अंत में इसका उल्लेख किया गया है । अन्य बातों का अध्ययन करें
उसी दृष्टिकोण से बिंदुओं को देखें, और देखें कि इसकी शैली वास्तव में कितनी उन्नत है।

सूरा अल-ए-इमरान से :

कह दो, ऐ अल्लाह! सारे साम्राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे साम्राज्य प्रदान कर दे।
तू जिससे चाहे प्रभुता छीन ले और जिससे चाहे उसे ऊंचा कर दे
तू जिसे चाहे अपमानित कर सकता है और जिसे चाहे अपमानित कर सकता है। तेरे हाथ में सब भलाई है।
यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ादिर है, तू ही रात गुज़ारता है
दिन में और तू दिन को रात में बदलता है; तू जन्म देता है
तू ही मरे हुओं को जीवितों में से निकालता है, और तू ही मरे हुओं को जीवितों में से निकालता है, और तू ही
जिसे चाहता है, उसे बिना किसी सीमा के भोजन देता है। (3:26-30)

इस संसार में ईश्वरीय कार्य और संचालन, ईश्वरीय अभिव्यक्तियाँ
दिन और रात के परिवर्तन में, ऋतुओं पर प्रभु का नियंत्रण,
जीवन और मृत्यु में प्रभुता के कार्य तथा संसार के परिवर्तन, नवीनीकरण, रूपांतरण और आक्षेप इतने सजीव और उदात्त शैली में व्यक्त किए गए हैं कि
यह ध्यान लगाने वाले के मन को मोहित कर लेता है। चूँकि थोड़ा सा ध्यान लगाना ही काफी है
इस शानदार, उन्नत और व्यापक शैली को देखने के बाद, मैं आगे नहीं जाऊंगा।

सूरतुल-इंशिक़ाक से :

जब आकाश अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए, जैसा कि अपेक्षित है, दो भागों में विभाजित हो जाएगा
और ऐसा हमेशा होता है। और जब धरती समतल हो जाती है, और
जो कुछ उसमें है, उसे बाहर फेंक देता है और खाली हो जाता है, अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करता है, जैसा कि वह है
यह अपेक्षित ही है, और ऐसा सदैव होता भी है। (84:1-5)

ये आयतें अत्यंत उच्च शैली में व्यक्त करती हैं कि किस हद तक स्वर्ग और पृथ्वी सर्वशक्तिमान ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं।
युद्ध को पूरा करने और समाप्त करने के लिए - रणनीति, लड़ाई, सैनिकों की भर्ती, और उन्हें संगठित करना, इत्यादि - एक कमांडर-इन-चीफ दो कार्यालय स्थापित करता है।
लड़ाई खत्म होने के बाद, वह इन कार्यालयों को बदल देता है और उनका उपयोग करता है
अन्य व्यवसाय। कार्यालय अपने कर्मचारियों की भाषा में उनसे अनुरोध करते हैं या अचानक बोलना शुरू करते हैं, वे अपनी भाषा में कहते हैं: "ओ कमांडर, आइए हम पहले पुराने व्यवसाय के टुकड़ों को साफ करें और हटा दें, और फिर अपनी उपस्थिति से हमें सम्मानित करें।" वे ऐसा करते हैं, और फिर कहते हैं

सेनापति: "अब हम आपके आदेश पर हैं। आप जो चाहें करें, क्योंकि
जो कुछ तुम करते हो वह सही, अच्छा और लाभदायक है।”

इसी तरह, स्वर्ग और पृथ्वी को परीक्षण और परीक्षा के दो क्षेत्रों के रूप में बनाया गया था। चेतन प्राणियों के लिए परीक्षण की इस अवधि के अंत के बाद,
आकाश और पृथ्वी उस परीक्षा से संबंधित चीज़ों को बाहर निकाल देंगे
भगवान के आदेश पर। तब वे पुकारेंगे: "हे भगवान, हम आपकी आज्ञा पर हैं,
इसलिए आप जो चाहें, हमें इस्तेमाल करें। हमारा कर्तव्य है कि हम आपकी आज्ञा का पालन करें; आप जो भी करें
सही और सत्य है।” इस समझ के आधार पर, छंदों की उन्नत शैली और अर्थ पर विचार करें।

सूरा हूद से :

हे पृथ्वी, अपना पानी पी जा! हे आकाश, (अपनी वर्षा) बंद कर दे! और
पानी कम हो गया और मामला निपट गया। फिर
(संदूक) अल-जूदी पर आकर रुका, और कहा गया: "दूर हो जाओ
हे अन्यायी लोगों! (11:44)

इस श्लोक की वाक्पटुता के सागर से एक बूँद की ओर संकेत करते हुए, मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करूँगा। एक सादृश्य के दर्पण के माध्यम से अपनी शैली के पहलू को देखने के बाद। विश्व युद्ध में, एक कमांडर एक फायरिंग सेना को आदेश देता है "आग बंद करो!" और दूसरे को, हमला करते हुए, सेना "रुको!" गोलीबारी बंद हो जाती है और हमला रुक जाता है। कमांडर घोषणा करता है: "काम अच्छी तरह से किया गया है। दुश्मन हार गया है, और हमारा झंडा फहराया गया है दुश्मन के मुख्यालय में सबसे ऊंचे टॉवर पर खड़ा किया गया। उन आक्रामक अन्यायी लोग अपनी सज़ा पा चुके हैं और सबसे नीच अवस्था में चले गए हैं।"

इसी प्रकार, अद्वितीय प्रभु ने स्वर्ग और पृथ्वी को आदेश दिया कि नूह के लोगों को नष्ट कर दो। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उसने आदेश दिया: "हे पृथ्वी, अपना पानी निगल लो! हे आकाश, रुक जाओ! तुमने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है। पानी कम हो गया। सन्दूक, जो शाही तम्बू की तरह था, नदी के ऊपर आकर रुक गया। पहाड़। गलत काम करने वालों को उनका अंजाम भुगतना पड़ा।

गौर करें कि यह शैली कितनी शानदार है। आयत कहती है कि दो सैनिकों की तरह, आकाश और धरती ईश्वर की आज्ञाओं पर ध्यान देते हैं और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। इससे पता चलता है कि ब्रह्माण्ड क्रोधित है और आकाश और पृथ्वी मानवता के विद्रोह से क्रोधित हैं। इसके अलावा, यह मानवता को चेतावनी देता है कि उसके खिलाफ़ विद्रोह जो आकाश और पृथ्वी पर हुक्म चलाता है आज्ञापालन अनुचित है और लोगों को विद्रोह नहीं करना चाहिए। यह श्लोक एक विचार व्यक्त करता है बहुत शक्तिशाली संयम। कुछ वाक्यों में, यह एक वैश्विक घटना का वर्णन करता है जैसे जल प्रलय को, उसके सभी सत्यों और परिणामों के साथ, संक्षिप्त, चमत्कारी और सुंदर तरीके से प्रस्तुत करें। इस महासागर की अन्य बूंदों की तुलना इस बूंद से करें।

अब कुरान की खिड़की से स्पष्ट शैली पर विचार करें।
शब्द:

सूरा या सीन से :

और चाँद के लिए हमने महल निर्धारित कर रखे हैं जब तक कि वह लौटकर न आये
एक पुराना मुरझाया हुआ खजूर का डंठल. (36:38)

यह देखने में एक पुराना मुरझाया हुआ खजूर का डंठल जैसा लगता है। यह कितनी बढ़िया शैली प्रदर्शित करता है: एक चंद्रमा के भवनों में से एक प्लीएडेस है। इस कविता में चंद्रमा की तुलना उसके पिछले चौथाई भाग - अर्धचंद्राकार - की तुलना एक पुराने मुरझाए हुए खजूर के डंठल से की गई है। ऐसा आभास होता है कि आकाश के काले पर्दे के पीछे एक पेड़ है, जिसकी एक नुकीली नोक है जिसका चमकता हुआ डंठल घूंघट को फाड़ देता है और प्लीएडेस के समान स्वयं को प्रदर्शित करता है

उस डंठल से लटकता हुआ एक गुच्छा, और अन्य तारे जैसे कि
वह छिपा हुआ पेड़। यदि आपके पास स्वाद है, तो आप सराहना करेंगे कि यह कितना उचित, सुंदर, बढ़िया और महान शैली है, खासकर रेगिस्तान के निवासियों के लिए जिनके सबसे
आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन खजूर है।

सूरा या सीन से एक और उदाहरण , जिसकी चर्चा अंत में की गई थी
उन्नीसवें शब्द का अंश:

और सूर्य अपने निश्चित विश्राम स्थान की ओर दौड़ता है। (36:37)

अभिव्यक्ति अपने पाठ्यक्रम को चलाती है और एक उदात्त शैली पर एक खिड़की खोलती है:
यह हमें दिन और रात तथा ग्रीष्म और शीत ऋतु में ईश्वरीय शक्ति के व्यवस्थित, भव्य, मुक्त कार्यों और क्रियाकलापों की याद दिलाता है।
निर्माता की शक्ति और भव्यता समझ में आती है, ध्यान आकर्षित करती है
मौसम पर अंकित शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले के संदेशों की ओर
यह पुस्तक शक्ति की कलम द्वारा लिखी गयी है, तथा सृष्टिकर्ता की बुद्धि को प्रकट करती है।

कुरान में "उसने सूर्य को दीपक बना दिया" (71:16) का प्रयोग करके कहा गया है:
एक विशेष शैली पर एक खिड़की, इस प्रकार है: यह दुनिया एक महल है, और इसकी सामग्री मानवता और अन्य जीवित प्राणियों के श्रृंगार, भोजन और अन्य हैं
जीवन की आवश्यकताएं। सूर्य इस महल को रोशन करने वाला एक दीपक है।
निर्माता की महिमा और सृष्टिकर्ता के उपकार इस प्रकार समझे जा सकते हैं,
यह वाक्य ईश्वर की एकता का प्रमाण प्रस्तुत करता है और सूर्य (जो
उस समय के बहुदेववादियों ने इसे सबसे महत्वपूर्ण और उज्ज्वल माना
देवता) को एक निर्जीव वस्तु, जीवित प्राणियों के लाभ के लिए वश में किया गया दीपक माना जाता है।

दीपक में , यह श्लोक सृष्टिकर्ता की दया को, उसके प्रभुत्व की शक्ति में दर्शाता है
और महानता, हमें उनकी दया की विशालता में उनके पक्ष की याद दिलाती है, उनका सुझाव देती है
अपनी संप्रभुता की भव्यता में उदारता, और इस प्रकार अपनी घोषणा करता है
एकता। यह यह भी सिखाता है कि एक निर्जीव, अधीन दीपक पूजा के योग्य नहीं है। सर्वशक्तिमान ईश्वर के व्यवस्थित, आश्चर्यजनक कार्यों को बारी-बारी से इंगित करके
रात और दिन के साथ-साथ सर्दी और गर्मी में भी, यह भगवान की विशाल शक्ति का सुझाव देता है
निर्माता, जो अपने प्रभुत्व को स्वतंत्र रूप से कार्यान्वित करता है।

इस प्रकार यह श्लोक सूर्य और चंद्रमा से इस प्रकार संबंधित है कि हमारा ध्यान दिन और रात, गर्मी और सर्दी तथा घटनाओं की श्रृंखला की ओर आकर्षित होता है।
कुरान में सूर्य का उल्लेख उसके अपने नाम से नहीं बल्कि उसके स्थान पर किया गया है।
उस एक का नाम जिसने इसे चमकाया है। यह सूर्य के भौतिक स्वरूप को अनदेखा करता है
प्रकृति, जो हमें लाभ नहीं पहुंचाती है, और हमारा ध्यान इसकी अनिवार्यता की ओर आकर्षित करती है
कर्तव्य: ईश्वरीय सृजन और निर्माण के नाजुक क्रम के लिए एक पहिये या स्प्रिंग के रूप में कार्य करना, और ईश्वरीय डिजाइन के सामंजस्य के लिए एक शटल के रूप में कार्य करना
शाश्वत डिज़ाइनर रात और दिन के धागों से बुनता है। जब आप

इनके साथ कुरान के अन्य शब्दों की तुलना करें, तो आप देखेंगे कि प्रत्येक शब्द, भले ही सामान्य, उत्कृष्ट अर्थों के खजाने की कुंजी है।

संक्षेप में, कुरान की शैली की जीवंतता और असाधारणता कभी-कभी एक वाक्य से बेडौइन को मंत्रमुग्ध कर देते थे, जो फिर सजदा कर देता था इसकी वाक्पटुता के आगे। एक बार जो तुम्हें आदेश दिया गया है उसे खुले तौर पर और स्पष्ट रूप से घोषित करो जोरदार तरीके से (15:94) पूछे जाने पर यही प्रतिक्रिया सामने आई। मुसलमान बनने पर उन्होंने जवाब दिया: "नहीं। मैं इस वाक्यांश की वाक्पटुता के आगे सजदा करता हूँ।"

चौथा बिन्दु: कुरान की शब्दावली असाधारण रूप से प्रवाहपूर्ण और शुद्ध है। जिस तरह यह अर्थ व्यक्त करते समय असाधारण रूप से वाक्पटु है, उसी तरह यह शब्दों और शब्द-व्यवस्था में भी अद्भुत रूप से धाराप्रवाह और शुद्ध है। इसका एक प्रमाण यह है कि इसका लाभ यह है कि यह इंद्रियों को बोर नहीं करता, बल्कि उन्हें आनंद देता है, भले ही यह हज़ारों बार सुनाए गए। बयानबाज़ी और कला के विज्ञान के प्रतिभाशाली विद्वान व्याकरण भी इसकी अद्वितीय वाक्पटुता और इसकी बुद्धिमत्ता की पुष्टि करता है।

यहां तक कि एक बच्चा भी कुरान को आसानी से याद कर सकता है। गंभीर रूप से बीमार लोग, भले ही आस-पास की साधारण बोलचाल की कुछ बातों से परेशान होकर, राहत और आराम महसूस करें इसे सुनना। मरते हुए लोगों के लिए, यह उनके कानों और दिमाग को वही स्वाद और अनुभूति देता है उनके मुंह और तालू पर ज़मज़म के पानी जैसी खुशी छोड़ी गई ।

कुरान इंद्रियों को बोर नहीं करता, बल्कि यह दिल को पोषण देता है, मन के लिए शक्ति और धन, आत्मा के लिए जल और प्रकाश के रूप में कार्य करता है, और आत्मा की बीमारियों को ठीक करता है। हम रोटी खाने से कभी नहीं थकते, लेकिन थक सकते हैं हर दिन एक ही फल खाने की आदत। इसी तरह, मंत्र का जाप करना या सुनना कुरान की शुद्ध सच्चाई और मार्गदर्शन हमें बोर नहीं करता। जैसा कि यह हमेशा कहता है यह अपनी जवानी के साथ-साथ अपनी ताज़गी और मिठास भी बरकरार रखता है।

एक बार कुरैश ने अपने एक वाक्पटु नेता को यह सुनने के लिए भेजा कि कुरान। जब वह वापस लौटा, तो उसने कहा: "कुरान बहुत मीठा और यह सुखद है कि कोई भी मानव भाषा इसकी बराबरी नहीं कर सकती। मैं कवियों और भविष्यवक्ताओं को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। कुरान उनकी किसी भी रचना की तरह नहीं है। हम केवल इसे जादू के रूप में वर्णित करते हैं ताकि हमारे लोगों को इसके बारे में धोखा दे सकें। यहां तक कि इसका सबसे कट्टर दुश्मन भी उसकी धाराप्रवाहता और वाकपटुता की प्रशंसा करते थे।

प्रवाह और शुद्धता के स्रोतों को समझाने में बहुत समय लगेगा भाषा में अक्षरों की व्यवस्था को देखने वाला व्यक्ति:

> फिर दुःख के पश्चात उसने तुम्हारे लिए शांति और सुरक्षा उतारी: एक नींद
> तुममें से एक गिरोह आ पकड़ा और दूसरा गिरोह अपने-अपने बारे में चिन्तित होकर ईश्वर के विषय में गलत धारणाएँ रखने लगा - अज्ञानता की धारणाएँ - और कहने लगा, "क्या इस मामले में हमारा भी कोई हाथ है?"
> कह दो, "यह मामला तो अल्लाह का है।" निश्चय ही वे अपने मन में छिपाए हुए थे।

139 कुरैश पैगम्बर का कबीला था। (ट्र.)

वे स्वयं ही वे बातें बता रहे थे जो वे तुम्हें नहीं बताना चाहते थे, और कह रहे थे कि यदि हम भी इस मामले में शामिल होते तो हमें यहाँ नहीं मारा जाता।
कह दो, "यदि तुम अपने घरों में भी होते तो जिन लोगों पर हत्या का आदेश दिया गया था वे अवश्य ही अपने-अपने स्थानों की ओर निकल पड़ते।" (यह सब कुछ इसी प्रकार हुआ) ताकि वह तुम्हारे हृदयों में जो कुछ है उसे परख ले और तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे शुद्ध कर दे।

अल्लाह को सीनों में छिपी हुई बातों का पूरा ज्ञान है। (3:154)

अक्षरों की असाधारण व्यवस्था से चमत्कारिकता देखने को मिलेगी। ऐसी व्यवस्था, सूक्ष्म संबंध, नाजुक सामंजस्य और रचना दर्शाती है कि कविता किसी व्यक्ति या संयोग का काम नहीं है।

ऐसा क्रम अन्य अज्ञात उद्देश्यों के लिए हो सकता है। चूँकि अक्षरों को एक निश्चित प्रणाली के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है, इसलिए शब्दों, वाक्यों और अर्थों के चयन और व्यवस्था में एक रहस्यमय क्रम और शानदार सुसंगतता होनी चाहिए। जो लोग इसे देखते और समझते हैं, वे टिप्पणी करेंगे: "भगवान क्या चमत्कार चाहते हैं। भगवान ने उन्हें कितने शानदार ढंग से बनाया है।"

पाँचवाँ बिंदु: कुरान की अभिव्यक्तियाँ श्रेष्ठता, शक्ति, उदात्तता और भव्यता से भरी हैं। इसकी धाराप्रवाह, वाक्पटु और शुद्ध रचना और शब्द क्रम, साथ ही वाक्पटु अर्थ, और मूल और अद्वितीय शैली, इसकी व्याख्याओं में स्पष्ट उत्कृष्टता की ओर ले जाती है। वास्तव में, प्रोत्साहन, निषेध, प्रशंसा, निंदा, प्रदर्शन, प्रमाण, मार्गदर्शन, स्पष्टीकरण और तर्क में विजय जैसे अभिव्यक्ति और संबोधन की सभी श्रेणियों में, इसकी व्याख्याएँ सर्वोच्च स्तर की हैं। उदाहरण के लिए: सूरतुल-इंसान (76) में अभिव्यक्तियाँ, अच्छे कामों को प्रोत्साहित करने और प्रोत्साहित करने के कई उदाहरणों में से एक, सबसे सुखद हैं, जैसे जन्नत की नदी का पानी, और जन्नत के फलों की तरह मीठे हैं।

सूरतुल ग़ाशिया (88) के आरंभ में इसकी व्याख्याएँ हतोत्साहित करने और धमकी देने के उद्देश्य से की गई हैं, जो गुमराह लोगों के कानों में सीसा उबलने, उनके दिमाग में आग जलने, ज़क़्क़ुम उनके तालू को जलाने, जहन्नुम उनके चेहरों पर हमला करने और उनके पेट में कड़वे, कांटेदार पेड़ के समान प्रभाव पैदा करती हैं।

नरक, एक "अधिकारी" जिस पर दिव्य सत्ता की धमकियों को यातना देने, पीड़ा देने और प्रदर्शन करने का आरोप है, उस सीमा तक दहाड़ता है जैसा कि दिव्य सत्ता इसके बारे में कहती है, यह लगभग क्रोध और रोष से फट जाता है (६७:८), यह दर्शाता है कि उस सत्ता का हतोत्साहन कितना महान और शक्तिशाली है।

प्रशंसा की श्रेणी में, सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं140 से शुरू होने वाले पाँच सूरों में कुरान की व्याख्या सूर्य की तरह चमकदार, सितारों की तरह सुशोभित, स्वर्ग और पृथ्वी की तरह राजसी, जैसे प्यारी है

140 अर्थात्, अल-फ़ातिहा, अल-अनाम, अल-काफ़, अस-सबा', और अल-फ़ातिर। (ट्र.)

स्वर्गदूत, इस में युवाओं के प्रति दिखाए गए कोमलता और करुणा से भरे हुए
दुनिया, और स्वर्ग की तरह सुंदर।

जहां तक निंदा और संयम का सवाल है, इस बात पर विचार करें:

> क्या तुममें से कोई अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसंद करेगा? (49:12)

यह छः डिग्री की निंदा में चुगली की निंदा करता है, और चुगली पर रोक लगाता है।
काटने वाले को छह डिग्री की गंभीरता के साथ।

प्रारंभिक हम्ज़ा (मूल अरबी में) प्रश्नवाचक है। इस अर्थ में
आयत के सभी वाक्यों में समाहित है। इसलिए आरंभिक हम्ज़ा के ज़रिए यह पूछता है:
"क्या तुम्हारे पास कोई तर्क या बुद्धि नहीं है, पूछने और उत्तर देने की क्षमता नहीं है, कि तुम नहीं समझ पाते कि यह बात कितनी घिनौनी है?" जैसे पूछता है: "क्या
तुम्हारा हृदय, जिससे तुम प्रेम करते हो और घृणा करते हो, इतना भ्रष्ट हो गया है कि तुम ऐसे प्रेम करते हो
एक घृणित बात है?" आप में से कोई भी पूछता है: "आपकी भावना को क्या हो गया है
सामाजिक संबंध और सभ्यता, जो अपनी जीवंतता सामूहिकता से प्राप्त करते हैं, कि आप सामाजिक जीवन के लिए इतनी जहरीली चीज को स्वीकार करते हैं?

मांस खाना पूछता है: "तुम्हारी मानवता की भावना को क्या हो गया है, कि
तू अपने दोस्त को जंगली जानवर की तरह अपने दांतों से टुकड़े-टुकड़े कर देता है?" उसका भाई पूछता है: "क्या तुममें कोई मानवीय कोमलता नहीं है, कोई रिश्तेदारी की भावना नहीं है? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?
एक निर्दोष व्यक्ति को अपने दांतों से दबाओ जो तुम्हारे साथ अनेक कड़ियों से बंधा हुआ है
भाईचारा? या फिर तुम्हारे पास कोई बुद्धि नहीं है, और इसलिए तुम बेवजह अपने भाईचारे को नुकसान पहुँचा रहे हो
अपने अंगो को कैसे साफ कर सकते हो?" डेड पूछता है: "तुम्हारा विवेक कहाँ है? क्या तुम्हारा स्वभाव इतना भ्रष्ट है
कि आप अपने भाई के साथ उसका मांस खाने जैसा सबसे घिनौना काम कर सकते हैं
जो अब उस स्थिति में है जहाँ उसे सबसे अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए?”

इस प्रकार निन्दा और चुगली करना मनुष्य की बुद्धि, हृदय और मन के लिए घृणित है।
मानवता, विवेक, मानव स्वभाव, तथा धार्मिक और राष्ट्रीय भाईचारा। देखिए कि कैसे यह आयत बहुत ही संक्षिप्त रूप से छः डिग्री में चुगली की निंदा करती है, और लोगों को छः चमत्कारी तरीकों से इससे रोकती है।

जहाँ तक साबित करने और प्रदर्शन की बात है, निम्नलिखित पर विचार करें
अनेक उदाहरण:

> ईश्वर की दया के निशानों को देखो, कैसे वह पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है
> उसकी मृत्यु को वही जानता है, जो मरे हुओं को जिलाएगा। उसी को पूर्ण अधिकार है।
> हर चीज़ पर अधिकार (30:50)

यह आयत पुनरुत्थान का इतना अद्भुत प्रमाण है कि इससे बेहतर कोई सबूत नहीं हो सकता।
प्रमाण संभव है। जैसा कि दसवें वचन के दसवें सत्य में चर्चा की गई है
और द ट्वेंटी-सेकेंड वर्ड की पांचवीं झलक में, पिछले वर्ष के दौरान मर चुके अनगिनत पौधों और जानवरों का वार्षिक वसंत पुनरुत्थान दिखाया गया है
शरद ऋतु और सर्दियों में पुनरुत्थान के अनगिनत उदाहरण मिलते हैं।

असंख्य प्रजातियों के पुनरुत्थान में सर्वोच्च क्रम और विभेदीकरण का उल्लेख करते हुए, जो सभी पूर्ण भ्रम में एक साथ मौजूद हैं, यह श्लोक
कहता है कि जो ये काम करता है, वह मरे हुओं को आसानी से जिला सकता है
दुनिया को नष्ट करना। क्योंकि यह एकता की मुहर है जिस पर लिखा जाना चाहिए
पृथ्वी के पृष्ठ पर असंख्य प्रजातियाँ उसकी शक्ति की कलम से, एक दूसरे के भीतर बिना किसी भ्रम के, साथ ही दिव्य एकता को सिद्ध करती हैं
सूर्य, यह श्लोक पुनरुत्थान को सूर्योदय और सूर्यास्त की तरह स्पष्ट रूप से दर्शाता है।
चूँकि कुरान इस सत्य को इस आयत में क्रिया विशेषण ' कैसे' के साथ संदर्भित करता है, इसलिए यह
कई अन्य सूरों में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है ।

इसके अलावा, सूरा कफ़ (50) में , कुरान पुनरुत्थान को इतनी शानदार, सुंदर, प्यारी और उच्च अभिव्यक्ति के साथ साबित करता है कि यह देता है
वसंत के आगमन जैसी महान निश्चितता। अविश्वासियों के इनकार का जवाब देते हुए
यह घोषणा करता है कि सड़ी हुई हड्डियाँ पुनः जीवित हो सकती हैं:

> तो क्या उन्होंने कभी अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हमने
> इसे किसने बनाया और इसे सजाया, और इसमें कोई दरार नहीं है? और
> धरती को हमने फैलाया और उसमें दृढ़ पर्वत स्थापित कर दिए।
> और उस पर हर सुन्दर वनस्पति का जोड़ा उगाया। (यह सब
> वह हर बन्दे के लिए जो उसकी ओर तौबा करके तौबा करना चाहे, एक ज्ञान और नसीहत है।
> और हम आसमान से कुछ नाज़िल करते हैं
> वह बरकत वाला पानी है जिससे हम बाग़ उगाते हैं और फ़सल के लिए अनाज और ऊँचे-ऊँचे खजूर के पेड़ उगाते हैं, जो कि बन्दों के लिए रोज़ी के तौर पर हैं। और हम उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देते हैं।
>
> मुर्दे जी उठेंगे और निकल आएंगे (50:6-11)

सचमुच, इसकी प्रस्तुति का ढंग पानी की तरह बहता है, सितारों की तरह चमकता है और, जिस प्रकार खजूर शरीर को आनंद देता है, उसी प्रकार यह हृदय को भी आनंद और पोषण देता है।

प्रमाण और प्रदर्शन के सबसे रमणीय उदाहरणों में से एक है:

> या पाप! ज्ञानपूर्ण क़ुरआन की शपथ! निश्चय ही तू उन भेजे हुओं में से है।
> परमेश्वर के सन्देशवाहक) (36:1-3)

यह शपथ इस बात की ओर संकेत करती है कि मुहम्मद के रसूल होने का प्रमाण इतना ही है।
निश्चित और सत्य है और उनके संदेशवाहक होने की सच्चाई सम्मान के योग्य है
कि इस पर शपथ ली जा सके। दूसरे शब्दों में: "आप रसूल हैं,
क्योंकि तुम अपने हाथ में कुरान रखते हो, और कुरान सत्य और वचन है
परमेश्वर का। क्योंकि इसमें सच्चा ज्ञान है और इसमें चमत्कार की मुहर है।"

इस प्रकार का एक और संक्षिप्त एवं चमत्कारी उदाहरण है:

> ...वह कहते हैं: "जब ये हड्डियाँ सड़ जाएँगी तो इन्हें कौन पुनर्जीवित करेगा
> कह दो, "जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया, वही
> उन्हें जिलाए, वह प्रत्येक सृष्टि की पूरी जानकारी रखता है। (36:78)

जैसा कि दसवें वचन के नौवें सत्य में तीसरी तुलना में समझाया गया है, यदि कोई एक दिन में एक विशाल, बिखरी हुई सेना को इकट्ठा करता है और कोई कहता है, "वह व्यक्ति निश्चित रूप से एक तुरही की आवाज के माध्यम से, आराम के लिए बिखरी हुई एक बटालियन को इकट्ठा कर सकता है और सैनिकों को उनकी पिछली स्थिति में पंक्तिबद्ध कर सकता है," और आप उसे अस्वीकार करते हैं, तो यह निश्चित रूप से एक मूर्खतापूर्ण इनकार होगा।

इसी प्रकार, एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर सभी जीवित प्राणियों के परमाणुओं को, चाहे वे कहीं भी स्थित हों, "हो जाओ" के आदेश से एकत्रित करता है और यह (2:117) पूर्ण क्रमबद्धता और बुद्धि के संतुलन के साथ होता है, और उनसे सबसे नाजुक इंद्रियों और सबसे तीव्र क्षमताओं वाले शरीर बनाता है।

हर वसंत में वह धरती पर असंख्य सेना-जैसी सजीव प्रजातियाँ बनाता है। तो क्या यह सवाल किया जा सकता है कि वह इसराफिल की तुरही की ध्वनि से कैसे एक पूर्व बटालियन-जैसी सजीव देह के मूल भागों और परमाणुओं को पुनः संयोजित कर सकता है, जो पहले से ही एक दूसरे से परिचित हैं?

जहाँ तक मार्गदर्शन की बात है, कुरान इतना प्रभावशाली, मर्मस्पर्शी, कोमल और मार्मिक है कि इसकी आयतें आत्मा को जोश से, हृदय को प्रसन्नता से, बुद्धि को जिज्ञासा से और आँखों को आँसू से भर देती हैं। बस एक उदाहरण से यह पता चलता है:

> परन्तु इसके पश्चात् तुम्हारे हृदय कठोर हो गए, और पत्थर के समान हो गए, या उससे भी अधिक कठोर हो गए। कुछ पत्थर ऐसे हैं जिनसे नहरें फूटती हैं, और कुछ ऐसे हैं जिनसे जब वे फट जाती हैं तो जल निकलता है, और कुछ ऐसे हैं जो भय के कारण गिर पड़ते हैं। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं है। (2:74)

जैसा कि बीसवीं सदी के वचन के पहले चरण में उल्लेख किया गया है, इस्राएल के बच्चों को संबोधित इस आयत का अर्थ है: "जबकि एक कठोर चट्टान भी मूसा के छड़ी के चमत्कार के सामने अपनी बारह "आँखों" से झरने की तरह आँसू बहा रही थी, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उसके सभी चमत्कारों के सामने उदासीन बने हुए हो, तुम्हारी आँखें सूखी हैं और तुम्हारे दिल कठोर और निर्दयी हैं?" चूँकि आयत का अर्थ कहीं और विस्तृत किया गया था, इसलिए मैं यहाँ आगे नहीं जाऊँगा।

जहाँ तक बहस में चुप रहने और उस पर विजय पाने की बात है, तो निम्नलिखित बातों पर विचार करें अनगिनत उदाहरणों में से:

> यदि तुम उस चीज़ के विषय में संदेह में हो जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, तो उसके समान एक सूरा बना दो और अपने सभी समर्थकों से, उन सभी से सहायता मांगो, यदि तुम सच्चे हो। (2:23)

मानवता और जिन्न को संबोधित इस आयत का संक्षिप्त अर्थ है: यदि आपको कुरान के ईश्वरीय लेखकत्व के बारे में संदेह है और आप सोचते हैं कि इसे कोई मानव लिख रहा है, तो अपने अनपढ़ लोगों में से किसी एक को, जैसे कि मुहम्मद साहब अनपढ़ हैं, कुछ ऐसा ही लिखने दो। यदि वह ऐसा न कर सके, तो किसी को भेज दो।

आपके लेखकों या विद्वानों में सबसे प्रसिद्ध। अगर वह भी ऐसा नहीं कर सकता, तो उन सभी को एक साथ मिलकर काम करना चाहिए और अपने पूरे इतिहास, "देवताओं", वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, धर्मशास्त्रियों और लेखकों से कुछ ऐसा ही बनाने का आह्वान करना चाहिए। अगर वे ऐसा नहीं कर सकते, तो उन्हें कोशिश करनी चाहिए - इसके अद्वितीय सत्य और इसके अर्थ के चमत्कारी पहलुओं को छोड़कर - शब्द क्रम और रचना में समान वाक्पटुता का काम करने के लिए।

फिर इसके समान दस सूरअत तैयार करो (11:13), कुरान का अर्थ है: जो कुछ तुम लिखते हो, उसका सत्य होना आवश्यक नहीं है; चाहे वह मनगढ़ंत हो या झूठी कहानियाँ हों।
न ही इसे कुरान की लंबाई से मेल खाना चाहिए, बस इसके दस अध्यायों के बराबर का निर्माण करें। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो सिर्फ़ एक अध्याय के बराबर का निर्माण करें। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो सिर्फ़ एक छोटे अध्याय के बराबर का निर्माण करें। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते - जो आप नहीं कर सकते, हालाँकि आपको ऐसा करने की सख्त ज़रूरत है क्योंकि ऐसी अक्षमता आपके सम्मान, धर्म, राष्ट्रीयता, जीवन और संपत्ति को खतरे में डाल देगी, और आप अपमानित होकर मरेंगे - तो आग से डरो, जिसका ईंधन लोग और पत्थर हैं (2:14)। तुम और तुम्हारी मूर्तियाँ हमेशा के लिए नर्क में रहेंगी।

अपनी आठ डिग्री की अक्षमता को समझने के बाद, आप इसके अलावा और क्या कर सकते हैं कि आठ बार स्वीकार करें कि कुरान एक चमत्कार है? या तो विश्वास करें या चुप रहें!

देखिये कि कैसे कुरान विरोधियों को चुप करा देता है और साथ ही सत्य को सभी के लिए समझने योग्य बना देता है और कहता है: "कुरान के बाद किसी अन्य व्याख्या की न तो आवश्यकता है और न ही हो सकती है।"

एक और उदाहरण:

> अतः उपदेश करो और स्मरण कराओ कि अल्लाह के अनुग्रह से तुम न तो भविष्यवक्ता हो और न पागल। या वे कहते हैं कि वह कवि है। हम उसके लिए किसी मुसीबत की प्रतीक्षा कर रहे हैं? कह दो कि रुको, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ। या उनके मन उन्हें ऐसी बातों की ओर प्रेरित करते हैं या वे अवज्ञाकारी लोग हैं? या वे कहते हैं कि वह इसे गढ़ता है? नहीं, बल्कि वे ईमान लाने की इच्छा ही नहीं रखते।
>
> यदि नहीं, तो यदि वे सच्चे हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे इस जैसी कोई बात लेकर आएँ। या वे व्यर्थ ही पैदा किए गए और उनसे पहले कोई नहीं हुआ? या वे रचयिता हैं? या उन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया? बल्कि, वे कोई निश्चित ज्ञान नहीं रखते। या तुम्हारे रब के ख़ज़ाने उनके पास हैं? या उन्हें पूर्ण अधिकार दिया गया है? या उनके पास कोई सीढ़ी है, जिससे वे सुन लेते हैं? तो उनके छुपकर देखनेवाले को चाहिए कि कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करे। या उसके लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे हैं? या तुम उनसे मज़दूरी माँगते हो कि वे क़र्ज़ में दब जाएँ? या उन्हें परोक्ष का ज्ञान है कि वे उससे नकल करें? या वे कोई चाल चल रहे हैं? वास्तव में, जो लोग इनकार करते हैं, वे ही फँस गए। या उनका कोई और पूज्य है? वह महिमावान है, उससे अधिक जिसे वे अपना साझी ठहराते हैं। (52:29-43)

मैं इन आयतों में पाए जाने वाले अनगिनत सत्यों में से केवल एक की चर्चा करूंगा ताकि यह दिखा सकूं कि कुरान किस तरह सत्यों को सबके समझने योग्य बनाता है और विरोधियों को चुप करा देता है: या द्वारा पेश किए गए पंद्रह प्रश्नों के माध्यम से, जो एक अस्वीकृति और असंभवता व्यक्त करते हैं, यह सभी विरोधियों को चुप करा देता है, सभी संदेह को समाप्त करता है, और गुमराह करने के सभी रास्ते बंद कर देता है। यह उन सभी पर्दों को फाड़ देता है जिनके नीचे गुमराह लोग छिप सकते हैं और उनकी भ्रांतियों को उजागर करता है। यह उनके द्वारा गढ़े गए किसी भी झूठ को कुचल देता है। प्रत्येक वाक्य या तो अविश्वास के एक समूह की भ्रांति को उजागर करता है और उसे ध्वस्त करता है, या जहां भ्रांति स्पष्ट है वहां चुप रहता है, या अविश्वास के एक दावे का संक्षिप्त संदर्भ देता है, जिसका यह अन्यत्र विस्तार से खंडन करता है। उदाहरण के लिए, यह उनके इस दावे को संदर्भित करता है कि पैगंबर एक कवि हैं यह उसके लिए उचित नहीं है (36:69), और अंतिम खंड में उनके दावे का उत्तर इस बात में मिलता है: यदि उनमें (पृथ्वी और आकाश में) ईश्वर के अलावा कोई अन्य देवता होते, तो वे अवश्य ही नष्ट हो जाते (21:22)।

शुरुआत में लिखा है: "दिव्य आज्ञाओं को सुनाओ। तुम भविष्यवक्ता नहीं हो, क्योंकि उनके शब्द भ्रमित करने वाले और अटकलों से भरे हुए हैं।
आप पूर्ण निश्चयता के साथ सत्य बोलते हैं और आपमें कोई भूत-प्रेत नहीं है। आपके शत्रु भी आपकी उत्तम बुद्धि की गवाही देते हैं।”

या वे कहते हैं: “एक कवि (जिन्न-ग्रस्त)। हम उसके लिए किसी मुसीबत का इंतज़ार कर रहे हैं”? उनसे कहो: “रुको, मैं भी इंतज़ार कर रहा हूँ।” आप जो महान और शानदार सत्य लेकर आए हैं, वे काव्यात्मक कल्पना और कृत्रिम अलंकरण से मुक्त हैं।

या फिर उनका मन उन्हें ऐसे (झूठ) बोलने के लिए उकसाता है? या फिर वे मूर्ख दार्शनिकों की तरह अपनी बुद्धि को ही पर्याप्त समझते हैं और इसलिए आपका अनुसरण करने से इनकार करते हैं? किसी भी अच्छी बुद्धि के लिए आपका अनुसरण करना ज़रूरी है, क्योंकि आप जो कुछ भी कहते हैं वह उचित है। हालाँकि, मानव बुद्धि उसके जैसा कुछ भी उत्पन्न करने में असमर्थ है।

या फिर वे विद्रोही लोग हैं? या फिर विद्रोही अपराधियों की तरह उनका इनकार सत्य के प्रति समर्पण न करने के कारण है? फ़िरऔन और निम्रोद जैसे विद्रोही अपराधियों के नेताओं का अंत तो हर कोई जानता है।

या वे कहते हैं, "वह इसे जाली बनाता है?" नहीं, बल्कि वे ईमान लाने की इच्छा ही नहीं रखते। या वे झूठे और बेईमान पाखंडियों की तरह तुम पर यह आरोप लगाते हैं कि तुमने क़ुरआन को गढ़ा है? हालाँकि, अब तक वे तुम्हें अपने बीच सबसे भरोसेमंद समझते थे और तुम्हें मुहम्मद को भरोसेमंद कहते थे।

वास्तव में, उनका ईमान लाने का कोई इरादा नहीं है। अन्यथा उन्हें कुरान के समान कोई मानवीय कृति खोजनी चाहिए [यदि वे अपने दावों में ईमानदार हैं]।

या फिर वे व्यर्थ ही बनाए गए और उनसे पहले कोई नहीं था? या फिर, उन दार्शनिकों की तरह जो अस्तित्व को बेतुका और उद्देश्यहीन मानते हैं, क्या वे खुद को उद्देश्यहीन, बिना किसी निर्माता के और खुद पर छोड़ दिया हुआ मानते हैं?

क्या वे अंधे हैं? क्या वे यह नहीं देखते कि ब्रह्माण्ड ज्ञान और फलदायीता के उदाहरणों से भरा पड़ा है, कि हर चीज़ का अपना कर्तव्य है और हर चीज़ ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करती है?

या फिर वे रचयिता हैं? या फिर भौतिकवादियों की तरह जो फिरौन की तरह हैं, क्या वे स्वयं को स्वयं-अस्तित्ववान और आत्मनिर्भर मानते हैं, सृजन करने में सक्षम हैं जो कुछ भी उन्हें चाहिए? क्या यही कारण है कि वे विश्वास और पूजा से इनकार करते हैं? ऐसा लगता है कि वे खुद को निर्माता मानते हैं। लेकिन जो कोई चीज बनाता है उसे अवश्य ही सब कुछ बनाने में सक्षम हो। आत्म-दंभ और घमंड ने उन्हें ऐसा बना दिया है मूर्खता है कि वे ऐसे नपुंसक को एक मक्खी या एक पक्षी से भी पराजित मान लेते हैं। सूक्ष्म जीव पूरी तरह से शक्तिशाली हैं। वे मानवता और तर्क से इतने रहित हैं कि वे जानवरों और यहां तक कि निर्जीव वस्तुओं से भी नीचे गिर गए हैं।
इसलिए उनके इन्कार से दुःखी मत हो।

या उन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया? बल्कि उनका कोई निश्चित ज्ञान नहीं है। ज्ञान। या फिर, जो लोग सृष्टिकर्ता को नकारते हैं, क्या वे ईश्वर को नकारते हैं और इसी तरह कुरान की अनदेखी करें? यदि ऐसा है, तो उन्हें आकाश के अस्तित्व को नकारना चाहिए और पृथ्वी या उनके निर्माता होने का दावा करते हैं, ताकि सभी लोग उनकी पूरी प्रकृति को देख सकें तर्क की कमी। ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के प्रमाण असंख्य हैं सितारों की तरह और फूलों की तरह। ऐसे लोगों का पाने का कोई इरादा नहीं होता निश्चित विश्वास और सत्य को स्वीकार करना। अन्यथा, वे यह कैसे कह सकते हैं कि यह ब्रह्माण्ड की पुस्तक, जिसके प्रत्येक अक्षर में एक पुस्तक अंकित है, में कोई भी पुस्तक नहीं है। जब उन्हें पता है कि पत्र का कोई लेखक होना चाहिए तो?

या तुम्हारे रब के ख़ज़ाने उनके पास हैं या कुछ गुमराह लोगों की तरह दार्शनिक और ब्राह्मण जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्वतंत्र इच्छा को नकारते हैं, क्या वे उसे नकारते हैं? नबी होने के नाते और इसलिए आप पर विश्वास? यदि ऐसा है, तो उन्हें ज्ञान, उद्देश्य, व्यवस्था, उद्देश्यपूर्ण परिणाम, एहसान और दया के कामों के सभी छापों से इनकार करना चाहिए पूरे ब्रह्मांड में, साथ ही सभी पैगम्बरों के चमत्कारों में। या उन्हें दावा करने दें सभी प्राणियों पर किए गए उपकारों के भण्डार को अपने पास रखना, और इस प्रकार यह प्रदर्शित करना कि वे सम्बोधन के योग्य नहीं हैं। यदि ऐसा है, तो उनके इन्कार पर दुःख मत करो।

या फिर उन्हें पूर्ण अधिकार दे दिया गया है? या फिर मुताज़िलियों की तरह जिन्होंने मामलों का न्याय करने में पूर्ण अधिकार का कारण, क्या वे खुद को मानते हैं क्या आप सृष्टिकर्ता के कार्य के पर्यवेक्षकों और निरीक्षकों को दोषी ठहराते हैं और उसे उत्तरदायी ठहराने की इच्छा रखते हैं? कभी भी निराश न हों और उनके इनकार पर ध्यान न दें, क्योंकि यह व्यर्थ है।

या फिर उनके पास कोई सीढ़ी है जिससे वे सुन लेते हैं? तो फिर उन्हें अपनी गुप्तचर-पहचान वालों को कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए। या फिर, भविष्यवक्ताओं और अध्यात्मवादियों की तरह जो जिन्न और शैतान का अनुसरण करते हुए, क्या वे समझते हैं कि उन्होंने कोई दूसरा खोज लिया है? अदृश्य तक जाने का मार्ग? तो क्या वे सोचते हैं कि उनके पास एक सीढ़ी है जिसके द्वारा वे अदृश्य तक पहुँच सकते हैं? स्वर्ग में चढ़ने के लिए, जो उनके शैतानों के लिए बंद है? क्या यही कारण है कि वे क्या वे आपके स्वर्गीय समाचारों का इन्कार करते हैं? ऐसे लोगों का इन्कार करना कोई अर्थ नहीं रखता।

क्या उसके लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे हैं? या फिर उन दार्शनिकों की तरह जो ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ते हैं (जैसे दस बुद्धिमान और गुरु)

प्रजातियों का), सबाईन (जो स्वर्गीय वस्तुओं और स्वर्गदूतों को एक प्रकार की दिव्यता प्रदान करते हैं), या वे जो सर्वशक्तिमान ईश्वर को पुत्र मानते हैं, क्या वे दावा करते हैं कि स्वर्गदूत उनकी बेटियाँ हैं, इस तथ्य के बावजूद कि ऐसा करना अद्वितीय, शाश्वत रूप से प्रार्थित एक के आवश्यक अस्तित्व, उसकी एकता और पूर्ण स्वतंत्रता, उसके शाश्वत रूप से प्रार्थित होने और लिंगहीन स्वर्गदूतों की मासूमियत और सेवकत्व के विपरीत है? क्या वे स्वर्गदूतों को ईश्वर के पास अपना मध्यस्थ मानते हैं और इसलिए आपका अनुसरण नहीं करते हैं? प्रजनन सभी आकस्मिक और नश्वर संस्थाओं के गुणन, सहयोग और निरंतरता का साधन है। एक बड़ा उदाहरण मानवता है, जिसका जैविक अस्तित्व है और जिसके सदस्य नपुंसक, नश्वर हैं, दुनिया से मोहित हैं, मदद के मुहताज हैं और चाहते हैं कि बच्चे उनका उत्तराधिकारी बनें। इसलिए, ईश्वर को पितृत्व प्रदान करना सरासर मूर्खता है, जो अनिवार्य रूप से और शाश्वत रूप से विद्यमान है और अपने सार के संबंध में सभी भौतिक गुणों से पूर्णतः मुक्त है, और अपने स्वभाव के संबंध में गुणन और विभाजन से पूर्णतः मुक्त है, और जिसकी शक्ति नपुंसकता से पूर्णतः मुक्त है। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि वे कहते हैं कि ईश्वर की बेटियाँ हैं, जबकि वे अपनी बेटियों को ही शर्म का स्रोत मानते हैं।

इसे देखते हुए, ऐसे लोगों के इनकार पर ध्यान न दें।

क्या तुम उनसे मज़दूरी माँगते हो ताकि वे कर्ज के बोझ तले दब जाएँ? या फिर वे विद्रोही और अहंकारी, कंजूस और महत्वाकांक्षी लोगों की तरह तुम्हारे आदेशों को असहनीय पाते हैं और इसलिए तुमसे बचते हैं? क्या वे नहीं जानते कि तुम अपना मज़दूरी केवल अल्लाह से चाहते हो? क्या यह असहनीय है कि उनमें से गरीबों को अल्लाह ने जो धन दिया है उसका दसवाँ या चालीसवाँ हिस्सा दे और उसके परिणामस्वरूप भरपूर प्राप्त करें और गरीबों की ईर्ष्या और शाप से बचें? क्या वे ज़कात को बोझ समझते हैं और इसलिए इस्लाम से पीछे हटते हैं? उनका इनकार जवाब देने के लायक नहीं है, और उनका हक़ केवल सज़ा है।

या फिर उनके पास ग़ैब का ज्ञान है, इसलिए वे उससे नकल करते हैं? या फिर उन लोगों की तरह जो ग़ैब के ज्ञान का दावा करते हैं और उन छद्म बुद्धिजीवियों की तरह जो भविष्य की घटनाओं के बारे में अपने अनुमानों को पक्का समझते हैं, क्या वे ग़ैब की आपकी ख़बरों को पसंद नहीं करते? क्या उनके पास ग़ैब की किताबें हैं जो वे आपकी ग़ैब की किताब का खंडन करें? अगर ऐसा है, तो वे समझते हैं कि ग़ैब, जो सिर्फ़ ईश्वरीय रहस्योद्घाटन प्राप्त करने वाले रसूलों के लिए खुला है और कोई भी व्यक्ति उसमें अपने आप प्रवेश नहीं कर सकता, उनके लिए खुला है और वे उससे प्राप्त जानकारी को बस लिख रहे हैं। ऐसे अभिमानी लोगों के इनकार से निराश न हों, क्योंकि आप जो सत्य लेकर आएँगे, वे बहुत ही कम समय में उनके ख़यालों को नष्ट कर देंगे।

या वे कोई चाल चल रहे हैं? वास्तव में, जो लोग इनकार करते हैं, वे ही फंस गए हैं। या वे मुनाफ़िक़ों और कपटाचारियों की तरह दूसरों को भी बढ़ावा देते हैं?

क्या वे लोगों को उनके अविश्वास में शामिल होने के लिए प्रेरित करना चाहते हैं या वे लोगों को धोखा देना चाहते हैं और उन्हें उस मार्गदर्शन से दूर करो जिसे वे प्राप्त नहीं कर सकते, और ऐसा तुम कहते हो भविष्यवक्ता, जादूगर या भूत-प्रेत से ग्रसित व्यक्ति? वे वास्तव में मनुष्य नहीं हैं, और इसलिए उनके इनकार और चालों से निराश न हों। बल्कि, अधिक सशक्त और दृढ़ बनें और अधिक प्रयास करें, क्योंकि उनकी चालाकी केवल उन्हें धोखा देती है। बुरे कामों में उनकी स्पष्ट सफलता अस्थायी है, ईश्वर द्वारा उनके लिए तैयार किया गया एक क्रमिक विनाश है।

या अल्लाह के अलावा कोई और पूज्य है? वह महिमावान है, उससे कहीं अधिक जो वे करते हैं। उसके साथ भागीदार बनो। या, मागियों (जोरास्ट्रियन) की तरह जो दो देवताओं में विश्वास करें (अच्छाई का निर्माता और बुराई का निर्माता), और वे जो हर भौतिक कारण को दिव्यता का प्रतीक मानते हैं और कार्य-कारण को महत्वपूर्ण मानते हैं। क्या वे झूठे देवताओं पर भरोसा करते हैं और आपसे बहस करते हैं? क्या वे स्वयं को आपसे स्वतंत्र मानते हैं? यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे ब्रह्मांड की उत्तम व्यवस्था और नाजुक सुसंगति के प्रति अंधे हैं: क्या उनमें देवता थे (
(21:22) दो लोग अल्लाह के सिवा और कोई नहीं हैं, तो वे अवश्य ही बर्बाद हो जायेंगे (21:22) एक गांव में मुखिया या बुजुर्ग, एक शहर में दो गवर्नर, या एक शहर में दो संप्रभु एक देश व्यवस्था को असंभव बना देगा। एक मक्खी के पंख से लेकर लैंप तक स्वर्ग में इतनी अच्छी व्यवस्था है कि किसी भी भागीदार के लिए कोई जगह नहीं बची है ईश्वर से जुड़े रहना। चूँकि ऐसे लोग तर्क, बुद्धि, सामान्य ज्ञान और प्रत्यक्ष वास्तविकताओं के बिल्कुल विपरीत कार्य करते हैं, इसलिए उनके इनकार को नकारें नहीं आपको ईश्वरीय संदेश का संचार करना छोड़ने के लिए मजबूर कर सकता है।

ऐसे सत्य से भरपूर श्लोकों में से सैकड़ों रत्नों में से मैंने केवल एक का सारांश प्रस्तुत करें जो स्पष्टीकरण और विरोधियों को चुप कराने से संबंधित है। अगर मैं उनके कुछ और रत्न दिखा सकूं, तो आप निष्कर्ष निकालेंगे: "प्रत्येक छंद यह एक चमत्कार है।"

कुरान की शिक्षा और व्याख्या इतनी अद्भुत है, सुंदर, और धाराप्रवाह जिसे कोई भी आसानी से सबसे गहरा समझ सकता है सत्य। चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान कई गहन और सूक्ष्म सत्यों को इतनी स्पष्टता और सीधे तौर पर सिखाता और समझाता है कि यह न तो मानव जाति को ठेस पहुँचाता है और न ही किसी को। संवेदनशीलता नहीं है और न ही आम तौर पर प्रचलित राय का विरोध करती है। बल्कि, इस तरह की व्याख्या हमारे परिचितों के अनुरूप होती है। जैसे कोई व्यक्ति उचित शब्दों का उपयोग करता है एक बच्चे को संबोधित करते हुए, कुरान को "मानव जाति के लिए ईश्वरीय संबोधन" के रूप में वर्णित किया गया है मन, अपने श्रोताओं के स्तर के अनुरूप शैली का उपयोग करता है। रूपक, दृष्टांत और तुलनाओं में बोलकर, यह सबसे कठिन दिव्य सत्यों को भी सामने लाता है और रहस्य जो सबसे आम, अनपढ़ व्यक्ति भी आसानी से समझ सकता है। उदाहरण के लिए: दयालु परमेश्वर ने खुद को सर्वोच्च पर स्थापित किया है सिंहासन (20:5) ईश्वरीय प्रभुत्व को दर्शाता है मानो वह एक राज्य हो, और उनके प्रभुत्व का वह पहलू जो ब्रह्मांड का प्रशासन इस प्रकार करता है मानो वह एक राजा हों अपनी संप्रभुता के सिंहासन पर बैठे और अपना शासन चला रहे हैं।

कुरान, ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान निर्माता का वचन है
उनके आधिपत्य की अभिव्यक्ति की सर्वोच्च डिग्री, अन्य सभी डिग्री को पार कर जाती है।
यह उन लोगों का मार्गदर्शन करता है जो उन डिग्री तक बढ़ते हैं, और सत्तर हज़ार से गुजरते हैं
हर किसी को रोशन करने के लिए परदे। हालाँकि यह सभी को ज्ञान प्रदान करता रहा है
इतने सदियों से यह समझ और बुद्धि के स्तर पर हावी रहा है और अभी भी अपने अर्थ प्रकट करना जारी रखता है,
लोगों की क्षमता और वैज्ञानिक स्तर की परवाह किए बिना, यह
अपनी अनंत ताज़गी और कोमलता को बरकरार रखता है। यह सभी लोगों को सिखाता रहता है
एक आसान लेकिन सबसे कुशल और समझने योग्य तरीका है, और उन्हें इसके बारे में आश्वस्त करता है
सत्य। इसमें जहाँ भी आप देखेंगे, आपको इसकी चमत्कारिकता की झलक मिलेगी।

संक्षेप में, जब कुरान में ऐसा वाक्य आता है कि सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है
जब इसे पढ़ा जाता है, तो यह एक छोटी सी मक्खी के कान के साथ-साथ एक पहाड़ (गुफा) के कान को भी भर देता है।
इसी प्रकार, जिस प्रकार इसके अर्थ महानतम बुद्धिजीवियों को भी पूर्णतया संतृप्त कर देते हैं, उसी प्रकार
शब्द सरलतम बुद्धि को भी संतुष्ट करते हैं। कुरान सभी स्तरों के बुद्धिजीवियों को बुलाता है
मानवता और जिन्न को विश्वास की ओर प्रेरित करता है और उन्हें विश्वास के विज्ञान की शिक्षा देता है।
यह, सबसे अनपढ़ व्यक्ति होने के साथ-साथ सबसे प्रतिष्ठित सदस्य भी है
शिक्षित अभिजात वर्ग एक साथ मिलकर इसके पाठों का पालन करेगा और उनसे लाभान्वित होगा।

कुरान एक ऐसी स्वर्गीय मेज है जिस पर बौद्धिक और आध्यात्मिक भोजन परोसा जाता है, जिसे बुद्धि, तर्क,
हृदय और आत्मा के सभी स्तरों के प्राणी खा सकते हैं।
वे अपना भरण-पोषण करते हैं और अपनी भूख मिटाते हैं।
कुरान में अर्थ और सत्य के कई और खजाने हैं जो खोले जाएंगे
भविष्य की पीढ़ियों द्वारा। पूरा कुरान इस सत्य का एक उदाहरण है। कुरान के सभी छात्र - इस्लामी कानून के
महानतम विद्वान, प्रतिष्ठित लोग
सत्यनिष्ठा के साथ, मुस्लिम संत और दार्शनिक, प्रतिष्ठित संत
ईश्वर का ज्ञान और आध्यात्मिक ध्रुव जो ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रतिष्ठित हैं, और
मुसलमानों का समूह - घोषणा करता है: "कुरान हमें सर्वोत्तम तरीके से शिक्षा देता है।"

दूसरी किरण: यह किरण, ब्रह्मांड की असाधारण व्यापकता है।
कुरान में पाँच आयतें हैं।

पहली झलक: यह कुरान के व्यापक शब्दों से संबंधित है, जो
उन श्लोकों में स्पष्ट है जिनके अर्थ पिछले शब्दों में उद्धृत किए गए हैं, जैसे
जैसा कि इस आयत में बताया गया है, प्रत्येक आयत में बाहरी और आंतरिक दोनों तरह के भाव होते हैं ।
अर्थ, सीमाएँ और समझ का एक बिंदु, साथ ही शाखाएँ, टहनियाँ,
और टहनियाँ.१४१ प्रत्येक वाक्यांश, शब्द, अक्षर और यहाँ तक कि एक चूक के भी कई पहलू होते हैं।
जो भी व्यक्ति इसे सुनता है, उसे उसका हिस्सा अलग-अलग द्वार से मिलता है।

सूरतु'न-नबा' से :

और पहाड़ों को मस्तूल बना दिया (78:7)

---

141 अब्दुर-रज्जाक, अल-मुसन्नाफ, 3:358; अबू याला, अल-मुस्नद, 9:278.

सर्वशक्तिमान ईश्वर का अर्थ है: "मैंने तुम्हारी धरती के लिए मस्तूलों और खूंटियों की तरह पहाड़ बनाए हैं।" आम लोग पहाड़ों को ऐसे देखते हैं जैसे कि उन्हें ज़मीन में गाड़ दिया गया हो और उनके लाभों और उपहारों के बारे में सोचते हुए, सृष्टिकर्ता को धन्यवाद देते हैं। कवि पृथ्वी की कल्पना एक ऐसी ज़मीन के रूप में करते हैं जिस पर स्वर्ग का गुंबद एक व्यापक चाप में खड़ा है, एक विशाल नीले तम्बू के रूप में जिसे बिजली के लैंप से सजाया गया है। स्वर्ग के आधार के चारों ओर पहाड़ों को तम्बू के खूंटे के रूप में देखते हुए, वे विस्मय में सर्व-महान सृष्टिकर्ता की पूजा करते हैं।

रेगिस्तान में रहने वाले साहित्यिक लोग धरती को एक विशाल रेगिस्तान और इसकी पर्वत शृंखलाओं को खानाबदोशों के विविध तंबुओं के रूप में देखते हैं। वे उन्हें ऐसे देखते हैं जैसे मिट्टी ऊंचे खंभों पर फैली हुई हो और जैसे खंभों की नुकीली नोकों ने मिट्टी के "कपड़े" को ऊपर उठा दिया हो, जिसे वे अनगिनत जीवों के घर के रूप में देखते हैं। वे उस सर्व-महान निर्माता के सामने विस्मय में झुक जाते हैं, जिसने इतनी भव्य और शक्तिशाली चीजों को इतनी आसानी से रखा और स्थापित किया। साहित्यिक झुकाव वाले भूगोलवेत्ता पृथ्वी को हवा या ईथर के सागर में नौकायन करने वाले जहाज के रूप में देखते हैं, और पहाड़ों को जहाज को संतुलन और स्थिरता देने वाले मस्तूलों के रूप में देखते हैं।

उस सर्वशक्तिशाली सम्पूर्ण परमेश्वर के समक्ष, जिसने पृथ्वी को एक सुव्यवस्थित जहाज़ की तरह बनाया है जिस पर वह हमें ब्रह्मांड में यात्रा कराता है, वे घोषणा करते हैं: “आप सर्व-महिमावान हैं। आपकी महिमा कितनी महान है!”

समाजशास्त्री या मानवविज्ञानी पृथ्वी को एक घर के रूप में देखते हैं, जिसके जीवन का आधार पशु जीवन है, जो बदले में, हवा, पानी और मिट्टी (जीवन की परिस्थितियाँ) द्वारा समर्थित है। पहाड़ इन परिस्थितियों के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि वे पानी का भंडारण करते हैं, हानिकारक गैसों को बाहर निकालकर वातावरण को शुद्ध करते हैं, और जमीन को दलदल बनने और समुद्र द्वारा नष्ट होने से बचाते हैं।

पहाड़ मानव जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए भी खजाने हैं। वे पूर्ण श्रद्धा के साथ उस महान और उदार निर्माता की प्रशंसा करते हैं, जिसने इन महान पहाड़ों को पृथ्वी के लिए स्तंभों के रूप में बनाया है, जो हमारे जीवन का घर है, और उन्हें हमारी आजीविका के खजाने के रखवाले के रूप में नियुक्त किया है।

प्रकृतिवादी वैज्ञानिक कहते हैं: "पृथ्वी के भूकंप और कंपन, जो कुछ भूमिगत संरचनाओं और संलयन के कारण होते हैं, पहाड़ों के उभरने के साथ स्थिर हो गए। इस घटना ने पृथ्वी की धुरी और कक्षा को भी स्थिर कर दिया। इस प्रकार इसका वार्षिक घूर्णन भूकंप से प्रभावित नहीं होता है। इसका क्रोध और गुस्सा पहाड़ों के झरनों से होकर गुजरने से शांत हो जाता है।" वे विश्वास करने लगे और घोषणा करने लगे: "परमेश्वर जो कुछ भी करता है, उसमें एक बुद्धि होती है।"

सूरतुल-अंबिया से :

आकाश और धरती एक ही टुकड़े थे, फिर हमने उन्हें अलग-अलग कर दिया (21:30)

उन विद्वानों के लिए जिन्होंने भौतिकवादी दर्शन का अध्ययन नहीं किया है, इस टुकड़े का मतलब है कि जब आकाश साफ था और बादल रहित थे, और पृथ्वी सूखी, बेजान और जन्म देने में असमर्थ थी, परमेश्वर ने आकाश खोल दिया वर्षा से और मिट्टी से वनस्पति उत्पन्न की, और सभी जीवित प्राणियों को बनाया एक तरह की शादी और गर्भाधान के ज़रिए तरल पदार्थ। ऐसे लोग समझते हैं कि सब कुछ उस सर्वशक्तिमान महामहिम का कार्य है जो पृथ्वी का मुख उसका छोटा सा बगीचा है, और आकाश के मुख को ढकने वाले सभी बादल उसके मुख हैं वे उसकी सिंचाई के लिए स्पंज का उपयोग करते हैं। वे उसकी शक्ति की प्रचंडता के आगे नतमस्तक हैं।

कठोर बुद्धिजीवियों के लिए इसका अर्थ है: “आदि में, आकाश और पृथ्वी एक निराकार पिंड थे, जिनमें से प्रत्येक पदार्थ से बना था, जैसे गीला आटा, बिना किसी उत्पादन के या जीव। सर्व-बुद्धिमान सृजक ने उन्हें अलग किया और उन्हें बाहर निकाला और, प्रत्येक को एक सुंदर आकार और लाभकारी रूप देकर, उन्हें उत्पत्ति का स्रोत बना दिया नानारूपी, सुशोभित प्राणी।' ये ऋषिगण उनकी प्रशंसा से भर जाते हैं बुद्धि की व्यापकता। आधुनिक दार्शनिक या वैज्ञानिक समझते हैं सौरमंडल आटे के ढेर की तरह एक साथ मिला हुआ था। फिर सर्वशक्तिमान और आत्मनिर्भर एक ने इसे शुरू किया और ग्रहों को उनके संबंधित स्थानों पर रख दिया उसने सूर्य को वहीं छोड़ दिया जहाँ वह था और पृथ्वी को यहाँ ले आया। उसके चेहरे पर मिट्टी डाली, उसे बारिश से सींचा, और सूरज की रोशनी से उसे रोशन किया, दुनिया को रहने लायक बनाया और हमें इस पर बसाया। ये लोग इस दुनिया से बच गए हैं प्रकृतिवाद के दलदल में उतरें, और घोषणा करें: “मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, जो एक है, अद्वितीय है।”

सूरा या सीन से :

सूर्य अपने नियत विश्राम स्थान की ओर दौड़ता है। (36:38)

कण ली (जिसे एकल अक्षर लाम के रूप में लिखा गया है), जिसका अनुवाद यहाँ “से” के रूप में किया गया है, “की ओर”, “में” और “के लिए” के अर्थों को व्यक्त करता है। आम लोग इसे पढ़ते हैं “की ओर” और समझें कि सूर्य, जो प्रकाश और गर्मी प्रदान करने वाला एक चलता-फिरता दीपक है, एक दिन अपने विश्राम स्थल पर पहुँच जाएगा और अपनी यात्रा समाप्त करके एक ऐसा रूप धारण कर लेगा जो अब उनके लिए कोई लाभ नहीं पहुँचाएगा। महान के बारे में सोचना वे घोषणा करते हैं कि महान सृष्टिकर्ता सूर्य के माध्यम से हमें जो वरदान प्रदान करता है, वह इस प्रकार है: "परमेश्वर की महिमा सर्वथा महिमावान है। सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है।"

विद्वान लोग ली को "की ओर" भी पढ़ते हैं, लेकिन सूर्य को एक दीपक के रूप में देखते हैं और वसंत और गर्मियों के करघे पर बुने गए भगवान के वस्त्रों के लिए एक शटल, एक स्याही-पात्र की तरह जिसकी स्याही शाश्वत के अक्षरों के लिए प्रकाश है रात और दिन के पन्नों पर अंकित एक की प्रार्थना। विश्व की व्यवस्था, जिसका संकेत सूर्य की स्पष्ट गति है और जिसके लिए यह इंगित करता है, वे सर्व-बुद्धिमान निर्माता की कला के सामने घोषणा करते हैं: "क्या आश्चर्य है ईश्वर ने चाहा है,” अपनी बुद्धि के सामने: “ईश्वर इसे आशीर्वाद दे,” और सजदा करो।

भूगोलवेत्ता-दार्शनिकों के लिए, ली का अर्थ है “अंदर” और यह बताता है कि सूर्य ईश्वरीय आदेश के माध्यम से और अपनी धुरी पर स्प्रिंग जैसी गति के साथ अपने सिस्टम को आदेश देता है और आगे बढ़ाता है। महामहिम निर्माता के सामने, जिसने सौरमंडल जैसी शक्तिशाली घड़ी का निर्माण और व्यवस्था की, वे चिल्लाते हैं
पूर्ण विस्मय और प्रशंसा: “सारी महानता और शक्ति परमेश्वर की है,”
भौतिकवादी दर्शन को त्यागें और कुरान के ज्ञान को अपनाएं।

सटीक और बुद्धिमान विद्वान ली को कारण और क्रियाविशेषण मानते हैं। वे यह समझिए कि चूँकि सर्वज्ञ निर्माता पर्दे के पीछे से काम करता है
स्पष्ट कारणता के कारण, उन्होंने अपने गुरुत्वाकर्षण के नियम द्वारा ग्रहों को सूर्य से बांध दिया है
और उन्हें अलग-अलग लेकिन नियमित गति के साथ घूमने का कारण बनता है
उनका सार्वभौमिक ज्ञान। गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न करने के लिए, उन्होंने सूर्य की अपनी धुरी पर गति को एक स्पष्ट कारण बनाया है। इस प्रकार विश्राम स्थल का अर्थ है कि "सूर्य
अपने स्वयं के क्रम और स्थिरता के लिए निर्धारित स्थान पर चलता है
(सौर) प्रणाली।" क्योंकि यह एक दिव्य नियम होना चाहिए कि गति गर्मी, गर्मी पैदा करती है
बल उत्पन्न करता है, और बल गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न करता है। इस तरह के एक सिद्धांत को समझने पर
कुरान के एक अक्षर से ज्ञान का एक उदाहरण देते हुए, बुद्धिमान विद्वान घोषणा करते हैं:
"सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है! सच्चा ज्ञान कुरान में पाया जाता है।
मानवीय दर्शन का लगभग कोई मूल्य नहीं है।”

इस कविता और उल्लिखित स्थिरता से कवियों के मन में निम्नलिखित विचार आते हैं : "सूर्य एक प्रकाश फैलाने वाला वृक्ष है, और ग्रह उसकी गतिमान किरणें हैं।"
फल। लेकिन पेड़ों के विपरीत, सूरज को हिलाया जाता है ताकि फल न गिरें। अगर यह
यदि उन्हें हिलाया न जाता, तो वे गिरकर बिखर जाते।” वे यह भी कल्पना कर सकते हैं
सूर्य को भगवान के नामों का उच्चारण करने वाले एक मंडली का नेता बनना, आनंदपूर्वक उनका उच्चारण करना
सर्कल के केंद्र में और दूसरों को सुनाने के लिए नेतृत्व करना। एक और जगह, मैंने व्यक्त किया
इसका अर्थ इस प्रकार है:

सूर्य फल देने वाला पिंड है;
इसे इसलिए हिलाया जाता है ताकि इसके फल नीचे न गिरें।
यदि यह गति करना बंद कर दे और गुरुत्वाकर्षण समाप्त हो जाए,
इसके आनंदित अनुयायी अंतरिक्ष में बिखर जाएंगे और रोएंगे।

सूरतुल-बक़रा से :

वही लोग सफल होंगे। (2:5)

यह सामान्य श्लोक यह निर्दिष्ट नहीं करता कि वे कैसे समृद्ध होंगे। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को वह मिल सकता है जो वह इसमें खोजता है। इसका अर्थ इतना संक्षिप्त है कि यह व्यापक हो। लोग आग से बचना चाहते हैं, जन्नत में जाना चाहते हैं, या
शाश्वत खुशी प्राप्त करें। अन्य लोग ईश्वर की अच्छी खुशी या दर्शन की तलाश करते हैं
ईश्वर। कई जगहों पर, कुरान न तो अर्थ को सीमित करता है और न ही स्पष्ट करता है, और
इसलिए कुछ बातें अनकही छोड़ देने से कई अर्थ प्रकट होते हैं।

यह पूछते हुए कि वे किस तरह समृद्ध होंगे, इसका अर्थ है: "हे मुसलमानों, शुभ समाचार! हे
हे ईश्वर-भक्त, धर्मात्मा, तू नरक से बच जायेगा। हे धर्मी, तू नरक से बच जायेगा।
जन्नत में दाखिल हो जाओगे। ऐ अल्लाह के ज्ञान वाले, तुम अल्लाह की भलाई पाओगे
हे ईश्वर प्रेमी, तुम्हें ईश्वर के दर्शन का पुरस्कार मिलेगा।

सूरा मुहम्मद से :

यह जान लो कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, और अपने पापों के लिए क्षमा मांगो।
त्रुटि. (47:19)

इस श्लोक में इतने सारे पहलू और डिग्री हैं कि सभी संत अपनी पूरी यात्रा के दौरान खुद को इसकी ज़रूरत महसूस करते हैं और इससे अपने लिए उपयुक्त एक नया अर्थ और आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि
"ईश्वर" दिव्य सत्ता का सर्वव्यापी नाम है, और इस प्रकार इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:
दिव्य नामों की संख्या के रूप में दिव्य एकता की कई पुष्टियाँ:
उसके सिवा कोई अन्नदाता नहीं, उसके सिवा कोई रचयिता नहीं, उसके सिवा कोई दयालु नहीं, वगैरह-वगैरह।

मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी:

मूसा की कहानी में, मूसा की लाठी की तरह, हजारों लाभ हैं और
इसके कई उद्देश्य हैं, जैसे कि पैगम्बर को शांत करना और उन्हें सांत्वना देना, अविश्वासियों को धमकाना, पाखंडियों की निंदा करना और यहूदियों की निंदा करना। इस प्रकार यह
विभिन्न पहलुओं पर जोर देने के लिए कई सूरों में इसे दोहराया गया है । हालाँकि सभी उद्देश्य प्रत्येक स्थान पर प्रासंगिक हैं, लेकिन केवल एक ही मुख्य उद्देश्य है।

प्रश्न: आप कैसे जानते हैं कि कुरान में सभी बातें समाहित हैं और उनका उद्देश्य भी वही है?
उन अर्थों?

उत्तर: चूँकि कुरान एक शाश्वत प्रवचन है जो सभी स्तरों और समयों पर मानवता से बात करता है और उसे शिक्षा देता है, इसमें सभी बातें समाहित हैं, सभी का इरादा है और सभी का संकेत है।
उन अर्थों का। अपने इशारतुल-इजाज़ में, मैं अरबी व्याकरण के नियमों का उपयोग करता हूँ, जैसे
साथ ही बयानबाजी, शब्दार्थ और वाक्पटुता के सिद्धांतों को साबित करने के लिए
कुरान के शब्दों में विभिन्न अर्थ समाहित हैं और उनका अभिप्राय विभिन्न अर्थों से है। मुस्लिम न्यायविदों के रूप में,
कुरान के व्याख्याकार और धार्मिक पद्धति के विद्वान इस बात से सहमत हैं कि
श्लोकों की उनकी समझ और उनके द्वारा निकाले गए निष्कर्षों में अंतर
प्रदर्शित करें कि कुरान से समझे गए सभी पहलुओं और अर्थों को समझा जा सकता है
यदि वे अरबी के व्याकरणिक अर्थों के अनुरूप हों तो उन्हें इसके अर्थों में शामिल किया जा सकता है
नियम, इस्लाम के मूल सिद्धांत, और बयानबाजी, शब्दार्थ और विज्ञान के विज्ञान
वाकपटुता। कुरान ने प्रत्येक के लिए एक संकेत रखा है, चाहे वह शाब्दिक हो या सांकेतिक
इसका अर्थ इसकी डिग्री के अनुसार है। यदि सांकेतिक है, तो इसका दूसरा संकेत है
या तो संदर्भ - पिछली या अगली आयतें - या कोई अन्य
आयत का अर्थ बताने के लिए। हज़ारों कुरानिक टिप्पणियाँ साबित करती हैं
इसके शब्दों की असाधारण व्यापकता। इच्छुक पाठक इसका संदर्भ ले सकते हैं
अधिक विस्तृत (फिर भी आंशिक) चर्चा के लिए मैं अपने इशारतुल-एजाज की ओर रुख करूंगा।

दूसरी झलक: यह कुरान के असाधारण व्यापक अर्थ से संबंधित है। सटीक न्यायविदों के लिए स्रोत प्रदान करने के अलावा,
ईश्वर का ज्ञान चाहने वालों के लिए प्रकाश, ईश्वर तक पहुंचने की कोशिश करने वालों के तरीके, सिद्ध मनुष्यों के मार्ग और ईश्वर के स्कूल
सत्य की खोज करने वाले विद्वानों को इसके अर्थ के खजाने से, कुरान हमेशा
उन्हें मार्गदर्शन दिया है और उनके मार्ग को प्रकाशित किया है। इस बात पर सभी सहमत हैं।

तीसरी झलक: यह असाधारण व्यापकता से संबंधित है
कुरान में निहित ज्ञान। न केवल इसका विशाल ज्ञान
कुरान शरिया, सत्य (हकीका) और धार्मिक आदेश (तरीका) से संबंधित अनगिनत विज्ञानों का स्रोत है,
लेकिन कुरान में आकस्मिकताओं के क्षेत्र (भौतिक दुनिया), सत्य (ईश्वर) और ईश्वर के बारे में सच्ची बुद्धि और वैज्ञानिक ज्ञान भी शामिल है।
आवश्यकता के क्षेत्र (दिव्य क्षेत्र) का ज्ञान, और गहन
परलोक का ज्ञान। उदाहरण के लिए, पिछले शब्दों पर विचार करें,
जो क़ुरआन के ज्ञान के सागर से केवल पच्चीस बूँदें हैं। उन शब्दों में कोई भी त्रुटि मेरी दोषपूर्ण समझ से आती है।

चौथी झलक: यह कुरान की असाधारण रूप से व्यापक विषय-वस्तु से संबंधित है। यह मानवता और उसके कर्तव्यों, ब्रह्मांड और उसके अस्तित्व से संबंधित है।
हे सृष्टिकर्ता, स्वर्ग और पृथ्वी, यह संसार और परलोक, और भूतकाल,
भविष्य और अनंत काल। यह हमारी सृष्टि से संबंधित सभी आवश्यक मामलों को समझाता है
और जीवन, खाने-पीने और सोने के सही तरीकों से लेकर ईश्वरीय आदेश के मुद्दों तक
और इच्छाशक्ति, छह दिनों में ब्रह्मांड के निर्माण से लेकर हवाओं के कार्यों तक
इस तरह की शपथों में इसका उल्लेख किया गया है: उन लोगों द्वारा जिन्होंने (हवाओं की तरह) आगे भेजा (77:1) और
वे (हवाओं की तरह) दूर-दूर तक बिखर जाते हैं (51:1)।

इसमें कई अन्य विषयों पर चर्चा की गई है: हमारे हृदय में परमेश्वर के हस्तक्षेप से लेकर
और स्वतंत्र इच्छा: (भगवान) एक व्यक्ति और उसके दिल के बीच हस्तक्षेप करता है (8:24), और
तुम नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह न चाहे (76:30), आकाश पर उसकी पकड़ के लिए:
आकाश उसके “दाहिने हाथ” में लपेटा जाएगा (39:67); धरती के फूलों से,
अंगूर और खजूर और हमने उसमें खजूर और अंगूर के बाग़ बनाए (36:34)
जब धरती ज़ोरदार भूकंप के साथ कांपती है, तो इसमें एक आश्चर्यजनक घटना का वर्णन किया गया है
इसके लिए नियत (99:1); सृष्टि के दौरान स्वर्ग की स्थिति से: फिर वह
जब वह धुआँ बन गया तो आकाश की ओर मुड़ गया (४१:११), और फिर फट गया और
अनंत अंतरिक्ष में बिखरे हुए तारे; परीक्षण के लिए इस दुनिया का निर्माण
और उसके विनाश का परीक्षण; कब्र से, दूसरी दुनिया के पहले स्टेशन तक
पुनरुत्थान, पुल, और स्वर्ग में अनंत खुशी।

इसमें अतीत की चर्चा भी की गई है, जिसमें उस समय घटित घटना भी शामिल है।
अतीत में अनंत काल और संकेत किया गया है "... क्या मैं तुम्हारा भगवान नहीं हूँ? ... (7: 172),
आदम के शरीर का निर्माण और उसके दो बेटों के बीच संघर्ष

जल प्रलय, फिरौन के लोगों का डूबना, तथा पैगम्बरों की जीवन-कथाएँ,
क़यामत के दिन क्या होगा: उस दिन कुछ चेहरे होंगे
वे चमकते हुए अपने प्रभु की ओर देख रहे हैं (75:22-23)।

कुरान ऐसे सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों को इस तरह से समझाता है
एक सर्वशक्तिमान महामहिम के अनुरूप, जो ब्रह्मांड का प्रशासन करता है
एक महल की तरह, दुनिया और परलोक को दो कमरों की तरह खोलता और बंद करता है,
पृथ्वी को बगीचे की तरह और आकाश को दीपक से सजे गुंबद की तरह नियंत्रित करता है,
और जिसकी दृष्टि में भूत और भविष्य दिन और रात या दो पन्नों के समान हैं,
और समस्त अनंत काल (अतीत और भविष्य में) वर्तमान समय के एक बिंदु की तरह।

जैसे एक बिल्डर अपने द्वारा बनाए गए दो मकानों का वर्णन करता है और बताता है कि उसने क्या-क्या बनाया है।
कुरान - अगर कोई इसे व्यक्त कर सकता है - एक सूची या प्रोग्राम है जो लिखा गया है
जिसने ब्रह्माण्ड का निर्माण और प्रशासन किया है, उसके द्वारा यह एक उपयुक्त शैली है।
इसमें बनावट, दिखावा या अनावश्यक परेशानी का कोई निशान नहीं है, और कोई तनाव नहीं है
नकल, छल या धोखे का। यह किसी दूसरे के नाम पर बोलने का दिखावा नहीं करता। दिन के उजाले की तरह जो सूर्य से आने की घोषणा करता है, अपनी पूरी तरह से वास्तविक, शुद्ध, स्पष्ट, गंभीर, मूल और शानदार शैली के साथ, यह घोषणा करता है: "मैं

मैं ब्रह्माण्ड के रचयिता का वचन हूँ।"

क्या कुरान उसके रचयिता के अलावा किसी और का हो सकता है?
वरदानों के दाता, जिन्होंने इस संसार को सबसे मौलिक गुणों से सजाया है
और अमूल्य कलाकृतियाँ बनाईं और उसे सबसे सुखद उपहारों से भर दिया?
पूरे विश्व में जयजयकार और प्रशंसा की आवाज़ें गूंज रही हैं, प्रशंसा और धन्यवाद की प्रार्थनाएं गूंज रही हैं, और इसने पृथ्वी को एक घर बना दिया है
जहाँ भगवान के नाम का जाप किया जाता है, जहाँ भगवान की पूजा की जाती है और उनके कार्यों का वर्णन किया जाता है।
कला का अध्ययन आश्चर्य से किया जाता है। दुनिया को रोशन करने वाला प्रकाश कहाँ हो सकता है
अगर सूरज से नहीं तो किससे आ रही होगी? कुरान किसकी रोशनी हो सकती है, किसी और की नहीं
अनन्त सूर्य की तुलना में, जिसने ब्रह्मांड के अर्थ का अनावरण किया है और
इसे किसने प्रकाशित किया? कौन इसकी तरह कुछ बनाने की हिम्मत कर सकता है?

यह अकल्पनीय है कि जिस कलाकार ने इस दुनिया को सजाया है,
उनकी कला के काम मानवता को संबोधित नहीं करने चाहिए, जो उस कला की सराहना और प्रशंसा करते हैं। चूँकि वह जानता है और बनाता है, इसलिए वह बोलेगा। चूँकि वह
बोलता है, वह कुरान के माध्यम से बोलेगा। भगवान, सभी का भगवान कैसे कर सकता है
प्रभुत्व जो फूल के निर्माण के प्रति उदासीन नहीं है, वह उदासीन रहे
क्या वह दूसरों को अपने राज्य में गूंजने की अनुमति दे सकता है?
क्या इसे हड़प लिया जाए, जिससे यह निरर्थक और शून्य हो जाए?

पाँचवी किरण: यह कुरान की असाधारण व्यापक शैली और संक्षिप्तता से संबंधित है। इसमें पाँच किरणें हैं।

पहली किरण: कुरान की शैली इतनी अद्भुत और व्यापक है कि
एक सूरा में कुरान का पूरा सागर समा सकता है, जिसमें ब्रह्मांड समाया हुआ है। एक आयत उस सूरा के खजाने को समाहित कर सकती है। यह उतना ही है जितना कि
यदि अधिकांश आयतें वास्तव में छोटी सूराएँ हैं और अधिकांश सूराएँ छोटी कुरान हैं। यह
चमत्कारिक संक्षिप्तता मार्गदर्शन और सहजता के संबंध में ईश्वरीय कृपा का एक महान उपहार है, क्योंकि यद्यपि सभी को कुरान की हमेशा आवश्यकता होती है, परंतु सभी को इसकी आवश्यकता नहीं होती।
लोग इसे पूरा पढ़ें, ताकि वे इसके आशीर्वाद से वंचित न रहें।
प्रत्येक सूरा एक छोटे कुरान का स्थान ले सकता है और प्रत्येक लम्बी आयत एक छोटे कुरान का स्थान ले सकती है।
सूरा। इसके अलावा, आध्यात्मिक खोज के सभी लोग और विद्वान इस बात से सहमत हैं कि
कुरान सूरतुल-फातिहा में निहित है , जो स्वयं बस-माला (ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है) में निहित है।

दूसरा संदेश: कुरान में सभी प्रकार के ज्ञान, व्याख्या के प्रकार और मानवीय आवश्यकताओं, जैसे आदेश और निषेध, का उल्लेख है।
वादा और धमकी, प्रोत्साहन और रोकना, संयम और मार्गदर्शन,
कथाएं और दृष्टांत, ईश्वरीय ज्ञान और शिक्षाएं, "प्राकृतिक" विज्ञान, व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन के नियम और शर्तें, और
परलोक का जीवन। यह लोगों को वह सब कुछ देता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, ताकि :
कुरान से जो कुछ भी आप चाहते हैं, जो भी आपकी ज़रूरत है, उसे सत्यापित विद्वानों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित किया गया है। इसकी आयतें इतनी व्यापक हैं कि
किसी भी बीमारी का इलाज और किसी भी ज़रूरत का जवाब इसमें पाया जा सकता है।
ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि वह पुस्तक जो उन सभी सिद्ध लोगों के लिए पूर्ण मार्गदर्शक है जो प्रतिदिन ईश्वर के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं, उस गुणवत्ता की होनी चाहिए।

तीसरी किरण: कुरान की अभिव्यक्तियाँ संक्षिप्त किन्तु सर्वसमावेशी हैं।
कभी-कभी यह एक लंबी श्रृंखला के पहले और अंतिम पदों का उल्लेख इस तरह से करता है कि
यह सब दिखाता है; अन्य बार यह एक शब्द में कई स्पष्ट, अंतर्निहित,
किसी कारण के संकेतात्मक या विचारोत्तेजक प्रमाण।

सूरतु'र-रम से :

और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना
और तुम्हारी भाषाओं और रंगों की विविधता। (30:22)

ब्रह्माण्ड की दो-भागीय रचना का उल्लेख करते हुए -
स्वर्ग और पृथ्वी और मानव भाषाओं और जातियों की विविधता - यह
सभी सजीव और निर्जीव प्राणियों की रचना और विविधता का सुझाव देता है
ईश्वरीय एकता के संकेत। यह सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व की भी गवाही देता है
और वही है जिसने सबसे पहले आकाशों और धरती को पैदा किया फिर उसके बाद
इसे अन्य लिंक के साथ जोड़ें - आकाश को सितारों से सजाने से लेकर उसे आबाद करने तक
पृथ्वी को सजीव प्राणियों से भर दिया; सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा को दे दिया

नियमित कक्षाएँ, साथ ही दिन और रात का परिवर्तन, विभेदकारी और अत्यधिक गुणन के मामलों में भाषण और रंग को व्यक्तिगत बनाना।

चूँकि विभेदीकरण में एक अद्भुत उद्देश्यपूर्ण प्रणाली है रंग-रूप और चेहरे की बनावट, जिस पर कोई निर्भर हो सकता है सृजन के अन्य पहलुओं की तुलना में संभावना अधिक है, निश्चित रूप से अन्य लिंक सृष्टि का , जो स्पष्ट रूप से एक जानबूझकर आदेश को प्रकट करते हैं, सभी-डिजाइनिंग की ओर इशारा करेंगे। साथ ही, चूंकि विशाल आकाश और पृथ्वी का निर्माण कुछ कलात्मकता और उद्देश्यों को प्रदर्शित करता है, इसलिए एक निर्माता की कलात्मकता और उद्देश्य जिसने इसकी स्थापना की आकाश और पृथ्वी पर ब्रह्मांड का प्रभाव अन्य ब्रह्मांडों में अधिक स्पष्ट होगा। उसकी रचना के अंग। इस प्रकार, जो छिपा है उसे प्रकट करके और जो छिपा है उसे प्रकट करके जो स्पष्ट है, वह यह है कि यह पद अत्यंत सुन्दर संक्षिप्तता प्रदर्शित करता है।

उसकी निशानियों में से छह बार दलीलों का सिलसिला शुरू होता है और अतः परमेश्वर की महिमा करो, जब तुम सांझ को प्रवेश करो और जब तुम भोर को प्रवेश करो (30:17), आकाशों और धरती में सबसे बड़ी उपमा अल्लाह के लिए है; वह महिमावान, प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है (30:27), वह रत्नों, ज्योतियों, चमत्कारों और अद्भुत संक्षिप्तता का समूह है। मैं चाहे जितना भी उन खजानों में मौजूद हीरे दिखाना चाहूँ, मुझे वर्तमान संदर्भ में ऐसा करने से बचना चाहिए।

सूरा यूसुफ़ से :

तब उसने कहा: “तो मुझे भेज दो।” “यूसुफ, हे सच्चे आदमी!..” (12:45-46)

कथा में 'सो सेंड मी फ़ॉर' और 'सो सेंड मी फ़ॉर' के बीच की कई घटनाओं को छोड़ दिया गया है “हे यूसुफ, हे सत्यवादी पुरुष:” [इसलिए मुझे यूसुफ के पास भेज] कि मैं पूछूं उसे सपने की व्याख्या के बारे में बताया गया। उन्होंने उसे भेजा। वह आया जेल में बंद करके कहा: [यूसुफ ...] इस तरह से कुरान संक्षेप में बयान करता है और स्पष्टता में किसी प्रकार की हानि हुए बिना मुद्दे पर बात रखनी चाहिए।

सूरा या सीन से :

वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बनाई। (36:80)

विद्रोही मानवता के पुनरुत्थान को नकारने के सामने, कौन क्या इन हड्डियों को फिर से जीवित किया जाएगा, जब वे सड़ चुकी होंगी? (36:78), कुरान कहता है: "जिसने उन्हें उत्पन्न किया है, वही उन्हें नया जीवन देगा। जिसने सृष्टिकर्ता सभी चीज़ों के सभी पहलुओं को जानता है। इसके अलावा, जिसने आग बनाई हरे पेड़ से सड़ी हुई हड्डियाँ जीवित कर सकते हो।” कविता का यह भाग उद्धृत पुनरुत्थान को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रमाणित करता है।

सबसे पहले, यह हमें ईश्वरीय कृपाओं की याद दिलाता है। चूँकि कुरान में अन्यत्र इनका विवरण दिया गया है, इसलिए यहाँ केवल उनका संकेत दिया गया है और विस्तार से बुद्धि को संदर्भित किया गया है। इसका वास्तव में अर्थ है: “जिसने आग लगाई है उससे तुम बच नहीं सकते या छिप नहीं सकते तुम्हारे लिए वृक्षों से फल और अन्न प्राप्त करता है

और धरती से पौधे लेकर, धरती को एक प्यारा पालना बनाया है जिसमें आपकी सारी ज़रूरतें समाहित हैं, और दुनिया को एक सुंदर महल बनाया है जिसमें आपकी ज़रूरत की हर चीज़ समाहित है। आपको व्यर्थ और बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया गया है, और इसलिए आप आज़ाद नहीं हैं या बिना जगाए हमेशा के लिए कब्र में सोने में सक्षम नहीं हैं।”

दूसरा, पुनरुत्थान के प्रमाण की ओर इशारा करते हुए, यह हरे पेड़ का उपयोग यह सुझाव देने के लिए करता है: "हे तुम जो पुनरुत्थान को अस्वीकार करते हो, पेड़ों को देखो। तुम उस व्यक्ति की शक्ति को कैसे चुनौती दे सकते हो जो वसंत में असंख्य पेड़ों को पुनर्जीवित करता है जो सर्दियों में मर गए और कठोर हो गए? उन्हें खिलने, पत्ते आने और फल लगने के द्वारा, वह प्रत्येक पेड़ पर पुनरुत्थान के तीन उदाहरण प्रदर्शित करता है।" यह एक और प्रमाण की ओर इशारा करता है और इसका मतलब है: "तुम उसे कैसे असंभव मान सकते हो जो कठोर, काले और भारी पेड़ों से आग जैसा परिष्कृत और प्रकाश देने वाला पदार्थ बनाता है? तुम कैसे कह सकते हो कि वह लकड़ी जैसी हड्डियों को आग जैसा जीवन और प्रकाश जैसी चेतना नहीं दे सकता?"

एक और प्रमाण: "ब्रह्मांड में प्रत्येक वस्तु उसी के अधीन है और उसी के आदेश पर निर्भर है, जो खानाबदोशों द्वारा दो हरे पेड़ों की शाखाओं को रगड़ने से आग पैदा करता है, और विरोधी प्रकृतियों में सामंजस्य स्थापित करके नई चीजें पैदा करता है।
आप उसका विरोध कैसे कर सकते हैं और यह कैसे मान सकते हैं कि उसने धरती से इंसानों को पैदा किया और फिर धरती पर वापस लाया, जबकि उसने धरती से इंसानों को बनाया और फिर धरती पर वापस लाया?" इसके अलावा, यह उस प्रसिद्ध पेड़ की ओर इशारा करता है जिसके पास पैगंबर मूसा ने पहला रहस्योद्घाटन प्राप्त किया था और सुझाव देता है कि पैगंबर मुहम्मद और मूसा (उन पर शांति हो) के कारण एक ही हैं। इस प्रकार यह अप्रत्यक्ष रूप से सभी पैगंबरों की समान आवश्यक बिंदुओं पर सहमति को संदर्भित करता है और उस शब्द के संक्षिप्त खजाने में एक और अर्थ जोड़ता है - हरा पेड़ - अर्थ।

चौथी किरण: कुरान की संक्षिप्तता एक घड़े में सागर को चढ़ाने के समान है। सामान्य मानव मन के प्रति दया और शिष्टाचार के कारण, यह किसी विशेष अवसर पर किसी विशेष घटना के माध्यम से सबसे व्यापक और सार्वभौमिक सिद्धांतों और सामान्य कानूनों को दर्शाता है। निम्नलिखित उदाहरण ऐसे कई संक्षिप्त उदाहरणों में से कुछ ही हैं:

सूरतुल-बक़रा से :

यह तीन आयतों (31-34) से संबंधित है, जिन्हें बीसवें वचन के पहले स्टेशन में समझाया गया था। वे कई चीजों का सुझाव देते हैं। आदम को सभी चीजों के नाम सिखाने का मतलब है कि मानवता को सभी ज्ञान और विज्ञान प्राप्त करने की क्षमता दी गई थी; आदम के सामने स्वर्गदूतों का झुकना और शैतान का ऐसा करने से इनकार करना यह दर्शाता है कि अधिकांश प्राणियों को मानवता के नियंत्रण में रखा गया है, जबकि हानिकारक प्राणी (जैसे, शैतान और साँप) इतने विनम्र नहीं होंगे। इस्राएलियों द्वारा गाय का वध करने का उल्लेख (2:67-71) का अर्थ है कि गाय की पूजा (मिस्र से उधार ली गई और इस्राएलियों की आराधना में दिखाई गई)

सामिरियों द्वारा उनके लिए बनाए गए बछड़े की पूजा (20:85-88) को नष्ट कर दिया गया था
मूसा का चाकू। यह उल्लेख करते हुए कि कुछ चट्टानों से नदियाँ निकलती हैं, अन्य से नहीं
इस प्रकार विभाजित हो जाते हैं कि उनमें से पानी निकलता है, और कुछ अन्य लोग डर के मारे नीचे गिर जाते हैं
ईश्वर (2:74) स्पष्ट रूप से कहता है कि भूमिगत चट्टानी स्तर भूमिगत जल को अनुमति देते हैं
उनमें से जल की शिराएँ गुजरती थीं और पृथ्वी की उत्पत्ति में उनकी भूमिका थी।

दूसरा उदाहरण (सूरतु'एल-मुमिन से):

मूसा की दोहराई गई कहानी का प्रत्येक वाक्यांश और वाक्य इस ओर इशारा करता है
एक सार्वभौमिक सिद्धांत को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, हामान, मेरे लिए एक मीनार बनाओ (40:36), कुरान का अर्थ है: “फिरौन ने अपने मंत्री हामान को आदेश दिया: 'मेरे लिए एक मीनार बनाओ
मेरे लिए एक ऊंचा टॉवर। मैं आकाश का निरीक्षण करूंगा और इसके माध्यम से पता लगाने की कोशिश करूंगा
स्वर्गीय घटनाएँ क्या कोई ईश्वर है जैसा मूसा दावा करता है।'”
इस विशेष घटना और टावर द्वारा, कुरान एक अजीब प्रथा का संकेत देता है
फिरौन के: प्रकृति के उपासक जो बिना किसी बाधा के विशाल रेगिस्तान में रहते थे
पहाड़ों, जादू-टोने और पुनर्जन्म में विश्वास करने वालों में अविश्वास के कारण
भगवान, वे पहाड़ों के लिए गहरी इच्छा रखते थे और लोगों पर दिव्य आधिपत्य की तरह पूर्ण संप्रभुता का दावा करते थे। अपने नामों को अमर बनाने के लिए
और प्रसिद्धि के लिए, उन्होंने अपने ममीकृत शरीर के लिए पहाड़ जैसे पिरामिड बनाए।

सूरा युनुस से :

अतः आज हम तुम्हें तुम्हारे शरीर सहित मुक्ति प्रदान करेंगे। (10:92)

फिरौन के डूबने का उल्लेख करके, कुरान सुझाव देता है: "चूंकि सभी
फिरौन पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, उन्होंने खुद को अमर बनाने के लिए अपने शरीर को ममी बना लिया। इस प्रकार उनके शरीर आज तक बचे हुए हैं। हालाँकि
ममीकृत नहीं, फिरौन का शरीर जो पीछा करते समय डूब गया
मूसा अपनी सेना के साथ अंतिम समय में नील नदी के किनारे लेटे हुए पाए गए।
उन्नीसवीं सदी के वर्षों में। यह एक स्पष्ट कुरानिक चमत्कार है, जो
सदियों पहले इस श्लोक में इसकी भविष्यवाणी की गई थी।

सूरतुल-बक़रा से :

(फ़िरऔन के लोग) जो तुम्हें बहुत बुरी यातनाएँ दे रहे थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को छोड़ रहे थे। (2:49)

इस आयत में इस्राएलियों के प्रति फिरौन की बुराइयों और क्रूरताओं का उल्लेख है।
इसमें कई स्थानों और समयों पर यहूदियों की सामूहिक हत्या का भी उल्लेख है,
और इतिहास में कुछ यहूदी महिलाओं द्वारा निभाई गई कुख्यात भूमिका:

तुम उन्हें सब लोगों में प्राण का सबसे अधिक लोभी पाओगे। (2:96)

आप उनमें से कई लोगों को पाप और शत्रुता में प्रतिस्पर्धा करते और भस्म होते देखते हैं
ये तो नाजायज़ कमाई है, जो कुछ वे करते रहे हैं, वह बहुत बुरा है। (5:62)

वे पृथ्वी पर अव्यवस्था और भ्रष्टाचार फैलाते हुए शीघ्रता से घूमते हैं; परमेश्वर
वह उन लोगों से प्रेम नहीं करता जो अव्यवस्था और भ्रष्टाचार पैदा करते हैं। (5:64)

हमने किताब में बनी इसराईल के लिए आदेश दे दिया था कि तुम धरती में दो बार फ़साद और उपद्रव फैलाओगे।
(17:4)

पृथ्वी पर दुष्टता से काम करते हुए उपद्रव और भ्रष्टाचार फैलाते हुए मत घूमो। (2: 60)

ये आयतें यहूदियों के विरुद्ध दो सामान्य विनाशकारी षड्यंत्रों को व्यक्त करती हैं मानवता के सामाजिक जीवन में। यहूदियों ने श्रम को पूंजी के खिलाफ खड़ा किया है, गरीबों को अमीरों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए मजबूर किया गया, चक्रवृद्धि ब्याज का इस्तेमाल किया गया, जिससे बैंकों का निर्माण और अवैध तरीकों से धन संचय करना। इस प्रकार उन्होंने मानव सामाजिक जीवन को हिलाकर रख दिया है। इसके अलावा, यह आमतौर पर एक ही रहा है राष्ट्र, जो उन राज्यों या सरकारों से बदला लेना चाहते हैं जिन्होंने उनके साथ अन्याय किया हो या उन्हें पराजित किया हो, राजद्रोही समितियों में शामिल हुए हों या क्रांतियों में भाग लिया हो।

सूरतुल जुमा से :

यदि आप दावा करते हैं कि आप अन्य लोगों से अलग होकर ईश्वर के मित्र हैं, तो
यदि तुम सच कहो तो वे मृत्यु की लालसा करते हैं, परन्तु वे कभी उसकी लालसा नहीं करेंगे.... (62:6-7)

मदीना के यहूदी समुदाय के एक दावे का खंडन करने के लिए ये खुलासा किया गया है। आयतों में कहा गया है कि यहूदी, जो जीवन के प्रति प्रेम और मृत्यु के प्रति भय के लिए प्रसिद्ध हैं, अन्तिम दिन तक इन गुणों को न छोड़ो।

सूरतुल-बक़रा से :

उन पर अपमान और दु:ख की मुहर लगा दी गयी (2:61)

यह आयत यहूदियों के सामान्य भाग्य का वर्णन करती है। ऐसे सामान्य और उनके स्वभाव और भाग्य के भयानक पहलुओं को कुरान ने बहुत ही गंभीरता से पेश किया है। और उनकी कठोर आलोचना करता है। इन अन्य पहलुओं के साथ तुलना करें मूसा और इसराइल की संतानों के बारे में कुरान में वर्णित विवरण। ध्यान दें कि बहुत से कुरान के सरल शब्दों और विशेष अर्थों के पीछे चमत्कार की झलक विषयों, इस किरण में वर्णित चमत्कारी संक्षिप्तता की चमक की तरह।

पांचवी किरण: यह कुरान की असाधारण व्यापक व्याख्या से संबंधित है उद्देश्य, विषयवस्तु, अर्थ, शैली, सौंदर्य और सूक्ष्मता। जब इसके सुर और छंद, विशेष रूप से पूर्व के शुरुआती भाग और बाद के आरंभ और अंत, ध्यान से अध्ययन किया जाता है, यह स्पष्ट रूप से देखा जाता है कि कुरान में शामिल है सभी प्रकार की वाक्पटुता, सभी प्रकार की उत्तम वाणी, सभी प्रकार की उत्कृष्ट वाणी शैली, अच्छे नैतिक मूल्यों और सद्गुणों के सभी उदाहरण, प्राकृतिक विज्ञान के सभी सिद्धांत, ईश्वर के ज्ञान के सभी सूचकांक, व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के सभी लाभकारी नियम।

इसमें सामाजिक जीवन, तथा सृष्टि के उत्कृष्ट कारणों और प्रयोजनों के सभी ज्ञानवर्धक नियमों का वर्णन है, तथापि इसमें भ्रम का एक भी चिह्न नहीं दिखाई देता।

वास्तव में, ऐसा परिपूर्ण और व्यापक कार्य किसी ऐसे व्यक्ति का कार्य हो सकता है जो
यह केवल एक चमत्कारी आदेश का असाधारण कार्य हो सकता है।
कुरान जैसे चमत्कारों का स्रोत, जो सत्य को देखता और दिखाता है, अदृश्य से परिचित है, और मार्गदर्शन प्रदान करता है - वह केवल कुरान ही हो सकता है।
इस तरह की व्यापकता और व्यवस्था के साथ काम करना,
अपनी मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियों से सामान्य बातों का पर्दा फाड़ डालो
चीजें और घटनाएं, जो मिश्रित अज्ञानता का कारण बनती हैं जो अविश्वास की ओर ले जाती हैं (उदाहरण के लिए, नास्तिकता और भौतिकवाद), और उनके पीछे की असाधारणता को दर्शाती हैं
उस आवरण को हटा दें। केवल इसकी हीरे जैसी सबूत की तलवार ही प्रकृतिवाद को नष्ट कर सकती है
यह अपनी गर्जना के समान गर्जना से असावधानी की मोटी परतों को हटाता है, तथा अस्तित्व के छिपे हुए अर्थों और सृष्टि के रहस्यों को उजागर करता है, जो सभी दार्शनिकों और वैज्ञानिकों की क्षमता से परे हैं।

यदि कुरान की आयतों पर ध्यानपूर्वक और निष्पक्षता से विचार किया जाए तो यह देखा जाएगा
अन्य पुस्तकों की तरह, वे एक या दो विषयों पर धीरे-धीरे सामने आने वाली तर्क-वितर्क की श्रृंखला की तरह नहीं हैं। बल्कि, वे यह आभास देते हैं कि
प्रत्येक पद्य या पद्यों के प्रत्येक समूह को कोड के रूप में एक समय में अलग से भेजा गया था
एक बहुत ही गंभीर और महत्वपूर्ण संचार। ब्रह्मांड के निर्माता के अलावा और कौन कुरान के रूप में ब्रह्मांड और उसके निर्माता से संबंधित संचार कर सकता है? कौन सर्वशक्तिमान निर्माता को कुरान के रूप में ब्रह्मांड और उसके निर्माता से संबंधित संचार कर सकता है?
अपनी इच्छानुसार बोलें और ब्रह्मांड को सच बोलने के लिए प्रेरित करें?
वास्तव में, यह ब्रह्मांड का मालिक है जो बोलता है और ब्रह्मांड को बोलने देता है
इसे मैंने कुरान में सबसे गम्भीरता और सच्चाई से, तथा सबसे उच्च शैली में कहा है।

कोई भी इसमें नकल का कोई चिन्ह नहीं पा सकता, क्योंकि यह वही है जो बोलता और करता है।
बोलने के लिए मजबूर करता है। अगर, असंभव मान लें, तो मुसैलिमा जैसा कोई
झूठा प्रकट हुआ और सर्व-गौरवशाली, सर्व-सम्मोहक और बनाने में कामयाब रहा
सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता अपनी इच्छानुसार बोलता है और ब्रह्माण्ड को उससे बात करने देता है,
निश्चित रूप से नकल और दिखावे के अनगिनत संकेत होंगे।
जो लोग अपनी सबसे नीच अवस्था में भी बड़ा अहंकार दिखाते हैं, उनका आचरण उनकी
ढोंग। निम्नलिखित आयतों पर विचार करें, जो शपथ के साथ इसकी घोषणा करती हैं :
जब तारा डूब जाता है, तो आपका साथी न तो भटकता है, न ही गलती करता है, न ही बोलता है
अपनी मर्जी से, अपनी इच्छा से। यह तो एक रहस्योद्घाटन है (53:1-4)।

तीसरी किरण: यह भी कुरान की चमत्कारी भविष्यवाणी से संबंधित है।
इसकी ताज़गी और समझ के सभी स्तरों को संबोधित करने की क्षमता के कारण
समय और स्थान। इस किरण में तीन चमकें हैं।

प्रथम प्रकाश: यह कुरान की भविष्यवाणियों से संबंधित है और इसके तीन अर्थ हैं:
प्रकाश देने वाले पहलू.

पहला पहलू: कुरान अतीत की खबरें देता है। यद्यपि एक अनपढ़ व्यक्ति द्वारा संप्रेषित, बुद्धिमान कुरान आदम के समय से पैगंबरों के महत्वपूर्ण अनुभवों को एक गंभीर और शक्तिशाली तरीके से उल्लेख करता है
खुशी के युग के साथ-साथ उनके मिशन के मुख्य पहलुओं के बारे में भी बताया गया।
यह जो जानकारी प्रदान करता है वह आम तौर पर आम सहमति से मेल खाती है
पिछले शास्त्रों के विवरण। यह उन बिंदुओं को भी सही करता है जिन पर
उनके भ्रष्ट रूप असहमत हैं। इस प्रकार कुरान में सर्वज्ञ दृष्टि है
जो पिछले शास्त्रों से भी अधिक अतीत को जानता है।

अतीत का उसका विवरण बौद्धिक अध्ययन पर आधारित नहीं है, बल्कि यह प्रसारित ज्ञान है। प्रसारित ज्ञान केवल शिक्षित व्यक्तियों तक ही सीमित है,
जबकि पैगम्बर मुहम्मद पूरी तरह से अनपढ़ थे और उन्हें 'अल्लाह' के नाम से जाना जाता था।
मुहम्मद भरोसेमंद हैं। कुरान अतीत की घटनाओं के बारे में इस तरह बात करता है जैसे कि वह देख रहा हो
यह घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला के मूल को निकालता है और उसके माध्यम से अपने तर्क प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष, सारांश और संकेत पाए गए
इसलिए इसमें यह प्रदर्शित करें कि जो उन्हें प्रस्तुत करता है वह सब कुछ देखता है
अतीत के आयाम। बस एक पर्याप्त सारांश, एक बढ़िया अंश, या एक
एक स्पष्ट उदाहरण किसी विशेषज्ञ के कौशल या विशेषज्ञ ज्ञान को दर्शाता है, कुरान का
कुछ घटनाओं से चुने गए मुख्य बिंदु और मुख्य विषय यह दर्शाते हैं कि
जो उन्हें चुनता है, उसे सम्पूर्ण ज्ञान होता है
और उनका वर्णन असाधारण कुशलता से कर रहे हैं।

दूसरा पहलू: यह कुरान की भविष्यवाणियों की कई श्रेणियों से संबंधित है। एक श्रेणी संतों और आध्यात्मिक अनावरण के लिए विशेष है।
उदाहरण के लिए , मुहीद-दीन इब्नुल-अरबी ने सूरतुर-रम में कई भविष्यवाणियाँ पाईं। इमाम अर-रब्बानी ने मुक़त-ता'त (कुछ सूराओं की शुरुआत में अलग-अलग अक्षर) में कई भविष्य की घटनाओं के संकेत पाए।

कुरान के आंतरिक पहलुओं और अंतरतम अर्थों तथा सृष्टि के विद्वानों के लिए, कुरान भविष्यवाणियों से भरा हुआ है। मैं केवल एक और पर ध्यान केन्द्रित करूंगा
विस्तार में जाए बिना, कुछ उदाहरण देकर संतुष्ट हो जाइए।

क़ुरआन पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से कहता है:

> अतः धैर्य रखो, निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। (30:60)

> यदि ईश्वर ने चाहा तो आप पवित्र मस्जिद में पूरी सुरक्षा के साथ प्रवेश करेंगे।
> अपने सिर मुंडाओ, अपने बाल छोटे कराओ, और बिना किसी डर के। (48:27)

> वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और धर्म के साथ भेजा
> ताकि उसे हर धर्म से ऊपर उठा दे। (48:28)

बीजान्टिन रोमनों को के निकटवर्ती भाग में पराजित किया गया है
भूमि पर कब्ज़ा कर लेंगे; और अपनी हार के बाद, कुछ वर्षों में वे विजेता हो जायेंगे।
आदेश अल्लाह ही के लिए है। (30:3-4)

शीघ्र ही तुम देख लोगे और वे भी देख लेंगे कि तुममें से कौन पागल है। (68:5-6)

या फिर वे कहते हैं: "वह कवि है। हम उसके लिए किसी विपत्ति का इंतज़ार कर रहे हैं
कह दो, "प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" (52:30-31)

अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। (5:67)

यदि तुम्हें हमारे पास जो कुछ है उसके विषय में संदेह हो
जो हमारे बन्दे (मुहम्मद) पर नाज़िल हुआ है, तो न्यायपूर्ण न्याय लाओ।
एक सूरा जैसा... यदि आप ऐसा करने में विफल रहते हैं - और आप निश्चित रूप से
असफल... (2:23-24)

... वे कभी भी इसकी लालसा नहीं करेंगे। (2:95)

हम उन्हें अपनी निशानियाँ दिखायेंगे बाहरी दुनिया में भी और उनके अन्दर भी।
यहाँ तक कि उनपर यह स्पष्ट हो जाये कि यह सत्य है। (41:53)

कह दो, "यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर ऐसा कुछ उत्पन्न करें जो तुम्हारे समान हो।
इस कुरान के समान वे कभी भी कुछ नहीं लिखेंगे, भले ही वे
एक दूसरे का समर्थन किया। (17:88)

परमेश्वर ऐसे लोगों को लाएगा जिन्हें वह प्यार करता है और जो उससे प्यार करते हैं, उनके प्रति विनम्र हैं
विश्वासी, अविश्वासियों के विरुद्ध शक्तिशाली और प्रतिष्ठित, (लोग) जो प्रयास करते हैं
अल्लाह के मार्ग में लगे रहो और किसी निंदक की निंद से न डरो। (5:54)

कह दो, "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है। वह तुम्हें अपना मार्ग दिखा देगा।"
ये निशानियाँ हैं और तुम उन्हें पहचान लोगे। (27:93)

कह दो, "वह अत्यन्त दयावान है। हम उसपर ईमान लाए और उसी पर भरोसा रखते हैं।"
हमारा पूरा भरोसा आप पर है। निश्चय ही, आप जल्द ही जान जाएँगे कि कौन स्पष्ट रूप से ग़लती कर रहा है।”
(67:29)

तुममें से जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह ने वादा किया है कि
वह उन्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाएगा, जिस प्रकार उसने उन लोगों को बनाया था।
वही गुण) जो उनसे पहले उत्तराधिकारी थे, और वह
उनके लिए उनका धर्म स्थापित कर, जिसे अल्लाह ने उनके लिए स्वीकार कर लिया है, और
वह उनके वर्तमान भय की स्थिति को सुरक्षा से बदल देगा। (24:55)

इन आयतों में की गई सभी भविष्यवाणियाँ सच हुईं। इसलिए यदि कोई व्यक्ति वह सबसे गंभीर आलोचनाओं और आपत्तियों का विषय है, जिसमें एक भी गलती है अपने उद्देश्य की असफलता की ओर ले जाने वाला, वह इतनी निःसंकोच भविष्यवाणियां करता है और इतने आत्मविश्वास से और इतने गंभीर तरीके से कि इससे बिना किसी संदेह के पता चलता है कि वह वह अपने बारे में नहीं बल्कि अपने शाश्वत गुरु से जो प्राप्त करता है उसके बारे में बोलता है।

तीसरा पहलू: यह उससे संबंधित है जो कुरान अदृश्य के बारे में कहता है, ईश्वरीय सत्य और परलोक की वास्तविकताएँ। सृष्टि के कुछ सत्य भी इस श्रेणी में विचार किया जा सकता है।

ईश्वरीय सत्यों और उसके कथनों के बारे में कुरान की व्याख्या सृष्टि की वास्तविकताओं के बारे में जो सृष्टि के रहस्य को सुलझाती हैं और उजागर करती हैं ब्रह्मांड के ताबीज अदृश्य के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी में से एक हैं। क्योंकि मानवता सीधी दिशा में आगे नहीं बढ़ सकती गुमराही के रास्तों से गुजरते हुए अदृश्य सत्य या वास्तविकता तक पहुँचें। दर्शनशास्त्र और वैज्ञानिकों के बीच अंतहीन मतभेद यह दर्शाते हैं कि यहां तक कि उनके महानतम प्रतिभाशाली लोग भी इनमें से सबसे छोटे सत्य की खोज नहीं कर सकते बिना किसी सहायता के तर्क करना। अपनी आत्माओं को शुद्ध करने, अपने दिलों को परिष्कृत करने, अपनी आत्माओं को विकसित करने और अपनी बुद्धि को परिपूर्ण करने के बाद ही मानवता समझ सकती है और उन सच्चाइयों और वास्तविकताओं को स्वीकार करें, और फिर कहें: "ईश्वर कुरान को आशीर्वाद दे।"

इस बिंदु को ग्यारहवें वचन में आंशिक रूप से समझाया गया है। परलोक की घटनाएँ, स्थितियाँ, परिस्थितियाँ और चरण, जिनमें जीवन भी शामिल है कब्र को कोई भी व्यक्ति स्वयं नहीं खोज सकता और न ही देख सकता है। हालाँकि, कुरान के माध्यम से उन्हें समझा और समझा जा सकता है। प्रकाश, मानो उन्हें स्पष्ट रूप से देख और देख रहा हो। आप दसवीं का संदर्भ ले सकते हैं शब्द, जिसमें चर्चा की गई है कि कुरान की व्याख्या कितनी सही और सत्य है परलोक की वह अदृश्य दुनिया।

दूसरी चमक: यह कुरान की ताज़गी से संबंधित है, जो कि इसे ऐसे बनाए रखा गया है मानो यह हर युग में नए सिरे से प्रकट हुआ हो। एक शाश्वत प्रवचन के रूप में सभी मनुष्यों को संबोधित करते हुए चाहे समय या स्थान और स्तर कुछ भी हो समझ, इसमें कभी न मिटने वाली ताज़गी होनी चाहिए - और है भी।

कुरान हर नई पीढ़ी को इतना प्रभावित करता है कि हर कोई इसे स्वयं के प्रति प्रकट होने तथा उससे निर्देश प्राप्त करने के रूप में। मानव शब्द और कानून पुराने हो जाते हैं और इसलिए उन्हें संशोधित या बदलने की आवश्यकता होती है। कुरान के नियम और सिद्धांत इतने स्थापित और स्थिर हैं, इतने सुसंगत हैं मानव स्वभाव और सृष्टि के अपरिवर्तनीय नियमों के साथ, समय के बीतने का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके बजाय, यह कुरान की सच्चाई को दर्शाता है, वैधता, और बल और भी स्पष्ट रूप से! विशेष रूप से इस बीसवीं सदी के लोग, जिनमें विशेष रूप से इसके पुस्तक के लोग शामिल हैं,[142] जो इस पर भरोसा करते हैं किसी भी पूर्ववर्ती लोगों की तुलना में खुद पर अधिक निर्भरता रखते हैं और अपने को बंद कर लेते हैं जो लोग क़ुरआन की पुकार को सुनते हैं, उन्हें मार्गदर्शन के लिए क़ुरआन की पुकार की सबसे अधिक आवश्यकता है इस वाक्य की शुरुआत इस प्रकार होती है: ऐ किताब वालों। चूँकि इस वाक्य का अर्थ भी है “ऐ लोगों स्कूली शिक्षा और शिक्षा का," ऐसा लगता है जैसे वे संदेश निर्देशित थे

[142] यहूदी और ईसाई. (ट्र.)

अपनी पूरी ताकत और ताज़गी के साथ, क़ुरआन पूरी दुनिया को यह पुकार सुनाता है: कहो: “ऐ किताब वालों!

आओ, हमारे और तुम्हारे बीच एक बात समान है कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न किसी को उसका साझी ठहराएँ और न हममें से कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी को अपना रब बनाए।" (3:64)

आधुनिक सभ्यता, जो मानवीय विचारों और शायद जिन्न की उपज है, ने कुरान से मुकाबला करने का फैसला किया है, जो आज तक कोई नहीं कर पाया। यह अपने आकर्षण और "जादू" के माध्यम से इसकी चमत्कारिकता का खंडन करने की कोशिश करता है। इस नए, भयानक प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ कुरान की चमत्कारिकता या अद्वितीयता को साबित करने के लिए, और इसकी चुनौती की पुष्टि करने के लिए: कहो: "अगर इंसान और जिन्न इस कुरान की तरह कुछ बनाने के लिए एक साथ आ जाएं, तो वे कभी भी इसके जैसा कुछ नहीं बना पाएंगे, भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करते हों" (17:88), मैं आधुनिक सभ्यता के बुनियादी सिद्धांतों और नींव की तुलना कुरान से करूंगा।

प्रथम, प्रथम वचन से लेकर इस पच्चीसवें वचन तक प्रस्तुत सभी तुलनाएं और मानदंड, तथा उनमें निहित सत्य और आयतें जिन पर वे आधारित हैं, वे कुरान की चमत्कारिकता और आधुनिक सभ्यता पर उसकी निर्विवाद श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं।

दूसरा, जैसा कि द ट्वेल्थ वर्ड में दृढ़तापूर्वक तर्क दिया गया है: अपने दर्शन के कारण, आधुनिक सभ्यता सामाजिक जीवन में बल या शक्ति को आधार मानती है, और स्वार्थ की प्राप्ति उसका लक्ष्य है। यह मानती है कि जीवन का सिद्धांत संघर्ष है। एक समुदाय और समुदायों के सदस्यों के बीच एकजुटता का बंधन जाति और आक्रामक राष्ट्रवाद है; और इसका अंतिम उद्देश्य शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि और मानवीय आवश्यकताओं की निरंतर वृद्धि है। हालाँकि, बल आक्रामकता को बुलाता है, स्वार्थ की तलाश भौतिक संसाधनों के लिए लड़ाई का कारण बनती है, जो सभी इच्छाओं की संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं है; और संघर्ष कलह लाता है। नस्लवाद दूसरों को निगलकर पोषण करता है, जिससे आक्रामकता का मार्ग प्रशस्त होता है। आधुनिक सभ्यता के इन सिद्धांतों के कारण ही इसके सभी सकारात्मक पहलुओं के बावजूद, यह मानवता के केवल बीस प्रतिशत लोगों को किसी प्रकार की सतही खुशी प्रदान करने में सक्षम है और अस्सी प्रतिशत को संकट और गरीबी में डाल दिया है।

जहाँ तक कुरान की बुद्धि का सवाल है, यह सामाजिक जीवन में शक्ति को नहीं, बल्कि न्याय को आधार मानता है। इसका लक्ष्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है, न कि स्वार्थ की पूर्ति। इसका जीवन सिद्धांत संघर्ष नहीं, बल्कि आपसी सहायता है। यह केवल धर्म, पेशे और देश के सामुदायिक बंधनों को स्वीकार करता है। इसका अंतिम उद्देश्य शारीरिक इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को श्रेष्ठ विषयों की ओर प्रेरित करना है, हमारी उच्च भावनाओं को संतुष्ट करना है ताकि हम मानवीय पूर्णता और सच्ची मानवता के लिए प्रयास करें। न्याय एकता की मांग करता है, सद्गुण एकजुटता लाते हैं, और आपसी सहायता का अर्थ है एक-दूसरे की मदद करने के लिए तत्पर होना। धर्म भाईचारे को सुरक्षित रखता है-

हुड, बहनापा और सामंजस्य। हमारी शारीरिक आत्मा और इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को पूर्णता की ओर प्रेरित करने से इस संसार और परलोक में खुशी मिलती है।

इस प्रकार, पूर्ववर्ती ईश्वरीय धर्मों और विशेष रूप से कुरान से उधार लिए गए धर्मों के बावजूद, जो इसके सुखद पहलुओं के लिए उत्तरदायी हैं, आधुनिक सभ्यता कुरान का कोई व्यवहार्य विकल्प प्रस्तुत नहीं कर सकती।

तीसरा, मैं कुरान के कई विषयों और आदेशों के कुछ उदाहरण दूंगा। चूँकि इसके नियम और सिद्धांत समय और स्थान से परे हैं, इसलिए वे
वे हमेशा ताजा और मजबूत रहते हैं। उदाहरण के लिए, इसके बावजूद
धर्मार्थ संस्थाएं, बौद्धिक और नैतिक प्रशिक्षण संस्थान, और
कठोर अनुशासन, कानून और नियम के बावजूद आधुनिक सभ्यता
निम्नलिखित दो मामलों में भी बुद्धिमान कुरान का मुकाबला करने में असमर्थ है और
इससे पराजित हुए: पहली

तुलना: निर्धारित प्रार्थना का भुगतान करें, और ज़कात का भुगतान करें
(2:43) और अल्लाह ने व्यापार को हलाल और ब्याज और ब्याज को हराम ठहराया है ।
(2:275) जैसा कि मेरी इशारतुल-एजाज़ में बताया गया है, कि सभी क्रांतियों का मूल यही है
और भ्रष्टाचार एक मुहावरा है, इसलिए यह सभी बुराइयों का कारण और स्रोत है
नैतिक असफलताओं में भी एक मुहावरा है: पहला है: "मैं पूर्ण हूँ, तो इससे मुझे क्या लेना-देना है अगर
दूसरे भूख से मरते हैं?" और दूसरा: "तुम काम करते हो ताकि मैं खा सकूँ।"

शांतिपूर्ण सामाजिक जीवन अभिजात वर्ग (अमीर) के बीच संतुलन पर निर्भर करता है
और आम (गरीब) लोग। यह संतुलन पूर्व की देखभाल और
करुणा और दूसरे का सम्मान और अनुपालन। पहले दृष्टिकोण की अनदेखी करने से अमीर लोग गलत काम, हड़पना, अनैतिकता और निर्दयता की ओर बढ़ते हैं; दूसरे दृष्टिकोण की अनदेखी करने से गरीब लोग घृणा, दुर्भावना, ईर्ष्या,
और अमीरों के साथ संघर्ष। चूंकि इस संघर्ष ने सामाजिक शांति को नष्ट कर दिया है
पिछली दो या तीन शताब्दियों में, इसने यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल भी पैदा की है
श्रम और पूंजी के बीच संघर्ष के कारण.

इसके सभी धर्मार्थ समाजों, नैतिक प्रशिक्षण संस्थानों और
कठोर कानून और नियम, आधुनिक सभ्यता में न तो सामंजस्य है और न ही
न तो इन दो सामाजिक वर्गों ने मानव जीवन के उन दो गंभीर घावों को ठीक किया।
हालाँकि, कुरान पहले दृष्टिकोण को मिटा देता है और उसके घावों को ठीक करता है
ज़कात के माध्यम से , और ब्याज पर प्रतिबंध लगाकर दूसरे को खत्म कर देता है
सूदखोरी। उपर्युक्त कुरान की आयत दुनिया के दरवाजे पर खड़ी है
और ब्याज और सूदखोरी से कहता है: "आपको प्रवेश करने की मनाही है!" यह आदेश देता है
मानवता, "यदि आप संघर्ष का द्वार बंद करना चाहते हैं, तो हित का द्वार बंद करें
और सूदखोरी," और अपने छात्रों को इस मार्ग से प्रवेश न करने का आदेश देता है।

दूसरी तुलना: आधुनिक सभ्यता बहुविवाह को नासमझी मानकर खारिज करती है और
सामाजिक जीवन के लिए हानिकारक। वास्तव में, भले ही विवाह का उद्देश्य यौन संतुष्टि हो, लेकिन बहुविवाह इसे प्राप्त करने का एक वैध तरीका होगा।

लेकिन जैसा कि जानवरों और पौधों में भी देखा गया है, यौन संबंधों का मूल उद्देश्य और बुद्धिमत्ता प्रजनन है। परिणामी आनंद इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए ईश्वरीय दया द्वारा निर्धारित एक छोटा सा भुगतान है। इस प्रकार, जैसा कि विवाह है
प्रजातियों के प्रजनन और स्थायित्व के लिए, जन्म देने में सक्षम होना
ज्यादातर साल में एक बार, केवल आधे महीने के दौरान गर्भवती होने के लिए, और पचास के आसपास रजोनिवृत्ति में प्रवेश करने के लिए, एक महिला आमतौर पर एक आदमी के लिए पर्याप्त नहीं है,
जो कभी-कभी सौ साल की उम्र तक भी गर्भवती रह सकती है।
क्यों, अधिकांश मामलों में, आधुनिक सभ्यता को सहन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है
वेश्यावृत्ति के अनेक घर.

तीसरी तुलना: आधुनिक सभ्यता कुरान की इस बात के लिए आलोचना करती है कि
महिला को विरासत का एक तिहाई हिस्सा (अपने भाई के हिस्से का आधा) दिया जाता है जबकि पुरुष को दो तिहाई हिस्सा दिया जाता है। हालाँकि, सामान्य परिस्थितियों पर विचार किया जाता है जब
सामान्य नियम और कानून स्थापित करना। इस मामले में, एक महिला को आमतौर पर एक
पुरुष को उसका भरण-पोषण करना पड़ता है, जबकि पुरुष को आमतौर पर उनमें से किसी एक के साथ रहना पड़ता है
उसे ध्यान रखना चाहिए। इसे देखते हुए, एक महिला के पति को विरासत के उसके हिस्से और उसके भाई के हिस्से के बीच का अंतर पूरा करना होता है।
दूसरी ओर, भाई अपनी विरासत का आधा हिस्सा अपनी पत्नी पर खर्च करेगा
[और बच्चों] को उसकी बहन के हिस्से के बराबर हिस्सा दिया जाए। यही सच्चा न्याय है।

चौथी तुलना: कुरान मूर्तिपूजा को सख्ती से प्रतिबंधित करता है और चित्रों की पूजा की निंदा करता है, जो मूर्तिपूजा की नकल हो सकती है।
हालाँकि, आधुनिक सभ्यता मूर्तिकला और जीवित प्राणियों के चित्रण को अधिक महत्व देती है।
कुरान में इसकी एक खूबी के रूप में निंदा की गई है।
छाया के बिना (जीवित प्राणियों की मूर्तियां और चित्र) या तो एक पालतू-रूपी अत्याचार (पत्थर में दर्शाया गया अत्याचार), मूर्त आडंबर या
ठोस जुनून, जो सभी वासना को उत्तेजित करता है और लोगों को अत्याचार, दिखावे और मनमानी करने के लिए प्रेरित करता है।

दया के कारण कुरान ने महिलाओं को शालीनता का पर्दा पहनने का आदेश दिया है, ताकि उनके प्रति सम्मान बना रहे और उन्हें स्त्री में परिवर्तित होने से रोका जा सके।
कम इच्छा की वस्तुएँ या वासना को उत्तेजित करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुएँ। हालाँकि, आधुनिक सभ्यता ने महिलाओं को उनके घरों से बाहर निकाल दिया है, उनके घूंघट फाड़ दिए हैं, और
मानवता को भ्रष्ट कर रहा है। पारिवारिक जीवन आपसी प्रेम और सम्मान पर आधारित है
पुरुषों और महिलाओं के बीच, लेकिन अभद्र पोशाक ने सच्चे प्यार को नष्ट कर दिया है
और सम्मान, और पारिवारिक जीवन में जहर घोल दिया। मूर्तियां और चित्र, विशेष रूप से
अश्लील लोगों का इस नैतिक भ्रष्टाचार और आध्यात्मिक में बड़ा हिस्सा है
पतन। जैसे किसी खूबसूरत महिला की लाश को देखना
वासना और इच्छा के साथ दया का पात्र है नैतिकता को नष्ट करता है, जीवित महिलाओं की तस्वीरों को वासनापूर्ण तरीके से देखता है, जो छोटी लाशों, परेशानियों और
उन्नत मानवीय भावनाओं को विचलित, हिला देता है और नष्ट कर देता है।

अंत में, इस पुस्तक में सभी लोगों के लिए खुशी सुनिश्चित करने के अलावा, दुनिया में, कुरान की आज्ञाएँ उनकी शाश्वत खुशी की सेवा करती हैं। आप कर सकते हैं अन्य मामलों की तुलना उल्लेखित मामलों से करें।

जिस प्रकार आधुनिक सभ्यता कुरान के नियमों के आगे पराजित हो गई है सामाजिक जीवन और मानवता के लिए सिद्धांत और सिद्धांत, और दिवालिया होने से पहले कुरान की चमत्कारी सामग्री, तथा अब तक लिखे गए शब्द, मुख्यतः ग्यारहवीं और बारहवीं, दर्शाती है कि यूरोपीय दर्शन और विज्ञान, उस सभ्यता की आत्मा, दुनिया के सामने असहाय हैं।
कुरान की बुद्धिमत्ता। इसके अलावा, जब कुरान की साहित्यिक खूबियों की तुलना की जाती है - जिसकी तुलना एक उच्च प्रेमी के उत्थानशील गीतों से की जा सकती है
अस्थायी अलगाव से लेकर अपने दर्शकों को विजय और महान बलिदान के लिए प्रोत्साहित करने वाले वीर महाकाव्यों तक - आधुनिक सभ्यता का साहित्य और बयानबाजी
एक अनाथ की हताश, दुःखी चीख या एक शराबी की आवाज के रूप में प्रकट होते हैं।

साहित्य और बयानबाजी की शैलियाँ दुःख या खुशी को जन्म देती हैं। दो तरह की होती है: या तो यह अकेलेपन और किसी भी तरह की सुरक्षा और सहायता की कमी की भावना से आती है, या फिर अपने प्रियजन से अलग होने की भावना से। पहली निराशा की भावना है और आधुनिक गुमराह प्रकृतिवादी, और असावधान सभ्यता द्वारा उत्पादित। दूसरा उदात्त और उत्साहवर्धक है, तथा आशा और उत्सुकता जगाता है। पुनर्मिलन। यह वह प्रकार है जो मार्गदर्शक, प्रकाश फैलाने वाले कुरान द्वारा दिया गया है।

आनंद भी दो तरह का होता है। पहला आत्मा को पशुवत इच्छाओं (तथाकथित "ललित" कला, नाटक और सिनेमा आदि) के लिए उकसाता है। दूसरा शारीरिक इच्छाओं को रोकता है आत्मा और मानव हृदय, आत्मा, बुद्धि, और सभी आंतरिक इंद्रियों और क्षमताओं को (एक सभ्य, निर्दोष तरीके से) उच्च चीजों और भगवान के साथ पुनर्मिलन के लिए प्रेरित करता है। मूल, शाश्वत निवास और उन मित्रों के साथ जो पहले ही गुजर चुके हैं। कुरान की चमत्कारिक व्याख्या स्वर्ग, शाश्वत खुशी और ईश्वर के दर्शन तक पहुंचने की उत्सुकता जगाकर इस आनंद को प्रोत्साहित करती है।

इस प्रकार इसमें गहन अर्थ और महान सत्य निहित है: कहो: "यदि
यदि मानवता और जिन्न एक साथ मिलकर इस कुरान जैसी पुस्तक का निर्माण कर लेते, तो वे ऐसा कर सकते थे।
ऐसा कभी नहीं होगा, भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करते हों" (17:88), ऐसा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं
दावा करना, अतिशयोक्ति है। यह शुद्ध सत्य और वास्तविकता है, जो लंबे इतिहास में है इस्लाम ने सिद्ध कर दिया है। यहाँ चुनौती के दो मुख्य पहलू हैं पहलुओं में से एक यह है कि कोई भी मानव या जिन्न कार्य सदृश या बराबर नहीं हो सकता कुरान की शैली, वाक्पटुता, बयानबाजी, शब्दांकन, व्यापकता, संक्षिप्तता और गहनता। न ही उनके सबसे सुंदर और वाक्पटु शब्द, सभी उनके सबसे सक्षम प्रतिनिधियों द्वारा एक खंड में व्यवस्थित, बराबर कुरान। दूसरा पहलू यह है कि सभी मानव और जिन्न सभ्यताएं, दर्शन, साहित्य और कानून, जो विचार और जिन्न की उपज हैं।

मानवता और जिन्न और यहां तक कि शैतानों के प्रयास, धुंधले और असहाय हैं
जब कुरान की आज्ञाओं, ज्ञान और वाक्पटुता का सामना होता है।

तीसरी चमक: बुद्धिमान कुरान सभी लोगों को संबोधित करता है, चाहे वे किसी भी धर्म के हों। समय, स्थान या समझ के स्तर को पहचानता है, और उन्हें बुलाता है और उन्हें इसके बारे में सिखाता है विश्वास, उच्चतम और सबसे गहन विज्ञान, और ईश्वर के ज्ञान के बारे में, ज्ञान की सबसे व्यापक और सबसे ज्ञानवर्धक शाखा, और कानूनों के बारे में इस्लाम का विज्ञान सबसे महत्वपूर्ण और विस्तृत है। इसलिए इसे प्रत्येक समूह और स्तर को उचित तरीके से सिखाएँ। चूँकि लोग बहुत विविधता के कारण, कुरान में उन सभी के लिए पर्याप्त स्तर होना चाहिए। आप संदर्भ ले सकते हैं पहले दिए गए उदाहरणों से अलग। यहाँ मैं केवल कुछ विशेष उदाहरणों की ओर ध्यान दिलाऊँगा बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करें तथा उसमें कुछ कक्षाओं की समझ का उल्लेख करें।

सूरतुल इखलास से :

> वह न तो जन्मा है, न ही उसका जन्म हुआ था। और वहाँ उसके बराबर कोई नहीं है
> कोई नहीं है.. (112:3-4)

साधारण लोग, मानवता का बहुमत, यह समझता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर भगवान के कोई माता-पिता, बच्चे, पत्नियाँ या बराबरी के लोग नहीं हैं।
उच्च स्तर की समझ यह निष्कर्ष निकालेगी कि ये आयतें यीशु के (ईसाइयों द्वारा) कथित दिव्य पुत्रत्व और ईश्वरत्व, और यीशु की दिव्यता को अस्वीकार करती हैं।
स्वर्गदूत और सभी प्राणी जो जन्म देते हैं और जन्म लेते हैं। अब, चूँकि एक को अस्वीकार कर दिया गया है नकार या असंभवता बेकार है, वाक्पटुता के विज्ञान के अनुसार, इसका एक और महत्वपूर्ण, उपयोगी अर्थ होना चाहिए। चूंकि ईश्वर नहीं करता
पैदा हुआ और पैदा नहीं हुआ, इस अस्वीकृति को एक और उद्देश्य पूरा करना चाहिए:
जिसके पास माता-पिता, बच्चे और समान लोग हों, वह ईश्वर नहीं हो सकता और इसलिए पूजा के पात्र हैं। यही एक कारण है कि सूरतुल-इखलास, जिसमें से उपरोक्त श्लोक उद्धृत हैं, जो सभी व्यक्तियों के लिए हर समय बहुत उपयोगी हैं।

जिनकी समझ अधिक है वे इसका अर्थ निकालते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर सृष्टि के साथ उन सभी रिश्तों से मुक्त है जो यह सुझाव देते हैं पैदा करना और पैदा होना, और उसका कोई साझीदार, सहायक या साथी देवता नहीं है। वह सृष्टिकर्ता है, और बाकी सब और हर कोई सृजित है। ईश्वर जो चाहता है और जिस तरह से और जिस आदेश से चाहता है, उसे बनाता है

"हो जाओ! और यह हो जाता है।" वह हर गुण और रिश्ते से पूरी तरह मुक्त है
यह विवशता या बाध्यता तथा अनिच्छुक कार्य का संकेत देता है, और इसलिए पूर्णता के विपरीत है।

समझ के उच्च स्तर वाला एक अन्य समूह यह निष्कर्ष निकालता है इसका अर्थ है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर शाश्वत है, उसका न आरंभ है, न अंत, और वह प्रथम और अंतिम। उसके अस्तित्व, गुणों या कार्यों में उसके समान कोई नहीं है, न ही कोई सहकर्मी, न ही कोई पसंद करने वाला, न ही कोई ऐसा व्यक्ति है जो उसके समान हो या न ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो उसके जैसा हो। हालाँकि, उसके कार्यों को बनाने के लिए

यद्यपि यह बात समझ में आती है, लेकिन कुरान हमें उचित तुलना करने की अनुमति देता है। आप इन समझों से उन प्रतिष्ठित लोगों के शेयरों की तुलना कर सकते हैं ईश्वर के ज्ञान से युक्त, ईश्वर के परम प्रेमी, तथा अत्यन्त सत्यनिष्ठ, परिश्रमी विद्वान.

सूरतुल-अहज़ाब से :

मुहम्मद तुम्हारे किसी आदमी का पिता नहीं है। (33:40)

आम लोग समझते हैं कि ज़ैद, अल्लाह के रसूल का बन्दा और जिसे उसने अपने बेटे के रूप में गोद लिया था, उसने अपनी पत्नी ज़ैनब को तलाक दे दिया क्योंकि वह उसने उसे अपने से श्रेष्ठ गुण वाला पाया। ईश्वर के आदेश से, ईश्वर के रसूल फिर उससे शादी कर ली। इसलिए आयत कहती है: "अगर पैगंबर तुम्हें 'बेटा' कहते हैं, तो यह मैसेंजर के रूप में उनके मिशन की वजह से ऐसा हुआ है। जैविक रूप से, वह किसी भी बच्चे का पिता नहीं है आपके आदमियों का, जो उसे आपकी विधवाओं में से किसी से शादी करने से रोकेगा।"

दूसरा समूह इस अर्थ को निकालता है: "एक वरिष्ठ अपने विषयों के साथ व्यवहार करता है पिता समान देखभाल और करुणा के साथ। यदि वह श्रेष्ठ व्यक्ति सांसारिक शासक और एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक, उसकी करुणा एक पिता की तुलना में कहीं अधिक होगी, और उसकी प्रजा उन्हें वास्तविक पिता मानती है।" चूँकि इससे लोगों को पैगम्बर को देखने में कठिनाई हो सकती है, जिन्हें वे एक पिता से अधिक पितातुल्य मानते हैं।
पिता को अपनी महिलाओं का पति मानते हुए, कुरान इस दृष्टिकोण को सही करता है: " पैगम्बर आप पर ईश्वरीय दया की दृष्टि से विचार करते हैं और आपके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। पिता जैसा व्यवहार। उनके मिशन के दृष्टिकोण से आप उनके बच्चों की तरह हैं। लेकिन वह आपके जैविक पिता नहीं हैं, इसलिए यह उनके लिए अनुचित होगा तुम्हारी किसी स्त्री से विवाह करने के लिए।"

एक तीसरा समूह यह समझता है कि केवल उनके संबंध के कारण पैगंबर के साथ-साथ उनकी परिपूर्णताओं और पितातुल्य करुणा पर भरोसा करने के कारण, विश्वासी यह विश्वास नहीं कर सकते कि उनका उद्धार सुनिश्चित है, भले ही वे पाप और गलतियाँ करना। (उदाहरण के लिए, कुछ अलावी निर्धारित नमाज़ें नहीं पढ़ते हैं और कहते हैं कि उनकी नमाज़ पहले ही अदा हो चुकी है।143)

चौथा समूह एक भविष्यवाणी का निष्कर्ष निकालता है: पैगंबर, शांति उस पर हो और आशीर्वाद, उसके वंश को आगे बढ़ाने के लिए कोई बेटा नहीं होगा। उसके बेटे मर जाएंगे युवा। जैसा कि पुरुषों द्वारा व्यक्त किया गया है, अर्थात, चूंकि वह पुरुषों का पिता नहीं होगा, वह बेटियों का पिता होगा। इस प्रकार उसकी वंशावली उसकी बेटियों के माध्यम से जारी रहेगी। सारी प्रशंसा ईश्वर की है, उसकी बेटी फातिमा, उसकी दो बेटियों की धन्य संतानें पोते हसन और हुसैन, दो भ्रमों के "प्रकाश देने वाले पूर्णिमा"

143 इसी तरह, ईसाई भी खुद को यह धोखा देते हैं कि यीशु ने उनके उद्धार के लिए खुद को बलिदान कर दिया, और इसलिए वे अपने नेता या मार्गदर्शक की सिद्धियों पर निर्भर रहते हैं और धार्मिक आज्ञाओं का पालन करने में आलसी होते हैं। (ट्र.)

तीन वंश, जैविक रूप से सूर्य पैगंबर की रेखा को जारी रखते हैं
और आध्यात्मिक रूप से। हे ईश्वर, उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद बरसाएँ।

दूसरा प्रकाश

इस दूसरे प्रकाश में तीन किरणें हैं।

प्रथम रे: कुरान पूर्ण प्रवाह, उत्कृष्ट स्पष्टता और

सुदृढ़ता, दृढ़ सुसंगति, तथा सुस्थापित सामंजस्य और अनुपात।
इसके वाक्यों और वाक्यों के बीच मजबूत, पारस्परिक समर्थन और अंतर्संबंध है
उनके भागों, और उसके छंदों और उनके उद्देश्यों के बीच एक उच्च संगति। अरबी भाषाविज्ञान, साहित्य और शब्दार्थ विज्ञान में अज़-ज़माख़शरी, अस-सक्काकी और अब्दुल-क़ाहिर अल-जुरजानी144 जैसे अग्रणी व्यक्ति इस बात की गवाही देते हैं।

इसके अतिरिक्त, यद्यपि सात या आठ कारक प्रवाह, ध्वनि, सुसंगति, सामंजस्य, अनुपात, अंतर्संबंध और अनुरूपता का प्रतिकार करते हैं,
ये कारक कुरान की प्रवाहशीलता, सुदृढ़ता और सुसंगति को समृद्ध करते हैं।
फलदार वृक्ष के तने से निकली शाखाओं और टहनियों की तरह
पेड़ की सुंदरता और वृद्धि को पूरा करने के लिए, ये कारक विवाद का कारण नहीं बनते हैं
कुरान की रचना के सहज सामंजस्य में, बल्कि नए भावों को अभिव्यक्त करें,
समृद्ध और पूरक अर्थ। निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करें:

> हालाँकि कुरान को तेईस वर्षों में भागों में अवतरित किया गया
> विभिन्न आवश्यकताओं और उद्देश्यों के लिए इसमें इतना उत्तम सामंजस्य है कि
> ऐसा लगता है मानो यह सब एक ही बार में प्रकट हो गया हो।
>
> यद्यपि कुरान को तेईस वर्षों में विभिन्न अवसरों पर अवतरित किया गया, फिर भी इसके भाग एक दूसरे के इतने सहायक हैं कि ऐसा लगता है मानो यह एक ही स्थान पर अवतरित हुआ हो।
> एक ही अवसर पर सभी बातें एक साथ उजागर हुईं।
>
> यद्यपि कुरान विभिन्न और बार-बार पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में आया, फिर भी इसके भाग एक-दूसरे से इतने संयुक्त और सामंजस्यपूर्ण हैं कि यह एक-दूसरे से इतना अलग है ...
> ऐसा लगता है जैसे यह एक ही प्रश्न का उत्तर हो।
> यद्यपि कुरान विविध मामलों और घटनाओं का निर्णय करने के लिए आया था, तथापि यह इतना उत्तम क्रम प्रदर्शित करता है कि ऐसा लगता है मानो यह किसी एक मामले या घटना पर दिया गया निर्णय हो।

---

144 अबुल-कासिम जरुल्लाह महमूद इब्न उमर अज़-ज़मखशरी (1075-1144) इनमें से एक थे
कुरान के सबसे प्रसिद्ध व्याख्याकार। वह क्वारज़्म में रहते थे। कुरान की उनकी व्याख्या
अल-कश्शाफ़ नामक कुरान आयतों के गहन भाषाई विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध है। *अबू याकूब
यूसुफ इब्न अबू बक्र अस-सक्काकी (?-1229): मिफ्ताहुल-'उलूम ("विज्ञान की कुंजी") और अल-मिफ्ताह
फ़िन-नह्व वत-तस्रिफ़ वाल-बयान (“व्याकरण, विभक्ति, वाक्यविन्यास और शैली की कुंजी”) हैं
उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है। * अब्दुल-काहिर अल-जुरजानी (मृत्यु, 1079) को के रूप में जाना जाता था
वाक्पटुता के स्वामी। असरारू'ल-बलाघा ("वाक्पटुता के रहस्य") और दलाईलु'ल-इयाज
(“एविडेंस ऑफ़ मिराकुलोनेस”) उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। (अनुवाद)

यद्यपि कुरान ईश्वरीय कृपा से विभिन्न शैलियों में अवतरित हुआ
समझ, मनोदशा और स्वभाव के विभिन्न स्तरों वाले असंख्य लोगों के अनुरूप विविधतापूर्ण, इसके भाग इतनी सुन्दर समानता, संगति और प्रवाह प्रदर्शित करते हैं कि ऐसा लगता है मानो यह समझ और स्वभाव के एक ही स्तर को संबोधित कर रहा हो।

यद्यपि कुरान अनगिनत प्रकार के लोगों से बात करता है,
समय, स्थान और चरित्र में प्रत्येक से, यह इतना आसान रास्ता है
स्पष्टीकरण, शुद्ध शैली और वर्णन का स्पष्ट तरीका ऐसा है मानो
यह एक समरूप समूह को संबोधित कर रहा था, जिसमें प्रत्येक समूह अलग था
यह सोचकर कि इसे विशिष्ट और विशिष्ट रूप से संबोधित किया जा रहा है।
यद्यपि कुरान को विभिन्न लोगों के क्रमिक मार्गदर्शन के लिए विभिन्न उद्देश्यों से अवतरित किया गया था, फिर भी इसमें इतनी पूर्णता, संवेदनशीलता का संतुलन और सुन्दर व्यवस्था है कि ऐसा लगता है मानो यह पवित्र पुस्तक है।
केवल एक ही उद्देश्य का पीछा कर रहे थे.

भ्रम के कारण होने के बावजूद, ये कारक कुरान की व्याख्याओं की चमत्कारिकता और इसकी शैली और सामंजस्य की प्रवाहशीलता को बढ़ाते हैं।
कोई भी व्यक्ति जिसका हृदय स्वस्थ है, विवेक अच्छा है, तथा रुचि अच्छी है, वह देख सकता है कि
सुंदर प्रवाह, उत्तम अनुपात, सुखद सामंजस्य, तथा इसकी व्याख्याओं में बेजोड़ वाक्पटुता। दृष्टि और अंतर्दृष्टि की सुदृढ़ शक्ति वाला कोई भी व्यक्ति
वह देखता है कि कुरान में एक आँख है जिससे वह पूरे ब्रह्माण्ड को देख सकता है,
इसके आंतरिक और बाहरी आयाम, एक पृष्ठ की तरह और सभी अर्थों को पढ़ने के लिए
इसमें निहित है। चूँकि इस सत्य को समझाने के लिए मुझे कई खण्डों की आवश्यकता होगी
उदाहरणों के लिए कृपया मेरे इशारतुल-एजाज़ और अब तक लिखे गए शब्दों का संदर्भ लें।

दूसरी किरण: यह कुरान के चमत्कारी गुणों से संबंधित है जो इसकी आयतों के अंतिम भागों और इसकी अद्वितीय शैली के माध्यम से प्रदर्शित होते हैं।

इसकी कई आयतों के समापन में परमेश्वर के सुन्दर नामों का प्रयोग किया गया है।

नोट: इस किरण में कई श्लोक हैं जो इसके उदाहरण के रूप में काम करते हैं
किरण के साथ-साथ अन्य पहले से चर्चित मामलों के लिए भी। चूंकि यह
इसलिए इन्हें समझाना बहुत लम्बा होगा, मैं इन पर संक्षेप में चर्चा करूंगा।

कुरान की आयतें आम तौर पर कुछ दिव्य संकेतों के साथ समाप्त होती हैं
सुंदर नाम या वाक्यांश जो कुरान के मुख्य उद्देश्यों के बारे में उनका सारांश या व्यापक, सामान्य सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं। ये निर्णायक भाग कभी-कभी आयतों की पुष्टि करते हैं, या मन को चिंतन के लिए प्रेरित करते हैं। इसे देखते हुए, ये
कुछ भागों में कुरान की उच्च बुद्धिमता के अंश हैं, पानी की बूंदें
ईश्वरीय मार्गदर्शन के जीवन की, या कुरान की चमत्कारिकता की बिजली की चिंगारियाँ।

मैं असंख्य निशानों में से केवल दस पर ही संक्षेप में चर्चा करूंगा, और केवल उनका ही उल्लेख करूंगा प्रत्येक ट्रेस के कई पहलुओं के कई उदाहरणों में से एक। मैं एक संक्षिप्त विवरण संलग्न करूँगा प्रत्येक उदाहरण में निहित अनेक सत्यों में से किसी एक के अर्थ का कथन। अधिकांश अंश अधिकांश छंदों में एक साथ पाए जाते हैं और एक वास्तविक सत्य बनाते हैं
चमत्कारिकता का डिज़ाइन। उदाहरण के तौर पर दिए जाने वाले ज़्यादातर श्लोक भी
अधिकांश अंशों के लिए उदाहरण दिए गए हैं। पिछले वचनों में उल्लिखित आयतों के संबंध में, मैं यहाँ उद्धृत आयतों के अर्थों का संक्षिप्त संदर्भ दूँगा।

वाकपटुता का पहला गुण: अपनी चमत्कारिक अभिव्यक्ति के साथ, कुरान सर्वशक्तिमान रचयिता के कार्यों को हमारी आंखों के सामने उजागर करता है। फिर या तो ईश्वरीय नाम या उनसे उत्पन्न नामों के साथ समाप्त होता है कार्य और कर्म या कुरान के एक आवश्यक उद्देश्य के प्रमाण के साथ (जैसे, ईश्वरीय एकता या पुनरुत्थान) उदाहरण:

> उसने तुम्हारे लिए धरती में जो कुछ है उसे पैदा किया। फिर उसने तुम्हारी ओर ध्यान दिया।
> और आकाश को बनाया, और उसे सात आकाश बनाए, और वह हर चीज़ का जाननेवाला है (2:29)

यह श्लोक किसी विशेष परिणाम या महत्वपूर्ण लक्ष्य की ओर ले जाने वाले सबसे व्यापक कार्यों से संबंधित है, जो सभी ईश्वरीय कृपा की गवाही देते हैं।
ज्ञान और शक्ति, उनके उद्देश्यों और संगठनों के साथ, और
“सर्वज्ञ” नाम के साथ समाप्त होता है।

> क्या हमने धरती को पालना और पहाड़ों को मस्तूल नहीं बनाया?
> और हमने तुमको जोड़े-जोड़े पैदा किये हैं... निश्चय ही क़यामत का दिन है
> और भेद एक नियत समय है (76:6-8, 17)।

यह श्लोक सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महान कार्यों और जबरदस्त कामों का उल्लेख करता है और इसका समापन पुनरुत्थान दिवस (प्रलय दिवस) के साथ होता है।

वाक्पटुता का दूसरा बिंदु: कुरान ईश्वरीय कार्यों को बताता है प्रत्येक कार्य के मूल में ईश्वरीय नाम निर्दिष्ट किए बिना आंखों के सामने कला, और नामों का एक साथ उल्लेख करके या उनका उल्लेख करके समाप्त होता है और बुद्धि के लिए उनके अर्थ। उदाहरण के लिए:

> कह दो, "आकाश और धरती से तुम्हें रोज़ी कौन देता है, या
> वह सब सुनने और देखने का स्वामी है; और जो जीवितों को जन्म देता है
> मरे हुओं और जीवितों में से मरे हुओं को; जो सब पर शासन करता है और सबका निर्देशन करता है
> वे कहेंगे, "हे ईश्वर!" फिर कहो, "तो क्या तुम अपने पापों का बदला नहीं लेते?"
> उसके प्रति श्रद्धा में तुम्हारा कर्तव्य क्या है? वह परमेश्वर है, तुम्हारा प्रभु,
> परम सत्य।” (10:31-32)

शुरुआत में, यह पूछता है: "किसने स्वर्ग और पृथ्वी को तैयार किया है?"
पृथ्वी आपके प्रावधान के दो स्रोत हैं, वहां से वर्षा भेजता है और जन्म देता है
यहाँ से अनाज कौन ले सकता है? उसके सिवा और कौन है जो आकाश और पृथ्वी को दो समान रूप से अपने अधीन कर सकता है

आपके प्रावधान का भंडार? ऐसा होने के नाते, प्रशंसा और धन्यवाद केवल उसी के लिए है।

दूसरे भाग में इसका अर्थ है: "तुम्हारी आँखें और कान, जो तुम्हारे शरीर के सबसे कीमती अंग हैं, उनका मालिक कौन है? तुमने उन्हें किस दुकान या कारखाने से खरीदा है? केवल तुम्हारा भगवान ही तुम्हें सुनने और देखने की ये सूक्ष्म शक्तियाँ दे सकता है।
वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, पाला और तुम्हें दिया। इसलिए उसके सिवा कोई रब नहीं और वही इबादत के लायक है।

तीसरे भाग में इसका अर्थ है: "वह कौन है जो मृत पृथ्वी और असंख्य मृत प्रजातियों को पुनर्जीवित करता है? पूरे ब्रह्मांड के निर्माता, सत्य के अलावा कौन ऐसा कर सकता है? जैसे वह पृथ्वी को जीवन देता है, वैसे ही वह तुम्हें भी पुनर्जीवित करेगा और तुम्हें सर्वोच्च न्यायाधिकरण में भेजेगा।"

चौथे भाग में यह स्पष्ट किया गया है: "ईश्वर के अलावा और कौन इस विशाल ब्रह्मांड को एक शहर या महल की तरह पूर्ण व्यवस्था के साथ संचालित और बनाए रख सकता है? चूँकि केवल वही ऐसा कर सकता है, इसलिए ब्रह्मांड और उसके विभिन्न क्षेत्रों को आसानी से नियंत्रित करने वाली शक्ति इतनी परिपूर्ण और अनंत है कि उसे किसी साझेदार या सहायक की आवश्यकता नहीं है। जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, वह छोटे जीवों को दूसरे के हाथों में नहीं छोड़ता। इसलिए आपको ईश्वर को स्वेच्छा से या अनिच्छा से स्वीकार करना चाहिए।"

पहला और चौथा भाग ईश्वर का संकेत देता है, जबकि दूसरा भाग प्रभु का और तीसरा भाग सत्य का संकेत देता है। इससे समझिए कि वह ईश्वर, आपका प्रभु, परम सत्य है। सर्वशक्तिमान ईश्वर के महान कार्यों और उनकी शक्ति के महत्वपूर्ण कार्यों को प्रस्तुत करने के बाद, कुरान ईश्वर, प्रभु और सत्य के नामों का उल्लेख करता है, और इस प्रकार उन कार्यों और कृत्यों की उत्पत्ति की ओर इशारा करता है: ईश्वर, प्रभु, परम सत्य।

> कुरान किस प्रकार मानव बुद्धि को उसके कार्यों पर चिंतन करने तथा उसे पहचानने के लिए प्रेरित करता है, इसका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है:
>
> निस्संदेह आकाशों और धरती की रचना में, रात और दिन के आने-जाने में, मनुष्यों के लाभ के लिए समुद्र में चलने वाले जहाजों में, उस पानी में जिसे ईश्वर ने आकाश से बरसाया और उसके द्वारा धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित किया, तथा उसमें हर प्रकार के जीव-जन्तुओं को फैलाया, हवाओं को चलाया और आकाश और धरती के बीच बादलों को वश में किया, ये सब उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। (2:164)

यह श्लोक ईश्वरीय कला या अभिनय के उन कार्यों का वर्णन करता है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति की पूर्णता और उनके प्रभुत्व की भव्यता को इंगित करते हैं और उनकी एकता की गवाही देते हैं। वे आकाश और पृथ्वी के निर्माण में ईश्वरीय संप्रभुता के प्रकटीकरण और रात और दिन के परिवर्तन में प्रभुत्व की अभिव्यक्ति की ओर ध्यान आकर्षित करके ऐसा करते हैं;

और समुद्र और जहाज को वश में करने में दया की अभिव्यक्ति, जो हैं
मानव सामाजिक जीवन के लिए बहुत उपयोगी; और शक्ति की भव्यता की अभिव्यक्ति
वर्षा भेजकर पृथ्वी और उसके असंख्य प्राणियों को पुनर्जीवित करने में,
इसे पुनरुत्थान और एकत्रीकरण का एक उत्कृष्ट स्थान बनाना; और असंख्य जानवरों को बनाने में शक्ति और करुणा का मानवीकरण
सरल मिट्टी; और चार्ज करने में दया और बुद्धि की अभिव्यक्ति और
पौधों को परागित करने और सजीव प्राणियों को सांस लेने की अनुमति देने के लिए हवाओं का उपयोग करना;
और बादलों को एकत्रित करने और फैलाने में प्रभुत्व की अभिव्यक्ति
(दया का साधन) और उन्हें आकाश और पृथ्वी के बीच लटकाए रखना।

ईश्वरीय कार्यों और अभिव्यक्तियों की गणना करने के बाद
उनके उद्गम नामों का उल्लेख किए बिना, श्लोक समाप्त होता है
...ये उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो तर्क करते हैं और समझते हैं और बुद्धि को प्रेरित करते हैं
उनमें निहित सत्यों पर पूरी तरह से विचार करें।

वाक्पटुता का तीसरा गुण: कभी-कभी कुरान में वर्णन किया गया है
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कार्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है और सारांश के साथ इसका समापन किया गया है। इसमें विस्तृत जानकारी का उपयोग किया गया है
वह विश्वास दिलाने के लिए वर्णन करता है, और फिर उनका सारांश प्रस्तुत करके उन्हें मन पर अंकित कर देता है।

सूरा यूसुफ़ से : अतः

> तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा, और तुम्हें सभी घटनाओं के आंतरिक अर्थ (सपनों की व्याख्या सहित) की शिक्षा देगा, और
> तुम पर और याकूब के परिवार पर अपना अनुग्रह पूरा करें, जैसा कि उसने
> तुम्हारे बापदादों इब्राहीम और इसहाक पर पहले से ही यह काम पूरा हो चुका है।
> हमारा रब सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (12:6)

यह आयत उनके पिता पैगम्बर यूसुफ पर ईश्वरीय आशीर्वाद की ओर इशारा करती है
और पूर्वजों, और कहता है: "उसने आपको (यूसुफ) प्रतिष्ठित किया है
नबियों की शृंखला को अपने साथ जोड़कर, अपने को नबियों की शृंखला बना लिया।
वंश का सबसे सम्मानित और प्रमुख। उसने आपके घर को एक स्थान बनाया है
शिक्षा और मार्गदर्शन जिसमें ईश्वर और दिव्य बुद्धि का ज्ञान होता है
उस ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से आपको सिखाया और संयुक्त किया गया, सौभाग्यशाली
परलोक में अनन्त सुख के साथ संसार की आध्यात्मिक प्रभुता।
वह तुम्हें ज्ञान और बुद्धि से सुसज्जित करेगा और तुम्हें एक प्रतिष्ठित शासक, एक महान पैगम्बर और एक बुद्धिमान मार्गदर्शक बनाएगा।"

इस आयत का निष्कर्ष यह है कि निस्संदेह तुम्हारा रब सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है ।
उन सभी आशीषों और साधनों का सारांश देता है: "उसकी प्रभुता और बुद्धि की आवश्यकता है
कि वह अपने नामों को प्रकट करेगा जो सर्वज्ञ और सर्वज्ञ हैं
तुम्हें ज्ञानी और बुद्धिमान बनाएगा, जैसा उसने तुम्हारे पिता को बनाया था और
पूर्वजों।"

सूरा अल-ए-इमरान से :

कह दो, "ऐ अल्लाह! सारे साम्राज्य के स्वामी! तू किसको साम्राज्य प्रदान करता है?
तू चाहेगा, और जिससे चाहेगा उसका प्रभुत्व छीन लेगा।
तू जिसे चाहे ऊंचा उठाए और जिसे चाहे नीचा दिखाए। तेरे हाथ में है
सब अच्छा है। निश्चित रूप से आपके पास हर चीज पर पूर्ण शक्ति है। आप सब कुछ अच्छा बनाते हैं।
रात दिन में बदल जाती है और तुम दिन को रात में बदल देते हो।
तू मरे हुओं में से जीवितों को और मरे हुओं को भी निकालता है, और
मुर्दों को जीवितों में से निकालो, और जिसे चाहो जीविका प्रदान करो।
बिना माप के।" (3:26-27)

ये आयतें मानवता के सामाजिक जीवन में ईश्वर द्वारा अपने नियमों के क्रियान्वयन की ओर इशारा करती हैं जीवन और ब्रह्मांड। वे इस बात पर जोर देते हैं कि सम्मान और गिरावट, साथ ही धन और गरीबी, सीधे सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा और पसंद पर निर्भर करते हैं। कुछ भी नहीं, यहां तक कि बहुलता के क्षेत्र में सबसे तुच्छ घटनाएं भी, ईश्वरीय इच्छा के क्षेत्र से परे नहीं हैं, और इसलिए वहां संयोग के लिए कोई स्थान नहीं है।

इस आवश्यक सिद्धांत को इंगित करने के बाद, श्लोक पुष्टि करता है कि हमारा प्रावधान, जो इस सांसारिक जीवन में सबसे आवश्यक है, सीधे उत्पन्न होता है सच्चे प्रदाता की दया के खजाने से, और इसका मतलब है: "आपका प्रावधान पृथ्वी की जीवन शक्ति पर निर्भर करता है, जिसका पुनरुद्धार संभव है बसंत ऋतु का आगमन। केवल वही जिसने सूर्य और चंद्रमा को वश में कर लिया है, और रात-दिन बारी-बारी से वसंत ला सकता है। अगर ऐसा है, तो केवल जो पृथ्वी की सतह को फलों से भर देता है, वह किसी को फल दे सकता है। एप्पल को अपनाएं और अपना वास्तविक प्रदाता बनें।"

और तू जिसे चाहे अथाह प्रदान करता है, ये आयतें पहले वर्णित सभी कृत्यों का सारांश प्रस्तुत करती हैं और पुष्टि करती हैं कि जो तुम्हें बिना माप के प्रदान करता है, वही ये सब काम करता है।

वाक्पटुता का चौथा बिन्दु: कभी-कभी कुरान में ईश्वर के नाम का उल्लेख किया गया है। सृष्टि और जीवों को एक निश्चित श्रृंखला में दर्शाकर। यह दर्शाकर कि उनका अस्तित्व है और जीवन को एक उद्देश्यपूर्ण क्रम और संतुलन प्रदान करता है, ऐसा लगता है कि यह उन्हें एक निश्चित चमक और चमक देता है। फिर यह दिव्य नाम या नामों की ओर इशारा करता है उस व्यवस्था की उत्पत्ति, जो दर्पण की तरह, उसे प्रतिबिंबित करती है। यह ऐसा है जैसे कि प्रत्येक उल्लिखित प्राणी एक शब्द था और नाम उन शब्दों के अर्थ थे, या प्रत्येक प्राणी एक फल था और नाम उनके बीज या ठोस पदार्थ थे भागों. उदाहरण के लिए:

सूरतुल-मुमिनुन से :

हमने इंसानियत को मिट्टी से पैदा किया, फिर उसे मिट्टी में बदल दिया।
एक निषेचित अंडाणु एक सुरक्षित स्थान में; फिर हमने निषेचित अंडे से पैदा किया
डिंब में एक थक्का चिपका हुआ (गर्भाशय की दीवार से), और (बाद में क्रम से)
हमने चिपचिपे थक्के से एक ढेला बनाया, और हमने एक ढेला बनाया

हमने हड्डियों को मांस से भर दिया, फिर हमने हड्डियों को मांस से भर दिया।
इसे एक और सृष्टि में विकसित किया। अतः परमेश्वर धन्य और सर्वोच्च है,
वह सृजन करने में सर्वोच्च और धन्य श्रेणी का है। (23:12-14)

कुरान में असाधारण और अद्भुत, सुव्यवस्थित,
मानवता के निर्माण के सुसंगठित चरणों को इस तरह से दर्शाया गया है कि,
यदि दर्पण में देखा जाए, तो परमेश्वर कितना धन्य और सर्वोच्च है, जो सर्वोच्च और सबसे श्रेष्ठ है
इसमें सृजन की धन्य डिग्री देखी जाती है, जिसके परिणामस्वरूप जो कोई भी पढ़ता है या
जो कोई भी इसे सुनता है, वह आशीर्वाद के उसी वाक्य को कहे बिना नहीं रह सकता।
ईश्वर के दूत द्वारा रहस्योद्घाटन को रिकॉर्ड करने के लिए नियुक्त किया गया यह वाक्यांश बोला गया
इससे पहले कि रसूल ने इसे पढ़ा, तो उसे आश्चर्य हुआ कि क्या वह भी
लेकिन वास्तव में, यह छंदों का सही क्रम, सुसंगतता और स्पष्टता थी जिसने उस वाक्यांश को उसके पाठ से पहले ही जन्म दिया।

सूरतुल-अराफ़ से :

तुम्हारा रब वह ईश्वर है, जिसने आकाशों और धरती को छः भागों में पैदा किया।
दिन - फिर खुद को सर्वोच्च सिंहासन पर स्थापित किया, दिन को कवर किया
रात के साथ, एक दूसरे का तेजी से पीछा करते हुए, सूरज के साथ,
चाँद और तारे उसकी आज्ञा से आज्ञाकारी हैं। वास्तव में, सब कुछ उसी का है।
सृष्टि और आज्ञा। धन्य और सर्वोच्च है परमेश्वर, सृष्टि का स्वामी
संसार. (7:54)

यहाँ कुरान ईश्वर की शक्ति और उसके प्रभुत्व की महानता को दर्शाता है।
संप्रभुता इस तरह से कि वह महामहिम में सर्वशक्तिमान है, जो,
प्रभुता के सिंहासन पर "बैठे", सूर्य, चंद्रमा और सितारों को बनाते हैं
उसकी आज्ञाओं का पूर्णतया पालन करें तथा निरन्तर रात-दिन बनाकर
सफेद और काले रिबन या रेखाओं की तरह एक दूसरे का अनुसरण करने के लिए, उसका
ब्रह्मांड के पन्नों पर प्रभुता का चिन्ह। इसलिए, जो कोई भी पढ़ता है या
यह श्लोक सुनने वाले को कहने की उत्सुकता होती है कि हे प्रभु, धन्य है वह परमेश्वर और सर्वोच्च है वह परमेश्वर और सर्वोच्च है
संसारों का। इस प्रकार यह वाक्यांश संदर्भ में पिछली पंक्तियों का सारांश प्रस्तुत करता है, और उनमें निहित सत्यों का सार या बीज या फल है।

वाक्पटुता का पाँचवाँ गुण: कुरान में कभी-कभी कुछ भौतिक या भौतिक चीज़ों या पदार्थों का उल्लेख किया गया है जो विभिन्न गुणों के होते हैं और परिवर्तन और विघटन के अधीन होते हैं। फिर, उन्हें रूपांतरित करने के लिए

स्थिर और अपरिवर्तनीय वास्तविकताओं को, यह उन्हें कुछ सार्वभौमिक और स्थायी दिव्य नामों के साथ जोड़ता है और उनका समापन करता है, या फिर एक सारांश के साथ चिंतन और सबक लेने का आग्रह करता है।

सूरतुल-बक़रा से :

और उसने आदम को सब नाम सिखाए, फिर उसने आदम को सब नाम बताए।
उन्हें फ़रिश्तों के पास भेजा और कहा: "अब मुझे इनके नाम बताओ, अगर

तुम सच कहते हो।" उन्होंने कहा: "आप महान हैं, हमें कोई आपत्ति नहीं है।"
और जो ज्ञान तूने हमें सिखाया है, उसके सिवा और कुछ नहीं। निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।
(2:31-32)

आयतों में सबसे पहले उल्लेख किया गया है कि आदम की स्वर्गदूतों पर श्रेष्ठता इस कारण है
वह ज्ञान जो उसे ईश्वरीय उपहार के रूप में प्राप्त हुआ था, और फिर स्वर्गदूतों की हार का वर्णन करता है
ज्ञान के सम्बन्ध में आदम से पहले। कुरान अपने विवरण का समापन इस प्रकार करता है
इन दो घटनाओं के दो सार्वभौमिक नाम हैं: सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी।
इस प्रकार फ़रिश्ते स्वीकार करते हैं: "चूँकि आप सर्वज्ञ और सर्वज्ञ हैं, आपने आदम को नामों की शिक्षा दी और उसे हमसे श्रेष्ठ बनाया
उस ज्ञान के द्वारा। आप सर्वज्ञ हैं, इसलिए हमें हमारी क्षमता के अनुसार दीजिए और उसे उसकी क्षमता के कारण श्रेष्ठता दीजिए।

सुरतु'न-नहल से :

तुम्हारे लिए चौपायों में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उसमें से पिलाते हैं जो चौपायों में है।
उनके पेट गंदगी और खून के बीच, शुद्ध दूध, पीने वालों के लिए मीठा।
तुम खजूर और दाखलताओं के फलों से एक मजबूत पेय लेते हो और
यह एक अच्छी रोज़ी है। इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो बुद्धि से काम लें और
समझो! तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि, "अपने लिए ले लो"
पहाड़ों में रहने की जगह, घर और पेड़, और वे क्या हैं
निर्माण कर रहे हैं। तो हर तरह के फल खाओ और परमेश्वर के बताए मार्ग पर चलो।
तुम्हारे रब पर चलना आसान है।" फिर उनके पेट से एक तरल पदार्थ निकलता है
विभिन्न रंग जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। निश्चय ही इसमें बहुत बड़ी निशानी है
एक ऐसे लोग जो चिंतन करते हैं। (16:66-69)

यह दर्शाने के बाद कि मानवता के लिए, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कुछ बनाए हैं
पशु (भेड़, बकरी, गाय और ऊँट) शुद्ध और स्वादिष्ट दूध के स्रोत;
उसकी कुछ वनस्पतियाँ जैसे खजूर और बेलें
मधुर, सुखद और स्वादिष्ट उपहार; और उसकी शक्ति के कुछ चमत्कार
मधुमक्खी की तरह शहद का उत्पादन जिसमें उपचार शामिल है, मानवता से आग्रह करने के लिए
इनके साथ समान उपहारों की तुलना करें और इस प्रकार चिंतन करें और सबक लें, छंद
निष्कर्ष यह है कि इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो सोच-विचार करें।

वाक्पटुता का छठा बिन्दु: कभी-कभी एक पद्य अनेक परिणाम प्रस्तुत करता है
और ईश्वरीय आधिपत्य के आदेशों को एकता के बंधन में बांधता है
एक सार्वभौमिक सिद्धांत सम्मिलित करता है।

सूरतुल-बक़रा से :

हे ईश्वर, उसके अतिरिक्त कोई भी ईश्वर नहीं है, वह सर्वव्यापक है, स्वयंभू है।
न तो उसे नींद आती है, न ही नींद। जो कुछ भी है, वह सब उसका है।
आकाश और धरती की सारी चीज़ें। कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उससे सिफ़ारिश करे? वह जानता है जो कुछ पहले हुआ है
उन्हें (समय और स्थान में) और उनके पीछे क्या है (समय और स्थान में),

और वे उसके ज्ञान में से कुछ नहीं समझते, परन्तु वही जिसे वह चाहता है।
उसका आसन आकाश और पृथ्वी को समेटे हुए है, और उसका संरक्षण
वह उन्हें थका नहीं सकता, वह सर्वोच्च, प्रभुत्वशाली है। (2:255)

दस तरीकों से दिव्य एकता साबित करने के साथ-साथ, यह श्लोक, जिसे 'परमात्मा' कहा जाता है, दिव्य एकता को प्रमाणित करता है। (सर्वोच्च) आसन की आयत, ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने को अस्वीकार और खंडन करती है इस प्रश्न के साथ: ऐसा कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उससे मध्यस्थता करेगा? इसके अलावा, चूँकि इस श्लोक में परमेश्वर का महानतम नाम प्रकट होता है, इसलिए परमेश्वर के पास प्रार्थना करने का कोई कारण नहीं है। इसमें ईश्वरीय सत्यों से संबंधित जो अर्थ निहित हैं, वे सर्वोच्च स्तर के हैं। यह अपने सर्वोच्च स्तर पर एक सर्वव्यापी नियंत्रण और प्रभुत्व का कार्य भी दर्शाता है डिग्री। इसके अलावा, भगवान के सर्वव्यापी संरक्षण या का उल्लेख करने के बाद सबसे बड़ी हद तक कायम रखना—स्वर्ग पर उसका एक साथ नियंत्रण और पृथ्वी, एकता के बंधन या एकत्व के एक पहलू के रूप में, यह इन सभी कृत्यों और अभिव्यक्तियों की उत्पत्ति का सारांश प्रस्तुत करता है, वह सर्वोपरि, सर्वोच्च है।

सूरा इब्राहीम से :

अल्लाह वह है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और भेजा
स्वर्ग से पानी बरसाकर वह तुम्हारे लिए फल लाता है
प्रावधान। उसने तुम्हारे अधीन समुद्र पर चलने के लिए जहाज़ बनाए हैं
और उसने नहरों को तुम्हारे अधीन कर दिया और उसने
तुम्हारे अधीन कर दिए सूर्य और चन्द्रमा अपनी अपनी गति में निरन्तर चलते रहते हैं, और वह
रात दिन तुम्हारे अधीन रहता है और उसने तुम्हें हर चीज़ से मुक्ति प्रदान की है।
कि तुम उससे पूछो। क्या तुम उसकी नेमतों को गिनने की कोशिश करोगे
हे परमेश्वर, आप उनकी गिनती कभी नहीं कर सकते... (14:32-34)

ये श्लोक बताते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इस ब्रह्मांड को किस प्रकार बनाया है महल और कैसे, स्वर्ग से पृथ्वी पर जीवन का जल भेजकर, उसने आकाश और पृथ्वी को हमारे लिए दो सेवकों की तरह बनाया। वे यह भी कहते हैं उसने जहाजों को हमारे अधीन कर दिया है ताकि सभी को फलों और सब्जियों से लाभ मिल सके अन्यत्र उगाए गए अनाज को खाते हैं तथा वस्तु विनिमय के माध्यम से अपनी आजीविका चलाते हैं उनकी उपज। दूसरे शब्दों में, उसने समुद्र, हवाएँ और पेड़ बनाए इस तरह और ऐसे गुणों के साथ कि हवा एक कोड़े के रूप में कार्य करती है, जहाज घोड़े की तरह, और समुद्र रेगिस्तान की तरह।

जहाजों के माध्यम से वैश्विक संबंध बनाने में हमें सक्षम बनाने के अलावा, उन्होंने विशाल नदियों को परिवहन का प्राकृतिक साधन बना दिया है। ऋतुओं को दर्शाता है और उसमें उत्पन्न अपनी कृपाओं को हमारे लिए प्रस्तुत करता है, जो कि सच्चा दाता है बाउंटीज़ ने सूर्य और चंद्रमा को उनके मार्गों पर चलाया और उन्हें बनाया दो आज्ञाकारी सेवकों की तरह या उस विशाल घूमती हुई मशीन को चलाने वाले पहियों की तरह। उसने रात को एक आवरण, हमारे आराम और नींद के लिए एक आवरण नियुक्त किया है, और दिन भर अपनी आजीविका चलाने के साधन के रूप में।

इन उपकारों को गिनाने के बाद कि उनका दायरा कितना विस्तृत है और उपकार अपने आप में कितने अनगिनत हैं, आयतें इस सारांश के साथ समाप्त होती हैं: उसने तुम्हें वह सब दिया है जो तुम उससे मांगते हो। यदि तुम ईश्वर के उपकारों को गिनने की कोशिश करो, तो तुम उन्हें कभी नहीं गिन पाओगे। दूसरे शब्दों में, ईश्वर हमें वह सब देता है जो हम अपनी क्षमता और स्वाभाविक ज़रूरत के अनुसार मांगते हैं। उसके उपकार गिनती से परे हैं। यदि हमारे सामने प्रस्तुत उपकारों की तालिका आकाश और पृथ्वी है, जिसमें सूर्य, चंद्रमा, रात और दिन कुछ उपकार हैं, तो बेशक उन्हें गिनना असंभव है।

वाक्पटुता का सातवाँ प्रकटीकरण: यह दिखाने के लिए कि प्रत्यक्ष कारणों का संबंधित प्रभाव या परिणाम लाने में कोई रचनात्मक भूमिका नहीं होती है, कुरान कभी-कभी किसी चीज़ के अस्तित्व के उद्देश्यों और उसके द्वारा प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत करता है। यह दर्शाता है कि अचेतन और निर्जीव कारण केवल प्रत्यक्ष आवरण हैं, और बहुत ही बुद्धिमान उद्देश्य और महत्वपूर्ण परिणाम केवल एक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ व्यक्ति द्वारा ही चाहे जा सकते हैं और उनका पीछा किया जा सकता है।

उद्देश्यों और परिणामों का उल्लेख करके, कुरान कारण और परिणाम के बीच की बड़ी दूरी को दर्शाता है, भले ही हमारी आंखें हमें क्या बताती हों।
कोई भी कारण, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, सबसे छोटा परिणाम नहीं दे सकता। इस प्रकार ईश्वरीय नाम कारणों और प्रभावों या परिणामों के बीच की दूरी में सितारों के रूप में प्रकट होते हैं [और उन्हें एक साथ जोड़ते हैं]। पर्वत शिखरों की एक पंक्ति की तरह जो क्षितिज पर आकाश से मिलती हुई प्रतीत होती है, उनके बीच विशाल स्थान होने के बावजूद जिसमें तारे उगते और डूबते हैं, कारणों और परिणामों के बीच की दूरी इतनी बड़ी है कि इसे केवल विश्वास और कुरान की रोशनी के माध्यम से देखा जा सकता है।

सूरा अबसा से :

> मनुष्य अपने भोजन पर ध्यान दे। हम खूब वर्षा करते हैं, फिर धरती को चीरते हैं, फिर उसमें अन्न उगाते हैं, अंगूर, हरी सब्जियाँ, जैतून, खजूर, हरे-भरे बाग़, और (विविध) फल और सब्जियाँ उगाते हैं, ताकि तुम और तुम्हारे पशुओं को भोजन मिल सके। (80:24-32)

आयतें पहले ईश्वरीय शक्ति के चमत्कारों का उद्देश्यपूर्ण क्रम में उल्लेख करती हैं और प्रत्यक्ष कारणों को उनके परिणामों से जोड़ते हुए, उनके पीछे के उद्देश्य की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं, जो आपके और आपके पशुओं के लिए प्रावधान के रूप में है। यह उद्देश्य साबित करता है कि उन सभी कारणों और परिणामों की श्रृंखला के साथ-साथ एक स्वतंत्र एजेंट भी है, और कारण उसके सामने केवल एक पर्दा हैं।

दरअसल, तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लिए प्रावधान के वाक्यांश के साथ आयतें घोषित करती हैं कि परिणाम लाने में भौतिक या प्राकृतिक कारणों का कोई रचनात्मक हिस्सा नहीं है और इसका मतलब है: "तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लिए आवश्यक पानी स्वर्ग से आता है। चूँकि यह तुम पर और तुम्हारे पशुओं पर दया नहीं कर सकता और

वह तुम्हारे लिए रोज़ी लाता है, वह अपने आप नहीं आती, बल्कि उतारी जाती है।
फिर धरती में दरारें पड़ जाती हैं ताकि वनस्पतियाँ उगें और आपको भोजन उपलब्ध कराएँ। चूँकि असंवेदनशील, अचेतन धरती आपके प्रावधान पर विचार नहीं कर सकती या आप पर दया नहीं कर सकती, इसलिए यह अपने आप नहीं फटती; बल्कि, कोई आपके लिए वह "दरवाज़ा" खोलता है और आपको आपका प्रावधान सौंपता है। चूँकि चरागाह और पेड़ आपकी व्यवस्था के बारे में नहीं सोचते या दया से आपके लिए फल और अनाज पैदा नहीं करते, इसलिए वे केवल धागे, रस्सियाँ या केबल हैं जिन्हें एक सर्वज्ञ, सर्व-दयालु व्यक्ति पर्दे के पीछे से फैलाकर जीवों तक अपनी कृपा पहुँचाता है।"

इस प्रकार अनेक दिव्य नाम जैसे कि अत्यन्त दयालु, अत्यन्त दयावान, सर्वप्रदाता, सर्वदानी, सर्वदानी इन श्लोकों में प्रकट होते हैं, यद्यपि उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

सूरतु'न-नूर से :

> क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को धीरे-धीरे चलाता है, फिर उन्हें इकट्ठा करके ढेर बना देता है। फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा निकलती है। वह बर्फ़ से लदे पहाड़ों से आकाश से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहता है मार देता है और जिस पर चाहता है रोक देता है। उसकी बिजली की चमक से लगभग दृष्टि चली जाती है। अल्लाह रात और दिन को बदल देता है। निश्चय ही इसमें अक़्लमंद लोगों के लिए शिक्षा है।
>
> अल्लाह ने हर एक जीवधारी को पानी से पैदा किया है। उनमें से कोई पेट के बल चलता है, कोई दो पैरों पर चलता है और कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर पूरी ताक़त रखता है। (24:43-45)

ये श्लोक संचित बादलों से वर्षा भेजने में दिव्य के विचित्र निपटान की व्याख्या करते हैं, जो दिव्य आधिपत्य के सबसे महत्वपूर्ण चमत्कारों में से एक हैं और दया के दिव्य खज़ानों पर सबसे विचित्र आवरण हैं। जब बादल के परमाणु वायुमंडल में बिखरे होते हैं, तो वे भगवान के आदेश पर एक साथ मिलकर बादल बनाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे तुरही की आवाज़ पर बिखरी हुई सेना एकत्रित होती है। फिर, सेना बनाने के लिए अलग-अलग दिशाओं से आने वाली छोटी-छोटी टुकड़ियों की तरह, भगवान बादलों को एक साथ जोड़ते हैं ताकि उनके बीच एक विद्युत परिपथ पूरा हो सके। वह उन ढेर हुए बादलों का कारण बनता है, जो पुनरुत्थान के समय हिलते हुए पहाड़ों के समान होते हैं और बारिश या बर्फ या ओलों से भरे होते हैं, ताकि वे पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों पर जीवन का जल बरसाएँ।

वर्षा अपने आप नहीं होती, बल्कि कुछ उद्देश्यों और ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भेजी जाती है। जब वातावरण साफ़ होता है और बादल नहीं दिखते, तो बादलों के पहाड़ जैसे रूप, एक आकर्षक सभा की तरह इकट्ठे होते हैं, क्योंकि वह जो सभी जीवित प्राणियों और उनकी ज़रूरतों को जानता है, उन्हें बारिश भेजने के लिए एक साथ इकट्ठा करता है। ये घटनाएँ कई दिव्य नामों का सुझाव देती हैं:

सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्व-प्रबन्धक, सर्वपालन-पोषण करने वाला, सर्व-सहायता करने वाला, तथा जीवन देने वाला।

वाकपटुता का आठवाँ गुण: हमारे दिलों को आख़िरत में अल्लाह के अद्भुत कामों के बारे में यकीन दिलाने और उनकी पुष्टि के लिए हमारी बुद्धि को तैयार करने के लिए, क़ुरआन कभी-कभी दुनिया में उसके अद्भुत कामों का ज़िक्र करता है। दूसरी जगहों पर, यह भविष्य और आख़िरत से संबंधित उसके चमत्कारी कामों का इस तरह से वर्णन करता है कि हम उन पर किसी ऐसी चीज़ के कारण यकीन कर लेते हैं जिससे हम अपने जीवन में परिचित हैं।

सूरा या सीन से :

> क्या मनुष्य ने यह नहीं सोचा कि हमने उसे वीर्य की एक बूँद से पैदा किया है? फिर भी वह एक स्पष्ट, भयंकर शत्रु बन जाता है। और उसने अपने मूल और निर्माण को भूलकर हमारे लिए एक उदाहरण गढ़ा है, और कहा है, "इन हड्डियों को कौन जीवित करेगा, जब ये सड़ जाएँगी?" कह दो, "जिसने इन्हें पहले पैदा किया, वही इन्हें जीवित करेगा। वह सारी सृष्टि का ज्ञान रखता है। उसी ने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बनाई, फिर देखो, तुम उससे आग जलाते हो।" क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया, वह उन जैसी हड्डियाँ पैदा करने पर भी सक्षम नहीं है? निस्संदेह वही है, वह महान रचयिता, सर्वज्ञ है। जब वह किसी चीज़ को होने देना चाहता है, तो बस उससे कहता है, "हो जा!" और वह हो जाती है। अतः पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ का पूर्ण प्रभुत्व है, और उसी की ओर तुम लौटाए जा रहे हो। (36:77-83)

ऊपर दी गई आयतों में, कुरान सात या आठ तरीकों से पुनरुत्थान को साबित करता है। सबसे पहले, यह मानवता की पहली रचना को प्रस्तुत करता है और इसका मतलब है: "आप देखते हैं कि आप एक शुक्राणु-बूंद के चरणों के माध्यम से बनाए गए हैं, आपकी माँ के गर्भ की दीवार पर लटकी हुई कोई चीज़, चबाए गए मांस के एक टुकड़े की तरह, मांसपेशियों के ऊतकों में हड्डियों और हड्डियों के कपड़े। जैसा कि आप यह देख सकते हैं, आप दूसरे निर्माण (पुनरुत्थान) को कैसे नकार सकते हैं, जो पहले वाले से भी आसान है?"

लोगों को उनके प्रति अपने महान उपकारों की याद दिलाते हुए, जिसके माध्यम से उन्होंने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग बनाई है, सर्वशक्तिमान ईश्वर का मतलब है: "जो ऐसे उपकार करता है, वह तुम्हें तुम्हारे हाल पर नहीं छोड़ता, ताकि तुम कब्र में प्रवेश करो और वहाँ पड़े रहो, फिर से जीवित न हो।" इसके अलावा, वह सुझाव देता है: "तुम देखते हो कि कैसे मृत या सूखे पेड़ पुनर्जीवित हो जाते हैं और हरे हो जाते हैं, तो तुम यह कैसे असंभव मान सकते हो कि लकड़ी जैसी हड्डियाँ पुनर्जीवित हो जाएँगी? इसके अलावा, क्या वह जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है , वह मनुष्य, आकाश और पृथ्वी के फल बनाने में असमर्थ है? क्या वह जो एक विशाल वृक्ष पर शासन करता है, उसके फल को कोई महत्व नहीं देता और उसे दूसरों के लिए छोड़ देता है? क्या तुम सोचते हो कि वह इसे छोड़ देगा

क्या हम सृष्टि के वृक्ष के परिणाम, मानवता को, अपने या दूसरों के लिए, सौंप सकते हैं, और इस प्रकार उस सृष्टि के वृक्ष को, जिसके सभी भाग बुद्धि से गूंथे गए हैं, बर्बाद होने दे सकते हैं?

फिर से उनका मतलब है: "जो तुम्हें क़यामत के दिन पुनर्जीवित करेगा, वह ऐसा है कि पूरा ब्रह्मांड उसके सामने एक आज्ञाकारी सैनिक की तरह है। यह उसके "हो जाओ!" के आदेश का पूरी तरह से पालन करता है और वह हो जाता है। उसके लिए, वसंत और फूल बनाना बराबर है। उसकी शक्ति के लिए सभी जानवरों को बनाना उतना ही आसान है जितना कि एक मक्खी। उसे नपुंसक के रूप में देखना और उसकी शक्ति को यह पूछकर चुनौती देना पूरी तरह से अनुचित और तर्कहीन है: 'हड्डियों को कौन पुनर्जीवित करेगा?'"

वह इतना महिमावान है, जिसके हाथ में सभी चीज़ों का पूर्ण प्रभुत्व है, के माध्यम से कुरान यह संकेत देता है: "वह हर चीज़ को नियंत्रित करता है और हर चीज़ की कुंजियाँ उसके पास हैं। वह रात और दिन, और सर्दी और गर्मी को एक किताब के पन्नों को पलटने की तरह आसानी से बदलता रहता है। वह इतना सर्वशक्तिमान है कि जैसे एक घर को बंद करके दूसरा खोल देता है, वैसे ही वह इस दुनिया को बंद करके अगली दुनिया को खोल देता है। इस तथ्य और इसके प्रमाणों को देखते हुए, तुम उसके पास वापस लौट जाओगे। वह सभी को पुनर्जीवित करेगा और उन्हें मस्टरिंग के स्थान पर इकट्ठा करेगा, जहाँ वह तुमसे दुनिया में रहते हुए तुम्हारे किए का हिसाब माँगेगा।" ऐसी आयतें पुनरुत्थान को स्वीकार करने के लिए व्यक्ति के मन और हृदय को तैयार करती हैं, क्योंकि वे दिखाती हैं कि यह हमारे जीवन की कई घटनाओं से कैसे मिलती जुलती है।

कुरान कभी-कभी परलोक में ईश्वर के कार्यों का इस प्रकार उल्लेख करता है कि इससे संसार में भी उनके जैसे कार्य होने का संकेत मिलता है तथा पुनरुत्थान को अस्वीकार करने के लिए कोई गुंजाइश नहीं बचती।

सूरह अत-तकवीर, अल-इन्फ़ितर और अल-इंशिक़ाक से , निम्नलिखित क्रमशः आयतों से शुरू करते हुए:

> और जब सूर्य को मोड़ दिया जाएगा (81:1) और जब आकाश खुल जाएगा।
> (82:1) जब आकाश फट जायेगा। (84:1)

इन सूरों में कुरान ने संसार के विनाश और पुनरुत्थान की भयानक घटनाओं का इस प्रकार वर्णन किया है कि चूंकि हम इनके समान घटनाओं को विशेष रूप से वसंत और शरद ऋतु के दौरान देखते हैं, इसलिए हम उन घटनाओं को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं, जो हृदय में भय उत्पन्न करती हैं और जिन्हें मस्तिष्क द्वारा समझा नहीं जा सकता।

चूँकि उन सूरों का अर्थ संक्षेप में बताना भी बहुत लंबा होगा , इसलिए मैं उदाहरण के तौर पर सिर्फ़ एक आयत का हवाला दूँगा: जब कर्मों की किताबें खोली जाएँगी (81:10) में कहा गया है कि क़यामत के

दिन, हर किसी को अपने कर्मों के रिकॉर्ड वाले पन्नों की एक सूची मिलेगी। यह हमारे लिए समझना मुश्किल है। हालाँकि, हर साल हम वसंत में सामान्य पुनरुद्धार के दौरान इसी तरह की घटनाओं को देखते हैं, साथ ही कई अन्य घटनाएँ भी होती हैं।

अन्य घटनाएँ जो सूरा में वर्णित घटनाओं के समान हैं
विश्व का विनाश और पुनरुत्थान।

प्रत्येक फलदार वृक्ष या फूलदार पौधे के कुछ कर्म, क्रियाएं और कर्तव्य होते हैं।
इसकी पूजा का प्रकार इसमें प्रकट दिव्य नामों को दर्शाता है। इसके सभी कर्म
(अंकुरण से लेकर फूल आने और फल देने तक का इसका जीवन चक्र) इसके बीजों में दर्ज है, जो अगले वसंत में धरती पर प्रदर्शित होंगे। चूंकि यह अपने रूप और आकार की भाषा में अपने स्रोत या उत्पत्ति के कार्यों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है,
इसकी शाखाएँ, टहनियाँ, पत्तियाँ, फूल और फल उन पन्नों को खोलते हैं
कर्म। इस प्रकार जो हमारी आँखों के सामने इस कार्य को प्रकटीकरण के रूप में करता है
उसके नामों में से वह अत्यन्त तत्वदर्शी, रक्षक, व्यवस्था करनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला और सूक्ष्म है, वही है जो कहता है, जब कर्मों की पुस्तकें
अन्य बिंदुओं की तुलना इससे करें और समझें ।

हालाँकि, आगे की सहायता के लिए, इस स्पष्टीकरण पर भी विचार करें: जब
सूर्य मुड़ा हुआ है (८१:१)। मुड़ा हुआ (अर्थ) में शानदार रूपक के अलावा
"लुढ़का हुआ" या "लपेटा हुआ"), कविता कई संबंधित घटनाओं की ओर संकेत करती है: पहला,
क्रमशः अस्तित्वहीनता, आकाश और आकाश के पर्दे हटाकर सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी दया से एक तेजस्वी दीपक (सूर्य) को प्रकट किया।
दुनिया को रोशन करने और दिखाने के लिए खजाना। दुनिया के बाद
नष्ट हो जाने पर, वह उसे पुनः आवरण में लपेटेगा और हटा देगा।

दूसरा, सूर्य ईश्वर का एक अधिकारी है जिसे अपनी वस्तुओं को फैलाने का काम सौंपा गया है
प्रकाश और अंधकार की तहें विश्व के सिर के चारों ओर बारी-बारी से घूमती रहती हैं।
हर शाम वह अपना सामान इकट्ठा करके छिपा देता है। कभी-कभी वह कुछ खास नहीं कर पाता।
कभी-कभी वह व्यापार करने से पीछे हट जाता है क्योंकि चाँद उसके चेहरे पर पर्दा डाल देता है और उसका खाता बही बंद कर देता है

थोड़े समय के लिए, निश्चित समय के लिए। भविष्य में किसी समय, यह अधिकारी अपने पद से इस्तीफा दे देगा
पद। भले ही दो काले धब्बों के कारण इसे खारिज करने का कोई कारण न हो
अपने चेहरे पर बढ़ते हुए, जैसा कि उन्होंने करना शुरू कर दिया है, सूर्य ईश्वर की आज्ञा का पालन करेगा
पृथ्वी पर भेजे जाने वाले प्रकाश को वापस खींचने और उसे चारों ओर लपेटने का आदेश
अपने ही मुखिया के प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है। परमेश्वर उसे आदेश देगा: "परमेश्वर के प्रति तुम्हारा अब कोई कर्तव्य नहीं है
पृथ्वी। अब, नरक में जाओ और उन लोगों को जला दो, जिन्होंने तुम्हारी पूजा करके तुम्हारा अपमान किया है
एक आज्ञाकारी अधिकारी के साथ विश्वासघात करते हुए मानो आपने देवत्व का दावा किया हो।
अपने काले धब्बों वाले चेहरे पर, सूर्य का अर्थ यह है: जब सूर्य मुड़ा हुआ हो।

वाक्पटुता का नौवां बिंदु: कभी-कभी बुद्धिमान कुरान में उल्लेख किया गया है
किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तथा हमारे मन को सार्वभौमिक दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित करने के लिए, ईश्वरीय नामों के माध्यम से उस उद्देश्य की पुष्टि और स्थापना की जाती है, जो कि ईश्वर के सर्वोच्च लक्ष्य हैं।
कुछ सार्वभौमिक नियमों की उत्पत्ति.

सूरतुल-मुजादिला से :

> अल्लाह ने उस औरत की बातें सुन ली हैं जो अपने पति के बारे में तुमसे शिकायत करती है और अल्लाह से अपनी शिकायत करती है। अल्लाह तुम्हारी बातें सुनता है। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है। (58:1)

कुरान में कहा गया है: "सर्वशक्तिमान ईश्वर सब कुछ सुनता है। वह अपने नाम के माध्यम से परम सत्य को सुनता है, एक पत्नी जो तुमसे बहस करती है और अपने पति के बारे में शिकायत करती है, एक बहुत ही खास मामला। एक महिला मनुष्यों में सबसे दयालु होती है, और देखभाल और कोमलता की खान होती है जो आत्म-बलिदान की ओर ले जाती है। इसलिए, उनके सर्व-दयालु होने की आवश्यकता के अनुसार, सर्वशक्तिमान ईश्वर उसकी शिकायत सुनते हैं और अपने नाम परम सत्य के माध्यम से इसे बहुत महत्वपूर्ण मामला मानते हैं।" किसी विशेष घटना से एक सार्वभौमिक सिद्धांत का निष्कर्ष निकालते हुए, आयत बताती है कि जो एक विशेष, छोटी घटना को सुनता और देखता है, उसे सभी चीजों को सुनना और देखना चाहिए। जो ब्रह्मांड पर प्रभुत्व का दावा करता है, उसे किसी भी प्राणी की परेशानियों के बारे में पता होना चाहिए जिसके साथ अन्याय हुआ है और उसकी चीखें सुननी चाहिए। जो ऐसा नहीं कर सकता, वह भगवान नहीं हो सकता। इस प्रकार ईश्वर सब कुछ सुनता है, सब कुछ देखता है, जो इन दो महान सत्यों को स्थापित करता है।

सूरतुल-इसरा से :

> पवित्र है वह, जिसने अपने बन्दे को रातों-रात मस्जिदे हराम से दूर की मस्जिदे अक़्सा तक सफ़र कराया , जिसके मुहल्ले को हमने बरकत दी, ताकि उसे अपनी निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वह सुननेवाला, देखनेवाला है। (17:1)

यह आयत सबसे महान पैगम्बर के स्वर्गारोहण के पहले चरण से संबंधित है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। निश्चित रूप से वह है में "वह" या तो पैगंबर या सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित करता है। यदि यह पैगंबर को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है: "यह यात्रा एक व्यापक, एक सार्वभौमिक स्वर्गारोहण है। इसके दौरान, सबसे दूर की सीमा के लोटे-वृक्ष तक (जहाँ सृजित का साम्राज्य समाप्त होता है) और दो धनुष तारों के बीच की दूरी पर, या उससे भी कम, उसने ईश्वर के संकेतों और कला के अद्भुत कार्यों को सुना और देखा जो उसकी आँखों और कानों के सामने दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों की सार्वभौमिक डिग्री में प्रदर्शित हुए।" इस प्रकार यह आयत मक्का में अल-मस्जिदुल-हरम से यरुशलम में अल-मस्जिदुल-अक्सा तक की यात्रा को एक सार्वभौमिक यात्रा की कुंजी के रूप में प्रस्तुत करती है।

यदि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है: "अपने सेवक को यात्रा के अंत में अपनी उपस्थिति में प्रवेश करने और उसे एक कर्तव्य सौंपने के लिए, उसने उसे अल-मस्जिदुल-हरम से अल-मस्जिदुल-अक्सा में ले जाया। उसने उसे पैगंबरों से मिलवाया, जो वहां एकत्र हुए थे। यह दिखाने के बाद कि वह सभी पैगंबरों के धर्मों के सिद्धांतों का उत्तराधिकारी है, उसने उसे पूरे रास्ते यात्रा कराई।

उसके प्रभुत्व के क्षेत्र उनके सभी आंतरिक और बाह्य आयामों में, दूर तक
दो धनुष तारों के बीच, या उससे भी कम।”

पैगम्बर एक सेवक हैं और उन्होंने एक विशेष यात्रा की है। लेकिन साथ मिलकर
उसके पास ब्रह्मांड से संबंधित एक भरोसा और एक प्रकाश था जो
ब्रह्मांड का रंग बदल दो. उसके पास दरवाज़ा खोलने के लिए एक चाबी भी थी
अनंत खुशी के लिए। इसलिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर खुद को भगवान के रूप में वर्णित करता है
विश्वास, प्रकाश और कुंजी के लिए वैश्विक उद्देश्यों को प्रदर्शित करने के लिए सभी चीजों को सुनने और देखने के गुणों का उपयोग किया गया है।

सूरतुल-फ़ातिर से :

> सारी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर के लिए है, जो आकाश और पृथ्वी का निर्माता है।
> पृथ्वी, जो स्वर्गदूतों को दूत नियुक्त करता है जिनके दो पंख होते हैं,
> तीन, या चार (या अधिक)। वह सृष्टि में जो चाहता है, बढ़ा देता है।
> निस्संदेह परमेश्वर को हर चीज़ पर पूरा अधिकार है। (35:1)

इस श्लोक का अर्थ है: "आकाश और पृथ्वी को सुशोभित करके और अपनी पूर्णता के कार्यों का प्रदर्शन करके, उनका महाप्रतापी सृजक उनके
असंख्य दर्शक उनकी असीम प्रशंसा और स्तुति करने के लिए एकत्रित हुए।
उन्हें अनगिनत उपहारों से नवाज़ो ताकि आकाश और पृथ्वी प्रशंसा करें
और सभी प्रकार के वरदानों और उन्हें प्राप्त करने वालों की भाषा में उनके दयालु सृजक की निरंतर स्तुति करो।”

यह श्लोक यह भी दर्शाता है कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो
मनुष्यों, पशुओं और पक्षियों (पृथ्वी के निवासी) को सुसज्जित किया है
क्षेत्रों) में यात्रा करने के लिए आवश्यक अंग, क्षमताएं और पंख होते हैं
और जिसने फ़रिश्तों (स्वर्गवासियों) को सुसज्जित किया है
पंख उड़ने के लिए और सितारों और ऊँचे स्वर्ग के महलों में यात्रा करने के लिए
नक्षत्रों की भूमि, सभी चीजों पर शक्तिशाली होना चाहिए। वह जो है
एक फल से दूसरे फल तक उड़ने के लिए पंख दिए गए, और एक गौरैया को एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़ने के लिए पंख दिए गए
एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक, वही है जो हमें उड़ने के लिए पंख देता है
शुक्र से बृहस्पति और बृहस्पति से शनि।

इसके अलावा, पृथ्वी के निवासियों के विपरीत, स्वर्गदूतों को केवल
विशिष्टता या किसी विशिष्ट सीमित स्थान द्वारा सीमित। दो, तीन, या
चार. वह सृष्टि में जो चाहता है उसे बढ़ाता है, आयत बताती है कि स्वर्गदूतों को भी ऐसा करना चाहिए
एक ही समय में चार या उससे ज़्यादा तारों पर मौजूद होना। इस प्रकार यह कहना कि ईश्वर
फ़रिश्तों को पंख प्रदान किए हैं (एक विशेष घटना), कुरान इस ओर इशारा करता है
एक सार्वभौमिक, जबरदस्त शक्ति की उत्पत्ति और इसे संक्षेप में स्थापित करता है: भगवान के पास हर चीज पर पूर्ण शक्ति है।

वाक्पटुता का दसवाँ बिन्दु: कभी-कभी कुरान में उल्लेख किया गया है
मानवता के विद्रोही कृत्यों को रोकता है और उसके सदस्यों को गंभीर धमकियों से रोकता है।

लेकिन लोगों को निराशा में न डालने के लिए, यह कुछ दिव्य के साथ समाप्त होता है
नाम उनकी दया की ओर इशारा करते हैं और उन्हें सांत्वना देते हैं।

सुरतु'श-शूरा से :

कह दो, "यदि उसके अतिरिक्त कोई पूज्य होते, जैसा कि वे कहते हैं, तो वे अवश्य पूज्य होते।
निश्चय ही सर्वोच्च सिंहासन के स्वामी के विरुद्ध कोई रास्ता खोजोगे।"
वह सर्व-महिमावान है, और पूर्णतः महान्, अथाह रूप से ऊँचा है
जो कुछ वे कहते हैं, उससे कहीं अधिक है। सातों आकाश और पृथ्वी और वह सब जो
उसमें उसकी महिमा है। कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो उसकी महिमा न करे
प्रशंसा करते हो, किन्तु तुम उनकी महिमा को नहीं समझते। निश्चय ही वह सत्य है।
अत्यन्त क्षमाशील, अत्यन्त क्षमाशील। (42:4)

आयतों का अर्थ है: "कहो: 'यदि उसके साथ उसके राज्य में कोई पूज्य देवता होते
संप्रभुता के कारण, वे सृष्टि पर उनके पूर्ण शासन में हिस्सा चाहते थे। इससे ब्रह्मांड में अव्यवस्था फैल जाती।
हालाँकि, हर कोई
प्राणी, सार्वभौमिक या विशेष, बड़ा या छोटा, सात स्तरों से
सूक्ष्म जीवों के लिए स्वर्ग, सभी राजसी एक का महिमामंडन करता है
दिव्य शिलालेखों की भाषा में सर्व-सुंदर नामों द्वारा
उन पर नाम प्रकट हुए हैं। वे उसे किसी भी साझीदार से मुक्त घोषित करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे
स्वर्ग उसे सर्व-पवित्र घोषित करता है और उसकी एकता की गवाही देता है
सूर्य और सितारों के उनके प्रकाश-फैलाने वाले शब्दों के साथ-साथ ज्ञान के माध्यम से
और वे जो व्यवस्था प्रदर्शित करते हैं, वातावरण उसे महिमामंडित और पवित्र करता है और बादलों, गड़गड़ाहट,
बिजली और बारिश के शब्दों के माध्यम से उसकी एकता की गवाही देता है।"

इसी प्रकार, जिस प्रकार पृथ्वी अपने सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की महिमा करती है और
पौधों और चेतन प्राणियों के जीवित शब्दों के माध्यम से उसे एक होने की घोषणा करता है
प्रत्येक वृक्ष अपने प्राणियों के माध्यम से उसकी महिमा करता है और उसकी एकता की गवाही देता है।
पत्तियों, फूलों और फलों के शब्द। इसी तरह, सबसे छोटे और सबसे बड़े शब्द भी
विशेष प्राणी उस सर्वशक्तिमान की महिमा करता है, जिसके अनेक नाम
यह उनके शिलालेखों के माध्यम से प्रदर्शित करता है कि यह उनकी एकता को दर्शाता है और इसकी गवाही देता है।

छंदों में कहा गया है कि मानवता ब्रह्मांड का मुद्दा और परिणाम है,
इसका नाजुक फल जिसे परमेश्वर के राज्य में पृथ्वी पर शासन करने का सम्मान दिया गया है
नाम। हालाँकि, जब ब्रह्मांड अपने सर्व-महान निर्माता की महिमा करता है
एक स्वर में, उसकी एकता की गवाही देता है, और पूर्ण आज्ञाकारिता में आराधना करता है,
अविश्वासी और वे लोग जो ईश्वर के साथ साझीदार ठहराते हैं, एक घिनौना काम करते हैं
जो सज़ा के लायक है। ताकि ऐसे लोग खुलकर न झुकें
निराशा और इस तरह के असीम के बावजूद, क्यों में ज्ञान दिखाने के लिए
कुरूप विद्रोह और अपराध, सर्वशक्तिमान परमेश्वर देता है
उन पर दुनिया को नष्ट किए बिना उन्हें राहत देने के लिए, छंद समाप्त होता है
वह अत्यन्त क्षमाशील, अत्यन्त क्षमाशील है, अतः उसने पश्चाताप और क्षमा किये जाने की आशा के लिए द्वार
खुला छोड़ दिया है।

चमत्कार के इन पूर्वोक्त संकेतों से समझिए कि आयतों के अंतिम भागों में मार्गदर्शन और आशीषों की झलकियाँ छिपी हुई हैं।
चमत्कारिकता। यहां तक कि वाक्पटुता के महानतम प्रतिभाशाली लोगों ने भी उनकी प्रशंसा की है और
कुरान की वाक्पटु शैली से आश्चर्यचकित होकर, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि
इसकी उत्पत्ति मानवीय नहीं हो सकती, इस बात पर पूर्ण निश्चय के साथ विश्वास किया गया है कि यह
यह एक प्रकाशितवाक्य है (53:4)। साथ ही साथ इसके गुण और बिंदु भी
जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, श्लोकों में और भी कई गुण हैं जैसे कि
“अंधे” लोग चमत्कार की छाप को उसकी सम्पूर्णता में देख सकते हैं।

तीसरी किरण: कुरान की तुलना अन्य शब्दों और आयतों से नहीं की जा सकती।
भाषण। ऐसा इसलिए है क्योंकि भाषण विभिन्न श्रेणियों के होते हैं, और उनके संबंध में
श्रेष्ठता, शक्ति, सौंदर्य और उत्कृष्टता के चार स्रोत हैं: वक्ता,
संबोधित व्यक्ति, उद्देश्य और वह अवसर जिस पर यह बात कही गई है।
स्रोत केवल अवसर नहीं है, जैसा कि कुछ साहित्यिक लोगों ने गलत अनुमान लगाया है। इसलिए केवल
भाषण पर ही विचार न करें। चूँकि भाषण से ही उसका अर्थ निकलता है
इन चार स्रोतों से शक्ति और सौंदर्य, दिए गए उत्तरों से
प्रश्न "यह किसने कहा? उसने यह किससे कहा? उसने यह क्यों कहा?"
उन्होंने यह किस अवसर पर कहा था?”, यदि कुरान के स्रोतों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए, तो इसकी वाक्पटुता, श्रेष्ठता और सुंदरता की डिग्री समझ में आ जाएगी। चूँकि भाषण को पहले वक्ता के अनुसार माना जाता है, अगर यह
आदेश और निषेध का रूप इसमें वक्ता के पद के अनुपात में इच्छा और शक्ति निहित होती है। तब यह
अप्रतिरोध्य हो सकता है और इसका प्रभाव हो सकता है
बिजली की तरह, श्रेष्ठता और शक्ति में वृद्धि होगी।

क्रमशः सूरह हूद और फ़स्सिलात से :

> “ऐ धरती, अपना पानी पी जा, ऐ आसमान, (अपनी बारिश) बंद कर दे!” (11:44)
>
> उसने उनसे (आकाश और पृथ्वी से) कहा, "तुम दोनों आओ,
> चाहे स्वेच्छा से आये हो या अनिच्छा से।" उन्होंने कहा, "हम तो स्वेच्छा से आज्ञापालन करने आये हैं।"
> (41:11)

इसका अर्थ है: "हे स्वर्ग और पृथ्वी, स्वेच्छा से या अनिच्छा से आओ, और
मेरी बुद्धि और शक्ति के अधीन हो जाओ। अस्तित्वहीनता से बाहर आओ
और वे ऐसे स्थान प्रतीत होते हैं जहाँ मेरी कलाकृतियाँ प्रदर्शित की जाएँगी।” वे
उत्तर दिया: "हम पूर्ण आज्ञाकारिता में आते हैं। आपकी अनुमति से हम कार्य करेंगे
और शक्ति, सभी कर्तव्य जो आपने हमें सौंपे हैं।”

उन बाध्यकारी आदेशों की उदात्तता और बल पर विचार करें जिनमें अदम्य शक्ति और इच्छाशक्ति है, और कल्पना करें कि हमारा यह आदेश कितना बेतुका और इच्छापूर्ण है।
निर्जीव वस्तुओं के प्रति आदेश होगा: "हे पृथ्वी, रुक जाओ! हे स्वर्ग,
हे संसार, अपने आप को नष्ट कर दे! क्या ऐसी आज्ञाओं की तुलना की जा सकती है

उसके साथ? हमारी इच्छाओं और असंवेदनशील आदेशों की तुलना कैसे की जा सकती है सर्वोच्च शासक के बाध्यकारी आदेश, जिसमें शासन के सभी आवश्यक गुण मौजूद हैं?

सर्वोच्च कमांडर के सम्मोहक आदेश और सर्वोच्च कमांडर के बीच का अंतर एक शक्तिशाली, आज्ञाकारी सेना की ओर कूच करना, और एक साधारण निजी की ओर कूच करना कमांडर और प्राइवेट के बीच का अंतर बहुत बड़ा है।
आदेशों की शक्ति और श्रेष्ठता: जब वह किसी चीज़ को होने की इच्छा करता है, तो वह उससे कहता है, "हो जाओ!" और वह हो जाता है (36:82), और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "सजदा करो" आदम से पहले!" (2:34) मानवीय आदेशों के साथ, और देखें कि क्या अंतर है उनके बीच वैसा अन्तर नहीं है जैसा जुगनू और सूरज के बीच है।

विचार करें कि कलाकार अपने काम को करते समय उसका वर्णन किस प्रकार करते हैं, काम करते समय अपनी कलात्मकता का वर्णन करें, और कैसे उपकारकर्ता अपनी अच्छाई पर चर्चा करते हैं हम देखते हैं कि उनके संयुक्त कार्य और शब्द कितने प्रभावी हैं और जब वे कहते हैं कि उन्होंने एक निश्चित तरीके से ऐसा किया है तो उनके शब्दों का प्रभाव और एक निश्चित उद्देश्य के लिए, और जिस तरह से इसे किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए:

सूरा कफ़ से :

> क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने कैसे-कैसे भवन बनाए हैं और इसे सजाया है, और इसमें कोई दरार नहीं है? और पृथ्वी-हमने फैला दिया है, और उसमें दृढ़ पहाड़ स्थापित कर दिए हैं, और बढ़ने दिया है उस पर वनस्पतियों का हर सुन्दर जोड़ा है। (यह सब एक साधन है) और हम आकाश से बरकत वाला पानी बरसाते हैं, जिससे हम
>
> बाग़ उगाओ और फ़सल के लिए अनाज पैदा करो और बन्दों के लिए रोज़ी के तौर पर ऊँचे और आलीशान खजूर के पेड़ उगाओ। और हम इससे मृत भूमि को पुनर्जीवित करें: वैसे ही मृतक भी जीवित हो उठेंगे और वापस आएंगे
>
> (50:6-11)

इस सुरा के नक्षत्र में जो वर्णन स्वर्ग के तारा-जैसे फलों की तरह चमकते हैं, वे उत्तम वाक्पटुता के साथ, स्वर्ग के अनेक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।
पुनरुत्थान ब्रह्माण्ड के उस भाग से उत्पन्न हुआ है जो ब्रह्मांड में स्थित है।
क्रिया। इसी प्रकार से मरे हुए भी जी उठेंगे और बाहर आएँगे (
वे उन लोगों को चुप करा देते हैं जिनके बारे में सूरा में कहा गया है कि वे पुनरुत्थान से इनकार करते हैं । इसकी शुरुआत। यह उन घटनाओं की लोगों की चर्चा से कितना अलग है जिनसे उनका कोई लेना-देना नहीं है। अंतर इससे कहीं ज़्यादा है
असली और प्लास्टिक के फूलों के बीच का अंतर। मैं इन श्लोकों की बहुत संक्षेप में व्याख्या करूँगा।

सूरा की शुरुआत अविश्वासियों द्वारा पुनरुत्थान के इनकार से होती है। उन्हें इसकी सच्चाई का यकीन दिलाने के लिए, सूरा पूछता है: "क्या तुम नहीं देखते कि यह कितना शानदार है और हमने आसमान को किस तरह से बनाया है और उसे किस तरह से सजाया है सूर्य, चंद्रमा और तारों के साथ, उनमें कोई दरार नहीं? क्या तुम नहीं देखते कि कैसे

हमने तुम्हारे लिए धरती फैला दी है, और कितनी बुद्धिमत्ता से हमने उसे सुसज्जित किया है?
उस पर पहाड़ स्थापित करके हम उसे समुद्र के आक्रमण से सुरक्षित रखते हैं।
क्या तुम देखते नहीं कि हमने इस पर तरह-तरह की रंग-बिरंगी और सुन्दर वनस्पतियाँ और चारागाह पैदा किए, फिर धरती को उनसे सजाया।
क्या तुम नहीं देखते कि हम आसमान से कितना बरकत वाला पानी भेजते हैं
और उससे बाग़, बगीचे, अनाज और खजूर जैसे ऊँचे-ऊँचे पेड़ उगाते हैं जिनमें स्वादिष्ट फल लगते हैं, जिनसे हम अपने बन्दों को रोज़ी देते हैं। क्या तुम उससे ख़ुश होकर रहते हो?
क्या तुम नहीं देखते कि मैं उस जल से मृत भूमि को भी जिलाता हूँ और हजारों पुनरुत्थान के उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ? उसी तरह जैसे मैं वनस्पति को जिलाता हूँ
मेरी शक्ति के द्वारा मृत पृथ्वी पर बढ़ो, उस दिन तुम पुनर्जीवित हो जाओगे
न्याय का समय आ गया है, जब पृथ्वी नष्ट हो जाएगी और तुम उसमें से जीवित निकलोगे!"
इन आयतों में प्रदर्शित वाक्पटुता महान है जो पुनरुत्थान को प्रमाणित करती है,
ये शब्द मनुष्यों द्वारा किसी दावे को सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले शब्दों से कितने श्रेष्ठ हैं!

इस ग्रंथ के आरंभ से लेकर अब तक मैंने बहुत सी बातें गुप्त रखी हैं।
कुरान के अधिकारों का उद्देश्यपूर्ण तर्क और सत्यापन करना
मैं अविश्वासियों को कुरान की चमत्कारिकता का यकीन दिलाना चाहता हूँ।
मोमबत्तियों के बीच में "सूर्य" और तुलना की गई। अब, मैं संक्षेप में बताऊँगा
सत्य के नाम पर अपनी अतुलनीय प्रतिष्ठा का परिचय देता हूँ।

कुरान की तुलना में अन्य सभी शब्द सितारों की तुलना में कांच के शीशे में सितारों के छोटे-छोटे प्रतिबिंबों के समान हैं। वास्तव में, कुरान की तुलना में अन्य सभी शब्द सितारों की तुलना में कांच के शीशे में सितारों के छोटे-छोटे प्रतिबिंबों के समान हैं।
मानव मन अपने मन के दर्पणों में जो अर्थ चित्रित करता है, वे बहुत दूर हैं।
विचारों और भावनाओं को कुरान के शब्दों से लिया गया है, जिनमें से प्रत्येक एक का वर्णन करता है
अपरिवर्तनीय सत्य! कुरान के फरिश्ते जैसे, जीवन देने वाले शब्दों, सूर्य के महाप्रतापी निर्माता के शब्द और कुरान के बीच कितनी बड़ी दूरी है
चाँद, जो मार्गदर्शन की रोशनी और चुभने वाले शब्दों को भी फैला देता है
आत्माओं को मोहित करने और इच्छाओं को उत्तेजित करने वाले प्रभावित व्यवहार से उत्पन्न!
कुरान से तुलना करें तो हमारे शब्द शैतान के डंक मारने वाले कीड़ों के समान हैं।
स्वर्गदूतों और अन्य चमकदार आत्मिक प्राणियों के साथ तुलना। यह महज एक तुलना नहीं है
दावा; बल्कि, जैसा कि हमारे द्वारा लिखित शब्दों में की गई चर्चाओं से स्पष्ट है
अब तक, यह निष्कर्ष साक्ष्य पर आधारित है।

हमारी कल्पनाओं और कपोल-कल्पनाओं से भरी बातें कुरान की आयतों से कितनी दूर हैं?
शब्द और वाक्यांश। यह शाश्वत दिव्य संबोधन, जो से उत्पन्न हुआ
दयालु का सर्वोच्च सिंहासन, मानवता के विचार में आया था
स्वतंत्र प्राणी अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है, और ईश्वर के अनुग्रह पर आधारित है
ज्ञान, शक्ति और इच्छाशक्ति। प्रत्येक शब्द और कथन एक शक्ति का स्रोत है।
मार्गदर्शन और विश्वास की सच्चाइयों का मोती, साथ ही इस्लामी धर्म की खान
सिद्धांत। हमारे व्यर्थ, काल्पनिक, निरर्थक शब्दों के बीच कितनी बड़ी दूरी है
और कुरान के।

एक धन्य वृक्ष की तरह जिसके नीचे ब्रह्मांड स्थित है, कुरान ने सभी इस्लामी आध्यात्मिक मूल्यों और नैतिक परिपूर्णताओं, सार्वजनिक मूल्यों और नैतिक मूल्यों के पत्ते पैदा किए हैं।
प्रतीकों और नियमों, सिद्धांतों और आज्ञाओं। यह खिलकर खिल गया है
संतों और शुद्ध विद्वानों की कृपा से, और सभी सिद्धियों के फल उत्पन्न हुए, दिव्य
सृष्टि के दिव्य नियमों और ब्रह्मांड के संचालन से संबंधित सत्य और सत्य। उन फलों में गड्ढे या पत्थर बड़े हो गए हैं
आचरण के सिद्धांतों और व्यावहारिक जीवन के कार्यक्रमों के रूप में “फल देने वाले पेड़”।

प्रदर्शित सत्य के रत्नों से प्रत्येक व्यक्ति और भूमि को लाभ मिला है
लगभग चौदह शताब्दियों तक ब्रह्मांड के बाजार में बुद्धिमान कुरान द्वारा। उस समय के दौरान, न तो बहुत अधिक परिचितता और न ही बहुतायत
इसकी सच्चाई, न तो समय बीतने और न ही महान परिवर्तन और उथल-पुथल
मानव जीवन की अमूल्य सच्चाइयों और सुन्दरता के प्रति लोगों को उदासीन बना दिया है।
प्रामाणिक शैलियाँ। न ही इन चीज़ों ने उन्हें नुकसान पहुँचाया है या उनका अवमूल्यन किया है, या
इसकी सुंदरता और ताज़गी समाप्त हो गई। यह अपने आप में चमत्कारी है।

यदि कोई व्यक्ति कुरान की कुछ सच्चाइयों को अपनी पुस्तक में संकलित कर ले तो वह
और कुरान के समान एक किताब लाने का दावा करते हैं, यह होगा
जैसे कि: मान लीजिए कि एक कुशल बिल्डर ने एक शानदार महल बनाया
विभिन्न रत्नों को सममित तरीके से रखा गया है, तथा प्रत्येक रत्न की स्थिति और महल के सामान्य डिजाइन के अनुपात में इसे अलंकृत किया गया है। फिर कल्पना करें कि एक साधारण निर्माता, महल के रत्नों, डिजाइन के बारे में कुछ भी नहीं जानता है,
और अलंकरण, इसमें प्रवेश करने और मास्टर-बिल्डर के काम को नष्ट करने वाले थे
इसे एक साधारण इमारत जैसा दिखाने के लिए। मान लीजिए कि यह व्यक्ति कुछ लटकाता है
कुछ बचकानी कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए उस पर मोती लगाता है, और फिर कहता है: "देखो! मैं हूँ
मूल निर्माता से ज़्यादा कुशल और ज़्यादा धन-संपत्ति और ज़्यादा मूल्यवान आभूषणों वाला।” क्या कोई ऐसे बेतुके दावे को गंभीरता से ले सकता है?

तीसरी रोशनी

इसमें तीन किरणें होती हैं।

पहली किरण: कुरान की चमत्कारिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि
तेरहवें वचन में इसकी व्याख्या की गई है। मैं इसका उल्लेख यहाँ भी कर रहा हूँ, क्योंकि संदर्भ के अनुसार ऐसा करना उचित है।

यदि आप देखना और सराहना करना चाहते हैं कि प्रत्येक तारे जैसी कुरान की आयत कैसे
चमत्कार का प्रकाश फैलाकर अविश्वास के अंधकार को दूर करता है और
मार्गदर्शन के लिए, अपने आप को इस्लाम-पूर्व अरब में कल्पना करें। उस समय की हर चीज़
अज्ञानता और बर्बरता का रेगिस्तान निर्जीव प्रकृति के आवरण में लिपटा हुआ था
अज्ञानता और असावधानी के अंधकार के बीच। अचानक, आपको सुनाई देता है
कुरान की उदात्त भाषा में ऐसी आयतें हैं: जो कुछ आकाश और परलोक में है

पृथ्वी परमेश्वर की महिमा करती है। वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान, सर्व-ज्ञानी है (57:1); आकाश में और पृथ्वी पर जो कुछ भी है वह परमेश्वर की महिमा करता है, पूर्ण प्रभु, परम पवित्र और सर्व-शुद्ध, सर्व-महिमावान और शक्तिशाली, सर्व-ज्ञानी (62:1)। देखें कि कैसे वे प्राणी, जिन्हें बेजान और संवेदनाहीन माना जाता है, महिमा की ध्वनि पर दर्शकों के मन में जीवित हो उठते हैं , कैसे वे जागते हैं, उछल पड़ते हैं, और उनके नामों की स्तुति करके परमेश्वर का गुणगान करना शुरू करते हैं! ' सात स्वर्ग और पृथ्वी उसकी महिमा करते हैं' (17:44) की ध्वनि पर, अंधकारमय स्वर्ग उन लोगों को एक मुँह के रूप में दिखाई देता है, जो इसे सुनते हैं, प्रत्येक तारा एक ज्ञान-प्रदर्शन करने वाला शब्द और सत्य-विकिरण वाला प्रकाश है; और पृथ्वी एक सिर के रूप में, भूमि और समुद्र प्रत्येक की एक जीभ है, और सभी जानवर और पौधे महिमा के शब्द हैं।

यदि आप इन आयतों पर आधुनिक दृष्टिकोण से विचार करें, यदि आप इन्हें परिचितता के सतही आवरण से देखें, तो पूर्व-इस्लामी युग के अज्ञान के अंधकार को कुरान के "सूर्य" और इस्लाम के प्रकाश द्वारा "पहले से ज्ञात" में परिवर्तित कर दिए जाने के बाद, आप यह नहीं देख सकते कि प्रत्येक आयत चमत्कारिकता की मधुर धुन में किस प्रकार के अंधकार को दूर करती है, और इसलिए आप इसके चमत्कारिकता के इस पहलू की सराहना नहीं कर सकते।

अगर आप कुरान की चमत्कारिकता के उच्चतम स्तरों में से एक को देखना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक बहुत ही विशाल और फैले हुए पेड़ की कल्पना करें जो अदृश्य के पर्दे के पीछे छिपा हुआ है। आप जानते हैं कि जिस तरह एक मानव शरीर के अंगों के बीच एक सामंजस्य और संतुलन होता है, उसी तरह एक पेड़ के विभिन्न भागों के बीच - उसकी शाखाओं, पत्तियों, फूलों और फलों के बीच - एक सामंजस्य और संतुलन होता है और प्रत्येक भाग का पेड़ की प्रकृति के अनुसार अपना उचित रूप और आकार होता है। अगर कोई उस छिपे हुए पेड़ की एक सटीक प्रतिकृति बनाता है, जिसमें उसके सभी भागों, रिश्तों और अनुपातों को बिना देखे सही ढंग से दिखाया गया हो, तो कोई भी संदेह नहीं कर सकता कि कलाकार अदृश्य को भेदने वाली नज़र से छिपे हुए पेड़ को देखता और चित्रित करता है।

इसी तरह, चीज़ों की वास्तविकता पर कुरान की व्याख्याएँ, अर्थात् सृष्टि के वृक्ष की वास्तविकता जो सृष्टि के आरंभ से अनंत काल तक फैली हुई है, धरती से लेकर ईश्वरीय सिंहासन तक, कणों से लेकर सूर्य तक, सभी भागों के बीच इस हद तक अनुपात बनाए रखती है, और प्रत्येक भाग और फल को ऐसा उपयुक्त रूप देती है कि सभी सटीक और सत्य की खोज करने वाले विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है: "भगवान ने क्या चमत्कार किया है। भगवान इसे आशीर्वाद दें। हे बुद्धिमान कुरान, केवल आप ही सृष्टि के रहस्य को सुलझा सकते हैं।"

सबसे बड़ी तुलना ईश्वर के लिए है (और इसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए) - आइए हम उनके नामों और गुणों के साथ-साथ उनके प्रभुत्व के कार्यों और गुणों को प्रकाश के एक वृक्ष के रूप में प्रस्तुत करें जो इतना विशाल और महान है कि यह अनंत काल तक फैला हुआ है। यह पूरे ब्रह्मांड को शामिल करता है और एक असीम रूप से विशाल क्षेत्र में दिव्य कार्यों को शामिल करता है: वह एक व्यक्ति और उसके दिल के बीच हस्तक्षेप करता है (8:24), निश्चित रूप से ईश्वर बीज-अनाज और खजूर-गुठली को अलग करने वाला है (6:95), और: वही है जो तुम्हें आकार देता है

गर्भ में जैसा वह चाहता है (3:6), और स्वर्ग उसके दाहिने हाथ में लपेट लिया गया है (39:67) उसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया (7:54) सूर्य और चंद्रमा उसके आदेश के अधीन हैं (13:2)। बुद्धिमान कुरान इस उज्ज्वल वास्तविकता का वर्णन करता है, उन नामों, विशेषताओं, गुणों की सच्चाई, और अपने सभी प्रभावों और परिणामों में इतने सामंजस्यपूर्ण, उपयुक्त और एक ऐसा तरीका अपनाएं जो उन सभी लोगों के लिए उपयुक्त हो जिन्होंने चीजों की वास्तविकता में प्रवेश किया है और छिपे हुए सत्यों की खोज की है, साथ ही सभी ऋषियों के लिए भी जो ईश्वर के दायरे में यात्रा कर रहे हैं। अस्तित्व के आंतरिक आयाम ने घोषणा की है: "परमेश्वर सर्व-महिमावान है! कैसे सही है, वास्तविकता के साथ कितना अनुरूप, कितना सुंदर और कितना उपयुक्त!"

विश्वास के छह स्तंभों को लें, जो दोनों क्षेत्रों से संबंधित हैं आकस्मिकता (सृजन का क्षेत्र) और आवश्यकता का क्षेत्र (सृजन का क्षेत्र) दिव्य अस्तित्व का क्षेत्र), और इन दो की एक शाखा के रूप में माना जा सकता है शक्तिशाली "पेड़।" कुरान इन छह विश्वास स्तंभों का उनके सभी अर्थों के साथ वर्णन करता है। तत्वों और सबसे दूर के फल और फूल ऐसे आनुपातिक रूप से, उनके अवलोकन करते हैं इस हद तक सामंजस्य स्थापित करता है, और उन्हें इतने संतुलित और सुनियोजित तरीके से प्रस्तुत करता है कि हम चकित रह जाते हैं और शायद ही इसकी सुंदरता को समझ पाते हैं। उत्तम संबंध, पूर्ण संतुलन और अद्भुत सामंजस्य का अवलोकन करता है इस्लाम के पाँच स्तंभों में से, जो विश्वास की शाखा की एक टहनी बनाते हैं, सूक्ष्मतम विवरण तक, आचरण के सबसे महत्वहीन बिंदु, सबसे दूर के लक्ष्य, सबसे गहन ज्ञान और सबसे खास फल। अपने संपूर्ण क्रम और संतुलन के साथ-साथ अपने उचित अनुपात और सुदृढ़ता के साथ, सर्वोच्च शरिया, जो व्यापक कुरान के निर्णायक बयानों से उत्पन्न, अलग शब्दों और अर्थ, संकेत और संकेतों के पहलू या आयाम यह इसका अकाट्य एवं निर्णायक प्रमाण तथा न्यायसंगत एवं निर्विवाद साक्ष्य है।

इसे देखते हुए, कुरान की व्याख्या किसी भी माध्यम से जारी नहीं की जा सकती थी मनुष्य का ज्ञान, विशेष रूप से एक अशिक्षित व्यक्ति के ज्ञान से। बल्कि, इसकी व्याख्याएं एक सर्व-व्यापक ज्ञान पर आधारित हैं और यह वह जो सभी चीज़ों को एक ही चीज़ की तरह देखता है, जो दो अनंत काल के बीच सभी सत्यों को एक साथ देखता है। इस पर हम विश्वास करते हैं।

दूसरा रे: हमने बारहवें और अन्य शब्दों में इस बात पर चर्चा की थी कि मानवीय दर्शन कुरान की बुद्धिमत्ता से किस हद तक कमतर है। यहाँ हम देखेंगे दूसरे दृष्टिकोण से उनकी तुलना करें.

दर्शन और विज्ञान अस्तित्व को स्थायी मानते हैं और प्राणियों की प्रकृति और गुणों पर विस्तार से चर्चा करते हैं। यदि वे अपने प्रति अपने कर्तव्यों का उल्लेख करते हैं वे केवल रचनाकार के बारे में ही बात करते हैं, वे केवल बहुत संक्षेप में ही ऐसा करते हैं; वे केवल रचनाकारों के डिजाइन और उनकी रचनाओं पर ही चर्चा करते हैं। ब्रह्मांड की पुस्तक के अक्षरों को नकारते हैं और उसके अर्थ को अनदेखा करते हैं। जबकि कुरान सांसारिक अस्तित्व को क्षणभंगुर, गतिशील, भ्रामक, अस्थिर, अशांत और अशांत मानता है।

और परिवर्तन। यह प्राणियों की प्रकृति और बाह्य, भौतिक गुणों के बारे में बताता है बल्कि संक्षेप में, लेकिन पूजा के कर्तव्यों का विस्तार से उल्लेख करता है जिसके साथ उनके सृष्टिकर्ता ने उन्हें यह जिम्मेदारी दी है कि वे अपने नाम को किस तरह से प्रकट करें, तथा सृष्टि के निर्माण और संचालन के दिव्य नियमों के प्रति उनका समर्पण कैसा हो। इस प्रकार, सत्य और असत्य में अंतर करने के लिए हमें अंतर देखना चाहिए मानव दर्शन और कुरानिक ज्ञान के बीच संक्षेपण और विस्तारपूर्वक बताना।

हालाँकि घड़ी बाहर से अचल, स्थिर और स्थिर दिखाई देती है, लेकिन यह सार रूप में और आंतरिक रूप से निरंतर गति की स्थिति में। इसी तरह संसार, जो ईश्वरीय शक्ति की एक विशाल घड़ी है, निरंतर परिवर्तन और उथल-पुथल में निरंतर घूमती या घूमती रहती है। रात और दिन की इसकी दो “सूइयां” दिखाती हैं इसके सेकंड का बीतना, और इसके वर्षों और शताब्दियों के “हाथ” क्रमशः इसके मिनटों और घंटों का बीतना दिखाते हैं। समय दुनिया को लहरों में डुबो देता है क्षय की स्थिति उत्पन्न होती है तथा अतीत और भविष्य को अस्तित्वहीन छोड़ कर अस्तित्व की अनुमति मिलती है केवल वर्तमान के लिए.

अंतरिक्ष के संबंध में भी दुनिया बदल रही है और अस्थिर है। इसका वायुमंडल तेजी से बदल रहा है, हर साल कई बार बादल छाते हैं और कई बार बादल हटते हैं। दिन भर मौसम संबंधी परिवर्तन प्रदर्शित करना। ऐसी गतिविधि मौसम के अनुरूप होती है सेकंड बीतने के साथ। पृथ्वी, दुनिया की तलहटी, निरंतर परिवर्तन से गुजरती है जीवन और मृत्यु के चक्रों और वनस्पतियों और जानवरों में। ऐसे चक्र मिनटों के बीतने के अनुरूप हैं और दुनिया की क्षणभंगुरता को प्रदर्शित करते हैं।

इस तरह के चक्र पृथ्वी के आंतरिक भाग में भी पाए जा सकते हैं, जहाँ भूकंप जैसे कंपन और उथल-पुथल के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के चक्रवात उत्पन्न होते हैं। पहाड़ और ज़मीन धंसने की घटनाएँ होती हैं। ये घंटे की सुई की तरह हैं और दुनिया की नश्वरता को दर्शाता है। आकाश में खगोलीय पिंडों की हलचल (दुनिया की छत), धूमकेतु और नए तारों का दिखना जबकि कुछ अन्य बुझ जाते हैं, साथ ही सौर और चंद्र ग्रहण, यह दर्शाते हैं कि यह स्थिर नहीं है और इसलिए अंतिम विनाश की ओर बढ़ रहा है। हालाँकि इसके परिवर्तन धीमे हैं, जैसे साप्ताहिक घड़ी में दिन गिनने वाली सुई, वे यह भी दर्शाता है कि संसार नश्वर है और अपने अपरिहार्य अंत की ओर अग्रसर है।

इस प्रकार, विश्व, अपने सांसारिक अस्तित्व के संबंध में, पर आधारित था ये सात अस्थिर "स्तंभ" हैं। वे इसे लगातार हिलाते रहते हैं। हालाँकि, जब इसके निर्माता के संबंध में विचार किया जाता है, तो इसकी गतिविधियाँ और परिवर्तन परिणाम हैं दिव्य शक्ति की कलम की गतिविधियों से शाश्वत प्रार्थना लिखी जाती है किसी के संदेश और उसमें होने वाले परिवर्तन हमेशा नवीनीकृत की तरह कार्य करते हैं या सदैव चमकाए हुए दर्पण जो दिव्य नामों के सभी विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

इस प्रकार, जब स्वयं के संबंध में और एक भौतिक, निर्मित इकाई होने के नाते विचार किया जाता है, तो दुनिया लगातार ऐंठने लगती है और क्षय और विनाश की ओर बढ़ती है।
मौत। हालाँकि यह बहते पानी की तरह बहता है, लेकिन असावधानी ने इसे जमा दिया है और
(दार्शनिक) प्रकृतिवाद ने इसे इतना ठोस बना दिया है कि यह एक पर्दा बन गया है
परलोक। दर्शन, आधुनिक वैज्ञानिक विचारों से पोषित और भ्रष्ट आधुनिक सभ्यता के आकर्षक मनोरंजनों द्वारा समर्थित, साथ ही साथ
यह लोगों में मादक इच्छाएँ जगाता है, दुनिया को और अधिक अशांत बनाता है और
इसकी दृढ़ता को बढ़ाएँ, जिससे लोग निर्माता और परलोक को भूल जाते हैं। जबकि ऐसी आयतों के माध्यम से:
अचानक, शक्तिशाली प्रहार! क्या है
अचानक, शक्तिशाली प्रहार? (101:1-2); जब घटित होने वाली घटना घटित होती है (56:1); तथा:
पहाड़ की कसम, और एक खुदी हुई किताब की कसम (52:1-2), कुरान इस दुनिया को चकनाचूर कर देता है
और इसे ऊन की तरह तानते हैं। इस तरह की आयतों के ज़रिए: क्या वे भीतरी बातों पर विचार नहीं करते
आकाश और पृथ्वी का आयाम, और उन पर परमेश्वर का पूर्ण प्रभुत्व?
(7:185); क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसा बनाया है? (50:6);
और क्या इनकार करनेवालों ने यह समझ लिया कि आकाश और धरती एक ही हैं?
फिर हमने उन्हें अलग अलग कर दिया? (21:30), यह उस दुनिया को पारदर्शिता और
इसकी गन्दगी दूर करता है। अपने चमकीले, प्रकाश फैलाने वाले “तारों” के माध्यम से: ईश्वर ही है
आकाश और पृथ्वी का प्रकाश (24:35), और: वर्तमान, सांसारिक जीवन एक
खेल और मनोरंजन (6:32), यह उस ठोस दुनिया को पिघला देता है।

इसके धमकी भरे छंदों के माध्यम से जो मौत की याद दिलाते हैं, जैसे: जब सूरज
मुड़ा हुआ (81:1); जब आकाश खुल जाएगा (82:1); जब आकाश फट जाएगा
(84:1) तथा: तुरही फूँकी गई, और जितने आकाश में हैं, सब ने भी ऐसा ही किया।
पृथ्वी पर जितने लोग हैं वे सब मर जाते हैं, केवल वे जिन्हें परमेश्वर चाहता है (39:68), यह नाश कर देता है
यह भ्रम कि दुनिया शाश्वत है। इसकी गड़गड़ाहट जैसे विस्फोटों के माध्यम से, जैसे:
वह जानता है जो कुछ धरती में जाता है और जो कुछ धरती से निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ आकाश में चढ़ता है। तुम जहाँ कहीं भी हो वह तुम्हारे साथ है। अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखता है (57:4); और: कह दो: “सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है। शीघ्र ही वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा देगा, और तुम जान जाओगे
तुम्हारा रब कदापि तुम्हारे कर्मों से बेखबर और बेखबर नहीं है। (27:93)
असावधानी को दूर करता है, जो प्रकृतिवाद को जन्म देती है।

इस प्रकार ब्रह्मांड से संबंधित सभी कुरान की आयतें ऊपर बताए गए सिद्धांत का पालन करती हैं। वे दुनिया की वास्तविकता को उजागर करती हैं और उसे वैसा ही दिखाती हैं जैसा वह है।
दुनिया का कुरूप चेहरा दिखाकर वे हमें उससे दूर कर देते हैं; इसकी बुराई की ओर इशारा करके
सुन्दर चेहरा, जो निर्माता की ओर मुड़ा हुआ है, वे हमारा चेहरा उसकी ओर मोड़ देते हैं।
कुरान हमें सच्ची बुद्धि का ज्ञान देता है और हमें ईश्वर के वचनों का अर्थ सिखाता है।
ब्रह्माण्ड की पुस्तक, इसके अक्षरों और सजावट पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।
मानवीय दर्शन के विपरीत, यह स्वयं को कुरूपता के हवाले नहीं करता,

लोगों को अर्थ भूलने के कारण, उन्हें इस तरह के कार्यों में अपना समय बर्बाद करने के लिए प्रेरित करना
अक्षरों की सजावट के रूप में अर्थहीन चीजें।

तीसरी किरण: दूसरी किरण में हमने निम्नता की ओर संकेत किया है।
मानव दर्शनशास्त्र को कुरान की बुद्धिमत्ता और उसके चमत्कारीपन से तुलना करने के लिए प्रेरित किया। इस रे में,
जो कुरान की बुद्धिमत्ता की तुलना दर्शनशास्त्र से करता है
इसके छात्रों (जैसे, शुद्ध विद्वान, संत और इलुमिनिस्ट (इशराकियुन),
जो दार्शनिकों का अधिक प्रबुद्ध वर्ग था), हम संक्षेप में चर्चा करेंगे
इस संबंध में कुरान की चमत्कारिकता।

अब हम बुद्धिमानीपूर्ण कुरान की महानता का सबसे सच्चा प्रमाण प्रस्तुत करते हैं,
इसकी सच्चाई का सबसे स्पष्ट प्रमाण और इसकी चमत्कारिकता का सबसे शक्तिशाली संकेत।
इस पर विचार करें: कुरान में सभी डिग्री, विविधताएं और व्याख्याएं समाहित हैं और उन्हें समझाया गया है।
ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति और उसमें पूर्ण विश्वास की आवश्यकताएं
संतुलित तरीके से। इसके अलावा, यह सभी उन्नत दिव्य सत्यों के बीच संतुलन बनाए रखता है, इसमें सभी आज्ञाएँ
और सिद्धांत शामिल हैं जो कि ईश्वर द्वारा अपेक्षित हैं।
दिव्य नामों का पालन करता है, तथा उनके बीच सटीक एवं संवेदनशील संबंध बनाए रखता है।
इसके अलावा, यह परमेश्वर के सभी कार्यों और आवश्यक विशेषताओं को एक साथ रखता है
दिव्यता और प्रभुत्व का पूर्ण संतुलन।

ये सभी इसके अद्वितीय गुण और विशेषताओं को दर्शाते हैं, जो किसी अन्य में नहीं देखे जा सकते।
महानतम मानवीय कार्यों में, उन संतों में पाया जा सकता है जो
चीज़ों की आंतरिक वास्तविकताओं या आयामों, या उन प्रकाशकों की जो
चीजों और घटनाओं के आंतरिक पहलुओं, या उन पूरी तरह से शुद्ध लोगों के जो अदृश्य दुनिया में प्रवेश करते हैं।
यह ऐसा है जैसे कि, एक निश्चित विभाजन के अनुसार
श्रम, प्रत्येक समूह ने सत्य के शक्तिशाली वृक्ष की एक शाखा के लिए खुद को समर्पित किया और
वह केवल अपने पत्तों और फलों में ही व्यस्त रहता था, और इस बात से अनभिज्ञ रहता था कि
अन्य.

पूर्ण, असीमित सत्य को सीमित मन से नहीं समझा जा सकता
और दृष्टि से ही नहीं, बल्कि केवल कुरान की सार्वभौमिक और सर्वव्यापी दृष्टि से ही।
जो कुछ कुरान नहीं है वह उसमें निहित सार्वभौमिक सत्य को नहीं समझ सकता।
संपूर्णता, भले ही वे इससे लाभान्वित हों, क्योंकि उनका मन सीमित है, प्रतिबंधित है,
और पूरी तरह से इसके कुछ ही भागों में लीन हो जाते हैं। वे अक्सर जाते हैं
अतिवादी होना, एक या दो बिंदुओं पर अन्य की अपेक्षा अधिक ध्यान देना, और इस प्रकार
सत्यों के बीच संतुलन और सटीक संबंधों को नष्ट करना। यह बिंदु था
चौबीसवें वचन की दूसरी शाखा में एक महत्वपूर्ण दृष्टांत के साथ चर्चा की गई है। हम यहाँ एक और दृष्टांत के साथ
इस पर चर्चा करेंगे।

समुद्र के नीचे रत्नों से भरा खजाना होने की कल्पना करें। कई गोताखोर उसे ढूँढ़ रहे हैं
लेकिन, चूंकि उनकी आंखें बंद हैं, वे अपने हाथों से उसे खोजते हैं।
वह एक बड़ा हीरा खोजता है और निष्कर्ष निकालता है कि उसे पूरा खजाना मिल गया है।

जब वह सुनता है कि उसके दोस्तों को कोई और रत्न मिला है, जैसे गोल माणिक या चौकोर अम्बर, तो वह सोचता है कि ये उसके द्वारा खोजे गए रत्नों के ही पहलू या अलंकरण हैं। हर गोताखोर के मन में यही विचार आता है।

इस तरह का विचार और रवैया सत्यों के बीच संतुलन और सटीक संबंधों को नष्ट कर देता है। यह उनमें से कई का रंग भी बदल देता है, क्योंकि व्यक्ति सत्यों का असली रंग देखने या उन्हें दूसरों को दिखाने के लिए मजबूरन उनकी व्याख्या और विस्तृत व्याख्या करने के लिए मजबूर हो जाता है। कुछ लोग तो उन्हें नकारते या झूठा साबित करते हैं। जो लोग इल्लुमिनिस्टों की किताबों या सूफी गुरुओं की रचनाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं, जो कुरान और सुन्नत के तराजू पर तौले बिना अपने दर्शन और रोशनी पर भरोसा करते हैं, वे इस निर्णय की पुष्टि करेंगे। हालाँकि उन्होंने कुरान से लाभ उठाया है और आम तौर पर कुरान द्वारा सिखाया गया है, लेकिन उनकी शिक्षाओं में कुछ कमियाँ और दोष हैं क्योंकि वे स्वयं कुरान नहीं हैं। कुरान, सत्यों का वह सागर, अपनी आयतों में संपूर्ण खजाने को समेटे और देखता है और अपने रत्नों का इतने सामंजस्यपूर्ण और संतुलित तरीके से वर्णन करता है कि वे अपनी सुंदरता को पूरी तरह से दिखाते हैं।

उदाहरण के लिए, जिस प्रकार कुरान ईश्वरीय प्रभुत्व की महानता को देखता और प्रदर्शित करता है: क़ियामत के दिन पूरी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा हुआ है (39:67); और: जिस दिन हम आकाश को लपेट लेंगे जैसे पुस्तकों के लिए लिखी गई पुस्तकें लपेटी जाती हैं (21:104), वह ईश्वर की व्यापक दयालुता को देखता और प्रदर्शित करता है, धरती और आकाश में जो कुछ भी है, उससे छिपा नहीं है। वही है जो तुम्हें गर्भ में जैसा चाहता है वैसा आकार देता है (3:5-6); कोई भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं है जो उसे उसके माथे के बाल से पकड़े न रहे (11:56), और: कितने ही जीवित प्राणी ऐसे हैं जो अपना भरण-पोषण स्वयं नहीं कर सकते, परन्तु ईश्वर उनकी और वास्तव में तुम्हारी भी भरण-पोषण करता है (29:60)।

जिस प्रकार यह इस विशाल सृजनात्मकता को देखता और इंगित करता है कि: (उसने) आकाशों और धरती को बनाया और अंधकार और प्रकाश के पर्दे बनाए (6:1); यह चीज़ों पर ईश्वरीय नियंत्रण और उसकी व्यापक प्रभुता को देखता और प्रदर्शित करता है: वह तुम्हें और जो कुछ तुम करते हो उसे पैदा करता है (37:96)। यह इस महान सत्य को भी देखता और प्रदर्शित करता है: वह धरती को उसके मरने के बाद पुनर्जीवित करता है (30:50) और उसकी उदारता के बारे में सत्य को व्यक्त करता है: तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरित किया (16:68), और उसकी प्रभुता और आदेश के बारे में महान सत्य को व्यक्त करता है: सूर्य और चंद्रमा और तारे उसके आदेश के अधीन हैं (7:54)।

कुरान करुणा और प्रशासन की सच्चाई को देखता और दिखाता है, जो इस प्रकार व्यक्त होती है: क्या वे अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखते जो कतारों में उड़ते हैं, अपने पंख फैलाते और बंद करते हैं? उन्हें कोई नहीं थाम सकता सिवाय रहमान के; निस्संदेह वह हर चीज़ को देखता है (67:19); विशाल सत्य इस प्रकार व्यक्त होता है: उसका सिंहासन आकाश और आकाश को अपने में समेटे हुए है।

पृथ्वी, और उनके संरक्षण से वह थकता नहीं है (2:255); उसकी देखरेख के बारे में सच्चाई, इस प्रकार व्यक्त की गई: वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो
(57:4); सर्वव्यापी सत्य जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: वह प्रथम और अंतिम है,
वह सर्वव्यापक और अन्तर्यामी है, और वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है (57:3);
उनका स्वयं से अधिक प्राणियों के निकट होना, इस प्रकार व्यक्त होता है: निश्चय ही, हमारे पास है
मनुष्य को बनाया और जानते हैं कि उसकी आत्मा उससे क्या कहती है; हम उससे अधिक निकट हैं
उसकी गले की नस (50:16); स्वर्गदूतों और द्वारा व्यक्त किया गया ऊंचा सत्य
आत्मा उसके पास एक दिन में चढ़ जाती है जिसकी अवधि पचास हज़ार वर्ष है (70:4);
और सर्वव्यापी सत्य जो व्यक्त किया गया है: ईश्वर न्याय और भक्ति का आदेश देता है
भलाई करने और नातेदारों के साथ उदारता बरतने का आदेश दिया है और वह हर प्रकार की शर्मनाक हरकतों से रोकता है।
विवेक के विरुद्ध घृणित बातें, अन्याय और विद्रोह (16:90)।

संक्षेप में, कुरान ईश्वर से संबंधित सभी सच्चाइयों को देखता और विस्तार से दिखाता है।
इस दुनिया और अगले और प्रत्येक के बारे में ज्ञान और अभ्यास
विश्वास के छह स्तंभ। यह पाँचों में से प्रत्येक को उद्देश्यपूर्ण और ईमानदारी से इंगित करता है
इस्लाम के स्तंभों और दोनों दुनियाओं में खुशी सुनिश्चित करने के अन्य सभी सिद्धांतों पर बल दिया।
यह सटीक संतुलन बनाए रखता है और सटीक संबंध बनाए रखता है
उनमें से प्रत्येक के बीच अनुपात बहुत बड़ा है। उन सभी सत्यों की समग्रता के सामंजस्य से उत्पन्न सूक्ष्मता और सुंदरता कुरान की चमत्कारिकता के एक रूप को जन्म देती है।

धर्मशास्त्र के विद्वान कुरान का अध्ययन करते हैं और विश्वास के स्तंभों पर कई खंड लिखे हैं। लेकिन उनमें से कुछ, जैसे मुताज़िलिस, ने ईश्वर से प्राप्त ज्ञान के बजाय तर्क को प्राथमिकता दी है।

रहस्योद्घाटन और इसलिए इन सत्यों को प्रभावी ढंग से समझाने में सक्षम नहीं हैं
कुरान की दस आयतों के बराबर। ऐसा लगता है जैसे उन्होंने ज़मीन के नीचे सुरंग खोद ली है
पानी प्राप्त करने और उसे पहुंचाने के लिए वे दुनिया के अंत तक पहाड़ों पर चढ़ जाते हैं।
कारण और प्रभाव की शृंखलाओं के साथ शुरुआत तक चले गए हैं
समय और फिर, जंजीरों को काटकर, अनंत काल तक छलांग लगाकर
परमेश्वर का ज्ञान (लोगों के लिए जीवन का जल) और आवश्यक रूप से सिद्ध करना
अस्तित्ववान व्यक्ति का अस्तित्व।

दूसरी ओर, कुरान की प्रत्येक आयत प्रत्येक व्यक्ति से "पानी" निकाल सकती है।
मूसा के डंडे की तरह जगह, हर चीज से एक खिड़की खोलना और सर्व-महान निर्माता को ज्ञात करना। इसके अलावा, क्योंकि वे सत्य के बीच सटीक संतुलन बनाए नहीं रख सकते थे, सभी विधर्मी समूहों के नेता, वे

जिन्होंने अपनी दृष्टि पर भरोसा करके चीजों की आंतरिक प्रकृति में गहराई से खोज की है
पैगंबर की सुन्नत के बजाय, आधे रास्ते से लौट आए हैं और अलग-अलग धर्मों का गठन किया है
इस कारण वे पाखंड और गुमराही में पड़ गए और दूसरों को भी गुमराह कर दिया। उनकी असफलता कुरान की चमत्कारिकता को भी प्रदर्शित करती है।

निष्कर्ष

कुरान की चमत्कारिकता की झलकियों के बीच, इसकी पुनरावृत्ति और संक्षिप्त व्याख्या वैज्ञानिक तथ्यों और विकासों का उल्लेख, जिन्हें गलत तरीके से वैज्ञानिक माना जाता है दोषों का एक कारण हो सकता है, चौदहवें ड्रॉपलेट में चर्चा की गई थी उन्नीसवाँ वचन। कुरान की चमत्कारिकता की एक और झलक, जो चमकती है पैगंबरों के चमत्कारों के उल्लेख में, दूसरे स्टेशन में दिखाया गया था बीसवाँ वचन। आपको अन्य लेखों में भी कई अन्य झलकियाँ मिलेंगी। शब्द और मेरे अरबी ग्रंथ। हालाँकि, मैं यहाँ एक और पहलू जोड़ना चाहूँगा।

जिस प्रकार पैगम्बरों के चमत्कार कुरान की चमत्कारिकता का एक पहलू प्रदर्शित करते हैं, उसी प्रकार कुरान भी अपने सभी चमत्कारों के साथ मुहम्मद का चमत्कार है। उसे शांति और आशीर्वाद मिले, और उसके सभी चमत्कार एक चमत्कार का गठन करते हैं कुरान। वे इसके दिव्य लेखकत्व को प्रदर्शित करते हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक शब्द चमत्कार बन जाता है, क्योंकि बीज की तरह, प्रत्येक शब्द में एक वृक्ष हो सकता है सत्य का; हृदय के केंद्र की तरह, इसका शरीर के सभी भागों के साथ संबंध हो सकता है महान सत्य। साथ ही, चूँकि यह सर्वव्यापी ज्ञान पर निर्भर करता है और अनंत इच्छा, इसे इसके अक्षरों, स्थिति, अर्थ, संकेतार्थ, और इसकी संपूर्णता में, अनगिनत अन्य चीजें। यही कारण है कि अक्षर विज्ञान के विशेषज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि प्रत्येक अक्षर कुरान में इतने रहस्य हैं जितने एक पृष्ठ में समा सकते हैं, और यह सिद्ध करता है कि जो लोग उस विज्ञान में विशेषज्ञ ज्ञान रखते हैं।

अब तक चर्चा की गई सभी रोशनी, किरणों, झलकियों, चमक और किरणों पर विचार करें दूर तक, और देखें कि कैसे शुरुआत में किया गया दावा निर्णायक, निर्विवाद बन जाता है निष्कर्ष। दूसरे शब्दों में, यह संपूर्ण ग्रंथ निर्णायक रूप से सत्य की घोषणा करता है कह दो : “यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर इस क़ुरआन के समान कुछ बना दें, वे कभी भी इसके समान कुछ नहीं ला सकेंगे, भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करते हों” (17:88)

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना।

हे मेरे प्रभु, मेरे लिए मेरा सीना चौड़ा कर दे। मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे। मेरी ज़बान से गांठ खोल दो ताकि वो मेरी बात समझ सकें भाषण स्पष्ट रूप से.

हे ईश्वर, आशीर्वाद और शांति प्रदान करें; सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया, सबसे सुखद और सबसे प्रकट, शुद्धतम, सबसे अनुग्रहपूर्ण और सबसे प्रचुर, सबसे शक्तिशाली, महानतम, सबसे सम्मानित और सबसे ऊंचा, सबसे समृद्ध और आपके आशीर्वादों में सबसे समृद्ध और सबसे सूक्ष्म; आपकी शांति में सबसे पर्याप्त और सबसे प्रचुर, सबसे प्रचुर और सबसे ऊंचा, सबसे उदात्त और सबसे निरंतर; और आशीर्वाद, शांति, दया के रूप में, अच्छा आनंद, क्षमा, और क्षमा, वृद्धि और निरंतरता में

आपकी उदारता और उदारता के अनुग्रह के रूप में बादलों से वर्षा के साथ, और आपकी उदारता और परोपकार की उत्तम और उत्तम नेमतों के साथ निरंतर गुणन में; सदा-सदा, बिना आरंभ या अंत के, आपकी अनंतता के साथ-साथ - आपके सेवक, आपके प्रिय और आपके रसूल, मुहम्मद पर, जो आपकी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ हैं, सबसे उज्ज्वल प्रकाश, सबसे स्पष्ट और सबसे निर्णायक प्रमाण, सबसे गहरा महासागर, सबसे व्यापक प्रकाश, कृपा और अत्यधिक महिमा और उत्कृष्ट पूर्णता को चमकाते हुए; अपने अस्तित्व की भव्यता के माध्यम से उन पर आशीर्वाद प्रदान करें, और उनके परिवार और साथियों पर आशीर्वाद प्रदान करें जिसके माध्यम से आप हमारे पापों को क्षमा कर सकें, हमारे सीने को चौड़ा कर सकें, हमारे दिलों को शुद्ध कर सकें, हमारी आत्माओं को ऊपर उठा सकें, हमें आशीर्वाद दे सकें, हमारी यादों और विचारों को परिष्कृत कर सकें

ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को विचलित न होने दे, इसके पश्चात कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है और अपनी कृपा से हम पर कृपा अता कर। निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ है।

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: "सभी प्रशंसा और आभार
क्योंकि परमेश्वर, जो सारे जगत का स्वामी है।”

प्रथम परिशिष्ट145

अथक और अतृप्त यात्री, जो इस दुनिया में जीवन का उद्देश्य और सार विश्वास को जानता था, ने अपने दिल को संबोधित किया और कहा: "आइए हम चमत्कारी व्याख्या वाली कुरान नामक पुस्तक का सहारा लें, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह उस व्यक्ति का शब्द है जिसे हम खोज रहे हैं: आइए हम दुनिया की सबसे प्रसिद्ध, सबसे शानदार और सबसे बुद्धिमान पुस्तक की जांच करें, जो हर युग में उन लोगों को चुनौती देती है जो इसे मानने से इनकार करते हैं। आइए देखें कि इसमें क्या लिखा है। लेकिन पहले, हमें यह स्थापित करना होगा कि यह पुस्तक हमारे निर्माता की ओर से है।" यह कहकर, उसने खोज शुरू कर दी।

चूँकि यात्री वर्तमान युग में रहता है, इसलिए उसने सबसे पहले रिसाले-ए-नूर को देखा, जिसमें कुरान की चमत्कारिकता की झलकियाँ शामिल हैं, और उसने देखा कि इसके एक सौ तीस भाग सत्य और असत्य के बीच के उस मानदंड - कुरान से कुछ आयतों के सूक्ष्म अर्थ, प्रकाश और अच्छी तरह से स्थापित व्याख्याओं से मिलकर बने हैं। उसने इसकी विषय-वस्तु और इस अविश्वास के युग में कुरान की सच्चाइयों के जोरदार प्रसार और बचाव से समझा कि कुरान, इसका स्वामी, स्रोत, अधिकार और सूर्य, एक प्रकट पुस्तक है। रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में कुरान के ईश्वरीय लेखकत्व के सैकड़ों प्रमाणों में से, पच्चीसवाँ शब्द, जो कुरान का एकमात्र प्रमाण है, और उन्नीसवें अक्षर का अंत कुरान के चालीस पहलुओं को स्थापित करता है।

145 इस भाग में सर्वोच्च चिन्ह के प्रथम स्टेशन का सत्रहवाँ रैंक शामिल है, जो द रेज़ में सातवीं किरण है ।

कुरान की चमत्कारिकता को इस तरह से व्यक्त किया कि जो कोई भी उन्हें देखेगा, वह किसी भी तरह की आलोचना या आपत्ति करने के बजाय उनके तर्कों की प्रशंसा करेगा और उनकी प्रशंसा करेगा। इसलिए, कुरान को ईश्वर का वचन मानने और उसके चमत्कारिक होने के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करने का काम रिसाले-ए -नूर पर छोड़ते हुए, यात्री ने कुछ बिंदुओं पर ध्यान दिया जो संक्षेप में इसकी महानता को प्रदर्शित करते हैं।

पहला बिन्दु: जिस प्रकार कुरान, अपने सभी चमत्कारों और सत्यों के साथ जो इसकी सत्यता को दर्शाते हैं, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का एक चमत्कार है, वह स्वयं भी अपने सभी चमत्कारों, पैगम्बरत्व के प्रमाणों और ज्ञान की परिपूर्णताओं के साथ कुरान का एक चमत्कार है और इसके ईश्वर का वचन होने का एक निर्णायक प्रमाण है।

दूसरा बिन्दु: मानव सामाजिक जीवन में एक सार्थक, खुशहाल और ज्ञानवर्धक परिवर्तन लाने के साथ-साथ क़ुरआन ने लोगों की आत्माओं, दिलों, भावनाओं और बुद्धि में तथा उनके व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में क्रांति ला दी है। इसके अलावा, इसने इस क्रांति को इस तरह कायम रखा है कि पिछली चौदह शताब्दियों में हर पल इसकी छह हज़ार दो सौ से ज़्यादा आयतों को दस करोड़ से ज़्यादा लोगों ने बड़े सम्मान के साथ पढ़ा है, जिससे उनकी आत्माओं को प्रशिक्षण और परिष्कार मिला है और उनके दिलों को पवित्र किया है। आत्माओं के लिए यह विकास और उन्नति का साधन रही है; बुद्धि के लिए मार्गदर्शन और प्रकाश; और जीवन के लिए यह जीवन और सुख रही है। ऐसी किताब निस्संदेह हर मामले में बेमिसाल है: यह एक आश्चर्य, एक चमत्कार और एक चमत्कार है।

तीसरा बिन्दु: अपने आगमन के समय से लेकर आज तक, कुरान ने ऐसी वाक्पटुता प्रदर्शित की है कि इसने "सात लटकती कविताओं" - जिन कविताओं को सर्वश्रेष्ठ के रूप में चुना गया था, सोने में लिखा गया था और अज्ञानता के युग के दौरान काबा की दीवारों पर लटका दिया गया था - का मूल्य इतना कम हो गया कि (प्रसिद्ध कवि) लबीद की बेटी ने, काबा से अपने पिता की कविता को उतारते हुए कहा, "कुरान की आयतों की तुलना में, इसका अब कोई मूल्य नहीं है।"

एक बार एक बेडौइन कवि ने यह आयत पढ़ते हुए सुना: जो आदेश तुम्हें दिया गया है, उसे स्पष्ट रूप से और जोरदार तरीके से कहो (15:94), और तुरंत सजदा कर लिया। जब उन्होंने उससे पूछा, "क्या तुम मुसलमान हो गए हो?" तो उसने जवाब दिया, "नहीं! मैं तो बस इस आयत की वाक्पटुता के आगे सजदा कर रहा था!"

इसके अलावा, हजारों विद्वानों, साहित्यकारों और वाक्पटुता और बयानबाजी के विज्ञान के विशेषज्ञों जैसे अब्दुल-काहिर अल-जुरजानी, सक्काकी और ज़माखशारी ने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला है कि कुरान की वाक्पटुता मानव क्षमता से परे है और मनुष्य द्वारा इसकी नकल नहीं की जा सकती।

इसके अलावा, शुरू से ही कुरान ने सभी अभिमानी और अहंकारी साहित्यकारों और बयानबाज़ों को आमंत्रित किया है, और उनके अहंकार को तोड़ने के लिए,

गांस ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा: "या तो मेरे जैसा एक भी सूरा बनाओ या इस दुनिया और परलोक में विनाश और अपमान स्वीकार करो।"

इस चुनौती के बावजूद, उस युग के हठीले बयानबाज़ों ने कुरान जैसी एक सूरा बनाने की कोशिश करने के छोटे रास्ते को छोड़ दिया और इसके बजाय अपने प्राणों और सम्पत्ति को खतरे में डालने का लंबा रास्ता चुना। इससे साबित होता है कि छोटा रास्ता नहीं अपनाया जा सकता।

उस समय से लेकर अब तक लाखों अरबी किताबें प्रचलन में हैं, जो या तो कुरान के मित्रों ने उसकी नकल करने के लिए लिखी हैं या उसके शत्रुओं ने उसका विरोध करने और उसकी आलोचना करने के लिए; और ऐसी किताबों में समय के साथ विज्ञान और विचार के विकास के साथ-साथ सुधार भी हुआ है। लेकिन आज तक उनमें से एक भी कुरान के स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। अगर कोई आम आदमी भी उन्हें सुनेगा, तो वह ज़रूर कहेगा: “कुरान इन दूसरी किताबों से मिलता-जुलता नहीं है और यह पूरी तरह से अलग श्रेणी का है। यह या तो उनसे नीचे है या उनसे ऊपर।” और चूँकि दुनिया में कोई भी व्यक्ति - यहाँ तक कि कोई नास्तिक या मूर्ख भी - यह नहीं कह सकता कि यह उनसे नीचे है, इसलिए यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि वाक्पटुता में यह उन सभी से ऊपर है।

एक बार एक व्यक्ति ने यह आयत पढ़ी, “ आसमान और धरती में जो कुछ भी है, वह परमेश्वर की महिमा करता है” (57:1)। उसने कहा: “मुझे इस आयत में कोई चमत्कारी वाक्पटुता नज़र नहीं आती।”

उनसे कहा गया: "अपने मन में उस युग में वापस जाओ और उस आयत को सुनो जैसा कि वहाँ पढ़ा गया था।" खुद को वहाँ होने की कल्पना करते हुए, उन्होंने देखा कि दुनिया के सभी प्राणी निर्जीव और बिना चेतना या उद्देश्य के थे, एक अस्थिर, क्षणभंगुर दुनिया में रह रहे थे, खाली, अनंत और असीम अंतरिक्ष से घिरे हुए थे, और भ्रम और अंधकार में भटक रहे थे। अचानक उन्होंने कुरान की जुबान से उपरोक्त आयत की घोषणा सुनी। तुरन्त इस आयत ने ब्रह्मांड के चेहरे से पर्दा हटा दिया और इसे प्रकाशित कर दिया। इस सनातन भाषण, इस शाश्वत आदेश ने सभी सचेत प्राणियों को निर्देश दिया, जो आने वाली शताब्दियों की पंक्तियों में इस तरह से तैयार किए गए थे कि ब्रह्मांड एक विशाल मस्जिद की तरह बन गया। पूरी सृष्टि, और विशेष रूप से आकाश और पृथ्वी, ईश्वर की महत्वपूर्ण याद और उनकी महिमा की घोषणा में लगे हुए थे, आनंद और संतोष के साथ अपना कार्य पूरा कर रहे थे। यह सब यात्री ने देखा।

इस प्रकार कुरान की वाक्पटुता का एक अंश अनुभव करके तथा अन्य आयतों की उससे तुलना करके, उन्होंने उन हजारों बुद्धिमत्तापूर्ण कारणों में से एक को समझा कि क्यों कुरान की वाक्पटुता ने आधी पृथ्वी तथा पांचवीं मानवता को जीत लिया है; उन्होंने देखा कि कैसे इसने अपने आगमन के बाद से चौदह शताब्दियों तक बिना किसी बाधा के अपने राजसी प्रभुत्व को अत्यंत सम्मान के साथ बढ़ाया है।

चौथा बिन्दु: जहाँ सबसे सुखद बात को भी बार-बार दोहराने से अंततः घृणा उत्पन्न होती है, वहीं कुरान की मिठास ऐसी है कि इसे जितनी बार भी पढ़ा जाए, इससे न तो थकान होती है और न ही घृणा। वास्तव में, यह एक ऐसी चीज़ है जो हमेशा हमारे दिलों में बसी रहती है।

यह बात स्वयंसिद्ध हो गई है कि जिनके हृदय भ्रष्ट नहीं हैं और स्वाद बिगड़ा हुआ नहीं है,
कुरान का बार-बार पाठ करने से थकान नहीं होती, बल्कि थकान बढ़ती है।
इसकी मिठास और आकर्षण में वृद्धि हुई है। साथ ही, कुरान में ऐसी ताजगी, युवापन और मौलिकता प्रदर्शित होती है कि भले ही यह चौदह शताब्दियों से जीवित है
और हर किसी के लिए उपलब्ध है, इसकी जीवन शक्ति ऐसी है कि कोई सोचेगा कि यह हर किसी के लिए उपलब्ध है।
अभी-अभी ही इसका अवतरण हुआ है। हर सदी में कुरान एक नए यौवन का आनंद लेता है,
हालांकि यह विशेष रूप से खुद को संबोधित कर रहा था। इसी तरह, भले ही वे
कुरान को हमेशा अपने पास रखें ताकि उससे लाभ उठा सकें और उसका अनुसरण कर सकें
व्याख्या की इस पद्धति में, हर शिक्षा शाखा के विद्वान मानते हैं कि कुरान
यह अपनी शैली और व्याख्या के तरीके की मौलिकता को बनाए रखता है।

पाँचवाँ बिन्दु: कुरान का एक भाग अतीत में है और दूसरा वर्तमान में है।
भविष्य। इसकी जड़ और एक पंख सर्वसम्मति से पुष्टि की गई सच्चाई है
पूर्व भविष्यद्वक्ताओं ने एकमत होकर इसकी पुष्टि की है, और जिन्हें यह
बदले में पुष्टि और पुष्टि करता है। इसी तरह, सभी संत और शुद्ध विद्वान,
क़ुरआन के वे फल जिन्होंने इससे जीवन प्राप्त किया है, उन्होंने दिखा दिया है
उनकी महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रगति के माध्यम से कि उनका धन्य "वृक्ष" जीवित है और
सत्य के लिए सबसे उज्ज्वल साधन, और हर तरह से लाभदायक। सभी सच्चे
आध्यात्मिक पथ या संतत्व के तरीके और इस्लामी विज्ञान, जिनमें सभी शामिल हैं
कुरान के दूसरे भाग के संरक्षण में विकसित हुआ, जो ऊपर की ओर देखता है
भविष्य में, सर्वसम्मति से गवाही दें कि कुरान स्वयं सत्य है और इसका संग्रह है
सत्य की दृष्टि से अद्वितीय और व्यापकता में अद्वितीय।

छठा बिन्दु: क़ुरआन अपने छह पहलुओं या पक्षों में प्रकाशमान है,
ये सभी बातें इसकी सत्यता और सच्चाई की ओर इशारा करती हैं। इसके नीचे स्तंभ स्थित हैं
तर्क और प्रमाण का भंडार है; इसके ऊपर चमत्कार या अद्वितीयता की छाप की झलकियाँ चमकती हैं; इसके सामने दोनों दुनियाओं में खुशी के उपहार हैं
इसका लक्ष्य है; इसके पीछे स्वर्गीय रहस्योद्घाटन की सच्चाईयाँ हैं जो इसका बिन्दु हैं
समर्थन का; इसके दाईं ओर असंख्य स्वस्थ और ईमानदार दिमागों की अच्छी तरह से प्रलेखित और प्रमाणित पुष्टि है; इसके बाईं ओर कोई भी सच्चा देख सकता है
संतुष्टि, ईमानदार आकर्षण और स्वस्थ दिल और शुद्ध समर्पण
इन छह बातों को एक साथ लेने पर यह सिद्ध होता है कि कुरान धरती पर खड़ा एक असाधारण, दृढ़ और अजेय स्वर्गीय किला है।

इन छह पहलुओं से यह स्पष्ट है कि कुरान शुद्ध सत्य है, यह झूठ नहीं है।
यह एक मानवीय शब्द है, और इसमें कोई त्रुटि नहीं है। नियंत्रक और निदेशक
ब्रह्मांड का, जिसने हमेशा सुंदरता प्रदर्शित करना अपना अभ्यास बना लिया है
ब्रह्मांड में अच्छाई और सच्चाई की रक्षा करने तथा धोखेबाजों और झूठों का सफाया करने के लिए,
कुरान को सर्वाधिक स्वीकार्य बताकर उस पर अपनी मुहर लगा दी है।
विश्व में सम्मान और सफलता का सर्वोच्च और सबसे प्रमुख स्थान।

इसके अलावा, वह व्यक्ति जिसने इस्लाम का प्रतिनिधित्व और संचार किया और अपने पूरे जीवन में कुरान की व्याख्या और व्याख्या की, (उस पर शांति और आशीर्वाद हो), उसने इसे किसी और की तुलना में अधिक सम्मान दिया; जब इसे उतारा गया तो उसने एक अलग स्थिति ग्रहण की; उसके रहस्योद्घाटन के अनुभव के संदर्भ के बाहर उसके द्वारा कहे गए अन्य शब्द कुरान से मिलते-जुलते नहीं थे और कभी भी उसी स्तर के नहीं हो सकते थे; अनपढ़ होने के बावजूद, कुरान को अपना आधार बनाकर, उसने अदृश्य के पर्दे के पीछे से कई अतीत और भविष्य की घटनाओं और असंख्य ब्रह्मांडीय घटनाओं का पूरे विश्वास के साथ वर्णन किया; कुरान के सर्वोच्च अनुवादक के रूप में, जिसके व्यवहार में कभी भी कोई चालाकी या कमी नहीं देखी गई थी, उसने कुरान की हर घोषणा पर पूरी ताकत से विश्वास किया और उसकी पुष्टि की, किसी भी चीज को अपने विश्वास में हिलने नहीं दिया - ये सभी तथ्य इस बात की बिना किसी संदेह के पुष्टि करते हैं कि कुरान अपने दयालु निर्माता का ईश्वरीय रूप से प्रकट शब्द है।

इसके अलावा, पाँचवें से ज़्यादा मानव जाति ने कुरान से भक्ति और उत्साह के साथ जुड़ाव बनाए रखा है, और सच्चाई जानने की अपनी इच्छा में उत्सुकता से उस पर ध्यान दिया है। कई संकेतों, घटनाओं और आध्यात्मिक अनावरणों द्वारा प्रदान की गई गवाही के अनुसार, जब भी इसे पढ़ा जाता है, तो जिन्न, फ़रिश्ते और आत्माएँ सत्य-प्रेमी अंदाज़ में इसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं। यह भी पुष्टि करता है कि कुरान को सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त है और यह सर्वोच्च स्थान पर है।

इसके अलावा, मानव जाति के विभिन्न वर्गों में से प्रत्येक, सबसे सरल और निम्न से लेकर सबसे चतुर और विद्वान तक, कुरान की शिक्षा का पूरा हिस्सा लेने और इसके सबसे गहन सत्य को समझने में सक्षम है (प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार)। इसके अलावा, धार्मिक विज्ञान की सभी शाखाओं के सभी प्रसिद्ध विद्वान, विशेष रूप से सर्वोच्च शरिया के महान व्याख्याकार, धर्मशास्त्र और धर्म के मूल सिद्धांतों के प्रतिभाशाली और सटीक विद्वान कुरान से अपने विभिन्न विषयों के लिए आवश्यक सभी उत्तर प्राप्त करने में सक्षम हैं। ये सभी तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुरान सत्य का स्रोत और वास्तविकता की खान है।

इसके अलावा, हालांकि अरब साहित्यकारों में से जो साहित्य और वाक्पटुता में सबसे आगे हैं, उनमें से काफ़िरों ने क़ुरआन को चुनौती देने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत महसूस की, लेकिन वे वाक्पटुता में कभी भी एक भी सूरा बनाकर क़ुरआन की बराबरी नहीं कर पाए, जबकि वाक्पटुता क़ुरआन की चमत्कारिकता के सात सबसे प्रमुख पहलुओं में से सिर्फ़ एक है। आज तक, वे प्रसिद्ध वक्ता और भाषा विशेषज्ञ भी, जिन्होंने अपना नाम बनाने के लिए क़ुरआन पर सवाल उठाए हैं, इसकी चमत्कारिकता के एक भी पहलू का विरोध नहीं कर पाए हैं, और परिणामस्वरूप

उन्हें नपुंसक चुप्पी में रहने के लिए मजबूर किया गया है। यह इस बात की पुष्टि करता है कि कुरान एक चमत्कार है और पूरी तरह से मानवीय क्षमता से परे है।

किसी भाषण का मूल्य, श्रेष्ठता और वाक्पटुता उसके संबंध में पूछे गए इन प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित है: "यह किससे आया है, किसके लिए है और किस उद्देश्य से?" इन बिंदुओं के संबंध में, कुरान की कोई बराबरी नहीं हो सकती है, और कोई भी इसे प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि कुरान सभी संसारों के स्वामी और निर्माता का भाषण और संबोधन है, और उनकी बातचीत किसी भी तरह से व्युत्पन्न या कृत्रिम नहीं है। यह उस व्यक्ति को संबोधित है जिसे सभी मानवता के नाम पर भेजा गया था, वास्तव में सभी प्राणियों में से, जो मानव जाति में सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित है, जिसके विश्वास की ताकत और चौड़ाई ने शक्तिशाली इस्लाम को जन्म दिया और उसके मालिक को दो धनुष की डोरियों के बीच की दूरी या उससे कम के पद पर पहुँचाया, और उसे हमेशा के लिए चाहने वाले के रूप में वापस लौटा दिया। यह इस दुनिया और परलोक में खुशी, ब्रह्मांड के निर्माण के परिणामों और इसके भीतर भगवान के उद्देश्यों से संबंधित मामलों का वर्णन और व्याख्या करता है। यह अपने पहले और प्राथमिक संबोधनकर्ता - पैगंबर मुहम्मद - के विश्वास को भी स्पष्ट करता है, जो इस्लाम के सभी सत्यों को समाहित करते हुए सर्वोच्च और सबसे व्यापक विश्वास था। यह विशाल ब्रह्मांड के हर पहलू को मानचित्र, घड़ी या घर की तरह दिखाता है, और इसे उस तरीके से वर्णित करता है जो इसे बनाने वाले शिल्पकार के लिए उपयुक्त है।

अतः इस कुरान के समान चमत्कारिक व्याख्या उत्पन्न करना न तो सम्भव है, न ही इसकी चमत्कारिकता की सीमा प्राप्त की जा सकती है।

इसके अलावा, हज़ारों सावधानीपूर्वक, उच्च बुद्धि वाले विद्वानों ने कुरान की व्याख्या करते हुए टिप्पणियां लिखी हैं, जिनमें से कुछ सत्तर खंडों तक में हैं, जो स्पष्ट प्रमाण और तर्क के साथ इसकी असंख्य विशेषताओं, विशेषताओं, रहस्यों, सूक्ष्मताओं और उच्च अर्थों को साबित करते हैं, और हर तरह के छिपे और अनदेखे मामलों के बारे में इसके असंख्य संकेत दिखाते हैं। और विशेष रूप से रिसाले -ए-नूर के एक सौ तीस भाग , जिनमें से प्रत्येक निर्णायक तर्कों के साथ कुरान की एक गुणवत्ता या सूक्ष्म बात को साबित करता है। इसका प्रत्येक भाग- जैसे कुरान की चमत्कारिकता पर पच्चीसवां वचन; बीसवें वचन का दूसरा पड़ाव, जो रेलवे और हवाई जहाज जैसे सभ्यता के चमत्कारों के बारे में कुरान से कई चीजों का निष्कर्ष निकालता है; पहली किरण, जिसे कुरान के संकेत कहा जाता है, जो बिजली का संकेत करने वाली आयतों के संकेतों को ज्ञात कराती है; आठ लघु ग्रंथ जिन्हें आठ संकेत के रूप में जाना जाता है, जो दर्शाते हैं कि कुरान के शब्द वास्तव में कितने सुव्यवस्थित, अर्थपूर्ण और रहस्यमय हैं; छोटा ग्रंथ (द ग्लेम्स में "सातवीं झलक") सूरतुल-फ़तह (सूरा 48) के अंत में आयतों की चमत्कारिकता को पाँच पहलुओं में साबित करता है, क्योंकि वे अदृश्य की खबर देते हैं - प्रत्येक भाग अदृश्य की खबर देता है।

रिसाले-ए-नूर कुरान की एक सच्चाई या एक रोशनी को दर्शाता है। यह सब इस तथ्य की पुष्टि करता है कि कुरान का कोई सानी नहीं है: यह एक चमत्कार और एक आश्चर्य है; यह इस दृश्यमान सांसारिक क्षेत्र में अदृश्य दुनिया की भाषा है, और यह उस व्यक्ति का शब्द है जो अदृश्य के बारे में सब कुछ जानता है।

कुरान की इन्हीं खूबियों और विशेषताओं के कारण, जिन्हें हमने ऊपर छह बिंदुओं में दर्शाया है, इसकी शानदार, चमकदार संप्रभुता और इसका पवित्र, शक्तिशाली शासन पूर्ण वैभव के साथ जारी रहा है, जिसने सदियों के चेहरों और धरती की सूरत को तेरह शताब्दियों से (से भी ज़्यादा) रोशन किया है। कुरान की इन्हीं खूबियों के कारण इसके हर अक्षर को कम से कम दस सवाब, दस पुण्य और दस शाश्वत फल देने का पवित्र गौरव प्राप्त है; वास्तव में, कुछ आयतों और सूरों के अक्षर सौ या हज़ार या उससे भी ज़्यादा फल देते हैं, जबकि कुछ ख़ास मौकों पर हर अक्षर की रोशनी, सवाब और कीमत सौ गुना बढ़ जाती है। दुनिया भर में यात्रा करने वाले हमारे यात्री ने इसे समझा और अपने दिल में कहा: "कुरान, जो हर तरह से चमत्कारी है, अपने सूराओं की सर्वसम्मति, अपनी आयतों की सहमति, अपनी रोशनी और रहस्यों की सहमति और अपने फलों और कार्यों की सहमति के माध्यम से, अपने प्रमाणों के साथ एक अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व, एकता, गुणों और नामों की गवाही देता है, और इसकी गवाही ने सभी विश्वासियों की स्थायी गवाही को जारी किया है।"

इस प्रकार, कुरान से यात्री को विश्वास और ईश्वरीय एकता की शिक्षा प्राप्त हुई, इसका संक्षिप्त उल्लेख सत्रहवीं आयत में किया गया है।

प्रथम स्टेशन का चरण:

> ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह अनिवार्य रूप से विद्यमान है, एक और अद्वितीय है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में स्पष्ट रूप से चमत्कारिक व्याख्या के साथ कुरान द्वारा प्रदर्शित किया गया है, वह पुस्तक जिसे सभी प्रकार के फ़रिश्तों, मानवता और जिन्न द्वारा स्वीकार किया जाता है और जिसकी इच्छा की जाती है; जिसकी आयतें वर्ष के प्रत्येक मिनट में, करोड़ों लोगों द्वारा अत्यंत श्रद्धा के साथ पढ़ी जाती हैं; और जिसकी पवित्र संप्रभुता पृथ्वी और ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों और समय के चेहरे पर स्थायी है: इसका आध्यात्मिक और प्रकाशमान अधिकार चौदह शताब्दियों से आधी पृथ्वी और मानवता के पांचवें हिस्से पर अत्यंत वैभव के साथ चला आ रहा है। इसकी गवाही और साक्ष्य इसके पवित्र और स्वर्गीय सूरों की एकमतता, इसकी प्रकाशमान, दिव्य आयतों की सहमति, इसके रहस्यों और प्रकाशों की एकरूपता और इसके फलों और प्रभावों की संगति, साक्षी और स्पष्ट दृष्टि द्वारा भी दी जाती है।

एमिरदाग का फूल146

निम्नलिखित इस बारे में उठाई गई आपत्तियों का एक प्रेरक उत्तर है
कुरान में स्पष्ट दोहराव है।

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

यद्यपि मेरी व्यथित स्थिति के कारण यह भ्रमित और खराब तरीके से व्यक्त किया गया हो सकता है, निम्नलिखित कुरान के एक पहलू पर एक प्रतिबिंब है चमत्कारी। हालाँकि मुझे इसे स्पष्ट करना मुश्किल लगता है, क्योंकि यह संबंधित है कुरान, यह शिक्षाप्रद होगा और चिंतन की ओर ले जाएगा। इसकी तुलना कुरान से की जा सकती है एक चमकदार, अमूल्य रत्न पर आवरण। तो पेश किए जा रहे रत्न पर विचार करें इसके जर्जर आवरण के बजाय। मैंने इसे कुछ गति और संक्षिप्तता के साथ लिखा रमज़ान के कुछ दिनों के दौरान जब मैं कुपोषित और बीमार था, तो कृपया इसमें जो भी कमियां हों, उन्हें माफ कर दीजिए।

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

कुरान सबसे पहले शाश्वत वक्ता के सार्वभौमिक प्रभुत्व के सबसे महान और सबसे व्यापक पद से निकलता है। इसे सबसे पहले संबोधित किया जाता है सभी, उस व्यक्ति के व्यापक पद के लिए जिसने इसे प्राप्त किया ब्रह्मांड। इसका उद्देश्य मानवता को इसके प्रकटीकरण के समय से लेकर समय के अंत तक मार्गदर्शन करना है। इसलिए इसमें पूरी तरह से सार्थक और सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व के विषय में विस्तृत व्याख्या ब्रह्मांड, जो इस दुनिया और परलोक, पृथ्वी और का पालनहार है स्वर्ग और अनंत काल, तथा सभी प्राणियों के प्रशासन से संबंधित दिव्य नियमों का स्पष्टीकरण। यह इन और इसी तरह की अन्य बातों के कारण है कुरान की अन्य विशेषताएं हैं कि यह ईश्वरीय प्रवचन इतना व्यापक और उन्नत है, और इसलिए इतना समावेशी और चमत्कारी है - इतना अधिक यहाँ तक कि इसके सबसे स्पष्ट, शाब्दिक अर्थ भी जो सरल मन को लक्षित करते हैं आम लोगों का, जो कुरान के सबसे अधिक संख्या वाले समूह का निर्माण करते हैं अभिभाषकों के लिए, यह उन लोगों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त है जिन्होंने यह उपलब्धि प्राप्त कर ली है समझ के उच्चतम और सबसे परिष्कृत स्तर। यहां तक कि इसकी कथाएं भी ऐतिहासिक कहानियों का संग्रह नहीं हैं जो सिखाने के लिए प्रकट की गई थीं केवल एक निश्चित उम्र के लोगों के लिए, लेकिन यह हर उम्र को संबोधित करता है और प्रकट होता है और सार्वभौमिक के संग्रह के रूप में समझ और सीखने के सभी स्तर सिद्धांतों। उदाहरण के लिए, अपराधियों को दी जाने वाली सज़ाओं का वर्णन करते समय फ़िरऔन या आद और समूद की क़ौमों को उनके पापों के कारण, और उसके कठोर दण्ड से गलत काम करने वालों के खिलाफ धमकियों के साथ-साथ यह सभी अत्याचारियों और अपराधियों को भी चेतावनी देता है, जिनमें हमारे अपने समय के लोगों को, उनके अत्याचार और गलत कामों के परिणामों के बारे में-

146 अफ्योन प्रांत (पश्चिमी तुर्की) का एक जिला जहां सईद नूरसी कुछ समय तक रहे थे। (ट्र.)

अब्राहम और अन्य पैगम्बरों की अंतिम विजय का उल्लेख करके
मूसा, उन पर शांति हो, यह सभी युगों के अन्यायग्रस्त विश्वासियों को सांत्वना देता है।

चमत्कारिक अभिव्यक्ति वाली कुरान अतीत को पुनर्जीवित करती है, जो उन लोगों के लिए है
असावधानी और गुमराही में फंसा हुआ, एक अकेला और डरावना क्षेत्र है,
अंधेरा और बर्बाद कब्रिस्तान। यह पिछली शताब्दियों और युगों को बदल देता है
शिक्षा के जीवंत पन्नों को, एक अद्भुत, जीवंत क्षेत्र में
प्रभु का प्रत्यक्ष नियंत्रण - एक ऐसा क्षेत्र जिसका महत्वपूर्ण संबंध है
हमें उन दिनों में वापस ले जाकर या उन्हें हमारे सामने प्रदर्शित करके।
सिनेमा के पर्दे पर दिखाए जाने वाले दृश्यों के अलावा, कुरान हमें अपने अनोखे और अनोखे अंदाज में शिक्षा देता है।
सबसे ऊंचा और चमत्कारी शैली। उसी तरह, यह सच दिखाता है
ब्रह्मांड की प्रकृति। गुमराह लोग इसे एक अंतहीन, बेजान, एकाकी और भयावह जगह के रूप में देखते हैं, जो क्षय और अलगाव से भरी हुई है,
जबकि कुरान इसे एक अपूरणीय, अपूरणीय और भयावह जगह के रूप में देखता है, जो क्षय और अलगाव से भरी हुई है।
यह दर्शाता है कि यह शाश्वत रूप से चाहने वाले की पुस्तक है, यह दयालु का शहर है और यह भगवान की कलाकृतियों का प्रदर्शन करने का स्थान है। इसमें, निर्जीव वस्तुएं अपने विशेष कर्तव्यों का पालन करने वाले सजीव प्राणी बन जाती हैं और
संचार की एक उत्तम प्रणाली के अंतर्गत एक दूसरे की सहायता करना।

यह सबसे शानदार कुरान है, जो फ़रिश्तों, जिन्न और अन्य लोगों को ज्ञान और निर्देश देता है।
ईश्वरीय ज्ञान से परिपूर्ण मानवता को अत्यंत सुखदायी ढंग से पवित्र भेद प्राप्त होते हैं, जो ऐसे होते हैं कि कभी-कभी एक अक्षर से दस पुण्य प्राप्त हो जाते हैं।
कभी सौ तो कभी हज़ार या, वास्तव में, हज़ारों। अगर सभी
जिन्न और मनुष्य अपनी प्रतिभाओं को एक साथ मिला लें, तो भी वे कुछ नहीं कर पाएंगे।
कुरान से किसी भी तरह से मुकाबला या बराबरी करने वाली कोई चीज़ नहीं है। यह सभी लोगों से बात करता है और संपूर्ण ब्रह्मांड को सबसे उपयुक्त तरीके से अंकित किया गया है; यह निरंतर अंकित है और
लाखों लोगों के मन में यह बात बड़ी आसानी से घर कर जाती है; हालांकि अक्सर ऐसा होता है
सुनाए जाने पर भी यह अपने श्रोताओं को कभी बोर या थका नहीं करता; इसके समान वाक्यों और
कुछ वाक्यांश जो कुछ लोगों को भ्रमित कर सकते हैं, बच्चे उन्हें याद रखने में सक्षम होते हैं
यह आसानी से बीमार और मरने वालों को खुशी और शांति देता है, क्योंकि
जिनके लिए कुछ मानवीय शब्द सुनना भी बहुत असहज हो जाता है।
कुरान अपने विद्यार्थियों को इस दुनिया और परलोक दोनों में सुख प्राप्त करने का मार्ग प्रदान करता है।

जिसने इसे संप्रेषित किया, उसकी अशिक्षित प्रकृति को देखते हुए, और बिना किसी संदेह के
दिखावे या दिखावे के किसी भी संकेत के बिना, कुरान अपनी शैलीगत प्रवाह और शुद्धता को बनाए रखता है, जबकि आम जनता की समझ के स्तर को कभी नज़रअंदाज़ नहीं करता। साथ ही यह लोगों को असाधारण चमत्कारों के बारे में भी बताता है
दिव्य शक्ति और दिव्य ज्ञान के सार्थक उदाहरण जो आधार प्रदान करते हैं
आकाश और पृथ्वी में होने वाली सभी घटनाएं, जिससे एक अच्छा प्रभाव प्रदर्शित होता है
मार्गदर्शन की पुस्तक के रूप में अपनी स्थिति के अनुग्रह के भीतर चमत्कारिकता का पहलू।

कुरान से पता चलता है कि यह प्रार्थना और आह्वान की पुस्तक है, यह एक आह्वान है।
शाश्वत मोक्ष, और ईश्वर की एकता की घोषणा, इन सभी के लिए पुनः स्वीकार करने की आवश्यकता है-

परिणामस्वरूप यह इस या उस वाक्य या कहानी को दोहराता है, संबोधित लोगों के कई अलग-अलग समूहों या श्रेणियों को कई अर्थ देता है, और
अपने पाठकों को सूचित करता है कि इसका लेखक छोटी से छोटी बात के प्रति भी दया भाव रखता है
और जाहिर तौर पर सबसे महत्वहीन चीजें और घटनाएं, जिनमें वे भी शामिल हैं
उनकी इच्छा और नियंत्रण के क्षेत्र में पैगम्बर के साथियों से जुड़ी सबसे खास या स्पष्ट रूप से तुच्छ घटनाओं पर भी ध्यान देकर
इस्लाम की स्थापना और उसके कानूनों के विधान में, यह सार्वभौमिक प्रस्तुत करता है
सिद्धांतों और सुझाव है कि वे घटनाएँ इस तरह कार्य करती हैं जैसे कि वे बीज हों,
इस्लाम की स्थापना में अनेक महत्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न करने के लिए नियत
इस तरह यह अपने चमत्कारिक होने का एक और पहलू प्रदर्शित करता है।

जब ज़रूरतें बार-बार बताई जाती हैं, तो जवाब भी उसी हिसाब से दोहराए जाने चाहिए। इसलिए कुरान उन कई सवालों का जवाब देता है जो पूछे गए थे
अपने प्रकाशन के तेईस वर्षों के दौरान बार-बार और संतुष्ट करने का प्रयास करता है
समझ और सीखने के सभी स्तरों पर। यह साबित करने के लिए कि सभी चीजें,
सूक्ष्म कणों से लेकर विशाल तारों तक, सभी एक ही द्वारा नियंत्रित हैं, और वह
प्रलय के दिन ब्रह्माण्ड को एक नया रूप देने के लिए उसे नष्ट कर देना,
इसे परलोक के असाधारण क्षेत्र से प्रतिस्थापित करना; एक स्थापित करना
मन में शक्तिशाली और सर्वव्यापी क्रांति जो, के लिए
ब्रह्मांड के निर्माण के उद्देश्य और परिणाम, ईश्वरीय क्रोध को दर्शाते हैं और
मानवीय अन्याय और गलत कामों के सामने क्रोध, जिसने ब्रह्माण्ड, धरती और आकाश को क्रोध से भर दिया है, कुरान कुछ आयतों को दोहराता है
और वाक्यांश जो असंख्य प्रमाणों के निष्कर्ष हैं और जिनमें
हज़ारों निष्कर्षों के बराबर वजन। ऐसे मामलों में, दोहराव
यह कुरान की चमत्कारिकता का एक अत्यंत शक्तिशाली पहलू है, इसकी वाक्पटुता और अनुरूपता में इसकी भाषा की सुंदरता का एक अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण है।
विषय-वस्तु की आवश्यकताओं के अनुरूप।

उदाहरण के लिए, जैसा कि चौदहवीं झलक और पहली झलक में समझाया गया है
रिसाले-ए-नूर का शब्द , वाक्यांश ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु है,
दयालु, जो क़ुरान में कुल ११४ बार आता है—
अत-तौबा को छोड़कर हर सूरा की शुरुआत में और बीच में एक बार
सूरतुन्नमल का सत्य एक ऐसा सत्य है जो पृथ्वी को ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता से जोड़ता है।
सिंहासन और ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों, इस प्रकार ब्रह्मांड को प्रकाशित करना।
हर किसी को इसकी निरंतर आवश्यकता है, यह लाखों बार दोहराने लायक है।
हमें इसकी न केवल हर दिन उसी तरह आवश्यकता होती है जिस तरह हमें रोटी की आवश्यकता होती है, बल्कि
हर पल, उसी तरह जैसे हमें ऑक्सीजन और प्रकाश की आवश्यकता होती है।

दूसरा उदाहरण यह है कि तुम्हारा रब वह है जो अत्यन्त महिमावान, प्रभुत्वशाली है।
वह दयालु है, जिसमें हजारों सत्यों की शक्ति है और जो
सूरतुश-शूअरा में आठ बार दोहराया गया । यह पैगंबरों की अंतिम विजय के बारे में बताता है

और उनके विद्रोही लोगों का उद्धार और विनाश। यदि, ब्रह्मांड के निर्माण के उद्देश्य या परिणामों के लिए, ईश्वर की सार्वभौमिक प्रभुता के नाम पर, और लोगों को यह सिखाने के लिए कि प्रभु की महिमा और गरिमा गलत काम करने वालों के विनाश की मांग करती है और उनकी करुणा पैगंबरों की विजय और उद्धार की मांग करती है,

इस वाक्य को हज़ारों बार दोहराया जाए, तब भी इसकी ज़रूरत होगी
इस प्रकार यह कुरान की वाक्पटुता का संक्षिप्त और चमत्कारी पहलू है।

और ये आयतें भी हैं कि तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?
(55:13) और उस दिन विनाश है झुठलानेवालों के लिए (77:15), जो अपनी-अपनी सूराओं में बार-बार दोहराई गई हैं, वे धमकियाँ हैं जो जिन्नों और
सदियों से मानवता, और आकाश और पृथ्वी भर में,
उन सभी लोगों की कृतघ्नता, अविश्वास और गलत काम जिनकी अधार्मिकता
आकाश और पृथ्वी के क्रोध को भड़काता है, ब्रह्मांड के निर्माण के परिणामों को बर्बाद करता है, और ईश्वर के सामने अवमानना और इनकार दिखाता है
संप्रभु की महिमा। वे सभी के अधिकारों के उल्लंघन की भी निंदा करते हैं
जीव। चूँकि वे एक सार्वभौमिक शिक्षण का गठन करते हैं जिसमें ताकत है
एक हजार सत्यों में से, भले ही इन दो छंदों को हजारों बार दोहराया गया हो
कई बार, यह अभी भी पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए यह संक्षिप्तता और अनुग्रह और सौंदर्य में वाक्पटुता की चमत्कारिकता का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इसके अलावा, पैगंबर अल-जौशानुल-कबीर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आह्वान भी किया जाता है।
कुरान से प्रेरित महान ढाल में सौ खंड हैं, जिनमें से प्रत्येक
जो इन शब्दों के साथ समाप्त होता है: आप महिमावान हैं! आपके अलावा कोई पूज्य नहीं है।
दया करो! दया करो! हमें आग से बचाओ! इन वाक्यों में पुष्टि है
ईश्वर की एकता, जो कि ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा सत्य है। यह पुष्टिकरण ईश्वर की एकता है, जो कि ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा सत्य है।
प्रभु के प्रति सभी सृजित प्राणियों का सबसे बड़ा कर्तव्य है, अर्थात उनकी महिमा करना, उनकी स्तुति करना, तथा उन्हें सर्व-पवित्र तथा सभी दोषों से मुक्त घोषित करना।
वह उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ है जो मुश्रिक उसके लिए मानते हैं। यह एक प्रार्थना भी है
मानवता को अनन्त दण्ड से बचाना, जो कि हमारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य होना चाहिए
चिंता का विषय है और यह परमेश्वर के प्रति हमारी दासता और उसके समक्ष हमारी असहायता का अपेक्षित परिणाम है। और इसलिए भले ही हम उन वाक्यांशों को हज़ारों बार दोहराएँ
कई बार प्रयास करने पर भी यह पर्याप्त नहीं होगा।

इस प्रकार कुरान में इस तरह के महत्वपूर्ण कारणों की पुनरावृत्ति शामिल है
सिद्धांतों। अवसर और साहित्यिक वाक्पटुता की मांग के अनुसार, और समझने में सुविधा के लिए, यह कभी-कभी सत्य को व्यक्त करता है
दिव्य एकता को एक पृष्ठ पर बीस बार, चाहे वह स्पष्ट रूप से हो या निहित रूप से। फिर भी यह
यह अपने श्रोता को कभी बोर नहीं करता, बल्कि यह अर्थ को बल देता है और पाठक को यह एहसास दिलाता है कि यह एक ऐसा शब्द है जो पाठक को कभी बोर नहीं करता।
प्रोत्साहन.

मक्का और मदीना में अवतरित सूराएँ वाक्पटुता और चमत्कारिकता तथा विस्तार और संक्षिप्तता के स्तर में एक दूसरे से भिन्न हैं ।

मक्का के लोग मुख्य रूप से कुरैशी बहुदेववादी और अनपढ़ आदिवासी थे। इसे देखते हुए, कुरान ने अपनी सच्चाई को बेहतर ढंग से स्थापित करने के लिए कुछ बिंदुओं को दोहराते हुए एक उच्च शैली के साथ सशक्त, वाक्पटु और संक्षिप्त भाषा का उपयोग किया है। मक्का के सूरों में, विश्वास के स्तंभ और ईश्वरीय एकता के प्रकटीकरण की श्रेणियाँ और डिग्री बार-बार एक सशक्त, जोरदार, संक्षिप्त और सबसे चमत्कारी भाषा में व्यक्त की गई हैं। वे दुनिया की शुरुआत और अंत, ईश्वर के अस्तित्व और परलोक के आगमन को ऐसे शक्तिशाली प्रमाणों के साथ साबित करते हैं और न केवल एक पृष्ठ, आयत, वाक्य या शब्द पर बल्कि कभी-कभी एक अक्षर में भी व्यक्त किए जाते हैं, शब्द क्रम में इतने सूक्ष्म परिवर्तनों के माध्यम से, निश्चित लेखों के उपयोग या गैर-उपयोग के माध्यम से या कुछ शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को शामिल करने या छोड़ने के माध्यम से कि साहित्यिक वाक्पटुता की कला के स्वामी आश्चर्यचकित हो गए हैं। मक्का अध्यायों की उत्कृष्ट वाक्पटुता और संक्षिप्तता की चर्चा इशारतुल-एजाज़ और पच्चीसवें शब्द में की गई है, जो कुरान की चमत्कारिक अद्वितीयता के चालीस पहलुओं की व्याख्या करते हैं।

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के मिशन के दूसरे चरण के दौरान मदीना में प्रकट हुए सूरा मुख्य रूप से विश्वासियों, यहूदियों और ईसाइयों को संबोधित हैं। वाक्पटुता के नियमों और मार्गदर्शन की व्यावहारिक आवश्यकता के अनुसार, विश्वास के स्तंभों और सिद्धांतों के बजाय, वे सरल, स्पष्ट और विस्तृत भाषा में शरीयत के कानूनों और आदेशों की व्याख्या करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। कुरान के लिए विशेष रूप से अद्वितीय, बेजोड़ शैली में, वे आमतौर पर विश्वास, ईश्वरीय एकता या परलोक से संबंधित एक ऊंचे, शक्तिशाली वाक्य या वाक्यांश के साथ अपनी व्याख्याओं को समाप्त करते हैं, इस प्रकार उन्हें ईश्वर और अंतिम दिन में विश्वास से जोड़कर उनके प्रति आज्ञाकारिता सुनिश्चित करते हैं। ऐसा करके, यह कुछ विशेष घटनाओं का भी आधार बनाता है जिस पर शरीयत के कानूनों की सार्वभौमिकता स्थापित होती है।

वाक्पटुता के उच्च पहलू को समझने के लिए तथा कुछ श्लोकों के अंत में आने वाले वाक्यांशों में निहित सूक्ष्मताओं को समझने के लिए, जैसे कि ईश्वर के पास हर चीज पर पूर्ण शक्ति है; ईश्वर को सभी चीजों का पूर्ण ज्ञान है; वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान है, सर्व-ज्ञानी है; वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान है, सर्व-दयालु है, पाठक पच्चीसवें वचन में द्वितीय प्रकाश की दूसरी किरण का संदर्भ ले सकते हैं।

इस्लाम के गौण सिद्धांतों और सामाजिक कानूनों की व्याख्या करते हुए, कुरान अपने पाठकों का ध्यान अचानक उच्च, सार्वभौमिक सत्यों की ओर आकर्षित करता है, उन्हें शरिया के पाठ से ईश्वरीय एकता के पाठ की ओर ले जाता है, और एक सरल शैली से एक उच्चतर शैली में बदल जाता है। ऐसा करने में यह हर अवसर पर मार्गदर्शन के अपने उद्देश्य को प्रदर्शित करता है और खुद को कानून और ज्ञान की पुस्तक, पंथ, विश्वास, चिंतन, आह्वान, प्रार्थना और ईश्वरीय संदेश के आह्वान की पुस्तक के रूप में दिखाता है। इस प्रकार, कुरान का मदीना

अध्यायों में अत्यंत चमत्कारी वाक्पटुता और भाषा की शुद्धता प्रदर्शित होती है
मक्का अध्यायों में स्पष्ट शैलियों से भिन्न है।

उदाहरण के लिए, “प्रभु” को “आपका” (आपके भगवान) या “ आपके प्रभु” से संशोधित करके
कुरान में क्रमशः ईश्वर को “ सब संसारों का प्रभु” (सब संसारों का प्रभु) घोषित किया गया है।
किसी व्यक्ति के साथ उसके विशेष संबंध में एकता, उसके प्रभु या उसके पिता के रूप में।
संपूर्ण सृष्टि के साथ उनके सार्वभौमिक संबंध में एकता।
ईश्वर को संसार का स्वामी बताते हुए यह उसे उसकी समस्त महिमा के साथ परिचित कराता है, जबकि
मेरे प्रभु या तुम्हारे प्रभु का प्रयोग करते हुए , यह उनकी विशेष सावधानी और करुणा के परिप्रेक्ष्य से उनका परिचय
कराता है, तथा बाद वाले के भीतर पूर्व को अभिव्यक्त करता है।
कभी-कभी जब यह देखता है और आँख की पुतली में एक परमाणु को स्थिर करता है, तो यह इसका उपयोग करता है
वही "हथौड़ा" सूरज को आकाश में स्थिर करने और उसे स्वर्ग की आंख बनाने के लिए।

उदाहरण के लिए, इन शब्दों में, उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है
(57:4) और: वही रात को दिन में परिवर्तित करता है और वही दिन को दिन में परिवर्तित करता है।
रात (57:6), यह आम लोगों की समझ पर विचार करता है, जिसमें शामिल हैं
उनमें से जो लोग अनपढ़ हैं। हालाँकि, आयतों का निष्कर्ष यह है
और वह जो कुछ हृदयों में है, उसकी पूरी जानकारी रखता है (57:6), और इसका अर्थ है:
“पृथ्वी की शानदार रचना और प्रशासन के साथ-साथ
और आकाश, और जो कुछ मनुष्यों के मन में आता है, उसके विषय में भी वह पूरी जानकारी रखता है।
इस प्रकार साधारण लोगों के लिए कही गई सरल भाषा शैली यहाँ सभी के मार्गदर्शन के लिए एक उच्च और आकर्षक
संबोधन के रूप में प्रकट हुई है।

प्रश्न: कभी-कभी कोई महत्वपूर्ण सत्य छिपा रह जाता है।
सतही विचार। साथ ही, एक साधारण कहानी के वर्णन को समाप्त करने का कारण
सार्वभौमिक सिद्धांत या दैवीय एकता के पहलू वाली घटना हमेशा नहीं हो सकती
कुछ लोग इस कुरानिक शैली को दोषपूर्ण मान सकते हैं।
उदाहरण के लिए, यह वर्णन करने के बाद कि पैगम्बर यूसुफ (उन पर शांति हो) ने किस प्रकार प्रबंध किया
अपने भाई को रोकने के लिए (12:69-76), कुरान एक महान सिद्धांत का उल्लेख करता है: ज्ञान के हर मालिक के
ऊपर, (हमेशा) एक और अधिक ज्ञानवान होता है। वाक्पटुता के नियमों के दृष्टिकोण से, यह असंबंधित लगता है

वास्तविक संदर्भ। इसका क्या कारण है?

उत्तर: कुरान विश्वास, चिंतन और प्रार्थना की पुस्तक है।
यह कानून, ज्ञान और मार्गदर्शन की पुस्तक भी है; इसलिए इसमें कई बातें शामिल हैं
"पुस्तकें।" इस कारण से, लंबे और मध्यम लंबाई के सूरा के कई पृष्ठों और अंशों में, जिनमें से प्रत्येक एक छोटा
कुरान है, कई शिक्षाएं और उद्देश्य बताए गए हैं।
उदाहरण के लिए, दिव्य प्रभुत्व की सर्वव्यापक और भव्य अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए, क्योंकि यह एक
प्रकार की प्रतिलिपि या प्रतिबिंब है
ब्रह्मांड की महान पुस्तक में से एक, कुरान ईश्वर के ज्ञान, ईश्वरीय एकता के पहलुओं और ईश्वर की सच्चाइयों से
संबंधित हर अवसर पर निर्देश देता है।
विश्वास। जब भी कोई उपयुक्त अवसर आता है, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो

ऐसा लगता है कि कुरान अलग-अलग शिक्षाओं की व्याख्या करता है, इस प्रकार उस अवसर का उपयोग नए निर्देश प्रस्तुत करना या कुछ सार्वभौमिक नियम या सिद्धांत प्रकट करना। यह चर्चा से पूरी तरह मेल खाता है और कुरान की वाक्पटुता को बढ़ाता है।

प्रश्न: चाहे यह स्पष्ट रूप से हो या परोक्ष रूप से, कुरान बहुत अधिक विस्तार से इस पर प्रकाश डालता है। ईश्वरीय एकता, परलोक और मानवता पर ईश्वर का न्याय। ऐसा क्यों है?

उत्तर: कुरान मनुष्य को ईश्वर के अस्तित्व के बारे में सिखाने के लिए अवतरित हुआ। ईश्वर, दिव्य एकता और सम्पूर्ण नियंत्रण जो वह ब्रह्माण्ड और उसमें होने वाले परिवर्तनों, उथल-पुथल और क्रांतियों पर रखता है; यह इन सत्यों से संबंधित सभी संदेहों को दूर करने और बंधनों को तोड़ने के लिए प्रकट किया गया था उन लोगों की हठधर्मिता जो उनकी पुष्टि करने से परहेज करना जारी रखते हैं। मानवता को निर्देश देने के लिए प्रकट किया गया, जिसने सर्वोच्च विश्वास को धारण करना स्वीकार किया है पृथ्वी के प्रतिनिधि के रूप में, जिस पर उन्हें शासन करना है और उसके अनुसार विकास करना है ईश्वरीय नियमों के साथ, अपने कर्तव्यों के सबसे शक्तिशाली और सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में शाश्वत सुख या विनाश के बारे में। मानवता की पुष्टि करने के लिए कुरान के निर्देशों का पालन करना और उनसे संबंधित सबसे आवश्यक मामलों पर सहमति देना, भले ही कुरान इन मामलों पर ध्यान केंद्रित करता हो लाख बार कहें, तो भी यह समय या शब्दों की बर्बादी नहीं होगी, और वे बिना किसी बोरियत के बार-बार पढ़ा और अध्ययन किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, हम सूरतुल-बुरूज में पढ़ते हैं :

> जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनके लिए बहुत कुछ है।
> ऐसे बाग़ जिनमें नहरें बहती हों, यही बड़ी सफलता है (85:11)

यह श्लोक हमें सिखाता है कि मृत्यु, जो सदैव हमारे सामने खड़ी रहती है, वह अत्यन्त दुःखद है। कुछ ऐसा जो हमें, हमारी दुनिया को और हमारे प्रियजनों को अनंत विनाश से बचाता है, क्योंकि यह हमें एक शानदार, अनंत जीवन की ओर ले जाता है। भले ही यह श्लोक अरबों बार दोहराया गया, और यदि इसे उतना ही महत्व दिया जाता जितना कि संपूर्ण अस्तित्व से जुड़ा हुआ है, फिर भी यह पर्याप्त नहीं होगा इसके अर्थ को कम करना या उससे ध्यान हटाना। अनगिनत, अमूल्य शिक्षाओं को पढ़ाने में इस प्रकार के मामलों में तथा लोगों को उन विस्मयकारी क्रांतियों के बारे में जागरूक करने और साबित करने की कोशिश में जो ब्रह्मांड को निरंतर बदलती और नवीनीकृत करती रहती हैं, कुरान इन मामलों की ओर बार-बार ध्यान आकर्षित करता है, या तो स्पष्ट रूप से तरीके से या संकेतों के माध्यम से। चूंकि वे प्रकाश, हवा, भोजन और जैसे उपहार हैं दवा - ऐसी चीजें जिनकी हमें हमेशा जरूरत होती है और जिन्हें लगातार नवीनीकृत और ताज़गी की आवश्यकता होती है - यह तथ्य कि उन्हें कुरान में इतनी बार दोहराया गया है, वह अविश्वसनीय है। ईश्वरीय कृपा का एक उदाहरण.

इसके अलावा, निम्नलिखित पर भी विचार

करें: कुरान गंभीर, क्रोधित और जोरदार ढंग से ऐसी धमकी भरी आयतों को दोहराता है जैसे: अन्याय करने वालों के लिए दर्दनाक सजा है (14:22); तथा:

जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है (35:36)। जैसा कि आयत 35 में चर्चा की गई है।
रिसाले-ए-नूर में विस्तार से बताया गया है कि मानवता का अविश्वास नैतिकता का इतना जघन्य उल्लंघन है।
ब्रह्माण्ड और उसके अधिकांश प्राणियों के अधिकार कि वह पृथ्वी को क्रोधित करे
और तत्वों को क्रोधित करता है। यही कारण है कि वे अविश्वासियों को मारते हैं
बाढ़ और इसी तरह की आपदाओं से जूझना पड़ता है।

जैसा कि स्पष्ट रूप से कहा गया है: जब उन्हें इसमें डाला जाता है, तो वे इसकी कर्कश सांस सुनेंगे (जिससे वे अंदर खींचे जाते हैं) क्योंकि यह उबलता है, लगभग क्रोध से फटने लगता है...
(६७:७-८) नरक अविश्वासियों से इतना क्रोधित है कि इसे लगभग ऐसा वर्णित किया गया है
क्रोध से भर जाना। यदि, ऐसे जघन्य अपराध और ऐसी असीम निंदा के सामने
आक्रामकता, न कि शारीरिक महत्वहीनता के नजरिए से
वह अविश्वासी के अधर्म की महानता और अविश्वास की भयावहता को नहीं, बल्कि मानवता को दिखाने के लिए, तथा अपनी प्रजा के महत्व को दिखाने के लिए ऐसा करता है।
अधिकारों के साथ-साथ अविश्वास की कुरूपता और अधर्म, ब्रह्मांड का संप्रभु एक अरब बार भी ऐसे अपराधों का वर्णन और निंदा करे, फिर भी यह
इसे दोष नहीं माना जाना चाहिए। अनगिनत लोग हर दिन इन शब्दों को पढ़ते हैं
चौदह शताब्दियों तक अत्यंत उत्सुकता के साथ और बिना किसी भावना के
ऊब या थकान से।

हर दिन, हर व्यक्ति के लिए एक दुनिया गायब हो जाती है और एक नई दुनिया का द्वार खुल जाता है
इस प्रकार एक हजार बार यह दोहराकर कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है,
आवश्यकता और हमारी प्रत्येक क्षणभंगुर दुनिया को रोशन करने की इच्छा के साथ, हम
प्रत्येक पुनरावृत्ति प्रत्येक बदलते दृश्य के लिए एक दीपक है। उसी तरह, प्रत्येक पुनरावृत्ति प्रत्येक बदलते दृश्य के लिए एक दीपक है।
कुरान शाश्वत प्रभु की धमकियों और दंडों को बार-बार दोहराता है
अक्सर इसका उद्देश्य मानवता की हठधर्मिता को तोड़ना और उन्हें उनकी विद्रोही शारीरिक आत्मा से मुक्त करना होता है। इस प्रकार यह उन्हें बदलते हुए संसार को अंधकारमय बनाने से रोकना चाहता है
दृश्यों और नए-नए भर्ती किए गए संसारों की छवियों को विकृत करने से
जो उनके जीवन के दर्पण में प्रतिबिंबित होते हैं, और उनके विरुद्ध हो जाने से
वे क्षणभंगुर दृश्य जो परलोक में उनके लिए गवाही देंगे। इसी कारण से शैतान भी कुरान के कठोर और बलपूर्वक दोहराए जाने को उचित नहीं समझता
इसकी धमकियों को अनुचित माना जाता है। ये धमकियाँ दर्शाती हैं कि नरक की यातनाएँ उन लोगों के लिए शुद्ध न्याय हैं जो उन पर ध्यान नहीं देते।

एक अन्य उदाहरण पैगम्बरों की कहानियों का दोहराव है, विशेष रूप से मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी।

ऐसी कहानियों में ज्ञान और लाभ के कई उदाहरण हैं।
सभी पिछले पैगम्बरों की पैगम्बरी को प्रमाण के रूप में दर्शाता है
मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) इसका मतलब है
सत्य के दृष्टिकोण से, कोई भी मुहम्मद के पैगम्बर होने से इनकार नहीं कर सकता जब तक कि वह अन्य सभी पैगम्बरों को नकार न दे। साथ ही, चूंकि हर कोई मुहम्मद के पैगम्बर होने से इनकार नहीं कर सकता
हर बार जब वे कुरान खोलते हैं तो पूरा कुरान पढ़ते हैं, इसमें वे कहानियाँ शामिल हैं,

लगभग सभी लंबी और मध्यम लंबाई वाली सूराओं में आस्था के आवश्यक तत्वों को शामिल किया गया है, जिससे प्रत्येक सूरा लघु कुरान की तरह बन गया है।
क्योंकि साहित्यिक वाक्पटुता के सिद्धांतों द्वारा इसकी मांग की जाती है और इसलिए भी कि
कुरान यह दिखाना चाहता है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो),
मनुष्यों में सबसे महत्वपूर्ण और ब्रह्माण्ड में सबसे महान घटना है।

इस्लाम में आस्था की औपचारिक घोषणा- कलिमातुत-तौहीद- है
अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। कुरान मुहम्मद के व्यक्तित्व को सर्वोच्च दर्जा देता है और इस घोषणा का एक हिस्सा है-
मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं - यह विश्वास के छह स्तंभों में से चार की ओर इशारा करता है, यह सच है।
प्रथम भाग के बराबर माना गया है, अर्थात् ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।
मुहम्मद का संदेशवाहक होना ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा सत्य है, एक व्यक्ति के रूप में वह
ईश्वर की सबसे श्रेष्ठ रचना, तथा उसका सामूहिक व्यक्तित्व और पवित्र पद,
मुहम्मदी सत्य के नाम से जाना जाने वाला यह सत्य इस संसार और पृथ्वी दोनों का सबसे चमकीला सूर्य है।
अगला। रिसाले-ए-नूर में कई प्रमाण हैं जो दिखाते हैं कि वह कितना योग्य था
ऐसे असाधारण पद पर आसीन होने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

"कारण जैसा कर्ता वैसा ही होता है" नियम के अनुसार, पुरस्कार की राशि
उसके समुदाय द्वारा किए गए या किए जाने वाले अच्छे कार्यों की संख्या के बराबर
भविष्य में क्या किया जाए, यह पैगम्बर के खाते में जोड़ दिया गया है। चूँकि उन्होंने अपने प्रकाश से ब्रह्माण्ड को प्रकाशित किया,
इसलिए न केवल जिन्न, मनुष्य और फ़रिश्तों को बल्कि सभी को भी प्रकाश मिला।
आकाश और पृथ्वी उसके आभारी हैं। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि प्रार्थनाएँ
पौधों और जानवरों की जो वे क्षमता की जीभ के माध्यम से पेश करते हैं और
ज़रूरत पड़ने पर स्वीकार किया जाता है। इससे पता चलता है कि लाखों धर्मी लोगों की प्रार्थनाएँ
मुहम्मद के समुदाय के बीच स्वीकार्य होना चाहिए। वे प्रार्थना कर रहे हैं
सदियों से भगवान दिन में कई बार उस पर शांति और आशीर्वाद बरसाते हैं और
उसे वही इनाम दो जो उन्होंने कमाया है। इसके अलावा, उसके अच्छे कामों का रिकॉर्ड
उनके कार्यों में उनके अनुयायियों द्वारा कुरान के पाठ से प्राप्त अनगिनत प्रकाश भी शामिल हैं,
प्रत्येक अक्षर से दस, सौ या हजार तक पुरस्कार मिलते हैं।

पहले से जानते हुए कि उनका सामूहिक व्यक्तित्व- मुस्लिम सत्य
- भविष्य में स्वर्ग के एक धन्य, विस्तृत वृक्ष की तरह होगा, और उसे उस राजसी वृक्ष का बीज मानने वाला,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर।
ग़ैब ने अपने क़ुरआन में उसे सबसे ज़्यादा अहमियत दी है।
उन्होंने इस बात पर बल दिया कि दूसरों को उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए तथा उनके सुन्ना या मार्ग का अनुसरण करके उनकी मध्यस्थता का सम्मान प्राप्त करना चाहिए तथा इसे सबसे महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।
और मानवता का गंभीर मामला है।

इस प्रकार, चूंकि कुरान में दोहराई गई सच्चाइयों का इतना बड़ा मूल्य है, इसलिए स्वस्थ, अदूषित स्वभाव वाला कोई भी व्यक्ति इस बात की गवाही देगा कि इसकी पुनरावृत्तियों में एक शक्तिशाली और व्यापक चमत्कार है, जब तक कि वह किसी बीमारी से ग्रस्त न हो।

भौतिकवाद के प्रकोप के कारण हृदय और अंतःकरण की व्याधि, और
अतः नीचे दिए गए नियम के अंतर्गत शामिल हैं:

> एक व्यक्ति अपनी बीमार आँख के कारण सूर्य के प्रकाश को नकारता है,
> बीमारी के कारण मुँह मीठे पानी का स्वाद लेने से इंकार कर देता है।

दो समापन नोट

पहला नोट: बारह साल पहले, मैंने सुना था कि एक खतरनाक और जिद्दी नास्तिक ने कुरान का अनुवाद करने का आदेश दिया था ताकि लोग इसके दोहराव देख सकें।
और समझें कि यह वास्तव में क्या है। उनका इरादा अनुवाद को प्रतिस्थापित करने का भी था
निर्धारित प्रार्थनाओं में मूल के लिए। हालाँकि, जैसा कि रिसाले-ए-नूर निर्णायक रूप से दर्शाता है, एक सटीक अनुवाद असंभव है, क्योंकि कोई भी अन्य भाषा इसे संरक्षित नहीं कर सकती है
अरबी भाषा के गुण और बारीकियाँ, क्योंकि अरबी भाषा वाक्यविन्यास और व्याकरण में बहुत सख्त है।
अनुवाद कुरान के चमत्कारी वाक्यांशों और शब्दों का स्थान ले सकता है, जो अर्थ में व्यापक हैं, और जिनका प्रत्येक अक्षर 10 से 1,000 तक पुण्य प्रदान करता है।

रिसाले -ए-नूर ने केवल अनुवाद करने की योजना भी रोक दी
मस्जिदों में कुरान का पाठ किया जाता है। लेकिन चूंकि उस विधर्मी द्वारा सिखाए गए पाखंडी लोग शैतान के नाम पर कुरान के सूर्य को बुझाने का रास्ता खोजते रहते हैं, इसलिए मुझे लगा कि
एमिरदाग का फूल लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा। क्योंकि वे मुझे मिलने की अनुमति नहीं देते
लोगों के साथ बातचीत के दौरान मुझे नवीनतम घटनाक्रमों की कोई जानकारी नहीं है।

दूसरा नोट: डेनिज़ली जेल से रिहा होने के बाद, मैं बैठा था
प्रसिद्ध होटल शेहिर की सबसे ऊपरी मंजिल पर। पत्तों का सुंदर नृत्य,
मेरे सामने के सुन्दर बगीचों में लगे चिनार के पेड़ों की शाखाएँ और तने, प्रत्येक
हवा के झोंके से दरवेशों के घेरे की तरह एक उल्लासमय गति के साथ, मेरी पीड़ा हुई
दिल जो भाइयों से अलग होने पर दुःखी और उदास था
अकेले रहना। अचानक मुझे पतझड़ और सर्दी की याद आ गई, और एक असावधानी
मुझ पर विजय प्राप्त की। मुझे उन सुंदर चिनार और जीवित प्राणियों पर बहुत दया आई जो झूम रहे थे
पूर्ण आनन्द इतना था कि मेरी आँखें आँसुओं से भर गईं। चूँकि उन्होंने मुझे ब्रह्मांड के अलंकृत आवरण के नीचे वियोग और मृत्यु की याद दिला दी, एक ऐसी दुनिया का दुःख जो अपवित्रता से भरी हुई है
मृत्यु और अलगाव का भय मुझ पर हावी हो गया। अचानक, आकाश की रोशनी मुझ पर छा गई।
मुहम्मदी सत्य आया और उस दुःख और उदासी को खुशी में बदल दिया।
वास्तव में, मैं उस समय मुझे मिली सहायता और सांत्वना के लिए मुहम्मद के व्यक्तित्व का सदा आभारी रहूंगा, असीम कृपा का केवल एक उदाहरण के लिए।
उस ज्योति की कृपा मुझ पर, और सभी विश्वासियों पर और सभी पर हुई। यह इस प्रकार थी:

उन धन्य और नाजुक प्राणियों को मृत्यु और वियोग से कांपते हुए, और एक निष्फल काल में अस्तित्वहीनता में जाते हुए चित्रित करना (ध्यान देने वाले का दृष्टिकोण)

कम), स्थायित्व के प्रति जुनून, सुंदरता के प्रति प्रेम की मेरी भावनाओं पर भारी पड़ा, और साथी प्राणियों और जीवित चीजों के लिए करुणा। इसने दुनिया को बदल दिया एक तरह का नरक, और मन को यातना के साधन में बदल देता है। बस उसी बिंदु पर, मुहम्मद ने मानवता के लिए जो प्रकाश उपहार के रूप में लाया था, उसने पर्दा उठा दिया और दिखाया विलुप्ति, गैर-अस्तित्व, शून्यता, निरर्थकता और अलगाव नहीं, बल्कि अर्थ और उद्देश्य चिनार के पत्तों जितने असंख्य हैं, और जैसा कि इसमें प्रदर्शित किया गया है रिसाले-ए-नूर, परिणाम और कर्तव्य जिन्हें कुछ प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है, इस प्रकार: एक प्रकार राजसी

निर्माता के नामों से संबंधित है। उदाहरण के लिए, हर कोई एक इंजीनियर की सराहना करता है जो एक असाधारण मशीन बनाता है: "क्या आश्चर्य है भगवान ने चाहा है। भगवान उसे आशीर्वाद दें।" अपने कार्यों को सही तरीके से पूरा करके, मशीन अपने इंजीनियर को बधाई देती है और उसकी सराहना करती है। हर चीज़, हर जीवित प्राणी, ऐसी ही एक मशीन है और अपने निर्माता को बधाई देती है और उसकी सराहना करती है।

चिनार के पेड़ों जैसे चीज़ों के जीवन का एक और प्रकार का उद्देश्य यह है कि वे प्रत्येक एक पाठ जैसा है, जिसका अध्ययन करने पर चेतन मन को ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है। जीवित प्राणी। ऐसे प्राणियों के मन में अपने अर्थ छोड़ कर, उनके रूप इन प्राणियों की स्मृतियाँ और प्रतीकों या अमूर्त दुनिया की पटल पर रूपों, और अदृश्य दुनिया के अभिलेखों और अस्तित्व के क्षेत्र में, वे भौतिक दुनिया को अदृश्य दुनिया के लिए छोड़ देते हैं। दूसरे शब्दों में, उनसे प्रत्यक्ष अस्तित्व छीन लिया जाता है और उन्हें अनेक अस्तित्व प्राप्त हो जाते हैं अर्थ, अदृश्य और ज्ञान।

चूँकि ईश्वर का अस्तित्व और ज्ञान सभी चीज़ों को सम्मिलित करता है, अतः कोई भी चीज़ ईश्वर के अस्तित्व और ज्ञान से परे नहीं है। एक आस्तिक की दुनिया में गैर-अस्तित्व, शाश्वत विलुप्ति, विनाश के लिए जगह है, और शून्यता। लेकिन एक अविश्वासी की दुनिया गैर-अस्तित्व, अलगाव से भरी है, और विलुप्ति। एक प्रसिद्ध कहावत है: "सब कुछ उसी के लिए मौजूद है जिसके लिए ईश्वर का अस्तित्व है; जिसके लिए ईश्वर का अस्तित्व नहीं है उसके लिए कुछ भी अस्तित्व में नहीं है।”

संक्षेप में, फिर, जैसे विश्वास हमें अनन्त दण्ड से बचाता है जब हम मर जाते हैं, यह विलुप्त होने के अंधेरे से हर किसी की विशेष दुनिया को बचाता है और अविश्वास, विशेष रूप से ईश्वर को नकारना, जीवन के आनंद को शून्यता में बदल देता है दर्दनाक जहर, व्यक्ति और उसकी विशेष दुनिया को समाप्त कर देता है मृत्यु, और ऐसे लोगों को नरक जैसे अँधेरे गड्ढों में डाल देता है। दुनिया भर के लोगों को इस पर ध्यान देना चाहिए। उन्हें इसका समाधान खोजना चाहिए या

विश्वास को स्वीकार करें, और खुद को एक भयावह, शाश्वत हानि से बचाएं।

> तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

आपका भाई जिसे आपकी प्रार्थनाओं की बहुत आवश्यकता है और वह आपको बहुत याद करता है।

— सईद नूरसी

छब्बीसवाँ शब्द

छब्बीसवाँ शब्द

ईश्वरीय नियति और आदेश तथा मानव स्वतंत्र इच्छा

> कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका ख़ज़ाना हमारे पास न हो और हम उसे एक निश्चित मात्रा में ही उतारते हैं। (15:21)
>
> हमने हर चीज़ लिख ली है और उसे खुले तौर पर दर्ज कर लिया है। (36:12)

Dएस्टिनी और मानव स्वतंत्र इच्छा एक दूसरे से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य हैं

हम चार विषयों में कुछ पहलुओं पर उन्हें समझाने की कोशिश करेंगे।

पहला विषय

नियति और मानव स्वतंत्र इच्छा, जो ईमान और मुसलमान होने की अंतिम सीमा को चिह्नित करती है, मोमिनों के आंतरिक अनुभवों और आध्यात्मिक अवस्थाओं से संबंधित है; वे वैज्ञानिक रूप से चर्चा किए जाने वाले सैद्धांतिक मामले नहीं हैं। यानी, मोमिन हर चीज (और ब्रह्मांड में हर कार्य) को ईश्वर को मानते हैं, यहां तक कि अपने कार्यों और खुद को भी। हालांकि, ताकि वे खुद को जिम्मेदारी और पापों से मुक्त न समझें, मानव स्वतंत्र इच्छा उनका सामना करती है और कहती है: "आप जिम्मेदार हैं और दायित्व के अधीन हैं, इसलिए आप अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हैं।" फिर, ताकि वे अपने अच्छे कर्मों, उपलब्धियों और व्यक्तिगत पूर्णता पर गर्व महसूस न करें, दिव्य नियति उनके सामने खड़ी है और चेतावनी देती है: "अपनी सीमाओं को जानें, यह आप नहीं हैं जो ये करते हैं।" इस प्रकार, ईमान और मुसलमान होने की अंतिम सीमाओं को चिह्नित करते हुए, दिव्य नियति और मानव स्वतंत्र इच्छा को मानव शारीरिक आत्मा को क्रमशः अहंकार और गैर-जिम्मेदारी से बचाने के लिए विश्वास के लेखों में शामिल किया गया है। ये कोई वैज्ञानिक विषय नहीं हैं, जो हठी दुष्ट आत्मा को अपनी बुराइयों के लिए भाग्य को जिम्मेदार ठहराने, अपने उत्तरदायित्व से स्वयं को मुक्त करने, तथा उन्हें प्राप्त उपलब्धियों पर गर्व करने का आधार प्रदान करें।

आम लोग जो आध्यात्मिक रूप से प्रगति नहीं कर पाए हैं, उनके लिए यह एक चुनौती हो सकती है। भाग्य का संदर्भ देने का बहाना; वे किसी भी अतीत की घटनाओं से संबंधित हो सकते हैं और विपत्तियों को भाग्य के हवाले कर दो ताकि निराशा और दुःख में न पड़ो। हालाँकि, कोई भी नहीं भाग्य को सब कुछ बताकर लोग अपने पापों से मुक्त हो सकते हैं और अपने दायित्वों से मुक्त हो सकते हैं। भाग्य में विश्वास को हमें दंभ से बचाने के लिए आस्था के स्तंभों में शामिल किया गया है, न कि हमें जिम्मेदारी और दायित्वों से मुक्त करने के लिए; और मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा को ईश्वर के बीच मान्यता दी गई है।

पंथ के लेखों को बुराइयों और पापों का स्रोत माना जाता है, न कि सद्गुणों और उपलब्धियों को इस प्रकार व्यक्त करें कि लोग उन पर प्रसन्न हों और गर्व करें।

जैसा कि कुरान में कहा गया है, हम अपने पापों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार हैं। केवल हम ही उन्हें करेंगे और करेंगे। बुराइयाँ और पाप बहुत अव्यवस्था का मतलब और कारण बनते हैं और विनाश, और इसलिए एक भयानक सजा के पात्र हो सकते हैं। वे जैसे हैं, क्योंकि उदाहरण के लिए, माचिस जलाकर घर को नष्ट करना। दूसरी ओर, हमारे पास है हमें अपने अच्छे कार्यों के बारे में शेखी बघारने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि इसमें हमारा हिस्सा केवल एक मिनट का है ईश्वरीय करुणा उनकी मांग करती है और प्रभु की शक्ति उन्हें निर्मित करती है। ईश्वर हमें अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करता है और हमें उन्हें करने की इच्छाशक्ति देता है। हम अपने कामों के स्वामी हैं केवल विश्वास और प्रार्थना के द्वारा ही उन्हें प्राप्त किया जा सकता है, सचेत रूप से उन्हें करने की आवश्यकता पर विश्वास करना और ईश्वर ने जो आदेश दिया है उससे प्रसन्न होना। हालाँकि, जिस प्रकार कुछ पदार्थ जो सड़ने के लिए उत्तरदायी होते हैं, शुद्ध अवस्था में ही खराब हो जाते हैं और सड़ जाते हैं, सूर्य का उज्ज्वल प्रकाश - और यह उनकी प्रकृति या स्वभाव के कारण है -, इसलिए हमारी शारीरिक आत्मा या तो अपने स्वभाव और प्रवृत्ति के माध्यम से पाप और बुराइयों की इच्छा करती है या हम अपनी पसंद से ऐसा करते हैं और हम ऐसा करते हैं। लेकिन यह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है जो इसे बनाता है ये बुराइयाँ एक ऐसे नियम के कारण हैं जो उसने हमारे जीवन और ब्रह्मांड के लिए स्थापित किया था, और कई अच्छे उद्देश्य हैं। इस प्रकार, चूंकि हम स्वयं ही बुराइयों की इच्छा रखते हैं, उन्हें उत्पन्न करते हैं और उन्हें करते हैं, इसलिए हम ही उनके लिए जिम्मेदार हैं। जहाँ तक उनके निर्माण का सवाल है, यह अच्छा है इसके बहुत से परिणाम अच्छे हैं। इस सूक्ष्म वास्तविकता के आधार पर, बुरे कर्मों की इच्छा करना और उन्हें करना बुरा है, जबकि उन्हें बनाना बुरा नहीं है। हालाँकि हम बारिश से बहुत लाभ मिलता है, जिन लोगों को इससे नुकसान हुआ है इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि बारिश में सभी लोगों के लिए ईश्वर की कृपा होती है। हालाँकि, वहाँ हो सकता है हमारे बुरे कर्मों में कुछ बुराई हो, सृष्टि तो अपने स्वभाव से ही है पूर्णतः अच्छा है और इसमें अच्छाई के कई उदाहरण हैं (ब्रह्मांड के सामान्य संचालन, जीवन और उस व्यक्ति के लिए जो उस बुराई को करने की इच्छा रखता है और करता है)। छोटी बुराई के लिए बड़ी अच्छाई को त्यागना बड़ी बुराई बन जाती है। हमारे मानव स्वभाव में कुरूपता कार्यों का आधार हमारी इच्छा और क्षमता पर निर्भर करता है, ईश्वर द्वारा उसे बनाने पर नहीं।

चूँकि ईश्वरीय भाग्य बुराई और कुरूपता से पूर्णतः मुक्त है, परिणामस्वरूप, यह कारणों के कारण अन्याय से भी मुक्त है। दिव्य भाग्य हमेशा प्राथमिक कारण पर विचार करता है, प्रत्यक्ष द्वितीयक कारण पर नहीं, तथा हमेशा न्याय करता है। दूसरी ओर, हम स्पष्ट कारण के अनुसार न्याय करते हैं-

और गलत निष्कर्ष निकालते हैं। उदाहरण के लिए, एक अदालत चोरी के लिए एक निर्दोष व्यक्ति को कैद कर सकती है। हालाँकि, ईश्वरीय नियति वास्तव में यह निर्णय पारित करती है
उस व्यक्ति के वास्तविक अपराध, जैसे कि हत्या, के कारण उसे
अज्ञात। इसलिए जबकि अदालत ने इस व्यक्ति को उस अपराध के लिए अन्यायपूर्ण रूप से जेल में डाल दिया जो उसने किया था
या उसने कोई अपराध नहीं किया, ईश्वरीय नियति ने उस व्यक्ति को उसके अपराध के लिए उचित दण्ड दिया।
उसका गुप्त अपराध.

इस उदाहरण से हम देखते हैं कि ईश्वरीय नियति और सृष्टि न्यायपूर्ण है,
जबकि हम अन्याय करने के लिए उत्तरदायी हैं। ईश्वरीय नियति और सृष्टि सभी घटनाओं की शुरुआत और अंत में बुराई और कुरूपता से पूरी तरह मुक्त है, और
कारण और परिणाम का लेखा-जोखा.

प्रश्न: यदि हमारी आंशिक स्वतंत्र इच्छा में कोई रचनात्मक क्षमता नहीं है और वह हमें
हमारे कर्मों में नाममात्र का हिस्सा होने के बावजूद, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान मनुष्य को आकाश और पृथ्वी के रचयिता के प्रति विद्रोही और शत्रुतापूर्ण क्यों दिखाता है? आकाश और पृथ्वी का रचयिता अपने कर्मों में नाममात्र का हिस्सा क्यों लेता है?

हमारे विद्रोह को इतनी गंभीरता से लें और अपने विश्वासी सेवकों की सहायता के लिए आगे आएं
अपने स्वर्गदूतों के साथ?

उत्तर: अविश्वास, विद्रोह और पाप का अर्थ है विनाश।
एक छोटी सी अवज्ञा से विनाश हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे एक जहाज़ नष्ट हो सकता है
चालक दल के बचाने के प्रयासों के बावजूद, पतवार चलाने वाले की लापरवाही के कारण नाव डूब गयी।
मानव की स्वतंत्र इच्छा, चाहे कितनी भी सीमित हो और अविश्वास और
पापपूर्णता, भयानक परिणाम पैदा कर सकती है। अविश्वास केवल एक बुराई है, लेकिन यह ऐसी है
यह एक महान पाप है कि यह पूरे ब्रह्मांड को बेकार और निरर्थक बना देता है, सृष्टि द्वारा ईश्वर के अस्तित्व और/या एकत्व की गवाही का खंडन करता है, और ईश्वर के अस्तित्व और/या एकत्व की गवाही को नकारता है।
और ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण का अनादर करता है।

इसे देखते हुए, यह पूरी तरह से न्यायसंगत है कि परमेश्वर अविश्वास को गंभीरता से ले, सृष्टि और ईश्वरीय नामों के नाम पर अविश्वासियों को गंभीर रूप से धमकाए, तथा
उन्हें नरक की अनंत यातना की निंदा करने के लिए। चूँकि अविश्वासी और पापी
लोग बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार फैलाते हैं, विश्वासियों को उनके खिलाफ़ परमेश्वर की सहायता की ज़रूरत है।
एक शरारती बच्चा एक घर को आग लगा सकता है, भले ही उसकी रक्षा दस सुरक्षाकर्मी कर रहे हों।
लोगों और उन सुरक्षाकर्मियों को बच्चे के माता-पिता, यहाँ तक कि सरकार से भी बच्चे को ऐसा अपराध करने से रोकने के लिए कहना पड़ सकता है।
विश्वासियों को विद्रोही और पापी लोगों के विरुद्ध सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

संक्षेप में, आस्तिक ईश्वरीय नियति और मानव स्वतंत्र इच्छा की बात कर सकते हैं
जब उनका विश्वास पूर्ण हो जाता है और वे इतने परिपक्व हो जाते हैं कि वे सब कुछ समझ सकें
सृष्टि, जिसमें वे स्वयं भी शामिल हैं, ईश्वर के अधीन है। विश्वासी मानते हैं कि उनका
ज़िम्मेदारियाँ क्योंकि उनके पास स्वतंत्र इच्छा है, और घोषणा करके परमेश्वर की महिमा करते हैं
उन्हें अपने पापों से मुक्त रखें। हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि वे पापी हैं।

भगवान के सेवक, वे सभी दिव्य आज्ञाओं का पालन करने की कोशिश करते हैं। वे ईश्वर के सेवक बने रहते हैं। अपने सभी अच्छे कर्मों का श्रेय ईश्वरीय भाग्य को देकर ईश्वर को धन्यवाद दें और वे कभी भी अपने बारे में घमंड नहीं करते। इसके अलावा, वे सभी कष्टों को सहने की शक्ति पाते हैं दुर्भाग्य में भाग्य की भूमिका को समझकर उसका समाधान करना।

जो लोग ईश्वरीय आज्ञाओं की उपेक्षा करते हैं, उनके लिए तर्क करना उचित नहीं है ईश्वरीय नियति और मानवीय स्वतंत्र इच्छा के बारे में, क्योंकि उनकी दोषपूर्ण सोच वे सृष्टि को कारणों पर आरोपित करने और ईश्वर को नज़रअंदाज़ करने लगते हैं। वे सभी चीज़ों को अपने अधिकार में ले लेते हैं अपने कौशल और अच्छे कर्मों को खुद से उत्पन्न मानते हुए, वे अपने दोषों और असफलताओं को भाग्य पर आरोपित करते हैं। वे भाग्य को भी दोष देते हैं उनकी बुराइयों के लिए नियति ही ज़िम्मेदार है। इससे ईश्वरीय चर्चा बनती है भाग्य और मानव की स्वतंत्र इच्छा निरर्थक है और उनकी चर्चा को कम कर देता है अपनी ही दुष्ट आत्मा (नफ़्स अम्मारा) द्वारा उसे बचाने के लिए अपनाई गई चाल जिम्मेदारी से दूर रहना; यह उनकी बुद्धिमत्ता के बिल्कुल विपरीत है।

दूसरा विषय

आगे जो कुछ है वह विद्वानों के लिए विशेष रूप से गहन, विद्वत्तापूर्ण चर्चा है। ईश्वरीय नियति और मानव स्वतंत्र इच्छा को सात तरीकों से समेटा जा सकता है: पहला तरीका: सृष्टि का क्रम और सामंजस्य यह प्रमाणित करता है कि ईश्वर

सर्वज्ञ और सर्व-न्यायप्रिय है। बुद्धि और न्याय की मांग है कि भले ही हम ऐसा न करें

इसकी सटीक प्रकृति को न जानते हुए भी, हमारे पास स्वतंत्र इच्छा है ताकि हमें पुरस्कृत किया जा सके या हमारे कृत्यों के लिए दंडित किया जाता है। जिस तरह हम असंख्यों में से कई को नहीं जानते हैं सर्वशक्तिमान और बुद्धिमान परमेश्वर की बुद्धि के पहलुओं, हमारे इस अज्ञान के कारण कि मानव की स्वतंत्र इच्छा को ईश्वरीय नियति के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है इसका अर्थ यह नहीं है कि इसका अस्तित्व नहीं है और यह भाग्य के साथ सामंजस्य नहीं कर सकता।

दूसरा तरीका: हर व्यक्ति को लगता है कि उसके पास स्वतंत्र इच्छा है और वह इसके अस्तित्व को समझता है। किसी चीज़ की प्रकृति को जानना, किसी चीज़ को जानने से अलग है। कि यह मौजूद है। कई चीजों का अस्तित्व हमारे लिए स्पष्ट है, भले ही हम उनकी प्रकृति को नहीं समझते। हमारी स्वतंत्र इच्छा उनमें से एक हो सकती है। इसके अलावा, अस्तित्व केवल उन चीज़ों की संख्या तक सीमित नहीं है जो हमें ज्ञात हैं, इसलिए किसी चीज़ के बारे में हमारी अज्ञानता उसके अस्तित्वहीन होने का संकेत नहीं है।

तीसरा तरीका: मानव की स्वतंत्र इच्छा ईश्वरीय नियति का खंडन नहीं करती है; बल्कि, भाग्य उसके अस्तित्व की पुष्टि करता है। क्योंकि दिव्य भाग्य कुछ में है ईश्वरीय ज्ञान के समान सम्मान, जो हमारी स्वतंत्र इच्छा के समानांतर है, हमारे कार्यों का निर्धारण करता है। इस प्रकार यह स्वतंत्र इच्छा की पुष्टि करता है।147

---

147 इसका मतलब यह है कि परमेश्वर को हर चीज़ का पहले से ज्ञान है, जिसमें हमारे काम भी शामिल हैं। हालाँकि, हम ऐसा नहीं करते। हम किसी चीज़ या कार्य को किसी तरह से करते हैं क्योंकि ईश्वर को इसके बारे में पहले से जानकारी होती है। इसलिए ईश्वर को हमारे कार्यों और हमारे द्वारा उनके द्वारा बताए गए तरीके से कार्य करने के बारे में पहले से जानकारी होना हमारी स्वतंत्र इच्छा की पुष्टि करता है और इसकी पुष्टि करता है। भाग्य के साथ सामंजस्य. (ट्र.)

चौथा रास्ता: ईश्वरीय भाग्य एक प्रकार का ज्ञान है, और ज्ञान ज्ञात वस्तु पर निर्भर है। दूसरे शब्दों में, संकल्पनात्मक ज्ञान जो ज्ञात है उसके बाह्य अस्तित्व को निर्धारित करने के लिए यह मौलिक नहीं है। अपने बाह्य अस्तित्व में, ज्ञात वस्तु ईश्वरीय इच्छा के माध्यम से कार्य करने वाली ईश्वरीय शक्ति पर निर्भर करती है।

अतीत अनंत काल (अज़ल) जैसा लोग सोचते हैं, केवल जीवन का आरंभिक बिंदु नहीं है। समय और इसलिए किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। वास्तव में, अतीत अनंत काल है एक दर्पण की तरह जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ दर्शाता है। समय बीतने से खुद को बचाने के लिए, लोग बीते समय की एक सीमा की कल्पना करते हैं जो चीजों की एक निश्चित श्रृंखला के माध्यम से फैलता है। वे इसे अतीत अनंत काल कहते हैं। तर्क करने का ऐसा तरीका न तो सही है और न ही स्वीकार्य है। एक सूक्ष्म बिंदु इस मामले को स्पष्ट कर सकता है। कल्पना कीजिए कि आप एक दर्पण पकड़े हुए हैं। दाईं ओर प्रतिबिंबित सब कुछ अतीत का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि ... बाईं ओर प्रतिबिंबित भविष्य का प्रतिनिधित्व करता है। दर्पण केवल एक ही प्रतिबिंबित कर सकता है दिशा, क्योंकि यह दोनों पक्षों को एक साथ नहीं दिखा सकता है जब आप इसे पकड़े रहो। ऐसा करने के लिए, आपको अपनी मूल स्थिति से इतना ऊपर उठना होगा कि बायाँ और दायाँ एक हो जाएँ और पहले और आखिरी, शुरुआत या अंत के बीच कोई अंतर न रहे।

कुछ मामलों में, दैवीय भाग्य दैवीय ज्ञान के समान है। इसे एक भविष्यसूचक परंपरा में सभी समय और घटनाओं को शामिल करने वाला बताया गया है एक बिंदु पर, जहाँ प्रथम और अंतिम, आरंभ और अंत, जो हुआ और जो होगा, सब एक में समाहित हैं। न तो हम और न ही हमारा दृष्टिकोण और तर्क इससे अलग हैं, ताकि हम अंतिम कल्पना कर सकें

अतीत की ओर इंगित करें और इसे एक दर्पण की तरह सोचें जो केवल अतीत के स्थान को ही समाहित करता है और प्रतिबिंबित करता है।

पाँचवाँ रास्ता: नियति के अनुसार, कारण और प्रभाव को अलग नहीं किया जा सकता। इसका मतलब है कि एक निश्चित कारण निश्चित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए नियत है। इस कारण, यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि किसी को बंदूक से मारना स्वीकार्य है क्योंकि पीड़ित की उसी समय मृत्यु तय थी और वह मर भी सकता था अगर उसे गोली नहीं मारी गई होती। ऐसा तर्क निराधार है, क्योंकि पीड़ित दरअसल गोली लगने से उसकी मौत तय है। तर्क यह है कि वह या वह बिना गोली लगे भी मर जाती इसका मतलब है कि पीड़िता मर गई बिना किसी कारण के। अगर ऐसा होता, तो हम यह नहीं बता पाते कि उसकी मौत कैसे हुई।

भाग्य दो प्रकार का नहीं होता - एक कारण के लिए और एक कारण के लिए प्रभाव। नियति एक है। इस तरह के विरोधाभास से धोखा खाकर, मुताज़िली स्कूल निष्कर्ष यह निकला कि यदि पीड़ित को नहीं मारा जाता तो उसकी मृत्यु नहीं होती गोली मार दी गई (यह भूलकर कि गोली मारकर मरना ही पीड़ित की नियति थी), जबकि मुजब्बिरा (भाग्यवादी) ने तर्क दिया कि वह तब भी मर जाता-

गोली लगने से (कारण की अनदेखी करते हुए) अहलू-सुन्ना वल-जमा'आ (
मुसलमानों का व्यापक बहुमत) सही दृष्टिकोण का पालन करता है: "हम नहीं जानते
यदि पीड़ित को गोली नहीं मारी गई होती तो उसकी मृत्यु हो जाती या नहीं।"

छठा तरीका: इमाम अल-मतुरीदी के अनुयायियों के अनुसार, जो अहलू-सुन्ना वल-जमा के एक उप-संप्रदाय हैं, मानव की स्वतंत्र इच्छा प्रवृत्तियों पर आधारित है। (प्रवृत्ति कोई ऐसी चीज नहीं है जो इतनी प्रबल हो कि किसी को कुछ करने के लिए मजबूर कर दे)
कुछ) इसका केवल नाममात्र और सापेक्ष मूल्य और अस्तित्व है और
इसलिए इसे सेवकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। हालाँकि, अशरी इस बात को नहीं मानते
मानव की स्वतंत्र इच्छा प्रवृत्तियों से मिलकर बनी है, क्योंकि वे प्रवृत्तियों पर विचार करते हैं
वास्तविक या पर्याप्त अस्तित्व होना। उनके अनुसार, हमारे पास केवल एक है
स्वतंत्र इच्छा के नाम पर प्रवृत्तियों पर नाममात्र या सैद्धांतिक नियंत्रण।

नाममात्र और सापेक्ष अस्तित्व वाली किसी चीज़ के लिए किसी पूर्ण, प्रभावी कारण की आवश्यकता नहीं होती जो हमारे कार्यों में मानव की स्वतंत्र इच्छा को निरस्त कर दे।
बल्कि, जब इसका कारण वरीयता का भार प्राप्त कर लेता है, तो इसका प्रभाव हो सकता है
वास्तविक अस्तित्व। उस स्थिति में, कुरान हमें ऐसा करने या उससे बचने का आदेश देता है
कुछ। अगर हम अपने कर्म खुद बनाते हैं, तो हम ही उनके अंतिम कारण होंगे
और हमारी इच्छा रद्द हो जाएगी। स्थापित विज्ञान के अनुसार
सिद्धांतों या कार्यप्रणाली और तर्क के बिना, कुछ भी अस्तित्व में नहीं होगा
ज़रूरी है। दूसरे शब्दों में, एक वास्तविक, पूर्ण, रचनात्मक कारण होना चाहिए
इससे पहले कि कोई चीज अस्तित्व में आ सके। लेकिन एक पूर्ण कारण के रूप में अस्तित्व में आना संभव है
जब कोई चीज अनिवार्य हो, तो उसमें चुनाव के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता।

प्रश्न: हमारे कार्य दो के बीच हमारी पसंद का परिणाम हैं
विकल्प, जो नाममात्र महत्व का है। यदि कोई आवश्यक कारण है कि
वरीयता को बल देने से अस्तित्व में नहीं आता, वरीयता का कार्य होता है
बिना किसी आवश्यक कारण के। क्या यह एक तार्किक असंभवता नहीं है जो विरोधाभासी है
धर्मशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत क्या है?

उत्तर: हम बिना किसी आवश्यक कारण के भी वरीयता दे सकते हैं, क्योंकि
ऐसी चीजें करना हमारी स्वतंत्र इच्छा का गुण है। हालाँकि, कोई चीज अपने आप में बेहतर नहीं हो सकती, न ही वह विकल्पों में से चुनाव कर सकती है
बिना किसी बाहरी एजेंट के स्वयं कार्य करना।

प्रश्न: चूँकि ईश्वर ने हत्या का कार्य रचा है, तो फिर हत्या करने वाला क्यों है?
हत्यारा कहा गया?

उत्तर: अरबी व्याकरण के अनुसार, विषय के रूप में कार्य करने वाला सक्रिय कृदंत क्रियाविशेषण से लिया गया है, जो सापेक्ष मामले या कार्य को दर्शाता है, न कि उस शब्द से जो क्रिया के परिणाम को दर्शाता है।

सक्रिय कृदंत द्वारा किया गया और जो एक स्थापित तथ्य को व्यक्त करता है। इस प्रकार
चूँकि क्रियाविशेषण द्वारा दर्शाया गया व्यक्ति हत्या करता है, इसलिए वह

हत्यारा कहा जाता है। चूँकि हम कुछ करना चाहते हैं और इसलिए करते हैं, इसलिए हम हमारे कार्यों के कर्ता या प्रतिनिधि हैं और इसलिए उनके लिए जिम्मेदार हैं। चूँकि हम ही हैं जो लोग हत्या करते हैं, हमें हत्यारा कहा जाना चाहिए। भगवान हमारे कार्यों का निर्माण करते हैं वह उन्हें बाह्य अस्तित्व प्रदान करता है; वह उन्हें करता नहीं है। अर्थात्, वह स्वयं है। वह जो हमारी हत्या के परिणामस्वरूप मृत्यु का सृजन करता है। यदि ऐसा न होता, तो हमारी स्वतंत्र इच्छा निरर्थक होती।

सातवाँ तरीका: हालाँकि हमारी स्वतंत्र इच्छा किसी चीज़ को घटित नहीं करा सकती, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो पूर्णतः बुद्धिमान है, अपनी इच्छा को कार्यान्वित करने के लिए इसका प्रयोग करता है और हमें जिस दिशा में हम चाहें, मार्गदर्शन करते हैं। वह वास्तव में कहता है: "मेरे सेवक! तुम अपनी इच्छा से जिस रास्ते से जाना चाहो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा। इसलिए, जिम्मेदारी तुम्हारी है!" उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा आपके कंधे पर सवार होकर आपसे कहता है कि आप उसे ऊँचे पहाड़ पर ले चलें, और आप ऐसा करते हैं, तो वह फंस सकता है सर्दी जुकाम। उस सर्दी जुकाम के लिए वह आपको कैसे दोषी ठहरा सकता है, क्योंकि वह वही था जिसने पूछा था वहाँ जाओ? वास्तव में, आप उसकी पसंद के कारण उसे सज़ा भी दे सकते हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो न्यायियों में सबसे न्यायी है, अपने सेवकों पर कभी दबाव नहीं डालता कुछ करने के लिए प्रेरित करते हैं, और इसलिए उसकी इच्छा हमारे कार्यों में हमारी स्वतंत्र इच्छा पर विचार करती है।

संक्षेप में, मनुष्य होने के नाते, हमारे पास एक हद तक स्वतंत्र इच्छा है। इतना सीमित है कि यह हमारे अच्छे कार्यों में लगभग कोई योगदान नहीं देता है, यह कर सकता है घातक पाप और विनाश का कारण बनें। इसलिए अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग अपने लाभ के लिए करें भगवान से लगातार प्रार्थना करें। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको ईश्वर की कृपा का आनंद मिल सकता है अच्छे कर्मों की श्रृंखला का फल स्वर्ग और शाश्वत सुख की प्राप्ति, जो उनमें से एक फूल है। प्रार्थना करने के अलावा, हमेशा भगवान से माफ़ी मांगें ताकि आप बुराई से दूर रहें और नरक की यातनाओं से बच सकें, बुरे कर्मों की शापित श्रृंखला का फल। प्रार्थना और परमेश्वर पर अत्यधिक भरोसा करना अच्छा करने, पश्चाताप करने और परमेश्वर की इच्छा की खोज करने की हमारी प्रवृत्ति को मजबूत करें क्षमा हमारी बुराई की प्रवृत्ति को पराजित करती है और उसके अपराधों को तोड़ती है।

तीसरा विषय

ईश्वरीय नियति में विश्वास करना विश्वास का एक स्तंभ है। अर्थात, सब कुछ सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा निर्धारित किया जाता है। जबकि इसके अनगिनत प्रमाण हैं भाग्य, हम केवल कुछ प्रारंभिक टिप्पणियाँ करेंगे यह दिखाने के लिए कि कैसे सृष्टि के लिए यह स्तम्भ बहुत महत्वपूर्ण है।

कुरान स्पष्ट रूप से बताता है कि सब कुछ पूर्वनिर्धारित है और अस्तित्व में आने के बाद दर्ज किया जाता है, जैसे: कोई चीज़ नहीं, ताज़ा या मुरझाया हुआ, गीला या सूखा है, लेकिन यह एक प्रकट पुस्तक (6:59) और कई अन्य आयतों में है। यह ब्रह्मांड द्वारा पुष्टि की गई है, दिव्य शक्ति का यह मैक्रो-कुरान, इसके रचनात्मक और परिचालन संकेतों जैसे व्यवस्था, सामंजस्य, संतुलन, निर्माण और आकार के माध्यम से।

सजावट, अलंकरण और विशिष्टता। सभी बीज, फलों के बीज, मापा अनुपात,
और रूप दर्शाते हैं कि प्रत्येक वस्तु अपने सांसारिक अस्तित्व से पहले पूर्वनिर्धारित होती है।
प्रत्येक बीज या फल की गुठली में काफ नून के कारखाने में एक सुरक्षात्मक आवरण बनाया जाता है। [148]
जिसमें दिव्य नियति ने एक पेड़ या पौधे का जीवन-इतिहास डाला है। दिव्य
शक्ति, ईश्वरीय नियति द्वारा स्थापित माप के अनुसार, परमाणुओं का उपयोग करती है,
किसी विशेष बीज को चमत्कारिक रूप से किसी विशेष वृक्ष में विकसित करना।
इसका अर्थ यह है कि वृक्ष का भावी जीवन-इतिहास मानो उसके बीज में लिखा हुआ है।

व्यक्ति और प्रजातियाँ भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन वे समान तत्वों से बनी हैं।
मूल सामग्री। पौधे और जानवर एक ही घटक मूल सामग्री से विकसित होते हैं।
तत्व, फिर भी प्रचुर विविधता के बीच ऐसा सामंजस्य और अनुपात प्रदर्शित करते हैं कि हम केवल यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रत्येक को अपना अनूठा रूप दिया गया है
और ईश्वरीय शक्ति द्वारा उसके लिए स्थापित माप के अनुसार मापें
दिव्य नियति। उदाहरण के लिए, विचार करें कि ईश्वरीय नियति कितनी विशाल और असंख्य है।
निर्जीव परमाणु जो स्थानांतरित होते हैं, एकजुट होते हैं, और अलग होते हैं ताकि यह बीज विकसित हो सके
यह पेड़ या वीर्य की वह बूंद उस जानवर में विकसित होती है।

चूँकि दिव्य भाग्य दृश्य पदार्थ में इस सीमा तक अभिव्यक्त होता है
चीजें, वे रूप जिनसे चीजें समय के साथ ढक जाती हैं और अवस्थाएँ
वे अपनी गतियों के माध्यम से जो प्राप्त करते हैं वह भी ईश्वरीय नियति के आदेश पर निर्भर करता है। एक बीज दो तरीकों से नियति को प्रदर्शित करता है। पहला है भाग्य को दिखाना
प्रकट पुस्तक (किताबुन मुबीन), ईश्वरीय इच्छा और ईश्वर की इच्छा का दूसरा शीर्षक
ब्रह्मांड के सृजनात्मक और परिचालन संबंधी नियम। दूसरा तरीका है, ब्रह्मांड के सृजनात्मक और परिचालन संबंधी नियम दिखाना।
प्रकट अभिलेख (इमामुन मुबीन), ईश्वरीय ज्ञान का दूसरा शीर्षक
और कमान.149 अगर हम इन दोनों को अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ मानते हैं
दैवीय भाग्य, पूर्व को "वास्तविक" के रूप में समझा और संदर्भित किया जा सकता है
भाग्य" और बाद वाले को "औपचारिक (सैद्धांतिक) भाग्य" कहा जाता है। भविष्य में पेड़ अपनी सभी जड़ों, तने, शाखाओं, पत्तियों, फूलों और फलों के साथ जो भौतिक रूप धारण करेगा, उसे उसका वास्तविक भाग्य समझा जा सकता है। इसका सामान्य (सैद्धांतिक) रूप, जो इसके बीज द्वारा दर्शाया जाता है और इसमें जीवन के सभी चरण शामिल होते हैं।
गुजर जाएगा, यह इसकी औपचारिक नियति है। दिव्य की ऐसी अभिव्यक्तियाँ
एक पेड़ के जीवन में भाग्य को आसानी से देखा जा सकता है, यह दर्शाता है कि कैसे सब कुछ एक ही तरह से होता है।
सांसारिक अस्तित्व से पहले एक अभिलेख में पूर्वनिर्धारित किया गया है।

दूसरी ओर, सभी फल (मैनिफेस्ट बुक और मैनिफेस्ट के संकेत)
रिकॉर्ड), और सर्वोच्च संरक्षित टैबलेट को इंगित करने वाली सभी मानवीय यादें

148 क़ुरआन कहता है कि जब वह किसी चीज़ को होना चाहता है तो उसका आदेश यह है कि कहो "हो जा" और वह हो जाती है (36:82)। मूल अरबी शब्द कुन फ़ा याकुन हैं। इस्लामी परंपरा में, सृष्टि को सृष्टि का मूल माना जाता है। दिव्य आदेश कुन का परिणाम। अक्षर k (काफ़) और n (नन) मिलकर कुन शब्द बनाते हैं (होना). (ट्र.)

149 पृष्ठ 565, फुटनोट 170 भी देखें।

(लौहुन महफूज) साबित करते हैं कि जैसे हर चीज पहले से रिकॉर्ड की गई है, हर चीज का जीवन-इतिहास रिकॉर्ड किया गया है। प्रत्येक पेड़ का जीवन-इतिहास प्रत्येक पेड़ में दर्ज है।
फल, उसके जीवन का परिणाम। मानवता का जीवन-इतिहास, जिसमें होने वाली घटनाएँ शामिल हैं
बाहरी दुनिया में हमारे द्वारा किए गए कार्य, मानव स्मृति में दर्ज होते हैं। इस प्रकार दैवीय शक्ति हमारे कर्मों को भाग्य की कलम से पंजीकृत करके हमारी स्मृति में दर्ज करती है ताकि हम
हम उन्हें हिसाब के दिन याद करेंगे। हमें यह भी एहसास होना चाहिए कि
क्षणभंगुरता और उथल-पुथल की दुनिया में कई "दर्पण" शामिल हैं
अनंत काल, जिसमें सर्वशक्तिमान और बुद्धिमान व्यक्ति नश्वर प्राणियों की पहचान को दर्शाता है और उसे स्थायी बनाता है। ऐसी कई पट्टिकाएँ भी हैं जिन पर सर्वज्ञ संरक्षक क्षणभंगुर प्राणियों के शाश्वत अर्थों को दर्ज करता है।

संक्षेप में, जबकि पौधे (जीवन का सबसे सरल और निम्नतम स्तर) पूरी तरह से ईश्वरीय भाग्य पर निर्भर हैं, मानव जीवन (उच्चतम स्तर) भी
नियति द्वारा निर्धारित किया गया है। जिस तरह बारिश की बूंदें बादल का संकेत देती हैं, उसी तरह पानी
टपकने वाली धाराएँ झरने का खुलासा करती हैं और रसीदें और वाउचर एक खाता बही के अस्तित्व का सुझाव देते हैं, इसलिए फल, शुक्राणु, बीज और रूप प्रकट पुस्तक का संकेत देते हैं और
प्रकट अभिलेख या (सर्वोच्च) संरक्षित पट्टिका। पूर्व एक है
ईश्वरीय इच्छा और ईश्वर की सृजनात्मक और क्रियात्मक योजना का शीर्षक या नोटबुक
ब्रह्माण्ड के नियम, जबकि उत्तरार्द्ध ईश्वरीय ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

जब कोई जीवित प्राणी बनता है, तो परमाणु निरंतर गति करते हैं, जटिल मार्गों से अपने गंतव्य तक पहुँचते हैं, और वहीं रहते हैं। उनकी गति के परिणामस्वरूप कई लाभ, उपयोग और ज्ञान के उदाहरण सामने आते हैं। जाहिर है,
ईश्वरीय नियति प्रत्येक वस्तु के लिए एक स्पष्ट माप और रूप नियुक्त करती है। यदि यह
अतः जीवों की अभौतिक अवस्थाओं से भी कुछ निश्चित फल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार
दैवी शक्ति वह माध्यम है, और दैवी भाग्य वह प्रतिरूप है जिस पर
दिव्य शक्ति अर्थों की पुस्तक लिखती है। हम देखते हैं कि प्रत्येक गति और
किसी भी जीवित प्राणी द्वारा अनुभव की जाने वाली अवस्था ईश्वरीय नियति द्वारा पूर्वनिर्धारित होती है।
इसके अलावा, इसका पूरा जीवन एक सामंजस्यपूर्ण एकता बनाता है।

चूँकि ईश्वरीय नियति ने प्रत्येक वस्तु के लिए एक गंतव्य तथा एक निश्चित उद्देश्यपूर्ण परिणाम निर्धारित कर रखा है, तथा चूँकि उसके सभी जीवन-चरण भी उसी नियति द्वारा पूर्वनिर्धारित हैं, इसलिए मानवता का जीवन-इतिहास, सबसे परिपूर्ण है।
सृष्टि के वृक्ष का फल और पृथ्वी का शासक और सर्वोच्च का वाहक
विश्वास, किसी भी अन्य चीज़ से अधिक ईश्वरीय नियति के नियम के अधीन है।

प्रश्न: यदि हम ईश्वरीय नियति से इतने बंधे हैं, तो क्या नियति में विश्वास करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है?
हृदय और आत्मा के लिए बोझ नहीं, जो क्रियाशीलता और उत्साह के लिए बहुत इच्छुक हैं।
आत्म-पूर्णता?

उत्तर: बिलकुल नहीं! बल्कि, यह आत्मा को राहत, सुरक्षा और आराम प्रदान करता है। यदि हम भाग्य में विश्वास नहीं करते हैं, तो आत्मा को एक भ्रामक, अस्थायी और बहुत सीमित चीज़ के लिए धरती जितना भारी बोझ सहना पड़ता है।

स्वतंत्रता की भावना। क्योंकि हम पूरे ब्रह्मांड से जुड़े हुए हैं, और असीमित इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ रखते हैं, जिनमें से किसी को भी हम अपने दम पर पूरा नहीं कर सकते।
अंततः हम असहनीय परेशानी और पीड़ा के साथ अकेले रह जाएंगे।
भाग्य इस बोझ को भाग्य के जहाज पर रखता है, और दिल और
अपनी पूर्णता के लिए पूर्ण सहजता और स्वतंत्रता के साथ काम करने की भावना। इसके लिए केवल सांसारिक आत्मा की भ्रामक स्वतंत्रता को दूर करता है और हमारे ऊपर उसकी अत्याचारी पकड़ को तोड़ता है।
भाग्य में विश्वास हमें वर्णन से परे आनंद और खुशी देता है।

इस तुलना पर विचार करें: दो लोग एक शानदार महल में प्रवेश करते हैं।
राजा को नहीं पहचानता और चोरी और लूटपाट करके वहाँ रहने की कोशिश करता है।
उसे महल और उसके निवासियों को नियंत्रित करना, बगीचे की देखभाल करना, राजा के मामलों को आवश्यक गणना और प्रबंधन के साथ पूरा करना, मशीनों को चलाना और जानवरों को खिलाना मुश्किल लगता है। नतीजतन, यह "स्वर्ग"
उसके लिए "नरक" बन जाता है। अंत में, उसे अपने दोषपूर्ण प्रबंधन और भ्रष्टाचार के कारण कैद कर लिया जाता है। दूसरा व्यक्ति राजा को पहचानता है और जानता है
वह उसका मेहमान है। वह समझता है और मानता है कि महल और उसके परिवार के मामले उसके नियंत्रण में हैं।
बगीचे के काम राजा के शासन और अधिकार के तहत किए जाते हैं।
राजा महल के संचालन की पूरी जिम्मेदारी लेता है, वह इसका आनंद लेता है
वहाँ रहने का आनंद लेता है और हस्तक्षेप नहीं करता। वह कुछ चीजों को अनदेखा करता है
जो भी अप्रिय लगता है, वह राजा की करुणा और उसके प्रशासन के न्याय और बुद्धि पर भरोसा करता है।
परिणामस्वरूप, वह एक संतुष्ट और सुखद जीवन जीता है।
इस तुलना पर विचार करें और कहावत को समझें: जो कोई भी विश्वास करता है
भाग्य चिंता से मुक्त है।

चौथा विषय

प्रश्न: पहला विषय यह सिद्ध करता है कि जो कुछ भी भाग्य द्वारा निर्धारित होता है, वह सत्य है।
अच्छा है, कि बुरे दिखने वाले काम भी वास्तव में अच्छे हैं, और बदसूरत चीजें भी अच्छी हैं
मूलतः सुंदर। लेकिन क्या इस में झेली गई विपत्तियाँ और क्लेश
क्या विश्व इसका खंडन नहीं करेगा?

उत्तर: हे मेरे सांसारिक प्राण और मेरे मित्र, तू अपने पापों के कारण पीड़ा महसूस कर रहा है।
अस्तित्व के साथ मजबूत संबंध और प्राणियों के प्रति स्नेह। अस्तित्व है
पूरी तरह से अच्छा, क्योंकि यह हर सौंदर्य और पूर्णता उत्पन्न करता है; अस्तित्वहीनता
[जो ब्लैक होल की तरह हर अच्छाई को सोख लेता है] पूरी तरह से बुराई है, क्योंकि सभी पाप और दुर्भाग्य इसी से उत्पन्न होते हैं। इसे देखते हुए, जो कुछ भी गैर-अस्तित्व का संकेत देता है, उसमें बुराई का एक तत्व होता है। इसलिए, जीवन, अस्तित्व का सबसे शानदार प्रकाश, बन जाता है
यह विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने पर और भी मजबूत होता है। यह विरोधाभासी घटनाओं और घटनाओं के माध्यम से शुद्ध और परिपूर्ण होता है, और वांछित परिणाम उत्पन्न करता है
विभिन्न गुणों को ग्रहण करके परिणाम प्राप्त होते हैं। इस प्रकार यह इस बात की पुष्टि करता है कि
जीवनदाता के नाम। इस सूक्ष्म वास्तविकता के कारण ही जीवित रचनाएँ-

मनुष्य अनेक अवस्थाओं से गुजरता है और कष्ट, क्लेश और कठिनाई का अनुभव करता है,
जिसके माध्यम से उनके जीवन में अस्तित्व की रोशनी निरंतर नवीनीकृत होती है,
और अस्तित्वहीनता का अंधकार दूर हो जाता है और उनका जीवन शुद्ध हो जाता है।
गुणवत्ता और परिस्थितियों के रूप में, आलस्य, जड़ता और एकरसता गैर-अस्तित्व के पहलू हैं। एकरसता सबसे बड़ी खुशी को भी शून्य कर देती है।

संक्षेप में, चूँकि जीवन ईश्वर के सर्वसुन्दर नामों की छाप प्रदर्शित करता है,
इसमें होने वाली हर चीज़ खूबसूरत है। इस पर विचार करें: एक बहुत ही समृद्ध और असीम
कुशल वस्त्र डिजाइनर अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शित करने के लिए एक साधारण मॉडल का उपयोग करता है
मजदूरी के लिए। वह मॉडल से आभूषणों से सजे और कलात्मक ढंग से तैयार कपड़े पहनने की मांग करता है
वह परिधान जो उनके काम की कला और उनकी अमूल्य संपत्ति को दर्शाता है। वह जारी है
मॉडल द्वारा परिधान पहने जाने के दौरान उसमें बदलाव करना। क्या मॉडल को ऐसा करने का कोई अधिकार है?
कहो: "झुकने और खड़े होने के आपके आदेश मुझे परेशानी में डाल रहे हैं। आपकी काटने और
इस वस्त्र को छोटा करना, जो मुझे अधिक सुन्दर बनाता है, मेरी सुन्दरता को बिगाड़ देता है।"
क्या मॉडल डिजाइनर पर उसके साथ निर्दयतापूर्वक और अनुचित व्यवहार करने का आरोप लगा सकता है?

इसी प्रकार, उनके सर्वसुन्दर नामों के प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए,
महिमा के निर्माता, अद्वितीय सर्व-उत्पत्तिकर्ता, अनेक परिस्थितियों में अस्तित्व के वस्त्र को बदलते हैं जिसे वे जीवित प्राणियों को पहनाते हैं, जो रत्नों से सुसज्जित हैं
इंद्रियाँ, कारण, बुद्धि और हृदय। परिस्थितियाँ जो विपत्तिपूर्ण प्रतीत होती हैं
और दर्दनाक वास्तव में ज्ञान और दया की चमक के भीतर दिव्य दया की किरणें हैं
उनमें सूक्ष्म सुन्दरताएँ हैं। वे दिव्य सर्वसुन्दर नामों के कार्यों और प्रभावों को दर्शाते हैं।

निष्कर्ष

इसमें पाँच पैराग्राफ हैं जो पुराने सईद के जिद्दीपन को शांत करते हैं,
घमंडी और अभिमानी आत्मा को दबा दिया और उसे समर्पण करने पर मजबूर कर दिया।

पहला पैराग्राफ: चूँकि चीज़ें अस्तित्व में हैं और कुशलता से बनाई गई हैं,
एक सर्वोच्च निर्माता अवश्य ही अस्तित्व में होना चाहिए। यदि हर चीज़ का अस्तित्व सर्वोच्च निर्माता को नहीं माना जाता है
एक सत्ता, एक वस्तु का अस्तित्व उतना ही कठिन हो जाएगा जितना कि
सभी चीजों का अस्तित्व। लेकिन अगर सब कुछ एक ही सत्ता को माना जाए, तो सभी चीजों का निर्माण एक चीज के निर्माण जितना ही आसान हो जाता है। चूँकि एक ही सत्ता है, इसलिए सभी चीजों का निर्माण एक ही सत्ता के निर्माण जितना ही आसान हो जाता है।
उसी ने धरती और आकाश को पैदा किया, निश्चय ही वह अत्यन्त बुद्धिमान और सर्वशक्तिमान है।
कुशल सृष्टिकर्ता दूसरों को जीवित प्राणियों का निर्माण और प्रशासन करने की अनुमति देकर अव्यवस्था उत्पन्न नहीं होने देगा, जो स्वर्ग और पृथ्वी के फल और उद्देश्य हैं, और इसलिए वह सृष्टि के लिए अपने दिव्य उद्देश्य का मजाक नहीं उड़ाएगा। वह निश्चित रूप से दूसरों को उनकी पूजा और धन्यवाद नहीं देगा।

दूसरा पैराग्राफ: हे मेरी अभिमानी शारीरिक आत्मा! तुम एक ऐसे व्यक्ति के समान हो जो
अंगूर की बेल। बेल ने अंगूर के गुच्छों को खुद नहीं जोड़ा है; किसी ने
किसी और ने उन्हें जोड़ लिया है, इसलिए घमंड मत करो।

तीसरा परिच्छेद: हे मेरी दिखावटी शारीरिक आत्मा! गर्व मत करो
ईश्वर के धर्म के प्रति आपकी सेवाओं के लिए। जैसा कि एक भविष्यवाणी परंपरा में कहा गया है, ईश्वर
इस धर्म को एक भ्रष्ट व्यक्ति के माध्यम से मजबूत कर सकते हैं। आप नहीं हैं
पवित्र हो, इसलिए अपने आप को उस भ्रष्ट व्यक्ति के समान समझो। अपनी सेवा और पूजा को धन्यवाद मानकर अपने आप को आत्म-प्रशंसा और अभिमान से मुक्त करो
क्योंकि यह ईश्वर द्वारा आपके प्रति किया गया अतीत का उपकार है, यह आपकी मानवता द्वारा अपेक्षित कर्तव्य है, तथा यह ईश्वर की कलाकृति होने का परिणाम है।

चौथा पैराग्राफ: यदि आप सत्य और ज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं
सच्ची बुद्धि के लिए, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें। क्योंकि सृष्टि के सभी सत्य और वास्तविकताएँ परम सत्य और सदा-स्थिर के दिव्य नाम की किरणों और उनके नामों और गुणों की अभिव्यक्तियों में निहित हैं।

प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक अस्तित्व, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, वास्तविक हो या आकस्मिक, उसके किसी एक नाम के प्रकाश से उत्पन्न होता है। अन्यथा वे
वे बिना किसी ठोस वास्तविकता और सत्य के मात्र रूप होंगे।

हे मेरी सांसारिक आत्मा! यदि तुम इस अस्थायी सांसारिक जीवन से जुड़े हो और
मौत से भागने की कोशिश करो, जान लो कि जीवन वर्तमान क्षण है। अतीत और
जो कुछ उसमें विद्यमान था वह समाप्त हो चुका है, तथा जो भविष्य में होगा वह भी समाप्त हो चुका है।
उसमें अभी भी अस्तित्व नहीं है। इस प्रकार भौतिक जीवन जिस पर आप निर्भर हैं, वह
क्षणिक अवधि। कुछ सत्य जानने वाले विद्वान तो यहाँ तक कहते हैं कि जीवन में
एक पल का। इस कारण से, कुछ संत मानते हैं कि दुनिया अपने आप में अस्तित्वहीन है। चूँकि यह वास्तविकता है, इसलिए भौतिक, शारीरिक चीज़ों को त्याग दें
जीवन और हृदय, आत्मा और अंतरतम क्षमताओं के जीवन के स्तर तक उठना। देखें
उनके जीवन का दायरा कितना विस्तृत है। अतीत और भविष्य, जो उनके लिए मर चुके हैं
तुम उनके लिए जी रहे हो; वे अस्तित्व में हैं और जीवन से भरे हुए हैं। यह देखते हुए, हे मेरे
हे शारीरिक आत्मा, मेरे हृदय के समान आंसू बहाओ, और चिल्लाकर कहो: मैं नश्वर हूं,

इसलिए मैं नश्वर को नहीं चाहता।
मैं नपुंसक हूं, इसलिए मैं नपुंसक की इच्छा नहीं करता।
मैंने अपनी आत्मा को दयालु भगवान को सौंप दिया है, अतः अब मुझे किसी अन्य की इच्छा नहीं है।
मैं केवल उसी को चाहता हूं जो सदैव मेरा मित्र बना रहे।
मैं तो एक तुच्छ कण हूँ, परन्तु मैं एक चिरस्थायी सूर्य की कामना करता हूँ।
मैं सारतः कुछ भी नहीं हूं, लेकिन मैं संपूर्ण सृष्टि की कामना करता हूं।

पाँचवाँ पैराग्राफ: यह पैराग्राफ मुझे अरबी भाषा में याद आया और इसलिए
अरबी में लिखा गया था। यह चिंतन के 33 स्थानों में से एक को व्यक्त करता है
“ईश्वर महान है” (अल्लाहु अकबर)।

ईश्वर महान है: वह सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, सर्वज्ञ है, सर्वदानी है, दयावान है, सर्वसुन्दर है,

शाश्वत लेखक। इन संसारों की सच्चाई और वास्तविकता, संपूर्ण और आंशिक रूप से,

और “चादरों” और परतों में, साथ ही इन प्राणियों की सच्चाई और वास्तविकताओं में
समग्र रूप से और व्यक्तिगत रूप से, और अपने अस्तित्व और निरंतरता में, ये हैं: ईश्वर के आदेश और नियति की

कलम द्वारा खींची गई रेखाएं, और उनकी
ज्ञान और बुद्धि से आदेश देना और निर्धारण करना; और अपने परकार से कुशलतापूर्वक
लिखे गए अभिलेख
ज्ञान और बुद्धि, और कला और के साथ गठन और व्यवस्था
कृपादृष्टि;
और उनकी कला, अनुग्रह के चमकते “हाथ” की अलंकरण,
अनुग्रह और उदारता के साथ सजाना और प्रकाशित करना; और उसकी कृपा और उदारता
की सूक्ष्मताओं के फूल, और
दया और उदारता के साथ स्वयं को ज्ञात और प्रेम किया; और उसकी दया और उदारता के प्रवाह का फल,
दया और स्नेह, अनुग्रह और पूर्णता के साथ। और उनकी कृपा, सौंदर्य और की
अभिव्यक्तियों के विकिरण
पूर्णता, जैसा कि दर्पणों के लुप्त होने से प्रमाणित होता है
प्राणियों) और वस्तुओं के प्रवाह के बावजूद पारलौकिक, शाश्वत कृपा की स्थायी अभिव्यक्ति और निरंतर प्रतिबिंब
और सभी मौसमों, शताब्दियों और युगों में सौंदर्य, और
प्राणियों के जीवन में निरंतर वरदानों की वर्षा,
दिन, और लोग.

वास्तव में, एक बौद्धिक व्यक्ति के लिए एक उत्तम कार्य एक उत्तम कृत्य की ओर संकेत करता है; एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए एक उत्तम कार्य एक उत्तम उपाधि की ओर संकेत करता है; एक उत्तम उपाधि स्वतः स्पष्ट रूप से एक उत्तम विशेषता की ओर संकेत करता है; एक उत्तम विशेषता अनिवार्य रूप से एक परिपूर्ण क्षमता की ओर इशारा करता है; और एक परिपूर्ण क्षमता निश्चित रूप से इंगित करती है सार की पूर्णता, एजेंट, उस सार के लिए उचित तरीके से, जो
यह सबसे स्पष्ट सत्य है।

दर्पणों की नश्वरता (जिसमें अभिव्यक्तियाँ प्रतिबिंबित होती हैं) और प्राणियों का क्षय, (उपाधियों के) सतत प्रकटीकरण के बावजूद, गुण, और कार्य) अत्यधिक प्रचुरता में, एक स्पष्ट संकेत और आश्वस्त करने वाला है तर्क यह है कि प्रकट सौंदर्य उनका नहीं है जिन पर वे हैं प्रकट होते हैं। यह सबसे स्पष्ट व्याख्या और स्पष्ट प्रमाण है अमूर्त सौंदर्य और हमेशा नवीनीकृत परोपकार, आवश्यक रूप से वह सर्वव्यापी, सर्वप्रेममय, स्थायी है।

हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद पर अनंत काल से कृपा बरसाओ
भविष्य की अनंतता से लेकर ईश्वर द्वारा समाहित चीजों की संख्या तक
ज्ञान, और उसके परिवार और साथियों पर, और शांति प्रदान करें
शांति।

परिशिष्ट

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

(यह परिशिष्ट बहुत महत्वपूर्ण है और सभी को लाभ पहुंचाएगा।)

सर्वशक्तिमान ईश्वर तक पहुँचने के कई रास्ते हैं। सभी सच्चे रास्ते ईश्वर से ही निकले हैं।

कुरान के समान ही कुछ अन्य बातें भी हैं, लेकिन उनमें से कुछ अन्य बातों की तुलना में अधिक सुरक्षित, अधिक व्यापक और प्रत्यक्ष हैं।

मैंने कुरान से जो निष्कर्ष निकाला है वह हमारी धारणा और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

ईश्वर के समक्ष अपनी जन्मजात नपुंसकता या असहायता और दरिद्रता को स्वीकार करना

शक्ति और धन पर, तथा स्नेह और प्रतिबिंब पर।

यह रास्ता प्रेम के रास्ते जितना ही निश्चित है, या उससे भी अधिक सुरक्षित है, क्योंकि यह आपको इतना ऊपर उठाता है

ईश्वर के प्रति आपकी सच्ची भक्ति के कारण ईश्वर आपको प्यार करेंगे। आपकी अपनी नपुंसकता की धारणा और स्वीकृति आपको ईश्वरीय नाम की ओर ले जाती है।

दयालु। स्नेह प्रेम से अधिक प्रभावशाली है और नाम की ओर ले जाता है

सर्व दयालु। प्रतिबिंब उज्जवल और अधिक व्यापक है

प्रेम का मार्ग, और उस नाम की ओर ले जाता है जो सर्वज्ञ है। यह मार्ग, उस मार्ग से मिलता-जुलता नहीं है जो सर्वज्ञ है।

उन सूफी सम्प्रदायों का मार्ग जिन्होंने शुद्धिकरण और मोक्ष के लिए दस-चरणीय विधि विकसित की है

अपने सदस्यों की दस बाहरी और आंतरिक इंद्रियों या क्षमताओं को तेज करें, और जो मौन पाठ और प्रार्थना को प्राथमिकता देते हैं। न ही यह उन आदेशों जैसा है

जो सार्वजनिक रूप से पूजा-पाठ करते हैं और अपने सदस्यों को सभी पापों से शुद्ध करने का प्रयास करते हैं आत्मा के सात स्थानों में निहित दोष। इसे गलत न समझा जाए।

हमारा मार्ग ईश्वर के समक्ष अपनी जन्मजात नपुंसकता, दरिद्रता तथा पाप को ईमानदारी से स्वीकार करने की मांग करता है; इसका अर्थ यह नहीं है कि हम ईश्वर के समक्ष अपनी जन्मजात नपुंसकता, दरिद्रता तथा पाप को ईमानदारी से स्वीकार करें।

लोगों के सामने अपनी नपुंसकता, गरीबी और पाप का प्रदर्शन करना।

हमारा मार्ग चार चरणों वाला है और वह सत्य (हकीका) है, सूफी नहीं

यह शरीयत है । इसके मूल सिद्धांतों में निम्नलिखित शामिल हैं

सुन्नत, धार्मिक दायित्वों का निर्वहन, प्रमुख पापों से बचना, निर्धारित नमाज़ों को उचित और सावधानीपूर्वक अदा करना, तथा प्रशंसा के शब्द कहना,

हर प्रार्थना के बाद परमेश्वर की महिमा और महिमा का गुणगान करें। चरण इस प्रकार हैं: पहला चरण इस प्रकार व्यक्त किया

जाता है: अपने आप को धर्मी न ठहराएँ और अपने आप को पवित्र रखें

(53:32)

दूसरा कदम इस प्रकार है: उन लोगों की तरह मत बनो जो बेखबर हैं

भगवान का - और इसलिए उसने उन्हें अपने स्वयं के बारे में विस्मृत कर दिया है

(59:19)

तीसरे चरण की ओर संकेत इस प्रकार किया गया है: आपके साथ जो भी अच्छा घटित होता है, वह अच्छा ही होता है।

अल्लाह की ओर से, और जो मुसीबत तुम पर आये वह तुम्हारी ही ओर से है (4:79)

चौथा चरण इस प्रकार दर्शाया गया है: प्रत्येक वस्तु नाशवान है (और नाशवान भी है) सिवाय उसके चेहरे (और उसकी प्रसन्नता) के (28:88)।

इन चार चरणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

पहला कदम: हमें कभी भी अपने आप को अचूक और पापरहित नहीं समझना चाहिए। मनुष्य होने के नाते, हम अपने स्वभाव और जन्मजात विकृति के कारण सबसे पहले खुद से प्यार करते हैं। हम हर चीज से पहले खुद से प्यार करते हैं, इतना कि हम अपने लिए कुछ भी त्याग देते हैं। हम खुद की प्रशंसा ऐसे करते हैं जैसे किसी वस्तु की प्रशंसा कर रहे हों
पूजा करते हैं, और खुद को दोषों और कमियों से मुक्त रखते हैं। हम अपनी पूरी कोशिश करते हैं
हम पर कोई दोष न लगाया जाए, और हम पूरी लगन से अपना बचाव करें
ऐसा लगता है जैसे हम खुद को देवता मान रहे हैं। हम अपने लिए दी गई क्षमताओं का दोहन करते हैं
स्वयं को महिमामंडित करने और उनके सदृश होने के लिए उनका प्रयोग करके परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना
वह जिसका उल्लेख इस प्रकार है: जिसने अपनी वासनाओं और कल्पनाओं को अपना देवता मान लिया है
(25:43) हम अपनी प्रशंसा करते हैं, अपने ऊपर भरोसा करते हैं और अपनी प्रशंसा करते हैं। ऐसे लोगों से शुद्ध होने के लिए
हमें कभी भी अपने आप को शुद्ध नहीं मानना चाहिए; इसके बजाय, हमें मानना चाहिए
हम स्वयं को त्रुटिपूर्ण तथा त्रुटि के प्रति संवेदनशील मानते हैं।

दूसरा कदम: जैसा कि आयत में कहा गया है: उन लोगों की तरह मत बनो जो ईश्वर को भूल जाते हैं—
और इसलिए उसने उन्हें अपने आप से बेखबर कर दिया है , हम बेखबर हैं और खुद से अनजान हैं। हम मौत को याद नहीं करना चाहते, जबकि हम
हम हमेशा दूसरों को नश्वर समझते हैं। कठिनाई का सामना करते समय हम पीछे हट जाते हैं
और सेवा प्रदान करना, लेकिन विश्वास है कि आपको पहला पुरस्कार मिलना चाहिए
जब वेतन लेने का समय आता है। इस चरण में खुद को शुद्ध करने में शामिल है
अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना, मौत के लिए तैयार रहना और भूल जाना
जब बात सुख-सुविधाओं, महत्वाकांक्षाओं और वेतन संग्रह की आती है, तो हम खुद को खतरे में डाल लेते हैं।

तीसरा चरण: जैसा कि आयत कहती है: जो कुछ भी अच्छा तुम्हारे साथ होता है वह ईश्वर की ओर से होता है;
जो भी बुराई तुम पर आती है वह तुम्हारी अपनी ओर से है , हमारी बुराई करने वाली आत्मा सिखाती है
हमेशा खुद को अच्छा मानता है और खुद को घमंडी महसूस करता है। असल में, हमें अपने दोषों, अपर्याप्तता, नपुंसकता और गरीबी को समझना चाहिए और फिर धन्यवाद देना चाहिए और
हम जो भी अच्छा काम कर सकते हैं और जो भी सद्गुण हमारे पास हैं, उसके लिए परमेश्वर की स्तुति करें।
इस अर्थ के अनुसार: वह वास्तव में समृद्ध है जिसने इसे शुद्धता में बढ़ाया है (९१:९), इस चरण में हमारी शुद्धि में यह जानना शामिल है कि हमारी पूर्णता
हमारी अपूर्णता को स्वीकार करने में, हमारी शक्ति हमारी असहायता को समझने में निहित है,
और हमारी संपत्ति हमारी आवश्यक गरीबी और अपर्याप्तता को स्वीकार करने में है।

चौथा कदम: जैसा कि आयत कहती है: सब कुछ नाशवान है सिवाय उसके चेहरे के (और)
उसकी अच्छी खुशी) सिखाता है, शारीरिक, बुराई आज्ञाकारी आत्मा खुद को मानता है
पूरी तरह से स्वतंत्र और अपने आप में विद्यमान। यह अपने लिए प्रभुत्व का दावा भी करता है
और अपने रचयिता, सर्वपूज्य के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण विद्रोह रखता है।
हम इस खतरनाक स्थिति से खुद को तभी बचा सकते हैं जब हम इसके बारे में जागरूक हों।
सत्य यह है कि प्रत्येक वस्तु, अपने आप के संबंध में, अनिवार्यतः अस्तित्वहीन है,
आकस्मिक, क्षणभंगुर और नश्वर। लेकिन एक पत्र की तरह होने के संबंध में
स्वयं के अलावा किसी अन्य चीज़ को सूचित करने वाला शब्द, और दर्पण होने के संबंध में

सर्व-महान निर्माता के नाम को प्रतिबिंबित करते हुए और विभिन्न कर्तव्यों को सौंपे जाने पर,
यह अस्तित्वमान है, अनुभव करने योग्य है और अनुभव योग्य है।

यहाँ, हम यह अनुभव करके स्वयं को शुद्ध कर सकते हैं कि हमारा अस्तित्व इसमें निहित है
अपने मूल अस्तित्व को स्वीकार करना। खुद को स्वयं-अस्तित्व-तम्बू मानकर, हम अस्तित्वहीनता के सबसे गहरे गड्ढे में गिर जाते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी चीज़ पर भरोसा करना
हमारा व्यक्तिगत अस्तित्व और इस प्रकार वास्तविक निर्माता की अनदेखी करने से हमारा
क्षणभंगुर, जुगनू-जैसे व्यक्तिगत अस्तित्व को अस्तित्वहीनता के अनंत अंधकार में डूब जाना चाहिए। लेकिन अगर हम गर्व और अहंकार को त्याग दें और यह पहचान लें कि
हम केवल एक दर्पण हैं जिसमें वास्तविक निर्माता स्वयं को प्रकट करते हैं, हम प्राप्त करते हैं
अनंत अस्तित्व के लिए। जो व्यक्ति अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की खोज कर लेता है, वह अनंत अस्तित्व के लिए तत्पर हो जाता है।
जिनके नामों की अभिव्यक्ति से सभी चीजें अस्तित्व में आती हैं,
ऐसा माना जाता है मानो सब कुछ पा लिया है।

निष्कर्ष

यह तरीका हमारी जन्मजात नपुंसकता और गरीबी को पहचानने का तरीका है,
साथ ही स्नेह और चिंतनशील विचार। यह चार-चरणीय मार्ग हमें आगे ले जाता है
अपने उद्देश्य को तेजी से प्राप्त करें, क्योंकि यह सबसे आसान और सीधा रास्ता है।
हमारी अक्षमता या नपुंसकता हमें हमारी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा के प्रभाव से मुक्त होने और केवल सर्वशक्तिमान महामहिम पर भरोसा करने की ओर ले जाती है। प्रेम,
इसे सबसे तेज मार्ग माना जाता है, यह हमें सच्चे प्रियतम तक तभी ले जा सकता है जब हम
हमने अपना प्रेम उसकी ओर मोड़ा है और उसके कारण दूसरों से प्रेम किया है।
यह तरीका अन्य तरीकों की तुलना में अधिक सुरक्षित है, क्योंकि यह हमें अपनी सीमाओं को पहचानने में सक्षम बनाता है, और
हमारे अन्दर नपुंसकता, गरीबी और दोषों के अलावा कुछ भी नहीं है, और यह
हमें ऊंचे-ऊंचे दावों से बचाता है।

यह रास्ता एक मुख्य राजमार्ग है, बहुत चौड़ा और अधिक सार्वभौमिक, क्योंकि यह अनुमति देता है
हमें ब्रह्मांड के वास्तविक अस्तित्व को नकारे या अनदेखा किए बिना ईश्वर की उपस्थिति के बारे में निरंतर जागरूकता प्राप्त करने की अनुमति देना, जैसा कि मार्ग के अनुयायियों द्वारा मांग की जाती है
अस्तित्व की एकता (वहदतुल-वुजूद) या साक्षी की एकता
(वहदतुश-शुहुद), क्रमशः। इसके बजाय, यह ब्रह्मांड की वास्तविक वास्तविकता को स्वीकार करता है
कुरान में जिस तरह से अस्तित्व की घोषणा की गई है, वह वास्तव में ईश्वर के अस्तित्व का आधार नहीं है, बल्कि यह सीधे तौर पर ईश्वर को ही मानता है। यह स्वीकार करता है कि सभी चीजें ईश्वर की अभिव्यक्ति में निहित हैं।
दिव्य नाम, उनकी सेवा के लिए समर्पित हैं, और दर्पण होने का आरोप लगाया गया है
उन पर विचार करना। यह हमें उसकी ओर यात्रा करने की अनुमति देकर असावधानी से बचाता है
हर चीज़ के माध्यम से, हमें हमेशा अपनी उपस्थिति का एहसास कराकर।

संक्षेप में, यह दृष्टिकोण प्राणियों को न तो अस्तित्वमान मानता है और न ही उन पर कार्य करता है।
अपने स्वयं के पक्ष में; बल्कि, यह बताता है कि प्राणी संकेतों और अधिकारियों के रूप में कार्य करते हैं
सर्वशक्तिमान ईश्वर का.

सत्ताईसवाँ शब्द

सत्ताईसवाँ शब्द

इस्लामी न्यायशास्त्र में इज्तिहाद

पैगम्बर के साथी

नोट: इस मामले में जो लोग सीमाएं लांघ रहे हैं, उन्हें उनकी जगह पर रखना है।
इस मामले में, इज्तिहाद[150] पर निम्नलिखित ग्रंथ यहां शामिल किया गया है
मेरे दो भाइयों का अनुरोध।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यदि वे इसे रसूल और अधिकार रखने वालों के पास भेज दें
उनमें से, निश्चित रूप से वे लोग जो कटौती करने में सक्षम हैं
वे उसे जानें और प्रकाश में लाएँ। (4:83)

इज्तिहाद का द्वार खुला है, लेकिन छह बाधाएं इसके मार्ग को अवरुद्ध करती हैं।

छह बाधाएं

पहली बाधा: सर्दियों के तूफान या बाढ़ के दौरान, जब
छोटे छेद बंद कर दिए जाते हैं, नए और बड़े छेद खोलना अनुचित है। इसी तरह, जब बाढ़ आती है, तो पानी को बाहर निकालना भी अनुचित है।
दीवार में छेद होने पर उसे ठीक करने से डूबने का खतरा रहता है। इसलिए, इस समय यह गैर-इस्लामी और यहां तक कि इस्लाम विरोधी प्रथाओं, यूरोप से रीति-रिवाजों के आक्रमण, धार्मिक नवाचारों की सेना और इस्लाम के विनाश का समय था।
गुमराह करना, इस्लाम के गढ़ में नए छेद और आक्रमण मार्ग खोलना
इज्तिहाद के नाम पर इस्लाम के खिलाफ अपराध है।

---

150 इज्तिहाद का अर्थ है, अपेक्षित ज्ञान और योग्यता प्राप्त करने के बाद कानून के नियमों का निष्कर्ष निकालना
मूल स्रोतों - कुरान और सुन्नाह - से न्यायिक तर्क के माध्यम से यदि वे कोई प्रस्तुत नहीं करते हैं
किसी विशेष मामले पर निर्णायक निर्णय। (ट्र.)

दूसरी बाधा: इस्लाम के मूल तत्व इज्तिहाद के अधीन नहीं हैं। वे निर्दिष्ट और निश्चित हैं, और बुनियादी भोजन और जीविका की तरह हैं जिनके बिना जीवन असंभव है। वर्तमान में, वे परित्यक्त और उपेक्षित हैं। हमें अपनी पूरी ताकत से उन्हें पुनर्स्थापित करने और पुनर्जीवित करने का प्रयास करना चाहिए। इस्लाम की प्रारंभिक पीढ़ियों ने निष्कर्ष के लिए जो सिद्धांत स्थापित किए थे मुख्य कानूनी स्रोतों से प्राप्त नए नियमों और उनके द्वारा निकाले गए नियमों का पूर्ण अधिकार और शुद्ध इरादे लगभग हर समय के लिए पर्याप्त हैं और इसलिए, उन्हें त्यागकर नए स्थानों की तलाश करें और काल्पनिक फैशन एक हानिकारक नवाचार और इस्लाम के साथ विश्वासघात है।

तीसरी बाधा: बाजार में विभिन्न उत्पादों की मांग होती है मौसम और मांग के अनुसार। यह मानवता के सामाजिक जीवन के बारे में भी सच है और सभ्यता भी। उदाहरण के लिए, हमारे युग में लोग अपनी सुरक्षा करना चाहते हैं सांसारिक जीवन और दर्शन और राजनीति का अनुसरण, और इसलिए मांग उन "उत्पादों" की मांग बढ़ती है। उन पर ध्यान दिया जाता है और दिमाग उन्हीं में व्यस्त रहता है। हालाँकि, इस्लाम की शुरुआती पीढ़ियों के दौरान, सबसे अधिक मांग वाला “उत्पाद” सृष्टिकर्ता के वचन से सीखना था आकाश और पृथ्वी को वह हमसे क्या चाहता है और क्या मंजूर करता है, और कैसे परलोक में शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए, जो पैगम्बरियत और अल्लाह की रोशनी से इतनी व्यापक रूप से खुल गया था कुरान में कहा गया है कि इन्हें बंद नहीं किया जा सकता।

उस समय, सभी मन, हृदय और आत्माएँ आकाश और पृथ्वी के प्रभु द्वारा स्वीकृत बातों को समझने पर केंद्रित थीं। बातचीत, चर्चा, पत्राचार और कार्यक्रम समर्पित थे उस बिंदु पर। इसलिए, जिसके पास क्षमता थी, वह स्वाभाविक रूप से और स्वचालित रूप से उस समय के लोकाचार द्वारा सिखाया गया था। ऐसा लगता था जैसे सब कुछ एक था शिक्षक जो व्यक्ति के मन और आत्मा को तैयार करता है, और उसकी क्षमता का विकास करता है इज्तिहाद। ऐसी स्वाभाविक और स्वचालित शिक्षा बहुत ज्ञानवर्धक थी कि कोई व्यक्ति बिना किसी औपचारिक शिक्षा के इज्तिहाद में शामिल हो सकता है । जिसमें माचिस की तरह आग लगाने की क्षमता हो, ऐसा व्यक्ति “प्रकाश पर प्रकाश” का अर्थ प्रदर्शित किया और जल्दी ही मुजतहिद बन गए (इज्तिहाद का अभ्यासी)।

लेकिन अब यूरोपीय सभ्यता हावी हो गई है। हम प्रकृतिवादी दर्शन के भारी दबाव का सामना कर रहे हैं, और आधुनिक जीवन की परिस्थितियाँ हमारे दिमाग और दिमाग को बिखेर रही हैं। दिलों में दरार पड़ जाती है और हमारी कोशिशें और चिंताएँ बंट जाती हैं। हमारे दिमाग आध्यात्मिक मुद्दों से दूर हो जाते हैं। इसलिए भले ही कोई सुफ़यान इब्न उयना जैसा बुद्धिमान हो, एक महान मुज-तहिद जिसने 4 साल की उम्र में कुरान को याद कर लिया था और बाद में उसके साथ चर्चा की थी विद्वानों, सूफ़ियान के समय के विपरीत, अब दस गुना की आवश्यकता होगी

मुजतहिद बनने में अब और समय नहीं लगेगा । अगर सुफ़यान इज्तिहाद करने के योग्य हो गया
दस साल के लिए हमें सौ साल की ज़रूरत होगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि सुफ़यान का स्वभाविक
अध्ययन की शुरुआत तर्क की उम्र में हुई। उनकी क्षमता धीरे-धीरे विकसित हुई, तेज हुई और इस हद तक पहुंच गई कि वह हर चीज से सीख सकते थे।
अंत में, वह एक माचिस की तरह बन गया (जलाने और रोशनी देने के लिए तैयार)।

जहां तक हमारे समय के उनके समकक्षों का प्रश्न है, हमारी क्षमता भी बहुत बढ़ गई है।
मुजतहिद होने के योग्य होने के लिए हम सुस्त हैं। हमारे विचार दर्शनशास्त्र में लीन हैं, हमारे दिमाग राजनीति में व्यस्त हैं, और हमारे दिल सांसारिक जीवन से भरे हुए हैं। हमने इज्तिहाद से अपनी क्षमताओं को आधुनिक विज्ञान के साथ अपने पूर्व-व्यस्तता की हद तक हटा दिया है, और सम्मान के मामले में पिछड़े हुए हैं

हम भौतिक और सांसारिक मामलों पर जितना ध्यान केंद्रित करते हैं, उतना ही हम उससे जुड़ते हैं। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि मैं भी उसके जितना बुद्धिमान हूँ। मैं उसके जितना बुद्धिमान क्यों नहीं हो सकता?
उसके बराबर में हैं? हमें ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है, और हम उसके बराबर में नहीं हो सकते
सुफियान के समान स्तर।

चौथी बाधा: एक जीवित शरीर में एक अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है
विस्तार और विकास। चूँकि यह प्रवृत्ति अंतर्निहित है या भीतर से आती है
शरीर के विकास और पूर्णता के लिए यह प्रवृत्ति काम आती है। अगर यह प्रवृत्ति बाहरी हस्तक्षेप है, तो यह शरीर की त्वचा को फाड़ देगी और नष्ट कर देगी
यह कोई वृद्धि और विकास नहीं है। इसी तरह, अगर, धर्मपरायण, धर्मपरायण शुरुआती पीढ़ियों की तरह, जो लोग इस्लाम के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं
पूर्ण धर्मपरायणता, धार्मिकता और ईश्वर की चेतना के द्वार, और इस्लाम के आवश्यक तत्वों के अनुरूप सख्ती से विस्तार करने की प्रवृत्ति है और
इज्तिहाद में शामिल होने की इच्छा , यह एक गुण है और पूर्णता के लिए कार्य करता है। लेकिन यह
जो लोग इस्लाम की अनिवार्य बातों की उपेक्षा करते हैं, उनमें झुकाव और इच्छा होती है कि वे इस्लाम को प्राथमिकता दें।
परलोक के बारे में विश्वव्यापी विचार-विमर्श और भौतिकवादी दर्शन में खुद को व्यस्त रखने से इस्लाम का शरीर नष्ट हो जाता है और शरीयत से अलगाव हो जाता है।

पाँचवी बाधा: इस्लाम का कानून आसमानी और नाज़िल है।
इज्तिहाद अपने छिपे हुए नियमों और आदेशों को उजागर करता है, यह स्वर्गीय भी है।
हालाँकि, तीन कारक अब इज्तिहाद को सांसारिक बनाते हैं:

पहला कारक: नियम स्थापित करने का कारण ज्ञान से भिन्न होता है
और उससे लाभ की अपेक्षा की जाती है। बुद्धि या लाभ इसकी प्राथमिकता का कारण है, जबकि कारण के लिए इसका अस्तित्व आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यात्रा करने वाले मुसलमान
अपनी प्रार्थनाओं को छोटा कर सकते हैं। इस दिव्य व्यवस्था का कारण यात्रा करना है, और अंतर्निहित ज्ञान यात्रा की कठिनाई है। प्रार्थनाएँ
यदि कोई कठिनाई न भी हो तो भी इसे छोटा कर दिया जाता है, क्योंकि इसका कारण मौजूद है। मुसलमान
जो लोग यात्रा नहीं कर रहे हैं और फिर भी कठिनाई का सामना कर रहे हैं, वे समय को छोटा नहीं कर सकते
बुद्धि या लाभ के लिए की गई प्रार्थनाएं इस व्यवस्था का कारण नहीं हो सकतीं।

हालाँकि, हमारे समय में लोग कारण और उद्देश्य के स्थान पर ज्ञान या लाभ को प्राथमिकता देते हैं। इस प्रकार का इज्तिहाद सांसारिक है, स्वर्गीय नहीं।

दूसरा कारक: लोग अब सांसारिक सुख को प्राथमिकता देते हैं; शरिया में पारलौकिक शाश्वत सुख को पूर्ण प्राथमिकता दी गई है, तथा केवल सांसारिक सुख के लिए एक द्वितीयक प्राथमिकता और इसके संदर्भ में शाश्वत खुशी का साधन। चूँकि वर्तमान दृष्टिकोण विदेशी है शरीयत की भावना के विपरीत, यह शरीयत के नाम पर इज्तिहाद नहीं कर सकता।

तीसरा कारक: यह सिद्धांत कि परम आवश्यकता जो कुछ भी है उसे अनुमेय बनाती है। शरिया द्वारा निषिद्ध कार्य हमेशा वैध नहीं होता, चाहे वह किसी भी समय और स्थान पर हो। यदि आवश्यकता निषिद्ध कार्य से उत्पन्न नहीं होती है, तो यह अनुमति का कारण हो सकता है। लेकिन यदि यह इच्छाशक्ति के दुरुपयोग और गैरकानूनी कृत्यों से उत्पन्न होता है, तो इसे अपराध नहीं माना जा सकता। किसी भी छूट का मतलब है। उदाहरण के लिए, अगर कोई नशे में हो जाता है और अगर वह कोई अपराध करता है, तो उसे उसके किए के लिए माफ नहीं किया जा सकता। अगर वह अपने पति को तलाक देता है, तो उसे माफ नहीं किया जा सकता। पत्नी के साथ तलाक हो चुका है। अगर वह किसी की हत्या करता है तो उसे सजा मिलती है। लेकिन अगर उसकी पत्नी किसी की हत्या करती है तो उसे सजा मिलती है। नशे की हालत में व्यक्ति का नशे में होना किसी जबरदस्ती या धमकी के कारण है, न कि उसकी अपनी इच्छा शक्ति के कारण। तलाक और सज़ा को गैर-बाध्यकारी माना जाता है। इस प्रकार एक पुरानी शराबी यह कहकर निर्दोष होने का दावा नहीं कर सकता कि: "मुझे इसे पीने के लिए मजबूर किया जाता है, और इसलिए यह मेरे लिए वैध है।”

आजकल, ऐसी कई चीजें जो लोगों के जीवन के लिए जरूरी नहीं हैं, वे खत्म हो गई हैं। लोगों द्वारा स्वैच्छिक दुरुपयोग के कारण यह आवश्यक और लत बन गया है उनकी इच्छा शक्ति, गैरकानूनी झुकाव और निषिद्ध कार्य। इस प्रकार वे नहीं कर सकते किसी छूट का साधन बनें या गैरकानूनी को वैध बनाएं। वर्तमान परिस्थितियों में इज्तिहाद करने के पक्ष में लोग अपने तर्क इस आधार पर बनाते हैं ऐसी "आवश्यकताएँ" और इसलिए उनका इज्तिहाद सांसारिक है, उनकी कल्पनाओं का उत्पाद है, और आधुनिक विचारधारा के प्रभाव में। संक्षेप में, ऐसा नहीं है शरिया के अनुसार है और इसलिए सांसारिक है। अगर किसी भी अधिकार का प्रयोग आकाश और पृथ्वी के निर्माता के दिव्य अध्यादेशों में, और अपने बन्दों की उपासना में हस्तक्षेप करना उस सृष्टिकर्ता की इच्छा पर निर्भर नहीं है। अनुमति, अधिकार का प्रयोग और हस्तक्षेप अस्वीकार किया जाता है।

छठी बाधा: सम्मानित मुजतहिद जो उस समय के करीब रहते थे पैगंबर और साथियों (प्रकाश और सत्य का युग) उस प्रकाश से शुद्ध हो गए और शुद्ध इरादों के साथ इज्तिहाद का अभ्यास किया । उनका आधुनिक हमारे समकक्ष लोग कुरान को बहुत दूर से और पीछे से देखते हैं इतने सारे परदे हैं कि उनके लिए इसका सबसे स्पष्ट अक्षर भी देख पाना बहुत कठिन है।

प्रश्न: सहाबा इंसान थे जो गलतियां और विरोधाभास कर सकते थे। हालाँकि, शरिया के आदेशों ने स्थापित किया कि सुन्नाह और प्रारंभिक मुजतहिदों द्वारा इज्तिहाद के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष

मुस्लिम समुदाय की आम धारणा और सर्वसम्मति पर आधारित हैं
इस बात पर सहमति कि सभी साथी न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठ और झूठ नहीं बोलने वाले हैं।

उत्तर: साथियों में से अधिकांश सत्य के प्रेमी थे, सत्यनिष्ठ और न्यायप्रिय। उस युग में झूठ बोलने की कुरूपता और धोखे को उसकी सारी कुरूपता और सच्चाई की सुन्दरता के साथ प्रदर्शित किया गया और सच्चाई अपनी पूरी खूबसूरती में। उनके बीच की दूरी उतनी ही बड़ी थी जितनी कि जमीन और भगवान के सर्वोच्च सिंहासन के बीच, या डिग्री के बीच पैगम्बर मुहम्मद (सर्वोच्च पद) की सच्चाई और झूठे मुसैलिमा (निम्नतम पद) की धोखेबाजी के बारे में। वास्तव में, यह झूठ ही था कि मुसैलिमा को सबसे निचले स्तर पर ले आया, इसलिए यह सच्चाई और सही था जिसने विश्वसनीय मुहम्मद को सर्वोच्च स्थान पर पहुंचा दिया।

साथी, प्रभु की संगति के प्रकाश से प्रकाशित पैगंबर का सूरज, उच्च भावनाओं और भावनाओं वाला था और अच्छे लोगों से प्यार करता था वे कभी भी स्वेच्छा से झूठ नहीं बोलते, क्योंकि यह बेहद बदसूरत और अपमानजनक है। वे झूठ बोलने से उसी तरह बचते थे जैसे वे अविश्वास से बचते थे, क्योंकि दोनों ही बातें आम तौर पर एक दूसरे से मेल नहीं खातीं। साथ में। शरिया के आदेशों को बयान और संप्रेषित करते समय, उन्होंने सच्चाई की तलाश करने, सच्चा होने और नियमों का पालन करने का बहुत ध्यान रखा। सत्य। उन्होंने समझा कि सत्य असीम रूप से सुंदर है, गर्व और महिमा, और आध्यात्मिक पूर्णता की सीढ़ी। यह अधिक से अधिक है दूतत्व के गौरव में अन्य "रत्नों" की तुलना में मांग अधिक है यह खजाना मानवता के सामाजिक जीवन को अपनी शानदार सुंदरता से प्रकाशित करता है।

हमारे समय में सच और झूठ के बीच की दूरी इतनी कम हो गई है कि वे एक दूसरे के बगल में खड़े हैं। सच से झूठ तक पहुंचना बेहद आसान है। झूठ बोलना। दरअसल, राजनीतिक प्रचार ने झूठ को सच से बेहतर बना दिया है। इस प्रकार अगर सबसे बदसूरत और सबसे खूबसूरत चीजें एक साथ और एक ही कीमत पर बेची जाएं सत्य की चमक, जो असीम रूप से उत्कृष्ट और अमूल्य है, उसकी कीमत नहीं है व्यापारी के कौशल और शब्द पर अंध भरोसा करके खरीदा जाना।

निष्कर्ष

समय के साथ कानून बदलते रहते हैं। पैगम्बर मुहम्मद से पहले, पैगम्बरों के मुहर, अलग-अलग पैगम्बरों को अलग-अलग लोगों के पास अलग-अलग नियमों के साथ भेजा गया था। एक युग। चूंकि पैगंबर का सबसे व्यापक शरिया हर युग में सभी लोगों के लिए पर्याप्त है, इसलिए अलग-अलग कानूनों की कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। हालाँकि, विभिन्न माध्यमिक मामलों से पता चला कि विभिन्न कानूनी स्कूलों की आवश्यकता थी। जिस प्रकार मौसम के अनुसार कपड़े बदले जाते हैं, उसी प्रकार मौसम के अनुसार इलाज भी भिन्न हो सकते हैं। स्वभाव, गौण मामलों को नियंत्रित करने वाले नियम भिन्न हो सकते हैं, क्योंकि वे

समय बीतने और लोगों के चरित्र और क्षमताओं के आधार पर। यह अनुमति देता है
उन्हें नए उठने वाले प्रश्नों और स्थितियों का उत्तर देने में सक्षम बनाना।

प्रारंभिक पैगम्बरों के समय लोग शारीरिक और बौद्धिक रूप से एक दूसरे से दूर थे। उनके चरित्र कुछ हद तक असभ्य और असभ्य थे।
हिंसक थे, और उनके दिमाग आदिम थे। इसलिए उस समय के कानून थे
उनकी परिस्थितियों के लिए अलग और उपयुक्त। यहां तक कि अलग-अलग भी थे
एक ही महाद्वीप में एक ही युग में पैगम्बर और कानून।

अंतिम पैगम्बर हमारा मार्गदर्शन करने के लिए एक सर्व-व्यापक धर्म लेकर आये
विज्ञान, शिक्षा और सभ्यता के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ना, और हमें आगे लाना
उस बिंदु तक जहां हम सभी एक ही पाठ प्राप्त कर सकें, एक ही शिक्षक को सुन सकें,
और एक कानून के अनुसार कार्य करें। इसलिए अब किसी कानून की आवश्यकता नहीं थी।
अलग-अलग कानून या शिक्षक। लेकिन क्योंकि सभी लोग एक ही स्तर पर नहीं हो सकते
एक ही तरह का सामाजिक जीवन जीना या जीना, कानूनी विचारधारा के विभिन्न स्कूल
अगर ऐसा न होता तो सभी स्कूलों को एक किया जा सकता था।

प्रश्न: चूंकि सत्य एक है, तो इनके निर्णय एक दूसरे से कैसे भिन्न हो सकते हैं?
क्या विभिन्न कानूनी स्कूलों के विचार सत्य होंगे?

उत्तर: एक ही पानी को जब पानी में मिलाया जाता है तो वह पांच अलग-अलग तरीकों से कार्य करता है।
पाँच बीमार लोगों को यह दवा दी जाएगी। इससे पहले व्यक्ति की बीमारी ठीक हो जाएगी, और इस प्रकार,
चिकित्सा विज्ञान के लिए यह आवश्यक है। यह दूसरे के लिए जहर की तरह होगा
व्यक्ति को और भी बीमार कर देता है, और इसलिए इसे चिकित्सकीय रूप से निषिद्ध किया जाता है।
तीसरे व्यक्ति के लिए थोड़ा हानिकारक हो सकता है, और इसलिए इससे बचना चाहिए।
चौथे व्यक्ति के लिए फायदेमंद होगा, और इसलिए चिकित्सा इसकी सलाह देती है। यह
पांचवें व्यक्ति के लिए न तो हानिकारक होगा और न ही फायदेमंद होगा, और क्योंकि वह कर सकता है
इसे अच्छे स्वास्थ्य के साथ पीना चिकित्सकीय रूप से स्वीकार्य है। इस प्रकार सभी पाँच दृष्टिकोण वैध हैं। क्या आप यह तर्क दे सकते हैं कि पानी केवल एक इलाज है, और इसका सेवन इसके प्रभाव की परवाह किए बिना किया जाना चाहिए?

इसी प्रकार, ईश्वरीय बुद्धि की अपेक्षा है कि द्वितीयक ईश्वरीय अध्यादेश
उनका महत्व उनके अनुसरण करने वालों के अनुसार अलग-अलग होना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है
अलग-अलग स्कूलों में, जो सभी सही हैं। उदाहरण के लिए, अधिकांश सदस्य
शफीई स्कूल के छात्र गांव के जीवन के अधिक करीब हैं और सामाजिक जीवन से कम परिचित हैं
जो समुदाय को एक शरीर की तरह बनाता है। यही कारण है कि सामूहिक प्रार्थना में, हर कोई इमाम के पीछे सूरतुल-फातिहा पढ़ता है ताकि ज़रूरतों को पूरा करने वाले के दरबार में अपना बोझ उतार सके और अपनी निजी इच्छाओं को बता सके। यह सही और शुद्ध ज्ञान है।

हालाँकि, समय के साथ अधिकांश इस्लामी सरकारों ने
हनफ़ी विधि-संप्रदाय को अपना आधिकारिक कोड मान लिया, जो इसका अनुसरण करते हैं
स्कूल सभ्यता और शहरी जीवन के अधिक करीब रहे हैं और अधिक इच्छुक हैं

सामाजिक जीवन। चूँकि सामाजिक, सभ्य जीवन एक समुदाय को एक व्यक्ति की तरह बनाता है, इसलिए एक व्यक्ति समुदाय के लिए बोल सकता है। इसलिए, चूँकि सभी लोग अपने दिल से नेता की पुष्टि करते हैं और उसका समर्थन करते हैं और उसका शब्द सभी का शब्द बन जाता है, इसलिए हनफ़ी जमात इमाम के पीछे सूरतुल-फ़ातिहा नहीं पढ़ती। यह भी सही और शुद्ध ज्ञान है।

चूंकि शफीई स्कूल के अधिकांश अनुयायी ग्रामीण और शारीरिक श्रम करने वाले हैं, इसलिए वे गंदगी और लिंगों के बीच घनिष्ठ संबंध के लिए प्रवण हैं। हालाँकि, शरिया का उद्देश्य शारीरिक शुद्धता, आध्यात्मिक शुद्धता और नैतिक शुद्धता है, और आत्मा को प्रशिक्षित और शिक्षित करता है। इस प्रकार यह स्कूल कहता है कि किसी व्यक्ति का स्नान

किसी महिला की त्वचा को छूने से, जिससे वह कानूनी रूप से विवाह कर सकता है, तथा अपने शरीर या कपड़ों पर थोड़ी सी गंदगी लगने से भी वशीकरण अमान्य हो जाता है। हनफ़ी स्कूल, जिसके अधिकांश अनुयायी अधिक सामाजिक और सभ्य हैं, का कहना है कि इनमें से कोई भी बात किसी व्यक्ति के वशीकरण को अमान्य नहीं करती है।

एक मजदूर और एक सज्जन व्यक्ति पर विचार करें। अपनी आजीविका के लिए, वह गंदी चीजों के संपर्क में आता है और अनजान महिलाओं के साथ घुलमिल जाता है।
चूँकि वह संबंधित प्रलोभनों का विरोध करने में असमर्थ हो सकता है, इसलिए शरिया उसे एक स्वर्गीय धुन के साथ चेतावनी देता है: "यदि आप महिलाओं को छूते हैं तो आप अपनी धार्मिक पवित्रता खो देंगे। यदि आप दूषित हो जाते हैं तो आपकी प्रार्थनाएँ अमान्य हो जाएँगी।" सामाजिक रीति-रिवाज़ और सामान्य नैतिकता के अनुसार, और बशर्ते कि वह पवित्र और विनम्र रहे, उसे अनजान महिलाओं के साथ घुलना-मिलना नहीं पड़ता और वह शायद ही कभी गंदा होता है। इसलिए, हनफ़ी स्कूल में, शरिया अपना अनुमेय पक्ष दिखाता है और सज्जन को संकोच से बचाता है: "सिर्फ़ उसे अपने हाथ से छू लेने से आपका वुज़ू अमान्य नहीं हो जाता। यदि आप अपने शरीर या कपड़ों से गंदगी नहीं हटा सकते हैं, तो तीन ग्राम से कम मात्रा में वुज़ू की अनुमति है। इसलिए, आपको अपना वुज़ू फिर से करने की ज़रूरत नहीं है।"

ये उदाहरण समुद्र की दो बूंदों के समान हैं। इस तरह से आंकलन करने का प्रयास करें
इमाम शाहरानी के मानदंडों के अनुसार शरिया अध्यादेशों का पालन करना।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, उस पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, जिसने आपके सभी सुंदर नामों की अभिव्यक्तियों के लिए एक व्यापक दर्पण बनकर, आपके गुणों और नामों की सुंदरता के लिए आपके प्रेम की रोशनी को मूर्त रूप दिया; आपका सबसे उत्तम और अद्भुत प्राणी, और आपका सबसे सुंदर प्राणी का नमूना है।

आपकी कला की पूर्णताएं और आपके शिलालेखों की सुन्दरता की सूचक, जिनके अस्तित्व में आपके शिलालेखों के प्रति आपके प्रेम की किरणें केन्द्रित थीं; आपकी कला की सुन्दरता का सबसे श्रेष्ठ संदेशवाहक, आपके शिलालेखों की सुन्दरता के प्रति अपनी प्रशंसा को सबसे ऊंचे स्वर में घोषित करने वाला, और आपकी कला की सम्पूर्णता की प्रशंसा करने में सबसे अद्वितीय, वि-

आपके प्रेम की सूक्ष्मता और आपकी कला की प्रशंसा की इच्छा उसके अस्तित्व में समाहित थी;
आपकी कृपा और कृपा से उसे सभी अच्छे नैतिक मूल्य प्राप्त थे।
आपकी कृपा से सभी सुंदर गुण, उसके भीतर एकत्रित हो गए
आपके अच्छे प्रेम और प्रशंसा के विभिन्न स्वरूप होने के कारण
आपके प्राणियों के आचार-विचार और उनके गुणों की सुन्दरता;
और जो सभी के लिए सबसे सटीक मानदंड और श्रेष्ठ मानक है
आप कुरान में सत्य और असत्य के अपने मानदंड का उल्लेख करते हैं-
तुम उन लोगों से प्रेम करो जो सदा भलाई करते हैं, धैर्य रखते हैं, ईमान रखते हैं।
हे ईश्वर-चेतनावान, जो लोग पश्चाताप और समर्पण के साथ आपकी ओर मुड़ते हैं,
और उन सभी वर्गों के लोग जिन्हें तूने प्रेम किया है और जिन्हें तूने प्रेम से सम्मानित किया है
तूने सत्य और असत्य की कसौटी पर खरा उतरा, इसलिए वह नेता बन गया
जो लोग तुझसे प्रेम करते हैं, उनका तू स्वामी है और जो लोग तुझसे प्रेम करते हैं, उनका तू स्वामी है।
उनके परिवार, साथियों और अनुयायियों पर आशीर्वाद और शांति। अमीन,
हे दयालुओं में सबसे दयालु, आपकी दया से।

पैगम्बर के साथियों पर परिशिष्ट

मौलाना जामी की तरह मैं कहता हूं:

हे ईश्वर के दूत!
काश! मैं भी गुफा के साथियों के कुत्ते की तरह तुम्हारे साथियों की संगति में
स्वर्ग में होता।
क्या यह सही है कि उनका कुत्ता स्वर्ग में है जबकि मैं नर्क में हूँ?
वह गुफा के साथियों का कुत्ता था, मैं आपके साथियों का कुत्ता हूँ।

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा करे।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफ़िरों के मुक़ाबले में दृढ़ और अटल हैं
और आपस में दयालू हैं... (48:29)

प्रश्न: कुछ कथन कहते हैं: "ऐसे समय में जब धार्मिक नवाचार व्यापक है और विधर्म का हमला हो रहा है, कुछ धर्मी ईश्वर-चेतन विश्वासी जो धर्म और जीवन के ईश्वर के नियमों के अनुरूप होने का प्रयास करते हैं, वे ईश्वर के प्रति सचेत नहीं हो सकते हैं।
साथियों के पद तक पहुँचें या उससे भी अधिक पुण्यवान बनें।" क्या ये
अगर हाँ, तो उनका क्या मतलब है?

जवाब: अहलू सुन्ना वल-जमाआ इस बात पर एकमत हैं कि,
ऐ नबियों, साथी सबसे नेक लोग हैं।151 इसलिए
ऐसे आख्यानों में से प्रामाणिक आख्यान विशेष गुणों का उल्लेख करते हैं [न कि पुण्य-

सामान्य रूप से सदाचार]। एक कम गुणी व्यक्ति अधिक गुणी व्यक्ति से बेहतर हो सकता है विशेष गुणों में। हालाँकि, सामान्य श्रेष्ठता के संबंध में, कोई भी नहीं कर सकता साथियों के बराबर या उनसे बेहतर, जिनके बारे में परमेश्वर ने (48:29 में) वर्णन किया है प्रशंसनीय गुण, और जिनके बारे में टोरा और सुसमाचार ने भविष्यवाणी की थी और अत्यधिक प्रशंसा करें। इसके असंख्य कारणों में से तीन इस प्रकार हैं:

पहला कारण: पैगम्बर की संगति और उनसे शिक्षा प्राप्त करना यह एक ऐसा अमृत है कि यदि कोई इसे एक मिनट के लिए भी ग्रहण कर ले तो उसे उतना ही ज्ञान प्राप्त करें जितना किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त होता है आध्यात्मिक यात्रा के वर्षों के बाद। संगति और पैगंबर की शिक्षा से व्यक्ति पैगंबर के रंग में रंग जाता है और उसकी कृपा प्राप्त होती है।
चिंतन। पैगम्बर का अनुसरण करना और महानतम प्रकाश से प्रकाशित होना पैगम्बरत्व की शिक्षा व्यक्ति को उच्चतम आध्यात्मिक स्तर तक पहुंचने में सक्षम बनाती है। वह एक महान राजा के सेवक के समान है, जो राजा की सेवा और पूर्ण निष्ठा के माध्यम से उस पद तक पहुँच जाता है, जो एक साधारण राजा नहीं प्राप्त कर सकता।

यहां तक कि सबसे महान संत भी उसी स्तर तक नहीं पहुंच सकते, जितना कि साथियों। जलालुद-दीन अस-सुयुति जैसे महान संत, जो आए थे सदियों बाद, जागते हुए कई बार ईश्वर के रसूल से बात की, साथियों की बराबरी नहीं कर सकते, क्योंकि बाद वाले ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशित थे।
मुहम्मद की नबी बनने की परंपरा को उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ साझा किया।
उन्हें एक पैगम्बर के रूप में मानते हैं। उनकी मृत्यु के बाद उन्हें देखने वाले संतों को केवल इसी नाम से सम्मानित किया जाता है
उसके संतत्व का प्रकाश, क्योंकि अब कोई पैगम्बरत्व नहीं है। इसे देखते हुए, ये दोनों ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के साथ संचार के प्रकार पैगंबर और संत होने के समान ही भिन्न हैं।

उनका वार्तालाप और संगति एक ज्ञानवर्धक अमृत थी कि जब एक जंगली और कठोर दिल वाले बेडौइन को, जिसने अपनी बेटी को जिंदा दफनाकर उसकी हत्या कर दी थी, एक घंटे के लिए उसका साथ दिया गया, वह इतना दयालु और कोमल हृदय बन जाएगा कि उसे फिर कभी
यहाँ तक कि चींटी को भी रौंद दिया। असभ्य और अज्ञानी व्यक्तियों को इस तरह से सम्मानित किया जाता है
केवल एक दिन ही भारत और चीन तक सत्य की शिक्षा देने और सभ्य लोगों को मानवीय पूर्णता की ओर मार्गदर्शन देने के लिए गया था।

दूसरा कारण: जैसा कि सत्ताईसवें वचन में इज्तिहाद की चर्चा में बताया गया है, अधिकांश सहाबा ने सर्वोच्च डिग्री प्राप्त की
मानव पूर्णता, क्योंकि इस्लाम ने अच्छाई और सच्चाई को उनकी पूरी सुंदरता में प्रकट किया है और बुराई और झूठ को उनकी पूरी कुरूपता में। इनका वास्तव में अनुभव किया गया। अच्छाई और बुराई, तथा सत्य और झूठ के बीच का अंतर बहुत बड़ा था। जैसे विश्वास और अविश्वास, तथा स्वर्ग और नरक के बीच का अंतर।

---

151 इब्न हिब्बन, अस-सहीह, 10:477; अल-हयासामी, मजमाउज़-ज़ावैद, 1:153।

साथियों की भावनाएँ बहुत ऊँची थीं, वे नैतिक गुणों के प्रति आसक्त थे और सम्मान और महिमा की ओर झुकाव रखते थे। इसलिए, वे कभी भी बुराई और स्वेच्छा से झूठ बोलना छोड़ दिया और मुसैलिमा झूठे के स्तर तक गिर गया, नमूना और झूठ, बुराई और असत्य का अग्रदूत जो अंततः एक वस्तु बन गया उपहास। ईश्वर के प्रियतम को सर्वोच्च उदाहरण, नमूना और मानवीय पूर्णता, सत्य, अधिकार और अच्छाई के संदेशवाहक, उनके शुद्ध चरित्र उन्हें अपना पूरा ज़ोर और प्रयास लगाकर उनका अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया।

कभी-कभी, उनके भयानक परिणामों और घृणित प्रभावों के कारण, लोग मानव सभ्यता के बाजार और शराब की दुकान में कुछ चीजों से दूर भागना मानव सामाजिक जीवन। साथ ही, लाभकारी उपचारों या चमकदार हीरों की तरह, कुछ चीजें बहुत मांग में हैं और हर किसी का ध्यान आकर्षित करती हैं उनके अच्छे प्रभाव और मूल्यवान परिणामों के कारण। हर कोई खरीदने की कोशिश करता है उन्हें। खुशी के युग के दौरान, अविश्वास, झूठ और बुराई जैसे लेख अनंत विनाश और पीड़ा जैसे परिणाम मिले और हंसी के पात्र बने झूठा मुसैलिमा की तरह। उच्च नैतिक गुणों और प्रशंसनीय गुणों से मोहित साथी उनसे घृणा में भाग गए। उनके शुद्ध और उच्च गुणों के साथ, मानो वे सबसे लाभदायक औषधियाँ और सबसे कीमती हीरे हों, वे सबसे अच्छे और सबसे उत्साही ग्राहक बनने का प्रयास करते थे। सत्य, अधिकार और विश्वास, जिसके परिणामस्वरूप शाश्वत सुख मिलता है और ईश्वर के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तरह शानदार फल प्राप्त होते हैं।

हालाँकि, उस समय के बाद, सच और झूठ के बीच की दूरी धीरे-धीरे कम हो गई, और अब वे एक ही दुकान में एक-दूसरे के बगल में खड़े हैं। एक साथ बेचा गया। सामाजिक नैतिकता भ्रष्ट हो गई है, और राजनीतिक प्रचार झूठ बोलने को बढ़ावा देता है और इसकी मांग को बढ़ाता है। जब झूठ की भयानक कुरूपता छिपी रहती है और सत्य की शानदार सुंदरता अदृश्य रहती है, तो कौन कर सकता है दावा करते हैं कि उनमें भी उतनी ही ताकत, दृढ़ता और सावधानी है जितनी कि न्याय, सत्यनिष्ठा और नैतिक उत्कृष्टता के मामलों में कौन हमारा साथी है? मैं अपने एक अनुभव से इसे स्पष्ट करूँगा।

एक बार मेरे मन में यह विचार आया कि असाधारण गुणों वाले संत (जैसे मुहयिद-दीन इब्नुल-अरबी) सहाबा की बराबरी नहीं कर सकते। सजदे के दौरान “मेरे प्रभु, सर्वोच्च की महिमा हो” इस वाक्यांश का पूरा अर्थ उजागर हो गया और इसकी सच्चाई मेरे सामने आ गयी। मैंने सोचा: "काश मैं एक निर्धारित प्रार्थना को उतनी ही पूर्णता से कर पाता जितना मैं करता हूँ उस वाक्यांश का अर्थ पता चला। यह एक साल की सामान्य पूजा से बेहतर होगा सद्गुण में।” मुझे यह समझ में आया कि यह अनुभव मुझे समझने के लिए मार्गदर्शन करने वाला था कोई व्यक्ति साथी की डिग्री तक क्यों नहीं पहुंच सकता है?

कुरान की रोशनी से उत्पन्न शक्तिशाली सामाजिक क्रांतियों में,
विपरीतताएं एक दूसरे से पूरी तरह से अलग थीं। बुराई (अपने सभी अंधेरे, विवरण और परिणामों के साथ)
और अच्छाई और पूर्णता (अपने सभी अंधेरे, विवरणों और परिणामों के साथ)
रोशनी और परिणाम) आमने-सामने खड़े थे। इस प्रकार उस रोमांचक, उत्तेजक समय में,
सस्वर पाठ, स्तुति और महिमा-गान के शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ के सभी स्तर अपनी पूरी ताज़गी और
मौलिकता में प्रकट हुए। इससे हलचल मच गई
और उन लोगों की भावनाओं और आध्यात्मिक क्षमताओं को जागृत किया जो पूरी तरह से इसका अनुभव कर रहे थे
इस शक्तिशाली क्रांति के सभी चरणों, और यहां तक कि कल्पना और जैसे इंद्रियों का कारण बना
पूरी तरह से जागने, इन अर्थों को प्राप्त करने और अवशोषित करने की कल्पना करना
उनकी अपनी धारणा.

इस प्रकार साथियों, जिनकी सारी इंद्रियां जागृत हो गई थीं और जिनकी सारी क्षमताएं जागृत हो गई थीं
सतर्क, सभी रोशनी युक्त धन्य शब्दों और वाक्यांशों का उच्चारण किया
उनके सभी अर्थों में विश्वास और महिमा, और सभी के साथ उनका हिस्सा प्राप्त किया
समय के साथ, लोगों ने धीरे-धीरे वह स्वाद और आनंद खो दिया जो वे चाहते थे
इन वाक्यांशों से जो कुछ प्राप्त हुआ, वह परिचितता और असंवेदनशीलता के कारण उनकी क्षमताएँ सो गईं
और उनकी इंद्रियाँ असावधान हो गईं।
उन फलों में कुछ नमी (सतहीपन) होती है। केवल एक चिंतनशील और चिंतनशील ऑपरेशन ही हमारी
क्षमताओं और इंद्रियों को उनकी पूर्व स्थिति में वापस ला सकता है।
यही कारण है कि लोग चालीस दिन या चालीस साल में भी वह हासिल नहीं कर पाते जो एक इंसान चालीस दिन या चालीस साल में कर सकता है।
साथी चालीस मिनट में पहुंच गया।

तीसरा कारण: जैसा कि बारहवें, चौबीसवें और छठे अध्याय में बताया गया है।
पच्चीसवाँ शब्द, संतत्व की तुलना में, पैगंबरत्व सूर्य की तरह है
दर्पण में इसकी छवियों के संबंध में। इस प्रकार, हालांकि बहुत बेहतर पैगंबर
संतत्व के लिए, साथी, पैगंबर के सेवक और उस सूर्य के चारों ओर के ग्रह, संतों से उसी हद तक श्रेष्ठ हैं।

यदि कोई संत पूर्ण सत्यनिष्ठा, निष्ठा और उत्तराधिकार के स्तर तक पहुंच जाता है
पैगम्बर (साथियों से संबंधित संतत्व का सर्वोच्च पद),
वे साथी की डिग्री तक नहीं पहुंच सकते। मैं कई में से तीन को समझाऊंगा
इस तीसरे कारण के पहलू:

पहला पहलू: इज्तिहाद (निष्कर्ष) में सहाबा की बराबरी कोई नहीं कर सकता
अल्लाह के आदेश और कुरान और सुन्नत से वह जो मंजूर करता है)
उस समय की शक्तिशाली दैवीय क्रांति ने सीखने और समझने की कोशिश की
परमेश्वर की आज्ञाएँ और वे बातें जिनसे वह सहमत है। सभी मन एक थे।
दिव्य अध्यादेशों को निकालने पर ध्यान केंद्रित किया, और सभी दिलों ने आश्चर्यचकित किया
उनके रब उनसे क्या चाहते थे। सभी घटनाएँ और परिस्थितियाँ उन्हें प्रेरित करती हैं
लोगों को उस लक्ष्य की ओर ले जाना। बातचीत, चर्चा और कहानियाँ सिखाई गईं

ईश्वरीय आदेश और वह अपने सेवकों में क्या स्वीकार करता है। इन सबने साथियों की क्षमताओं को पूर्ण किया और उनके मन को प्रबुद्ध किया।

इसके अलावा, चूंकि कटौती करने और इज्तिहाद करने की उनकी क्षमताएं
हम माचिस की तरह जलने के लिए तैयार थे, भले ही हमारे पास उनकी तरह की बुद्धिमत्ता हो
और क्षमता का वह स्तर हम दस या सौ साल में भी हासिल नहीं कर सकते
कटौती और इज्तिहाद वे एक दिन या एक महीने में हासिल कर लेते थे। वर्तमान में, लोग
शाश्वत सुख के स्थान पर सांसारिक सुख पर विचार करें और इसलिए ध्यान केंद्रित करें
अन्य उद्देश्यों पर। चूँकि जीविका चलाने के लिए संघर्ष करना और ईश्वर पर निर्भर न होना
जहाँ एक ओर लोगों की आत्मा भ्रमित और स्तब्ध है, वहीं दूसरी ओर प्रकृतिवादी और भौतिकवादी दर्शन ने बुद्धि को अंधा बना दिया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक वातावरण लोगों के मन और इज्तिहाद करने की क्षमताओं को केवल बिखेरता और भ्रमित करता है ।
सत्ताईसवें वचन में मैंने बताया था कि कोई भी आधुनिक व्यक्ति, भले ही
सुफ़यान इब्न उययना के समान बुद्धि होने के कारण, सौ में प्राप्त किया जा सकता है
सुफियान को दस साल में जो हासिल हुआ, वह उसने दस साल में हासिल किया।

दूसरा पहलू: कोई भी संत सहचरों के पद तक नहीं पहुंच सकता।
सर्वशक्तिमान ईश्वर से निकटता, जो हर चीज़ से ज़्यादा हमारे करीब है, जबकि हम
उससे अनंत दूरी पर हैं। दो तरीकों से उसकी निकटता प्राप्त की जा सकती है।
पहला तरीका है परमेश्वर की कृपा के द्वारा व्यक्ति को उसके निकट लाना और
हम उनकी निकटता का एहसास कर सकते हैं। संगति और उत्तराधिकार के माध्यम से
पैगम्बर मुहम्मद के साथियों को इस प्रकार की निकटता प्राप्त थी।
दूसरा तरीका है उच्च पदों पर निरंतर पदोन्नति, जब तक सम्मान न मिल जाए
भगवान के करीब होने के साथ। अधिकांश संत इस मार्ग का अनुसरण करते हैं और अपनी आंतरिक दुनिया और बाहरी दुनिया के माध्यम से एक लंबी आध्यात्मिक यात्रा करते हैं।

पहला तरीका ईश्वर का उपहार है और इसलिए यह किसी के विवेक पर निर्भर नहीं करता है।
ऐसी निकटता दयालु के आकर्षण और प्रयास के माध्यम से महसूस की जाती है।
यह मार्ग छोटा है, किन्तु अत्यन्त श्रेष्ठ और सुदृढ़ है।
पूरी तरह से शुद्ध और अस्पष्टता से मुक्त। दूसरा लंबा है, किसी की अपनी पसंद पर निर्भर करता है
प्रयास, और अस्पष्टता है। भले ही इसका अनुसरण करने वाला व्यक्ति संपन्न हो
चमत्कार जैसे चमत्कार, निकटता प्राप्त करने में यह तरीका पहले वाले से नीचा है
सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए। इस उदाहरण पर विचार करें: कोई भी व्यक्ति कल का अनुभव कर सकता है
एक बार फिर दो तरीकों से। समय के प्रवाह का अनुसरण किए बिना, कोई व्यक्ति एक कदम आगे बढ़ता है
पवित्र आध्यात्मिक शक्ति को एक ऐसी स्थिति में ले जाना जहाँ से सारा समय एक ही नज़र आता है
या, समय के प्रवाह के अनुसार, व्यक्ति एक पूरा वर्ष जीता है और उस बिंदु तक पहुँचता है।
अगले साल भी उसी दिन। इसके बावजूद, कोई कल को सुरक्षित नहीं रख सकता या उसे गुज़रने से नहीं रोक सकता।

इसी तरह, धार्मिक आदेशों के बाह्य अवलोकन से लेकर उनके सत्य की प्राप्ति तक दो तरीकों से पहुंचा जा सकता है।
धार्मिक आदेशों की मध्यवर्ती दुनिया में, व्यक्ति सत्य के आकर्षण के आगे झुक जाता है

और इसे सीधे इसके बाह्य पहलू में पाता है। [दूसरे शब्दों में, व्यक्ति बाह्य और आंतरिक को एक ही एकता में संयुक्त देखता है।] या, व्यक्ति को दीक्षा दी जाती है।
आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए और लगातार उच्च पदों पर पदोन्नत होते हुए। लेकिन वे आत्म-विनाश और अपने शारीरिक, दुष्ट-आदेशों को मारने में कितने भी सफल क्यों न हों
आत्माएं, संत साथियों तक नहीं पहुंच सकते, जो शुद्ध हो चुके थे, परिष्कृत हो चुके थे
आत्माओं, और सभी प्रकार की पूजा और प्रशंसा के साथ सम्मानित किया गया और
आत्म-तत्व की अनेक जन्मजात शक्तियों के साथ धन्यवाद।
जो संत अपनी आत्म-पहचान को पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं, वे सरल और एक हो जाते हैं
आयामी.

तीसरा पहलू: कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर सहाबा तक नहीं पहुंच सकता,
कर्मों के लिए पुरस्कार और परलोक से संबंधित पुण्य। एक सैनिक जो एक घंटे तक खतरनाक परिस्थितियों में किसी खतरनाक स्थान की रखवाली करता है, उसे एक वर्ष की पूजा का पुण्य प्राप्त हो सकता है, और एक सैनिक जो एक मिनट में शहादत प्राप्त करता है
एक प्रकार के संतत्व का पद प्राप्त कर सकते हैं, जिसे अन्य लोग केवल निम्न स्तर पर पहुंचने के बाद ही प्राप्त कर सकते हैं।
कम से कम चालीस दिन। इस्लाम की स्थापना, प्रसार में साथियों की सेवाएं
कुरान की आज्ञाओं का उल्लंघन करना और इस्लाम के लिए दुनिया को चुनौती देना
इतना पुण्य और फलदायी कि अन्य लोग एक वर्ष में उतना पुण्य नहीं प्राप्त कर सकते
उन्होंने एक मिनट में जो हासिल किया है। यह भी कहा जा सकता है कि उनका हर मिनट
उस पवित्र सेवा में शहीद हुए सैनिक के मिनट के बराबर है।
उनका एक घंटा खतरनाक परिस्थितियों में आत्म-बलिदान करने वाले सैनिक के पहरे के घंटे जैसा है। भले ही यह एक छोटा सा कार्य लगता है, लेकिन यह बेहद मूल्यवान है
और मेधावी.

चूँकि सहाबा इस्लाम की स्थापना और कुरान की रोशनी को फैलाने में पहली पंक्ति थे, इसलिए "कारण वही है जो कारण है" के नियम के अनुसार
वे सभी मुसलमानों के पुरस्कारों में हिस्सा लेते हैं, चाहे समय या स्थान कुछ भी हो। मुसलमान
उन पर ईश्वर की शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करते हुए कहें: “हे ईश्वर, आशीर्वाद प्रदान करें
और हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और साथियों पर शांति हो," जिससे यह पता चलता है कि साथी सभी मुसलमानों के पुरस्कारों में साझा करते हैं [मुसलमानों के पुरस्कारों में कोई कमी किए बिना]।

जिस प्रकार एक पेड़ की जड़ों में एक तुच्छ विशेषता एक महान गुण ग्रहण कर लेती है
इसकी शाखाएँ बनती हैं और यह सबसे बड़ी शाखा से बड़ी होती है, ठीक वैसे ही जैसे एक छोटी शाखा
शुरुआत में राशि एक बड़ा द्रव्यमान बन जाती है, और बस एक छोटे से बिंदु के रूप में
केंद्र परिधि में एक विस्तृत कोण बनाता है, साथियों के कुछ
उनके कर्मों की संख्या में वृद्धि हुई और उनकी छोटी-सी सेवा ने बहुत बड़ा परिणाम प्राप्त किया। उन्होंने इस्लाम के पवित्र, शानदार वृक्ष की जड़ें बनाईं,
मुस्लिम समुदाय के नेताओं में से एक और अपनी परंपराओं को स्थापित करने वाले पहले व्यक्ति थे, और पैगंबर के सूर्य के केंद्र के सबसे निकट थे और

सत्य के दीपक, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। केवल एक और साथी उन तक पहुंच सकते हैं.

> हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, जिन्होंने कहा: "मेरे साथी सितारों की तरह हैं; उनमें से तुम जिसका भी अनुसरण करोगे, सही मार्ग पर चलेंगे।152 सभी युगों में सर्वश्रेष्ठ युग मेरा है।"153—और आगे उनके परिवार और साथियों.
>
> तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

प्रश्न: कुछ लोग तर्क देते हैं: "साथियों ने परमेश्वर का दर्शन देखा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर विश्वास किया और हम ईमान लाए। उसे देखे बिना, और इसलिए हमारा विश्वास और भी मजबूत होना चाहिए। इसके अलावा, वहाँ भी ये हमारे विश्वास की मजबूती को दर्शाने वाले आख्यान हैं।"

उत्तर: ऐसे समय में जब दुनिया का सार्वजनिक दृष्टिकोण सत्य का विरोध कर रहा था इस्लाम के सहाबा ने ईश्वर के दूत को केवल उसके प्रत्यक्ष रूप में ही देखा। उनमें से कई लोगों ने एक भी चमत्कार देखे बिना ही विश्वास कर लिया। फिर भी उनका विश्वास इतना दृढ़ था कि विरोधी विचारों का कोई असर नहीं हुआ। और आप अपने विश्वास की तुलना उनके विश्वास से करें?

यद्यपि मुस्लिम जगत और इस्लाम के भव्य स्वरूप के बारे में जनता का दृष्टिकोण इतिहास आपके विश्वास के लिए एक मजबूत सबूत और समर्थन है, और यद्यपि आपने ईश्वर के दूत को उनके सामूहिक व्यक्तित्व के साथ देखा है जो सभी से मिलकर बना है इस्लाम की रोशनी और कुरान की सच्चाईयों से भरा हुआ और जितने लोगों द्वारा घिरा हुआ है हज़ारों चमत्कार, अपने प्रत्यक्ष मानवीय रूप और चरित्र से नहीं, जो उनकी पैगम्बरियत के धन्य सार्वभौमिक वृक्ष का बीज था, एक शब्द किसी यूरोपीय दार्शनिक का यह कथन आपके मन में संदेह पैदा कर सकता है और आपके विश्वास में डगमगाहट पैदा कर सकता है। तुम्हारा विश्वास उन साथियों के विश्वास के बराबर कैसे हो सकता है, जो कभी डगमगाये नहीं अविश्वास और बहुदेववाद की ताकतों से पूर्ण विरोध का सामना करना, उनमें दार्शनिक, ईसाई और यहूदी कौन हैं?

साथ ही, आपका कमजोर और धुंधला विश्वास जो आपको बना भी नहीं सकता, वह कैसे सफल हो सकता है? धार्मिक अनिवार्य कर्तव्यों को नियमित रूप से और सही ढंग से पूरा करने की तुलना साथियों की मजबूत धर्मपरायणता और पूर्ण धार्मिकता से की जा सकती है उनके विश्वास में क्या उत्पन्न हुआ और अपनी ताकत दिखाई? पैगंबर की परंपरा के लिए: "जो मुझे देखे बिना अंत समय में विश्वास करता है उसका विश्वास है मूल्य में अधिक,"154 यह विशेष गुणों से संबंधित है और कुछ से संबंधित है यहाँ हम सामान्य श्रेष्ठता और बहुमत पर चर्चा कर रहे हैं।

---

152 अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 6:297., 10:477.

153 अल-बुखारी, "फदैलु अशबी'न-नबीय" 1; एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 45.

154 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद,5:248, 257, 264।

प्रश्न: संत और सिद्ध लोग आमतौर पर संसार का त्याग कर देते हैं। एक परम्परा कहती है कि संसार से प्रेम करना ही सभी पापों और दोषों की शुरुआत है।155 हालाँकि, साथी, भगवान उनसे प्रसन्न हों, इसमें लिप्त रहे दुनिया में इस हद तक कि कुछ लोगों ने सांसारिक लोगों की तुलना में इसका अधिक आनंद लिया उस समय की बात है। आप यह कैसे कह सकते हैं कि महानतम संत उस समय की बात नहीं कर सकते। सबसे निम्न स्तर का साथी?

उत्तर: जैसा कि रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट रूप से तर्क दिया गया है , [156] प्यार करना दुनिया के वे पहलू जो परलोक की ओर देखते हैं और ईश्वर के नामों को प्रकट करते हैं, वे हैं पूर्णता का साधन। जितना अधिक कोई सराहना और प्रेम करने में गहरा होगा संसार के इन दो पहलुओं में से गहरा पहलू उपासना और ज्ञान का है। ईश्वर। साथियों ने इन दो पहलुओं पर ध्यान दिया। दुनिया को परलोक का कृषि योग्य क्षेत्र मानते हुए, उन्होंने इसमें बीज बोये। वे सभी प्राणियों को परलोक में उगने वाले दर्पण के रूप में देखते थे। ईश्वरीय नामों का जाप करें और उनका प्रेमपूर्वक पालन करें। संसार अपने नश्वर रूप में दुष्ट है वह पहलू जो हमारी पशुवत भूख को देखता है।

प्रश्न: धार्मिक आध्यात्मिक आदेश सत्य के मार्ग हैं। कुछ लोग दावा करते हैं कि नक्शबंदी सिलसिला सबसे प्रसिद्ध, सबसे ऊंचा और सबसे व्यापक तरीका है । कुछ प्रेरित नक्शबंदी नेता इसकी नींव का वर्णन इस प्रकार करते हैं: नक्शबंदी के अनुसार चार चीजों का त्याग करना चाहिए: संसार, परलोक (इसे शारीरिक आत्मा के नाम पर मुख्य उद्देश्य के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए), या बनना, और त्याग का विचार (आत्म-गर्व में न पड़ने के लिए) क्या इसका मतलब यह है कि ईश्वर का सच्चा ज्ञान और मानव पूर्णता ईश्वर के अलावा अन्य सभी चीजों को त्यागने से प्राप्त की जा सकती है?

उत्तर: यदि हम एक हृदय से अधिक कुछ नहीं होते, तो हमें त्याग करना पड़ता। भगवान के अलावा बाकी सब कुछ। हमें अपनी चिंता भी छोड़नी होगी हम ईश्वर के नाम और गुणों का स्मरण करें और स्वयं को पूर्णतः उनके सार को समर्पित कर दें। हालाँकि, वास्तविकता में, हमारे पास कई इंद्रियाँ और क्षमताएँ हैं (जैसे, बुद्धि, आत्मा, प्राण और अंतरतम), जिनमें से प्रत्येक के विशेष कर्तव्य हैं और कार्य करता है। परिपूर्ण लोग वे हैं जो अपनी प्रत्येक इंद्रिय और क्षमता का सही तरीके से उपयोग करते हैं विशेष प्रकार की उपासना करते हुए, सत्य तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। अपने हृदय को सेनापति के रूप में तथा अन्य शक्तियों को सैनिकों के रूप में सेवा प्रदान करते हुए, वे साथियों की तरह वीरतापूर्वक एक व्यापक क्षेत्र में तथा अनेक प्रकार से सत्य की ओर बढ़ते हैं।
अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने सैनिकों को छोड़ना और अपने दम पर आगे बढ़ना, दिल के लिए दुख का कारण है, गर्व का नहीं।

---

155 अल-बुखारी, तारिखु'एल-कबीर, 3:472; अल-बहाकी, शुअबु'ल-ईमान, 7:323, 338।

[156] 32वें शब्द के दूसरे और तीसरे स्टेशन में ।

प्रश्न: कुछ लोग साथियों से श्रेष्ठ होने का दावा क्यों करते हैं?
क्या इस तरह के दावे पर चर्चा होनी चाहिए?
महान मुजतहिदों के साथ समानता का दावा कैसे उठता है?

उत्तर: दो समूहों के लोगों ने ये दावे सामने रखे। एक समूह ने कहा कि
इसमें कुछ शुद्ध हृदय वाले धार्मिक विद्वान और धर्मपरायण लोग शामिल होते हैं, जो कुछ परंपराओं को देखकर, प्रोत्साहित करने और उत्साहित करने के लिए ऐसी चर्चाएँ शुरू करते हैं
नेक और समर्पित मुसलमान। हमें उनसे कुछ नहीं कहना है। वैसे भी,
वे कम हैं और उन्हें मामले की सच्चाई का पता जल्दी चल जाता है।
इस समूह में बहुत ही घमंडी और खतरनाक लोग शामिल हैं जो इस तरह की अफवाहों को फैलाना चाहते हैं।
इस तरह की समानता का दावा करके कानूनी स्कूलों को नकारना, और बढ़ावा देना
साथियों के साथ समानता का दावा करके उनके पाखंड को समाप्त कर दिया।

पहली बात तो यह कि ऐसे गुमराह लोग भोग-विलास के आदी होते हैं।
धार्मिक कर्तव्यों की उपेक्षा (जो अपव्यय को मना करती है), वे तर्क देते हैं:
"ये मामले गौण हैं और इज्तिहाद पर निर्भर हैं। कानूनी स्कूल उनके बारे में असहमत हैं। चूँकि मुजतहिद हमारे जैसे लोग थे, और इसलिए झूठे थे, इसलिए हम इज्तिहाद कर सकते हैं और जिस तरह से चाहें, पूजा कर सकते हैं। क्यों
क्या हमें शुरुआती मुजतहिदों का अनुसरण करना चाहिए? शैतान इसी तरह लोगों को बाहर ले जाता है
कानूनी स्कूलों की सीमाओं के बारे में। यह देखने के लिए कि उनका दावा कितना निराधार है, देखें
सत्ताईसवाँ वचन.

दूसरा, वे गुमराह लोग न केवल मुजतहिदों के साथ समानता का दावा करते हैं, जो केवल धर्म के सैद्धांतिक मामलों से ही सरोकार रखते हैं,
लेकिन वे अपने अंतिम लक्ष्य का पीछा करते हैं: इस्लाम के बुनियादी दायित्वों को त्यागना और बदलना। मुजतहिद केवल सैद्धांतिक मामलों और माध्यमिक, गैर-श्रेणीबद्ध मुद्दों पर ही शासन कर सकते हैं। लेकिन ये गुमराह लोग, जो कानूनी नियमों का पालन करने से इनकार करते हैं
स्कूल, धर्म के मूल दायित्वों में अपने विचारों को मिलाना चाहते हैं,
अपरिवर्तनीय मामलों में परिवर्तन करें और इस्लाम के निश्चित स्तंभों का विरोध करें।
वे साथियों, धारकों और समर्थकों की आलोचना करने के लिए मजबूर महसूस करते हैं
इस्लाम के बुनियादी दायित्वों का कोई भी व्यक्ति, केवल ये दिखने में इंसान ही नहीं,
लेकिन महानतम संत भी, जो सच्चे मानवों में सबसे उत्तम हैं,
यहाँ तक कि सबसे कम गुणी साथी के बराबर भी हो सकता है।

> हे ईश्वर! अपने रसूल पर कृपा और शांति प्रदान कर, जिन्होंने कहा: "
> मेरे साथियों को न डाँटना। यदि तुममें से किसी ने इसके बराबर सोना खर्च किया
> उहुद पर्वत पर (ईश्वर के मार्ग में) तुम (पुण्य) प्राप्त नहीं कर सके
> मेरे साथियों में से एक मुट्ठी भर।"157 अल्लाह के रसूल ने सच कहा।
>
> तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

---

157 अल-ब:उखारी, "फदैलु अशबी'न-नबीय" 5; मुस्लिम, "फदैलूस-सहाबा" 221, 222.

अट्ठाईसवाँ शब्द

अट्ठाईसवाँ शब्द

स्वर्ग के बारे में सवालों के जवाब

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

उन लोगों को शुभ सूचना दे दो जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए।
उनके लिए बाग़ हैं जिनमें से नदियां बहती हैं।
जब उन्हें उसमें से फल दिया जाता है तो वे कहते हैं, "यह वही है जो हमें पहले दिया गया था,"
क्योंकि यह उन्हें सदृश दिया गया है।
इसके अलावा, उनके लिए पति-पत्नी हमेशा के लिए शुद्ध हो जाते हैं, और उसमें
वे सदैव रहेंगे। (2:25)

B नीचे स्वर्ग के बारे में सवालों के संक्षिप्त जवाब दिए गए हैं , जो अनंत है। कुरान का वर्णन, जो स्वर्ग से अधिक सुंदर है, उसकी हूरों से अधिक रमणीय है, और अधिक मधुर है इसके झरनों के सुखद जल से बढ़कर, इसमें जोड़ने के लिए कुछ भी नहीं है। केवल कुछ कदम बताएंगे ताकि ऐसे शानदार, शाश्वत, ऊंचे और सुन्दर श्लोक आसानी से समझ में आ जाते हैं, तथा कुछ बारीक बातें स्पष्ट हो जाती हैं, कुरान के उस स्वर्ग के फूलों के समान, पाँच महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर.

प्रश्न: दोषपूर्ण, परिवर्तनशील, अस्थिर और पीड़ा से ग्रस्त शरीर का अनंत काल और स्वर्ग से क्या संबंध है? आत्मा का उन्नत होना सुख-सुविधाएँ पर्याप्त होनी चाहिए। शारीरिक पुनरुत्थान क्यों होना चाहिए शारीरिक सुख?

उत्तर: मिट्टी, अपने अंधेरे और घनत्व के बावजूद जब इसकी तुलना पृथ्वी से की जाती है जल, वायु और प्रकाश, दिव्य कला के सभी कार्यों का साधन और स्रोत है।

इसलिए यह अन्य तत्वों की तुलना में अर्थ में श्रेष्ठ है।
इसी प्रकार, मानव आत्म या आत्मा, अपने घनत्व के बावजूद, अपने अस्तित्व के कारण
व्यापक और बशर्ते कि इसे शुद्ध किया जाए, किसी प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त होती है
अन्य सभी इंद्रियों और क्षमताओं पर। इसी तरह, भौतिक शरीर सबसे अधिक है
दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों के लिए व्यापक और समृद्ध दर्पण, और
सामग्री को तौलने और मापने के लिए उपकरणों से सुसज्जित किया गया है
सभी दिव्य खजाने। उदाहरण के लिए, यदि जीभ की स्वाद की भावना नहीं होती
भोजन और पेय की विविधता के रूप में कई उपायों की उत्पत्ति, यह नहीं हो सकता
उन्हें अनुभव करना, पहचानना या मापना। इसके अलावा, शरीर में अधिकांश चीजों को अनुभव करने और पहचानने के लिए आवश्यक उपकरण भी मौजूद होते हैं
दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ, साथ ही उन्हें अनुभव करने की क्षमताएँ
सबसे विविध और असीम रूप से अलग सुख।

ब्रह्माण्ड का आचरण और मानवता की व्यापक प्रकृति दर्शाती है
ब्रह्माण्ड का निर्माता ब्रह्माण्ड के माध्यम से यह चाहता है कि
उसकी दया के सभी भण्डारों और उसके सभी नामों के प्रकटीकरणों को जाना, और
हमें उसकी सभी अच्छाइयों का अनुभव कराने के लिए। इसे देखते हुए, अनन्त की दुनिया के रूप में
खुशी एक विशाल कुंड है जिसमें ब्रह्माण्ड की बाढ़ बहती है,
ब्रह्माण्ड के करघे द्वारा उत्पादित वस्तुओं का विशाल प्रदर्शन, तथा इस (भौतिक) जगत के क्षेत्र में उत्पादित फसलों का अनन्त भण्डार, यह सब कुछ दिखाएगा।
कुछ हद तक ब्रह्मांड जैसा दिखता है। यह अपने सभी शारीरिक और
आध्यात्मिक आधार। तो, सर्व-बुद्धिमान निर्माता, सर्व-दयालु,
सर्व-न्यायी एक, मजदूरी के रूप में प्रत्येक शारीरिक अंग के लिए विशेष सुख देगा
अपने कर्तव्य, सेवा और पूजा के लिए। अन्यथा कार्य करना उनकी बुद्धि, न्याय और करुणा के बिल्कुल विपरीत होगा।

प्रश्न: एक जीवित शरीर निरंतर निर्माण की अवस्था में रहता है और
विकृति, और इसलिए विघटन के अधीन है और गैर-शाश्वत है।
और शराब पीना व्यक्ति को अमर बनाता है; यौन संबंध उसे अमर बनाते हैं
प्रजातियाँ। ये इस दुनिया में जीवन के लिए मौलिक हैं, लेकिन अप्रासंगिक हैं और
अनंत काल की दुनिया में अनावश्यक। यह देखते हुए, उन्हें क्यों रखा गया है
स्वर्ग के सबसे बड़े सुखों में कौन-सा सुख शामिल है?

उत्तर: एक जीवित शरीर का क्षय होता है और वह मर जाता है क्योंकि संतुलन बिगड़ जाता है। इसे बनाए रखने के लिए क्या चाहिए और क्या लेना चाहिए, इसके बीच का अंतर गड़बड़ा जाता है। बचपन से लेकर शारीरिक परिपक्वता की उम्र तक, यह जितना बाहर निकालता है, उससे ज़्यादा लेता है और
स्वस्थ बढ़ता है। इसके बाद, यह आमतौर पर संतुलित तरीके से अपनी ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाता और अंततः मर जाता है। हालाँकि, अनंत काल की दुनिया में, शरीर के कण स्थिर रहते हैं और विघटन और पुनः निर्माण से प्रतिरक्षित होते हैं,
या शरीर की आय और खपत के बीच संतुलन बना रहता है

stant.158 निरंतर चक्रों में घूमते रहने की तरह, एक जीवित शरीर अनंत काल प्राप्त करता है
साथ ही सुख के लिए शारीरिक जीवन के कारखाने का निरंतर संचालन। इस दुनिया में, खाने, पीने और वैवाहिक यौन संबंध आनंद से उत्पन्न होते हैं।
एक ज़रूरत है और एक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट (और श्रेष्ठ) की एक महान विविधता
उनमें सुख-सुविधाएं निहित हैं, जो उद्देश्य की पूर्ति के लिए तत्काल पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त होती हैं।
चूँकि इस बीमारियों की दुनिया में, भोजन और विवाह कई अद्भुत और विभिन्न सुखों की ओर ले जाते हैं, निश्चित रूप से, स्वर्ग, खुशी और
आनंद, इन सुखों को उनके सबसे ऊंचे रूप में समाहित करेगा।
उनके लिए सांसारिक जीवन में किए गए कर्तव्यों के बदले में पारिश्रमिक सुख के रूप में है।
उनके द्वारा दुनिया और यहाँ उनके लिए महसूस की गई आवश्यकता एक सुखद और
दूसरी दुनिया की भूख से, वे एक सर्वव्यापी में तब्दील हो जाएंगे,
आनन्द का जीवित स्रोत जो स्वर्ग और अनंत काल के लिए उपयुक्त है।

इसके अनुसार: इस संसार का जीवन एक मनोरंजन और खेल मात्र है, परन्तु
परलोक का निवास-यह वास्तव में जीवित है (29:64), इस दुनिया में सभी निर्जीव और अचेतन पदार्थ और वस्तुएं जीवित और चेतन हैं
दूसरी दुनिया। जैसे यहाँ के लोग और जानवर, वहाँ के पेड़ और पत्थर,
क्रमशः, आज्ञाओं को समझें और उनका पालन करें। यदि आप किसी पेड़ से कहें कि वह आपको लाए
फलां फल है, तो वह वैसा ही करेगा। पत्थर को कहो कि आ जाओ, तो वह आ जाएगा।
चूँकि पत्थर और पेड़ ऐसे ऊँचे रूप धारण कर लेंगे, इसलिए खाने-पीने और वैवाहिक संबंधों के लिए ऐसा रूप धारण करना आवश्यक हो जाएगा जो उनके सांसारिक रूपों से उसी हद तक श्रेष्ठ हो, जिस हद तक स्वर्ग इस रूप से श्रेष्ठ है।
इसमें उनकी शारीरिक वास्तविकताओं को संरक्षित करना भी शामिल है।

प्रश्न: एक परंपरा कहती है कि "एक व्यक्ति उसी के साथ होता है जिसके साथ वह रहता है
प्यार करता है,"159 और इसलिए दोस्त स्वर्ग में एक साथ होंगे। इस प्रकार एक साधारण बेडौइन
जो एक मिनट की संगति में ईश्वर के दूत के प्रति गहरा प्रेम महसूस करता है
उसके साथ स्वर्ग में भी होना चाहिए। लेकिन एक साधारण व्यक्ति कैसे उसके साथ स्वर्ग में रह सकता है?
खानाबदोश की रोशनी और इनाम उसे एक ही स्थान साझा करने का कारण बनता है
ईश्वर के रसूल, जिनकी रोशनी और सवाब असीम है?

उत्तर: मैं इस महान सत्य को एक तुलना के माध्यम से इंगित करूँगा। एक भव्य व्यक्ति ने एक विशाल भोज और एक समृद्ध रूप से सजाए गए समारोह की तैयारी की।
बेहद खूबसूरत और शानदार बगीचा। इसमें सभी स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ शामिल थे

---

[158] इस संसार में मानव और पशु शरीर गेस्टहाउस, बैरक या कणों के लिए स्कूल की तरह हैं।
निर्जीव कण उनमें प्रवेश करते हैं, शाश्वत जगत के लिए कण बनने के योग्य बन जाते हैं, और फिर
उन्हें छोड़ दो। हालाँकि, परलोक में, के अनुसार: परलोक का निवास - यह सब जीवित है
वास्तव में (29:64), जीवन का प्रकाश हर चीज़ को घेरे हुए है। इसके कणों को बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है
उन्हें भी वही यात्रा करनी होगी और वही प्रशिक्षण लेना होगा जो इस संसार में कणों या परमाणुओं को करना पड़ता है।

159 अल-बुखारी, "अदब" 96; मुस्लिम, "बीरर" 165.

स्वाद का अनुभव कर सकते हैं, सभी सुंदर चीजें जो दृष्टि को प्रसन्न करती हैं, सभी आश्चर्य जो कल्पना को खुश करना, इत्यादि। हर वो चीज़ जो संतुष्टि और प्रसन्नता दे बाह्य और आंतरिक इंद्रियाँ मौजूद थीं। दो दोस्त भोज में गए और उसी मंडप में एक मेज पर बैठे। एक की रुचि सीमित थी और इसलिए उसे बहुत कम आनंद मिला। उसकी कमज़ोर दृष्टि और सूंघने की अक्षमता ने उसे रोक दिया अद्भुत कलाओं को समझने या चमत्कारों को समझने से। वह वह अपनी क्षमता के अनुसार ही लाभ उठा सकता था, जो कि नगण्य था। लेकिन दूसरे व्यक्ति ने अपनी बाह्य और आंतरिक इंद्रियों, बुद्धि, दिल, और सभी क्षमताओं और भावनाओं को सर्वोच्च डिग्री तक। इसलिए वह कर सकता था उस उत्कृष्ट उद्यान की सभी सूक्ष्मताओं, सुन्दरताओं, आश्चर्यों और उत्तम चीजों को देखें, अनुभव करें और उनसे आनंद प्राप्त करें।

हमारी भ्रमित, पीड़ादायक और संकीर्ण दुनिया में ऐसा ही है। महानतम और निम्नतम के बीच अनंत दूरी है जो एक दूसरे के बगल में मौजूद हैं तो, स्वर्ग में, खुशी और अनंत काल का निवास, जहाँ दोस्त साथ रहेंगे, यह अधिक उचित है कि प्रत्येक को उसका हिस्सा मिले दयालु, दयावान की तालिका डिग्री के अनुसार उसकी क्षमता के अनुसार। भले ही वे अलग-अलग बगीचों में या स्वर्ग के अलग-अलग "मंजिलों" पर हों, वे मिल सकेंगे, क्योंकि स्वर्ग के आठ स्तर एक दूसरे से ऊपर हैं और एक ही छत साझा करते हैं - सर्वोच्च सिंहासन

ईश्वर का.160

मान लीजिए कि एक शंक्वाकार पर्वत के चारों ओर दीवार वाले घेरे हैं, एक दूसरे के अंदर और एक दूसरे के ऊपर, प्रत्येक एक दूसरे के आमने-सामने, इसके तल से शिखर तक। यह हर किसी को सूरज देखने से नहीं रोकता है। वास्तव में, विभिन्न आख्यानों या परंपराओं से संकेत मिलता है कि स्वर्ग के स्तर या मंजिलें कुछ इस प्रकार हैं।

प्रश्न: भविष्यसूचक परम्पराएँ कहती हैं: "हूरियों को सत्तर वस्त्र पहनाए जाते हैं वस्त्र (एक के ऊपर एक), फिर भी उनके पैर की हड्डियों की मज्जा हो सकती है 161 इसका क्या मतलब है? यह कैसी खूबसूरती है?

उत्तर: इस परम्परा का बहुत ही सुन्दर अर्थ और सुन्दरता है। इस दुनिया में, जो बदसूरत है, बेजान है, और अधिकांशतः एक आवरण मात्र है, यह तब तक पर्याप्त है जब तक कि सुंदरता और मनमोहकपन आंखों को सुंदर दिखाई दे और जब तक कि बहुत अधिक परिचितता इसे छिपा न दे। स्वर्ग में, जो सुंदर, जीवंत, शानदार और पूरी तरह से सार या कर्नेल है, बिना किसी आवरण के, जैसे आंख, हमारी सभी इंद्रियां और संकाय अपनी अलग-अलग भावनाएं प्राप्त करना चाहेंगे

---

160 अल-बुखारी, "तौहीद" 22; एट-तिर्मिधि, "सिफतुएल-जन्ना" 4.

161 अल-बुखारी, "अदब" 96; मुस्लिम, "बीरर" 165.

हूरों से और इस दुनिया से आने वाली महिलाओं से सुख , जो
हूरियों से भी अधिक सुंदर हो । यह परंपरा संकेत करती है कि
शीर्ष वस्त्र की सुंदरता हड्डी में मज्जा के लिए, प्रत्येक होगा
एक इंद्रिय और क्षमता के लिए आनंद का साधन।

इसमें यह भी बताया गया है कि हूरों का श्रृंगार, शारीरिक और आध्यात्मिक
सौंदर्य और आकर्षण, हमारी सभी इच्छाओं को प्रसन्न, संतुष्ट और संतुष्ट करेगा
सौंदर्य के प्रति इंद्रियाँ, भावनाएं, शक्तियां और क्षमताएं, तथा उनका महान स्नेह
आनंद और श्रृंगार के लिए। सत्तर प्रकार के श्रृंगार से सजे हुए
जन्नत ऐसी कि एक दूसरे को छिपा न सके, हूर का प्रदर्शन
सत्तर से अधिक प्रकार की शारीरिक और आध्यात्मिक सुन्दरता और सुंदरता, और
इस प्रकार इसमें निहित सत्य को प्रदर्शित करें: इसमें (स्वर्ग में) वह सब कुछ है जो
आत्माएँ अभिलाषा करती हैं और आँखें उनसे प्रसन्न होती हैं (43:71)।

यह परंपरा यह भी बताती है कि चूंकि स्वर्ग में तलछट के साथ कोई अनावश्यक, छिला हुआ या खोल
वाला अपशिष्ट पदार्थ नहीं है,162 इसलिए इसके निवासी
खाने-पीने के बाद मल-मूत्र बाहर नहीं फेंकते। इस दुनिया में पेड़ सबसे ज़्यादा
सामान्य जीवधारी, बहुत सारा पोषण लेने के बावजूद मलत्याग नहीं करते। तो फिर स्वर्ग के निवासी, जो जीवन
की सर्वोच्च श्रेणी हैं, क्यों मलत्याग न करें?
अपशिष्ट उत्सर्जित करें?

प्रश्न: कुछ भविष्यसूचक परम्पराओं में कहा गया है कि कुछ निवासी
स्वर्ग को दुनिया जितना बड़ा स्थान दिया जाएगा, और उसमें सैकड़ों लोग होंगे
उन्हें हजारों महल और हौरियाँ प्रदान की जाएँगी। इसका कारण क्या है?
इसके लिए क्या करना होगा, और एक व्यक्ति को इन सभी चीजों की आवश्यकता क्यों और कैसे होती है?

उत्तर: यदि हम केवल एक ठोस वस्तु होते, एक वनस्पति प्राणी होते जिसमें पेट होता, या केवल एक
सीमित, भारी, सरल और क्षणभंगुर भौतिक या पशु शरीर होता, तो हम इतने सारे महलों या हौरों के मालिक
नहीं होते या उनके लायक नहीं होते।
लेकिन हम ईश्वरीय शक्ति का इतना व्यापक चमत्कार हैं कि अगर हमने इस पर शासन किया
दुनिया भर में अपनी सारी संपत्ति और सुख का उपयोग अपने अविकसित राष्ट्रों की संतुष्टि के लिए किया।
इंद्रियों और क्षमताओं की जरूरतों के बावजूद, हम अपने लालच को संतुष्ट नहीं कर सके
संक्षिप्त जीवन। हालाँकि, अगर हमारे पास अनन्त निवास में अनंत क्षमता है
खुशी, और अगर हम अनंत दया के दरवाजे पर दस्तक देते हैं
अनंत आवश्यकताओं और अनंत इच्छाओं के हाथों से, हम प्राप्त करेंगे
ऐसी परम्पराओं में वर्णित दिव्य कृपाएँ। इस उच्च सत्य को स्पष्ट करने के लिए हम एक तुलना प्रस्तुत करेंगे।

---

162 अल-बुखारी, "बदुल-ख़ल्क" 8; मुस्लिम, "जन्ना" 17-19.

163 सुलेमान का बाग़, जिसने आठ साल तक इस ग़रीब की पूरी वफ़ादारी से सेवा की,
जहाँ यह वचन एक या दो घंटे में लिखा गया था।

इस घाटी के बगीचे163 की तरह, बारला में हर अंगूर के बगीचे और बगीचे का एक अलग मालिक है। हर पक्षी, गौरैया या मधुमक्खी, जिसके पास केवल मुट्ठी भर है
अनाज के बारे में, कह सकते हैं: "बारला के सभी अंगूर के बाग और बगीचे मेरे अनाज के स्थान हैं
मनोरंजन।" प्रत्येक व्यक्ति बारला का मालिक हो सकता है और उसे अपनी संपत्ति में शामिल कर सकता है। तथ्य यह है कि
दूसरों का उसमें हिस्सा होना उसके नियम को नकार नहीं देता। एक सच्चा इंसान कह सकता है:
“मेरे रचयिता ने संसार को मेरे लिए घर बनाया है, जिसका मुख्य दीपक सूर्य है,
तारों को अपनी बिजली की रोशनी के रूप में, और पृथ्वी को फूलों से सजे कालीनों से सजे मेरे पालने के रूप में," और
भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ। यह निष्कर्ष इसलिए नकारा नहीं जा सकता क्योंकि
इस "घर" में अन्य जीव रहते हैं। इसके विपरीत, जीव इस "घर" को सजाते हैं
इस घर की सजावट की तरह हैं। अगर हम इंसान होने के नाते
क्या एक पक्षी भी इतने विशाल क्षेत्र पर नियंत्रण का दावा कर सकता है?
इस संकीर्ण, संक्षिप्त दुनिया में और इतनी विशाल उदारता प्राप्त करने के लिए, हमें क्यों
यह असंभव है कि हम पाँच सौ वर्षों तक फैली हुई संपत्ति के मालिक होंगे
क्या आप एक विस्तृत, शाश्वत सुख के निवास में वर्षों बिता सकते हैं?

साथ ही, जिस प्रकार सूर्य यहाँ कई दर्पणों में एक साथ उपस्थित है, उसी प्रकार
आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध व्यक्ति भी कई स्थानों पर मौजूद हो सकता है
उसी समय, जैसा कि सोलहवें वचन में चर्चा की गई है। उदाहरण के लिए, गेब्रियल,
उस पर शांति हो, वह भगवान के पास मौजूद रहते हुए भी हजारों सितारों पर हो सकता है
सर्वोच्च सिंहासन, पैगम्बर की उपस्थिति में, और दिव्य उपस्थिति में।
पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) अधिकांश लोगों से मिल सकते हैं
अपने समुदाय के समर्पित, ईश्वर-चेतन सदस्यों के स्थान पर
पुनरुत्थान के बाद एकत्रित होना, जैसे वह कई स्थानों पर प्रकट हो सकता है और
इस संसार में एक साथ अनेक संतों को। संतों का एक समूह
(अब्दाल: स्थानापन्न) एक ही समय में कई स्थानों पर प्रकट हो सकते हैं।
साधारण लोग कभी-कभी एक साल जितना काम कर सकते हैं या उसका निरीक्षण कर सकते हैं
सपने देखते हुए एक मिनट में किया जा सकता है, और हर कोई संपर्क में हो सकता है
हृदय से, आत्मा से, एक ही समय में अनेक स्थानों से जुड़ा हुआ और उनसे जुड़ा हुआ,
और कल्पना में। ऐसी बातें सर्वविदित हैं और देखी गई हैं।

इस प्रकार, स्वर्ग के निवासियों, जो प्रकाशमान, अप्रतिबंधित, विस्तृत और शाश्वत है, के पास आत्मा की शक्ति और प्रकाश तथा कल्पना की तीव्रता वाले शरीर होंगे। वे असंख्य स्थानों पर रहने में सक्षम होंगे।

एक साथ कई स्थानों पर जाएँ, असंख्य हूरियों से बात करें और आनंद प्राप्त करें
अनंत तरीके। यह उस शाश्वत स्वर्ग और अनंत दया और सच्चे पत्रकार के लिए उपयुक्त है, उस पर शांति और आशीर्वाद हो,
कहते हैं कि यही हकीकत और सच्चाई है। लेकिन ऐसी सच्चाईयों को तौला नहीं जा सकता
हमारे छोटे दिमाग के तराजू पर।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना।

हे ईश्वर, अपने प्रियतम पर कृपा करें, जिसने आपके प्रिय होने और अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से स्वर्ग के द्वार खोले, और जिसके समुदाय ने आपकी कृपाओं को पुकारने के माध्यम से उन द्वारों को खोलने में उसकी सहायता की। उस पर कृपा और शांति हो। हे ईश्वर, हमें अपने चुने हुए प्रियतम की मध्यस्थता के माध्यम से शुद्ध, धर्मी लोगों के बीच स्वर्ग में प्रवेश करने दें। आमीन।

परिशिष्ट: नरक के बारे में

जैसा कि दूसरे और आठवें शब्दों में तर्क दिया गया है, विश्वास आत्मा द्वारा अनुभव किए जाने वाले एक प्रकार के स्वर्ग का बीज धारण करता है, जबकि अविश्वास आत्मा द्वारा अनुभव किए जाने वाले एक प्रकार के नर्क का बीज धारण करता है। जिस प्रकार अविश्वास नर्क का बीज है, उसी प्रकार नर्क अविश्वास का फल है। अविश्वास नर्क में प्रवेश करने के साथ-साथ उसके अस्तित्व और निर्माण का कारण भी है। यदि एक तुच्छ शासक जिसकी गरिमा, गर्व और वैभव कम है, का सामना किसी ऐसे व्यक्ति से होता है जो उसे चुनौती देता है: "आप मुझे दंडित नहीं कर सकते," तो उसे उस व्यक्ति को जेल में डालना होगा या यदि पहले से कोई जेल मौजूद नहीं है तो उसे जेल बनानी होगी। नर्क को नकारने का अर्थ है कि अविश्वासी उस असीम शक्तिशाली व्यक्ति का विरोध करता है, जिसके पास असीम गरिमा, महिमा, ऐश्वर्य और महानता है। ऐसा व्यक्ति उस पर नपुंसकता और झूठ बोलने का आरोप लगाता है, जो दोनों ही उसके सम्मान और गरिमा के लिए बहुत बड़ा अपमान हैं, और उसके गर्व, महिमा और ऐश्वर्य को ठेस पहुँचाते हैं। यदि यह पहले से अस्तित्व में नहीं होता, तो ऐसे अविश्वास और उसके धारकों को दण्ड देने के लिए नरक का निर्माण करना पड़ता।

हे प्रभु! तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया। तू महिमावान है। हमें आग की यातना से बचा।

उनतीसवाँ शब्द

उनतीसवाँ शब्द

आत्मा और स्वर्गदूतों की स्थायित्व,
पुनरुत्थान और परलोक

मैं शापित शैतान से परमेश्वर की शरण चाहता हूँ।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

स्वर्गदूत और आत्मा (शक्ति की रात) में उतरते हैं
अपने रब की अनुमति से। (97:4)

कह दो, "रूह तो मेरे रब का हुक्म है।" (17:85)

[नोट: इस ग्रंथ में एक परिचय और दो अध्याय हैं
लक्ष्य.]

परिचय

T स्वर्गीय प्राणियों का अस्तित्व, जिसे शरिया कहता है
स्वर्गदूतों और अन्य आध्यात्मिक प्राणियों के बारे में भी यही बात स्पष्ट है, जैसा कि मानवता के बारे में है
और जानवर। जैसा कि 15वें वचन के पहले चरण में बताया गया है , वास्तविकता और
सार्वभौमिक ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि पृथ्वी की तरह ही स्वर्ग भी
उनके पास विशेष रूप से जागरूक या बुद्धिमान निवासी होने चाहिए।
पृथ्वी, अपने छोटे आकार और तुलना करने पर स्पष्ट महत्वहीनता के बावजूद
स्वर्ग के साथ, लगातार चेतन प्राणियों से भरता और खाली होता रहता है।
यह दर्शाता है कि स्वर्ग, जो विस्मयकारी मीनारों वाले सुसज्जित महलों जैसा दिखता है, जीवित प्राणियों, अस्तित्व के प्रकाश के प्रकाश से भरा हुआ है,
और सचेत, बुद्धिमान प्राणी जो जीवित प्राणियों का प्रकाश हैं।
जिन्न और मानवता जैसे प्राणी इस दुनिया के महल के पर्यवेक्षक हैं,
ब्रह्मांड की इस पुस्तक के छात्र और पाठक, और प्रभु की कृपा के संदेशवाहक
संप्रभुता। अपनी व्यापक और सार्वभौमिक पूजा के माध्यम से, वे सार्वभौमिक प्रकृति या पहचान के प्राणियों की महिमा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ब्रह्माण्ड की प्रकृति को इन प्राणियों के अस्तित्व की आवश्यकता है, क्योंकि इसकी सुन्दरता से सजी कलाकृतियाँ, अर्थपूर्ण सजावट और उद्देश्यपूर्ण, नाजुक कढ़ाई संवेदनशील प्राणियों को चिंतन करने के साथ-साथ प्रशंसा करने के लिए भी प्रेरित करती है
और पूरी सराहना के साथ उनकी सराहना करें। जिस तरह एक सुंदरी को प्रेमी की ज़रूरत होती है और
भूखे को भोजन दिया जाता है, इसलिए आत्मा और दिल के लिए भोजन उपलब्ध कराया जाता है
इस प्रकार कला की अनंत सुन्दरता सर्वप्रथम अस्तित्व से संबंधित है
देवदूत और अन्य आत्मिक प्राणी। ब्रह्मांड की अनंत सुंदरता और महिमा
इस प्रकार की प्रतिक्रिया के लिए चिंतन और उपासना का अनंत कर्तव्य होना चाहिए। चूँकि जिन्न और मानवता इस कर्तव्य का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही पूरा कर सकते हैं,
सृष्टिकर्ता की आराधना में व्यवस्थित पंक्तियों से अस्तित्व की इस सार्वभौमिक मस्जिद को भरने के लिए असंख्य प्रकार के देवदूत और आत्मिक प्राणी होने चाहिए।

वास्तव में, ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कोने में आत्मिक प्राणियों और देवदूतों का एक समूह या प्रजाति मौजूद है, जिनमें से प्रत्येक सेवकाई का अपना विशिष्ट कर्तव्य निभाता है।
कुछ पैगंबरी परंपराओं और ब्रह्मांड के ज्ञान के आधार पर
क्रम में, यह कहा जा सकता है कि ग्रहों से लेकर वर्षा की बूंदों तक कुछ गतिशील निर्जीव पिंड
कुछ प्रकार के स्वर्गदूतों के लिए वाहन उपलब्ध कराते हैं। वे ईश्वर की अनुमति से उन पर सवार होते हैं
और भौतिक संसार में यात्रा करते हुए, उनकी महिमा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसके अलावा, कुछ प्रकार के जीवित शरीर कुछ जीवों के लिए वाहन उपलब्ध कराते हैं।
आत्माओं या आत्मिक प्राणियों की प्रजातियाँ। उदाहरण के लिए, एक परंपरा कहती है कि आत्माएँ
स्वर्ग के लोगों में से स्वर्ग के "हरे पक्षी" स्वर्ग में प्रवेश करते हैं
कब्र की मध्यवर्ती दुनिया और उनमें स्वर्ग के चारों ओर यात्रा।1 ऐसे
पक्षी, यहाँ तक कि कुछ मक्खियाँ भी इन जीवित शरीरों के समूह से संबंधित हैं।
परमेश्वर की आज्ञा से, वे अपनी इन्द्रियों के द्वारा सृष्टि के आश्चर्यकर्मों का अवलोकन करते हैं,
और उनकी ओर से सृष्टिकर्ता की महिमा करें। वास्तविकता की तरह, दिव्य बुद्धि भी
इसकी आवश्यकता है। क्योंकि जिस प्रकार सर्वज्ञ सृजक सकल मिट्टी में प्राण फूंकता है
और मैला पानी, जिसका आत्मा से कोई संबंध नहीं है, और जिससे असंख्य चेतन प्राणी उत्पन्न होते हैं, इसी प्रकार वह प्रकाश और अंधकार, और अन्य सूक्ष्म पदार्थों (जैसे वायु और

बिजली), क्योंकि वे आत्मा और जीवन के निर्माण के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

दो उद्देश्य

पहला लक्ष्य

स्वर्गदूतों के अस्तित्व की पुष्टि करना विश्वास का एक स्तंभ है। इस प्रथम उद्देश्य में चार मूलभूत बातें शामिल हैं:

पहला मूल सिद्धांत: अस्तित्व की पूर्णता जीवन के माध्यम से है।
जीवन ही अस्तित्व का वास्तविक आधार और प्रकाश है। चेतना, बदले में, प्रकाश है
जीवन का। जीवन हर चीज का आधार है और हर जीवित चीज के लिए हर चीज को उपयुक्त बनाता है। केवल जीवन के माध्यम से ही एक जीवित प्राणी यह दावा कर सकता है कि

सब कुछ उसका है, दुनिया उसका घर है और ब्रह्मांड मालिक द्वारा दी गई उसकी संपत्ति है। जिस तरह प्रकाश के कारण (ठोस) चीजें दिखाई देती हैं
और, एक सिद्धांत के अनुसार, रंग का असली कारण है, इसी तरह, जीवन सृजन को उजागर करता है। जीवन गुणों और स्वभावों को प्रकट और साकार करने का कारण बनता है। यह बनाता है
विशेष सार्वभौमिक और विशेष में केंद्रित सार्वभौमिक।

जीवन अस्तित्व को उसकी सम्पूर्ण पूर्णताएं भी प्रदान करता है; यह असंख्यों को जन्म देता है।
एकता प्राप्त करने के लिए चीजों को एक साथ लाना और इस प्रकार एक होने का दर्जा प्राप्त करना
आत्मा। इसके अलावा, जीवन बहुलता के स्तरों में एकता की अभिव्यक्ति है; यह बहुलता में अस्तित्व की आवश्यक एकता को दर्शाता है। देखिए कितना अकेलापन है
यहां तक कि एक पहाड़ के आकार की वस्तु भी जीवन रहित है। इसकी अंतःक्रियाएं सीमित हैं
इसका स्थान, और ब्रह्मांड में मौजूद सभी चीजें इसके लिए कोई मायने नहीं रखतीं, क्योंकि यह
अन्य अस्तित्वों के प्रति अचेतन। लेकिन एक मधुमक्खी के रूप में एक छोटा सा जीवित प्राणी ब्रह्मांड के साथ घनिष्ठ संबंध रख सकता है, विशेष रूप से पौधों और
फूलों से प्यार करते हुए, यह कह सकता है: "पृथ्वी मेरा बगीचा है; मेरा बाज़ार है जहाँ मैं व्यापार करता हूँ।" प्रेरणा या प्रेरणा और उत्साह की "सहज" इंद्रियों के अलावा उन जानी-पहचानी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों के माध्यम से जो जीवित प्राणी करते हैं
मधुमक्खी का अधिकांश प्रजातियों के साथ घनिष्ठ संबंध, अंतःक्रिया और परिचय होता है।

यदि इस छोटे से प्राणी पर जीवन का प्रभाव इतना महान है, तो मनुष्य पर इसका कितना अधिक प्रभाव होगा?
यह मानवता पर निर्भर है, क्योंकि यह हमारी चेतना, तर्क और बुद्धि में फैलता है! तर्क और चेतना के माध्यम से, जो जीवन का प्रकाश है, हम यात्रा करते हैं
भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व की उच्चतर दुनियाओं के माध्यम से आसानी से
एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना। जिस तरह सचेत और जीवित प्राणी
आत्मा में उन दुनियाओं का दौरा करें, वे दुनियाएँ हमारे दर्पण-जैसे आत्मा में प्रतिबिंबित होकर मेहमान के रूप में आती हैं। जीवन ईश्वर की एकता का स्पष्ट प्रमाण है, उनकी उदारता का सबसे बड़ा स्रोत है, उनकी करुणा की सबसे सूक्ष्म अभिव्यक्ति है,
और उनकी कला की सबसे छिपी और नाजुक कढ़ाई। जीवन इतना रहस्यमय है
और सूक्ष्म कि यहां तक कि पौधों का जीवन (जीवन का सबसे सरल स्तर) और
बीजों में जीवन-शक्ति का जागरण (उनके जीवन की शुरुआत) अभी भी नहीं हुआ है
पूरी तरह से समझ लिया गया है। हालाँकि यह हमारे लिए आम बात है, लेकिन यह अभी भी बनी हुई है
आदम के समय से यह एक रहस्य है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति कभी भी इसकी प्रकृति को नहीं समझ पाया है।

अपने बाह्य (भौतिक) और आंतरिक (अभौतिक) पहलुओं में, जीवन शुद्ध है। दिव्य
शक्ति कारणों की भागीदारी के बिना जीवन का निर्माण करती है, जबकि यह "प्राकृतिक" शक्तियों का उपयोग करती है।
बाकी सब चीजों के निर्माण से पहले एक पर्दा बन जाता है ताकि जो लोग ऐसा करने में असमर्थ हैं, वे
चीजों और घटनाओं में ईश्वरीय ज्ञान और आवश्यक सुंदरता को पहचानना
उनमें कुछ ऐसे निम्नस्तरीय गुण हैं, जिनका वे सम्मान के साथ सामंजस्य नहीं बिठा सकते।
दिव्य शक्ति.

संक्षेप में, जीवन के बिना, किसी भी अस्तित्ववान चीज़ को अस्तित्ववान नहीं माना जा सकता।
या गैर-अस्तित्व से काफी अलग है। जीवन आत्मा का प्रकाश है, और

चेतना जीवन का प्रकाश है। चूँकि जीवन और चेतना बहुत महत्वपूर्ण हैं, और संपूर्ण सृष्टि में पूर्ण सामंजस्य व्याप्त है और ब्रह्मांड एक दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करता है सामंजस्य, और चूंकि हमारा छोटा घूमता हुआ ग्रह अनगिनत जीवित प्राणियों से भरा हुआ है बुद्धिमान प्राणियों, उन स्वर्गीय महलों और ऊँचे नक्षत्रों में निश्चित रूप से अपने आप में अद्वितीय सचेतन जीवित निवासी होंगे। जैसे मछलियाँ रहती हैं पानी, वे आत्माएँ सूर्य की गर्मी में मौजूद हो सकती हैं। आग भस्म नहीं करती प्रकाश; बल्कि, अग्नि प्रकाश को उज्जवल बनाती है। यह देखते हुए कि शाश्वत शक्ति सृजन करती है असंख्य जीवित प्राणियों को जड़, ठोस पदार्थों से बनाता है और जीवन द्वारा सबसे सघन पदार्थ को सूक्ष्म जीवित यौगिकों में परिवर्तित करता है, इस प्रकार जीवन का प्रकाश विकीर्ण करता है हर जगह प्रचुर मात्रा में और अधिकांश चीजों को प्रकाश से सुसज्जित करना चेतना, सर्वशक्तिमान, सर्व-बुद्धिमान निश्चित रूप से नहीं बनायेगा पदार्थ के ऐसे सूक्ष्म रूप जैसे प्रकाश और ईथर, जो निकट और उपयुक्त हैं आत्मा के लिए, जीवन और चेतना के बिना। वह अनगिनत चेतन प्राणियों का निर्माण करता है और चेतन प्राणियों को प्रकाश और अंधकार, आकाश और वायु, और यहाँ तक कि अर्थ (कल्पित) और शब्द (उच्चारण)। जैसे वह असंख्य प्राणियों का सृजन करता है वह पदार्थ के सूक्ष्म रूपों से विभिन्न आत्मिक प्राणियों की भी रचना करता है। इनमें से कुछ स्वर्गदूत, विभिन्न आत्मिक प्राणी और जिन्न हैं। अगर आपको यकीन नहीं है तो नीचे दिए गए दृष्टांत पर गौर करें।

एक असभ्य खानाबदोश और एक सभ्य व्यक्ति एक शानदार शहर में गए इस्तांबुल की तरह। उस सुव्यवस्थित, शानदार शहर के एक सुदूर कोने में, उन्होंने देखा एक पुरानी इमारत जिसमें दुखी श्रमिकों से भरी एक फैक्ट्री थी। इसके आस-पास के स्थानीय लोग या तो सब्ज़ियाँ या मछली खाकर अपना जीवन यापन करते थे। उन्हें देखते हुए, वे दूर से मुझे ऊंचे, सुसज्जित महलों और प्रासादों का दृश्य दिखाई दिया, जो विशाल कार्यशालाएँ और चौड़े चौराहे थे। वे कोई निवासी नहीं देख सकते थे उस क्षेत्र में या तो उनकी दृष्टि खराब थी या फिर वहां के निवासी छिपे हुए थे। चूंकि दोनों के रहने की स्थितियों के बीच कोई तुलना नहीं थी, इसलिए असभ्य व्यक्ति ने निष्कर्ष निकाला कि वहाँ कोई नहीं रहता था। दूसरे व्यक्ति ने कहा:

> आप देख सकते हैं कि इस गरीब, जीर्ण-शीर्ण फैक्ट्री में मज़दूर रहते हैं - कोई बहुत शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति उन्हें काम पर रखता है और फिर उनकी जगह नए लोगों को रखता है। इसके अलावा, फैक्ट्री के आस-पास कोई खाली जगह नहीं है। फैक्ट्री, क्योंकि हर जगह का इस्तेमाल किया जा रहा है। वे सुशोभित, ऊंचे कैसे हो सकते हैं महल और किले खाली क्यों रहते हैं? उनमें अवश्य ही प्राणी निवास करते होंगे जिनकी जीवन की परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं। आप उन्हें इसलिए नहीं देख सकते क्योंकि दूरी या आपकी खराब दृष्टि या क्योंकि वे छिपे हुए हैं। बस क्योंकि आप किसी चीज़ को नहीं देख सकते इसका मतलब यह नहीं है कि वह मौजूद नहीं है।

पृथ्वी यद्यपि अन्य खगोलीय पिंडों की तुलना में बहुत छोटी है, फिर भी इसका आकार बहुत बड़ा है। यहाँ पर जीवित प्राणियों का इतना घना निवास है कि यहाँ का सबसे घिनौना और सबसे सड़ा हुआ पदार्थ भी भाग जीवित चीजों से भरे हुए हैं, जैसे कि सूक्ष्म जीव। इससे पता चलता है कि वे अनंत आकाशमण्डल, अपने असंख्य तारों और नक्षत्रों सहित, निवास करते हैं-

अग्नि, प्रकाश, वायु, आकाश, बिजली, आवाज, सुगंध, शब्द और पदार्थ के अन्य सूक्ष्म रूपों से निर्मित चेतन, जीवित प्राणियों द्वारा निर्मित। कुरान या शरिया ऐसे प्राणियों को फ़रिश्ते, जिन्न और आत्मा कहते हैं। सांसारिक प्राणियों की तरह ही उनके भी अपने प्रकार या प्रजातियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, बारिश की बूंद का प्रभारी फ़रिश्ता निश्चित रूप से सूर्य का प्रभारी फ़रिश्ता से अलग होता है।

निष्कर्ष में, और जैसा कि अनुभवजन्य रूप से स्थापित किया जा सकता है, पदार्थ आवश्यक नहीं है। इसलिए अस्तित्व इसके अधीन या इस पर निर्भर नहीं है। बल्कि, पदार्थ एक अर्थ के माध्यम से अस्तित्व में रहता है, और वह अर्थ जीवन है, आत्मा है। जैसा कि अवलोकन के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है, अस्तित्व पदार्थ की सेवा नहीं करता है और इसलिए हर चीज को इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। बल्कि, पदार्थ इसलिए मौजूद है ताकि वह एक वास्तविकता की सेवा कर सके और उसे परिपूर्ण कर सके: जीवन। आत्मा जीवन का आधार है।

चूँकि पदार्थ अस्तित्व पर शासन नहीं करता, इसलिए उससे पूर्णता की तलाश नहीं की जानी चाहिए। बल्कि, यह एक मूल तत्व के आदेश के अधीन, और उस आदेश के अनुसार आकार लेने वाला, प्रभुत्व वाला होता है। वह मूल तत्व जीवन, आत्मा, चेतना है। पदार्थ अस्तित्व का अपरिवर्तित सार और पूर्णता का स्रोत नहीं है; बल्कि, यह एक रूप और बाहरी आवरण है जो विघटन के अधीन है। एक सूक्ष्म जीव में तीव्र इंद्रियाँ होती हैं: यह अपने साथी की आवाज़ सुनता है और अपने भोजन को देखता है। यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे पदार्थ अधिक परिष्कृत होता जाता है, जीवन के प्रभाव अधिक प्रकट होते जाते हैं और आत्मा का प्रकाश अधिक उज्ज्वल होता जाता है। यह ऐसा है मानो पदार्थ आत्मा और चेतना के क्षेत्र से जितना अधिक निकटता से मिलता-जुलता है, वह उतना ही अधिक अलौकिक होता जाता है। इससे जीवन का प्रकाश अधिक उज्ज्वल रूप से प्रकट होता है।

यह देखते हुए, अस्तित्व की आंतरिक दुनिया सचेत जीवों से कैसे आबाद नहीं हो सकती जबकि जीवन और चेतना के प्रतिबिंब पदार्थ के पर्दे पर प्रकट होते रहते हैं? इसके अलावा, क्या यह संभव है कि भौतिक दुनिया में अर्थ, आत्मा, जीवन और चेतना की अनगिनत अभिव्यक्तियाँ और प्रतिबिंब केवल पदार्थ और उसकी गति के लिए जिम्मेदार ठहराए जा सकते हैं? इसके विपरीत, वे संकेत देते हैं कि भौतिक दुनिया आत्मा की दुनिया और आंतरिक दुनियाओं पर केवल एक फीता पर्दा है।

दूसरा मूलभूत सिद्धांत: अधिकांश दार्शनिक और धार्मिक विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि देवदूत और आत्मिक प्राणी मौजूद हैं, हालांकि उनके नामकरण में मतभेद रहे हैं। दार्शनिकों में, पेरिपेटेटिक्स (माश-शैयुन), जो भौतिकवादी शब्दों में अस्तित्व की व्याख्या करने के लिए इच्छुक थे, को इस आधार पर स्वर्गदूतों के अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ा कि प्रत्येक प्रजाति में एक आध्यात्मिक, अमूर्त सार होता है। इल्लुमिनिस्ट (इशराकियुन) ने स्वर्गदूतों के अस्तित्व से इनकार नहीं किया, लेकिन उन्हें गलत तरीके से “दस बुद्धि” और “प्रजातियों के स्वामी” कहा। दिव्य धर्मों के अनुयायी, दिव्य रहस्योद्घाटन द्वारा निर्देशित, मानते थे कि एक देवदूत प्रत्येक प्रकार के अस्तित्व का प्रभारी है।

उन्होंने उस प्रकार के अस्तित्व के अनुसार उनका नाम रखा: परमेश्वर का दूत

पहाड़, समुद्र का देवदूत, बारिश का देवदूत, इत्यादि। यहां तक कि प्रकृतिवादी और भौतिकवादी भी, जो खुद को सिर्फ़ वही देखते हैं जो वे देखते हैं, स्वीकार करते हैं
स्वर्गदूतों का अर्थ गलत तरीके से उन्हें "सर्वव्यापी शक्तियाँ" कहना।

यदि आप ऐसे प्राणियों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते तो फिर किस प्रमाण पर?
अपने इनकार का आधार क्या रखें? क्या ये विशाल स्थान और सुंदर आकाश बिना
निवासियों की, जबकि, जैसा कि पहले मौलिक में समझाया गया है, जीवन का अनावरण करता है
सृष्टि की वास्तविकता है और इसका परिणाम और सार है, और पृथ्वी इससे सजीव है
असंख्य जीवित प्राणियों पर तथाकथित प्राकृतिक नियमों का क्या प्रभाव हो सकता है?
सृष्टि पर? नाममात्र और काल्पनिक सिद्धांतों से अधिक कुछ नहीं होने के कारण, वे
किसी भी प्रकार के अस्तित्व, प्रकृति, आदि का मूल या कारण भी नहीं हो सकता।
पहचान और बाह्य वास्तविकता यदि प्रतिनिधित्व करने, प्रकट करने के लिए कोई देवदूत न हों,
और उन्हें प्रशासित करें। चूँकि जीवन एक बाहरी देखी गई वास्तविकता है, इसलिए प्राकृतिक नियम जैसे नाममात्र सिद्धांत इस वास्तविकता का मूल नहीं हो सकते।

वैज्ञानिक, दार्शनिक और धार्मिक विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि सृष्टि सत्य है।
इस दृश्यमान दुनिया तक सीमित नहीं है। हालाँकि यह दुनिया भौतिक है और इस प्रकार
आत्मिक प्राणियों के लिए घर बनने के लिए अनुपयुक्त, इसे सजाया गया है
अनगिनत जीवित प्राणी। इसलिए, अस्तित्व की कई डिग्री होनी चाहिए जिसके ऊपर यह भौतिक दुनिया एक फीता पर्दा है। इसके अलावा, जैसा कि
समुद्र में मछलियाँ रहती हैं, आत्मा की अदृश्य दुनिया में आत्माएँ रहती हैं।
संक्षेप में, अब तक प्रस्तुत सभी तर्क और अन्य सभी जो निकाले जा सकते हैं
ब्रह्माण्ड के संचालन से स्वर्गदूतों के अस्तित्व का संकेत मिलता है।

कुरान स्वर्गदूतों के अस्तित्व का अर्थ इतनी तर्कसंगतता से समझाता है
इसे कोई भी समझ सकता है: मानव समुदाय इसके लिए जिम्मेदार है
ईश्वरीय गुण से प्राप्त ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करना
वाणी, जबकि स्वर्गदूत एक विशाल समुदाय हैं जिनका "कार्यशील" स्तर
इच्छा शक्ति से निकलने वाले प्रकृति के दिव्य नियमों का पालन करते हैं। वे
परमेश्वर के सम्मानित सेवक जिनके पास सूक्ष्म, प्रकाशमान शरीर हैं, वे निम्न में विभाजित हैं
कक्षाओं में जाते हैं, और जो कुछ भी वह उन्हें करने के लिए कहता है, उसे करते हैं। वे शाश्वत इच्छा और सृजनात्मक शक्ति से जारी आदेशों का पालन करते हैं, जो शासन करते हैं
ब्रह्मांड। प्रत्येक खगोलीय पिंड उनके लिए पूजा का स्थान है।

तीसरा मूलभूत सिद्धांत: स्वर्गदूतों और अन्य आत्मिक प्राणियों का अस्तित्व
एक देवदूत के अस्तित्व को साबित करके और उसे नकार कर (या
किसी एक के अस्तित्व को स्वीकार करना, उस दूसरे को नकारने (या स्वीकार करने) के बराबर है।
प्रजातियाँ। समय की शुरुआत से ही, सभी धर्मों के लोग इस बात पर विश्वास करते रहे हैं
उनका अस्तित्व। इस बात पर आम सहमति है कि कुछ लोगों ने देखा है, बातचीत की है
स्वर्गदूतों से जुड़ी खबरें और उनसे जुड़ी खबरें। अगर स्वर्गदूत नहीं होते, अगर कोई नहीं होता
देखा गया है, अगर एक या अधिक का अस्तित्व स्थापित नहीं किया गया था

अवलोकन, ऐसा सामान्य विश्वास कैसे जारी रह सकता है? अगर यह विश्वास नहीं होता मजबूत सबूतों के आधार पर, बदलाव के बावजूद यह हम तक कैसे पहुंच सकता है? विचारों और विश्वासों और समय बीतने के साथ? इसके अलावा, क्या ऐसा धार्मिक नहीं हो सकता क्या धार्मिक विद्वानों की मान्यता और आम सहमति अनगिनत संकेतों और अनुभवों से उत्पन्न एक अनुभवजन्य वास्तविकता पर आधारित हो सकती है? इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्वर्गदूतों और अन्य आत्मिक प्राणियों में विश्वास उन अनुभवों पर आधारित है जो भविष्यद्वक्ताओं और ईश्वरीय लोगों के पास उनके साथ था, और ये खाते थे विश्वसनीय सूत्रों द्वारा बताया गया।

जब सभी ने इसकी सूचना दे दी है तो आप उनके अस्तित्व पर संदेह कैसे कर सकते हैं? पैगम्बर और संत, जो हमारे सामाजिक जीवन में सूर्य, चंद्रमा और सितारों की तरह हैं? ऐसे लोग इस मामले में विशेषज्ञ हैं, और जाहिर है कि दो विशेषज्ञ एक मामले में हज़ारों गैर-विशेषज्ञों की तुलना में बेहतर है। यह भी एक स्थापित सिद्धांत है कि एक बार किसी मामले की पुष्टि दो व्यक्तियों द्वारा कर दी जाती है, तो उसका खंडन हज़ारों की संख्या में कोई वज़न नहीं है। इसके अलावा, आप कुरान पर कैसे शक कर सकते हैं, सत्य के क्षेत्र में सूर्य की तरह चमकना, तथा पैगम्बर मुहम्मद, जो कि पैगम्बरी का सूर्य है, की गवाही और अनुभव क्या हैं?

यद्यपि एक व्यक्ति के अस्तित्व को स्थापित करना आत्मिक प्राणियों की प्रजातियों के अस्तित्व को सिद्ध करता है, फिर भी सबसे अच्छा, साथ ही सबसे तर्कसंगत और उनके अस्तित्व को स्थापित करने का स्वीकार्य तरीका शरीयत द्वारा समझाया गया है, कुरान में वर्णित है, और जिसने यह कृत्य किया, उसने इसकी गवाही दी है। स्वर्गारोहण, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

चौथा मूलभूत सिद्धांत: जब हम सृष्टि का ध्यानपूर्वक परीक्षण करते हैं, तो हम पाते हैं कि विशेषताओं की तरह, प्रत्येक सार्वभौमिक वस्तु की एक सामूहिक पहचान होती है और एक अद्वितीय, सार्वभौमिक कार्य करता है। उदाहरण के लिए, एक फूल एक अतिशयोक्तिपूर्ण डिजाइन और समरूपता प्रदर्शित करता है और अपनी भाषा में निर्माता के नामों का उच्चारण करता है इसी तरह, पृथ्वी महिमा का एक सार्वभौमिक कर्तव्य निभाती है जैसे कि यह एक फूल था। एक फल और एक पेड़ एक क्रम और नियमितता के भीतर परमेश्वर की महिमा करते हैं, हालाँकि बाद वाला अपने पत्तों के “शब्दों” के माध्यम से बड़े पैमाने पर ऐसा करता है, फूल और फल लगते हैं। इसी तरह, स्वर्ग का विशाल "महासागर" अपने सूर्य, चंद्रमा और सितारों के माध्यम से सर्वशक्तिमान निर्माता की प्रशंसा और महिमा करता है, जो सभी हैं जैसे इसके शब्द। संक्षेप में, प्रत्येक जड़ और बाह्य रूप से निर्जीव और अचेतन भौतिक शरीर परमेश्वर की स्तुति और महिमा करने में एक महत्वपूर्ण कार्य करता है। स्वर्गदूत वस्तुओं के आंतरिक आयामों की दुनिया में ऐसे निकायों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी ओर से प्रशंसा और महिमा व्यक्त करते हैं। बदले में, ये निकाय भौतिक संसार में स्वर्गदूतों के प्रतिनिधि, आवास और मस्जिदें।

जैसा कि 24वें वचन की चौथी शाखा में बताया गया है , स्वर्गदूत और आत्मा ये सभी प्राणी मजदूरों का पहला वर्ग हैं जिन्हें सर्वशक्तिमान निर्माता ने बनाया है।

सृष्टि का यह महल काम करता है। अन्य के अलावा, निर्जीव चीजें और वनस्पतियाँ काफी महत्वपूर्ण सेवक हैं जो बिना वेतन के काम करते हैं; जानवर
वे अपने भोजन और सुख के बदले में अनजाने में सेवा करते हैं; और मानवता, अपने लिए हर चीज में हिस्सा लेकर, अन्य सेवकों की देखरेख करती है (
पृथ्वी) और राजसी सृष्टिकर्ता के उद्देश्यों के अनुसार सचेत रूप से काम करता है
मजदूरी के बदले में प्रतिफल: यहाँ और परलोक में पुरस्कार।

सेवकों की सबसे प्रमुख श्रेणी के रूप में, देवदूत मानवता से मिलते जुलते हैं क्योंकि
वे सृष्टिकर्ता के उद्देश्यों को जानते हैं और उनके अनुरूप कार्य करते हैं। लेकिन वे हमसे भिन्न हैं,
क्योंकि वे केवल परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए काम करते हैं और केवल आध्यात्मिक लाभ की ही माँग करते हैं
अपने निर्माता के निकट होने का आनंद और खुशी। उनकी पूजा अलग-अलग होती है
अधिकांश प्रजातियों के प्रतिनिधियों के रूप में उनकी प्रकृति और कार्य के अनुसार।
ईश्वरीय प्रभुत्व के विभिन्न विभागों में सेवाएँ और स्तुति भिन्न-भिन्न होती हैं, जैसे
सरकार के विभागों द्वारा किए जाने वाले कर्तव्य। उदाहरण के लिए, आर्कान्जेस्क
माइकल पृथ्वी पर अनाज की वृद्धि और प्रावधान का पर्यवेक्षण करता है
ईश्वर की अनुमति और शक्ति। यदि कोई ऐसा कहे तो वह सभी किसान-समान लोगों का मुखिया है।
स्वर्गदूत। एक और महान स्वर्गदूत सभी जानवरों के "अमूर्त चरवाहों" का नेतृत्व करता है,
सर्वशक्तिमान सृजक की अनुमति, आदेश और शक्ति।

चूँकि एक देवदूत प्रत्येक प्रकार के प्राणी का प्रतिनिधित्व करता है और उसकी सेवा प्रस्तुत करता है
और ईश्वरीय दरबार की पूजा करें, पैगंबर का उनका वर्णन है
पूरी तरह से उचित और विश्वसनीय: "चालीस हज़ार स्वर्गदूत हैं
प्रत्येक सिर में चालीस हज़ार मुख हैं, तथा चालीस हज़ार स्तुति-गीत गाये गये हैं।
प्रत्येक मुँह में चालीस हज़ार जीभें।" इस भविष्यसूचक परंपरा का अर्थ है कि
देवदूत सार्वभौमिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं और कुछ प्राणी ईश्वर की आराधना करते हैं
चालीस हज़ार तरीके से चालीस हज़ार सिर। उदाहरण के लिए, आकाश
अपने सूर्य और तारों के माध्यम से राजसी सृष्टिकर्ता की स्तुति करता है, जबकि पृथ्वी असंख्य सिरों से पूजा करती है, जिनमें से प्रत्येक के पास असंख्य मुख हैं, और प्रत्येक मुख
जिसमें अनगिनत भाषाएँ हैं। इसलिए इस परंपरा को देवदूत के संदर्भ में कहा जाता है
वस्तुओं के आंतरिक आयामों की दुनिया में पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है।

एक बार मैंने एक मध्यम आकार का बादाम का पेड़ देखा जिसमें चालीस शाखाएँ (चालीस सिरों के बराबर) थीं,
जिनमें से प्रत्येक में चालीस टहनियाँ (चालीस शाखाओं के बराबर) थीं।
प्रत्येक टहनी में चालीस फूल थे, जिनमें से प्रत्येक में चालीस अलग-अलग जीभें थीं।
रंगीन पुंकेसर। ये "चालीस" प्रत्येक एक दिव्य नाम की अभिव्यक्ति हैं।
क्या यह संभव है कि उस सर्वज्ञ कृपालु, सर्व-प्रतापी निर्माता ने
बादाम का पेड़, जिसने इसे इतने सारे कर्तव्यों का आरोप लगाया, इसे जानने, ब्रह्मांड को पेश करने और इसे प्रस्तुत करने के लिए एक विशिष्ट स्वर्गदूत को नियुक्त नहीं किया
ईश्वरीय न्यायालय?

उपरोक्त स्पष्टीकरण हृदय को यह विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं कि
बुद्धि को स्वीकार करना चाहिए, और शारीरिक आत्मा को सत्य को स्वीकार करना चाहिए। यदि आपके पास है

कुछ समझ हासिल की और स्वर्गदूतों से अधिक निकटता से मिलने की इच्छा हुई, अपने आप को संदेह से शुद्ध करो और कुरान के बगीचे में प्रवेश करो - इसके द्वार पवित्र हैं। खुला। आप कुरान की जन्नत में फ़रिश्तों को देख सकते हैं, और इसकी आयतें ऐसी हैं एक वेधशाला जहां से आप उन्हें देख सकते हैं:

> एक के बाद एक भेजी गई (स्वर्गदूतों की) टोलियों द्वारा, और फिर आगे बढ़ते हुए तूफानों की तरह तेज़ और बलपूर्वक; और स्क्रॉल को लपेटने वालों द्वारा रहस्योद्घाटन, और सेवा (सही और गलत के लिए) अलग किया जाना, और इस तरह प्रकाशितवाक्य को नीचे लाना, ताकि कुछ लोगों के पास इसका साधन हो सके क्षमा मांगो और कुछ लोगों को चेतावनी दी जा सकती है। (77: 1-6)
>
> उन लोगों की कसम जो तुरंत उड़कर (अल्लाह के आदेश से) डुबकी लगा लेते हैं; जो लोग धीरे-धीरे और उत्सुकता से चलते हैं; जो लोग तेजी से तैरते हैं और इसी तरह मानो दौड़ रहे हों, और इस प्रकार आज्ञाओं को पूरा करते हुए आगे बढ़ें। (79:1–5)
>
> ... (शक्ति की रात) में स्वर्गदूत और आत्मा उतरते हैं, उनके रब की ओर से प्रत्येक मामले में उसके आदेश के साथ अनुमति प्राप्त है। (97:4)
>
> ... एक आग जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, और जिसके ऊपर फ़रिश्ते कठोर और सख्त हैं, जो परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते और जो आदेश उन्हें दिया जाए वही करो। (66:6)
>
> वह महिमावान है, बल्कि वे सम्मानित सेवक हैं: वे बोलते हैं वे केवल वही करते हैं जो उसने उनसे कहा है, और वे उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं। (21:26–27)

यदि तुम जिन्न से मिलना चाहते हो तो कुरान के उस अध्याय में प्रवेश करो जिसमें चर्चा की गई है- (72) और सुनो कि वे क्या कह रहे हैं:

> "हमने एक अद्भुत क़ुरआन सुना है, जो सच्चाई की ओर मार्गदर्शन करता है। हम मानते हैं और हम अपने रब के साथ किसी को साझी न ठहराएँगे।" (72:1–2)

दूसरा उद्देश्य

[यह प्रलय, विश्व के विनाश और परलोक के बारे में है।
इस उद्देश्य में एक परिचय और चार मूलभूत बातें शामिल हैं।]

परिचय: यदि कोई यह दावा करे कि कोई शहर या महल नष्ट कर दिया जाएगा और फिर दृढ़ता से पुनर्निर्मित, किसी से निम्नलिखित छह प्रश्न पूछे जाएंगे:

इसे क्यों नष्ट किया जाएगा और क्या इसका विनाश आवश्यक है?

क्या इसका विध्वंसक और इसका पुनर्निर्माणकर्ता सचमुच ये काम कर सकते हैं?

क्या ऐसा विनाश संभव है?

यदि सम्भव हुआ तो क्या इसे सचमुच नष्ट कर दिया जाएगा?

क्या ऐसा पुनर्निर्माण संभव है?

यदि संभव हुआ तो क्या इसका पुनः निर्माण किया जाएगा?

इसके विनाश और पुनर्निर्माण के लिए एक आवश्यक कारण है
दुनिया का महल और ब्रह्मांड का शहर। दोनों हो सकते हैं और होंगे
नष्ट किया और फिर से बनाया। उनका विध्वंसक और पुनर्निर्माणकर्ता दोनों ही काम कर सकते हैं।

पहला मूल सिद्धांत: आत्मा निःसंदेह शाश्वत है।
स्वर्गदूतों और अन्य आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व के प्रमाण इसकी शाश्वतता को सिद्ध करते हैं
हम मृतकों की आत्माओं के बहुत करीब हैं, जो स्वर्ग में प्रतीक्षा कर रहे हैं।
परलोक में जाने के लिए मध्यवर्ती क्षेत्र, उनके अस्तित्व का प्रमाण मांगना। यह आम तौर पर जाना जाता है कि आध्यात्मिक अनावरण वाले लोग उनके संपर्क में आते हैं, और संतों को जीवन की वास्तविकता के बारे में जानकारी होती है
कब्र के लोग उन्हें देख सकते हैं; कुछ लोग उनसे संवाद कर सकते हैं, और
लगभग हर कोई उन्हें सच्चे सपनों में देखता है। जैसा कि आधुनिक भौतिकवाद
ऐसे स्पष्ट मामलों में संदेह पैदा होता है, हम एक परिचय और चार प्रदान करते हैं
वे स्रोत जिनसे प्रेरक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

परिचय: शाश्वत, अतुलनीय सौंदर्य के लिए शाश्वत प्रेमी की आवश्यकता होती है
जिसके माध्यम से यह स्थायी रूप से प्रतिबिंबित होगा। एक दोषरहित, शाश्वत और
उत्तम कला के लिए एक स्थायी चिंतनशील अग्रदूत की आवश्यकता होती है। एक असीम दया
और परोपकार के लिए जरूरतमंदों की निरंतर जीविका और खुशी की आवश्यकता होती है
जो इसका धन्यवाद करते हैं। मानव आत्मा उन प्रेमियों, चिंतनशील अग्रदूतों और जरूरतमंद आभारी लोगों में सबसे आगे है। इसे देखते हुए, यह साथ देगा
वह सौंदर्य, पूर्णता, और दया जो अनंत काल के मार्ग पर है।

केवल मानव आत्मा ही नहीं, सभी जीव, यहाँ तक कि सबसे आदिम जीव भी, किसी न किसी तरह के अनंत काल के लिए बनाए गए हैं। यहाँ तक कि आत्माविहीन फूल में भी अनगिनत तरीकों से मृत्यु के बाद अमरता होती है: इसका रूप यादों में सुरक्षित रहता है, और
इसके निर्माण का नियम और जीवन नए फूलों के उगने के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करता है
इसके बीजों से। चूँकि यह कानून, जिसका हमारे लिए भी उतना ही महत्व है
आत्मा हमारे लिए है, और इसके रूप का मॉडल अशांत के बीच संरक्षित है
सर्वरक्षक, सर्वबुद्धिमान, मानव द्वारा अपने बीजों के माध्यम से घटनाओं को
आत्मा, जिसमें एक उदात्त व्यापक प्रकृति और चेतना है और
बाह्य अस्तित्व से सुसज्जित है, वह कहीं अधिक योग्य है
शाश्वत। एक सर्वज्ञ, महान, सर्वरक्षक कैसे हो सकता है
अनंत काल, कौन एक विशाल वृक्ष के जीवन-चक्र और एक छोटे से बीज के माध्यम से उसके निर्माण के नियम को बनाए रखता है, मृत लोगों की आत्माओं या आत्माओं को संरक्षित नहीं करता है?

पहला स्रोत: यह हमें व्यक्तिगत रूप से चिंतित करता है और हमारे आंतरिक से संबंधित है
दुनिया। अपने जीवन और आंतरिक पहलू को ध्यान से देखें, और आप समझ जाएंगे
एक शाश्वत आत्मा का अस्तित्व। हर व्यक्ति अपने शरीर को समय-समय पर बदलता रहता है
कम से कम प्रतिवर्ष पूर्ण नवीनीकरण के माध्यम से, लेकिन भावना बनी हुई है
अपरिवर्तित.

चूँकि यह सच है और शरीर क्षणभंगुर है, इसलिए इसमें निवास करने वाली आत्मा स्थायी है। आपके शरीर के अणुओं का बनना या बिगड़ना, या इसकी संरचना और विघटन, आत्मा को प्रभावित नहीं करता है, जो सालाना होती है।

अपने शारीरिक वस्त्र को बदलता या नवीनीकृत करता है। जब वह इस वस्त्र को उतारता है

मृत्यु से न तो इसकी स्थायित्व और न ही इसकी मूल प्रकृति प्रभावित होती है, क्योंकि

अनुभव और अवलोकन के माध्यम से स्थापित, आत्मा निर्भर नहीं करती है

शरीर पर जीवन के लिए निर्भर रहना पड़ता है। शरीर केवल उसका निवास स्थान है, उसका आवरण नहीं।

आत्मा का एक सूक्ष्म आवरण होता है, जो उसका “ऊर्जावान या अलौकिक आवरण” होता है, और

मृत्यु के समय यह अपना निवास स्थान है और इस अलौकिक आवरण से सुसज्जित है।

दूसरा स्रोत: यह बाहरी दुनिया से संबंधित है। बार-बार किए गए अवलोकन,

और अनगिनत घटनाएं और अनुभव आत्मा की अनंतता का संकेत देते हैं। यदि किसी एक आत्मा का स्थायित्व

परलोक में स्थापित हो जाता है, तो यह आत्मा की पुष्टि करता है

मृत्यु के बाद भी शाश्वतता। क्योंकि तर्कशास्त्र का विज्ञान कहता है कि एक आवश्यक या

एक व्यक्ति में निहित आंतरिक गुण पूरी प्रजाति के लिए समान होते हैं, क्योंकि सार में उत्पन्न होने वाले गुण सभी व्यक्तियों द्वारा साझा किए जाते हैं। ऐसे बहुत से गुण हैं जो एक व्यक्ति में निहित हैं।

अनेक अवलोकन, घटनाएं, संकेत और अनुभव आत्मा की स्थायीता को दर्शाते हैं, जो कि एक महाद्वीप के अस्तित्व की तरह ही निश्चित है।

कभी नहीं गए। इसलिए अनगिनत आत्माएँ हैं जो अपने भौतिक शरीर को छोड़ चुकी हैं और मध्यवर्ती क्षेत्र में मौजूद हैं। उनके पास एक है

हमारे साथ संबंध; उनके लिए हमारी प्रार्थनाएँ और उनकी ओर से दान के कार्य

हम उन तक पहुंचते हैं और बदले में हमें उनका आशीर्वाद मिलता है।

यह भी आमतौर पर माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक अनिवार्य पहलू

शारीरिक मृत्यु के बाद भी कौन मौजूद रहता है: उसकी आत्मा। चूँकि आत्मा एक सरल एकात्मक है

इकाई, यह समग्र की तरह विघटन या अपघटन के अधीन नहीं है

भौतिक चीजें। जीवन बहुलता के भीतर एकता का एक रूप सुनिश्चित करता है और एक कारण बनता है

एक तरह की स्थायित्व। दूसरे शब्दों में, एकता और स्थायित्व समाज के लिए आवश्यक हैं

आत्मा, जिसके माध्यम से बहुलता एक प्रकार की एकता और स्थायित्व प्राप्त करती है।

आत्मा की नश्वरता या तो उसके विघटन के कारण होगी या

विघटन या उसका विनाश। पहला विकल्प असंभव है, क्योंकि

आत्मा का सार एक सरल एकात्मक है। दूसरा विकल्प भी असंभव है,

क्योंकि यह परम उदार भगवान की असीम दया के विपरीत है।

असीम उदारता और दया मानव आत्मा को नष्ट नहीं होने देती

उस अस्तित्व के आशीर्वाद से वंचित हो गया जो उसने इसे प्रदान किया था, क्योंकि यह

वह इस आशीर्वाद की उत्कट अभिलाषा रखता है और इसका हकदार है।

तीसरा स्रोत: आत्मा एक जीवित, सचेतन, प्रकाशमान इकाई है;

ईश्वर का व्यापक, पर्याप्त कानून या आदेश जो बाह्य अस्तित्व से सुसज्जित है और सार्वभौमिकता प्राप्त करने की क्षमता रखता है। यहाँ तक कि "प्राकृतिक"

आत्मा की तुलना में कानून असार हैं, लेकिन उनमें स्थिरता है

और स्थायित्व। सभी प्रकार के अस्तित्व के लिए, हालांकि परिवर्तन के अधीन,
एक स्थायी आयाम होता है जो सभी चरणों में अपरिवर्तित रहता है
जीवन। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति एक व्यक्ति है और अपनी व्यापक प्रकृति, सार्वभौमिक चेतना और अवधारणा की दूरगामी शक्तियों के कारण, एक प्रजाति की तरह है। मानवता पर लागू होने वाला एक कानून भी लागू होता है
व्यक्ति। चूँकि सर्व-महान निर्माता ने हमें एक उत्कृष्ट
प्रकृति ने हमें व्यापक दर्पण बना दिया है जिसके माध्यम से उनके नाम
और गुण प्रतिबिंबित होते हैं, और हमें पूजा के सार्वभौमिक कर्तव्य के साथ आरोपित किया जाता है, फिर प्रत्येक व्यक्ति की आध्यात्मिक वास्तविकता दिव्य द्वारा हमेशा के लिए जीवित रहती है
अनुमति, भले ही इसके स्वरूप में अनगिनत परिवर्तन होते हों। इस प्रकार
मानव आत्मा, जो हमारे चेतन, जीवित तत्व का गठन करती है, शाश्वत है
और ऐसा परमेश्वर के आदेश और अनुमति से किया गया है।

चौथा स्रोत: "प्रकृति" के दिव्य नियम आत्मा से मिलते जुलते हैं, क्योंकि वे
वे भी ईश्वरीय इच्छा और आदेश की दुनिया से संबंधित हैं। हालाँकि, वे
उन श्रेणियों पर काम करते हैं जिनका कोई प्रत्यक्ष अस्तित्व नहीं है।
इन नियमों का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि यदि उन्हें बाह्य अस्तित्व दिया गया होता तो वे स्वयं श्रेणियों की आत्माएँ होतीं। चूँकि वे स्थायी और अपरिवर्तनीय हैं, इसलिए उनकी एकता और सरलता (असंगठितता) अविभाज्य नहीं है।
किसी भी परिवर्तन या रूपांतरण से प्रभावित। उदाहरण के लिए, मृत के बीज
अंजीर के पेड़ में अभी भी उसके निर्माण से संबंधित स्थायी, आत्मा-जैसे नियम विद्यमान हैं।

चूँकि अवास्तविक और साधारण कानूनों में इस प्रकार का स्थायित्व और
निरंतरता के लिए, मानव आत्मा को न केवल दुनिया में स्थायित्व चाहिए
बल्कि अमर और शाश्वत भी हो। इसके अनुसार: आत्मा मेरे प्रभु की है
आदेश (17:85), आत्मा दुनिया से एक सचेत और जीवित कानून है
ईश्वरीय आदेश और शाश्वत द्वारा बाह्य अस्तित्व से संपन्न किया गया है
शक्ति। चूँकि अचेतन कानून इच्छा और शक्ति के दिव्य गुण से निकलते हैं
ईश्वरीय आदेश की दुनिया स्थायी है, आत्मा और भी योग्य है
ऐसा स्थायित्व, क्योंकि यह एक ही स्रोत से आता है और इसके अतिरिक्त, इसका एक
बाहरी वास्तविकता। इसके अलावा, यह अधिक उदात्त और शक्तिशाली है क्योंकि इसमें
यह अधिक स्थायी और मूल्यवान है, क्योंकि यह जीवित है।

दूसरा मूल सिद्धांत: शाश्वत सुख आवश्यक है, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर इसे बनाने में पूरी तरह सक्षम है। हमारे ब्रह्मांड का विनाश और हर चीज़ का पुनरुत्थान दोनों ही संभव हैं और होंगे।

तर्क या बुद्धि को संबोधित करते हुए, हम इन वास्तविकताओं को संक्षेप में समझाएंगे।

शाश्वत सुख के लिए एक आवश्यक कारण है। निम्नलिखित दस बिंदुओं पर विचार करें:

पहला बिन्दु: सृष्टि एक पूर्ण सामंजस्य और उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था प्रदर्शित करती है,
और ब्रह्माण्ड का हर पहलू इच्छा और उद्देश्य के संकेत दिखाता है।

मुद्रा। जैसा कि उनके फलों या परिणामों से प्रमाणित होता है, हर चीज और हर घटना प्रदर्शित करती है
उद्देश्य, इरादे और इच्छा का एक प्रकाश; हर गतिविधि, पसंद और निर्णय की एक चमक
वरीयता; और हर यौगिक और रचना, ज्ञान की एक किरण। अगर सृजन
शाश्वत खुशी पैदा करने के लिए नहीं थे, इसकी सद्भाव और व्यवस्था होगी
एक धोखा। सभी अर्थ, संबंध और कनेक्शन, जो आत्मा हैं
व्यवस्था, कुछ भी नहीं होगी। यह शाश्वत खुशी है जो इसके पीछे है
इस मामले में, ब्रह्मांड का क्रम शाश्वत खुशी की ओर इशारा करता है।

दूसरा बिंदु: ब्रह्माण्ड की रचना पूर्ण बुद्धि को प्रदर्शित करती है।
बुद्धि, जो शाश्वत ईश्वरीय कृपा का प्रतिनिधित्व करती है, उन लाभों और उद्देश्यों की भाषा के माध्यम से
शाश्वत सुख के आगमन की घोषणा करती है जो हमें प्राप्त होते हैं।
यह पूरे ब्रह्मांड में देखा जाता है। अगर शाश्वत खुशी न होती, तो सभी
ब्रह्मांड में देखे गए लाभों और उद्देश्यों को नकारना होगा।

तीसरा बिंदु: मानव बुद्धि, ज्ञान, अनुभव और निगमनात्मक तर्क बताते हैं कि सृष्टि में कुछ भी
अनावश्यक या व्यर्थ नहीं होता है।
ब्रह्माण्ड का सर्वशक्तिमान निर्माता सृष्टि का सर्वोत्तम और आसान मार्ग चुनता है,
और प्रत्येक प्राणी को अनेक कर्तव्य, उद्देश्य और परिणाम प्रदान करता है, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो
यह कितना भी महत्वहीन क्यों न लगे। यह शाश्वत सुख के अस्तित्व को इंगित करता है। चूँकि कोई बर्बादी
नहीं है और कुछ भी व्यर्थ नहीं है, इसलिए शाश्वत सुख अवश्य होना चाहिए
खुशी, क्योंकि शाश्वत अस्तित्वहीनता सब कुछ निरर्थक और बेकार बना देगी। सृष्टि में, विशेष रूप से मानव
शरीर में, अपशिष्ट की अनुपस्थिति, जैसा कि प्रमाणित है
अनेक विज्ञानों द्वारा किया गया परीक्षण यह प्रदर्शित करता है कि हमारी असंख्य आध्यात्मिक क्षमताएं,
असीमित आकांक्षाएं और विचार, और झुकाव कभी व्यर्थ नहीं जाएंगे।
पूर्णता की ओर मूल झुकाव पूर्णता के अस्तित्व को इंगित करता है, और हमारा
खुशी की चाहत यह बताती है कि अनंत खुशी हमारा इंतज़ार कर रही है। अगर ऐसा होता
ऐसा नहीं है, हमारे अस्तित्व और प्रकृति की सभी बुनियादी विशेषताएं और हमारी सभी उदात्तताएं
आकांक्षाएं व्यर्थ हो जाएंगी और अपना मूल अर्थ खो देंगी।

चौथा बिंदु: दिन और रात का परिवर्तन, साथ ही वसंत और
सर्दी, वायुमंडलीय परिवर्तन, हमारे शरीर का वार्षिक नवीनीकरण, और हमारी जागृति
और हर सुबह सोने के बाद उठना, ये सभी पूरी तरह से उठने और नवीनीकृत होने का संकेत देते हैं। सेकंड मिनट
की भविष्यवाणी करते हैं, मिनट घंटे की भविष्यवाणी करते हैं, और घंटे पूर्वानुमान लगाते हैं
एक दिन। भगवान की महान घड़ी - पृथ्वी - के डायल, क्रमिक रूप से, पृथ्वी की ओर इशारा करते हैं।
दिन, वर्ष, हमारा जीवनकाल, और वे युग जिनसे दुनिया गुज़रती है।
वे रात के बाद सुबह और सर्दियों के बाद वसंत दिखाते हैं, वे संकेत देते हैं कि
पुनरुत्थान की सुबह सृष्टि की मृत्यु के बाद आएगी।

एक व्यक्ति के जीवन में कई चक्र होते हैं जिन्हें एक प्रकार का चक्र माना जा सकता है
मृत्यु और पुनरुत्थान (जैसे, दैनिक, मौसमी और वार्षिक परिवर्तन; सोना
प्रकृति का पुनरुत्थान प्रत्येक दिन होता है, तथा प्रत्येक दिन विभिन्न प्रकार के पुनरुत्थान और नवीकरण होते हैं।
वसंत अंतिम पुनरुत्थान का वादा है; उस मौसम में अनगिनत

जानवरों और पौधों में कई तरह के पुनरुत्थान होते हैं। इस प्रकार सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता हमें आने वाले पुनरुत्थान की याद दिलाता है।

मानव व्यक्ति पशु जगत की एक प्रजाति की तरह है। प्रकाश के लिए
बुद्धि की शक्ति ने मानवता की आकांक्षाओं और विचारों को ऐसी सांस दी है
कि वे अतीत और भविष्य दोनों को शामिल करते हैं। भले ही उन्होंने
पूरी दुनिया में, वे संतुष्ट नहीं होंगे। अन्य सभी प्रजातियों में, एक व्यक्ति की
प्रकृति विशिष्ट है, उसका मूल्य व्यक्तिगत है, उसका दृष्टिकोण सीमित है, उसके गुण हैं
सीमित है, और इसका सुख और दुख तात्कालिक है। हालाँकि, मनुष्य के पास एक उत्कृष्ट प्रकृति और सबसे बड़ा मूल्य, असीम पूर्णता और एक है
अधिक स्थायी आध्यात्मिक सुख और दर्द। इसे देखते हुए, अन्य प्रजातियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले पुनरुत्थान के प्रकार बताते हैं कि हर इंसान होगा
क़यामत के दिन पूरी तरह से पुनर्जीवित हो जाएँगे।

पांचवां बिंदु: मानवता असीमित क्षमताओं से संपन्न है
अप्रतिबंधित क्षमताओं में विकसित होते हैं। ये, बदले में, अनगिनत को जन्म देते हैं
ऐसी प्रवृत्तियाँ जो असीम इच्छाएँ उत्पन्न करती हैं, जो अनंत का स्रोत हैं
विचार और अवधारणाएँ। इन सभी की पुष्टि विचारकों और विद्वानों ने की है,
इस भौतिक जगत से परे शाश्वत सुख की एक दुनिया के अस्तित्व का संकेत देते हैं
दुनिया। हमारा स्वभाव ही, जो दुनिया के प्रति हमारे सहज झुकाव का मूल है
शाश्वत सुख की प्राप्ति से यह निश्चित होता है कि ऐसा विश्व अवश्य स्थापित होगा।

छठा बिन्दु: ब्रह्माण्ड के सर्वदयालु की सर्वव्यापी दया,
सर्व-करुणामय निर्माता को शाश्वत खुशी की आवश्यकता है, जो दिव्य देता है
उदारता और कृपा उनके सच्चे स्वरूप हैं। अगर यह खुशी न होती, तो भगवान का प्रमुख
मानवता के लिए अनुग्रह, सभी लोग शाश्वत अलगाव पर विलाप करेंगे, उपकार के कार्य प्रतिदान में बदल जाएंगे, और ईश्वरीय करुणा प्रकट होगी
नकारा गया। हालाँकि, ईश्वरीय दया एक ठोस वास्तविकता है और इससे कहीं अधिक स्पष्ट है
ब्रह्मांड में सूर्य। ईश्वरीय दया के तीन स्वरूपों पर ध्यान दें:
प्रेम, स्नेह और बुद्धि। यदि मानव जीवन में अनंत काल तक अलगाव होता है
बिछड़ने की अंतहीन पीड़ा, वह दयालु प्रेम सबसे महान बन जाएगा
दुःख, स्नेह को अत्यन्त पीड़ादायक व्याधि में बदल देना, तथा प्रकाश देने वाली बुद्धि को
एक अप्रतिबंधित बुराई में। हालाँकि, दिव्य करुणा (क्योंकि यह करुणा है)
सच्चे प्रेम पर कभी भी शाश्वत वियोग की पीड़ा नहीं आती।

सातवां बिंदु: सभी ज्ञात और अवलोकनीय सुखदायी अनुभव, सुन्दरता, पूर्णता, आकर्षण, उत्कट अभिलाषाएं और भावनाएं

करुणा, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की कृपा, दया और उदारता की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति और अभिव्यक्तियाँ हैं, जो मनुष्य को ज्ञात होती हैं।
बुद्धि। चूँकि ब्रह्माण्ड के अन्दर एक ठोस वास्तविकता विद्यमान है, इसलिए
सच्ची दया है; चूँकि सच्ची दया है, इसलिए शाश्वत खुशी होगी।

आठवाँ बिंदु: हमारा विवेक (चेतन स्वभाव) शाश्वत सुख की ओर संकेत करता है। जो कोई भी अपने सजग विवेक की बात सुनता है, वह यह सुनता है कि अनंत काल समाप्त हो गया है।

और बार-बार। अगर हमें पूरा ब्रह्मांड भी दे दिया जाए, तो भी हम नहीं होंगे
अनंत काल की कमी की भरपाई की, क्योंकि हमारे अंदर एक जन्मजात लालसा है और हम थे
इसके लिए बनाया गया है। इस प्रकार शाश्वत खुशी की ओर हमारा स्वाभाविक झुकाव आता है
एक वस्तुपरक वास्तविकता से - अनंत काल का अस्तित्व और अनंत काल के लिए हमारी इच्छा।

नौवां बिन्दु: पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो),
जिन्होंने सच बोला और जिनकी बातें पूरी दुनिया में सच साबित हुई हैं
सदियों से, अनन्त जीवन और अनन्त के आने का प्रचार और वादा किया गया है
खुशी। उनका संदेश पुनरुत्थान पर भी उतना ही केंद्रित था
ईश्वरीय एकता के रूप में, सभी पैगम्बरों और संतों की सर्वसम्मति को संदर्भित करता है।

दसवाँ बिन्दु: क़ुरआन, चालीस पहलुओं वाला एक अद्वितीय चमत्कार,
पुनरुत्थान और अनंत खुशी के आगमन की घोषणा करता है। यह अनावरण करता है
सृष्टि के रहस्य को उजागर करता है और इसके पक्ष में अनगिनत तर्कसंगत तर्क प्रस्तुत करता है
क़यामत। जैसे कि: " उसने तुम्हें चरणों में पैदा किया" (71:14), और कह दो:
"जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया है, वही उन्हें पुनः जीवित करेगा" (36:79),
जिसमें तुलना और उदाहरण है, और तुम्हारा रब अत्याचार नहीं करता
उसके सेवक (41:46), जो परमेश्वर के न्याय को इंगित करता है, हमें दूरबीन प्रदान करते हैं
पुनरुत्थान और अनन्त खुशी को देखने के लिए। मैंने सबूतों पर चर्चा की है
मैंने अपने ग्रंथ नुक्ता (बिंदु: अल-मथनावी अन-नूरी में शामिल) की पहली दो आयतों में इस प्रकार लिखा है: प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन के दौरान क्रमबद्ध और

व्यवस्थित परिवर्तनों से गुजरता है।
विकास की प्रक्रिया, जो निषेचित अवस्था से होकर गुजरती है
अंडाणु, रक्त का थक्का, गांठ का एक टुकड़ा, हड्डियां, मांस, और कोई अन्य रचना या
(विशिष्ट) मानव-आकार का प्राणी। इनमें से प्रत्येक चरण अपने-अपने विशिष्ट सिद्धांतों का पालन करता है। यह विकास और इसके अनुसरण करने वाले सिद्धांत संकेत देते हैं
एक निश्चित उद्देश्य, इच्छा और बुद्धि का प्रयोग। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता,
जो इन चरणों द्वारा मनुष्य का निर्माण करता है, वही शरीर का नवीनीकरण भी करता है
हर साल खुद को। इस नवीनीकरण के लिए विघटित पदार्थों के प्रतिस्थापन की आवश्यकता है
सर्व-प्रदाता ईश्वर द्वारा भोजन की व्यवस्था से उत्पन्न नई कोशिकाओं द्वारा
प्रत्येक शारीरिक भाग की ज़रूरतों के अनुसार।

यदि हम शरीर के नवीनीकरण या मरम्मत के लिए उपयोग किए जाने वाले भोजन के परमाणुओं का निरीक्षण करें, तो हम
उन्हें वायुमंडल, मिट्टी और पानी से एक साथ आते हुए देखें। उनकी गतियाँ
वे इतने सटीक हैं कि ऐसा लगता है कि उन्हें किसी निश्चित स्थान पर जाने के लिए मार्चिंग ऑर्डर मिले हैं। इसके अलावा, उनके जाने का तरीका ऑपरेशन के संचालन को इंगित करता है
वास्तविक एजेंट। तत्वों और रासायनिक पदार्थों की निर्जीव दुनिया से शुरू होकर, वे सब्जियों और जानवरों की सजीव दुनिया में प्रवेश करते हैं।
निश्चित सिद्धांतों के साथ समझौते में जीविका में विकसित , वे प्रवेश करते हैं
शरीर को भोजन के रूप में ग्रहण करना। विभिन्न "रसोई" में "पकाने" और रूपांतरित करने के बाद

कुछ "फ़िल्टर" से गुज़रने के बाद, उन्हें शरीर के भागों में वितरित किया जाता है
सर्व-उदार प्रदाता द्वारा स्थापित सिद्धांतों का पालन करने की आवश्यकता है।

ये सभी प्रक्रियाएं सर्व-प्रावधान नियम के अनुसार होती हैं
किसी के अपने कानून और अंधे संयोग, अराजक संयोग के हस्तक्षेप के बिना,
बहरा स्वभाव, और अचेतन कारण। वे पूर्ण ज्ञान, बुद्धि,
और अंतर्दृष्टि। जिस भी अवस्था में कोई परमाणु शरीर की कोशिका में चारों ओर के तत्व से प्रवेश करता है, वह ऐसा एक व्यवस्थित तरीके से करता है और उस अवस्था के अनुरूप होता है
निर्दिष्ट कानून। जिस भी स्तर तक यह यात्रा करता है, यह इस तरह के क्रम में कदम रखता है कि यह
ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्वतः स्पष्ट है कि यह एक सर्व-बुद्धिमान चालक के आदेश पर आगे बढ़ रहा है।
अपने लक्ष्य और उद्देश्य से कभी विचलित न होते हुए, यह धीरे-धीरे एक चरण से दूसरे चरण तक आगे बढ़ता है
यह एक स्तर से दूसरे स्तर तक तब तक चलता रहता है जब तक कि अपने पालनकर्ता के आदेश पर यह अपनी उचित स्थिति तक नहीं पहुंच जाता। वहां पहुंचकर यह खुद को स्थापित कर लेता है और काम करना शुरू कर देता है।

भोजन की व्यवस्था और उसे उन कोशिकाओं तक पहुंचाना जिनके लिए वह नियत है
ईश्वरीय इच्छा और ईश्वरीय संकल्प को प्रदर्शित करें। यह प्रक्रिया इतनी उत्तम है'
ऐसा क्रम और व्यवस्था कि प्रत्येक कण का अपना अंतिम गंतव्य प्रतीत होता है
उसके “माथे” पर लिखा है। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि सर्व-महान सृष्टिकर्ता,
जो असीम शक्ति और सर्वव्यापी बुद्धि के साथ पदार्थ के कणों से लेकर ग्रहों तक सृष्टि पर प्रभुत्व रखते हैं और उन्हें घुमाते हैं
व्यवस्था और संतुलन के बिना, क्या सृष्टि को पुनर्जीवित करने में विफल हो सकता है? कुरान की आयतें खुली हैं
हमारी पहली सृष्टि के साथ इसकी तुलना करके इस पुनरुद्धार पर हमारी नज़र:

> कह दो, "जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया, वही उन्हें फिर जीवित करेगा।" (36:79)

> वह सृष्टि की शुरुआत करता है, फिर उसे वापस लाता है, और यह उसके लिए आसान हो जाता है
> उसे. (30:27)

आराम करने के लिए बिखरी हुई बटालियन के सैनिक बिगुल की ध्वनि पर पुनः एकत्र हुए
जब उन्हें बटालियन बनाने के लिए एकत्र किया गया था, तब की तुलना में अधिक आसानी से और आसानी से। इसी तरह, मन यह निष्कर्ष निकालेगा कि यह उनके मूल निर्माण की तुलना में आसान है कि एक शरीर के आवश्यक कण, जिन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान परस्पर घनिष्ठ संबंध और परिचितता स्थापित की थी, जब देवदूत इकट्ठा होते हैं
इसराफिल तुरही बजाता है। सभी घटक भागों का एक साथ होना भी ज़रूरी नहीं है
मौजूद हैं; बल्कि, मौलिक भाग और आवश्यक कण, जो कि समान हैं
नाभिक और बीज और जिसे एक भविष्यवक्ता परंपरा "पूंछ की जड़" कहती है
(ओएस कोक्सीक्स), दूसरी रचना के आधार और नींव के लिए पर्याप्त हो सकता है।
सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता इसी आधार पर मानव शरीर का पुनर्निर्माण करेगा।

निम्नलिखित अनुभाग सादृश्य द्वारा व्यक्त सत्य को सारांशित करता है
न्याय के बारे में ऐसी आयतें हैं जैसे: तुम्हारा रब अपने बन्दों पर अत्याचार नहीं करता।

हम देखते हैं कि क्रूर, पापी और अत्याचारी व्यक्ति आमतौर पर
आरामदायक और शानदार जीवन जीते हैं जबकि ईश्वरीय, उत्पीड़ित लोग गरीबी और कठिनाई में जीते हैं। मृत्यु उन्हें समान बनाती है, क्योंकि दोनों ही चले गए होते
यदि कोई सर्वोच्च न्यायाधिकरण न होता तो उनके कर्मों पर सदैव प्रश्न नहीं उठाए जाते।
हालाँकि, ईश्वरीय बुद्धि और न्याय कभी भी किसी भी गलत काम को होने नहीं देते
किसी का ध्यान नहीं जाता और अन्याय को रोका जाता है, और इसलिए इसकी स्थापना की आवश्यकता होती है
बुराई को दण्डित करने और अच्छाई को पुरस्कृत करने के लिए एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण।

चूँकि यह दुनिया पूर्ण विकास के लिए बिल्कुल अनुकूल नहीं है
मानवीय क्षमताओं को साकार करने के लिए हमें किसी दूसरी दुनिया में जाना ही पड़ता है।
सार व्यापक है और अनंत काल के लिए बंधा हुआ है। जैसा कि हमारे पास एक अत्यंत
व्यापक प्रकृति के कारण, हम बहुत बड़े अपराध और गलत काम कर सकते हैं।
इसलिए, हमें बिना किसी व्यवस्था और अनुशासन के अपने हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता, न ही हमें अस्तित्वहीन होने के लिए छोड़ा जा सकता है। नरक हमारा इंतज़ार कर रहा है
हम खुले मुंह से हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, और स्वर्ग हमारी प्रतीक्षा कर रहा है खुली बाहों से।

ऊपर बताए गए श्लोकों का अध्ययन करें, जिनमें तर्कसंगत बातें हैं
पुनरुत्थान के लिए तर्क। साथ ही, आपके द्वारा अनुसरण किए जा रहे दस बिंदु आपको पुनरुत्थान की पूर्ण आवश्यकता के लिए एक स्पष्ट अंतर्दृष्टि और मजबूत सबूत देते हैं। इसके अलावा, ऑल-मैजेस्टिक मेकर के अधिकांश
सुन्दर नाम जैसे कि सर्वज्ञ, सर्वदयालु, सर्वरक्षक,
और सर्व-न्यायी वास्तव में यह चाहते हैं कि पुनरुत्थान घटित हो, शाश्वत जीवन आए, और शाश्वत सुख की प्राप्ति हो।
परिणामस्वरूप, पुनरुत्थान की आवश्यकता और अपेक्षा इतनी प्रबल है
इसमें संदेह या अनिश्चितता के लिए कोई जगह नहीं है।

तीसरा मूल सिद्धांत: जिस प्रकार पुनरुत्थान की आवश्यकता और अपेक्षा निश्चित है, उसी प्रकार जो इसे लाएगा वह ऐसा कर सकता है। उसकी शक्ति है
पूर्ण है और उसमें कोई कमी नहीं है। उसके संबंध में सब कुछ एक जैसा है
शक्ति। वह वसंत को फूल की तरह आसानी से बनाता है। सभी सूर्य, तारे, दुनिया और
परमाणु उसकी शक्ति और महिमा के साक्षी हैं। इसे देखते हुए, कोई कैसे संदेह कर सकता है
कि वह अंतिम न्याय के लिए मृतकों को जीवित कर सकता है? यह देखा गया है कि एक सर्वशक्तिमान महामहिम एक नए वातावरण को अस्तित्व में लाता है
प्रत्येक शताब्दी में, प्रत्येक वर्ष ब्रह्माण्ड का नवीनीकरण होता है, तथा प्रत्येक वर्ष एक नई दुनिया का निर्माण होता है।
दिन। वह कई क्षणभंगुर दुनियाओं को सदियों के रूप में समय की डोर पर लटका देता है,
एक परिपूर्ण, निश्चित उद्देश्य के लिए वर्षों या दिनों तक का समय बीत जाता है। वह अपना दर्शन प्रकट करता है
पृथ्वी को वसंत के वस्त्र पहनाकर, मानो वह एक फूल हो, बुद्धि की पूर्णता और उसकी कला की सुन्दरता, तथा फिर उसे पुनरुत्थान के अनगिनत उदाहरणों से सजाना और अलंकृत करना।

आयत: तुम्हारी रचना और पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28)
घोषणा करता है कि सबसे बड़ी चीज़ या अनगिनत चीज़ों का निर्माण और पुनरुत्थान
ईश्वर की शक्ति के लिए सबसे छोटी, एक चीज़ के रूप में चीज़ें आसान है। ऐसा इसलिए है क्योंकि

दिव्य शक्ति दिव्य सार में अंतर्निहित है और उससे अविभाज्य है, इसलिए इसके साथ जुड़ी कोई अक्षमता नहीं हो सकती। दिव्य शक्ति अस्तित्व के आंतरिक, अमूर्त आयाम में कार्य करती है, इसलिए कोई भी बाधा इसके संचालन में बाधा नहीं डाल सकती। दिव्य शक्ति एक नियम की तरह काम करती है जिसका हर चीज के साथ एक जैसा संबंध होता है, इसलिए इसके संबंध में विशेष सार्वभौमिक के बराबर हैं। अब हम इन तीन तर्कों की व्याख्या करेंगे: पहला तर्क: दिव्य शक्ति दिव्य सार में अंतर्निहित है और उससे अविभाज्य है, इसलिए इसके साथ जुड़ी कोई अक्षमता नहीं हो सकती।

अन्यथा, दो विपरीतताओं का एक साथ अस्तित्व मानना पड़ेगा। चूँकि नपुंसकता ईश्वरीय शक्ति से जुड़ी नहीं हो सकती, इसलिए इसकी कोई डिग्री नहीं हो सकती, क्योंकि किसी चीज़ के अस्तित्व में डिग्री केवल विपरीतताओं के हस्तक्षेप से ही आती है। तापमान की डिग्री ठंड के हस्तक्षेप के कारण होती है, और सुंदरता की डिग्री कुरूपता के हस्तक्षेप के कारण होती है।

यह ब्रह्मांड में सभी गुणों के लिए सत्य है। चूँकि आकस्मिक वस्तुएँ और प्राणी अनिवार्य रूप से स्वयं से अस्तित्व में नहीं होते हैं और उनमें कोई पूर्ण गुण नहीं होते हैं जो स्वयं में अंतर्निहित और अविभाज्य हों और स्वयं में उत्पन्न हों, इसलिए उनमें विपरीतताएँ और डिग्री होती हैं। इस वजह से, आकस्मिक दुनिया परिवर्तन और रूपांतरण के अधीन है।

चूँकि शाश्वत दिव्य शक्ति में कोई डिग्री नहीं होती, इसलिए उसके लिए कणों और आकाशगंगाओं का निर्माण और संचालन करना उतना ही आसान है। मानवता को पुनर्जीवित करना उसके लिए उतना ही आसान है जितना एक व्यक्ति को पुनर्जीवित करना, और वसंत का निर्माण करना उतना ही आसान है जितना एक फूल का निर्माण करना। यदि सृजन या पुनरुत्थान को कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता, तो फूल का निर्माण करना वसंत के निर्माण जितना ही कठिन होता। लेकिन जब एकता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सब कुछ बनाना एक चीज बनाने जितना आसान है।

दूसरा तर्क: ईश्वरीय शक्ति चीज़ों के आंतरिक, अमूर्त आयाम (आध्यात्मिक साम्राज्य) में काम करती है। दर्पण की तरह, ब्रह्मांड के भी दो पहलू हैं: भौतिक (दर्पण के रंगीन चेहरे जैसा) और अमूर्त (दर्पण के चमकते चेहरे जैसा और निर्माता की ओर देखना)। भौतिक पक्ष में विपरीत मौजूद हैं, जो सुंदरता और कुरूपता, अच्छाई और बुराई, बड़ाई और छोटाई, कठिनाई और आसानी को प्रकट करता है। ब्रह्मांड के सर्व-महान निर्माता इस पक्ष में देखे गए कारणों के पर्दे के पीछे अपनी शक्ति के कार्यों को छिपाते हैं ताकि जो लोग समझ से वंचित हैं, वे उनकी शक्ति के साधारण चीज़ों से संबंध को उनके लिए अनुचित न समझें। उनकी गरिमा और महिमा के लिए यह आवश्यक है। कारणों का सृजन पर कोई वास्तविक प्रभाव नहीं होता, क्योंकि यह उनकी एकता और एकता का उल्लंघन करेगा। अमूर्त दुनिया, बिल्कुल स्पष्ट और पारदर्शी, भौतिक दुनिया की स्थूलता को समाहित नहीं करती है। चूँकि ईश्वरीय शक्ति सीधे वहाँ काम करती है, इसलिए कारण और प्रभाव का कोई प्रभाव नहीं होता, बाधाएँ हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं, और एक कण का निर्माण करना सूर्य के निर्माण जितना आसान है।

निष्कर्ष यह है कि ईश्वरीय शक्ति सरल, अनंत और अपरिहार्य है। दिव्य "सार" का गुण। यह शक्ति सीधे उस क्षेत्र में कार्य करती है जो स्पष्ट, परिष्कृत और पारदर्शी है, जिसमें विरोध करने के लिए कुछ भी नहीं है या उसमें हस्तक्षेप करें। इस प्रकार एक समुदाय और एक समुदाय के बीच कोई अंतर नहीं है व्यक्तिगत, विशेष और सार्वभौमिक या शक्ति के संबंध में बड़ा और छोटा।

तीसरा तर्क: ईश्वरीय शक्ति एक कानून की तरह काम करती है जिसका कोई मतलब नहीं है। हर चीज़ के साथ संबंध। हम इस सूक्ष्म मामले को सृष्टि की कई विशेषताओं के माध्यम से समझने योग्य बनाएँगे। पारदर्शिता, पत्राचार और
पारस्परिकता, संतुलन, सुव्यवस्था, अमूर्तता और आज्ञाकारिता ब्रह्माण्ड में ऐसी अद्भुत चीजें हैं जो अनेक को कुछ के बराबर बनाती हैं, तथा महान को छोटे के बराबर बनाती हैं।

पहली विशेषता: पारदर्शिता। दोनों तरफ एक ही सूर्य का प्रतिबिंब समुद्र की सतह और पानी की एक बूंद में एक ही पहचान है। अगर पृथ्वी कांच के टुकड़ों से मिलकर बना यह टुकड़ा बिना किसी बाधा के सूर्य को परावर्तित करेगा और एक दूसरे के साथ हस्तक्षेप भी नहीं करेगा। यदि सूर्य एक सचेतन स्वतंत्र प्राणी होता जिसके पास इच्छाशक्ति होती जो अपने प्रकाश को परावर्तित कर सकता था
जानबूझकर या सचेत रूप से, इसका एक कण या पूरी पृथ्वी पर प्रकाश देना या परावर्तित होना समान रूप से आसान होगा।

दूसरी विशेषता: पत्राचार और पारस्परिकता। अगर हम एक जलती हुई रोशनी के साथ खड़े हों लोगों के एक बड़े घेरे के बीच में मोमबत्ती जलाएं, जिनमें से प्रत्येक के हाथ में एक मोमबत्ती है प्रत्येक दर्पण एक ही प्रतिबिंब को धारण करेगा, तथा कोई भी दर्पण किसी अन्य दर्पण में बाधा उत्पन्न नहीं करेगा।

तीसरी विशेषता: संतुलन। अगर हम दो चीज़ों का वजन करें - दो सितारे या दो अंडे या दो परमाणु - एक तराजू के साथ जो प्रत्येक वस्तु को पूर्ण परिशुद्धता के साथ मापता है, किसी भी तराजू पर लगाया गया कोई भी अतिरिक्त बल संतुलन को बिगाड़ देगा।

चौथी विशेषता: व्यवस्थितता। हम एक बड़े जहाज को उतनी ही आसानी से चला सकते हैं जितनी आसानी से एक छोटे जहाज को। खिलौना, क्योंकि इसकी व्यवस्थित प्रणाली के सभी भाग आपस में जुड़े हुए हैं।

पांचवी विशेषता: अमूर्तता या अमूर्तता। एक जीवित प्राणी का आकार इसका उसके वास्तविक सार या प्रकृति पर कोई असर नहीं पड़ता, क्योंकि ये अमूर्त और निराकार हैं हर प्राणी की विशेषताएँ एक जैसी होती हैं। व्यक्तिगत रूपों में अंतर भ्रम पैदा न करें। उदाहरण के लिए, एक छोटी मछली का सार एक जैसा होता है या प्रकृति में एक बेसकिंग-शार्क (दोनों मछली हैं) और एक सूक्ष्म जीव है गैंडे के समान सार (दोनों जीवित जानवर हैं)।

छठी विशेषता: आज्ञाकारिता। एक कमांडर सेना को मार्च करने का आदेश देकर उतनी ही आसानी से आगे बढ़ाता है, जितनी आसानी से एक अकेला सैनिक आगे बढ़ता है। ब्रह्मांड में आज्ञाकारिता की वास्तविकता इस प्रकार है: हर चीज़ अपनी पूर्णता की ओर झुकती है।
एक आवश्यकता में विकसित होती है, एक बढ़ी हुई आवश्यकता एक तड़प बन जाती है, और एक बढ़ी हुई तड़प आकर्षण बन जाती है। झुकाव, ज़रूरत, तड़प और आकर्षण ईश्वरीय नियमों के रूप में कार्य करें और चीजों को साकार करने के लिए डिज़ाइन किए गए तरीकों से कार्य करें

उनकी पूर्णता। सृष्टि की अंतिम, पूर्ण पूर्णता तब होती है जब वह बढ़ती है
पूर्ण अस्तित्व में। किसी चीज़ की सापेक्ष पूर्णता सापेक्ष अस्तित्व है
जो इसकी सभी संभावनाओं को प्रभावी बनाता है। यही कारण है कि ब्रह्मांड की आज्ञाकारिता
ईश्वरीय आदेश "हो जाओ" और यह है (36: 82) उससे भिन्न नहीं है
एक कण का.

सृष्टि, सृष्टिकर्ता के इस दिव्य आदेश का पालन करती है।
शाश्वत इच्छा, झुकाव, आवश्यकता, तड़प और आकर्षण की उन्हीं शक्तियों के माध्यम से। इन सभी को एक ही ईश्वर
द्वारा सभी प्राणियों पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है
विल. नाजुक पानी, जो लोहे को तोड़ने या यहां तक कि उसे तोड़ने का आदेश देने पर उसे तोड़ देता है
स्थिर हो जाना, इस आज्ञाकारिता की शक्ति को दर्शाता है।

यदि दोषपूर्ण, सीमित, कमजोर और गैर-रचनात्मक आकस्मिकताएं इस प्रकार प्रदर्शित होती हैं
इन छह विशेषताओं या घटनाओं के सामने प्रभाव, निश्चित रूप से, सब कुछ है
दिव्य शक्ति के आदेश के प्रति समान रूप से संवेदनशील। यह शक्ति, जिसने
ब्रह्माण्ड को अस्तित्व से अस्तित्व में लाता है और अपने माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है
अद्भुत कार्य, अनंत, शाश्वत और पूर्णतः परिपूर्ण है। कुछ भी मुश्किल नहीं है
ध्यान दें कि ईश्वरीय शक्ति को इन विशेषताओं के पैमाने में नहीं मापा जा सकता है; उनका उल्लेख केवल विषय की कुछ समझ प्राप्त करने के लिए किया गया है।

निष्कर्षतः: शाश्वत दिव्य शक्ति अनंत है; यह सबमें अंतर्निहित है और
सर्व-पवित्र सत्ता से अविभाज्य; यह शुद्ध, निराकार में कार्य करता है
अस्तित्व का आयाम। यह आयाम सीधे इसकी ओर मुड़ जाता है।
या दैवीय शक्ति के संबंध में, इस आयाम का भौतिक अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव है। साथ ही, यह
ईश्वरीय शक्ति के समक्ष किसी भी बाधा से मुक्त है।
ईश्वरीय शक्ति का संचालन तथा भिन्न, भ्रामक विशेषताएं होना।
इसके अलावा, यह सृष्टि के सभी दिव्य नियमों का पालन करता है। इस प्रकार दिव्य शक्ति सृजन कर सकती है
सब कुछ समान आसानी से। यह पुनरुत्थान पर सभी मृत लोगों को पुनर्जीवित कर सकता है
दिन उतनी ही आसानी से जैसे यह वसंत में एक कीट को पुनर्जीवित करता है। यह देखते हुए, दिव्य
घोषणा: आपकी रचना और पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान सत्य है
और अतिशयोक्ति नहीं। इससे यह साबित होता है कि जो एजेंट अंतिम दिन ब्रह्मांड को नष्ट करेगा और फिर से
बनाएगा, वह ऐसा कर सकता है।

चौथा मूलभूत सिद्धांत: चूँकि घटना के लिए एक आवश्यक कारण है
पुनरुत्थान और उसे लाने वाला ऐसा कर सकता है, इसी प्रकार पुनरुत्थान भी ऐसा कर सकता है।
दुनिया पुनरुत्थान के लिए तैयार है। यहाँ चार संबंधित मामले हैं:
दुनिया नष्ट हो सकती है, यह नष्ट हो जाएगी, नष्ट हुई दुनिया को फिर से बनाया जा सकता है
और परलोक में भी उसका पुनरुत्थान होगा और उसका पुनर्निर्माण किया जाएगा।

पहली बात: ब्रह्माण्ड की मृत्यु संभव है। क्योंकि अगर कुछ हुआ तो
विकास के नियम के अधीन है, इसे अंतिम लक्ष्य तक विकसित होना ही होगा।
जो अंतिम लक्ष्य तक विकसित होता है उसका जीवनकाल सीमित होना चाहिए और इसलिए,
एक निश्चित प्राकृतिक अंत। जिसका अंत निश्चित है वह अनिवार्य रूप से मर जाता है। जैसे

मानवता एक सूक्ष्म जगत है जो मृत्यु के अधीन है, इसलिए ब्रह्माण्ड, एक वृहद मानव है
अस्तित्व भी मृत्यु के अधीन है। तदनुसार, यह नष्ट हो जाएगा और पुनरुत्थान की सुबह पुनर्जीवित हो जाएगा।
जैसे एक जीवित पेड़ (एक लघु
ब्रह्मांड) स्वयं को विनाश से नहीं बचा सकता, ब्रह्मांड (ब्रह्मांड की शाखा ...
सृष्टि के वृक्ष से उगने वाली सृष्टि) को न तो बचाया जा सकता है
विनाश और विघटन की मरम्मत और नवीकरण किया जाना चाहिए।

यदि ब्रह्माण्ड किसी बाह्य विनाशकारी घटना से नष्ट नहीं होता,
अनन्त इच्छा की अनुमति से, यह अंततः मरना शुरू कर देगा। यहाँ तक कि वैज्ञानिक भी यही कहते हैं। मृत्यु की
पीड़ा सहना शुरू कर देगा, यह तीखी चीख़ निकालेगा और क्या करेगा
निम्नलिखित श्लोकों में कहा गया है कि जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा, और
जब तारे गिर पड़ेंगे और पहाड़ हिलने लगेंगे (81:1-3); और जब
आकाश खुल जाता है, और जब तारे अस्त-व्यस्त होकर बिखर जाते हैं, और
जब समुद्र फूट पड़ा (82:1-3)।

एक महत्वपूर्ण सूक्ष्म बिंदु: पानी अपने नुकसान के लिए जम जाता है (अपना स्वाद खो देता है)
आवश्यक तरल रूप); बर्फ पिघलकर हानिकारक हो जाती है (अपना आवश्यक ठोस रूप खो देती है
स्थिति); किसी वस्तु का सार उसकी सामग्री की कीमत पर मजबूत हो जाता है
रूप; भाषा अर्थ की हानि के लिए भद्दी हो जाती है; जैसे-जैसे शरीर अधिक ठोस होता जाता है, आत्मा कमजोर
होती जाती है, और शरीर भी कमजोर होता जाता है।
आत्मा अधिक प्रकाशित हो जाती है। इसी तरह, ठोस दुनिया परिष्कृत हो जाती है
जीवन के बाद के जीवन के पक्ष में। रचनात्मक शक्ति जीवन में सांस लेती है
घने, ठोस और निर्जीव पदार्थों को एक आश्चर्यजनक गतिविधि के माध्यम से अलग किया जा सकता है।
यह सुझाव देता है कि यह जीवन के प्रकाश के माध्यम से परलोक के लाभ के लिए उस ठोस दुनिया को पिघलाता
है, परिष्कृत करता है और प्रकाशित करता है।

रूपों के विपरीत, कोई भी सत्य, चाहे वह कितना भी कमजोर क्यों न हो, कभी नष्ट नहीं होता। बल्कि, यह
भौतिक जगत में विभिन्न रूप धारण करता है। एक सत्य पनपता है और फैलता है,
जबकि रूप कमजोर हो जाते हैं और बनने में सक्षम होने के लिए अधिक परिष्कृत हो जाते हैं
स्थिर, विकसित सत्य के लिए उपयुक्त। वह सत्य जो किसी वस्तु का निर्माण करता है
सार अपने रूप की शक्ति के व्युत्क्रमानुपाती होता है: रूप सघन होता जाता है
जैसे-जैसे सत्य कमजोर होता जाता है, तथा रूप कमजोर होता जाता है, सत्य मजबूत होता जाता है।
यह नियम हर उस चीज़ के लिए समान है जो विकसित और विकसित होती है। इसे देखते हुए, भौतिक-वास्तविक
दुनिया, जो ब्रह्मांड के महान सत्य को समाहित करने वाला एक रूप है,
सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की अनुमति से, यह धरती टूट जाएगी और अधिक खूबसूरती से फिर से बनाई जाएगी।
एक दिन, जिस दिन धरती को दूसरी धरती में बदल दिया जाएगा (14:48)
संक्षेप में, संसार की मृत्यु संभव है और यह अवश्य ही मरेगी।

दूसरा मामला: संसार की अंतिम मृत्यु की पुष्टि सभी ईश्वर-प्रकट धर्मों द्वारा की गई है, सभी शुद्ध और संत
व्यक्तियों द्वारा इसका समर्थन किया गया है, और संकेत दिया गया है
ब्रह्मांड के परिवर्तन, रूपांतरण और परिवर्तन से।
इस गेस्ट हाउस के रहने वाले निवासियों के प्रतिस्थापन, जो सभी अच्छे हैं-

वे अपने नियत समय पर आते और फिर चले जाते (मृत्यु के माध्यम से) ताकि वे
नए लोगों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है, यह भी इस दुनिया की मृत्यु का संकेत देता है।

यदि आप दुनिया की मृत्यु की कल्पना उस तरह करना चाहते हैं जैसा कि कुरान में वर्णित है,
इस बात पर विचार करें कि कैसे और किस सूक्ष्म और सटीक अंतर्संबंध में ब्रह्मांड के घटक भागों को एक उदात्त और नाजुक रूप में व्यवस्थित किया गया है
प्रणाली। यदि किसी भी खगोलीय पिंड को अपनी धुरी छोड़ने के लिए कहा जाए, तो ब्रह्मांड
मौत की पीड़ा में फेंक दिया जाएगा। तारे टकराएंगे, ग्रह बिखर जाएंगे, और विस्फोटित गोले की आवाज़ अंतरिक्ष में भर जाएगी। पहाड़
उड़ेंगे, तो समुद्र में आग के बड़े-बड़े टुकड़े फूट पड़ेंगे और पृथ्वी चपटी हो जाएगी।
अनन्त शक्ति ब्रह्माण्ड को हिलाएगी और परिष्कृत करेगी, जिसके परिणामस्वरूप
स्वर्ग और नरक के तत्व एक दूसरे से अलग हो जायेंगे।

तीसरी बात: ब्रह्माण्ड को पुनर्जीवित किया जा सकता है, जैसा कि बाइबल में सिद्ध किया गया है।
दूसरा मूल सिद्धांत, ईश्वरीय शक्ति दोषपूर्ण नहीं है। इसके अलावा,
इसके लिए प्रबल आवश्यकता है और यह संभव है। यदि इस बात की प्रबल आवश्यकता है कि कुछ संभव होना चाहिए, तो इसे ऐसी चीज़ के रूप में माना जाता है जो निश्चित रूप से घटित होगी।

एक और महत्वपूर्ण बात: जो कुछ घटित होता है उसकी बारीकी से जांच
ब्रह्मांड में दो विपरीत तत्व सर्वत्र फैल गए हैं
और जड़ हो जाते हैं। उनके संघर्ष से अच्छाई और बुराई, लाभ और
हानि, पूर्णता और दोष, प्रकाश और अंधकार, मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता,
विश्वास और अविश्वास, आज्ञाकारिता और विद्रोह, भय और प्रेम, इत्यादि।
इस प्रकार के निरंतर संघर्ष के कारण ब्रह्माण्ड में निरंतर परिवर्तन और रूपांतरण होता रहता है, जिससे एक नई दुनिया के तत्व उत्पन्न होते हैं।

ये विरोधी तत्व अंततः दो अलग-अलग दिशाओं में अनंत काल की ओर ले जाएंगे और स्वर्ग और नर्क के रूप में मूर्त रूप लेंगे। शाश्वत दुनिया
इस क्षणभंगुर दुनिया के आवश्यक तत्वों से बना होगा, जो दिया जाएगा
स्थायित्व। स्वर्ग और नर्क पृथ्वी पर उगने वाले दो विपरीत फल हैं
सृष्टि के वृक्ष की दो शाखाएँ, सृष्टि की शृंखला के दो परिणाम,
दो कुण्ड चीजों और घटनाओं की दो धाराओं से भरे हुए हैं, दो
ध्रुव जहां प्राणी लहरों की तरह बहते हैं, और वे स्थान जहां ईश्वरीय कृपा होती है
और दैवीय क्रोध स्वयं प्रकट होते हैं। जब दैवीय शक्ति ब्रह्मांड को हिलाएगी तो वे अपने विशेष निवासियों से भर जाएंगे।

ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर, शाश्वत सर्वज्ञ है और इसकी आवश्यकता है
उनकी शाश्वत कृपा और बुद्धि ने इस संसार को एक परीक्षण क्षेत्र, उनके सर्वसुंदर नामों को प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण, एक विशाल पृष्ठ जिस पर लिखा जा सके, के रूप में बनाया है।
उनकी नियति और शक्ति की कलम। यहाँ लोगों को उनके विकास के लिए परखा जाता है
क्षमताएँ, और क्षमताओं का विकास अभिव्यक्ति का कारण बनता है
उनकी क्षमताओं का प्रकटीकरण, उनकी क्षमताओं के उद्भव को जन्म देता है।

सापेक्ष सत्य, जो बदले में, सर्व-महान निर्माता के सर्व-सुंदर नामों को उनके शिलालेखों को प्रकट करने और ब्रह्मांड को शाश्वत रूप से चाहने वाले का संदेश बनाने का कारण बनता है। यह इस परीक्षण के माध्यम से है कि उत्कृष्ट आत्माओं के हीरे जैसे सार को आधार वाले लोगों के कोयले जैसे पदार्थ से अलग किया जाता है।

इन जैसे कई अन्य सूक्ष्म, उत्कृष्ट बुद्धिमत्तापूर्ण उदाहरणों के लिए, ईश्वर ने इच्छा की कि सृष्टि, साथ ही साथ इसका परिवर्तन और आशोधन भी घटित हो।
उसने विपरीतताओं को एक दूसरे के सामने खड़ा किया—लाभ को हानि से, अच्छाई को बुराई से, और सुंदरता को कुरूपता से मिलाया। उन्हें आटे की तरह एक साथ गूंथकर, उसने ब्रह्मांड को परिवर्तन के नियम और पूर्णता के सिद्धांत के अधीन कर दिया।

जिस दिन परीक्षण का धाम बंद हो गया है, परीक्षण और परीक्षा का समय समाप्त हो गया है, सर्वसुंदर नामों ने अपना कार्य पूरा कर लिया है, दिव्य नियति की कलम ने अपना लेखन समाप्त कर दिया है, दिव्य शक्ति ने अपनी कला के शिलालेख पूरे कर लिए हैं, प्राणियों ने अपने कर्तव्य और सेवाएं पूरी कर दी हैं, परलोक के क्षेत्र में बीज बो दिए गए हैं, पृथ्वी ने दिव्य शक्ति के चमत्कारों के सभी चमत्कार प्रदर्शित कर दिए हैं, इस क्षणभंगुर दुनिया ने समय की चित्र-पट पर सभी शाश्वत दृश्यों को लटका दिया है, और महामहिम निर्माता की शाश्वत बुद्धि और अनुग्रह ने मांग की है कि परीक्षण के परिणाम घोषित किए जाएं, दिव्य सर्वसुंदर नामों की अभिव्यक्तियों और दिव्य नियति की कलम के संदेशों की सच्चाई का अनावरण किया जाए, शक्ति की कला के नमूने जैसे शिलालेखों के मूल प्रदर्शित किए जाएं, प्राणियों द्वारा किए गए कर्तव्यों के लाभ और उद्देश्य प्रदर्शित किए जाएं और उनकी सेवाओं का भुगतान किया जाए, ब्रह्मांड की पुस्तक के शब्दों द्वारा व्यक्त अर्थों की सच्चाई देखी जाए पूरी तरह से विकसित हो, एक सर्वोच्च न्यायालय स्थापित हो, दुनिया में जो कुछ भी हुआ है और जो कुछ भी है, उसके अर्थों को दर्शाने वाले दृश्य प्रदर्शित किए जाएं, और "प्राकृतिक" स्पष्ट कारणों का पर्दा हटा दिया जाए ताकि सब कुछ सीधे-सीधे सर्व-महान निर्माता को सौंप दिया जाए - उस दिन शाश्वत सर्वज्ञ ब्रह्मांड को नष्ट कर देगा ताकि इसे परिवर्तन और क्षणभंगुरता से बचाया जा सके और इसे शाश्वत बनाया जा सके और इसके विपरीत को अलग किया जा सके। यह विभाजन नरक को उसकी सारी भयावहता के साथ प्रकट करेगा, और स्वर्ग को उसकी सारी सुंदरता और वैभव के साथ प्रकट करेगा। नरक के लोगों को यह धमकी दी जाएगी: अब तुम पापियों, इस दिन अपने आप को अलग रखो (36:59), जबकि स्वर्ग के लोगों का स्वागत इस तरह किया जाएगा: शांति तुम पर हो। तुम अच्छे हो; हमेशा के लिए रहने के लिए अंदर जाओ (39:73)। अपनी पूर्ण शक्ति के माध्यम से, शाश्वत सर्वज्ञ दोनों निवास स्थानों के निवासियों को एक शाश्वत, अपरिवर्तनीय अस्तित्व प्रदान करेगा। वे बूढ़े नहीं होंगे या शारीरिक रूप से विघटन या विघटन से पीड़ित नहीं होंगे, क्योंकि कोई भी परिवर्तन करने के लिए कुछ भी नहीं होगा।

चौथी बात: इस संसार को नष्ट करने के बाद, जिसने इसे बनाया है, वह इसे और अधिक सुंदर रूप देगा और इसे प्रभु के भवन में बदल देगा।

इसके बाद, कुरान, जिसमें हजारों तर्कसंगत प्रमाण हैं,
और अन्य दिव्य शास्त्र इस पर सहमत हैं, जैसा कि सर्वशक्तिमान के शास्त्र भी सहमत हैं।
महिमा और अनुग्रह के गुण और साथ ही उनके सुंदर नाम। इसके अलावा,
उसने वादा किया था कि वह पुनरुत्थान और सर्वोच्च प्रभुता लाएगा।
अपने पैगम्बरों को भेजे गए अपने सभी स्वर्गीय आदेशों को एकत्रित करके,
जो इस बात पर सहमत हैं कि वह अपने वादों को पूरा करता है। पैगम्बर मुहम्मद ही वह व्यक्ति हैं जो अपने वादों को पूरा करता है।
सबसे पहले इसकी पुष्टि करने के लिए, अपने एक हजार चमत्कारों की शक्ति के साथ। सभी संत और धर्मी विद्वान भी इसकी पुष्टि करते हैं। अंत में, ब्रह्मांड सभी सबूतों के साथ इसकी भविष्यवाणी करता है।

संक्षेप में, यह बात उतनी ही निश्चित है, जितनी कि आज शाम को अस्त होने के बाद अगली सुबह सूर्य का उदय होना, कि "सत्य का सूर्य" भगवान के रूप में प्रकट होगा।
इस संसार के जीवन के पश्चात् परलोक का जीवन निर्धारित होता है।

मैं ईश्वर के नाम, अत्यन्त बुद्धिमान् तथा कुरान की कृपा से प्रेरित होकर,
बुद्धि को समझाने के लिए इस सत्य के प्रमाणों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है और तैयार हैं
इसे स्वीकार करने के लिए हृदय में शक्ति नहीं है। लेकिन ब्रह्माण्ड के रचयिता के शब्दों में शक्ति नहीं है।
इस मामले में बोलने का सबसे बड़ा अधिकार है। तो, शाश्वत प्रवचन सुनो
सर्वज्ञ निर्माता, जिसमें वह समय और स्थान की परवाह किए बिना सभी को संबोधित करता है
जवाब में, हमें उस पर विश्वास करना चाहिए और उसकी पुष्टि करनी चाहिए जो वह कहता है:

> जब धरती एक भयंकर भूचाल के साथ कांपेगी और
> अपना बोझ फेंकता है, और मनुष्य चिल्लाता है: "क्या बात है
> उस दिन वह अपनी ख़बरें सुनाएगा, क्योंकि तुम्हारे रब ने उसे अपने पास रख लिया है।
> उस दिन मनुष्य बिखरे हुए समूहों में आगे आएंगे
> जो कोई भी अच्छा काम करेगा, उसे उसके कर्मों का फल मिलेगा।
> देखो, जो कोई कण भर भी बुराई करेगा, वह उसे देखेगा। (99:1–8)
>
> उन लोगों को शुभ सूचना दे दो जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए।
> उनके लिए बाग़ हैं जिनमें से नदियां बहती हैं।
> उनमें से फल प्रदान किए गए, उन्होंने कहा, "यह वही है जो हमें पहले प्रदान किया गया था।"
> क्योंकि वे उन्हें समानता में दिए गए हैं (
> उन्हें संसार में और उसके ठीक पहले जो कुछ दिया गया था,
> बाग़) इसके अलावा, उनके लिए हमेशा के लिए शुद्ध पत्नियाँ हैं।
> (2:25)
>
> तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।
>
> हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना।
> हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार पर कृपा बरसाइये।
> जैसे तूने हमारे स्वामी इब्राहीम और उसके परिवार को आशीर्वाद दिया।
> आप सर्वप्रशंसनीय, सर्वोत्कृष्ट हैं।

तीसवाँ वचन

तीसवाँ वचन

अहंकार या मानव स्वत्व का प्रदर्शन
परमाणुओं की गति

T उसका वचन बुद्धिमानों के लिए एक महत्वपूर्ण ताबीज़ की व्याख्या करता है

कुरान, जो सृष्टि के रहस्य को उजागर करता है: अना (मैं, मानव आत्म-स्वरूप) और धर्रा (परमाणु) को अलिफ और नुक्ता के स्तर तक , क्रमशः.१६४ इस शब्द में दो उद्देश्य हैं: पहला उद्देश्य आत्मत्व की आवश्यक प्रकृति और अंतिम स्थिति, तथा दूसरे उद्देश्य पर चर्चा करता है परमाणुओं की गति और कार्य पर चर्चा करता है।

दो उद्देश्य

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने अमानत को आकाशों और धरती और पहाड़ों के सामने पेश किया, किन्तु वे उसे उठाने से कतराने लगे और उससे डरने लगे।
अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में असमर्थ होने के कारण), लेकिन मानवता ने यह जिम्मेदारी ले ली है; यह वास्तव में बहुत बड़ी गलतियां करने और गलत निर्णय लेने के लिए प्रवृत्त है, और सरासर अज्ञानता से कार्य करना। (33:72)

पहला लक्ष्य

हम इस श्लोक के विशाल भण्डार से एक रत्न की ओर संकेत करते हैं: मानव आत्म-सम्मान ट्रस्ट का एक पहलू है जिसे आकाश, पृथ्वी और पहाड़ सहन करने से कतराते हैं। आदम के समय से लेकर आज तक, यह हमेशा से ही रहा है ज़क़्क़ूम के भयानक वृक्ष और तोबा के शानदार वृक्ष का बीज , जो मानव जाति की दुनिया भर में शाखाएँ फैल गई हैं। कुछ गिरने से पहले इस महान सत्य पर प्रकाश डालने के लिए, हम निम्नलिखित प्रारंभिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

---

164 अलिफ़ एक छोटी, खड़ी रेखा है जो अरबी वर्णमाला के पहले अक्षर और शब्द का प्रतिनिधित्व करती है आना। नुक़्ता अरबी लिपि में वह बिंदु है जिससे सभी अक्षर क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर विस्तार द्वारा बनाए जाते हैं। इसी बिंदु का उपयोग अरबी में शून्य को दर्शाने के लिए किया जाता है। (ट्र.)

आत्म-तत्व ही दिव्य नामों की कुंजी है, जो गुप्त खजाने हैं। एक रहस्य और अद्भुत ताबीज होने के नाते, यह सृष्टि की कुंजी भी है। रहस्य। जब इसका सार ज्ञात हो जाता है, तो इसका रहस्य सुलझ जाता है, और वह, बदले में, सृष्टि के रहस्य और आवश्यक अस्तित्व के खजाने का खुलासा करता है। मैंने अपने अरबी ग्रंथ, ए व्हिफ फ्रॉम द ब्रीज़ ऑफ़ द में इस पर चर्चा की है कुरान का मार्गदर्शन (अल-मथनावी अन-नूरी में शामिल), इस प्रकार है:

सृजन की कुंजी हमारे हाथ में है और हमारी अस्मिता से जुड़ी हुई है। सृष्टि के द्वार खुले हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में बंद हैं। सर्वशक्तिमान ने हमें एक कुंजी (अहंकार या आत्मत्व) सौंपी है जो सृष्टि के द्वार खोल देगी और ब्रह्मांड के निर्माता के छिपे हुए खजानों को उजागर करें। हालाँकि, आत्मत्व अपने आप में एक कठिन रहस्य और पहेली है, लेकिन अगर इसकी वास्तविक प्रकृति और उद्देश्य ज्ञात हो जाने पर स्वयं और सृष्टि का रहस्य सुलझ जायेगा।

सर्वज्ञ निर्माता ने प्रत्येक मनुष्य को आत्म-सम्मान सौंपा है उसे पहचानने के लिए प्रेरित करने और सक्षम करने के लिए सुराग और नमूने होना प्रभु के गुणों और आवश्यक विशेषताओं के बारे में सत्य। तुलना का वह माप या साधन है जो आधिपत्य के गुणों और देवत्व की विशेषताएँ ज्ञात हैं। तुलना का कोई उपाय या साधन नहीं है वास्तविक अस्तित्व होना चाहिए, क्योंकि इसका कल्पित या अनुमानित अस्तित्व काम आ सकता है एक माप के रूप में, ज्यामिति में काल्पनिक रेखाओं की तरह।

प्रश्न: परमेश्वर ने हमारे स्वत्व को अपने स्वरूप को जानने का साधन क्यों बनाया? विशेषताएँ और नाम?

उत्तर: एक निरपेक्ष और सर्वव्यापी इकाई की कोई सीमा या सीमा नहीं होती है इसलिए इसे आकार नहीं दिया जा सकता, न ही इसे इस तरह से निर्धारित किया जा सकता है कि इसकी मूल प्रकृति को समझा जा सके। उदाहरण के लिए, अंधकार से अनिर्धारित एक अंतहीन प्रकाश को जाना या समझा नहीं जा सकता है लेकिन जब भी अंधकार की कोई वास्तविक या काल्पनिक सीमा रेखा होती है खींचा जाता है, वह निर्धारित और ज्ञात हो जाता है। उसी तरह, दिव्य गुण और नाम (जैसे, ज्ञान, शक्ति, बुद्धि और करुणा) निर्धारित नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे सर्वव्यापी हैं और उनकी कोई सीमा या जैसे। इसलिए वे मूलतः क्या हैं, यह जाना या अनुभव नहीं किया जा सकता। उन्हें ज्ञात होने के लिए एक काल्पनिक सीमा की आवश्यकता है।

हमारे मामले में, यह काल्पनिक सीमा हमारी स्वयं की पहचान है। यह अपने भीतर एक काल्पनिक प्रभुत्व, शक्ति और ज्ञान की कल्पना करता है, और इस प्रकार एक सीमा निर्धारित करता है रेखा, सर्वव्यापी दिव्य गुणों की एक सीमा की परिकल्पना करती है, और कहता है: "यह मेरा है, और बाकी सब उसका है।" इस प्रकार आत्मतत्व एक विभाजन करता है। इसमें निहित लघु मापों के माध्यम से, आत्मत्व धीरे-धीरे आता है ईश्वरीय गुणों और नामों की वास्तविक प्रकृति को समझें।

उदाहरण के लिए, अपने क्षेत्र में इस कल्पित आधिपत्य के माध्यम से, आत्मत्व ब्रह्मांड में सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व को समझा जा सकता है। अपने स्वयं के स्पष्ट स्वामित्व को देखते हुए, वह अपने वास्तविक स्वामित्व को समझ सकता है सृष्टिकर्ता ने कहा: “चूँकि मैं इस घर का मालिक हूँ, इसलिए सृष्टिकर्ता भी इसका मालिक है इस ब्रह्मांड का।" अपने आंशिक ज्ञान के माध्यम से, आत्मतत्व उसके परम ज्ञान को समझने में सक्षम होता है। अपनी दोषपूर्ण, अर्जित कला के माध्यम से, वह सर्वशक्तिमान निर्माता की अद्वितीय, मौलिक कला को समझें। यह कहता है: "मैंने बनाया और इस घर को व्यवस्थित किया, इसलिए एक ही होगा जिसने इसे बनाया और व्यवस्थित किया ब्रह्मांड।"

मानव अहं या आत्मत्व में हजारों अवस्थाएं, गुण और धारणाएं समाहित हैं, जो कुछ हद तक ईश्वरीय सत्ता को उजागर करती हैं और उसे जानने योग्य बनाती हैं। विशेषताएँ और आवश्यक विशेषताएँ। जैसे दर्पण, माप, खोज के लिए एक उपकरण, या एक अक्षर जिसका अपने आप में कोई अर्थ नहीं है लेकिन वह किसी चीज़ का अर्थ बताता है। शब्द का अर्थ, आत्मत्व चेतना का एक धागा है जो आत्मा की मोटी रस्सी से निकला है। मानव अस्तित्व, मानवता की मूल प्रकृति की दिव्य बुनाई से एक महीन धागा, मानव पहचान और चरित्र की पुस्तक से एक अलिफ ।

उस अलिफ़ (मैं) के दो पहलू या चेहरे हैं। एक पहलू अच्छाई और अस्तित्व से संबंधित है और जो दिया जाता है उसे निष्क्रिय रूप से ग्रहण करता है; वह सृजन नहीं कर सकता। दूसरा पहलू अच्छाई और अस्तित्व से संबंधित है और जो दिया जाता है उसे निष्क्रिय रूप से ग्रहण करता है; वह सृजन नहीं कर सकता। पहलू या चेहरा बुराई से संबंधित है और गैर-अस्तित्व से उत्पन्न होता है। यहाँ आत्मत्व सक्रिय है। इसकी वास्तविक प्रकृति सांकेतिक है - एक अक्षर की तरह जिसका कोई अर्थ नहीं है या अपने आप में - और अपने अलावा अन्य चीजों के अर्थ की ओर इशारा करता है। इसका प्रभुत्व यह काल्पनिक और कल्पित है, और इसका अपना अस्तित्व इतना कमज़ोर और अवास्तविक है कि यह अपने आप में कुछ भी सहन या समर्थन नहीं कर सकता। बल्कि, आत्मत्व एक है एक प्रकार का पैमाना या माप, जैसे थर्मामीटर या बैरोमीटर, जो इंगित करता है चीज़ों की डिग्री और मात्रा। आवश्यक सत्ता के निरपेक्ष, सर्वव्यापी और असीम गुण इसके माध्यम से जाने जा सकते हैं।

जो लोग जानते हैं और समझते हैं कि यही उनकी मूल भावना की वास्तविकता है, प्रकृति और तदनुसार कार्य इसमें शामिल हैं: वह वास्तव में समृद्ध है जिसके पास है इसे पवित्रता में विकसित करें (परमेश्वर के विरुद्ध आत्म-प्रशंसात्मक विद्रोह से दूर) (९१:९)। ऐसे लोग सच्चे मन से ट्रस्ट का पालन करते हैं और आत्म-विश्वास की शक्ति से, देखें कि ब्रह्मांड क्या है और यह क्या कर्तव्य निभाता है। जब कोई जानकारी जब ब्रह्मांड के बारे में उनकी आत्मा तक बात पहुँचती है, तो वे देखते हैं कि उनका आत्म-पहचान पुष्टि करता है यह, और यह जानकारी प्रकाश और ज्ञान के रूप में बनी रहती है, बिना बदले अंधकार और व्यर्थता। जब आत्मतत्व ने इस तरह से अपना कर्तव्य निभाया है, तो यह आधिपत्य और काल्पनिक स्वामित्व के अपने दावे को त्याग देता है (केवल माप) और घोषणा करता है: "सभी की संप्रभुता और स्वामित्व उसी का है सभी प्राणियों के लिए प्रशंसा और कृतज्ञता उसी की है। न्याय और न्याय उसी का है।

शासन करो, और उसी की ओर तुम लौटोगे।'' इस प्रकार वह सच्ची उपासना और सेवकाई प्राप्त करता है और सृष्टि के सर्वोत्तम नमूने का दर्जा प्राप्त करता है।

लेकिन यदि आत्मतत्व अपनी रचना के दिव्य उद्देश्य को भूल जाता है, अपनी
सृजन का कर्तव्य, और खुद को एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में देखता है
निर्माता, यह ट्रस्ट को धोखा देता है और उन लोगों की श्रेणी में आता है जिनका उल्लेख नीचे किया गया है: और
जो इसे भ्रष्ट करता है वह वास्तव में नष्ट हो जाता है (91:10)। यह दृष्टिकोण या आत्म-पहचान का यह पहलू
सभी प्रकार के बहुदेववाद, बुराई और विचलन के लिए जिम्मेदार है
आकाश, पृथ्वी और पर्वत भयभीत हो गए
ट्रस्ट - ताकि उन्हें ईश्वर के साथ काल्पनिक साझेदारों को जोड़ने के लिए प्रेरित न किया जाए।

यदि आत्मतत्व, जो कि केवल एक असार अलिफ, एक धागा, एक काल्पनिक है
रेखा, अपने वास्तविक सार में नहीं देखी जाती है, यह मिट्टी के नीचे बढ़ती और फूलती है
अज्ञानता तब तक जारी रहती है जब तक कि यह धीरे-धीरे मनुष्य के सभी अंगों में व्याप्त न हो जाए। जैसे कुछ लोग
विशाल राक्षस, यह ऐसे लोगों को पूरी तरह से निगल जाता है ताकि वे और उनकी क्षमताएँ आत्म-स्वरूप से अधिक कुछ न हों। अंततः, आदिवासी या
राष्ट्रीय कट्टरता और मानव जातिवाद व्यक्तिगत अस्मिता को ताकत देते हैं।
इसके कारण वह शैतान की तरह सर्वशक्तिमान निर्माता के आदेशों का विरोध करता है।
अंततः स्वयं को एक मानदंड मानकर, यह प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु की तुलना
स्वयं, ईश्वर की संप्रभुता को उनके और अन्य कारणों के बीच विभाजित करता है, और शुरू होता है
ईश्वर के साथ सबसे अधिक दुःखद तरीके से साझीदार ठहराना। ऐसे लोग
इसमें उल्लेख किया गया है: निश्चय ही परमेश्वर के साथ साझीदार ठहराना बहुत बड़ा पाप है
(३१:१३) जिस प्रकार किसी व्यक्ति ने सरकारी खजाने से धन चुराया हो
वह यह कहकर अपने कार्य को उचित ठहराने का प्रयास करता है कि उसने प्रत्येक के लिए एक निश्चित राशि ली थी
उसके दोस्त भी, इसलिए, जो स्वयं के स्वामित्व का दावा करता है वह विश्वास करता है और
यह दावा करते हुए कि हर चीज़ अपनी मालिक है।

इस विश्वासघाती स्थिति में, आत्मतत्व पूर्ण अज्ञानता में है।
भले ही उसने विज्ञान की हजारों शाखाओं को आत्मसात कर लिया हो, फिर भी उसका अज्ञान कायम है।
केवल इसके ज्ञान से जटिल। ज्ञान की जो भी झलक है
ईश्वर की कृपा से उसकी इंद्रियां और चिंतनशील शक्तियां ब्रह्मांड से उसके पास आई होंगी, वे समाप्त हो गई हैं
क्योंकि वह अब अपनी आत्मा के भीतर नहीं पा सकता है
कुछ भी जिससे उन्हें पुष्ट किया जा सके, चमकाया जा सके और बनाए रखा जा सके।
आत्म-तत्व अपने भीतर के रंगों से रंगा हुआ है। भले ही शुद्ध ज्ञान हो
जब यह आता है, तो नास्तिकता, बहुदेववाद या सर्वशक्तिमान को नकारने के अन्य रूपों से सने हुए आत्मत्व के भीतर यह पूरी तरह से निरर्थक हो जाता है।
ब्रह्माण्ड ईश्वर के चमकते संकेतों से भरा था, उस आत्मत्व में एक अंधकार बिंदु
उन्हें दृष्टि से छिपा दिया जाएगा, मानो वे अदृश्य हों।

हालाँकि, सच तो यह है कि मानव स्वभाव और व्यक्तित्व के लिए यह आवश्यक गुण है।
उस प्रकृति के भीतर आत्मत्व का अर्थ है यह बताना कि स्वयं के अलावा क्या है। जैसा कि ग्यारहवें वचन में चर्चा की गई है, उस प्रकृति के अनुरूप, आत्मत्व सबसे अधिक संवेदनशील है-

रचनात्मक पैमाना और सटीक माप, एक व्यापक सूचकांक और सही नक्शा,
यह एक व्यापक दर्पण है, तथा ब्रह्माण्ड के लिए एक उपयुक्त कैलेंडर और डायरी है।

अब हम इस विषय की सच्चाई पर कुछ प्रकाश डालते हैं। निम्नलिखित पर विचार करें: आदम के समय से लेकर आज तक, दो महान धाराएँ या रेखाएँ चलीं।
विचार ने अपनी शाखाएं सभी दिशाओं में और हर वर्ग में फैला दी हैं
मानवता, दो ऊँचे पेड़ों की तरह है। एक पैगम्बरियत और धर्म की परंपरा है; दूसरा दर्शन और मानवीय ज्ञान की परंपरा है। जब भी वे एक दूसरे से मिलते हैं
सहमत और एकजुट, जब भी दर्शनशास्त्र धर्म के साथ आज्ञाकारिता और सेवा में शामिल होता है, मानवता ने शानदार खुशी और सामूहिक जीवन का अनुभव किया है।
लेकिन जब भी उन्होंने अलग-अलग रास्ते अपनाए हैं, सत्य और अच्छाई हमेशा एक दूसरे से अलग रहे हैं।
पैगम्बरियत और धर्म के पक्ष में जमा हुए, जबकि त्रुटि, बुराई,
और विचलन दर्शन की ओर आकर्षित हुए हैं। हम उन दो पंक्तियों की उत्पत्ति और आधार पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

दर्शनशास्त्र जब भी धर्म से अलग हुआ है, उसने एक विचारधारा का रूप ले लिया है।
ज़क़्क़ुम का पेड़ ईश्वर और उसके अनुयायियों के साथ साझीदार ठहराने के अपने काले पर्दे फैला रहा है। बुद्धि या तर्क की क्षमता की शाखा पर, इसने बुद्धि के उपभोग के लिए नास्तिकता, भौतिकवाद और प्रकृतिवाद के फल उत्पन्न किए हैं। क्रोध और जुनून की क्षमता की शाखा पर, इसने बुद्धि के उपभोग के लिए नास्तिकता, भौतिकवाद और प्रकृतिवाद के फल उत्पन्न किए हैं।
निम्रोद, फिरौन और शद्दाद जैसे अत्याचारियों को लोगों पर अत्याचार करने के लिए भेजा ।165
वासनाओं और तृष्णाओं की क्षमता की शाखा होने के कारण, इसने देवी-देवताओं, मूर्तियों और उन लोगों के फलों को उत्पन्न किया है जिन्होंने स्वयं को दैवीय दर्जा दिया है।166

इसके विपरीत, नबीत्व की धन्य पंक्ति, जो का रूप लेती है
पूजा का तूबा वृक्ष, पैगम्बरों, रसूलों, संतों के फल पैदा कर चुका है,
और धर्मी लोग पृथ्वी की बारी में और बुद्धि की डाली पर।
क्रोध और जुनून की शाखा पर, रक्षा की शाखा पर और
बुराई को दूर भगाने के कारण, इसने पुण्यवान और न्यायप्रिय शासकों के फल उत्पन्न किए हैं।
आकर्षण की शाखा, इसने पूरे इतिहास में अच्छे चरित्र और विनम्र आचरण वाले उदार, परोपकारी व्यक्तियों के फल पैदा किए हैं। नतीजतन,
इस पंक्ति ने यह प्रदर्शित कर दिया है कि मानवता किस प्रकार सृष्टि का सर्वोत्तम फल है।

अब हम मूल के रूप में आत्मत्व के दो पहलुओं या चेहरों पर प्रकाश डालेंगे
और इन दो विचारधाराओं का मुख्य बीज है। एक चेहरा किसके द्वारा दर्शाया गया है
एक पैगंबर द्वारा और दूसरा दार्शनिकों द्वारा।

---

165 शद्दाद प्राचीन काल का एक अत्याचारी राजा था जो यमन में शासन करता था। (ट्र.)

166 प्राचीन मिस्र और बेबीलोन के दर्शन, जिनमें या तो जादू का अभ्यास किया जाता था या माना जाता था
ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि उनका प्रतिनिधित्व एक छोटे से अभिजात वर्ग द्वारा किया जाता था, जो निम्रोदों का उत्पादन और पोषण करते थे और
फिरौन। प्रकृतिवादी दर्शन की कीचड़ ने मूर्तिपूजा को जन्म दिया और देवताओं को स्थापित किया
प्राचीन यूनानी मन। जब मानवता दिव्य प्रकाश और अपने बीच प्रकृति का पर्दा खींचती है,
लोग हर चीज़ को दैवीय मानते हैं और खुद को परेशानी के अलावा कुछ नहीं देते।

नबी-ए-करीम द्वारा दर्शाया गया चेहरा शुद्ध उपासना का मूल है और
ईश्वर की सेवा करना, क्योंकि हमारा स्वत्व जानता है कि वह उसका सेवक है। स्वत्व को यह अहसास होता है कि
वह स्वयं के अलावा किसी और की सेवा करता है और उसका मूल स्वभाव केवल उसी का है
एक सांकेतिक कार्य। यह समझता है कि यह एक दूसरे का अर्थ रखता है
स्वयं से अधिक और यह तभी सार्थक हो सकता है जब यह उस एक की ओर संकेत करे
जिस पर उसका अस्तित्व निर्भर करता है। स्वत्व का मानना है कि उसका अस्तित्व और
जीवन उस एक की रचनात्मकता और अस्तित्व पर निर्भर करता है। स्वामित्व की उसकी भावना भ्रामक है, क्योंकि
आत्मत्व जानता है कि वह केवल एक स्पष्ट, अस्थायी आनंद लेता है
वास्तविक स्वामी की अनुमति से स्वामित्व और इसकी केवल छाया जैसी
वास्तविकता। यह एक आकस्मिक इकाई है, एक तुच्छ छाया जो सत्य को प्रकट करती है
और आवश्यक वास्तविकता। इसका कर्तव्य सचेत रूप से एक उपाय और संतुलन के रूप में सेवा करना है
इसके निर्माता के गुणों और आवश्यक विशेषताओं के लिए।

इसी प्रकार पवित्र और धार्मिक पैगम्बर और उनका अनुसरण करने वाले संत होते हैं।
पैगंबरों की वंशावली आत्म-प्रकृति को समझती है। परिणामस्वरूप, वे सर्व-महान प्रभु और सृष्टि के स्वामी को
संप्रभुता सौंप देते हैं और विश्वास करते हैं
उसकी प्रभुता, प्रभुत्व और ईश्वरत्व में उसका कोई साझी या उसके समान कोई नहीं है।
उसे किसी सहायक या डिप्टी की जरूरत नहीं है। इसके अलावा, उसके पास चाबी है
और सभी चीजों पर पूर्ण शक्ति है। "प्राकृतिक" कारण केवल एक आवरण हैं
प्रकृति उसकी सृष्टि के नियमों का योग है, उसके नियमों का एक समूह है, कि वह किस प्रकार अपनी शक्ति प्रदर्शित
करता है।

आत्मत्व का यह उज्ज्वल, उजला, सुंदर चेहरा हमेशा से ऐसा ही रहा है
एक जीवित बीज जो अर्थ से भरा है। इससे, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने सृजन किया है
पूजा का तूबा वृक्ष, जिसकी धन्य शाखाओं ने सभी को सुशोभित किया है
हमारी दुनिया के कुछ हिस्सों में इसके शानदार फल हैं। इस चेहरे के माध्यम से, अंधेरा
अतीत पर से परदा हट जाता है और हम समझ जाते हैं कि अतीत कोई डोमेन नहीं है
दर्शनशास्त्र के अनुसार शाश्वत विलुप्ति या विशाल कब्रिस्तान की कल्पना की गई है, लेकिन
बल्कि यह एक प्रकाश का स्रोत और एक उज्ज्वल, जगमगाती सीढ़ी है जिसमें कई सीढ़ियाँ हैं
जिससे होकर गुजरने वाली सभी आत्माएं भविष्य और शाश्वत सुख की ओर छलांग लगा सकें।
यह एक उज्ज्वल निवास स्थान है और उन आत्माओं के लिए एक उद्यान भी है जो इस दुनिया को छोड़ चुके हैं,
अपना भारी बोझ उतार फेंका और आज़ाद हो गए।

दर्शनशास्त्र द्वारा प्रस्तुत दूसरा पहलू, आत्म-तत्व को अपने आप में एक अनिवार्य अर्थ रखने वाला मानता है।
यह कहता है कि आत्म-तत्व का एक स्वतंत्र अस्तित्व है, यह केवल अपने आप को दर्शाता है, और पूरी तरह से
अपने लिए काम करता है।
यह आत्म-अस्तित्व को आवश्यक और अनिवार्य मानता है, और मिथ्या रूप से
यह मान लिया जाता है कि आत्मतत्व अपने अस्तित्व का स्वामी है और वह इसका वास्तविक स्वामी और मालिक है।
अपना डोमेन। दर्शनशास्त्र आत्मत्व को एक स्थायी वास्तविकता मानता है जो
आत्म-सम्मान के लिए आत्म-पूर्णता की खोज करना उसका कर्तव्य है।

ऐसे गलत विचारों के परिणामस्वरूप, दार्शनिकों ने अपने स्कूल बनाए हैं
भ्रष्ट नींव पर विचार की। यहां तक कि प्लेटो जैसे प्रख्यात दार्शनिक भी
और अरस्तू, इब्न सिना (एविसेना) और अल-फ़राबी (अल्फ़ाराबियस) ने बनाए रखा
लोगों का अंतिम लक्ष्य स्वयं को आवश्यक प्राणी के समान बनाना है;
दूसरे शब्दों में, वास्तव में उसके जैसा दिखना। इस तरह के विचारों ने आत्मवाद और
इसे बहुदेववाद की घाटियों में स्वतंत्र रूप से चलने दिया। इसने कारणों, मूर्तियों, प्राकृतिक शक्तियों और सितारों की पूजा जैसी प्रथाओं के माध्यम से ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने का रास्ता खोल दिया। उन्होंने लोगों की अपनी जन्मजात नपुंसकता और कमजोरी, अपर्याप्तता और आवश्यकता, कमी और अपूर्णता की धारणा और स्वीकारोक्ति के द्वार बंद कर दिए, और इस तरह पूजा और दासता के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया

ईश्वर के प्रति। प्रकृतिवाद में डूबा हुआ और भागीदारों को जिम्मेदार ठहराने से बच पाने में असमर्थ
ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के खुले द्वार वे नहीं खोज सके।

इसके विपरीत, पैगम्बरियत का मानना है कि मानवता का उद्देश्य और कर्तव्य है
ईश्वरीय मूल्यों से प्रभावित होकर अच्छा चरित्र प्राप्त करें। पैगम्बरों का मानना था
लोगों को अपनी शक्तिहीनता का एहसास होना चाहिए और ईश्वर की शरण लेनी चाहिए
शक्ति, अपनी कमजोरी को समझते हैं और दिव्य शक्ति पर भरोसा करते हैं, अपनी कमजोरी का एहसास करते हैं
अपर्याप्तता और आवश्यक गरीबी और ईश्वरीय दया पर भरोसा, उनकी ज़रूरत को जानें
और ईश्वरीय धन से सहायता मांगें, अपनी गलतियाँ देखें और क्षमा की याचना करें
ईश्वरीय क्षमा के माध्यम से, और अपनी अपर्याप्तता को समझते हुए ईश्वर की महिमा करते हैं
पूर्णता।

धर्म की अवज्ञा करते हुए, दर्शनशास्त्र के सीधे मार्ग से भटक जाने के कारण, आत्मतत्व ने लगाम अपने हाथ में ले ली और वह भ्रम में तेजी से आगे बढ़ गया।
परिणामस्वरूप, ऐसे ही आत्म-भाव से ज़क़्क़ुम का एक वृक्ष उग आया है और आधी से ज़्यादा मानवता को निगल गया है। इसने जो फल दिए हैं, वे
वासनाओं और तृष्णाओं की शाखा मूर्तियाँ और स्त्री देवताएँ हैं, क्योंकि धर्मशास्त्र के अनुसार
दर्शन के सिद्धांतों में शक्ति को स्वीकृति दी गई है। “शक्ति ही अधिकार है” यह आदर्श है।
कहावतें हैं: "सबसे शक्तिशाली को सारी शक्ति"; "विजेता सब कुछ ले जाता है" और "शक्ति में
यह सही है।”167 इसने अत्याचार को नैतिक समर्थन दिया है, तानाशाहों को प्रोत्साहित किया है,
और उत्पीड़कों से देवत्व का दावा करने का आग्रह किया।
कला” और जिन धागों से वे बने हैं, उनका संबंध कृतियों और धागों से है, न कि निर्माता और स्वरूपकार के शुद्ध, पवित्र सौन्दर्य से, इसमें कहा गया है:
"यह कितना सुंदर है," न कि: "यह कितनी खूबसूरती से बनाया गया है," और इस प्रकार विचार करता है
प्रत्येक को पूजा के योग्य मूर्ति के रूप में।

इसके अलावा, दर्शन एक सस्ते, आत्म-अभिमानी, दिखावटी,
सतही, क्षणिक, शारीरिक सुंदरता जिसे किसी को भी बेचा जा सकता है।

---

१६७ पैगम्बरत्व का सिद्धांत कहता है: "शक्ति अधिकार में निहित है; अधिकार अधिकार में निहित नहीं है
शक्ति।” इस प्रकार यह अत्याचार को रोकता है और न्याय को सुरक्षित करता है।

लोगों को दिखावे में ले गया और इन नए "मूर्तियों" को अपने प्रशंसकों के सामने पाखंडी श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित किया।168 क्रोध और जुनून की शाखा पर,
इसने बड़े और छोटे निम्रोदों, फ़िरौन और के फलों का पोषण किया है
शादाद दुर्भाग्यपूर्ण लोगों पर अत्याचार करने के लिए। बुद्धि की शाखा पर या
कारण, इसने नास्तिकता, भौतिकवाद और प्रकृतिवाद जैसे फल उत्पन्न किए हैं, सभी
जिसकी वजह से यह मानव मन में घर कर गया है और लोगों को भ्रम में डाल दिया है। इस सच्चाई को स्पष्ट करने के लिए हम कुछ उदाहरण देंगे और
पैगम्बरियत की सुदृढ़ नींव से उत्पन्न परिणामों की तुलना करें
दर्शनशास्त्र की सड़ी हुई नींव से उत्पन्न होने वाले लोगों के साथ।

पहला उदाहरण: व्यक्तिगत जीवन से संबंधित पैगम्बरियत के सिद्धांतों में से एक सिद्धांत के अनुसार, अर्थात, नियम: "ईश्वरीय मूल्यों के अनुसार ढल जाओ,"
निर्देश है: "ईश्वरीय मूल्यों के माध्यम से विशिष्टता की तलाश करें और
सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति विनम्रता से पेश आएं, अपनी नपुंसकता को पहचानें और
अपर्याप्तता को स्वीकार करो, और उसके दरबार में सेवक बनो।" लेकिन दर्शनशास्त्र, अपने आत्म-उन्मुख सिद्धांत के कारण, जो आवश्यक रूप से ईश्वर के समान होने में मानव पूर्णता की खोज करता है।
अस्तित्ववान सत्ता, निर्देश देती है: “आवश्यक रूप से अस्तित्ववान सत्ता की तरह बनने का प्रयास करो।”
यह असंभव है, क्योंकि अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता असीम रूप से शक्तिशाली, सर्वशक्तिमान, आत्मनिर्भर और बिना किसी आवश्यकता के है, फिर भी हमारा सार अस्तित्व में है।
असीम नपुंसकता, कमजोरी, गरीबी और आवश्यकता से मिश्रित।

दूसरा उदाहरण: पैगम्बर मुहम्मद के सामाजिक जीवन के मूलभूत सिद्धांतों में पारस्परिक सहायता, उदारता और दानशीलता शामिल हैं।
ये सभी चीज़ों के पारस्परिक सहयोग में कार्य करते हैं - सूर्य से लेकर
चंद्रमा के कणों तक। उदाहरण के लिए, पौधे जानवरों की मदद करते हैं, जानवर जानवरों की मदद करते हैं
लोग, और भोजन के कण शरीर की कोशिकाओं की मदद करते हैं। हालाँकि, दर्शनशास्त्र संघर्ष को सामाजिक जीवन की मूलभूत शर्त मानता है। वास्तव में, संघर्ष
अत्याचारियों, क्रूर लोगों और जंगली जानवरों द्वारा दुरुपयोग से उत्पन्न
उनके जन्मजात स्वभाव। संघर्ष इतना मौलिक और सामान्य है
दार्शनिकों के तर्क के अनुसार वे बेतुके ढंग से दावा करते हैं कि "जीवन संघर्ष है।"

तीसरा उदाहरण: एक उत्कृष्ट परिणाम और उदात्त सिद्धांत
ईश्वरीय एकता के बारे में भविष्यवाणी है: "जिसमें एकता है वह ही आगे बढ़ सकता है
एक से (एकता की)।” अर्थात्, एकता और सार्वभौमिक समझौता या सद्भाव
अस्तित्व सृष्टिकर्ता की एकता के कारण है। जबकि दर्शनशास्त्र कहता है कि
"केवल एक ही एक से आगे बढ़ता है।" इस प्रकार, चूंकि एक से केवल एक ही चीज़ आगे बढ़ सकती है
एक व्यक्ति के रूप में, सब कुछ उसी से मध्यस्थों के माध्यम से आता है। इस भ्रामक सिद्धांत ने सबसे भयंकर बहुदेववाद का मार्ग खोल दिया। वर्तमान में-

---

[168] अपने प्रशंसकों के लिए वांछनीय दिखने और उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए, ऐसे लोग
एक पाखंडी शो के माध्यम से एक प्रकार का "पूजापूर्ण" रवैया।

सर्वशक्तिमान और आत्मनिर्भर को शक्तिहीन मध्यस्थों की आवश्यकता बताते हुए, इसने सभी कारणों और मध्यस्थों को परमेश्वर के कार्य में एक प्रकार की भागीदारी प्रदान की।
आधिपत्य और सर्व-महान निर्माता को केवल "प्रथम बुद्धि" का निर्माण आवंटित किया। यदि इल्लुमिनिस्ट (इशराकियुन), जिन्हें सबसे अग्रणी दार्शनिकों में से एक माना जाता है, ने खुद को इस तरह की बकवास के लिए प्रयास किया, तो जरा सोचिए कि कैसे

भौतिकवादियों और प्रकृतिवादियों जैसे निम्नस्तरीय दार्शनिकों के सिद्धांत अत्यंत बेतुके हैं।

चौथा उदाहरण: पैगम्बर के एक बुद्धिमान सिद्धांत के अनुसार
कि कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति के साथ उसकी महिमा करे (17:44), उद्देश्य
और सृष्टि में, विशेष रूप से जीवित प्राणियों में, बुद्धि का एक पहलू हो सकता है
प्राणी से संबंधित नहीं बल्कि सृष्टिकर्ता से संबंधित कई पहलू हैं।
उदाहरण के लिए, एक फल में उतनी ही बुद्धिमत्ता और उतने ही उद्देश्य निहित होते हैं
सृष्टि के सभी फल एक वृक्ष के समान हैं। हालाँकि, दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार,
जिसमें सच्ची बुद्धि का अभाव है, प्रत्येक जीवित प्राणी का उद्देश्य स्वयं से संबंधित है या
मानवता के लिए लाभ से जुड़ा हुआ है। इसका मतलब यह है कि सृष्टि इतनी निरर्थक है कि पहाड़ जैसे पेड़ का उद्देश्य केवल एक छोटा सा फल पैदा करना है।
दर्शनशास्त्र का एक विनाशकारी परिणाम यह हुआ कि इब्न सिना और अल-फ़राबी जैसे महान मुस्लिम दार्शनिक, दर्शनशास्त्र के स्पष्ट आकर्षण से मोहित हो गए।
और जो लोग इसका अनुसरण करने में धोखा खा गए, उन्हें केवल साधारण विश्वासी माना गया।
हुज्जतुल-इस्लाम अल-ग़ज़ाली ने उन्हें वह पद भी नहीं दिया।

मुताज़िली स्कूल के नेता , जो सबसे अधिक विद्वान थे
इस्लामी धर्मशास्त्र के विद्वान दर्शनशास्त्र की चमक-दमक से आकर्षित हुए और
इसके साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ गए। कारण को आत्मनिर्भर मानना
सत्य का निर्धारण करने के लिए ठोस उपाय के अभाव में वे इससे ऊपर नहीं उठ सके।
विधर्मी या नवसिखुआ विश्वास की श्रेणी। इसके अलावा, चूँकि उन्हें इसमें आनंद आता था
दर्शनशास्त्र द्वारा उनकी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्माओं की चापलूसी, इस्लामी इतिहास में अबुल-आला अल-मारी जैसे प्रसिद्ध साहित्यिक व्यक्तित्व, जो अपने निराशावाद के लिए कुख्यात हैं,
और उमर खय्याम, जो अपने करुण रोने के लिए जाने जाते थे, दर्शनशास्त्र में डूबे हुए थे
तालियाँ बजीं। हालाँकि, उन्हें तिरस्कार, निंदा और संयम का सामना करना पड़ा
सत्य और सिद्धता के लोगों की फटकार, जिन्होंने उनसे कहा: “तुम
आप विधर्म के करीब पहुंच रहे हैं और दूसरों को भी विधर्म की ओर ले जा रहे हैं।”

दर्शन के सड़े हुए आधार का एक और परिणाम यह है कि आत्मतत्व,
इसे असार के रूप में देखने के बजाय, आत्म-सम्मानित और आत्म-निर्भर के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टिकोण ने इसे "हल्के वाष्प" से बदलकर एक में बदल दिया है
"चिपचिपा तरल।" सृष्टि के चमत्कारी सत्यों के प्रति हमारी उदासीनता के कारण (जैसे
अब हम उनसे “बहुत परिचित” हो गए हैं) और इसके प्रति हमारी व्यस्तता
दुनिया और प्राकृतिक विज्ञानों में, वह तरल कठोर हो जाता है। इसके बाद, हमारी उपेक्षा और इनकार के कारण, आत्म-तत्व "स्थिर" हो जाता है। यह अपनी परिष्कृतता खो देता है और बन जाता है

अपनी विद्रोही प्रवृत्ति के कारण यह अपारदर्शी है, धीरे-धीरे सघन होता जाता है और व्यक्ति को अपने घेरे में ले लेता है। फिर यह सभी प्रकार की मानवीय कल्पनाओं के साथ फैलता जाता है।

अंततः मान लीजिए कि सभी लोग और कारण भी उसके जैसे हैं - यद्यपि वे इसे अस्वीकार करते हैं - यह हर एक को फिरौन मानता है। इस बिंदु पर, यह विरोध करता है सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता का आदेश: जब ये हड्डियाँ नष्ट हो जाएँगी तो इन्हें कौन पुनर्जीवित करेगा? सड़ गया? (36:78) और, अवज्ञा में, सर्वशक्तिमान पर आरोप लगाता है नपुंसकता। स्वार्थ यहां तक कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को भी नीचा दिखाने की हद तक चला जाता है वह उन विशेषताओं को अस्वीकार या विकृत कर सकता है जिन्हें वह अपने लिए अनुपयुक्त समझता है। यह उसकी फिरौन जैसी दुष्ट आत्मा के लिए रुचिकर या अप्रिय है।

उदाहरण के लिए, कुछ दार्शनिकों ने सर्वशक्तिमान को "स्व-बद्ध" (अर्थात् अपने स्वयं के आदेश से विवश) माना और इस प्रकार उसे चुनाव करने से वंचित कर दिया। उन्होंने सृष्टि की उस अंतहीन गवाही को अस्वीकार कर दिया जो यह सिद्ध करती है कि उसने विकल्प। हालाँकि सभी जीव दिखाते हैं कि निर्माता के पास विकल्प है, प्रत्येक के पास अपना व्यक्तित्व और व्यवस्था, बुद्धि और माप, यह अंधा दर्शन इसे देखने से इंकार कर दिया। अन्य दार्शनिकों ने दावा किया कि दिव्य ज्ञान इसमें विवरण नहीं है, जिससे सर्वव्यापी ज्ञान के गुण को नकार दिया गया है और सृष्टि की सच्ची साक्षी को स्वीकार करने से इंकार कर दिया गया है।

दर्शनशास्त्र ने भी कारणों को रचनात्मक प्रभाव का श्रेय दिया है और इस प्रकार प्रकृति को रचनात्मक शक्ति का श्रेय देना। चूँकि यह स्पष्ट मुहर नहीं देखता सभी चीजों के निर्माता को दर्शाते हुए, दर्शनशास्त्र मानता है प्रकृति को उत्पत्तिकर्ता माना जाता है। यह उन तथ्यों की अनदेखी करता है कि प्रकृति, जिसका कथित शक्ति को अंधे संयोग और आवश्यकता का परिणाम माना जाता है, यह नपुंसक, निर्जीव है, अचेतन और अंधा। यह सृष्टि के एक हिस्से को प्रकृति का हिस्सा मानता है, हालाँकि प्रत्येक तत्व ईश्वर की ओर से एक संदेश है, जो सदैव मांगा जाता है, उच्च बुद्धि के हजारों उदाहरण.

इसके अलावा, दार्शनिकों को पुनरुत्थान का द्वार नहीं मिला और परलोक, जिसे सर्वशक्तिमान (अपने सभी नामों के साथ), ब्रह्मांड (अपनी सारी सच्चाईयों के साथ), नबी होने की परंपरा (अपनी सारी पुष्टियों के साथ), और नाज़िल हुई किताबें (अपनी सारी आयतों के साथ) साबित करती हैं। परिणामस्वरूप, उन्होंने शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार किया और आत्माओं को पूर्व-अनंत काल का आधार माना। ऐसे अंधविश्वासों से यह अंदाजा मिलता है कि दूसरे मामलों पर उनके विचार क्या होंगे वास्तव में, बुरी शक्तियों ने बुद्धि या बुद्धि को ऊपर उठाया है (चापलूसी की है) अविश्वासी दार्शनिकों का कारण मानो चोंच और पंजों से उनके अहंकार या स्वार्थ को कुचलकर उन्हें भटकाव की खाई में फेंक दिया। सूक्ष्म जगत (मानव) को उन्होंने अहंकार या स्वत्व को मूर्ति या मिथ्या रूप में बना दिया है देवता; स्थूल जगत में, उन्होंने प्रकृति को पूजा की वस्तु बना दिया है। इसलिए, वह जो झूठे देवताओं (और बुरी शक्तियों जो प्रतिमानों की स्थापना करते हैं) को अस्वीकार करता है

और जो ईश्वर पर विश्वास रखता है, उसने दृढ़, अटूट पकड़ पकड़ ली है; और ईश्वर सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है (2:256)।

यहाँ, उपर्युक्त सत्य को स्पष्ट करने के लिए, एक काल्पनिक घटना का अर्थ बताना उपयोगी है, जिसे मैंने सत्य की झलक में एक दूरदर्शी यात्रा के रूप में वर्णित किया है। इस ग्रंथ को लिखने से आठ साल पहले, रमजान के दौरान, इस्तांबुल में, ऐसे समय में जब पुराना कहावत (दर्शन से संबंधित) नया कहावत बनने वाला था, सूरतुल-फातिहा के अंत में बताए गए तीन तरीकों पर विचार करते हुए - उन लोगों का मार्ग जिन पर आपने अनुग्रह किया है, उनका नहीं जिन्होंने (आपका) क्रोध भड़काया है, न ही उन लोगों का जो भटक गए हैं (1: 7) - मैंने निम्नलिखित देखा: मैं एक विशाल रेगिस्तान में था। पृथ्वी का चेहरा धुंधले, निराशाजनक और दम घोंटने वाले बादलों की एक परत से ढका हुआ था। कोई हवा, रोशनी या पानी नहीं था। मैंने कल्पना की कि खतरनाक और भयानक राक्षस हर जगह थे मैंने देखा

कि मैं अनजाने में ही आगे बढ़ रहा था। एक भूमिगत सुरंग जैसी गुफा में घुसते हुए और धीरे-धीरे धरती से गुज़रते हुए, मैंने देखा कि मुझसे पहले कई लोग इस रास्ते से गुज़र चुके थे। वे चारों तरफ़ से डूबे हुए थे। कभी-कभी मुझे उनके पैरों के निशान दिखाई देते थे और उनकी आवाज़ें सुनाई देती थीं, जो बाद में बंद हो जाती थीं।

> हे मित्र, जो इस काल्पनिक यात्रा में मेरे साथ है। वह भूमि प्रकृति है और प्रकृति-पूजा का दर्शन है। सुरंग दार्शनिक विचार द्वारा सत्य तक पहुँचने के लिए खोला गया मार्ग है। पदचिह्न प्लेटो और अरस्तू जैसे प्रसिद्ध दार्शनिकों के थे, और जो आवाज़ें मैंने सुनीं, वे इब्न सीना और अल-फ़राबी जैसे प्रतिभाशाली लोगों की थीं।169 इब्न सीना के कुछ विचार और सिद्धांत मुझे कभी-कभी मिलते थे, लेकिन कुछ समय बाद वे पूरी तरह से गायब हो जाते थे। आगे बढ़ने में असमर्थ होने के कारण, वह सत्य तक पहुँचने से पहले ही डूब गया। खैर, मैंने आपको चिंता से बचाने के लिए सत्य का एक छोटा सा हिस्सा दिखाया। अब मैं अपनी यात्रा पर लौटता हूँ।

जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, मैंने पाया कि मुझे दो चीज़ें दी गई थीं: अंधेरे को दूर भगाने के लिए एक मशाल और एक ऐसा उपकरण जो मेरे लिए विशाल चट्टानों और पत्थरों के बीच से रास्ता खोल रहा था, जो एक के बाद एक टूट रहे थे। मुझे बताया गया: "यह मशाल और उपकरण तुम्हें कुरान के खजाने से दिया गया है।"

---

169 अगर मुझसे पूछा जाए: “तुम कौन होते हो इन प्रसिद्ध दार्शनिकों को चुनौती देने वाले? जबकि तुम तो मक्खी की तरह हो, तुम चील की उड़ान को चुनौती देने की हिम्मत कैसे कर सकते हो?” मैं जवाब दूंगा: “मेरे पास कुरान जैसा शाश्वत शिक्षक है, और इसलिए, सत्य और ईश्वर के ज्ञान के मामलों में, मुझे ऐसे चील को मच्छर के पंख जितना भी महत्व देने की आवश्यकता नहीं है, जो गुमराह दर्शन और भ्रमित तर्क के छात्र थे। मैं उनसे कितना भी कमतर क्यों न हो, उनका शिक्षक मुझसे कहीं अधिक कमतर है। मेरे “शिक्षक” - कुरान - की मदद से प्रकृति और भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ जो उन्हें डूबने के लिए प्रेरित करती हैं, मेरे पैर की उंगलियाँ भी नहीं भिगो सकतीं। एक तुच्छ निजी व्यक्ति जो एक महान शासक के नियमों और आदेशों का पालन करता है, वह एक तुच्छ शासक के मुख्य सेनापति से अधिक प्राप्त कर सकता है।”

लंबे समय तक चलते रहने के बाद, मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैं दूसरी तरफ आ गया हूँ। मैंने एक ऐसी दुनिया देखी जहाँ सब कुछ आनंदित था, और जिसमें सबसे खूबसूरत वसंत में चमकदार धूप और एक जीवंत हवा और स्वादिष्ट जीवन देने वाला पानी था। मैंने भगवान का धन्यवाद किया और उनकी प्रशंसा की।

फिर मुझे एहसास हुआ कि खुद पर नियंत्रण रखने के बजाय, मैं किसी और के द्वारा परखा जा रहा था। मैंने खुद को फिर से उस विशाल रेगिस्तान में घुटन भरे बादल के नीचे पाया। हालाँकि अब मैं दूसरे रास्ते पर था, फिर भी मुझे एक अदृश्य मकसद से प्रेरित महसूस हुआ। इस बार मैं दूसरी तरफ पहुँचने के लिए धरती की सतह पर यात्रा कर रहा था। मैंने ऐसी अजीबोगरीब और अनोखी चीजें देखीं जिन्हें वर्णित नहीं किया जा सकता: उफनते समुद्र, ख़तरनाक तूफ़ान - हर चीज़ मेरे लिए मुश्किलें खड़ी कर रही थी। पहले की तरह, मैंने कुरान से मुझे दिए गए उपकरणों की मदद से उनसे अपना रास्ता तलाशा और इस तरह उन सभी पर विजय प्राप्त की। रास्ते में, मुझे अक्सर दूसरे यात्रियों की लाशें मिलीं। हज़ारों में से मुश्किल से एक ने यह यात्रा पूरी की थी। हालाँकि, मैं उस घुटन भरे बादल से बच गया और चमकते सूरज के सामने खुशी-खुशी दूसरी तरफ़ निकल आया। मैंने जीवंत हवा में साँस ली और कहा: "सभी प्रशंसा ईश्वर की है।"

फिर मैं उस जन्नत जैसी दुनिया को देखने लगा। लेकिन कोई मुझे वहाँ रुकने नहीं देता था, क्योंकि मैं तुरंत उस भयानक रेगिस्तान में वापस चला जाता था, जैसे कि मुझे कोई दूसरा रास्ता देखना हो। वहाँ मैंने तरह-तरह के उपकरण देखे- कुछ हवाई जहाज़ जैसे, कुछ कार और होइस्ट जैसे- सभी लिफ्ट की तरह नीचे उतरे हुए थे। जो लोग उन पर कूदते थे, वे अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार ऊपर उठ जाते थे। मैं उनमें से एक पर कूद गया, और एक पल में, बादल से बहुत ऊपर उठ गया। मैं सबसे खूबसूरत, हरे और शानदार पहाड़ों की चोटियों के बीच आ गया। बादलों की परत पहाड़ों के सिर्फ़ आधे हिस्से तक ही पहुँची थी, और हर जगह हल्की हवाएँ, स्वादिष्ट पानी और कोमल रोशनी थी, साथ ही वे लिफ्ट जैसे चमकदार वाहन भी थे। हालाँकि मैंने उन्हें अपनी यात्रा के पहले दो हिस्सों में और धरती के दूसरे हिस्से में देखा था, लेकिन मैं समझ नहीं पाया था कि वे क्या थे। अब मुझे एहसास हुआ कि वे सर्वज्ञ कुरान की आयतों की अभिव्यक्तियाँ थीं।

पहला रास्ता, जो न तो उन लोगों में से है जो भटके हुए हैं, प्रकृति में डूबे हुए लोगों और प्रकृतिवाद के अनुयायियों का है। आपने देखा है कि इस रास्ते में कितनी मुश्किलें हैं। दूसरा रास्ता, जो न उन लोगों में से है जो आपके क्रोध के पात्र हैं, उन लोगों द्वारा अनुसरण किया जाता है जो रचनात्मक शक्ति और रचनात्मक प्रभाव को कारणों और मध्यस्थों पर आरोपित करते हैं, और वे (जैसे कि पेरिपेटेटिक दार्शनिक) जो केवल तर्क और सोच के माध्यम से आवश्यक रूप से विद्यमान अस्तित्व के अंतिम सत्य और ज्ञान का मार्ग खोलना चाहते हैं। तीसरा रास्ता, जो उन लोगों द्वारा इंगित किया गया है जिन पर आपने कृपा की है, यह उन लोगों का उज्ज्वल राजमार्ग है जो कुरान का अनुसरण करते हैं, सीधे मार्ग के लोग हैं। यह उज्ज्वल

राजमार्ग एक शानदार मार्ग है जो दयालु ईश्वर द्वारा प्रकट और प्रदान किया गया है।
यह सबसे छोटा, आसान और सुरक्षित रास्ता है और सभी के लिए खुला है।

दूसरा उद्देश्य

यह लक्ष्य परमाणुओं की गति और परिवर्तन के साथ-साथ उनके कर्तव्य के बारे में है।

> अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।
>
> इनकार करनेवाले कहते हैं, "हम पर कभी क़ियामत नहीं आएगी।" कह दो, "नहीं।
> मेरे रब की क़सम, और वह ग़ैब का जाननेवाला है, यह तो बहुत ही
> निश्चय ही तुम पर आ पड़ेगा।" एक अणु के बराबर भी भार नहीं
> आकाशों और धरती में कोई चीज़ उससे छिपी नहीं है, न उससे छोटी कोई चीज़ है और न उससे
> बड़ी, परन्तु वह एक खुली किताब में है।" (34:3)

इस उद्देश्य से, मैं इस श्लोक से केवल एक परमाणु वजन के एक रत्न की ओर इशारा करता हूं
महान खजाना। इसमें एक परिचय और तीन बिंदु शामिल हैं।

परिचय: परमाणुओं का परिवर्तन उनके कंपन और
जबकि शाश्वत लेखक की कलम सृजन की रचना करती है
सृष्टि की पुस्तक में संकेत। वे संयोग या यादृच्छिक खेल नहीं हैं और
भौतिकवादी और प्रकृतिवादी मानते हैं कि ये निरर्थक गतियाँ हैं। प्रत्येक परमाणु के लिए,
सारी सृष्टि की तरह और अपने स्वभाव के अनुरूप जीभ के साथ कहता है: "
जब यह चलना शुरू करता है तो भगवान का नाम लेता है। यह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि यह भार वहन करता है
जो उसकी ताकत से असीम रूप से अधिक है। उदाहरण के लिए, एक अनाज के आकार का बीज कंधों पर
एक विशाल देवदार के पेड़ के आकार का भार। अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद, यह कहता है: "सभी
प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है।" क्योंकि कला की बुद्धिमत्तापूर्ण सुंदरता का प्रदर्शन करके,
साथ ही अर्थपूर्ण और सूक्ष्म अलंकरण, जो सभी के मन को विस्मित कर देता है, इसने सर्व-महान निर्माता की
प्रशंसा में एक स्तुति की तरह कला का एक काम प्रदर्शित किया है। देखो
उदाहरण के लिए, अनार और मकई की बालियों को ध्यान से देखें।

वास्तव में, परमाणुओं का परिवर्तन उनकी गति और सार्थक परिसंचरण है जो दिव्य शक्ति द्वारा "शक्ति के शब्दों" को लिखने के कारण होता है
प्रकट पुस्तक से मिटाने और पुष्टि की पटिया पर,
जो वास्तविकता है और रूपकात्मक रूप से समय की धारा का एक पृष्ठ है।
मैनिफेस्ट बुक ईश्वरीय शक्ति और इच्छा का शीर्षक है, जो ईश्वर में कार्य करती है।
वर्तमान समय और भौतिक दुनिया को चीज़ों को बनाने के लिए। ईश्वरीय शक्ति द्वारा अपने शब्दों का प्रतिलेखन - सभी चीज़ें और घटनाएँ - प्रकट पुस्तक से
मिटाने और पुष्टि की गोली या समय के पृष्ठ पर लेता है
प्रकट अभिलेख के निर्देशों और सिद्धांतों के अनुसार स्थान,170

---

170 कुरान में कई स्थानों पर प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक का उल्लेख है।
कुरान के व्याख्याकार इनके अर्थ एक जैसे मानते हैं, जबकि अन्य कहते हैं कि ये दोनों अर्थ एक जैसे हैं।
उनके अलग-अलग अर्थ और अर्थ हैं। उनकी वास्तविक प्रकृति की व्याख्या अलग-अलग है, लेकिन सभी

जो ईश्वरीय ज्ञान और आदेश का शीर्षक है और अदृश्य क्षेत्र से आने वाली चीजों के साथ उनके बीजों और जड़ों और उनकी भावी संतानों की सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था को सुरक्षित करता है।

सभी इस बात पर सहमत हैं कि दोनों ही ईश्वरीय ज्ञान का वर्णन करते हैं। हालाँकि, कुरान के ज्ञान के माध्यम से, मैं निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ:

प्रकट अभिलेख, जो दृश्यमान, भौतिक दुनिया की तुलना में अदृश्य दुनिया से अधिक संबंधित है, दिव्य ज्ञान और आदेश के एक पहलू को व्यक्त करता है। अर्थात्, यह वर्तमान की तुलना में अतीत और भविष्य से अधिक संबंधित है। यह दिव्य नियति की एक पुस्तक है जिसमें चीजों की उत्पत्ति, जड़ें और बीज शामिल हैं, न कि उनके दृश्यमान अस्तित्व में उनके फलते-फूलते रूप।

पूर्ण क्रम और कला के साथ अपने पूर्ण शरीर में विकसित होकर, वस्तुओं की उत्पत्ति, स्रोत और जड़ें दर्शाती हैं कि वे दिव्य ज्ञान में निहित सिद्धांतों की एक पुस्तक के अनुसार व्यवस्थित हैं। इसी तरह, वस्तुओं के बीज, परिणाम और फल, जिनमें अस्तित्व में आने वाले प्राणियों के सूचकांक और कार्यक्रम शामिल हैं, यह प्रदर्शित करते हैं कि प्रत्येक दिव्य आज्ञाओं का एक लघु रजिस्टर है। उदाहरण के लिए, यह कहा जा सकता है कि एक बीज उस कार्यक्रम और सूचकांक का लघु अवतार है जिसके अनुसार एक पेड़ बनाया जा सकता है और उन दिव्य सिद्धांतों या आदेशों का जो इस कार्यक्रम और सूचकांक को निर्धारित करते हैं। संक्षेप में, प्रकट अभिलेख समग्र रूप से सृष्टि के वृक्ष का एक सूचकांक और कार्यक्रम है, जो अपनी शाखाओं को अतीत और भविष्य और अदृश्य दुनिया में फैलाता है। इस अर्थ में, यह दिव्य नियति की एक पुस्तक या उसके सिद्धांतों का एक रजिस्टर है। इन सिद्धांतों के निर्देशों और मांगों के माध्यम से, परमाणुओं का उपयोग किया जाता है और चीजों को अस्तित्व में लाने और उनके अस्तित्व को जारी रखने के लिए प्रबंधित किया जाता है।

जहाँ तक प्रकट पुस्तक का प्रश्न है, यह अदृश्य दुनिया से अधिक दृश्यमान, भौतिक दुनिया से संबंधित है, तथा भूत और भविष्य से अधिक वर्तमान से संबंधित है। यह दिव्य ज्ञान और आदेश के बजाय दिव्य शक्ति और इच्छा को व्यक्त करती है। यदि प्रकट अभिलेख दिव्य नियति की पुस्तक है, तो प्रकट पुस्तक दिव्य शक्ति की पुस्तक है। दूसरे शब्दों में, हर चीज के सार और अस्तित्व में परिपूर्ण कला और व्यवस्था, साथ ही साथ इसकी विशेषताएँ और कार्य, यह दर्शाते हैं कि हर चीज को एक प्रभावी, सर्वव्यापी इच्छा के नियमों और एक परिपूर्ण, निरपेक्ष शक्ति के सिद्धांतों के अनुसार अस्तित्व में रहने के लिए बनाया गया है। हर चीज को विशेष रूप से बनाया गया है और उसे एक नियत माप और विशेष आकार दिया गया है। यह दर्शाता है कि दिव्य शक्ति और इच्छा के पास कानूनों का एक सार्वभौमिक, व्यापक रजिस्टर, एक महान पुस्तक है, जिसके अनुसार प्रत्येक इकाई के लिए एक विशेष अस्तित्व और रूप निर्धारित किया जाता है।

मजे की बात यह है कि, हालांकि उपेक्षा, गुमराही और भ्रष्ट दर्शन के लोग सृजनात्मक शक्ति की सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका (लौहुन महफूज) के अस्तित्व और चीजों पर दिव्य बुद्धि और इच्छा की प्रकट पुस्तक की अभिव्यक्तियों और प्रतिबिंबों के बारे में जानते हैं, वे इसे "प्रकृति" नाम देते हैं, इस प्रकार इसे पूरी तरह से अर्थहीन बना देते हैं। संक्षेप में, प्रकट अभिलेख के आदेशों के माध्यम से, अर्थात्, दिव्य नियति के आदेशों और निर्देशों के माध्यम से, दिव्य शक्ति जीवों की श्रृंखला बनाने या प्रकट करने के लिए परमाणुओं का उपयोग करती है, जिनमें से प्रत्येक कड़ी उसका संकेत है, समय के रूपक या "आदर्श" पृष्ठ पर, जिसे मिटाने और पुष्टि करने की पट्टिका कहा जाता है।

इस प्रकार, परमाणुओं को गतिशील किया जाता है ताकि प्राणियों को अदृश्य जगत से भौतिक, दृश्यमान जगत में, ज्ञान के क्षेत्र से शक्ति के क्षेत्र में स्थानांतरित किया जा सके।

मिटाने और पुष्टि करने की पट्टिका वह पट्टिका है जिस पर प्राणियों को अंकित किया जाता है और फिर उनकी उत्पत्ति के अनुसार या सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के निर्देशों के अनुसार उन्हें हटा दिया जाता है या मिटा दिया जाता है। इसलिए, यह निरंतर परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। मिटाने और पुष्टि करने की पट्टिका समय का सार है। समय, एक विशाल नदी जो अस्तित्व के माध्यम से बहती है, उसका सार ईश्वरीय शक्ति द्वारा प्राणियों के शिलालेख और उसके द्वारा उपयोग की जाने वाली स्याही में है। केवल ईश्वर ही अदृश्य को जानता है।

पहला बिन्दु: इस बिन्दु में दो बातें शामिल हैं।

पहला पदार्थ: प्रत्येक परमाणु में, उसकी गति और विश्राम के दौरान, दो प्रकाश उत्पन्न होते हैं
दिव्य एकता दो सूर्यों की तरह चमकती है। क्योंकि यदि प्रत्येक परमाणु एक दूसरे के अधीन कार्य न कर रहा होता
परमेश्वर के अधिकार और उसकी अनुमति से, यदि इसमें परिवर्तन नहीं हो रहा होता
उसके ज्ञान और शक्ति के भीतर, उसे अनंत ज्ञान और असीम शक्ति के साथ-साथ देखने के लिए आंखें और आदेश देने का अधिकार भी होना चाहिए।
सब कुछ, क्योंकि प्रत्येक परमाणु सभी जीवित प्राणियों के शरीर के भीतर एक व्यवस्थित ढंग से कार्य करता है।

वस्तुओं के अन्दर का क्रम और उनके निर्माण के नियम एक दूसरे से भिन्न होते हैं।
दूसरे के लिए। यदि प्रत्येक चीज़ का विशिष्ट क्रम अज्ञात है, तो उसके भीतर कार्य करना
असंभव। अगर हम मान लें कि अभिनय संभव है, तो त्रुटि के बिना अभिनय करना असंभव होगा।
असंभव हो। चूँकि हम प्रत्येक सजीव में एक परिपूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य देखते हैं
प्राणी के शरीर में, या तो वे परमाणु जिनसे वह बना है या जो उसमें कार्य करते हैं,
एक सर्वव्यापी ज्ञान और शक्ति, या कोई ऐसा व्यक्ति जिसके पास असीम ज्ञान और शक्ति है, जो अपनी अदम्य इच्छा और आदेश के तहत उनका उपयोग कर रहा है।

प्रत्येक वायु परमाणु प्रत्येक जीव के शरीर में, प्रत्येक फूल के फल में प्रवेश कर सकता है,
और हर पत्ते की संरचना, और उनके भीतर कार्य कर सकते हैं। हालांकि, प्रत्येक
इन चीजों का एक अलग गठन और एक अनोखा क्रम है। अगर एक अंजीर हो सकता है
एक कपड़ा मिल या एक अनार की तुलना एक चीनी कारखाने से की जाती है, कार्यक्रम
इन फलों (या उन कारखानों की संरचनाओं) का स्वरूप एक दूसरे से भिन्न होता है।
ऐसे संरचनात्मक अंतरों के कारण, एक वायु परमाणु उन सभी में प्रवेश कर सकता है, मान लें
उचित स्थिति में रहें, और बिना किसी त्रुटि के बुद्धिमानी और प्रभुत्वपूर्ण तरीके से कार्य करें।
इस प्रकार एक गतिशील वायु परमाणु को जिस भी वस्तु में प्रवेश करता है उसके रूप, आकार, माप और संरचना को जानना चाहिए, या उसे उस वस्तु के आदेश और इच्छा के अधीन कार्य करना चाहिए।
उस व्यक्ति का जिसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है।

यह बात स्पष्टतः गतिहीन मृदा परमाणु के लिए भी सत्य है। प्रत्येक मृदा परमाणु
प्रत्येक पौधे के लिए खेती का साधन और स्थान बनने की क्षमता रखता है और
पेड़ के बीज, क्योंकि कोई भी बीज उसमें वह सब कुछ पा सकता है जो उसे अंकुरित होने के लिए चाहिए और
इसलिए, या तो उस मिट्टी में कार्यशील तंत्र मौजूद होना चाहिए जो
ऐसी किसी भी प्रजाति के साथ अनुकूलन कर सकता है, या इसके परमाणुओं में एक अद्भुत व्यापक ज्ञान और
चमत्कार करने वाली शक्ति होनी चाहिए जो
कुछ नहीं से सब कुछ। वैकल्पिक रूप से, उन कर्तव्यों का पालन किया जाना चाहिए
आदेश, अनुमति के साथ, और एक की शक्ति और ताकत के माध्यम से
सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान।

यदि कोई अप्रशिक्षित और अनुभवहीन अंधा व्यक्ति किसी औद्योगिक संस्थान में प्रवेश करता है,
शहर और प्रत्येक व्यापार और शिल्प में इतना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया कि हर कोई
अवाक, कौन संदेह कर सकता था कि उस व्यक्ति को पढ़ाया और काम पर रखा जा रहा था

सभी व्यवसायों और शिल्पों के स्वामी द्वारा? या कहें कि किसी अन्य अपंग और अंधे द्वारा
अपनी विकलांगता के कारण असहाय होकर एक व्यक्ति एक छोटे से घर में रहता था।
लोग पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े और हड्डियों जैसे पदार्थ के छोटे-छोटे टुकड़े देखते हैं
और कपास अंदर जाता है, और चीनी की बोरियां, कपड़े के रोल, गहनों के बक्से, बारीक़ जड़ाऊ कपड़े, स्वादिष्ट
भोजन, और इसी तरह की अन्य चीजें उसमें से निकलती हैं।
तार्किक निष्कर्ष यह होगा कि वह व्यक्ति किसी का द्वारपाल मात्र था
असाधारण चमत्कार करने वाला प्राणी, और उसका इसमें बहुत कम हिस्सा था
उन उत्पादों को कारखाने के ताले के रूप में देखें।

इसी तरह, वायु परमाणुओं की गति और कार्य या सेवा
ये जीवित वस्तुएं, जिनमें से प्रत्येक शाश्वत रूप से मांगे गए ईश्वर का एक पत्र है,
प्रभु की कला का अनमोल कार्य, उनकी शक्ति का चमत्कार, और उनकी अद्भुतता का चमत्कार
बुद्धि हमें बताती है कि वे परमाणु आदेश के अनुसार कार्य कर रहे हैं और
एक महाप्रतापी, सर्वबुद्धिमान निर्माता, एक परम दयालु, सर्वदयावान की इच्छा
मूल निर्माता। इसी तरह, मिट्टी के परमाणु खेती के लिए जगह और साधन हैं
बीज से युवा पौधे और ऊंचे पेड़ विकसित होते हैं। प्रत्येक पेड़ एक अनोखी फैक्ट्री है
और कार्यशाला, एक अद्वितीय मुद्रण प्रेस और खजाना, एक अद्वितीय कीमती वस्तु
और घोषणा में सर्वशक्तिमान निर्माता के नामों का उल्लेख है। यह भी वैसा ही है जैसे
उनकी पूर्णता का एक अनूठा भजन। ये मिट्टी के कण हमें बताते हैं कि
वे एक महाप्रतापी निर्माता की आज्ञा के तहत और उसकी शक्ति के माध्यम से कार्य कर रहे हैं, जो आज्ञा का मालिक
है, "हो जाओ! और यह हो जाता है," और जिसके
आज्ञा सब कुछ अधीन है।

दूसरा मामला: यह कार्यों और का एक संक्षिप्त संकेत है
परमाणुओं की गति में बुद्धिमत्ता के उदाहरण। भौतिकवादी, जिनका तर्क है
वे अपनी पांच इंद्रियों के माध्यम से जो प्राप्त करते हैं, उस तक सीमित रहते हैं, परमाणुओं के परिवर्तनों को
यादृच्छिक और संयोग मानते हैं, और फिर भी वे अपने
इनसे समस्त अस्तित्व को समझाने का प्रयास और दृष्टिकोण
यादृच्छिक और संयोगपूर्ण गतिविधियाँ। लेकिन वह कैसे हो सकता है जिसका कोई संबंध नहीं है
क्या चेतना (अर्थ और उद्देश्य की तो बात ही छोड़िए) अस्तित्व की रचना करती है, जो ज्ञान और उद्देश्य के उदाहरणों
से भरपूर है?

इसके अनुसार: ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करे (36:
82), और कई अन्य समान छंद, परमाणुओं के परिवर्तन पर आधारित हैं
विभिन्न उद्देश्यों और कर्तव्यों पर मार्गदर्शन करें और बुद्धिमत्ता के कई उदाहरण प्रस्तुत करें।
हम उदाहरण के तौर पर इनमें से कुछ उद्देश्यों का उल्लेख करेंगे।

प्रथम: अपनी शक्ति के माध्यम से, सर्व-प्रतापी सृजक चलता है और उपयोग करता है
परमाणुओं। वह प्रत्येक आत्मा को एक मॉडल के रूप में लेता है और अपने सृजन के कार्यों के मानवीकरण को
नवीनीकृत और ताज़ा करता है, हर साल इसे एक नए शरीर से सुसज्जित करता है। इसके अलावा,
वह सृष्टि की प्रत्येक पुस्तक से असंख्य पुस्तकों की चमत्कारिक रूप से प्रतिलिपियाँ बनाता है

अपनी बुद्धि के माध्यम से, एक सत्य को हमेशा अलग-अलग रूपों में दिखाता है, और तैयार करता है
जमीन को ढक लेता है और प्राणियों, संसारों और ब्रह्मांडों के लिए एक दूसरे का अनुसरण करने के रास्ते बना देता है
अन्य।

दूसरा: समस्त प्रभुत्व के सर्वशक्तिमान स्वामी ने इस संसार की रचना की,
विशेष रूप से इसकी सतह, एक तरह से जिससे खेती फलने-फूलने और उत्पादन करने में सक्षम हो
हमेशा ताजा फसलें ताकि वह अपनी शक्ति के अनगिनत चमत्कारों को बो सके और काट सके। इस प्रकार, बुद्धि के साथ परमाणुओं को गतिमान करके और उन्हें काम में लगाकर
पृथ्वी के अपने क्षेत्र में व्यवस्था बनाए रखने के लिए, वह निरंतर एक नया रूप प्रदर्शित करता है
अपनी शक्ति के चमत्कारों के माध्यम से ब्रह्मांड को प्रभावित करता है और अपने खेत से हमेशा अलग-अलग फसलें पैदा करता है। परमाणुओं की गति के माध्यम से, वह अपने उपहारों का प्रदर्शन करता है
दया का अनंत खजाना और उसकी अनंत शक्ति के चमत्कारों के नमूने।

तीसरा: शाश्वत लेखक परमाणुओं को पूर्ण बुद्धि के साथ गतिमान करता है
और उन्हें पूर्ण क्रम के साथ नियोजित करता है ताकि, उनके नामों की असीम कढ़ाई को प्रदर्शित करके उनके प्रकटीकरण को सामने रख सके,
एक सीमित क्षेत्र में अनंत शिलालेखों का प्रदर्शन करें और अंतहीन संकेत लिखें, जो
एक छोटे से पृष्ठ पर, असीम अर्थ व्यक्त करेंगे। हालाँकि इस साल की फसलें
अपनी प्रकृति के संबंध में पिछले वर्ष की तरह ही हैं, उनके अर्थ भिन्न हैं। चूंकि उनके सापेक्ष निर्धारण और पहचान बदल गई है, इसलिए वे
कई अलग-अलग अर्थ प्रदर्शित करते हैं। वे रूप, संरचना और उपस्थिति में लगभग समान हैं, लेकिन सच तो यह है कि उन्हें हर साल नवीनीकृत किया जाता है। हालाँकि वे
अपने भौतिक अस्तित्व, अपने सुंदर अर्थों के संबंध में क्षणभंगुर हैं
संरक्षित, निरंतर और स्थायी हैं।

चूँकि पेड़ की पत्तियों, फूलों और फलों में कोई आत्मा नहीं होती, इसलिए वे
हर वसंत में अर्थ और उपस्थिति दोनों में एक ही। लेकिन जैसा कि वे हैं
प्रत्येक बसंत में नया बनता हुआ एक पेड़ बार-बार पत्ते, फूल आदि देता है
वर्षों तक फल देता है, तथा ईश्वरीय कृत्यों के अर्थ को दर्शाता है
नाम, जिनकी अभिव्यक्तियाँ निरंतर नवीनीकृत होती रहती हैं।

चौथा: फसलों या सजावट या अन्य वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए
आंतरिक आयामों की सबसे व्यापक दुनिया के लिए उपयुक्त प्रावधान
चीजें और आदर्श रूपों या प्रतिनिधित्वों की दुनिया, और अंतहीन दुनिया
परलोक के विषय में, सर्वशक्तिमान महामहिम परमेश्वर इस संसार की संकीर्ण खेती में, पृथ्वी के मुख की कार्यशाला और क्षेत्र में परमाणुओं को गतिशील करता है,
और ब्रह्माण्ड को निरंतर गतिशील रखता है तथा इसके प्राणियों को परिचालित करता है।
अपनी शक्ति के अनंत खजाने से, वह संसार में एक अंतहीन प्रवाह का कारण बनता है
कुछ अदृश्य में प्रवेश करता है, और कुछ परलोक में।

पांचवां: सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपनी शक्ति और ऊर्जा के माध्यम से परमाणुओं को गतिमान करता है।
पूर्ण बुद्धि के साथ, और अनंत को प्रदर्शित करने के लिए उन्हें पूर्ण क्रम के साथ उपयोग करता है

दिव्य पूर्णता, उसकी कृपा और महिमा की अनंत अभिव्यक्तियाँ, और
इस सीमित भौतिक क्षेत्र में और संसार में उनके प्रभुत्व की अनगिनत महिमा
एक छोटा, सीमित समय। वह कई वास्तविकताओं के बारे में बनाता है
अदृश्य, और परलोक के लिए कई फल, और स्थायी से आविष्कार करता है
नश्वर की पहचान दुनिया से संबंधित कई कढ़ाई
आदर्श रूप और सार्थक बुनाई को रिकॉर्ड किया जाना चाहिए और शाश्वत बनाया जाना चाहिए
संरक्षित गोलियाँ। इसलिए, जो परमाणुओं को गतिमान करता है, वह है
वही सत्ता जो इन महान उद्देश्यों और ज्ञान के उदाहरणों को प्रकट करती है।
यदि ऐसा नहीं होता तो प्रत्येक परमाणु को सूर्य के बराबर बड़े मस्तिष्क की आवश्यकता होती।

भौतिकवादी दार्शनिक मानते हैं कि परमाणुओं की गति लक्ष्यहीन है।
वे अपनी गति में ज्ञान के अनंत उदाहरणों के प्रति अंधे हैं, जो उनसे बहुत दूर हैं।
उपरोक्त पांच बिंदुओं से अधिक, वे उन्हें स्तब्ध और लक्ष्यहीन मानते हैं।
हालाँकि, वास्तविकता में, ये परमाणु मेवलेवी दरवेशों की तरह घूमते हैं
भगवान और उनके नामों का उच्चारण दो आनंदपूर्ण गतियों में, एक घूमती हुई
एक अपनी धुरी पर और दूसरा वृत्ताकार घूमता हुआ।

दूसरा बिन्दु: प्रत्येक परमाणु में दो सत्य साक्ष्य छिपे हैं।
अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता का अस्तित्व और एकता। शक्तिहीन होने के बावजूद
और अचेतन, यह अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के लिए निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत करता है
महत्वपूर्ण कर्तव्यों और कार्यों को इस प्रकार पूरा करके अस्तित्व बनाए रखना मानो कि
सचेत। यह उसी सत्ता की एकता की भी गवाही देता है, जो सबका मालिक है
सार्वभौमिक व्यवस्था के अनुरूप भौतिक और अभौतिक प्रभुत्व
सामान्य रूप से, और प्रत्येक स्थान के नियमों के अनुसार जिसमें वह प्रवेश करता है। यह बस जाता है
हर जगह को मानो वह उसकी मातृभूमि हो। यह सब दिखाता है कि वह जो
परमाणु का स्वामित्व उन सभी स्थानों का है जहां वह प्रवेश करता है।

अपने आकार और दुर्बलता के साथ असंगत बहुत भारी कर्तव्यों को पूरा करके, परमाणु दिखाता है कि वह एक के आदेश पर और नाम पर कार्य करता है
पूर्ण शक्ति के साथ। ब्रह्मांड के सार्वभौमिक क्रम के अनुरूप होकर और
बिना किसी बाधा के हर जगह प्रवेश करना, मानो जानबूझकर, यह दर्शाता है कि यह
पूर्ण ज्ञान वाले एक ही प्राणी की शक्ति और बुद्धि के माध्यम से कार्य करता है। एक निजी अपने क्षेत्र से सेना के सभी डिवीजनों से जुड़ा होता है
स्क्वाड्रन को कोर में शामिल किया जाता है, तथा प्रत्येक कनेक्शन के संबंध में कर्तव्य होते हैं।
उन कर्तव्यों का पालन करना और इसके अंतर्गत प्रशिक्षण और निर्देश प्राप्त करना
सामान्य सैन्य आदेश, संक्षेप में वह एक सर्वोच्च कमांडर का पालन कर रहा है जो पूरी सेना का प्रभारी है। इसी तरह, किसी भी स्थान पर स्थित एक परमाणु
कई अन्य यौगिकों के भीतर एक यौगिक के भागों का एक अलग प्रभाव होता है
हर दूसरे भाग और यौगिक के साथ उद्देश्यपूर्ण संबंध और लाभकारी परिणाम प्राप्त करने के लिए एक सुव्यवस्थित कार्य। इससे पता चलता है कि वह कौन है

ब्रह्माण्ड को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, प्रत्येक परमाणु को ऐसी स्थिति में रख सकता है
जिससे यह इन कनेक्शनों को सुरक्षित रखता है और नुकसान पहुंचाए बिना कार्य करता है
इनमें से कोई भी लाभकारी परिणाम। उदाहरण के लिए, आँख में स्थित एक परमाणु
पुतली का आंख की वाहिकाओं के साथ एक सुव्यवस्थित संबंध होता है, और मोटर और
संवेदी तंत्रिकाओं के साथ, और फिर चेहरे के साथ, और आगे सिर के साथ,
धड़, और पूरा शरीर। इसके अलावा इसके संबंध में कार्य और कर्तव्य भी हैं
प्रत्येक। इससे पता चलता है कि केवल वही जो सभी शारीरिक सदस्यों का निर्माण करता है, वह कर सकता है
सही परमाणु को सही स्थान पर रखें।

पोषण के रूप में शरीर में प्रवेश करने वाले परमाणु भोजन के माध्यम से अपनी यात्रा करते हैं।
एक आश्चर्यजनक क्रम और बुद्धिमत्ता के साथ कारवां। वे तरीकों और तरीकों से गुजरते हैं
चरणों को व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाना और, जानबूझकर और बिना किसी बाधा के आगे बढ़ना
भ्रम की स्थिति में, तब तक जारी रखें जब तक कि वे "फ़िल्टर" (पाचन) से न निकल जाएं
जीवित प्राणी के शरीर में अंग) होते हैं। फिर उन्हें लाल रक्त कोशिकाओं पर चढ़ाया जाता है ताकि उन सदस्यों और कोशिकाओं की सहायता की जा सके जिन्हें पोषण की आवश्यकता होती है
उदारता का नियम। इससे पता चलता है कि जो इन परमाणुओं को चलाता है और
उन्हें हजारों विभिन्न चरणों से गुजरना पड़ता है, जो अनिवार्य है
एक सर्व-उदार प्रदाता, एक सर्व-दयालु निर्माता, के संबंध में
जिसकी शक्ति कण और तारे बराबर हैं।

इसके अलावा, परमाणु चमत्कारी कार्यों का निर्माण या बुनाई करने के लिए सहयोग करते हैं
कला को इतने अद्भुत तरीके से बनाया गया है कि प्रत्येक परमाणु प्रत्येक दूसरे परमाणु पर व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से सभी अन्य परमाणुओं पर प्रभुत्व और अधीनता दोनों की स्थिति में है। यह देखते हुए, प्रत्येक परमाणु या तो उस अद्भुत को जानता है और बनाता है
ज्ञान और कला का प्रदर्शन (असीम रूप से असंभव), या इसके लिए सौंपा गया है
स्थान और गति और दिव्य नियति के आदेश से, कलम द्वारा आगे बढ़ता है
एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता की शक्ति का।

उदाहरण के लिए, हागिया सोफिया के गुंबद में लगे पत्थर एक दूसरे के अधीन और प्रभुत्वशाली दोनों हैं। अगर हम इस बात से इनकार करते हैं कि उन्हें किसी ने स्थापित किया है
एक कुशल वास्तुकार होने के नाते, हमें यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक पत्थर सिनान की तरह ही महान वास्तुकार है, क्योंकि प्रत्येक पत्थर को दूसरों को अपने शिल्प को अपनाने के लिए राजी करना होगा।
उनके उचित स्थान। इसी तरह, यदि सभी परमाणु जो जीव बनाते हैं, जो हैं
अनंत रूप से अधिक कुशलता से निर्मित, अद्भुत, और ज्ञान से भरा हुआ
हागिया सोफिया के गुंबद, मास्टर बिल्डर पर निर्भर नहीं थे
ब्रह्मांड के आदेश के अनुसार, हमें प्रत्येक को पूर्णता के उतने ही गुण देने होंगे जितने ब्रह्मांड के निर्माता को देने होंगे। चूँकि

अविश्वासी एक अनिवार्यतः अस्तित्ववान सत्ता को नकारते हैं, उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है
जितने परमाणु हैं, उतने ही झूठे देवताओं को स्वीकार करें। इस प्रकार वे सभी एक ही हैं
गहन एवं पूर्ण अज्ञान की स्थिति।

तीसरा बिन्दु: सजीव पिंडों में परमाणुओं को गतिमान रखने तथा उन्हें अनेक रूपांतरणों से गुजरने के लिए प्रेरित करने का एक दैवीय उद्देश्य यह है कि
उन्हें जीवंत और अर्थपूर्ण बनाइए। यह उन्हें उपयुक्त बनाता है
वह सामग्री जिससे परलोक का निर्माण किया जा सके। यह ऐसा है मानो मानव, पशु और
यहां तक कि संयंत्र निकाय भी गेस्टहाउस, बैरक या प्रशिक्षण के लिए स्कूल थे
निर्जीव परमाणुओं को निर्देश दें ताकि वे प्रकाशित और परिष्कृत हो सकें। विभिन्न कर्तव्यों का पालन करके, वे इस संसार में परमाणु होने के योग्य बनते हैं
स्थायित्व, परलोक का निवास, जिसके सभी तत्व जीवित हैं।

प्रश्न: हम कैसे जागरूक हो सकते हैं कि ईश्वरीय शक्ति विद्यमान है?
प्रत्येक परमाणु की गति में क्या प्रभाव पड़ता है (जैसा कि ऊपर बताया गया है)?

उत्तर: पहला: हम निर्माता की बुद्धि के माध्यम से जागरूक हो सकते हैं,
जो ज्ञान की उद्देश्यपूर्णता या उदाहरणों द्वारा स्थापित और सिद्ध है
और सभी प्राणियों में सुव्यवस्था देखी जाती है। वह बुद्धि, जो किसी विशेष वस्तु के साथ ज्ञान के सार्वभौमिक उदाहरण जोड़ती है, वह किसी भी वस्तु को नहीं छोड़ेगी।
परमाणुओं की गति, जो ब्रह्मांड के प्रवाह में सबसे बड़ी गतिविधि प्रदर्शित करती है
और बिना किसी उद्देश्य के ज्ञान से भरी कढ़ाई के साधन हैं।
दिव्य बुद्धि और संप्रभुता, जो सबसे छोटे प्राणी को भी
अपने कर्तव्य और उसकी उचित पूर्णता के लिए उपयुक्त मजदूरी और प्रतिफल,
अपने सबसे अधिक संख्या वाले और महत्वपूर्ण सेवकों को बिना रोशनी के, बिना
एक मजदूरी।

दूसरा: तत्वों को चलायमान करके और उनका उपयोग करके, सर्वज्ञ निर्माता कुछ परमाणुओं को खनिजों के स्तर तक ऊपर उठा देता है जैसे कि वे खनिज हों।
उनकी पूर्णता का प्रतिफल, और उन्हें निर्देश देता है कि किस प्रकार से वे अपने मार्ग में उसकी महिमा करें
खनिजों का। वह निर्जीव खनिजों को गतिमान करता है और उनका उपयोग करता है
उन्हें सब्जी जीवन की डिग्री के साथ पुरस्कृत करें। वह सब्जियों को गति में लाता है
और उन्हें जानवरों के भोजन के रूप में उपयोग करता है, इस प्रकार उन्हें पशु जीवन का दर्जा देता है। वह जानवरों के शरीर में मौजूद परमाणुओं को मनुष्यों के भोजन के रूप में उपयोग करता है
और उन्हें मानव जीवन के स्तर तक बढ़ावा देता है। अंत में, कई को परिष्कृत करके
मानव शरीर में परमाणुओं को बार-बार छानने के माध्यम से, वह उन्हें ऊपर उठाता है
शरीर के सबसे नाजुक और सूक्ष्म अंग: मस्तिष्क और हृदय।
इससे हम समझ सकते हैं कि प्रत्येक परमाणु की गति न तो यादृच्छिक है और न ही
लक्ष्यहीन; बल्कि, उन्हें स्वयं के योग्य एक प्रकार की पूर्णता की ओर दौड़ने के लिए बनाया गया है।

तीसरा: सजीव प्राणियों में परमाणुओं में से कुछ - जैसे छोटे
फलों के बीज और अन्य बीज - इस तरह के प्रकाश, परिष्कार और
गुणवत्ता कि वे बाकी परमाणुओं के लिए एक आत्मा या राजा की तरह बन जाते हैं और,
कहते हैं, एक शक्तिशाली पेड़ के लिए। तो एक शक्तिशाली पेड़ के परमाणुओं में से कुछ को पदोन्नत किया जाता है

कई नाजुक प्रदर्शन करके उच्च रैंक (जैसे, फल के परमाणु होने के लिए) एक पेड़ के जीवन-चक्र में कई चरणों से गुजरना और कर्तव्यों का निर्वहन करना। इससे पता चलता है कि सर्वज्ञ निर्माता के आदेश से, ये परमाणु परिष्कृत हो जाते हैं, प्रकाश, और उनमें प्रकट दिव्य नामों के सम्मान में रैंक और सृष्टि के दिव्य नियम द्वारा निर्धारित गति के प्रकार के अनुसार।

निष्कर्ष रूप में, सर्वज्ञ निर्माता ने प्रत्येक चीज़ के लिए एक नियत किया है पूर्णता की प्राप्य श्रेणी और अस्तित्व का उचित स्तर। तदनुसार, उसने इसे कार्य करने और उसे प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की है वह हर चीज़ को पूर्णता के अपने स्तर और अस्तित्व के स्तर की ओर प्रेरित करता है। यह एक ऐसा नियम है जिसे उसने सभी सृष्टि के प्रभु के रूप में स्थापित किया है, जो कि पौधों और जानवरों के साथ-साथ निर्जीव चीजों के क्षेत्र में भी यह प्रभावी है। इस प्रकार सादी मिट्टी अमूल्य हीरे जैसे सभी आभूषणों का स्रोत बन सकती है। यह भगवान के एक सार्वभौमिक नियम को दर्शाता है कि वह भगवान है, एक है जो सभी प्राणियों का पालन-पोषण, विकास और प्रशिक्षण करता है।

सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता पशुओं को एक विशेष आनंद देता है, जो वह प्रजनन के व्यापक कानून में इसे पुरस्कार के रूप में प्रयोग करता है। वह पुरस्कार देता है मधुमक्खियों और बुलबुल जैसे जानवर, जिन्हें वह कुछ अन्य कार्यों में नियोजित करता है अपने आधिपत्य से संबंधित कर्तव्यों का पालन, विशेष पूर्णता की मजदूरी के साथ। प्रत्येक को उत्कृष्टता का एक स्तर प्रदान करता है जो उत्सुक उद्योग का एक स्रोत है और आनंद। यह वास्तविकता उदारता के एक व्यापक कानून की नोक को प्रकट करती है।

हर चीज़ की वास्तविकता एक दिव्य सत्ता की अभिव्यक्ति में निहित है नाम, जिसके लिए वह चीज़ दर्पण है। इसमें जो भी सुंदरता दिखती है, वह दर्पण है। उस नाम के कारण जो इसे इस प्रकार होना आवश्यक बनाता है। चाहे व्यक्तिगत वस्तु चाहे आप इसके बारे में जानते हों या नहीं, इसमें जो सौंदर्य दिखाई देता है वह इसलिए है क्योंकि वह वांछित है ऐसा होना चाहिए। यह अनुग्रह के एक व्यापक कानून की नोक को प्रदर्शित करता है और सुन्दरीकरण।

जैसा कि उनके उदारता के नियम द्वारा अपेक्षित है, सर्व-उदार सृजक जब कोई चीज़ मर जाती है तो वह उसे दिया गया पद और पूर्णता वापस नहीं ले लेता। बल्कि, वह पूर्णता के उस वाहक के फल, वास्तविक अर्थ और पहचान और (यदि कोई है तो) आत्मा को स्थायी बना देता है।

उदाहरण के लिए, उसने इस संसार में मानवता को जो सिद्धियाँ प्रदान की हैं, उनके अर्थ और फल को वह स्थायी बनाता है। वह उन सिद्धियों को भी लौटा देगा जो उसने इस संसार में मानवता को प्रदान की हैं। उनके प्रति आभारी विश्वासियों का धन्यवाद और प्रशंसा - फल के रूप में सन्निहित स्वर्ग। इसमें दया के एक महान नियम की झलक स्पष्ट है।

अद्वितीय सृष्टिकर्ता बिना किसी उद्देश्य के कुछ भी बर्बाद नहीं करता और कुछ भी नहीं करता। उदाहरण के लिए, वह उन जीवों के भौतिक अवशेषों का उपयोग करता है जो मृत्यु के समय मर गए थे। वसंत ऋतु के जीवों के निर्माण और निर्माण में शरद ऋतु का विशेष महत्व है।

जिसका अर्थ है: जिस दिन पृथ्वी एक और पृथ्वी में बदल जाएगी (14: 48),
और संकेत: परलोक का निवास - यह सब वास्तव में जीवित है
(29:64) उसकी बुद्धि चाहती है कि मिट्टी के कण, जो निर्जीव हैं और
अचेतन होते हुए भी इस दुनिया में महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करते हैं, परलोक के कुछ निर्माणों में उपयोग और शामिल किए जाते हैं, जिनमें से सभी तत्व,
इसके पत्थर और पेड़ सजीव और सचेत हो जाएंगे।
दुनिया के परमाणुओं को नष्ट करना या उन्हें अस्तित्वहीन कर देना व्यर्थ होगा। इसमें बुद्धि के एक शक्तिशाली नियम की झलक मिलती है।

इस संसार के अनेक फल, परिणाम और अर्थ, साथ ही
जिन्न और मानव (जिन्न) के कार्यों से युक्त या उनसे बनी पुस्तकें
प्राणी) को यहाँ रहते हुए दिव्य आदेशों का पालन करने का जिम्मा सौंपा गया है, और उनके
शरीर और आत्मा को परलोक के बाजार में भेजा जाता है। न्याय और बुद्धि की मांग है कि, अपनी व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त करने के बाद
अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए, परमाणु उनका साथ देते हैं और उनकी सेवा करते हैं
अर्थों को परलोक की रचना में शामिल किया जाएगा। वे इस दुनिया के मलबे के साथ शामिल किए जाएंगे, कई बार प्राप्त और सेवा की गई है
जीवन का प्रकाश, तथा सजग प्राणियों के महिमा-वर्धन का साधन होने के पश्चात्। इसमें न्याय के महान् नियम का सार स्पष्ट है।

जिस तरह आत्मा शरीर पर हावी होती है, उसी तरह ईश्वरीय नियति द्वारा निर्धारित और आदेशित सृष्टि, अस्तित्व और जीवन के आदेश निर्जीव पदार्थ पर हावी होते हैं। निर्जीव पदार्थ प्रकृति के कारण एक स्वभाव और व्यवस्था ग्रहण करते हैं।
ईश्वरीय नियति का नियम और दृढ़ संकल्प। इस प्रकार, असंख्य किस्मों में
अंडे और शुक्राणुओं के साथ-साथ बीजों और अनाजों में भी, वे विभिन्न स्तरों को प्राप्त करते हैं
ईश्वरीय आदेशों और नियमों के अनुसार अस्तित्व और शोधन
सृष्टि की सभी रचनाएँ नियति द्वारा अलग-अलग ढंग से निर्धारित की जाती हैं।

सभी पदार्थ हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और अन्य धातुओं से बने होते हैं।
कार्बन, नियति के विभिन्न आदेशों और दृढ़ संकल्प के कारण असंख्य संस्थाओं में जारी होता है। इस तरह, वे विभिन्न प्रकार और प्रजातियों में अस्तित्व और शोधन के विभिन्न रैंक प्राप्त करते हैं। इसलिए यदि किसी परमाणु में
बार-बार जीवन की सेवा की और जीवन में निहित प्रभु की महिमा की,
तब प्रभु को उसके द्वारा समझे गए अर्थों के ज्ञान को रिकॉर्ड करना होगा, ताकि
बोलो, अपने अमूर्त माथे पर भाग्य की कलम से, जो देखती है
कुछ भी नहीं। यह उसके ज्ञान के सर्वव्यापी होने के कारण आवश्यक है। इसमें,
सर्वव्यापी ज्ञान के एक महान् नियम का सिरा स्पष्ट है।

संक्षेप में, और उपरोक्त सभी को देखते हुए, परमाणुओं को यादृच्छिक नहीं माना जा सकता है
संस्थाएँ। ऊपर बताए गए सात कानूनों में से प्रत्येक के दृश्यमान सिरे से परे
(अर्थात् प्रभुता, उदारता, अनुग्रह, दया, बुद्धि, न्याय, और सर्व-

ज्ञान को व्यापक बनाने वाले) तथा अन्य अनेकों में, ईश्वर के महानतम या सबसे व्यापक नाम तथा उसकी महानतम अभिव्यक्ति का संकेत मिलता है। उस संकेत से हम समझ सकते हैं कि इस संसार की सभी सत्ताओं की तरह सभी परमाणु भी एक ही हैं।
ज्ञान के साथ गणना की गई एक नाजुक संतुलन में चलते हैं। वे शक्ति का अनुसरण करते हैं
सृष्टि, अस्तित्व एवं जीवन के आदेश, तथा निर्धारित सीमाओं के भीतर
नियति द्वारा। जैसे-जैसे परमाणु दूसरे, उच्चतर अस्तित्व के लिए तैयार हो रहे हैं,171 हम
सजीव शरीर को उनके प्रशिक्षण के लिए एक तरह के स्कूल, बैरक या अस्थायी आवास गृह के रूप में देखना चाहिए। इस प्रस्ताव को निश्चितता के साथ आगे रखा जा सकता है।

निष्कर्ष: जैसा कि प्रथम शब्द में कहा गया है और प्रदर्शित किया गया है, सभी
सभी चीजें कहती हैं: ईश्वर के नाम पर। इस प्रकार सभी परमाणु और समूह और संयोजन
परमाणु अपनी-अपनी व्यक्तिगत प्रवृत्ति की भाषा से कहते हैं: ईश्वर के नाम पर । इसी सूत्र से वे गतिमान हैं।

उपरोक्त तीन बिंदुओं के तर्क के अनुसार, सभी परमाणु कहते हैं :
उस ईश्वर का नाम जो अत्यन्त दयालु, दयावान है ,
जब वे अपनी गति शुरू करते हैं तो उनके व्यक्तिगत स्वभाव। अर्थात्: "मैं भगवान के नाम पर, उनके लिए, उनकी अनुमति से और उनके माध्यम से आगे बढ़ रहा हूँ
शक्ति।" जैसे ही वे अपना प्रस्ताव समाप्त करते हैं, वे कहते हैं: "सभी प्रशंसा और आभार
वे सारे संसार के स्वामी परमेश्वर के लिए हैं।" इस प्रकार प्रत्येक अपने आप को एक लघु रूप में प्रदर्शित करता है
शक्ति की कलम की नोक पर जटिल रूप से तैयार किए गए जीवों की कढ़ाई का पता लगाया गया है, जिनमें से प्रत्येक
प्रशंसा के एक स्तोत्र (निर्माता के लिए) की तरह है। प्रत्येक को
इसे रिकॉर्ड प्लेयर की सुई के बिंदु के रूप में देखा जाता है जो जीवों को चालू करता है, जिनमें से प्रत्येक
जो एक शक्तिशाली, गैर-भौतिक दिव्य रिकॉर्ड प्लेयर पर रिकॉर्ड की तरह है
हथियारों की एक अनंत संख्या.

इस प्रकार परमाणु जीवों को अपने प्रभु की स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं और
परमेश्वर की स्तुति का भजन गाओ।

> उसमें उनकी प्रार्थना होगी: "हे ईश्वर, आप महान हैं!
> और उनका अभिवादन होगा: "शांति!" और उनका आह्वान समाप्त होगा
> "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है!"

---

171 यह देखा गया है कि इस सघन, तुच्छ संसार में जीवन का प्रकाश सर्वाधिक स्वतंत्रतापूर्वक प्रज्वलित और प्रसारित होता है।
असाधारण गतिशीलता के साथ प्रचुर मात्रा में; कि जीवन की एक चिंगारी प्रज्वलित हो जाती है
सबसे निराशाजनक सामग्री और सबसे क्षयग्रस्त पदार्थों में व्यापक विस्तार। इस में
इस प्रकार, भारी और निराशाजनक मामले को सूक्ष्म बना दिया जाता है और जीवन के प्रकाश से चमक दी जाती है।
हमें बताता है कि यह अशांत, सघन और निम्न जगत्, एक अन्य सूक्ष्मतर, अधिक सूक्ष्मतर सत्ता के लिए, परमाणुओं की क्रियाशीलता और जीवन के प्रकाश के माध्यम से पिघल रहा है, परिष्कृत हो रहा है और अधिक सुन्दर बन रहा है।
यह एक श्रेष्ठ, पवित्र और सदा जीवित दुनिया है। ऐसा लगता है जैसे इसे एक बेहतर दुनिया में जाने के लिए सजाया जा रहा हो।
दुनिया। यदि वे लोग जो इतने संकीर्ण सोच वाले हैं कि वे शारीरिक पुनरुत्थान को समझने और उस पर विश्वास करने में असमर्थ हैं, कुरान की रोशनी से देखें, तो वे देखेंगे कि एक दिव्य कानून (भगवान की ओर से जारी)
स्वयं-निर्भर होने के कारण) असीम रूप से व्यापक और शक्तिशाली है जो सभी को पुनर्जीवित और पुनर्व्यवस्थित कर सकता है
परमाणु एक सुव्यवस्थित सेना की तरह, सृष्टि के रखरखाव में स्पष्ट रूप से कार्यरत है।

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

ऐ हमारे रब, हमारे दिलों को भटकने न दे, इसके बाद कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है।
और हम पर अपनी कृपा बरसा, निस्संदेह तू ही सर्वशक्तिमान है।
सर्व-प्रदानकारी।

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद पर ऐसी कृपा बरसाओ, जैसी हमें चाहिए।
आप को प्रसन्न करे और उसका हक पूरा करे, और उसके परिवार को भी,
साथियों और धर्म के अनुयायियों को शांति प्रदान करें।
हम पर और हमारे धर्म पर। आमीन, हे सारे संसार के पालनहार!

इकतीसवाँ शब्द

इकतीसवाँ वचन

पैगम्बर मुहम्मद का स्वर्गारोहण

(नोट: पैगम्बर के स्वर्गारोहण में विश्वास इसका परिणाम है, और इसका प्रभाव भी इसी पर पड़ता है)
प्रकाश और शक्ति, विश्वास के स्तंभों में विश्वास से.172 आरोहण
जो लोग इन बातों को स्वीकार नहीं करते, उनके लिए स्वतंत्र रूप से यह सिद्ध करना संभव नहीं है।
खंभे, पहले उन्हें साबित किए बिना। इसलिए हम उन विश्वासियों को संबोधित करते हैं जो
इसमें संदेह नहीं है। हालाँकि, समय-समय पर हम अविश्वासियों को संबोधित करेंगे।
स्वर्गारोहण की सच्चाई के कुछ पहलुओं का उल्लेख रिसाले-ए-नूर में अन्यत्र किया गया है। मेरे भाइयों के आग्रह पर, हम चाहते हैं कि
ईश्वर की कृपा और सहायता से उन्हें उस सत्य के सार के साथ एकाकार किया जा सकता है और
संपूर्णता की संपूर्ण सुंदरता को प्रतिबिंबित करने के लिए उन्हें दर्पण में बदल दें
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

महिमावान है वह, जिसने अपने सेवक को रात में यात्रा पर निकाला
अल-मस्जिदु'एल-हरम से अल-मस्जिदु'एल-अक्सा' तक , जिसके परिवेश
हमने बरकत दी, ताकि उसे अपनी निशानियाँ दिखाएँ। निश्चय ही वह
सुनने वाला, देखने वाला है। (17:1)

यह तो एक रहस्योद्घाटन है। एक महान शक्ति वाले ने इसे सिखाया है,
एक फर्म, जो आत्मा में प्रवेश करने और परिपूर्ण होने की क्षमता रखती है, के साथ बढ़ी
जब वह सर्वोच्च क्षितिज पर था, तब वह सभी वैभवों से भरा हुआ था। फिर वह निकट आया
और करीब आ गया, इसलिए वह दो तारों के बीच कुछ दूरी पर था
झुकना या उससे भी निकट जाना। और उसने अपने सेवक को बताया कि वह क्या चाहता है
उसने जो देखा, उसका दिल विरोध नहीं करता। तो क्या तुम उससे उस बात पर विवाद करोगे जो उसने देखी? उसने उसे एक दिन देखा था।
दूसरा अवतरण, सबसे दूर की सीमा के लोटे-वृक्ष द्वारा, इसके निकट है
शरण और निवास का उद्यान। यह तब था जब क्या घिरा हुआ था

---

172 ये ईश्वर के अस्तित्व और एकता, फ़रिश्तों, धर्मग्रंथों, पैगम्बरत्व और ईश्वरीय सत्ता में विश्वास हैं।
संदेशवाहक (ईश्वर के सभी पैगम्बरों और संदेशवाहकों में विश्वास सहित), और
पुनरुत्थान, तथा ईश्वरीय आदेश और नियति, मानवीय स्वतंत्र इच्छा को छोड़े बिना। (ट्र.)

लोटे के पेड़ ने उसे घेर लिया। दृष्टि न तो भटकी, न ही भटकी। सचमुच
क्या उसने अपने रब की सबसे बड़ी निशानियों में से एक देखी? (53:4-18)

O प्रथम श्लोक के विशाल खजाने में से हम केवल दो का वर्णन करेंगे
निश्चित रूप से वह है में सर्वनाम वह वाक्पटुता के सिद्धांत के रूप में संदर्भित करता है, क्योंकि
वे हमारे वर्तमान चिंता में शामिल हैं।

मक्का में मस्जिदुल-हरम से यरूशलेम में मस्जिदुल-अक्सा तक पैगंबर की यात्रा का
उल्लेख करने के बाद (उनके शासन की शुरुआत)
क़ुरआन का निष्कर्ष है: निस्संदेह वह सुनने वाला, देखने वाला है ।
सर्वनाम वह निश्चित रूप से वह है, जो सबसे दूर के बिंदु की ओर संकेत करता है
स्वर्गारोहण जिसका संकेत ऊपर 53:4-18 में दिया गया है, या तो सर्वशक्तिमान को संदर्भित करता है
ईश्वर या पैगम्बर.

यदि यह पैगम्बर को संदर्भित करता है, तो भाषा और संस्कृति के नियमों के अनुसार
कविता के पिछले भाग में, इसका अर्थ है: यह स्पष्टतः विशेष यात्रा है,
वास्तविकता, व्यापक। यह एक ऐसे सार्वभौमिक आरोहण का प्रतीक है, जिसके दौरान,
पैगम्बर ने प्रभु के सभी चिन्हों और दिव्य कला के चमत्कारों को सुना और देखा
जो दिव्य नामों के कारण उसकी दृष्टि में आया और उसके कानों में पड़ा।
सार्वभौमिक डिग्री में अभिव्यक्तियाँ दूरतम सीमा के लोटे-वृक्ष तक
और दो धनुषों के तारों के बीच की दूरी की निकटता। इस प्रकार,
अपने अंतिम वाक्य में, यह कविता उस विशेष यात्रा को सफलता की कुंजी के रूप में वर्णित करती है
एक ऐसी यात्रा जो सार्वभौमिक और असाधारण घटनाओं से भरी है।

यदि यह सर्वनाम सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है: आमंत्रित करने के लिए
अपने सेवकों में से एक को अपनी उपस्थिति की यात्रा पर ले जाओ और उसे यह जिम्मेदारी सौंप दो
एक कर्तव्य, सर्वशक्तिमान ईश्वर उन्हें मस्जिदुल-हरम से मस्जिदुल -अक्सा ले गए, जहाँ पैगंबर एकत्र हुए थे। वहाँ, उन्होंने उन्हें मुलाकात कराई
उनके साथ और दिखाया कि वह सभी का पूर्ण, निर्विवाद उत्तराधिकारी है
पैगम्बरों के धर्म के सिद्धांत। फिर वह उसे अपने राज्य के बाह्य और आंतरिक दोनों आयामों से होते हुए सुदूर सीमा के कमल-वृक्ष और दो धनुषों की डोरियों के बीच की दूरी की निकटता तक ले गया।

हम जानते हैं कि वह एक सेवक था और उसका स्वर्गारोहण एक विशेष घटना थी। हालाँकि, चूँकि उसे पूरे ब्रह्मांड से जुड़ा एक ट्रस्ट दिया गया था, उसे एक ऐसा प्रकाश दिया गया था जो ब्रह्मांड का रंग बदल देगा, और साथ ही
सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने वर्णन किया है कि उसके पास एक कुंजी थी जो अनंत खुशी का द्वार खोलती थी
स्वयं को वह मानता है जो सब कुछ सुनता और देखता है, ताकि उसकी विश्वव्यापी, व्यापक और सर्वव्यापी बुद्धि उस पर भरोसा करे,
प्रकाश, और कुंजी को देखा और समझा जा सकता है।

स्वर्गारोहण में निहित इस महान सत्य को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है:
चार सिद्धांत: स्वर्गारोहण क्यों आवश्यक था, इसकी वास्तविकता क्या है,
इसका ज्ञान क्या है, और इसके फल और लाभ क्या हैं?

पहला सिद्धांत: स्वर्गारोहण क्यों आवश्यक था?

प्रश्न: सर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्य के गले की नस से भी अधिक निकट है, स्वयं से भी अधिक निकट तथा भौतिकता से पूर्णतः मुक्त और इसलिए, जबकि सभी संत अपने दिल में उससे बातचीत कर सकते हैं, मुहम्मद साहब को संत बनने के लिए इतनी लंबी यात्रा क्यों करनी पड़ी?

क्या आप ईश्वर से बात करने के लिए स्वर्गारोहण (Ascension) पर जा सकते हैं?

उत्तर: हम इस गहन विषय पर दो तुलनाओं के माध्यम से चर्चा करेंगे बारहवें शब्द से, जो कुरान की चमत्कारिकता और स्वर्गारोहण के रहस्य से संबंधित है।

पहली तुलना: एक राजा के पास बोलने और संबोधित करने के दो तरीके होते हैं। या तो अपने निजी फोन पर किसी नाबालिग से संबंधित सामान्य विषय पर बात करता है मामले या निजी जरूरत के अनुसार, या सर्वोच्च संप्रभु, धार्मिक कार्यालय के सर्वोच्च प्रमुख और सर्वोच्च शासक के रूप में अपनी क्षमता या स्थिति में, अपने अधिकारों को व्यक्त करता है एक उच्च आदेश के रूप में आदेश जो उनकी महिमा को प्रकट करता है एक दूत या उच्च अधिकारी।

जैसा कि तुलना में कहा गया है, इस ब्रह्मांड के निर्माता, इसके बाह्य और आंतरिक आयामों में अस्तित्व के स्वामी, और शाश्वतता के स्वामी के दो स्वरूप हैं। बातचीत और बोलने के दो तरीके और अनुग्रह करने के दो तरीके। एक विशेष और निजी है; दूसरा सार्वभौमिक और सामान्य है। स्वर्गारोहण मुहम्मद के संतत्व का सार्वभौमिक और सबसे उत्कृष्ट रूप में प्रकटीकरण है और

अन्य सभी संतपदों से कहीं अधिक श्रेष्ठ। यह पैगंबर का सम्मान है सर्वशक्तिमान परमेश्वर का उनके नाम के माध्यम से वार्तालाप और सीधा संबोधन सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी और समस्त अस्तित्व के रचयिता की उपाधि।

दूसरी तुलना: एक व्यक्ति सूर्य के सामने एक दर्पण रखता है। अपनी क्षमता के अनुसार, दर्पण सूर्य की सात रंगों वाली किरणों से वह सब कुछ ग्रहण कर लेता है जो वह कर सकता है। प्रकाश। उस व्यक्ति का दर्पण के माध्यम से सूर्य के साथ संबंध होता है और सूर्य को प्रतिबिंबित करने की उसकी क्षमता के अनुसार होता है। यदि वह दर्पण के चमकते हुए भाग को निर्देशित करता है अपने अंधेरे घर या छोटे, निजी और छत से ढके बगीचे की ओर, वह या वह दर्पण की क्षमता के अनुसार ही लाभ उठा सकती है, अनुपात के अनुसार नहीं सूर्य का मूल्य.

दूसरा व्यक्ति दर्पण नीचे रखता है और सीधे सूर्य की ओर मुंह करके देखता है इसकी भव्यता और इसकी भव्यता को समझता है। वह फिर एक बहुत ही ऊंची पहाड़ी पर चढ़ता है ऊंचे पहाड़ पर बिना पर्दा डाले सूर्य की ओर मुंह करके उसकी भव्यता को निहारें व्यापक प्रभुत्व। वापस आते हुए, यह व्यक्ति अपने घर में बड़ी खिड़कियाँ बनाकर सूर्य के निरंतर प्रकाश से सीधा संबंध बनाने की कोशिश करता है घर या बगीचे की छत, और सूर्य से लाभ उठाने के अन्य साधन प्राप्त करता है सीधे तौर पर। इसका सामना करते हुए, वह व्यक्ति कृतज्ञता में कह सकता है: "हे सौम्य सूर्य,

दुनिया की सुन्दरता और आसमान की प्रियतमा, जो धरती के चेहरे को सोने से चमका देती है
प्रकाश और इसे और सभी फूलों को खुशी और खुशी में मुस्कुराता है! आपने मेरे घर और बगीचे को
रोशन और गर्म कर दिया है, जैसे आप दुनिया को रोशन करते हैं और
पृथ्वी के चेहरे को गर्म करो।" पहला व्यक्ति ऐसा नहीं कह सकता, क्योंकि उसके दर्पण में सूर्य का प्रतिबिंब
दर्पण की क्षमता तक ही सीमित है।

उसी प्रकार, वह एकल, शाश्वत रूप से प्रार्थित, जो सूर्य के बिना है
आदि और अनंत काल के स्वामी, मानव-प्रकृति में दो रूपों में स्वयं को प्रकट करते हैं जिनमें असंख्य डिग्री शामिल हैं। पहली
अभिव्यक्ति
प्रभु के साथ रिश्ते के माध्यम से हृदय के दर्पण में घटित होता है। हर कोई
अपनी क्षमता, आध्यात्मिक चरित्र के अनुसार कुछ निश्चित मात्रा में अनन्त सूर्य के प्रकाश और वार्तालाप की अभिव्यक्ति प्राप्त
कर सकते हैं
संतत्व की ओर यात्रा, और दिव्य अभिव्यक्तियों को प्राप्त करने की उनकी क्षमता
नाम और गुण। परिणामस्वरूप, जिस प्रकार का संतत्व प्राप्त होता है
किसी विशेष नाम की छाया में यात्रा करके या
विशेषता(ओं) में असंख्य डिग्री होती हैं।

दूसरा यह कि चूंकि हमारी प्रकृति व्यापक है और हम सबसे अधिक समावेशी हैं।
सृष्टि के वृक्ष का प्रबुद्ध फल होने के कारण, हम सभी दिव्य नामों को प्रतिबिंबित कर सकते हैं
हमारी आत्माओं का दर्पण। इस प्रकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं को और अपने सभी स्वरूपों को प्रकट करता है
सुंदर नाम मानवता के सबसे अच्छे और महानतम प्रतिनिधि हैं। इस प्रकार की अभिव्यक्ति पैगंबर के स्वर्गारोहण के दौरान हुई
थी।
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने अपने संतत्व को प्राप्त किया।
इसका अर्थ यह हुआ कि यह उनके संदेशवाहकत्व का प्रथम चरण बन गया।

संतत्व में व्यक्ति के हृदय और ईश्वरीय नामों के मन के बीच परदे होते हैं।
उपर्युक्त दूसरी तुलना में प्रथम व्यक्ति के मामले में, उदाहरणार्थ:
संदेशवाहक होने में कोई आवरण नहीं होता, जैसा कि दूसरी तुलना में दूसरे व्यक्ति के मामले में है, क्योंकि यह सीधे तौर पर
सर्वशक्तिमान ईश्वर के संदेश से जुड़ा हुआ है।
एक ही अस्तित्व में उनके सभी नामों का प्रकटीकरण। चूँकि पैगम्बर का
स्वर्गारोहण उनके संतत्व का सबसे बड़ा आश्चर्य था और यह उसके अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण क्षण का प्रतीक था।
सबसे बड़ा स्टेशन, यह मैसेंजरशिप में तब्दील हो गया था।

अपने आंतरिक पहलू में, स्वर्गारोहण संतत्व का प्रतीक है और यह एक यात्रा है
सृष्टिकर्ता को बनाया गया। अपने बाहरी पहलू में, यह संदेशवाहक है और इसका अर्थ है
सृष्टिकर्ता से सृजित की ओर वापसी (उनका मार्गदर्शन करने के लिए)। संतत्व ईश्वर की निकटता की डिग्री के माध्यम से यात्रा
है। इस प्रकार, इसके लिए प्राप्ति की आवश्यकता होती है
बहुत से पदों का होना चाहिए और इसलिए इसमें बहुत समय लगता है। संदेशवाहक का कार्य, जिसका प्रकाश सबसे बड़ा है,
ईश्वरीय निकटता की अनुभूति से आगे बढ़ता है - ईश्वर द्वारा एक को चुनना और
उसे व्यक्तिगत रूप से अपने निकट बनाना - अपनी सम्पूर्ण व्यापकता में। यह
एक पल में हो सकता है, जो परंपरा के लिए जिम्मेदार है: "आरोहण
"यह घटना एक क्षण में घटित हुई। पैगम्बर उसी क्षण गए और वापस आ गए।"

यहाँ हमें अविश्वासी से कहना चाहिए: चूँकि यह ब्रह्मांड एक
सबसे व्यवस्थित देश, भव्य शहर, या सुशोभित महल, इसमें एक होना चाहिए
शासक, मालिक और निर्माता। ऐसा शानदार, सर्व-महान मालिक है,
सर्वगुण संपन्न शासक, सर्वकृपालु निर्माता। एक ऐसा व्यक्ति भी है जिसका सार्वभौमिक दृष्टिकोण है, जिसका
उस पूरे देश, शहर या महल से संबंध है और
अपनी इंद्रियों, भावनाओं और क्षमताओं के माध्यम से प्रत्येक से जुड़ा हुआ है।
इस प्रकार, सर्व-भव्य निर्माता का ईश्वर के साथ एक उत्कृष्ट संबंध होगा।
उस व्यक्ति के साथ पूर्ण डिग्री, जिसके पास सार्वभौमिक दृष्टिकोण और व्यापकता है
चेतना, और उसे एक पवित्र संबोधन के साथ अनुग्रहित करेगा।

इस रिश्ते से सम्मानित लोगों में, पैगम्बर मुहम्मद ने इस रिश्ते को पूरी तरह से निभाया। उनकी उपलब्धियाँ खुद ही सब कुछ बयां करती हैं: दुनिया का आधा हिस्सा और मानवता का पाँचवाँ हिस्सा उनके नियंत्रण में है

और प्रभाव डाला, और उन्होंने ब्रह्मांड को एक नया आध्यात्मिक ज्ञान देकर प्रबुद्ध किया
रूप प्रदान करना और उसे एक उदात्त अर्थ प्रदान करना। आरोहण, पूर्णतम
उस रिश्ते की डिग्री, उसके लिए सबसे अधिक योग्य और उपयुक्त है।

दूसरा सिद्धांत: स्वर्गारोहण की वास्तविकता क्या है?

उत्तर: यह पैगम्बर मुहम्मद की विभिन्न स्तरों के माध्यम से यात्रा है।
पूर्णता। सर्वशक्तिमान ईश्वर के विभिन्न नाम और उपाधियाँ हैं जो परमेश्वर के स्वरूप में प्रकट होती हैं।
प्राणियों की व्यवस्था और स्वभाव, तथा उनके विविध कार्यों को प्रदर्शित करता है
आधिपत्य - उनका पालन-पोषण, प्रशिक्षण, भरण-पोषण और प्रदान करना -
आविष्कार और प्रशासन में अपने पूर्ण अधिकार को क्रियान्वित करने के परिणाम
"स्वर्ग" के स्तरों में प्राणी जहाँ वह अपना प्रभुत्व निभाता है
अलग-अलग तरीकों से और प्रत्येक स्तर की स्थितियों के अनुसार।

इस प्रकार, अपने विशेष सेवक को अपने प्रभु के कार्यों को दिखाने के लिए और इस प्रकार
उसे सभी मानवीय पूर्णता को ग्रहण करने, सभी दिव्य अभिव्यक्तियों को ग्रहण करने, ब्रह्मांड के सभी स्तरों को देखने, अपने प्रभुत्व की संप्रभुता की घोषणा करने, जो वह अनुमोदित करता है उसे घोषित करने, और सृष्टि के गूढ़ अर्थ को अनावृत करने में सक्षम बनाएं,
सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उसे बुराक (स्वर्गीय पर्वत) पर सवार किया। ईश्वर ने उसे उठाया
आकाश के माध्यम से बिजली की तरह, उसे उच्च और उच्चतर तक पदोन्नत किया
रैंक, और उसे हवेली से हवेली तक दिव्य प्रभुत्व प्रदर्शित किया और
एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में। उसने उसे अपने भाई, भविष्यद्वक्ताओं को भी दिखाया, जिनके
उन लोकों के स्वर्गों में एक के बाद एक निवास स्थान हैं। अंततः वह
उसे तारों के बीच की दूरी की निकटता के स्टेशन तक उठा दिया
दो बार झुककर प्रणाम किया और अपने सभी नामों की विशेष अभिव्यक्ति से उनका सम्मान किया
पूर्णतः, अपनी वाणी से, तथा स्वयं के दर्शन से।

हम इस उत्कृष्ट सत्य की जांच दो तुलनाओं के माध्यम से कर सकते हैं।

पहली तुलना: जैसा कि चौबीसवें वचन में समझाया गया है, एक राजा
उनके पास अलग-अलग उपाधियाँ हैं जिनके द्वारा उन्हें जाना जाता है और उनकी सरकार के विभिन्न विभागों में उनका उल्लेख किया जाता है, उनके बीच अलग-अलग पदनाम और विशेषताएँ हैं
विषयों की कक्षाएं, और उसके शासन के स्तरों के लिए अलग-अलग नाम और संकेत।
उदाहरण के लिए, वह न्याय विभाग में सर्वोच्च न्यायाधीश, सिविल सेवा में मुख्य प्रशासक, सेना में कमांडर-इन-चीफ और सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश हैं।
शिक्षा विभाग में शिक्षक। प्रत्येक कक्षा में उनके पास एक सीट या कुर्सी होती है
क्षेत्र और विभाग, जिसका अर्थ सिंहासन है। वह एक राजा
उसकी संप्रभुता के क्षेत्र में हजारों नाम और उपाधियाँ हो सकती हैं और
सरकार के विभागों के साथ-साथ संप्रभुता के एक हजार सिंहासन
दूसरे के भीतर। ऐसा लगता है जैसे, अपने सार्वजनिक व्यक्तित्व और संचार प्रणाली के कारण, वह हर विभाग में मौजूद है। अपने कानूनों, नियमों,
और प्रतिनिधियों, वह सभी अधिकारियों का पर्यवेक्षण करता है, सभी विषयों पर नजर रखता है, और
उनके द्वारा देखा जाता है। हर स्तर पर पर्दे के पीछे, वह प्रशासन करता है, अपने कार्यों को निष्पादित करता है
वह अपने आदेश, ज्ञान और शक्ति के कारण सतर्क रहता है।
प्रत्येक क्षेत्र में एक अलग केंद्र और मुख्यालय होता है। प्रत्येक क्षेत्र और विभाग के अलग-अलग नियम होते हैं। राजा अपने विषयों में से एक को नामित करता है, उसे दिखाता है
उन सभी क्षेत्रों और विभागों के लिए, और उसे अपने शाही गवाह बनाता है
प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय प्रभुत्व और आदेश। फिर वह उसे अपने समक्ष लाता है, उसे सभी क्षेत्रों और विभागों से संबंधित कुछ सामान्य और सार्वभौमिक आदेश सौंपता है, और उसे वापस भेज देता है।

इसी प्रकार, संसार के स्वामी, अनंत काल के राजा, के पास उनके प्रभुत्व की अभिव्यक्तियों के स्तर पर गुण और पदनाम हैं जो हैं
सभी अलग-अलग हैं लेकिन एक दूसरे से मेल खाते हैं। उनकी दिव्यता के क्षेत्र में,
उसके नाम और चिह्न अलग-अलग हैं, लेकिन उनकी अभिव्यक्तियाँ अलग-अलग हैं।
एक दूसरे के साथ संकेन्द्रित हैं। अपने शासन के राजसी निष्पादन में, वह
इसमें प्रतिनिधित्व और नाम हैं जो सभी अलग-अलग हैं लेकिन समान हैं
एक दूसरे को। अपनी शक्ति के संचालन में, उनके पास ऐसी उपाधियाँ हैं जो सभी अलग-अलग हैं लेकिन एक दूसरे को दर्शाती हैं। अपने गुणों की अभिव्यक्तियों में, उनके पास ऐसी उपाधियाँ हैं जो सभी अलग-अलग हैं लेकिन एक दूसरे को दर्शाती हैं।
खुद को प्रकट करने के पवित्र तरीके जो अलग-अलग हैं लेकिन एक दूसरे की ओर इशारा करते हैं।
अभिनय के तरीके, उसके पास बुद्धिमान कार्य हैं जो कई प्रकार के हैं लेकिन
एक दूसरे को परिपूर्ण करें। अपनी रंगीन कलात्मकता और कला के विविध कार्यों में, उन्होंने
आधिपत्य के भव्य पहलू जो भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे के अनुरूप हैं।

उन्होंने ब्रह्माण्ड को अद्भुत एवं अद्भुत ढंग से व्यवस्थित किया क्योंकि
इस रहस्यमय वास्तविकता का। ब्रह्मांड में एक के ऊपर एक अलग-अलग संरचनाएं हैं
अन्य, कणों से स्वर्ग तक, स्वर्ग के प्रथम स्तर से ईश्वर तक
सर्वोच्च सिंहासन। प्रत्येक स्वर्ग एक अलग दुनिया की छत है, एक कुर्सी है
दिव्य प्रभुत्व का प्रयोग, दिव्य कार्यों का केंद्र। उसके कारण

पूर्ण एकता अपने सभी नामों को एकल सत्ताओं पर केन्द्रित करने के माध्यम से स्वयं को प्रदर्शित करती है, सभी दिव्य नाम सभी में पाये जा सकते हैं
वह सभी क्षेत्रों और स्तरों में अपनी समस्त उपाधियों के साथ स्वयं को प्रकट कर सकता है।

हालाँकि, जिस प्रकार न्याय विभाग में राजा की न्यायप्रिय उपाधि प्रमुख है और अन्य अधीनस्थ हैं, उसी प्रकार प्रत्येक स्तर के प्राणियों और प्रत्येक स्वर्ग में एक दिव्य उपाधि प्रमुख है।

और बाकी सब उसके अधीन हैं। उदाहरण के लिए, जिस भी स्वर्ग में
पैगम्बर मुहम्मद ने पैगम्बर ईसा से मुलाकात की, जो ईश्वरीय नाम के मानव-प्रकटीकरण से प्रतिष्ठित थे, सर्वशक्तिमान ईश्वर निरंतर हैं
उस स्वर्ग में अभिव्यक्ति, मुख्य रूप से उसी नाम के साथ। फिर से,
स्वर्ग का वह क्षेत्र जो पैगम्बर मूसा का निवास स्थान है, ईश्वर का शीर्षक
सर्व-भाषण, जिसके द्वारा उसने मूसा को प्रतिष्ठित किया, प्रमुख है।

अंततः, चूंकि पैगम्बर मुहम्मद को प्रकटीकरण का सम्मान प्राप्त हुआ था
परमेश्वर के महानतम नाम और उसके सभी अन्य नामों के साथ-साथ
सार्वभौमिक पैगंबर होने के नाते, उसे अपने प्रभु के सभी लोगों के साथ जुड़ना चाहिए।
इसलिए, स्वर्गारोहण की वास्तविकता के लिए पैगंबर मुहम्मद की आवश्यकता थी
उन पैगम्बरों से मिलें जिनके आसन उन क्षेत्रों में हैं और सभी से होकर गुजरें
उन स्तरों का.

दूसरी तुलना: सेनापति की उपाधि, राजा की उपाधि,
सेना के सभी रैंकों में देखा जाता है। एक निजी अपने कॉर्पोरल को एक नमूने के रूप में देखता है
वह प्रभावशाली पदवी, और इसलिए उसकी बात सुनता है और उसका पालन करता है। एक कॉर्पोरल अपने सार्जेंट को
उसी तरह देखता है, और इसलिए उसका पालन करता है। एक सार्जेंट अपने लेफ्टिनेंट को उसी तरह देखता है
उसी तरह, और इसी तरह। वह प्रत्येक क्षेत्र में शीर्षक देखेगा (जैसे, कप्तान,
मेजर, कर्नल, जनरल और फील्ड मार्शल) को गोले के आकार के अनुपात में रखा गया है।

यदि सेनापति किसी सैनिक को सभी से जुड़ा कर्तव्य सौंपता है
सैन्य रैंक, या उसे एक रैंक देता है जो उसे हर कार्यालय में उपस्थित होने की अनुमति देता है
और इसे एक इंस्पेक्टर की तरह नियंत्रित करने के लिए, सैनिक को आवश्यक सुविधाएं दी जानी चाहिए
ज्ञान और कर्मियों द्वारा मान्यता प्राप्त होना। इस प्रकार कमांडर-इन-चीफ उसे सभी रैंकों का अध्ययन और निरीक्षण दौरा करने की व्यवस्था करता है।
उसके बाद, सैनिक को कमांडर-इन-चीफ की उपस्थिति में निजी बातचीत करने, सम्मान और डिक्री प्राप्त करने और फिर एक सैनिक के रूप में नियुक्त किया जाएगा।
उसे वहीं वापस भेज दिया गया जहां से वह आया था।

निम्नलिखित बिंदु पर ध्यान दिया जाना चाहिए: यदि, उसकी राजनीतिक शक्ति के अतिरिक्त,
राजा के पास आध्यात्मिक, संत जैसी शक्ति है, वह अपने काम के लिए दूसरों को नियुक्त नहीं करेगा
अलग-अलग कार्यालयों में नाम दर्ज किया जाएगा। बल्कि, वह हर जगह व्यक्तिगत रूप से मौजूद रहेंगे और
सीधे आदेश देते हैं, निश्चित रैंक के व्यक्तियों के रूप में प्रकट होते हैं। वास्तव में,
ऐसे सुल्तानों के आख्यान हैं जो संतत्व के उच्चतम स्तर तक पहुँच गए और इसी प्रकार
उन्होंने कुछ व्यक्तियों के रूप में कई क्षेत्रों में अपना शासन चलाया।

हमारे दृष्टांत में सेनापति एक ऐसा संत, शक्तिशाली राजा है,
प्रत्येक कार्यालय में आदेश और आदेश सीधे उसी से आते हैं और उसके आदेश, इच्छा और शक्ति के माध्यम से क्रियान्वित होते हैं।

इसी प्रकार, आकाश और पृथ्वी का शासक, परमप्रभु!
अनंत काल के प्रभु और प्रभु के पास "हो जाओ" की आज्ञा है और यह हो जाता है ,
आधिपत्य का क्षेत्र, प्राणियों और वर्गों के स्तरों में शासन का एक स्तर
कण से लेकर ग्रह तक, मक्खियों से लेकर आकाश तक, सभी प्राणी
जो भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे से संबंधित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में, उनके नियम,
विधि-विधान और आदेशों का पालन पूर्णतया क्रम और आज्ञाकारिता से किया जाता है। इस प्रकार
इस ब्रह्मांड के उच्च उद्देश्यों और जबरदस्त परिणामों को समझने के लिए,
प्रत्येक स्तर और वर्ग के लिए विशेष पूजा के कर्तव्यों को देखें,
महानता के स्वामी और उनके शासन की महिमा की संप्रभुता को समझने के लिए, उन्हें क्या पसंद है यह समझना चाहिए और उनकी संप्रभुता का संदेशवाहक बनना चाहिए।
उसके शासन के सभी स्तरों और क्षेत्रों से होकर यात्रा करें जब तक कि आप उस तक न पहुँच जाएँ
सर्वोच्च सिंहासन (सबसे महान, सर्वव्यापी क्षेत्र का शीर्षक) और
उस अंतिम पद को प्राप्त करना जिस तक एक सेवक पहुँच सकता है (जिसे निकटता कहा जाता है)
दो धनुषों की डोरियों के बीच की दूरी), और महामहिम से मिलें
और अनुग्रह। यह यात्रा आरोहण की वास्तविकता है।

जैसे साधारण लोग अपने मन में कल्पना की गति से यात्रा करते हैं, वैसे ही संत अपने हृदय में बिजली की गति से यात्रा करते हैं,
देवदूत, जिनके शरीर प्रकाशमय हैं, परमेश्वर के सर्वोच्च के बीच घूमते हैं
सिंहासन और पृथ्वी आत्मा की गति के साथ, स्वर्ग के लोग बढ़ रहे हैं
सर्वोच्च समागम स्थल से स्वर्ग तक पाँच किलोमीटर की दूरी तय करना
बुराक की गति से सौ साल तक , पैगंबर मुहम्मद का शरीर निश्चित रूप से ईश्वर की सर्वोच्च शक्ति तक उनकी यात्रा में उनकी उन्नत आत्मा के साथ रहेगा।
सिंहासन। मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का शरीर सिंहासन पर है।
उसकी सभी शक्तियों का भण्डार है और उसकी आत्मा की सेवा करता है, जो शुद्ध प्रकाश है
और इसमें प्रकाश की क्षमता और विशेषताएं हैं, और यह इससे अधिक परिष्कृत है
संतों के हृदय, मृतक की आत्माओं और देवदूतों के रूपों से हल्के होते हैं, और
अपने कर्तव्यों का पालन करने में, प्राणियों के आकाशीय शरीरों से भी अधिक सूक्ष्म है।

अब हम उस अविश्वासी से कहते हैं जो परमेश्वर को नहीं पहचानता या जानता नहीं
पैगंबर, और इसलिए स्वर्गारोहण में विश्वास नहीं करता है: ब्रह्मांड और
वे सभी प्राणी विद्यमान हैं, तथा विविध कार्य और निरंतर सृजन होता रहता है
ब्रह्मांड में जो कुछ भी देखा जाता है, वह सब कुछ है। एक व्यवस्थित कार्य के लिए एक लेखक होना चाहिए; एक सार्थक पुस्तक के लिए एक लेखक होना चाहिए; और एक कुशल डिजाइन के लिए एक डिजाइनर होना चाहिए।
इसलिए, ब्रह्माण्ड को भरने वाले बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण कार्यों का एक होना आवश्यक है।
लेखक, तथा पृथ्वी को आच्छादित करने वाले तथा ऋतुओं के अनुसार नवीनीकृत होने वाले अर्थपूर्ण अक्षरों और अद्भुत शिलालेखों या डिजाइनों के लिए एक लेखक और एक डिजाइनर अवश्य होना चाहिए।

इसके अलावा, एक ही मामले में दो शासकों के हस्तक्षेप का नतीजा अव्यवस्था है। लेकिन हम देख सकते हैं कि हर चीज में एकदम सही व्यवस्था है, एक मक्खी के व्यवहार से आकाश के दीपक (सूर्य) को पंख दिए गए हैं। इसलिए शासक एक है, क्योंकि अगर यह सच न होता, और यह देखते हुए कि हर चीज में दिखाई देने वाली कला और ज्ञान इतना अद्भुत है और आश्चर्य की बात है कि उन्हें एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ निर्माता की आवश्यकता है, जितने प्राणी हैं, उतने ही देवता होने चाहिए। चूँकि ऐसे देवता एक साथ एक दूसरे के विपरीत और समान दोनों होंगे [क्योंकि ब्रह्माण्ड में क्रियाकलापों और प्राणियों में अनंत विविधता है और फिर भी वे समान हैं एक दूसरे से कई तरह से जुड़े हुए हैं], यह अकल्पनीय है कि यह अद्भुत व्यवस्था परेशान मत हो.

इसके अलावा, चूंकि वे प्राणी स्पष्ट रूप से एक आदेश द्वारा और बहुत अधिक गति से चलते हैं सेना की तुलना में संगठित रूप, और चूंकि प्राणियों का प्रत्येक समूह, स्वर्गीय वस्तुओं से लेकर बादाम के फूलों तक, एक परिपूर्ण और संगठित तरीके से प्रदर्शित होता है और सेना की तुलना में कहीं अधिक व्यवस्थित ढंग से, वर्दी, सजावट, और शाश्वत सर्वशक्तिमान द्वारा इसे दिए गए अन्य सुंदर वस्त्रों को पहनता है और उनके द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों और अभ्यासों को पूरा करता है, इस ब्रह्मांड में एक अदृश्य के पर्दे के पीछे का पूर्ण शासक, जिसके आदेशों पर सभी प्राणी ध्यान देते हैं और उनका पालन करते हैं।

जैसा कि उसके बुद्धिमान कार्य और राजसी कार्य गवाही देते हैं, वह शासक एक राजसी है प्रभुता सम्पन्न। जैसा कि उनके अनुग्रहों से पता चलता है, वे अत्यंत दयालु प्रभु हैं। जैसा कि उनकी सबसे सुंदर कलाकृतियाँ गवाही देती हैं, वे एक निर्माता हैं जो एक प्रेमी भी हैं कला का स्वामी और जो अपनी कला से प्रेम करता है। जैसा कि सजावट और जिज्ञासा-रोमांचक कलाएँ वह प्रदर्शित करता है, वह एक बुद्धिमान निर्माता है जो आकर्षित करना चाहता है उनकी कलाकृतियों के प्रति सचेत प्राणियों की प्रशंसा भरी निगाह। जैसा कि समझा जाता है अपने प्रभुत्व की बुद्धि से, वह सचेत प्राणियों को सूचित करना चाहता है कि ब्रह्माण्ड की रचना में प्रदर्शित अद्भुत एवं अद्भुत सजावट और जीव कहाँ से आते हैं और कहाँ जाते हैं। इसलिए यह सर्वज्ञ शासक और सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता अपनी प्रभुता प्रदर्शित करना चाहता है।

वह स्वयं को जागरूक प्राणियों के समक्ष प्रकट करना और उनसे प्रेम करना भी चाहता है। इन सभी अनुग्रह और दया के निशानों के साथ-साथ कला के चमत्कारों के माध्यम से वह प्रदर्शित करता है। इसे देखते हुए, वह सचेत प्राणियों को सूचित करने के लिए एक दूत का उपयोग करेगा वह उनसे क्या करवाना चाहता है और उसे क्या पसंद है। वह एक सचेत व्यक्ति को चुनेगा उसके द्वारा अपने प्रभुत्व की घोषणा करना। अपनी पसंदीदा कलाओं को दिखाने के लिए, वह अपनी उपस्थिति की निकटता से एक संदेशवाहक को सम्मानित करेगा, और उसे प्रदर्शित करने के लिए उसका उपयोग करेगा। अपनी उच्चता के बारे में सचेत प्राणियों को सूचित करके अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करना ब्रह्माण्ड के निर्माण के उद्देश्यों के लिए, वह उनमें से एक को शिक्षक के रूप में नियुक्त करेगा और एक मार्गदर्शक ताकि सृष्टि का रहस्य और अस्तित्व की पहेली सामने आ सके अर्थहीन न रहें।

ताकि उनके द्वारा प्रदर्शित कला की सुन्दरता व्यर्थ न रहे,
उनमें निहित उद्देश्यों को सिखाने के लिए एक मार्गदर्शक का चयन करेंगे।
जो चीज़ें उसे पसंद हैं, उनमें से वह एक सचेत प्राणी को चुनता है, उन्हें ऊपर उठाता है
उसे अन्य सभी से ऊपर रखें, तथा उस व्यक्ति का उपयोग दूसरों को उन चीजों के बारे में बताने के लिए करें।
वास्तविकता और बुद्धिमत्ता को इसकी आवश्यकता है। इन कार्यों को करने के लिए सबसे योग्य व्यक्ति के रूप में
अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहने वाले पैगंबर मुहम्मद ने उन्हें बखूबी निभाया, यह एक ऐसा तथ्य है जिसकी पुष्टि इस्लाम
की दुनिया के सच्चे और न्यायप्रिय गवाहों द्वारा की गई है, जिसकी स्थापना उन्होंने की थी और इस्लाम का प्रकाश जो
उन्होंने दिखाया था, उन्हें सभी कर्तव्यों से ऊपर उठना होगा।
प्राणियों को जागृत करना तथा ब्रह्माण्ड के रचयिता के साथ सार्वभौमिक तथा उच्च वार्तालाप करने का पद प्राप्त करना। इसी में स्वर्गारोहण की वास्तविकता निहित है।

संक्षेप में, चूँकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने इसे बनाया, व्यवस्थित किया और सजाया
ब्रह्माण्ड का उपयोग शक्तिशाली उद्देश्यों और महान लक्ष्यों के लिए, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है;
और चूँकि प्राणियों में मानव जाति ही है जो सार्वभौमिक ईश्वर को देख सकती है
अपनी सभी सूक्ष्मताओं के साथ प्रभुत्व, और सभी के साथ यह शक्तिशाली दिव्य संप्रभुता
इसकी सच्चाई, सबसे निश्चित रूप से वह पूर्ण शासक हमसे बात करेगा और हमें सूचित करेगा
उसके उद्देश्य। लेकिन हर कोई सर्वोच्च, सार्वभौमिक स्थिति तक नहीं पहुंच सकता
शासक का सार्वभौमिक पता सीधे प्राप्त करें। यह देखते हुए, कुछ विशेष
लोगों को यह कर्तव्य सौंपा जाएगा। हम स्वयं मनुष्य हैं,
वे अन्य मनुष्यों को सिखा सकते हैं। उन्हें भी अत्यंत श्रेष्ठ होना चाहिए
आत्मिक रूप से, क्योंकि केवल ऐसे लोग ही परमेश्वर का सीधा संबोधन प्राप्त कर सकते हैं।

जिसने ब्रह्माण्ड के निर्माता के उद्देश्यों को सबसे उत्तमता से सिखाया,
ब्रह्मांड और सृष्टि के रहस्यमय अर्थ का अनावरण किया, और सबसे अच्छी घोषणा की
उनके प्रभुत्व की सुंदरता पैगंबर मुहम्मद थे, उन पर
शांति और आशीर्वाद हो। इसलिए वह आध्यात्मिक यात्रा करेंगे और आगे बढ़ेंगे
वह अन्य सभी से ऊपर तथा सबसे ऊंचे और व्यापक पद पर होगा;
भौतिक दुनिया से यात्रा करके आरोहण करें और फिर
ईश्वरीय प्रकटीकरण के "सत्तर हज़ार पर्दों" से परे पहुँचना
नाम, गुण और कार्य, तथा सृष्टि के सभी स्तर। यही आरोहण है।

प्रश्न: मैं इस पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ? यात्रा करने का क्या मतलब है?
हजारों वर्षों तक उस प्रभु की आराधना करो जो सभी वस्तुओं से अधिक निकट है
और सत्तर हज़ार पर्दों को पार करके उससे मिलना?

उत्तर: सर्वशक्तिमान ईश्वर हर चीज़ के अपने से ज़्यादा निकट है, लेकिन हर चीज़ उससे असीम रूप से दूर है। अगर सूरज सचेत होता और बोल सकता,
यह आपके हाथ में एक दर्पण के माध्यम से आपसे बात करेगा। यह आपके साथ वैसा ही कर सकता है जैसा वह चाहता है
चाहे जो हो। हालाँकि यह आपकी आँख की पुतली से भी ज़्यादा नज़दीक है, जो कि एक
दर्पण से आप लाखों मील दूर हैं और उसके करीब नहीं जा सकते।
यदि आप चंद्रमा के अनुरूप स्थिति में उठ गए और आमने-सामने आ गए
इसके साथ, आप केवल इसके लिए एक प्रकार का दर्पण होंगे।

इसी प्रकार, सर्वशक्तिमान, अनंत काल का सूर्य, हमारे अधिक निकट है। सब कुछ उससे बहुत दूर है, फिर भी सब कुछ उससे असीम रूप से दूर है। उसके साथ एक तरह की निकटता का सम्मान पाने के लिए, व्यक्ति को सभी स्तरों से गुजरना चाहिए अस्तित्व। एक विशेष, एक होने के प्रतिबंधों से मुक्त सार्वभौमिकता की डिग्री में हजारों पर्दों से ऊपर उठना चाहिए, आकर्षित करना चाहिए समस्त सृष्टि को समाहित करने वाले दिव्य नाम के निकट पहुँचना, और फिर अनेक यात्राएँ करना इसके अलावा अन्य डिग्री भी।

एक निजी व्यक्ति कमांडर-इन-चीफ से बहुत नीचे होता है। वह उसे देखता है एक कॉर्पोरल में वह जो कमांड का एक तुच्छ नमूना देखता है, वह बहुत ही कम है दूरी और कई पर्दों से परे। अपनी स्थिति के करीब होने के लिए, निजी लेफ्टिनेंट के उच्चतर एवं व्यापक रैंक पर पदोन्नत किया जाना चाहिए, कैप्टन, मेजर, इत्यादि। हालाँकि, कमांडर-इन-चीफ हमेशा होता है अपने नियमों, आदेशों, ज्ञान और आदेशों के माध्यम से निजी व्यक्ति के साथ उपस्थित रहें। यदि वह एक निश्चित आध्यात्मिक पद वाला संत है, तो वह निजी व्यक्ति के साथ उपस्थित हो सकता है उसे व्यक्तिगत रूप से, बिना निजी तौर पर देखे। इस सत्य पर बहस की गई है सोलहवें शब्द में इसका स्पष्ट उल्लेख है।

प्रश्न: मैं न तो स्वर्ग के स्तरों में और न ही स्वर्गदूतों में विश्वास करता हूँ। क्या मैं विश्वास कर सकता हूँ कि कोई स्वर्ग में यात्रा कर सकता है और स्वर्गदूतों से मिल सकता है?

उत्तर: उन लोगों को समझाना बहुत कठिन है जिनका दिमाग इस पर निर्भर करता है उनकी आँखें। लेकिन चूँकि सत्य इतना चमकीला है कि अंधे भी देख सकते हैं, इसलिए हम निम्नलिखित कहें: (वैज्ञानिक आम तौर पर इस बात पर सहमत हैं कि) अंतरिक्ष "ईथर" से भरा है। प्रकाश, बिजली और ऊष्मा जैसे सूक्ष्म और परिष्कृत पदार्थ इस ओर संकेत करते हैं अंतरिक्ष को भरने वाले अधिक सूक्ष्म एवं परिष्कृत पदार्थ का अस्तित्व।

जिस प्रकार फल उन वृक्षों के अस्तित्व को दर्शाते हैं जिन पर वे फलते हैं, फूल उनके फूलों की क्यारियाँ, अंकुर उनके खेत, तथा मछलियाँ समुद्र का अस्तित्व दर्शाती हैं, उसी प्रकार तारे भी उन वृक्षों के

अस्तित्व को दर्शाते हैं जिन पर वे फलते हैं, फूल उनके फूलों की क्यारियाँ, अंकुर उनके खेत, तथा मछलियाँ समुद्र का अस्तित्व दर्शाते हैं।

मन की आंखों के लिए उनकी उत्पत्ति का अस्तित्व। चूंकि आकाशीय क्षेत्र में अलग-अलग संरचनाएं हैं और अलग-अलग नियमों के तहत अलग-अलग नियम लागू हैं

परिस्थितियों के अनुसार, उन नियमों के अस्तित्व की आवश्यकता वाले स्वर्ग अलग-अलग होने चाहिए। बस एक व्यक्ति के पास, उनके शारीरिक अस्तित्व के अलावा, अमूर्त रूप भी होते हैं मन, हृदय, आत्मा, कल्पना और स्मृति जैसे अस्तित्व के, निश्चित रूप से ब्रह्माण्ड, वृहद मानव और वह वृक्ष जिसका फल मानवता है, भौतिक दुनिया के अलावा अन्य दुनियाएँ भी शामिल हैं। साथ ही, प्रत्येक दुनिया, भौतिक दुनिया से पृथ्वी को स्वर्ग में बदलने के लिए स्वर्ग है।

जहाँ तक स्वर्गदूतों की बात है, हम कहते हैं: पृथ्वी ग्रहों में मध्यम आकार की है और तारों में सबसे छोटा और सबसे घना। और फिर भी जीवन और चेतना, जो चमकदार हैं और सृष्टि में सबसे अधिक मूल्यवान हैं, वे पाए जाते हैं यह बहुत प्रचुर मात्रा में है। इसलिए सितारों, सजे महल और पूरी तरह से निर्मित पृथ्वी के अन्धकारमय घर और स्वर्ग की तुलना में महल, जो

वे तारों के समुद्र के समान हैं, उनमें चेतन, सजीव, असंख्य और अनंत प्राणी निवास करते हैं।
विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूत और आत्मिक प्राणी। उनतीसवें वचन में स्वर्गदूतों के बारे में अधिक विस्तार से चर्चा की गई है।

निष्कर्ष रूप में, आकाश "ईथर" से बना है और इसका स्रोत है
ऐसे सूक्ष्म और परिष्कृत पदार्थ, ऊर्जा, या बल जैसे प्रकाश, गर्मी, बिजली और गुरुत्वाकर्षण। जैसा कि परंपरा में बताया गया है "स्वर्ग एक लहर है जो फैली हुई है
और संयमित," उन्हें इस तरह से बनाया गया था कि कुछ तारे और ग्रह उनके भीतर आसानी से घूम सकते हैं। बुद्धि और तर्क की मांग है कि
मिल्की वे से लेकर निकटतम ग्रह तक, विभिन्न संरचनाओं के स्वर्गीय स्तर होने चाहिए और एक स्वर्ग पृथ्वी की दुनिया से एक दुनिया की छत के रूप में होना चाहिए।
पृथ्वी से मध्यवर्ती विश्व (कब्र का) और आदर्श विश्व
रूपों या अभ्यावेदनों, और परलोक की दुनिया के लिए।

प्रश्न: हम विमान द्वारा केवल एक निश्चित ऊंचाई तक ही चढ़ सकते हैं। कैसे?
क्या कोई व्यक्ति कुछ ही मिनटों में वह दूरी तय कर सकता है जिसे तय करने में सामान्यतः हजारों वर्ष लगते हैं?

उत्तर: विज्ञान के अनुसार, जिसके निष्कर्षों को आप बिना किसी पूर्व सूचना के स्वीकार कर लेते हैं।
प्रश्न: पृथ्वी जैसा भारी पिंड एक चक्कर में लगभग चार सौ मील की यात्रा करता है।
मिनट, और एक वर्ष में लगभग दो सौ मिलियन मील। क्या एक सर्वशक्तिमान महामहिम, जो पृथ्वी को नियमित रूप से ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है, को चाहिए कि वह
गति और इसे एक गोफन में एक पत्थर की तरह घूमता है, एक मानव को व्यक्त करने में असमर्थ है
क्या वह बुद्धि जो उसके सर्वोच्च सिंहासन के लिए भारी है, उसे चाहिए
ईश्वरीय नियम के तहत पृथ्वी को दरवेश की तरह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना
प्रभुत्व (गुरुत्व) किसी व्यक्ति को, बिजली की तरह, दयालु भगवान के "गुरुत्व" के माध्यम से, दयालु भगवान के सिंहासन तक उठाने में असमर्थ है।
दया और अनन्त सूर्य के प्रेम का आकर्षण?

प्रश्न: यदि वह ऊपर चढ़ सकता था, तो उसने ऐसा क्यों किया और उसे ऐसा क्यों करना चाहिए?
क्या यह उसके लिए पर्याप्त नहीं था कि वह हृदय और आत्मा में संतों के समान ऊपर उठ जाए?

उत्तर: सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता अपने अद्भुत चिन्ह दिखाना चाहता था
उसके क्षेत्र के आंतरिक और बाहरी आयामों में, इस दुनिया की कार्यशालाएँ बनाओ
और स्रोतों से प्राप्त जानकारी, तथा हमारे कार्यों के परिणामों को प्रदर्शित करते हैं
परलोक। यह देखते हुए, और तर्क और बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, वह
मुहम्मद को न केवल अपनी आँखों से (बल्कि अपनी आँखों से) उनके सर्वोच्च सिंहासन तक ले जाएँ
दृश्य वस्तुओं की दुनिया के लिए) और कान, (जो उसकी निशानियों को आँखों से देखते थे)
ध्वनि और आवाज़ों की दुनिया) के साथ-साथ अपने पूरे धन्य शरीर के साथ भी, जो
उसकी आत्मा की मशीन विभिन्न सदस्यों और संकायों से बनी है
अपने अनगिनत कर्तव्यों की पूर्ति के लिए साधन। जैसे दिव्य बुद्धि
शरीर को स्वर्ग में आत्मा के साथ ले जाता है, क्योंकि शरीर सक्षम बनाता है
अनेक पूजा-पाठ के कर्तव्य निभाने होते हैं और असंख्य सुख-सुविधाएँ होती हैं

अनुभव की जाने वाली पीड़ाओं के बावजूद, यह भी शुद्ध ज्ञान है कि वह
मुहम्मद का धन्य शरीर उनकी आत्मा के साथ सुदूर सीमा पर स्थित कमल के पेड़, जो कि शरण और निवास के बगीचे का "तना" है, तक चढ़ता है।

प्रश्न: तर्क के नाम पर, वह दूरी जो सामान्य है, कैसे तय की जा सकती है?
जिस काम को पूरा करने में हजारों साल लगते हैं, क्या उसे कुछ ही मिनटों में पूरा किया जा सकता है?

उत्तर: सर्वशक्तिमान निर्माता की कला में, गतियों की अनंत भिन्न डिग्री होती हैं। उदाहरण के लिए, बिजली, आत्मा, कल्पना और ऊर्जा की गति।
ध्वनि एक दूसरे से काफी अलग हैं। साथ ही, विज्ञान ने यह भी स्थापित किया है कि
ग्रहों की गति की गति आश्चर्यजनक रूप से भिन्न है। तो फिर क्यों होना चाहिए
यह अनुचित होगा कि मुहम्मद के शरीर ने एक प्रकार का परिष्कार प्राप्त कर लिया,
क्या कभी-कभी वह स्वर्गारोहण में उसकी आत्मा के साथ था और उसकी गति से आगे बढ़ा था?
आप दस मिनट सोते हैं लेकिन आपके पास एक साल के अनुभव होते हैं। अगर शब्द
एक मिनट तक चलने वाले स्वप्न में बोले गए और सुने गए संदेशों को एकत्र किया गया, तो यह
जागते हुए उन्हें बोलने या सुनने में एक दिन या उससे भी ज़्यादा समय लगेगा। इस प्रकार
एक समय अवधि का अर्थ है एक के लिए एक दिन और दूसरे के लिए एक वर्ष।

इस उदाहरण पर विचार करें: एक घड़ी एक व्यक्ति, एक कैन-नॉनबॉल, ध्वनि, प्रकाश, बिजली, आत्मा और कल्पना की गति को मापती है। इसमें दस सुइयाँ होती हैं
घंटे, मिनट और सेकंड को घंटे के अंशों तक दिखाने के लिए
दसवीं शक्ति। इसमें दस वृत्त भी हैं, एक दूसरे के चारों ओर और साठ बार
क्रमशः उससे बड़ा है। यदि घंटे वाली सुई वाला वृत्त एक के आकार का है
सामान्य घड़ी, घंटे के अंश वाली सुई से दसवें तक का वृत्त
शक्ति का आकार पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के बराबर या उससे भी अधिक होना चाहिए।

मान लीजिए दो लोग हैं। एक घंटे की सुई पर चढ़ा है और दूसरा घंटे की सुई पर।
एक अपनी गति के अनुसार देखता है, जबकि दूसरा हाथ दिखा रहा है
एक घंटे के अंशों को दसवें घात तक। बहुत बड़ा अंतर होगा,
एक सामान्य घड़ी और पृथ्वी की वार्षिक घड़ी के बीच के अनुपात जितना बड़ा
कक्षा में, उसी समयावधि के दौरान वे क्या देख सकते थे, इसके संबंध में।

चूँकि समय गति का एक पहलू या "रिबन" है, एक नियम जो लागू है
गति में भी बल होता है। जबकि हम उतनी ही मात्रा में देखेंगे
घंटे के दौरान चीजों को घंटे की सुई पर लगे एक के रूप में दिखाता है, जो चलता है
सबसे छोटे घेरे में सबसे धीमी गति से, ईश्वर का दूत, जैसे
घंटे के अंशों को दसवीं घात तक दर्शाने वाली सुई पर लगा हुआ, प्राप्त होता है
दिव्य सहायता के पर्वत पर और, उसी समय अंतराल में,
संपूर्ण आकस्मिकता क्षेत्र बिजली की तरह चमक रहा है।
आकस्मिक अस्तित्व के आंतरिक और बाहरी आयाम और जहाँ तक बढ़ रहा है
आवश्यक अस्तित्व के अमूर्त क्षेत्र की सीमा (दिव्य क्षेत्र की)
सीमाओं से परे, उसे दिव्य वार्तालाप और उसकी सुन्दरता के दर्शन से सम्मानित किया जाता है,

वह आदेश प्राप्त करता है और पृथ्वी पर संदेशवाहक के रूप में अपने कर्तव्य पर लौटता है।
उसके लिए ऐसा करना संभव था, और उसने ऐसा किया।

प्रश्न: यदि यह संभव भी हो, तो भी हर संभव बात घटित नहीं होती।
क्या ऐसी कोई चीज़ है जिसे हम स्वीकार कर सकें?
क्या किसी अनोखी चीज़ का घटित होना केवल इसलिए संभव है क्योंकि ऐसा संभव है?

उत्तर: ऐसे अनगिनत मामले हैं। उदाहरण के लिए, जिन लोगों के पास
ध्वनि दृष्टि अपनी आँखों से नेपच्यून तक एक सेकंड में पहुँच सकती है। खगोलविद
खगोल विज्ञान के नियमों को अपने दिमाग में बैठा सकते हैं और सितारों से परे यात्रा कर सकते हैं
एक मिनट में। विश्वासी लोग परमेश्वर के कार्यों और स्तंभों पर विचार कर सकते हैं
निर्धारित प्रार्थनाएँ और, एक प्रकार से ब्रह्मांड को पीछे छोड़ना
स्वर्गारोहण, दिव्य उपस्थिति तक पहुँचें। सिद्ध संत आध्यात्मिक यात्रा कर सकते हैं और ईश्वर के दायरे से परे आध्यात्मिक स्तर की यात्रा कर सकते हैं।
चालीस दिनों में सर्वोच्च सिंहासन और उसके नाम और गुण। ऐसे लोग जैसे
'अब्दुल-कादिर अल-जिलानी और इमाम अर-रब्बानी ने सच्चाई से बताया कि वे
आध्यात्मिक रूप से एक मिनट में दिव्य सिंहासन तक चढ़ जाया जाता था।

स्वर्गदूत, जिनके शरीर प्रकाशमय हैं, धरती और पृथ्वी के बीच आते-जाते हैं।
बहुत कम समय में दिव्य सिंहासन पर चढ़ जाएगा। स्वर्ग के लोग स्वर्ग में चढ़ जाएंगे
स्वर्ग के बागों को थोड़े समय में सभा के सर्वोच्च मैदान से
समय की। ऐसे कई उदाहरण दर्शाते हैं कि यह शुद्ध ज्ञान है, पूरी तरह से
तर्कसंगत, और यह निस्संदेह हुआ कि पैगंबर मुहम्मद, भगवान
सभी संतों का नेता, सभी विश्वासियों का नेता, स्वर्ग के सभी लोगों का मुखिया, और सभी स्वर्गदूतों द्वारा स्वीकार किया गया,
एक स्वर्गारोहण का एहसास हुआ, जो उसके माध्यम से यात्रा को चिह्नित करता है और
संतत्व की सभी श्रेणियों से ऊपर, अपने पद के अनुरूप रूप में।

तीसरा सिद्धांत: आरोहण की बुद्धि क्या है?

उत्तर: यहाँ ज्ञान इतना उच्च है कि मानव मन इसे समझ नहीं सकता।

यह इतना गहरा है कि मानव मस्तिष्क इसे समझ नहीं सकता, और इतना सूक्ष्म और सूक्ष्म है कि बुद्धि इसे समझ नहीं सकती। हालाँकि, भले ही हम इसे समझ न सकें
इसकी बुद्धिमत्ता या इसके लिए सटीक दिव्य उद्देश्यों को जानने के लिए, कुछ संकेत अनुमति देते हैं
हमें कई उद्देश्यों के अस्तित्व को दिखाने के लिए। वे इस प्रकार हैं।

उसकी एकता का प्रकाश और उसकी पूर्णता की अभिव्यक्ति दिखाने के लिए
प्रचार के स्तरों में एकता, इस ब्रह्मांड के निर्माता प्रतिष्ठित
एक प्रतिष्ठित व्यक्ति जिसके पास एक कड़ी के रूप में आरोहण है
बहुलता और भौतिकता के क्षेत्र की सबसे दूर की सीमा और प्रभुत्व
शुद्ध एकता और आध्यात्मिकता का प्रारंभिक बिंदु। सभी की ओर से उन्हें संबोधित करते हुए
प्राणियों को, उन्होंने चेतना के नाम पर सभी दिव्य उद्देश्यों को समझाया
प्राणियों को देखा, और उन्हें अपने द्वारा ज्ञात कराया। उसने यह भी देखना चाहा कि

अपनी दृष्टि के माध्यम से अपनी कला की सुन्दरता और अपने प्रभुत्व की पूर्णता को अपने प्राणियों के दर्पणों में प्रकट करना तथा उन्हें दूसरों के द्वारा अवलोकन कराना।

इसके अलावा, उनके कार्य इस बात की गवाही देते हैं कि दुनिया के निर्माता के पास अनंत शक्तियाँ हैं सुंदरता और पूर्णता, दोनों ही अपने आप में प्रिय हैं। इस प्रकार वह अनंत सौंदर्य और पूर्णता वाला है, उसका अपने प्रति असीम प्रेम है सौंदर्य और पूर्णता, एक प्रेम जो उनकी कला के कार्यों में स्वयं प्रकट होता है, जिनसे वह प्रेम करता है क्योंकि वह उनमें अपनी सुन्दरता और पूर्णता देखता है। उनकी कलाकृतियों में सबसे अधिक प्रिय और श्रेष्ठ सजीव प्राणी हैं। प्यारे और श्रेष्ठ चेतन प्राणी चेतन प्राणी हैं। अपने गुणों के कारण व्यापकता, सबसे प्यारे चेतन प्राणी पाए जाते हैं मानवता। सबसे अधिक प्रेम योग्य व्यक्ति वह है जिसने अपनी मानवता को विकसित किया है। क्षमता को पूरी तरह से प्रकट किया और पूर्णता के नमूने प्रकट किए सभी प्राणियों में देखा जाता है।

एक बिंदु पर और एक दर्पण में उसके प्रेम की सभी अभिव्यक्तियों को देखना सभी प्राणियों में व्याप्त होकर, तथा अपनी सुंदरता की सभी किस्मों को प्रदर्शित करने पर केन्द्रित एक व्यक्ति, प्राणियों के निर्माता ने एक व्यक्ति को चुना, एक प्रतिष्ठित, सृष्टि के वृक्ष का प्रबुद्ध फल, जिसका हृदय उस बीज के समान है जिसमें उस वृक्ष में निहित सभी आवश्यक सत्य समाहित हैं। यह प्रदर्शित करने के लिए कि कैसे वह उस व्यक्ति से ब्रह्मांड के नाम पर प्यार करता है, उसने उसे अपनी ओर खींचा एक उदगम के माध्यम से उपस्थिति, जो बीज को जोड़ने वाले धागे की तरह है (मूल) को फल (अंत) से सम्मानित किया, और उसे अपने दर्शन से सम्मानित किया आवश्यक सौंदर्य। ताकि अन्य लोग उसकी पवित्रता और उत्कृष्टता का अनुकरण कर सकें, उसने अपनी वाणी से उसे अनुग्रहित किया और उसे अपना आदेश सौंपा।

इस महान ज्ञान को समझने के लिए नीचे दी गई तुलनाओं पर विचार करें।

पहली तुलना: जैसा कि ग्यारहवें वचन में समझाया गया है, कल्पना कीजिए कि वह एक महान राजा था जिसके पास बहुत से रत्नों से भरा विशाल खजाना था। सभी उद्योगों में पारंगत, तथा सभी कलात्मक और वैज्ञानिक विषयों और अनगिनत ललित कलाओं का व्यापक ज्ञान था। संपूर्ण सुंदरता वाले किसी भी व्यक्ति की तरह और पूर्णता स्वयं को देखने और दिखाने की प्रवृत्ति रखती है, जो गौरवशाली राजा चाहता है एक प्रदर्शनी खोलने और अपने राज्य की भव्यता, अपने धन की भव्यता और विस्तार, और उसकी कलात्मकता और अद्भुत उत्पादों वह अपनी सुंदरता और पूर्णता को अपने कौशल से निहारने की इच्छा रखता है। अपनी विवेकशील आँखों से और दूसरों की आँखों से।

और इस तरह वह एक बहुत बड़ा, शानदार महल बनाना शुरू कर देता है। कई अपार्टमेंट और कमरों में, वह इसे अपने बेहतरीन और सबसे अधिक सजाता है वह सुन्दर कलाकृतियाँ बनाता है, और उन्हें बहुमूल्य पत्थरों से सजाता है। अपने कलात्मक और वैज्ञानिक सिद्धांतों और विवेक के अनुसार इसे डिजाइन करना

वह इसे अपने ज्ञान के चमत्कारी उत्पादों से सुसज्जित करता है।
अंत में, वह वहां पर सबसे स्वादिष्ट विशिष्ट खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ वाली मेजें सजाता है, तथा अपने विषयों के प्रत्येक जनजाति के लिए एक उपयुक्त मेज निर्दिष्ट करता है।
वह एक सामान्य भोज तैयार करता है।

फिर, अपनी पूर्णता दिखाने के लिए, राजा अपनी प्रजा को भोजन करने और महल देखने के लिए आमंत्रित करता है। वह एक प्रतिनिधि या सर्वोच्च सेनापति नियुक्त करता है और उसे अपने साथ सर्वोच्च पद देता है। वह उसे नीचे की मंजिल से ऊपर उठने के लिए आमंत्रित करता है ताकि वह एक के बाद एक या एक से ऊपर सभी महलों और मंजिलों का दौरा कर सके। उसे क्रमिक मशीनरी, अपनी अद्भुत कला की सभी कार्यशालाएँ और नीचे से आने वाली उपज के भंडार दिखाते हुए, वह उसे अपने निजी अपार्टमेंट में ले जाता है। वहाँ वह उसे अपनी उपस्थिति और अपने धन्य व्यक्ति के दर्शन से सम्मानित करता है, जो उन सभी पूर्णता का मूल है, और उसे महल की वास्तविक प्रकृति और उसकी अपनी पूर्णता के बारे में बताता है।

उसे अपनी बाकी प्रजा का मार्गदर्शन करने के लिए नियुक्त करते हुए, वह उसे महल की सामग्री, शिलालेखों और आश्चर्यों के माध्यम से महल के निर्माता का वर्णन करने के लिए वापस भेजता है।
गाइड शिलालेखों के अर्थ भी समझाएगा, कलाकृतियों और सुव्यवस्थित और सुव्यवस्थित फर्नीचर और सजावट का क्या मतलब है, और वे महल के मालिक की पूर्णता और कौशल को कैसे इंगित करते हैं। वह उन्हें महल का दौरा करने और प्रदर्शनी को देखने के दौरान सही व्यवहार और औपचारिकताएँ सिखाएगा, और उन प्रोटोकॉल और समारोहों का वर्णन करेगा जो विद्वान और कुशल राजा की खुशी और इच्छाओं को पूरा करते हैं, जो उन्हें दिखाई नहीं देते हैं।

इसी तरह, सर्व-महान निर्माता, अनंत काल के भगवान, अपनी अनंत सुंदरता और पूर्णता को देखने और प्रदर्शित करने की इच्छा रखते थे। इसलिए उन्होंने इस दुनिया के महल को इस तरह से बनाया कि प्रत्येक प्राणी उनकी पूर्णता को कई भाषाओं में व्यक्त करता है और कई संकेतों के साथ उनकी सुंदरता की ओर इशारा करता है। अपने सभी निवासियों के माध्यम से, यह ब्रह्मांड दिखाता है कि प्रत्येक में कितने अमूर्त खजाने छिपे हुए हैं

उनके सर्वसुन्दर नाम और प्रत्येक पवित्र उपाधि में कितनी सूक्ष्मताएँ छिपी हैं। यह इस तरह से दर्शाता है कि यद्यपि वैज्ञानिकों ने, विज्ञान के सभी नियमों और सिद्धांतों के साथ, आदम के समय से ब्रह्मांड की इस पुस्तक का अध्ययन किया है, फिर भी वे अभी तक उस पुस्तक के दिव्य नामों और पूर्णताओं के बारे में अर्थों और संकेतों का एक-सौवाँ हिस्सा भी नहीं खोज पाए हैं।

इस प्रकार, उस सर्व-महान सौन्दर्यमय, परम ऐश्वर्यमय, अनन्त पूर्णता वाले रचयिता की बुद्धि, जिसने ब्रह्माण्ड के उस भवन को अपनी पूर्णता और दिव्य सौन्दर्य को देखने और प्रदर्शित करने के लिए एक प्रदर्शनी की तरह बनाया है, यह अपेक्षा करती है कि वह उसमें निहित अपने संकेतों के अर्थ किसी को बताये, ताकि वे पृथ्वी पर चेतन प्राणियों के लिए बेकार और लाभहीन न रहें; कि वह किसी को ब्रह्माण्ड से होकर यात्रा करवाये।

वह उसे उन महान लोकों से ऊपर उठाएगा, जो महल के आश्चर्यों के स्रोत हैं और वे भण्डार गृह हैं, जहां उनके जीवन के परिणाम संचित होते हैं।
दूसरों को, उसकी उपस्थिति में उसके साथ निकटता के साथ सम्मान दें, उसे भ्रमण कराएं
परलोक की व्यवस्था करो, तथा उसे अपने सेवकों को शिक्षा देने जैसे कर्तव्य सौंपो,
अपने प्रभु की प्रभुता का संदेश देते हुए, अपने सेवकों को अपनी प्रिय बातों की सूचना देते हुए, ब्रह्माण्ड की रचना और संचालन में अपनी निशानियों का विस्तार करते हुए; ताकि वह चमत्कारों के माध्यम से अपनी श्रेष्ठता दर्शाए; और कि वह कुरान जैसे आदेश के माध्यम से घोषणा करे कि

व्यक्ति सर्वशक्तिमान परमेश्वर का सच्चा व्यक्तिगत व्याख्याता है।

अब तक हमने इस तुलना के माध्यम से कुछ उदाहरण प्रदर्शित किए हैं
स्वर्गारोहण में बुद्धि का। आप सादृश्य द्वारा दूसरों का अनुमान लगा सकते हैं।

दूसरी तुलना: मान लीजिए एक जानकार, कुशल व्यक्ति एक लेख लिखता है
चमत्कारी पुस्तक, जिसके प्रत्येक पृष्ठ में इतने सत्य हैं जितने एक पृष्ठ को भर सकते हैं।
सौ पुस्तकें, जिनकी प्रत्येक पंक्ति में उतने ही सूक्ष्म अर्थ निहित हैं, जितने
सौ पृष्ठ भर जाएंगे, और प्रत्येक शब्द में उतने ही शब्द होंगे
सौ पंक्तियों में जितने सत्य होंगे। यदि ऐसे सभी अर्थ और सत्य
पुस्तक में चमत्कार दिखाने वाले लेखक की उत्कृष्ट पूर्णता की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा
निश्चित रूप से वह इसे बंद करके बेकार नहीं छोड़ेगा। बल्कि, वह इसे बेकार नहीं छोड़ेगा।
इसे दूसरों को सिखाएं ताकि दूसरे लोग लाभ उठा सकें, ताकि उसकी छिपी हुई परिपूर्णताएं
उसकी सुन्दरता (बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्कृष्टता) उजागर होगी
ताकि वह खुश हो जाए और खुद को प्यार करे।
इस उद्देश्य से, वह किसी को उस संपूर्ण अद्भुत पुस्तक को पढ़ने के लिए कहेंगे,
साथ ही उसे इसके अर्थ और सत्य की शिक्षा दी जाती है ताकि व्यक्ति
फिर दूसरों को उनमें निर्देश दें।

इसी प्रकार, उनकी पूर्णता, सौंदर्य और सत्य को दिखाने के लिए
उनके नाम, शाश्वत लेखक ने ब्रह्मांड को इस तरह से "लिखा" है
कि सभी प्राणी उसकी अनंत पूर्णता, नाम और स्वरूप की घोषणा और अभिव्यक्ति करें
अनगिनत तरीकों से विशेषताएँ। अगर किसी किताब का अर्थ नहीं पता है, तो उसे
कोई मूल्य नहीं। लेकिन एक किताब (जैसे ब्रह्मांड), जिसके प्रत्येक अक्षर में कुछ न कुछ है
हज़ारों अर्थों को शून्य नहीं किया जा सकता। इसे देखते हुए, एक
इसे किसने लिखा है, यह ज्ञात किया जाएगा और इसे भागों में समझाया जाएगा
प्रत्येक प्राणी समूह की क्षमता के अनुसार।

वह इसकी पूरी जानकारी सबसे व्यापक तरीके से किसी को सिखाएगा।
दृष्टिकोण, सबसे सार्वभौमिक चेतना, और सबसे बड़ी क्षमता। लेकिन सिखाने के लिए
ऐसी पुस्तक अपनी सम्पूर्णता में तथा अपने सभी सार्वभौमिक सत्यों के साथ यह अपेक्षा करती है कि,
बहुलता के स्तरों की सबसे दूर की सीमाओं से शुरू करते हुए (भौतिक
दुनिया, पुस्तक का पहला पृष्ठ) से लेकर एकता के दायरे (इसका अंतिम पृष्ठ) तक,
व्यक्ति को सबसे ऊंची और सार्वभौमिक यात्रा करनी चाहिए।

इस तुलना से, हम महान उदाहरणों के बारे में कुछ समझ प्राप्त कर सकते हैं
स्वर्गारोहण में बुद्धि का।

प्रश्न: जो इनकार करने वाले लोग अब विश्वास करने लगे हैं, हो सकता है कि वे अभी भी विश्वास करें। कुछ बातों को लेकर भ्रम की स्थिति बनी रहती है जैसे: पैगम्बर

मुहम्मद के लिए यह स्वर्गारोहण विशेष क्यों है?

आपके कहने का क्या मतलब है कि मुहम्मद अल्लाह के बीज हैं?

ब्रह्माण्ड की रचना उसके प्रकाश से हुई है, और वह

इसका सबसे दूरगामी और सबसे प्रबुद्ध फल कौन सा है?

आप कहते हैं कि उन्होंने उच्च लोक तक पहुंचने के लिए स्वर्गारोहण किया,

उन मशीनों और कार्यशालाओं को देखना जिनके उत्पाद या कार्य हैं

पृथ्वी पर प्रदर्शित, साथ ही साथ भंडारगृह जहां परिणाम

उन कार्यों में से कुछ को रखा जाता है। इसका क्या मतलब है?

उत्तर: पहले प्रश्न का उत्तर पिछले Words में दिया गया था, और इसलिए हम मुहम्मद की पैगम्बरी और पैगंबरी को दर्शाने वाले संकेतों की केवल एक संक्षिप्त सूची देते हैं पूर्णताएं, और क्यों वह स्वर्गारोहण के लिए सबसे योग्य है।

सबसे पहले: टोरा, गॉस्पेल और अन्य धर्मग्रंथों में भारी भ्रष्टाचार के बावजूद, हुसैन अल-जिसरी ने स्तोत्रों में एक सौ दस संकेत पाए जो दर्शाते हैं मुहम्मद की नबीई के बारे में उनके विचार उनके रिसाला अल-हमीदिया में प्रस्तुत किए गए हैं।

दूसरा: इतिहास में कई इस्लाम-पूर्व भविष्यवक्ताओं के शब्द भी दर्ज हैं, ऐसे शिक़ और सतीह, जिन्होंने मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की नबी होने की सटीक भविष्यवाणी की थी, और यह कि वह अंतिम नबी थे।

तीसरा: उनकी पैगम्बरी (इरहासात) से पहले कई असाधारण घटनाएँ उनके आसन्न आगमन की भविष्यवाणी की गई थी। उदाहरण के लिए, जिस रात उनका जन्म हुआ, काबा की मूर्तियाँ गिर गईं और प्रसिद्ध महल के शिखर गिर गए फारसी शासक चोस्रोस को तोड़ दिया।

चौथा: पैगम्बर मुहम्मद को लगभग एक विशेष दर्जा प्राप्त था। इतिहासकारों और जीवनीकारों ने हजारों चमत्कारों का वर्णन किया है। कुछ उदाहरण देते हुए कहा जा सकता है कि उन्होंने पानी से सेना की प्यास बुझाई थी। उसकी उंगलियों से बहता हुआ चाँद को चीरता हुआ निकल आया (54:1)। सूखी लकड़ी का खंभा जिस पर वह मस्जिद में उपदेश देते समय झुक जाता था, वह एक राक्षस की तरह कराहता था जब ऊँट उससे अलग हुआ तो उसने कई लोगों के सामने उसे मार डाला।

पांचवां: मित्र और शत्रु दोनों ही इस बात पर सहमत हैं कि सभी अच्छे गुण एक दूसरे में समाहित हैं। उनमें सर्वोच्च स्तर पर पाया गया, और जैसा कि उनके आचरण से प्रदर्शित होता है, सर्वोच्च उत्कृष्टता के सभी गुण और चरित्र उनमें स्पष्ट थे
जिस तरह से उन्होंने अपना मिशन पूरा किया। जैसा कि इस्लाम के नैतिक सिद्धांतों से प्रमाणित होता है, सर्वोच्च क्रम के प्रशंसनीय गुण उस कानून में पाए जाते हैं जिसे उन्होंने अपनाया था।
लाया।

छठी बात: ज्ञान के लिए आवश्यक है कि दिव्यता स्वयं प्रकट हो और उसका उत्तर दिया जाए
पूजा के साथ। पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने ईश्वर की दिव्यता को उच्चतम स्तर पर और सबसे शानदार तरीके से व्यक्त किया
में निहित पूजा के सबसे उत्तम और व्यापक तरीके के माध्यम से
वह धर्म जो उसने लाया था। ब्रह्मांड के निर्माण में ज्ञान के कारण,
संसार का रचयिता अपनी सबसे उत्तम सुन्दरता और कृपा प्रदर्शित करना चाहता है
सबसे उचित माध्यम से। स्पष्ट रूप से, पैगंबर मुहम्मद ने दिखाया
और उनकी सुन्दरता और कृपा का वर्णन अत्यंत उत्तम शैली में किया।

दुनिया का निर्माता ध्यानपूर्वक देखने और देखने की इच्छा रखता है
अनंत सौंदर्य की उनकी उत्तम कला की ओर; पैगम्बर मुहम्मद ने घोषणा की
उस कला को सबसे स्पष्ट आवाज़ के साथ। मुहम्मद, की इच्छा के जवाब में
संसार के स्वामी को अनेकता के क्षेत्र में अपनी एकता की घोषणा करने के लिए, अपने सभी पहलुओं के साथ सबसे पूर्ण रूप से एकता की घोषणा करने के लिए।

अपनी बुद्धि के परिणामस्वरूप, संसार का स्वामी यह देखना चाहता है
और अपने अनंत आवश्यक सौंदर्य और अनुग्रह को, उनकी सभी अभिव्यक्तियों के साथ, सभी प्राणियों के दर्पणों में दिखाएं; पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति हो
और आशीर्वाद, उन्हें सबसे शानदार अंदाज में प्रतिबिंबित किया और दूसरों को बनाया
उनसे प्यार करो। इसके अलावा, मुहम्मद, निर्माता की इच्छा के जवाब में
अपनी अदृश्य शक्तियों को प्रदर्शित करके अपनी सम्पूर्णताओं का वर्णन करने के लिए संसार के इस भव्य महल में प्रवेश करना।
अमूल्य रत्नों के भण्डार, उनका अत्यंत सुन्दर ढंग से प्रदर्शन और वर्णन किया गया है।

ब्रह्माण्ड के निर्माता ने ब्रह्माण्ड को सबसे अधिक सजाया है
सुन्दर एवं उत्कृष्ट अलंकरणों से युक्त है, तथा उसमें अपने चेतन प्राणियों को सम्मिलित किया है, ताकि वे आनन्द प्राप्त करने और चिन्तन करने के लिए यात्रा कर सकें।
बुद्धि द्वारा अपेक्षित, वह अर्थ और मूल्य भी संप्रेषित करना चाहता है
जो लोग अपने कला के कार्यों के माध्यम से देखते हैं और चिंतन करते हैं, उनके लिए यह संदेश है।
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने मानवता, जिन्न और
इस संबंध में, कुरान के माध्यम से, स्वर्गदूतों को सबसे व्यापक तरीके से समझाया गया है।

ब्रह्माण्ड का सर्वज्ञ शासक अपने लिए एक दूत का उपयोग करना चाहता है
सभी चेतन प्राणियों को तीन उलझन भरे प्रश्नों के उत्तर: हम कहाँ हैं?
हम कहाँ से आ रहे हैं? हम कहाँ जा रहे हैं? हम क्या हैं?, और इसलिए यह प्रकट करना
अस्तित्व में परिवर्तन और रूपांतरण का उद्देश्य।
कुरान की सच्चाई, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने इसका खुलासा किया
उद्देश्य को पूरा किया और सबसे स्पष्ट और सबसे सही तरीके से उत्तर प्रदान किए।

इस संसार का निर्माता स्वयं को चेतन लोगों को ज्ञात कराना चाहता है
अपने उत्कृष्ट कार्यों के माध्यम से प्राणियों से प्रेम पाना और उनके द्वारा प्रेम पाना
वह उन्हें अनमोल उपहार प्रदान करता है। इस प्रकार वह उनसे संवाद करना चाहता है
एक दूत के माध्यम से उन्हें बताता है कि वह उनसे क्या करवाना चाहता है और वे कैसे करवाना चाहते हैं।

उन वरदानों के बदले में उसकी स्वीकृति और प्रसन्नता प्राप्त करें।
कुरान के माध्यम से, पैगम्बर मुहम्मद ने वे बातें बताईं जो
परमेश्वर को सबसे उत्तम और उत्तम तरीके से प्रसन्न करें।

संसार के स्वामी ने मानवता को अमृत वृक्ष का फल प्रदान किया है।
सृष्टि, एक व्यापक स्वभाव के साथ जो ब्रह्मांड को समाहित कर सकता है, और एक संगत क्षमता के साथ - और यहां तक कि एक सार्वभौमिक पूजा करने की आवश्यकता भी है। लेकिन मानवता दुनिया और उसके आकर्षण की ओर झुकती है। इसलिए
ईश्वर एक मार्गदर्शक के माध्यम से मानवता का ध्यान सांसारिकता से हटाना चाहता है।
बहुलता से दिव्य एकता की ओर, क्षणभंगुरता से अनंत काल की ओर।
यह होगा और कुरान के माध्यम से, पैगंबर मुहम्मद, उस पर हो
शांति और आशीर्वाद ने मानवता को इस लक्ष्य की ओर सबसे वांछनीय तरीके से निर्देशित किया
उन्होंने अपने ढंग से संदेशवाहक का कर्तव्य निभाया और सबसे उत्तम तरीके से संदेशवाहक का कर्तव्य निभाया।

इस प्रकार सृष्टि के सबसे श्रेष्ठ सदस्य जीवित प्राणी हैं,
श्रेष्ठ जीव चेतन प्राणी हैं, सबसे श्रेष्ठ चेतन प्राणी
सच्चे इंसान हैं, और सच्चे इंसान जिन्होंने सारे काम किए
सबसे उत्तम और व्यापक तरीके से उल्लिखित कर्तव्यों का स्वाभाविक रूप से
एक सर्वव्यापी आरोहण के माध्यम से दूरी की निकटता तक उठना
दो धनुषों की डोरी, ईश्वर के सबसे निकट का स्थान, शाश्वत खुशी के द्वार पर दस्तक देना, दया के खजाने को खोलना, और विश्वास की अदृश्य सच्चाइयों को प्रत्यक्ष रूप से देखना।

सातवीं बात: हर चीज सुंदरता और आनंद के सबसे मनभावन उदाहरण प्रस्तुत करती है।
अलंकरण की सर्वोच्च डिग्री, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि उनका निर्माता चाहता है
चीज़ों को सुंदर बनाएँ और उन्हें सजाएँ। बदले में, यह दर्शाता है कि निर्माता ने
अपनी कला के प्रति एक मजबूत झुकाव और पवित्र प्रेम। इसलिए व्यक्ति
इस कला के चमत्कारों को प्रदर्शित करने की सबसे व्यापक प्रवृत्ति के साथ
स्वयं; जो उन्हें जानता है, उन्हें ज्ञात करता है, और इस प्रकार स्वयं को बनाता है
प्यारा; और जो अन्य प्राणियों में प्रकट सुंदरता की गहराई से सराहना करता है
निर्माता से आने की पूरी सराहना में, सबसे प्रिय होंगे
उस निर्माता की दृष्टि में, जो कला का पोषण करता है और अपनी कला से बहुत प्रेम करता है।

यही प्राणी समस्त प्राणियों को सुशोभित करने वाली उत्कृष्ट सुन्दरता और गुणों तथा उन्हें प्रकाशित करने वाली पूर्णता के प्रति पूर्ण जागरूक होकर, समस्त प्राणियों को प्रकाशित करता है।
स्वर्ग से गूंज उठती है: “परमेश्वर की महिमा सर्व-प्रसिद्ध है! परमेश्वर ने क्या-क्या चमत्कार किए हैं!” और
"ये सब भगवान की ओर से हैं! भगवान सर्व-महान हैं!" यही सत्ता इन सभी का कारण बनती है
ब्रह्मांड कुरान की ध्वनियों से गूंज उठेगा और धरती आनंदित हो उठेगी
और समुद्र अपने सराहनीय प्रतिबिंबों और महिमा के साथ-साथ अपने
ईश्वरीय एकता की घोषणा और प्रदर्शन।

ऐसा प्राणी, "कारण ही कर्ता है" के सिद्धांत के अनुसार,
उसे अपने समुदाय के अच्छे कर्मों के बराबर पुरस्कार मिलता है। उसका आध्यात्मिक

सिद्धियाँ उसे उसके समुदाय द्वारा दिए गए आशीर्वाद से शक्ति प्राप्त होती हैं, और उसके संदेशवाहक के दौरान किए गए कर्तव्य उसे पूर्णता प्रदान करते हैं।
ईश्वरीय दया का अमूर्त प्रतिफल और अनंत प्रवाह प्राप्त करें
और प्रेम। इसे देखते हुए, शुद्ध सत्य और पूर्ण ज्ञान का परिणाम यह है कि
इस प्राणी को स्वर्गारोहण के माध्यम से स्वर्ग, सिद्रतुल-मुन्तहा - कमल-वृक्ष, आकस्मिकता की सबसे दूर की सीमा - दिव्य सिंहासन तक आगे बढ़ना चाहिए,
और दो धनुषों की डोरियों के बीच की दूरी की निकटता।

दूसरे प्रश्न का उत्तर: दूसरे प्रश्न के पीछे का सत्य इतना ऊंचा और गहरा है कि मानव मन उसे समझ नहीं सकता।
इसे केवल विश्वास के प्रकाश से ही पहचाना जा सकता है। हालाँकि, हम कोशिश करेंगे कि हम इसे पहचान सकें।
तुलना के माध्यम से इसे इंगित करने के लिए।

इस ब्रह्माण्ड को जब इसके उद्देश्यों में निहित ज्ञान के संदर्भ में देखा जाता है, तो यह एक विशाल वृक्ष के समान प्रतीत होता है। एक वृक्ष की तरह ही यह भी एक विशाल वृक्ष है।
सृष्टि रूपी वृक्ष की एक शाखा है जगत्, जिसकी शाखाएँ (तत्व) हैं,
पत्ते (पौधे), फूल (जानवर) और फल (मानवता)। उसका नाम
सर्वज्ञ की अपेक्षा है कि सर्व-महान निर्माता का कोई भी कानून जो प्रचलित है
पेड़ों में सभी गुण इस सर्वोच्च वृक्ष में व्याप्त हैं। इसलिए, किसी भी अन्य पेड़ की तरह,
सृष्टि का यह वृक्ष भी अवश्य ही किसी बीज से बना होगा।
ऐसा बीज जो इस भौतिक दुनिया के अलावा, अन्य सभी दुनियाओं के मॉडल और नींव को समाहित कर सकता है।

ब्रह्मांड का आवश्यक बीज, जिसमें हजारों अलग-अलग शामिल हैं
संसार में, पदार्थ का सूखा, निर्जीव टुकड़ा नहीं हो सकता।

चूँकि इस सृष्टि वृक्ष से पहले कोई दूसरा वृक्ष नहीं था,
दिव्य नाम सर्वज्ञ की अपेक्षा है कि अर्थ या प्रकाश का गठन
इसका बीज या मूल फल के भीतर ही छिपा रहता है। बीज हमेशा नग्न नहीं रह सकता
कभी नहीं। चूंकि सृष्टि के आरंभ में यह किसी फल के भीतर नहीं था, इसलिए यह
अंत में निश्चित रूप से इसमें वस्त्र पहने जाएंगे। चूंकि यह बीज मानवता है, और
चूँकि पैगम्बर मुहम्मद, जैसा कि पहले बताया गया है, सबसे प्रसिद्ध और
मानवता के बीच प्रतिष्ठित - जिसने मानवता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है
उसने स्वयं आधी दुनिया और पाँचवें हिस्से का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है।
मानवता को अपने ऊपर हावी होने दें, और अपने असाधारण गुणों और
महामहिम, ने दुनिया को प्रेम और आश्चर्य से उन पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है—
निश्चय ही, ब्रह्माण्ड के बीज का निर्माण करने वाला प्रकाश वस्त्र से आच्छादित होगा
मुहम्मद के व्यक्तित्व में प्रकट होते हैं और अंतिम फल के रूप में प्रकट होते हैं।

इस अद्भुत, शक्तिशाली ब्रह्मांड का अस्तित्व असंभव क्यों माना जाना चाहिए?
मनुष्य के स्वभाव से ही बनाया गया था? सर्वशक्तिमान परमेश्वर को क्यों
महामहिम, जो एक दाने के आकार के पेड़ से एक विशाल, विश्व-सदृश देवदार का पेड़ बनाते हैं
बीज बोना, सृष्टि नहीं करना - या सृष्टि करने में असमर्थ होना - सृष्टि के प्रकाश से

मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो? ब्रह्मांड का वृक्ष
(स्वर्ग के तोबा वृक्ष की तरह) उल्टा, जिसकी जड़ें और तना ऊपर की ओर फैला हुआ है और शाखाएँ नीचे की ओर हैं, इसमें प्रकाश की एक कड़ी और एक कड़ी है
नीचे फल की स्थिति और आवश्यक बीज की स्थिति के बीच का अर्थ
ऊपर। स्वर्गारोहण उस कड़ी का रूप है: पैगम्बर अहमद (मुहम्मद)
इसके साथ यात्रा करने का रास्ता खोल दिया; वह संत बन गया, वापस लौट आया
संदेशवाहक के साथ, और एक तरह के स्वर्गारोहण के लिए दरवाजा खुला छोड़ दिया। संत हृदय और आत्मा में उस प्रकाश के राजमार्ग पर भविष्यवाणी के स्वर्गारोहण के तहत यात्रा करते हैं
अपनी क्षमता के अनुसार छाया, और ऊंचे स्टेशनों तक वृद्धि।

पहले प्रश्न का उत्तर देते समय हमने देखा कि ब्रह्माण्ड का निर्माता
इसे उक्त उद्देश्यों के लिए एक महल के रूप में बनाया गया। चूँकि पैगम्बर
उन उद्देश्यों को पूरा करने का साधन है, उसे इसके अधीन होना होगा
ब्रह्माण्ड के निर्माता की कृपादृष्टि प्राप्त करें और उसका प्रकटीकरण प्राप्त करें
ब्रह्माण्ड के निर्माण से पहले, किसी चीज़ के परिणाम या फल पर विचार किया जाता है
इस प्रकार अस्तित्व में नवीनतम वस्तु अर्थ और विचार में प्रथम है।
चूँकि पैगम्बर मुहम्मद सबसे उत्तम फल हैं, इसलिए सभी चीजों को महत्व देने का साधन हैं।
अन्य फलों और सभी प्रयोजनों (ब्रह्मांड के निर्माण के लिए) को साकार करने के लिए, उसके प्रकाश को दिव्य सृजन की पहली अभिव्यक्ति प्राप्त करनी होगी।

जहाँ तक तीसरे प्रश्न का प्रश्न है, यह इतना व्यापक है कि हम जैसे लोग इसका उत्तर नहीं दे सकते। इसे समझो। हम इसे केवल दूर से ही देख सकते हैं। भौतिक दुनिया को बनाने वाली "अभौतिक फैक्ट्रियाँ" आकाशीय दुनिया में हैं और इसके शासकीय नियम वहीं से निर्धारित या जारी होते हैं। पृथ्वी के असंख्य निवासियों द्वारा किए गए कार्यों के परिणाम और उनके परिणाम

मनुष्य और जिन्न जो कुछ करते हैं, वह भी उन लोकों में आकार लेता है।
कई संकेतों और भविष्यवाणियों की गवाही के साथ
कुरान सुझाव देता है कि परम्पराएँ, तथा ब्रह्माण्ड और पृथ्वी में विद्यमान ज्ञान
ईश्वरीय नाम सर्वज्ञ की मांग है कि मानवता द्वारा किए गए अच्छे कर्म
और जिन्न जन्नत के फलों का रूप धारण कर लेते हैं, जबकि उनके बुरे कर्म जन्नत के फलों का रूप धारण कर लेते हैं
नरक के वृक्ष (ज़क़्क़ुम) के कड़वे, विषैले फलों के रूप।

पृथ्वी पर प्राणी बहुतायत में मौजूद हैं, और सृजन का कार्य निरंतर जारी है।
इतनी सारी शाखाओं में विभाजित है, कि प्राणियों के समूह और प्रजातियाँ और
यहाँ जीवों की विभिन्न श्रेणियाँ कहीं से भी कहीं अधिक संख्या में पाई जाती हैं
ब्रह्मांड में और कहीं भी। इन प्राणियों और जीवों को लगातार द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है
नए-नए, क्योंकि दुनिया लगातार उनसे भरती और खाली होती रहती है।
इनमें से अनेक प्राणियों और जीवों का स्रोत और उत्पत्ति इसी में है
सार्वभौमिक नियम और दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ, जो सर्वप्रथम स्वर्ग में प्रतिबिंबित होती हैं और स्वर्ग द्वारा ग्रहण की जाती हैं।

कुछ हद तक सरल और शुद्ध, प्रत्येक स्वर्ग एक अलग दुनिया की तरह है
छत, और उस दुनिया के प्रशासन और उसके मामलों के विनियमन के लिए एक केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है। उन दुनियाओं में से एक है शरण का बगीचा और
निवास, सुदूर सीमा के लोटे-वृक्ष के पास स्वर्ग का एक अपार्टमेंट ।
सच्चा पत्रकार (पवित्र पैगंबर) कहते हैं कि पृथ्वी पर की गई ईश्वर की प्रशंसा और महिमा उस बाग के रूप धारण कर लेती है।
फल। दूसरे शब्दों में, परिणाम या फलों से युक्त भंडारगृह
यहाँ किये गये कार्य उन स्वर्गीय लोकों में स्थित होते हैं; प्राप्त फसल
यहाँ को वहाँ भेजा जाता है (पूर्वनिर्धारित दिन पर "काटने" के लिए।)

इसलिए ऐसा मत कहिए कि जैसे कोई कथन, "सभी प्रशंसा और आभार
क्योंकि परमेश्वर, जो हवा में खो गया है, स्वर्ग के फल में अवतरित हो गया है?
कभी-कभी आप जागते हुए एक सुखद शब्द कहते हैं और उसे खाते हैं
रात को सपने में स्वादिष्ट सेब देखना। सपने में कहा गया अप्रिय शब्द
दिन रात को एक कड़वी चीज़ की तरह निगलने के लिए वापस आता है। यदि आप किसी की चुगली करते हैं,
वे तुम्हें सड़े हुए मांस के समान खाने को मजबूर करेंगे। इसलिए जो भी अच्छे या बुरे शब्द हों
इस सांसारिक निद्रा में तुम जो कुछ कहोगे, उसे तुम जन्म में फलों के रूप में खाओगे।
इसके बाद, जागृत होने की दुनिया।

चौथा सिद्धांत: स्वर्गारोहण के फल और लाभ क्या हैं?

उत्तर: स्वर्गारोहण के अनेक फलों में से कौन सा फल उत्तम है?
स्वर्ग के वृक्षों के विस्तृत अर्थ के बावजूद, हम उदाहरण के तौर पर केवल पांच का ही उल्लेख करेंगे।

प्रथम फल: विश्वास या आस्था के स्तंभों के मूल स्वरूप का दर्शन
वे सत्य जिनसे वे उत्पन्न होते हैं, साथ ही स्वर्गदूतों, स्वर्ग और को देखना
परलोक और यहां तक कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के दर्शन (सभी शक्तियों से परे)
गुणवत्ता और मात्रा की विशेषताएं), जिसके परिणामस्वरूप एक विशाल खजाना, एक शाश्वत प्रकाश,
और ब्रह्मांड और मानवता के लिए एक उपहार है। इसके माध्यम से, ब्रह्मांड अब और नहीं रह सकता
अब इसे विनाश के लिए अभिशप्त वस्तुओं के अव्यवस्थित ढेर के रूप में नहीं देखा जाएगा, क्योंकि
वास्तविकता का पता चला: यह शाश्वत का सामंजस्यपूर्ण संग्रह है
बेसोत के पवित्र लेखन और प्यारे दर्पण जहां एकल एक की
कृपा और सौंदर्य परिलक्षित होते हैं। इसने ब्रह्मांड को प्रसन्न किया है और उसे बनाया है
सभी चेतन प्राणियों को आनन्दित होने दो।

इसने हमें उस भ्रमित अवस्था से भी मुक्त कर दिया, जिसमें हम स्वयं को अभागा, असहाय और निराश्रित मानते थे, जो अनंत बंधनों में उलझा हुआ था।
आवश्यकता और शत्रुता से रहित तथा अनन्त विनाश के लिए अभिशप्त। इसने हमें हमारी वास्तविकता दिखाई कि
हम सबसे सुंदर रचना और सृष्टि के सर्वोत्तम प्रतिरूप के प्राणी हैं, चमत्कारों के
अनन्त रूप से मांगे गए की शक्ति, उनके लेखन की एक व्यापक प्रति, और
अनंत काल के प्रभु द्वारा संबोधित प्राणी। इससे यह भी पता चला कि हम उसके हैं
निजी सेवक उसकी पूर्णता की सराहना करते हैं, उसके मित्र उसकी सुन्दरता को निहारते हैं

आश्चर्यचकित हो गए, और उनके प्रिय और सम्माननीय अतिथियों को स्वर्ग के लिए नामित किया गया।
इसने उन लोगों में असीम खुशी और उत्साह भर दिया जो वास्तव में मानव हैं।

दूसरा फल: जिन्न और मानव जाति के लिए उपहार के रूप में लाया गया स्वर्गारोहण
इस्लाम के आवश्यक तत्व, जिनमें मुख्य रूप से निर्धारित पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ शामिल हैं,
जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो शासक द्वारा अनुमोदित और प्रसन्न है
अनंत काल, प्राणियों का निर्माता, ब्रह्मांड का मालिक और भगवान
संसार की सभी वस्तुओं को देखना जो उसे प्रिय हैं, वह इतनी जिज्ञासापूर्ण और इतनी खुशी देने वाली हैं कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।
हर कोई किसी प्रसिद्ध दानी या दानी राजा की इच्छा जानना चाहता है, और इसलिए चाहता है कि वे सीधे उससे बात कर सकें।
वह उनसे क्या माँगता है और उसे क्या पसंद है।

सभी प्राणी उसकी शक्ति की मुट्ठी में हैं, और उनकी कृपा, सुंदरता और
उसकी सुन्दरता, कृपा और प्रेम की तुलना में उसकी सारी सिद्धियाँ धुंधली छाया मात्र हैं।
पूर्णता। देखिए मानवता को किस हद तक उसकी आवश्यकता है, जिसे अनंत मामलों में उसकी आवश्यकता है
और हर पल उसकी असीम कृपा प्राप्त करता है, उसके बारे में जिज्ञासु होना चाहिए
और उसकी इच्छा जानना चाहते हैं और जानना चाहते हैं कि उसे क्या पसंद है।
फल यह था कि "सत्तर हज़ार" पर्दों से गुज़रने के बाद, पैगंबर
मुहम्मद ने सीधे उनसे सुना कि अनंत काल के राजा को क्या पसंद है।
पूर्ण निश्चितता, और फिर इस जानकारी को उपहार के रूप में हमें दे दिया।

मानवता चाँद और अन्य ग्रहों के बारे में बहुत उत्सुक है। हम आशा करते हैं
कि कोई वहां जाएगा और हमें बताएगा कि उन्होंने क्या देखा, और वे क्या करने के लिए तैयार हैं
इस उद्देश्य के लिए महान बलिदान। लेकिन चंद्रमा के क्षेत्र में यात्रा करता है
गुरु जो इसे मक्खी की तरह धरती पर उड़ाता है। धरती उड़ती है
सूर्य एक पतंगे की तरह है, और सूर्य हजारों दीपकों में से केवल एक है और महामहिम मास्टर के राज्य के अतिथि-गृह में एक मोमबत्ती के रूप में कार्य करता है।
स्वर्गारोहण के दौरान, पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने ऐसे सर्व-महान व्यक्ति के आवश्यक लक्षणों का अवलोकन किया,
साथ ही उनके कार्यों, उनकी कला के चमत्कारों और अनन्त दुनिया में उनकी दया के खजाने के मूल भी। उन्होंने इनका अवलोकन किया और हमें इनके बारे में बताने के लिए वापस लौटे।
यह तर्क और बुद्धि के कितने विपरीत होगा यदि मानवता ऐसा न करे
उसे अत्यंत जिज्ञासा, पूर्ण आश्चर्य और प्रेम के साथ सुनें।

तीसरा फल: पैगम्बर ने अनन्त खुशी का छिपा हुआ खजाना देखा
स्वर्गारोहण के दौरान और इसकी चाबियाँ मानवता और जिन्न को उपहार के रूप में दी।
जन्नत देखी, रहमत-ए-करम के हमेशा रहने वाले अज़ीम नज़ारे देखे और हमेशा की खुशी का एहसास किया।
फिर उसने इंसानों और जिन्न को खुशखबरी दी कि हमेशा की खुशी (एक हमेशा की दुनिया में) मौजूद है।

नश्वर, दुखी मानव में उमड़ी महान खुशी
और जिन्न, जिनमें से सभी ने इस घटना से पहले खुद को निंदित माना था
अनंत विनाश की ओर, वर्णन नहीं किया जा सकता। उन्हें एक समय में यह बात पता चली
जब सभी प्राणी इस विचार से हृदय विदारक चीखें निकाल रहे थे कि
एक अस्थिर दुनिया में मृत्यु और क्षय के आवेगों के बीच प्रवाह में, समय के प्रवाह और अनंत काल के माध्यम से गैर-अस्तित्व और शाश्वत अलगाव के सागर में प्रवेश करना
परमाणुओं की गति। सोचिए ऐसे लोग कितने खुश होते हैं जब वे सीखते हैं,
फाँसी दिए जाने से पहले राजा ने उनमें से प्रत्येक को एक महल दे दिया है
अपने महल के पास। सभी मनुष्यों की खुशी और प्रसन्नता को एक साथ जोड़ें
और जिन्न, और तब तुम इस शुभ समाचार के मूल्य को समझोगे।

चौथा फल: पैगम्बर मुहम्मद को भगवान शिव के दर्शन का फल प्राप्त हुआ।
ईश्वर का सुंदर “चेहरा”, और इसे मानवता और जिन्न के लिए एक उपहार के रूप में लाया
ताकि हर विश्वासी को उसी दर्शन से सम्मानित किया जा सके। आप समझ सकते हैं कि वह फल कितना स्वादिष्ट, बढ़िया और सुंदर है, नीचे दी गई तुलना से: कोई भी दिल वाला व्यक्ति एक सुंदर, परिपूर्ण और दयालु व्यक्ति से प्यार करता है। यह
प्रेम सौंदर्य, पूर्णता और परोपकार की सीमा के अनुपात में बढ़ता है; यह आराधना और आत्म-बलिदान तक विस्तृत होता है; और इस हद तक बढ़ता है कि
अपने प्रियतम के एक दर्शन के लिए कोई भी अपनी सम्पत्ति और जीवन का बलिदान कर सकता है।

उनकी तुलना में, सभी सौंदर्य, पूर्णता और परोपकार
सृष्टि की तुलना में सूर्य की कुछ चमक भी नहीं है
सूर्य स्वयं। इससे समझिए कि कितना सुखद, सुंदर, आनन्ददायक और
परम आनन्द का फल है अनन्त सुख में एक सर्व-महिमावान सम्पूर्णता का दर्शन प्राप्त करना, जो अनन्त प्रेम के योग्य है,
जो असीम उत्सुकता को प्रेरित करने का हकदार है।

पांचवा फल: दूसरा फल यह है कि इस घटना से यह समझ में आया कि
मानवता ब्रह्माण्ड का एक मूल्यवान फल है और निर्माता का प्रिय है
ब्रह्मांड का। यद्यपि बाह्य रूप से एक तुच्छ प्राणी, एक कमज़ोर जानवर,
और एक नपुंसक चेतन प्राणी, मानवता इस फल के माध्यम से एक तक पहुंच गई है
अन्य सभी प्राणियों से इतना ऊपर है कि यह हमारे लिए गर्व का कारण है।
इससे जो आनंद और खुशी मिलती है वह अवर्णनीय है। अगर आप किसी साधारण निजी व्यक्ति से कहें कि
उन्हें फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत किया गया है, उन्हें असीम खुशी महसूस होगी।
एक नश्वर, असहाय, तर्कशील और स्पष्टवक्ता प्राणी होते हुए भी, यह जानते हुए कि
केवल क्षय और अलगाव के प्रहार, हमें अप्रत्याशित रूप से बताया गया था
स्वर्गारोहण: जैसे आप अपने दिल की सारी इच्छाओं को अनंत काल में महसूस कर सकते हैं
स्वर्ग, एक अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दया से घिरा हुआ है।
सर्व-भव्य एक, और मनोरंजन में, कल्पना की गति के साथ यात्रा करने में और आत्मा और मन के व्यापक क्षेत्र में, आप भी देख सकते हैं
अनन्त खुशी में उनका सर्व-सुन्दर “चेहरा”।

कल्पना कीजिए कि एक सच्चा इंसान कितनी खुशी और आनंद महसूस करेगा
यह सुनकर उसके दिल में एक अजीब सी उदासी छा गई। ऐ काफ़िरों, इनकार का कमीज़ फाड़ दो
और अधर्म को दूर करके मोमिन के कानों और मुसलमान की आंखों पर डाल दो।
निम्नलिखित दो तुलनाओं पर विचार करें।

पहली तुलना: मान लीजिए कि हम एक ऐसे अमित्र देश में हैं जहाँ हर चीज़ और हर कोई हमारे और एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण और अजनबी है। भयानक
हर जगह लाशें बिखरी पड़ी हैं। हम सिर्फ़ अनाथों की चीखें और विलाप सुनते हैं
उस स्थिति में अगर कोई जाए और खुशखबरी लेकर आए
राजा से, जो किसी तरह शत्रुता को मित्रता में बदल देता है; शत्रुओं को
मित्रों, भयानक लाशों को स्तुति और महिमामंडन, श्रद्धा और विनम्रता में लीन भक्तों में बदल दिया; चीखों और विलापों को अनुमोदन या जयघोष में बदल दिया।
जयघोष; तथा मृत्यु, हत्या और डकैती को जीवन के कर्तव्यों से मुक्ति में बदल दिया गया—
और अगर हम किसी तरह दूसरों के आनंद और खुशी को साझा करते हैं, तो
अपनी खुशी और प्रसन्नता को महसूस करते हुए, आप समझ सकते हैं कि वह समाचार कितना आनंददायक है।

विश्वास की रोशनी से पहले, पैगम्बर मुहम्मद के स्वर्गारोहण का एक फल, सभी
ये जीव अजीब, हानिकारक, परेशान करने वाले और डरावने प्रतीत होते थे।
पर्वत समान शरीर विकराल शव जैसे लगते थे, मृत्यु ने सबके प्राण काट डाले थे।
सिर को काटकर अनंत अस्तित्व के कुएं में फेंक दिया, और सभी आवाजें बंद हो गईं
मृत्यु और वियोग से आती विलाप की चीखें। ऐसे समय में जब गुमराही
सब कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया, विश्वास के स्तंभों में निहित सत्य,
स्वर्गारोहण का एक फल, हर प्राणी को एक मित्र या भाई के रूप में दिखाया, कुछ ऐसा
जो अपने सर्व-महान निर्माता का उल्लेख और महिमा करता है, मृत्यु को मुक्ति के रूप में बताता है
जीवन के कर्तव्यों, तथा परमेश्वर की स्तुति और महिमा के रूप में आवाज़ों का उपयोग करना। यदि आप इस सत्य को पूरी तरह से समझना चाहते हैं, तो दूसरे और आठवें वचनों को देखें।

दूसरी तुलना: मान लीजिए कि हम रात में रेगिस्तान में रेत के तूफान में फंस गए हैं। हम अपने हाथ भी नहीं देख सकते और भूखे, प्यासे, निराश और बेचैन हैं।
तभी, कोई व्यक्ति अप्रत्याशित रूप से कार लेकर आता है और हमें ले जाता है
एक स्वर्ग-जैसी जगह, जहाँ एक अत्यंत दयालु भगवान हमारा स्वागत करते हैं और
हमें अपनी सुरक्षा प्रदान करता है। हमारा भविष्य सुरक्षित हो गया है, और एक भोज का आयोजन किया गया है
हमारे लिए तैयार किया गया है। आप हमारी बड़ी खुशी की कल्पना कर सकते हैं।

रेगिस्तान संसार है और रेत का तूफ़ान संसार की हिंसक अशांति है।
समय और घटनाएँ। हम सभी अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं। चूँकि हम इसे देखते हैं
गुमराही की नज़र से हम इसे घने अँधेरे में देखते हैं। कोई भी हम नहीं
हमारी चीखें सुन सकते हैं। इसके अलावा, हम बहुत भूखे और प्यासे हैं। लेकिन
विश्वास के स्तंभों, पूजा पद्धतियों और अच्छे आचरण के सिद्धांतों के लिए धन्यवाद
पैगम्बर मुहम्मद ने स्वर्गारोहण के फल के रूप में जो कुछ लाया, वह दुनिया है
हम एक अत्यंत उदार व्यक्ति के अतिथिगृह में हैं और हम उनके अतिथि और अधिकारी हैं।

ऐसे अतिथिगृह में भविष्य स्वर्ग की तरह सुंदर, दया की तरह प्यारा और शाश्वत सुख की तरह शानदार दिखाई देता है। इसे देखते हुए, समझें कि कैसे
वह फल कितना प्यारा, सुखद और सुंदर है।

अविश्वासी टिप्पणी करता है: "सर्वशक्तिमान की असीम प्रशंसा और आभार
हे ईश्वर! मैं आश्वस्त हूँ और अपने कुफ़्र को अस्वीकार करता हूँ। मैं एक ईमानवाला हूँ।" हम आपको बधाई देते हैं, और सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें अपने रसूल की सिफ़ारिश में शामिल करें।

हे ईश्वर, संसार के आरम्भ से लेकर परलोक तक आशीर्वाद प्रदान करो।
क़यामत के दिन का अंत, उस पर जिसके चिन्ह से चाँद फूटा,
और जिनकी उंगलियों से झरने की तरह पानी बह निकला
स्वर्ग; जिसने स्वर्गारोहण किया और जिसकी आँखें नहीं भटकीं -
हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और साथियों पर।

तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

ऐ रब! हमसे (हमारे) सारे अच्छे कर्म स्वीकार कर लो, बेशक तू ही सुनने वाला, जानने वाला है, ऐ हमारे रब! अगर हम भूल जाएँ या कुछ भूल जाएँ तो हमें तकलीफ़ में न डालो।
हे प्रभु, हमारे दिलों को भटकने मत देना, क्योंकि तुमने गलतियाँ की हैं।
हे प्रभु, हमारे लिए हमारा प्रकाश पूर्ण करो और हमें क्षमा करो। निश्चय ही तुम
सभी चीज़ों पर पूरा अधिकार है। उनके आह्वान का निष्कर्ष यह होगा:
“सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है।”

परिशिष्ट

चाँद को विभाजित करने का चमत्कार

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

क़यामत करीब आ गई है और चाँद फट गया है। लेकिन जब भी वे
जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे घृणा से मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, "यह भी दूसरे बहुत से जादूओं के समान है, जो एक के बाद एक होते रहते हैं।" (54:1-2)

प्रश्न: भौतिकवादी दार्शनिक और उनके अनुकरणकर्ता, जो ग्रहण लगाना चाहते हैं
पैगंबर मुहम्मद के इस उज्ज्वल चमत्कार को अपने शातिर भ्रम के साथ कहते हैं: "यदि
अगर यह घटना सच में घटित होती तो पूरी दुनिया में इसकी चर्चा होती
और सभी ऐतिहासिक दस्तावेजों में इसका उल्लेख है।”

उत्तर: यह चमत्कार लोगों के एक समूह के सामने प्रदर्शित किया गया था।
मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी का प्रमाण।
यह घटना रात के उस समय घटी जब लोग सो रहे थे; जैसे
धुंध, बादल और समय के अंतर जैसी बाधाओं ने दूसरों को देखने से रोक दिया
और, इसके अलावा, उस समय विज्ञान और सभ्यता अभी तक उन्नत नहीं हुई थी
या व्यापक। इस प्रकार आकाश का अवलोकन करने की प्रथा काफी सीमित थी।
लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि इसे विश्व भर में देखा जाए।

इस तरह के भ्रम के बादलों को हटाने के लिए, निम्नलिखित पाँच बिंदुओं पर विचार करें: पहला बिंदु: मुहम्मद के अविश्वासी समकालीनों

की जिद सर्वविदित और दर्ज है। जब कुरान ने इस घटना की घोषणा की , तो एक भी अविश्वासी ने इसका खंडन करने की हिम्मत नहीं की। यदि उन्होंने इस घटना को नहीं देखा होता, तो वे इस आयत का इस्तेमाल पैगंबर पर और भी भयानक हमला करने के लिए करते। हालाँकि, न तो पैगंबर की जीवनी और न ही इतिहास की किताबों में ऐसा कुछ भी दर्ज है जो इस घटना से इनकार करने का संकेत देता हो। उनकी प्रतिक्रिया इस प्रकार दर्ज की गई: यह एक के बाद एक कई अन्य लोगों की तरह जादू है। उन्होंने इस घटना को जादू घोषित किया, और आगे कहा कि यदि अन्य स्थानों पर मक्का के कारवां ने इसे देखा है, तो यह वास्तव में हुआ था; अन्यथा, पैगंबर ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया था। जब अगली सुबह यमन और अन्य स्थानों से आने वाले कारवां ने घोषणा की कि उन्होंने यह चमत्कार देखा है, तो अविश्वासियों ने उत्तर दिया: "अबू तालिब के अनाथ के जादू ने स्वर्ग को भी प्रभावित किया है!"

दूसरा बिंदु: सावधानीपूर्वक शोध करने वाले प्रमुख विद्वानों में से अधिकांश, जैसे सऊद-दीन अत-तफ्ताज़ानी, ने निष्कर्ष निकाला कि, पैगम्बर की उंगलियों से पानी बहने और एक पूरी सेना को तृप्त करने के चमत्कारों की तरह, और लकड़ी के खंभे की श्रव्य शोक की तरह, जिस पर पैगम्बर उपदेश देते थे, जब वह खंभा एक उपदेश के निर्माण के बाद उनसे अलग हो गया, तो चाँद का फटना मुतवातिर है। इसका मतलब यह है कि यह कई सच्चे समूहों द्वारा एक के बाद एक पीढ़ियों तक प्रसारित किया गया है, और यह कि प्रेषक इतने विशाल समुदाय बनाते हैं कि वे झूठ पर सहमत नहीं हो सकते हैं। यह उतना ही निश्चित है जितना कि हैली का धूमकेतु, जो एक हजार साल पहले दिखाई दिया था, या एक ऐसे द्वीप का अस्तित्व जिसे हमने नहीं देखा है। इसलिए ऐसी निश्चित, गवाह बातों के बारे में निराधार संदेह पैदा करना अनुचित है। वास्तव में, उनकी स्वीकार्यता के लिए यह पर्याप्त है कि वे असंभव नहीं हैं। चाँद को विभाजित करना उतना ही संभव है जितना कि ज्वालामुखी विस्फोट से पहाड़ को विभाजित करना।

तीसरा बिंदु: पैगम्बर अपने पैगम्बर होने के दावे को साबित करने और इनकार करने वालों को यकीन दिलाने के लिए चमत्कार करते हैं, न कि विश्वास को मजबूर करने के लिए। इसलिए, हर चमत्कार उन लोगों को यकीन दिलाने के लिए दिखाया जाता है जिन्होंने पैगम्बर होने के दावे को सुना है। अगर चमत्कार किसी तरह से सभी को उन्हें देखने या उन पर विश्वास करने के लिए मजबूर करते हैं, तो हमें स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाने और धर्म भेजने के लिए सर्वज्ञ की बुद्धि या ईश्वरीय उद्देश्य, जिसका तात्पर्य है कि मन की स्वेच्छा से स्वीकृति के लिए जमीन तैयार की जाए लेकिन स्वतंत्र विकल्प को नकारा या रद्द नहीं किया जाए, का उल्लंघन होगा।

इस प्रकार यदि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने चंद्रमा को कई घंटों तक विभाजित छोड़ दिया होता ताकि हर कोई इसे देख सके और अपने ऐतिहासिक अभिलेखों में दर्ज कर सके, तो यह

यह मुहम्मद के संदेशवाहक होने की अनूठी घटना या उनकी पैगम्बरी होने का प्रमाण होने के बजाय केवल एक और खगोलीय घटना होती।

या फिर यह इतना स्पष्ट चमत्कार होता कि हर कोई इस पर विश्वास करने के लिए मजबूर हो जाता, स्वतंत्र इच्छा को रद्द कर दिया जाता और अबू जहल जैसे कोयले जैसी आत्मा वाले लोग अबू बकर जैसे हीरे जैसी आत्मा वाले लोगों के बराबर हो जाते। इस प्रकार एक विशेष कार्य और जिम्मेदारी के साथ मानवता को बनाने का उद्देश्य, साथ ही रहस्योद्घाटन भेजने का उद्देश्य भी नकार दिया जाता। यही कारण है कि इस चमत्कार को दुनिया भर में नहीं दिखाया गया ताकि इसे रिकॉर्ड किया जा सके।

चौथा बिंदु: चूँकि यह घटना रात में अचानक हुई थी जब सब सो रहे थे, इसलिए इसे पूरी दुनिया में नहीं देखा जा सकता था। अगर कुछ लोगों ने इसे देखा भी होगा तो उन्हें अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ होगा। और अगर इसने उन्हें यकीन दिलाया भी होगा तो इतनी महत्वपूर्ण, चमत्कारी घटना को व्यक्तिगत रिपोर्टों के आधार पर इतिहास में दर्ज नहीं किया गया होगा।

कुछ अतिरिक्त रिपोर्टें हैं कि चंद्रमा के दो भागों में विभाजित होने के बाद वह पृथ्वी पर गिर पड़ा, जिन्हें सत्यनिष्ठ विद्वानों ने इस प्रत्यक्ष चमत्कार के महत्व को कम करने के लिए पाखंडियों द्वारा की गई झूठी जानकारी के रूप में खारिज कर दिया है।

इस चमत्कार का उल्लेख निश्चित रूप से चीनी, जापानी और मूल अमेरिकी ऐतिहासिक विवरणों में नहीं मिलता, क्योंकि अन्य बाधाओं के अलावा, जब यह घटना घटी, तब स्पेन, फ्रांस और इंग्लैंड जैसे यूरोपीय देशों में (जो सभी अज्ञानता के कोहरे में लिपटे हुए थे) सूर्यास्त ही हुआ था, अमेरिका में दिन का समय था, तथा चीन और जापान में सुबह का समय था।

पाँचवाँ बिंदु: यह चमत्कार कोई साधारण घटना नहीं है जो किसी विशेष कारण से या अचानक घटित हुई हो ताकि इसकी आलोचना सामान्य "प्रकृति के नियमों" के आधार पर की जाए। बल्कि, सूर्य और चंद्रमा के सर्वज्ञ निर्माता ने अपने रसूल की नबूवत की पुष्टि करने और अपने दावे का समर्थन करने के लिए इसे एक असाधारण घटना बना दिया। इसलिए इसे ईश्वरीय बुद्धि द्वारा निर्दिष्ट कुछ लोगों के लिए एक ठोस सबूत के रूप में दिखाया गया था, क्योंकि ईश्वरीय मार्गदर्शन और मानवीय जिम्मेदारी की प्रकृति के साथ-साथ एक रसूल को उठाने का कारण इसकी आवश्यकता थी। अगर इसे उन लोगों ने देखा होता जो इसे देखने के लिए अभिप्रेत नहीं थे और जिन्होंने अभी तक मुहम्मद की नबूवत के बारे में नहीं सुना था, और अगर यह सामान्य "प्रकृति के नियमों" के अनुसार हुआ होता, तो यह उनके नबूवत से जुड़ा कोई चमत्कार न होकर एक साधारण खगोलीय घटना होती।

निष्कर्ष में, ये तर्क किसी भी मन को इस संभावना के प्रति आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त हैं कि यह चमत्कार हुआ था। इसके घटित होने के अनेक प्रमाणों में से हम केवल छह का उल्लेख करेंगे, क्योंकि इन छह में छह गुना सर्वसम्मति की ताकत है:

साथी, सभी न्यायप्रिय और सत्यनिष्ठ लोग, इस बात पर सहमत हैं कि
यह हुआ।
सभी सटीक कुरान व्याख्याकार इस बात पर सहमत हैं कि चाँद का फटना यह संकेत करता है कि
मुहम्मद की उंगलियों के इशारे से यह घटना हुई।
सभी सच्चे मुहद्दिसुन (परंपरावादियों) ने इस घटना का वर्णन किया है
प्रसारण के विभिन्न प्रामाणिक चैनलों के माध्यम से।
सत्य और संतत्व के साथ-साथ प्रेरणा और
आध्यात्मिक खोज, इस बात की गवाही देती है कि यह घटना घटी थी।
सभी प्रमुख धर्मशास्त्री और विद्वान इस घटना की पुष्टि करते हैं,
उनके अन्य मतभेदों के बावजूद।
मुहम्मद का समुदाय, जो एक प्रामाणिक पैगंबर परंपरा है
राज्य कभी भी किसी त्रुटि पर सहमत नहीं हो सकते, तथा उसकी घटना को स्वीकार नहीं कर सकते।

ये छह साक्ष्य स्पष्ट रूप से चंद्रमा के विभाजन को सिद्ध करते हैं।

निष्कर्ष रूप में, हमने इस चमत्कार की वास्तविकता को स्थापित कर दिया है इसकी संभावना पर आपत्तियों का खंडन करते हुए। कुछ समापन वाक्यों में, हम सत्य के नाम पर और विश्वास के लिए बोलें।

पैगम्बरों की मुहर बनाकर, एक सांसारिक शरीर, फिर भी संदेशवाहक के स्वर्ग का प्रकाश-फैलाने वाला चंद्रमा, स्वर्ग में यात्रा करता है (स्वर्गारोहण), जो उनके संतत्व का सबसे बड़ा आश्चर्य या चमत्कार है उनकी पूजा की गुणवत्ता के माध्यम से प्राप्त किया गया जिसने उन्हें स्थिति तक बढ़ा दिया परमेश्वर के प्रियतम का, परमेश्वर ने स्वर्ग के वासियों और उन लोगों को दिखाया सर्वोच्च क्षेत्र में मुहम्मद उनसे श्रेष्ठ हैं और उनके प्रिय हैं।

इसी प्रकार, एक आदमी के इशारे से चंद्रमा को विभाजित करने की अनुमति देकर, जो कि अस्त है आकाश से उठकर धरती से जुड़ जाने पर लोगों ने उसका एक और बड़ा सबूत देखा। संदेशवाहक बनना। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद संदेशवाहक बनने और संत बनने के दो शानदार पंखों पर सवार होकर पूर्णता के शिखर पर पहुंचे - जैसे कि चाँद के दो चमकीले हिस्सों पर चढ़ गया। वह दो धनुष की लंबाई के बिंदु तक चढ़ गया (सर्वोच्च पद और ईश्वर के सबसे निकट का स्थान) और गर्व का कारण बन गया आकाश और पृथ्वी के सभी निवासियों के लिए।

उस पर और उसके परिवार पर आशीर्वाद और शांति हो, जिससे वह भर जाए
पृथ्वी और आकाश।

आपकी महिमा हो। आपके पास जो ज्ञान है उसके अलावा हमें कुछ भी ज्ञान नहीं है।
तू ही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, उसके लिए जिसके एक इशारे से चाँद फट गया,
मेरा और रिसाले-ए-नूर के विद्यार्थियों के दिलों को कुरान के "सूर्य" के प्रति वैसा ही समर्पित और
वफादार बनाओ जैसा चाँद सूरज के प्रति होता है।
अमीन.

बत्तीसवाँ शब्द

बत्तीसवाँ वचन

सृष्टि परमेश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने से इंकार करती है
परमेश्वर की एकता के पक्ष में तर्क
विनाश का मार्ग और सुख का मार्ग

(नोट: इस शब्द में तीन स्टेशन हैं। पहला स्टेशन एक है
बीसवें वचन की आठवीं झलक को समझाने वाला परिशिष्ट
और उन पचपन भाषाओं में से पहली भाषा की व्याख्या करना जिसके द्वारा सार्वभौमिक
संस्थाएँ ईश्वर की एकता की गवाही देती हैं। यह एक सत्य पर भी चर्चा करता है,
एक दृष्टांत के रूप में, कई सत्यों को व्यक्त किया गया है: यदि वहाँ होता
उनमें (आसमान और धरती में) ईश्वर के अलावा कोई अन्य देवता नहीं रहे,
निश्चय ही बर्बाद हो गए होते [21:22]।)

तीन स्टेशन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

पहला स्टेशन

यदि उनमें (आसमानों और धरती में) कोई देवता होते
परमेश्वर के अलावा, दोनों निश्चित रूप से बर्बाद हो गए होते।

ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वह अकेला है; उसका कोई साझी नहीं; वह अकेला है; उसका कोई साझी नहीं;
प्रभुता और सारी प्रशंसा उसी की है; वही जीवन और महिमा देता है।
वह सर्वव्यापक है, वह कभी नहीं मरता; उसके हाथ में सब भलाई है।
उसके पास हर चीज़ पर पूर्ण अधिकार है, और उसी की ओर वापसी है।

रमज़ान की 11वीं रात को मैंने बताया था कि इनमें से हर एक
दिव्य एकता की पुष्टि के ग्यारह कथनों में एक बात निहित थी
एकता का पहलू और एक विशेष शुभ समाचार (विश्वासियों के लिए)।
केवल साझेदार न होने का अर्थ समझाया गया है
रूपक वार्तालाप या दृष्टांत। अब, भाइयों के अनुरोध पर

मस्जिद और मेरे साथ आए दोस्तों की कृपा से, मैं इस बातचीत को लिख रहा हूँ।

किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो सभी प्रकार के सहयोगी भागीदारों की ओर से ईश्वर के साथ अविश्वास और विभिन्न प्रकार के गुमराह करने के तरीके - जैसे हर चीज़ को प्रकृति या भौतिक कारणों या मूर्ति-पूजा के कारण मानना - सृष्टि के किसी भाग पर प्रभु होने या प्रभुत्व रखने का पूर्वाभास करना। अर्थात्, यह दावा करता है कि वह उस वस्तु का स्वामी है, उस पर शासन करता है, उसे नियंत्रित करता है या उसका निपटान करता है भाग। सबसे पहले किसी परमाणु पर आकर, वह उसे भाषा या भाषा में सूचित करता है भौतिक विज्ञान या प्राकृतिक दर्शन की इस धारणा के अनुसार कि वह इसका सच्चा स्वामी और मालिक है। परमाणु उत्तर देता है सत्य और प्रकट ज्ञान की भाषा:

> मैं असंख्य कार्य करता हूँ; मैं किसी संगठन के भीतर, उसके साथ या उसके ऊपर काम करता हूँ अनंत प्रकार की सृजित संस्थाएँ। क्या आपके पास ज्ञान और क्या मुझे इन कार्यों में निर्देशित करने की शक्ति है? मैं एक मापा हुआ तरीके से काम करता हूँ और आगे बढ़ता हूँ समान संरचना वाले असंख्य अन्य परमाणुओं के साथ संबंध।173 क्या आप इन सभी का नियंत्रण और उपयोग कर सकते हैं? यदि आप इन सभी के स्वामी हैं, व्यवस्था करते हैं, या उदाहरण के लिए, लाल रक्त कोशिकाओं की अनंत जटिलता का प्रबंधन करें कणिकाएँ, जिनके परमाणुओं में से मैं एक हूँ, और ऐसा पूर्ण रूप से करता हूँ ज्ञान और अनुशासन, तो मेरे भगवान होने का दावा करें, और केवल तो फिर यह मान लो कि मैं ईश्वर के अलावा किसी और का वंशज हूँ।
>
> लेकिन आप ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए चुप रहिए! आप मेरे मालिक नहीं हैं और मेरी सभी गतिविधियों और गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं। इतने उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित हैं कि केवल अनंत बुद्धि वाला ही और सर्वव्यापी ज्ञान उन्हें चला सकता है। अगर किसी और के पास होता हाथ में हाथ डालो, तो भ्रम की स्थिति होगी। कोई भी व्यक्ति, जो आपकी तरह है, कैसे कर सकता है वह स्वयं को जीवन भी नहीं दे सकता, जिसकी दृष्टि और अनुभूति अंधे हैं सत्य, जो स्वयं को प्रकृति के संयोग और दुर्घटनाओं के अधीन देखता है, क्या आप मेरे कामकाज में हस्तक्षेप करने की भी हिम्मत कर सकते हैं?

ढोंगी ने सभी भौतिकवादियों की तरह जवाब दिया: "अपने मालिक खुद बनो फिर! आप किसी अन्य शक्ति की सेवा में होने का दावा क्यों करते हैं?" परमाणु उत्तर:

---

173 प्रत्येक गतिमान वस्तु, सूक्ष्म कणों से लेकर ग्रहों तक, अनन्त चाही हुई की शक्ति को प्रदर्शित करती है। स्टाम्प और एकता। इसके अलावा, अपनी गति के आधार पर, प्रत्येक उस स्थान पर कब्ज़ा कर लेता है जिसमें यह एकता के नाम से प्रवेश करता है, इस प्रकार उन्हें अपने सच्चे मालिक की संपत्ति में जोड़ता है। पौधों से लेकर स्थिर तारों तक प्रत्येक अचल इकाई एकता की मुहर की तरह है जो अपने निर्माता के संकेतों के रूप में अपना स्थान दिखाती है। प्रत्येक पौधा और फल एकता की मुहर और मुहर है जो दर्शाता है,
एकता का नाम, कि उसका निवास स्थान और मूल स्थान उसके निर्माता का संदेश है। संक्षेप में, एकता के नाम पर आगे बढ़ने से, प्रत्येक इकाई सभी संस्थाओं पर अधिकार कर लेती है, जिसका अर्थ है कि जो
सभी तारों पर नियंत्रण नहीं कर सकते, एक कण पर भी नियंत्रण नहीं कर सकते।

यदि मेरे पास सूर्य के प्रकाश के समान सर्वव्यापी ज्ञान वाला मन होता
और उसकी ऊष्मा जितनी तीव्र शक्ति होती; यदि मुझमें उसकी रोशनी में मौजूद सात रंगों जितनी व्यापक
अनुभूतियां होतीं; यदि मेरे पास चेहरे और आंखें होतीं
हर प्राणी और हर स्थान के प्रति जिसके साथ मेरा अस्तित्व और मेरा स्थान जुड़ा हुआ है
जुड़े हुए; और अगर मेरे पास इन सभी संबंधों पर अधिकार होता -
तो शायद, शायद, मैं अपना खुद का मालिक होने का दावा कर सकता था। फिर भी
फिर भी, अगर मैंने ऐसा किया होता, तो मैं भी तुम्हारी तरह ही मूर्ख होता। अब तुम मुझसे दूर हो जाओ,
क्योंकि मेरा तुमसे कोई लेना-देना नहीं है!

परमाणु से निराश दावेदार को उम्मीद है कि वह इस मामले को आगे बढ़ाएगा।
एक लाल रक्त कणिका। एक पर आते ही, वह उससे नाम से बात करता है
भौतिक कारणता और प्राकृतिक दर्शन की भाषा: "मैं तुम्हारा हूँ
प्रभु और स्वामी।" लाल रक्त कणिका सत्य की भाषा में उत्तर देती है
और दिव्य बुद्धि:

मैं अकेला नहीं हूँ। यदि तुम भी मेरे रक्त सेना के सभी साथियों को अपने अधीन कर लो
जिनके साथ मैं हमारे निर्माता की ओर इशारा करते हुए एक ही संरचना साझा करता हूं,
साथ ही समान कर्तव्य और कार्य, और यदि आपके पास पूर्ण और
विस्तृत ज्ञान, अद्भुत और सूक्ष्म शक्ति, साथ ही
शरीर की सभी कोशिकाओं को निर्देशित करने का उत्तम ज्ञान, जिनके माध्यम से हम चलते हैं
और जिसमें हम काम करते हैं, आपके दावों में कुछ समझदारी हो सकती है। लेकिन चूंकि आप अंधी और
बहरी प्रकृति या प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर हैं,
आप हम पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते, मुझ पर प्रभुत्व तो दूर की बात है।
व्यवस्था इतनी परिपूर्ण और जटिल है कि केवल वही व्यक्ति इसे देख सकता है, सुन सकता है और
जानता है कि सभी चीजें हमारी सच्ची संप्रभु और स्वामी हो सकती हैं। इसलिए,
चुप! मेरे पास इतने महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं और हम इतने अनुशासन में काम करते हैं कि
आपके निरर्थक दावों का जवाब देने के लिए मेरे पास समय नहीं है!

लाल रक्त कणिका को धोखा देने में असफल, ढोंगी आगे बढ़ जाता है
और एक बड़ी इकाई के सामने आते हैं जिसे वे "कोशिका" कहते हैं। प्राकृतिक दर्शन की परिचित भाषा में इसे संबोधित करते हुए, वे कहते हैं: "सच है, परमाणु और
लाल रक्त कणिका ने मेरी बात नहीं सुनी। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी बात समझ सकते हैं।
मैं देख सकता हूँ, आप कई छोटे तत्वों से बने हैं, जैसे कि चीजें
एक कमरे में व्यवस्थित किया गया। मैं इस व्यवस्था में हाथ बँटा सकता हूँ, और व्यवस्था कर सकता हूँ
इसे फिर से व्यवस्थित करें। तुम मेरे प्राणी हो सकते हो, और मैं तुम पर अधिकार कर सकता हूँ।
शरीर की कोशिकाएँ बुद्धिमत्ता और सत्य की भाषा में उत्तर देती हैं:

यद्यपि मैं छोटा हूँ, फिर भी मैं महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ। मेरे पास सूक्ष्मतम और फिर भी
मेरे सभी पड़ोसी कोशिकाओं के साथ सबसे मजबूत कनेक्शन, और
संपूर्ण जीव जिसका मैं एक हिस्सा हूँ। मैं महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ,
उदाहरण के लिए, धमनियां और नसें, संवेदी और मोटर तंत्रिकाएं, विद्युत
आकर्षण और प्रतिकर्षण बल, तथा सिद्धांत या तत्व
मेरे आकार, आकृति और प्रजनन का निर्धारण करना। यदि आपके पास संपूर्ण जीव बनाने, आदेश देने
और विनियमित करने का ज्ञान और शक्ति है

धमनियों, शिराओं और तंत्रिकाओं को काम में लाना, तथा सभी विविध बलों को काम में लाना
और हमारे स्वरूप और कार्य को प्रबंधित करने वाले सिद्धांत; यदि आप निर्देशित कर सकते हैं,
अदम्य शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान, असंख्य
कलात्मकता और गुणवत्ता में मेरे समान शरीर की कोशिकाएं, फिर अपनी क्षमता दिखाएं।
तब शायद, शायद, आप मुझ पर अधिकार करने या मुझे अपना गुरु बनाने का दावा कर सकेंगे।
लेकिन जब आप ऐसा नहीं कर सकते, तो मुझे छोड़ दें - अब भी लाल रक्त कोशिकाएं हैं
मेरे लिए पोषण लेकर आती हैं, श्वेत रक्त कोशिकाएं बीमारियों का सामना करती हैं
जो मुझे धमका सकता है - मैं व्यस्त हूँ, इसलिए अपने घमंड में मेरा समय और बर्बाद मत करो। सच्ची समझ,
सच्ची सुनने और देखने से खाली कोई भी व्यक्ति हमारे अस्तित्व में कभी दखल नहीं दे सकता। हमारा

व्यवस्था इतनी सटीक, नाजुक और परिपूर्ण है कि केवल पूर्ण बुद्धि, ज्ञान और शक्ति वाला ही हमें नियंत्रित कर
सकता है ।174 यदि ऐसा नहीं होता,
हमारी एकजुटता और व्यवस्था कायम नहीं रहेगी या फिर शीघ्र ही अराजकता में बदल जाएगी।

निराश होकर, ढोंगी को एक मानव शरीर मिलता है, और वह अपनी बात दोहराता है।
अज्ञानी प्रकृति और त्रुटिपूर्ण दर्शन की भाषा में तर्क:
"मैं कह सकता हूँ कि तुम मेरी हो, कि इसके स्वामित्व और प्रबंधन में मेरा हिस्सा है
मानव शरीर ज्ञान और सत्य की भाषा में उत्तर देता है और
इसके आदेश की जीभ:

---

174 सर्वज्ञ निर्माता ने मानव शरीर को एक सुव्यवस्थित शहर की तरह बनाया है। कुछ तंत्रिकाएँ
टेलीफोन और टेलीग्राफ के रूप में कार्य करते हैं, जबकि कुछ रक्त वाहिकाएं रक्त (जीवन का जल) ले जाने वाली पाइप के रूप में कार्य करती हैं। रक्त में दो प्रकार के कणिकाएँ होती हैं: लाल वाले रक्त को संचारित करते हैं
शरीर की कोशिकाओं को पोषक तत्व प्रदान करना, उनका पोषण, दैवीय नियम के अनुसार (व्यापारियों और भोजन वितरित करने वाले अधिकारियों के समान); सफ़ेद वाले, जो संख्या में कम होते हैं, रक्षा करते हैं (
सैनिकों) को बीमारी जैसे आक्रमणकारियों के खिलाफ़ लड़ने के लिए तैयार किया जाता है। जब वे सक्रिय रूप से रक्षा में लगे होते हैं, तो वे
मेवलेवी दरवेशों की तरह दो चक्कर लगाता है और एक अद्भुत और तीव्र तरलता प्रदर्शित करता है।

रक्त कोशिकाओं को हुए नुकसान की मरम्मत करता है और अपशिष्ट पदार्थों को एकत्र करके शरीर को साफ करता है।
धमनियों और शिराओं के मामले में, एक शुद्ध रक्त के परिवहन के लिए चैनल बनाती है जबकि दूसरी
अशुद्ध रक्त के लिए मार्ग बनाता है जो अपशिष्ट को इकट्ठा करता है।

सर्वज्ञ निर्माता ने हवा में दो तत्व बनाए: नाइट्रोजन और ऑक्सीजन। जब ऑक्सीजन
श्वसन के दौरान रक्त के संपर्क में आने पर यह रक्त को प्रदूषित करने वाले अशुद्ध कार्बन तत्व को खींच लेता है
एम्बर की तरह ही, खुद के लिए। कार्बन के साथ मिलकर, यह दोनों पदार्थों को कार्बन-आइस एसिड गैस में बदल देता है। ऑक्सीजन शरीर के तापमान को बनाए रखने और रक्त को शुद्ध करने में भी मदद करता है। सर्वज्ञ निर्माता ने ऑक्सीजन और कार्बन को एक पारस्परिक उत्साह, एक प्रकार का रासायनिक स्नेह दिया है, इसलिए
ईश्वरीय नियम के अनुसार, वे एक दूसरे के निकट आते हैं और फिर मिल जाते हैं। विज्ञान ने
इस संयोजन से, जो दहन का एक रूप है, निम्नलिखित प्रकार से ऊष्मा उत्पन्न होती है, इसकी व्याख्या इस प्रकार की गई है।

ऑक्सीजन और कार्बन परमाणुओं की गति अलग-अलग होती है, जो संयुक्त होने पर एक हो जाते हैं
गति, प्रत्येक परमाणु युग्म में अब एक परमाणु की गति होती है। इस प्रकार मूल दो में से एक
गति "खो जाती है।" यह "खोई हुई" गति सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता के एक नियम द्वारा ऊष्मा में परिवर्तित हो जाती है।
"गति से गर्मी पैदा होती है" यह एक स्थापित सिद्धांत है। यह रासायनिक संयोजन रक्त से कार्बन को हटाता है और शारीरिक तापमान को बनाए रखता है, साथ ही, शरीर को शुद्ध भी करता है।
रक्त। साँस लेते समय, ऑक्सीजन शरीर के जीवन जल को साफ करती है और जीवन के लिए उसकी अग्नि को प्रज्वलित करती है।
सांस छोड़ते समय ऑक्सीजन मुंह में शब्दों (दिव्य शक्ति के चमत्कार) को बनाने में सक्षम बनाती है।

महिमावान है वह जिसके कार्यों से बुद्धि चकित होती है।

क्या आपके पास सभी चीजों को नियंत्रित करने और निर्देशित करने का ज्ञान और शक्ति है?
मेरे समान मानव शरीर जो सर्वोच्च के समान लक्षण प्रकट करते हैं
शक्ति और सृजन? क्या आपके पास खजाने पर प्रभुत्व है
प्रकाश, वायु और जल के साथ-साथ सभी पौधों और जानवरों का भी
मेरे भोजन और जीविका का भंडार और भूमि? क्या आपके पास है
असीम ज्ञान और अनंत शक्ति जिसके द्वारा ऐसे अमूल्य,
मन, बुद्धि और आत्मा जैसी अमूर्त सत्ताएं इतनी सुरक्षित हैं
एक संकीर्ण, शारीरिक लिफाफे में रखा गया है, जैसे कि मैं, और अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करके
"पूजा" करने के लिए बनाया गया है? यदि आपके पास ऐसा है
शक्ति, ज्ञान और बुद्धि का प्रदर्शन करें - उसके बाद ही दावा करें
मेरा स्वामित्व और प्रबंधन करो।

लेकिन जब तुम चुप नहीं रह सकते, तो चुप रहो! मेरा निर्माता सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी
और सर्वश्रुत है - इसकी गवाही भगवान ने दी है।
पूर्णता जिसके साथ मैं संगठित हूँ और एकता के संकेत से
मेरा चेहरा। एक ऐसा अज्ञानी और अक्षम व्यक्ति जैसा आप कभी नहीं कर सकते
उनकी कला में किसी का भी हाथ नहीं है।

ढोंगी, इस बात से हैरान है कि मानव शरीर के सभी बिंदु उसकी बात को अस्वीकार करते हैं या अपनी बात कहने का उसका दावा, आगे बढ़ जाता है और एक प्रजाति के रूप में मानवता का सर्वेक्षण करता है, सोच: वे विविध और जटिल समाजों में रहते हैं। मैं देखता हूँ कि शैतान पाता है उनकी इच्छा और उनके सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करने के तरीके। इसलिए मैं उनके निर्माण, संविधान और संचालन में प्रवेश करने का एक तरीका खोजें अगर मैं उनके शरीर में नियंत्रण का कोई बिंदु पा सकता हूँ, तो मैं उस शरीर और उसकी कोशिकाओं को नियंत्रित करने में सक्षम हो जाऊँगा, जिन्होंने मुझे नकार दिया।

इस इरादे से, वह अंधे स्वभाव और भ्रामक दर्शन की परिचित भाषा में प्रजातियों को संबोधित करता है: "आप बहुत विविध और भिन्न प्रतीत होते हैं
बहुत बड़ी मुश्किलों के बावजूद। मैं तुम्हारा मालिक और स्वामी हूँ या कम से कम मेरे पास एक है आपके निर्माण और जीवन में हिस्सा लें।" इसके लिए, मानवता भाषा में प्रतिक्रिया करती है सत्य और वास्तविकता की, तथा ज्ञान और व्यवस्था की भाषा में:

क्या आपके पास अमीर बनाने की शक्ति, ज्ञान और बुद्धि है?
पृथ्वी के चेहरे को ढंकने वाली बनावट, उत्तम ज्ञान से बुनी गई
विविध कपड़े, हजारों खनिज और पौधे और पशु प्रजातियां?
क्या आप भी ऐसी ही बुद्धि से इस बनावट को नवीनीकृत कर सकते हैं और ऐसा लगातार करते
रह सकते हैं? क्या आपके पास सर्वव्यापक शक्ति और सर्व-बोध है?
विज्ञान जो पृथ्वी का प्रबंधन करता है, जिसका हम फल हैं, और ब्रह्मांड जिसका हम बीज हैं? क्या
आप हमें ब्रह्मांड से और मापी गई मात्रा में, हमारे भरण-पोषण के लिए आवश्यक प्रावधान भेज
सकते हैं? क्या आप मेरे जैसे सभी व्यक्तियों को, भूतकाल और भविष्य में उत्पन्न कर सकते हैं,

जिनके चेहरों पर परम ऐश्वर्य और शक्ति के चिन्ह विद्यमान हैं
मेरा? यदि ऐसा है, तो शायद आप मुझ पर प्रभुत्व का दावा कर सकते हैं।

लेकिन जब आप ऐसा नहीं कर सकते, तो चुप रहें! यह कहने की हिम्मत न करें कि आपके पास कोई है
मेरे प्रकार में विविधता पर टिप्पणी करने से ही मुझे हाथ मिला, इसके लिए

विविधता हमारी व्यवस्था की पूर्णता का हिस्सा है। विविधता और बहुलता नियति की पुस्तक से एक परिपूर्ण
क्रम के साथ बनाई गई प्रतियां हैं
[सत्ताओं की उत्पत्ति को पूर्ण क्रम में समाहित करते हुए] शक्ति द्वारा। हमारा
उपस्थिति की विविधता हमारे रूपों की एक तरह की पुनरुत्पादन है [भाग्य द्वारा निर्धारित] - पौधों और जानवरों
की पूर्ण विविधता और व्यवस्था के रूप में (जो हमारी निगरानी में हमसे कमतर हैं, और जिन्हें हम

अध्ययन) भी इसकी पुष्टि करता है।

क्या यह संभव है कि जो व्यक्ति विभिन्न प्रकार के कपड़े बुनता है,
इस दुनिया की बनावट पर और उसके माध्यम से बड़ी कुशलता से फैला हुआ है अन्य
किसी फल का निर्माता उसके निर्माता से भिन्न है, अर्थात किसी फल का निर्माता उसके निर्माता से भिन्न है
उस वृक्ष का जिससे वह उगता है, और यह कि बीज का निर्माता है
उस पौधे या पेड़ के निर्माता के अलावा कोई और नहीं जिससे वह बढ़ता है?
अंधे हो, क्योंकि तुम मेरे चेहरे और आत्मा में शक्ति के चमत्कार नहीं देख सकते।
मेरे संविधान में उनकी रचना के चमत्कार। यदि आपने देखा होता, तो आप
समझ गया होता कि मेरे निर्माता की नज़र से कोई चीज़ नहीं बच सकती या वह मनमाने ढंग से काम नहीं करता।
वह सितारों को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह बनाता है
वह एक परमाणु बनाता है। वह वसंत को उतनी ही सहजता से बनाता है जितनी सहजता से वह एक परमाणु बनाता है।
फूल। उसने विशाल ब्रह्मांड की अनुक्रमणिका मेरे संविधान में रखी है
पूर्ण पत्राचार के साथ। क्या कोई भी व्यक्ति जो आपकी तरह शारीरिक रूप से अक्षम, अक्षम, अंधा और बहरा
है, उसका इस तरह के काम में हाथ हो सकता है?
प्राणी की कलात्मकता? तो चुप हो जाओ, और चले जाओ!

फिर ढोंगी पृथ्वी पर फैली व्यापक बनावट की ओर मुड़ता है
एक अलंकृत लबादा की तरह चेहरा और कार्य-कारण के नाम पर उससे बात करता है
प्राकृतिक दर्शन की भाषा: "मैं तुम्हें संभाल सकता हूँ। मैं तुम्हारा मालिक हूँ, या कम से कम
तुममें हिस्सा है।" बनावट[175] सत्य के नाम पर और उत्तर देती है
ज्ञान की भाषा:

यदि आपके पास सभी बनावटों को बनाने और बुनने का कौशल और शक्ति है
जिससे पृथ्वी हर साल और हर शताब्दी में नए सिरे से बंद होती है, और
जो अतीत की रेखा पर लटकाए गए हैं, बिछाए गए हैं, खोले गए हैं, और फिर से बिछाए गए हैं
सभी समय में निर्बाध रूप से, और उस लाइन पर लटका दिया जाएगा
भविष्य का समय, पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमों और पैटर्न के अनुसार
सबसे अधिक सटीकता और नियति के ढांचे के अनुसार, प्रत्येक
सुरुचिपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण, और विशिष्ट रूप से सुशोभित; यदि आपके पास अमूर्त है
वे हाथ जो पृथ्वी के निर्माण से लेकर उसके विनाश तक पहुँच सकते हैं,
या यों कहें कि अनादि काल से लेकर अन्तहीन अनंत काल तक;
यदि आपके पास इस संसार के भीतर सभी व्यक्तियों को बनाने की शक्ति और विज्ञान है
बनावट, उन्हें सटीक क्रम और बुद्धिमत्ता में बहाल करना और नवीनीकृत करना; यदि
आप पृथ्वी का निर्माण कर सकते हैं और उस पर अधिकार कर सकते हैं जो कि एक मॉडल है

---

[175] वास्तव में, यह बनावट एनिमेटेड है, जो नियमित रूप से जीवन के संकेत देती रहती है।
कढ़ाई को विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन हेतु पूर्ण बुद्धिमता और क्रम के साथ निरंतर नवीनीकृत किया जाता है,
इसके बुनकर नामों की सदैव भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियाँ।

मेरे लिए और मुझे घूंघट की तरह ओढ़े हुए हैं - अगर तुम कर सको, तभी मुझ पर आधिपत्य जमाओ - अगर नहीं, तो चले जाओ! तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं है!

मेरी समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण विविधता में एकता के स्पष्ट संकेत और उसकी अद्वितीयता की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। केवल वही जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, जो एक साथ असंख्य कार्य कर सकता है, जो सभी प्राणियों और उनके कार्यों को, चाहे वे आंतरिक हों या बाह्य, एक ही पल में देख सकता है, जो समय, स्थान या आयाम से असीम होते हुए भी हर जगह मौजूद और सतर्क रहता है, और जिसके पास अनंत ज्ञान, विज्ञान और शक्ति है - केवल ऐसा ही व्यक्ति कभी भी मेरा स्वामी या मुझ पर प्रभुत्व रख सकता है।

ढोंगी धरती की ओर मुड़ता है, उसे धोखा देने की उम्मीद करता है,176 और कारणता के नाम पर और मात्र प्रकृतिवाद की भाषा में वही तर्क दोहराता है: "मैं देखता हूँ कि तुम ब्रह्मांड में बेकार घूमते हो। निश्चित रूप से तुम्हारा कोई स्वामी नहीं हो सकता, और इसलिए मैं तुम पर दावा करता हूँ।" यह सुनकर, धरती सत्य के नाम पर और वास्तविकता की भाषा में गरजती है:

मूर्ख मत बनो! मैं बिना स्वामी के कैसे घूम सकता हूँ? क्या तुमने कभी मेरे वस्त्र के निर्माण में या उसके किसी छोटे से बिंदु या कपड़े में कोई अव्यवस्था, बुद्धि या कौशल की कमी देखी है, जो तुम यह कहने का साहस करते हो कि मैं बेकार घूमता हूँ? क्या तुम मेरी कक्षा के स्वामी होने का दावा करते हो, जिसे पार करने में मनुष्य की गति से पच्चीस हजार वर्ष लगेंगे, लेकिन जिसे मैं अपने वार्षिक चक्कर में पूर्ण अनुशासन और सटीकता के साथ पूरा करता हूँ?177 क्या तुम मेरे दस साथी ग्रहों के स्वामी होने का दावा करते हो, जो मेरे जैसे ही अपनी-अपनी कक्षाओं में अपने नियत कार्य करते हैं? क्या तुम दावा करते हो कि तुम्हारे पास सूर्य को बनाने और नियंत्रित करने का असीमित विज्ञान और शक्ति है, जो हमारी कक्षाओं को एकत्रित और केंद्रित करता है, वे कक्षाएँ जिनसे हम दया के गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से बंधे हैं, और मुझे और अन्य ग्रहों को इसके चारों ओर चक्कर लगाने के लिए मजबूर करता है?

चूँकि आप इस तरह का दावा नहीं कर सकते, इसलिए मुझे छोड़ दीजिए, क्योंकि मुझे काम करना है। हमारा विस्मयकारी चक्कर, उद्देश्यपूर्ण समर्पण और शानदार अनुशासन यह दर्शाता है कि हमारा निर्माता एक ऐसा प्राणी है जिसके सामने सभी प्राणी समर्पित हैं, और पूरी तरह से समर्पित हैं - जैसे एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक अपने वरिष्ठ के आदेशों के प्रति समर्पित होता है। वह महामहिम का बुद्धिमान और पूर्ण शासक है,

---

176 संक्षेप में, परमाणु से शुरू करते हुए, प्रत्येक वस्तु ने ढोंगी को अगले स्तर पर भेजा: परमाणु से लेकर लाल रक्त कणिका, कोशिका, शरीर, मानवता, पृथ्वी का बाहरी वस्त्र, पृथ्वी का ग्लोब, सूर्य और तारे, क्रमशः। प्रत्येक ने कहा: "चले जाओ! यदि तुम मुझसे अगले स्तर को अपने अधीन कर सकते हो, तो करो, और फिर वापस आकर मुझ पर अधिकार करने की कोशिश करो। यदि तुम उस स्तर को अपने अधीन नहीं कर सकते, तो तुम मुझे भी अपने अधीन नहीं कर सकते!" इस प्रकार जिसका अधिकार सितारों को शामिल नहीं करता है, उसका एक भी परमाणु पर अधिकार करने का कोई स्वीकार्य दावा नहीं हो सकता।

177 यदि किसी वृत्त का आधा व्यास लगभग 180 मिलियन किलोमीटर है, तो वृत्त लगभग 25,000 वर्षों की दूरी तय करता है [पैदल तय करने के लिए, बशर्ते कोई व्यक्ति एक घंटे में पांच किलोमीटर (3 मील से कम) की दूरी तय करे और प्रतिदिन 6 घंटे पैदल चले।]

> जो सूर्य और ग्रहों को उनके उचित क्रम में उतनी ही आसानी से धारण करता है, जितनी कि वह स्वयं है।
> प्रत्येक वृक्ष को उसके उचित फल से सुशोभित करता है।

पृथ्वी पर शासन करने में स्थान पाने में असफल होने पर, ढोंगी बदल जाता है सूरज की ओर इस उम्मीद में कि वह वहाँ एक रास्ता खोल सकता है। चूँकि सूर्य इतना महान है कि वह इसका उपयोग पृथ्वी पर नियंत्रण पाने के लिए करना चाहता है। पृथ्वी। साझेदारों को जोड़ने के तरीके के नाम पर सूर्य को संबोधित करना सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ और शैतानी दर्शन की भाषा में, जैसा कि सूर्य-पूजा करने वाले करते हैं, ढोंगी कहता है: "आप एक सम्राट हैं। आप अपने खुद के मालिक हैं। आप जो चाहें करें।"

सूर्य सत्य और वास्तविकता के नाम पर और भाषा में उत्तर देता है दिव्य बुद्धि का:

> नहीं, बिलकुल नहीं! तुम ऐसा झूठ कैसे बोल सकते हो! मैं तो बस एक आज्ञाकारी अधिकारी हूँ, अपने मालिक के गेस्ट
> हाउस में एक मोमबत्ती से ज़्यादा कुछ नहीं।
> एक मक्खी, यहां तक कि उसके पंख का भी स्वामित्व और स्वामित्व नहीं हो सकता, क्योंकि
> इतनी छोटी सी चीज में इतनी अमूर्त क्षमताएं और इतनी बढ़िया, उत्कृष्ट क्षमताएं हैं
> कला के ऐसे कामों को अपनी आँख और कान की तरह देखता हूँ कि उनके जैसा मुझे किसी और में नहीं मिलता
> मेरी कार्यशालाएँ। मैं उनमें से सबसे छोटा भी नहीं बना सकता।

यद्यपि सूर्य द्वारा डांटा गया, फिर भी ढोंगी इस प्रकार तर्क करता है फिरौन, अभिमानी प्राणी जो खुद को देवता के रूप में बढ़ावा देते हैं: "मैं दावा करता हूं कार्य-कारण के नाम पर मैं तुम्हें अपना मानता हूँ, क्योंकि तुम अपने स्वामी नहीं हो, बल्कि केवल एक सेवक।" सूर्य सत्य के नाम पर और भाषा में उत्तर देता है अपने निर्माता के प्रति आज्ञाकारिता का: "मैं केवल उसी सत्ता से संबंधित हो सकता हूं जिसने मुझे और मेरे जैसे सभी दीप्तिमान सितारों को बनाया है, जिसने उन्हें अपने में स्थिर किया है पूर्ण बुद्धि के साथ स्टेशनों को गौरव में घुमाता है और व्यापक रूप से सुशोभित करता है स्वर्ग तक पहुँचेगा।”

फिर ढोंगी तारों के बीच आता है और सोचता है: "शायद मैं कर सकता हूँ यहाँ कुछ ग्राहक ढूँढ़ो।" कार्य-कारण और उसके नाम पर उनसे बात करना साझेदारों और भ्रष्ट दर्शन की भाषा में, जैसा कि सितारा-पूजक करते हैं, वह कहता है: “तुम अवश्य ही अनेक अलग-अलग शासकों के नियंत्रण में होगे, क्योंकि आप एक दूसरे से इतनी विशाल दूरी पर स्थित हैं।'' इस पर, एक तारा, अन्य सभी की ओर से बोलते हुए, उसे उत्तर देता है:

> आप कितने मूर्ख और नासमझ होंगे कि न देख पा रहे हैं और न समझ पा रहे हैं
> सृष्टिकर्ता की एकता के संकेत और उसकी अद्वितीयता की छाप
> हमारे स्वभाव में। क्या आप नहीं जानते कि हमारा संगठन कितना निरपेक्ष है,
> हम जिन कानूनों का पालन करते हैं, वे कितने सुरक्षित हैं? आपको लगता है कि हमारे पास कोई व्यवस्था नहीं है। वास्तव में,
> हम एकता की एक अद्वितीय इकाई के हस्तशिल्प और सेवक हैं
> वह आकाश (हमारा समुद्र), ब्रह्माण्ड (हमारा वृक्ष), और विशालता को धारण करता है
> अंतरिक्ष (हमारा विस्तृत, गतिशील क्षेत्र) को अपने नियंत्रण में रखें। जैसे

मानव उत्सवों को दर्शाने वाले अनेक रंग-बिरंगे दीपों के प्रकाश में, हम उसके सम्पूर्ण प्रभुत्व के प्रकाशमान साक्षी हैं, उसके राज्य और प्रभुत्व के असीम अंतरिक्ष में चमकते हुए शानदार प्रमाण हैं।

हममें से प्रत्येक समूह उसकी महिमा को, निकट और दूर, इस लोक में और परलोक में, तथा परे के अनेक लोकों में, उसकी सृष्टि की अनन्तता के भीतर प्रदर्शित करने वाले चमकते हुए सेवक हैं। हममें से प्रत्येक एकता के अद्वितीय एक की शक्ति का चमत्कार है, सृष्टि के वृक्ष पर एक पूर्णतया व्यवस्थित फल है, ईश्वर की एकता का एक उज्ज्वल प्रमाण है, उसके दूतों के लिए एक घर, पर्वत और मस्जिद है, उच्चतर लोकों का एक सूर्य या दीपक है, ईश्वरीय प्रभुता का साक्षी है, एक आभूषण है, एक फूल है, स्वर्गिक क्षेत्र का एक महल है, स्वर्गीय महासागर में एक चमकती हुई मछली है, और प्रत्येक स्वर्ग के सामने एक सुंदर आंख है।178 हमारे विशाल समुदाय में शांति के बीच गहन मौन, ज्ञान में गति, राजसी भव्यता के साथ चमकता हुआ आभूषण, पूर्ण सामंजस्य में सबसे विविध सौंदर्य और पूर्ण संतुलन में सर्वोच्च कला विद्यमान है।

इसलिए जब हम असंख्य भाषाओं में अपने सर्व-महान निर्माता की एकता और उनके शाश्वत-प्रार्थना करने वाले होने के साथ-साथ उनकी पूर्णता, अनुग्रह और सुंदरता के गुणों की घोषणा करते हैं, तो आप हम पर अव्यवस्था और कोई कर्तव्य न होने और कोई स्वामी न होने का आरोप लगाते हैं। चूँकि आप हम पर आरोप लगाते हैं, जो असीम रूप से शुद्ध और आज्ञाकारी सेवक हैं, इसलिए आप अपनी बेतुकी धृष्टता के लिए मुंह पर तमाचा मारने के हकदार हैं!

एक तारा ढोंगी के चेहरे पर शैतान को पत्थर मारने जैसा इशारा करता है, और उसे सितारों के क्षेत्र से नरक की तह में फेंक देता है। यह प्राकृतिक दर्शन को भी भ्रम की घाटियों में और संयोग को अस्तित्वहीनता के कुएं में फेंक देता है। यह उन सभी को जो एक ईश्वर के प्रभुत्व में अपने लिए कुछ हिस्सा होने का दावा करते हैं, असंभावना और असंभवता के घोर अंधकार में और सच्चे धर्म के खिलाफ हर तर्क को सबसे निचले स्तर पर फेंक देता है। फिर तारे एक साथ पवित्र आदेश का पाठ करते हैं: यदि उनमें (आकाश और पृथ्वी में) ईश्वर के अलावा कोई अन्य देवता होते, तो दोनों निश्चित रूप से-

---

178 यानी हम सर्वशक्तिमान की रचना के चमत्कारों को देखने वाले संकेतक हैं और दूसरों को भी उन्हें देखने के लिए प्रेरित करते हैं। स्वर्ग असंख्य आँखों से पृथ्वी की दिव्य कलात्मकता के चमत्कारों को देखता है। जैसे देवदूत आकाश में देखते हैं, वैसे ही तारे पृथ्वी को देखते हैं, जो चमत्कारों का एक प्रदर्शन हॉल है, और उनका ऐसा करना सचेत प्राणियों को इसे ध्यान से देखने के लिए प्रेरित करता है।

179 अपनी चूक के बाद, प्रकृति ने पश्चाताप किया। यह समझते हुए कि उसका उचित उद्देश्य और कर्तव्य सक्रिय होना और प्रभाव पैदा करना नहीं है, बल्कि ग्रहण करना और उस पर कार्य किया जाना है, उसने महसूस किया कि यह ईश्वरीय नियति की एक तरह की नोटबुक है, जो परिवर्तन और परिवर्तन के लिए अतिसंवेदनशील है; भगवान की शक्ति का एक प्रकार का कार्यक्रम, जो सर्वशक्तिमान महामहिम द्वारा स्थापित सृष्टि के नियमों के समूह के समान है, उनके नियमों का एक संग्रह है। इसने पूर्ण समर्पण के साथ अपनी पूजा का कर्तव्य ग्रहण किया, अपनी पूर्ण शक्तिहीनता को स्वीकार किया और इस प्रकार भगवान की रचना और भगवान की कृति की उपाधि प्राप्त की।

वे सब बरबाद हो गए हैं (21:22), और पुष्टि करते हैं: “परमेश्वर के साथ किसी साझेदार के लिए कोई जगह नहीं है, मक्खी के पंख से लेकर आकाश के दीपक तक।”

तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
हमें सिखाया है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें,
तेरे प्राणियों की बहुलता के बीच तेरी एकता का दीपक,
और आपके ब्रह्मांड के प्रदर्शन कक्ष में आपकी एकता का संदेशवाहक,
और उसके परिवार और साथियों पर भी।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परमेश्वर की दया के निशानों को देखो, वह कैसे पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है
उसकी मृत्यु के बाद! (30:50)

निम्नलिखित पंक्ति इस श्लोक के शाश्वत उद्यान के एक फूल की ओर संकेत करती है:

फूलों से लदा प्रत्येक वृक्ष एक लयबद्ध और
सुव्यवस्थित स्तुति है, जो सृजक की उच्च
और स्पष्ट प्रशंसा गाता है।
या यह ऐसी चीज़ है जिसे देखने के लिए कई आँखें खुली होती हैं, और जो निर्माता की कला के अद्भुत प्रदर्शन
को ध्यानपूर्वक देखने के लिए प्रेरित करती है।

या फिर उसने अपने सदस्यों को उनके उत्सव के लिए हरे रंग के कपड़े पहनाए हैं
ताकि उसका स्वामी उस पर अपने शानदार
कार्यों और उपहारों को देख सके, जबकि वह खुद
प्रदर्शन कक्ष में - पृथ्वी पर - प्रदर्शन कर रहा है।
मानवता की आँखों के सामने उसकी दया की शोभा, जिससे इसकी रचना
में बुद्धिमत्ता की घोषणा होती है, कि इसके फलों के प्रभु की उदारता
द्वारा इसमें महत्वपूर्ण खजाने संग्रहीत हैं: वह सर्व-महिमावान
है, उसकी कृपा कितनी उदार है, उसके लिए तर्क कितने स्पष्ट
हैं, उसके प्रमाण कितने स्पष्ट हैं!

कल्पना में स्वर्गदूतों को (शाखाओं से) शरीर पहने हुए देखा जाता है
ये वृक्ष हजारों बांसुरियों के समान हैं और इन बांसुरियों से ध्वनि निकलती है
सर्व-जीवित की स्तुति के गीत। प्रत्येक पत्ते एक जीभ हैं जो कहते हैं: "हे
सर्व-जीवित!” और सब मिलकर नारा लगाते हुए: “उसके अलावा कोई देवता नहीं है।”
वे निरंतर कहते हैं: “हे सत्य!” घोषणा करते हैं: “हे सर्वजीव!” और
मिलकर घोषणा करें: “परमेश्वर।”

हम आकाश से बरकतवाला जल बरसाते हैं। (50:9)

एक संक्षिप्त परिशिष्ट

निम्नलिखित श्लोक सुनिए:

> क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसा बनाया है?
> और उसको शोभायमान किया (50:6)

> आसमान के चेहरे पर नज़र डालो, जहाँ तुम्हें शांतिपूर्ण शांति में एक मौन दिखाई देता है;
> बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण गति; राजसीपन में चमक; श्रृंगार में मुस्कान; सब
> सृजन की सुव्यवस्था और कला की समरूपता में संयुक्त। इसकी मोमबत्ती
> उसकी चमक, उसके दीपक की चकाचौंध और उसके सितारों की चमक अनंत रूप से प्रकट होती है
> संप्रभुता उन लोगों के लिए है जिनके पास अंतर्दृष्टि और ठोस तर्क है।

निम्नलिखित आयत (50:6) की व्याख्या में उपरोक्त पंक्तियों को स्पष्ट किया गया है:

यह पद्य आकाश के सुशोभित और सुंदर चेहरे की ओर ध्यान आकर्षित करता है। जो लोग इसे ध्यान से देखते हैं, वे वहां देखी गई असाधारण शांति और स्पष्ट विश्राम में मौन को नोटिस करेंगे, और इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि आकाश एक परम शक्तिशाली के आदेश से उस रूप को ग्रहण किया है और अधीनता। यदि आकाशीय पिंड अपने विशाल आकार के साथ बेतरतीब ढंग से घूमते हैं आकार और गति की वजह से होने वाला शोर सभी को बहरा कर देगा। ऐसा कोलाहल और भ्रम भी पैदा होगा कि ब्रह्मांड ढह जाएगा। यदि बीस भैंसें एक ही क्षेत्र में एक साथ चलेंगी, तो आप अंदाजा लगा सकते हैं वे कितना बड़ा हंगामा और भ्रम पैदा करेंगे। हालाँकि, के अनुसार खगोल विज्ञान के अनुसार, कुछ गतिशील तारे पृथ्वी से हज़ार गुना बड़े हैं और तोप के गोले से सत्तर गुना ज़्यादा तेज़ गति से चलते हैं। आकाशीय पिंडों की शांति और विश्राम से, आप सर्वशक्तिमान ...

सितारों की उसके प्रति समर्पण और आज्ञाकारिता की डिग्री।

एक बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण गति: यह श्लोक हमें उद्देश्यपूर्ण देखने का आदेश देता है आकाश में गति। वह अत्यंत विचित्र और शक्तिशाली गति घटित होती है एक असाधारण सूक्ष्म और व्यापक पर पूर्ण निर्भरता में उद्देश्य। एक कारखाने की विशालता और व्यवस्था जिसके पहिये और मशीनरी बुद्धिमत्ता से, पूर्ण क्रम में और बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए घूमते और काम करते हैं, दिखाते हैं कि इसका इंजीनियर कितना विद्वान और कुशल है। उसी तरह, सूर्य को केन्द्र में रखकर तथा शक्तिशाली ग्रहों को उसके चारों ओर एक परिपूर्ण, सूक्ष्म क्रम में घूमते हुए देखकर, सौरमण्डल अनेक बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए पृथ्वी की सीमा को दर्शाता है। सर्वशक्तिमान की शक्ति और बुद्धि।

आकाश में ऐसी महिमा की चमक और ऐसी श्रृंगार की मुस्कान प्रकट होती है कि यह दर्शाता है कि सर्वशक्तिमान निर्माता की संप्रभुता कितनी भव्य है और कला कितनी सुंदर है।

उसी तरह जैसे विशेष अवसरों पर असंख्य रोशनी का उपयोग किया जाता है
राजा की महिमा और उसके देश की उन्नत सभ्यता, विशालता को दिखाएं
आकाश, अपने राजसी चमकते तारों के साथ, चौकस आँखों को सर्वशक्तिमान निर्माता की संप्रभुता की पूर्णता और उसकी कला की सुंदरता दिखाता है।

सृजन की सुव्यवस्थितता और कला की समरूपता में सभी सम्मिलित :
श्लोक कहता है: आकाश में वस्तुओं के क्रम और सूक्ष्म संतुलन को देखो और
जानें कि उनका निर्माता कितना शक्तिशाली और बुद्धिमान है। जब आप किसी को कई अलग-अलग वस्तुओं को एक के बाद एक घुमाते या कई दिशाओं में निर्देशित करते देखते हैं
जानवरों को एक आदर्श क्रम में और कई बुद्धिमानों के लिए एक विशेष, नाजुक संतुलन के साथ
आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितना बुद्धिमान, शक्तिशाली और कुशल है।
इसी प्रकार, अपने असंख्य सितारों के साथ, जो आकार और गति में विस्मयकारी हैं,
विशाल आकाश ने अपनी प्रचंड विशालता में अपना कार्य किया है
एक स्थापित माप के अनुसार और एक के साथ अरबों वर्षों के लिए कर्तव्यों
निश्चित, संवेदनशील संतुलन। उन्होंने कभी अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया, और
कभी भी ज़रा सी भी गड़बड़ी नहीं की है। यह चौकस आँखों से पता चलता है
यह कितना संवेदनशील और सटीक है कि उनके सर्व-महान निर्माता अपने प्रभुत्व का प्रयोग किस मापदंड के अनुसार करते हैं। सूरतु'न-नबा' में इसी तरह की आयतों की तरह ,
अन्य बातों के अलावा, यह आयत संकेत करती है कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने
सूर्य, चंद्रमा और अन्य खगोलीय पिंड।

इसकी मोमबत्ती की चमक, इसके दीपक की चकाचौंध और इसके सितारों की चमक अनंत को प्रकट करती है
अंतर्दृष्टि और ठोस तर्क वाले लोगों के लिए संप्रभुता: सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने
दुनिया की सजी हुई छत एक दीपक है - सूरज - जो गर्मी और रोशनी देता है। वह इसका उपयोग करता है
इसे प्रकाश के एक "बर्तन" के रूप में अनन्त रूप से मांगे गए "पत्रों" को लिखने के लिए
ऋतुओं के पन्नों पर दिन और रात।

एक ऊंचे टॉवर में घड़ी के फॉस्फोरसेंट घंटे-सुइयों की तरह, वह है
स्वर्ग के गुम्बद में स्थित चंद्रमा को समय की सबसे बड़ी घड़ी की घंटे की सुई बनाया।
वह उसे अपने भवनों में पूर्ण माप के अनुसार चलाता है और
बारीक गणना, जैसे कि वह प्रत्येक रात के लिए एक अलग अर्धचंद्र छोड़ता है और फिर
उन सभी को अपने में समेट लेता है (अदृश्य बना देता है)। इसके अलावा, उसने सोने का पानी चढ़ा दिया है
आकाश का सुंदर चेहरा, उस गुंबद में चमकते और मुस्कुराते सितारे। ये सभी बातें
उनके आधिपत्य की असीम संप्रभुता और उनकी दिव्यता की भव्यता और
विचारशील लोगों को उनके अस्तित्व और एकता में विश्वास करने के लिए आमंत्रित करता है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के रंगीन पृष्ठ को देखिए और देखिए कि शक्ति की स्वर्णिम कलम
ने इसे कैसे अंकित किया है!
जो लोग अपने हृदय की आँखों से देख सकते हैं, उनके लिए
कोई भी बिंदु अन्धकारमय नहीं रह गया है।
ऐसा लगता है मानो ईश्वर ने अपनी निशानियाँ प्रकाश से लिखी हों।
देखिये, यह ब्रह्माण्ड ज्ञान का कितना अद्भुत चमत्कार है!

देखिये, ब्रह्माण्ड का अन्तरिक्ष कितना अद्भुत है!
सितारों की बातें सुनें और उनके सुंदर उपदेशों पर ध्यान दें।
देखिये, बुद्धि ने इन प्रकाशमान पत्रों में क्या लिखा है।
वे सभी सत्य की भाषा में यह प्रवचन दे रहे हैं: "हम में से प्रत्येक राजसी संप्रभुता के लिए एक उज्ज्वल प्रमाण है
एक सर्वशक्तिमान महिमावान की।
हम सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के, तथा उसकी एकता और शक्ति के भी प्रकाश फैलाने वाले साक्षी हैं।

हम उसके सूक्ष्म चमत्कार हैं जो आकाश को स्वर्णिम रूप प्रदान करते हैं, जिस पर स्वर्गदूत भ्रमण करते हैं।
हम स्वर्ग की असंख्य विवेकशील आंखें हैं जो स्वर्ग की ओर निर्देशित हैं, और पृथ्वी की देखरेख करती हैं।
हम स्वर्गीय शाखा से जुड़े उत्तम फल हैं
सृष्टि के वृक्ष की; और आकाशगंगा की टहनियों की,
बुद्धि के हाथ से जुड़ा हुआ
वह परम दयालु महामहिम है।
हम आसमान वालों के लिए चलती-फिरती मस्जिदें हैं,
घूमते हुए घर और ऊंचे घर,
प्रकाश फैलाने वाले लैंप, शक्तिशाली जहाज़ और विमान।
हम सर्वशक्तिशाली सम्पूर्णता की शक्ति के चमत्कार हैं,
वह महान् बुद्धिमान् है।
हममें से प्रत्येक उसकी सृजनात्मक कला का एक आश्चर्य, उसकी बुद्धि की एक दुर्लभता, उसकी सृष्टि का एक चमत्कार, प्रकाश का एक संसार है।
जो लोग वास्तव में मानव हैं, उनके लिए हम प्रस्तुत करते हैं
अनगिनत भाषाओं में अनगिनत प्रमाण;
भौतिकवादियों की आँखें अंधी रहें,
वे कभी हमारा मुख नहीं देखते, और न उनके कान हमारी बातें सुनते हैं;
हम वे संकेत हैं जो सच बोलते हैं।
हम पर भी वही मुहर और मोहर है। हम अपने प्रभु की आज्ञा मानते हैं और उनकी महिमा करते हैं,
और उपासना में उसका उल्लेख करो।
हम आकाशगंगा के सबसे विस्तृत घेरे में आनंदित प्रेमी हैं, वह घेरा जो हमारे प्रभु के नामों का जाप कर रहा है।

दूसरा स्टेशन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कह दो, "वह अल्लाह है, वह अद्वितीय, पूर्ण एकत्व वाला है। अल्लाह
वह नित्य प्रार्थनीय है (उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है)।

इस स्टेशन में तीन लक्ष्य हैं।

पहला उद्देश्य: एक तारे द्वारा गिराए जाने के बाद, ईश्वर को भागीदार मानने वालों के प्रतिनिधि ने सृष्टि का ऐसा हिस्सा खोजने का प्रयास छोड़ दिया जो उसे ईश्वर का भागीदार मान सके। हालाँकि, ईश्वर की एकता के बारे में संदेह पैदा करने के लिए, उसने तीन प्रश्न पूछकर अपने अनुयायियों के मन में संदेह पैदा करने की कोशिश की।

प्रश्न: अधार्मिक की भाषा में, वह पूछता है: "मुझे अपना कारण साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं मिला है। लेकिन आप अनंत शक्ति वाले एक के अस्तित्व को कैसे साबित कर सकते हैं? आप ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन में उसकी शक्ति के अलावा बाकी सब को कैसे अस्वीकार कर सकते हैं?

उत्तर: जैसा कि द ट्वेंटी-सेकेंड वर्ड में दृढ़तापूर्वक तर्क दिया गया है, परमाणुओं से लेकर सितारों तक, प्रत्येक प्राणी अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता, पूर्ण रूप से शक्तिशाली के अनिवार्य अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण है। सृष्टि की शृंखला की प्रत्येक कड़ी उसकी एकता को सिद्ध करती है। कुरान के कई तर्कों में से, विशेष रूप से जैसे: यदि आप उनसे पूछें कि आकाश और पृथ्वी को किसने बनाया है, तो वे निश्चित रूप से कहेंगे: ईश्वर (39:38); और उसकी निशानियों में आकाश और पृथ्वी की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों की विविधता है (30:22), आकाश और पृथ्वी की रचना को ईश्वर के अस्तित्व और एकता के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जागरूक लोग जो आकाश और पृथ्वी की रचना पर विचार करते हैं, उन्हें राजसी निर्माता के अस्तित्व की पुष्टि करनी चाहिए।

जब उनसे पूछा जाएगा कि उनका सृष्टिकर्ता कौन है, तो वे जवाब देंगे: “ईश्वर।”

पहले स्टेशन में, हमने एक परमाणु से शुरुआत की और आकाश और सितारों तक हर वस्तु पर ईश्वरीय एकता की छाप दिखाई। कुरान ईश्वर के साथ किसी भी तरह की साझेदारी को अस्वीकार करता है। इसका मतलब है कि वह परम शक्तिशाली, जिसने आकाश और पृथ्वी को सही क्रम में बनाया है, उसे अपनी शक्ति की मुट्ठी में अद्भुत सौर मंडल को पकड़ना चाहिए।

चूँकि वह सर्वशक्तिशाली परमेश्वर सूर्य और उसके ग्रहों को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, उसका प्रबंधन करता है और उसकी गति को नियंत्रित करता है, इसलिए पृथ्वी भी उसकी शक्ति की मुट्ठी में और उसके प्रबंधन में होनी चाहिए। इसे देखते हुए, इसके सभी प्राणी, जो इसके फल हैं और जिन्हें इसके अस्तित्व का लक्ष्य माना जा सकता है, उसके प्रभुत्व की मुट्ठी में हैं (उठाना, प्रशासन करना और बनाए रखना)। चूँकि सभी प्राणी, जो पृथ्वी पर अकेले या समूहों में फैले हुए हैं और कुछ समय के लिए इसे सजाने के बाद प्रतिस्थापित होते हैं, निरंतर चक्र में पृथ्वी को भरते और खाली करते हैं, उसकी शक्ति और ज्ञान की मुट्ठी में हैं और उसके न्याय और बुद्धि के माप के अनुसार प्रबंधित और व्यवस्थित होते हैं, निश्चित रूप से, प्रत्येक प्रजाति का प्रत्येक सदस्य, जिनमें से प्रत्येक ब्रह्मांड का एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया और पूरी तरह से बना हुआ लघु रूप है, अपनी प्रजाति का एक पैटर्न या नमूना है, और ब्रह्मांड की पुस्तक की एक छोटी सी सूची है, उसके प्रभुत्व, आविष्कार, उत्थान और

प्रबंधन।

यह देखते हुए, प्रत्येक जीवित प्राणी की कोशिकाएं, कणिकाएं, अंग और तंत्रिकाएं
उसके आदेश के अधीन, उसके आदेश पर, तथा उसके नियमों के अनुसार चलें।
चूँकि यह सच है, सभी कण या परमाणु, सभी प्राणियों और उनके भागों का निर्माण करने वाले आवश्यक निर्माण खंड हैं और साथ ही उनके विकास के साधन भी हैं।
डिजाइन और गठन, उसकी शक्ति की समझ और उसके ज्ञान के क्षेत्र में हैं।
वे उसकी आज्ञा, अनुमति और शक्ति से सर्वाधिक नियमित रूप से चलते हैं और उत्तम कर्तव्यों का पालन करते हैं।

चूँकि प्रत्येक परमाणु उसके नियम, अनुमति और कार्य से चलता और कार्य करता है
यदि हम आज्ञा दें, तो निश्चय ही यह उसका ज्ञान और बुद्धि है जो प्रत्येक चेहरे को विशिष्ट बनाकर उसे अलग करती है, उनकी ध्वनियाँ और भाषाएँ भिन्न होती हैं।
इस श्लोक पर विचार करें कि, केवल प्रथम और सर्वाधिक सार्वभौमिक का उल्लेख करते हुए
कड़ी और अंतिम तथा सबसे व्यक्तिगत कड़ी, सृष्टि की इस शृंखला और सृष्टि में उसके संकेतों की श्रृंखला की ओर संकेत करती है:
उसकी निशानियों में सृष्टि है
आकाश और पृथ्वी की विविधता, और तुम्हारी भाषाओं और रंगों की विविधता।
निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं (30:22)

अब हम कहते हैं: "ऐ अल्लाह के साझी ठहराने वालों के प्रतिनिधि!
ये प्रमाण सृष्टि की जंजीरों जितने ही मजबूत हैं, जो इस ओर इशारा करते हैं कि
पूर्णतया शक्तिशाली बनो और अपनी एकता सिद्ध करो।"

चूँकि आकाश और पृथ्वी की रचना एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर को दर्शाती है
निर्माता और उसकी असीम और असीम रूप से परिपूर्ण शक्ति, निश्चित रूप से, वह है
साझेदारों से बिल्कुल स्वतंत्र। जबकि उसे उनकी कोई ज़रूरत नहीं है, फिर भी क्यों
क्या तुम उसके साथ साझीदार ठहराने के अंधकारपूर्ण मार्ग पर चलते हो? क्योंकि उसका कोई साझीदार नहीं है
उनकी दिव्यता में भागीदार, उनके प्रभुत्व और रचनात्मकता में कोई भी साझेदारी
असंभव। ब्रह्मांड और पृथ्वी के निर्माता की शक्ति असीम और असीम रूप से परिपूर्ण है, और उसके सामने सब कुछ समान है। अगर कोई होता
साथी, इसके लिए आवश्यक होगा कि एक सीमित शक्ति एक असीम और असीम रूप से परिपूर्ण शक्ति को पराजित करे, या किसी तरह उसे सीमित करे और अक्षमता से संक्रमित करे।
ऐसे दावे पूरी तरह से अस्वीकार्य हैं।

साझेदारों की कोई ज़रूरत नहीं है, और उनका अस्तित्व अकल्पनीय है। इसलिए, साझेदारी का दावा करना ज़बरदस्ती और मनमाने फ़ैसलों से ज़्यादा कुछ नहीं है, जिन्हें तर्क या तर्क से पुष्ट नहीं किया जा सकता। यह धर्मशास्त्र और कार्यप्रणाली का एक सिद्धांत है कि कोई भी संभावना या संभावना नहीं है

साक्ष्य से उत्पन्न होने वाली घटना पर विचार नहीं किया जा सकता है, और यह चोट नहीं पहुंचाती है
ज्ञान पर आधारित दृढ़ विश्वास या निश्चितता। उदाहरण के लिए, यह सैद्धांतिक रूप से बोधगम्य है कि एड्रिडिर झील तेल या अंगूर के रस या किसी अन्य में बदल सकती है।
भारी सिरप। लेकिन चूंकि यह किसी परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर उठाई गई एक मात्र संभावना है, इसलिए यह हमारी इस निश्चितता को नुकसान नहीं पहुंचाता कि झील में पानी है।

इसी तरह, हमने ब्रह्मांड के प्रत्येक भाग से पूछा है: परमाणुओं से लेकर तारों तक प्रथम अवस्था में, तथा आकाश और पृथ्वी की रचना से लेकर दूसरे अध्याय में विभिन्न भाषाओं की विविधता और प्रत्येक चेहरे की विशिष्ट पहचान स्टेशन। प्रत्येक भाग ईश्वर की एकता की गवाही देता है और उसकी छाप दिखाता है एकता। इसलिए कोई परिस्थितिजन्य संकेत नहीं है जिस पर कोई साझेदारी हो ईश्वर के साथ मिल सकता है। यह देखते हुए कि यह दावा जबरदस्ती, अर्थहीन और ऐसे सभी दावे निराधार हैं, तथा ये स्पष्टतः बकवास और शुद्ध अज्ञानता हैं।

प्रश्न: ईश्वरीय एकता को अस्वीकार करने वाले लोग एक और आपत्ति उठाते हैं: सब कुछ किसी कारण पर निर्भर करता है और कारण चक्र के अनुसार घटित होता है और प्रभाव। चूँकि कार्य-कारण पूरे ब्रह्मांड में स्पष्ट है, इसलिए कारणों को अवश्य ही होना चाहिए चीजों के निर्माण और संचालन में उनकी भूमिका होती है। अगर उनकी कोई भूमिका है, तो वे भागीदार हो सकते हैं.

उत्तर: ईश्वरीय इच्छा और बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, तथा ईश्वरीय इच्छा के अनुसार नाम स्वयं प्रकट होते हैं, परिणाम कारणों पर निर्भर होते हैं।
हालाँकि, जैसा कि रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट रूप से तर्क दिया गया है , कारणों का कोई रचनात्मक प्रभाव नहीं होता है। यहाँ हम निम्नलिखित जोड़ते हैं: चेतन प्राणी किसी भी

चीज़ को लाने में सबसे प्रभावी कारण हैं
प्रभाव। मानवता, जिसके पास स्वतंत्र और सबसे व्यापक इच्छाशक्ति है और एक विशाल क्षेत्र जिसमें इसका प्रयोग किया जा सके, वह है सर्वोच्च चेतन सत्ता।
बोलना, सोचना और खाना हमारी चेतना से उत्पन्न होने वाली सबसे प्रत्यक्ष क्रियाएं हैं। स्वतंत्र इच्छा। इनमें घटनाओं की कई सुव्यवस्थित श्रृंखलाएँ शामिल हैं, लेकिन केवल एक तो सीधे हमारी स्वतंत्र इच्छा से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, सभी में से भोजन के निर्माण से लेकर कोशिकाओं में पोषण बनने तक खाने से जुड़ी सभी प्रक्रियाओं में, केवल उन्हें चबाना ही स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर करता है।
बोलते हुए, स्वतंत्र इच्छा शरीर के लिए आवश्यक हवा को अंदर लेने और बाहर निकालने तक सीमित है ध्वनि उत्पन्न करने के लिए स्वर अंग। शब्द मुँह में बीज की तरह है,
उच्चारण करने पर यह वृक्ष जैसा हो जाता है, लाखों फल उत्पन्न करता है जो इसके समान होते हैं वह एक शब्द, और लाखों कानों में प्रवेश करता है। हम केवल इस गुणन की कल्पना कर सकते हैं, इसके बाद स्वतंत्र इच्छा का इससे कोई लेना-देना नहीं है।

यदि मानवता, सबसे सम्मानित कारण और एजेंट, उपयोग करने में सबसे स्वतंत्र है
जब प्रकृति (जैसे, निर्जीव वस्तुएँ, तत्व, पौधे, जानवर) की सृष्टि में कोई वास्तविक प्रभाव या भूमिका नहीं होती, तो प्रकृति (जैसे, निर्जीव वस्तुएँ, तत्व, पौधे, जानवर) का सृष्टि में कोई वास्तविक प्रभाव या भूमिका कैसे हो सकती है?
प्राकृतिक नियम, जिनमें कोई चेतना, इच्छा या ज्ञान नहीं है और केवल नाममात्र अस्तित्व, ब्रह्मांड जैसी चमत्कारी प्रणाली की उत्पत्ति करता है,
जिसके निर्माण और संचालन के लिए अनंत ज्ञान, इच्छाशक्ति और
वे एक चमत्कारी जीवित, सचेत, बोलने वाला, तर्क करने वाला, सोचने वाला और सीखने वाला जीव पुरुष या महिला की तरह कैसे बना सकते हैं?

कारणों के साथ-साथ प्रकृति भगवान के प्राणियों के लिए एक लिफाफा मात्र है, दयालु भगवान के उपहारों की एक थाली। उपहार रखने वाली थाली,
जिस कपड़े में वह लपेटा जाता है, उसे लाने वाला भी राजा की प्रभुता में भागीदार नहीं हो सकता। जो यह नहीं समझता, वह अंधा है
भ्रम से। उसी तरह, स्पष्ट कारणों और साधनों का कोई हिस्सा नहीं है
ईश्वरीय प्रभुत्व; उनका एकमात्र कर्तव्य पूजा करना है।

दूसरा उद्देश्य: किसी भी साझेदार के अस्तित्व को साबित करने की निराशा में
ईश्वर, यह प्राणी संदेह के माध्यम से दिव्य एकता में विश्वास को नष्ट करने का प्रयास करता है, और
दूसरा प्रश्न पूछता है: प्रश्न: आप

तर्क देते हैं कि ब्रह्मांड का निर्माता पूर्णतः एक है और
वह जो सदैव प्रार्थना करता है, जिसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है, जबकि बाकी सब कुछ उसके पास है
उसकी परम आवश्यकता है। वह अविवाहित है फिर भी उसके पास पूर्ण और स्वतंत्र नियंत्रण है
सब कुछ। वह एक साथ सभी चीजों पर अपना पूर्ण अधिकार रखता है और एक ही समय में एक भी काम किए बिना असंख्य काम कर सकता है
कोई चीज़ उसे एक साथ दूसरा काम करने से रोक रही है।
हम ऐसे हैरान कर देने वाले दावे पर विश्वास करते हैं? एक प्राणी असंख्य कार्य कैसे कर सकता है?
क्या आप अनगिनत स्थानों पर एक ही समय पर और बिना किसी कठिनाई के चीजें एकत्रित कर सकते हैं?

उत्तर: हमारे उत्तर के लिए आवश्यक है कि हम अत्यंत गहन और
ईश्वर के अस्तित्व का सूक्ष्म, साथ ही अत्यंत उन्नत और व्यापक रहस्य
एक और शाश्वत रूप से प्रयत्नशील। मन उस रहस्य को केवल तभी समझ सकता है
तुलना। यद्यपि उनके सार और गुणों में कोई समानता या बराबरी नहीं है और
तुलनीय नहीं हैं, उनके कार्यों पर तुलना के माध्यम से विचार किया जा सकता है।

पहली तुलना: जैसा कि सोलहवें शब्द में दृढ़तापूर्वक तर्क दिया गया है, एक एकल
वस्तु विभिन्न दर्पणों के माध्यम से सार्वभौमिकता प्राप्त कर सकती है।
संक्षेप में, यह एक ही समय में कई पहलुओं को शामिल करके सार्वभौमिक हो सकता है।
जिस प्रकार एक भौतिक वस्तु वस्तुओं में प्रतिबिंब के माध्यम से सार्वभौमिकता प्राप्त करती है
कांच और पानी की तरह, जो भौतिक चीजों को प्रतिबिंबित करते हैं, अधिक परिष्कृत और पारदर्शी पदार्थ
(जैसे, हवा, ईथर, प्रतिनिधित्व की दुनिया से कुछ वस्तुएं)
और आदर्श रूप) प्रकाश और आत्मा प्राणियों के शरीर के लिए दर्पण की तरह बन जाते हैं।
पदार्थ उन्हें परिवहन करते हैं, जिससे उन्हें हवा या जैसे स्पष्ट क्षेत्रों में यात्रा करने की अनुमति मिलती है
बिजली और कल्पना की गति के साथ ईथर क्षेत्र।

उन पर बैठे हुए, प्रकाश और आत्मा के ये शरीर मौजूद हो सकते हैं
एक साथ हज़ारों जगहों पर। चूँकि वे प्रकाश के हैं और उनके प्रतिबिंब हैं
वे स्वयं के समान हैं और उनमें बिल्कुल समान गुण हैं, वे उसी प्रकार कार्य करते हैं
हर जगह मानो वे व्यक्तिगत रूप से मौजूद हों। ठोस, भौतिक-वास्तविक निकायों के प्रतिबिंब स्वयं के समान नहीं होते हैं और स्वयं के समान गुण न होने के कारण वे निर्जीव होते हैं।

उदाहरण के लिए, सूर्य एक ठोस वस्तु है जो पारदर्शी वस्तुओं पर चमकने से सार्वभौमिकता प्राप्त करती है। यह अपने प्रतिबिंब और छवियाँ प्रदान करता है
पृथ्वी पर सभी चमकती हुई चीज़ें हर एक की क्षमता के अनुसार। यहाँ तक कि एक बूँद भी
पानी और कांच के टुकड़े पर सूर्य की छवि प्रतिबिंबित होती है। सूर्य मौजूद है,
पृथ्वी पर प्रत्येक पारदर्शी या चमकती हुई वस्तु में, इसके प्रकाश, ऊष्मा, छवि या इसके प्रकाश में मौजूद सात रंगों के माध्यम से। यदि इसमें ज्ञान और चेतना होती,
प्रत्येक वस्तु, विशेष रूप से चमकदार और पारदर्शी, एक सीट या
कुर्सी जिसके माध्यम से यह हर चीज से संपर्क कर सकता है। यह भी सक्षम होगा
सभी सचेत प्राणियों के साथ दर्पण या प्रत्येक की आंख के माध्यम से संवाद करें,
सभी लोगों से संवाद करते हुए। हर जगह मौजूद रहते हुए और हर जगह काम करते हुए
अपने ज्ञान, शक्ति और अन्य गुणों के माध्यम से यह पृथ्वी पर होगा
कहीं भी व्यक्तिगत रूप से नहीं।

यदि सूर्य, जो एक ठोस, विशिष्ट और निर्जीव दर्पण की तरह है, केवल
सर्वशक्तिमान ईश्वर के एक हजार एक स्वरूप में से उस प्रकाश का नाम बताइए।
इसलिए नाम ऐसी सार्वभौमिक गतिविधि प्रदर्शित कर सकते हैं, यदि सर्व-महान् सत्ता, अपने सार की एकता के साथ, असंख्य कार्य करने में असमर्थ हो।
एक ही समय में कई चीजें?

दूसरी तुलना: चूँकि ब्रह्माण्ड एक वृक्ष के समान है, अतः प्रत्येक वृक्ष एक वृक्ष हो सकता है।
ब्रह्मांड की वास्तविकताओं का उदाहरण। मेरे कमरे के सामने विशाल पेड़ को लेते हुए
ब्रह्मांड के एक छोटे से नमूने के रूप में, हम दिव्य एकता का प्रदर्शन करेंगे'
ब्रह्मांड में अभिव्यक्ति। इस पेड़ पर कम से कम एक हज़ार फल लगते हैं, और
प्रत्येक फल में कम से कम सौ बीज होते हैं। सभी फल और बीज एक ही स्थान पर बनाए गए थे।
उसी समय। हालाँकि, उस पेड़ में जीवन के केंद्रक का एक ही नोड है
अपने एकल मूल बीज में। इस नोड में ईश्वरीय इच्छा और ईश्वरीय आदेश से जारी पूरे वृक्ष के निर्माण के नियम समाहित हैं, और सभी में व्याप्त है
पेड़ के प्रत्येक भाग की जड़ों और तने में उपस्थित होने के साथ-साथ प्रत्येक भाग में भी उपस्थित होना
शाखा, फूल, पत्ती, फल और बीज, बिना विभाजित या खंडित हुए।

प्रकाश, ऊष्मा और वायु के विपरीत, जीवन का यह केंद्रक, जो कि एक एकल प्रदर्शन है
ईश्वरीय इच्छा और ईश्वरीय आदेश का नियम नष्ट नहीं होता बल्कि यह
हर भाग में मौजूद है। इसकी अनेक क्रियाएँ इसकी एकता के विपरीत नहीं हैं।
वास्तव में, ईश्वरीय इच्छा की अभिव्यक्ति, ईश्वरीय आदेश का वह नियम और
जीवन का केंद्रक, एक ही समय में प्रत्येक भाग में तथा कहीं भी मौजूद हो सकता है। यह
मानो ईश्वरीय आदेश के उस कानून में उतनी ही आंखें और कान थे जितने उस भव्य वृक्ष के फल और बीज थे। या मानो वृक्ष के प्रत्येक भाग का अपना नियंत्रण था
ईश्वरीय आदेश के उस कानून की "इंद्रियों और भावनाओं" का केंद्र।
वृक्ष की नसें और भाग, जैसे शाखाएं, उस कानून के संचालन या कामकाज को सुविधाजनक बनाने में टेलीफोन तारों की तरह हैं, न कि बाधाएं उत्पन्न करने के लिए, और
उनके माध्यम से सबसे दूर भी सबसे निकट जैसा हो जाता है।

यह देखते हुए कि ईश्वर की इच्छा के गुण की एक विशेष अभिव्यक्ति
यह प्रत्यक्षतः एक ही समय में लाखों स्थानों पर लाखों कार्यों का माध्यम है।
समय के साथ, हम आश्वस्त हो जाते हैं, मानो अपनी आँखों से देख रहे हों, कि सर्वशक्तिमान सत्ता ही सृष्टि के वृक्ष और उसके सभी भागों और परमाणुओं को नियंत्रित करती है।
उसकी शक्ति और इच्छा की अभिव्यक्ति के माध्यम से।

जैसा कि सोलहवें शब्द में दृढ़तापूर्वक तर्क दिया गया है, ऐसे एकल, निश्चित और
सूर्य जैसे असहाय प्रकाशमान, पदार्थ द्वारा प्रतिबंधित, और उसके नियम
उसकी इच्छा के आदेश और अभिव्यक्तियाँ, जैसे कि
उस वृक्ष के जीवन का केंद्रक और जो उसकी आत्मा के समान हैं, मौजूद हो सकते हैं,
यह अनेक स्थानों पर अपनी चमक बिखेरता है और एक साथ अनेक कार्य करता है।
यद्यपि ऐसी प्रत्येक वस्तु पदार्थ द्वारा सीमित एक विशेष वस्तु है, फिर भी यह एक सार्वभौमिक वस्तु के समान है और एक ही समय में कई कार्य कर सकती है। आप इसे देख सकते हैं
अपनी आँखों से देखा है, इसलिए इसे नकार नहीं सकते।

सर्व-पवित्र सत्ता पदार्थ से पूर्णतः मुक्त है, प्रतिबंधों और घनत्व के अंधकार से मुक्त है। सभी प्रकाश और ज्योतियाँ, साथ ही शुद्ध प्रकाश के सभी प्राणी, उनके पवित्र नामों के प्रकाश की एक ही छाया हैं।

संपूर्ण अस्तित्व और जीवन, साथ ही आत्माओं और आदर्श रूपों या प्रतिनिधित्वों की दुनिया और कब्र की मध्यवर्ती दुनिया अर्ध-पारदर्शी हैं
उनके सर्व-शुद्ध "चेहरे" के दर्पण। उनके गुण और आवश्यक गुण सर्वव्यापी हैं, और चीजों पर उनकी सभी अभिव्यक्तियाँ या संचालन व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उनकी सार्वभौमिक इच्छा द्वारा रेखांकित या समर्थित हैं,
परम शक्ति, और सर्वव्यापी ज्ञान। इसलिए कोई भी चीज़ उसकी एकता की अभिव्यक्ति या संचालन से कैसे छिप सकती है या बच सकती है -
उनके नामों की संकेन्द्रित अभिव्यक्ति या संचालन क्या हो सकता है?
उसके लिए कौन कठिन है या उससे छिपा हुआ है? कौन उससे दूर हो सकता है या उसके निकट हो सकता है
सार्वभौमिकता प्राप्त किए बिना उसे क्या करना चाहिए? उसे ऐसा करने से कौन रोक सकता है?
कुछ और?

जैसा कि इब्न अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने बताया है, क्यों
उसके पास हर व्यक्ति को देखने और सुनने के लिए अमूर्त “आँखें” और “कान” नहीं हैं
प्राणी? चीज़ों की जंजीरें नसों या तारों की तरह क्यों नहीं होनी चाहिए जो उसके नियमों और आदेशों को तुरंत बता सकें? जिन चीज़ों को माना जाता है उन्हें क्यों नहीं होना चाहिए
क्या कारण और साधन केवल प्रत्यक्ष आवरण (उनके प्रत्यक्ष मार्ग के लिए) नहीं होने चाहिए?

ब्रह्मांड का नियंत्रण और स्वतंत्र संचालन)? वह क्यों मौजूद नहीं होना चाहिए
वह कहीं नहीं होते हुए भी हर जगह रहते हैं? उन्हें किसी खास जगह पर रहने की क्या ज़रूरत है?
अस्तित्व के स्तरों की दूरी, आकार या आवरण, वस्तुओं के प्रति उसकी निकटता में, या उन्हें अपनी इच्छानुसार देखने और नियंत्रित करने में बाधा क्यों बनें?

परिवर्तन, परिवर्तन, स्थान द्वारा नियंत्रण, तथा विभाजन क्यों होना चाहिए
(भौतिक, प्रतिबंधित, आकस्मिक, ठोस और बहुक्रियाशील प्राणियों के सभी आंतरिक गुण) पवित्र सत्ता,
प्रकाश के लिए आकस्मिक या आवश्यक हो सकते हैं
ज्योतियाँ, एकता की एकमात्र, अनिवार्यतः विद्यमान, जो स्वतंत्र है
पदार्थ और प्रतिबंध का, दोष और दोष से मुक्त? क्या नपुंसकता
क्या कभी उनके सम्मान और गरिमा में कोई कमी आई है?

दूसरे उद्देश्य का निष्कर्ष: अपने सामने लगे फलदार वृक्ष को देखते हुए प्रत्येक वस्तु द्वारा प्रदर्शित ईश्वर की एकता पर चिंतन करना।
मेरे कमरे में, मेरे मन में कई विचार उठे। मैं उन्हें नीचे बता रहा हूँ।

महिमावान है वह, जिसने अपनी धरती के बगीचे को प्रदर्शनी कक्ष बनाया है
उनकी कला का प्रदर्शन, उनकी बुद्धिमता का प्रदर्शन, उनकी शक्ति का प्रकटीकरण,
उसकी दया का एक फूल बाग, उसके स्वर्ग का कृषि योग्य क्षेत्र, एक जगह
जहाँ उसके जीव बाढ़ की तरह आते हैं और चले जाते हैं और हर एक अपने विशेष जीवन और विशेषताओं के साथ आता है। सजे हुए जानवर, सजे हुए पक्षी, फलदार वृक्ष और फूलदार पौधे सभी उसके ज्ञान के चमत्कार हैं,

उनकी कला के चमत्कार, उनकी उदारता के उपहार और उनकी भेंट
सुंदर फलों के कारण फूल मुस्कुरा रहे हैं, पक्षी गा रहे हैं
भोर की हवा, फूलों के गालों पर चमकती बारिश की बूंदें, और माँ की
अपने शिशुओं के प्रति करुणा - यह सब सर्व-प्रेममय परमेश्वर के कारण है
खुद को ज्ञात करना चाहता है, दयालु एक बनाना चाहता है
स्वयं को प्रिय मानने वाला, सर्व-दयालु परमेश्वर अपने को प्रिय बनाना चाहता है।
करुणा ज्ञात है, और सर्व-कृपा करने वाला अपनी इच्छा व्यक्त करता है
मानवता, जिन्न, फ़रिश्तों और अन्य आत्मिक प्राणियों द्वारा मान्यता प्राप्त स्नेह।

प्रत्येक फल और बीज ईश्वरीय बुद्धि का चमत्कार है, ईश्वर की अद्भुत शक्ति है।
दिव्य कला, दिव्य दया का उपहार, दिव्य एकता का प्रमाण, और
वे आख़िरत में ईश्वर की कृपा की निशानी हैं। वे इस बात के सच्चे गवाह हैं कि
उनके सृष्टिकर्ता के पास हर चीज़ पर पूर्ण शक्ति और पूर्ण ज्ञान है
सब कुछ। सभी फल और बीज इस दुनिया में उसकी एकता के दर्पण हैं
बहुलता का, क्योंकि अपने अस्तित्व की भाषा में, प्रत्येक व्यक्ति कहता है: "यह विस्तृत वृक्ष मुझमें सम्मिलित है। इसके विस्तार में लीन मत हो जाओ। सभी
इसके अंग और विशेषताएं मुझमें समाहित हैं।" बीज फल के समान है
हृदय, दिव्य एकता का दर्पण है। अपनी भाषा में, यह "पढ़ता है"
उसके हृदय में ईश्वरीय नामों का उच्चारण पूरा वृक्ष जोर-जोर से कर रहा था।

बीज भी ईश्वरीय भाग्य के संकेत और मूर्त प्रतीक हैं
दिव्य शक्ति। इनके माध्यम से भाग्य संकेत करता है और शक्ति संकेत करती है
इस तथ्य से कि प्रत्येक विस्तृत वृक्ष एक बीज से विकसित हुआ है और इसलिए
यह इसके निर्माता की एकता की ओर इशारा करता है, जिसकी रचना में कोई भागीदार नहीं है
और फैशनिंग। जब यह पूरी तरह से विकसित और विस्तृत हो जाता है, तो यह
अपने सभी नियमों, वास्तविकताओं और जीवन-इतिहास को एक फल में समाहित कर लेता है।
इसका अर्थ एक बीज में निहित है, यह सर्व-महान निर्माता को दर्शाता है
उसकी सृष्टि और शासन में बुद्धि है। जैसा कि उस पेड़ के मामले में है,

एकता सृष्टि के अस्तित्व और विकास के वृक्ष का भी स्रोत है। इसी तरह, ब्रह्मांड का फल होने के नाते, मानवता प्राणियों की बहुलता में एकता की ओर इशारा करती है, और मानव हृदय विश्वास की नज़र से बहुलता में एकता का अर्थ देखता है।

ये फल और बीज भी दिव्य ज्ञान की पटियाएँ हैं जिनके माध्यम से ज्ञान चेतन प्राणियों से इस प्रकार बात करता है: इस वृक्ष का जीवन और इसके विकास के लिए किए गए प्रयास इसके फलों पर लक्षित हैं, जो इसका प्रतिनिधित्व करते हैं और इसके विकास का उद्देश्य हैं। इसका जीवन बीजों पर लक्षित है, क्योंकि प्रत्येक बीज वृक्ष के संपूर्ण अर्थ को दर्शाने वाला एक सूचकांक है। इस प्रकार, वह जो वृक्ष और उसके विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ बनाता है, वह वृक्ष के जीवन से संबंधित अपने नामों की सभी अभिव्यक्तियों को फल पर लक्षित करता है, जो इसके अस्तित्व का कारण है। इसके अलावा, उस विशाल वृक्ष को कभी-कभी उसके विकास को नियंत्रित करने और कई वर्षों तक बेहतर फल देने के लिए काटा जाता है; वे इसके कुछ हिस्सों को काट देते हैं ताकि यह फिर से जीवंत हो सके।

इसी तरह, जैसे मानवजाति सृष्टि के फल का वृक्ष है, हम ब्रह्मांड के निर्माण और अस्तित्व का कारण हैं, और मानव हृदय ब्रह्मांड के निर्माता का सबसे प्रकाशित और व्यापक दर्पण है। इस वजह से, मानवता लगातार आक्षेप, क्रांतियों, उथल-पुथल और शारीरिक और सामाजिक परिवर्तन के रूप में छँटनी से गुजरती है, और यह ब्रह्मांड के विनाश और पुनर्निर्माण का कारण बनेगी। इस दुनिया का दरवाजा बंद हो जाएगा और इसके फैसले के लिए एक नई दुनिया का दरवाजा खुल जाएगा।

यहाँ पुनरुत्थान से संबंधित कुरान की अभिव्यक्तियों की वाक्पटुता और शक्ति को दर्शाने वाले एक बिंदु को स्पष्ट करना उचित है। जैसा कि ऊपर तर्क दिया गया है, मानवता के न्याय और शाश्वत सुख के लिए ब्रह्मांड को नष्ट किया जाना चाहिए और एक नया ब्रह्मांड बनाया जाना चाहिए। एक शक्ति है जो ऐसा करेगी।

हालाँकि, पुनरुत्थान चरणों में किया जाएगा। हमें उनमें से कुछ चरणों पर विश्वास करना चाहिए और उनका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अन्य चरणों को समझने और उनका ज्ञान प्राप्त करने के लिए, हमें आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से विकसित होना चाहिए। सबसे सरल चरण को साबित करने के लिए, कुरान हमारा ध्यान उस शक्ति की ओर आकर्षित करता है जो पुनरुत्थान के सबसे व्यापक क्षेत्र को खोल देगी।

यह सबसे सरल अवस्था है जिसे सभी लोगों को जानना और मानना चाहिए: जब लोग मरते हैं, तो उनकी आत्माएं दूसरे स्थानों पर चली जाती हैं। उनके शरीर जमीन के नीचे सड़ जाते हैं, लेकिन एक छोटा सा हिस्सा (बीज) बरकरार रहता है। पुनरुत्थान के दौरान, ईश्वर हमें उससे फिर से बनाता है और आत्मा को उसमें वापस कर देता है।

यह चरण इतना आसान है कि हर बसंत में इसके अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते हैं।
कुरान की कई आयतें हमारा ध्यान उस शक्ति के कामों की ओर आकर्षित करती हैं जो सभी परमाणुओं को इकट्ठा करके फिर से फैला देती है। कभी-कभी वे एक शक्ति और बुद्धि के कामों को दिखाती हैं जो सृष्टि को अस्तित्वहीन कर देती है और फिर उसे फिर से बनाती है, या आकाश को चीर कर सितारों को बिखेर देती है।

वे शक्ति और बुद्धि के संचालन और अभिव्यक्तियों को भी दर्शाते हैं
जो एक साथ सभी जीवित प्राणियों को मरने और फिर पुनर्जीवित करने का कारण बनेगा
एक ही आह्वान, या शक्ति और बुद्धि का कार्य जो पहाड़ों को हिला देगा
हवा में, पूरी तरह से समतल और फिर दुनिया को एक नए और नए आकार में फिर से आकार दें
अधिक सुंदर रूप। इसका मतलब यह है कि, उस चरण के साथ जिसमें सभी
लोगों को फिर से बनाया जाएगा और सभी लोगों को उस पर विश्वास करना चाहिए और उसे अपनाना चाहिए
सर्वशक्तिमान ईश्वर के ज्ञान से जुड़े सभी कार्य संपन्न होंगे
उसी शक्ति और बुद्धि के साथ पुनरुत्थान।

प्रश्न: आप अक्सर द वर्ड्स में तुलना या दृष्टांतों के रूप में उपमाओं का उपयोग करते हैं। तर्क के अनुसार, ऐसी उपमाएँ निश्चितता प्रदान नहीं करती हैं, और विश्वास के लिए दृढ़ विश्वास की आवश्यकता वाले मुद्दे तार्किक आधार पर होने चाहिए।

साक्ष्य। सादृश्य का उपयोग न्यायशास्त्र में संभावित समाधानों और मामलों के लिए किया जाता है
जिसमें एक निश्चित अनुमान ही पर्याप्त है। इसके अलावा, आपने आगे बताया
उपमाओं और तुलनाओं को दृष्टान्तों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो परिभाषा के अनुसार वास्तविक नहीं होते।

उत्तर: तर्क के अनुसार, तुलना के रूप में सादृश्य
निश्चितता प्रदान नहीं करते। लेकिन एक प्रकार का सादृश्य तार्किक प्रमाण से अधिक मजबूत होता है और
प्रेरण की तुलना में अधिक निश्चितता देता है: आप एक सार्वभौमिक की नोक की ओर इशारा करते हैं
ठोस तथ्यों पर आधारित एक विशेष सादृश्य के माध्यम से सत्य को समझना और उस सत्य पर अपने निष्कर्ष को आधारित करना।
उस महान सत्य को सिखाना और विशेष रूप से उससे निपटना
घटनाओं और वास्तविकताओं के अनुसार, आप सामान्य या सार्वभौमिक कानून दिखाते हैं जिस पर एक निश्चित, विशेष चीज़ या घटना में सत्य आधारित है।
उदाहरण के लिए, इस सादृश्य के माध्यम से कि सूर्य एक ऐसा पिंड है जो सभी चमकती हुई वस्तुओं में एक साथ उपस्थित हो सकता है क्योंकि यह प्रकाश उत्सर्जित करता है, हम सूर्य के नियम को दर्शाते हैं।
सत्य: प्रकाश और प्रकाश की वस्तुओं पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। दूरी, आकार और परिमाण से ऐसी वस्तुओं पर कोई फर्क नहीं पड़ता और उन्हें अंतरिक्ष में समाहित नहीं किया जा सकता।

एक अन्य उदाहरण: एक वृक्ष के पत्ते और फल ईश्वरीय नियम के माध्यम से एक ही समय में और एक ही केंद्र में आसानी से और पूर्णतः बनते हैं।
आदेश। यह एक महान सत्य और सार्वभौमिक कानून की झलक दिखाता है, और
सत्य और नियम को सिद्ध करता है। एक वृक्ष की तरह, यह विशाल ब्रह्मांड उसी का परिणाम है
कानून और एकता की अभिव्यक्ति। सभी समानताएं और तुलनाएं
शब्द इसी प्रकार के होते हैं। वे तार्किक प्रमाणों की अपेक्षा अधिक विश्वास और निश्चितता प्रदान करते हैं।

जहाँ तक प्रश्न के दूसरे भाग का प्रश्न है, वाक्पटुता के विज्ञान के अनुसार, रूपक एक शब्द या वाक्यांश है जिसका प्रयोग किसी अर्थ को सुझाने या व्यक्त करने के लिए किया जाता है।
अपने मूल के अलावा अन्य। ऐसे बयानों में, रूपक (और नहीं
मूल) अर्थ पर विचार किया जाता है। यदि रूपक अर्थ वास्तविकता के अनुरूप है, तो आप सच कह रहे हैं। उदाहरण के लिए, ऊँचाई को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है
वाक्यांश: “फलां की तलवार की म्यान लंबी है।” अगर वह आदमी लंबा है, तो यह राज्य-

यह कथन सत्य है कि उसके पास ऐसी तलवार है या नहीं। यदि वह लंबा नहीं है, तो यह कथन सत्य है। यदि उसके पास ऐसी तलवार भी हो तो भी यह कथन झूठ है, क्योंकि इस वाक्यांश का अर्थ केवल लाक्षणिक है।

दसवें और बाईसवें वचनों में ऐसे दृष्टांत हैं वास्तविकताएँ जिन्हें रूपकों में खोजा जाना चाहिए। उनके मूल अर्थ इस प्रकार हैं दूरबीनों के माध्यम से चर्चा की जा रही सच्चाई को देखा जा सकता है। हम दृष्टांतों में बोलते हैं ताकि पाठक ऐसी तुलनाओं के माध्यम से सूक्ष्म वास्तविकताओं को समझ सकें। हालाँकि, उन्हें सभी के लिए समझने योग्य बनाने के लिए, राज्यों और स्वभावों को भाषणों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, और समुदाय के चरित्र को एक विशेष व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

तीसरा लक्ष्य: दूसरे प्रश्न का ठोस उत्तर प्राप्त करना (दूसरे लक्ष्य के आरंभ में चर्चा की गई है), गुमराह व्यक्ति पूछता है:

प्रश्न: कुरान की उक्तियाँ जैसे कि सर्वश्रेष्ठ रचयिता और सर्वाधिक रचयिता दयालु के दयालु अन्य रचनाकारों और दयालु के अस्तित्व का सुझाव देते हैं ईश्वर के समान हैं। साथ ही, आप यह भी दावा करते हैं कि ब्रह्मांड के रचयिता सभी पूर्णता की उच्चतम डिग्री को समाहित करके अनंत पूर्णताएँ हैं। लेकिन पूर्णताएँ तुलना के माध्यम से आंकी जाती हैं। आनंद की पूर्णता दर्द के बिना नहीं देखा जा सकता, प्रकाश को बिना पहचाना नहीं जा सकता अंधकार है, और यदि अलगाव न हो तो मिलन भी सुख नहीं देता।

उत्तर: हम पहले भाग का उत्तर पाँच संकेतों के माध्यम से देते हैं।

पहला संकेत: यह पुस्तक ईश्वरीय एकता पर जोर देती है, इसलिए बुद्धिमान कुरान में उन वाक्यों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता जैसा कि आप उन्हें समझते हैं। सर्वश्रेष्ठ रचनाकार का अर्थ है कि रचनाकार की रचनात्मकता सर्वोच्च है। यह अन्य रचनाकारों की तरह अन्य रचनाकारों के अस्तित्व का सुझाव नहीं देता है। गुण, रचनात्मकता में अभिव्यक्ति के स्तर होते हैं। इस प्रकार इस वाक्यांश का अर्थ है वह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता है, तथा उसकी सृजनात्मकता सर्वोच्च है।

दूसरा संकेत: सर्वश्रेष्ठ रचनाकार जैसे वाक्यांश किसी रचनाकार के बारे में यह सुझाव नहीं देते कि वह एक रचनाकार है। रचनाकारों की बहुलता। बल्कि, वे प्राणियों की प्रजातियों या विविधता से संबंधित हैं बनाया जा रहा है और इसका मतलब है कि वह निर्माता है जो सब कुछ बनाता है सबसे अच्छा और सबसे उचित फैशन। इसका वही अर्थ है जो वह जो अपनी हर रचना को उत्कृष्ट बनाता है, जैसी आयतों द्वारा व्यक्त किया गया है (32:7).

तीसरा संकेत: ऐसे वाक्यांश जैसे कि सृष्टिकर्ताओं में सर्वश्रेष्ठ, ईश्वर ही सर्वश्रेष्ठ है महानतम, सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश और सर्वश्रेष्ठ परोपकारी की तुलना नहीं की जा सकती ईश्वर के वे कार्य और गुण जो ब्रह्माण्ड में प्रकट होते हैं प्राणियों के पास जो कुछ भी है वह ईश्वर की देन है। हम देखते हैं क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है और सुनो, क्योंकि वह सर्वश्रुत है।]

मानवता, फ़रिश्तों और जिन्न द्वारा साझा किए गए प्रभाव केवल अस्पष्ट छायाएं हैं उनके सम्बन्ध में, जो तुलना से परे हैं।

लोग, विशेषकर गुमराह लोग, ईश्वर को सही ढंग से नहीं माप सकते और आमतौर पर उसे भूल जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक निजी अपने कॉर्पोरल को पूर्ण सम्मान देता है और जो कुछ भी अच्छा उसे पसंद है उसका श्रेय उसे देता है। वह बेखबर है राजा का; भले ही वह उसे याद करता हो, फिर भी यह कॉर्पोरल के लिए है कि वह जो भी अच्छा उसे मिलता है उसके बदले में आभार प्रकट करता है। ऐसा निजी व्यक्ति होना चाहिए चेतावनी दी: "राजा आपके कॉर्पोरल से महान और अधिक दयालु है, इसलिए तुम्हें राजा का धन्यवाद करना चाहिए।" इसका मतलब राजा की वास्तविक, शानदार कमांडरशिप की तुलना कॉर्पोरल से करना नहीं है - ऐसी तुलना अर्थहीन होगा। इसका मतलब यह है कि निजी व्यक्ति को चेतावनी दी जाए जो इसे पसंद करता है कॉर्पोरल कृतज्ञता में है और राजा को भूल जाता है।

इसी प्रकार, साधन, प्रकृति और कारण अंधे असावधान लोगों को सत्य से दूर रखते हैं वरदान देने वाला। वे जो वरदान प्राप्त करते हैं उसका श्रेय उन्हें देते हैं साधन और प्रकृति और रचनात्मकता को कारणों के रूप में प्रस्तुत करना, मानो वे वास्तविक स्रोत हों, और उनकी प्रशंसा और धन्यवाद करो। इसलिए, कुरान चेतावनी देता है: सर्वशक्तिमान ईश्वर है बहुत महान और कहीं बेहतर निर्माता और उपकारकर्ता (वास्तव में इसका अर्थ है कि वह एकमात्र सृष्टिकर्ता और उपकारकर्ता है। उसका आदर करो और उसका धन्यवाद करो।

चौथा संकेत: जिस प्रकार वास्तविक अस्तित्व वाली चीजों की तुलना की जा सकती है एक दूसरे को प्राथमिकता देना और एक दूसरे को पसंद करना, इसलिए संभव है, और यहां तक कि काल्पनिक भी चीजों की एक दूसरे से तुलना भी की जा सकती है और उन्हें एक दूसरे पर तरजीह भी दी जा सकती है। गुणों और स्वभावों में अनेक ग्रेड या डिग्री हैं, लोग कल्पना कर सकते हैं दिव्य नामों के सार और अभिव्यक्तियों में अनंत श्रेणियाँ और विशेषताएँ। हालाँकि, सर्वशक्तिमान ईश्वर सर्वोच्च, सबसे परिपूर्ण और सबसे अधिक है उनके नाम और गुणों की जितनी भी कल्पना की जाती है, उन सभी में वह सुन्दर है। ब्रह्माण्ड इसका साक्षी है। उन्होंने अपने सभी नामों का वर्णन इस प्रकार किया है: सबसे अच्छा या सबसे सुंदर, जैसे: उसके सबसे सुंदर नाम हैं (20:8), अंक इस तथ्य से.

पाँचवाँ संकेत: ऐसे वाक्यों पर भी निम्नलिखित दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। सर्वशक्तिमान ईश्वर के दो प्रकार के गुण और प्रकट होने के तरीके हैं। पहला (वहीदिया) एक सर्वव्यापी नियम के रूप में है,

वह अपने नामों को प्रकट करता है और पूरे ब्रह्मांड में अपना अधिकार प्रयोग करता है प्रत्यक्ष साधनों और कारणों के पीछे से। दूसरे (अहादिया) में, वह बिना किसी साधन या आवरण के अपनी अभिव्यक्तियों को एक प्राणी पर केन्द्रित करता है। इस दूसरे तरीके से दिखाया गया है, उसकी दयालुता, सृजन और भव्यता उज्जवल है, पहले रूप में उनकी अभिव्यक्ति से कहीं अधिक सुन्दर और भव्य।

मान लीजिए कि एक संत राजा अपने अधिकार का प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग करता है, तथा उसके सभी अधिकारी और सेनापति केवल आवरण या पर्दा मात्र होते हैं।
अधिकार दो तरीकों से है: कुछ सामान्य कानूनों द्वारा जो उसने स्थापित किए हैं और
प्रत्येक कार्यालय में अधिकारियों और राज्यपालों द्वारा, या प्रत्यक्ष शासन के माध्यम से
एक ही समय में विभिन्न रूपों में तथा बिना किसी बाधा के हर जगह उपस्थित रहना
यह दूसरा तरीका उसके अधिकारियों की नज़र में बेहतर और ज़्यादा बढ़िया है।
इसी तरह, ब्रह्मांड का निर्माता, शाश्वत संप्रभु, उपयोग करता है
उसके शासन को छिपाने या छिपाने और उसके शासन को प्रदर्शित करने के साधन और कारण
इस जीवन में प्रभुता की महिमा। हालाँकि, उन्होंने एक "निजी" भी स्थापित किया है
अपने सेवकों के दिलों में “टेलीफोन” स्थापित कर दे ताकि, सभी साधन और कारण छोड़कर
पीछे, वे उससे संपर्क कर सकते हैं और घोषणा कर सकते हैं: केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं और
हम केवल तुझसे ही सहायता मांगते हैं (1:5)। सर्वश्रेष्ठ रचयिता, सबसे महान रचयिता जैसे वाक्यांश
दयालुओं में दयालु, तथा ईश्वर सबसे महान है , ये शब्द भी इस तथ्य को रेखांकित करते हैं।

जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि हम किसी चीज को पूर्ण कैसे कह सकते हैं, यदि उसमें कोई विपरीत नहीं है, निम्नलिखित पाँच बिंदुओं पर विचार करें:

पहला बिंदु: जो व्यक्ति ऐसा प्रश्न पूछता है, वह सच्ची पूर्णता से अनभिज्ञ होता है और सापेक्ष पूर्णता को ही सत्य मान लेता है। कोई भी गुण, पूर्णता या
श्रेष्ठता जो दूसरों की तुलना में या उनके विपरीत होने पर प्रकट होती है
यह सत्य नहीं है; बल्कि, यह सापेक्ष मूल्य और महत्व का है। इस प्रकार इसका महत्व समाप्त हो जाता है
इसके विपरीत होने पर इसका मूल्य कम हो जाता है।

उदाहरण के लिए, भीषण ठंड के बजाय गर्मी की इच्छा होती है और भूख के अनुपात में भोजन स्वादिष्ट होता है। ठंड और भूख के बिना, गर्मी और भोजन का कोई महत्व नहीं होता।
कम मूल्य। सच्चा आनंद, प्रेम, पूर्णता या गुण खुद को प्रकट नहीं करते हैं
दूसरों की तुलना में या उनके विपरीत की डिग्री के अनुपात में - वे
ये अपने आप में हैं, और इसलिए ठोस और निरंतर वास्तविकताएं हैं।

अस्तित्व, जीवन, प्रेम, ज्ञान (विशेषकर ईश्वर का ज्ञान), विश्वास,
स्थायित्व, दया, करुणा या स्नेह, साथ ही प्रकाश, ध्वनि दृष्टि
और श्रवण, वाक्पटुता, उदारता, अच्छा आचरण या नैतिक गुण, उचित रूप, और पूर्णताएं जो किसी भी व्यक्ति के पास या तो उनके व्यक्तित्व में होती हैं
चरित्र और गुण या कार्य - ये सभी स्वभाव से ही सद्गुण हैं।
विपरीतताओं के साथ या बिना, वे अपने आप में सद्गुण और पूर्णताएं हैं।
न तो उन्हें और न ही उनके आनंद और सौंदर्य को देखने और सराहने के लिए तुलना या विपरीतता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, सभी पूर्णताएँ
सर्व-प्रतापी निर्माता, सर्व-दयालु और सुंदर सृजक और
पूर्णता के रचयिता स्वयं में सत्य हैं। इनके अलावा जो कुछ भी है
उस पर उसका कोई प्रभाव नहीं हो सकता। सृष्टि में पूर्णताएँ केवल उनकी हैं।
प्रत्येक प्राणी की क्षमता के अनुसार प्रतिबिंब।

दूसरा बिंदु: शरहुल-मवाक़िफ़ में , सैय्यद शरीफ़ अल-जुरजानी लिखते हैं:
"प्रेम का कारण या तो आनंद या लाभ या यौन या प्राकृतिक झुकाव है
या पूर्णता। पूर्णता को अपने आप में प्यार किया जाता है।" दूसरे शब्दों में, आप प्यार करते हैं
किसी चीज़ या किसी व्यक्ति को या तो उस खुशी के कारण जो आपको उनमें या उनके द्वारा पाई जाती है
लाभ या आपके यौन या प्राकृतिक (जैसे, पितृत्व, मातृत्व, संतानोचित, आदि) झुकाव, या इसकी पूर्णता। यदि प्रेम
पूर्णता से उत्पन्न होता है, तो खोज करने की कोई आवश्यकता नहीं है
किसी और कारण से। उदाहरण के लिए, लोग पूर्णता वाले लोगों से प्यार करते हैं और
पूर्ण सद्गुण के होते हुए भी उनका उनसे कोई संबंध नहीं है।

इस प्रकार, चूँकि वे सत्य, निर्विवाद और अनंत हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर के सभी
पूर्णताएं और उनके सर्वसुन्दर नाम स्वयं के कारण प्रिय हैं।
वह सर्व-महान प्राणी, जो प्रेम के सर्वथा योग्य है और सच्चा है
प्रियतम, उसकी सम्पूर्णताओं और उसके नामों और उनकी सुन्दरताओं से प्रेम करता है।
वह अपने लिए उपयुक्त तरीके से गुणगान करता है। वह अपने कामों से भी प्रेम करता है
उनकी रचनाओं में कला और सुंदरता, जो उनकी पूर्णता को प्रतिबिम्बित करती है। वह प्रेम करते हैं
उनके पैगम्बर और संत, विशेष रूप से उनके प्रियतम, प्रभु
सन्देशवाहक और संतों के गुरु - पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति हो
और आशीर्वाद.

अपने सौंदर्य के प्रति प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उस सौंदर्य का प्रतिबिम्ब है। अपने नाम के प्रति प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उस सौंदर्य का प्रतिबिम्ब है।
प्रियतम, जो उन नामों को सबसे व्यापक तरीके से प्रकट करता है,
अन्य सभी पैगम्बरों की तरह। अपनी कला के प्रति प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है,
जो उस कला को प्रदर्शित करता है, और जो उसके (अन्य पैगम्बरों) समान हैं।
अपने प्राणियों के प्रति प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो उसका स्वागत करता है
उन प्राणियों की उचित सराहना और तालियों के साथ, कहते हुए: “क्या आश्चर्य है
भगवान ने चाहा! भगवान उनका भला करे! उन्हें कितनी खूबसूरती से बनाया गया है!”
और जो लोग उसका अनुसरण करते हैं। अपने प्राणियों की सुन्दरता के प्रति उसके प्रेम के कारण,
वह अपने प्रियतम से प्रेम करता है, जो समस्त प्राणियों का सबसे व्यापक स्वरूप है।
उन सुन्दरताओं और सभी नैतिक गुणों को, जो उनमें और उनके अनुयायियों में समान रूप से विद्यमान थे।

तीसरा बिंदु: ब्रह्मांड में सभी पूर्णताएं एक सर्वशक्तिमान की पूर्णता और उसकी सुंदरता के संकेत हैं।

संपूर्णता, संपूर्ण सौंदर्य और संपूर्णता ब्रह्मांड में एक अस्पष्ट छाया है। अब मैं इस वास्तविकता के पाँच प्रमाणों के बारे में संक्षिप्त संकेत प्रस्तुत करता हूँ।

पहला साक्ष्य: एक शानदार, पूरी तरह से निर्मित और सुसज्जित महल इस ओर इशारा करता है
उत्तम इंजीनियरिंग, वास्तुकला, और बढई का काम। यह उत्तम इंजीनियरिंग,
वास्तुकला, और बढई का काम इस तरह के शीर्षकों से बुलाए जाने के योग्य व्यक्ति की ओर इशारा करते हैं
बिल्डर, इंजीनियर, आर्किटेक्ट, डेकोरेटर और जॉइनर। ये उपाधियाँ बिल्डर की कलात्मकता की पूर्णता को दर्शाती हैं, जो उसकी योग्यता को दर्शाती हैं। यह परिपूर्णता बिल्डर की कलात्मकता की पूर्णता को दर्शाती है।
योग्यता से पता चलता है कि निर्माता एक उत्तम प्रकृति का व्यक्ति है।

इसी प्रकार, यह संसार, एक पूर्णतः निर्मित एवं सुसज्जित महल, ईश्वर की ओर संकेत करता है। कार्यों की पूर्णता, क्योंकि पूर्ण कार्य पूर्ण कार्यों से ही परिणामित होता है। पूर्ण कार्य ऐसे उत्तम नामों की ओर संकेत करें जैसे कि सर्व-संगठन करने वाला, सर्व-निर्माण करने वाला, सर्वज्ञ और सर्वसज्जित, जो निर्माण में शामिल हैं महल। उत्तम नाम और उपाधियाँ उत्तम गुण या विशेषताएँ दिखाती हैं, क्योंकि यदि ये दोनों अपूर्ण हैं, इनसे उत्पन्न नाम भी अपूर्ण हैं। उत्तम गुण अंतर्निहित उत्तम योग्यता को प्रदर्शित करते हैं, जो बदले में, यह दर्शाता है कि जिसने उस महल को बनाया वह परिपूर्ण है। हालाँकि उसका पूर्णता आवश्यक योग्यता के आवरण के माध्यम से प्रकट होती है, गुण, नाम, कार्य और कर्म, यह अभी भी दोषरहित पूर्णता को प्रकट करता है और सुंदरता हर जगह दिखाई देती है।

जब आप देख लेंगे कि अनन्त परिपूर्णताएँ परमात्मा के सार में उत्पन्न हो रही हैं, जिसके पास ये गुण हैं, वह समझ सकता है कि दूसरों की तुलना में या विपरीत रूप में प्रकट सापेक्ष पूर्णताएं कितनी अपूर्ण और धुंधली हैं।

दूसरा प्रमाण: जब ध्यानपूर्वक देखा जाए और विचार किया जाए चिंतनशील रूप से, ब्रह्मांड हृदय और स्वस्थ विवेक को बताता है कि जिसने इसे इतना सुंदर बनाया है और इसे इतनी विविधताओं से सजाया है श्रृंगार में इतनी असीम सुंदरता और पूर्णता है कि उसने उसे ऐसा बनाया है।

तीसरा प्रमाण: कला के परिपूर्ण और सुव्यवस्थित कार्य इस पर निर्भर करते हैं संपूर्ण योजना जो कि, बदले में, व्यापक ज्ञान, उत्पादक मन, बौद्धिक परिष्कार और आध्यात्मिक शुद्धता पर आधारित है। यह आत्मा की पवित्रता जो ज्ञान के माध्यम से कार्य में खुद को प्रकट करती है। इसलिए, अपनी सभी भौतिक सुंदरताओं के साथ, यह ब्रह्मांड एक अनंत ज्ञान से निकलने वाली बूंदों से बना है, जो उस एक से संबंधित है जिसके पास अनंत और शाश्वत सौंदर्य और पूर्णता है।

चौथा प्रमाण: जैसा कि आप जानते हैं, जो चीज प्रकाश देती है, उसमें अवश्य ही कुछ न कुछ अवश्य होता है। प्रकाश, और जो प्रकाशित करता है वह प्रकाशमान होना चाहिए। इसी प्रकार, परोपकार भी अनुग्रह धन और उदारता से आता है और अनुग्रह दयालु व्यक्ति से उत्पन्न होता है। चूँकि ऐसा है, तो जैसे सूर्य की ओर इशारा करते हुए प्रकाश, सारी सुंदरता और पूर्णता ब्रह्मांड में देखी गई चीज़ें शाश्वत सौंदर्य की ओर इशारा करती हैं। एक विशाल नदी की तरह सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिम्बों से जगमगाते हुए, जीव पृथ्वी के ऊपर प्रवाहित होते हैं सुंदरता और पूर्णता के प्रतिबिंबों से चमकता चेहरा। जैसे प्रतिबिंब नदी की सतह पर बुलबुलों में प्रकाश की उपस्थिति बुलबुलों से उत्पन्न नहीं होती है स्वयं, इसलिए सुंदरता और परिपूर्णता अस्थायी रूप से चमकती है जीवों की बाढ़ का संबंध स्वयं जीवों से नहीं है; बल्कि, वे ये अनन्त सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिंब हैं।

> दर्पणों का लुप्त होना और प्राणियों की मृत्यु, इसके विपरीत
> उनमें अविभाज्य अनुग्रह और सौंदर्य के सतत प्रतिबिंब,
> यह सबसे स्पष्ट प्रमाण है कि स्पष्ट सौंदर्य वास्तव में सत्य नहीं है।

यह उन लोगों से संबंधित नहीं है जो इसे प्रतिबिंबित करते हैं, और यह कि शुद्ध के साथ एक है
वह सौन्दर्य और सदा प्रकट होने वाली दया और अनुग्रह है, जिसका अस्तित्व परम आवश्यक है, जो शाश्वत और
सर्व-प्रेममय है।

पांचवां प्रमाण: यदि एक ही स्थान से अलग-अलग रास्तों से आने वाले कई लोग एक ही घटना की सूचना देते हैं, तो इसका अर्थ है कि घटना घटित हुई है।
उसी तरह, वे सभी लोग जो छिपे हुए सत्यों को उजागर कर सकते हैं और उनके बारे में आश्वस्त हैं
मानो उन्होंने उन्हें अपनी आँखों से देखा हो, चाहे सत्य की खोज करने वाले शुद्ध हों
विभिन्न आध्यात्मिक सम्प्रदायों से संबंधित विद्वान या संत या विभिन्न संप्रदायों से संबंधित ऋषि
समय, स्थान या क्षमता की परवाह किए बिना विभिन्न विचारधाराओं ने
इस बात पर सहमति हुई कि ब्रह्मांड के दर्पणों में दिखने वाली सुन्दरता और पूर्णता
जीव एक अनिवार्यतः अस्तित्वमान सत्ता की पूर्णता के प्रतिबिंब हैं
एक और उसके नामों की सुंदरता की अभिव्यक्तियाँ। यह आम सहमति एक है
अडिग और निर्णायक गवाही.

चौथा बिन्दु: किसी व्यक्ति या वस्तु का सुख, अच्छाई और सुन्दरता
जो उन्हें प्राप्त करते हैं और प्रकट करते हैं उनके अनुसार न्याय किया जाता है, न कि उनके अनुसार
उनके विपरीत। उदाहरण के लिए, उदारता एक सुंदर और प्रशंसनीय गुण है
उदार लोगों को दूसरों की खुशी से कहीं अधिक आनंद मिलता है
दूसरों की तुलना में उदारता में श्रेष्ठ होने के बजाय, जिन पर उन्होंने कृपा की है, उनके प्रति सहानुभूति रखने वाले लोग अधिक प्रसन्न होते हैं। देखभाल करने वाले और दयालु लोग उन लोगों के आराम के अनुपात में अधिक आनंद महसूस करते हैं जिनके लिए वे करुणा महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए,
एक माँ की अपने बच्चों के प्रति करुणा उसे इतना महान और दयालु बनाती है
अपने बच्चों की खुशी और भलाई में उसे इतनी खुशी होती है कि वह लगभग
उनके लिए अपनी जान कुर्बान कर देती है। ऐसी करुणा का सुख तो एक व्यक्ति को भी दुखी कर देता है।
एक मुर्गी ने अपने बच्चे की रक्षा के लिए कुत्ते पर हमला कर दिया।

इस प्रकार, चूंकि प्रशंसनीय का सच्चा आनंद, सौंदर्य और पूर्णता
सद्गुणों और प्रशंसनीय गुणों का मूल्यांकन उसी के अनुसार किया जाता है जिससे
वे संबंधित हैं, अपनी पसंद या विपरीत से नहीं, निश्चित रूप से, की सुंदरता
सुन्दरता, कृपा और पूर्णता से युक्त, सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर, अत्यंत दयालु और देखभाल करने वाला, अत्यंत उदार और कृपालु,
दयालु और दयावान ईश्वर को ध्यान में रखते हुए विचार किया जाना चाहिए।
जिन पर उसकी दया है। खुशी की डिग्री के अनुसार
और उन लोगों की भलाई जिन पर वह अपनी दया करता है, विशेष रूप से उनके
स्वर्ग में उसकी कृपाओं का आनंद लेते हुए, सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय भगवान को वह महसूस होता है जिसे हम पवित्र प्रेम, पवित्र आनंद, पवित्र कहते हैं
उत्साह और पवित्र आनंद। ये सभी बातें उसके पवित्र,
वे पारलौकिक सत्ता हैं, तथा सृष्टि में अपने समकक्षों की तुलना में असीम रूप से महान, अधिक पवित्र, उन्नत और परिष्कृत हैं।

आप इस महान सत्य के व्यापक स्वरूप की एक अभिव्यक्ति देख सकते हैं
निम्नलिखित तुलना के माध्यम से अर्थ: मान लीजिए कि एक दयालु, करुणामय और
एक उदार व्यक्ति कुछ बहुत गरीब, भूखे और बेसहारा लोगों को खाना खिलाना चाहता है।
इसलिए, वह अपने बढ़िया जहाज़ पर एक भोज तैयार करता है और ऊपर से उन्हें देखता है
जब वे खाना खाते हैं तो आप समझ सकते हैं कि उन्हें खाना कितना पसंद आता है
कृतज्ञता और उनकी खुशी में प्रशंसा और धन्यवाद में कृपया और
उस महान और उदार व्यक्ति को प्रसन्न करें।

इसी प्रकार, दयालु और दयावान भगवान ने भी अपने चारों ओर एक अभेद्य व्यवस्था फैला रखी है।
पृथ्वी पर भोजन से भरी विशाल मेज, जिसे वह पृथ्वी पर भ्रमण कराता है।
अंतरिक्ष में रहने वाले सभी लोगों के साथ। वह सभी जीवित प्राणियों को भोजन देता है, जिनमें मुख्य रूप से शामिल हैं
वह इस मेज़ पर रखे खाने से इंसानियत, जिन्न और जानवर को दूर रखता है और अपने भूखे और ज़रूरतमंद बंदों
को जन्नत के सदाबहार बाग़ों में आमंत्रित करता है। वह हर बाग़ को इस तरह सजाता है मानो वह एक शानदार
मेज़ हो जिस पर हर तरह का खाना और पीना रखा हो।
जो शुद्ध आनंद और प्रसन्नता के हैं। आनंद और खुशी पर विचार करें
उपर्युक्त व्यक्ति को अपने मेहमानों के आनंद की अनुभूति होती है, यद्यपि वह
जो कुछ वह अर्पित करता है, उसका वह सच्चा स्वामी नहीं है, और फिर उसकी तुलना सर्व-दयालु द्वारा अनुभव
किए जाने वाले अवर्णनीय पवित्र प्रेम और आनंद से कीजिए।

इस पर भी विचार करें: एक कुशल तकनीशियन कुछ ऐसा आविष्कार करता है
ग्रामोफोन जो बिना रिकॉर्ड के बजता है। अगर यह काम करता है और वांछित परिणाम देता है
यदि परिणाम उत्तम रहे, तो इसके आविष्कारक को कितना गर्व होगा और वह कितना प्रसन्न होगा।
वह बस इतना ही कहेगा, "कितना सुंदर! भगवान इसे आशीर्वाद दें!" सर्व-महान निर्माता ने विशाल ब्रह्मांड
(सामान्य रूप से) और पृथ्वी का आविष्कार किया है
इसमें प्रत्येक प्राणी (विशेष रूप से), विशेष रूप से हमारा सिर, इस प्रकार है
दिव्य ग्रामोफोन या ऑर्केस्ट्रा कि विज्ञान प्रशंसा में खो जाना चाहिए।
प्रत्येक प्राणी अपेक्षित परिणाम को सर्वोच्च सीमा तक तथा सर्वोत्तम तरीके से प्रदर्शित करता है।
बहुत सुंदर तरीके से। सृष्टि और जीवन के ईश्वर के नियमों के प्रति उनकी आज्ञाकारिता,
जिसमें उनकी पूजा, महिमा, और विशिष्ट प्रशंसा और उत्थान, साथ ही उनके जीवन के लिए दिव्य उद्देश्यों की
प्राप्ति शामिल है,
उसे इस हद तक प्रसन्न करना हमारी समझ से परे है।

या यूं कहें कि एक न्यायप्रिय न्यायाधीश को कोई कार्य करने और उसे स्थापित करने में बहुत खुशी मिलती है।
न्याय, और अधिकारों को बहाल करने में सक्षम होने पर बेहद खुश हो जाता है
उत्पीड़ित। वास्तविकता से उत्पन्न पवित्र अर्थों की तुलना इससे करें
कि वह परम न्यायी शासक, वह सर्व-प्रतापी, सर्वशक्तिमान, देता है
सभी प्राणियों को अस्तित्व का अधिकार देता है और आक्रमण के विरुद्ध उनके अस्तित्व और जीवन की रक्षा करता है और उन्हें
बनाए रखता है, ब्रह्मांड में अधिकारों को पुनर्स्थापित करता है, और उनके लिए कार्य करता है
न्याय के साथ। इसके साथ विशेष रूप से उत्पन्न होने वाले पवित्र अर्थों की तुलना करें
इस बात से कि वह आख़िरत में इंसानों और जिन्न का इंसाफ़ करेगा और
पूर्ण न्याय स्थापित करें.

जैसा कि ऊपर दिए गए उदाहरणों में बताया गया है, प्रत्येक दिव्य नाम में कई प्रकार या अर्थ होते हैं। सुंदरता, अनुग्रह और पूर्णता के कई स्तर, साथ ही प्रेम, गर्व, सम्मान, और भव्यता। यही कारण है कि सटीक संत विद्वानों को सम्मानित किया जाता है सर्व-प्रेममय दिव्य नाम के प्रकटीकरण ने निष्कर्ष निकाला है: " ब्रह्माण्ड का सार प्रेम है। सभी प्राणी प्रेम के उद्देश्य से चलते हैं।

आकर्षण, परमानंद और गुरुत्वाकर्षण के सभी नियम प्रेम से उत्पन्न होते हैं।" उनमें से एक यहां तक कहा:

> सारे ग्रह नशे में हैं, फ़रिश्ते और सितारे भी; आकाश, सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी सभी
> नशे में हैं।
> तत्व, पौधे, वृक्ष और मनुष्य सभी नशे में हैं।
> सभी चेतन प्राणी नशे में हैं, और इसी प्रकार सृष्टि के सभी परमाणु भी नशे में हैं।

प्रत्येक प्राणी अपनी क्षमता के अनुसार नशे में है, ईश्वरीय प्रेम की "शराब"। लोग उनसे प्यार करते हैं जो उनके प्रति दयालु होते हैं और साथ ही सच्ची पूर्णता और पारलौकिक सुंदरता। वे उन लोगों से भी प्यार करते हैं जो दयालु हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं और जिन पर उनकी दया है।

इसे देखते हुए, हम समझ सकते हैं कि सर्व-दयालु और सुंदर महामहिम, सर्वप्रिय पूर्णता, जिनके प्रत्येक नाम में दया के असंख्य खजाने हैं, जो उन सभी को खुश करते हैं जिन्हें हम प्यार करते हैं

वह परमेश्वर की कृपा से असंख्य सिद्धियों, सुन्दरता और अनुग्रह के स्तरों का स्रोत है, वह अनन्त प्रेम और सृष्टि के नशे का पात्र है।

उसका प्रेम। यही कारण है कि कुछ संतों को, जिन्हें सर्व-प्रेममय दिव्य नाम के प्रकटीकरण से सम्मानित किया गया है, ने कहा है: "हम यह भी नहीं चाहते कि हम किसी से प्रेम करें।

स्वर्ग। ईश्वरीय प्रेम की एक झलक हमारे लिए हमेशा के लिए पर्याप्त है," और क्यों, जैसा कि पैगम्बर मुहम्मद ने कहा था: "ईश्वर को देखने में बिताया गया एक भी मिनट स्वर्ग की सुन्दरता स्वर्ग की सभी अच्छाइयों से बढ़कर है।"

अतः, पूर्ण प्रेम और प्रेम के माध्यम से प्राप्त पूर्णताएं क्रमशः प्रदर्शित दिव्य एकता और एकत्व के क्षेत्र में संभव हैं।

सम्पूर्ण प्राणियों पर दिव्य नामों की सार्वभौमिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से और व्यक्तियों पर उनकी विशेष अभिव्यक्तियाँ। किसी भी तरह की परिपूर्णता की कल्पना उन क्षेत्रों के बाहर सब झूठ हैं।

पाँचवाँ बिन्दु: गुमराह लोगों का प्रतिनिधि कहता है: "तुम्हारी परम्पराएँ संसार की निंदा करते हुए इसे शरीर कहते हैं। साथ ही, सत्य और संतत्व के सभी लोग इसे बुरा और गंदा मानते हुए इसकी निंदा करते हैं। लेकिन आप कहते हैं कि यह संसार के लिए साधन है सभी दिव्य परिपूर्णताओं की अभिव्यक्ति, और एक प्रेमी की तरह इसके बारे में बात करें।

उत्तर: संसार के तीन पहलू या पहलू हैं। पहला पहलू सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों से संबंधित है और उनके शिलालेख और क्रियाशीलता को दर्शाता है; यह उनका प्रतिबिम्ब है। यह पहलू शाश्वत रूप से मांगे गए ईश्वर के नामों का संग्रह है।

असंख्य "अक्षर।" इसलिए यह अत्यंत सुंदर और योग्य है
प्रेम। दूसरा पहलू परलोक से संबंधित है। यह ईश्वर के लिए बोने का क्षेत्र है।
इसके बाद, स्वर्ग की खेती, ईश्वरीय दया का पुष्प-बिस्तर।
पहली बात तो यह कि यह सुन्दर है और प्रेम के योग्य है।

तीसरा पहलू असावधानी का पर्दा है, जो मानवीय कल्पना और कल्पना का खिलौना है।
इच्छा। यह पहलू बदसूरत है क्योंकि यह नश्वर, दर्दनाक और भ्रामक है, और इस प्रकार
कुरान की परंपराओं ने निंदा की है और सच्चे लोगों ने नापसंद किया है।
सृष्टि की प्रशंसा करता है और इसके प्रथम दो पहलुओं के कारण इसे महत्व देता है।
साथियों और अन्य संतों ने इन दो पहलुओं की तलाश की।

चार समूह के लोग दुनिया की निंदा और निंदा करते हैं।
जो लोग परमेश्वर के ज्ञान से युक्त हैं, वे संसार की निन्दा करते हैं, क्योंकि यह हमारे लिए बाधा उत्पन्न करता है
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के ज्ञान, प्रेम और आराधना के सामने दूसरा
यह समूह उन लोगों से बना है जो सिर्फ़ आख़िरत की तलाश में रहते हैं। वे दुनिया से नफ़रत करते हैं
क्योंकि इसके मामले और व्यवसाय उन्हें आगे बढ़ने से रोकते हैं
इसके बाद गंभीरता से, या क्योंकि उनका दृढ़ विश्वास और दृढ़ विश्वास यह दर्शाता है
स्वर्ग की सुन्दरता और पूर्णता की तुलना में यह बहुत ही बदसूरत है।
पैगंबर जोसेफ की तुलना में पुरुष बदसूरत हैं, उन पर शांति हो, सभी
दुनिया की खूबसूरती और आकर्षण का कोई मतलब नहीं है जब इसकी तुलना दुनिया से की जाए
स्वर्ग। तीसरा समूह, जो दुनिया को जीत नहीं सकते, वे इसकी निंदा करते हैं
दुनिया के प्रति उनके प्रेम के कारण - न कि नापसंदगी के कारण - चौथा समूह दुनिया की निंदा करता है
क्योंकि इसके सदस्य जो कुछ भी पकड़ते हैं वह उनकी पकड़ से फिसल जाता है।
वे क्रोधित हो जाते हैं और दुनिया को कुरूप घोषित करके खुद को सांत्वना देते हैं।
ऐसी निंदा संसार के प्रति प्रेम से भी उत्पन्न होती है। सुखद निंदा उन लोगों से आती है जो परलोक और ईश्वर के ज्ञान से प्रेम करते हैं।

रसूलों के मालिक की खातिर, सर्वशक्तिमान ईश्वर इसमें शामिल हो सकता है
हमें पहले दो समूहों में शामिल करें। अमीन।

तीसरा स्टेशन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

इस तीसरे स्टेशन में दो विषय शामिल हैं।

प्रथम विषय: 'कुछ भी नहीं है लेकिन यह उसकी प्रशंसा के साथ उसकी महिमा करता है' के अर्थ के अनुसार , हर चीज के कई पहलू हैं, जैसे खिड़कियां, खुली हुई हैं
सर्वशक्तिमान ईश्वर पर। सृष्टि में निहित सभी सत्य ईश्वरीय शक्ति पर आधारित हैं
नाम। प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व और आवश्यक प्रकृति ईश्वर के एक या कई नामों के कारण है। वस्तुओं और विज्ञानों में कला की विविधता भी ईश्वर के नामों में से एक है।
ईश्वरीय नाम पर आधारित। उदाहरण के लिए, दर्शन, अपने सच्चे अर्थ में,

सब कुछ उस नाम पर निर्भर करता है जो सर्वज्ञ है, चिकित्सा उस नाम पर जो सर्वरोगनाशक है, तथा ज्यामिति और इंजीनियरिंग उस नाम पर आधारित हैं जो सर्वनिर्धारक, सर्वअनुपात करने वाला, तथा सटीक माप देने वाला है।

जिस प्रकार सभी विज्ञान ईश्वरीय नामों पर आधारित हैं, उसी प्रकार सभी मानव
कलाएं, मानवीय पूर्णता के स्तर, और उन लोगों की उपलब्धियां जो
ज्ञान और कौशल में सबसे उन्नत का स्रोत दिव्य नाम हैं।
कुछ सटीक संत विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है: "वस्तुओं की वास्तविकताएं दिव्य नामों में निहित हैं, और उनकी प्रकृति उन वास्तविकताओं का शिलालेख है।
एक जीवित प्राणी में लगभग बीस दिव्य नामों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। हम इस सूक्ष्म और व्यापक सत्य पर एक पुस्तक के माध्यम से चर्चा करेंगे।
तुलना और विश्लेषण.

जब एक अत्यंत कुशल कलाकार जो चित्रकला और मूर्तिकला में पारंगत हो
एक सुंदर फूल और निष्पक्ष सेक्स के एक सदस्य की तस्वीरें पेंट करना चाहता है और
उन्हें गढ़ने के लिए, वह पहले कुछ रेखाओं द्वारा प्रत्येक का सामान्य आकार निर्धारित करता है।
यह निर्धारण कुछ ज्यामितीय माप और नियोजन पर आधारित है। इसका मतलब है कि माप और नियोजन ज्ञान और

बुद्धिमता या उद्देश्यपूर्णता। ज्ञान और उद्देश्य (या
बुद्धि), कलाकार आंखों, कानों और नाक की बाहरी रेखाएं खींचता है, और
पत्तियों और बीज उत्पादक भागों को आनुपातिक तरीके से काटता है, जिससे भागों के कार्यों या महत्वपूर्ण कर्तव्यों के साथ कलात्मकता और अनुरूपता प्रदर्शित होती है।
यह दर्शाता है कि यह कलात्मक कौशल और कार्यात्मकता ही है जो ज्ञान और उद्देश्य के कम्पास का उपयोग करती है।

कलाकार का कौशल और जीवन द्वारा निर्धारित एक निश्चित उद्देश्य का अनुसरण
शारीरिक अंगों के कर्तव्यों और कार्यों से पता चलता है कि वह उत्कृष्टता का पीछा करता है और
उनकी कला में सुंदरता है। इसलिए, उनकी कृतियाँ - प्रतिमा और फूल - सुंदरता देती हैं
जीवन और खुशी की छाप। इससे पता चलता है कि कलाकार दयालु और
उदार। ये गुण उस पर इस हद तक हावी हैं कि ऐसा लगता है जैसे
फूल एक मूर्त अनुग्रह थे और क़ानून एक मूर्त उदारता थे।
इन विशेषताओं को प्रदर्शित करने का कारण यह है कि कलाकार चाहता है
हर कोई उसे पहचाने और उससे प्रेम करे ताकि वे उसका सहारा ले सकें
जब भी उन्हें आवश्यकता होती है, बिना किसी हिचकिचाहट के, मन से उत्पन्न इच्छा
कलाकार की करुणा और दूसरों को लाभ पहुँचाने की इच्छा। इसलिए, वह प्रतिमा की बाँहों में भर जाता है
और सभी प्रकार की वस्तुओं से भरी जेबें और फूलों में गहने जड़े हुए हैं।
जबकि खुद को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, यह कलाकार की व्यक्तिगत पूर्णता और
सद्गुण जो उसे ये सब करने के लिए प्रेरित करते हैं। करुणा, प्रेम और कोमलता,
जो मानवीय गुणों में सबसे अधिक आनंददायी और मधुर हैं और
पूर्णताएं, दूसरों की खुशी के लिए प्रयास करने में खुद को प्रकट करती हैं और
दूसरों को खुश देखकर सबसे ज़्यादा खुशी मिलती है। संक्षेप में, मानवीय पूर्णता-

प्रेम और सद्गुण दोनों ही सौंदर्य और प्रेम हैं। सौंदर्य और प्रेम का मिलन इसी वास्तविकता से उपजा है। वे दोनों प्यार करते हैं और प्यार पाते हैं और वे दूसरों द्वारा जाने जाना चाहते हैं। इस प्रकार प्रतिमा पर लगाए गए प्यारे उपहार और फूल के रूप में जुड़े अतिरिक्त उपहार कलाकार के गुणों और प्रशंसनीय गुणों को दर्शाते हैं।

इसी तरह, सर्वज्ञ निर्माता अपने नामों को प्रकट करके स्वर्ग और दुनिया, आकाश और पृथ्वी, जानवर, जिन्न और इंसान, फ़रिश्ते और रूह के प्राणी और सभी चीज़ें चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष प्रकृति की, बनाता है, निर्धारित करता है, निर्दिष्ट करता है और आकार देता है। वह प्रत्येक को निश्चित माप के अनुसार निर्धारित करता है और प्रत्येक को एक निश्चित रूप देता है। यह उसके नामों को प्रदर्शित करता है जो सर्व-निर्धारक, सर्व-डिज़ाइन करने वाला और सर्व-निर्माण करने वाला है।

कुछ मापों को निर्धारित करना या देना, डिजाइन करना और गढ़ना ज्ञान और बुद्धि पर आधारित है, और इसलिए दिव्य नामों की ओर इशारा करते हैं, जो सर्वज्ञ और सर्वज्ञानी हैं। वह प्रत्येक चीज़ को ज्ञान और बुद्धि के शासकों के साथ उस रूप के अनुसार गढ़ना शुरू करता है, जो उसने प्रत्येक के लिए निर्धारित किया है। वह ऐसा इस तरह से करता है कि वह पूर्ण कलात्मकता या उत्कृष्ट बनाने के अर्थों को प्रदर्शित करता है। कला के चमकदार हाथ और उदारता के ब्रश के साथ, वह अपने प्राणियों को सभी आवश्यक अच्छी तरह से आनुपातिक भागों से सुसज्जित करता है और प्रत्येक भाग को कई जटिल कार्य देता है। वह मनुष्यों को सुंदर, अच्छी तरह से आनुपातिक आंखें, कान आदि प्रदान करता है, फूल को पंखुड़ियों और पुंकेसर से, पृथ्वी को खनिजों, पौधों और जानवरों से, और स्वर्ग को बगीचों, महलों और हूरों से सुसज्जित और सुशोभित करता है, जिनमें से प्रत्येक की एक विशेष सुंदरता और कार्य है।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता अपने प्राणियों को इस तरह से सुसज्जित करता है और वह इतना दयालु और उदार है कि ऐसा लगता है मानो प्रत्येक सुडौल और समृद्ध रूप से सुसज्जित प्राणी कृपा और उदारता का मूर्त रूप है और वह दयालु और दयालु के नामों का उच्चारण करवाता है। उसकी उदारता और दयालुता को इस तरह के प्रदर्शन की ओर ले जाने वाली चीज़ है प्राणियों के प्रति उसका प्रेम और उसकी इच्छा कि सजीव प्राणी उसे जानें और चेतन प्राणी उससे प्रेम करें। इस प्रकार दयालु और दयालु के नाम सर्व-प्रेमी और सर्व-मान्य या ज्ञात नाम को प्रदर्शित करते हैं।

फिर, वह सभी सुंदर प्राणियों को स्वादिष्ट फलों और मनभावन लाभों और परिणामों से सजाता है, इस तरह से कि वह प्रत्येक सजावट या श्रृंगार को उदारता की वस्तु और अनुग्रह के प्रत्येक कार्य को दया में बदल देता है। यह उदारता देने वाले और दयालु नाम की ओर इशारा करता है, और स्पष्ट पर्दों के पीछे से उनकी अभिव्यक्ति को दर्शाता है। सर्व-स्वतंत्र व्यक्ति की अपनी करुणा और उदारता को प्रकट करने की इच्छा इसलिए है क्योंकि उसके पास अपने प्राणियों के लिए असीम देखभाल, दया और दया है, जो प्राणियों को उनके प्रति दयालु बनाता है।

उस अत्यन्त दयालु, दयावान, दयावान का नाम लो। यह उसी का है।
आवश्यक सौंदर्य और पूर्णता जो उसके अर्थों को उत्तेजित करती है
दयालुता और कृपालुता स्वयं को प्रदर्शित करने के लिए, और नाम का कारण बनने के लिए
वह सर्वसुन्दर, सर्वप्रेममय, सर्वकरुणामय है,
जो इसमें समाहित हैं, उनका पाठ किया जाना चाहिए। परम सौंदर्य अपने आप में प्रिय है,
और वह जो परम सुन्दर है, वह स्वयं से प्रेम करता है। इसलिए यह दोनों ही सुन्दरता है
और प्यार। यह पूर्णता के साथ भी सच है, जिसे अपने आप के लिए प्यार किया जाता है न कि उसके लिए
किसी और चीज के कारण। इसलिए यह प्रेमी और प्रेमिका दोनों है।

चूँकि एक अनंत पूर्णता की सुंदरता और एक अनंत सुंदरता की पूर्णता
असीम सीमा तक प्यार किए जाते हैं, वे खुद को आईने में प्रकट करना चाहते हैं
दर्पण की क्षमता के अनुसार।
सर्व-प्रतापी निर्माता, सर्व-बुद्धिमान सुन्दर, सर्व-शक्तिमान
पूर्णता की, दया, कृपा और देखभाल दिखाने की इच्छा के लिए, सर्व-दयालु और सर्व-दयालु और देखभाल करने वाले नामों को स्वयं प्रकट होना चाहिए। चूँकि
दया, दयालुता और देखभाल दिखाने की इच्छा करुणा से जुड़ी है और
उदारता, यह नामों पर जोर देता है जो दयालु और सब कुछ देने वाले हैं
उदारता प्रकट की जानी चाहिए। करुणा और उदारता दिखाने की ओर ले जाती है
करुणा और जाना जाता है और इसलिए आवश्यकता होती है और नाम का कारण बनता है
सर्व-प्रेममय और सर्व-मान्य या ज्ञात स्वयं को प्रकट करते हैं।

प्यार और पहचान पाने की इच्छा अनुग्रह और करुणा की अभिव्यक्ति को प्रेरित करती है।
उदारता और जीवों को दयालु और दयालु नाम प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित करती है। कृपा और उदारता ईश्वर को उत्तेजित करती है

सजाने और प्रकाशित करने के कार्य करते हैं और इसलिए सर्व-सजाने वाले और सर्व-प्रकाश देने वाले नामों को प्रकट करते हैं और उनके द्वारा उच्चारित करते हैं
प्राणियों में दिखाई देने वाली सुंदरता और रोशनी। सजावट और रोशनी
कलात्मक और परोपकारी बनाने के अर्थ हैं और इसलिए
सभी के द्वारा निर्माता और सर्व-कल्याणकारी के नामों का जाप किया जाना चाहिए
प्राणियों के सुंदर चेहरे। निर्माण और परोपकार पर आधारित हैं
ज्ञान और बुद्धि और सभी प्राणियों को सुव्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण शारीरिक सदस्यों के माध्यम से सर्वज्ञ और सर्वज्ञ के नाम दिखाएं
उनका सामंजस्यपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण संगठन। व्यवस्थित करने या व्यवस्थित करने, गढ़ने और बनाने के कठिन कार्य, ज्ञान और बुद्धि उन नामों को प्रदर्शित करते हैं जो सर्व-निर्माण और सर्व-निर्धारक या दाता हैं

सभी प्राणियों के सामान्य रूपों के माध्यम से मापें।

संक्षेप में, सर्वशक्तिमान निर्माता ने सभी प्राणियों को इस प्रकार बनाया है कि उनमें से अधिकांश,
विशेषकर जीवित प्राणी, ईश्वरीय शक्तियों का अधिकतम प्रदर्शन करते हैं।
नाम। ऐसा लगता है जैसे उसने प्रत्येक प्राणी को बीस अलग-अलग वस्त्र पहनाए हों, एक
एक के ऊपर एक कई नाम अंकित किए। उदाहरण के लिए-

जैसा कि ऊपर की तुलना में बताया गया है, एक सुंदर फूल और मेले के सदस्य की स्पष्ट रचना में प्रेम की कई परतें हैं।
सेक्स। इन दो विशेष उदाहरणों के साथ विशाल और सार्वभौमिक निकायों की तुलना करें।

पहली परत: उनके सामान्य रूप और स्वरूप, जो कहते हैं: "ओ
हे सर्व-निर्माणकर्ता, हे सर्व-निर्धारक, हे सर्व-व्यवस्था करने वाले।

दूसरी परत: उनके रूप और स्वरूप, जिनमें सभी शारीरिक अंग और भाग शामिल हैं, जो सर्वज्ञ और सर्वज्ञानी जैसे कई नाम दर्शाते हैं।

तीसरी परत: प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशेष सौंदर्य और अलंकरण के रूप
शरीर का वह अंग और अंग जिस पर निर्माता जैसे अनेक नाम अंकित हैं
और सर्व-पवित्र सृष्टिकर्ता (वह जो सूक्ष्मता और पूर्णता से सृजन करता है)।

चौथी परत: आभूषण, सौंदर्य और लालित्य का विवरण
मानो वे कृपा और उदारता के साकार रूप में प्राणी हैं। वे कहते हैं: "हे
हे सर्वदयालु, हे सर्वदयालु," और कई अन्य नाम।

पांचवी परत: उस फूल से जुड़े स्वादिष्ट फल और प्यारे
बच्चे, साथ ही उस महिला को उपहार के रूप में दिए गए प्रशंसनीय गुण, दिखाते हैं
सर्व-प्रेमी, सर्व-दयालु, और दान देने वाला जैसे नाम।

छठी परत: उदारता और परोपकार की यह परत कहती है: "हे
हे सर्व-दयालु, हे अत्यंत दयालु और देखभाल करने वाले," और कई अन्य नाम।

सातवीं परत: उन्हें दिए गए इनाम और उनसे जुड़े परिणाम
उनके अस्तित्व में सौंदर्य और अनुग्रह की ऐसी झलक दिखती है कि वे
सच्ची उत्सुकता और कोमलता से भरे शुद्ध आभार और प्रेम के पात्र हैं। यह परत ऐसे नामों को प्रकट करती है जैसे सर्व-सुंदर एक
पूर्णता और सौंदर्य की सर्व-परिपूर्णता।

यदि एक फूल और एक सुंदर स्त्री अपने माध्यम से इतने सारे नाम प्रदर्शित करते हैं
बाह्य रूपों में, आप तुलना कर सकते हैं कि सभी फूल, चेतन प्राणी तथा विशाल एवं सार्वभौमिक शरीर
कितने सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के नाम प्रदर्शित करते हैं।
आप समझ सकते हैं कि ईश्वर के कितने पवित्र, ज्ञानवर्धक नाम हैं (जैसे,
सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर और जीवन-दाता) एक व्यक्ति प्रकट होता है
अपनी आत्मा, हृदय, तर्क, जीवन और अन्य सभी इन्द्रियों और क्षमताओं के माध्यम से।

स्वर्ग, हूरों का समुदाय , पृथ्वी का चेहरा और वसंत ऋतु
सभी फूल। स्वर्ग एक फूल है; सितारे इसकी सोने की कढ़ाई हैं। सूरज
एक फूल है; इसके प्रकाश में सात रंग इसके रंग हैं। ब्रह्मांड एक सुंदर,
वृहत्-मानव; मानवता एक सामान्य-ब्रह्मांड या सूक्ष्म-ब्रह्मांड है।
हूरी, आत्मिक प्राणी, देवदूत, जिन्न और मानवता को इस तरह से गढ़ा, संगठित और रचा गया है मानो वे सुंदर व्यक्ति हों।
और व्यक्तिगत रूप से सभी राजसी प्राणियों के नामों को प्रकट करते हैं, प्रत्येक एक अलग है-

उनकी सुंदरता, पूर्णता, दया और प्रेम के अलग-अलग दर्पण हैं। प्रत्येक उनकी अनंत सुंदरता का एक अलग और सच्चा गवाह है, साथ ही एक अलग संकेत भी है,
पूर्णता, दया और प्रेम। चूंकि ऐसी सभी असीम पूर्णताएं संभव हैं
केवल दिव्य एकता और एकरूपता या विशिष्टता के क्षेत्र में, इस क्षेत्र के बाहर कल्पित कोई भी पूर्णता झूठी है।

इस प्रकार, समझें कि चीजों की वास्तविकताएं ईश्वरीय सत्ता पर आधारित हैं।
नाम, या यूं कहें कि वे उन नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं, और सभी चीज़ें
अपने रचयिता का वर्णन अनेक भाषाओं में करो। और इसका एक अर्थ यह भी जान लो कि कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा से महिमान्वित हो। कह दो : “सर्वमहिमान् हे परमेश्वर!”
वह है जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के माध्यम से छिपा हुआ है।
कारण बताओ कि वह अत्यन्त महिमावान, तत्वदर्शी है, वह अत्यन्त क्षमाशील है।
वह अत्यन्त दयावान है, वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान है।''
कुरान की आयतों के अंत में भी इसी प्रकार के वाक्यांश दोहराए गए हैं।

यदि आप फूल पर अंकित नामों को स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहे हैं, तो इस पर विचार करें:
स्वर्ग, वसंत को ध्यान से देखें, या पृथ्वी के चेहरे का निरीक्षण करें। आप कर सकते हैं
दया के उन विशाल फूलों में अंकित नामों को स्पष्ट रूप से पढ़ें और देखें
नामों की विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ.

दूसरा विषय: बिना किसी समर्थन के छोड़े गए, प्रतिनिधि
गुमराह व्यक्ति अपना असली इरादा बताता है: "चूँकि मुझे सांसारिक सुख मिलता है,
ईश्वर और ईश्वर को नकारने में खुशी और सभ्यता में उन्नति शामिल है
इसके बाद, इस संसार से प्रेम करने में, तथा मानवीय स्वतंत्रता और आत्मविश्वास में,
मैं शैतान की मदद से दूसरों को भी इस रास्ते पर लाता हूँ और ऐसा करता रहूँगा।”

उत्तर: मैं कुरान के नाम पर कहता हूं: हे असहाय साथी, अपने पास आओ।
होश में रहो और गुमराह लोगों के प्रतिनिधियों की बात मत सुनो। अगर तुम ऐसा करते हो,
तुम्हें इतना नुकसान होगा कि आत्मा, मन और हृदय कांप उठेंगे
कल्पना करो। तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं: दुख का रास्ता
गुमराह लोगों के प्रतिनिधि द्वारा प्रस्तुत और खुशी का मार्ग
कुरान में वर्णित है। आप पहले ही कई तुलनाएँ देख चुके हैं
इन दो रास्तों को शब्दों में, मुख्य रूप से पहले नौ छोटे रास्तों में दर्शाया गया है। अब
हजारों में से केवल एक पर ध्यान दो, जो अवसर के अनुकूल हो:

ईश्वर के साथ साझीदार जोड़ने का मार्ग और अन्य प्रकार की गुमराही, और
अपराध और अपव्यय का भाव हमें पतन की अथाह गहराई में ले जाता है। यह हमारी कमज़ोर पीठ पर असहनीय बोझ डालता है और हमारे जीवन पर बोझ डालता है।
असीम दु:ख से भरे दिल। क्योंकि अगर हम पहचान नहीं पाते और अपना भरोसा नहीं रखते
सर्वशक्तिमान ईश्वर में, हम बहुत कमजोर, नपुंसक, असीम रूप से गरीब हो जाते हैं, और
बेसहारा पशु, या दर्द और दु:ख से पीड़ित नश्वर प्राणी,
अनगिनत विपत्तियाँ। हम लगातार पीड़ित हैं, क्योंकि हम सभी से अलग रहते हैं

जिन चीज़ों और लोगों से हम प्यार करते हैं और जिनसे हम जुड़े हुए हैं। अलगाव के दर्द के बीच सभी चीज़ों और लोगों को छोड़कर, हम प्रवेश करते हैं
कब्र की अंधेरी गहराइयों में अकेले।

हम सीमित इच्छाशक्ति, अल्प शक्ति, अल्प जीवन-काल तथा जीवन-शक्ति के साथ व्यर्थ संघर्ष करते हैं।
अनंत दर्द और महत्वाकांक्षा के खिलाफ एक सुस्त दिमाग। हम अपनी अनगिनत इच्छाओं और लक्ष्यों को साकार करने का प्रयास करते हैं, लेकिन बिना किसी उल्लेखनीय परिणाम के। जबकि हम नहीं कर सकते
अपने अस्तित्व का बोझ उठाने के लिए भी हम अपने मन और पीठ पर बोझ डालते हैं
संसार का बोझ। नरक में जाने से पहले ही हम नरक की यातनाएँ झेलते हैं।

इस तरह की दर्दनाक आध्यात्मिक पीड़ा से बचने के लिए, गुमराह लोग बेहोशी को एक तरह की बेहोशी की दवा के रूप में तलाशते हैं। लेकिन वे महसूस करना शुरू कर देते हैं
यह दर्द तब और भी तीव्र हो जाता है जब वे कब्र के पास पहुँच जाते हैं।
सर्वशक्तिमान ईश्वर, वे मानते हैं कि वे स्वयं के स्वामी हैं। हालाँकि, वास्तविकता में,
अपनी सीमित स्वतंत्र इच्छा और तुच्छ शक्ति के साथ, वे अपने लोगों पर शासन नहीं कर सकते
इस अशांत दुनिया में होने के कारण उन्हें कई हानिकारक शत्रुओं का सामना करना पड़ता है
सूक्ष्मजीवों से लेकर भूकंप तक उन पर हमला करने के लिए तैयार हैं। वे कब्र को डर से देखते हैं
और आतंक.

मनुष्य होने के नाते वे मानवता और विश्व से जुड़े हुए हैं।
वे इस बात से इनकार करते हैं कि दुनिया और मानवता किसी के अधिकार में है और उसके अधीन है
वे उस एक पर अपना अस्तित्व और प्रभाव बताते हैं जो सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, दयालु और दानशील है।

जीवन संयोग और प्रकृति पर निर्भर है। और इसलिए दुनिया की भयावह घटनाएँ (जैसे, आक्षेप, भूकंप, महामारी, आपदा, मृत्यु और अकाल) और मानवता की
परिस्थितियाँ और अनुभव हमेशा उन्हें परेशान करते हैं। इसके अलावा, उन्हें अपने दर्द और उन परेशानियों से जूझना पड़ता है जो दूसरे जीव उन्हें देते हैं
पीड़ित।

चूँकि उनके अपने अविश्वास ने ही उन्हें इस शोचनीय स्थिति में पहुँचा दिया है, तो फिर वे कैसे बच सकते हैं?
वे दया और स्नेह के पात्र हैं? यह हमें आठवें वचन की याद दिलाता है
दो भाइयों का दृष्टांत जो दो कुओं में गिर गए। अगर कोई, बिना संतुष्ट हुए
एक बढ़िया भोज के सुखद और वैध आनंद और मनोरंजन के साथ
एक खूबसूरत बगीचे में ईमानदार दोस्तों के बीच, एक अवैध आनंद प्राप्त करने के लिए शराब पीता है और खुद को गंदे जंगल में जंगली जानवरों से घिरा हुआ कल्पना करता है।
यदि वे सर्दी के दिन में किसी स्थान पर खड़े होकर डर के मारे कांपें और चिल्लाएं, तो वे दया के पात्र नहीं होंगे।
क्योंकि वे अपने ईमानदार दोस्तों को जंगली जानवर समझते हैं और उनका अपमान करते हैं। वे स्वादिष्ट भोजन को गंदा समझते हैं; साफ, बढ़िया प्लेट और कटोरों को बेकार, गंदे पत्थर समझते हैं; और
उन्हें तोड़ने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, वे अमूल्य, सार्थक को भी
किताबें जिन्हें उन्हें साधारण, अर्थहीन संग्रह के रूप में पढ़ना और अध्ययन करना है
चादरें फाड़कर फेंक देते हैं। ऐसे लोग न केवल
वे दया के पात्र नहीं हैं, बल्कि दण्ड के पात्र हैं।

इसी प्रकार, अपनी इच्छाशक्ति का दुरुपयोग करने से अविश्वास और पथभ्रष्टता उत्पन्न होती है। ऐसे लोग दावा करते हैं कि सर्वज्ञ निर्माता का विश्व का अतिथिगृह संयोग और प्रकृति का खेल है और दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों को ताज़ा करने का अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद प्राणियों का अदृश्य जगत में स्थानांतरण, पूर्णतया अस्तित्वहीन हो जाना है। साथ ही, वे प्राणियों के महिमामंडन और दिव्य नामों के उच्चारण को मृत्यु और शाश्वत वियोग की पुकार मानते हैं; प्राणियों की चादरें, जिनमें से प्रत्येक शाश्वत रूप से प्रार्थना किए जाने वाले का संदेश है, भ्रमित, अर्थहीन संग्रह हैं; कब्र का द्वार, जो दया की दुनिया में खुलता है, अस्तित्वहीन अंधकारमय दुनिया में खुलता है; और मृत्यु सभी मित्रों और प्रियजनों से अलगाव है - उनके साथ पुनर्मिलन नहीं। इस प्रकार, वे खुद को अत्यंत दर्दनाक दंड देते हैं। चूंकि वे सभी प्राणियों, दिव्य नामों और उनके शिलालेखों और संदेशों को भी अस्वीकार करते हैं, अस्वीकार करते हैं और उनका अपमान करते हैं, इसलिए वे दंड के पात्र हैं। वे किसी भी तरह दया के पात्र नहीं हैं।

तो, गुमराह और अपव्यय के अभागे लोगों, क्या तुम्हारी कोई प्रगति, विकास, विज्ञान, तकनीक और सभ्यता ऐसी भयंकर हानि, पतन और विनाशकारी निराशा की भरपाई कर सकती है? तुम वह सच्चा सांत्वना कहाँ पा सकते हो जिसकी मानव आत्मा को सबसे अधिक आवश्यकता है? कौन सी प्रकृति या कारणता, कौन सी चीज़ जिस पर तुम भरोसा करते हो और जिसके लिए तुम उसके कार्यों, उपहारों और उपकारों को जिम्मेदार ठहराते हो, तुम्हारी कौन सी खोज, आविष्कार, मूर्तियाँ और बुतपरस्ती तुम्हें मृत्यु के अंधकार से बचा सकती है, जिसे तुम शाश्वत विलुप्ति मानते हो? कौन सी तुम्हें कब्र की मध्यवर्ती दुनिया, पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम के स्थान, और पुल के पार शाश्वत सुख के निवास तक ले जा सकती है? चूँकि तुम कब्र का दरवाज़ा बंद नहीं कर सकते, इसलिए तुम्हें इस रास्ते पर यात्रा करने और चलने के लिए बाध्य होना पड़ता है (उल्लेखित स्टेशनों से गुज़रते हुए।) इसे सुरक्षित रूप से यात्रा करने के लिए, तुम्हें उस पर निर्भर होना चाहिए जो उन सभी दुनियाओं और निवासों को आज्ञा देता है और नियंत्रित करता है।

हे अभागे, गुमराह और लापरवाह लोगों। जो प्रेम किसी और के प्रति किया जाता है, वह दुख लाता है। इस दृष्टि से, ईश्वर और उसके गुणों और नामों को जानने और उनसे प्रेम करने के लिए आपको जो प्रेम करने और जानने की क्षमता दी गई है, उसका दुरुपयोग करके आप अपने आप से और दुनिया से प्रेम करते हैं। यह, साथ ही आपके शरीर और शक्तियों का दुरुपयोग जो आपको इसलिए दी गई थी ताकि आप उसकी पूजा और धन्यवाद कर सकें, आपको उचित दंड भुगतने का कारण बनता है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति जो प्रेम होना चाहिए, उसे अपने आप में समाहित करके आप उसके परिणामस्वरूप होने वाली परेशानियों को झेलते हैं। आप अपने द्वारा पैदा की गई अंतहीन परेशानियों को झेल रहे हैं। आप जिसे पूजते हैं, यानी अपनी आत्मा या खुद को, उसे सच्ची शांति और खुशी नहीं देते। चूँकि आप उसे पूर्ण रूप से शक्तिशाली, सच्चे प्रियतम को समर्पित नहीं करते और उसे सौंपते नहीं हैं, इसलिए आप हमेशा दर्द झेलते हैं।

चूँकि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों और गुणों से संबंधित प्रेम को संसार को सौंपते हैं और उनकी कला के कार्यों को कारण और प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, इसलिए आप इसके परिणामस्वरूप होने वाले दर्द को भुगत रहे हैं। जिसे आप प्यार करते हैं वह या तो आपको अलविदा कहे बिना छोड़ देता है या आपको पहचानता नहीं है। अगर वह आपको पहचान भी लेता है, तो भी वह आपसे प्यार नहीं करता। अगर वह आपसे प्यार भी करता है, तो भी वह आपको कोई लाभ नहीं देता। आप हमेशा पुनर्मिलन की आशा के बिना निरंतर अलगाव और मृत्यु से पीड़ित रहते हैं।

यह वह वास्तविकता है जिसे गुमराह लोग जीवन की खुशी और मानवीय पूर्णता, सभ्यता की सुंदरता और स्वतंत्रता का आनंद कहते हैं। व्यभिचार और नशे में धुत्त होना अस्थायी रूप से उस दुख और पीड़ा को छिपा देता है जो अंततः उन पर आने वाली है।

जहाँ तक कुरान के प्रकाश-प्रसारक मार्ग का प्रश्न है, यह गुमराह लोगों के घावों को विश्वास की सच्चाइयों से भर देता है, उनको घेरे हुए अंधकार को दूर कर देता है, तथा गुमराही और विनाश के द्वार बंद कर देता है।

यह मार्ग हमारी कमजोरी, नपुंसकता, गरीबी और ज़रूरतों को दूर करता है, क्योंकि यह हमें करुणामय सर्वशक्तिमान पर भरोसा करने में सक्षम बनाता है। अस्तित्व और जीवन के बोझ को उसकी शक्ति और दया के हवाले करके, हम उनके बोझ से बच जाते हैं; इसके बजाय, हम स्वयं और जीवन को अपने लिए एक बोझ में बदल देते हैं। हम सीखते हैं कि हम सच्चे इंसान हैं और सर्वशक्तिमान के स्वागत योग्य मेहमान हैं, न कि "बोलने वाले जानवर।" दुनिया को सर्वशक्तिमान के अतिथिगृह के रूप में और उसके प्राणियों को ईश्वरीय नामों के दर्पण और शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले ईश्वर की हमेशा-भर्ती गलतियों के रूप में दिखाते हुए, यह दुनिया की क्षणभंगुरता, चीजों के क्षय और नश्वर लोगों के प्रति प्रेम के कारण हमारे सभी घावों को पूरी तरह से ठीक कर देता है। यह हमें सनक और कल्पनाओं के अंधेरे से भी बचाता है। साथ ही, यह जीवन को मृतक मित्रों और प्रियजनों के साथ पुनर्मिलन की प्रस्तावना के रूप में दर्शाता है, यह मृत्यु के घावों को भर देता है, जिसे गुमराह लोग शाश्वत अलगाव मानते हैं, और यह दर्शाता है कि अलगाव वास्तव में पुनर्मिलन है।

क़ुरआन का मार्ग यह सिद्ध करके कि क़ब्र दया की दुनिया, सुख के निवास, स्वर्ग के बाग़ों और दयालु परमेश्वर के प्रकाशमान राज्य की ओर खुलने वाला द्वार है, हमारे सबसे बड़े भय को दूर करता है और दिखाता है कि मध्यवर्ती दुनिया में हमारी यात्रा, जो सबसे निराशाजनक और परेशानी वाली लगती है, वास्तव में सबसे सुखद और उत्साहपूर्ण है। यह दर्शाता है कि क़ब्र ड्रैगन के मुँह की तरह नहीं है, बल्कि ईश्वरीय दया के बाग़ों की ओर खुलने वाला द्वार है। यह विश्वासियों को सूचित करता है:

> अगर आपकी इच्छाशक्ति बहुत सीमित है, तो अपने मामलों को अपने स्वामी की सार्वभौमिक इच्छा पर छोड़ दें। अगर आपकी शक्ति कम और महत्वहीन है, तो परम शक्तिशाली की शक्ति पर भरोसा करें। अगर आपका जीवन छोटा है, तो अनंत जीवन पर विचार करें। अगर आपका मन सुस्त है, तो कुरान के सूरज में आएँ, और विश्वास की रोशनी से देखें, ताकि आपके दिमाग की जगह, जो एक ईश्वर की तरह रोशनी देता है, आ जाए।

जुगनू, कुरान की हर आयत तुम्हें एक चमकते सितारे की तरह रोशनी देती है। अगर आपके पास अंतहीन महत्वाकांक्षा और दर्द, असीम पुरस्कार और अनंत है दया तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। अगर तुम्हारी इच्छाएँ और लक्ष्य असीमित हैं, तो चिंता मत करो, क्योंकि तुम उन सभी को यहाँ प्राप्त नहीं कर सकते। यह केवल यहाँ ही संभव है एक और क्षेत्र, और जो तुम्हें उन्हें देता है वह तुम स्वयं नहीं हो।

और:

आप स्वयं के स्वामी नहीं हैं, बल्कि एक असीम शक्तिशाली के स्वामी हैं और असीम दयालु महामहिम। इसलिए, परेशान मत हो अपने अस्तित्व और जीवन को अपने कंधों पर रखकर, उस एक के लिए जिसने तुम्हें जीवन दिया है और जो तुम्हें नियंत्रित करता है, वही है। और, संसार भी वही है। बिना मालिक के। इसलिए इसकी स्थिति के बारे में सोचकर चिंतित न हों और उस बोझ को अपने मन पर मत डालो, क्योंकि दुनिया का मालिक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ है। तुम उसकी दुनिया में उसके मेहमान हो, इसलिए उस पर ध्यान मत दो। जो आपकी शक्ति और जिम्मेदारी से परे है, उसमें हस्तक्षेप न करें। मानवता और पशुओं जैसे जीवित प्राणियों को उनके हाल पर नहीं छोड़ा जाता। बल्कि, वे अधिकारी हैं जिन्हें कुछ कर्तव्य सौंपे गए हैं और वे एक सर्वज्ञ, सर्वदयालु व्यक्ति द्वारा नियंत्रित और अनुग्रहित हैं। उनसे कहीं ज़्यादा दया है, जितना तुमसे है। सूक्ष्म जीवों से लेकर विपत्तियाँ, बाढ़, सूखा और भूकंप जैसी आपदाएँ, जो दिखने में आपके, सभी चीज़ों और प्राणियों के लिए प्रतिकूल हैं। सभी घटनाएँ उस दयालु, परमज्ञानी के द्वारा नियंत्रित और संचालित होती हैं। वह परमज्ञानी है, इसलिए वह कोई भी काम व्यर्थ नहीं करता। वह अत्यंत दयालु है जिसके प्रत्येक कार्य में एक प्रकार की कृपा निहित है।

इसमें आगे कहा गया है:

यह क्षणभंगुर दुनिया परलोक की आवश्यकताएं पूरी करती है। क्षय होता है, लेकिन अनन्त फल देता है और एक सर्व-स्थायी प्रदर्शित करता है किसी के शाश्वत नाम। अपने कुछ सुखों के बदले में, यह किसी को भी बहुत से दुख और कष्ट सहते हैं। हालाँकि, दयालु, दयावान की कृपाएँ सच्ची और स्थायी सुखदायी होती हैं, और इसके कष्टों से व्यक्ति को अनेक आध्यात्मिक पुरस्कार प्राप्त होते हैं। आत्मा के आनंद और सुख के लिए पर्याप्त है, साथ ही साथ हृदय और शारीरिक आत्मा, इसलिए जो अवैध है उसमें प्रवेश न करें। किसी भी अवैध सुख के परिणामस्वरूप अनेक पीड़ाएं होती हैं और व्यक्ति को हानि होती है। दयालु परमेश्वर के अनुग्रह, जो शुद्ध, स्थायी सुख हैं।

गुमराही मानवता को इतना गिरा देती है कि कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति, वैज्ञानिक विकास या मानव सभ्यता और प्रगति लोगों को अंधकार के उस गहरे गड्ढे से बाहर नहीं निकाल सकती। यह केवल बुद्धिमानीपूर्ण कुरान ही है जो इसे बाहर निकालता है। हमें सबसे निचले गड्ढे से निकाल कर सर्वोच्च पद पर पहुंचाता है विश्वास और धार्मिक कार्यों के माध्यम से। यह उस गहरे गड्ढे को भर देता है आध्यात्मिक प्रगति के चरण और आध्यात्मिक पूर्णता के साधन।

कुरान हमें अनंत काल की ओर हमारी लंबी, कष्टदायक और तूफानी यात्रा में भी मदद करता है। यह हमें बताता है कि एक दिन में इस दूरी को कैसे पार किया जाए

जिसे पूरा करने में सामान्यतः पचास हज़ार साल लगते हैं।
सर्व-महान् प्राणी को जानो, समस्त अनंत काल के राजा को, यह सम्मान देता है
वह हमें अपना कर्तव्यनिष्ठ सेवक और अतिथि बनाता है और हमारे लिए सुरक्षा प्रदान करता है
दुनिया भर में और के माध्यम से आसान और आरामदायक यात्रा
कब्र और परलोक की मध्यवर्ती दुनिया के भवन।

जिस प्रकार राजा का धर्मपरायण, कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी उसके राज्य में सुरक्षित रूप से, परिवहन के सबसे तेज साधनों के माध्यम से यात्रा करता है, और आसानी से प्रांतीय सीमाओं को पार करता है, उसी प्रकार जो लोग विश्वास के साथ-साथ शाश्वत राजा से जुड़े हैं, वे भी आसानी से अपने राज्य की सीमाओं को पार कर सकते हैं।
जो लोग धार्मिक कार्यों के माध्यम से उसकी आज्ञाकारिता दिखाते हैं, वे यात्रा करते हैं
स्टेशनों और दुनिया की सीमाओं और क्षेत्रों के पार

कब्र और उसके बाद बिजली या बुराक की गति से ,

जन्नत। ऐसे लोगों को हमेशा की खुशी मिलती है। कुरान इस बात की सच्चाई साबित करता है

यह बात शुद्ध धार्मिक विद्वान और संत स्पष्ट रूप से देखते हैं।

कुरान में भी कहा गया है:

ऐ ईमानवालो, अपनी ईश्वर प्रदत्त प्रेम करने की असीम क्षमता को व्यर्थ मत करो।
अपनी बदसूरत, दोषपूर्ण, बुरी और हानिकारक शारीरिक आत्मा पर। इसकी पूजा मत करो
या उसकी इच्छाओं और कल्पनाओं का पालन करें जैसे कि वह पूजा की वस्तु हो, लेकिन
इसे उस एक की ओर निर्देशित करो जो अनंत प्रेम का पात्र है, जो तुम्हारा अनंत भला करता है और
तुम्हें अनंत सुखी बनाता है; जो अपने प्रेम के द्वारा
एहसान उन लोगों को खुश करता है जिनके साथ आपके संबंध हैं और
जिसकी प्रसन्नता तुम्हें प्रसन्न करती है; जो अनंत पूर्णता और अनंत पवित्र, पारलौकिक, शुद्ध, पूर्ण
और अविनाशी सौंदर्य से युक्त है;
जिनके प्रत्येक नाम से सौंदर्य और कृपा की असंख्य ज्योतियां निकलती हैं;
जिसकी दया की सुंदरता और जिसकी सुंदरता की दया प्रदर्शित होती है
स्वर्ग में; और जिसकी सुंदरता और पूर्णता सभी सौंदर्य, अनुग्रह,
और ब्रह्माण्ड में पूर्णता, जो प्रेम करने योग्य हैं, संकेत और संकेत देती हैं।
उससे प्रेम करो और उसे अपनी पूजा का एकमात्र उद्देश्य बनाओ।

इसके अलावा इसमें कहा गया है:

हे मानवता, अपनी प्रेम करने की असीम क्षमता का उपयोग मत करो, जो
तुम्हें उसके नामों और गुणों से प्रेम करने, अनित्य प्राणियों से प्रेम करने की शक्ति दी गई है। उसके
अलावा जो कुछ भी विद्यमान है, वह क्षणभंगुर है, जबकि
नश्वर प्राणियों पर प्रदर्शित दिव्य सर्वसुन्दर नाम स्थायी हैं
और स्थिर। प्रत्येक नाम और विशेषता में हज़ारों डिग्री होती हैं
अनुग्रह और पूर्णता और प्रेम के हज़ारों स्तर। विचार करें,
उदाहरण के लिए, दयालु का नाम: स्वर्ग इसकी अभिव्यक्तियों में से एक है, शाश्वत खुशी इसकी
चमक में से एक है, और सभी प्रावधान और
सांसारिक प्राणियों पर किये गये उपकार उसकी एक बूँद मात्र हैं।

यह देखने के लिए कि कुरान इन दोनों के बीच अंतर कैसे व्यक्त करता है

तो विचार करो कि हमने मनुष्य को उत्तम जाति का बनाया है,
फिर हमने उसे सबसे नीची श्रेणी में पहुंचा दिया, सिवाय उन लोगों के जो

ईमान लाओ और अच्छे और अच्छे कर्म करो (95:4-6); और न तो आकाश और न ही
पृथ्वी उनके विनाश पर रो पड़ी (44:29)। देखिए किस शानदार और चमत्कारी शैली में वे अंतर को व्यक्त करते हैं! पहले की विस्तृत व्याख्या
यह श्लोक ग्यारहवें वचन में पाया जा सकता है। यहाँ हम कुछ टिप्पणियाँ प्रस्तुत करते हैं
दूसरे श्लोक में निहित उच्च सत्य पर, जो स्पष्ट रूप से बताता है
कि जब अविश्वासी मरते हैं तो आकाश और पृथ्वी रोते नहीं।
इसका तात्पर्य यह है कि जब विश्वासी मरते हैं तो आकाश और पृथ्वी रोते हैं।

अविश्वासी लोग आकाश और पृथ्वी का अर्थ नहीं जानते,
अपने निर्माता को नहीं पहचानते, अपने कर्तव्यों को नकारते हैं, और इस प्रकार अपना मूल्य कम कर देते हैं।
इस तरह के अपमान और शत्रुता से आकाश और पृथ्वी प्रसन्न होते हैं
जब ऐसे लोग मरते हैं, तो वे रोते हैं, क्योंकि विश्वासी जानते हैं कि
आकाश और पृथ्वी के कर्तव्यों को पहचानो और उनकी वास्तविकता की पुष्टि करो।
उनका विश्वास उन्हें इन अर्थों के बारे में बताता है, वे कहते हैं: "उन्हें कितनी खूबसूरती से बनाया गया है। वे अपने कर्तव्यों को कितनी अच्छी तरह से निभाते हैं।" विश्वासी
उनके मूल्य को स्वीकार करें और तदनुसार उनका सम्मान करें। वे प्यार भी करते हैं
वे और वे नाम जिनके वे दर्पण हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम में प्रतिबिंबित होते हैं।
और इसलिए आकाश और पृथ्वी उनके लिए शोक करते हैं।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न: प्यार करना स्वैच्छिक नहीं है। मेरे अंदर एक स्वाभाविक गुण है
स्वादिष्ट भोजन और फलों, अपने माता-पिता और बच्चों, अपने जीवनसाथी से प्यार करने की ज़रूरत है
और दोस्त, नेक लोग, जीवन, जवानी, यह दुनिया, वसंत, और सुंदर
बातें। मुझे क्यों नहीं करनी चाहिए? मैं प्यार के ऐसे सभी उदाहरणों को कैसे अपना सकता हूँ
क्या केवल ईश्वरीय सत्ता और उसके नाम व गुणों तक ही सीमित रहना चाहिए?

उत्तर: निम्नलिखित चार बिंदुओं को सुनें।

पहला बिंदु: चाहे प्रेम कितना भी अनैच्छिक क्यों न हो, आप इसे किसी खास वस्तु की ओर निर्देशित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अपने आप को यह विश्वास दिलाकर कि कोई चीज़ प्रिय है
बदसूरत, या सच्चे प्यार के योग्य वस्तु के लिए एक बाधा या केवल एक दर्पण,
प्रेम की इस भावना को प्रेम की सच्ची वस्तु की ओर मोड़ा जा सकता है।

दूसरा बिंदु: आप ऐसी चीज़ों से प्रेम कर सकते हैं, लेकिन ऐसा सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अनुग्रह में करें।
नाम और उसके प्रेम के खातिर। स्वादिष्ट भोजन और फलों से प्रेम करना क्योंकि वे
सर्वशक्तिमान ईश्वर, दयालु और दयावान के उपकार और वरदान हैं, इसका अर्थ है दयालु और फल देने वाले ईश्वर के नामों से प्रेम करना।
यह एक तरह का धन्यवाद है। प्रेम, जब दयालु ईश्वर में किया जाता है
वैध कमाई से व्यक्ति का नाम झलकता है, न कि शारीरिक आत्मा का नाम,
जो वैध है, उससे संतुष्ट रहना, तथा कृतज्ञता और आत्मचिंतन में डूबे रहना।

दया और करुणा की खातिर अपने माता-पिता से प्रेम करना और उनका आदर करना।
बुद्धि जिसने उन्हें स्नेह और कोमलता से सुसज्जित किया, और जिसने उन्हें ऊपर उठाया
आप उनके दयालु हाथों के माध्यम से, भगवान के प्यार में शामिल हैं। अगर ऐसा किया जाए
सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए, आपको अपने माता-पिता को और अधिक प्यार दिखाना चाहिए,

सम्मान और देखभाल तभी करें जब वे केवल आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं ।
यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे पास बुढ़ापे में पहुँच जाएँ, तो उनसे "उफ़" न कहना (17:23)
जो बच्चों को पांच तरीकों से अपने माता-पिता से प्यार करने और उनका सम्मान करने के लिए कहता है
डिग्री, दिखाती है कि कुरान की नज़र में माता-पिता के अधिकार कितने महत्वपूर्ण हैं
और संतानोचित कृतघ्नता कितनी अपमानजनक और घृणित है।

चूँकि एक पिता आमतौर पर चाहता है कि उसके बच्चे उससे बेहतर हों, इसलिए बच्चे
उसके खिलाफ अधिकारों का दावा नहीं किया जा सकता। विवाद का कोई उचित कारण नहीं हो सकता
माता-पिता और बच्चों के बीच विवाद या तो ईर्ष्या से या अधिकारों के उल्लंघन से उत्पन्न होता है। एक पिता कभी भी
अपने बच्चों से ईर्ष्या नहीं करता है, और बच्चे दावा नहीं कर सकते
उनके खिलाफ़ अधिकार हैं। भले ही वे उनके साथ किए गए व्यवहार को गलत मानते हों, लेकिन वे
जो लोग विद्रोह करते हैं या जो उसे परेशान करते हैं, वे क्रूर और कृतघ्न हैं।

अपने बच्चों को अत्यंत सावधानी और करुणा के साथ प्यार करना, जैसा कि वे हैं
सर्वशक्तिमान दयालु और सर्व-उदार भगवान के उपहार, किसी के जीवन में शामिल हैं
सर्वशक्तिमान परमेश्वर का प्रेम। इस प्रेम का संकेत यह है कि यह परमेश्वर के लिए है
उनकी मृत्यु पर धैर्य रखना चाहिए और निराशा में विलाप नहीं करना चाहिए तथा भाग्य के विरुद्ध विद्रोह नहीं करना चाहिए। हमें ईश्वर के प्रति समर्पित होना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि न्याय का अधिकार केवल उन्हीं को है, तथा सोचना चाहिए: "मेरा बच्चा एक प्यारा प्राणी था
भगवान जिसे उसने मेरी हिरासत में रखा था। उसकी बुद्धि ने उसे लेने की मांग की
बच्चे को मुझसे दूर ले जाओ और उसे कहीं बेहतर जगह पर ले जाओ। भले ही मेरा एक स्पष्ट हिस्सा हो
उस दास में हजारों सच्चे हिस्से उसके हैं।”

दोस्तों के प्रति आपका प्यार, उनके विश्वासी मित्र होने के कारण
सर्वशक्तिमान ईश्वर जो प्रेम के सिद्धांत के अनुसार अच्छे कर्म करते हैं
परमेश्वर के लिए प्रेम करना भी परमेश्वर के प्रेम में शामिल है। इसके अलावा, यह बात सच है
वह प्रेम जो आप अपने जीवनसाथी, अपने जीवन साथी के लिए महसूस करते हैं, क्योंकि वह
ईश्वरीय दया का एक मधुर अनुग्रहपूर्ण उपहार है। अपना दिल उसकी या उसकी इच्छा पर मत लगाओ
उसकी क्षणिक सुन्दरता.

एक महिला का सबसे बड़ा आकर्षण और सुंदरता उसके प्यारे अच्छे आचरण में निहित है
नारीत्व के लिए विशेष दयालुता और अनुग्रह के साथ, और
उसकी उच्च, गंभीर और सच्ची करुणा। करुणा और करुणा की वह सुंदरता
उसके अच्छे आचरण में वृद्धि उसके मरने तक होती है। यह उसके प्रति प्रेम और सम्मान के माध्यम से होता है
करुणा और अच्छे आचरण से व्यक्ति अपने अधिकारों का अंत तक पालन कर सकता है।
उसे उसकी शारीरिक सुंदरता के कारण प्यार किया जाता है, उसे उसके अधिकारों से वंचित किया जाता है और
उस समय उसे जो प्यार और सम्मान मिलना चाहिए, वह भी तब जब उसे इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

पैगम्बरों और संतों जैसे सद्गुणी लोगों से प्रेम करना क्योंकि वे
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वीकृत सेवक, और उसके नाम पर और उसके खातिर, हैं
उसके प्रेम में शामिल है। यदि आप अपने जीवन से प्रेम करते हैं क्योंकि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए दी गई सबसे मूल्यवान पूंजी है, एक खजाना है जिसके साथ सभी प्रकार के गुणों और सिद्धियों को प्राप्त करने की क्षमताएँ हैं, और यदि आप

उसकी सेवा में खर्च करो, तो यह प्रेम सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रेम में सम्मिलित हो जाता है, सर्व पूज्य। युवावस्था का चरम सुख प्रिय है, क्योंकि वह मधुर है, सर्वशक्तिमान ईश्वर का यह उत्तम उपहार है, और इस प्रकार इसे उसके कार्य में खर्च करना, कृतज्ञता से जुड़ा एक प्रकार का वैध प्रेम है।

प्रकृति से आत्मचिंतनपूर्वक प्रेम करें, विशेष रूप से वसंत ऋतु में, क्योंकि यह एक लोक है सर्व-बुद्धिमान निर्माता के प्रकाश-फैलाने वाले नामों के सबसे सुंदर शिलालेख और उनकी कला के सबसे शानदार और अलंकृत कार्यों को प्रदर्शित करते हुए, सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों से प्रेम करना। यदि आप संसार से केवल इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि यह परलोक के लिए बोने का खेत है, दिव्य नामों का दर्पण है, सर्वशक्तिमान ईश्वर के संदेशों का संग्रह, और उनका एक अस्थायी अतिथिगृह, तो यह प्रेम भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम में है - बशर्ते आप इसके अधीन न हों आपकी शारीरिक आत्मा का प्रभाव.

संक्षेप में, संसार और उसके प्राणियों से प्रेम करो, न कि केवल अपने लिए, बल्कि अपने लिए भी। उनके रचयिता का नाम और उनका अर्थ मत कहो: "कैसे वे कितने सुन्दर हैं!" बल्कि कहो: "वे कितने सुन्दर ढंग से बनाए गए हैं!" अपने दिल में उससे प्यार मत करो जो परमेश्वर नहीं है। जो वह नहीं है, क्योंकि हृदय शाश्वत प्रयत्न का दर्पण है और हे परमेश्वर, मुझे अपना प्रेम और अपना प्रेम प्रदान करो। वह प्रेम जो मुझे तेरे निकट ले आएगा।"

और इसलिए यदि अब तक बताए गए सभी प्रकार के प्रेम ईश्वर के नाम पर हैं, तब वे पीड़ारहित, शुद्ध आनंद देते हैं और एक ऐसे मिलन का साधन होते हैं जो अलगाव की अनुमति नहीं देता। इसके अलावा, वे परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम को बढ़ाने का कारण बनते हैं और इसे कृतज्ञता माना जा सकता है जो शुद्ध आनंद और प्रतिबिंब देता है वह स्वयं शुद्ध प्रेम है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई महान राजा अपनी उपस्थिति में आपको एक सेब देता है, तो आप दो तरह की खुशियाँ मिलेंगी और दो तरह का प्यार महसूस होगा। पहला प्रकार सेब के प्रति आपका प्रेम इसलिए है क्योंकि वह एक सेब है। इस प्रकार आपको उतना ही मिलता है सेब जितना आनंद दे सकता है। ऐसा प्रेम राजा के नाम पर नहीं है, बल्कि यह आपके खुद के प्रति प्रेम से उत्पन्न होता है, क्योंकि आप सेब से इसलिए प्यार करते हैं क्योंकि यह आपको आनंद देता है। इस तरह का आनंद क्षणिक होता है और सेब खाने के बाद खत्म हो जाता है, और अपने पीछे आनंद के खत्म होने का अफसोस छोड़ जाता है। इसके अलावा, राजा भी इस रवैये से प्रसन्न नहीं हो सकता।

दूसरे प्रकार का सुख और प्रेम सीधे राजा से संबंधित है। आप सेब से प्यार करते हैं और उसका सम्मान करते हैं क्योंकि यह शाही प्रशंसा का प्रतीक है तुम्हारे लिए, तो यह प्रेम राजा के नाम पर और उसके लिए है। ऐसी प्रशंसा से मिलने वाली खुशी, प्रशंसा से मिलने वाली खुशी से कहीं अधिक होती है। सेब खाओ। ऐसा रवैया राजा के प्रति उसके उपहार के लिए शुद्ध आभार है, और सेब के प्रति दिखाया गया प्रेम स्वयं राजा के प्रति आदरपूर्ण प्रेम है।

इसी तरह, प्रेमपूर्ण उपहार - सभी खाद्य पदार्थ और फल - हमें इसलिए दिए गए क्योंकि
वे खुद से प्यार करते हैं और जो आनंद देते हैं वह शारीरिक प्रेम है, क्योंकि यह शारीरिक आत्मा के लिए है। खाने-पीने से मिलने वाला आनंद क्षणिक है
और दर्द से मिश्रित। यदि आप उन उपहारों से प्रेम करते हैं जो आपको इसके कारण प्राप्त होते हैं
उनका ईश्वरीय दया का अनुग्रह और ईश्वरीय उदारता का फल होना और
परोपकार, और यदि आपको उनसे खुशी मिलती है और भूख है
उनके लिए यह प्रेम, उनके अन्दर विद्यमान ईश्वरीय कृपा की सराहना के रूप में, शुद्ध कृतज्ञता और बिना किसी पीड़ा के शुद्ध आनंद है।

तीसरा बिन्दु: ईश्वरीय नामों के प्रति प्रेम की कई डिग्री और स्तर होते हैं।
जैसा कि ऊपर बताया गया है, कभी-कभी आप दिव्य नामों से प्रेम करते हैं क्योंकि आप प्रेम करते हैं
ब्रह्मांड में उनके कार्य, और कभी-कभी क्योंकि वे दिव्य उपाधियाँ हैं
परिपूर्णता। कभी-कभी ऐसा होता है कि आप अपनी वजह से असीमित ज़रूरतों में होते हैं
व्यापक प्रकृति और दिव्य नामों से प्रेम करो, जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए, जब आप अपने रिश्तेदारों या गरीब, कमजोर और जरूरतमंद प्राणियों के लिए पूरी तरह निराश होकर मदद मांग रहे होते हैं, तो कोई अप्रत्याशित रूप से प्रकट होता है।
और उनके लिए वही करता है जो आप उनके लिए करना चाहते हैं। आपको कितना अच्छा लगेगा
ऐसे व्यक्ति की उदारता और परोपकार के लिए हमेशा आभारी रहें
उन गुणों के लिए उसे क्या सम्मान दिया जाए? इसी प्रकार, केवल दयालु और दयावान नामों पर ही विचार करें। इन नामों की अभिव्यक्ति के रूप में,
सर्वशक्तिमान ईश्वर आपके विश्वासी माता-पिता और पूर्वजों के साथ-साथ आपके विश्वासी पिता और पुत्र पर भी कृपा करता है।
इस संसार में अपने मित्रों और प्रियजनों को अपनी सारी कृपाओं सहित। वह भी
तुम और वे दोनों स्वर्ग में, अनन्त सुख की दुनिया में, सभी प्रकार के सुखों के साथ खुश रहें और तुम्हें एक साथ लाएँ। इस प्रकार, तुम दोनों खुश रह सकते हो।
समझो कि ये दोनों नाम तुम्हारे प्रेम के कितने योग्य हैं,
आपकी आत्मा को उनकी कितनी ज़रूरत है, और यह कहना कितना उचित और ज़रूरी है: “सब
स्तुति और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है क्योंकि वह अत्यंत दयालु और करुणामय है।”

इसके अलावा, इसके जीव-जंतु इसके मिलनसार निवासी और प्यारे आभूषण हैं, जिनके साथ आप गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं और जिनकी दुर्दशा के लिए आप दुखी होते हैं, दुनिया आपके लिए एक घर की तरह है। प्रतिबिंब के माध्यम से, आप
यह महसूस कर सकते हैं कि आपकी आत्मा कितना प्यार करती है और आपको किस हद तक इसकी आवश्यकता है
जिसने संगठित किया है, उसके सर्वज्ञ और सर्वपालक का नाम बताता है
दुनिया और उसके जीवों को नियंत्रित करता है, विकसित करता है, और उन्हें बनाए रखता है
परिपूर्ण बुद्धि। आप यह भी समझ सकते हैं कि आपकी आत्मा को किस हद तक इसकी ज़रूरत है
वह उत्तराधिकारी, सर्व-जीवन देने वाला, सर्व-स्थायी, सर्व-उदार, सर्व-पुनर्जीवित करने वाला, और सर्व-कल्याणकारी है, जो
उन सभी लोगों को साथ लाता है जिनसे आप जुड़ाव महसूस करते हैं और जिनकी मृत्यु पर आप दुखी होते हैं

दु:खी हैं, अनन्त विलुप्ति के अंधकार से बाहर निकालते हैं और उन्हें एक में बसाते हैं
इस दुनिया से कहीं अधिक सुन्दर जगह.

चूँकि हम मनुष्य, व्यापक प्रकृति वाले महान, उन्नत प्राणी हैं, हमारी अंतहीन आवश्यकताएं और आकांक्षाएं हमें अनेक प्रकार के प्रकटीकरणों में एक हजार एक दिव्य नामों की आवश्यकता में डालती हैं।

मिश्रित या तीव्र आवश्यकता उत्सुकता है, मिश्रित या तीव्र उत्सुकता
प्रेम, और मिश्रित या तीव्र प्रेम आराधना है। डिग्री के अनुपात में
आत्मा की पूर्णता के अनुसार, प्रेम बढ़ता है और बढ़ता है
दिव्य नामों की अभिव्यक्ति के स्तर। चूँकि नाम उपाधियाँ हैं
जिसके द्वारा वह महान् पुरुष स्वयं को प्रकट करता है, सभी नामों के प्रति प्रेम उसमें बदल जाता है
दिव्य सत्ता के प्रति प्रेम में। हजारों स्तरों की अभिव्यक्तियों में से
यदि आप उन नामों को देखना चाहते हैं जो न्यायी, विवेकशील, सत्य और दयालु हैं, तो हम उनमें से एक का उदाहरण इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं: यदि आप उन नामों को देखना चाहते हैं जो न्यायी,

विवेकशील, सत्य और दयालु हैं,

और (परम) सत्य को बुद्धि और न्याय में पूर्ण अभिव्यक्ति देते हुए, निम्नलिखित तुलना पर विचार करें: मान लीजिए कि चार सौ लोगों की एक सेना है
कंपनियाँ। प्रत्येक कंपनी के पास अद्वितीय वर्दी, राशन, हथियार और
दवाइयाँ। यदि ये कंपनियाँ एक-दूसरे के साथ मिश्रित हैं, तो प्रत्येक की विशिष्टता पर विचार किए बिना, और फिर भी, उनकी परिपूर्णता से बाहर
करुणा और अपनी असाधारण शक्ति और चमत्कारिक रूप से व्यापक ज्ञान के साथ, और अत्यंत न्याय और बुद्धि के साथ, एक अद्वितीय राजा
प्रत्येक को अद्वितीय वर्दी और हथियार प्रदान करता है और उन्हें प्रदान करता है
यदि आप बिना किसी गलती या मदद के उचित भोजन और दवाइयाँ देते हैं, तो आप समझ सकते हैं कि वह कितना शक्तिशाली, दयालु, न्यायप्रिय और उदार राजा है।

इसी प्रकार, यदि आप दिव्य नामों का प्रकटीकरण देखना चाहते हैं
(परम) सत्य, दयालु, बुद्धि और न्याय में परम करुणामय, तुम पौधों और जानवरों की शानदार सेनाओं को देख सकते हो,
जिसमें अनगिनत अलग-अलग परिवार, वंश और प्रजातियां शामिल हैं।
ये वसंत में पृथ्वी के चेहरे पर अपने तंबू स्थापित करते हैं, असीम रूप से मिश्रित होते हैं
एक दूसरे के साथ, और फिर भी अद्वितीय वर्दी, प्रावधान, हथियार,
निर्देश, जीवन शैली, और विमुद्रीकरण। हालाँकि उनके पास कोई नहीं है
अपनी ज़रूरतों को कहने के लिए ज़बान तो है पर उन्हें पूरा करने की शक्ति नहीं, देखिए
वह परम सत्य नाम वाला, दयालु,
वह सर्व-प्रदाता, अत्यन्त दयावान, तथा सर्व-दानी परमेश्वर पूर्ण न्याय और बुद्धि के साथ उन्हें प्रदान करता है, उनका पालन-पोषण करता है और उनका पालन-पोषण करता है, तथा उनमें से किसी को भी भ्रमित या विस्मृत नहीं करता।

क्या यह संभव है कि इस अद्भुत क्रम में कोई और हाथ भी शामिल हो सके?
क्या हम एक सम्पूर्ण माप और संतुलन पर आधारित सर्व-व्यापक संगठन बना सकते हैं?

एकता के अद्वितीय, पूर्णतया बुद्धिमान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अतिरिक्त और कौन है? सर्वशक्तिमान, इस कला, इस नियमन और शासन में हिस्सा ले सकता है, और यह पालन-पोषण और बनाए रखना?

चौथा बिंदु: आप पूछते हैं: "मेरे प्यार के क्या उपयोग और परिणाम हैं?" भोजन, और मेरा आत्म-सम्मान, जीवनसाथी, माता-पिता, बच्चे और मित्र, और सद्गुणी लोगों के लिए, वसंत और दुनिया जैसी खूबसूरत चीजें अगर उस प्रेम को होना ही चाहिए क्या यह कुरान के आदेशों के अनुरूप है?

उत्तर: सभी उपयोगों को समझाने के लिए एक व्यापक पुस्तक की आवश्यकता होगी और ऐसे प्रेम के परिणाम। इसलिए मैं खुद को केवल यह बताने तक सीमित रखूँगा यहाँ इसके तात्कालिक और स्थायी परिणामों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है। इसका परिणाम परलोक में होता है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, शारीरिक आत्मा के नाम पर कोई भी प्रेम, जैसे कि सांसारिक, असावधान लोग, इस संसार में बहुत पीड़ा, परेशानी और कष्ट का कारण बनते हैं दुनिया में जो सहजता, आनंद और आनन्द मिलता है, वह बहुत कम है। उदाहरण के लिए, करुणा एक पीड़ादायक व्यथा में बदल जाती है क्योंकि आप कुछ नहीं कर सकते। वियोग के कारण प्रेम एक विनाशकारी भावना बन जाता है। एक ज़हरीले पेय की तरह क्योंकि यह क्षणभंगुर है। चूँकि ऐसा प्रेम सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर प्रेम नहीं, यह परलोक में बेकार होगा। इसके अलावा, यह यदि यह प्रेमी को अवैध लेन-देन में धकेल देता है तो यह पीड़ा लाएगा।

प्रश्न: पैगम्बरों और संतों के प्रति हमारा प्रेम कैसे निष्फल हो जाता है?

उत्तर: पैगम्बरों और संतों के प्रति प्रेम, जैसा कि अन्य धर्मावलम्बियों में पाया जाता है। ईसाई जो त्रिदेवों में विश्वास रखते हैं, तथा राफिदी (एक शिया संप्रदाय) जो अली के प्रति प्रेम के कारण लगभग सभी साथियों के प्रति शत्रुता रखते हैं, वे सब व्यर्थ हैं।180 ईश्वर के नाम पर तथा कुरान के अनुसार किया गया कोई भी प्रेम अच्छा फल देता है।

इसका परिणाम इस दुनिया और परलोक दोनों में होता है। मैं संक्षेप में इसके सांसारिक परिणामों का उल्लेख करता हूँ परिणाम नीचे:

> भगवान के नाम पर स्वादिष्ट भोजन और फलों से प्रेम करना उन्हें उपकार बनाता है और अनुग्रह जिसमें पीड़ा मिश्रित न हो, एक सहजता जो शुद्ध कृतज्ञता उत्पन्न करती है। अपनी शारीरिक आत्मा से प्रेम करना आपको दया की ओर ले जाता है ताकि आप शिक्षित हों उसे नुकसानदेह इच्छाओं और कल्पनाओं से बचाएं। जब आप ऐसा करते हैं इसे सफलतापूर्वक करने पर, आपकी शारीरिक आत्मा आपको कहीं भी नहीं ले जा सकेगी वह आपको अपनी इच्छाओं का गुलाम बना लेगा। इसके विपरीत, आप इसे आगे ले जाइए और सत्य की ओर ले जाइए, न कि इसे वासनाओं की ओर ले जाइए।

---

180 ऐसा प्रेम उस व्यक्ति के प्रति प्रेम में निहित होता है जिससे प्रेम किया जाता है। चूंकि यह ईश्वर के नाम पर नहीं है, इसलिए यह विश्वास में अक्षम्य अतिरेक की ओर ले जाता है। ऐसी अतिरेक के कारण, ईसाइयों ने यीशु को देवता बना दिया और राफिदियों ने ईसाई धर्म को तोड़ दिया ।
बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय से (ट्र.)

यदि आप अपने जीवनसाथी से सच्चे दिल से प्यार करते हैं और उसके प्रति दया रखते हैं
उसका आचरण अच्छा था और वह करुणा की खान और वरदान थी
ईश्वरीय दया, वह (या वह) आपसे प्यार करेगा और आपका सम्मान करेगा। जैसा कि आप दोनों
उम्र बढ़ने के साथ यह आपसी प्यार और सम्मान बढ़ेगा और आपकी खुशियाँ बढ़ेंगी। शारीरिक सुंदरता
पर आधारित शारीरिक प्रेम क्षणभंगुर है। जब यह
जैसे ही आपका आपसी संबंध खत्म हो जाएगा, वैसे ही आपके आपसी अच्छे संबंध भी खत्म हो जाएंगे।
सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए अपने माता-पिता से प्रेम करना एक पूजा का कार्य है
और उम्र बढ़ने के साथ बढ़ता है। एक अत्यंत उन्नत भावना के साथ और
प्रयास करें, आप उनके लिए प्रार्थना करें कि वे दीर्घायु हों ताकि आपको और अधिक मिल सके
उनके कारण पुरस्कार मिलता है और शुद्ध आध्यात्मिक आनंद मिलता है
उनका सम्मान करना और उनकी सेवा करना। यदि आपको उनका अस्तित्व असहनीय लगता है
जब उन्हें आपकी आवश्यकता होती है और वे अपनी मृत्यु की कामना करते हैं, तो आपके पास
बर्बरता पर उतर आएंगे और एक दर्दनाक आध्यात्मिक बीमारी से पीड़ित होंगे।
अपने बच्चों से प्यार करें क्योंकि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्यारे हैं
उपहार जो उसने आपको एक सहमत तरीके से पालने और शिक्षित करने के लिए सौंपा है वह एक ऐसा
प्रेम है जो खुशी और आशीर्वाद लाता है। आप नहीं करेंगे
उन पर आने वाली विपत्तियों के कारण बहुत कष्ट सहना पड़ता है या विलाप करना पड़ता है
अगर वे मर जाते हैं तो निराशा होती है। चूँकि उनका निर्माता सर्वज्ञ और दयालु है, आप निष्कर्ष
निकालेंगे: "चूँकि उनके लिए यह बेहतर था
जीने से ज़्यादा मरना पसंद है, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उन्हें मुझसे छीन लिया।"
यह सोचकर कि आपका धैर्य ईश्वर की दया को आकर्षित करेगा और वह
तुम दोनों को एक साथ अनन्त खुशी के निवास में ले आएगा,
तुम वियोग के कष्टों से बच जाओगे।
भगवान के लिए अपने दोस्तों से प्यार करने का मतलब है अलगाव या मौत
इससे आपके वर्तमान रिश्ते में दरार नहीं आएगी। आपको लाभ होगा
इस आपसी प्रेम और आध्यात्मिक जुड़ाव से। उसके लिए फिर से मिलन का आनंद स्थायी है। जबकि
उसके लिए मिलन का एक सेकंड
एक वर्ष के मिलन का आनंद देता है, एक वर्ष तक साथ रहने का
सांसारिक उद्देश्यों का अर्थ है एक क्षण का मिलन और अंत होता है पीड़ादायक अलगाव में-
राशन.

पैगम्बरों और संतों जैसे सद्गुणी लोगों से प्रेम करने से आपको पता चलता है कि
कब्र की मध्यवर्ती दुनिया, जो असावधान लोगों को दिखाई देती है
एक अँधेरा, भयावह एकांत, उन धन्य लोगों के अस्तित्व से प्रकाशित एक महल की तरह। आप वहाँ
जाने से नहीं डरेंगे
दुनिया में जाने की इच्छा और उत्सुकता आपको महसूस होगी।
वहाँ, और आपको अपने जीवन से मिलने वाला आनंद नहीं मिलेगा
बिगड़ैल। लेकिन अगर आप उनसे वैसे ही प्यार करते हैं जैसे "सभ्य" लोग मशहूर लोगों से करते हैं
व्यक्तियों, आप उनकी मृत्यु पर दुखी होंगे, और यह सोचकर कि

अतीत की "विशाल कब्र" में उनका क्षय और विस्मृति आपकी चिंता को बढ़ा देगी
दर्द। यह सोचकर कि आप कब्र में प्रवेश करेंगे, जो यहां तक कि कारण बनता है
यदि तुम अपने सबसे अच्छे लोगों को भी सड़ते हुए पाओगे, तो तुम दु:ख से आहें भरोगे और मृत्यु से डरोगे।
लेकिन अगर आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम से प्रेम करते हैं, तो आप कब्र को एक कब्र के रूप में देखेंगे।
शरीर त्यागने के बाद आपको एक आदर्श विश्राम स्थल मिलेगा, और आप उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करेंगे।
सुंदर चीजों को उनके निर्माता के नाम पर प्यार करना और एक तरह से आपको उनके निर्माता की याद दिलाना एक सुखद प्रतिबिंब है और यह आपकी भावनाओं को बदल देगा।
सुंदरता को पसंद करने वाले दृष्टिकोण से, आप कहीं अधिक उन्नत, पवित्र और सूक्ष्म सौंदर्य के स्रोतों की ओर मुड़ेंगे। आप उन खूबसूरत चीजों से दूर हो जाएंगे
दिव्य कार्यों की सुंदरता की ओर काम करता है, फिर दिव्य सौंदर्य की ओर
नाम, और फिर दिव्य गुणों की सुंदरता और सर्वशक्तिमान की अतुलनीय सुंदरता। यह प्रेम शुद्ध आनंद है, एक क्रिया है
पूजा का, और एक प्रतिबिंब।
युवावस्था से प्रेम करो क्योंकि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर का एक अच्छा आशीर्वाद है, तुम
इसे पूजा में खर्च करें और इसे अपव्यय में बर्बाद न करें। जब आप ऐसा करते हैं
युवावस्था में की गई पूजा अक्षय फल देती है।
जवानी चली जाती है, लेकिन वे फल बने रहते हैं और आप सुरक्षित रहेंगे
विद्रोह और अपव्यय में बिताई गई जवानी के बुरे परिणामों से। जब आप बूढ़े हो जाएँगे, तो आप और भी अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे
ईश्वर की आराधना करें और ईश्वरीय दया से अधिक के पात्र बनें।
बेपरवाह होकर, आप अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में प्रवेश करते समय अपने पांच या दस साल के युवावस्था के सुखों पर न रोएंगे और न ही पछताएंगे।
उन असावधान लोगों की तरह, जो कहते हैं: “काश मेरी जवानी लौट आती,
उसे बताओ कि बुढ़ापे ने मेरे साथ क्या किया है।”
वसंत जैसे प्रदर्शन इसलिए प्रिय हैं क्योंकि वे दिव्य कला के कार्य हैं
इसका मतलब यह है कि उन्हें देखने का आनंद गायब नहीं होता है
उन्हें हटा दिया जाता है, क्योंकि आप उन अर्थों को याद कर सकते हैं जो उन्होंने छोड़े हैं
तुम्हारा मन सोने के अक्षरों की तरह है। फिल्म के दृश्यों की तरह तुम्हारी कल्पना
और समय आपको उन्हें देखने में आनंद लेने में सक्षम बनाता है, और आपका मन
बीते वसंत की खूबसूरती और अर्थों को ताज़ा करता है। ऐसे में
मामले में, आपका प्यार खुशी और आनंद देना जारी रखता है और
यह दर्दनाक और अस्थायी नहीं होना चाहिए।
सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर इस संसार से प्रेम करने से इसके सभी प्राणी मित्रवत बन जाते हैं। इसे परलोक के लिए खेती की तरह समझना,
आप हर चीज में एक पूंजी ढूंढते हैं जिसका उपयोग दूसरों की भलाई के लिए किया जा सकता है
आपके बाद का जीवन। विपत्ति आपको डराती नहीं है, और इसकी क्षणभंगुरता
तुम्हारी जिंदगी तुम्हें परेशान नहीं करती। तुम उस गेस्ट हाउस में रहोगे

अपने नियत समय तक शांतिपूर्वक रहें। लेकिन अगर आप दुनिया से उतना ही प्यार करते हैं
जो लोग ऐसा नहीं करेंगे, वे मुसीबत और विपत्ति में घुटकर मरेंगे।
क्षणिक और निष्फल प्रेम.

यदि, प्रेम से प्राप्त सुखों और लाभों को बताने के बाद
कुरान में यहाँ दिया जाएगा, आप इस तरह के प्यार के अन्य सांसारिक परिणामों को सुनना और जानना चाहते हैं, परिचय और नौ संकेत पढ़ें:

परिचय: उनकी राजसी दिव्यता, अनुग्रहपूर्ण दया, सर्वोच्च
प्रभुता, उदार देखभाल, विशाल शक्ति और सूक्ष्म बुद्धि, सर्वशक्तिमान ईश्वर
इस नगण्य आकार के मानव शरीर को इतनी सारी इंद्रियों और क्षमताओं से सुसज्जित किया है
भावनाएँ, विभिन्न प्रकार के अंग, सदस्य और प्रणालियाँ, और असंख्य
ताकि वह हममें से हर एक को उसकी असंख्य प्रकार की नेमतों, उसकी कृपाओं के प्रकारों और उसकी दया के उदाहरणों का बोध करा सके और उन्हें जानने में सक्षम बना सके।
इसके अलावा, उसने ऐसा इसलिए किया है ताकि हम उसके नाम की अनगिनत अभिव्यक्तियों को माप सकें और उनसे प्रेम कर सकें। प्रत्येक शारीरिक अंग, प्रणाली और क्षमता अलग-अलग होती है
सेवा और पूजा के प्रकार और साथ ही विभिन्न प्रकार के सुख, दुख,
कर्तव्य और पुरस्कार.

उदाहरण के लिए, आंखें रूपों की सुंदरता और विभिन्न चमत्कारों को देखती हैं
दृष्टि के क्षेत्र में दिव्य शक्ति। उनका कर्तव्य विचारशील और चिंतनशील अवलोकन और निर्माता के प्रति कृतज्ञता है। हर कोई दृष्टि से जुड़े सुख और दर्द को जानता है। कान अलग-अलग आवाज़ें, सृष्टि की आवाज़ें सुनते हैं

मधुर धुनें, तथा श्रवण के क्षेत्र में ईश्वरीय दया की सूक्ष्मताएँ। उनकी अपनी अनूठी पूजा, आनंद और पुरस्कार की अपनी अलग शैली है।
गंध की इंद्रिय गंध के क्षेत्र में मर्सी की सूक्ष्मताओं से अवगत है, और
इसका भी अपना अनूठा आनंद, कृतज्ञता का कर्तव्य और पुरस्कार है।
दूसरों के लिए, स्वाद की भावना धन्यवाद के कई कर्तव्यों का पालन करती है
खाए जाने वाले प्रत्येक पदार्थ के स्वाद के प्रति जागरूक होना।

संक्षेप में, हमारी सभी इंद्रियों, अंगों और क्षमताओं (जैसे, हृदय, बुद्धि और आत्मा) के अपने-अपने कर्तव्य, सुख और दुख हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर,
वह परम तत्वदर्शी परमेश्वर उन सबको अपने अनुसार फल देगा। संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने तात्कालिक फल से परिचित है।
उनके पुरस्कार आख़िरत में हैं, जैसा कि बारहवीं आयत में संक्षेप में साबित किया गया है
दसवें वचन का सत्य, उनतीसवें वचन के छः मूल सिद्धांत
शब्द, और अट्ठाईसवाँ शब्द, उन्हें भी कुरान में स्पष्ट रूप से कहा गया है या उनका संकेत दिया गया है, जो सबसे सच्चा शब्द, सबसे उत्तम प्रणाली है,
परमेश्वर का वचन, जो सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमावान, सर्वज्ञ है।

पहला संकेत: स्वादिष्ट भोजन और फलों के प्रति कृतज्ञतापूर्वक वैध प्रेम
परलोक में स्वर्गीय भोजन और फल प्रदान करता है और हमारे अंदर प्रेम की भावना जागृत करता है।

उनके लिए भूख। यहाँ तक कि यह कहना कि: “सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए हैं”
तुम जो कुछ खाओगे वह तुम्हें जन्नत का फल बनकर लौटा दिया जाएगा। जैसा कि कुरान ने सुझाया है और ईश्वरीय बुद्धि और दया की आवश्यकता है, सर्वशक्तिमान ईश्वर को उसकी कृपा और उपकारों के लिए दिया गया कोई भी सुखद धन्यवाद स्वर्ग का फल होगा।
स्वर्ग में यह आपके पास सबसे स्वादिष्ट भोजन के रूप में लौटाया जाएगा।

दूसरा संकेत: अपने आत्म या आत्मा से वैध तरीके से प्रेम करने के बदले में
तरीके से (उस पर दया करना और उसे पूर्ण बनाने के लिए काम करना और उसे अच्छे मार्ग पर ले जाना), आप
तुम्हें जन्नत में वो दिया जाएगा जो तुम्हें पसंद है। चूँकि तुमने अपनी आत्मा को संतुष्ट किया है
इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं पर काबू पा लिया और अपने अंगों और क्षमताओं का उपयोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के तरीके से किया
ईश्वर को यह अच्छा लगता है, और परम दयालु ईश्वर तुम्हें अवश्य पुरस्कृत करेगा।
(वैध) प्रेम तुम्हें सत्तर विभिन्न दिव्य वस्त्र पहनाकर
स्वर्ग की सुंदरता और अलंकरण के सत्तर विभिन्न प्रकार के नमूने।
ये तुम्हारी सारी इंद्रियों को प्रसन्न करेंगे। वह तुम्हारे शरीर को सत्तर प्रकार की सुन्दरता से सजाएगा और तुम्हारे सामने हूरें प्रस्तुत करेगा , जिनमें से प्रत्येक एक के समान है।
छोटे स्वर्ग को सजीव बनाओ। दुनिया में युवाओं के लिए आपका प्यार, जो भगवान की पूजा करने के लिए आपके द्वारा इसका उपयोग करने में प्रकट होता है, इसका परिणाम दुनिया में अनंत युवावस्था होगा।
शाश्वत सुख का निवास.

तीसरा संकेत: अपने जीवनसाथी के प्रति आपके सच्चे प्रेम के प्रतिफल स्वरूप
उसकी (या उसकी) रमणीय करुणा, प्रशंसनीय गुणों और अच्छे आचरण के प्रति, और
उसे (या उसे) ईश्वर की अवज्ञा और अन्य पापों से बचाना,
पूर्णतया दयालु व्यक्ति उसे (या उसे) अमर मित्र बना देगा
वह आपको अनंत सुख के धाम में ले जाएगी। वह अधिक सुंदर, बेहतर होगी
सजे-धजे और अलंकृत, और हूरियों से भी अधिक आकर्षक। जीवनसाथी होंगे
आमने-सामने सिंहासन पर बैठे होंगे और एक-दूसरे से संबंध बनाने में बहुत आनंद लेंगे
एक दूसरे को उनके सांसारिक जीवन के बारे में बताया जो उन्होंने एक साथ बिताया।

चौथा संकेत: माता-पिता और बच्चों के प्रति वैध प्रेम के परिणामस्वरूप,
सर्वशक्तिमान ईश्वर, अत्यन्त दयालु एवं दयावान, उन्हें इसकी अनुमति प्रदान करेंगे।
स्वर्ग में एक साथ आने और उन्हें अनंत सुखद संगति का इनाम देने के लिए, भले ही प्रत्येक का पद और स्थान अलग-अलग हो। वह
यौवन से पहले मर चुके बच्चों को स्वर्ग के प्यारे और सबसे सुंदर अमर बच्चों के रूप में पुनः उत्पन्न करना (56:17), स्वर्ग के योग्य रूप में, और
उन्हें उनके माता-पिता की गोद में लौटा दें ताकि वे अनंत काल तक आनंद ले सकें
माता-पिता बनने का सुख। चूँकि स्वर्ग प्रजनन का स्थान नहीं है,
कुछ लोगों का मानना था कि वहां बच्चों का सुख नहीं होगा।
लेकिन चूंकि स्वर्ग में हर आनंददायक चीज़ उच्चतम स्तर पर मौजूद है,
संतान प्राप्ति का सुख, अपने सबसे अच्छे रूप में, उन बच्चों के माध्यम से होगा जो यौवन तक पहुँचने से पहले ही मर गए। यह उन माता-पिता के लिए एक अच्छी खबर है जिनके बच्चे यौवन से पहले ही मर गए हैं।

पाँचवाँ संकेत: कुरान स्पष्ट रूप से कहता है कि, ईश्वर के लिए नेक दोस्तों से प्रेम करने के परिणामस्वरूप, उन्हें सोफे पर बैठाया जाएगा।
स्वर्ग का सामना करेंगे (15:47) और एक दूसरे से अपने सांसारिक जीवन के बारे में अत्यंत आनन्ददायक ढंग से बातचीत करने के शुद्ध आनन्द का सदा आनन्द लेंगे।

छठा संकेत: पैगम्बरों और संतों के प्रति आपका कुरानिक प्रेम आपके लिए दुख का कारण बनेगा।
आप कब्र की मध्यवर्ती दुनिया में उनकी मध्यस्थता से लाभान्वित हो सकते हैं
और सर्वोच्च समागम के स्थान पर। आपको भी ज्ञान प्राप्त होगा
अपने ऊँचे पदों से। इस नियम के अनुसार कि "एक व्यक्ति साथ रहेगा
जिसे वह प्यार करता है," प्रत्येक विश्वासी को सर्वोच्च पद या स्थान में हिस्सा मिल सकता है
उस स्थिति वाले व्यक्ति के साथ निकटता के माध्यम से स्थिति का पता लगाना।

सातवां संकेत: सुंदर चीजों और वसंत के प्रति आपका प्यार, व्यक्त
उन्हें सृष्टिकर्ता की सुंदर कृतियों के रूप में देखना, साथ ही उनकी सराहना करना
उन कार्यों के पीछे कृत्यों की सुंदरता और सामंजस्य, उन कृत्यों के पीछे नामों की अभिव्यक्तियाँ, और उन कृत्यों के पीछे नामों की अभिव्यक्तियाँ
उन सुंदर नामों के पीछे छिपे गुण, आपको देखने पर मजबूर कर देंगे,
स्थायित्व की दुनिया, उन नामों की अभिव्यक्तियाँ, जो दूर हैं
इस दुनिया में अपने समकक्षों की तुलना में अधिक सुंदर हैं, और उनके साक्षी हैं
उन नामों में सुंदरता और गुण हैं। इमाम रब्बानी कहते हैं: "स्वर्ग का
सुन्दरता और सूक्ष्मताएँ ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्ति का मूर्त रूप हैं।'' इन शब्दों पर मनन करें।

आठवां संकेत: इस संसार के प्रति आपका चिंतनशील प्रेम, इसकी वजह से
परलोक की खेती और ईश्वरीय नामों का दर्पण होने के कारण, उसे दुनिया जितना बड़ा स्वर्ग का एक शाश्वत उद्यान प्रदान किया जाएगा।
अनेक आवरणों के पीछे से नामों की छायापूर्ण अभिव्यक्तियाँ परिणामित होती हैं
दुनिया की अद्भुत सुन्दरताएँ। स्वर्ग में, नाम अपने आप को सबसे शानदार रूप में प्रकट करेंगे। भगवान स्वर्ग देंगे, रिश्ते में
जो लोग इस संसार को प्रेम करते हैं, उनके लिए यह संसार एक छोटे से बीज के समान है।
जीवन के बाद की खेती। साथ ही, दया और बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार और निर्देशित
पैगंबर की परंपराओं और कुछ कुरान की आयतों में, हमारी इंद्रियों और
भावनाएँ, जो यहाँ छोटी-छोटी कोंपलों की तरह हैं, वहाँ परिपूर्ण हो जाएँगी; हमारी
जो क्षमताएँ यहाँ बीज के समान हैं, वे वहाँ पूर्णता और शुद्ध आनन्द की किस्मों में विकसित होंगी।

चूँकि हम संसार को केवल उसके दो पहलुओं से ही प्यार करते थे,
परलोक और ईश्वरीय नामों में नहीं, बल्कि उसके घृणित पहलू में (कारण में)
सभी त्रुटियों से मुक्त), और इसे हमारी पूजा के माध्यम से समृद्ध बनाया जैसे कि हमने खर्च किया था
हमारा पूरा जीवन और शरीर, इन्द्रियाँ और क्षमताएँ आराधना, दया और बुद्धि में
हमें दुनिया जितना बड़ा इनाम मिलना चाहिए। चूँकि हम प्यार करते थे
परलोक और प्रेम से प्रेम करने के लिए संसार को परलोक की खेती के रूप में मानना

इसे सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों के दर्पण के रूप में स्वीकार करने से हमें पुरस्कृत किया जाएगा
प्रेम की एक विश्व-जैसी वस्तु के साथ - एक स्वर्ग का बगीचा जो विश्व जितना ही विशाल है।

प्रश्न: इतने विशाल और खाली बगीचे का क्या उपयोग है?

उत्तर: यदि आप पूरी दुनिया और अधिकांश तारों की यात्रा कर सकें
कल्पना की गति से, आप यह दावा कर सकते हैं कि दुनिया
आप। यह तथ्य कि देवदूत, अन्य लोग और जानवर आपके साथ इस स्थान को साझा करते हैं
आपके दावे को नकारा नहीं जा सकता। इसी तरह, अगर स्वर्ग इतना भरा हुआ है, तो आप
कहने में सक्षम हो, "स्वर्ग मेरा है।" परंपरा का अर्थ है, "स्वर्ग के कुछ लोगों को ऐसा स्वर्ग दिया जाएगा जिसे पाने में पाँच सौ साल लगेंगे (
पैदल यात्रा करना)," को अट्ठाईसवें शब्द और "द लास्ट लास्ट" में समझाया गया है।
द ग्लेम्स में "ईमानदारी पर ग्रंथ"।

नौवां संकेत: ईश्वर के प्रति आपके विश्वास और प्रेम का परिणाम स्वर्ग का शाश्वत जीवन और ईश्वर के दर्शन हैं। आध्यात्मिक अनावरण और सत्यापन के सभी लोग इस बात पर सहमत हैं कि इस दुनिया में एक हजार साल का सुखी जीवन किसी भी कीमत पर नहीं है।
स्वर्ग में एक घंटे के जीवन के बराबर है, और स्वर्ग में एक हजार साल के जीवन के बराबर है
स्वर्ग उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के एक घंटे के दर्शन के बराबर भी नहीं है।
परम पवित्र सौंदर्य और दोष-रहित पूर्णता। उसे देखना कुरान और प्रामाणिक पैगंबर परंपराओं द्वारा स्थापित किया गया है, जिनमें से एक
कहते हैं: "वह दर्शन स्वर्ग के अन्य सभी सुखों से कहीं बढ़कर है, इतना अधिक कि
कि यह उन्हें भुलाने का कारण बनता है। भगवान के दर्शन के बाद, लोगों ने
स्वर्ग की सुन्दरता और मनोहरता इतनी बढ़ जाएगी कि
जोड़े एक-दूसरे को बड़ी मुश्किल से ही पहचान पाएंगे।"

सभी लोगों के मन में ऐसी ही एक महान इच्छा होती है कि वे ऐसा कुछ देखें।
अतीत के महान लोगों में पैगंबर सुलैमान शामिल हैं, जो अपनी शानदार उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध हैं।
पूर्णता, और पैगंबर जोसेफ, अपनी सुंदरता के लिए प्रतिष्ठित। तो तुलना करें
हमारी इच्छा कितनी गहराई से चाही और चाही जाती है, और किस हद तक जुनून के साथ
उसे देखने की इच्छा रखें। और याद रखें कि उसकी सुंदरता और उसके आकर्षण का एक ही प्रकटीकरण है
पूर्णता में स्वर्ग की सारी सुंदरता और पूर्णता समाहित है, जो कहीं दूर है।
इस संसार में देखी गयी समस्त सुन्दरता और पूर्णता से भी अधिक श्रेष्ठ।

> हे ईश्वर, इस संसार में हमें अपना और अपनी इच्छा का प्रेम प्रदान कीजिए।
> हमें अपने निकट खींच ले, उस धर्म के अनुसार जो तूने आज्ञा दी है, और जिस रीति से
> इसके पश्चात् तेरी दया और तेरे दर्शन से।
>
> तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तेरे पास है
> तू ही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
>
> हे ईश्वर, जिसे तूने अपना मित्र बनाकर भेजा है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर।
> सारे जहाँन पर, और उसके परिवार और साथियों पर दया हो। आमीन।

664 शब्द

नोट: इस लेख में दिए गए विस्तृत विवरण को ज्यादा लंबा न समझें।
वर्ड का अंतिम भाग। यह अपने महत्व के अनुपात में छोटा है और,
वास्तव में, इस पर और अधिक विस्तार से चर्चा की आवश्यकता है ।
कुरान से मिले संकेतों का नाम। सत्य सत्य बोलता है। अगर
यदि आपको कुछ भी गलत दिखाई दे तो जान लें कि वह मेरे दिमाग से आया है।

हे प्रभु ! एक व्यक्ति

महल का द्वार खटखटाता है जो उसके लिए नहीं खुलता।
उस महल में जो भी सम्मानित है, उसके आह्वान पर
जिसकी पुकार उसके निवासियों को परिचित है। इसलिए, चूंकि मैं बहुत दुखी हूँ
तेरी दया के दरबार का दरवाजा खटखटाओ, मैं पुकार कर दस्तक देता हूँ
और दुआ है उवाइसुल क़ुरानी की, जो तेरे बन्दों में से है और तू उससे प्रेम करता है।
अपना वह दरबार मेरे लिए भी खोल दो, जैसे तुमने उसके लिए खोला था। मैं भी उसी तरह पुकारता हूँ जैसे उसने किया था:

हे परमेश्वर, आप मेरे स्वामी हैं; मैं आपका सेवक हूँ।
आप रचयिता हैं, मैं रचित हूँ।
आप ही सर्व प्रदान करने वाले हैं, मैं ही प्रदान करने वाला हूँ।
आप स्वामी हैं, मालिक हैं; मैं दास हूँ, मालिक हूँ।
तू ही महिमावान है, मैं ही अपमानित और अभागा हूँ।
आप तो सर्वधनवान हैं, मैं तो सर्वथा दरिद्र हूं।
आप ही सर्वभूत हैं, मैं ही मृत हूँ, आप ही सर्वभूत हैं, मैं ही नश्वर हूँ।

आप तो बड़े दानशील हैं, मैं तो कंजूस हूँ।
आप तो सर्व कल्याणकारी हैं, मैं तो बुरा करने वाला हूँ।
तू तो अत्यन्त क्षमाशील है, मैं ही पापी हूँ।
आप सर्वोपरि हैं, मैं ही तुच्छ हूँ।
आप सर्वशक्तिमान हैं, मैं दुर्बल हूँ।
आप सर्वस्व देने वाले हैं, मैं मांगने वाला हूँ।
आप ही विश्वसनीय हैं, सुरक्षा देने वाले हैं; मैं ही भयभीत हूँ।
आप तो सर्व दानी हैं, मैं तो अत्यन्त जरूरतमंद हूँ।
आप ही प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाले हैं; मैं ही प्रार्थना कर रहा हूँ।
आप ही सर्व-चिकित्सा करने वाले हैं; मैं ही बीमार हूँ।

इसलिए मेरे पापों को क्षमा कर, मुझे बचा ले, और मेरी बीमारियों को ठीक कर दे, हे ईश्वर! हे सर्व-सहनशील! हे प्रभु! हे सर्व-विश्वासयोग्य! हे दयालु! हे सर्व-चिकित्सा करने वाले! हे सर्व-दयालु! हे पुनर्स्थापक
स्वास्थ्य! मेरे सभी पापों को क्षमा करें, मुझे सभी बीमारियों से मुक्त कर स्वास्थ्य प्रदान करें,
हे परमेश्वर, मुझ पर अपनी दया से कृपा कर और सदा सर्वदा प्रसन्न रह!
हे दयालुओं में सबसे दयालु!

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: सभी प्रशंसा और आभार
परमेश्वर के लिए, जो सारे संसार का स्वामी है।

तैंतीसवाँ शब्द

तैंतीसवाँ वचन

ईश्वर के अस्तित्व और अस्तित्व पर खुलने वाली तैंतीस खिड़कियाँ
ब्रह्मांड और मानवता से एकता

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हम उन्हें ब्रह्मांड के क्षितिज में और उनके स्वयं के भीतर अपनी स्पष्ट निशानियाँ दिखाएंगे, यहाँ
तक कि वह उनके लिए स्पष्ट हो जाएगी
कि यह (कुरान) वास्तव में सत्य है। क्या यह पर्याप्त नहीं है कि तुम्हारा
क्या प्रभु हर चीज़ का साक्षी है? (41:53)

प्रश्न: हम एक संक्षिप्त, संक्षिप्त व्याख्या चाहते हैं कैसे मानवता (सूक्ष्म जगत) और ब्रह्मांड (स्थूल जगत) ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता की ओर इशारा करते हैं, साथ ही उनके आधिपत्य की विशेषताएं, गुण और कार्य, जो उपरोक्त विस्तृत श्लोक के दो भाग दर्शाते हैं।

उत्तर: अब तक लिखे गए बत्तीस शब्द उस श्लोक द्वारा उंडेले गए सत्यों का सागर। आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया है निम्नलिखित केवल उस महासागर से एक बूंद की बूंदों की ओर इशारा करता है।

यदि कोई चमत्कार दिखाने वाला व्यक्ति बड़ा महल बनाना चाहता है, तो सबसे पहले वह उसने अपने निर्माण के उद्देश्य के अनुसार नींव को मजबूती से स्थापित किया। इसके बाद, उसने वह इसे कुशलतापूर्वक अपार्टमेंट और कमरों में विभाजित करता है और फिर उन्हें सुसज्जित और सजाता है। उसके बाद, वह महल को बिजली की रोशनी से जगमगाता है। फिर, अपने अन्य कौशल और हमेशा नवीनीकृत उदारता को दिखाने के लिए, वह बनाता है हर मंजिल, विंग और अपार्टमेंट में परिवर्धन, परिवर्तन और रूपांतरण। इसके अलावा, वह हर अपार्टमेंट और कमरे को जोड़ने वाली एक संचार प्रणाली स्थापित करता है, और हर कमरे में खिड़कियां खोल देता है ताकि उसकी रैंक और सच्चाई पहचान प्रदर्शित की जा सकती है और महल के निवासी उससे संपर्क कर सकते हैं।

इसी प्रकार - सबसे उच्च तुलना ईश्वर के लिए है (और उसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए) - महिमा के निर्माता, मूल निर्माता, जो तुलना से परे हैं और जिन्हें कहा जाता है एक हजार एक पवित्र नामों से, जैसे कि सर्वज्ञ शासक और सर्व-न्यायप्रिय न्यायाधीश ने ब्रह्मांड के उस महल, सृष्टि के उस वृक्ष, जो कि स्थूल जगत है, को बनाने की इच्छा की। उन्होंने महल (और वृक्ष) की नींव छह "दिनों" में रखी और अपने सिद्धांतों के साथ मुख्य शरीर का निर्माण किया।

उसकी शाश्वत ज्ञान की बुद्धि और नियम। इसे उच्चतर और उच्चतर में विभाजित करना निचले स्तरों और शाखाओं में, उसने अपने आदेश और नियति के सिद्धांतों के साथ इसे विस्तृत और विस्तृत किया। फिर उसने जीवों को बनाया और व्यवस्थित किया समूहों, परिवारों और प्रजातियों का अध्ययन किया और प्रत्येक के जीवन को सिद्धांतों के साथ व्यवस्थित किया उनकी कला और कृपा का। उसके बाद, उन्होंने प्रत्येक वस्तु और दुनिया को एक अलग रूप में सजाया। अनोखे तरीके से। उदाहरण के लिए, उसने आकाश को तारों से और धरती को चाँद से सजाया। उन्होंने अपने नाम को उन विशाल क्षेत्रों में प्रकट किया जहाँ उनकी सार्वभौमिक कानून और सर्वसमावेशी सिद्धांत लागू हैं और उन पर प्रकाश डाला गया है। इसके बाद, अपने नाम सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय को प्रकट करके, वे प्रत्येक प्राणी की सहायता के लिए आए, जो उन सार्वभौमिक नियमों के दबाव में रोया। इसका मतलब है कि उसके पास अपने सार्वभौमिक और सर्वसमावेशी नियमों या कानूनों के भीतर विशेष अनुग्रह और सहायता है, जैसे कि साथ ही विशेष अभिव्यक्तियाँ, जो हर प्राणी को उसकी ओर मुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं किसी भी समय और उससे अपनी किसी भी ज़रूरत को पूरा करने के लिए कहें। साथ ही, अपने अस्तित्व और एकता स्पष्ट, उसने सभी से अपने लिए खिड़कियाँ खोलीं अपार्टमेंट, सृजन और दुनिया के सभी स्तर, अस्तित्व के सभी समूह और व्यक्तियों और सभी चीजों के लिए। इसके अलावा, उसने हर दिल में एक फोन छोड़ा।

अब उन असंख्य खिड़कियों को सर्व-व्यापक के पास भेज रहे हैं ईश्वरीय ज्ञान, जिसकी चर्चा हमारी क्षमता से परे है, एक सुखद वातावरण में महिमा और के वाक्यांशों के तीस पुनरावृत्तियों के साथ पत्राचार प्रत्येक निर्धारित प्रार्थना के बाद ईश्वर की स्तुति करना तथा उसकी महानता की पुष्टि करना, और तेईसवें शब्द के शीर्षक के तहत, हम संतुष्ट होंगे इनमें से 33 आयतें कुरान की आयतों से ली गई हैं।

तैंतीस खिड़कियाँ

पहली खिड़की: हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि सभी चीजें, विशेष रूप से जीवित प्राणी लोगों की कई अलग-अलग ज़रूरतें और मांगें होती हैं। उन्हें ठीक से पूरा किया जाता है समय किसी अज्ञात और अप्रत्याशित स्थान से आ रहा है। अपने स्थान तक पहुँचने में असमर्थ अकेले वस्तुओं के बिना वे अपनी न्यूनतम आवश्यकता भी पूरी नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए, अपने बारे में सोचें: सोचें कि आपको कितनी ज़रूरतें पूरी करनी हैं आपकी बाह्य एवं बाह्य इन्द्रियाँ और अंग, जिन्हें आप प्राप्त करने में असमर्थ हैं। इस तुलना को अन्य सभी जीवित प्राणियों पर लागू करें।

मांगें, साथ ही उनकी संतुष्टि, अकेले और समग्र रूप से एक की ओर इशारा करती हैं
परम आवश्यक सत्ता का अस्तित्व और उसकी एकता। सूर्य की तरह
सूर्य की ओर इशारा करते हुए प्रकाश, वे उसे पर्दे के पीछे मन को दिखाते हैं
अदृश्य रूप से उसके नाम हैं, वह अत्यंत दयालु, दयावान,
सर्व-प्रशिक्षण और पालन-पोषण, सर्व-संगठन, सर्व-प्रावधान। कैसे
क्या आप इस सार्वभौमिक वास्तविकता को ज्ञान, जागरूकता और प्रदर्शित करते हुए समझा सकते हैं?
करुणा? क्या आप इसे बहरे स्वभाव, अंधी शक्ति,
यादृच्छिक संयोग, या निर्जीव और शक्तिहीन कारण?

दूसरी खिड़की: अस्तित्व और वैयक्तिकरण की राह पर
चीजों और प्राणियों में संभावित रूपों की अनंत विविधता होती है, प्रत्येक को दिया जाता है, सभी
तुरन्त और बुद्धिमानी से और पूर्ण बुद्धि के साथ, एक विशेष, विशिष्ट और अत्यंत सुव्यवस्थित व्यक्तित्व और चेहरा
जो बाहरी और आंतरिक से सुसज्जित है
इंद्रियों को पूर्ण बुद्धि से नियंत्रित करना। इस चेहरे पर एक अद्वितीय चिह्न होता है जो व्यक्ति को उसकी प्रजाति के अन्य सभी सदस्यों से अलग करता है। इस प्रकार किसी का चेहरा दिव्य एकता और विशिष्टता का एक बहुत ही शानदार चिह्न होता है
खास तौर पर उसके उद्देश्यपूर्ण चुनाव और वरीयता के द्वारा। जिस तरह हर चेहरा अनगिनत तरीकों से एक सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व की गवाही देता है और उसकी ओर इशारा करता है
एकता, सभी चेहरों द्वारा प्रदर्शित एकता की छाप समग्र रूप से यह दर्शाती है
मन की आंखों से देखिये कि यह सभी चीजों के रचयिता की मुहर है।

आप किस कार्यशाला को उन टिकटों का श्रेय दे सकते हैं जिनकी नकल नहीं की जा सकती है, और भगवान की शाश्वत रूप से प्रशंसित होने की शानदार मुहर जो वे हैं
समग्र रूप में?

तीसरी खिड़की: अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियों की विशाल सेना
पृथ्वी पर प्रत्येक को पूर्ण माप और क्रम के साथ दिया गया है, और बिना किसी
भ्रम और विस्मृति, एक विशेष रूप और परिधान, और एक विशेष
प्रावधान और हथियार; और प्रत्येक प्रजाति को प्रशिक्षित और विमुक्त किया जाता है
यह उस एक की मुहर है जो अद्वितीय और अद्वितीय है ।
सूर्य के समान चमकीला और इस प्रकार संदेह से परे मोहर। कौन है सिवाय उस एक के जिसके पास
असीम शक्ति, सर्वव्यापी ज्ञान और अनंत बुद्धि साहस कर सकती है
उस असीम अद्भुत प्रशासन में हिस्सा लेने के लिए? अगर कोई ऐसा व्यक्ति जो नहीं कर सकता
इन सभी प्रजातियों और जातियों को एक साथ प्रशासित और प्रशिक्षित करना, जो कि आपस में मिश्रित रूप से विद्यमान हैं, यदि उनमें से किसी एक के साथ हस्तक्षेप किया जाए, तो निश्चित रूप से भ्रम की स्थिति उत्पन्न होगी।
हालाँकि, हम पढ़ते हैं: फिर से देखो, क्या तुम कोई दरार देखते हो? (६७:३)।
किसी भी शून्यता या भ्रम का संकेत न होने पर, सृष्टि में किसी की भी भागीदारी नहीं हो सकती।

[181] इनमें कुछ ऐसी प्रजातियां हैं जिनकी संख्या एक वर्ष में उन सभी लोगों से अधिक है जिन्होंने कभी जन्म लिया है। आदम के समय से लेकर संसार के अंत तक जो भी जीवित रहेगा, वह जीवित रहेगा और जो भी जीवित रहेगा।

चौथी खिड़की: बीज अपनी स्वभावगत भाषा में प्रार्थना करते हैं और
क्षमता, जानवर अपनी प्राकृतिक आवश्यकताओं की भाषा में प्रार्थना करते हैं, और वे सभी जो
विवशता या अत्यधिक आवश्यकता के कारण कठिन परिस्थितियों में हैं
और संयम। प्रत्येक प्रार्थना का उत्तर दिया जाता है। चूंकि प्रत्येक उत्तर दी गई प्रार्थना ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देती है और उसकी ओर इशारा करती है, इसलिए वे सभी स्वयं-स्पष्ट रूप से एक समग्र और बड़े पैमाने पर एक सर्व-दयालु, सर्व-उदार और सर्व-उत्तर देने वाले निर्माता की ओर इशारा करते हैं।

पांचवी खिड़की: हम देखते हैं कि चीजें, खास तौर पर जीवित चीजें, जाहिर तौर पर एक साथ अस्तित्व में आती हैं। इसे देखते हुए, हम उनसे उम्मीद करेंगे कि वे एक साथ अस्तित्व में आएं।
सरल, भद्दे और बिना किसी कला के। इसके बजाय, वे इतने बारीकी से बनाए गए हैं कि कई कौशल की आवश्यकता है, इतनी सावधानी और नाजुक ढंग से सजाए गए हैं कि
इसमें काफी समय लगता है, इसे इतनी कलात्मकता से सजाया जाता है कि कई उपकरण
जरूरत है, और इतनी बारीकी से बनाया गया है कि बहुत सारी सामग्री की जरूरत है। इसलिए, जिस तरह से प्रत्येक और सभी चीजों को एक साथ दिया गया सुंदर रूप, साथ ही उन पर प्रकट की गई अद्भुत कलात्मकता, एक शानदार शिल्प कौशल की गवाही देती है।
सर्व-बुद्धिमान निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और उसके प्रभुत्व की एकता की ओर इशारा करते हैं, इसलिए
इसके अलावा, समग्र रूप से वे एक अत्यंत शानदार ढंग से एक अनिवार्य रूप से इंगित करते हैं
वह अस्तित्ववान प्राणी जो असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान है।

आप इसे कैसे समझाएंगे? क्या इसे अज्ञानी स्वभाव का परिणाम माना जा सकता है?
आप उस परम पवित्र निर्माता को "प्रकृति" कहते हैं और उसके चमत्कारों को प्रकृति का गुणगान मानते हैं।
क्या यह बहुत बड़ी गलती नहीं होगी, और किसी असंभव चीज़ को संभव मानना नीचता नहीं होगी?

छठी खिड़की

> निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना और उनके परिवर्तन में
> रात और दिन (उनकी अवधि छोटी और लंबी होती जाती है), और
> समुद्र में चलने वाले जहाज लोगों के लाभ के लिए, और पानी जो
> अल्लाह आकाश से कुछ बरसाता है, उसके द्वारा धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाता है।
> और उसमें हर प्रकार के जीवधारियों को फैला देना, और हवाओं को दूर कर देना, और आकाश
> तथा धरती के बीच बादलों को भी नियंत्रित कर देना। निश्चय ही ये निशानियाँ हैं उन लोगों के
> लिए जो बुद्धि से काम लें और समझ लें। (2:164)

यह श्लोक, जो ईश्वर के अनिवार्य अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करता है,
एक बहुत बड़ी खिड़की है जिसके माध्यम से भगवान के महानतम नामों में से एक
देखा जाता है। संक्षेप में, ब्रह्मांड के उच्च और निम्न स्तर पर स्थित सभी दुनियाएँ
अलग-अलग भाषाओं में एक ही परिणाम की ओर संकेत किया गया है: एक ही सर्वज्ञ निर्माता का प्रभुत्व। यह इस प्रकार है:

> आकाश में सुव्यवस्थित एवं व्यवस्थित हलचलें
> व्यापक परिणाम महामहिम के अस्तित्व को सर्वशक्तिमान दिखाते हैं
> और एकता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता।

इसी तरह, पृथ्वी पर जबरदस्त मौसमी और अन्य परिवर्तन
जिसके परिणामस्वरूप व्यापक लाभ प्राप्त होते हैं, इससे इसकी आवश्यकता का पता चलता है
वह सर्वशक्तिमान, महामहिम की एकता और प्रभु की पूर्णता का प्रतीक है।

सभी स्थलीय और जलीय प्राणियों को पूर्ण दया के द्वारा भोजन दिया जाता है,
पूर्ण बुद्धि से युक्त तथा इन्द्रियों और क्षमताओं से सुसज्जित
पूर्ण प्रभुत्व के माध्यम से। जैसा कि उनमें से प्रत्येक उसी की गवाही देता है
सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अस्तित्व और उसकी एकता की ओर संकेत,
समग्र रूप से, वे उनकी दिव्यता की भव्यता और उनकी
बड़े पैमाने पर आधिपत्य की पूर्णता।
इसी प्रकार, बगीचों और बगीचों में सभी अच्छी तरह से विकसित पौधे और उनके
अलंकृत फूल, फूलों की जगह लेने वाले सुसंतुलित फल, और फलों द्वारा प्रदर्शित समृद्ध अलंकरण उस
सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व की गवाही देते हैं और उसकी एकता की ओर इशारा करते हैं

व्यक्तिगत रूप से। सामूहिक रूप से, वे उसकी दया की कृपा और उसकी कृपा दिखाते हैं
प्रभुता की पूर्णता एक शानदार तरीके से.
सभी बूंदें वायुमंडल से भेजी गईं और महत्वपूर्ण चार्ज के साथ
उद्देश्य, आवश्यक परिणाम और लाभ उनकी संख्या से पता चलता है कि सर्व-बुद्धिमान निर्माता का
आवश्यक अस्तित्व और एकता और उसका
प्रभुता की पूर्णता.
इसी प्रकार, सभी पर्वत और उनमें विभिन्न प्रयोजनों के लिए जमा किए गए विविध खनिज, पर्वतों की
तरह ही दृढ़ता से दर्शाते हैं कि
सर्व-बुद्धिमान निर्माता का अस्तित्व और एकता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता
tion.
पहाड़ियों और मैदानों को सजाने वाले सभी खूबसूरत फूल व्यक्तिगत रूप से प्रमाणित करते हैं,
एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की ओर संकेत करते हैं और उसकी एकता की ओर संकेत करते हैं।
सामूहिक रूप से, वे उसकी संप्रभुता की महिमा और उसके प्रभुत्व की पूर्णता को दर्शाते हैं।

इसी तरह, जड़ी-बूटियों और पेड़ों के सभी सुसंगठित आकार और स्थितियाँ
पत्तियाँ, साथ ही उनकी उत्साहपूर्ण और व्यवस्थित गतिविधियाँ, दर्शाती हैं कि
पत्तियों की संख्या जो सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व को दर्शाती है
और एकता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता।
सभी बढ़ते शरीर विभिन्न सदस्यों और प्रणालियों से सुसज्जित होते हैं
अपने विकास के दौरान, और एक व्यवस्थित तरीके से चलना शुरू करते हैं और
फल देने की ओर निर्देशित हैं। हर एक उस सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है और
उसकी एकता की ओर इशारा करता है।
संपूर्ण रूप से, वे उसकी शक्ति की व्यापकता को प्रदर्शित करते हैं,

बुद्धि की समग्रता, उनकी कला की सुन्दरता, तथा उनके प्रभुत्व की बहुत बड़े पैमाने पर पूर्णता।

सभी प्राणियों के शरीरों में पूर्ण बुद्धि के साथ आत्माओं और आत्माओं को स्थापित करना, उन्हें पूर्ण व्यवस्था के साथ उपयुक्त प्रणालियों से सुसज्जित करना,
और उन्हें अद्वितीय सेवाओं और उद्देश्यों के लिए परिपूर्णता के साथ जुटाना
बुद्धि - यह सब जानवरों की संख्या के लिए गवाही देता है, वास्तव में
उनकी क्षमताओं की संख्या को दर्शाता है, और उस सर्वज्ञ निर्माता की ओर इशारा करता है
आवश्यक अस्तित्व और एकता। सामूहिक रूप से, ये कार्य उसकी
दया और उनके प्रभुत्व की पूर्णता सबसे शानदार अंदाज में।
सभी दिव्य प्रेरणाएँ जो मानवता को सभी प्रकार के ज्ञान और सत्य का निर्देश देती हैं, साथ ही
जानवरों को भी सिखाती हैं कि वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे करें,
एक दयालु भगवान के अस्तित्व का सुझाव दें और इंगित करें
महामहिम.
साथ ही, जैसे प्रकाश की किरणें आंख से आती हैं और एकत्रित होती हैं
आँखों के सामने ब्रह्माण्ड के बगीचे के सारे "फूल" एक साथ,
सभी बाह्य और आंतरिक इंद्रियां एक अलग दुनिया की कुंजी के रूप में कार्य करती हैं।
यह सूर्य की तरह चमकते हुए, आवश्यक अस्तित्व को प्रदर्शित करता है
वह सर्वज्ञ निर्माता, सर्वज्ञ सृजक, सर्व-दयालु
सृष्टिकर्ता, सर्व-उदार प्रदाता, और उसकी एकता और प्रभुत्व
पूर्णता।

इस प्रकार ऊपर बताई गई बारह खिड़कियों के माध्यम से एक विशाल खिड़की खुलती है। यह सत्य के बारह-रंगीन प्रकाश के माध्यम से एकता को दर्शाता है
या सर्वशक्तिमान ईश्वर की अद्वितीयता और उनके प्रभुत्व की पूर्णता।
आप उस खिड़की को बंद कर देते हैं, जो पृथ्वी या उसकी कक्षा जितनी चौड़ी है
सूर्य के चारों ओर? आप प्रकाश के उस स्रोत को कैसे बुझा सकते हैं, जो इतना विशाल है
सूर्य के समान उज्ज्वल? किस लापरवाही के पर्दे के पीछे तुम उसे छिपा सकते हो?

सातवीं खिड़की

जीवों की अनगिनत किस्में और प्रजातियाँ आसानी से अस्तित्व में आ जाती हैं
और कई मायनों में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। वे पृथ्वी पर फैले हुए हैं
पूर्ण व्यवस्था के साथ और पूर्ण आनुपातिकता और उपकरण दिखाते हैं। यह एक सर्व-बुद्धिमान
निर्माता के आवश्यक अस्तित्व को प्रदर्शित करता है
और एकता और व्यापक पैमाने पर उसकी शक्ति की पूर्णता।
इसी प्रकार असंख्य एवं अद्वितीय सु-रचित कृतियों का सृजन भी हुआ।
सरल निर्जीव तत्वों से बने यौगिक प्राणियों का भी प्रमाण है
वह सर्वज्ञ निर्माता का आवश्यक अस्तित्व है और उसकी ओर इशारा करता है
एकता। समग्र रूप से, ये प्राणी उसकी शक्ति की पूर्णता और एकता को दर्शाते हैं।
उनकी एकता अत्यंत शानदार तरीके से प्रदर्शित हुई।

इसके अलावा, विभेदीकरण और संयोजन की अनंत डिग्री है
प्राणियों की रचना, विघटन और सुधार में अनंत प्रचुरता के भीतर। उदाहरण के लिए, जबकि बीज और जड़ें बहुत ही भ्रमित स्थितियों में जमीन के नीचे मौजूद हैं, वे आश्चर्यजनक रूप से प्रतिष्ठित हैं

विकास में। भोजन के कणों की तरह भ्रम और शरीर में प्रवेश करना
फिर अलग किया जाता है और अंगों और ऊतकों के बीच पूर्ण रूप से साझा किया जाता है
माप और बुद्धि, भ्रम में पेड़ों में प्रवेश करने वाले पदार्थ हैं
पत्तियों, फूलों और फलों के बीच पहचाना और वितरित किया जाता है।
उस पूर्णतः बुद्धिमान, जानने वाले और आवश्यक अस्तित्व को दर्शाता है
शक्तिशाली, साथ ही उसकी एकता और उसकी शक्ति की पूर्णता।
यह उसी सर्वशक्तिमान एक महामहिम और पूर्णता के निर्माता, उनकी शक्तियों के आवश्यक अस्तित्व को भी प्रदर्शित करता है
पूर्णता, और उनके प्रभुत्व की भव्यता और पूर्णता कि वह
परमाणुओं की दुनिया को एक असीम, विशाल क्षेत्र में बदल देता है और फिर बोता है
और हर पल पूर्ण बुद्धि के साथ इसकी कटाई करता है। वह ताजा प्राप्त करता है
उससे विभिन्न लोकों की उत्पत्ति होती है और उन अचेतन, शक्तिहीन और अज्ञानी परमाणुओं से
असंख्य व्यवस्थित कार्य कराए जाते हैं, मानो वे अत्यंत विद्वान, सचेतन और समर्थ हों।

इस प्रकार इनके माध्यम से ईश्वर के ज्ञान का एक बड़ा द्वार खुल जाता है।
चार तरीके हैं, और वे बड़े पैमाने पर मन के लिए एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता को प्रदर्शित करते हैं।
यदि आप उसे इस खिड़की से देखना और पहचानना नहीं चाहते, तो इससे छुटकारा पा लें।
अपने आप को तर्कशील बनाओ ताकि एक पशु की तरह बन जाओ और बच जाओ!

आठवीं खिड़की: सभी नबियों की गवाही, उन पर हो
शांति, (उन लोगों की आत्माएं जो प्रकाशवान हैं), उनके प्रकट और
प्रत्यक्ष चमत्कार; सभी संतों (जो प्रबुद्ध हृदय वाले प्रतिष्ठित हैं) की गवाही, जो उनके चमत्कारिक कार्यों और आध्यात्मिक खोजों पर निर्भर है;
और सभी शुद्ध विद्वानों (प्रबुद्ध मन वाले) की गवाही,
अपने शोध और सत्य की खोज पर भरोसा करते हुए, सभी आवश्यक गवाही देते हैं
एक का अस्तित्व और एकता, सभी चीजों का निर्माता, और उसकी शक्ति की पूर्णता। वे एक विशाल और ज्ञानवर्धक खिड़की बनाते हैं जिसके माध्यम से उसका
प्रभुत्व - पालन-पोषण, प्रशिक्षण, पालन-पोषण आदि - निरन्तर प्रकट होता रहता है।

आप किस पर भरोसा करते हैं कि आप उन लोगों की बात नहीं सुनते? या फिर दिन में अपनी आँखें बंद करके, क्या आप दुनिया को अंधकार में देखते हैं?

नौवीं विंडो

सभी प्राणियों की पूजा एक परम पूज्य को दर्शाती है।
आत्माओं और आंतरिक दुनिया में प्रवेश करने वालों द्वारा प्रमाणित
चीज़ों के आयाम, जहाँ वे स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों से मिलते हैं,

सभी देवदूत और आत्मिक प्राणी पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ एक शाश्वत पूज्य की पूजा करते हैं। हम सभी देखते हैं कि सभी जीवित प्राणी पूजा के समान तरीके से पूर्ण क्रम में कर्तव्य निभाते हैं, और सभी निर्जीव वस्तुएँ भी उसी तरह पूर्ण समर्पण के साथ सेवाएँ प्रदान करती हैं। यह सब एक सर्व-पूज्य के आवश्यक अस्तित्व और एकता को दर्शाता है, जो पूरी तरह से पूजा के योग्य है।

यही बात सभी संतों द्वारा ईश्वर को जानने के सत्य ज्ञान (जिस पर सर्वसम्मति का भार है), सभी कृतज्ञ लोगों के फलदायी धन्यवाद, ईश्वर के नामों और गुणों के साथ नियमित रूप से ईश्वर का स्मरण करने वालों के धन्य पाठ, ईश्वर की स्तुति करने वालों की स्तुति (जो ईश्वरीय कृपा को बढ़ाती है), ईश्वरीय एकता पर विश्वास करने वालों की घोषणाएं और विवरण (निर्णायक प्रमाणों पर आधारित), ईश्वर के सभी प्रेमियों का सच्चा प्रेम, ईश्वर को चाहने वालों की सच्ची इच्छा और अभिलाषाएं, तथा उनकी ओर मुड़ने वालों की उत्सुक खोज और झुकाव के बारे में भी यही बात है। यह सब उस सनातन पूज्य, सर्वमान्य, सर्ववर्णित, सर्वप्रशंसित, सर्वप्रिय, सर्वइच्छित और सर्वचाहा के साथ-साथ उसके प्रभुत्व की पूर्णता के आवश्यक अस्तित्व और एकता को दर्शाता है।

इसके अलावा, सिद्ध लोगों की स्वीकार्य पूजा और प्रार्थनाएँ, साथ ही उनकी आध्यात्मिक चमक, दर्शन और उनकी पूजा से उत्पन्न होने वाले प्रकाश, उस शाश्वत और शाश्वत रूप से पूजे जाने वाले के आवश्यक अस्तित्व और एकता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं।

ये तीन पहलू ईश्वरीय एकता की ओर एक व्यापक, प्रकाश देने वाली खिड़की खोलते हैं।

दसवीं विंडो

अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और आकाश से पानी बरसाया जिससे तुम्हारे लिए फल पैदा होते हैं और उसने नावों को तुम्हारे काम आने लायक बनाया ताकि वे उसके आदेश से समुद्र में चलें और उसने नदियों को तुम्हारे काम आने लायक बनाया और उसने सूर्य और चन्द्रमा को तुम्हारे काम आने लायक बनाया और उसने रात और दिन को तुम्हारे काम आने लायक बनाया और जो कुछ तुम उससे माँगते हो, वह तुम्हें प्रदान करता है। यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो भी गिन नहीं सकोगे। (14:32-34)

प्राणियों की आपसी सहायता और एकजुटता तथा एक-दूसरे की सहायता के लिए की गई पुकार पर उनका प्रत्युत्तर देना यह दर्शाता है कि सभी प्राणी एक ही द्वारा प्रशिक्षित हैं।

प्रशिक्षक, एक निदेशक द्वारा प्रशासित, एक डिस्पोजर द्वारा नियंत्रित, और
एक ही स्वामी की सेवा करो। पारस्परिक सहायता के सार्वभौमिक नियम के माध्यम से, सूर्य
प्रभु की आज्ञा से, पृथ्वी के जीवों के लिए आवश्यक भोजन पकाता है
प्राणियों को जीवित रहने के लिए प्रेरित करना। चंद्रमा एक कैलेंडर के रूप में कार्य करता है; प्रकाश, वायु, जल,
भोजन और पोषक तत्व सजीव प्राणियों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; पौधे पशुओं की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं;
पशु और पौधे मनुष्यों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; शरीर के अंग एक-दूसरे की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; और
भोजन के कण कोशिकाओं की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं।

अचेतन प्राणियों के बीच यह सबसे बुद्धिमान और उदार सहयोग,
एक दूसरे की जरूरतों पर प्रतिक्रिया करना और कानून के तहत एक दूसरे का समर्थन करना
उदारता और अनुग्रह का एक नियम, करुणा और देखभाल का एक नियम और
दया करो, दिखाओ कि वे एक अद्वितीय के सेवक, अधिकारी और प्राणी हैं
एकता में से एक, अद्वितीय, शाश्वत रूप से प्रार्थित, पूर्णतः शक्तिशाली,
हे भौतिकवादी धर्म के अनुयायी, हे परमज्ञानी, परम दयालु, परम दानशील और अनिवार्यतः विद्यमान।

दर्शन और वैज्ञानिकता, इस शक्तिशाली खिड़की का जवाब? क्या मौका हो सकता है
इसमें आपका क्या हाथ है?

ग्यारहवीं खिड़की

ध्यान रहे कि यह केवल स्मरण और पूरे दिल से है
परमेश्वर की भक्ति से हृदय को शांति और संतोष मिलता है। (13:28)

केवल अपने एक सृष्टिकर्ता को पहचानने से ही सभी आत्माएं और हृदय एक दूसरे से जुड़ सकते हैं
गुमराही के संकट और उलझन से मुक्ति पाएं, और
उस संकट से उत्पन्न आध्यात्मिक पीड़ा। सभी प्राणियों को एक निर्माता के रूप में मानना
एकता उन्हें मुक्ति पाने की अनुमति देती है, और वे विश्राम और संतुष्टि पाते हैं
एक ईश्वर का स्मरण। क्योंकि, जैसा कि ट्वेंटी-सेकेंड वर्ड में सिद्ध किया गया है,
यदि उन सभी असंख्य प्राणियों को किसी एक ही प्राणी से संबद्ध न किया जाए, तो
किसी भी चीज़ को अनगिनत कारणों से जोड़ा जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में, किसी चीज़ का अस्तित्व
एक चीज़ पूरी सृष्टि जितनी कठिन हो जाती है; एक फल पूरी सृष्टि जितनी कठिन हो जाता है;
ब्रह्मांड जितना कठिन, वास्तव में, उससे भी अधिक कठिन। इस पर विचार करें: यदि एक सैनिक
यदि एक सेना की कमान सौ अफसरों के हाथ में हो तो सौ कठिनाइयाँ खड़ी होंगी। लेकिन यदि एक सेना की कमान सौ अफसरों के हाथ में हो तो सौ कठिनाइयाँ खड़ी होंगी।
यदि एक अधिकारी के हाथ में सौ सैनिकों की कमान हो, तो उन्हें नियंत्रित करना उतना ही आसान होगा
एक सैनिक की तरह कमान संभालो। यह बात सृजन के मामले में भी सच है, क्योंकि एक चीज़ को कई कारणों से बनाने
पर उतनी ही समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, जितनी कि उसके अस्तित्व की संभावना है।
इस बात को ध्यान में रखते हुए, सृष्टिकर्ता की एकता में विश्वास और ईश्वर का ज्ञान या मान्यता हमें जिज्ञासा और सत्य
को खोजने की इच्छा से उत्पन्न होने वाले अंतहीन संकट से मुक्ति दिलाएगी, जो हमारे स्वभाव में निहित है।

अविश्वास और ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ना इतनी सारी मुश्किलें और पीड़ाएँ पैदा करता है कि उनमें स्पष्ट
रूप से कोई सत्य नहीं हो सकता। इसके विपरीत, हम

देखें कि कितनी आसानी से चीजें और प्राणी विविधता में अस्तित्व में आते हैं और बहुलता और फिर भी अत्यंत सुंदरता और कलात्मकता के साथ। सृजन की यह सहजता इसकी व्याख्या केवल इस आधार पर की जा सकती है कि सारी सृष्टि एक ईश्वर पर आधारित है। एक ईश्वर में विश्वास करने के मार्ग में असीम सहजता के लिए, यह निश्चित रूप से आवश्यक है और सत्य को भी देख लो। देखो, पथभ्रष्टता का मार्ग कितना अंधकारमय और कष्टदायक है। जब आप देख सकते हैं कि इसका मार्ग कितना आसान और सुखद है, तो आप इसे क्यों अपनाते हैं? क्या आप ईश्वरीय एकता पर विश्वास करते हैं और उसकी पुष्टि करते हैं? इस मार्ग को अपनाएँ और मुक्ति पाएँ।

बारहवीं विंडो: जैसा कि घोषित किया गया है:

> अपने रब के नाम की स्तुति करो, जो सर्वोपरि है, जो सृष्टि करता है और उचित अनुपात में फैशन; और कौन निर्धारित करता है (एक विशेष जीवन, प्रत्येक प्राणी के लिए प्रकृति और लक्ष्य को निर्धारित करता है, तथा उसे अपने मार्ग की ओर निर्देशित करता है और उस लक्ष्य की पूर्ति) (87:1-3)

सभी चीजों, विशेष रूप से जीवित चीजों का एक रूप और सुनियोजित अनुपात होता है उनके कार्यों के अनुसार, मानो वे ज्ञान के एक साँचे से निकले हों। प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार वक्रता और मोड़ के साथ एक अद्वितीय आकार दिया गया है। नियुक्त लाभ और उपयोग। उनके परिणामस्वरूप बाहरी और आंतरिक परिवर्तन और नवीकरण कुछ उपायों और उद्देश्यों के अनुसार आगे बढ़ता है जो इसके लिए निर्धारित किए गए हैं उनके जीवन। यह सब दिखाता है कि इन असंख्य प्राणियों के आकार और अनुपात एक सर्वव्यापी ढांचे के भीतर योजनाबद्ध हैं
एक सर्वशक्तिमान, महामहिम, सर्वज्ञानी का भाग्य या निर्धारण पूर्णता में से एक, और उन्हें कार्यशाला में रूप और शरीर दिए जाते हैं दिव्य शक्ति। यह सब उसके आवश्यक अस्तित्व की ओर संकेत करता है और उसकी एकता और उसकी शक्ति की पूर्णता के लिए अनगिनत भाषाओं में गवाही देता है।

अपने शरीर और उसके अंगों को देखें। उनके उपयोग और लाभों पर विचार करें प्रत्येक के वक्रता और मोड़ को देखो, और पूर्ण बुद्धि में सन्निहित शक्ति की पूर्णता को देखो!

तेरहवीं खिड़की: जैसा कि कहा गया है: ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी महिमा करे उसकी स्तुति के साथ (17:44), प्रत्येक चीज़ अपने निर्माता का उल्लेख और महिमा करती है अपनी भाषा में या मौखिक रूप में ये महिमा-गान
जीवन और स्वभाव, एक ही परम-पवित्र व्यक्ति के अस्तित्व को दर्शाते हैं।

स्वभाव या प्रकृति की गवाही को अस्वीकार नहीं किया जाता। व्यावहारिक जीवन द्वारा प्रस्तुत प्रमाण, विशेष रूप से जब वह उस जीवन के कई पहलुओं से निकलता है।
जीवन, संदेह पैदा नहीं कर सकता। देखो इन प्राणियों के कितने सुव्यवस्थित रूप हैं, जो सृष्टि और स्वभाव के अनगिनत साक्ष्य प्रदर्शित करते हैं, और धारण करते हैं उनके जीवन और तौर-तरीकों की भाषा में गवाही देते हैं, और ये सभी एक में बदल जाते हैं एकल केंद्र जैसे संकेंद्रित वृत्त, प्रत्येक एक अभिव्यंजक जीभ हैं। उनका सुसंगठित संरचनाएं और संगठन गवाही की भाषाएं हैं,

और उनका सुव्यवस्थित जीवन महिमा की भाषा है।
चौबीसवें वचन में तर्क दिया गया है कि ये महिमा और उत्कर्ष
एक सर्व-पवित्र सत्ता की गवाही दें, उसके आवश्यक अस्तित्व को प्रदर्शित करें
निश्चित रूप से जैसे प्रकाश सूर्य को दिखाता है, और उसकी दिव्यता की पूर्णता की ओर इशारा करता है।

चौदहवीं खिड़की

कहो, "किसके हाथ में है सारे संसार का शासन?" (23:88)

हमारे पास तो बस कुछ भी नहीं है, बस उसके प्राणों का भण्डार है। (15:21)

कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो उसके माथे के बाल से न पकड़ा हो। (11:56)

निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ पर नज़र रखता है और उसका हिसाब रखता है। (11:57)

इन श्लोकों में कहा गया है कि हर चीज़, हर परिस्थिति और हर पहलू में
इसके जीवन और अस्तित्व के लिए एक ही महान सृष्टिकर्ता की आवश्यकता है। प्राणियों को देखते हुए,
हम पूर्ण कमजोरी के भीतर पूर्ण शक्ति की अभिव्यक्ति देखते हैं और
पूर्ण नपुंसकता में एक पूर्ण शक्ति के प्रभाव और शिलालेख।
उदाहरण के लिए, पौधों के बीजों और जड़ों में जीवन-शक्ति का जागरण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।
असाधारण।

पूर्ण गरीबी और बंजरपन के भीतर भी पूर्ण धन की अभिव्यक्तियाँ हैं, जैसे सर्दियों में मिट्टी और पेड़ों की गरीबी और वसंत में उनकी चमक-दमक। पूर्ण जीवन की चिंगारियाँ पूर्ण रूप से निर्जीव पदार्थ में देखी जाती हैं (जैसे, खनिज तत्वों का जीवित प्राणियों में रूपांतरण)।

सर्वव्यापी चेतना की अभिव्यक्तियाँ पूर्ण अज्ञानता में देखी जाती हैं, जैसे कि जब सितारों से लेकर परमाणुओं तक सब कुछ इस तरह से कार्य करता है मानो सचेत रूप से ब्रह्मांड के क्रम, जीवन के सिद्धांतों और ज्ञान की माँगों के अनुरूप हो। ये सभी
अभिव्यक्तियाँ - नपुंसकता के भीतर शक्ति, कमजोरी के भीतर बल या ताकत,
गरीबी के भीतर समृद्धि, और निर्जीवता के भीतर जीवन और चेतना
अज्ञान - आवश्यक अस्तित्व और एकता की ओर खुली खिड़कियाँ
पूर्णतया शक्तिशाली, बलवान, धनवान, ज्ञानवान, साथ ही जीवित और
आत्मनिर्भर। अपनी समग्रता में, वे एक चमकदार राजमार्ग (रास्ता) की ओर इशारा करते हैं
ईश्वर और उसकी एकता में विश्वास) का भाव बड़े पैमाने पर फैल रहा है।

यदि आप रचनात्मकता को प्रकृति का गुण मानते हैं और इसे स्वयंभू मानते हैं
ईश्वरीय शक्ति को पहचानने के बजाय, आपको यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रत्येक वस्तु में अनंत शक्ति और सामर्थ्य, बुद्धि और कौशल निहित है, और
अधिकांश अन्य चीजों को देखने, जानने और निर्देशित करने की क्षमता।

पंद्रहवीं खिड़की: जैसा कि घोषित किया गया है: वह जो अपनी हर रचना को उत्कृष्ट बनाता है (३२:७), हर चीज़ अस्तित्व और एक रूप में लिपटी हुई है
अपनी प्रकृति की ग्रहणशीलता के अनुरूप पूर्ण माप और क्रम के साथ तैयार किया गया, बेहतरीन कला के साथ और सबसे प्रत्यक्ष विधि द्वारा, सर्वोत्तम आकार में संकलित किया गया

और सबसे आसान तरीके से, और सबसे व्यावहारिक सुविधाओं के साथ।
पक्षियों की “पोशाक” देखें और देखें कि वे कितनी आसानी से उलझ सकते हैं और लगातार उसका उपयोग कर सकते हैं
उनके पंख। चीजों को शरीर देना और उन्हें बहुत बुद्धिमानी से रूपों में तैयार करना
जैसा कि उल्लेख किया गया है और बिना किसी बर्बादी और निरर्थकता के, यह गवाही देता है कि
उन चीजों की संख्या, एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता के आवश्यक अस्तित्व के लिए और
एक परम शक्तिशाली और जानने वाले की ओर संकेत करता है।

सोलहवीं खिड़की: सृष्टि और ब्रह्मांड में व्यवस्था और संगठन
पृथ्वी पर हर मौसम में भर्ती किए जाने वाले जीवों का प्रबंधन, एक सार्वभौमिक उद्देश्यपूर्णता और बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। चूँकि कोई विशेषता एक के बिना नहीं हो सकती
यह इस बात को प्रमाणित करता है कि सार्वभौमिक ज्ञान एक बुद्धिमान व्यक्ति को दर्शाता है। ज्ञान के उस आवरण के भीतर अद्भुत श्रृंगार एक सर्वव्यापी अनुग्रह को दर्शाता है, जो दर्शाता है
एक सर्व-कृपालु उदारता का निर्माता। सर्वव्यापी अनुग्रह और
कृपा के उस आवरण के भीतर परोपकार एक सर्वव्यापी दया दिखाता है,
जो एक अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान को दर्शाता है।
दया के उस पर्दे पर सभी जीवित प्राणियों के लिए प्रावधान, उनकी आवश्यकताओं के लिए सभी परिपूर्ण और उचित, एक पालन-पोषण और प्रशिक्षण ईश्वरीय कृपा और एक
दयालु आधिपत्य। वह प्रशिक्षण और प्रशासन एक सर्व-उदार प्रदाता दिखाता है।

प्रत्येक प्राणी को पूर्ण बुद्धि से पाला गया है, पूर्ण अनुग्रह से सुसज्जित और सुशोभित किया गया है, पूर्ण दया से अनुग्रहित किया गया है, और पूर्ण देखभाल के साथ पोषित किया गया है
और करुणा, एक सर्वज्ञ के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है,
उदार, दयालु, प्रबन्धक निर्माता और उसकी एकता की ओर इशारा करता है।
सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रकट सर्वव्यापी ज्ञान पर विचार करें और
जो स्पष्ट रूप से एक उद्देश्य और इच्छा को दर्शाता है; सभी को शामिल करने वाला पूर्ण अनुग्रह
बुद्धि के अनुसार प्राणियों की भलाई; व्यापक दया में दोनों शामिल हैं
अनुग्रह और ज्ञान और सभी प्राणियों को गले लगाना; और सबसे उदार प्रदान करना और पोषण करना जिसमें दया, ज्ञान और अनुग्रह शामिल हैं, और सभी को गले लगाना
जीवित प्राणी। जिस तरह सात रंग मिलकर प्रकाश बनाते हैं और पृथ्वी को प्रकाशित करने वाला प्रकाश सूर्य को दर्शाता है, उसी तरह ज्ञान के भीतर अनुग्रह,
अनुग्रह, और दया के भीतर प्रदान करना और पोषण करना शानदार ढंग से दिखाता है, और
विशाल पैमाने पर और उच्च स्तर पर, एक सर्व-बुद्धिमान, सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-प्रदाता और अनिवार्य रूप से विद्यमान एकता और प्रभुत्व।

आप इसे बुद्धिमानी के साथ-साथ दयालु, उदार कैसे समझा सकते हैं,
ईश्वरीय संरक्षण और उत्थान; आपकी आँखों के सामने यह असाधारण, अद्भुत, चमत्कारी स्थिति? यादृच्छिक संयोग और संयोग से,
अंधी शक्ति, बहरी और गूंगी प्रकृति, या शक्तिहीन, बेजान और अज्ञानी द्वारा
कारण? "प्रकृति" का नाम देकर, जो असीम रूप से नपुंसक है, अज्ञानी है

मैं बहरा, अंधा, असहाय और असहाय हूँ, उस सर्वशक्तिमान के पास, जो सर्वशक्तिमान है।
असीम रूप से शक्तिशाली, जानने, सुनने और देखने वाला? क्या आप प्रतिबद्ध होना चाहते हैं
इतनी गंभीर गलती? आप इतने शानदार सत्य को कैसे मिटा सकते हैं
सूरज? किस लापरवाही के पर्दे के नीचे तुम उसे छिपा सकते हो?

सत्रहवीं खिड़की

निस्संदेह आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए निशानियाँ हैं। (45:3)

निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें:

वसंत और ग्रीष्म ऋतु के दौरान हम वस्तुओं के निर्माण में असीम उदारता और पूर्ण उदारता देखते हैं, जिसकी अपेक्षा की जा सकती है।
अनंत व्यवस्था और सामंजस्य के भीतर अव्यवस्था और भ्रम पैदा करते हैं। पृथ्वी के चेहरे को सजाने वाले सभी पौधों को देखें।
चीजों को बनाने की पूर्ण गति, जो सामान्यतः परिणामित होती है
असंतुलन और मर्यादा की हानि में, एक पूर्ण संतुलन और अनुपात के भीतर मनाया जाता है। पृथ्वी के चेहरे को सजाने वाले सभी फलों को देखें।
पूर्ण बहुलता और विविधता, जो सामान्यतः लाती है
तुच्छता और यहां तक कि कुरूपता के बारे में, कला की परिपूर्णता के भीतर स्पष्ट है
सुंदरता। धरती के चेहरे पर लगे सभी फूलों को देखो।
चीजों को बनाने में पूर्ण सहजता, जो सामान्यतः
सादगी और कला की कमी, एक कला, कौशल और ध्यान के भीतर देखी जाती है
अनंत डिग्री के। सभी बीजों को देखें, जो छोटे कंटेनरों की तरह हैं
और सभी पौधों और पेड़ों के कार्यक्रम, और उनके जीवन-इतिहास वाले छोटे मामलों की तरह भी।

बड़ी दूरियाँ, जिनके लिए सामान्यतः अंतर की आवश्यकता होती है
और विविधता, एक पूर्ण अनुरूपता और अनुरूपता के भीतर दिखाई देते हैं। पूरे देश में बोए जाने वाले अनाज की सभी किस्मों को देखें
दुनिया।

पूर्णतः अंतर्मिश्रण, जो सामान्यतः भ्रम पैदा करता है
और गंदगी, पूर्ण विभेदन और पृथक्करण के भीतर देखी जाती है।
विचार करें कि कैसे जमीन में डाले गए बीज आपस में मिल जाते हैं और
अपने पदार्थ के संबंध में एक दूसरे के समान हैं, पूरी तरह से
जब वे अंकुरित होने वाले होते हैं, तब उन्हें पहचाना जाता है। देखें कि विभिन्न पौधे कैसे अंकुरित होते हैं।
पेड़ों में प्रवेश करने वाले पदार्थों को पत्तियों, फूलों और फलों के लिए पूरी तरह से अलग किया जाता है, और पेट में प्रवेश करने वाले सभी खाद्य पदार्थ कैसे मिश्रित होते हैं
शरीर के अंगों और कोशिकाओं के लिए ये दोनों एक साथ पूरी तरह से अलग हो जाते हैं।
इन सब पर विचार करें और पूर्ण बुद्धि के भीतर पूर्ण शक्ति को देखें।
अनंत प्रचुरता और प्रचुरता, जो सामान्यतः उत्पन्न करती है
तुच्छता और व्यर्थता, सबसे मूल्यवान और सबसे अधिक देखी जाती है

पृथ्वी के प्राणियों और कला के संबंध में सार्थक। सभी के बीच
कला के उन असंख्य आश्चर्यों में से केवल विविधताओं पर ही विचार करें
पृथ्वी पर दयालु परमेश्वर की मेज पर दिव्य शक्ति की उन मिठाइयों, शहतूत को अर्पित करें, और उत्तम कला के साथ संयुक्त उत्तम दया का अवलोकन करें।

जिस प्रकार दिन का समय प्रकाश को दर्शाता है और प्रकाश सूर्य को दर्शाता है, उसी प्रकार अनंत प्रचुरता के बावजूद; अनंत प्रचुरता के भीतर, असीम अंतर्सम्बद्धता के बावजूद अनंत भेद और पृथक्करण; अनंत भिन्नता और पृथक्करण के भीतर, असीम अनुरूपता और समानता के बावजूद

महान दूरियाँ; अनंत समानता के भीतर, अनंत देखभाल और
असीम सहजता और सुविधा के बावजूद निर्माण में ध्यान; सबसे भीतर
सुंदर निर्माण, अनंत संतुलन, संतुलन, और बर्बादी की कमी
पूर्ण गति और तीव्रता के बावजूद; बर्बादी की अत्यंत कमी के भीतर,
कला की सर्वोच्च प्रचुरता और बहुलता के बावजूद कला की सुंदरता की सर्वोच्च डिग्री; कला की सर्वोच्च डिग्री के भीतर, पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य
अत्यधिक उदारता के बावजूद - ये सभी आवश्यक गवाही देते हैं
एक सर्वशक्तिमान, महिमावान, सर्वज्ञ, पूर्णतावान, कृपालु और सौंदर्यवान का अस्तित्व, एकता और एकत्व,

और उनकी शक्ति की पूर्णता और उनके प्रभुत्व की कृपा और सुंदरता। वे
इसका अर्थ प्रदर्शित करें: उसके पास सुन्दर नाम हैं (20:8)।

तो हे अभागे, हठी और असावधान! तू इसका क्या अर्थ निकाल सकता है?
शक्तिशाली सत्य या इस असीम चमत्कारी और अद्भुत स्थिति की व्याख्या करें
क्या आप इन असाधारण कलाओं का श्रेय किसे दे सकते हैं?
असावधानी से क्या तुम इस धरती जितनी चौड़ी खिड़की के पार चित्र बना सकते हो और फिर
इसे बंद करो? तुम्हारा मौका और संयोग कहाँ है? तुम्हारा अचेतन कहाँ है
साथी जिस पर आप भरोसा करते हैं और जिसे "प्रकृति" कहते हैं, आपका मित्र और सहारा
क्या संयोग और संयोग का होना बिलकुल असंभव नहीं है?
क्या इन मामलों में प्रकृति का हाथ होना भी अकल्पनीय नहीं है?
इन चीज़ों को ऑर्डर करने का एक छोटा सा अंश? या फिर बेजान, अज्ञानी, अचेतन प्रकृति ने हर चीज़ के अंदर मशीनें और प्रिंटिंग प्रेस बना रखे हैं, जो हर चीज़ को बनाने के लिए बनाई गई हैं
प्रत्येक से, और मात्रा में अलग-अलग चीजों की संख्या के बराबर?

अठारहवीं खिड़की

क्या वे कभी स्वर्ग और पृथ्वी के आंतरिक आयाम पर विचार नहीं करते?
धरती और उन पर अल्लाह की सम्पूर्ण प्रभुता? (7:185)

द ट्वेंटी-सेकेंड में बताई गई निम्नलिखित तुलना पर विचार करें
शब्द:

एक महल जैसा उत्तम, अच्छी तरह से डिजाइन किया गया और कलात्मक निर्माण इस ओर इशारा करता है एक संपूर्ण कार्य, अर्थात निर्माण का कार्य। एक संपूर्ण, अच्छी तरह से निष्पादित कार्य एक कुशल अभिनेता, एक कुशल मास्टर-बिल्डर की ओर इशारा करता है। एक कुशल का शीर्षक मास्टर-बिल्डर एक उत्तम विशेषता, एक कलात्मक क्षमता की ओर इशारा करता है। एक उत्तम विशेषता, एक कला में एक पूर्ण क्षमता एक परिपूर्ण के अस्तित्व की ओर इशारा करती है क्षमता। एक प्रीफ़ेक्ट क्षमता या क्षमता एक महान व्यक्ति के अस्तित्व की ओर इशारा करती है आत्मा, एक श्रेष्ठ प्राणी।

इसी तरह, हमेशा नवीनीकृत, ताज़ा और प्रतिस्थापित कार्य भरते हैं पृथ्वी का चेहरा और ब्रह्मांड पूर्ण डिग्री के कार्य दिखाते हैं। वे कार्य, एक असीम रूप से बुद्धिमान और सुव्यवस्थित प्रणाली में घटित होते हैं, एक एजेंट या एक दिखाते हैं अभिनेता को सही शीर्षक और नाम दिए गए हैं। क्योंकि यह स्पष्ट है कि अच्छी तरह से व्यवस्थित और बुद्धिमानी भरे काम करने वाले को कोई न कोई होना चाहिए। असीम रूप से परिपूर्ण शीर्षक इंगित करते हैं, उस एजेंट की असीम रूप से परिपूर्ण विशेषताओं की ओर मुड़ें। यह व्याकरण का भी एक नियम है - (अरबी) व्याकरण के अनुसार, संज्ञाओं की उत्पत्ति विशेषण हैं। परिपूर्ण विशेषताएँ परिपूर्ण व्यक्तिगत क्षमताओं की ओर इशारा करती हैं, और परिपूर्ण संभावनाएं उस व्यक्ति की ओर इशारा करती हैं जिसके पास पूर्णता की असीम डिग्री है।

इस प्रकार, चूँकि कला का प्रत्येक कार्य और ब्रह्मांड के सभी प्राणी परिपूर्ण हैं, और चूंकि प्रत्येक एक कार्य का गवाह है, कार्य एक नाम का, नाम एक विशेषता, एक संभाव्यता की विशेषता, और एक अस्तित्व की संभाव्यता, फिर - साथ ही साथ वे सभी महिमा के आवश्यक अस्तित्व और उनकी संख्या की एकता के एक ही निर्माता की गवाही देते हैं - एक पूरे के रूप में वे भगवान के ज्ञान की एक सीढ़ी का गठन करते हैं, जो जंजीर की तरह मजबूत रूप में उसे ले जाता है प्राणियों की एक श्रृंखला, और सत्य का एक प्रमाण जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता।

तो ऐ बेचारे, लापरवाह काफ़िर, क्या तुम इस मज़बूत सबूत को तोड़ सकते हो? प्राणियों की श्रृंखला? क्या आप इस खिड़की को बंद कर सकते हैं जिसमें सत्य की किरणें दिखाने के लिए प्राणियों की संख्या जितनी ही खुली जगहें हैं? सत्य की किरणें दिखाने के लिए कौन सा पर्दा है? क्या तुम असावधानी से इसे पार कर सकते हो?

उन्नीसवीं खिड़की

> सातों आकाश और पृथ्वी और उनमें जो कुछ है, सब उसकी महिमा करते हैं।
> वह तो बस उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा ही करता है। (17:44)

इस श्लोक के अर्थ के अनुसार, सर्वशक्तिमान निर्माता ने आकाशीय पिंडों से ज्ञान और अर्थ के इतने सारे उदाहरण जोड़े मानो अपनी महिमा और कृपा को व्यक्त करने के लिए उन्होंने स्वर्ग को सुशोभित किया है सूर्य, चंद्रमा और सितारों के साथ। उन्होंने ज्ञान के ऐसे उदाहरण भी जोड़े हैं वह वातावरण में रहने वाले प्राणियों को अर्थ और अर्थ सिखाता है, मानो वह वातावरण को बिजली, गरज और बारिश की बूंदों जैसे शब्दों में बोलना सिखा रहा हो। वह अपनी बुद्धि की पूर्णता और अपनी दया की सुंदरता भी सिखाता है।

जिस प्रकार वह पृथ्वी को पौधों और पेड़ों जैसे अर्थपूर्ण शब्दों में बोलने में सक्षम बनाता है, जानवरों, और इस तरह ब्रह्मांड को अपनी कला की पूर्णता दिखाता है, वह भी पौधे और पेड़ बनाकर अपनी कला की पूर्णता और अपनी दया की सुंदरता को दर्शाता है पत्तियों, फूलों और फलों के बारे में अपने शब्दों में बात करें। फूल और फल बनाकर बीज और पराग के शब्दों में बोलते हैं, वह अपनी कला की सूक्ष्मताएं सिखाते हैं और चेतन प्राणियों के प्रति उनके आधिपत्य की पूर्णता। इन अनगिनत शब्दों में महिमा के लिए, हम उस तरीके पर विचार करेंगे जिसमें एक फूल या कान गेहूँ अपनी महिमा व्यक्त करता है और जानें कि यह किस प्रकार गवाही देता है:

प्रत्येक पौधा और वृक्ष अपने निर्माता को अनेक भाषाओं में इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि देखने वालों को आश्चर्य होता है और वे कहते हैं: "परमेश्वर सर्व-महिमावान है, यह कितनी उत्कृष्ट गवाही देता है।" प्रत्येक पौधे की महिमा जब वह खिलता है और कान या कीलें उगती हैं - वह समय जब वह मुस्कुरा कर बोलती है - सुंदर होती हैं जैसे स्वयं और स्पष्ट। सभी फूलों की वाणी में व्यक्त ज्ञान या उद्देश्यपूर्णता को प्रदर्शित करने वाले आदेश या प्रणाली के लिए, अच्छी तरह से गठित भाषाओं में स्पाइक्स या कान, और अच्छी तरह से आनुपातिक बीज और अच्छी तरह से बनाया के शब्दों में अनाज, पूरी तरह से मापा और संतुलित है, जो स्पष्ट रूप से ज्ञान की ओर इशारा करता है। संतुलन या माप कला के एक डिजाइन में है, जो कौशल को दर्शाता है कला, और कला का डिज़ाइन अनुग्रह और उदारता दिखाने वाले अलंकरण में है। अलंकरण दया और परोपकार दिखाने वाली सुखद सुगंधों में है। चीजों की ये सार्थक अवस्थाएँ, एक दूसरे के भीतर, ऐसी रचनाएँ बनाती हैं

गवाही की एक भाषा कि वे अपने सभी राजसी निर्माता को उसके साथ परिभाषित करते हैं नाम, उसकी विशेषताओं के साथ उसका वर्णन करते हैं, उसके नाम की अभिव्यक्तियों का उदाहरण देते हैं, तथा उसके प्रेम और पहचान को व्यक्त करते हैं।

एक फूल से ऐसी गवाही सुनकर, अगर आप उसकी आवाजें सुन सकें पृथ्वी के मुख पर प्रभु के सभी बगीचों के सभी फूल और वे कितने शक्तिशाली ढंग से सर्वशक्तिमान निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की घोषणा करते हैं और एकता, तुम्हारे पास अब कोई प्रश्न, संदेह और संकोच कैसे रह गया?

एक पेड़ को देखो और उसकी सुन्दर अभिव्यक्ति देखो - कैसे वसंत में उसके पत्ते सभी नियमित रूप से दिखाई देते हैं, इसके फूल आनुपातिक रूप से खिलते हैं, इसके फल बढ़ते हैं और बुद्धि और दया में परिपक्व हो जाता है, और स्वयं हवाओं के झोंके पर नृत्य करता है। फिर, बुद्धिमतापूर्ण क्रम में व्यक्त सटीक संतुलन पर विचार करें। उदारता के हाथ से पत्ते हरे हो जाते हैं, और भगवान की जीभ फूल अनुग्रह की खुशी के साथ मुस्कुरा रहे हैं, और फलों के शब्द मुस्कुरा रहे हैं दया का प्रदर्शन करते हुए। इसके अलावा, अंदर की नाजुक कलाओं और डिजाइनों पर भी विचार करें संतुलन सटीक माप को दर्शाता है; और विभिन्न स्वाद और कुशलता से बनाए गए डिजाइन और आभूषणों के भीतर सुखद सुगंध दिखाई देती है दया और परोपकार, और बीज और पत्थर, जिनमें से प्रत्येक सुखद सुगंध और मीठे स्वाद में शक्ति का एक चमत्कार है। देखें कि ऐसे तथ्य कैसे

एक सर्वज्ञ, सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-हितैषी निर्माता, वरदानों के दाता, सर्व-सुंदर, उत्कृष्ट बनाने वाले, और उनकी दया की सुंदरता और उनके प्रभुत्व की पूर्णता के आवश्यक अस्तित्व और एकता को सबसे स्पष्ट रूप से दिखाएं। यदि आप सभी पेड़ों की सभी बोलियाँ सुन सकते, तो आप देख सकते कि खजाने में कितने सुंदर रत्न हैं: जो कुछ भी आकाश और पृथ्वी में है वह ईश्वर की महिमा करता है (61:1)।

इसलिए, हे अभागे, जो अपने को कृतघ्न समझकर अपने हाल पर छोड़ देता है! यदि तू उस सर्व-दयालु महापुरुष को पहचानना नहीं चाहता, जो तुझे अपने को प्रकट करता है और चाहता है कि तू उससे इतनी सारी भाषाओं में प्रेम करे, तो इन भाषाओं को चुप करा देना चाहिए। लेकिन चूँकि इन्हें चुप नहीं कराया जा सकता, इसलिए तुझे इनकी बात सुननी चाहिए।

सिर्फ़ अपने कान बंद करने से आप उनसे बच नहीं पाएंगे, क्योंकि ब्रह्मांड बोलना बंद नहीं करता और जीव चुप नहीं होते। ईश्वरीय एकता के साक्षी होने के नाते, उन्हें चुप नहीं कराया जा सकता; निश्चित रूप से, वे आपकी निंदा करेंगे।

बीसवीं विंडो182

पवित्र है वह, जिसके हाथ में हर चीज़ की पूर्ण प्रभुता है। (36:83)

हमारे पास तो बस ख़जाने हैं और हम उसे एक तयशुदा हदीस के साथ ही उतारते हैं। हम हवाएँ भेजते हैं।

---

182 इस बीसवीं खिड़की में जो सत्य है वह एक बार अरबी में मेरे सामने इस प्रकार आया:

प्रकाश की चमक आपके द्वारा प्रकाशित करने और उसके माध्यम से चीजों
को ज्ञात कराने के माध्यम से है; तरंगों में हवाओं की गति
आपके द्वारा उन्हें भेजने और नियोजित करने के माध्यम से है ताकि वे उसकी आज्ञाओं को शीघ्रता से
पूरा करने में सहायता करें।
तू महिमावान है, तेरा शासन कितना शक्तिशाली है!
नदियों का फूटना और बहना आपके द्वारा उन्हें संग्रहित करने और उन्हें वश में
करने के कारण है।
सभी प्रकार के पत्थरों और खनिजों का निर्माण और सजावट आपके द्वारा उन्हें व्यवस्थित करने और गढ़ने के
माध्यम से होती है।
हे सर्व-महिमावान हो आप, आपकी बुद्धि कितनी अद्वितीय और शानदार है!
फूलों का मुस्कुराना आपके द्वारा उन्हें सजाने और सुन्दर बनाने के कारण है।
वैभवशाली फलों का उद्भव आपके वरदान और कृपा से होता है।
आप सर्व-महिमावान हैं, आपकी कला कितनी सुंदर है!
पक्षियों का गाना आपके द्वारा उन्हें बोलने और एक दूसरे के साथ संवाद
करने के लिए प्रेरित करने के कारण है।
वर्षा का गान आपके द्वारा उसे भेजने, आपके द्वारा प्रदान किये जाने के माध्यम से होता है।
हे परमेश्वर, तू महिमावान है, तेरी दया कितनी विशाल है!
चन्द्रमाओं की गति आपके निर्धारण, व्यवस्था, निर्देशन और प्रकाशन से होती है।
तू महिमावान है, तेरे प्रमाण कितने उज्ज्वल हैं, तेरी प्रभुता कितनी स्पष्ट है!

ताकि तुम खाद पा सको, और फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं और उसे तुम तक पहुँचाते हैं
पीने के लिए; यह तुम नहीं हो जो इसके भंडार के रखवाले हो। (15:21-22)

जिस प्रकार एक परिपूर्ण ज्ञान और कला की सुंदरता और अनुग्रह स्पष्ट हैं
सृष्टि में विवरण, परिणाम और विवरण, साथ ही सार्वभौमिक तत्व भी, जो
भ्रम की स्थिति में होने के साथ-साथ यादृच्छिक और संयोगवश प्रतीत होना, स्थितियाँ ग्रहण करना
बुद्धि और कला द्वारा निर्देशित। इस प्रकार, जैसा कि इसके अन्य बुद्धिमान कर्तव्यों से संकेत मिलता है, प्रकाश
पृथ्वी पर ईश्वर के प्राणियों को दिखाने और उजागर करने के लिए उसकी अनुमति से चमकता है
प्रभु। अर्थात्, प्रकाश का उपयोग एक सर्वज्ञ निर्माता द्वारा किया जाता है; वह इसका उपयोग करता है
अपनी अनोखी कलाओं को इस संसार के बाजार में दिखाओ।

हवाओं पर विचार करें: जैसा कि इसके अन्य महान और बुद्धिमान लाभों से देखा गया है और
वे अपने कार्यों के लिए दौड़ते हैं, और कई महत्वपूर्ण कर्तव्यों को पूरा करते हैं। इस प्रकार, उनकी लहर जैसी हरकतें दर्शाती हैं कि उन्हें एक सर्वज्ञ निर्माता द्वारा नियोजित, भेजा और इस्तेमाल किया जाता है। वे प्रभु के आदेशों को तेजी से पूरा करने के लिए चलते हैं।

अब झरनों, झरनों और नदियों पर विचार करें! वे धरती से फूटकर बाहर निकलती हैं।
जमीन और पहाड़ों का अस्तित्व संयोग से नहीं है। बल्कि, उनके लाभ और उपयोग, सभी
ये ईश्वरीय दया के कार्य हैं, जिनका भंडारण पहाड़ों में किया गया है
ज़रूरत है, और उनका बुद्धि के अनुसार भेजा जाना यह दर्शाता है कि एक सर्व-बुद्धिमान प्रभु
उन्हें वश में करके संग्रहीत कर लिया है और उन्हें आज्ञाकारिता में आगे बढ़ने का कारण बना दिया है
उसकी आज्ञाओं का पालन करो।

अब विभिन्न प्रकार के पत्थरों, रत्नों और खनिजों पर विचार करें!
विशिष्ट उद्देश्यों और लाभों के लिए व्यवस्थित किया जाता है और मानव और पशु की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यवस्थित किया जाता है
इससे पता चलता है कि एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता ने सजाया, व्यवस्थित, संगठित किया है,
और उन्हें आकार दिया, और उन्हें उनके विशेष, लाभकारी गुण दिए।

अब फूलों और फलों पर विचार करें! मुस्कुराहटें, रंग, स्वाद, सुंदरता,
कढ़ाई, और सुगंध जो प्रत्येक प्रजाति के लिए विशिष्ट और दूसरों से अलग दी जाती है, वास्तव में मेज पर एक निमंत्रण और मेनू है

एक अत्यंत उदार निर्माता, एक अत्यंत दयालु उपहार देने वाला।

अब पक्षियों पर विचार करें! यह इस बात का निर्णायक प्रमाण है कि उनका चहचहाना और
चहचहाहट एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता के कारण है जो उन्हें बोलने के लिए मजबूर करता है, यह अद्भुत है
जिस तरह से वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और एक दूसरे के प्रति अपने इरादे व्यक्त करते हैं
इन ध्वनियों के साथ एक दूसरे को.

बादल भी अद्भुत होते हैं। गिरती हुई बारिश की बूंदों की आवाज़ के साथ-साथ
गड़गड़ाहट और बिजली की आवाजें, निरर्थक नहीं हैं; बल्कि, इनका निर्माण करना
अंतरिक्ष में अजीब वायुमंडलीय घटनाएं, बादलों से बारिश की बूंदें गिरना
जीवन का जल और पृथ्वी पर जीवित प्राणियों को ज़रूरतमंद और लालसापूर्ण बनाना
उन्हें दूध पिलाओ - यह सब दिखाता है कि पैटरिंग और क्रैशिंग सबसे अधिक हैं
सार्थक और उद्देश्यपूर्ण ज्ञान से भरा हुआ। एक सर्व-दयालु भगवान के आदेश पर, बारिश उन लोगों को पुकारती है जो इसके लिए तरस रहे हैं: "शुभ समाचार! मैं आ रहा हूँ!"

आकाश को देखो, विशेष रूप से असंख्य पिंडों के बीच चंद्रमा को इसमें ज्ञान के महत्वपूर्ण उदाहरण दिए गए हैं जो इस संबंध में हैं पृथ्वी - जिसकी चर्चा रिसाले-ए नूर में अन्यत्र की गई है - दर्शाती है यह एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी के आदेश पर चलता है।

प्रकाश से लेकर चंद्रमा तक ये सार्वभौमिक तत्व एक विशाल खिड़की खोलते हैं। वे अनिवार्यतः विद्यमान एक की एकता, उसकी शक्ति की घोषणा और प्रदर्शन करते हैं पूर्णता, और उसकी संप्रभुता की भव्यता। तो, हे असावधान, यदि तुम कर सकते हो इस गड़गड़ाहट की तरह गूंजने वाली आवाज को चुप करा दो, साथ ही इस सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश को बुझा दो, भगवान को भूल जाओ। अन्यथा अपने पास आओ कहो, पवित्र है वह, जिसके लिए सातों आकाश और धरती और उनके भीतर के सभी लोग महिमा करते हैं।

इक्कीसवीं खिड़की

> सूर्य अपने विश्राम-स्थल तक एक निश्चित अवधि तक अपने लिए निर्धारित मार्ग पर चलता है
> इसकी प्रणाली की स्थिरता के लिए। यह मापा निर्धारण है
> वह अत्यन्त महिमावान, अत्यन्त प्रबल, सर्वज्ञ है। (36:38)

सूर्य, ब्रह्माण्ड का दीपक, ब्रह्माण्ड के निर्माता के अस्तित्व और एकता पर एक खिड़की है, जो स्वयं के समान ही तेजस्वी और दीप्तिमान है।
आकार, स्थिति और गति में भारी अंतर के बावजूद, बारह ग्रह पूर्ण क्रम, बुद्धिमत्ता, संतुलन और बिना किसी बाधा के चलते और घूमते हैं।
भ्रम की स्थिति में रहते हैं और गुरुत्वाकर्षण नामक दिव्य नियम के माध्यम से सूर्य से बंधे रहते हैं, अर्थात वे अपने नेता का अनुसरण करते हैं। यह बड़े पैमाने पर दिव्यता को दर्शाता है शक्ति की महानता और प्रभु की एकता। जरा कल्पना करें और तुलना करें कि कैसे वह शक्ति और बुद्धि अवश्य ही प्रचंड होगी जो उन निर्जीवों को घुमाती है शरीर, वे विशाल, अचेतन द्रव्यमान, असीम रूप से परिपूर्ण क्रमबद्धता और असीम रूप से बुद्धिमान संतुलन के साथ और विभिन्न रूपों में और अलग-अलग दूरियों पर। यदि किसी भी हद तक संयोग इस विशाल और जटिल में हस्तक्षेप करता है घटना, यह इतना बड़ा विस्फोट पैदा करेगी कि ब्रह्मांड अगर यह किसी ग्रह की गति को एक मिनट के लिए भी रोक दे, तो वह ग्रह अपनी कक्षा से बाहर निकलकर किसी दूसरे ग्रह से टकराएगा। कल्पना कीजिए कि पृथ्वी से हजारों गुना बड़े पिंडों की भयानक टक्कर।

अन्य ग्रहों के चमत्कारों को ईश्वर की सर्वव्यापकता से जोड़कर ज्ञान, हम केवल अपनी पृथ्वी पर विचार करते हैं। जैसा कि तीसरे अध्याय में चर्चा की गई है पत्र (द लेटर्स में), इसे सूर्य के चारों ओर एक लंबी यात्रा करने के लिए प्रेरित किया जाता है प्रभु का आदेश एक अत्यंत महत्वपूर्ण कर्तव्य को पूरा करने का है और एक तरह से प्रभु की शाही शक्ति और महिमा की भव्यता, प्रभु की महानता और उनकी महानता को दर्शाता है।

---

[183] 12:4 में कुरान में बारह ग्रहों का संकेत मिलता है। (अनुवाद)

ईश्वरीय संप्रभुता, तथा उनकी दया और बुद्धि की पूर्णता।
यह जहाज़ प्रभु का है, यह परमेश्वर के अद्भुत प्राणियों से भरा हुआ है
और अपने चेतन सेवकों के लिए एक चलता-फिरता मनोरंजन स्थल बना दिया।
चंद्रमा को इसके साथ सटीक गणना के साथ शक्तिशाली उदाहरणों के लिए जोड़ा गया है
ज्ञान एक घंटे की सुई की तरह है जो समय बताती है, और इसे यात्रा करने के लिए कई महल दिए गए हैं। इस धन्य ग्रह के ये पहलू एक सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व और एकता को पृथ्वी जितनी ही मजबूत गवाही के साथ साबित करते हैं। आप बाकी के साथ एक सादृश्य बना सकते हैं

इससे सौर मंडल का निर्माण होगा।

इसके अलावा, सूर्य को एक घूमते हुए पहिये की तरह अपनी धुरी पर घूमने के लिए बनाया गया है
गुरुत्वाकर्षण नामक अमूर्त धागे को एक गेंद में लपेटने और बांधने के लिए
ग्रहों को अपने साथ ले जाकर उन्हें क्रम में सेट करें। एक सिद्धांत के अनुसार सूर्य अपने ग्रहों के साथ 20 किमी/सेकंड की गति से नक्षत्र की ओर चला जाता है
हरक्यूलिस। यह स्वयं-स्पष्ट रूप से सर्वशक्तिमान की शक्ति और
आज्ञा दो, अनंत काल के प्रभु। ऐसा लगता है मानो वह सौरमंडल बनाता है
आदेश के तहत सैनिकों की सेना की तरह आगे बढ़ें, जिससे उनके आधिपत्य का पता चले
महिमा.

तो, हे खगोलशास्त्री, क्या इन मामलों में संयोग का हाथ हो सकता है? मुझे बताओ क्या?
कारण उन तक पहुँच सकते हैं, कौन सी शक्ति इसके करीब आ सकती है! क्या ऐसा सर्व-महान संप्रभु नपुंसकता प्रदर्शित करेगा और दूसरों को अपने में हिस्सा देगा
संप्रभुता? क्या वह इसे, विशेष रूप से जीवित प्राणियों को, जो ब्रह्मांड के फल, परिणाम, उद्देश्य और मलाई हैं, दूसरे हाथों में दे देंगे? क्या वह दूसरों को ऐसा करने की अनुमति देंगे?
हस्तक्षेप करने के लिए? क्या वह हमें अपने हाल पर छोड़ देगा, जबकि हम सबसे ज़्यादा
व्यापक फल, सबसे उत्तम परिणाम, उनके अतिथि और प्रतिनिधि
पृथ्वी (जिसे अपने नियमों के अनुसार शासन करना चाहिए), और दर्पण के रूप में कार्य करना चाहिए
(उनके नामों को दर्शाते हुए)? क्या वह हमें प्रकृति और संयोग पर छोड़ देंगे, जिससे
उसकी प्रभुता की महिमा और उसकी परिपूर्ण बुद्धि को शून्य कर दिया?

बीसवीं खिड़की

> क्या हमने धरती को पालना और पहाड़ों को मस्तूल नहीं बनाया?
> और हमने तुमको जोड़े-जोड़े पैदा किये हैं। (78:6-8)
>
> परमेश्वर की दया के निशानों को देखो, कैसे वह पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है
> इसकी मृत्यु! (30:50)

पृथ्वी एक सिर है जिसमें असंख्य मुख हैं, जिनमें असंख्य
जिन भाषाओं में से प्रत्येक में असंख्य प्रमाण हैं, जो असंख्य बातों की गवाही देते हैं
एक सर्व-प्रतापी व्यक्ति के आवश्यक अस्तित्व और एकता के मार्ग, वह जो
वह सभी चीज़ों पर सर्वशक्तिमान है और सब कुछ जानता है, और अपने पवित्र
विशेषताएँ और सर्वसुन्दर नाम.

हम पृथ्वी की पहली रचना पर विचार करते हैं: एक चट्टानी परत बनाई गई थी द्रव अवस्था में पदार्थ से और मिट्टी की परत चट्टान से बनी है। अगर यह अगर यह अपना तरल रूप बरकरार रखता तो यह निर्जन होता। यदि यह चट्टान की तरह, लोहे की तरह कठोर बनी रहती, तो यह हमारे लिए उपयुक्त नहीं होती। और इसलिए हम जानते हैं कि एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता की बुद्धि, जो जानता है पृथ्वी के निवासियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इसे इसका वर्तमान स्वरूप दिया गया।

इसके बाद, पहाड़ों को मस्तूलों की तरह धरती में गाड़ दिया गया ताकि इसे स्थिर करें या पृथ्वी के आंतरिक भाग से बाहर निकलने के लिए मजबूर करें ताकि वे अपने आंतरिक भूकंपों के लिए एक निकास प्रदान कर सकता है और इस प्रकार यह अपना कर्तव्य जारी रख सकता है और बिना किसी मोड़ के गति। पहाड़ पृथ्वी की सतह की रक्षा भी करते हैं महासागरों के आक्रमण से। इसके अलावा, वे जीवित प्राणियों की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के लिए खजाने हैं, वायु फिल्टर जो हानिकारक गैसों की हवा को शुद्ध करते हैं, भंडारण करते हैं पानी, और आवश्यक खनिजों के स्रोत हैं। ये सभी तथ्य इस बात की गवाही देते हैं परम शक्तिशाली, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-दयालु व्यक्ति का आवश्यक अस्तित्व और एकता.

तो, हे भूविज्ञानी, आप इसे कैसे समझाएंगे? क्या संयोग से ऐसा हुआ होगा? क्या यह दिव्य जहाज अद्भुत प्राणियों से भरा, अद्भुत चमत्कारों का प्रदर्शन है? क्या यह जहाज़ अपनी सतह पर व्यवस्थित किसी भी चीज़ को खोए बिना अविश्वसनीय गति से यात्रा कर सकता है? जहाज़ पर कला के अद्भुत प्रकारों को देखें पृथ्वी का चेहरा। देखें कि कैसे बुद्धिमानी से तत्वों [रासायनिक पदार्थ और हवा, पानी, मिट्टी और आग के सार्वभौमिक तत्व] को कर्तव्यों का प्रभार दिया गया है, कैसे वे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी के आदेश पर यहाँ दयालु भगवान के अतिथियों की कितनी सुन्दर देखभाल करते हैं तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहते हैं!

कला के अद्वितीय और अद्भुत कार्यों के बीच, उन पंक्तियों पर विचार करें पृथ्वी के बहुरंगी चेहरे पर कढ़ाई जो हड़ताली उदाहरण प्रदर्शित करती है बुद्धि का। देखो कैसे वह नालों और नदियों, समुद्रों और नदियों, पहाड़ों और पहाड़ियों को अपने प्राणियों के लिए आवास और परिवहन के साधन के रूप में उपयोग करता है और नौकर। इनके अलावा, पृथ्वी को अनगिनत लोगों से आबाद करना पौधों और जानवरों की प्रजातियों को पूर्ण बुद्धि और व्यवस्था के साथ, और इसे बनाने के कारण जीवन के साथ समृद्ध होना; और उन निवासियों को नियमित चक्रों में बाहर निकालना मृत्यु के बाद भी अपने कर्तव्यों का पालन करना, तथा मृत्यु के बाद भी नियमित रूप से इसे भरना और पुनर्जीवित करना मृत्यु एक तरह से पुनरुत्थान के समान है, असंख्य भाषाएँ हैं जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही दें, एक सर्वज्ञ, पूर्णतया बुद्धिमान व्यक्ति के लिए।

संक्षेप में, पृथ्वी का चेहरा उसकी कला के चमत्कारों को प्रदर्शित करता है, एक सभा है उत्तम प्राणियों का क्षेत्र, प्राणियों की सेनाओं के लिए एक मार्ग, और अपने सेवकों के लिए पूजा स्थल और निवास स्थान। ब्रह्मांड के समान होने के कारण हृदय में, पृथ्वी पर ईश्वरीय एकता का प्रकाश दिखाई देता है जो ब्रह्माण्ड जितना ही व्यापक है।

अतः हे भूगोलवेत्ता! यदि तुम पृथ्वी बनाते समय ईश्वर को नहीं पहचानोगे,
उसे असंख्य मुखों से जाना जाता है जिनमें अनंत जीभें हैं, और यदि
आप प्रकृतिवाद के दलदल में अपना सिर डुबोते हैं, इसकी सीमा पर विचार करते हैं
अपनी गलती का एहसास होने पर आपको कठोर सजा मिलेगी।
योग्य बनो, होश में आओ। दलदल से अपना सिर उठाओ और कहो: "मैं
ईश्वर पर विश्वास रखो, जिसके हाथ में सभी चीज़ों का पूर्ण प्रभुत्व है!"

तेईसवीं खिड़की

उसी ने मृत्यु और जीवन को पैदा किया। (67:2)

जीवन ईश्वरीय शक्ति का सबसे चमकदार और सुंदर चमत्कार है,
दिव्य एकता का सबसे शानदार और मजबूत सबूत, सबसे व्यापक
और चमकीला दर्पण जो शाश्वत रूप से मांगे गए को दर्शाता है। जीवन बनाता है
सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर को उसके सभी नामों और स्वरूपों सहित जाना जाता है।
यह एक मिश्रित प्रकाश है जो अनेक दिव्य गुणों के एक साथ प्रकट होने से बना है, ठीक उसी प्रकार जैसे सात
रंग प्रकाश में तथा प्राकृतिक मिठाइयों में विभिन्न औषधीय पदार्थ मिलकर मिश्रित होते हैं।

इसी तरह, जीवन भी कई दिव्य गुणों के प्रकटीकरण से मिलकर बनी एक वास्तविकता है, जिसके कारण इसमें
कई विशेषताएं हैं। इनमें से कुछ विशेषताएं विकसित होती हैं
इंद्रियों के माध्यम से और अलग हो जाते हैं। हालांकि, उनमें से अधिकांश, भावनाओं, अनुभूतियों और भावनाओं
के माध्यम से खुद को महसूस करते हैं और एक के रूप में प्रकट होते हैं
जीवन के "उबलने" का परिणाम।

जीवन में ईश्वर कृपा, दया, अनुग्रह और बुद्धि भी सम्मिलित है, जो कि ईश्वर के प्रति हमारी सहानुभूति है।
ब्रह्मांड को बनाए रखने और प्रशासित करने में सबसे महत्वपूर्ण तत्व। ऐसा लगता है जैसे जीवन उन्हें जहाँ भी
ले जाता है साथ ले जाता है। उदाहरण के लिए, जब
जब प्राण किसी शरीर में प्रवेश करता है, तो उसमें सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम भी प्रकट होता है।
और जीवन के उस "घोंसले" को पूर्ण बुद्धि के साथ बनाता और व्यवस्थित करता है। नाम
सर्वशक्तिमान और दयालु ईश्वर प्रकट होते हैं
उसी क्षण, उस घोंसले को उसकी आवश्यकता के अनुसार सुसज्जित और सजाना
जरूरतों को पूरा करना, और, क्रमशः, इसे जारी रखने के लिए सभी प्रकार के उपकार प्रदान करना
उस जीवन को परिपूर्ण करो। और, सर्व-प्रदाता नाम जीवन को उसके लिए आवश्यक भौतिक और आध्यात्मिक
पोषण प्रदान करके स्वयं को प्रकट करता है
रखरखाव और समृद्धि के साथ-साथ एक निश्चित मात्रा में भंडारण करके
उसके शरीर में पोषण की कमी है।

इसका अर्थ यह है कि जीवन एक केन्द्र बिन्दु की तरह है जिस पर विभिन्न नाम या
विशेषताएँ आपस में मिलकर या बल्कि एक इकाई बनाने के लिए एक दूसरे में एकजुट हो जाती हैं।
ऐसा लगता है जैसे जीवन पूरी तरह से ज्ञान है और साथ ही शक्ति, बुद्धि भी है,
दया, इत्यादि। अपने व्यापक स्वभाव के कारण, जीवन ईश्वर की दया का दर्पण है।
शाश्वत रूप से प्रार्थित होने के कारण यह ईश्वर की आवश्यक विशेषताओं को दर्शाता है

दिव्य सत्ता का सार। इस कारण से, अनिवार्य रूप से विद्यमान एक,
सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर, महानतम में जीवन बनाता है और दिखाता है
वह जीवन के चारों ओर सभी चीजों को केंद्रित करता है ताकि वे उनकी सेवा कर सकें
क्योंकि जीवन को एक बहुत ही महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंपा गया है।

ईश्वर को शाश्वत रूप से प्रार्थना करने वाला दर्पण बनाना आसान नहीं है।
असंख्य नए जीवन और आत्माएं, जो सार या पहचान हैं
जीवन, जिसे हम लगातार तुरन्त अस्तित्व में लाते हुए देखते हैं और
शून्य से आवश्यक अस्तित्व, पवित्र गुण और आवश्यक रूप से विद्यमान, सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर एक के सर्व-सुंदर नामों को प्रकट करें, जैसे प्रकाश की किरणें सूर्य को दिखाती हैं। यदि आप सूर्य को नहीं पहचानते और उसके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते, तो आपको उस प्रकाश को नकारना होगा जो सर्वत्र व्याप्त है।
दिन के समय। उसी तरह, यदि आप एकता के सूर्य, सर्व-जीवित को अस्वीकार करते हैं
और स्वयंभू, जीवनदाता और मरने वाले, आप ही हैं
इस ग्रह पर सभी जीवित प्राणियों के अस्तित्व को नकारना, उनके प्रकट होने से लेकर पृथ्वी के अंतिम विनाश तक। आपको खुद को यह स्वीकार करना होगा
कि आप अचेतन, सबसे अज्ञानी प्राणियों की तरह हैं।

चौबीसवीं खिड़की

उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है। उसके “चेहरे” के सिवा सभी चीज़ें नाशवान हैं;
उसी का राज्य है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे (28:88)

मृत्यु, जीवन की हद तक ईश्वरीय प्रभुत्व का प्रमाण है, एक बहुत मजबूत
उसकी एकता का सबूत। इस अर्थ के अनुसार: उसने मृत्यु का सृजन किया है
और जीवन (६७:२), मृत्यु न तो पूर्ण गैर-अस्तित्व या विलुप्ति है, न ही
बिना किसी लेखक के पूर्ण विनाश या क्षय। बल्कि, जैसा कि पहले पत्र में चर्चा की गई है, यह एक सर्वज्ञ लेखक द्वारा सांसारिक सेवा से मुक्ति, स्थान परिवर्तन और शारीरिक नवीनीकरण, कर्तव्यों से मुक्ति है,

शरीर की कैद से मुक्ति, बुद्धि का एक सुव्यवस्थित कार्य।
पृथ्वी का जीवंत चेहरा, साथ ही साथ इसके जीव और सजीव प्राणी, इस बात की गवाही देते हैं
सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता को स्वीकार करते हैं, वैसे ही वे जीवित प्राणी अपनी मृत्यु के माध्यम से एक सर्व-जीवित, सर्व-स्थायी की गवाही देते हैं
एकता और शाश्वतता। जैसे कि इस तरह की बातें बाईसवें वचन में समझाई गई थीं, हम यहाँ केवल निम्नलिखित सूक्ष्म बिंदु को समझाएँगे।

अपने जीवन के माध्यम से, जीवित प्राणी एक अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान प्राणी की गवाही देते हैं।
अस्तित्व; अपनी मृत्यु के माध्यम से, वे एक सर्व-जीवित सत्ता की गवाही देते हैं
स्थायी एक की अनंतता और एकता। उदाहरण के लिए, पृथ्वी का चेहरा,
जो एक जीवित इकाई है, अपनी सभी विशेषताओं के माध्यम से निर्माता को दिखाती है और
जब यह सर्दियों के दौरान मर जाता है और एक सफेद कफ़न से ढक जाता है,
इसके चेहरे की ओर हमारा ध्यान भटक जाता है या वसंत की यह सर्द लाश हमारी दृष्टि भटका देती है

अतीत की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है और हमारी आँखों के सामने एक व्यापक दृश्य प्रस्तुत करता है। शब्द, सभी अतीत के झरने, प्रत्येक पृथ्वी को कवर करने वाली दिव्य शक्ति का एक चमत्कार है चेहरा, इस विश्वास पर जोर दें कि एक नया वसंत आएगा और पृथ्वी का चेहरा पुनर्जीवित हो जाएँगे और जीवित प्राणियों से भर जाएँगे। इस प्रकार, सभी पिछले झरने, जैसे साथ ही पृथ्वी का चेहरा [जिसने जीवन और मृत्यु के चक्र का अनुभव किया है लाखों वर्ष] आवश्यक अस्तित्व, एकता, एक सर्वशक्तिमान निर्माता, एक सर्वशक्तिमान की स्थायित्व और अनंत काल पूर्णता की, एक आत्मनिर्भर, सर्व-स्थायी, इतनी शानदार और दृढ़तापूर्वक और इतने बड़े पैमाने पर, तथा इतने स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कि, मैं यह घोषणा करने से खुद को नहीं रोक सकता: “मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, जो एकता में है, अद्वितीय है।”

अर्थ के अनुसार: वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है, जैसे यह जीवंत धरती वसंत के माध्यम से निर्माता की गवाही देती है, यह समय के दो पंखों पर व्यवस्थित दिव्य शक्ति के चमत्कारों की ओर भी ध्यान आकर्षित करती है - अतीत और भविष्य - अपनी मृत्यु के माध्यम से। एक स्प्रिंग के स्थान पर यह दिखाता है हज़ारों। यह सिर्फ़ हज़ारों चमत्कारों की जगह हज़ारों पावर के चमत्कारों की ओर भी इशारा करता है एक. उन पिछले वसंतों में से एक की गवाही उससे अधिक निर्णायक है वर्तमान वसंत का, क्योंकि सभी पिछले वसंत गायब हो गए हैं, साथ ही उनके स्पष्ट कारणों को समाप्त कर दिया गया है, तथा उनके स्थान पर उनके जैसे नए कारणों को प्रतिस्थापित कर दिया गया है।

इससे पता चलता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए प्रत्यक्ष कारणों का कोई मतलब नहीं होता। महामहिम में से एक उन्हें बनाता है और भेजता है। हालाँकि, वह उन्हें बनाता है उसकी बुद्धि के कारण कुछ कारणों पर निर्भर है। जहाँ तक पृथ्वी के जीवंत होने का सवाल है आने वाले समय में क्रम से व्यवस्थित किए गए चेहरों की गवाही और भी सशक्त होगी, क्योंकि वे तब बनाए जाएँगे जब उनका कोई चिह्न नहीं होगा। प्रत्येक चेहरा मूल होंगे और निश्चित कर्तव्यों के लिए भेजे जाने के बाद हटा दिए जाएंगे।

अतः हे असावधान, जो प्रकृतिवाद के दलदल में डूबने वाला है, कैसे? ऐसा कुछ जिसके पास कोई बुद्धिमान और शक्तिशाली हाथ न हो जो समस्त भूत और भविष्य को छू सके पृथ्वी के जीवित चेहरे में हस्तक्षेप कर सकते हैं? क्या संयोग और प्रकृति, जिसका अर्थ है आपके जैसा कुछ भी नहीं [सृजन करने, पालने और मरने के संबंध में) इसमें किसका हाथ है? अगर आप इस दलदल से मुक्त होना चाहते हैं, तो कहिए: "प्रकृति है ईश्वरीय शक्ति की एक नोटबुक से अधिक कुछ नहीं है, और संयोग एक छिपी हुई ईश्वरीय बुद्धि का पर्दा है जो हमारी अज्ञानता को छुपाता है," और सत्य के करीब पहुंचें।

पच्चीसवीं खिड़की: कला का एक काम एक कलाकार को दर्शाता है। कुछ जन्म लेने के लिए जन्म देने वाली किसी चीज़ का अस्तित्व होना ज़रूरी है। नीचे होने का मतलब है ऊपर होना। और इसी तरह। सभी सापेक्ष चीज़ों या गुणों की तरह जोड़ियों में मौजूद होना एक दूसरे के संबंध में और एक दूसरे के अस्तित्व की आवश्यकता के कारण, जो कुछ भी मौजूद है उसकी आकस्मिकता, चाहे वह विशेष हो या संपूर्ण, आवश्यकता को दर्शाती है, क्योंकि किसी चीज का अस्तित्व में होना या न होना समान रूप से संभव है।

पूरे ब्रह्मांड में देखे जाने वाले बनने या क्रियान्वित होने से सक्रियता दिखती है। उनका बनाया जाना सृजन की गतिविधि को दर्शाता है। उनकी देखी गई बहुलता और संरचना एकता को अनिवार्य बनाती है। आवश्यकता, अभिनय, करना, बनाना,

और एकता आवश्यक, सक्रिय, रचनात्मक और एक होने के गुणों की मांग करती है,
जिनमें से कोई भी आकस्मिक, निष्क्रिय, बहुल, संयोजित और निर्मित नहीं है।
इसे देखते हुए, सभी आकस्मिकताएं, क्रियाएं, संरचनाएं, सृजन, बहुलताएं,
और ब्रह्मांड में रचनाएँ एक अनिवार्य रूप से विद्यमान एक, एक की गवाही देती हैं
वह जो चाहे वह करे, वह सभी चीजों का निर्माता है, एक और अद्वितीय है।

संक्षेप में, आकस्मिकता आवश्यकता को दर्शाती है, होना या बनना आवश्यकता की ओर संकेत करता है।
करने या बनाने की क्रिया, और बहुलता एकता की ओर इशारा करती है। उसी तरह,
जैसा कि अस्तित्व में देखा गया है, निर्मित और प्रदान किया जाना, अस्तित्व की ओर इशारा करता है
बनाने, सृजन करने और प्रदान करने के कार्यों का। ये, बदले में, इस ओर इशारा करते हैं
एक दयालु निर्माता का अस्तित्व, जो निर्माता और सब कुछ प्रदान करने वाला है। इसका मतलब यह है कि प्रत्येक प्राणी,
अपनी सैकड़ों विशेषताओं की भाषाओं के माध्यम से, सैकड़ों अनिवार्य रूप से विद्यमान ईश्वर की गवाही देता है।

प्राणी के सर्वसुन्दर नाम। यदि यह स्वीकार न किया जाए, तो ऐसे सभी गुण
को भी अस्वीकार किया जाना चाहिए।

छब्बीसवीं खिड़की१८४: इसमें देखी गई सुन्दरता और आकर्षण

ब्रह्मांड में जीव एक निश्चित अवधि के लिए प्रकट होते हैं और फिर नवीनीकृत हो जाते हैं
और गायब होने के बाद ताज़ा हो जाते हैं। इससे पता चलता है कि वे किसी तरह के हैं
एक शाश्वत सौंदर्य की अभिव्यक्तियों की छायाएँ। बस के रूप में चमकदार सैनिकों
नदी की सतह पर बुलबुले बताते हैं कि बुलबुले एक सतत सूर्य की किरणों के दर्पण हैं, समय की बहती नदी में यात्रा करने वाले प्राणियों पर चमकती सौंदर्य की किरणें एक सर्व-स्थायी सौंदर्य की ओर इशारा करती हैं और उसके संकेत हैं।

ब्रह्माण्ड के हृदय में निहित ईमानदार प्रेम भी कभी-न-कभी-
प्रियतम का अंत। जैसे कि पेड़ के स्वभाव में कुछ ऐसा नहीं है जो मौजूद हो
इसके फलों में मानवता में विद्यमान गंभीर, उत्कृष्ट प्रेम का कोई स्थान नहीं है,
सृष्टि के वृक्ष का सबसे संवेदनशील और नाजुक फल, दर्शाता है कि ब्रह्मांड
इसमें सच्चा प्यार है, हालांकि अलग-अलग रूपों और अलग-अलग प्रकार का।
ब्रह्माण्ड के हृदय में सच्चा प्रेम एक शाश्वत, सर्वप्रियतम को दर्शाता है।

ब्रह्माण्ड की गोद में प्रकट होने वाले आकर्षण, आकर्षण और आसक्ति सभी सतर्क और जागरूक दिलों को दिखाते हैं कि वे
एक आकर्षक, शाश्वत सत्य के आकर्षण से उत्पन्न। इसके अलावा,
संत लोग और वे लोग जो सृष्टि में छिपे सत्यों को उजागर कर सकते हैं, जो
सबसे संवेदनशील और प्रबुद्ध प्राणियों का समूह बनाएं, सर्वसम्मति से

---

184 यह खिड़की दिल और प्यार के लोगों से संबंधित है।

रिपोर्ट करें कि उन्हें महामहिम के एक सर्व-सुंदर स्वरूप की प्राप्ति हुई है
और अपने प्रकाश और दर्शन के माध्यम से जानते हैं कि सर्व-सुन्दर महामहिम स्वयं को जानते हैं और प्यार करते हैं।
यह इस बात की गवाही देता है
एक अनिवार्यतः विद्यमान, एक सर्व-सुन्दर का अस्तित्व
महिमा, और मनुष्यों द्वारा स्वयं को ज्ञात करना। साथ ही,
सौंदर्यीकरण और सजावट की कलम ब्रह्मांड के चेहरे पर काम कर रही है
और जीव उस पेन के मालिक के नाम की सुंदरता को दर्शाता है।

इस प्रकार ब्रह्माण्ड अपने चेहरे की सुन्दरता और हृदय के प्रेम से,
उसके हृदय में आकर्षण, उसकी आँखों में प्रकाश और दूरदर्शिता, और
इसकी सुंदरता और सजावट समग्र रूप से एक सुखद, स्पष्ट खिड़की खोलती है।
जो बुद्धि और हृदय सजग और जागृत हैं, उनमें यह एक सर्वसुन्दर, महिमावान, कभी न समाप्त होने वाले प्रियतम,
शाश्वत सर्वपूज्य को प्रदर्शित करता है - जिनके सभी नाम सुन्दर हैं।

अतः हे असावधान, जो भौतिकता और मोह के अंधकार में, घुटन भरे संदेहों और अटकलों में संघर्ष कर रहे हैं, होश में आओ! ऊपर उठो।
मानवता के अनुकूल तरीके से इन द्वारों से देखें। कृपा देखें
एकता की सुंदरता और आनन्द को प्राप्त करें, पूर्ण विश्वास प्राप्त करें, और एक सच्चे मनुष्य बनें।

सत्ताईसवीं खिड़की

ईश्वर सभी चीजों का निर्माता है, और वह संरक्षक (शक्तिशाली) है (39:62)

ब्रह्माण्ड में दृश्यमान चीजों को कारण और प्रभाव के रूप में देखने पर हम देखते हैं
सबसे बड़ा कारण - अपने आप में - सबसे तुच्छ चीज़ को भी अस्तित्व में नहीं ला सकता। इस प्रकार कारण केवल एक पर्दा है, क्योंकि एक ऐसा होना चाहिए जो
प्रभावों (चीजों) को अस्तित्व में लाता है। असंख्य प्राणियों में से, मानव स्मृति की क्षमता पर विचार करें, जो एक सरसों के दाने के आकार के स्थान पर स्थित है
व्यक्ति के सिर के आकार का। अपने छोटे आकार के बावजूद, यह इतना व्यापक है कि इसमें
पुस्तक, या यों कहें कि पुस्तकालय, जिसमें उसका सम्पूर्ण जीवन-इतिहास दर्ज है।

उस ईश्वरीय चमत्कार के मूल के रूप में आप क्या कारण प्रस्तुत कर सकते हैं?
शक्ति? मस्तिष्क की उलझी हुई तंत्रिकाएँ? कोशिका के सरल, अचेतन परमाणु या
कण? संयोग की हवाएँ? वास्तव में, कला का वह चमत्कार केवल वही हो सकता है जो
ऐसे एक, एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता का कार्य, जो हमें याद दिलाने के लिए
इस संसार में हमने जो कुछ किया, उसका एकत्रण करने का सर्वोच्च स्थान, वह
हमारे कर्मों की सूची की प्रतिलिपि बनाकर उसे स्मृति के रूप में हमारी बुद्धि को प्रदान करता है।

सभी अंडों, बीजों और फलों के बीजों की तुलना अपनी स्मृति से करें, और फिर तुलना करें
इन छोटे चमत्कारों के अन्य सभी प्रभाव शक्ति के हैं। जो भी प्रभाव या चीज़ आप देखते हैं
देखिए, आप देखेंगे कि इसमें इतनी अद्भुत कलात्मकता है कि यदि न केवल
इसका अपना कारण था लेकिन सभी कारणों को एक साथ इकट्ठा किया गया था, वे अपने प्रदर्शन करेंगे

इसके सामने नपुंसकता। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि सूर्य, कुछ लोगों द्वारा सोचा गया
यदि आपने पूछा होता तो वे एक बहुत बड़ा कारण या अभिकर्ता होते, सचेत होते और उनमें इच्छाशक्ति होती
मक्खी का शरीर बनाने के लिए, यह स्पष्ट रूप से उत्तर देगा: "मेरे निर्माता के लिए धन्यवाद
ग्रेस, मेरी दुकान में बहुत सारा प्रकाश और गर्मी और कई रंग हैं।
हालाँकि, एक मक्खी के शरीर में आँखें, कान, जीवन और अन्य चीजें होती हैं जो मानव शरीर में नहीं होती हैं।
मेरी दुकान में या मेरी क्षमता के भीतर।"

किसी वस्तु की अद्भुत कला और सजावट उसके कारणों का खंडन करती है (जैसे कि उसका
अस्तित्व) और अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता, सभी का निर्माता की ओर इशारा करते हैं
कारण - इस अर्थ के अनुसार: सारा मामला केवल उसी का है
(11 :123) — और उसे सभी चीज़ों का सच्चा निर्माता स्वीकार करें
और घटनाएँ। इसी तरह, चीज़ों से जुड़े परिणाम, उद्देश्य और लाभ
दिखाओ कि वे एक अत्यन्त दयालु, अत्यन्त तत्वदर्शी प्रभु के कार्य हैं, जो कारणों के पर्दे के पीछे से कार्य करते हैं।

चूंकि अचेतन कारण किसी उद्देश्य का पीछा नहीं कर सकते, तो हम कैसे समझा सकते हैं?
यह तथ्य कि प्रत्येक प्राणी अनेक निश्चित उद्देश्यों के लिए अस्तित्व में आता है
और लाभ, और ज्ञान के कई उदाहरणों के अनुसार? एकमात्र उत्तर
यह कि एक अत्यन्त तत्वदर्शी, अत्यन्त कृपालु प्रभु उन्हें उत्पन्न करता है, और
उन लाभों को अपने अस्तित्व का कारण बनाता है।

बारिश के आने पर विचार करें। बारिश के स्पष्ट कारणों में सजीव प्राणियों के लिए कोई विचार या चिंता नहीं है। इसलिए इसे सजीव प्राणियों की मदद करने के लिए भेजा जाता है।
एक दयालु सृष्टिकर्ता की बुद्धि के माध्यम से प्राणी जो सृजन करता है
और फिर उनके लिए प्रावधान करता है। बारिश को "दया" कहा जाता है, क्योंकि यह कई परिणाम लाती है
दया का प्रतीक है और बहुत से लाभ पहुँचाता है। ऐसा लगता है जैसे दया बारिश की बूंदों में समाहित है
और बूँद-बूँद कर गिरता है।

सभी सजे हुए पौधों और जानवरों में प्रदर्शन और अलंकरण, जो
सभी प्राणियों पर मुस्कुराओ, एक महाप्रतापी प्राणी की आवश्यक बातों की ओर भी इशारा करो
अस्तित्व और एकता और वह जो अदृश्य के पर्दे के पीछे है,
उस अलंकरण और सजावट के माध्यम से खुद को जाना और प्यार करना चाहता है। यह सब ज्ञात और प्यार करने के गुणों की ओर इशारा करता है,
जो बदले में, एक सर्वज्ञात, सर्वप्रेममय और सर्वशक्तिशाली निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं।

संक्षेप में, कारण, कारण की तुलना में असीम रूप से साधारण और नपुंसक हैं।
प्रभाव (चीजें), जो कला से भरपूर और मूल्यवान हैं। तो उनमें कोई प्रभाव कैसे हो सकता है
सृष्टि में वास्तविक भूमिका? साथ ही, चीज़ों के लाभ और उनके उद्देश्यों का पालन किया जाना
उनके माध्यम से और उनके लिए सृष्टि में किसी भी वास्तविक भूमिका से इनकार करते हैं, क्योंकि वे इसका श्रेय देते हैं
उनका अस्तित्व एक सर्वज्ञ निर्माता के लिए समर्पित है। इसके अलावा, उनकी सजावट और
उनके अस्तित्व में आने से स्पष्ट कौशल एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता की ओर इशारा करते हैं जो
वह अपनी शक्ति को सचेत प्राणियों तक पहुंचाना चाहता है, जो प्रेम किया जाना चाहता है।

हे असहाय मनुष्य जो कारणों को देवता मानता है! तुम इन महत्वपूर्ण वास्तविकताओं को कैसे समझाते हो? तुम अपने आप को क्यों धोखा देते हो? यदि तुम एक विवेकशील प्राणी हो, तो फाड़ दो कारणों के पर्दे को अलग कर दो और घोषणा करो: "वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है," असंख्य भ्रमों से बचाया गया।

अट्ठाईसवीं खिड़की

उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की रचना है।
तुम्हारी ज़बानों और रंगों की विविधता। इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं
जो जानते हैं। (30:22)

हम ब्रह्माण्ड में एक सर्व-समावेशी ज्ञान और व्यवस्था देखते हैं,
शरीर की कोशिकाओं से लेकर पूरी सृष्टि तक। जब हम शरीर की कोशिकाओं को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि
के आदेश और कानून द्वारा महत्वपूर्ण संगठन और व्यवस्था
वह जो सभी शारीरिक कार्यों और आवश्यकताओं को देखता है और नियंत्रित करता है। जिस प्रकार शरीर में वसा के रूप में कुछ पोषण संग्रहित रहता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग किया जा सके, उसी प्रकार
कोशिकाओं में भी इसी तरह की भंडारण सुविधा है। हम पौधों में एक बुद्धिमानीपूर्ण संगठन, खेती और नर्सरी भी देखते हैं; जानवरों में एक उदार निर्वाह और प्रजनन; और ब्रह्मांड में एक राजसी प्रबंधन और रोशनी भी देखते हैं
स्तंभ जैसे हिस्से, जिनमें से प्रत्येक महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरा करता है। हम संपूर्ण को देखते हैं
ब्रह्मांड को एक देश या शहर के रूप में पूरी तरह से योजनाबद्ध और व्यवस्थित किया गया है
ज्ञान और उत्कृष्ट उद्देश्यों के कुछ उत्कृष्ट उदाहरणों के लिए एक महल।

जैसा कि बाईसवें अंक के प्रथम स्टेशन में समझाया और तर्क दिया गया है
वचन, ये तथ्य परमेश्वर के साथ किसी भी भागीदार को जोड़ना असंभव बनाते हैं।
सबसे छोटे कण से लेकर सबसे बड़े तारों तक, सब कुछ इस तरह से आपस में गुंथे और जुड़े हुए हैं कि जो तारों को अपने अधीन नहीं कर सकता और उनका प्रबंधन नहीं कर सकता, वह कभी भी उन पर नियंत्रण नहीं कर सकता।
किसी कण पर हावी होना। किसी एक कण पर हावी होने के लिए, किसी को सक्षम होना चाहिए
सभी सितारों को वश में करना और उनका प्रबंधन करना। साथ ही, जैसा कि इसमें समझाया और तर्क दिया गया है
बाईसवें शब्द का दूसरा पड़ाव, वह जो सृजन नहीं कर सकता
स्वर्ग को एक सटीक क्रम में रखने से किसी को भी एक अद्वितीय चेहरा नहीं मिल सकता है।
जो समस्त स्वर्गों का स्वामी नहीं हो सकता, वह स्वर्गीय राज्य का लेखन भी नहीं कर सकता।
किसी व्यक्ति के चेहरे पर वह निशान जो उसे दूसरों से अलग करता है।

यह सब मिलकर ब्रह्माण्ड जितनी बड़ी एक खिड़की बनाता है, इसलिए यदि हम देखें
इसके माध्यम से, व्यक्ति और मन की आँखें दोनों स्पष्ट रूप से देखती हैं कि: ईश्वर हर चीज़ का निर्माता है और वह हर चीज़ का रक्षक है। आकाश और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं... (39:62-)

63) ब्रह्माण्ड के पन्नों पर बड़े अक्षरों में अंकित हैं।
उन्हें न तो आंखें हैं, न दिल, या वे केवल मानव प्रतीत होते हैं।

उनतीसवीं खिड़की

कोई चीज़ उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा न करती हो। (17:44)

एक बार वसंत के मौसम में, मैं अकेलेपन के विचारों और भावनाओं के बीच यात्रा कर रहा था। एक पहाड़ी की तलहटी में, मैंने एक पीले रंग का जंगली फूल देखा, जिसने मुझे मेरे गृहनगर और अन्य स्थानों पर अतीत में देखे गए समान फूलों की याद दिला दी। फिर यह
मुझे आश्चर्य हुआ कि वह फूल किसकी मोहर थी, किसकी मुहर और शिलालेख था,
धरती के चेहरे पर मौजूद सभी फूल उसकी मुहरें और मुहरें थीं।
विचार से यह विचार आया कि जिस प्रकार एक पत्र की मुहर उस व्यक्ति की घोषणा करती है जो
लिखा और भेजा, तो वह फूल दयालु परमेश्वर की मुहर है, और वह
पहाड़ी, जिस पर ऐसे शिलालेख और अर्थपूर्ण पौधों की "पंक्तियाँ" बनाई गई हैं [और उस फूल के साथ सील की गई हैं], उस फूल के निर्माता का एक पत्र।

पहाड़ी अपने आप में एक मुहर है, और उसके आगे का मैदान परमेश्वर का एक पत्र है।
दयालु परमेश्वर [इससे मुहरबंद] इन विचारों से निम्नलिखित सत्य की प्राप्ति हुई:
प्रत्येक वस्तु, प्रभु की मुहर के समान है, तथा सभी वस्तुओं का श्रेय उसके सृष्टिकर्ता को देती है।
और यह साबित करता है कि यह अपने लेखक का एक पत्र है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु दिव्य एकता पर एक ऐसी खिड़की बनाती है कि वह सभी चीजों को एकता के एक अद्वितीय एक के अधीन कर देती है
स्वामित्व। यह जीवित चीजों के लिए विशेष रूप से सच है, जिनमें से प्रत्येक में स्वामित्व होता है
इतनी अद्भुत रचना और चमत्कारी कला कि जिसने इसे ऐसा बनाया है
और इसे इतने अर्थपूर्ण ढंग से डिज़ाइन भी करता है, वही सभी चीज़ों को बनाता है।
अर्थात जो सब कुछ नहीं बना सकता वह एक चीज भी नहीं बना सकता।

हे तुम जो चीज़ों की वास्तविकता से अनजान हो, ब्रह्मांड की ओर देखो
चेहरा! प्राणियों के पन्नों की गवाही को कौन नकार सकता है, जो सभी हैं
जैसे अनंत काल से मांगे गए असंख्य अक्षर, एक के भीतर एक?
ईश्वरीय एकता के लिए उन पर लगाई गई मुहरों की गवाही को कौन नकार सकता है?
क्या सत्ता उन्हें चुप करा सकती है? अगर आप उनमें से किसी की भी बात दिल से सुनेंगे, तो आप
इसे यह कहते हुए सुनें: "मैं गवाही देता हूँ कि परमेश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।"

तीसवीं खिड़की

> यदि उनमें (आसमान और धरती में) अन्य देवता होते तो
> यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर से बढ़कर होता, तो दोनों ही नष्ट हो जाते। (21:22)
>
> उसके "चेहरे" को छोड़कर सभी चीजें नाशवान हैं; उसकी संप्रभुता और
> उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे (28:88)

यह खिड़की उन सभी धर्मशास्त्रियों की खिड़की है जो अपने तर्कों को
इस तथ्य पर कि सभी चीजें आकस्मिक हैं (बिल्कुल आवश्यक नहीं) और
समय के साथ अस्तित्व में आए हैं। वे यह साबित करने के लिए इस तरीके का पालन करते हैं
अनिवार्यतः विद्यमान किसी का अस्तित्व। उनके विस्तृत स्पष्टीकरण का संदर्भ देते हुए
शरहुल-मवाकिफ और शरहुल-मकासिद जैसी विशाल विद्वत्तापूर्ण पुस्तकों से लेकर , हम आत्मा तक आने वाली कुछ किरणों को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करेंगे
उस खिड़की के माध्यम से कुरान को इस प्रकार देखें:

सत्ता और संप्रभुता प्रतिद्वंद्विता, साझेदारी या हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देते हैं। अगर किसी गांव में दो मुखिया हों, तो उसकी व्यवस्था और शांति नष्ट हो जाएगी।
जिस जिले या कस्बे में दो गवर्नर होंगे, वहां बहुत भ्रम की स्थिति पैदा हो जाएगी, तथा
दो राजाओं (या सरकारों) वाला देश निरंतर अशांति में रहेगा।
चूँकि इन धुँधली छायाओं में निरंकुश सत्ता और संप्रभुता का आनंद लिया जाता है
जो शक्तिहीन लोग आत्मनिर्भर नहीं हैं, वे प्रतिद्वंद्विता और अपने विपरीत के हस्तक्षेप को अस्वीकार करते हैं, इस बात पर विचार करते हैं कि संप्रभुता, शक्तिहीनता के रूप में, कितनी दृढ़ता से सत्य है।
दिव्य प्रभुत्व की डिग्री पर सर्वोच्च, पूर्ण साम्राज्य और अधिकार
एक परम शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा भोगा गया, हस्तक्षेप और साझेदारी को अस्वीकार करता है।
इसका अर्थ है, साझेदारों के बिना एकता और पूर्ण स्वतंत्रता ही एकमात्र उपाय है।
देवत्व और प्रभुत्व की सबसे अपरिहार्य और निरंतर आवश्यकता।

ब्रह्माण्ड की उत्तम व्यवस्था और सुन्दर सामंजस्य इसकी गवाही देते हैं।
मक्खी के पंख से लेकर आकाश तक ब्रह्माण्ड में एक उत्तम व्यवस्था है।
दीपक जिसके आगे हमारा मन विस्मय और प्रशंसा से झुक जाता है, और घोषणा करता है: "परमेश्वर की महिमा सर्वथा है! परमेश्वर ने क्या चमत्कार किया है! परमेश्वर इसका भला करे!"

यदि ईश्वर के साथ साझेदारों को हस्तक्षेप करने की कोई गुंजाइश होती
उसके साथ, इस अर्थ के अनुसार: यदि उनमें देवता होते (
स्वर्ग और पृथ्वी) ईश्वर के अलावा, दोनों निश्चित रूप से बर्बाद हो गए होते
(21:22), व्यवस्था नष्ट हो जाएगी और ब्रह्माण्ड का रूप और आकार बदल जाएगा
बदलाव। लेकिन, जैसा कि कहा गया है: फिर से देखें: क्या आपको कोई दरार नज़र आती है? फिर से देखें
और फिर से, आपकी दृष्टि धुंधली और चकाचौंध, और भयभीत और आप पर वापस आ जाएगी
कमज़ोर (६७:३-४), चाहे हम सृष्टि में कोई दोष ढूँढ़ने की कितनी भी कोशिश करें, हमारी नज़र उस पर ही रहेगी
थककर लौटें और अपनी गलती का कारण बताएं: "मैं थक गया हूँ
मैं अपने आपको व्यर्थ ही दोषी मानता हूँ, क्योंकि इसमें कोई दोष नहीं है।" इससे पता चलता है कि व्यवस्था एकदम सही है,
जिसका अर्थ है कि यह उत्तम व्यवस्था परमेश्वर की एकता की गवाही देती है।

यह देखते हुए कि ब्रह्माण्ड समय के साथ अस्तित्व में आया और इसलिए

धर्मशास्त्री तर्क देते हैं कि यह शाश्वत नहीं है:

> दुनिया परिवर्तनशील है। जो कुछ भी परिवर्तनशील है, उसका अपना महत्व है।
> यह समय के भीतर ही अस्तित्व में आया है और समयबद्ध है।
> समय के भीतर जो भी चीज अस्तित्व में आई है, उसका कोई न कोई स्वामी अवश्य है।
> इसे अस्तित्व में लाया। यही वास्तविकता है, इस ब्रह्मांड का एक
> शाश्वत सृष्टिकर्ता.

हम कहते

> हैं: ब्रह्मांड की निश्चित रूप से एक शुरुआत है, क्योंकि यह अस्तित्व में आया
> समय के भीतर। क्योंकि हम देखते हैं कि हर शताब्दी, हर वर्ष, यहाँ तक कि हर मौसम में एक दुनिया
> एक नई दुनिया से बदल जाती है। इस प्रकार एक सर्वशक्तिमान है
> वह महामहिम जो हर वर्ष एक नई दुनिया का आविष्कार और निर्माण करते हैं,
> हर मौसम, या यहाँ तक कि हर दिन।

> चेतन प्राणियों को इसे दिखाने के बाद, वह इसे एक नए से बदल देता है एक. वह इन दुनियाओं को एक दूसरे से जोड़कर एक दूसरे का उत्तराधिकारी बनाता है समय की एक श्रृंखला में एक तार। यह निश्चित रूप से एक सर्वशक्तिमान की शक्ति है जो इस तरह से नए संसारों की श्रृंखला बनाता है।
> इससे स्पष्ट है कि ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ है। उसने इस ब्रह्माण्ड को बनाया है और पृथ्वी को उन शक्तिशाली अतिथियों के लिए अतिथिगृह बनाओ।

जहां तक आकस्मिकता का प्रश्न है, धर्मशास्त्री तर्क देते हैं:

> आकस्मिकता का अर्थ है दो संभावनाओं के बीच समानता। अर्थात, यदि यह किसी चीज़ का अस्तित्व में आना या न आना समान रूप से संभव है, किसी एक संभावना को प्राथमिकता देने वाला होना चाहिए, किसी एक के अनुसार निर्माण करने वाला होना चाहिए यह वरीयता, क्योंकि आकस्मिक प्राणी एक दूसरे को नहीं बना सकते एक के बाद एक। न ही वे चक्रों में अनंत काल तक वापस जा सकते हैं पूर्व ने बाद वाले को बनाया है। यह देखते हुए, वहाँ एक जरूरी है वह अस्तित्ववान सत्ता जो सबको रचती है।

धर्मशास्त्रियों ने रचनात्मक कारण और प्रभाव की श्रृंखला को गलत साबित कर दिया है, साथ ही क्रमिक रचनाकारों की धारणा, बारह निर्णायक तर्कों के साथ, जिनमें से कुछ को वे “आरोहण में तर्क” और “चरणों में तर्क” कहते हैं। कारण और प्रभाव की शृंखला को तोड़कर उन्होंने अनिवार्यतः सिद्ध कर दिया है कि अस्तित्वमान प्राणी का अस्तित्व.

हम कहते हैं: कारण और प्रभाव की शृंखला की असंभवता को दर्शाने के बजाय सृष्टि में प्रभाव या क्रमिक रचनाकारों के चक्र से आवश्यक सिद्ध करने के लिए एक ऐसे सृष्टिकर्ता का अस्तित्व जिसकी कोई शुरुआत नहीं है और जिसने सभी चीजों का निर्माण किया है, यह सत्य है। सृष्टिकर्ता से संबंधित हर चीज़ पर मुहर दिखाना बेहतर और आसान है सभी चीज़ों का ज्ञान। कुरान के ज्ञान के माध्यम से, सभी शब्द और इस वर्ड में विंडोज़ इस सिद्धांत का पालन करते हैं। भले ही आकस्मिकता का विषय आवश्यक रूप से प्रदर्शित करने के लिए तर्कों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करता है अस्तित्वमान प्राणी का अस्तित्व असंख्य तरीकों से, विषय को इसकी आवश्यकता नहीं है धर्मशास्त्रियों के दृष्टिकोण तक ही सीमित रहना चाहिए। बल्कि, यह असंख्य संभावनाओं को खोलता है अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के ज्ञान के तरीके। उदाहरण के लिए, जब प्रत्येक वस्तु अपने अस्तित्व, अस्तित्व, विशेषताओं, गुणों और जीवन काल के संबंध में असंख्य संभावनाओं के बीच झिझकती है, हम देखते हैं कि वह एक सुव्यवस्थित, सुस्थापित मार्ग का अनुसरण करती है ताकि वह सबसे उपयुक्त शरीर प्राप्त कर सके,
और यह अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक गुणों से सुसज्जित है, साथ ही अपने जीवन के दौरान उसे जिन सभी अवस्थाओं, स्थितियों और विशेषताओं का अनुभव होगा। यह उसी की इच्छा से है जिसने हर चीज़ को उसकी विशेषताएँ प्रदान की हैं, चुनने वाले के चुनाव के माध्यम से, और एक बुद्धिमान व्यक्ति के निर्माण के माध्यम से सृष्टिकर्ता जो इसे अपने अद्वितीय मार्ग पर बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए निर्देशित करता है।

फिर वह उसे उपयुक्त विशेषताओं और गुणों से सुसज्जित करता है और उसे एक अंग बना देता है। एक समग्र इकाई का, जो उसके सामने संभावनाओं को बढ़ाता है, क्योंकि उसके लिए उस इकाई में हज़ारों तरीक़ों से जगह पाना समान रूप से संभव है। हालाँकि,
इसे सबसे उपयुक्त तरीके से रखा गया है ताकि यह फलदायी कार्य कर सके
और उससे अपेक्षित उद्देश्यपूर्ण कर्तव्य। तब इकाई एक बड़े संगठन का हिस्सा बन जाती है
इकाई, जो संभावनाओं को और भी अधिक बढ़ा देती है। पहले की तरह, इसे इस तरह से रखा गया है कि यह अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों को पूरा कर सके। यह सटीक और निर्णायक रूप से एक सर्व-बुद्धिमान निदेशक के आवश्यक अस्तित्व को प्रदर्शित करता है और दिखाता है
कि सभी चीजें एक सर्वज्ञ प्राधिकरण के आदेश के माध्यम से निर्देशित होती हैं।

एक प्राइवेट को अपने दस्ते, कंपनी, बटालियन, रेजिमेंट, कोर और सेना के संबंध में कुछ कर्तव्य और विशेष रूप से निर्धारित सेवाएं निभानी होती हैं।
और प्रत्येक के लिए विशिष्ट रूप से बुद्धिमानी से व्यवस्थित संबंध। इसी तरह, आपकी आंख की एक कोशिका
पुतली का आपकी आंख से और फिर आपके सिर, नसों, तंत्रिका तंत्र और पूरे शरीर से एक निश्चित संबंध होता है। इसके लिए बुद्धिमानी से कर्तव्य भी बांटे गए हैं
प्रत्येक के संबंध में। यदि यह अपना न्यूनतम कर्तव्य नहीं निभाता, तो आप बीमार हो जाएंगे
और शरीर को कष्ट होगा.

इस प्रकार, जिस प्रकार प्रत्येक प्राणी अपने माध्यम से एक अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता की घोषणा करता है,
अस्तित्व, विशेषताएं, शरीर, रूप और गुण, प्रत्येक अपनी घोषणा भी करता है
अन्य भाषाओं में निर्माता जब अलग-अलग बड़ी और बड़ी समग्र संस्थाओं में स्थित होता है। प्रत्येक इकाई में अपनी सेवाओं और कर्तव्यों के संबंध में, यह
सर्व-बुद्धिमान निर्माता के आवश्यक अस्तित्व, इच्छा और
चुनाव। सभी मिश्रित संस्थाओं के केवल निर्माता के लिए, जो एक स्थान रखता है
इस तरह से काम करें कि उनके बीच समझदारी भरा रिश्ता कायम रहे,
ऐसे काम कर सकता है। इसका मतलब है कि एक बात हज़ारों में उसकी गवाही देती है
भाषाओं का। परिणामस्वरूप, अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी की ऐसी गवाही
अस्तित्व ब्रह्मांड में प्राणियों की संख्या से कहीं अधिक है।
वे संभावित गुणों, विशेषताओं, रूपों, पदों और की संख्या तक पहुँचते हैं
प्रत्येक को सौंपे गए कर्तव्य, साथ ही वे जिस समग्र इकाई में स्थित हैं, उसके साथ उनके संबंध।

तो हे अज्ञानी, तुम कितने बहरे हो कि सुन नहीं सकते।
क्या यह गवाही ब्रह्माण्ड को भर देगी? आप क्या कहते हैं?

इकतीसवीं खिड़की

> निस्संदेह हमने मनुष्य को उत्तम प्रकार का बनाया है,
> सृष्टि का नमूना. (९५:४)
>
> धरती में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो निश्चयता चाहते हैं, और साथ ही उन लोगों के लिए भी जो निश्चयता चाहते हैं।
> अपने ही भीतर, तो क्या तुम सत्य को नहीं देखते? (51:20-21)

यह खिड़की मानवता की खिड़की है और भीतर से खुलती है
इसके अस्तित्व का पहलू। जैसा कि विस्तृत विवरण पुस्तकों में उपलब्ध है
अनेक संत विद्वानों के विचारों के आधार पर हम केवल कुछ मूलभूत बातों का ही उल्लेख करेंगे।
कुरान से ज्ञान प्राप्त किया है। जैसा कि पवित्र कुरान में बताया गया है
ग्यारहवाँ वचन और अन्य, प्रत्येक मनुष्य इतना व्यापक है
प्रतिलिपि (अस्तित्व की) कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने सभी नामों का अनुभव कराता है
व्यक्ति द्वारा स्वयं के माध्यम से। अन्य लोगों को विवरण संदर्भित करना
वर्ड्स, यहां हम केवल निम्नलिखित तीन बिंदुओं पर चर्चा करेंगे:

पहला बिन्दु: मनुष्य तीन रूपों में ईश्वरीय नामों का दर्पण है:

पहलू: पहला

पहलू: जिस तरह रात का अंधेरा रोशनी का संकेत देता है, उसी तरह मानवता
अपनी कमजोरी और नपुंसकता, दरिद्रता और अभाव के माध्यम से इंगित करता है,
अपूर्णता और दोष, महामहिम की शक्ति, बल के एक सर्वशक्तिमान के लिए,
धन, दया, इत्यादि। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति कई लोगों के लिए दर्पण बन जाता है
ईश्वर के गुण। इसके अलावा, हमारी असीम कमज़ोरी और नपुंसकता में अनगिनत बाधाओं और शत्रुता के खिलाफ़ समर्थन के बिंदु की खोज, हमारी
विवेक हमेशा अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की ओर मुड़ा रहता है।
हमारी असीम दरिद्रता और अभाव हमें अपने असंख्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सहायता की तलाश करने के लिए बाध्य करते हैं, और इसलिए हमारा विवेक एक परम दयालु, सर्वधनवान के न्यायालय का सहारा लेता है।
एक, और हम अपनी ज़रूरतों के लिए उससे प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार, हमारी ज़रूरतों के संबंध में
एक सहायता बिंदु और एक सहायता मांगने का बिंदु, दो छोटी खिड़कियाँ
प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण से सर्वशक्तिमान दयालु परमेश्वर के दया के दरबार के द्वार खुलते हैं, जिसके माध्यम से हम उनकी ओर देख सकते हैं।

दूसरा पहलू: हममें से प्रत्येक के पास विशिष्ट ईश्वर प्रदत्त ज्ञान, शक्ति,
दृष्टि, श्रवण, स्वामित्व और संप्रभुता। परिणामस्वरूप, हम पूर्ण ज्ञान, शक्ति, दृष्टि, श्रवण और (गुणों) के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं
ब्रह्मांड के स्वामी का स्वामित्व और उनके प्रभुत्व की संप्रभुता। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें समझता है और उन्हें बताता है। उदाहरण के लिए: "मैंने इसे बनाया है
घर का मालिक हूँ और जानता हूँ कि इसे कैसे बनाया जाता है। मैं इसका मालिक हूँ, इसे देखता हूँ और इसका प्रबंधन करता हूँ। इसलिए यह विशाल महल
ब्रह्माण्ड का एक निर्माता होना चाहिए जो उसे जानता हो, देखता हो, और उसका प्रशासन करता हो।"

तीसरा पहलू: प्रत्येक व्यक्ति दिव्य नामों के दर्पण के रूप में कार्य करता है
उस पर अंकित है। जैसा कि तीसरे स्टेशन की शुरुआत में बताया गया है
बत्तीसवें वचन में सत्तर से अधिक दिव्य चिह्न अंकित हैं
नाम हमारे व्यापक स्वभाव में स्पष्ट हैं। उदाहरण के लिए, हमारी रचना
निर्माता, रचयिता और रूप देने वाले के नाम प्रकट होते हैं।
सृष्टि के उत्तम प्रतिरूप के रूप में सर्वोत्तम कद काठी के, हम प्रदर्शित करते हैं
दयालु और दयावान के नाम। हमारा अच्छा भोजन

और पालन-पोषण में उसके नाम प्रकट होते हैं, जो अत्यन्त दानशील और कृपालु हैं।
हमारी सभी शारीरिक प्रणालियाँ और भाग, अंग और अवयव, क्षमताएँ और विशेषताएँ,
और इंद्रियाँ और भावनाएँ अलग-अलग दिव्य संकेतों को प्रदर्शित करती हैं
नाम: जिस प्रकार ईश्वरीय नामों में सबसे बड़ा नाम है, उसी प्रकार ईश्वरीय नामों में सबसे बड़ा नाम है।
नामों के शिलालेखों में सबसे महान है मानवता।

अगर आप खुद को इंसान समझते हैं, तो खुद को पढ़ें। वरना, आप
केवल दिखावे के लिए ही मानव बने रहें।

दूसरा बिन्दु: यह परमेश्वर के एक महत्त्वपूर्ण रहस्य से सम्बन्धित है।
एकत्व - उसका एक होना, जैसा कि संकेन्द्रित अभिव्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित होता है
प्रत्येक प्राणी पर उसके कुछ नामों का प्रभाव इस प्रकार है:

प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा का उसके शरीर के संबंध में एक एकीकृत कार्य होता है,
यह शरीर के सभी अंगों और भागों को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित करता है। दूसरे शब्दों में,
आत्मा, ईश्वरीय इच्छा से जारी ईश्वरीय आदेश का एक सचेतन नियम और
ईश्वर द्वारा हम में से प्रत्येक में फूंक दी गई एक क्षमता और एक प्रत्यक्ष अस्तित्व का आवरण, सभी शारीरिक तत्वों से
आने वाले संकेतों से भ्रमित नहीं होता है और
एक साथ उनकी ज़रूरतें पूरी करना। दूरी या निकटता अप्रासंगिक है, और
शरीर के अंग एक दूसरे से संवाद करने में बाधा नहीं डालते।
आवश्यकता पड़ने पर, आत्मा किसी एक या अधिक व्यक्ति की सहायता के लिए अधिकांश शारीरिक तत्वों को भेज सकती है।
शरीर के सभी अंगों को एक साथ हिला सकता है। यह जान भी सकता है, समझ भी सकता है और नियंत्रित भी कर सकता है
उनमें से कोई भी। यदि इसने खुद को परिष्कृत और शुद्ध कर लिया है, जिससे पर्याप्त प्राप्त हो गया है
इसकी चमक के कारण यह शरीर के किसी भी भाग से देख और सुन सकता है।

यह देखते हुए कि आत्मा, जो ईश्वरीय आदेश का एक नियम है, हमारे शरीर में ऐसी क्षमताओं को प्रदर्शित करती है - सर्वोच्च तुलना ईश्वर के लिए है (और इसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए) -
अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को अनगिनत कार्यों से भ्रमित नहीं किया जा सकता,
ब्रह्मांड में ध्वनियाँ और आवाज़ें, आह्वान और कर्म, जो कि
स्थूल जगत। उनकी सार्वभौमिक इच्छा और पूर्ण शक्ति उन सभी से निपटती है
तुरन्त और बिना किसी भ्रम के, क्योंकि सर्व-महान निर्माता सभी चीजों को देखता है
और सभी आवाज़ें और आवाज़ें सुनता है। चूँकि दूरी उसके लिए कोई मायने नहीं रखती, इसलिए वह
यदि वह चाहे तो एक ही काम में सहायता करने के लिए सब कुछ भेज सकता है।

तीसरा बिन्दु: जीवन का स्वरूप बहुत महत्वपूर्ण है और इसका कर्तव्य भी बहुत महत्वपूर्ण है।
चूंकि इसका विस्तृत विवरण तेईसवीं विंडो के साथ-साथ द टाइम्स ऑफ इंडिया में भी दिया जा चुका है।
बीसवें पत्र के आठवें वाक्य में, हम यहाँ केवल निम्नलिखित बात याद करते हैं:
जीवन में जो परस्पर बुनी हुई कढ़ाईयाँ हैं, वे जटिल रूपों में प्रचुर मात्रा में हैं
इन्द्रियाँ, अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ परमेश्वर के कई नामों और कार्यों की ओर संकेत करती हैं
सर्व-जीवित, आत्मनिर्भर एक के आवश्यक को स्पष्ट दर्पण के रूप में
विशेषताएँ और कार्य। चूँकि इस विषय पर चर्चा करना उचित नहीं है
जो लोग ईश्वर और उसमें विश्वास को नकारते हैं, उनके समक्ष हम यहीं रुकते हैं।

बत्तीस सेकंड की खिड़की

वही है जिसने अपने रसूल को ईश्वरीय मार्गदर्शन और कृपा के साथ भेजा।
सत्य धर्म की स्थापना करो, ताकि उसे सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्राप्त हो।
गवाही के लिए अल्लाह ही काफ़ी है। (48:28)

कह दो, "ऐ लोगो! मैं तुम सबके लिए अल्लाह का रसूल हूँ।
आकाशों और धरती की प्रभुता उसी के लिए है;
उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। वही जीवन देता है और मारता है।" (7:158)

यह खिड़की पैगम्बर मुहम्मद की बनाई हुई है, जो पैगम्बरी के स्वर्ग के सूर्य हैं, वास्तव में, सूर्यों के सूर्य हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। इस सबसे शानदार, विशाल और प्रकाश फैलाने वाली खिड़की की व्याख्या करते हुए

उन्नीसवें और इकतीसवें वचनों में, साथ ही साथ द एल्डर में भी बहुत विस्तार से बताया गया है।
उन्नीसवें पत्र में हम केवल निम्नलिखित बिंदु पर चर्चा करते हैं:

संदेशवाहक और संतत्व के पंखों पर, अर्थात् सुसज्जित
एक शक्ति जो उसके पहले के सभी पैगम्बरों की पूर्ण सहमति से बनी थी और
उसके बाद आने वाले सभी संतों और शुद्ध विद्वानों की सर्वसम्मति से सहमति,
पैगम्बर मुहम्मद, जो स्वयं ईश्वरीय एकता के स्पष्ट प्रमाण हैं, ने अपने पूरे जीवन में ईश्वरीय एकता की घोषणा की और उसका प्रदर्शन किया।
ताकत। उन्होंने ईश्वर के ज्ञान के लिए एक विस्तृत और उज्ज्वल खिड़की खोली, जिसका नाम है इस्लाम की दुनिया। इमाम अल-ग़ज़ाली, इमाम अर-रब्बानी, मुहीद-दीन इब्नुल-अरबी और अब्दुल-कादिर अल-जिलानी जैसे सैकड़ों हज़ारों शुद्ध, सत्य-खोजी और सच्चे विद्वान इस खिड़की से देखते हैं

और दूसरों को इसके माध्यम से परमेश्वर के ज्ञान की ओर संकेत करें। क्या कोई पर्दा है जिसे खींचा जा सके
ऐसी खिड़की के पार? क्या कोई ऐसा व्यक्ति जो इस खिड़की की आलोचना करता है और नहीं करता है
क्या इसे समझदारी भरा माना जाएगा? आप जवाब दीजिए।

तैंतीसवीं खिड़की

सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें कोई कुटिलता नहीं छोड़ी। (18:1)

अलिफ़ लाम रा. एक किताब जो हमने तुम्हारे पास भेजी है ताकि तुम
मनुष्य को सब प्रकार के अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। (14:1)

इस बात पर विचार करें कि सभी पिछली खिड़कियाँ सागर की कुछ बूँदें हैं
कुरान की गहराई से समझिए और समझने की कोशिश कीजिए कि ईश्वरीय एकता के कितने प्रकाश हैं, जैसे
जीवन के जल के बारे में कुरान में लिखा है। भले ही आपके पास एक साधारण, सतही विचार हो
कुरान को देखो, जो उन सभी पिछली बातों का स्रोत और खान है
खिड़कियाँ, फिर भी यह एक सबसे चमकदार, प्रकाशमान, व्यापक खिड़की है।
यह समझने के लिए कि वह खिड़की कितनी शानदार और चमकदार है, आप देख सकते हैं
कुरान की चमत्कारिकता पर ग्रंथ, जो कि पच्चीसवाँ वचन है,
और उन्नीसवें अक्षर का अठारहवाँ चिह्न। सिंहासन की प्रार्थना
उस सर्वशक्तिमान दयालु परमेश्वर की कृपा से, जिसने हमें क़ुरआन भेजा है, हम कहते हैं:

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना! हे हमारे प्रभु,
हे हमारे पालनहार! हमारे हृदयों को विचलित न होने दे, इसके पश्चात कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है!
हमसे स्वीकार कर ले, निस्संदेह तू ही सुननेवाला, जाननेवाला है।
हमारी तौबा क़बूल कर, निस्संदेह तू ही तौबा क़बूल करनेवाला और उसे उदारतापूर्वक क्षमा
करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

एक टिप्पणी

मैं आशा करता हूँ कि तैंतीस खिड़कियों वाला यह तैंतीसवाँ वचन अविश्वासी को विश्वास स्वीकार करने में सहायता करेगा, और यह उस व्यक्ति के विश्वास को मजबूत करेगा जो विश्वास कमज़ोर है, और नकल पर आधारित मज़बूत विश्वास वाले व्यक्ति को ठोस विश्वास की ओर ले जाता है, और फिर उस ठोस विश्वास को विस्तारित करता है। मुझे उम्मीद है कि यह हो सकता है विस्तारित विश्वास के साथ ईश्वर के ज्ञान में प्रगति की ओर ले जाना, जो कि सभी प्रकार की सच्ची प्रगति और विकास का स्रोत, और उसके सामने खुल गया अधिक चमकदार, अधिक शानदार दृश्य। इस कारण से, आपको इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए एक खिड़की आपके लिए पर्याप्त होगी, क्योंकि भले ही आपका मन प्राप्त कर चुका हो अपना हिस्सा और प्राप्त विश्वास, आपका दिल भी अपना हिस्सा मांगेगा, जैसे आपकी आत्मा भी उसमें से अपना हिस्सा मांगेगी।
प्रकाश। यही कारण है कि प्रत्येक खिड़की के अपने फायदे हैं।

पैगम्बर मुहम्मद के स्वर्गारोहण पर ग्रंथ, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मुख्य रूप से आस्तिक को संबोधित किया गया था, जबकि भौतिकवादी श्रोता की स्थिति में था। लेकिन यह ग्रंथ इनकार करने वालों को संबोधित करता है, और आस्तिक श्रोता की स्थिति में है। इस बात पर विचार किया जाना चाहिए जब इसका अध्ययन कर रहे हैं।

दुर्भाग्यवश, एक महत्वपूर्ण कारण से, यह पत्र लिखा गया था बहुत तेजी से और पहले मसौदे की स्थिति में ही रहा। इसलिए, अभिव्यक्ति में कुछ खामियां तो होंगी ही, जो मेरी वजह से हैं। मैं अपने भाइयों से अनुरोध करता हूँ कि वे इसे सहिष्णुता से देखें, और यदि वे गलत हों तो इसे सुधार लें। कृपया मेरी क्षमा के लिए प्रार्थना करें।

शांति उन लोगों पर हो जो सच्चे मार्गदर्शन का पालन करते हैं।
अपनी सनक और भ्रम का अनुसरण करते हैं और वही पाते हैं जिसके वे हकदार हैं।
तू महिमावान है, हमें तेरे सिवा कुछ भी ज्ञान नहीं
हमें शिक्षा दी है, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।
हे ईश्वर, जिसे तूने भेजा है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर।
समस्त संसार के लिए, तथा उसके परिवार और साथियों के लिए दया हो।
अमीन.

सत्य की झलक

सत्य की झलक

रमज़ान और ईद के दिन के बीच सत्य के बीजों से फूल

यह रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए इस्लामी विश्वास, विचार और कार्य पर एक संक्षिप्त "मथनवी" है।

नोट: अपनी रचना और विषय-वस्तु दोनों में, यह संग्रह अन्य मथनावी या कविता के संकलनों से अलग है। इसका शीर्षक लेमेट (सत्य की झलक) है और इसे कुछ हद तक लेखक की पिछली रचना, हकीकत सेकिर्डेक्लेरी (सत्य के बीज) को स्पष्ट करने के लिए लिखा गया था; इसके अलावा, यह गद्य रूप में है और इसमें मनोरंजक चित्र या असंतुलित भावनाएँ नहीं हैं। यह बेदीउज्जमां के कुछ छात्रों के लिए विद्वत्तापूर्ण निर्देश के रूप में लिखा गया था, जिसमें उनका भतीजा भी शामिल था, जो लेखन के समय उनके साथ था; इसमें कुरान और विश्वास की सच्चाईयाँ शामिल हैं, जो पूरी तरह से तर्क के अनुसार हैं।

यह कुरान और आस्था के बारे में एक सबक है। जैसा कि हमारे गुरु ने खुद कहा था, और जैसा कि हम समझ सकते हैं, बेदिउज़्ज़मान को कविता या शायरी से कोई लगाव नहीं था, और वह खुद को उनमें व्यस्त नहीं रखते थे।

हर दिन दो या ढाई घंटे काम करके, बेदीउज्जमां ने इस काम को पद्य रूप में लिखा (हालाँकि यह कविता नहीं थी); यह काम रमजान के दौरान बीस दिनों में पूरा हुआ। उस समय, वह दारुल-हिक्मिति-इस्लामिये ("इस्लामिक ज्ञान का घर") के सदस्य थे, और उनके पास कई व्यस्तताएँ थीं। हालाँकि इसे "एक्सटेम्पोर" लिखवाया गया था और बहुत जल्दी पूरा किया गया था, लेकिन काम को संपादित नहीं किया गया और इसे वैसे ही प्रकाशित किया गया जैसा कि यह था। हमारे विचार से, यह रिसाले-ए-नूर से इसके संबंध के कारण एक आश्चर्य है। कविता का कोई अन्य संकलन इतना उल्लेखनीय नहीं लगता जितना कि यह है, पढ़ने में आसान है

गद्य के रूप में। ईश्वर की इच्छा से, यह कार्य रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए एक प्रकार की मथनवी बन जाएगा। यह रिसाले-ए-नूर के लिए एक सूचकांक के रूप में कार्य करता है , या इसके लिए एक अग्रदूत है, क्योंकि रिसाले-ए-नूर दस साल बाद प्रकाशित हुआ और तेईस वर्षों में पूरा हुआ।

रिसाले -ए-नूर के छात्र,

सुंगुर, मेहमेद फेयज़ी, हुसेरेव

याद दिला दें: जैसा कि कहावत है: "एक व्यक्ति उस चीज़ के प्रति शत्रुतापूर्ण होता है जिसे वह चाहता है।"

नहीं जानता।" मैंने कविता और तुकबंदी के बारे में बहुत सोचा है क्योंकि मैं उनके बारे में ज़्यादा नहीं जानता। कविता की माँगों के हिसाब से मैं जो चाहता हूँ उसकी वास्तविकता को कभी नहीं बदलना चाहता।

अतः इस पुस्तक में मैंने उत्कृष्ट सत्यों को एक अनाकर्षक परिधान पहनाया है, जो कि तुक या छंद से रहित है।

पहली बात तो यह कि मुझे इससे बेहतर कोई तरीका नहीं पता और मैं सिर्फ़ अर्थ बताने के बारे में सोच रहा हूँ। दूसरी बात, मैं उन शायरों की आलोचना को एक रूप देना चाहता था जो कपड़ों के हिसाब से शरीर को तराशते हैं। तीसरी बात, इस तरह की बचकानी शैली रमज़ान के दौरान शारीरिक आत्मा और दिल को व्यस्त रखने के लिए ज़्यादा बेहतर और उपयुक्त है।

लेकिन, मेरे पाठक, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने गलती की है और मैं आपको भी ऐसी गलती करने से बचने के लिए सचेत करना चाहता हूँ - इस घटिया शैली से गुमराह होकर इसके उत्कृष्ट सत्यों के प्रति लापरवाही से अनादर न करें!

एक बहाना: हे पाठक! मैं शुरू में ही यह स्वीकार करता हूँ कि मैं लेखन और छंद-रचना की अपनी क्षमताओं के बारे में चिंतित था। जहाँ तक पद्य और तुकबंदी का सवाल है, मैं कभी भी एक भी कविता नहीं लिख पाया था। लेकिन अचानक मुझे चीज़ों को पद्य में लिखने की इच्छा हुई, एक इच्छा जो बनी रही। कुर्दिश में साथियों के अभियानों के बारे में एक महाकाव्य है जिसे कव्ल-ए-नवाला सिसाबन कहा जाता है। मेरी आत्मा ने इसके स्वाभाविक लय का आनंद लिया, जो एक भजन के समान है। इसलिए मैंने इसके पद्य रूप का उपयोग करना चुना, लेकिन एक तरह से अपने लिए। मैंने एक रचना की जो किसी तरह पद्य से मिलती-जुलती थी, हालाँकि मैंने मीटर के साथ कोई मेहनत नहीं की। कोई भी व्यक्ति जो चाहे, इसे गद्य की तरह आसानी से पढ़ सकता है, इसके पद्य-रूप के बारे में सोचे बिना। वास्तव में, इसे गद्य के रूप में समझना बेहतर होगा ताकि अर्थ को बेहतर ढंग से समझा जा सके। प्रत्येक खंड के पद्य अर्थ के संबंध में परस्पर संबंधित हैं। पाठकों को तुकबंदी के बारे में नहीं पूछना चाहिए। फ़ेज़ बिना टैसल के हो सकता है, और मीटर बिना तुकबंदी के हो सकता है, छंद बिना नियमों के। मुझे लगता है कि अगर कोई रचना अपनी कलात्मकता के ज़रिए खुद पर ध्यान खींचती है, तो मन कला में डूब जाता है। इसलिए, रचना तब बेहतर होती है जब वह कलाहीन हो, इस तरह अर्थ से ध्यान भटकाए नहीं।

इस काम में मेरा शिक्षक कुरान था, मेरी किताब जीवन थी, और जिससे मैंने बात की वह मैं खुद था। और आप, मेरे पाठक, एक गुप्तचर हैं। गुप्तचरों को आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं है; उन्हें वह लेना चाहिए जो उन्हें पसंद है और जो उन्हें पसंद नहीं है उसे अनदेखा करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि पाठकों की जुबान मेरे लिए क्षमा की प्रार्थना करेगी, या ईश्वर की इच्छा से फातिहा पढ़ेगी।

याचक

मैं एक उजड़ी हुई कब्र हूँ, जिसमें उनहत्तर मृत सैद अपने पापों और दुखों
के साथ दफ़न हैं।
अस्सीवाँ पत्थर इस क़ब्र के लिए है; सब मिलकर इस्लाम के पतन पर रोते हैं।

अपनी क़ब्र के पत्थर और मृत सैदों की कराहती क़ब्र के साथ मैं अपने कल के निवास की ओर आगे बढ़ता हूँ।

मुझे पूरा यकीन है कि भविष्य के आकाश और पृथ्वी एक साथ इस्लाम के स्पष्ट, चमकदार हाथों के
सामने आत्मसमर्पण कर देंगे।
क्योंकि इसकी शक्ति इसके विश्वास और आशीर्वाद में निहित है, यह सभी
प्राणियों को शांति और सुरक्षा प्रदान करता है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है; तथा ईश्वर की कृपा सन्देशवाहकों के स्वामी तथा उनके परिवार और साथियों पर हो।

ईश्वरीय एकता के दो सर्वोच्च प्रमाण ब्रह्माण्ड अपने अन्दर जो कुछ

भी है, उसके द्वारा सर्वोच्च प्रमाण है; अदृश्य और व्यक्त जगतों की अपनी भाषाओं द्वारा यह ईश्वर की एकता की घोषणा करता है और उसकी महिमा करता है।
दयालु की एकता की घोषणा करते हुए, यह लगातार घोषणा करता है: उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है!

इसकी कोशिकाओं के सभी परमाणु, इसके सभी भाग और सदस्य, मनुष्य की भाषाएँ हैं-
वे एक साथ उस गूंजती हुई आवाज़ में घोषणा करते हैं: उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

भाषाएँ असीम रूप से विविध हैं, आवाज़ें अलग-अलग स्वर की हैं, लेकिन
वे एक ही बात पर एकमत हैं - उसका ज़िक्र, और कहते हैं: उसके सिवा कोई पूज्य नहीं!

ब्रह्माण्ड वृहद मानव है; यह ऊंची आवाज में ईश्वर का उल्लेख करता है, जबकि इसके सभी तत्व और परमाणु उस ऊंची आवाज में अपनी छोटी आवाजें जोड़ते हुए एक स्वर में घोषणा करते हैं: ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है!

ब्रह्मांड ईश्वर की याद का एक चक्र है, जो कुरान को खंड-दर-खंड पढ़ता है। इसका प्रकाश कुरान से आता है, और सभी प्राणी अपनी आत्मा से सत्य पर चिंतन करते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

कुरान, सत्य और असत्य का यह महान, गौरवशाली मानदंड, ईश्वरीय एकता का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। इसकी सभी आयतें सत्य की वाणी हैं, तथा विश्वास की बिजली की किरणें हैं। वे सब मिलकर घोषणा करती हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

यदि आप उस कसौटी की छाती से अपना कान लगा लें, तो उसकी गहनता में-
गहराई में जाकर तुम स्पष्ट रूप से एक स्वर्गीय आवाज सुनोगे जो कहती है: उसके अलावा कोई

पूज्य नहीं है!

इसकी आवाज़ अत्यंत ऊँची, अत्यंत गंभीर, वास्तव में ईमानदार, अत्यंत मैत्रीपूर्ण है,
यह पूरी तरह से विश्वसनीय है और इसके साथ कई प्रमाण भी जुड़े हैं। बार-बार यह कहा गया है: उसके

अलावा कोई पूज्य नहीं है!

इस प्रकाश के प्रमाण के सभी छह पहलू पारदर्शी हैं: इस पर चमत्कार का फूल और मुहर है और इसमें मार्गदर्शन का प्रकाश चमकता है, जो कहता है: उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है!

इसके नीचे सूक्ष्म रूप से गुंथे हुए तर्क और प्रमाण हैं; इसके दाहिनी ओर बुद्धि या कारण बोला गया है और मन इसे पूरी तरह से पुष्ट करते हुए कहता है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसके बायीं ओर, जो दायीं ओर के समान है, अंतःकरण साक्षी के रूप में उपस्थित होता है; उसके सामने शुद्ध अच्छाई होती है और उसका लक्ष्य सुख और समृद्धि होता है, जिसकी कुंजी हर क्षण यही होती है: उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसके परे इसका आधार, "इसके पहले" के समान, स्वर्गीय, शुद्ध दिव्य रहस्योद्घाटन है। ये सभी छह पहलू प्रकाशमान हैं और प्रत्येक के संकेत में प्रकट होते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

क्या कोई भी छिपा हुआ संदेह, कोई भी कल्पनीय, तीक्ष्ण संदेह, कोई भी विश्वासघाती विचलन उस देदीप्यमान, चमकते महल में घुस सकता है, जिसकी ऊंची दीवारें सुरों से बनी हैं, जिसका प्रत्येक शब्द एक देवदूत की वाणी है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

महान क़ुरआन ईश्वरीय एकता का सागर है। उस सागर से एक बूँद का उदाहरण लें, तो छोटी सी सूरा, सूरतुल-इखलास, में से सिर्फ़ एक छोटा सा संकेत देखें; इसमें असंख्य संकेत हैं: इसके छह वाक्य, तीन सकारात्मक, तीन नकारात्मक, ईश्वर के साथ सभी प्रकार के साझीदारों का खंडन करते हैं और इसके सात पहलुओं में ईश्वरीय एकता को प्रमाणित करते हैं:

पहला वाक्य: कह दो, यह उसकी स्पष्ट निशानी है, इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। अर्थात् यह उसकी परिभाषा करता है, बिना उस पर विचार किए।

उनके नाम, गुण और कार्य। यह परिभाषा सीधे तौर पर उनकी ओर संकेत करती है।
वह है:

वहाँ कोई “वह” नहीं है सिवाय उसके!

यह ईश्वरीय एकता की अनुभवात्मक पुष्टि का संकेत है।
जब सत्य को देखने वाला दृष्टिकोण ईश्वरीय एकता में लीन हो जाता है, तो वह कहता है:

उसके अलावा कुछ भी नहीं देखा जाता है!

दूसरा वाक्य: ईश्वर, जो पूर्णतः एक है, अद्वितीय है, ईश्वर की दिव्य सत्ता या उसकी दिव्यता के रूप में एकता की स्पष्ट पुष्टि है। वास्तविकता सत्य की भाषा में घोषणा करती है: उसके अलावा पूजा करने के लिए कुछ भी नहीं है!

तीसरा वाक्य: ईश्वर, जिसकी हमेशा प्रार्थना की जाती है। यह ईश्वरीय एकता के दो मोतियों का खोल है। पहला है ईश्वर की एकता (सारी सृष्टि के स्वामी के रूप में)। ब्रह्मांड का क्रम घोषित करता है: उसके अलावा कोई निर्माता नहीं है!

दूसरा मोती है ईश्वर की एकता जो स्वयंभू है, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड अपनी संपूर्णता में एक लेखक, एक परम, रचनात्मक कारण की परम आवश्यकता की भाषा के माध्यम से घोषणा करता है, जो इसके अस्तित्व में आने और इसके निरंतर अस्तित्व दोनों के लिए है:

कोई भी स्वयंभू नहीं है, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं, सिवाय उसके!

चौथा वाक्य: वह जन्म नहीं देता। यह ईश्वर की एकता को दर्शाता है, जो सर्व-महान है। यह ईश्वर को भागीदार मानने के सभी प्रकार के आरोप को अस्वीकार करता है, और अविश्वास का निर्णायक रूप से खंडन करता है। अर्थात्, जो परिवर्तन या उत्पादन या विभाजन के अधीन है, वह न तो निर्माता हो सकता है, न ही आत्मनिर्भर, न ही देवता।

अरबी में ' नहीं' (लैम) का निषेध ईश्वरीय सत्ता के लिए संतान पैदा करने के विचार को निर्णायक रूप से नकारता है। ईश्वर को भागीदार बनाने (अर्थात ईश्वरीय सत्ता के लिए पितृत्व स्वीकार करना) के इस प्रकार के कारण अधिकांश मानव जाति पापी बन गई है। इसने यीशु, एज्रा, स्वर्गदूतों या "दस बुद्धि" जैसे पंथों को जन्म दिया है जो ईश्वरीय सत्ता की संतान हैं।

पाँचवाँ वाक्य: न तो वह पैदा हुआ है, यह ईश्वर की एकता को दर्शाता है जो सर्व-शाश्वत है। अर्थात्, जिसका अस्तित्व आवश्यक नहीं है, पूर्व-शाश्वत है, या समय से असंबद्ध है, वह ईश्वर नहीं हो सकता। अर्थात्, जो समय के भीतर अस्तित्व में आया, या पदार्थ से पैदा हुआ, या किसी पूर्वज से उतरा, वह ब्रह्मांड का शरणस्थल और रक्षक नहीं हो सकता।

कारणों को अस्तित्व का श्रेय देना, सितारों की पूजा, मूर्ति पूजा और प्रकृतिवाद, ये सभी ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ने के विभिन्न प्रकार हैं, तथा ये सभी गुमराही के जाल हैं।

छठा वाक्य: और उसके समान कोई नहीं है यह एक व्यापक वाक्य है जो ईश्वरीय एकता के सभी पहलुओं को व्यक्त करता है।
नकारने का तात्पर्य है कि ईश्वर का कोई समान, साझेदार या समकक्ष नहीं है
सार में, या उसके गुणों में, या उसके कार्यों में।

अर्थ की दृष्टि से, इन छहों वाक्यांशों में से प्रत्येक, परिणाम और प्रमाण दोनों है।
अन्य; क्रम में प्रमाण और उनसे उत्पन्न परिणाम क्रमशः हैं
इस सूरा में इसे एक किले के रूप में बनाने का प्रावधान शामिल है।

अर्थात्, इसे सूरतुल इखलास में शामिल किया गया है, जो इसके महत्व के अनुरूप है,
छत्तीस सूरा हैं जिनके भागों को दोनों प्रमाणों को बनाने के लिए सेट किया गया है
और एक दूसरे के परिणाम; यह एकल सूरा वह क्षितिज है जिस पर छत्तीस सूरा उगते हैं।

ईश्वर के अलावा अदृश्य को कोई नहीं जानता

कारण पूरी तरह स्पष्ट हैं

ईश्वरीय भव्यता और गरिमा के लिए यह आवश्यक है कि प्राकृतिक कारण,
कारण, शक्ति के हाथ के सामने एक पर्दा;

साथ ही ईश्वरीय एकता और महिमा के लिए यह आवश्यक है कि प्राकृतिक कारण-
शक्ति के कार्यों के अस्तित्व में आने में उनका कोई हाथ नहीं है।

अस्तित्व भौतिक दुनिया तक सीमित नहीं है

अस्तित्व के असीम रूपों को इस दृश्यमान जगत तक सीमित नहीं किया जा सकता;
यह उन्हें शामिल नहीं कर सकता;

भौतिक जगत, प्रकाशमान संसारों के ऊपर एक आवरण मात्र है।
अदृश्य.

शक्ति की कलम की सार्वभौमिकता ईश्वरीय एकता को प्रदर्शित करती है

कला के दोषरहित कार्य हर स्तर पर कारणों की रचनात्मकता का स्पष्ट खंडन करते हैं
उत्पत्ति का बिंदु;

सत्ता की कलम के शिलालेख अनिवार्य रूप से अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं
सृजन के प्रत्येक बिन्दु पर बिचौलियों की उपस्थिति।

सब कुछ के अस्तित्व के बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सद्भाव और एकजुटता विद्यमान है जो छिपी हुई भी है और दिखाई भी देती है - अस्तित्व के आंतरिक और बाह्य दोनों पहलुओं में।

यह एकजुटता और सहयोग - पारस्परिक सहायता या आवश्यकताओं की पारस्परिक पूर्ति - दोनों दर्शाते हैं कि केवल एक सर्वव्यापी शक्ति ही

ऐसा कर सकते हैं: इस प्रकार एक परमाणु का निर्माण होता है और वह अपने सभी संबंधों के लिए उपयुक्त तरीके से स्थित होता है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति और शब्द सजीव है;
उन्हें एक दूसरे की ओर आकर्षित करता है और एक दूसरे से परिचित कराता है।

चाहे वह कहीं से भी आए, मदद के लिए की गई हर पुकार का उत्तर मिलता है: दिव्य एकता के नाम पर, उसकी आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करने के लिए सभी आस-पास के लोग तत्पर हो जाते हैं।

हर जीवित शब्द का एक चेहरा होता है जो मुड़ा हुआ होता है और एक आँख होती है जो सबकी ओर देखती है वाक्य.

सूर्य की गति गुरुत्वाकर्षण के कारण है और गुरुत्वाकर्षण सौरमंडल को स्थिरता प्रदान करता है

सूर्य एक फल देने वाला पिंड है; यह अपने आप को हिलाता है ताकि इसके फल - जो गतिशील हैं - गिर न जाएं।

यदि यह गति करना बंद कर दे और रुक जाए, तो गुरुत्वाकर्षण समाप्त हो जाएगा
और उसके उत्साही अनुयायी अंतरिक्ष में बिखर जाएंगे और रोएंगे।

छोटी चीजें बड़ी चीजों से जुड़ी होती हैं। निश्चय ही, जिसने मच्छर की आंख बनाई है,

उसने सूर्य और आकाशगंगा दोनों का निर्माण किया है।

और जिसने पिस्सू के पेट को व्यवस्थित किया है, उसने निस्संदेह सौरमंडल को व्यवस्थित किया है।

और जिस ने आंख को दृष्टि और पेट को आवश्यकता दी है, उसी ने आकाश की आंख को ज्योति का सुरमा पहनाया है, और पृथ्वी पर उत्सव मनाया है।

ब्रह्माण्ड की व्यवस्था में एक सर्वोच्च चमत्कारिकता है, देखिए, ब्रह्माण्ड के संगठन में चमत्कारिकता है; यदि यह

मान लिया जाए कि असंभव सभी प्राकृतिक कारण ऐसे कारक हैं जो कुछ भी करने में सक्षम हैं, तो वे इस चमत्कारिकता के सामने अपनी पूर्ण शक्तिहीनता को स्वीकार करते हुए, इसके सामने दंडवत हो जाएंगे और घोषणा करेंगे: "आपकी महिमा हो! हममें कोई शक्ति नहीं है! हमारे प्रभु,

आप शाश्वत, सर्वशक्तिमान महामहिम हैं!"

ईश्वरीय शक्ति के समक्ष सब कुछ समान है

तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है। (31:28)

दैवीय शक्ति दैवीय सार के लिए आवश्यक है तथा उसमें अंतर्निहित है; नपुंसकता उस तक नहीं पहुंच सकती।

ईश्वरीय शक्ति में न तो कोई सीमा हो सकती है और न ही कोई बाधा हो सकती है। किसी भी तरह से इसे बाधित न करें। चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष, सभी चीजें हैं इसके संबंध में भी यही बात है।

क्योंकि हर चीज़ एक दूसरे से जुड़ी हुई है और एक दूसरे पर निर्भर है अन्यथा; जो सबकुछ नहीं बना सकता वह कुछ भी नहीं बना सकता।

जो अपने हाथ में ब्रह्माण्ड नहीं पकड़ सकता, वह कण भी नहीं बना सकता।

यदि किसी के पास इतना शक्तिशाली हाथ नहीं है कि वह धरती को उठा सके, तो वह धरती को उठा सकता है। सूर्य और तारे - वे असंख्य पिंड - और उन्हें क्रम में पिरोएँ
प्रार्थना की माला की तरह,

और उन्हें अंतहीन अंतरिक्ष के सिर और छाती पर रखें, वे नहीं कर सकते दुनिया में कुछ भी बनाने का दावा नहीं करते; उन्हें दावा करने का कोई अधिकार नहीं है कुछ भी आविष्कार किया.

किसी प्रजाति को जीवन देना एक व्यक्ति को जीवन देने के समान ही है

जिस प्रकार शीत ऋतु की मृत्यु-सी निद्रा में सुन्न हो गई मक्खी को पुनर्जीवित करना दैवी शक्ति के लिए कठिन नहीं है, उसी प्रकार शीत ऋतु की मृत्यु-सी निद्रा में सुन्न हो गई मक्खी को पुनर्जीवित करना दैवी शक्ति के लिए कठिन नहीं है।

इसी प्रकार, न तो पृथ्वी की मृत्यु और न ही इसका पुनरुत्थान कोई समस्या उत्पन्न करेगा। दैवी शक्ति के लिए कोई भी कठिनाई।

न ही सभी प्राणियों को आत्मा सहित जीवन में वापस लाने से कोई बड़ी बात सामने आएगी संकट।

प्रकृति दिव्य कला है

प्रकृति मुद्रक नहीं है, वह कुछ मुद्रित वस्तु है;

यह लिखने वाला नहीं है, बल्कि शिलालेख है; यह करने वाला या लिखने वाला नहीं है। एजेंट के रूप में, यह प्राप्तकर्ता है; यह स्रोत नहीं है, बल्कि पैटर्न है।

यह आदेश देने वाला नहीं है, यह आदेश है; यह शक्ति नहीं है, बल्कि यह आदेश है। कानून; यह कानूनों का एक समूह है जो इच्छा के दैवीय गुण से जारी होता है; यह नहीं है एक वास्तविकता जिसका भौतिक स्व-अस्तित्व है।

अंतःकरण अपने आकर्षण के माध्यम से ईश्वर को पहचानता है

अंतःकरण में एक आकर्षण है, एक मोह है; अंतःकरण में एक आकर्षण है, एक मोह है; अंतःकरण में एक आकर्षण है, एक मोह है;
उसे ऐसा लगता है कि वह लगातार किसी आकर्षक बल के खिंचाव से आकर्षित हो रहा है।

यदि सर्वसुन्दर, दयालु भगवान् बिना किसी आवरण के स्थायी रूप से प्रकट हो जायें, तो चेतन प्राणी आनन्द से अभिभूत हो जायेंगे।

चेतना - मानव चेतन प्रकृति - निर्णायक रूप से गवाही देती है
एक अनिवार्यतः विद्यमान, ऐश्वर्य, सौंदर्य और अनुग्रह से युक्त;

आकर्षण की भावना एक साक्ष्य है, और इसी प्रकार आकर्षित होने की भावना भी एक साक्ष्य है।

सृष्टिकर्ता द्वारा दिया गया सहज स्वभाव सत्य बोलता है

किसी चीज़ का जन्मजात स्वभाव या ईश्वर-प्रदत्त स्वभाव झूठ नहीं बोलता; यह जन्मजात स्वभाव जो कुछ भी कहता है, वही सत्य है। बढ़ने की प्रवृत्ति होने पर, बीज की जीभ कहती है: "मैं अंकुरित होऊँगा और फल दूँगा," और वह जो कहती है, वह है

सत्य सिद्ध हुआ.

जीवन के प्रति झुकाव अंडे की गहराई में बड़बड़ाता है: "यदि ईश्वर चाहेगा, तो मैं चूज़ा बनूँगा।" यह जो कहता है वह सच है।

यदि एक मुट्ठी पानी ठंड के कारण लोहे की तोप के गोले के अंदर जमने का इरादा रखता है, तो उसके अंदर फैलने की प्रवृत्ति कहती है: "फैल जाओ! मुझे

और जगह चाहिए।"
इस आदेश का विरोध नहीं किया जा सकता।

मजबूत लोहा काम पर लग जाता है, और उसे गलत साबित नहीं करता; पानी की सच्चाई और ईमानदारी लोहे को विभाजित कर देती है।

ये सभी प्रवृत्तियाँ ईश्वरीय सृजनात्मक आदेश हैं और प्रत्येक एक

ईश्वरीय आदेश। ये सभी सृष्टि और जीवन के ईश्वरीय नियम हैं, ये सभी इच्छा की अभिव्यक्तियाँ हैं।

ईश्वरीय इच्छा सभी प्राणियों को इस प्रकार निर्देशित करती है: सभी प्रवृत्तियाँ ईश्वर के अनुरूप होती हैं
प्रभु की आज्ञाएँ.

अंतःकरण में ईश्वरीय अभिव्यक्ति एक ही है;
आकर्षण और आकर्षित होने की भावना दो शुद्ध “आत्माएं” हैं;

वे दो चमकदार दर्पण हैं जिनमें शाश्वत सौंदर्य और विश्वास का प्रकाश प्रतिबिंबित होता है।

पैगम्बरत्व मानव जाति के लिए आवश्यक है

वह दैवीय शक्ति, जो चींटियों को नेता विहीन या मधुमक्खियों को रानी विहीन नहीं छोड़ती, वह निश्चित रूप से मानव जाति को कानून या पैगम्बर विहीन नहीं

छोड़ेगी।
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था स्वतः ही इसकी मांग करती है।

स्वर्गारोहण स्वर्गदूतों के लिए वैसा ही था जैसा कि चंद्रमा का विभाजन था
मानव जाति के लिए

स्वर्गदूतों ने स्वर्गारोहण के भविष्यसूचक आश्चर्य में एक सर्वोच्च आश्चर्य देखा
निर्विवाद पैगम्बरत्व के भीतर संतत्व।

वह चमकता हुआ व्यक्ति बुराक पर सवार होकर (उसे स्वर्ग में ले गया) और बिजली की तरह चमक रहा था; यात्रा करने वाले चंद्रमा की तरह, उसने चारों ओर प्रकाश की दुनिया देखी।

उसी तरह मानवता के लिए, जो इस दृश्यमान माध्यम से बिखरी हुई है
दुनिया, और चाँद का विभाजन (54:1) एक महत्वपूर्ण, अवलोकनीय चमत्कार था;

अतः आत्माओं की दुनिया में रहने वालों के लिए, स्वर्गारोहण, जैसा कि ' सर्व-महिमावान है वह, उसने अपने सेवक को रात में यात्रा पर ले लिया...' (17:1) में बताया गया है, सबसे बड़ा चमत्कार था।

विश्वास की पुष्टि का प्रमाण इसके भीतर है। विश्वास की पुष्टि में दो वाक्य हैं, जिनमें से
प्रत्येक दूसरे की गवाही देता है; एक दूसरे के लिए तर्क और प्रमाण है।

पहला, दूसरे के लिए एक पूर्वानुमेय तर्क है, और दूसरा, दूसरे के लिए एक पूर्वानुमेय तर्क है।
पहले के लिए एक पश्चातवर्ती तर्क।

जीवन एकता की अभिव्यक्ति है जीवन एकता का प्रकाश

है जिसके माध्यम से इस बहुलता के क्षेत्र में एकता प्रकट होती है। वास्तव में, एकता की अभिव्यक्ति बहुलता को एकीकृत करती है, इस प्रकार इसे एक एकीकृत इकाई बनाती है।

जीवन एक ही चीज़ को सभी चीज़ों का स्वामी बना देता है, जबकि एक निर्जीव चीज़ को सभी चीज़ों का स्वामी बना देता है।
सभी चीजें अस्तित्वहीन हैं।

आत्मा एक ऐसा नियम है जो बाह्य अस्तित्व से आच्छादित है। आत्मा एक ऐसा
प्रकाशमान नियम है जो बाह्य अस्तित्व से आच्छादित है तथा चेतना से संपन्न है।

यह आत्मा, जिसका वास्तविक, संवेदी अस्तित्व है, उस प्रत्यक्ष नियम का भाई, साथी बन गया है।

स्थापित, निरंतर प्राकृतिक नियमों की तरह, आत्मा भी ईश्वरीय आदेश और इच्छा शक्ति के संसार से आती है।

शक्ति उसे इन्द्रियों से सुसज्जित करती है, उसके सिर में चेतना जोड़ती है, तथा सूक्ष्म शरीर को उस मोती का खोल बनाती है।

यदि सृष्टिकर्ता की शक्ति प्रजातियों में कार्यरत नियमों को धारण कर ले,
बाह्य अस्तित्व, प्रत्येक एक आत्मा बन जाएगा;

यदि आत्मा को बाह्य अस्तित्व और चेतना से अलग कर दिया जाए तो वह एक अमर नियम बन जाएगा।

जीवन के बिना अस्तित्व अस्तित्वहीनता के समान है।

प्रकाश और जीवन दोनों ही प्राणियों के स्वयं को प्रकट करने और ज्ञात होने के कारण हैं। देखो, यदि जीवन का प्रकाश न हो,

अस्तित्व पर अस्तित्वहीनता का दाग लग जाएगा; वास्तव में, यह अस्तित्वहीनता जैसा ही है। चाहे वह चाँद ही क्यों न हो, वह अजनबी और अनाथ है, जब तक कि उसमें जीवन न हो।

जीवन के कारण चींटी पृथ्वी से भी बड़ी है

यदि आप अस्तित्व के तराजू पर एक चींटी को तौलें, तो उससे उत्पन्न होने वाला ब्रह्मांड हमारी पृथ्वी में समाहित नहीं हो सकता।

मेरे विचार में, पृथ्वी जीवित है। लेकिन अगर, दूसरों की धारणा के अनुसार, आप निर्जीव पृथ्वी को लेकर दूसरे पलड़े में रख दें, तो यह पृथ्वी के लिए बहुत बड़ा खतरा बन जाएगा।

चींटी,

यह चींटी के चेतन सिर के आधे के बराबर भी नहीं होगा।

ईसाई धर्म इस्लाम का अनुसरण करेगा

ईसाई धर्म या तो विलुप्त हो जाएगा या शुद्ध हो जाएगा। यह इस्लाम के सामने आत्मसमर्पण कर देगा और हथियार छोड़ देगा।

यह बार-बार खंडित होता रहा जब तक कि अंततः प्रोटेस्टेंट धर्म प्रकट नहीं हुआ, लेकिन
वहां उसे वह नहीं मिल सका जो इसे सुधारने के लिए आवश्यक था।

पर्दा फिर से फट गया, वह पूरी तरह से गुमराह हो गया। हालाँकि, इसका एक हिस्सा ईश्वरीय एकता की पुष्टि के करीब पहुँच गया; इसमें उसे मोक्ष मिलेगा-
वेशन.

यह फिर से टूटने की तैयारी कर रहा है। अगर यह विलुप्त नहीं हुआ तो ईसाई धर्म शुद्ध होकर इस्लाम में शामिल हो जाएगा।

इसमें एक महान रहस्य छिपा है, जिसका संकेत पैगंबरों के गौरव ने किया था जब उन्होंने कहा था: "यीशु आएगा और मेरी शरीयत का पालन करेगा; वह मेरी कौम का होगा।"

आंशिक या अप्रत्यक्ष दृष्टिकोण असंभव को संभव मानता है

यह एक प्रसिद्ध घटना है: लोगों का एक बड़ा समूह ईद की शुरुआत स्थापित करने के लिए अर्धचंद्र की तलाश में क्षितिज को स्कैन कर रहा था, लेकिन किसी को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

तभी एक बूढ़े आदमी ने कसम खाकर कहा कि उसने इसे देखा है। लेकिन उसने जो देखा था वह एक मुड़ी हुई सफ़ेद पलक थी।

पलक उसकी अर्धचंद्राकार हो गई। लेकिन एक टेढ़ी पलक कैसे
क्या तुम अर्धचन्द्र बन सकते हो? यदि तुम हमारे दृष्टान्त को समझ गए हो:

परमाणुओं की गति आपके तर्क के ऊपर की पलक बन गई है - एक काली पलक जो भौतिकवादी आंख को अंधा कर देती है।

वह उस एक को नहीं देख सकता जिसने सभी प्रकार के प्राणियों को बनाया है, इसलिए तुम पर गलत मार्गदर्शन आता है।

वह गति उस एक की जगह कैसे ले सकती है जिसने ब्रह्मांड को बनाया और व्यवस्थित किया है? यह मान लेना कि पूर्व वाला ही उत्तरार्द्ध है, एक जटिल असंभवता है।

कुरान को दर्पणों की आवश्यकता है, न कि किसी प्रतिनिधि की। तर्कसंगत तर्कों के
बजाय, यह स्रोत की पवित्रता है जो मुस्लिम समुदाय और आम लोगों को इसका पालन करने के लिए प्रोत्साहित करती है और उनसे इसका अनुसरण करने का आग्रह करती है।

शरिया का 90 प्रतिशत हिस्सा स्पष्ट, निर्विवाद तथ्यों से बना है।
धर्म के सभी विषय और आवश्यक बातें, जिनमें से प्रत्येक एक हीरे जैसा स्तंभ है।

जो मामले व्याख्या के लिए खुले हैं, विवादास्पद और गौण हैं, वे केवल दस प्रतिशत हैं। जिसके पास ये दस सोने के सिक्के हैं, वह नब्बे हीरे के खंभों का मालिक नहीं हो सकता, न ही उन्हें अपने पर्स में रख सकता है, न ही उन्हें सोने के सिक्कों पर निर्भर बना सकता है।

हीरे के खंभों का स्रोत कुरान और हदीस है।
लार्स उनकी संपत्ति हैं और हमेशा उनमें तलाश की जानी चाहिए।

शरीयत की किताबें और व्याख्याएँ कुरान का दर्पण या दूरबीन होनी चाहिए जिसके माध्यम से कुरान की जाँच की जाए। चमत्कारिक व्याख्या के उस सूर्य को छाया या किसी और की आवश्यकता नहीं है जो उसकी ओर से कार्य करे!

सत्य को झुठलाने वाला असत्य को सत्य मान लेता है

चूँकि मनुष्य स्वभाव से महान है, इसलिए उसका उद्देश्य सत्य की खोज करना है।
हालाँकि, कभी-कभी झूठ उनके हाथ लग जाता है और वे उसे सच समझकर अपनी जेब में रख लेते हैं।

सत्य की खोज करते समय, अनजाने में ही उन पर गुमराही आ पड़ती है।
वे इसे सत्य मानकर इसे अपने सिर पर धारण कर लेते हैं।

दैवी शक्ति के दर्पण अनेक हैं

सर्वशक्तिमान की शक्ति में असंख्य दर्पण हैं। वे खिड़कियाँ खोलते हैं, जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से अधिक पारदर्शी और सूक्ष्म है, जो सभी प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया को देखती हैं।

जल से वायु, वायु से आकाश, आकाश से चित्रण तक विभिन्न दर्पण या आदर्श रूप, आदर्श रूप आत्माओं को, आत्माएं समय को, समय कल्पना को, और कल्पना से लेकर मन तक, सभी ईश्वर के कार्यों की अभिव्यक्तियाँ हैं। अपना कान हवा के दर्पण पर लगाइये: एक शब्द लाखों हो जाता है!

सत्ता की कलम असाधारण तरीके से प्रतिलिपियाँ बनाती है; यह है प्रजनन का रहस्य...

प्रतिनिधित्व के विभिन्न प्रकार हैं

दर्पण में छवि या प्रतिबिंब चार प्रकार का होता है: यह या तो केवल दर्पण होता है या दर्पण में ... पहचान या प्रतिबिंबित वस्तु का भौतिक रूप; या आवश्यक, जीवित विशेषताओं के साथ पहचान; या पहचान और प्रतिबिंबित वस्तु से निकलने वाली किरण दोनों। वस्तु की प्रकृति; या प्रकृति और पहचान दोनों।

यदि आप उदाहरण चाहते हैं: एक मनुष्य, सूर्य, देवदूत, और शब्द। दर्पण में ठोस चीजों की छवियाँ चलती हुई मृत आकृतियाँ हैं।

किसी प्रकाशमान शरीर के प्रतिबिंबों में उसकी छवियां जीवित होती हैं और उससे जुड़ी होती हैं; भले ही वह स्वयं आत्मा न हो या उसके समान न हो, वे कोई भी नहीं हैं। इसके अलावा.

वे प्रत्येक एक विस्तारित प्रकाश हैं। यदि सूर्य एक जीवित प्राणी होता, इसकी ऊष्मा ही इसका जीवन होगी, और इसका प्रकाश, इसकी चेतना - इसकी छवि होगी दर्पण में ये गुण होते हैं (अर्थात् इसमें गर्मी और प्रकाश दोनों होते हैं)।

यह निम्नलिखित रहस्य की व्याख्या करता है: महादूत गेब्रियल दोनों लोटे-पेड़185 और पैगंबर की मस्जिद में दिह्या186 के रूप में उसी क्षण - और कौन जानता है कि कितनी अन्य जगहों पर!

इसके अलावा, ईश्वर ही जानता है कि अज़राएल एक साथ कितनी जगहों पर मौजूद हो सकता है, और मरने वालों की आत्माओं को ले जा सकता है।

साथ ही, पैगम्बर अपने समुदाय के सामने प्रकट होते हैं। संतों के दर्शन और सच्चे स्वप्न में;

और न्याय के दिन सर्वोच्च सभा के स्थान पर वह उनकी ओर से मध्यस्थता करने के लिए सभी से मिलें।

संतों के "प्रतिस्थापन" (अब्दाल) प्रकट होते हैं और उन्हें अनेक स्थानों पर देखा जाता है। एक ही समय पर स्थानों पर।

---

185 सबसे दूर की सीमा का लोटे का पेड़ (कुरान में सिद्रतुल-मुंतहा , 53:14); यह दर्शाता है देवत्व के क्षेत्र और सृष्टि के क्षेत्र के बीच की सीमा। (ट्र.)

186 दिहयातुल-कलबी पैगम्बर मुहम्मद के साथियों में से एक थे। महादूत गेब्रियल कभी-कभी पैगम्बर के पास उनके रूप में आते थे। देखें, अल-बुखारी, “मनक़िब” 25; मुस्लिम, “ईमान” 271. (ट्र.)

इज्तिहाद करने की योग्यता रखने वाला व्यक्ति अपने लिए नया कानून बना सकता है, लेकिन वह कानून निर्माता नहीं हो सकता। जो व्यक्ति इज्तिहाद करने की योग्यता रखता है, वह उन मामलों में अपने लिए नया कानून बना सकता है, जिनके बारे में कुरान या सुन्नत में कोई स्पष्ट आदेश नहीं है; ये आदेश उस व्यक्ति पर बाध्यकारी हैं, लेकिन अन्य पर नहीं।

वह कानून नहीं बना सकता और मुस्लिम समुदाय से उनका पालन करने का आग्रह नहीं कर सकता। उसके निष्कर्षों को शरीयत से संबंधित माना जाता है, लेकिन उन्हें शरीयत में शामिल नहीं किया जा सकता क्योंकि वे सभी मुसलमानों पर बाध्यकारी हैं। वह मुजतहिद हो सकता है, लेकिन वह कानून बनाने वाला नहीं हो सकता।

केवल बहुसंख्यक विद्वानों की सहमति ही शरिया की मुहर है। किसी विचार को स्वीकार करने के लिए दूसरों से आह्वान करने की पहली शर्त बहुमत द्वारा स्वीकृति है।

अन्यथा, ऐसा आह्वान नवाचार है और इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए; इसे गले में फँसना चाहिए, और इसका उच्चारण नहीं किया जाना चाहिए!

तर्क का प्रकाश हृदय से आता है। अज्ञानी बुद्धिजीवियों को यह सिद्धांत जानना चाहिए: हृदय के प्रकाश के बिना कोई विचार प्रबुद्ध नहीं हो सकता।

जब तक मन की किरण हृदय के प्रकाश से नहीं जुड़ती, तब तक अंधकार, उत्पीड़न और अज्ञान ही परिणाम होता है। यह अंधकार झूठी रोशनी में लिपटा हुआ है।

आपकी आँख का एक सफ़ेद हिस्सा है, जो दिन के समय जैसा दिखता है, लेकिन यह अंधा और अंधेरा है। लेकिन इसमें एक पुतली है, जो रात की तरह अंधेरी है, लेकिन प्रकाशित है।

पुतली के बिना, मांस का वह टुकड़ा आँख नहीं है, और आप देख सकते हैं कुछ भी नहीं। अंतर्दृष्टि के बिना एक आँख भी बेकार है।

इसलिए, अगर हृदय की काली पुतली विचार के श्वेत भाग में मौजूद नहीं है, तो मन की अंतर्वस्तु कोई ज्ञान या अंतर्दृष्टि उत्पन्न नहीं करेगी। हृदय के बिना कोई तर्क या बुद्धि नहीं हो सकती।

मन में ज्ञान के स्तर परिवर्तनशील होते हैं और भ्रमित हो सकते हैं मन में ज्ञान के कुछ स्तर ऐसे होते हैं जो एक दूसरे से भ्रमित हो सकते हैं और जिनके परिणाम अलग-अलग होते हैं। व्यक्ति पहले किसी चीज़ की कल्पना करता है, फिर उसके बारे में सोचता है और उसे एक रूप देता है।

इसके बाद, व्यक्ति इस बात पर विचार करता है, फिर इसकी पुष्टि करता है, और फिर इस पर पूर्ण विश्वास करता है। फिर वे इसका पूर्ण समर्थन करते हैं; फिर वे इसके प्रति प्रतिबद्ध या समर्पित हो जाते हैं।

आपकी प्रतिबद्धता अलग है, और आपका समर्थन भी अलग है, जिनमें से प्रत्येक अलग है।
परिणाम एक अलग स्थिति या दृष्टिकोण में आता है:

दृढ़ता प्रतिबद्धता या समर्पण से उत्पन्न होती है, जबकि अनुपालन समर्थन या वकालत से आता है। अनुपालन दृढ़ विश्वास से और पक्षपात तर्क से होता है, जबकि अवधारणा के स्तर पर कोई विचार नहीं बनता है।

यदि आप कल्पना के स्तर पर ही रहेंगे तो परिणाम कुतर्क ही होगा।
झूठ और भ्रामक चीजों का सुंदर, मनोरम वर्णन सरल मन को चोट पहुंचाएगा और गुमराह करेगा।

बिना पचा हुआ ज्ञान दूसरों को नहीं देना चाहिए। सच्चा, विद्वान मार्गदर्शक भेड़ की तरह
होता है, पक्षी की तरह नहीं; वे निस्वार्थ भाव से ज्ञान प्रदान करते हैं।

क्योंकि भेड़ अपने मेमनों को शुद्ध दूध के रूप में पचा हुआ भोजन देती है,
जबकि पक्षी अपने चूज़ों को उगला हुआ भोजन देता है।

विनाश आसान है, इसलिए कमजोर विनाशकारी हैं किसी चीज का अस्तित्व
उसके सभी हिस्सों के अस्तित्व पर निर्भर करता है, जबकि उसका अस्तित्व न होना उसके किसी एक हिस्से के न होने से संभव है; इस प्रकार, विनाश आसान है।

इसका कारण यह है कि नपुंसक व्यक्ति कभी भी कुछ सकारात्मक या रचनात्मक करने या उत्पन्न करने के लिए इच्छुक नहीं होता है जो उसकी शक्ति और क्षमता को दर्शाए; वह नकारात्मक रूप से कार्य करता है, और हमेशा विनाशकारी होता है।

बल का उपयोग न्याय के लिए
होना चाहिए। यदि बुद्धि के सिद्धांत, राज्य के कानून, अधिकार के नियम और बल के नियम एक दूसरे की सहायता या समर्थन नहीं करते हैं, तो वे आम जनता के बीच न

तो फलदायी होंगे और न ही प्रभावी होंगे। शरिया के चिह्न या सार्वजनिक प्रतीक उपेक्षित हो जाएंगे और स्थगित हो जाएंगे।

वे अब लोगों के लिए उनके मामलों में सहायता का केन्द्र नहीं रहेंगे, तथा लोगों को उन पर भरोसा या भरोसा नहीं रहेगा।

कभी-कभी विपरीतों में भी विपरीत होते हैं

कभी-कभी विपरीत अपने भीतर विपरीत को छिपा लेते हैं। राजनीति की भाषा में शब्द अपने अर्थ के विपरीत होते हैं।

अत्याचार ने न्याय की टोपी पहन ली है। विश्वासघात ने देशभक्ति का सस्ता चोला पहन लिया है। जिहाद और ईश्वर के लिए युद्ध को आक्रामकता करार दिया गया है ।

स्वतंत्रता मानव अधिकारों का उल्लंघन है। पशुवत वासनाओं की गुलामी और शैतान की निरंकुशता को स्वतंत्रता कहा गया है।

चीज़ें एक दूसरे के विपरीत हो गयी हैं, रूप बदल गये हैं,
नाम बदल दिए गए हैं, पद और रैंक बदल गए हैं।

वर्तमान की राजनीति, जो स्वार्थ पर आधारित है, एक हिंसक पशु है ।

यदि आप किसी हिंसक पशु से प्रेम करेंगे तो आप उसकी दया को आकर्षित नहीं कर सकेंगे, बल्कि उसकी भूख को बढ़ा देंगे।

फिर वह आप पर आक्रमण कर देगा और अपने पंजों और दांतों के इस्तेमाल के लिए आपसे पैसे मांगेगा।

चूंकि सृष्टि में मानवीय क्षमताओं पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है, इसलिए उनके
अपराध महान हैं। पशुओं के विपरीत, सृष्टि में मानव
क्षमताओं पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है; उनसे उत्पन्न होने वाली अच्छाई और बुराई की कोई सीमा नहीं है।

एक शक्ति से उत्पन्न स्वार्थ और दूसरी शक्ति से उत्पन्न अहंकार यदि अहंकार और हठ दोनों को मिला दिया जाए तो ऐसे पाप हो जाएंगे जिनका अभी तक कोई नाम नहीं मिल पाया है।

चूँकि ये पाप नरक की अनिवार्यता के प्रमाण हैं, इसलिए इनकी सजा भी नरक ही हो सकती है।

उदाहरण के लिए, अपने एक झूठ को सही साबित करने के लिए एक आदमी चाहता है कि,
उनके दिल में इस्लाम का पतन था।

वर्तमान समय ने दिखा दिया है कि नरक अनावश्यक नहीं है और स्वर्ग
सस्ता नहीं है.

कभी-कभी अच्छाई बुराई की ओर ले जाती

है, जबकि वास्तविकता में अभिजात वर्ग के गुणों से उनमें विनम्रता और आत्म-विनम्रता पैदा होनी चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से वे अहंकार और उत्पीड़न का कारण बन गए हैं।

और जबकि गरीबों की विपन्नता और आम लोगों की गरीबी (जैसा कि वे वास्तव में करते हैं) उनके प्रति दया और अनुग्रह जगाने के साधन के रूप में काम करना चाहिए, दुर्भाग्य से अब वे आम लोगों के अपमान और दासता का कारण बन गए हैं।

यदि किसी चीज से सम्मान और पुण्य प्राप्त होता है, तो उसे कुलीन वर्ग और नेताओं को दिया जाता है, लेकिन यदि उससे बुराई और बुराइयां उत्पन्न होती हैं, तो उसे आम लोगों या कर्मचारियों और सेवकों में बांट दिया जाता है।

यदि किसी विजयी जनजाति ने कोई सम्मान जीता है, तो बधाई दी जाती है
हसन आगा (प्रमुख) को; लेकिन अगर उसके बाद कुछ नुकसान हो,
हर अभिशाप जनजाति के सदस्यों पर डाला जाता है। यह एक खेदजनक बुराई है
मानव जाति के बीच!

उद्देश्य का अभाव अहंकार को मजबूत करता है

यदि लोगों के पास कोई लक्ष्य न हो, या मुख्य उद्देश्य भूला दिया गया हो या
उपेक्षित होने पर, मन व्यक्तिगत अहं की ओर मुड़ जाता है और उसके चारों ओर घूमने लगता है।

इस प्रकार अहंकार फूल जाता है, कभी-कभी क्रोध से फूल जाता है; यह
"छेदा" या पिचकाया नहीं गया ताकि वह "हम" बन जाए। जो लोग प्यार करते हैं
वे स्वयं किसी दूसरे से प्रेम नहीं करते।

क्रांतियों का एक जीवन उभरा है
ज़कात की मौत और सूदखोरी की ज़िंदगी

सभी क्रांतियों, सभी अराजकता और भ्रष्टाचार का मूल, जड़ और स्रोत
सभी बुराइयों, दुर्गुणों और भ्रष्ट गुणों में से, 'मैं भूख से मर रहा हूँ' को दो छोटे वाक्यांशों में अभिव्यक्त किया जा सकता है: पहला है: "मैं

भरा हुआ हूँ, इसलिए अगर दूसरे भूख से मरते हैं तो मुझे क्या लेना-देना?" और
दूसरा: "तुम कष्ट उठाते हो ताकि मैं आराम से रह सकूँ। तुम काम करते हो ताकि मैं खा सकूँ।"
भोजन मेरे लिए है, श्रम तुम्हारे लिए है।”

पहले शब्द के घातक जहर का एक ही इलाज है, जो है
इसे जड़ से खत्म कर देंगे और स्थिति को ठीक कर देंगे:

यह ज़कात है जिसे शरीयत द्वारा स्थापित किया गया है, जो इस्लाम का एक स्तंभ है।
दूसरे शब्द में ज़क़्क़ुम का वृक्ष है , जो इसे उखाड़ देगा वह है सूद और ब्याज का निषेध।

यदि मानव जाति मोक्ष चाहती है और अपने जीवन से प्यार करती है, तो उसे ज़कात अवश्य लागू करनी चाहिए
और सूदखोरी और ब्याज को ख़त्म किया जाएगा।

यदि मानव जाति जीवन को प्राथमिकता देती है, तो उसे हर प्रकार के सूदखोरी को समाप्त करना होगा
मानवीय संबंधों का बंधन जो अभिजात वर्ग से लेकर आम वर्ग तक फैला हुआ है
लोगों का आपसी सम्बन्ध टूट गया है। इसलिए नीचे से (निम्न सामाजिक स्तर) लोग पैदा होते हैं।
क्रांति की चीखें, बदला लेने की चीखें, शिकायत की चीखें और
ईर्ष्या करना।

ऊपर से अत्याचार और तिरस्कार की आग, अहंकार की गड़गड़ाहट और उत्पीड़न की बिजलियाँ उतरती हैं।

नीचे से जो उत्पन्न होना चाहिए वह है प्रेम, सम्मान और सद्भाव। और नीचे से जो उत्पन्न होना चाहिए वह है प्रेम, सम्मान और सद्भाव।
ऊपर से करुणा और सहायता, दया और विचारशीलता उतरनी चाहिए।

यदि मानव जाति ये सब चाहती है तो उसे ज़कात पर दृढ़ रहना चाहिए तथा सूद और ब्याज का परित्याग कर देना चाहिए।

कुरान का न्याय संसार के द्वार पर खड़ा है, और सूदखोरी से कह रहा है और ब्याज: "प्रवेश निषिद्ध है! आपको प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है!" उन्हें पीछे हट जाना चाहिए इस दरवाजे से निकल जाओ और दुनिया से गायब हो जाओ।

मानव जाति ने इस आदेश पर ध्यान नहीं दिया और इस प्रकार उसे एक विनाशकारी परिणाम मिला।

गंभीर आघात; लोगों को दूसरा झटका मिलने से पहले इस आह्वान पर ध्यान देना चाहिए, अधिक गंभीर झटका.

मानव जाति ने गुलामी को नष्ट कर दिया है; यह मजदूरी कमाने को भी नष्ट कर देगा

एक सपने में मैंने कहा था कि राष्ट्रों और राज्यों के बीच कम गंभीर युद्धों का रास्ता बनता है सामाजिक वर्गों के बीच भयंकर युद्ध के लिए।

क्योंकि पिछले युगों में, मानव जाति ने गुलामी को मंजूरी नहीं दी और कुचल दिया अब यह मज़दूरी करने वाला बन गया है; इस समय मानवता इस बोझ को झेल रही है, लेकिन इसे भी कुचल दिया जाएगा।

मानव जाति चार चरणों (सामाजिक विकास के) से गुजरकर बूढ़ी हो गई है। प्रगति): बर्बरता, खानाबदोशता, गुलामी और उपनिवेशवाद; अब हम उस दौर में हैं पांचवां युग, मजदूरी का है, लेकिन यह भी बीत रहा है।

एक गैरकानूनी तरीका उस चीज़ के विपरीत ले जाता है जिसका इरादा था

हत्यारा (जिसकी उसने हत्या की है) उससे उत्तराधिकार नहीं पा सकता; यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है: "कोई व्यक्ति जो गैरकानूनी तरीके से (इस्लाम) अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जो कुछ भी करता है, वह आमतौर पर उसके विपरीत होता है, जिसका प्रतिशोध वे चाहते हैं।

(दूसरे) यूरोप का प्रेम शरीयत के मद्देनजर वैध प्रेम नहीं है; यह एक अंधी नकल और अप्रिय मित्रता है। इसके परिणाम और प्रतिफल प्रियतम की अत्याचारी शत्रुता और उसके अपराध हैं।

पापी को हानि की सजा दी जाती है, अंत में उसे न तो कोई खुशी मिलेगी, न ही कोई सुख। न ही मोक्ष.

जबरिया और मुताज़िला दोनों में सच्चाई का एक दाना है

हे सत्य के अन्वेषक! भूतकाल और विपत्तियाँ, भविष्य और पाप सब मेरे लिए हैं। शरीयत के दृष्टिकोण और विचार में दोनों एक समान नहीं हैं।

अतीत और आपदाओं को ईश्वरीय दृष्टिकोण से देखा जाता है नियति; इसके लिए उपयुक्त शब्द जाबिरया का है, (जो हर नियति को संदर्भित करते हैं) (घटना को भाग्य में बदलना)।

भविष्य और पापों के बारे में मानवीय जवाबदेही को ध्यान में रखा जाता है; इसके लिए, मुताज़िला का शब्द उपयुक्त है, (जो मानवीय कार्यों में भाग्य की भूमिका से इनकार करते हैं)। यहाँ मुताज़िला और जबरिया का मेल हो गया है।

इन दोनों झूठे स्कूलों में सच्चाई का एक अंश है। प्रत्येक की एक विशेष परिस्थिति होती है; झूठ उस सामान्यीकरण से उत्पन्न होता है जो किसी विशेष परिस्थिति से परे होता है।

केवल असमर्थ लोग ही नपुंसकता और शिकायतों में सांत्वना खोजते हैं । यदि आप जीवन चाहते हैं, तो उन चीजों के लिए नपुंसकता का सहारा न लें जिनका कोई समाधान नहीं है; यदि आप मन की शांति चाहते हैं, तो उन चीजों के लिए अफसोसजनक

शिकायतों का सहारा न लें जिनका कोई समाधान नहीं है।

कभी-कभी छोटी चीजें बड़े परिणाम लाती हैं। कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं, जिनमें एक छोटा-सा कार्य करने वाले को सर्वोच्च पद पर पहुंचा देता है; फिर कुछ परिस्थितियां ऐसी भी होती हैं, जहां एक छोटा-सा कार्य करने वाले को निम्नतम पद पर पहुंचा देता है...

कुछ लोगों के लिए एक पल एक साल के बराबर होता है। कुछ जन्मजात क्षमताएँ एक पल में विकसित होती हैं, जबकि अन्य धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके विकसित होती हैं। मानव स्वभाव में ये दोनों ही गुण मौजूद हैं।

वे परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं, और उसके अनुसार बदलते हैं। कभी-कभी वे धीरे-धीरे विकसित होते हैं। कभी-कभी वे बारूद की तरह होते हैं - काले, अचानक धधकती आग में बदल जाते हैं।

कभी-कभी एक नज़र कोयले को हीरे में बदल देती है। कभी-कभी एक स्पर्श पत्थर को अमृत में बदल देता है।

पैगम्बर की एक नज़र ने एक अज्ञानी खानाबदोश को एक महान व्यक्ति में बदल दिया।
एक क्षण में ज्ञान से प्रबुद्ध व्यक्ति।

यदि आप तुलना करना चाहते हैं तो: इस्लाम से पहले उमर और इस्लाम के बाद उमर।

दोनों की तुलना करें: एक बीज और एक पेड़। बीज ने तुरंत फल पैदा कर दिया। मुहम्मद की वह नज़र, पैगंबर की कृपा, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने अचानक अरब प्रायद्वीप में कोयले जैसी प्रकृति को हीरे में बदल दिया। उन्होंने उन चरित्रों को प्रबुद्ध किया जो बारूद की तरह काले थे; वे सभी चमकते

हुए प्रकाश बन गए।

झूठ अविश्वास का शब्द है। सत्य का एक

दाना लाखों झूठों को जला देता है। वास्तविकता का एक दाना सपनों के महल को नष्ट कर देता है। सत्यता एक सर्वोच्च सिद्धांत है, एक चमकता हुआ रत्न है।

यदि सत्य बोलने से हानि हो सकती हो तो मौन रहना उचित है; परन्तु ...
झूठ के लिए कभी कोई स्थान नहीं होता, भले ही ऐसा प्रतीत होता हो कि उसका कुछ उपयोग है।

आप जो भी कहें वह सच होना चाहिए, आप जो भी निर्णय दें वह सही होना चाहिए, लेकिन आपको वह सब कहने का कोई अधिकार नहीं है जो सच है।

हमें इस बात से भली-भांति परिचित होना चाहिए, तथा इसे अपने सिद्धांत के रूप में अपना लेना चाहिए: "
जो स्पष्ट और शांत है उसे छोड़ दो, जो अस्पष्ट और कष्टदायक है उसे छोड़ दो।"

चीजों का अच्छा पक्ष देखें, ताकि आपके पास अच्छे विचार हों। चीजों को अच्छा समझें और उनके बारे में अच्छा ही सोचें, ताकि आपको जीवन में आनंद मिले।

जीवन में आशा और हर चीज के बारे में अच्छा सोचना ही जीवन है, जबकि निराशा और निराशा ही जीवन है।
दूसरों के बारे में बुरा सोचना खुशियों का नाश करने वाला और जीवन का हत्यारा है।

प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया में एक सभा में

शरिया और आधुनिक सभ्यता के बीच, तथा वैज्ञानिक प्रतिभा और शरिया के
मार्गदर्शन के बीच तुलना

प्रथम विश्व युद्ध के बाद युद्ध विराम की अवधि की शुरुआत में शुक्रवार की रात को एक सच्चे सपने में, विश्व की एक सर्वोच्च सभा ने मुझसे पूछा
प्रतिनिधित्व और आदर्श रूप:

"हार के बाद मुस्लिम दुनिया में क्या उभर कर आएगा?"
वर्तमान युग के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने उत्तर दिया, और उन्होंने मेरी बात सुनी:

अपनी स्थापना के समय से ही इस राज्य ने इस्लामी दुनिया के लिए खुद को बलिदान करने के लिए अपने कर्तव्य को निभाया और इस्लामी क्रांति के ध्वजवाहक के रूप में कार्य किया।

खलीफा,

और तदनुसार उसने जिहाद नामक सामूहिक धार्मिक दायित्व को अपनाया,
इस्लामी स्वतंत्रता को बनाए रखना और ईश्वर के वचन का महिमामंडन करना।

समय के साथ इस राज्य, इस मुस्लिम राष्ट्र पर जो विपत्ति आई है,
इससे निश्चित रूप से मुस्लिम जगत में समृद्धि और स्वतंत्रता आएगी।

इस वर्तमान आपदा की भरपाई भविष्य में की जाएगी। जो व्यक्ति तीन खोता है और बदले में तीन सौ पाता है, उसे कोई नुकसान नहीं होता। एक उत्साही मजदूर की तरह, वे बेहतर भविष्य के लिए अपना वर्तमान बदल देते हैं।

इस आपदा ने हमारे जीवन में जो उत्प्रेरक या उत्प्रेरक है, उस करुणा और इस्लामी एकजुटता और भाईचारे को असाधारण स्तर तक जगा दिया है; इसने हमारे भाईचारे को अद्भुत प्रोत्साहन दिया है।

वर्तमान सभ्यता, जो वस्तुतः नीचता है, अपना रूप बदल लेगी, उसकी व्यवस्था नष्ट हो जाएगी; तब इस्लामी सभ्यता का उदय होगा। निश्चय ही मुसलमान ही उसमें स्वेच्छा से प्रवेश करने वाले प्रथम लोग होंगे।

यदि आप शरिया की सभ्यता और वर्तमान सभ्यता के बीच तुलना करना चाहते हैं, तो प्रत्येक के सिद्धांतों की बारीकी से जांच करें और उनके महत्व पर विचार करें।

नतीजे:

वर्तमान सभ्यता के सिद्धांत नकारात्मक हैं। इसकी नींव
और मूल्य पांच नकारात्मक सिद्धांत हैं। इसकी मशीनरी इन्हीं पर आधारित है।

इसका आधार और भरोसा अधिकार के बजाय शक्ति या बल है, और बल का मूल लक्षण आक्रामकता और शत्रुता है, जिससे विश्वासघात उत्पन्न होता है।

इसका लक्ष्य, सद्गुण के स्थान पर, स्वार्थ की तुष्टि है, जिसका अनिवार्य लक्षण संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता है, और जिसका परिणाम अपराध है।

इसके जीवन का नियम सहयोग और पारस्परिक सहायता के बजाय संघर्ष है; संघर्ष की आवश्यक विशेषता विवाद और पारस्परिक प्रतिकर्षण है; परिणाम गरीबी है।

लोगों के बीच इसका मूल बंधन नस्लवाद या नस्लीय भेदभाव है, जो दूसरों के नुकसान के लिए विकसित होता है; यह दूसरों के अधिकारों के हनन से पोषित और मजबूत होता है।

नकारात्मक राष्ट्रवाद या नस्लवाद निरंतर, भयानक झड़पों, विनाशकारी टकरावों का मार्ग प्रशस्त करता है; परिणाम विनाश होता है।

पांचवां यह है: वर्तमान सभ्यता की मोहक सेवा वासनाओं और भावनाओं को उत्तेजित करती है, जिससे पशुवत इच्छाओं की पूर्ति में सहायता मिलती है; परिणाम होता है भोग-विलास।

वासनाओं और भावनाओं की मूल विशेषता हमेशा यही होती है: वे मनुष्यों को पशु में बदल देती हैं, उनका चरित्र बदल देती हैं; वे उन्हें विकृत कर देती हैं, उनकी मानवता को विकृत कर देती हैं।

इनमें से ज़्यादातर सभ्य लोग - अगर आप उन्हें अंदर से बाहर कर दें - तो बंदर, लोमड़ी, साँप, भालू और सूअर जैसे दिखेंगे। उनके चरित्र ने उनके रूप तय कर दिए हैं। वे कल्पना में अपने फर और खाल में दिखाई देते हैं!

इसके विपरीत, शरिया, पृथ्वी का संतुलन है। शरिया में दया कुरान के स्वर्ग से आती है। कुरानिक सभ्यता के सिद्धांत सकारात्मक हैं। खुशी के लिए इसका तंत्र पाँच सकारात्मक सिद्धांतों पर निर्भर करता है:

इसका आधार और अवलंबन शक्ति के स्थान पर अधिकार है और अधिकार का अपरिवर्तनीय लक्षण न्याय और संतुलन है, जो दीनता और दुष्टता को दूर कर मोक्ष, सुरक्षा और कल्याण को जन्म देता है।

इसका उद्देश्य स्वार्थ के बजाय सद्गुण है और सद्गुण का मूल चरित्र

प्रेम और पारस्परिक आकर्षण ही सुख है। इनसे सुख मिलता है और शत्रुता से दु:ख।

प्रकट होता है।

इसके जीवन का सिद्धांत संघर्ष और हत्या के बजाय सहयोग है, और सहयोग की आवश्यक विशेषता एकता और एकजुटता है; ये समुदाय को जीवंत करते हैं।

वासना और जुनून के स्थान पर, इसकी सेवा का रूप मार्गदर्शन है और मार्गदर्शन की आवश्यक विशेषता मानवता के लिए उपयुक्त तरीके से प्रगति और समृद्धि है, साथ ही आत्मा द्वारा अपेक्षित तरीके से ज्ञान और पूर्णता भी है।

जबकि नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद जनता के बीच एकता के बिंदु को नष्ट करते हैं, शरिया लोगों के बीच धर्म, नागरिकता, पेशे और विश्वास के भाईचारे के बंधन स्थापित करता है।

इन बंधनों की बुनियादी विशेषताएँ ईमानदारी से भाईचारा, और सामान्य मुक्ति, सुरक्षा और कल्याण हैं। शरिया केवल बाहरी हमलों के मामले में आत्मरक्षा की मांग करता है।

अब आप समझ गए होंगे कि मुसलमान वर्तमान सभ्यता को अपनाए बिना उससे दूर क्यों रहे।

आज तक मुसलमानों ने इस सभ्यता में स्वेच्छा से प्रवेश नहीं किया है, यह उन्हें पसन्द नहीं आई है, बल्कि उन पर दासता की बेड़ियाँ डाल दी गई हैं।

जबकि इसे मानवजाति के लिए इलाज होना चाहिए था, यह सभ्यता जहर बन गई है। इसने अस्सी प्रतिशत आबादी को अभाव और दुख में डाल दिया है और दस प्रतिशत को झूठी खुशी दी है।

शेष दस प्रतिशत लोग बेचैनी में रह गए हैं, दोनों के बीच फंसे हुए हैं। व्यापार से मिलने वाला लाभ अत्याचारी अल्पसंख्यकों के पास चला गया है। लेकिन सच्ची खुशी वह है जो सभी को मिले, या कम से कम बहुसंख्यकों के लिए मुक्ति। कुरान, जो मानव जाति के लिए दया के रूप में प्रकट हुआ है, केवल उस तरह की सभ्यता को स्वीकार करता है

इससे सभी को, या कम से कम बहुसंख्यकों को खुशी मिलती है। वर्तमान सभ्यता में, भावनाएं अप्रतिबंधित हैं, आवेग और कल्पनाएं भी स्वतंत्र हैं; यह एक पशु स्वतंत्रता है।

लोगों पर भावनाएं हावी हो जाती हैं, आवेग और कल्पनाएं भी निरंकुश हो जाती हैं; उन्होंने अनावश्यक आवश्यकताओं को आवश्यक बना दिया है, तथा सहजता और राहत को खत्म कर दिया है।

जबकि आदिम जीवन में व्यक्ति को चार चीजों की आवश्यकता होती थी, सभ्यता
उन्हें सौ लोगों का मोहताज बना दिया है, और उन्हें दरिद्र बना दिया है।

वैध श्रम लागत को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। इसने मानवता को प्रेरित किया है-
धोखाधड़ी और गैरकानूनी कामों के प्रति झुकाव। इसी वजह से सभ्यता ने नैतिकता के सार को भ्रष्ट कर दिया है।

इसने समाज और मानव जाति को कुछ समृद्धि और चमक दी है।
प्रजातियाँ, लेकिन इसने व्यक्ति को अनैतिक और दरिद्र बना दिया है।
इसके कई प्रमाण हैं।

पूर्व काल में हुई सारी बर्बरता और अपराध तथा सारी क्रूरता और
इस घातक सभ्यता ने एक साथ ही विश्वासघात उगल दिया है, और
इसका पेट अभी भी उबकाई ले रहा है।187

यह तथ्य कि इस्लामी दुनिया अलग-थलग रहने में सक्षम है, दोनों का अर्थ है-
यह सभ्यता अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। यह सभ्यता स्वीकार करने में अनिच्छुक रही है, और
ने ठंडे दिमाग से काम लिया है।

सचमुच, दिव्य प्रकाश की विशिष्ट गुणवत्ता शानदार में
शरिया का अर्थ है स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता।

इसी गुण के कारण मार्गदर्शन के प्रकाश ने कभी भी मनुष्य को भटकने नहीं दिया।
रोम की प्रतिभा, (यूरोपीय) सभ्यता की भावना, उस पर हावी होने के लिए।

शरीयत के मार्गदर्शन को दर्शन के साथ नहीं जोड़ा जा सकता
न तो इस पर कलम लगाओ, न ही इसका अनुसरण करो।

करुणा और विश्वास की गरिमा आत्मा में पाई जाती है
इस्लाम और शरीयत की सच्चाइयों को, जिसे इसने पोषित किया है - कुरान
चमत्कारिक ढंग से शरिया की सच्चाई को उजागर किया गया है
हाथ;

शरिया के इन सत्यों में से प्रत्येक उस चमकते हुए मूसा का एक डंडा है
हाथ। भविष्य में वह जादूगर सभ्यता आश्चर्य में डूब जाएगी
इससे पहले।

अब, इस पर ध्यान दें: दो प्रतिभाशाली लोग थे - प्राचीन ग्रीस और रोम,
वे जुड़वां एक ही वंश से थे। एक कल्पनाशील था, दूसरा भौतिकवादी।

पानी और तेल की तरह, वे कभी एक साथ नहीं मिलते। ऐसी घटना
समय की आवश्यकता थी, सभ्यता ने ऐसा करने का प्रयास किया और ईसाई धर्म ने भी कोशिश की, लेकिन कोई भी सफल नहीं हुआ।
उन्हें संयोजित करने में सक्षम हो गया है।

---

187 यानी सभ्यता और भी भयानक उल्टी करेगी। यह उल्टी दो दुनियाओं के रूप में हुई है।
युद्ध इस तरह से लड़े गए कि हवा, जमीन और समुद्र सब कुछ गंदा हो गया और खून से रंग गया।

दोनों ने अपनी आंशिक स्वतंत्रता को बचाए रखा। वे एक ही शरीर में दो आत्माएँ बनकर रह गए हैं; अब उन्होंने अपना शरीर बदल लिया है; एक जर्मन बन गया है, दूसरा फ्रांसीसी।

उन्हें एक प्रकार का पुनर्जन्म अनुभव हुआ है। हे मेरे स्वप्न-भाई!
समय ने यही दिखाया है। उन जुड़वां प्रतिभावानों ने उन्हें मिलाने के किसी भी प्रयास को अस्वीकार कर दिया है; वे अभी भी मेल-मिलाप नहीं कर पाए हैं। चूँकि

वे जुड़वां हैं, वे भाई और दोस्त हैं, प्रगति में साथी हैं; लेकिन उन्होंने लड़ाई की है और कभी शांति नहीं बनाई।

तो फिर यह कैसे हो सकता है कि कुरान की रोशनी और शरीयत का मार्गदर्शन, जबकि उसका स्रोत, उत्पत्ति और प्रकट होने का स्थान बिल्कुल अलग है, रोम की प्रतिभा और आधुनिक सभ्यता की भावना के साथ सामंजस्य स्थापित कर ले और उसके साथ जुड़ जाए?

वह प्रतिभा और यह मार्गदर्शन - उनकी उत्पत्ति अलग-अलग है: मार्गदर्शन स्वर्ग से उतरता है, प्रतिभा धरती से उभरती है। मार्गदर्शन दिल में काम करता है और प्रतिभा दिमाग में काम करती है।

प्रतिभा मन में काम करती है और हृदय को भ्रमित करती है। मार्गदर्शन आत्मा को प्रकाशित करता है, उसके बीजों को अंकुरित करता है और उन्हें फलने-फूलने देता है; अंधकारमय मानव स्वभाव उससे प्रकाशित होता है।

पूर्णता के लिए मार्गदर्शन की क्षमता अचानक बढ़ जाती है; यह शारीरिक आत्मा को एक विनम्र सेवक बना देती है; यह उत्साही और प्रयासशील मनुष्यों को एक दिव्य चेहरा प्रदान करती है।

जहाँ तक प्रतिभा का सवाल है, यह मुख्य रूप से शारीरिक आत्मा और शारीरिक अस्तित्व पर अपना ध्यान केंद्रित करती है; यह प्रकृति में आती है, आत्मा को एक कृषि योग्य क्षेत्र बनाती है और शारीरिक क्षमताएँ विकसित और फलती-फूलती हैं; यह आत्मा को वश में करती है, जिससे बीज सूख जाते हैं; यह मानवजाति में

शैतानी विशेषताएँ प्रदर्शित करती है। लेकिन मार्गदर्शन दोनों जीवन को खुशी देता है - यह और अगला - और इस दुनिया और अगले दोनों में प्रकाश फैलाता है, मानवजाति को ऊपर उठाता है।

प्रतिभावान व्यक्ति, एक आँख से अंधे मसीह विरोधी की तरह, केवल इसी जीवन और इसी को देखता है।
यह भौतिकवादी और संसार-प्रेमी है। यह मनुष्य को पशु बना देता है।

प्रतिभा बहरी प्रकृति की पूजा करती है और अंधी शक्ति की सेवा करती है। लेकिन मार्गदर्शन सचेत कला (प्रकृति के रूप में प्रकट) को पहचानता है और बुद्धिमान शक्ति (जो प्रकृति को अस्तित्व प्रदान करती है) की ओर मुड़ता है। प्रतिभा पृथ्वी पर कृतघ्नता का पर्दा खींचती है जबकि मार्गदर्शन धन्यवाद का प्रकाश बिखेरता है।

इसी कारण से प्रतिभा बहरी और अंधी होती है, जबकि मार्गदर्शन सुनना और देखना होता है। प्रतिभा के दृष्टिकोण से, पृथ्वी की देन स्वामित्वहीन लूट है;

यह उन्हें हड़पने और चुराने की इच्छा को बढ़ावा देता है, बिना किसी आभार के, क्रूरतापूर्वक उन्हें प्रकृति से दूर कर दें।

मार्गदर्शन की दृष्टि से धरती के सीने और ब्रह्माण्ड के चेहरे पर फैली हुई नेमतें दया के फल हैं; वह प्रत्येक नेमत के नीचे एक कृपालु हाथ को देखती है, और कृतज्ञतापूर्वक उसे चूम लेती है।

मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि सभ्यता में अनेक सद्गुण हैं, लेकिन वे ये न तो ईसाई धर्म की संपत्ति हैं, न ही यूरोप की खोज।

न ही वे इस शताब्दी की उपज हैं; वे मानवता की सामान्य संपत्ति हैं, जो समय के साथ विचारों और अध्ययनों के संयोजन के परिणामस्वरूप, प्रकट धर्मों के नियमों से उत्पन्न हुई हैं, और जन्मजात आवश्यकता से उभरती हैं,

और विशेष रूप से इस्लामी क्रांति से मुहम्मद की शरिया। कोई भी इन पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकता।

प्रतिनिधित्व जगत से सभा के नेता ने एक और प्रश्न पूछा:

प्रश्न: "विपत्तियाँ हमेशा विश्वासघात का परिणाम होती हैं, लेकिन पुरस्कार का मार्ग प्रशस्त करती हैं। हे वर्तमान शताब्दी के मनुष्य! ईश्वरीय नियति ने आघात पहुँचाया है और ईश्वरीय आदेश ने सजा सुनाई है।

"तुमने ऐसा क्या किया कि ईश्वरीय आदेश और नियति दोनों ने तुम्हारा ऐसा न्याय किया - कि ईश्वरीय आदेश ने तुम्हें इस विपत्ति की सजा सुनाई और तुम्हें पीटा?

“यह सदैव बहुमत की गलती होती है जो सामान्य आपदाओं का कारण बनती है।”

मैंने जवाब में कहा:

उत्तर: मानव जाति की गलत सोच, निम्रोद जैसी हठधर्मिता, फिरौन जैसी अहंकारिता धरती पर बढ़ती गई और बढ़ती गई जब तक कि वे स्वर्ग तक नहीं पहुंच गए। मानवता ने सृष्टि के संवेदनशील रहस्य का भी अपमान किया।

इसने पिछले युद्ध की थरथराहटों को प्लेग और जल प्रलय की तरह आकाश से बरसने दिया; इसने काफिरों पर एक स्वर्गीय प्रहार किया।

इसका मतलब यह है कि यह आपदा पूरी मानव जाति की आपदा थी। इसका सामान्य कारण, जिसमें पूरी मानव जाति शामिल थी, भौतिकवाद से उत्पन्न गलत सोच थी - पाशविक स्वतंत्रता, शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं की निरंकुशता।

इसमें हमारा हिस्सा इस्लाम के स्तंभों की उपेक्षा और उनके परित्याग का परिणाम है। क्योंकि सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान को चौबीस में से एक घंटा चाहिए था।

उसने हमें आदेश दिया, इच्छा व्यक्त की कि हम अपने भले के लिए पाँचों दैनिक प्रार्थनाओं के लिए एक घंटा निर्धारित करें। लेकिन आलस्य के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया, असावधानी में उनकी उपेक्षा की।

अतः हमें निम्नलिखित दण्ड मिला: उसने हमें इन पिछले पांच वर्षों के दौरान एक प्रकार की प्रार्थना करने के लिए बाध्य किया, जिसमें हमें लगातार चौबीस घंटे अभ्यास और कठिनाई के माध्यम से आगे बढ़ना और प्रयास करना पड़ता था।

उन्होंने हमसे वर्ष में एक माह उपवास करने की भी मांग की, लेकिन हमें अपने पिता पर दया आ गई। इसलिए प्रायश्चित के तौर पर उसने हमें पांच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया।

वह चाहता था कि जो संपत्ति उसने हमें दी है, उसका हम चालीसवाँ या दसवाँ हिस्सा ज़कात के रूप में अदा करें। किन्तु हमने कंजूसी के कारण अन्याय किया, हमने अपनी संपत्ति में हराम को भी मिला दिया और स्वेच्छा से ज़कात नहीं दी।

इसलिए उसने हमारी जमा की हुई ज़कात हमसे ले ली और हमें हमारे माल में से हराम से बचा लिया। काम अपनी तरह की सज़ा का कारण बनता है। सज़ा भी काम के समान ही होती है।188 अच्छे, नेक काम दो तरह के होते हैं: एक सकारात्मक और स्वैच्छिक, दूसरा नकारात्मक और मजबूरी में किया जाने वाला। सभी दुख और

विपत्तियाँ अच्छे कर्म हैं, लेकिन वे नकारात्मक और मजबूरी में किए जाने वाले हैं। हदीस जो हमें इस बारे में बताती है, वह हमें सांत्वना देती है।189 इस पापी राष्ट्र ने खून से वुज़ू किया है; इसने कर्मों से तौबा की है। तत्काल पुरस्कार के रूप में, इस राष्ट्र के पाँचवें हिस्से यानी चालीस लाख लोगों को पुरस्कृत किया गया।

---

[188] मैंने स्वप्न में हज का उल्लेख नहीं किया , क्योंकि हज और उसकी बुद्धि की उपेक्षा करने से विपत्ति नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रकोप हुआ और उसका दण्ड हमारे पापों का प्रायश्चित नहीं, बल्कि हमारे पापों में वृद्धि थी। यह उस उच्च इस्लामी नीति की उपेक्षा थी, जो हज में विद्यमान है और जो परस्पर परिचय के द्वारा विचारों में एकता और परस्पर सहायता के द्वारा सहयोग लाती है, और यह हज में निहित उन व्यापक सामाजिक लाभों की उपेक्षा थी, जिन्होंने शत्रु के लिए इस्लाम के विरुद्ध लाखों मुसलमानों को नियोजित करने का मार्ग तैयार किया है। वे भारतीय मुसलमान थे! यह समझकर कि वह उनका शत्रु है, उन्होंने अपने पिता (ओटोमन राज्य) को मार डाला और अब वे उसकी लाश के पास रो रहे हैं। वहाँ तातार और कोकेशियाई लोग हैं! वे समझ गए कि जिसकी हत्या में उन्होंने शत्रु के साथ सहयोग किया था, वह उनकी बेचारी माँ थी, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी! वे उसके चरणों में रो रहे हैं।

ये अरब हैं! उन्होंने गलती से अपने वीर भाई को मार डाला, और अब वे अपनी घबराहट में रोना भी नहीं जानते। ये अफ़्रीकी हैं! उन्होंने अनजाने में अपने भाई को मार डाला, अब वे विलाप कर रहे हैं। यह मुस्लिम दुनिया है; इसने अपने ध्वजवाहक बेटे को मारने में दुश्मन की मदद की, अब यह अपने बाल नोच रहा है, कराह रहा है और विलाप कर रहा है। हज के लिए उत्सुकता से जल्दी जाने के बजाय, जो शुद्ध अच्छा है, लाखों मुसलमानों को दुश्मन के झंडे के नीचे लंबी यात्राएं करने के लिए मजबूर किया गया है, जो शुद्ध बुराई है। इस पर विचार करें और सावधान रहें!

189 द प्राइड ऑफ ह्यूमनकाइंड कहता है: "एक आस्तिक जिस भी परिस्थिति में हो, वह उसके लिए अच्छा है। यह बात आस्तिक के अलावा किसी और के लिए नहीं है। क्योंकि अगर उसके साथ कुछ खुशी होती है, तो वह ईश्वर का शुक्रिया अदा करता है, और यह उसके लिए अच्छा है। अगर कोई नुकसान उसे छूता है, तो वह धैर्य रखता है, और यह भी उसके लिए अच्छा है।" (मुस्लिम, "ज़ुहद" 64; अद-दारिमी, "रिक़ाक" 61.) (ट्र.)

शहादत या ईश्वर के लिए युद्ध करने के माध्यम से उन्हें संत की उपाधि तक पदोन्नत किया गया; इससे उनका पाप मिट गया।

प्रतिनिधित्व की दुनिया से उन्नत विधानसभा की सराहना की
इन शब्दों।

मैं अचानक जाग गया; बल्कि यह सोने से पहले सच्ची जागृति की एक मुलाकात थी। मेरे विचार में, जागना एक सपना है और सपना एक तरह की जागृति है।

वहाँ मैं इस युग का प्रतिनिधि था, और यहाँ मैं हूँ सईद नूरसी!

इस्लाम का मार्गदर्शन जंग खा चुका है, जबकि वर्तमान सभ्यता की प्रतिभा
इच्छाओं और भावनाओं से स्वर्णिम हो गई है।

चाहे किसी बेजोड़ हीरे में जंग लग जाए, वह हमेशा सोने के पानी से मढ़े कांच के टुकड़े से बेहतर होता है। उस हीरे पर कोई दिव्य शिलालेख खुदा हुआ है; भौतिकवादियों की आंखें उस बेजोड़ शिलालेख को न तो देख पाती हैं, न ही उसे पढ़ पाती हैं।

भौतिकवादी सब कुछ पदार्थ में खोजते हैं; उनकी बुद्धि उनकी आंखों में है, जो कुछ भी आध्यात्मिक है, उसके प्रति वे अंधे हैं, क्योंकि शारीरिक आंखें उसके प्रति अंधी हैं।

अज्ञानता एक तथ्य के लिए एक रूपक ले लेती है। यदि कोई रूपक
ज्ञान के हाथ से अज्ञानता के हाथ में चला जाता है, तो वह तथ्य में परिवर्तित हो जाता है, और अंधविश्वास का द्वार खोल देता है।

बचपन में मैंने चंद्रग्रहण देखा था। मैंने अपनी माँ से पूछा, तो उन्होंने कहा: “इसे साँप ने निगल लिया है।” मैंने उनसे पूछा: “फिर यह क्यों दिखाई दे रहा है?” उन्होंने कहा: “वहाँ साँप अर्ध-पारदर्शी हैं।”

इस तरह के रूपक को वास्तविकता के रूप में देखा जाता है: दैवीय आदेश पर, जब पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य की कक्षाओं के प्रतिच्छेद बिंदुओं, जिन्हें "सिर" और "पूंछ" के रूप में जाना जाता है, के बीच में आ जाती है, तो चंद्रमा ग्रहण हो जाता है।

दो काल्पनिक चाप जो दो साँपों के समान बनते हैं, उन्हें “तिन्निनयन (दो साँप)” कहा जाता है। यह नाम एक खगोलीय घटना को आलंकारिक रूप से समझाने के लिए गढ़ा गया था और इसे वास्तव में वही माना जाने लगा जिससे इसकी तुलना की गई थी।

अतिशयोक्ति निहित निंदा है आप जो भी वर्णन करें, उसे वैसे ही
वर्णित करें जैसा वह वास्तव में है। मेरे विचार में, अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा निहित निंदा है।

किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी वास्तविक क्षमता से अधिक देखना और दिखाना परमेश्वर ने जो उन पर अनुग्रह किया है, वह वस्तुतः उन पर कोई उपकार नहीं है।

प्रसिद्धि दमनकारी है, प्रसिद्धि

निरंकुश है; यह दूसरों की संपत्ति को प्रसिद्ध लोगों पर थोप देती है।

प्रसिद्ध नसरुद्दीन होजा[190] को दी गई विनोदप्रियता में से केवल उसकी ज़कात, यानी चालीसवाँ या अधिक से अधिक दसवाँ हिस्सा, उसका हो सकता है।

रुस्तम-ए-सिस्तानी की काल्पनिक प्रसिद्धि ने ईरान के गौरव के एक युग को लूट लिया।

उनकी पौराणिक छवि ने दूसरों की वीरता को लूट लिया, और उसे मिला दिया गया अंधविश्वास के साथ, इस प्रकार रुस्तम को मानवता की सीमाओं से परे ले जाया गया।

जो लोग धर्म और जीवन को अलग-अलग समझते हैं, वे ही विनाश के

कारण हैं । युवा तुर्कों की भूल यह थी कि वे यह नहीं जानते थे कि हमारा

धर्म हमारे जीवन का आधार है; वे राष्ट्र और इस्लाम को एक दूसरे से भिन्न समझते थे।

उन्होंने कल्पना की थी कि वर्तमान सभ्यता कायम रहेगी और हावी रहेगी, और जीवन की खुशी और समृद्धि को इसके भीतर निहित देखा।

अब समय ने हमें दिखा दिया है कि सभ्यता की व्यवस्था भ्रष्ट और हानिकारक है;[192] स्पष्ट अनुभव ने हमें यह सिखाया है: धर्म ही जीवन का प्राण है, उसका प्रकाश है और उसका

आधार है। इस राष्ट्र का पुनरुद्धार धर्म के पुनरुद्धार से ही संभव है।

मुसलमान इसे समझ चुके हैं।

अन्य संस्कृतियों के विपरीत, हमारा राष्ट्र उस सीमा तक प्रगति करने में सक्षम है जिस सीमा तक हम अपने धर्म का पालन करते हैं। यह उस सीमा तक पतन की ओर अग्रसर है जिस सीमा तक हमने इसकी उपेक्षा की है।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है, जिसे हम भूलने का नाटक कर रहे हैं।

मौत उतनी भयानक नहीं है जितनी कल्पना की जाती है यह

एक गलत, गुमराह करने वाली धारणा है जो मौत को भयानक बनाती है। मौत कपड़ों का बदलाव है, या जगहों का बदलाव है। यह कालकोठरी से बगीचे तक ले जाती है।

---

190 मोल्ला नसरुद्दीन या नसरुद्दीन होजा तेरहवीं शताब्दी के एक मुस्लिम व्यक्ति थे, जो अपनी बुद्धिमत्ता, महान बुद्धि, मजेदार कहानियों और उपाख्यानों के लिए प्रसिद्ध और याद किए जाते थे। (ट्र.)

191 यंग तुर्क आधुनिक पश्चिमी विचारधारा के पक्षपाती थे और ओटोमन प्रशासन के खिलाफ थे। उन्होंने विशेष रूप से सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय की सरकार के खिलाफ संघर्ष किया। (ट्र.)

192 यह दमनकारी, धर्म-विरोधी सभ्यता को संदर्भित करता है, जो अपने पतन की ओर बढ़ रही है।

जो कोई जीवन चाहता है, उसे शहादत की इच्छा करनी चाहिए। कुरान हमें बताता है कि शहीद जीवित हैं। शहीद, जो मृत्यु की पीड़ा का अनुभव नहीं करते, वे स्वयं को जीवित जानते और देखते हैं।193

लेकिन उन्हें अपना नया जीवन ज़्यादा पवित्र लगता है। उन्हें नहीं लगता कि वे मर गए हैं। उनके और मृतकों के बीच अंतर को ध्यान से देखें; यह इस प्रकार है: एक सपने में दो व्यक्ति एक सुंदर बगीचे में घूम रहे हैं जहाँ हर तरह का आनंद है। एक व्यक्ति जानता है कि यह केवल एक सपना है और

इससे उसे कोई आनंद नहीं मिलता।

इससे उसे कोई संतुष्टि नहीं मिलती; बल्कि यह उसे पछतावे से भर देता है। हालाँकि, दूसरा व्यक्ति जानता है कि वे जाग रहे हैं, और सच्ची खुशी का अनुभव करते हैं; यह उनके लिए वास्तविक है।

स्वप्न प्रतिनिधित्व की दुनिया की छाया है, जो मध्यवर्ती क्षेत्र की छाया है। इसी कारण से उनके सिद्धांत एक दूसरे के समान हैं।

राजनीति लोगों के मन में शैतानी है; इससे बचने के लिए ईश्वर की शरण लेनी चाहिए। आधुनिक राजनीति बहुसंख्यकों के आराम के लिए

अल्पसंख्यकों की बलि चढ़ाती है।
इससे भी बदतर बात यह है कि निरंकुश अल्पसंख्यक अपने लिए बहुसंख्यक लोगों की बलि चढ़ा देता है।

कुरान का न्याय कभी भी किसी निर्दोष व्यक्ति के जीवन को व्यर्थ नहीं मानता; यह कभी भी किसी व्यक्ति का खून बहाने की अनुमति नहीं देता, चाहे वह समस्त मानव जाति का ही क्यों न हो, किसी विशेष क्षेत्राधिकार में बहुसंख्यकों का तो बिल्कुल भी नहीं।

यह आयत, 'जो कोई किसी व्यक्ति को मारता है, सिवाय इसके कि वह हत्या के लिए (कानूनी सजा के रूप में) हो... वह ऐसा होगा मानो उसने सारी मानव जाति को मार डाला हो (5:32), हमारी आंखों के सामने दो शक्तिशाली सिद्धांत रखती है।

एक है शुद्ध न्याय। यह उत्कृष्ट सिद्धांत है कि जिस प्रकार व्यक्ति और समुदाय ईश्वरीय शक्ति के संबंध में समान हैं, उसी प्रकार ईश्वरीय न्याय भी उनमें कोई अंतर नहीं देखता।

---

193 क़ुरआन कहता है: और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए उनके बारे में यह न कहो कि "वे मर गए।" बल्कि वे जीवित हैं, परन्तु तुम नहीं जानते (2:154)। जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए उन्हें बिलकुल भी मरा हुआ न समझो। बल्कि वे जीवित हैं; वे अपने रब के पास रोज़ी रखते हैं, और उस पर प्रसन्न होते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया है, और उन लोगों के लिए खुशखबरी पर प्रसन्न होते हैं जो अभी तक उनके साथ नहीं आए, कि (शहादत की स्थिति में) उन्हें न कोई डर होगा, न वे शोकाकुल होंगे। वे अल्लाह की कृपा और अनुग्रह की खुशखबरी पर प्रसन्न होते हैं (जो उसने शहीदों के लिए तैयार किया है), और इस (वादे) पर कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देता। (3:169-171)

यह एक स्थायी, स्थापित ईश्वरीय और पैगम्बरीय सिद्धांत और व्यवहार है। एक व्यक्ति अपने अधिकारों का त्याग कर सकता है, लेकिन कानून उनका त्याग नहीं कर सकता, यहाँ तक कि पूरी मानव जाति के लिए भी नहीं।

किसी के अधिकारों को रद्द करना, या किसी का खून बहाना, या किसी की बेगुनाही को रद्द करना, समस्त मानवता के अधिकारों को रद्द करने, या समस्त मानवजाति की बेगुनाही को रद्द करने के बराबर है।

दूसरा सिद्धांत यह है: यदि कोई स्वार्थी व्यक्ति लालच या जुनून के कारण किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या कर सकता है, तो वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में बाधा बनने पर, यदि ऐसा करने में सक्षम हो तो, पूरे विश्व को नष्ट कर सकता है, तथा समस्त मानवता का विनाश कर सकता है।

कमजोरी दुश्मन को हिम्मत देती है;
परमेश्वर अपने बन्दों को आज़मा सकता है, परन्तु वे उसे नहीं आज़मा सकते

हे भयभीत, दुर्बल! तुम्हारा भय और दुर्बलता व्यर्थ है और तुम्हारे लिए हानिकारक है; वे बाहरी प्रभावों को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें तुम्हारी ओर खींचते हैं।

हे संदेह और भ्रम से पीड़ित लोगों! संभावित नुकसान के डर से निश्चित लाभ को त्यागना नहीं चाहिए। आपको बस कार्रवाई करने की ज़रूरत है; परिणाम भगवान के हाथ में है।

भगवान के काम में कोई दखल नहीं दे सकता। वह अपने सेवक को अपने पास ले जाता है।

परीक्षण के अखाड़े में आता है और कहता है: "यदि आप ऐसा करेंगे, तो मैं ऐसा करूंगा।"

लेकिन सेवक कभी भी भगवान को नहीं परख सकता। अगर वह कहता है, "क्या भगवान मुझे

सफलता के लिए मैं यह करूंगा," ऐसा कहते हुए वह अपनी सीमाओं का उल्लंघन कर रहा है।

शैतान ने यीशु से कहा: “चूँकि वही सब कुछ करता है और उसका भाग्य नहीं बदलता, तो तू अपने आप को पहाड़ से नीचे कूद जा और देख कि वह तेरे साथ क्या करता है।”

यीशु ने उत्तर दिया: “हे शापित! परमेश्वर के सेवक उसकी परीक्षा नहीं ले सकते!”[194]

इस्लामी राजनीति इस्लाम से आगे बढ़नी चाहिए; राजनीति दूसरों के लिए साधन नहीं होनी चाहिए; पक्षपात दिलों को विभाजित करता है, एकजुट नहीं करता

वर्तमान समय में इस्तांबुल की राजनीति स्पैनिश फ्लू जैसी है, जो लोगों को संक्रमित कर रही है; वास्तव में, यह कभी-कभी उन्माद का कारण बन जाती है।

---

194 इब्नु'ल-जावज़ी, तल्बिसु इब्लीस, पृ. 344.

राजनीतिक पागलपन एक बीजान्टिन (अर्थात धोखेबाज और कबीले-नियति) मानसिकता का उत्पाद है; राजनीति अपने आप नहीं घूमती; बल्कि यह एक बाहरी अभिविन्यास के माध्यम से ऐसा करती है।

यूरोप राजनीति को सम्मोहित करता है और उसके कानों में फुसफुसाता है। इस प्रकार, कोई कह सकता है यहाँ एक नाटक का मंचन किया जा रहा है।

चूंकि फुसफुसाहट बाहर से आती है, इसलिए यदि वह नकारात्मक है, तो व्यक्तिगत अक्षरों की तरह उसका भी कोई मूल्य नहीं होता; वह तभी लाभदायक होता है जब वह अन्य अक्षरों के साथ संयुक्त हो।

हमारी स्वतंत्र इच्छा की अब इसमें कोई भूमिका नहीं रह जाती, इसलिए भले ही हमारे इरादे अच्छे हों, हमारे अच्छे इरादे किसी काम के नहीं हैं।

यदि बाहरी फुसफुसाहट सकारात्मक है, तो उसका मूल्य, वाक्य में शब्दों की तरह, पहले अपने लिए, और फिर अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों के लिए।

यहां राजनीतिक मतभेद विपरीत दिशाओं में चलते हैं, और देश में उनका कोई प्रतिच्छेद बिंदु नहीं है; संपूर्ण पृथ्वी पर कहीं भी उनका एक साथ आना संभव नहीं है।

चूँकि ऐसा है, इसलिए जो लोग सकारात्मक, रचनात्मक रास्ता अपनाते हैं, उन्हें शिक्षित होना चाहिए और ज्ञान का पालन करना चाहिए। जैसे कमज़ोर लोग या अल्पसंख्यक कुरान की रक्षा नहीं कर सकते, शक्तिशाली हाथ या बहुमत को इसकी रक्षा करनी चाहिए।

उन्हें उससे प्रेम करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए, क्योंकि धर्म का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता नकारात्मक रूप से या नकारात्मक परिणाम के लिए। 31 मार्च की घटना[195] ने यह दिखाया।

इससे पता चला कि घर में धर्म का सबसे कम नकारात्मक उपयोग भी- भूमि अधिग्रहण का परिणाम बहुत भयानक रहा। मुसलमान इस स्थिति से हार गए।

जो चीजें आपको पसंद हैं, उनका अति प्रयोग न करें

एक बीमारी का इलाज दूसरे के लिए हानिकारक हो सकता है; जो एक के लिए मारक है, वह दूसरे के लिए जहर बन जाता है। अगर इलाज का अत्यधिक सेवन किया जाए, तो यह बीमारी का कारण बनता है और घातक हो जाता है।

हठ की आँख देवदूत को भी शैतान समझ लेती है

हठ के कारण व्यक्ति इस प्रकार व्यवहार करता है: यदि कोई शैतान किसी की सहायता करता है या उसका समर्थन करता है, तो वे उसे "देवदूत" के रूप में स्वीकार करते हैं और उस पर आशीर्वाद बरसाते हैं।

लेकिन अगर वे विरोधी पक्ष में किसी फ़रिश्ते को देखते हैं, तो वे उसे फ़रिश्ते के वेश में शैतान समझते हैं, और दुश्मनी के कारण उस पर लानत भेजते हैं।

---

195 31 मार्च की घटना एक विद्रोह था जो 13 अप्रैल, 1909 को इस्तांबुल में शुरू हुआ था। इसकी वास्तविक प्रकृति और कारण अभी तक सामने नहीं आए हैं। इसके परिणामस्वरूप सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय को गद्दी से उतार दिया गया और यूनिटी एंड प्रोग्रेस पार्टी सत्ता में आई। (ट्र.)

किसी समुदाय के जीवन का उत्प्रेरक, सुदृढ़ और सच्ची एकजुटता है। जिस समाज में एकजुटता होती है, वह निष्क्रिय लोगों को उत्तेजित करने के लिए बनाया गया एक साधन है; जबकि जिस समुदाय में द्वेषपूर्ण ईर्ष्या होती है, वह सक्रिय लोगों को शांत करने के लिए बनाया गया एक साधन है।

अगर किसी समुदाय में ठोस या ईमानदार एकता नहीं है, तो वह कमजोर हो जाएगा क्योंकि उसकी संख्या सिर्फ़ जनसंख्या वृद्धि के ज़रिए बढ़ती है। यह भिन्नों के गुणन की तरह है। संख्या में वृद्धि उस अनुपात में कम होती है जिस अनुपात में उन्हें जितनी बार गुणा किया जाता है।

यदि अस्वीकृति तुम्हारा अधिकार है, तो खंडन तुम्हारा अधिकार नहीं है, ऐ सत्य के

खोजी! यदि कोई चीज़ तुमसे सम्बन्धित है (विशेषकर विश्वास की सच्चाई के सम्बन्ध में या हदीस (पैगम्बरी परंपरा) के रूप में),

आपका दायित्व है कि यदि इसकी सत्यता का कोई प्रमाण हो तो इसे स्वीकार कर लें। यदि ऐसा नहीं है, तो आप इसकी स्वीकृति से बच सकते हैं, जो कि संदेहास्पद है।

किसी प्रमाण का अस्तित्व न होना, उसे स्वीकार न करने का तर्क है, जबकि उसके अस्तित्व न होने का आपका दावा, खंडन और अस्वीकार का अर्थ है, जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है।

जो बात प्रमाण से स्थापित नहीं की जा सकती, उसका दावा नहीं किया जा सकता बिना प्रमाण के अस्तित्वहीन होना।

किसी चीज़ के अस्तित्व को न स्वीकारना आमतौर पर उसके गैर-अस्तित्व को स्वीकार करने के साथ भ्रमित होता है, हालांकि एक संदेह है और दूसरा इनकार।

आपको इनकार करने का कोई अधिकार नहीं है.

कभी-कभी ऐसा होता है कि एक ही घटना से संबंधित कई वाक्यांश होते हैं और उनका आशय एक ही अर्थ व्यक्त करना होता है, या अर्थ कुछ ऐसा होता है जिसके अनेक संकेत या तर्क होते हैं।

यदि इनमें से एक या दस पर भी संदेह किया जाए या उनका खंडन किया जाए तो भी संविधान का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। कथन और उसके इच्छित अर्थ का खंडन नहीं किया जा सकता।

ऐ मुक्ति और सुरक्षा के चाहने वाले! एक हदीस से पता चलता है कि

हमें बहुसंख्यक मुसलमानों का अनुसरण करना चाहिए और उनके साथ रहना चाहिए।196 उमय्यद , शुरू में, धर्म का पालन करने के लिए सावधान नहीं थे, लेकिन जब वे मुस्लिम समुदाय के बहुमत में

शामिल हो गए, तो अंततः उन्हें अहलू-सुन्ना वल-जमा में शामिल किया गया।

---

196 मुस्लिम, "'इमारा" 59; एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 7; अबू दाऊद, "सलाह" 46.

शिया लोग शुरू में धर्म के पालन में सावधान और दृढ़ थे, लेकिन उनमें से एक हिस्सा जो अल्पसंख्यक था, ने अंततः राफिदियों का संप्रदाय बना लिया।

यह एक महत्वपूर्ण, उल्लेखनीय वास्तविकता है।

जो सही है उसे जानने के बाद, किसी बेहतर चीज़ के लिए मतभेद पैदा न करें

ऐ सत्य के खोजी! यदि भलाई और सत्य के विषय में सर्वसम्मति हो और श्रेष्ठ और सत्य की खोज मतभेद और मतभेद का कारण बने, तो जो सत्य है वह सत्य से अधिक सत्य है और जो अच्छा है वह श्रेष्ठ से अधिक श्रेष्ठ है।

इस्लाम शांति और सुलह है; वह अपने अंदर कोई विवाद या शत्रुता नहीं चाहता

ऐ इस्लामी दुनिया! तुम्हारा जीवन एकता में निहित है, और यदि तुम एकता चाहते हो, तो तुम्हारा मार्गदर्शक सिद्धांत निम्नलिखित होना चाहिए:

आपको यह सिद्धांत अपनाना चाहिए कि, “यह सत्य है” के बजाय कि “केवल यही सत्य है”; तथा “यह सर्वोत्तम है” के बजाय कि “यही एकमात्र अच्छा है।”

हर मुसलमान को अपने स्कूल और अपने तरीके के बारे में कहना चाहिए: "यह सच है; मैं दूसरों के कामों में दखल नहीं देता। भले ही दूसरे भी अच्छे हों, लेकिन मेरा तरीका सबसे अच्छा है।"

उन्हें यह नहीं कहना चाहिए: "केवल यही सत्य है, बाकी सब झूठे हैं। केवल यही सत्य है, बाकी सब झूठे हैं।"
मेरा अच्छा है, बाकी सब गलत और अप्रिय हैं।”

आत्म-प्रेम से ही अलगाव की मानसिकता पैदा होती है। अंततः यह एक बीमारी बन जाती है और विवाद को जन्म देती है।

यदि अनेक बीमारियों और उपचारों का अस्तित्व एक उचित वास्तविकता है, तो सही भी कई गुना बढ़ जाएगा। आवश्यकताओं और खाद्य पदार्थों की विविधता सही है, और सही विविधतापूर्ण हो जाता है।

क्षमताओं और शिक्षा का गुणन सही है, और यह सही है
भी बढ़ेंगे। एक ही पदार्थ जहर और मारक दोनों है।

सत्य धर्म के गौण विषयों में स्थिर नहीं है; वह सापेक्ष है तथा स्वभाव और परिस्थिति के भेद के अनुसार मिश्रित होता है।

ऐसे मामलों के संचालन के लिए जिम्मेदार लोगों के स्वभाव का उनमें हिस्सा होता है, और वे तदनुसार निष्कर्ष निकाले जाते हैं और बनाये जाते हैं।

विधि-विद्यालयों के संस्थापकों ने अस्पष्ट शब्दों में निर्णय दिए तथा अपने विद्यालयों की सीमाओं का निर्धारण बाद में आने वाले विभिन्न स्वभावों पर छोड़ दिया।

किसी स्कूल के प्रति कट्टर लगाव के कारण उस स्कूल के निर्णय
सामान्यीकृत, और इससे उत्पन्न पक्षपात विवाद को जन्म देता है।

इस्लाम से पहले मानवता के वर्गों के बीच गहरी दरारें, तथा लोगों और स्थानों के बीच बड़ी दूरी के कारण किसी भी समय अनेक पैगम्बरों, विभिन्न शरीयतों और असंख्य धर्मों का अस्तित्व आवश्यक था।

विभिन्न संप्रदायों के लोग।

इस्लाम ने मानव जाति में क्रांति ला दी और लोग एक दूसरे के करीब आ गए। विभिन्न शरीयतों को एक ही शरीयत में समाहित कर दिया गया और एक ही पैगम्बर था।

लेकिन मानव जाति के स्तर समान नहीं थे, इसलिए विधि के स्कूल कई गुना बढ़ गए। अगर प्रशिक्षण और शिक्षा की एक ही प्रणाली सभी के लिए पर्याप्त और उचित होती, तो स्कूल एकजुट हो सकते थे।

विपरीतों के निर्माण और संयोजन में महान बुद्धिमत्ता है: शक्ति के हाथ में सूर्य और एक छोटा कण समान हैं हे सजग हृदय वाले भाई! शक्ति विपरीतों के संयोजन में खुद को प्रकट करती है। सुख में दर्द है, अच्छाई के भीतर बुराई है,
सुंदरता के भीतर कुरूपता है, लाभ के भीतर हानि है, उपहारों के भीतर परेशानी है, प्रकाश के भीतर आग है... क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों है?

ऐसा इसलिए किया गया है, ताकि सापेक्ष सत्य स्थापित हो सकें और एक ही चीज़ के भीतर कई चीज़ें हो सकें, और अस्तित्व की कई विभिन्न घटनाएँ स्पष्ट हो सकें।

तेज गति से घूमने से बिंदु रेखा जैसा दिखाई देता है।
प्रकाश के एक बिंदु को एक चमकदार वृत्त जैसा बना देता है।

इस संसार में बीज अंकुरित हो सकें, इसके लिए सापेक्ष सत्य का होना आवश्यक है।
ये ब्रह्मांड की मिट्टी, इसके क्रम के बंधन, इसके शिलालेखों के बीच संबंध बनाते हैं। ये सापेक्ष वास्तविकताएँ परलोक में सत्य बन जाएँगी।

गर्मी की मात्रा ठंड के अस्तित्व के कारण होती है। सुंदरता की मात्रा कुरूपता के हस्तक्षेप से आती है। प्रत्यक्ष कारण मानो अंतिम कारण या अस्तित्व का कारण बन जाता है।

प्रकाश अंधकार का ऋणी है, सुख दुःख का ऋणी है; बीमारी के बिना स्वास्थ्य की चेतना नहीं होती।

अगर जन्नत न होती तो शायद नर्क में यातना न होती। नर्क अत्यधिक ठंड के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता। अगर अत्यधिक ठंड (उसकी गर्मी के अलावा) न होती तो नर्क जलता नहीं।

सदा जीवित रहने वाले सृष्टिकर्ता ने विपरीतों की रचना में अपनी बुद्धि का प्रदर्शन किया है और उनकी महिमा स्पष्ट हो गई है।

उस सनातन सर्वशक्तिमान ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है
विपरीतताओं का संयोजन, और उसकी भव्यता प्रकट हो गई है।

तथापि, चूंकि दैवी शक्ति दैवी सार के लिए आवश्यक है तथा उसमें अंतर्निहित है, इसलिए इसमें कोई विपरीत नहीं हो सकता, और इसलिए नपुंसकता इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती; इसमें कोई डिग्री नहीं हो सकती; इसके लिए कुछ भी कठिन नहीं हो सकता।

सूर्य उसकी शक्ति के प्रकाश के लिए एक जगह बन गया है। समुद्र की सतह उस जगह के प्रकाश के लिए एक दर्पण है और ओस की बूंदों की आँखें सभी छोटे दर्पण हैं।

समुद्र की चौड़ी सतह से परावर्तित सूर्य की रोशनी, उसके माथे की झुर्रियों पर पड़ी बूंदों से भी परावर्तित होती है। ओस की बूंद की छोटी सी आँख भी उसके साथ चमकती है, किसी तारे की तरह; वे एक ही पहचान रखते हैं।

सूर्य की दृष्टि से ओस की बूंद और समुद्र एक ही हैं; उसकी शक्ति उन्हें समान बनाती है। ओस की बूंद की आंख की पुतली एक छोटा सा सूर्य है।

भव्य सूर्य भी एक छोटी ओस की बूंद है; उसकी आंख की पुतली एक
शक्ति के सूर्य से प्राप्त प्रकाश और यह उस शक्ति का चंद्रमा है।

आकाश एक महासागर है; दयालु की एक सांस पर, उसके माथे की झुर्रियों में बूंदें लहराती हैं, जो तारे और सूर्य हैं।

शक्ति प्रकट हुई और इन बूंदों पर चमक बिखेर दी।
हर सूरज एक बूंद है, हर तारा एक ओस की बूंद है; हर चमक

एक प्रतिरूप है- वह बूंद जैसा सूरज इस अभिव्यक्ति का एक छोटा-सा प्रतिबिंब है। वह अपने पॉलिश किए हुए शीशे को उस अभिव्यक्ति की चमक के लिए एक बल्ब बनाता है, जो मोती की तरह चमकता है।

उस ओस की बूंद जैसे तारे की नाजुक आंख में चमक के लिए जगह है और चमक एक दीपक बन जाती है, जिसका रेशा आंख के रूप में होता है - और उसका दीपक प्रकाशित हो जाता है।

बहुलता अपने दोनों ओर एकता प्रकट करती है। यह ईश्वरीय एकता की

अभिव्यक्ति है कि बहुलता का आरंभ और अंत एक ही बिंदु पर एकजुट हो जाते हैं, जो ईश्वरीय एकता को प्रदर्शित करता है।

यह ईश्वरीय शक्ति का प्रकटीकरण है कि ब्रह्मांड में परिवर्तनशील शक्ति एकता को अनेकता में बदल देती है;

दैवी शक्ति कणों के बीच वितरित होती है और प्रकृति में परिवर्तन होता है, और इसी से गुरुत्वाकर्षण की डिग्री या किरणें उत्पन्न होती हैं।

ये किरणें संयुक्त होती हैं - निर्माता उन्हें एक सामान्य गुरुत्वाकर्षण में बदल देता है, जिसका अर्थ है कि बहुलता एकता बन जाती है।

यदि आपमें कोई गुण या योग्यता है, तो उसे धूल के नीचे ही रहने दीजिए, ताकि वह फल-फूल सके।

हे गुणों में से एक! अपने आपको प्रकट करके अत्याचारी मत बनो; यदि तुम गुप्त रहोगे, तो अपने भाइयों के लिए उपकार और आशीर्वाद का स्रोत बनोगे; और तुम्हारे गुणों से तुम्हारे भाई भी लाभान्वित होंगे या उनमें से कुछ होंगे; यह भी संभव है कि तुम्हारा प्रत्येक

भाई तुम्हारे समान हो जाए - इससे उनमें से प्रत्येक के प्रति सम्मान उत्पन्न होगा।

लेकिन अगर आप छुपकर बाहर निकलेंगे और खुद को प्रदर्शित करेंगे, तो भले ही आप इसके अंतर्गत सम्मानित और उदार हों, लेकिन आप खुले में अत्याचारी बन जाएंगे। वहां आप एक सूरज थे, यहां आप दूसरों पर छा जाएंगे।

तुम अपने भाइयों का सम्मान खो दोगे। इसका मतलब है, आत्म-प्रकटीकरण-
व्यक्तिगत रूप से अलग होना और अलग-अलग पहचाना जाना निरंकुश दृष्टिकोण हैं।

यदि यह वास्तविक गुणों की अभिव्यक्ति के बारे में सच है, तो झूठी चालाकी और पाखंड के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए क्या जगह बची है? यह एक गहन रहस्य है, और यह इसके अनुसार है कि दिव्य बुद्धि और पूर्ण व्यवस्था ने अपनी प्रजाति के भीतर एक असाधारण व्यक्ति पर पर्दा डाल दिया है, इस प्रकार पूरी प्रजाति का मूल्य बढ़ाया और इसे सराहनीय बनाया

है।

आपके लिए उदाहरण: मानव जाति के बीच संत और जीवनकाल के भीतर नियुक्त समय अज्ञात, अनिश्चित है। शुक्रवार के भीतर एक ऐसा समय छिपा हुआ है जब प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं।

रमज़ान के महीने में शक्ति और भाग्य की रात छिपी हुई है।

सर्व सुन्दर नामों के बीच महानतम नाम का अमृत छिपा हुआ है।

यह उनका अपरिभाषित होना ही है जो इन उदाहरणों में वैभव उत्पन्न करता है - सम्पूर्ण मानवता का वैभव, जो इसमें सम्मिलित संतों के कारण है, शुक्रवार का पूरा दिन, क्योंकि वह समय है जब प्रार्थनाएं स्वीकार की जाती हैं, तथा रमजान का पूरा महीना, क्योंकि वह शक्ति और भाग्य की रात है।

यह सुन्दर रहस्य भी अपरिभाषित होने के माध्यम से प्रकट होता है और छिपाव के माध्यम से स्थापित होता है। उदाहरण के लिए:

इस तथ्य में एक संतुलन है कि नियत समय अनिर्धारित है: आप जिस भी स्थिति में हों, यह हमेशा भय और आशा के दो पलड़ों के बीच संतुलन बनाए रखता है, अगले संसार और इस संसार के लिए काम करता है। और कल्पित स्थायी अस्तित्व जीवन को आनंद प्रदान करता है।

अज्ञात अंत वाले बीस साल के जीवन की अपेक्षा, ज्ञात अंत वाले एक हजार साल के जीवन की अपेक्षा बेहतर है। क्योंकि आधा जीवन बीत जाने के बाद, हर बीतते घंटे के साथ आप फाँसी की ओर एक नया कदम बढ़ा रहे हैं।

आपका दुख आनुपातिक रूप से बढ़ता है; कोई कल्पित स्थायित्व नहीं होगा जो आपको सांत्वना दे सके और आपको कोई शांति नहीं मिलेगी।

ईश्वर की दया या क्रोध से अधिक दया या क्रोध महसूस करना गलत है

किसी को भी ईश्वर की दया से अधिक दया महसूस या प्रदर्शित नहीं करनी चाहिए, न ही किसी को ईश्वर से अधिक क्रोध महसूस करना चाहिए।

अतः मामलों को उस अत्यन्त न्यायकारी, अत्यन्त दयावान पर छोड़ दो, क्योंकि अत्यधिक दया पीड़ा का कारण बनती है और अत्यधिक क्रोध अनुचित और निन्दनीय है।

सांसारिक प्रतिफल आख़िरत में सज़ा साबित करता है

हर किसी ने अपने जीवन में कम से कम एक बार ऐसा अनुभव किया है और निष्कर्ष निकाला है: “उस व्यक्ति ने वह बुरा काम किया है और उसे वह भुगतना पड़ा जिसके वह हकदार था।” यह जीवन का एक सिद्धांत है।

यह सार्थक वाक्य अक्सर लोगों द्वारा व्यक्त किया जाता है।

विभिन्न प्रकार की बुराइयों में एक महत्वपूर्ण बात बुराई की प्रकृति ही है।

इसका मतलब यह है कि बुराई अपने स्वभाव के कारण सज़ा के योग्य है और उसे सज़ा की ज़रूरत है। छोटी बुराइयों के लिए यहाँ सज़ा दी जाती है, जबकि बड़ी बुराइयों के लिए परलोक का ज़िक्र किया जाता है।

बुराइयों के लिए सांसारिक प्रतिफल आख़िरत में दंड का प्रमाण है।

मनुष्य की सहजता उसकी इच्छा और शक्ति के व्युत्क्रमानुपाती होती है; प्रावधान एक विस्तृत,
धीरे-धीरे एकत्रित होने वाला शरीर है हे बुरे कर्मों में लिप्त मानवजाति! तुम्हारी स्वतंत्र इच्छा और शक्ति ही तुम्हारे अभाव और परेशानियों का स्रोत और कारण बन गई है। प्रावधान कमजोरी और नपुंसकता के अनुपात में आता है।

एक बार मैंने एक जानवर देखा, जो बहुत ही दयनीय था, उसकी हड्डियाँ और खाल ही बची थी। एक योग्य माँ ने कई अन्य जानवरों के साथ उसे भी जन्म दिया था।

जबकि वह स्वयं बड़ी मुश्किल से खाने के लिए एक निवाला खोज पाता था, उसकी माँ के स्तनों से सुखद, पौष्टिक आहार निकलता था; दैवी शक्ति वह आहार उपलब्ध कराती थी।

वह सजीव प्राणी अपनी माता के गर्भ में निश्चल रहते हुए अत्यंत दुर्बल और शक्तिहीन था, किन्तु वहाँ भी उसे उत्तम, उत्तम पोषण प्राप्त हुआ।

यह दुनिया में तब आया जब यह अभी भी कमजोर और नपुंसक था, और इसका पोषण अच्छा और अपेक्षाकृत उत्तम था।

वह थोड़ा बड़ा हुआ और उसे महसूस होने लगा कि उसमें एक निश्चित मात्रा में इच्छा-शक्ति आ गई है। इसने परेशानियों और कठिनाइयों का भी सामना करना शुरू कर दिया, इसलिए इसकी सहायता के लिए माता-पिता की करुणा अभी भी प्रदान की गई।

लेकिन जब उसे लगा कि उसमें इच्छाशक्ति के साथ-साथ कुछ शक्ति भी है, तो उसे स्वतंत्र कर दिया गया और उसे अपने हाल पर छोड़ दिया गया। अपनी इच्छा से उसने जो कुछ भी करने की कोशिश की, उससे सिर्फ़ उलझन ही पैदा हुई।

जब वह इच्छाशक्ति से अनभिज्ञ था, तो उसके शरीर की क्रियाविधि, जो पूर्ण नियमितता के साथ काम करने की आदी थी, उसके घर या उसके शहर में कोई गड़बड़ी पैदा नहीं करती थी।

लेकिन जब उसकी इच्छा शक्ति ने हस्तक्षेप करना शुरू किया, तो उसके जीवन में व्यवस्था नष्ट हो गई और उसकी इच्छा शक्ति ने उसे दोषपूर्ण बना दिया। इसलिए, हमें हमेशा कहना चाहिए: "हमारे प्रभु! हमारे जीवन के दौरान हमें अपने हाल पर न छोड़ें।

वयस्कता!”

और शक्ति को हमेशा कहना चाहिए: "हे मेरे प्रभु! मैंने अपने जीवन में हर चीज़ के आरंभ और अंत में आप पर भरोसा रखा है!"

दैवी शक्ति की दृष्टि में चेतन प्राणी का प्रावधान है
इसका मूल्य उसके जीवन के समान ही है।

जिस प्रकार शक्ति एक "बहाना" ढूंढती है और उसे अपना जीवन दे देती है, उसी प्रकार वह
वह अपना प्रावधान बनाता है और उसे उंडेल देता है।

ऐसा लगता है मानो शक्ति निरंतर, तीव्र प्रयास के साथ कार्य कर रही है, तथा मृत्यु के जगत को जीवन के जगत में तथा सघन जगत को पारदर्शी में परिवर्तित और रूपान्तरित कर रही है।

जिस प्रकार यह जीवन की चमक को सबसे निचले स्तर के अधोलोक में भी बिखेरता है,
यह हर चीज़ में भविष्यवाणी बोता और संग्रहीत करता है।

मृत परमाणु जीवन के प्रकाश से मिलने के लिए आगे बढ़ते हैं। कुछ वास्तविक शरीर बनाते हैं, जबकि अन्य आलंकारिक शरीर बनाते हैं।

प्रावधान आता है और उनके साथ एकजुट हो जाता है। प्रावधान व्यापक रूप से फैला हुआ है
और यह एक व्यापक शरीर है। संक्षेप में, जीवन के दो शरीर हैं,

एक का निर्माण और संयोजन होता है, दूसरा बिखरा हुआ होता है। प्रावधान और जीवन
वे जुड़वाँ हैं, और सत्ता की दृष्टि में उनका मूल्य समान है।

यह वह शक्ति है जो अस्तित्वहीनता से सब कुछ उत्पन्न करती है; नियति उस प्रथम शरीर की व्यवस्था करती है जिसमें वह आवृत होती है।

ईश्वरीय कृपा से भोजन, बिखरे हुए शरीर और
इस प्राणी को भोजन कराने के लिए विद्यमान प्राणी के पास भेजता है।

इन दोनों शरीरों में एक अंतर है: जीवन से ही पहला शरीर
विद्यमान सत्ता की एक संरचना है, वह अपनी समग्रता में दिखाई देती है।

जबकि प्रावधान बिखरा हुआ है और धीरे-धीरे आता है, इसलिए मानव जाति इसके बारे में चिंता करती है। जब तक मानव जाति की गलत इच्छा-शक्ति हस्तक्षेप नहीं करती, तब तक नियम निश्चित रूप से सत्य है:

"भूख से कोई मौत नहीं होती; भोजन की कमी से मृत्यु नहीं होती।"
शरीर में अनेक भण्डार जमा हैं, जिनमें से प्रत्येक भरा हुआ है।

बहुत सी चीजें चर्बी के रूप में जमा होती हैं। लेकिन इस चर्बी के खत्म होने से पहले ही मौत आ जाती है। इसलिए मौत का कारण भोजन की कमी नहीं है।

यह भोजन सौ दिन के लिए पर्याप्त है, लेकिन दस दिन में मृत्यु हो सकती है।

शायद यह रोग नियमित पोषण में परिवर्तन या परित्याग से उत्पन्न हुआ हो।
जब तक भोजन उपलब्ध था, तब तक आग आ गई और मृत्यु हो गई।

मांसाहारी पशुओं का वैध प्रावधान

प्रत्येक वस्तु में एक व्यवस्था और बुद्धि विद्यमान है; इसमें संयोग के लिए कोई स्थान नहीं है, यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम दिव्य बुद्धि द्वारा स्थापित इस सार्वभौमिक व्यवस्था को समझने में असमर्थ हैं।

ईश्वरीय बुद्धि ने असंख्य शवों को भोजन के रूप में नियुक्त किया है
पशु जगत में मांस खाने वालों के लिए जंगली जानवर।

इसने इन जानवरों को इन शवों को खाने के लिए आमंत्रित किया है, ताकि वे
दोनों ही पृथ्वी की सतह को स्वच्छ करते हैं और अपना वैध प्रावधान पाते हैं।

इसलिए उनके लिए अपने जीवन के तरीके में किसी जीवित प्राणी को मारना गैरकानूनी है। हाथियों से लेकर कीड़े-मकौड़ों तक, हर दिन लाखों जानवर मरते हैं,

लेकिन उनमें से किसी की भी लाश नहीं मिलती।
खुला। यह ध्यान देने योग्य है; ज्ञान और व्यवस्था पर विचार करें

कैसे मूल शक्ति और गहन बुद्धि ने पशुओं और मनुष्यों को भोजन की कमी से ग्रस्त बना दिया है।
उन्होंने उन पर आवश्यकता और भूख की लगाम लगा दी है।

उन्होंने इस लगाम के माध्यम से जीवित प्राणियों को क्रम में रखा है, उन्हें आवश्यकता के क्षेत्र में यात्रा करने की अनुमति दी है, उन्हें क्रम से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी है।

वे दोनों ही विश्व को घोर असमंजस में जाने से बचाते हैं और
अराजकता को दूर करें और मानव जीवन में प्रगति के लिए आवश्यकता को आधार बनाएं।

अपव्यय से अपव्यय होता है, अपव्यय से दरिद्रता आती है मेरे अपव्ययी भाई! दो निवाले में पोषण

की मात्रा और गुणवत्ता समान होती है, लेकिन एक की कीमत एक कुरुश (सेंट) होती है, और दूसरे की दस; वे मुंह में जाने से पहले और गले से नीचे जाने के बाद भी बराबर होते हैं। मुंह में केवल

कुछ सेकंड के लिए वे स्वाद की "नशे में" इंद्रिय को आनंद देते हैं।

अंतर केवल उनके स्वाद में है, जो धोखे का कारण है;
स्वाद की इन्द्रिय वस्तुतः पेट की द्वारपाल और निरीक्षक है।

लेकिन धोखे के कारण इसका दुरुपयोग होता है। केवल द्वारपाल को टिप देकर
और उसे तृप्त करना - स्वाद की इन्द्रिय को क्षणिक आनन्द प्रदान करना,

अपने कर्तव्य पालन में उसे भ्रमित किया जा सकता है। एक के स्थान पर ग्यारह कुरुश खर्च करना शैतानी आदत है।

यह सबसे बुरे तरीकों में से एक है, सबसे खराब प्रकार की बर्बादी में से एक है: इसकी तलाश मत करो।

स्वाद की इंद्रिय एक मुखबिर है; इसे सुखों से मत बहकाओ। ईश्वरीय प्रभुता की बुद्धि और अनुग्रह ने

तुम्हारे भीतर मुंह और नाक के रूप में दो केंद्र बनाए हैं, जो एक सीमा चौकी का काम करते हैं। उन्होंने संवाददाता भी नियुक्त किए हैं।

इस सूक्ष्म जगत-मानव में, ईश्वर ने रक्त वाहिकाओं को टेलीफोन और तंत्रिकाओं को टेलीग्राफ बनाया है, टेलीफोन को गंध की इंद्रिय (नाक) के सहायक के रूप में नियुक्त किया है और टेलीग्राफ को स्वाद की इंद्रिय (मुंह या जीभ) के सहायक के रूप में नियुक्त किया है।

अपनी दया से, उस सच्चे प्रदाता ने सभी में निर्देश अंतर्निहित कर दिए हैं
भोजन के प्रकार: स्वाद, रंग और गंध।

इस प्रकार, ये तीन विशेषताएँ घोषणाएँ, निमंत्रण, अनुमतियाँ और प्रदाता की ओर से संदेशवाहक हैं: जो लोग जरूरतमंद हैं और भोजन चाहते हैं वे इनके माध्यम से आकर्षित होते हैं।

उसने जरूरतमंद जानवरों को स्वाद, दृष्टि और गंध की इंद्रियां दी हैं
उन्होंने भोजन को भी विभिन्न प्रकार की सजावटों से सजाया है।

वह इच्छुक आत्माओं को शान्त करता है, तथा उदासीन और निष्क्रिय लोगों को उत्तेजित करके उन्हें आकर्षित करता है।

जब भोजन मुंह में जाता है, तो स्वाद की इंद्रिय तुरंत शरीर के हर हिस्से को संदेश भेजती है। गंध की इंद्रिय हमें फोन करके भोजन के प्रकार के बारे में बताती है।

जिन इन्द्रियों और अंगों को भोजन की आवश्यकता होती है, वे अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्य करते हैं और आवश्यक तैयारी करते हैं - या तो वे स्वीकार करते हैं या मना कर देते हैं।

चूँकि स्वाद की इन्द्रिय एक टेलीग्राफर है, जिसका कार्य संदेश भेजना है
ईश्वरीय कृपा से तार भेजो, उसे सुखों से मत लुभाओ।

क्योंकि तब वह भूल जाएगा कि सच्ची भूख क्या है; झूठी भूख उभरती है और
यह उसे परेशान करता है, तथा दंड के रूप में बीमारियाँ और व्यसन लाता है।

सच्चा आनंद सच्ची भूख से उत्पन्न होता है, सच्ची भूख सच्ची आवश्यकता से उत्पन्न होती है; यह आवश्यक आनंद राजा और भिखारी दोनों के लिए पर्याप्त है, और दोनों को समान बनाता है।

इसके अलावा, जबकि एक दिरहम (सेंट) उस आनंद के लिए पर्याप्त है और आवश्यकता और भूख दोनों के दर्द को शांत करता है, एक दीनार (डॉलर) खर्च करना फिजूलखर्ची है और इसका मूल्य एक दिरहम के बराबर हो जाता है।

इरादे की तरह, दृष्टिकोण आदतन कार्यों को पूजा में बदल सकता है

इस बात पर ध्यान दें! जिस प्रकार ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन जीने के इरादे से, स्वीकार्य आदतन कार्य पूजा बन सकते हैं, उसी प्रकार सही दृष्टिकोण के अनुसार, भौतिक विज्ञान ईश्वर का ज्ञान बन सकते हैं।

यदि आप अध्ययन और चिंतन करते हैं, अर्थात, यदि आप चीजों को एक दूसरे के प्रतीक के रूप में देखते हैं - उनके निर्माता - और उनमें निहित कला के संबंध में, तो आप कहेंगे: "निर्माता ने इसे कितनी खूबसूरती से बनाया है, उसने इसे कितनी अच्छी तरह से किया है!" बजाय इसके कि "यह कितना सुंदर है।"

यदि आप ब्रह्माण्ड को इस दृष्टिकोण से देखें, तो इसके अस्तित्व के उद्देश्यों और इसकी पूर्णता की झलकें ब्रह्मांड की रचना से चमकती हुई दिखाई देंगी।
शाश्वत डिजाइनर, और आदेश और ज्ञान आपके संदेह को उजागर करेगा;

और ब्रह्मांड के विज्ञान ईश्वर का ज्ञान बन जाएंगे। लेकिन अगर आप चीजों को "प्रकृति" के दृष्टिकोण से और "वे अपने आप कैसे अस्तित्व में आए?" के दृष्टिकोण से देखते हैं - अगर आप ब्रह्मांड को इस तरह से देखते हैं, तो आपका सारा वैज्ञानिक ज्ञान केवल अज्ञान होगा। इस तरह से मालिकहीन सत्य बेकार हाथों में बेकार हो जाते हैं। इसके कई प्रमाण हैं।

कभी-कभी किसी चीज़ का नाम लेना ही उसके बारे में पूरी जानकारी लेने का एक कारण बन जाता है

यहाँ प्रकाश है, लेकिन यह अंधकार को अंधकारमय बनाता है या प्रकाशित अंधकार है - वर्तमान सोच के अनुसार, यह साधारण अज्ञान को मिश्रित अज्ञान में बदल देता है।

वे किसी अज्ञात चीज़ को एक चमकदार नाम दे देते हैं और सोचते हैं कि ऐसा करने से उन्हें उसके बारे में पूरी जानकारी मिल गई है।

अन्य अज्ञात चीजों से इसकी तुलना करते हुए, वे मान लेते हैं कि उन्होंने उन्हें समझा दिया है, जबकि किसी चीज को परिभाषित करने और समझाने का अर्थ है उसकी पूरी तस्वीर जानना।

नाम मात्र देना—नाम देने वाला अज्ञानी है, और यद्यपि यह आँखों को चमकीला और आकर्षक लगता है, लेकिन इसका पहलू जो नाम वाली चीज़ से जुड़ा है वह अंधकारमय है: इसे परिभाषित करना या समझाना न तो संभव है; केवल मन ही भ्रमित है। इसके कई उदाहरण हैं, जैसे:

सामान्य गुरुत्वाकर्षण, चुंबकीय बल, विद्युत शक्ति, टेलीपैथी, कंपन और चुंबकत्व...

इस समय, शरीयत समृद्धि की अनुमति नहीं देती है जब सुख हमें बुलाते हैं, तो हमें

कहना चाहिए: "सनकी येदिम (यह ऐसा है जैसे मैंने इसे खा लिया है।)" जिसने इसे नियम बनाया, उसने मस्जिद का उपभोग नहीं किया!

पहले, अधिकांश मुसलमान भूखे नहीं रहते थे, इसलिए एक निश्चित सीमा तक आराम और सुविधा की अनुमति थी।

हालाँकि, अब उनमें से अधिकांश लोग भूखे रह गए हैं, और शरिया अब उनके लिए लागू नहीं है।
एक सुखद जीवन की अनुमति देता है.

मुसलमानों के बड़े हिस्से की, यानी कि मासूमों की, आजीविका बहुत सरल है। इसलिए उनके सादगी भरे जीवन का अनुसरण करना, उन अल्पसंख्यकों या कुछ व्यभिचारी लोगों की तरह विलासितापूर्ण जीवन जीने से हजार गुना बेहतर है।

हे विपत्ति से पीड़ित! तेरा सुख तेरे दुःख में है और तेरा दुःख तेरे सुख में है।

पीड़ाओं को आपको यह करने के लिए प्रेरित करना चाहिए: आपको अस्थायी सुखों की अपेक्षा अस्थायी पीड़ाओं का स्वागत करना चाहिए और उन पर मुस्कुराना चाहिए।

दर्द मधुमक्खियों की तरह होते हैं: यदि आप उन्हें परेशान करते हैं, तो वे आपके चारों ओर भीड़ लगा लेते हैं, लेकिन
यदि आप उनके प्रति उदासीन बने रहते हैं, तो वे इधर-उधर बिखरकर अपने काम में लग जाते हैं।

जो कोई भी अपने पिछले जीवन के बारे में सोचने के लिए “पीछे मुड़ता है”, उसका हृदय या जीभ या तो दुःख की आह या राहत की आह या परमेश्वर के लिए प्रशंसा और कृतज्ञता के शब्द बोलेगी।

यह आत्मा में छिपी हुई पीड़ा है जो दुःख की आह द्वारा व्यक्त होती है, जबकि राहत की आह या ईश्वर के प्रति स्तुति और कृतज्ञता का उच्चारण हमें हृदय में प्रचुरता और प्रसन्नता की सूचना देता है।

अतीत में बचे हुए सुखों की स्मृति हृदय और जीभ दोनों को दुःख की आहें निकालने का कारण बनती है।

क्योंकि जिस तरह दुख का अंत सुख है, उसी तरह सुख का अंत दुख है। सुख के अंत के बारे में सोचना या याद करना भी आत्मा को निरंतर दुख देता है।

यही कारण है कि प्रत्येक आलंकारिक प्रेम - विपरीत लिंग के प्रति प्रेम - विलापों का एक संग्रह है, जो उनके समाप्त होने के भय से उत्पन्न पीड़ा से उत्पन्न होता है।

लेकिन अतीत के दुखों का अंत दिल और जीभ दोनों को एक नई दिशा में ले जाता है
राहत की गहरी साँस और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के शब्द।

एक दिन की खुशी का गायब होना एक स्थायी दर्द है, जबकि असंतोष एक स्थायी दर्द है।
एक दिन के दुःख का आभास आत्मा में एक स्थायी खुशी है।

मानव विवेक या चेतना हमेशा अनंत आनंद और उदारता की इच्छा रखती है। यह ईश्वर के प्रेम और ज्ञान, चिंतन और आध्यात्मिक पूर्णता में निहित है; यह आध्यात्मिक उपहारों में भी निहित है जो हृदय में प्रवाहित होते हैं, सत्य की झलक में और सच्ची खुशी की खोज में। ये सभी ईश्वर में विश्वास

और ज्ञान की निश्चितता के माध्यम से संभव हैं और उसी पर आधारित हैं।

कभी-कभी उदारता का अभाव भी उदारता है, स्मृति उदारता है, किन्तु विपत्ति के

समय अनैतिक, असावधान व्यक्ति के लिए विस्मृति अधिक अच्छी होती है।

विस्मृति भी एक वरदान है; यह व्यक्ति को केवल दुःख ही सहने की अनुमति देती है।
यह न केवल वर्तमान को बल्कि संचित दुखों को भी भुला देता है।

हर विपत्ति में एक इनाम छिपा होता है, हे विपत्तिग्रस्त! विपत्ति

के भीतर एक इनाम छिपा होता है। ध्यान से देखो और तुम उसे देखोगे!

जैसे हर चीज़ में कुछ हद तक गर्मी होती है, वैसे ही हर विपत्ति में कुछ हद तक उदारता भी होती है। एक बड़ी विपत्ति पर विचार करें और फिर छोटी विपत्ति में उदारता की सीमा देखें,

और परमेश्वर को बहुत धन्यवाद दो। क्योंकि यदि तुम किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने से डर जाओगे, और शिकायतों से उसे बढ़ा दोगे, तो वह बढ़ती जाएगी।

और जैसे-जैसे यह बढ़ता जाएगा, यह और भी बदतर होता जाएगा। अगर आप इसके बारे में चिंता करेंगे, तो यह दोगुना हो जाएगा। आपके दिल में इसकी छवि हकीकत में बदल जाएगी।

विपत्ति वास्तविकता से सीख लेगी, फिर आप पर आक्रमण करेगी और आपके हृदय पर प्रहार करना शुरू कर देगी...

महत्वपूर्ण मत बनो, नहीं तो तुम अपमानित हो जाओगे हे अहंकारी और घमंडी दिमाग वाले!

तुम्हें इस कसौटी को समझना और विचार करना चाहिए: मानव समाज में, मानव समुदाय की सामाजिक संरचना में, हर किसी के पास एक खिड़की होती है, जिसे स्थिति के रूप में जाना जाता है, जिसके माध्यम से देखा जा सकता है और देखा जा सकता है।

अगर खिड़की किसी व्यक्ति की ऊंचाई (कद या मूल्य) से ऊंची है, तो वह गर्व के कारण लंबा (या उससे भी लंबा) दिखने की कोशिश करेगा। लेकिन अगर खिड़की उसकी ऊंचाई (उसकी कद या ईश्वर और लोगों के लिए उसके प्रयासों की सीमा) से कम है, तो वह विनम्रता के कारण झुक जाएगा और सिर झुकाएगा।

परिपक्व और सिद्ध व्यक्ति में महानता का मापदंड यह जानना है कि वह निम्न कोटि का है। जबकि दोषपूर्ण व्यक्ति में निम्न कोटि का माप महानता का दिखावा करना है।

गुण स्थान बदलते हैं तो स्वभाव भी बदल जाता है

एक गुण—विभिन्न स्थानों पर कभी राक्षस, कभी देवदूत, कभी पुण्यात्मा, कभी दुष्ट—कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

यदि कोई गुण जो बलवान या शक्तिशाली के समक्ष कमजोर के लिए गरिमा या आत्म-सम्मान के रूप में माना जाता है, वह बलवान या शक्तिशाली में पाया जाता है, तो वह गर्व और अहंकार है।

यदि कोई विशेषता मजबूत या शक्तिशाली लोगों के लिए विनम्रता के रूप में मानी जाती है
इससे पहले कि कमज़ोर को कमज़ोर में पाया जाए, यह आत्म-हीनता और पाखंड है।

अपने कार्यालय में, अधिकार प्राप्त व्यक्ति का गुरुत्व गरिमा है, और उसका आत्म-शून्य होने का भाव आत्म-हीनता है। लेकिन अपने घर में, उसका आत्म-शून्य होने का भाव विनम्रता है और उसका गुरुत्व अहंकार है।

अपने आप में सहनशीलता अच्छी बात है, लोक-हितैषी होना तथा त्याग करना भी अच्छा कर्म है, प्रशंसनीय गुण है।

हालाँकि, जब दूसरों की खातिर किया जाता है, तो किसी की सहनशीलता विश्वासघात है,
और किसी का बलिदान एक दुष्ट गुण या कार्य है।

सभी आवश्यक उपाय करने और सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करने से पहले किसी कार्य की सिद्धि को ईश्वर पर सौंप देना आलस्य है,

जबकि जो कुछ किया जाना चाहिए और किया जा सकता है, वह सब करने के बाद इच्छित परिणाम की प्राप्ति को उस पर छोड़ देना, उस पर भरोसा करना है, जैसा कि शरीयत ने हमें सिखाया है।

अपने भाग्य से या अपने प्रयासों के बाद प्राप्त परिणामों से संतुष्ट होना प्रशंसनीय संतोष है, तथा यह आगे और प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है, तथा व्यक्ति की ऊर्जा को पुनः सक्रिय करता है।

लेकिन जो कुछ पहले से है, उससे संतुष्ट रहना वांछनीय संतुष्टि नहीं है; बल्कि, यह आवश्यक प्रयास की कमी है। इसके कई अन्य उदाहरण हैं।

कुरान में आम तौर पर अच्छे कामों, धर्मपरायणता और धार्मिकता का उल्लेख किया गया है, लेकिन उन्हें परिभाषित नहीं किया गया है। उन्हें अपरिभाषित करके, यह परिस्थितियों के परिभाषित महत्व की ओर संकेत करता है; इसका संक्षिप्त होना वास्तव में एक विस्तृत व्याख्या है और इसका मौन, एक विस्तृत शब्द है।

"सत्य की जीत होती है" यह बात अपने आप में और परिणामों के संदर्भ में भी सत्य है

मित्र! एक बार एक प्रश्नकर्ता ने पूछा था: "जब 'सत्य की जीत होती है' तो फिर अविश्वासियों को मुसलमानों पर विजय क्यों मिलती है और बल या ताकत को अधिकार पर विजय क्यों मिलती है?"

मैंने कहा: इन चार बिंदुओं पर विचार करो और तुम्हारी कठिनाई हल हो जाएगी। पहली बात यह है कि हर सत्य और अधिकार तक पहुँचने का हर साधन हर समय सत्य और उचित नहीं हो सकता।

इसी तरह, हर झूठ का हर साधन झूठा नहीं होना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि एक साधन जो (झूठ का उपयोग करता है और) सत्य होता है, वह झूठे साधन (जिसका उपयोग सत्य या अधिकार करता है) पर हावी हो जाता है। इस स्थिति में, सत्य पर झूठ हावी हो जाता है। लेकिन यह अस्थायी और अप्रत्यक्ष रूप से हुआ है, अनिवार्य रूप से या स्थायी रूप से नहीं।

हालाँकि, अंतिम विजय हमेशा सत्य की ही होती है। (यह भी नहीं भूलना चाहिए कि) बल में सत्य होता है, और उसके निर्माण में एक उद्देश्य और अर्थ होता है। दूसरी बात यह है:

यद्यपि यह अनिवार्य है कि सभी मुसलमानों की सभी विशेषताएं मुस्लिम हों,
वास्तविकता यह है कि हमेशा ऐसा नहीं हो सकता।

इसी प्रकार, सभी अविश्वासियों के सभी गुण अविश्वास से जुड़े हुए या उनके अविश्वास से उत्पन्न नहीं होते हैं।

इसी प्रकार, सभी पापी अपराधियों के सभी गुण पापपूर्ण नहीं हो सकते, न ही यह आवश्यक है कि वे सदैव पाप से ही उत्पन्न हों।

इसका मतलब यह है कि एक अविश्वासी का मुस्लिम गुण एक नास्तिक के मुस्लिम गुण पर हावी हो जाता है। मुसलमान का अधार्मिक गुण। अप्रत्यक्ष रूप से और साधनों के कारण, अविश्वासी आस्तिक पर हावी हो सकता है।

इसके अलावा, इस दुनिया में जीवन का अधिकार सर्वव्यापी है। सार्वभौमिक दया की सार्थक अभिव्यक्ति - ज्ञान का एक उदाहरण है, जिसे अविश्वास बाधित नहीं कर सकता।

तीसरा बिन्दु यह है: सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूर्णता के दो गुण दो प्रकार के कानूनों को जन्म देते हैं। एक है जीवन या सृष्टि का शरिया और ब्रह्मांड का संचालन, जो इच्छा के गुण से आगे बढ़ता है;

और दूसरा, सुप्रसिद्ध शरिया, जो वाणी की विशेषता.

जिस प्रकार सुप्रसिद्ध शरीयत के आदेशों या कानूनों का पालन किया जाता है या इसी प्रकार लोग जीवन के शरीयत का पालन या अवज्ञा करते हैं।

पूर्व के लिए पुरस्कार और दंड ज्यादातर प्राप्त होता है इसके बाद, जबकि बाद के दंड और पुरस्कार ज्यादातर भुगते जाते हैं इस दुनिया में.

उदाहरण के लिए, धैर्य का पुरस्कार सफलता है, जबकि धैर्य का दंड सफलता है। आलस्य का अर्थ है अभाव, और परिश्रम का फल है धन।

दृढ़ता का पुरस्कार विजय है, विष का दण्ड है बीमारी और उसके मारक का पुरस्कार स्वास्थ्य है।

कभी-कभी दोनों शरीयत के आदेश एक ही कानून में लागू होते हैं। प्रत्येक चीज़ से संबंधित उसके अपने पहलू हैं।

इसका मतलब है, जीवन के नियमों का पालन करना एक सत्य है, और आज्ञाकारिता प्रबल है, जबकि इसकी अवज्ञा एक गलत रवैया है।

यदि सत्य किसी असत्य का साधन रहा है, तो जब वह प्रबल होगा, तो वह असत्य ही होगा। सत्य का अर्थ है झूठ। यह सत्य की पराजय का उदाहरण है झूठ के कारण साधनों के कारण। यह सत्य की पराजय नहीं है झूठ.

परिणामस्वरूप, “सत्य की जीत होती है” का अर्थ है: “सत्य विजयी होता है अनिवार्य रूप से या अपने आप में।" इसके अलावा, अंत या परिणाम का इरादा है।

चौथा बिंदु यह है: सत्य या तो क्षमता में बना हुआ है या फिर उसमें शक्ति नहीं है, या मिलावट या संदूषण है। इसे विकसित करने या देने की आवश्यकता है ताज़ा ताकत.

इसे सुधारने और उज्ज्वल करने के लिए, झूठ को अस्थायी रूप से अनुमति दी जाती है इस पर आक्रमण करें, ताकि सत्य का जितना भी शुद्ध सोना चाहिए, वह निकल आए शुद्ध.

इस संसार में यदि प्रारम्भ में मिथ्यात्व विजयी भी हो जाए, तो भी वह युद्ध नहीं जीत सकता। अन्तिम (सुखद) परिणाम ईश्वरभक्त के पक्ष में ही होता है।
पवित्र," उस पर प्रहार करेगा!

इस प्रकार असत्य की पराजय होती है। "सत्य की जीत होती है" का सत्य उसे दण्ड देता है। देखिए: सत्य की विजय होती है।

कुछ सामाजिक सिद्धांत

यदि आप सामाजिक जीवन के लिए कुछ सिद्धांत चाहते हैं: न्याय जो समतावादी नहीं है, वह है न्याय नहीं.

समान आयु और स्थिति या सामाजिक प्रतिष्ठा प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष का कारण बनती है। पूरक और अनुरूप होना एकजुटता का आधार है।

हीन भावना अहंकार को जन्म देती है। कमजोर चरित्र अहंकार को जन्म देता है। अहंकार का स्रोत। नपुंसकता विरोध को जन्म देती है।

जिज्ञासा ज्ञान की शिक्षक है। आवश्यकता ज्ञान का स्वामी और पहिया है। प्रगति। ऊब और संकट अपव्यय के शिक्षक हैं।

इस प्रकार, अपव्यय का स्रोत संकट और ऊब है। जहाँ तक संकट की बात है, इसका मतलब है निराशा, निराशावाद और बुरा-संदेह, साथ ही साथ गुमराह करना विचार, हृदय में अंधकार, और शरीर का दुरुपयोग।

निम्न सभ्यता ने महिलाओं के प्रति सम्मान को नष्ट कर दिया है

> जब मूर्ख पुरुष अपनी कल्पनाओं का अनुसरण करके स्त्रियोचित बन जाते हैं,
> विद्रोही महिलाएं निर्लज्जता के माध्यम से मर्दाना बन जाती हैं।

निम्न सभ्यता ने महिलाओं को सामान्य वस्तु बना दिया है और उन्हें नष्ट कर दिया है उनके प्रति सम्मान.

इस्लाम का शरीयत दयालुतापूर्वक कहता है कि यह (मूल रूप से) उनका घर है जहाँ महिलाओं को सच्चा सम्मान मिलेगा; अपने घरों में, पारिवारिक जीवन में, उन्हें आरामदायक।

स्वच्छता ही उनका श्रृंगार है, उनकी शोभा उनकी अच्छाई में है चरित्र, उनकी शालीन सुंदरता उनकी शुद्धता में है, उनकी सच्ची पूर्णता उनकी करुणा ही उनका सुख है, और उनके बच्चे ही उनका विश्राम और मनोरंजन।

भ्रष्टाचार के इतने सारे साधनों के सामने, व्यक्ति को उतना ही मजबूत और दृढ़ होना होगा भ्रष्ट न होने के लिए इस्पात की तरह अडिग।

अगर कोई खूबसूरत महिला "भाइयों" की सभा में प्रवेश करती है, तो दिखावा और प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या और स्वार्थ जागृत होते हैं। सुप्त कल्पनाएँ और जुनून अचानक जागना.

महिलाओं की अनियंत्रित स्वतंत्रता ने अचानक जागृति और
मानव जाति में बुराइयों की वृद्धि।

वे छोटे-छोटे शव जिन्हें चित्र कहते हैं, वे मुस्कुराती हुई लाशें,
आधुनिक मनुष्य की आत्मा के विकृत होने में महत्वपूर्ण और भयानक भूमिका
बदमिजाज़.197

निषिद्ध प्रतिमा या तो अत्याचार का प्रतीक है, या पाखंड का मूर्त रूप है,
या फिर यह एक ऐसा ताबीज है जो इन दुष्ट आत्माओं को आकर्षित करता है।

विस्तार की प्रवृत्ति जो धर्मपरायण लोगों में नहीं होती भ्रष्टाचार और विनाश की प्रवृत्ति है

ऐ तुम जो इस्लाम में इज्तिहाद (नया कानून) ढूँढ रहे हो ताकि इसकी सीमाएँ विस्तृत हो जाएँ! अपने शरीर पर ध्यान दो: क्या इसके विस्तार की प्रवृत्ति किसी से आती है?
भीतर से आता है तो विस्तार की ओर ले जाता है; पर बाहर से आता है तो फाड़ देता है
आपकी त्वचा.

इसी तरह, एक व्यक्ति ईमानदारी से पुष्टि करता है और पूरी तरह से अनुपालन करता है
इस्लाम के आवश्यक और बुनियादी आदेश: विस्तार की प्रवृत्ति
ऐसे व्यक्ति में पूर्णता की ओर प्रवृत्ति होती है।

हालाँकि, यही प्रवृत्ति किसी अन्य व्यक्ति में भी देखी जा सकती है जो इस क्षेत्र से बाहर है।
इस्लामी अनिवार्यताओं का पालन करना तथा उनके प्रति उदासीन रहना एक प्रवृत्ति है
भ्रष्टाचार और विनाश की ओर।

इस समय, जब बार-बार "तूफानों" और "भूकंपों" से पीड़ित होने के कारण, नए कानूनों के लिए दरवाजे खोलना आवश्यक नहीं है, बल्कि यहां तक कि सबसे अच्छे कानूनों को भी बंद करना आवश्यक है।
खिड़कियाँ.

जो लोग विश्वास और अभ्यास में असावधान और उदासीन हैं
धर्म को व्यवस्थाओं में लिप्त नहीं होना चाहिए; बल्कि उन्हें व्यवस्थाओं में लिप्त होना चाहिए।
सख्त चेतावनी दी गई और भारी जिम्मेदारियां और अधिक सावधानी बरतने के लिए कहा गया।

दैवी शक्ति का दायरा मध्यस्थों और सहायकों को अस्वीकार करता है

सर्वशक्तिमान महामहिम के लिए, उनकी शक्ति के नियंत्रण और संचालन के दायरे के संबंध में, हमारा सूर्य एक कण के समान है।

प्राणियों के एक ही क्षेत्र में उनकी शक्ति के नियंत्रण और संचालन की विशालता की कुछ झलक पाने के लिए, उनके बीच के गुरुत्वाकर्षण को समझिए।
दो परमाणु, और फिर जाकर इसे सूर्य के बीच गुरुत्वाकर्षण के बगल में रख दें
सूर्य और आकाशगंगा।

---

[197] जिस प्रकार किसी स्त्री के मृत शरीर को वासना की दृष्टि से देखना अद्वितीय नीचता का प्रतीक है, उसी प्रकार वह भी एक ऐसी स्त्री की सुन्दर तस्वीर को लालसा भरी नजरों से देख रहा है जिसे दया की जरुरत है, जो उसे एक लाश के समान बना देता है, आत्मा की उदात्त भावनाओं को बुझा देता है।

एक देवदूत जिसका भार एक बर्फ का टुकड़ा है, उसे एक सूर्य-समान देवदूत के पास ले आओ जो सूरज; एक व्हेल के बगल में एक सुई-मछली रखें;

फिर एक साथ उस सनातन सर्वशक्तिमान महामहिम की विशाल अभिव्यक्ति और उसमें असीम रूप से परिपूर्ण "कारीगरी" पर विचार करें
छोटी से लेकर बड़ी तक सभी चीज़ें।

प्रचलन में आने वाली चीजें जैसे गुरुत्वाकर्षण, चालकता, पारगम्यता या
व्यापकता और नियम - ये केवल अभिव्यक्ति के नाम हैं
उसकी शक्ति और उसकी बुद्धि के उदाहरण;

उनका कोई और अर्थ या कार्य नहीं हो सकता और वास्तव में ऐसा नहीं है।
उन्हें एक साथ रखें और आप आवश्यक रूप से समझेंगे कि कुशल या रचनात्मक कारणों और साधनों के अस्तित्व का दावा करना और उन्हें भगवान को जिम्मेदार ठहराना
सहायक और साझीदार सब मिथ्या है, उस शक्ति

के सामने सब भ्रामक और छलावा है। जीवन अस्तित्व की पूर्णता है; इसका स्थान महान और महत्वपूर्ण है।
इसलिए, मैं कहता हूँ: क्यों
क्या पृथ्वी, हमारी दुनिया, एक आज्ञाकारी, अधीनस्थ इकाई नहीं होनी चाहिए, जैसे कि
विनम्र जानवर?

शाश्वत प्रभु के पास इस प्रकार के अनेक उड़ने वाले जानवर हैं।
वे अंतरिक्ष के अखाड़े में हैं, और वे शानदार और सुंदर हैं।

उसने उन्हें सृष्टि के बगीचे में फैला दिया है, और उन्हें स्थापित कर दिया है
निरंतर गति। अंतरिक्ष में लोगों के गीत और उनकी गतिविधियाँ
दुनिया में सब उसकी महिमा के शब्द हैं, उसकी आराधना के कार्य हैं
जिसका कोई आदि और अंत नहीं है, वह शाश्वत और सर्वज्ञ है।

हमारी पृथ्वी एक सजीव प्राणी जैसी दिखती है जो जीवन के लक्षण प्रदर्शित करती है।
मान लीजिए असंभव बात यह है कि इसे अंडे के आकार तक घटा दिया गया,

यह संभवतः एक छोटा सूक्ष्म जीव बन जाएगा। यदि किसी सूक्ष्म जीव को पृथ्वी के आकार तक बड़ा कर दिया जाए, तो संभवतः यह एक छोटा सूक्ष्म जीव बन जाएगा।
बिल्कुल पृथ्वी की तरह.

यदि ब्रह्माण्ड को उसके तारों सहित एक मनुष्य के आकार में घटा दिया जाए
कणों का निर्माण करते हुए, यह संभव है कि यह एक सचेतन प्राणी बन जाए; कारण
इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता.

इसका अर्थ यह है कि यह संसार अपने सभी भागों सहित परमेश्वर का महिमामय सेवक है।
सदा जीवित सृष्टिकर्ता, शाश्वत सर्वशक्तिमान, आज्ञाकारी और अधीनस्थ।

यह आवश्यक नहीं है कि कोई वस्तु बड़ी हो, तभी वह लोकप्रिय होगी।
गुणात्मक रूप से बहुत बढ़िया, क्योंकि सरसों के दाने के आकार की घड़ी अधिक प्रभावशाली होती है
यह अयासोफ़िया (हागिया सोफिया) के आकार की घड़ी से भी अधिक है।

मक्खी की रचना भी उससे कम नहीं, बल्कि शायद उससे भी अधिक आश्चर्यजनक है।
हाथी जैसे एक भव्य प्राणी की।

यदि कुरान को शक्ति की कलम द्वारा आकाश के परमाणुओं में लिखा जाए
इस दुनिया के एक परमाणु पर, उसमें निहित कला के संबंध में, उसके आकार के व्युत्क्रमानुपाती,

यह धरती के चेहरे पर सितारों में लिखे कुरान के बराबर होगा।
स्वर्ग। शाश्वत लेखक की कला अत्यंत सुन्दर और परिपूर्ण है
हर जगह.

हर जगह ऐसा ही है। पूर्णता की एक ही डिग्री की हर चीज़ कलम की एकता और इसलिए दिव्य एकता की घोषणा करती है। अध्ययन
इस सबसे सार्थक टुकड़े को ध्यान से पढ़ें!

फ़रिश्ते एक समुदाय हैं जिन्हें सृष्टि की शरिया का दायित्व सौंपा गया है
और ब्रह्मांड का संचालन

दो ईश्वरीय शरीयत (कानूनों का समूह) हैं, जो दो सिद्धांतों से आगे बढ़ते हैं:
दैवीय गुण; दो प्रकार के मनुष्यों को संबोधित किया गया है, प्रत्येक के लिए एक जिम्मेदार है:

ब्रह्माण्ड के निर्माण और संचालन का शरिया, जो इच्छा के गुण से आगे बढ़ता है, परिस्थितियों और आंदोलनों को आदेश देता है
ब्रह्माण्ड के, वृहत्-मानव के, जो स्वैच्छिक नहीं हैं। यह भगवान की शाश्वत रूप से निर्धारित व्यवस्था है, और इसे ही गलत तरीके से "प्रकृति" कहा जाता है।

वाणी की विशेषता से आगे बढ़ने वाला शरिया सेट है
उन कानूनों का जो मानवता, सूक्ष्म जगत के कार्यों को आदेश देते हैं, जो
स्वैच्छिक।

कभी-कभी दोनों शरिया एक ही प्रकार के प्राणियों पर लागू होते हैं -
ईश्वर के फ़रिश्ते। वे एक शक्तिशाली समुदाय हैं, सर्वशक्तिमान की एक सेना।

वे आज्ञाकारी सेवक और कार्यकर्ता हैं, जो प्रथम शरीयत की पूर्ति के लिए जिम्मेदार हैं; वे प्रतिनिधि हैं, (ईश्वर के दरबार में निर्जीव, पौधे और पशु साम्राज्य की पूजा का प्रतिनिधित्व करते हैं)।

उनमें से कुछ लोग भगवान के सेवकों की पूजा कर रहे हैं, अन्य लोग ईश्वर की भक्ति में लीन हैं।
ईश्वर के ज्ञान और प्रेम को प्राप्त करने के लिए, उनके परम पिता परमेश्वर के चारों ओर उनके निकट स्थित रहें।
सिंहासन।

फ़रिश्ते एक समुदाय हैं जिन पर शरिया का आरोप है ब्रह्माण्ड का निर्माण और संचालन

दो दिव्य शरिया (कानूनों का समूह) हैं, जो दो दिव्य कानूनों से निकलते हैं।
विशेषताएँ; दो प्रकार के मनुष्यों को संबोधित किया जाता है, एक जो जिम्मेदार होता है
प्रत्येक:

ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन का शरिया, जो इच्छा के गुण से आगे बढ़ता है, ब्रह्मांड, वृहद मानव की परिस्थितियों और गतिविधियों को आदेश देता है, जो स्वैच्छिक नहीं हैं। यह भगवान की शाश्वत रूप से निर्धारित प्रणाली है, और इसे गलत तरीके से "प्रकृति" कहा जाता है।

शरीयत जो वाणी की विशेषता से आगे बढ़ती है वह कानूनों का समूह है
जो मानवता, सूक्ष्म जगत के कार्यों को आदेश देता है, जो स्वैच्छिक हैं।

कभी-कभी दोनों शरिया एक ही तरह के प्राणियों पर लागू होते हैं - ईश्वर के फ़रिश्ते। वे एक शक्तिशाली समुदाय हैं, सर्वशक्तिमान की एक सेना।

वे आज्ञाकारी सेवक और कार्यकर्ता हैं, जो प्रथम शरीयत की पूर्ति के लिए जिम्मेदार हैं; वे प्रतिनिधि हैं, (ईश्वर के दरबार में निर्जीव, पौधे और पशु साम्राज्य की पूजा का प्रतिनिधित्व करते हैं)।

उनमें से कुछ लोग ईश्वर के उपासक हैं, अन्य लोग ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में लीन हैं, तथा उसके निकट उसके सर्वोच्च सिंहासन के चारों ओर स्थित हैं।

जैसे-जैसे पदार्थ परिष्कृत होता है, जीवन तीव्र होता जाता है

जीवन मौलिक है, बुनियादी है; पदार्थ इस पर निर्भर है और इसके अधीन है, और इसके माध्यम से जीवित रहता है। यदि आप एक सूक्ष्म जीव की तुलना उसकी पाँच इंद्रियों और मानव इंद्रियों से करते हैं, तो आप देखेंगे कि मनुष्य चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो, वह उससे कहीं ज़्यादा बड़ा है।

सूक्ष्म जीव होने के कारण उसकी इन्द्रियाँ भी उसी स्तर तक हीन होती हैं।

जीव अपने भाई की आवाज सुनता है, अपना भोजन देखता है। यदि उसे मनुष्य के आकार का कर दिया जाए तो उसकी इंद्रियाँ विस्मयकारी होंगी, उसका जीवन चकाचौंध होगा, और उसका दृश्य आकाश में चमकती बिजली के समान होगा।

व्यक्ति मृत पिंड से बना जीवित प्राणी नहीं है, बल्कि एक जीवित प्राणी है।
मानव कोशिका अरबों जीवित कोशिकाओं से बनी होती है।

मनुष्य यासिन के बड़े अक्षरों के समान है, जिसमें सुरतु यासिन अंकित है। कितना धन्य और सर्वोच्च है वह रचयिता ईश्वर, जो सर्वोत्तम और सबसे उपयुक्त रूप में सृजन करता है!

भौतिकवाद एक आध्यात्मिक महामारी है भौतिकवाद एक

आध्यात्मिक महामारी है। इसने मानवता को इस भयानक बुखार (WW1) से संक्रमित कर दिया है - इसने इसे ईश्वरीय क्रोध और दंड के अधीन कर दिया है।
लगातार अभ्यास और अनुकरण के माध्यम से,

और मानव जाति की आलोचना करने की क्षमता के विकास के अनुपात में,
यह महामारी और भी गंभीर हो गई है तथा व्यापक रूप से फैल रही है।

इसे विज्ञान द्वारा विकसित किया जाता है और सभ्यता के नाम पर इसका अनुकरण किया जाता है।

स्वतंत्रता ने आलोचना को जन्म दिया है, और इससे गुमराही पैदा हुई है
गर्व सभ्यता का कारण बनता है.

अस्तित्व में कुछ भी निष्क्रिय नहीं है;
एक निष्क्रिय व्यक्ति अस्तित्वहीनता के कारण काम करता है

सबसे अधिक दुखी, दुखी और व्यथित व्यक्ति वह है जो निष्क्रिय रहता है।
क्योंकि आलस्य अस्तित्व के भीतर अस्तित्वहीनता है, जीवन के भीतर मृत्यु है।

जबकि परिश्रम या कड़ी मेहनत करना शरीर का जीवन और जीवन की जागृत अवस्था है!

सूद और ब्याज इस्लाम के लिए बिल्कुल हानिकारक हैं

सूदखोरी से आलस्य पैदा होता है और काम के प्रति उत्साह खत्म हो जाता है।

बैंकों का मुनाफा, जो सूदखोरी के द्वार और उसके अड्डे हैं,
हमेशा मानव जाति के सबसे बुरे लोगों, काफिरों के लिए।

इसका लाभ काफिरों को मिलता है, उनमें से सबसे बुरे लोगों को, अर्थात्
उत्पीड़कों.

अत्याचारियों का लाभ सदैव उनमें से सबसे बुरे लोगों को मिलता है; अर्थात अत्याचारियों का लाभ सदैव उनमें से सबसे बुरे लोगों को मिलता है।

यह इस्लाम की दुनिया के लिए बिल्कुल हानिकारक है।

शरिया न तो यह मांग करता है और न ही यह किसी भी कीमत पर सभी मानव जाति की निरंतर समृद्धि की जिम्मेदारी लेता है।
इस्लाम और मुसलमान सम्मान या कानूनी संरक्षण के हकदार नहीं हैं।

कुरान अपनी रक्षा करता है और अपनी प्रामाणिकता कायम रखता है

मैंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो निराशा से ग्रस्त था और निराशावाद से बीमार था। उसने कहा:
"विद्वानों की संख्या में कमी आई है, और मात्रा में यह कमी
इससे गुणवत्ता में कमी आती है। मुझे डर है कि हमारा धर्म एक दिन खत्म हो जाएगा।"

मैंने उत्तर दिया: जब तक ब्रह्माण्ड नष्ट नहीं हो जाता, इस्लामी आस्था बनी रहेगी।
ख़त्म न हो जाये।

इसके अलावा, जब तक इस्लाम के सार्वजनिक चिह्न, धर्म की मीनारें,
ईश्वरीय पूजा स्थल, शरिया की शिक्षाएँ - सब दांव की तरह हैं
धरती में मजबूती से स्थापित हैं - जब तक वे समाप्त नहीं हो जाते, इस्लाम रहेगा
हमेशा चमकते रहो.

मस्जिदें प्रशिक्षक हैं, जो अपने अस्तित्व और प्रकृति के माध्यम से उन लोगों को शिक्षा देती हैं जो उनमें आते हैं। इस्लाम के सार्वजनिक चिह्न सभी शिक्षक बन गए हैं: अपने अस्तित्व और प्रकृति की भाषा के माध्यम से, वे विश्वासियों को प्रेरित करने में कभी विफल नहीं होते या भूलते नहीं हैं।

सभी चिह्न विद्वान शिक्षक हैं, जो उन्हें देखने वालों को निरंतर इस्लाम की भावना सिखाते हैं, जिसके कारण संसार सदियों तक टिका रहता है।

इस्लाम की रोशनी मानो उसके सार्वजनिक चिन्हों में सन्निहित है; और इस्लाम का शुद्ध जल मानो उसके पूजा स्थलों में ठोस रूप में जम गया है, जिनमें से प्रत्येक विश्वास का मूर्त स्तंभ है।

इस्लाम के आदेश मानो सार्वजनिक चिह्नों में सन्निहित हैं; इस्लाम के स्तंभ उसके क्षेत्रों में दृढ़तापूर्वक स्थापित हैं - प्रत्येक एक हीरे जैसा स्तंभ है, और उनके माध्यम से पृथ्वी और आकाश एक साथ बंधे हुए हैं।

विशेष रूप से, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान एक वक्ता है; यह लगातार एक पूर्व-शाश्वत प्रवचन देता रहा है - मुस्लिम भूमि के भीतर कोई भी गांव, कोई भी स्थान नहीं बचा है

जिसने न तो उसकी बात सुनी है, न उसकी शिक्षा सुनी है।

हम ही इसके रक्षक और संरक्षक हैं (15:9) के अर्थ के अनुसार , क़ुरआन को याद करना बहुत बड़ा स्थान है। इसे पढ़ना मनुष्यों और जिन्नों के लिए इबादत है।

इसका निरंतर पाठ इस्लाम के स्पष्ट, निर्विवाद मूल तत्वों की शिक्षा देता है और बार-बार उनकी याद दिलाता है; यह सैद्धांतिक विषयों को इतना स्पष्ट कर देता है कि उन्हें किसी और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती।

धर्म के ये तत्व सैद्धांतिक बातें नहीं रह गए हैं और स्पष्ट, आसानी से समझ में आने वाली वास्तविकताएँ बन गए हैं। उनका ज़िक्र करना ही काफ़ी है; उन्हें याद दिलाना ही काफ़ी है। क़ुरआन हमेशा मरहम लगाने वाला (दिमाग, दिल और आत्मा के ज़ख्मों को भरने वाला) है।

इसके अलावा, इस्लाम के मूल तत्वों का लगातार उल्लेख और स्मरण कराने तथा इस्लामी पुनरुत्थान और सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने के माध्यम से, इन सभी मूल तत्वों के लिए साक्ष्य प्रत्येक के लिए साक्ष्य है।

इस्लाम में सामाजिक जीवन की शुरुआत होने के बाद से ही किसी व्यक्ति का विश्वास उसके अपने प्रमाणों तक सीमित नहीं है, न ही उसका विश्वास या विवेक केवल उन्हीं पर आधारित है। बल्कि, ये असंख्य प्रमाणों पर भी आधारित हैं जो समुदाय के सामान्य हृदय में स्थित हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि समय बीतने के साथ-साथ एक कमज़ोर विचारधारा को भी खत्म करना मुश्किल होता जा रहा है। तो इस्लाम के बारे में क्या, जो दो मज़बूत नींवों पर आधारित है - रहस्योद्घाटन और जन्मजात मानवीय स्वभाव - और जिसने कई शताब्दियों तक इतने प्रभावशाली ढंग से शासन किया है!

अपने दृढ़ सिद्धांतों और गहन कार्यों के साथ यह एक दूसरे से जुड़ा हुआ है।
आधी दुनिया में, एक प्राकृतिक आत्मा बन जाना। इसे कैसे ग्रहण किया जा सकता है, खासकर तब जब यह अभी-अभी
एक अस्थायी ग्रहण से उभरा है?

अफसोस की बात है कि कुछ अपमानजनक काफिरों ने झूठ बोलकर हम पर हमला किया है।
जब भी उन्हें मौका मिला, उन्होंने इस ऊंचे महल की मजबूत नींव को ढहा दिया।

वे इस्लाम की नींव हिलाने की कोशिश करते हैं। लेकिन इसके सिद्धांतों को नहीं बदला जा सकता।
हमला किया गया, या छेड़छाड़ की गई। अब चुप हो जाओ, अधर्म! वह बदमाश है
अब अविश्वास और झूठ का यह प्रयोग बहुत हो गया!

अविश्वास की दुनिया के खिलाफ इस्लामी दुनिया की अग्रिम चौकी यह थी
दारुलफुनुन.[198] लेकिन हमारी उदासीनता और असावधानी के कारण, सांप जैसी
दुश्मन सक्षम था

मोर्चे के पीछे दरार खोलने के लिए; अधर्म पर हमला किया और
राष्ट्र हिल गया। यह अग्रिम चौकी, यह स्वर्ग जैसा "बाग", इस्लाम की आत्मा से प्रकाशित,

इस्लाम के संबंध में सबसे दृढ़ और सबसे सच्चा जागृत होना चाहिए, या
यह विज्ञान सदन के रूप में संदर्भित एक संस्था नहीं हो सकती। इसे नहीं होना चाहिए
इस्लाम को धोखा देना.

विश्वास का स्थान हृदय है;

मन वह स्थान है जहाँ विश्वास का प्रकाश प्रतिबिंबित होता है

मन कभी योद्धा (झूठ से लड़ने वाला) होता है, कभी योद्धा (झूठ से लड़ने वाला) होता है,
झाड़ू (संदेह दूर करना); यदि मन के संदेह हृदय में प्रवेश न करें,
तब विश्वास और विवेक डगमगाएंगे नहीं।

यदि, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं, विश्वास मन में है, तो अनेक आधारहीन सम्भावनाएं (मन में घूमती रहती हैं)
विश्वास के लिए क्रूर शत्रु बन सकती हैं।
अनुभव पर आधारित निश्चितता, जो विश्वास की भावना है।

हृदय और विवेक विश्वास के केंद्र हैं। अंतर्ज्ञान और प्रेरणा
विश्वास के लिए सबूत हैं। एक और अर्थ199 है जो विश्वास का एक तरीका है।
विचार और बुद्धि, या मन, विश्वास के पहरेदार हैं।

---

198 दारुलफुनुन ओटोमन काल के दौरान इस्तांबुल विश्वविद्यालय का नाम था। इस नाम का शाब्दिक अर्थ है विज्ञान का घर। (ट्र.)

199 दूसरे अर्थ में सईद नूरसी का अर्थ है "इंद्रियाँ" या भरोसे और मदद मांगने के बिंदु
मानवीय अंतःकरण में गहराई तक समाए हुए हैं; उन्होंने रिसाले-ए-नूर में कई स्थानों पर इसका उल्लेख किया है।
अर्थात्, प्रत्येक मनुष्य निर्भरता या समर्थन के बिंदुओं के अस्तित्व को महसूस करता है और मदद मांगता है,
जिसके माध्यम से वे भरोसा करने और मदद प्राप्त करने की शक्ति चाहते हैं, विशेष रूप से
विपत्तियाँ और लाचारी। इन इंद्रियों या बिंदुओं का अस्तित्व एक के अस्तित्व को दर्शाता है
सर्वज्ञ और शक्तिशाली। (ट्र.)

सैद्धांतिक विषयों की शिक्षा की अपेक्षा, यह आवश्यक है लोगों को इस्लाम के स्पष्ट, निर्विवाद मूल तत्वों की याद दिलाना

धर्म के मूल तत्व, स्पष्ट, निर्विवाद मामले
शरीयत लोगों के दिलों में मौजूद है; लोगों को पूरी तरह से जागरूक किया जाएगा
यदि उन्हें लगातार इनके बारे में याद दिलाया जाए तो वे सफल हो सकते हैं।

इस प्रकार वांछित परिणाम प्राप्त होता है। अरबी भाषा यह कार्य करती है
अधिक उत्कृष्ट ढंग से स्मरण दिलाना।

धर्मोपदेश में सैद्धांतिक विषयों की शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।
इसके अलावा, अरबी प्रवचन इस्लाम के एकजुट चेहरे पर एकता की छाप है।

पैगम्बर की बातें (हदीस) कुरान की आयतों से कहती हैं: आप तक पहुंचना संभव नहीं है!

यदि आप कुरान की आयतों और हदीसों की तुलना करें तो आप स्पष्ट रूप से देखेंगे कि
यहाँ तक कि मानव जाति के सबसे वाक्पटु, रहस्योद्घाटन के संवाहक,
वाक्पटुता में कुरान के स्तर तक नहीं पहुंच सका।

कुरान उनकी कही बातों से मेल नहीं खाता। इसका मतलब यह है कि सारी बातें एक जैसी हैं।
मुहम्मद की ज़बान से निकले शब्द उनके नहीं थे।200

कुरान की चमत्कारिकता का संक्षिप्त विवरण

एक बार मैंने एक सपना देखा: मैं माउंट अरारत के नीचे था। पहाड़ दक्षिण-
डेनली विस्फोटित हो गया, जिससे दुनिया भर में पहाड़ों के आकार की चट्टानें बिखर गईं
और उसे हिलाना.

तभी अचानक एक आदमी मेरे पास आया और मुझसे बोला: "समझाओ
कुरान की चमत्कारिकता के पहलुओं को आप संक्षेप में और स्पष्ट रूप से जानते हैं
ठीक!”201

जब मैं अभी भी सपने में था, तब मैंने सपने के अर्थ के बारे में सोचा और
मैंने खुद से कहा: यहाँ विस्फोट मानव जाति में एक क्रांति का प्रतीक है।

इसके परिणामस्वरूप सत्य और असत्य की कसौटी का मार्गदर्शन
(कुरान) हर जगह ऊंचा किया जाएगा, और शासन करेगा। और समय
इसकी चमत्कारिकता समझाने के लिए आओ!

---

200 अर्थात, अपनी स्वयं की बातों (हदीसों) के अलावा, पैगम्बर मुहम्मद भी संदेशवाहक थे
कुरआन का, जो ईश्वर द्वारा अवतरित किया गया है। (अनुवाद)

201 कुरान की अद्वितीयता पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं। नूरसी ने क्या कहा
यहाँ एक बहुत ही संक्षिप्त सारांश दिया गया है। कुछ हद तक इसे उदाहरणों के साथ समझाया गया है
पच्चीसवाँ शब्द. (अनुवाद)

मैंने उत्तर में प्रश्नकर्ता से कहा: कुरान की चमत्कारिकता सात सार्वभौमिक स्रोतों में निहित है या सात सार्वभौमिक तत्वों से बनी है: प्रथम स्रोत: यह इसकी व्याख्या का शानदार तरीका है जो इसके शब्दों की प्रवाह, इसके अर्थों की वाक्पटुता, इसकी अवधारणाओं की मौलिकता, इसकी भाषा की शुद्धता, इसके शब्द-क्रम की सुंदरता और इसकी शैलियों की विशिष्टता से उत्पन्न होता है।

इन सभी तत्वों के सम्मिलित होने से इसकी चमत्कारिकता भावों की एक अद्भुत कढ़ाई और एक मौलिक भाषाई कला को प्रकट करती है, इसलिए इसकी पुनरावृत्ति कभी भी थकाती या ऊबाऊ नहीं होती।

दूसरा (स्रोत या) तत्व: ब्रह्मांडीय घटनाओं, अदृश्य, रहस्यमय दिव्य सत्यों, और आकाश में निहित अदृश्य वास्तविकताओं, और अतीत के पर्दे के पीछे अदृश्य हो चुकी घटनाओं, और भविष्य के पर्दे के पीछे अदृश्य रह जाने वाली बातों और घटनाओं के अंतर्निहित अदृश्य सिद्धांतों से निर्मित, कुरान अदृश्य की भाषा है; यह दृश्यमान, भौतिक दुनिया से बात करती है, अदृश्य के कुछ मामलों को सूक्ष्म, गहन और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों के साथ प्रकट करती है। यह मानव जाति को संबोधित करती है। यह इसकी चमत्कारिकता की एक और झलक है।

तीसरा स्रोत: कुरान में पांच पहलुओं में असाधारण व्यापकता है: इसके शब्द, अर्थ, आदेश, ज्ञान और इसके उद्देश्यों में संतुलन।

इसकी शब्दावली: इसमें अभिव्यक्ति के अनेक विविध तरीके हैं तथा इसके शब्दों में विभिन्न पहलू हैं, जिनमें से प्रत्येक वाक्पटुता की दृष्टि से सुखद, व्याकरणिक दृष्टि से सही तथा कानून बनाने के लिए पूर्णतः उपयुक्त है।

इसका अर्थ है: कुरान की व्याख्या की चमत्कारिकता एक साथ सभी संतों के तरीकों, ईश्वर के ज्ञान में पारंगत लोगों की रोशनी, सूफी मार्ग का अनुसरण करने वालों के स्कूल, धर्मशास्त्रियों के तरीके और दार्शनिकों के मार्गों को समझती और समाहित करती है।

कुरान में जो कुछ कहा गया है उसकी सीमा और विविधता, तथा इसके अर्थों का विस्तार: यदि आप इस खिड़की से देखें, तो आप पाएंगे कि इसका क्षेत्र कितना व्यापक है!

इसके आदेशों का दायरा: कुरान से अद्भुत शरिया जारी किया गया है; इसके आदेश एक ही समय में दोनों दुनियाओं में खुशी के लिए आवश्यक सिद्धांतों, मोक्ष और सुरक्षा के साधनों, सामाजिक जीवन के संबंधों, शिक्षा के तरीकों और परिस्थितिजन्य वास्तविकताओं के प्रति जवाबदेही को कवर करते हैं।

इसके ज्ञान की गहनता: कुरान विभिन्न स्तरों पर, संकेतों और संकेतों के साथ, भौतिक विज्ञानों और ईश्वरीय विज्ञानों दोनों का उल्लेख या संकेत करता है; कुरान अपने सूराओं के महलों के भीतर सभी प्रकार के ज्ञान के स्वर्गीय उद्यानों को एक साथ लाता है।

अपने उद्देश्यों और प्रयोजनों में , कुरान में पूर्ण संतुलन और नियमित अनुक्रम है, और यह सृष्टि के मूल ईश्वरीय पैटर्न और प्रणाली के सिद्धांतों के पूर्णतः अनुरूप और सहमत है, और इसने उनके संतुलन को संरक्षित रखा है।

इसके शब्दों की व्यापकता, इसके अर्थों की व्यापकता, इसके आदेशों का दायरा, इसके ज्ञान की गहनता और इसके उद्देश्यों के संतुलन में इसकी शानदार व्यापकता को देखिए।

चौथा (स्रोत या) तत्व: कुरान प्रत्येक आयु के लोगों को उनकी समझ और साहित्यिक क्षमता के अनुसार तथा सभी वर्गों के लोगों को उनकी क्षमताओं और योग्यताओं के अनुसार प्रचुर, प्रकाशमान उपहार और आशीर्वाद प्रदान करता है।

इसका द्वार हर युग और हर वर्ग के लिए खुला है। ऐसा लगता है मानो यह दयालु की वाणी हर क्षण, हर स्थान पर ताज़ा रूप से प्रकट होती है।

जैसे-जैसे समय बीतता है, कुरान युवा होता जाता है; इसके संकेत और प्रतीक अधिक स्पष्ट और प्रत्यक्ष होते जाते हैं; ईश्वरीय संदेश प्रकृति और कारणों के पर्दे को फाड़ देता है (प्रकृति और "प्राकृतिक" कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देते हुए)।

कुरान में ईश्वरीय एकता का प्रकाश हर आयत से लगातार फूटता रहता है। यह अदृश्य से दृश्यमान, भौतिक दुनिया का पर्दा उठाता है। इसके संबोधन की महानता मनुष्यों को सावधान रहने के लिए आमंत्रित करती है।

कुरान अदृश्य की भाषा है, जो दृश्यमान, भौतिक दुनिया से बात करती है। इसी स्रोत से इसकी असाधारण ताज़गी निकलती है, यह अर्थों का एक सर्वव्यापी महासागर है।

कुरान में मानव मन के लिए ईश्वरीय कृपा शामिल है ताकि वे उससे परिचित हो सकें। विभिन्न रूपों में इसकी शैलियों की प्रवाहशीलता इसे मनुष्यों और जिन्नों के लिए प्यारा बनाती है।

पांचवां स्रोत: कुरान अपने सभी वर्णनात्मक विवरणों और उनमें निहित घटनाओं को उनके आवश्यक बिंदुओं के साथ जोड़ता है और इन्हें एक मौलिक, सार्थक शैली में प्रस्तुत करता है, मानो घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन कर रहा हो।

अतीत की घटनाओं के इन वर्णनात्मक विवरणों के माध्यम से, कुरान मानव जाति को चेतावनी देता है। यह भूतपूर्व लोगों और उनके अनुभवों, भविष्य के लोगों और उनके अनुभवों, नरक और स्वर्ग के बागों के रहस्यों के बारे में बताता है।

और अदृश्य की सच्चाई, दृश्यमान रहस्य, भौतिक दुनिया, ईश्वरीय रहस्य, और सृष्टि और ब्रह्मांड के बंधन। इसके वर्णन की शैली से ऐसा लगता है कि कुरान वही बताता है जो वह देखता है।

न तो समय और न ही समय के साथ खोजे गए तथ्य सत्य का खंडन कर पाए हैं
और न तर्क कभी क़ुरआन का खंडन करता है। और जो दूसरी किताबें अवतरित हुई हैं, उनका संसार आदर करता है।

कुरान उन बिंदुओं को पुष्टिकारक तरीके से बताता है जिन पर वे सहमत हैं, और जिन विषयों पर वे मतभेद रखते हैं उन्हें सुधारात्मक शैली में बताता है। यह सारा ज्ञान और ये तर्क किसी "अनपढ़" व्यक्ति द्वारा बताए गए हैं: यह सभी समय का एक आश्चर्य है!

छठा (स्रोत या) तत्व: कुरान इस्लाम धर्म का संस्थापक है और इसमें इस्लाम शामिल है। यदि आप समय और स्थान पर विचार करते हैं, तो न तो अतीत इस्लाम जैसा कुछ पैदा करने में सक्षम था, न ही भविष्य।

यह एक स्वर्गीय रस्सी है जो पृथ्वी को उसकी वार्षिक और दैनिक कक्षाओं में रखती है, उसे घुमाती है। यह पृथ्वी पर सवार होकर उसे नीचे गिराती है, उसे विद्रोह (अपने कर्तव्य के विरुद्ध) करने नहीं देती।

सातवां . ोत: इन छह स्रोतों से निकलने वाली छह ज्योतियाँ एक दूसरे के भीतर विद्यमान हैं, और इन्हीं से सौंदर्य उत्पन्न होता है, और इसी सौंदर्य से अंतर्ज्ञान, समझने का प्रकाशमान साधन उत्पन्न होता है,

निकलता है.

इससे एक ऐसा आनन्द उत्पन्न होता है जो अपनी चमत्कारिकता के व्यापक आनन्द की सेवा करता है, किन्तु इसका वर्णन करने के लिए हमारी भाषा अपर्याप्त है, मन भी अपर्याप्त है। वह दिव्य तारा (अपनी वाणी में आनन्द का) दिखाई तो देता है, किन्तु उसे हाथ में नहीं पकड़ा जा सकता।

तेरह शताब्दियों से कुरान के शत्रु उसे चुनौती देने की कोशिश करते रहे हैं, जबकि उसने अपने मित्रों में अनुकरण की इच्छा जगाई है। यह भी इसकी चमत्कारिकता का प्रमाण है।

इन दो तीव्र इच्छाओं के परिणामस्वरूप अरबी में लाखों पुस्तकें लिखी गई हैं, और अस्तित्व के पुस्तकालय में प्रवेश कर चुकी हैं।

यदि उनकी तुलना ईश्वर के रहस्योद्घाटन, कुरान से की जाए, यदि उन्हें तराजू पर तौला जाए, तो न केवल विद्वान, बल्कि सबसे आम लोग भी, जो केवल अपनी आंखों और कानों से निर्णय करते हैं, घोषणा करेंगे: "यह स्वर्गीय है; वे मानव हैं!"

वे यह भी निष्कर्ष निकालेंगे: "यह उनसे मिलता-जुलता नहीं है, यह उसी वर्ग का नहीं है। यह या तो उन सभी से कमतर है - और यह स्वतः स्पष्ट नहीं है
सच—या

"यह उन सभी से श्रेष्ठ है।" अपने अवतरण से इतने लम्बे समय के दौरान, कुरान के अर्थ हमेशा मानव जाति के लिए खुले रहे हैं; इसने आत्माओं और मनों को अपने पास बुलाया है!

मानव जाति ने इन अर्थों को अपनाया है, लेकिन
वह अभी तक कुरान के अर्थों का विरोध करने में सक्षम नहीं हो पाया है; मानवता ऐसा कभी नहीं कर पाएगी; अब परीक्षण का समय बीत चुका है।

कुरान अन्य पुस्तकों से मिलता जुलता नहीं है; इसकी तुलना किसी अन्य पुस्तक से नहीं की जा सकती।
क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान के कारण यह भाग-भाग करके, अधिक से अधिक बार प्रकट हुआ था।
आवश्यकता के अनुसार और विविध भागों में, बीस वर्ष से अधिक की अवधि के लिए।

कुरान विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने के लिए अवतरित हुआ।
और बार-बार प्रश्न पूछे जाने चाहिए, और संबंधित निर्णयों को कानून बनाना चाहिए
अनेक और विविध अवसर और परिस्थितियाँ। इसके रहस्योद्घाटन के समय
सभी स्थितियां अलग-अलग थीं।

वे परिस्थितियाँ जिनमें कुरान प्राप्त हुआ और संप्रेषित किया गया
विविध और विभिन्न थे; जिन लोगों को यह संबोधित कर रहा था उनके समूह असंख्य थे और एक दूसरे से दूर थे; इसके मार्गदर्शन के लक्ष्य असंख्य और भिन्न-भिन्न स्तर के थे।

इन आधारों के आधार पर कुरान व्याख्या करता है, शिक्षा देता है, उत्तर देता है,
कानून बनाता है, आदेश देता है, मना करता है, सलाह देता है, याद दिलाता है, चेतावनी देता है, प्रशंसा करता है, प्रोत्साहित करता है, निंदा करता है और रोकता है। फिर भी इसके बावजूद, कुरान वाक्पटुता में परिपूर्ण है,
प्रवाह, पारस्परिक अनुपात और सामंजस्य। बयानबाजी, वाक्पटुता और ललित कला के विज्ञान इसकी गवाही देते हैं।

कुरान की एक अनूठी विशेषता है; अन्य किसी भी भाषा-शैली में ऐसा नहीं है।
यदि आप कोई भाषण सुनते हैं, तो आप उसके पीछे वक्ता (या लेखक) को देखेंगे, या आप उसके पीछे वक्ता (या लेखक) को देखेंगे।
उन्हें इसके भीतर पाएंगे: शैली उस व्यक्ति का दर्पण है जो लिखता या बोलता है।

कुरान स्पष्टतः पैगम्बर की ओर संकेत करता है, जो कि एक ईश्वरीय दूत है।
वाणी के स्वामी के सामने पर्दा है। वाणी का स्वामी अद्वितीय रूप से अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी है, जिसके शब्द या प्रवचन अनंत हैं
और असंख्य.

वह अतीत में अनंत काल से अपने सभी असंख्य अभिभाषकों को संबोधित करता है
भविष्य में अनंत काल तक; हालाँकि, सर्व-शाश्वत की वाणी केवल
मूर्त, परिमित भाषणों में सुना गया।

वह अपने समस्त प्रवचनों को एक ही अभिव्यक्ति में समेट सकते थे।
वाणी, यदि हमारे लिए उनके सभी अनंत शब्दों को एक साथ सुनना संभव होता,

या यदि उसके सभी अभिभाषक सभी कणों से बने एक कान होते
ब्रह्मांड का - फिर वह सार्वभौमिक कान, विश्वास का वह सार्वभौमिक प्रकाश,
अंतःकरण में प्रेरणा,

सर्व-महिमावान के भाषण का प्रतिनिधित्व देखा होगा
अपने समस्त ऐश्वर्य और वैभव के साथ, अनंत भाषणों या शब्दों के पीछे या भीतर।

इसका मतलब यह है कि कुरान की शैलियों में भिन्नता इसलिए है क्योंकि कुरान में सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा और उनके नामों और गुणों की अभिव्यक्तियाँ शामिल हैं। यह कुरान में सन्निहित उनके भाषण के पीछे विश्वास के साथ देखने से पता चलता है।

हर व्यक्ति कह सकता है, "इस दुनिया में, जो बनाई गई और गर्म की जाती है और
मेरा घर जगमगा उठा, जैसे सूरज, आसमान की आंख, मुझ पर मुस्कुरा रहा हो।

"यदि ईश्वर ने इसे चेतना और वाणी दी होती, तो स्वर्ग की वह नाजुक, सुंदर इकाई मुझसे बात करती और दर्पण उसके साथ संचार का साधन होता।"

मन की स्वायत्तता प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार देती है, इसलिए वह यह भी कह सकता है, "मेरा प्रभु अपनी वाणी, कुरान के पीछे से मुझसे बात करता है; मैं अपने विश्वास के साथ एक दयालु प्रकाशवान को देखता हूँ।"

आत्मा वाले सभी प्राणी, यहाँ तक कि पूरा ब्रह्मांड भी एक साथ यह कह सकता है, क्योंकि उसके साथ संवाद करते समय कोई भीड़भाड़ या रुकावट नहीं होती है, (जैसे कि सूर्य से किसी का लाभ उठाना दूसरों को इससे लाभ उठाने से नहीं रोकता है)। कोई भी उस पर एकाधिकार नहीं कर सकता या उसे प्रतिबंधित नहीं कर सकता। वह समय और स्थान में सीमित नहीं है।

हे स्वप्न-प्रश्नकर्ता! तुमने संक्षिप्तता मांगी थी, इसलिए मैंने संकेत कर दिया है। यदि तुम विस्तृत व्याख्या चाहते हो, तो वह मेरी क्षमता से परे है!

एक मक्खी आकाश को देख या स्कैन नहीं कर सकती।

इसकी चमत्कारिकता के चालीस पहलुओं में से केवल एक ही है इसकी धाराप्रवाहता
शब्द-क्रम; इसे इशारतुल-एजाज़ में पूरी तरह से समझाया नहीं जा सका ।[202]

इस हेतु मेरी यह लगभग दो सौ पृष्ठ की टिप्पणी अपर्याप्त है। बल्कि, मैं आपसे विस्तृत व्याख्या चाहता हूँ, क्योंकि आपकी आध्यात्मिक प्रेरणाएँ बहुत हैं।

पश्चिमी साहित्य का काल्पनिक, वासना-उत्तेजक, प्रतिभा-प्रभावित करने वाला, सांसारिक हाथ कुरान के उपचारात्मक, प्रकाश-बिखरने वाले, मार्गदर्शक, स्वर्गीय, शाश्वत साहित्य के बराबर नहीं हो सकता।

परिपक्व और सिद्ध व्यक्ति की उच्च रुचि को भाने वाली कोई भी वस्तु बचकानी कल्पनाओं या उच्छृंखल स्वभाव को संतुष्ट नहीं करती।

---

202 इशारतुल-एजाज़, सईद नूरसी की सूरतुल-फातिहा (कुरान का पहला अध्याय) और सूरतुल-बक़रा की पहली 32 आयतों पर टिप्पणी है। इसमें दो सौ से ज़्यादा पृष्ठ हैं।
यह कुरान को समझने और उस पर टिप्पणी करने की कुंजी है। (ट्र.)

यह उनका मनोरंजन नहीं करता है। इस कारण से, जो बीच में बड़ा हुआ है
और आधार, असंतुष्ट, शारीरिक और कामुक सुखों से तृप्त हो गए हैं, उन्हें पता नहीं होगा
आध्यात्मिक आनंद.

उपन्यासों पर आधारित और उनके द्वारा निर्मित परिप्रेक्ष्य में देखें तो,
वर्तमान साहित्य, जो यूरोप से आया है, कुरान की उत्कृष्ट सूक्ष्मताओं या भव्य गुणों को न तो देख सकेगा, न ही अनुभव कर सकेगा।

यह साहित्य कुरान को अपने आप तौल या माप नहीं सकता
साहित्य तीन क्षेत्रों में घूमता है; यह तीन क्षेत्रों में घूमता है।
उनकी सीमाएँ:

या तो प्रेम और दु:ख, या वीरता और पराक्रम, या वास्तविकता का चित्रण।
यूरोप आधारित साहित्य सत्य या प्रशंसा की तलाश नहीं करता है
वीरता; बल्कि, यह क्रूरता की सराहना करके शक्ति की इच्छा पैदा करता है
उत्पीड़कों.

जहाँ तक दु:ख और प्रेम का प्रश्न है, यह साहित्य सच्चे प्रेम से परिचित नहीं है; यह
आत्मा में वासना-उत्तेजक रोमांच भर देता है।

वास्तविकता के चित्रण के मामले में, यह अविभाज्य नहीं दिखता है।
वह कविता को ईश्वरीय कला मानता है; वह इसे सर्व-दयालु की पेंटिंग के रूप में नहीं देखता है।

बल्कि, यह साहित्य कुरान को एक दृष्टिकोण से देखता है।
"स्वयं-अस्तित्व वाली प्रकृति" या प्रकृतिवाद, और इसे इस प्रकार चित्रित करता है; यह खुद को मुक्त नहीं कर सकता
इस सीमा से.

इस कारण से, ऐसा साहित्य प्रकृति के प्रति झूठा प्रेम पैदा करता है।
यह हृदय में भौतिकवाद से जुड़ी भावनाओं को रोपता है, जिससे यह
आसानी से खुद को नहीं बचा सकता.

इसके अलावा, वह अशिष्ट साहित्य केवल आत्मा के कष्ट के लिए एक शामक और मादक औषधि है, जो गुमराही के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है।
भौतिकवाद से मुक्ति पाना असंभव है; यह कोई उपाय नहीं दे सकता।

इसका एक ही उपाय है, और वह है उपन्यास और कथा साहित्य।
एनिमेटेड लाशें हैं, चलचित्र चित्र चलती हुई लाशें हैं। मृतक नहीं हो सकते
जीवन दे!

और रंगमंच - उसे अपनी इन तीन तरह की कल्पनाओं पर कोई शर्म नहीं आती
अतीत के रूप में जानी जाने वाली विशाल कब्र से “पुनर्जन्म” वाले भूतों जैसा।

इसने मानव जाति के मुँह में झूठी, झूठी जीभ डाल दी है, उसके चेहरे पर वासना भरी आँखें लगा दी हैं, संसार को लाल वस्त्र पहना दिया है, और शुद्ध सौंदर्य को नहीं पहचानता।

साहित्य यदि सूर्य की ओर संकेत करता है तो वह पाठक के मन में एक सुन्दर छवि डालता है।
गोरी अभिनेत्री; लेकिन यह स्पष्ट रूप से कहता है: "अपव्यय बुरा है; यह उपयुक्त नहीं है
इंसानियत।"

साहित्य में हानिकारक परिणामों का संकेत मिलता है। लेकिन इसके चित्रण इतने अधिक व्यभिचारी होते हैं कि मुँह में पानी आ जाता है और बुद्धि नियंत्रण नहीं रख पाती।

वे भूख जगाते हैं, इच्छा को उत्तेजित करते हैं, इस प्रकार भावनाएँ न तो सलाह पर ध्यान देती हैं और न ही चेतावनी पर। हालाँकि, कुरान का साहित्य ऐसी कोई इच्छा नहीं जगाता; यह सत्य के प्रति प्रेम और लगाव, शुद्ध सौंदर्य और उसमें आनंद के लिए जुनून और

सत्य को प्राप्त करने और स्थापित करने का उत्साह प्रदान करता है। यह कभी धोखा नहीं देता।

कुरान ब्रह्मांड को "स्वयं-अस्तित्व वाली प्रकृति" या प्रकृतिवाद के दृष्टिकोण से नहीं देखता है; यह इसे ईश्वरीय कला के रूप में, दयालु ईश्वर की पेंटिंग के रूप में बताता है। यह मन को भ्रमित नहीं करता है।

यह सृष्टिकर्ता के ज्ञान का प्रकाश पैदा करता है। यह सभी चीज़ों में उसकी निशानियों को दर्शाता है। क़ुरआन और आधुनिक युग का साहित्य दोनों ही मार्मिक करुणा पैदा कर सकते हैं, लेकिन वे एक दूसरे से मिलते जुलते नहीं हैं।

यूरोप में जन्मा साहित्य एक दयनीय दुःख को उत्तेजित करता है जो
मित्रों का अभाव, स्वामीहीन होना; यह कोई उच्च दुःख नहीं है।

यह साहित्य बहरी प्रकृति और अंधी शक्ति से प्रेरित एक निराशाजनक उदासी है। यह दुनिया को एक उजाड़ बंजर भूमि के रूप में जानता और दिखाता है, किसी और तरह से नहीं।

साहित्य दुनिया को इसी तरह चित्रित करता है, और वह दुखी लोगों को, बिना मालिक के, अजनबियों के बीच छोड़ देता है, और उन्हें आशाहीन छोड़ देता है।

साहित्य ने उन्हें जो भावनात्मक भाव दिया है, उसके कारण वे धीरे-धीरे भटकाव की ओर बढ़ते हैं; इस प्रकार नास्तिकता का मार्ग खुल जाता है, जहाँ से लौटना कठिन होता है। शायद वे कभी वापस न लौटें।

जहाँ तक कुरान के साहित्य का सवाल है, यह दुख तो पैदा करता है, लेकिन यह प्रेम का दुख है, अनाथों का नहीं। यह दुख दोस्तों से बिछड़ने से पैदा होता है, उनके न होने से नहीं।

अंध प्रकृति के स्थान पर ब्रह्माण्ड के प्रति उसका दृष्टिकोण चेतन, मृदु है।
यह एक दिव्य कला है; यह "अंधे और बहरे" स्वभाव की बात नहीं करता है।

कुरान में अंधी ताकत के बजाय बुद्धिमान और दयालु ईश्वरीय शक्ति का वर्णन किया गया है। इसलिए, ब्रह्मांड एक उजाड़ बंजर भूमि का रूप नहीं लेता है।

वास्तव में, पवित्र शोक से ग्रस्त लोगों की दृष्टि में, जिनके लिए यह कुरान संबोधित है, कुरान मित्रों का एक समूह बन जाता है। हर तरफ आपसी प्रेम और सहानुभूति है, जो किसी भी प्रकार की परेशानी का कारण नहीं बनती।

हर कोने में मित्रता है, जो उस समाज में दु:खी लोगों को सहारा देती है।
यह एक उत्कट दु:ख है, एक उन्नत भावना है, न कि एक हताश दु:ख।

दोनों ही उत्सुकता को जन्म देते हैं। लेकिन विदेशी साहित्य द्वारा उत्तेजित उत्सुकता के कारण शारीरिक आत्मा उत्तेजित हो जाती है, काल्पनिक इच्छाएँ उत्तेजित हो जाती हैं; आत्मा को कोई खुशी नहीं मिलती।

कुरान की उत्सुकता, हालांकि, आत्मा को उत्तेजित करती है, और व्यक्ति को ऊंचे लक्ष्यों की ओर प्रेरित करती है। यही कारण है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की शरिया न तो खेल की इच्छा रखती है और न ही मनोरंजन की।

उसने मनोरंजन के लिए कुछ वाद्यों को हराम करार दिया है और कुछ को अनुमति दी है। अर्थात् जो वाद्य कुरानिक शोक और उत्सुकता पैदा करते हैं, वे हानिकारक नहीं हैं।

लेकिन अगर ऐसा संगीत अनाथ के लिए निराशा भरा दुख या शारीरिक उत्तेजना और उत्सुकता पैदा करता है, तो उस वाद्य को प्रतिबंधित कर दिया जाता है। यह हर व्यक्ति में अलग-अलग होता है, हर कोई एक जैसा नहीं होता।

दो दृष्टिकोण हैं, एक अंधकारमय, दूसरा प्रकाशमान दो दृष्टिकोण हैं, और दो तरह की जांच।

एक उत्तरोत्तर प्रकाशित और उज्जवल होता जाता है, जबकि दूसरा उत्तरोत्तर संदेह में डूबता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप मन अंधकारमय होता जाता है।

उदाहरण के लिए: एक स्रोत से सुखद, मीठा पानी बह रहा है। यह
हज़ारों नहरों में बहता है। कुछ जगहों पर इसमें गंदी चीज़ें मिल सकती हैं।

एक व्यक्ति स्रोत को देखता है, पानी का स्वाद लेता है, और समझ जाता है कि यह पानी है।
वे निष्कर्ष निकालते हैं कि गंदगी स्रोत से नहीं है।

जब भी कोई व्यक्ति किसी नहर या जलमार्ग से गुजरता है, तो पानी के शुद्ध और मीठे होने का छोटा सा संकेत ही उसे उसकी मूल मिठास और शुद्धता का एहसास करा देता है।

केवल एक निर्णायक, ठोस सबूत ही ऐसे संकेत का खंडन कर सकता है। तब व्यक्ति कहता है: “इस शुद्ध, मीठे पानी में कोई और पदार्थ मिल गया है।”

इस तरह की जांच से ईमान मजबूत होता है, दिल का विस्तार होता है और वह खुश होता है, और सच्चाई विकसित होती है और फलती-फूलती है। इसी शानदार नज़रिए को क़ुरआन ने प्रोत्साहित किया है।

दूसरा दृष्टिकोण दोषपूर्ण और हानिकारक है। मूर्ख व्यक्ति इसके साथ चलता है
स्रोत से शुरू करने के बजाय, अनजाने में नहरों के चारों ओर घूमते हैं।

उनकी आँखें ज़मीन पर लगी रहती हैं; जब भी वे किसी नहर के पास पहुँचते हैं और उसमें पानी के कड़वे होने का संदेहास्पद संकेत देखते हैं, तो उन्हें संदेह होता है कि पानी

मीठा है या नहीं। यह जानने के लिए कि पानी मीठा है या नहीं, वे कोई ठोस सबूत ढूँढ़ते हैं।

वे एक विशाल, शुद्ध स्रोत से उत्पन्न जबरदस्त परिणाम को एक बहुत ही तुच्छ संकेत पर आधारित करना चाहते हैं।

उनका संदेह बढ़ता है (क्योंकि उन्हें बाहर से पानी में कुछ मामूली गंदगी मिलती है), और वे अपना पुराना विश्वास खोने लगते हैं, और निराधार संदेह का लक्ष्य बन जाते हैं। इस तरह के दृष्टिकोण का प्रतिफल त्रुटि में वृद्धि है।

उनकी बुद्धि दोषपूर्ण है, उनके द्वारा अपनाए गए सिद्धांत त्रुटिपूर्ण हैं, तथा उनकी समझने की क्षमता संकीर्ण है।

यदि वे सत्य तक नहीं पहुंच पाते, तो वे वापस लौटकर कहते हैं: “यह सत्य नहीं है,” तथा इसका खंडन और खंडन करते हैं।

कुर्दों के बीच एक कहावत है: एक भालू एक बेल के नीचे खड़ा था, और अंगूरों तक न पहुँच पाने के कारण बोला, "इन पर हाय! ये तो बदबूदार और खट्टे हैं!"

शाखाएं दया के नाम पर फल चढ़ाती हैं। स्पष्टतः, सृष्टि के वृक्ष की शाखाएं हर
ओर से जीवित प्राणियों के हाथों में उपहार के फल पहुंचाती हैं।

लेकिन वास्तव में यह दया का हाथ है, शक्ति का हाथ है, जो
उन शाखाओं पर लगे ये फल हमें दे दो।

तुम्हें कृतज्ञता से उस दया के हाथ को चूमना चाहिए; तुम्हें कृतज्ञ होना चाहिए-
उस शक्ति के हाथ की पवित्रता का बखान करो।

सूरतुल-फातिहा के अंत में बताए गए तीन रास्तों की व्याख्या ऐ ख्वाहिशों से भरे
भाई! अपनी कल्पना को साथ लेकर मेरे साथ चलो।

देखो, हम एक मुल्क में हैं, हम चारों तरफ देखते हैं। हमें देखने वाला कोई नहीं है।

ऊंचे पहाड़ों पर काले बादलों की एक परत जम गई है, जो तम्बू की तरह हैं। बादलों ने धरती के उस हिस्से को भी ढक लिया है जहां हम हैं।

वे हमारे ऊपर एक ठोस छत बनाते हैं, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि इसकी छह भुजाएँ खुली हैं और सूरज वहाँ चमक रहा है। हालाँकि, हम बादल के नीचे हैं और अंधकार हमें सताता है।

संकट दम घोंटने वाला है; ताजी हवा की कमी हमें मार रही है। अब हमारे लिए तीन रास्ते खुले हैं। एक है प्रकाशित क्षेत्र; मैंने एक बार इसे देखा था। मैं पहले भी एक बार यहाँ आया हूँ; मैं तीसरे क्षेत्र में भी गया हूँ।

हमारे सामने जो पहला रास्ता है वह यह है: अधिकांश लोग इसे अपनाते हैं और यह
दुनिया भर का रास्ता, हमें यात्रा करने के लिए आमंत्रित करता है।

देखो, हम पैदल ही जा रहे हैं। इसकी उबलती रेत देखो।
रेगिस्तान में, वे कैसे अपने क्रोध से हमें जला रहे हैं, हमें धमका रहे हैं!

उस समुद्र की ऊंची-ऊंची लहरों को तो देखो, वे भी हम पर क्रोधित हैं।
अब भगवान का शुक्र है कि हम दूसरी तरफ पहुंच गये हैं, हम सूरज की रोशनी देख सकते हैं।

लेकिन सिर्फ़ हम ही जानते हैं कि हमने कितनी मुश्किलें झेली हैं। अफ़सोस!
हम उसी बंजर भूमि पर लौट आए, बादलों की काली छत हमारे ऊपर मंडरा रही थी।
हमें एक अद्भुत प्रकाश से भरे क्षेत्र की आवश्यकता है,

जो दिल की आंख रोशन कर देंगे, अगर हिम्मत है तो हम
इस गंतव्य तक पहुंचने के लिए सभी लोग एक साथ इस अत्यंत जोखिम भरे रास्ते पर चलेंगे।

हमारा दूसरा तरीका: हम "प्रकृति" में गोता लगाएँगे, और दूसरे की ओर बढ़ेंगे
या फिर हम एक प्राकृतिक सुरंग से कांपते हुए गुजरेंगे।

मैं पहले भी एक बार इस रास्ते से यात्रा कर चुका हूँ, बिनती और प्रार्थनाओं से भरा हुआ, बिना किसी भगवान के सामने अनिच्छा का दिखावा करना। लेकिन उस अवसर पर मेरे पास "प्रकृति" को गलाने और फाड़ने के लिए एक पदार्थ था।

तीसरे मार्ग का चमत्कारी मार्गदर्शक, कुरान ने मुझे यह दिया।
भाई, मेरे पीछे-पीछे रहो, और डरो मत!

देखो, यहाँ सुरंगनुमा गुफाएँ और भूमिगत झरने इंतज़ार कर रहे हैं।
चलो, हम आगे बढ़ जाते हैं। प्रकृति या इन भयानक बेजान प्राणियों से न डरें
किसी भी तरह से!

क्योंकि उसके खट्टे चेहरे के पीछे उसकी सर्व-करुणामयी का मुस्कुराता हुआ चेहरा है
स्वामी-मैंने इसे उस रेडियम जैसे पदार्थ के प्रकाश के माध्यम से देखा
कुरान.

आप कितने खुश हैं! अब हम रोशनी से भरी दुनिया में आ गए हैं;
इस सुन्दर पृथ्वी को, इस सुखद और प्यारे स्वर्ग को देखो।

अपना सिर ऊपर उठाओ! देखो, यह तूबा-वृक्ष हमें आमंत्रित कर रहा है - यह बहुत ऊँचा बढ़ता है
आकाश ने बादलों को फाड़ दिया है, और उन्हें बहुत नीचे छोड़ दिया है।

यह कुरान है। इसकी शाखाएँ हर जगह फैली हुई हैं। हमें इसे अपने पास रखना चाहिए।
इस शाखा पर जो नीचे झुक रही है, ताकि यह हमें ऊपर उठा सके।

पृथ्वी पर उस स्वर्गीय वृक्ष की अभिव्यक्तियों में से एक है
शानदार शरिया। इसका मतलब है कि हम इस तरह से प्रकाश की दुनिया में चढ़ते हैं
बिना किसी कठिनाई के; संकट से हम विचलित नहीं होंगे।

चूँकि हम गलत रास्ते पर चले गए हैं, इसलिए अब हम अपने पुराने स्थान पर लौटेंगे और
सही रास्ता खोजें.

देखो, हमारा तीसरा रास्ता! पहाड़ों के ऊपर एक रॉयल फाल्कन मंडराता है, गाता हुआ-
पूरी दुनिया को अज़ान देना।

देखो, सर्वोच्च मुअज़्ज़िन (प्रार्थना के लिए बुलाने वाला), मुहम्मदुल-हा-शिमी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मानव जाति को प्रकाश की चमकदार दुनिया में बुला रहे हैं। वह दुआ और अनिवार्य नमाज़ों का आदेश देते हैं।

उन हिदायत के पहाड़ों को देखो! उन्होंने बादलों को चीर दिया है और आसमान तक पहुँच गए हैं। उन शरिया के पहाड़ों को देखो, उन्होंने धरती के चेहरे और आँखों को कैसे सजाया है!

अब हमें यहाँ से ऊँची आकांक्षा और प्रयास के साथ प्रस्थान करना चाहिए। क्योंकि प्रकाश और हवा वहाँ ऊपर हैं; अनुग्रह का उज्ज्वल चेहरा वहाँ है। आह, अब यहाँ दिव्य एकता का उहुद203 है, वह शक्तिशाली, प्रिय पर्वत।

यहाँ इस्लाम का जूदी204 है, जो मुक्ति और सुरक्षा का पर्वत है। यहाँ चाँद का पर्वत 205 है, जो उज्ज्वल कुरान है; "नील" नदी, जीवन और दया का शुद्ध जल, उस उदात्त स्रोत से बहती है। इसके मीठे पानी का एक घूँट पी लो!

> अतः धन्य है वह रचयिता, जो सर्वोत्तम और सर्वोत्तम रूप में सृजन करता है! (33:14)
>
> और उनका अंतिम आह्वान है, “सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है!” (10:10)

मित्र! अब अपनी कल्पना को त्याग दो और अपनी बुद्धि को धारण करो! पहले दो मार्ग "उन लोगों के हैं जिन्होंने तुम्हारा क्रोध भड़काया है" और "वे जो भटक गए हैं।"

उनके ख़तरे बहुत हैं। इनके साथ हमेशा सर्दी रहती है, उनका पूरा साल सर्दी ही होता है। सौ में से सिर्फ़ एक ही बच पाता है, जैसे प्लेटो और सुकरात।

तीसरा रास्ता आसान है, सीधा और सीधा है। कमज़ोर और मज़बूत बराबर हैं। हर कोई इसे अपना सकता है। सबसे आसान और सुरक्षित यह है: या तो शहीद बनो या फिर "गाज़ी।"206

---

[203] माउंट उहुद मदीना में एक पहाड़ है, जो पैगंबर की मस्जिद से पाँच किलोमीटर उत्तर में है। 624 में पैगंबर के समय में मुस्लिम सेना और मक्का के बहुदेववादियों के बीच एक भयंकर युद्ध हुआ था। एक बार ईश्वर के दूत, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा: "उहुद - यह हमसे बहुत प्यार करता है और हम भी इससे बहुत प्यार करते हैं।" (अल-बुखारी, "फ़दाइलुल-मदीना" 6; मुस्लिम, "हज" 462) (ट्र.)

204 माउंट जूडी वह पर्वत है जहाँ जल प्रलय के बाद पैगंबर नूह का जहाज़ रखा गया था। देखें, कुरान, 11:44. (ट्र.)

205 मून माउंटेन इथियोपिया में पर्वत श्रृंखलाएँ हैं जिन्हें कभी व्हाइट नील नदी का स्रोत माना जाता था। लेखक ने आस्था, इस्लामी विश्वास और जीवन तथा कुरान की तुलना कुछ पहाड़ों से की है। (अनुवाद)

206 “गाजी” एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जो ईश्वर के लिए युद्ध करता है। (अनुवाद)

अब हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि पहले दो रास्ते वैज्ञानिक भौतिकवाद और दर्शनशास्त्र के मार्ग और स्कूल हैं। जहाँ तक कुरान के मार्गदर्शन का सवाल है, तीसरा रास्ता उसका सीधा रास्ता है; यह हमें हमारी मंज़िल तक ले जाएगा।

> ऐ अल्लाह! हमें सीधा मार्ग दिखा। उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की है, न कि उन लोगों का जो तेरे प्रकोप के भागी हुए हैं और न उन लोगों का जो पथभ्रष्ट हैं।

सभी सच्ची पीड़ाएं गुमराही में हैं, और सभी सच्ची खुशी विश्वास में है: कल्पना में लिपटा एक महान सत्य

हे समझदार सहयात्री! हे प्रिय मित्र! यदि तुम सीधे मार्ग के प्रकाशमान मार्ग और ईश्वर के प्रकोप को झेलने वालों तथा पथभ्रष्ट लोगों के अंधकारमय मार्ग के बीच स्पष्ट अंतर देखना चाहते हो,

आओ, अपनी कल्पना को उड़ान दो, साथ मिलकर हम अस्तित्वहीनता के अंधेरे में जाएंगे। हम उस विशाल कब्र, उस शहर का दौरा करेंगे जो मृतकों से भरा है।

एक शाश्वत सर्वशक्तिमान ने हमें अस्तित्वहीनता के अंधकार से बाहर निकाला।
अपनी शक्ति के हाथ से हमें अस्तित्व पर चढ़ाया, और हमें इस संसार में, इस सुख रहित नगर में भेज दिया।

अब हम अस्तित्व की दुनिया में आ गए हैं, इस भयावह रेगिस्तान में।
आँखें खुल गई हैं और हमने छह दिशाओं में देखा है।

सबसे पहले, हम दया और सहायता की आशा करते हुए अपने सामने देखते हैं, लेकिन क्लेश और दर्द हम पर दुश्मनों की तरह हमला करता है। हम इससे डर जाते हैं और पीछे हट जाते हैं।

हम मदद की तलाश में प्राकृतिक तत्वों की ओर बायीं और दायीं ओर देखते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि उनके दिल कठोर और निर्दयी हैं। वे अपने दांत पीसते हैं, हमें गुस्से और धमकी भरे अंदाज में देखते हैं। वे न तो हमारी विनती सुनते हैं और न ही शिकायत।

असहाय प्राणियों की तरह, हम निराश होकर अपनी निगाहें ऊपर की ओर उठाते हैं।
सहायता के लिए हम आकाशीय पिंडों की ओर देखते हैं, लेकिन वे हमें ख़तरनाक लगते हैं।

मानो हर कोई एक बम हो; अपने-अपने आवरणों से निकलकर वे अंतरिक्ष में तेज़ी से भाग रहे हों। लेकिन किसी तरह वे एक-दूसरे को छूते नहीं हैं।

यदि कोई गलती से भी इसका मार्ग बदल दे, तो यह दृश्यमान, भौतिक जगत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा; भगवान न करे! वे संयोग पर निर्भर होकर चलते हैं; उनसे कोई अच्छाई नहीं हो सकती।

निराशा में हम उस दिशा से अपनी दृष्टि वापस मोड़ लेते हैं, पीड़ादायक घबराहट से अभिभूत हो जाते हैं। हम अपना सिर झुका लेते हैं, अपनी छाती पर झुक जाते हैं; हम अपने आप को देखते हैं, अपने आप पर विचार करते हैं और स्वयं का अध्ययन करते हैं।

अब हम अपने दुखी मन से असंख्य ज़रूरतों की चीखें सुनते हैं। हज़ारों इच्छाओं की चीखें निकलती हैं। सांत्वना की उम्मीद करते हुए, हम डर जाते हैं।

इससे भी कोई फायदा नहीं होता। शरण लेने के लिए हम अपने विवेक या चेतन स्वभाव से सलाह लेते हैं; हम साधन और मदद की तलाश में उसमें झाँकते हैं। अफ़सोस, हम फिर से बिना किसी मदद के रह जाते हैं; हमें अपने विवेक या चेतन स्वभाव की मदद करनी पड़ती है।

क्योंकि इसमें हज़ारों आकांक्षाएँ, उबलती हुई इच्छाएँ, उग्र भावनाएँ हैं, जो पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई हैं। हम उन सभी से काँपते हैं, और मदद नहीं कर सकते।

अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच बिना किसी सहायता के छोड़ दिए जाने पर, ये आकांक्षाएँ एक तरफ अतीत में अनंत काल तक और दूसरी तरफ भविष्य में अनंत काल तक फैल जाती हैं। वे इतनी व्यापक हैं। अगर चेतन प्रकृति दुनिया को निगल भी जाए, तो भी वह संतुष्ट नहीं होगी।

इस दुखदायी मार्ग पर हमने जो भी रास्ता चुना है, उसमें हमें विपत्तियाँ ही मिली हैं। क्योंकि जिन पर ईश्वर का प्रकोप है और जो भटके हुए हैं, उनके मार्ग भी ऐसे ही हैं। यह संयोग और गुमराही ही है जो हमें इन मार्गों पर ले जाती है।

यह हम ही हैं जिन्होंने संयोग और गलत दिशा में जाने दिया है, और इसलिए हम अपनी वर्तमान स्थिति में आ गए हैं। हम ऐसी स्थिति में हैं कि हम अस्तित्व की शुरुआत और दुनिया के अंत के साथ-साथ निर्माता और मृतकों के पुनरुत्थान को भी भूल गए हैं।

हम ऐसी स्थिति में हैं जो नरक से भी बदतर है; यह अधिक भयंकर रूप से झुलसाती है और हमारी आत्माओं को कुचल देती है। हमने इन छह दिशाओं का सहारा लिया, लेकिन परिणाम यह हुआ।

यह एक निर्दयी अवस्था है, जिसमें भय और आतंक, नपुंसकता और कांपना, चिंता और अलगाव, अनाथ होना और निराशा शामिल है।

अब हम दोनों दिशाओं के विपरीत मोर्चे पर मोर्चा संभालेंगे (जहाँ से हमने दया और मदद माँगी थी, लेकिन निर्दयी स्थिति में आ गए) और उन्हें पीछे धकेलने की कोशिश करेंगे। सबसे पहले, हमारे पास अपनी ताकत का सहारा है, लेकिन अफसोस! हम शक्तिहीन हैं, कमजोर हैं।

दूसरा, हम अपनी आत्माओं की ओर मुड़ते हैं, उम्मीद करते हैं कि उनकी ज़रूरतें शांत हो जाएँगी। लेकिन अफ़सोस! हम देखते हैं कि वे लगातार रोते रहते हैं।

तीसरा, हम मदद के लिए पुकारते हैं, किसी उद्धारकर्ता की तलाश करते हैं; लेकिन कोई सुनने वाला और जवाब देने वाला नहीं होता। हमें लगता है कि सब कुछ शत्रुतापूर्ण है, सब कुछ अजीब है। कुछ भी हमारे दिल को सांत्वना नहीं देता; कुछ भी सुरक्षा या सच्ची खुशी का एहसास नहीं देता।

चौथा, जितना अधिक हम आकाशीय पिंडों को देखते हैं, उतना ही वे हमें भर देते हैं।
भय और विस्मय के साथ। एक भयावह अकेलेपन की भावना, जो विवेक को परेशान करती है, प्रकट होती है; यह मन को पीड़ा देती है और हमें भ्रम से भर देती है।

भाई! यही तो गुमराही का रास्ता है! इस पर हमने तमाम दुख झेले हैं।
अविश्वास का अंधकार। आओ, अब, मेरे भाई, हम फिर से अस्तित्वहीनता की ओर मुड़ेंगे-
तनाव.

हम फिर आएंगे। इस बार हमारा रास्ता सीधा रास्ता है और
विश्वास का मार्ग। हमारे मार्गदर्शक और नेता ईश्वरीय कृपा और कुरान हैं,
बाज़ जो सदियों तक उड़ता रहता है।

एक समय, शाश्वत प्रभु की दया और कृपा ने हमारे अस्तित्व की इच्छा की, उनकी शक्ति ने हमें जन्म दिया, कृपापूर्वक हमें उनके नियमों पर स्थापित किया।
विल, हमें एक के बाद एक चरण पूरा करते रहेंगे।

फिर उसने दयापूर्वक हमें अस्तित्व का वस्त्र पहनाया,
हमें सर्वोच्च अमानत का दर्जा प्रदान किया है,207 जिसकी सजावट दुआ और अनिवार्य नमाज़ें हैं।

ये सभी पड़ाव हमारी लंबी यात्रा में वरदानों के महल हैं।
हमारी यात्रा को आसान बनाने के लिए, दैवीय नियति ने हमारे माथे के चर्मपत्र पर एक आदेश अंकित किया है;

हम जहाँ भी जाते हैं, जिस भी समूह के साथ मेहमान होते हैं, हमारा सच्चे भाईचारे के साथ स्वागत किया जाता है। हम अपनी चीज़ें देते हैं और हम लेते हैं
उनसे: एक रमणीय व्यापार.

वे हमारा पोषण करते हैं, हमें उपहारों से सजाते हैं, फिर हमें विदा करते हैं।
आख़िरकार हम दुनिया के दरवाज़े पर आ गए हैं। हमें एक शोर सुनाई देता है।

देखो, हम धरती पर आ गए हैं। हमने दृश्यमान जगत में पैर रख दिया है।
दुनिया। यहाँ एक सैर और उत्सव है, जो दयालु भगवान द्वारा आयोजित किया जाता है
मानव जाति का कोलाहलपूर्ण निवास।

हम कुछ भी नहीं जानते, हमारा मार्गदर्शक और नेता दयालु की इच्छा है। हमारी नाजुक आंखें इस मार्गदर्शक की प्रतिनिधि हैं। हम अपनी आँखें खोलते हैं
और चारों ओर देखें। क्या हमें वह पुराना समय याद है जहाँ से हम आए थे?

हम अजनबी थे, अनाथ थे, हमारे कई दुश्मन थे। हमें नहीं पता था कि हम क्या कर रहे हैं।
जो हमारे रक्षक थे। अब, विश्वास की रोशनी के साथ, जो एक मजबूत स्तंभ है,
हम अपने अंदर उन शत्रुओं के विरुद्ध एक सहारा और सहायता का बिन्दु पाते हैं।

हमारा रक्षक, ईश्वर में विश्वास, हमारे शत्रुओं को दूर भगाता है। यह हमारी आत्मा का प्रकाश है।
आत्माएँ, हमारे जीवन की रोशनी, और हमारी आत्माओं की आत्मा। अब हमारे दिल हैं
यह आसान है और हम दुश्मनों की उपेक्षा करते हैं, यहां तक कि उन्हें पहचानते भी नहीं।

---

२०७ सर्वोच्च विश्वास मानव आत्मत्व या मानव होना या मानव प्रकृति है जो कि मानव स्वभाव का केन्द्र बिन्दु है।
ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियाँ जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होती हैं। (ट्र.)

जब हमने अपनी पिछली यात्रा में अपनी चेतन प्रकृति से परामर्श किया, तो हमने
असंख्य चीखें, विलाप और शिकायतें सुनीं।

और इसलिए हम विपत्तियों से घिर गए। अब, हमारी आकांक्षाएँ और इच्छाएँ, हमारी क्षमताएँ और इंद्रियाँ, निरंतर अनंत काल की कामना करती हैं। लेकिन हम नहीं जानते थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। हम इस बात से अनभिज्ञ थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए और हमारी चेतन प्रकृति विलाप करती और रोती रही।

तथापि, ईश्वर की स्तुति और आभार हो, कि इस बार हमें सहायता का एक बिन्दु मिल गया है; यह हमारी क्षमता और आकांक्षाओं को निरंतर जीवन प्रदान करता है, तथा उन्हें अनंत काल तक उड़ान भरने में सक्षम बनाता है।

यह उन्हें रास्ता दिखाता है, और उस उत्साहवर्धक, रहस्यमय बिन्दु से - परमेश्वर में विश्वास - हमारी क्षमता को सहायता मिलती है, वह जीवन का जल पीती है, और अपनी पूर्णता की ओर बढ़ती है।

ईमान का दूसरा ध्रुव पुनरुत्थान, मृतकों के पुनरुत्थान और शाश्वत सुख की पुष्टि है। ईमान इस सीप का मोती है और कुरान इसका प्रमाण है। मानव विवेक इसका संकेत देने वाला एक रहस्य है।

अब अपना सिर उठाओ और ब्रह्मांड को देखो। उससे बात करो। हमारे पिछले रास्ते पर यह कितना अद्भुत दिखाई देता था। अब यह हर तरफ मुस्कुरा रहा है, शान से पलकें झपका रहा है और बोल रहा है।

क्या तुम नहीं देखते - हमारी आँखें मधुमक्खियों की तरह हो गई हैं? वे ब्रह्मांड के बगीचे में हर जगह, फूलों की भीड़ के चारों ओर उड़ती हैं; प्रत्येक फूल इन मधुमक्खियों को स्वादिष्ट रस प्रदान करता है।

प्रत्येक फूल मित्रता, सांत्वना और प्रेम भी प्रदान करता है। हमारी आँखें उन्हें इकट्ठा करती हैं और गवाही के पराग को वापस लाती हैं। वे सबसे स्वादिष्ट शहद को प्रवाहित करते हैं।

जैसे ही हमारी नज़र आकाशीय पिंडों - सितारों या सूर्यों - की गतिविधियों पर पड़ती है, वे सृष्टिकर्ता की बुद्धि को उसके हाथों में सौंप देते हैं। महत्वपूर्ण सबक सीखते हुए और उसकी दया के प्रकटीकरण से, यह उड़ान भरता है।

ऐसा लगता है जैसे सूरज हमसे बात कर रहा है, कह रहा है: "मेरे भाइयों और बहनों! अकेले या डरे हुए महसूस मत करो। आपका स्वागत है, आप कितने अच्छे आए! यह निवास स्थान आपका है; मैं तो बस एक मोमबत्ती-धारक हूँ।

"मैं भी आपकी तरह ही हूँ, एक शुद्ध, पूर्ण आज्ञाकारी सेवक के अलावा कुछ नहीं। अपनी असीम दया से, अद्वितीय और शाश्वत रूप से चाहने वाले ने मुझे आपके लिए प्रकाश का सेवक बनाया है। प्रकाश और ऊष्मा मुझसे हैं, प्रार्थना और प्रार्थना आपसे है!"

अब चाँद को देखो! और तारे और समुद्र; हर कोई अपनी-अपनी भाषा में कहता है: "स्वागत है! आपका आना अच्छा हुआ! क्या आप हमें नहीं पहचानते?"

सहयोग के रहस्य को देखो, व्यवस्था के संकेतों पर कान लगाओ। हर कोई कहता है: "हम सभी सेवक हैं, सर्वशक्तिमान की दया के दर्पण हैं; चिंता मत करो, हमसे थको या डरो मत!

“गर्जन की गर्जना और घटनाओं की चीखें तुम्हारे अंदर भय या संदेह पैदा न करें, क्योंकि उनके भीतर दिव्य गायन, महिमा, प्रार्थना और विनती गूंजती हैं।

"अल्लाह तआला जिसने तुम्हें हमारे पास भेजा है, उनकी लगाम अपने हाथों में रखता है। ईमान की नज़र उनके चेहरों पर रहमत की निशानियाँ दिखाती है; हर कोई इसका एहसानमंद है।"

ऐ जागे हुए दिल वाले ईमान वालों! अपनी आँखों को थोड़ा आराम दो; अब उनकी जगह हम अपने संवेदनशील कानों को ईमान के मुबारक हाथों में सौंप देंगे। उन्हें दुनिया में भेज देंगे ताकि वे उसकी मनमोहक धुन सुनें।

जिन आवाजों और ध्वनियों को हम अपने पिछले मार्ग पर मृत्यु का सार्वभौमिक शोक और विलाप समझते थे, वे वास्तव में प्रार्थनाएं और प्रार्थनाएं, महिमा की पुकारें हैं।

हवा की बड़बड़ाहट, पक्षियों का चहचहाना, वर्षा की बूंदों की गड़गड़ाहट, समुद्र की बौछारें, बादलों की गड़गड़ाहट, पत्थरों की चरमराहट; ये सभी प्रार्थना और महिमा की सार्थक ध्वनियाँ हैं।

हवा की मधुर ध्वनियाँ, बादलों की गड़गड़ाहट, लहरों की ध्वनियाँ, ये सब ईश्वरीय महिमा के ही गान हैं। वर्षा का गान, पक्षियों का चहचहाना, ये सब दया के ही गुणगान हैं - उनकी भाषाओं में सत्य के संकेत हैं।

वस्तुओं की ध्वनियाँ अस्तित्व की ध्वनियाँ हैं: वे कहते हैं, "मैं भी अस्तित्व में हूँ।"
मौन-सा प्रतीत होने वाला ब्रह्मांड निर्बाध रूप से बोलता है: "हे बकवादी साथी, हमें मृत मत समझो!"

पक्षियों को या तो उदारता की खुशी होती है या दया का अवतरण, जो उन्हें गाने पर मजबूर करता है। अपनी अलग-अलग आवाज़ों, अपने गीतों से वे दया की सराहना करते हैं, उदारता पर उतरते हैं और धन्यवाद देते हुए उड़ जाते हैं।

वे स्पष्ट रूप से कहते हैं: “हे ब्रह्माण्ड के प्राणियों, हे भाइयों और बहनों!
हम कितने बढ़िया हालात में रहते हैं; हमें कोमलता से पाला जाता है, हम अपने भाग्य से खुश हैं!” अपनी चोंचें आकाश की ओर उठाकर वे हवा में अपने हर्षित गीत भेजते हैं।

ब्रह्मांड अपनी संपूर्णता में एक भव्य ऑर्केस्ट्रा है; इसके पाठ विश्वास के प्रकाश के माध्यम से सुने जाते हैं। क्योंकि बुद्धि संयोग के अस्तित्व को अस्वीकार करती है और अस्तित्व में व्यवस्था किसी भी निर्माण या घटना को यादृच्छिक संयोग के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने से रोकती है।

साथी यात्री! अब हम चित्रण की इस दुनिया को छोड़ रहे हैं, छवियों के दायरे से नीचे उतर रहे हैं। हम तर्क के क्षेत्र में रुकेंगे, अपनी आँखों के सामने हमने जो यात्रा की है उसका अनुसरण करेंगे और उनकी तुलना करेंगे।

हमारा पहला, दर्दनाक मार्ग उन लोगों का है जिन पर ईश्वर का क्रोध आया है, और जो भटक गए हैं। यह विवेक पर, उसके अंतरतम भाग में पीड़ा पहुंचाता है; पीड़ा और गंभीर दर्द। चेतना यह दिखाती है; हमने अपने विवेक के विपरीत उस मार्ग पर यात्रा की।

हमें इससे बचना होगा, हमें ऐसा करने की आवश्यकता है - या तो दर्द को कम किया जाना चाहिए, या मानवीय भावनाओं को सुन्न किया जाना चाहिए - अन्यथा हम इसे सहन नहीं कर सकते, क्योंकि मदद के लिए हमारी पुकार पर ध्यान नहीं दिया जाता।

मार्गदर्शन उपचार है, लेकिन शारीरिक प्रवृत्तियाँ और कल्पनाएँ भावनाओं को अवरुद्ध करती हैं। शारीरिक प्रवृत्तियों और कल्पनाओं के प्रति समर्पण के लिए सांत्वना की आवश्यकता होती है, और सांत्वना के लिए विस्मृति, व्याकुलता, व्यस्तता और मनोरंजन की आवश्यकता होती है

ताकि धोखे के वे तत्व अंतरात्मा को मूर्ख बना सकें और आत्मा को सुला सकें, जिससे उसे कोई दर्द महसूस न हो। अन्यथा, वह भयंकर पीड़ा अंतरात्मा को झुलसा देती है, विलाप असहनीय होता है और निराशा की पीड़ा सहन नहीं की जा सकती।

इसका मतलब यह है कि जितना ही कोई सीधे रास्ते से भटकता है, उतना ही वह इस स्थिति से पीड़ित होता है, और उसकी अंतरात्मा चिल्लाती है। हर सुख के भीतर एक दुख है, जो इस स्थिति का एक निशान है।

इसका अर्थ यह है कि सभ्यता की चमक-दमक, जो कल्पना, वासना, मनोरंजन और अपव्यय का मिश्रण है, वह पथभ्रष्टता से उत्पन्न भयंकर संकट का भ्रामक इलाज है; चमक-दमक एक विषैली नशीली दवा है।

मेरे प्यारे दोस्त! दूसरे रास्ते पर, उस रोशनी से भरी सड़क पर, हमने महसूस किया
मन की एक ऐसी अवस्था जिसमें जीवन आनंद का स्रोत बन जाता है और दर्द खुशी का।

हमने समझा कि दूसरा तरीका आत्मा को एक ऐसी अवस्था से भर देता है जिसकी आस्था की ताकत के अनुसार अलग-अलग डिग्री होती है। शरीर को आत्मा के माध्यम से आनंद मिलता है और आत्मा को चेतना के माध्यम से आनंद मिलता है।

अंतःकरण में तत्काल आनंद की अनुभूति होती है; हृदय में आध्यात्मिक स्वर्ग विद्यमान होता है। चिंतनशील विचार उस आनंद को और बढ़ाने के लिए उसे खोलते हैं, जबकि चेतना रहस्यों का अनावरण करती है।

जितना अधिक हृदय जागृत होता है, जितना अधिक विवेक उत्तेजित होता है और आत्मा उत्तेजित होती है, उतना ही अधिक आनंद मिलता है; अग्नि प्रकाश में और शीत ऋतु ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित हो जाती है।

अंतरात्मा में स्वर्ग के द्वार खुल जाते हैं और दुनिया स्वर्ग बन जाती है। इसके भीतर हमारी आत्माएं उड़ान भरती हैं, बाजों और पतंगों की तरह ऊंची उड़ान भरती हैं, विनती करती हैं, प्रार्थना करती हैं।

प्रिय साथी यात्री! अभी के लिए विदा। आइये हम सब मिलकर प्रार्थना करें
और फिर हम फिर से मिलने के लिए अलग हो जायेंगे!

हे ईश्वर! हमें सीधे मार्ग पर ले चलो। आमीन।

एंग्लिकन चर्च को उत्तर एक समय जो इस्लाम का क्रूर,

निर्दयी शत्रु था, एक राजनीतिक षड्यंत्रकारी, एक षडयंत्रकारी धोखेबाज जो अपने आपको श्रेष्ठ दिखाना चाहता था, एक पादरी के वेश में, इनकार करने के इरादे से, एक दुःखद समय पर, अपने पंजों से हमारा गला दबाते हुए, उन्होंने द्वेषपूर्ण ढंग से हमसे चार बातें पूछीं, और

चाहते थे कि हम छः सौ शब्दों में उत्तर दें।

हमें ऐसी द्वेषपूर्णता के सामने थूक कर जवाब देना चाहिए था, उनकी साजिश के सामने आक्रोश में चुप रहना चाहिए था, तथा उनके इनकार का मौन, जोरदार उत्तर देना चाहिए था।

हालाँकि, मैं उस शत्रुता के बारे में बोलने के लिए नीचे नहीं गिरूँगा, बल्कि एक सत्य-खोजकर्ता को निम्नलिखित उत्तर दूँगा:

सत्य की खोज करने वाले ने पूछा: “मुहम्मद कौन सा धर्म लेकर आए?” मैंने जवाब दिया: “यह कुरान में निहित है। कुरान के मूल उद्देश्य

विश्वास के छह स्तंभ और इस्लामी जीवन के पाँच स्तंभ हैं।”

उनका दूसरा सवाल था: “इसने मानव विचार और जीवन को क्या दिया है?” मैंने जवाब दिया: “इसने मानव विचार को एकता और जीवन को एक सीधी दिशा दी है। इसके लिए मेरे गवाह ये हैं:

> कह दो, "वह अल्लाह है, जो सर्वथा एक है।" (112:1) अतः जो कुछ तुम्हें आदेश दिया गया है, उसका पालन करो (11:112)।

उन्होंने यह भी पूछा: “यह मानवता की वर्तमान बीमारियों को कैसे ठीक करता है?” मैंने जवाब दिया: “ब्याज और सूद पर प्रतिबंध और ज़कात के दायित्व के माध्यम से। इसके लिए मेरे गवाह ये हैं:

> अल्लाह ब्याज और सूद को किसी भी प्रकार की बरकत से वंचित कर देता है (2:176); अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज और सूद को अवैध ठहराया है (2:275); नमाज़ स्थापित करो और ज़कात (निर्धारित शुद्ध दान) अदा करो (2:43)।

चौथा, उन्होंने पूछा: “मानवता में उथल-पुथल और क्रांतियों को वह किस तरह देखता है?” मैंने जवाब में कहा:

"श्रम आवश्यक है, और धन को केवल संचित या रखा नहीं जा सकता
अमीरों और अत्याचारियों के हाथों में। इसके लिए मेरे गवाह ये हैं:

> मनुष्य को तो बस वही मिलता है जिसके लिए वह परिश्रम करता है (53:39); जो लोग सोना-चाँदी इकट्ठा करते हैं और उसे अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो (9:34)।

अनुक्रमणिका

सी

डी

और

एफ

जी

एच

मैं

एन

पी

क्यू

आर

एस

टी

में

वी

में

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

ए

बी

सी

डी

और

एफ

जी

एच

मैं

जे

क

एल

एम

एन

पी

आर

एस

टी

में

में